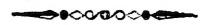
CONFINED TO LIBRARY

क्किक कि शः

व्यर्था ९

এতদেশস্থ সমস্ত কোষাশেষশাস্ত সন্ধলিভাকারাদিবর্ণ ক্রমবিন্যস্ত শব্দ তলিক নানার্থ পর্য্যায় প্রমাণ প্রযোগ ধাতু তদন্ত্বদ্ধাভিধেষ সহিত তত্তজ্ঞক প্রসম্পোধিত বেদ বেদাক্ষ পুরাণেতিহাস সঙ্গীত শিল্প সূপকারশাস্ত্র জ্যোতিস তন্ত্রাখ্যান কাব্যা-লন্ধার চ্ছন্দঃ প্রভৃতি নাম লক্ষণোদাহরণ জব্য-তথ্য রোগনিদানৌষধ স্মৃত্যুক্ত ব্যবস্থাদি সংযুক্ত সর্বদর্শন মতামুসারি সংস্কৃতাভিধানগ্রস্থঃ



ভত্ত

ষপ্তকাণ্ডঃ

রাজশ্রীরাধাকান্তবাহাদুরেণ বিরচিতঃ

১৭৭০ সপ্তত্যধিক সপ্তদশশত শকাব্দে কলিকাতাখ্যনগরে স্বীষষম্ভ্রে শ্রীপ্রাণক্লকনাগেম মুডাঙ্কিতঃ

ন শকারঃ। দহ নহনীয়প্রম उपः। शक्षेत्र चि॰ भए प्रतिप्र्या সংস্যাহসর্প স্থান তারু । ইতি তন্ত্র গ্রাকরণ। অক্স র্বরূপ । বিহা নকাবত পর্মেমানি মুব্বপ্তর চিচ্ছিতে রক্তবর্ণ প্রভাকাবংশ্বয় भव्यक्रमनी । एड्वर्गन्नातः দেবি শকাব্ত ক্রমাবিশক্ত। লাগত লাৰগ্ৰত বৰ্ণত পথত্ৰালা . অক° প্রিযে। রঙ্গঃ পর্যুত্রমা মুক্তণ ত্রিবিন্দু সহিতণ সদা বিশক্তি পহিত বর্গ মাকাদি · ভর্ দংশুভং।ইতিকামবেরভূলুং। उल्लू भर श्रकाता यथा। ४९ स्कामा ত্মিকা রেখা বাস দক্ষিণতঃক্রমাৎ বফ্লীক্ৰ বিফৰে দ্ৰামু তিম্ব জিক্তমত: मन्। ५ अमानाम किसना मन নক্ষী দমা সমূতা 1 মাথা মখ্যসাতা গারু রাশেরী সা পরা সমূতা। ইট বর্গান্দার তত্ত্রণ । ঠ দ্বা চকা নি য়খা ন: নগদ্দ কামরাসী কামরাপা মহাম্তিঃ। দৌখানামা কুমারোংখি নীকন্টো ব্যক্তন: । ব্যম্ন: শ্বনত শান্তা মুগুণা বিশ্কুলি

। भिनी। म्रा प्रता महालक्षी मल मः कूनकामिनी । रूप र्वतमा विश्वक्टि अस्यस्। हैया द त्राप्तः। वास्माद्रः भूछ् वीकाञ्चा काछिः क ल्यान वाहरी । दे हि त्याति विद्य ৩ নাল ৭ পটলে বর্না ভ্রমানণা শ॰ ক্লী দ্ৰত ।ইন্টিনিকণ্ড শেষ:। प · रो रुक्ताप । त्रुरा । प्राप्त ইতি শব্দরক্রাবনী। नः प्र निवः। राष्ट्र । रेडिनाइत আৰমী। শুন ই: দ্রি মাঝাধিতঃ গ্রেপ্রিমারেডার শংহঃ। পঁ ে শ্রুপার্যক্রখ্যেঠসত্র, নকঃ। ব্দ্রণ ইতি ধরনী। মাণ্ব: । গ্রিপ্রভাবিক্যাই ডি শ্রিকা 3 MA:1 মাণ বর পর্বা জেল প্রস্কর। भ॰म डे हि॰मा ऋजाः रेडिकरि কলাদ্দ:।তালকান্টে: । । দিকাশস্থা। য: শংসতি সতামিত इलायूव:।अल्कार्यकृष्कियान মারত। হথা বজৌ। পরাতম বাচা পুনরক্তিযেবেবেতি।নমেট্রিযা শংসতি কিঞ্চিদী পিত দিতা দিত या की

न॰मा खी राका॰। वाध्हा रेडिकाफी। स्रम॰मा १३७ मञ्जूनावली। শণদিত: যি নিশ্কিঃইতিহলামুর: हि॰ मिड १ । मुंड १ । शेडिम मधाज अध्याभाषा विष्यतः। आ० स्रा भू० स्मान । हान । दे हि म॰ क्रिछ मात्वानी पित्रिष्ठः १ শংস্কৃত। প্রং ক্ষেতা। যি প্রভারিতঃ 1 भ ॰ भूवर्रका शाला संभागायन निष्मः भण्भा १० भी धनविन। भमपूर्य স্বাহাতো: ক্লিস প্রতায়ন নিশারা भण्माः वि रिष्मः दूजः। भभभागः গণপ্ত, যেন নিশান: 1 मक रेड वाम ग॰क खाः। रेडिक वि কলাদ্রমঃ।ত্রাসো ভ্রমণ ধরাশম यातानः विभक्षालग्वाश्यानन ड महरू स्वरह भागी। मान वर्वा श्रुक्तभावा रेडि प्र॰ मध्यभावा শयनिन्धः ।रेनि मूर्गापामः। নক। হথ্য পত্তের। ইটি কবিষ্কল क्तरः १ अन्ति प्रिवामिभक्तमा शिरि शस्ति प्रायण । य १३ नम्ह নকভদুই। দীন ঃ। ইত্তিদ্রুগাদাসঃ। नक । करेब डे बाउजो रे हिकारिकन्या क्षाः

利布 नम्बागियका मधाली गरांड रलायूव: १ हेन সমকীৎ সম্বাক্ষীৎ। স্মান্ত্ৰিতা ও ইতা ভে প্রকিন্তাতি। দক্তাতি भागिपाकान शापि दानिमा विकास)। विदे ব-ষঃ কেষাঞ্চিদর্বো দ্বাবের সকর্মকৌ।তথ १श्य मन्य अविका ।विद वद्रः। दमः श्रतिगाम ন পক্তি প্রত্যাখ্যাতু। তত্ত্ব কৌ মুদ্যা ৽ বা চম্পা मका मालनामि माला मिल सिवंश शहितुर्गा শকঃ খু॰ গাটিভেদ:। ই शेनियापनी। एमा उप विश्वः। महन्मः भक े रेडिमालि वार्न रेडिंग च्याठः । ज्ञाय मन्। पि वरमकातमाकः अकात नामा शक्तिकाशा ० लि মচ গা ভি বেদ: শ্লেদা विलायः। मेरा यूला म

শ্রমন্তকার্মণ মুণ্ডামিছা বেদবান্তর মকারি । যথা । ততঃ শকান্ স্মব নান্ কাশ্যোজান্ পার্ঘে স্থ্যা 1 শহুবা ॰ শচামি নিং শেষান্ করু ग्रवात्राजान्यः। তहम्मामात्रीव ने मग (देश मारोजिमा। स्मिन्छे॰ विभिष्ठः भवभाभनान अभः ग म्हान्य जास्यः। मग्रवः राव যামাম তে গ্রোদরাভ মণ্ডদা। দশর স্তা॰ প্রতিক্তান্ত নিশম্য मूमहावल: । वर्षः ज्ञानं छ्या খন বেশান ল্যা॰ মচকার হ।. সঙ্গত প্রিবঃ শকানাশু মুম্রঘামাস ल्या । अवनानाः । निवः भवरि কাম্বোজানামাপাদিল।পার্দা সুজকেশাত প্রবান সম্মান शादिनः १ १नः म्हाभाग वश्चेन वान् मवर्वाहाव एका व ह । दे ि পত্মে মূর্পমন্তে. দ্বাপ্তান॰ मकरे: । युः श्री शनावेला रः। भाष्ट्री इंडिसाझा । बर भर्मार्थः अनः ।रेशमरः। अकः । रेशि শব वक्तावं ली। १दियुवकामूव

পকার विलयः। १६ महत्र भनम् कितं उत्भक्त्रम् :। जातः । आहिः अभावितः । अभारे । हेवि रश्यक्ष : १५७००। भक्टे: भा किनी भारता यान स्कन्यन वन । अनुभः भर्दान राजा पूरिक नव इउधः। ३ छि ज त्र ः। छिन मह्यः । ३७ वाजानिवनः १ भक्ट्र ये च्रिकः । इडि एमहन्द्रः। भक्षेनाभाक्षि। मकरोश् स्वी तासिती नक्षयः ন্থা: পাপত তারা ময়নক টা্ক্জ্রিল্ শকলত ক্ৰী ইক।পত্ৰণৰাগ-वर् । दक्ति । रेजियपनी भाष्कण। अर्गि हेडि जसा। रेषि मकली मंद्रामग्रार। भक्तः। भः की नक्षमं ह পত্ত। যথা বিত্ত। মকল यता वा श्रुश्याली आ निया भारक । रेड) भव :। मकली र भू॰ मर्भाः इंगम्यः শকানকঃ পু॰। ইণ্নমাদিত,বাজঃ । ज्ञिका हाई. 'नकादः । श्रः वाद्यः अन् पायाः

भियाः ज्ञान । यथा। तर मूर्यनाञ्चानि मुक्कलेख्या मिंगू कि । स्मार्यम्हरा খুচা বাজ্ঞ; থাল: মকার ইত্যুক্তঃ माहिक दर्भात् भावे (एक् पः) নকাবিঃ প্রু বিফ্রাদিতারাজঃ সহু উন্ধ इनी (म्लाधिशिडि: यथा । मारमा कैं; भकाविः आदिकमादिञ रेञ्मि। रेडिम जिं। ध्र :। শক্ত্ৰণ । ক্লী শুভণ সি নিমিত্ত শশুৰ रेडि हिन्दी नाहा । रेडि मिलिनी। क नमक्षन । हेन बय भान :। अय छ नक्नानि।कीर्नाट्यवन छ दिलाकनार म्मर्थनार मर्माहिन्स निर्देश भारतियाम् अभाउव १। मन्नाय म्विष्टन्यम। पि॰ श्रवाम जदन প্রেশ-যো:। দ্ধ্যান্ত দুর্বাঞ্চত षूर्वकृष्टाः । मिकान्न । निकार्यकः हम्प नानि। आदर्भ मङ्गाभिष भीन मुस्मा ला दाष्ट्रमा लाम्य लाम हिले शेषी र्वान दीना कलजप्र श्री हे कुष्या अना লঞ্চার দাযুগিনি। তাসুল যানাসন दक्षमान शुक्तारुशव गुजनास्तालि শ্রমেন হসার সম্ভাবহি গলাগ

वाराः कुम छामदानि । वृज्ञानि छामी

कद काश्य जाभ बोक्षडको क्लोवश्यः

सूराम्छ। द्राञ्या नु विस्ताप

মেৰত মাজন্য পাথতাৰ প্রদিষ্ট । মন্ত্রেষ্ট্র কান रहव कार्य) भनाना ॰ इ ेपर । २०। मि मूक्षेर गनि कुर्वि पृष्टेः ० लिन। मङ्घित्नाक्राम वशिनि गुआनि दायः उरान्छ। मान्यात् भर्ड अथात्न मुत्रभूमधे वमाया वा मिन तक রুতা মিকাদি শশুণ वोषु । आमाग्र विक जनार्थी यपि वाज ९ त श्रुलन। श्रुलं ममापाय रामा यथा हुगर शि সদার ভাষা-ধন রজু কাপনি তুষা স্থি বিশ্বাং সাবস্ফার কৃষ্ণধান্য কেশা কুজ শৌষধাহি छड । एक व्या । विकि , जा अ° लवन ॰ इन्थ ला १९ थल हाक्ट वा कुछिलि॰सि मिल न क्षणाप शन म्यानन उत्रः इषित्रान शन স্বারান্তবাতা ধ্রম নং

শ্রম্ম বিশ্বং কথ্যকু গাইঃ मार्जात युकात्व म्लिना न के াటঃ উট্রুস্কার ধারকারক। ভিত্ত কালুপ্তা কর্থা সবর্ণ गञ्जः स्यान शक्तिश्ना स् पृष्टि भाव वापन भक्रीन মহার্থাদাসিঃ ক্থিতোদ্যমন্ত্র। एर्यात् त्मश्च भवः भवन्नः, वजः न दीर्घा मथवा दपाठि ॥ मधुस्रमा वर्षयना॰ सवाभा सन्तर्भन॰ १६० প্রবিশতাক্সাণাত্রবেরমেরী-ष्मिन सिर्गामाधारः त्रिक्ती (न न । मेरा श्राध्य र । हे जिले । शाएकि ए स्पादनः मैसूरं भन িয়ণ বাসরে। তোজন তর্তি ক্র বীপ্কিত্ততাস লাইত্রামদে হি गन्नः। होन रमञ्ज्ञ नाम्न विवादिनः छञार्गः। अय-नेवांकिन विष्युः। स्थानिशास्य ष्ट्रियाम् श्रावर् श्राम श्रावर र द्रु न न न न न । रेन कि । कि कि व শ্বিলাৰ সৰ্বে॰ফলং মূল শোল न या धरी हि। न वं जिन भाग उर रखना ला। राष्ट्र भना खी ষিদাপি প্রযাণে প্র বেদকা লে

ডকারাতি সিদিও। ব্মংবিকেশোহত मान भव्कि किन्ना के न ग्रान्य क पि ग्माः। यज्ञम्ता भर्वती कृप की मलाः चिला सम् अवाधराण्डा ही ता दिश् ইখ।বিশুজকেনা: কমেলকছা; भेत रेमहें उन्हाः। मन्नामि मारकन्त ने श्रुश्मकाम्या द्रिशाद्राः मन्दि भमीहि তেক্স । পৃথীপতি র্কাঞ্চাণ হম্ম মুন্তেন विशारुम्वी भ्रक्ष ; मुक्त भाः। नाष् न्त्राम्नास् द्धाविकाः प्रजाय दृष्टे। শকুনেত্দেষ্ট । কৃষণস্থাঃ কৃষ্ণ हिल्मनाणाः कृष्णिः मुज्ञः मुंजि विशावयनी। मृष्टा मत्काला यानि क्षरमा नाती नहि श्रिष्णा বারি । মেরমরা মের বিলেপা नाणा मानाः। जिञाः मृत्रिं वि धार्यन्ती। मुख्या शक्षा यपि ली त्वर्ण नावी नरेवः मात्रप्रि সিদিঃ । প্রতাত্পত্রঃ সুবিপ্রস্কা रामाः श्रेष्ट्रेणाचिकार न्यन थिकि। র্ম । নিশাবযুক্ত ; কুতভাগুলা दा दिल : श्रेष्ट्रिंग मर्विति न अञ्चलगक्षि यशाहियान सी श्रुक्षार्थेश्वा कलर्खः। সবর্ধ সমীহিত।সঙ্গি ববস্থা ৽তস্যা नवशा खंदक छित्वल । रे वि

বসন্তর্জ শকুনে নবাফি তেকিত मञ्ज्र । गण्डे नि पृत्व पूर्व मुख व वात्री हुनी (क्ना छ कू छ भाना। मर्ब খ্রির ম্মাপ্তিনরেশ হান্তা দ্যুত্তমা কুচ্চি বিজয়ায প্লুণ সাণ। দিস্গৈ বি वाया अहि हिन्नि जिनि एका प्यः भ्वक्रायनागः। क्व यामि 'छव माफा अयुग्जमा यार तस्तिर नार्थाः। १३ एणित्रारी पर्श दाका दिहा = দ্যামল ? रिनियां र्राशिलान जिये उन्ह ममल्ला वा द्वावान कर शक अत्य भी । डेग्र । डिग्र । डिग्र । না প্রয়ণ ভবত ভবেছুছি বিশা ञ्चा सम्बन्धिकाल वर्गमार्थ ्यां व य्युत्राल् क्षिक्षम्भा र्ड् हु ग्रीना समिलन श्रिला (ज जर हुए निवर्यनम । मृजू समाण इपितन गनुः। भिकि विश्व कार्य विश्वार् हे नि वमस्त्राज भाकूल न्वाकित्व डे म दन्ति अक्वभः । व्क हर् याक हेक हि हिंच का तुलव जाम जारकाज मयूर कार्येश्वल ला क्क भी हे जैक क प्लांक पार्टिस

कुरकुरे कलदिक जादनी माम ঐঞ্জুন কাক পিদলা রূপাণি শকুনানি ঘোটক র্থ মৃধ্বি श्रे ना मरिश्राम्ब मार्थ उक डेक्ट्रे क्राफ्युन्पती स्थिक . भाजकां र रानत मुभ वताह ছকলাস নকুন হান্দিক. দিপী দিকা পদ্মীকুকুরা पिकाम शक्रमानिक वमल वा जमाक्रत प्रधेयानि॥ इसि मनक संभाम बहेल प गत्र मश्राभागि गङ्गानि उन्रम् अष्टेमानि । শকুনঃ প্রত পক্ষিমাণ । পঞ্জি विष्म १: । भेरी हे जिथा जि । हेि। मिन्ने। कर्थभणेनी ালাঘাঃ জোন র্যাব্যঃ জ্যাঃ ई वि बीजा गर्ड । मुक्षे आयुर कत॰ घथा। वात्यश्मेत्रला २माविभ छि हरू :। रे नियम अवाजमाक् नः विश्वलिएः जाविवनं जागवाज डेक्ट्रीरेनू नेगिरिकायः। भी विल्यसः। ञ् ३९मर। दिश्च पक्तमार्थक्तर रेज्ञ प्रभात शास्त्रभाभी रेजि

भक्रकावली ग मर्न जा भी जिश्वी रे निका े अध्य ११ मक्न जा जिले थि। मर्बिः भ्रष्मि हेर्यम् शामिननः मह् को दव भाजूलः वताप्यकाम सर्द्रना अर्था के त्रवण रेंडि भाषिनी। उरक्रमाशक कलः . পর্লনধনহর্তা বঞ্চক কুর क्टिं : क्र्यूंड क्र्य्। ला ग्राह ভষামিপক্ষঃ। প্রতিশহ প্রদ্য वाम कछित : मानाया नवि यक्रानिजन्म मानवः मोद्दर्श रे कि रका छी अपी भः। हिल्ल शक्ती १ हे ति एक हन्युः। पुः मह श्रुवः। प्रथा। पुः महाथा। न्दर मधी निर्माष्टि ग्रम् মতঃ ৷ গাতা কলেস্কু পাপ্সার্য वाली हाछान पर्मनार निर्ध इ श जा गा नदन क्रम का भी नि যোদ্দা । এফৌ কুদারা: কথাশ্চ न्थाक्त्रजी जीसकाः। पन्या कृष्टि - सत्या जिल्हा भिर्दि व स्था भिर्देश শ্ৰন্থ কি নাতু নি শ্ৰেচৰ প্ৰপ্ৰান্ত্ৰ इतिस्था । ज्या श्रा भ्राः यथा। त्यान काक क ामाजा क মৃপ্রো লুকৌ চবে পুতাল্য

অবাপ শকুনিঃ পঞ্চ জগৃহ স্তান্ পুরা प्रताः । त्थन अगार् व मृद्रः कारुः कोला ग्रीज्वान् । उन्तक निभिनि मठामि जग्राहा हिन्दावर । गृथुआ श्रुफी स्माथ कल्पान्थः श्रुषण्यमः এতেষা মেব চৈবেওগঃ কুল পাংশ शशापाल । ज्यार त्यनापाया यथा निनीयत्व निन्धाय । तन -अव्यक्तियान भानः वर्षापिका उम्। पार् सर्वि खंख्याः তদুল্লীড় নিবেশ্নতা নশস্ত বৰ্জ যে দেশহত কাপো তাকাত মন্তক থ ম্যেনঃ কপোতো স্থোবা কৌনিকা वाम्राहाइजः। প্रविष्टे: कथ्युकुर्वे वम्बा॰ ज्य (वस्यमि ॥ भेपुक परि ठा जिस्मिर भारिक क्या ष्ट्रिजाउद्रा श्रुष्त्रिषि है क.भाजश हर्मन न श्रमम् रा हिंड मिक्छ्य श्राल इः महदर्भारम् जिनामाधायः । दिक्राकिश्रवः। ह्या। दिस्मनम्ना वामी। दिकाकुः शृथिरी शिविशाविशावन्य প্রমত ভাস্যাইকৃষ্ণি থের দিট্টা भार्याध्याध्यां विविद्धि विद्धि सम्भान्य एसक्राः। अर्विश्रूयाःश्री दिक्तिना दि। भरा हिन । ११ वि दि लेंबा (ये- धर्म व्याप्ता भारता भारता शायः॥

महाविष्यभा की शक्तिनः शातीनाना उर्कायः। कि शहः। देविश्वाः

महूनी की अमनकी रेडिराज -बर्ग किट रेरिकाहर्। अरु गर्म : रोडि

१न शुघ ः म

की हे जिस् । जाम शकी । हे हि सादिनी ।

मकुना सी मिकाभनः मू
विशामिता किना कना
माक सूमिना शिन्तालिन ।
मू॰ मन्नालन । प्रश्नितालिन ।
मू॰ मन्नालन । परितालिन ।
प्रश्नितालन । परितालिन ।
प्रश्नितालन । परितालिन ।
प्रश्नितालन । परितालिन ।
प्रश्निता । मकुन्नानि नामाप्राः क्रिया । प्राः म्रां भएल
प्रभामि भुष्य या (यञ्च क्राव्य)

नकु त्रताज्यकः। शेते व्यक्तः मक्तिः सः भाक्षमागः।रेश्मंतः जात्र भक्षी हेजूलापि काषः। শকুল: यु॰ भरम ।देला ४ ः। मडेल. इं छि अशा ईंग भ्वः १ अन्यायनाः। प्रश्वयः। तक्तवः পাহিষ্ট্রণ। পি রামানিষ্ট্রণ শক্ত का इंडि ता ज व ल छ । । मक्लगनः श्रुः भानम्पाः। ই চি শিকাণ্ডলেম্ব গ্র भकुताम्भी श्वी छकाङ्गी।कूछ की हेि जिसा हे जमरः॥ क श्री भाकः। काष्टाप्र रेनिमधा । रेनिसामनी ॥ मा॰ भी। कि श्रुवालका। जल लिलाली। करेकनः। र्न विसः। श्राम्यम हिन ब्राज निर्वरिः। शक्रमाउंकः। स्रः गडकंमरस्र हेडि अम्ब ३। भक्ताककः वर त्याम्वर्ग रेग्रम् ।। भक्ताकी भी गन प्रति रेष्ठ राज निश्ने ।

भक्ती औ मरम विल्पवः।

म्गाल रेडिनया मराकुल

শ্ৰুক বী

रेडि कि हिर । अशा आकाता ग्रमान्छ । मकूनी हाल्डिका राष्ट्रामां व्यायम्हर जानी । अवर्षी व्याक्ष मधूबा जिल्बा पाष का व्याप मक्ती होई ह व्याव श्रमा । हेडि वाक्ष वृद्ध इ श्रमाव हो ।

भक्र की विष्टा रेज मंत :। भक्र रक्षिः श्रुषो वरमः। रेज मयः। पत्रापि विज्ञ विकारिनामः।

মহৎকাবঃ ত্র মনত্যাসকা রক্ষণ মহৎকরোণী তথে শহৎপদ্মাৎ হু পাতোঃ মণ্

मान्यस्य । विकास

শক্ষাবণ্কী মল দ্বৰণ তৎ শ ফারঃ ক্রাপনণ পায়ু: ৩ মদণ ৪ ছুতিঃ ত অধোধশু ড তিবলীকঃ ৭ বলী ৮ ই তি.

विमहन् ।।

भव्द्यः श्रः श्रः। देवि वि

भकर ती : सी हिन्ता उप है। निवादः। स्मिना। हे वि सिनिनी। माह ममद् १ यिहे . मेरिकेट निवाद क्षेत्र हुन्मी

षहरूमः । यथा । - हर्गाञ्र्गा उथा मशा थ विश्वाका मुश्रुक्ति , था तक्रीकुर धन कुले ह रेड ब्रे भिष्ठित्वच । भिष्ट्रभाष्ट्रवि - अगे बी देवव ज्या विजागी बना। मक्क्री माजिध्वर्राभ्यारक्षी क्रियाम्ब । श्रीविक्यविश्व । ही कृषि बीकृष्ट । बीक् करण । विकृष्टिः म॰कृष्टि महानि उर्थ किया विभरक्षिः। हेका थाः महाक्षानां हिन्द्रभा॰ करा भः क्राः। उग्रध म्बाक्षु भाग मश्रह्मा भिष्ठि। विषा नामानि भनागः ध्या।मा लाला भी इश्र नयां वस्याधाः জ্যেণ বসন্ত্রিনক ত্রজাজ লী भः।रा नन तमल मूर्भः श्रीतृत প্ৰজিতা। । নম্ভ নল গিটি शहरानकानिका। ८। मसाना भागो र्यापे गाप् वा रामछोयः विः तथाहिपि त्नाला मि जो भी लो ज्वल (४९। । अत जिपि यपितो जो ह गान्धीय नीय । रेडि एत्या मस्ती। अञ्या मूतार्वतानि वायल्यांचे। (न।अति।। न्छः वि निष्ठितिन्धः। तमर्यः।

उत्पर्यायः प्रदःश्वाः । श्रमः । श्रिष्ठाः । हे हिन्दू रुद्धः । श्रिष्ठाः । हे हिन्दू मुद्धः । श्रिष्ठाः । हे हिन्दू मुद्धः । श्रष्ठ् हे हि ज्ञासा। यथा शानाकुष्ट्यात ज्ञास्त्र । श्रम् । श्रम् ज्ञी हि नभूग ज्ञान्यान । ज्ञाना । व्यान्त्र । श्रम् । श्रम्म । श्रम् । श

मिछिः श्री कायजनन माम र्श यथा। या पिती मर्स्ट्रेल्क्र् मिछि बालान मर्ग्छेन। देनि पितीमा दाद्यामा हीकायाँ नालाजीन्द्रे स्काल जन्द्रम्या। मा श्रून-वारमार मण्ड मन्या। मा श्रून-वारमार मण्ड मन्या। मा श्रून-वारमार मण्ड मन्या। काश्रम् उन श्रून्ट्रमायकश्रा कायम उन्न श्रुन्ट्रमायकश्रः कायम मन्यापिताः मामोत्रीनाथः यथा वन्हान म्यापिताः प्रामित्रक्रा वन्हान म्यापिताः प्रामित्रक्रा वन्हान प्रयोगः। प्रवितः रज्वन म दः इत्न विकास । भावान स्वाम् म्याजमा । भावान स्वाम्

मवः। सम्भ १० मर्॰ १२ हे जिभस्त्रात्ली इंसर्: १० होंडे अह। १३:। कामुः। माङ् भवर्तना नामार्यः। रेडि नानार्थ अमन जबला। भो दी। रेडि प्राप्ति। मध्यी रेडिमङ्माला। विम्ङधामणा। এश विभिन्ति कामिक्यो नय मित्रानुभा ।भिनी। अशालका श्रा मृष्टि: मा-विकी श्रममः मिना। यथिव वका বজাস বৈষণনী পাৰকী নিজা এ ধিব कृष्ण जमि दोधी प्रवी ध्रक्षिण। भवमान्या यथा प्रता अक १ वर्षिश भिनः। भ्रायाजन वन्नाका छित् रेकव विशा जन । हे जिन्हा दिलिक माराञा नामाशायः। आश्रट। विन्दुः নিবানক শুক্র বীজ পণ্ডাাত্বক পুত ठिया र्याल जल नाम ए खानानो क्रिमक्यः। रेबि कियामातः।अ नांक्ट। इंच्हा किया कथा फ्रान लोनी वाक्षी इ विकवी । विश्व मिक्क । প্রভাষ্কর ভব পর ৷ ক্ষেত্রি রাষ্ট্র इंडि लात्का म॰हिंग । अध्येष अत्या यथा। हेन्त्रानी रेवक्षती ना डा शक्ति। क्लावादिनी कोग्री नातामि॰शैष्ट नातारी भरामाया जित्री जीत-तामिनी । आपशेष =

শক্তয়ঃ সবর্বা রখস্থাঃপ্রয यू मदा । हे हि नुका विकर्त बीक्षण न म भए वानयुष्टी नीम >> २ अभाग । न्यम भुअत्या यथा। ज्य शास्त्राह्य ष्ट्रेम्ल म्राधार उछिन् भ्वर्वकः रिक्थ नी थिय न्याती : वोजी॰ गार्स्यवी॰ ज्या ॥ नातामि॰शैषे नानारी भी द्या नी॰ कार्डिकी "ज्या मवर्र भों उर्क्षिणार्थे अधानाः मर्व मकीलाः । नव मुकीकः प्रश्रु चरि (पर्वा॰ क्ष शुजाबर । रेडि व्यादिव हा अकृष्टि भाषा ५ अ भागः। भश्यनिष्ठभुवना यथा । नीरिः गतिः । कुष्टि श्रूष्टी शृहिः महिष्किया ন্যা।মেধা সহর্ষা একাপার জনা নশ্মীঃ সরস্থতী প্রীতিবতারমা প্রোক্তা কমেন স্বন্জয়াজ যাদুর্সা প্রভা সত্যা হলাবানী विनामिनी । विद्रा विजया विया विनमा सूनमा ऋषि शका कि इम मानि सानिभाजि म्हिम् हि क्रमा। उत्मामा क्राहिनी किन्न

रश्रूल रश्रूश भरा। भराभराष्ट्रणा मुख्या मन्या अञ्चा अञानिमा। य भोवा विष्ठा एकि शक्यः म सर्वाभणाः । । जाः विश्वमार्केन् । चिष्रभाः माध्यग्ननमः। । विष्रुपामम मानाकः अर्कजाञ्च वार्वः। प्रथण मक्षमभ्रयः।यथा भित्वाप्री भाषित्जा भानमली जप्रसर्गः। लामाकी वर्षमाकी ह पीर्धाशानाम बी।हिंडा। मधीर्वबूची लामुल्णो = দীর্ঘ দিব্বাত থকত কুলোদরা সকে त्यो हुड्या विक्रुम् थामि। अलिमूबी ত্তান্তে যা পশ্চা দুল্ম মুখী ভতঃ। म्बोभूगी ६व विषामू एगाः य त শক্তয়ঃ। মহাকারী সরস্থাতী সবর্থ मिनि ममविक । भोरी धलार दि দাস্যান্যশ্রানি প্রিক্তঃ প্রবংশকা দক্তি ইত মাত্রতনা দর্যাধ্রী স্মৃত্য। पविनीनाभरी ज्यः त्याप्ती णामि म ঞ্রী রূপিনী চিত্রনী প্রমাংকাকা एय मि श्रूवना। शास्य काली यागित्ने मध्यन गार्सिनी ज থা ৷ কাল বাফিশ্চ দাব্দিন্যা ক भार्मिन्नि कर्ष्या। जया ए सूसू त्याच्यकी (ववडी माधरी कडः ।

শক্তি

बाक्ती वार्षकी त्याका भन्हाफ. क्षा विपादिशे। उठ के महजा तुक्री जिल्नी ग्राययां विका । यञ इन्पाइनीके सी भिन्न वादन्य वि গ্রহাঃ বিজ্ঞাৎপর কপালাত্যামল কৃতক্রামুজাঃ।ইটি প্রপথ্য দারঃ कूल मक्रायायथा। मुक्रमः भरमा मानि विक्रमाः मवर्याधिनः। नरी कालानिका (क्या बालिनोक्क्र लिनी। जायानी हरूनानी हर्ड़िकी गानिगर्मना । (यागिनी लागिनी , শ্ৰন্থা প্ৰাপ্ত কৰা । কা তাজনাচ দেবেলি নথব নগুকা বিনী এতা: প্রত্রিশ ত : কথা দে वानामिष्ट्रिंग। रिप्रकाग्राश्वा माए ज्या मा॰ मा भ्रा विनी। विका ए जदनी (एवि ज्या समभमाविनी (वन्गा छ्नार्सिश व्याउन। विविश् कृत्रालिने। वीवती। दिविशा व्याका जीयय भागिका दिना। द्रायका दी दिशालाउन डियर लामिनी मु তা। বোসক-যা থিয়াদেবিকথা ज्या का ठाइना लिया। वाह विषा किना (पविक्या अवनी विविधा শ্বতা। প্রের্ডোরি দাইকএচ इ: यक्षिणे नुक्रयः । रेहिद्विकी

उत्यञ्बदिन शस्त्रास्त्रिष्ट शर्थाण বেল দেবে মি কুল নক্তি প্রাণ্থ্র্রিয়েং नहीं कालानिनी विण्या रशकी नाभिगद्रना खाअनी स्परन्थी ह ज्या ला भानक न्यका भाना क्रमण क्रमा न्यक्रमाधिकी । विलय विषय् मर्की २४ कूमार्ह्रमाश क्रा यो वन मम्भना भीत लोजाण भातिनी । शूजनीयाययञ्चलन ততঃ দিদি ভবেংগ্ৰুৰণ । ইতিয় स्रमाव्ड (ग) अहलः। उन्या न्नर्भ यथा। भोकुः धुना महिनानि ममार् भवक्षे कः। শাজিয়ু खता यमा पिति नितार সবর্বনামদঃ। শক্তিযুক্তা জলে-ম অ॰ নম অ॰ কেবল ৽ দপে ংসা विगीमहिला श्रा। विलास्त्रग निमि । हार्वकाः क्रि (पवः मिलारे हु ९ मन या मह विशा की हवर्मकां यम। मिलिर वैवानन প্ৰথােশ্য মহাদেৰি কেবল ॰ শন্তিয়ে।পৃত্ত । পৃক্তিরোথে। प्राविभ यपि। मिलिनं जायक उरित मेश्रमानिममवाकु হথাভবেং।যদ্ও দলগণ্ডুর্ম প্ জি

শকুলী দ্রী মৎস্যবিশেষঃ। মৃগাল্ ইতি ভাষা। মহাশঙ্গল
ইতি কেচিৎ।। অস্যা আকারো
গুণাশ্চ। শকুলী রোহিতাকারা
ভূমৌ প্রায় শ্চরত্যসৌ। গুৰীপাকে চ মধুরা ভেদিকা দোষকোপনা।। ইতি রাজবল্লভঃ।।
পুস্তকান্তরে শকলী ইতি চ
পাঠঃ।।

শক্তৎ ক্রী বিষ্ঠা। ইত্যমরঃ ।।
শক্তৎকরিঃ পুণ ন্ত্রী বৎসঃ ।।
ইত্যমরঃ ॥ দন্ত্যাদি রিতি বিদ্যাবিনোদঃ ।।

শক্তৎকারঃ ত্রি মলত্যাগকারকঃ
। শক্তৎকরোতীত্যর্থে শক্তৎশকাৎ ক্রধাতোঃ ষণ্ প্রত্যবেন
নিপানঃ।।

শক্ষ দ্বারণ ক্রী মলদ্বারণ। তৎপর্যায়ঃ। অপানণ ২ পায়ুঃ ৩
তদেও চ চ্যুতিঃ ৫ অধামর্মা ৬
ত্রিবলীকঃ ৭ বলী ৮। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

শক্করঃ পু॰ বৃষঃ। ইতি ছেমচন্দ্রঃ।। শক্করিঃ পু॰ বৃষঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ।।

नकती खी इत्मार्छमः॥ नमी-र्छमः॥ यथना। इति स्मिनी

।। সা চ সমবৃত্ত ষডিব শতিচ্ছন্দো উক্থাত্যুক্থা তথা মধ্যা প্র-**ञिश्वा मू**शृर्दिका। गायल्यकि-গনফুপ্চ বৃহতী পঞ্জি রের চ।। ত্রিফুপ্চ জগতী চৈব তথাকি জগতী মতা। শব্ধরী সাতিপূর্বা-স্যাদফ্যতাফী তথা মতা ।। ধৃতি শ্চাতিধৃতি শৈচব ক্বতিঃ প্রকৃতি বারুতিঃ। বিক্লতিঃ সংক্রতি শ্চাপি তথা চৈবাতিসৎক্রতিঃ।। ইত্যাদ খ্যাঃ সমবৃত্তানা ছন্দ্সা জমশঃ ক্রতাঃ। তত্র চতুর্দশাক্ষর পাদ সপ্তছন্দাণসি সন্তি। তেষাণ না-মানি গণাশ্চ যথা। যো গো গো নৌ মঃ শর নবভি রসম্বাধা । ১। জ্ঞেফ বসম্ভতিলক ত ভ জাজ ली गः।२। न न त म लघु टेगः ষ্ঠরৈ রপরাজিতা। ৩। ন ন ভ ন ল গিতি প্রহরণকলিক। १ 8 1 মস্তো নো মো গৌ যদি গদিতা वामञ्जीयः। ६। दिः मश्च ছिनि लाना स्मा छो गी हत्। চেৎ। ৬। স্বরতিদি যদি নৌ তৌ চ नाम्भीम्थीय[•]। १। ইতি ছटमा-मक्षती ॥ ं अटिया मूना इत्र नानि वा-र्गाज्या ताकानि॥

শক্তঃ ত্রি শক্তিবিশিষ্টঃ। সমর্থঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। সহঃ ২ ক্ষমঃ
৩ প্রভুঃ ৪ উফুঃ ৫। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। প্রিয়ম্বদঃ। ইতি শক্ত শৃক্ষীকাষাণ স্বামী।।

শক্তবঃ পুতৃত্বি ভুক্ষবাদিচূর্ণ । ছাতৃ ইতি ভাষা। যথা। থানা-ভুক্ষববে ভূমি স্ত্রিষাণ পুত্রিমি শক্তবঃ। কেচিত্র শক্তৃ রক্ত্রীতি বন্ধুরা ভূমনি স্ত্রিষাণ।। ইতি - জটাধরঃ।। অস্য বিবরণণ শক্তু-শক্ষে জফব্যণ।।

শক্তিঃ স্ত্রী কাষজননসামথ্য ।
যথা ৷ যা দেবী সর্বভূতেমু শক্তিরূপেণ সংস্থিতা ৷ ইতি দেবীমাহাত্মাস্য চীকাষা নাগোক্তীভটঃ ৷৷ শক্যতে জেতু মন্য ৷
৷ সা প্রভাবোৎসাহ নম্ভজ ভেদান্তিবিধা ৷ তত্র প্রভুত্ত্ব সাধকত্বাৎ কোষ দণ্ডে প্রভুশক্তিঃ
১ ৷ বিক্রমেণ স্বশক্ত্যা বিস্ফুরণ
মুৎসাহশক্তিঃ ২ ৷ সন্ধ্যাদীনা গ্রীনাঞ্চ যথাবস্থান মন্ত্রশক্তিঃ ৩ ৷৷ সামর্থ্যমাত্র ৷ তৎপর্যায়ঃ ৷ জবিণ ২ তরঃ ৩ সহঃ
৪বল ৫ শৌর্যাণ ৬ স্থাম ৭ শুমাণ
৮ পরাক্রমঃ ৯ প্রাণঃ ১০ ৷ ইত্য-

यतः ॥ रख्य ३১ महः ३२ । ইতি শব্দরত্বাবলী।। উজ্জঃ ১৩। ইতি জটাধরঃ।। কাসূঃ। সা তু শর্বলা-नामाञ्ज । देि नानार्थ अमत्र ভরতো ।। গৌরী । ইতি মে-पिनी ।। लच्चीः । **ই**তি শব্দমাল। ।। 🟶 ।। जिन्नक्रिया यथा। এया ত্রিশক্তি রুদ্দিষ্টা নয সিদ্ধান্ত গামিনী। এষা শ্বেতা পরা সৃষ্টিঃ माषिकी बन्नमः किछ। ।। এবৈব -রক্তা রজিদ বৈক্ষবী পরিকীর্ত্তি-তা। এ ষব ক্লকা তমসি রৌ জী দেবী প্রকীর্ত্তিত। ॥ পরমাত্মা যথা দে:বা এক এব ত্রিধা স্থিতঃ । প্রযোজন বশাচ্ছক্তি রেকৈব ত্রিবিধাভবৎ।। ইতি বারাহে ত্রি-শক্তিমাহাত্মানামাধ্যায়ঃ ৷৷ 🟶 💵 অপিচ। বিশুঃ শিৰাত্মক স্তত্ৰ বী-জ॰ শক্ত্যাত্মক॰ স্মৃতং। তয়ে। র্যো-গে ভাবন্ধাদ স্তেভ্যো জাতা স্থ্রিশ-ক্তয়ং ৷৷ ইতি ক্রিষাসারং ৷৷ অন্যচ্চ । ইচ্ছা ক্রিয়া তথা জ্ঞান' গৌরী বান্ধী তু বৈক্বী। ত্রিধা শক্তিঃ স্থিত। যত্র তৎপরণ জ্যোতি রো-মিতি ।। ইতি গোরকসংহিতা।। ॥ অফশক্তযো যথা। ইন্দ্রাণী दिकवी भाषा बकानी बक्कवा-

मिनी। को मात्री नात्रिंगिशी ह বারাহী বিকটাক্তিঃ ৷৷ মাহেশ্ব-রী মহামাষা ভৈরবী ভীরুৰূপি-ৰী। অষ্টে) চ শক্তয়ঃ সৰ্বা রথ-श्वाः श्वरय मून। ।। देकि बन्नदेव-वर्त्त बीक्रकजगशर वागयूका नाम ३३२ जशायः ॥ क्ष ॥ नत्न-ব্দুযো যথা। তত্র পদ্মে চাফদলে मरश र जिल्लशृर्दक । दिंख-वीरक्षत बन्नानी॰ द्रोजी॰ माटह-শ্বরীণ তথা।। নারসিণ্ছীঞ বারা-शै मिखानी॰ कार्जिकी॰ उथा। **गर्बग**क्कियकणाय প্রধানা गर्ब-यक्रना ॥ नवम्की क मःभृका घटि प्रवाण्ट शृक्षरय । इंडि ব্ৰহ্মবৈৰ্বৰ্ত্তে প্ৰকৃতিখণ্ডে ৬৯ অ-খ্যায়ঃ ॥ 🛊 ॥ পঞ্চাশদ্বিফুশব্দ-বে। যথা। কীৰ্ত্তিঃ কান্তি স্তব্টি পুकी धृष्टिः मास्टिः किया मया। त्यथा महर्स। अका माहका ल-শ্বীঃ সরস্বতী ॥ প্রীতী রতী রমা প্রোক্তাঃ ক্রমেণ স্বরশক্তযঃ। জ-ৰা দুৰ্গাপ্ৰভা সত্যা চণ্ডা বাণী বি-मानिनी ।। वित्रका विकया विश्वा विनमा जूनमा चुिः। अकिः ज-মৃদ্ধিঃ শুদ্ধি শ্চ জক্তি মুক্তি মডিঃ क्या १। त्राया क्रिनी क्रिका

वमूमा वमूधा भन्ना। भन्ना भन्नायंगा সূন্ধা সন্ধ্যা প্রক্তা প্রভা নিশা।। অনোধা বিদ্যুতা চেতি শক্তৰঃ সৰ্বকাৰ্মদাঃ। এতাঃ প্ৰিয়তমাকেযু नियक्षाः मिक्काननाः ॥ विम्नुमान ম সমানাস্যঃ পদজাভ্য বাহবঃ ।। ৠ।। পঞ্চাশক্তদেশক্তবো यथा । खरनामती मामित्रका नामानी **जनगर्वतः। लालाकी वर्ज् लाकी চ দीर्घरवाना ममीतिञा ॥ मूमीर्घ-**मूथी शामूरथा भीषि कि स्व। उरेथ--ব চ ৷ ঙ্গণ্ডোদ ৰ্ব্যব্ধকেন্দ্ৰোট চ ভথা विक्ठमूथाणि ॥ बानाम्थी ए-তো জ্ঞেয়। পশ্চাদুক্ষামুখী ততঃ। मूबीमूथी टेठव विष्णामू त्या छाः य-त्रभक्तयः ॥ यहाकानी मत्रस्राह्यो সৰ্বসিদ্ধি সমন্বিতে । গৌরী ত্রৈ-লোক্যবিদ্য। স্যান্মন্ত্ৰসিদ্ধি স্ততঃ পর্নে।। আত্মশক্তি ভূ তমাতা ত-,থা লম্বোদরী স্মৃতা। জাবণী না-গরী ভূষঃ খেচরী চাপি মঞ্জরী।। • ৰূপিণী চিত্ৰিণী পশ্চাৎ কাকো-**দ**र्याणि शृञ्जा । माा खज्जा नी यागित्ना गिधनी गिकिनी छ-था।। कानताविक अक्तिना क-शर्मिनाशिं वक्त्या। क्या ह नूम्-খেশ্বর্যা রেবতী মাধ্বী ততঃ।।

বাৰুণী বাৰ্ষবী প্ৰোক্তা পশ্চাত্ৰ-क्लातिमातिनी। ७७० महका नची वंगिरिनी बाययात्रिका ॥ এতা রুজান্ধ পীঠস্থাঃ সিন্দুরারুণ বিগ্রহাঃ ৷ রক্তোৎপল কপালা-ভ্যা মলস্ত করাযুকাঃ ॥ ইতি প্রপঞ্চারঃ ।। 🟶 ।। স্বশক্তযো ষথা। শক্তযঃ পরমেশানি বিদক্ষাঃ नर्व रगिषिङः। निंग कार्णालिकी (त्ना मानिनी अक्रमानिनी।। **চাঞালী চ अ**लाली চ त्रक्रकी ना-পিতাঙ্গনা। গোপিনী ষোগিনী শুদ্ধাব্রাহ্মণী রাজকন্যকা।৷ কো-চাঙ্গনা চ দেবেশি তথৈব শঙ্গকা-রিণী। এতাঃ ষড়ি॰শতিঃ কন্যা দে-वाना यि मूर्वा ॥ रेमवङ्गा वराध-বামা চতথা মা॰সাপহারিণী। বৌ-্জা চ জবনী দেবি তথা রসপসা-রিণী।বেশ্যা চতুর্বিধা প্রোক্তা দি-विधा क्षूमानिनी। धीवती विविधा প্ৰোক্তা তথৈব গণিকাঙ্গনা।। কু-স্করারী দ্বিধা প্রোক্তা তথৈব গো-शिनी चृछा। वाछरवनगक्ता (न-वि कवनी बिविधा चृठा ॥ वोक-কন্যা ত্রিধা দেবি তথা কোচাঙ্গনা প্ৰিবা। পূৰ্বোক্তাভিঃ সহৈকত্ত চ-তুঃষষ্টিশ্চ শক্তৰঃ॥ ইতি ব্লেবতী

তত্ত্व ७ भट्टेनः ॥ 🕸॥ जिभ्छ। भ-ঞ্চাচারেণ দেবেশি কুলশক্তিণ প্র-शृक्रस्थ । नषी काशानिकी त्व-শ্যা রজকী নাপিতাঙ্গনা ৷৷ ত্রা-ন্ধণী শূক্তকন্যা চ তথা গোপাল কন্যকা। মালাকারস্য কন্যা চ নব কন্যাঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ ৷৷ বিশেষ বৈদগ্ম্যযুতাঃ সৰ্বা এব কুলাঙ্গনাঃ । बन योवन मन्त्रवा भील मी-ভাগ্য শালিনী।। পূজনীয়া প্রম-ত্নেন ততঃ সিদ্ধি ভবেৎ ধ্রুব । ইতি গুপ্তসাধনত্ত্ত্ত্ব ১ পটলঃ॥ *।। তদ্যাঃ প্রশংসা যথা। শক্তি॰ বিনা মহেশানি সদাহ শবৰূপ-कः। শক্তিযুক্তো यमा দেবি শি-**ब्लाह**॰ गर्बकायमः ॥ শক্তিযুক্ত॰ জপেমন্ত্রণ ন মন্ত্রণ কেবলণ জ-পেৎ। সাবিত্রী সহিতো ব্রহ্মা সিন্ধোভূমগনন্দিনি ৷৷ দ্বারব-ত্যা° ক্লফদেবঃ সিদ্ধো ২ভূৎ সত্যযা সহ। তথা কোচবধু স ঙ্গান্মম সিদ্ধি র্বরাননে। ঈশ্বরো-হু মহাদেবি কেৰলং শক্তি ষো-গতঃ।। শক্তি যোগেন দেবেশি यि ि निष्ति नं जाया । उत्पव **পর্যেশানি মম বাক্য**े वृ**था** छ-त्र ।। यक्क जनगणूर्य भक्ति

बर्क्कु मूरत्रश्रति । मिस्नू बर्गः गरह-শানি ভজ্জল নাত্র সংশযঃ।। স্বীষেফদৈবী ভাবেন ভোজ্বে-ত্তাঞ্চ ষত্নতঃ। শক্তিশ্চ কথ্যতে प्ति नृन्ध मूत्रमूखि ॥ ज्यान-শাবদাদূর্দ্ধু যা পঞ্চবি শতি বার্ষি-কী। অপ্রসূতা বিশেষেণ পঞ্চমে-পি ভবেৎ প্রিষে ।। সুন্দরী তুবি-শেষেণ প্রসূতা বাপ্রসূতিকা। অবশ্য পঞ্ম কুর্য্যাই শক্তি মাত্রে মহেশ্বরি।। ইতি শক্তিকা-গনসর্বসং॥ 🗱 ॥ তস্যা উৎপত্তি माराक्यानि यथा। नातायन উ वाह। मह वृक्षा वृक्षिन एका न व-ক্তু মুচিত সুরাঃ। সর্বে শক্ত্যা-লয়া বিশ্বে শক্তিমস্তো হি জীবি-नः ॥ बक्षांनि ज्नशर्याखः मर्बः প্রাক্ততিক• জগৎ। সত্যং নিত্যং বিনা মাঞ্চ ময়া শক্তিঃ প্রকাশিতা ॥ আবিভূতা চসা মত্তঃ সৃষ্টৌ-**(**क्वी यकी इया । ठित्ता है छ। ठ সা শেষে সৃষ্টি সংহারণে মযি।। সৃষ্টিকত্ৰী চ প্ৰকৃতিঃ সৰ্বেষাণ জননী পরা। মম তুল্যা চ मंग्राया তেন নারাযণী স্মৃতা ৷৷ সুচিরঞ্চ তপ স্তপ্ত শস্তুনাধ্যায়তা চ মাণ ৷ তেন তব্মৈ মধা দত্তা তপসাণ

ফলকপিণী।। ব্ৰতঞ্চ লোক শি-ক্ষাৰ্থ মস্যান স্বাৰ্থ মেব চ। স্বয়ণ ব্ৰতানাণ তপসাণ ফলদাত্ৰী জগ-ল্রবে।। মার্যা মোহিতাঃ সর্বে কিমস্যা বাস্তব ব্ৰত । সাধ্য ম-স্যা বতফল কল্পে কল্পে পুনঃ भूनः ॥ भूदम्यता यमः भाग्ठ बक्त বিষ্ণু মহেশ্বরাঃ। কলাঃ কলাণ-শৰূপা স্তে জীবিনশ্চ সুরাদ্যঃ॥ मृ मा विना कूनान क घरे॰ कर्जू॰ यथाक्रमः। विना वर्षः वर्षकातः कू ७ व॰ कर्जू सक्तमः ॥ विना न-জ্ঞ্যা তথাহঞ্চ স্বসৃষ্টিণ কর্ত্তু মক্ষ-यः। শক্তি প্রধান। সৃষ্টিশ্চ সর্ব দর্শন সম্মতা।। অহ মাত্মা চ নি-লিপ্তো ২দৃশ্যঃ সাক্ষী চ দেহিনা• । দেহাঃ প্রাকৃতিকাঃ সর্বে ন-শ্বরাঃ পাঞ্চভৌতিকাঃ ৷৷ অহণ নিত্যশরীরী চ ভানু বিগ্রহ বি-গ্ৰহঃ। সৰ্বাধারা চ প্রকৃতিঃ সর্বা ত্বাহ জগৎসু চ।। অহ মাত্বা ্মনো বন্ধা জ্ঞানৰূপো মহেশ্বরঃ । পঞ্চপ্রাণাঃ স্বয়ণ বিকু বুদ্ধিঃ প্র-ক্লতি রীশ্বরী।। শক্ত্যো নিদ্রাদয কৈচতাঃ সৰ্বাশ্চ প্ৰক্ৰতেঃ কলাঃ ৷ সাচ শৈলেন্দ্র কন্যেষণ ইতি বে-দনিকপিত ।। ইতি बन्नरेवदर्ख

शर्वनाथर् १ व्यथायः ॥ 🟶 ॥ व्य-शि **ह**। मा भक्तिः मृखिकात्व ह शक्यां टिचदतष्ट्या। ताथा शया চ माविजी मूर्ग। (एवी मत्रयूठी।। व्यवाधिष्ठाञ्दां या क्रक्तमा शत-মান্থানঃ। প্রাণাধিক প্রিয়ত্যা সা রাধা পরিকীর্ত্তিতা।। ঐশ্বর্যাধি-श्रेष्ट्राज्या गर्वभक्त कार्तिनी। श-त्रगानमक्षेणा ह मा लच्चीः পति-কীৰ্ত্তিতা। বিদ্যাধিষ্ঠাতৃ দেবী যা ় পরমেশস্য দুর্লভা ।। বেদশাস্ত্র যোগমাতা সা সাবিত্রী প্রকীর্ত্তি-ত। । वृक्षािशश्रिश्राष्ट्रमवी या मर्बन-ক্তি স্বৰূপিণী ৷৷ সৰ্বজ্ঞানাত্মিকা मर्बा मा पूर्गा पूर्गनामिनी। ता-গাধিষ্ঠাতৃদেবী যা শাস্ত্রজ্ঞানপ্র-मा मना । क्रयक्टिश ख्वा या ह मा ह दिवी मत्रुषठी शक्षशास्त्री স্বয়ণ দেবী মূলপ্রকৃতি রীশ্বরী॥ ততঃ সৃষ্টি ক্রমেণেব বহুধা কল-ষা চ সা। যোধিতঃ প্রকৃতে রু-শাঃ পুমা॰সঃ পুরুষস্য চ। ইতি চ बक्तरिवर्त्छ গণেশখণ্ডে ४० च-ধ্যায়ঃ ৷৷ ৠ৷ বন্ধাণীশক্তৃ ৎপত্তি ৰ্ষথা। ততো ব্ৰহ্মাদযো দেবা ভ ষ॰ জগ্মঃ সবা সবাঃ। যদি স্যাল্লি-**क्किं** छ। एतः क्षयः गर्विपितोक-

সাণ। ত্রতন্মিমন্তরে শক্ত বন্ধা চিন্তযতে ক্ৰিযাঃ। স্ত্ৰীৰূপধারিণী ভূত্বা সহাযত্ব° মহেশ্বরে ।। ক্ষি-প্র॰ সরু স্বকার্য্যেত্ব॰ এব॰ বিশ্বে-শ্বরে রণে। ততো দ্যোতিত্বান পমুঃ স্বশক্তি॰ কিরণোত্বলা॰ ॥ ব্রহ্মৰূপধরা কিন্তু ললনাকার বিগ্রহা । হ সস্যন্দন মারুচা चित्रीयायूधधातिनी । टब्र्झ्यछी মহৌজেন দানবানাণ ভয়ণকরী া। তস্যা ঘোরাণি কর্মাণি দৃষ্ট্রা म विश्वयन् मिवः। का भूनः मु-ষ্টুঃ সুমেহা সদাতিপ্রতিপক্ষজিৎ ।। তमाः শক্তি॰ षिठीयां मृ-জামি অপরাজিতা । ইতি দে-বাপুরাণে রুরুবধে ব্রহ্মাণ্যৎপ-जिः ॥ **#** ॥ ननाठीर्थ শक्कि মন্ত্র বিচার নিষেধাে যথা। যো-मावनामि मधाञ्ज मिन मञ्जि-মযঃ পরঃ। তদ্যৈব পরমানন্দা मर्विविषय नामिनी ॥ ७९ প্র-ভাবেণ প্রাপ্নোতি তপো যজ্ঞা-দিক ফল । মন্ত্রাণা দেবশক্তী-না' ন'বিচারো বরাননে।। ইতি দেবীপুরাণে নন্দাঙ্গগুপ্রবেশঃ প্র-थमाधायः ॥ 🕸 ॥ श्रह्मा उद्गा । প্রধান প্রকৃতিঃ শক্তি।নিত্যা

শক্তিহে

চাবিক্কভি স্তথা। এতানি তস্যা নামানি পুরুষ যা সমাশ্রিতা।। তদ্যা গুণানাহ। সত্ত্ব রজ স্তম স্ত্রীণি বিজ্ঞেষাঃ প্রকৃতে র্গুণাঃ। ইতি ভাব 🗬কাশঃ।। ৠ। শক্তি-বিষক পূষ্পাণি যথা। অথ পূষ্ণ প্রবক্ষ্যামি কর্মযোগে মহেশ্বরি। শূণুষ পর্যা ভক্ত্যা যথোক্তণ ব্র-क्रां भूता।। क्यां क्रत्रीरत एव ঙ্গসুম্ভেত্লসীদ্বয়ণ। জাত্যশো-কে কেতকীদ্বে সমারী চম্পা-কে। পলে।। জন্দ মন্দার পুনা-গ পাটলা নাগ চম্পক । আর-থধণ কর্ণিকারণ পাবন্তী নবমল্লি-ক।।। সৌগন্ধিক সকোর ও প-লাশাশোক সৰ্জ্জকাঃ। সিন্ধুবা-র অপামার্গ বাপুলীকঞ্চ কাম-জ॰ ।। ব্যাষ্চেল॰ দমনক॰ মরু-বকঞ্চ ভতঃপর । লবঙ্গ জল-ককুরি তগরঞ্চ ববা তথা।। শি-বপুষ্ণ ডোণপুষ্ণ কামরাজণ সুকেতক । অন্যানি বনপুষ্পা-ণি জলজ স্থলজানি চ।। গিরি-জানি দেশজানি নাৰাপুষ্পা-ণ্যতঃ পর । ইতি প্রপঞ্চনারঃ ।। শক্তিগ্ৰহঃ পু॰ শিবঃ ।। কার্ত্তি-কে্ষঃ। শক্তি॰ গৃহাতি ষঃ ই-

তাৰ্থে শক্তিশব্দ পূৰ্ৰক গ্ৰহ্ণা-তো রল প্রভ্যযেন নিষ্ণন্ন ইতি किटि ॥ गनगिकिकान । यथा। जनार मकार ज्य-মর্থো বোদ্ধব্য ইতীশ্বরেচ্ছা শ-ক্তি রিতি তার্কিকাঃ। তজ্জ্ঞা-নম্ভ ব্যাকরণাদিভ্যঃ। অতএব শক্তিগ্রহু ব্যাকরণোপমানকো-যাপ্তবাক্যাদ্যবহারতশ্চ । বা-ক্যস্য শেষাদৃবৃত্তে ৰ্দন্তি সা-क्षिश्राण्डः मिक्कश्रममा वृक्काः ॥ रेि आक्ष। रेि पूर्गामामः ॥ ° শুক্তিগ্রাহকঃ পু॰ ব্যাকরণোপ-यानामि॥ শক্তিগ্রহীতা চ। শ-ক্তিণ আহ্যতি গৃহ্লাতি চ ইত্য-র্থে ঞাস্তাঞাস্ত গ্রহ ধাতো র্ণক প্রত্যযেন নিষ্পন্নঃ ৷৷ শক্তিধরঃ পু॰ কার্ত্তিকেষঃ ৷ ইত্য-. মরঃ।। শক্তিধারকে তি।। শক্তিপর্ণঃ পু॰ সপ্তপর্বকঃ। ইতি জটাধরঃ ॥ শক্তিপাণিঃ পু॰ কার্ত্তিকেষঃ। इेंछि इनायुधः ॥ শক্তিভূৎ পু॰ কার্ত্তিকেয়ঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। শব্দ্যস্ত্রধার-কে ত্রি !৷ শক্তিহেতিকঃ ত্রি শক্তান্ত্রধারি

যোদ্ধা। তৎপর্য্যাবঃ। শাক্তী-कः २। इंडायतः ॥ लक्तायुध-ধরঃ ৩। ইতি শব্দরত্নাবলী।। পুণ ক্লী ভজ্জিত্যবাদি-শ ক্তঃ চূৰ্ণ। ছাতু ইতি ভাষা। যথা। ধানা ভুফিববে ভূমি দ্রিযাং পুং ভূমি শক্তবঃ। কেচিজু শক্তৃ র-স্ত্রীতি বন্ধুরা ভূমনি স্ত্রিযা ।। रें ि कि विश्वतः ॥ यम् छनाः । যবানা শক্তবো ৰক্ষা লেখনা বহ্নিবৰ্দ্ধনাঃ। বাতলাঃ কফরো-গন্ধ। বাত বৰ্চোনুলোমনাঃ।। ধানা সংজ্ঞান্ত তেতীব দুর্জরা লেখনাঃ স্মৃতাঃ। গুৰী পিণ্ডী-क्रुंग्राह्म क्रिया क्र যাৎ।। শক্তৃনা মাশু জীৰ্য্যেত मृদু शामवत्न हिका ॥ इंछि রা-জবলভঃ ।৷ ৠ ৷৷ অথ শক্তবঃ ।। थानामि जुाकु ज्कानि यञ्ज পিকীনি শক্তবঃ। তত্র যব শ-ক্তবঃ। যবজাঃ শক্তবঃ শীতা मी**शन। नघरः म**ताः। कक् शि-ত্তহরা ৰাক্ষা লেখনাশ্চ প্রকী-ৰ্ত্তিতাঃ।। তে পীতা বলদ। বৃষ্যা বৃত্হণা ভেদনা স্তথা। তর্পণা মধুরা রুচ্যাঃ পরিণামে বলাব-হাঃ।। কফ পিত্ত শ্রম ক্ষুতৃড্

ত্রণ নেত্রামযাপহাঃ। প্রশস্তা यश्चन। सना गारायार्ज भरी-রিণা ।। 🕸 ।। অথ চণক যব শক্তবः। निस्रिय म्हनरेक कृ रिके खुर्या। देन क यदेव कि जो ॥ म-ক্তবং শর্করা সর্পি র্যুক্তা গ্রীমে-তিপূজিতাঃ।। 🗱 ।। অথ শালি শক্তবঃ। শক্তবঃ শালি সংভূতা विक्रिमा निघटता हिमाः । यथूती-আহিণো রুচ্যাঃ পথ্যাশ্চ বল **'** किनाः ।। न जुका न तरि । किन षा न निशायां न वा वश्न्। न জলান্তরিতান্ নিদিঃ শক্তুনদ্যাম **किवलान् ।। পृथक्शानः भून-**र्फान॰ मानिय॰ शयमा निमि। मखल्कान नुखंक मक्ष मकुयु বৰ্জ্জবৈৎ ॥ ইতি ভাবপ্ৰকাশঃ ।। 🗱।। জন্মতিথৌ তদ্ভক্ষণ ফল॰। জ্যোতিষে। শক্তৃন্ থাদতি যস্ত তস্য রিগবো নাশ প্রযাস্তি দ্রু-ব° ভুঙ্কে যস্ত নিরামিষ° স হি ভবেৎ জন্মান্তরে পণ্ডিতঃ। ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব ।। মেষ সংক্রাস্ত্যা• তদ্দান বিধি র্যথা। স্মৃতিঃ। মে-यामि गज्ज्दा मिया वात्रिभूनी ह गर्गती। यशर्गत्व। स्वा मृमाठि रि भिकाती भक्तयूषि। विकानं

神頸

। পিতৃন্দিশ্য বিপ্রেভ্যঃ সর্বপা
কৈঃ প্রমুচ্যতে।। বিপ্রেভ্যঃ পাদুকে ছল্রুণ পিতৃভ্যো বিষুবে শুভুণ । ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বং ॥ ♣॥
চাতুর্মাস্যবতে প্রাভঃস্নানস্য খ্ত শক্তবো দক্ষিণা যথা। নারদীয়ণ । নিত্যস্নানে হবিদ্দিদ্যাক্ষিংসেহে ঘৃতশক্তবং । নিত্যস্নানে প্রাভঃস্কানে । ইতি মলমাস্তত্ত্বণ ॥

শক্তুকঃ পু॰ বিষভেদঃ । তস্য লক্ষণ স্বৰূপে যথা । যদ্গুস্থিঃ॥ শক্তুকেনৈব পূৰ্ণমধ্যঃ স শক্তু-কঃ । ইতি ভাবপ্ৰকাশঃ ।।

শক্তুফলা স্ত্রী শনীবৃক্ষঃ। ইত্য-মরঃ।।

শক্তৃকলী স্ত্রী শনীবৃক্ষঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

শক্তার্দ্ধঃ পু॰ শ্রমদারা সক্ষি
ললাট গ্রীবা সূৎপক্ষোঘর্দ্মঃ দী
র্ঘনিশ্বাসশ্চ । যথা । সক্ষো ললাটে গ্রীবাযা• যদা ঘর্মঃ প্রবর্তত । শক্তার্দ্ধণ তণ বিজানীযাদাযতোচ্ছাস মেব চ ॥ ইতি
রাজবল্লভঃ ।।

শক্তিঃ পু॰ বশিষ্ঠমুনের্জ্যেষ্ঠ-পুত্রঃ। ইতি পুরাণং।।

শক্ষঃ ত্রি প্রিযম্বদঃ। ইত্যমর-টীকাষাণ ভরতঃ ॥ শकुः वि थियशमः। ইতামরः॥ শক্মা পু॰ শক্তিঃ। শকধাতো-রৌণাদিক यनिन् প্রত্যযেন নি-শায়ঃ। ইতি সিদ্ধান্তকোমুদী।। भकाः जि ममर्थनीयः॥ भक्ताः ख्या वाहाः। यथा। भटका-ৰ্থো ২ভিধৰা জ্ঞেষঃ লক্ষ্যো ল-ক্ষণমা মতঃ। ব্যক্ষ্যো ব্যঞ্জনমা **ब्बिय खिनुः भक्तमा वृद्धयः ॥** रे**डालकातमाञ्च॰ ॥ जनाफ ।** শক্যে সাদৃশ্যবুদ্ধিস্ত ভবেদৃপ-মিতো গুণঃ। ইতি ভাষাপরি-চ্ছেদঃ।। অপি চ। ঈশ্বর সঙ্কেতঃ শক্তি স্তথা অর্থবোধক পদ বাচকণ। ষথা গোত্বাদি বিশিষ্ট ्वाधकः गवानिशनः छत्वारधा श्र्या गवामि वीठाः मधव मू-খ্যাৰ্থ ইত্যুচ্যতে । ইতি শক্তি-वाषः॥

'শক্যতাবচ্ছেদকণ ত্রি শক্যাণশে ভাসমানধর্মঃ। যথা। এবঞ্চ তা-দৃশধর্মসা, শক্যতাবচ্ছেদকত্বণ দুর্বার মেব। ইতি শক্তিবাদঃ।। শক্রঃ পুণ ইন্দ্রঃ। ইতামরঃ।। স্টজবৃক্ষঃ। অজ্জুনবৃক্ষঃ।

ইতি মেদিনী।। জ্যেষ্ঠানক্ষত্র। ষথা। শক্তো নিশ্ব তি স্তোয়ণ विश्व विदिशी इदि वर्मू ईक्रगः। অজপাদোহিত্রয়ঃ পূষা চেতী-শ্বরা ভানাণ॥ ইতি জ্যোতিস্তত্ত্বণ ।। চতুৰ্দ্দেশস্ত্ৰা যথা। বিশ্বভূক্ চ विशिम्हिमाः मूर्विचिः भिवि त्वव চ।বিভূর্মনোজব শৈচব তথো-জস্বী বডি স্তথা।। অদ্ভুতশ্চ ত-था माखि खथा (मवहद्रा वृषः। अठधामा जिवः यामी छितः म-का मञ्जूषम् ॥ 🛊 ॥ जान्निम्न মানাব্দেষু ইন্দ্রাণাণ নাশ সংখ্যা यथा। बात्म मित्न रेव नगालि **ठकुर्मम शूर्तम**ताः। यहानि गा চম্বারি বি°শত্যা সহিতানি চ ৷: অব্দে পঞ্চসহস্যুণি চন্ত্রারিংশ-চ্ছতানি চ। ইত্যাদ্যে বহ্নিপুরা-त्व भवत्जननामामाग्यः ॥ 🟶 ॥ ইন্দ্রত্ব প্রাপ্তি কারণ যথা। ইন্দ্র উবাচ। রমাকাস্ত ভবৎপ্রীতৈয রুত ক্রতুশত পুরা। তেন পু-(गान मन्गु। ख॰ यय। পৌतन्मतः পদ ।৷ ইদানী নৃতনঃ কোপি জাতো দিবি পুরন্দরঃ। ন তেন ধর্মো বিহিতো ন তেন ফুতবঃ ক্রতাঃ।। মম সিংহাসন॰ দিব্য॰

কথ মাক্রান্ত মচ্যুত। ইত্যেব॰ বদত স্তদ্য শ্ৰুত্বা বাক্যু রমাপ-তিঃ ॥ উন্মীলিতস্মিতাকো ২সা-वृषाठ. यथूत वहः। औजगवान्-वाठ। प्तवानत्या यन्याखा यय সেবাপরাষণাঃ। মদ্যাজনরতা লোকা মন্ডক্তি স্তুতি পাঠকাঃ॥ মমূর্ত্তিষু ক্রতধ্যানা মৎকথা শ্রা-ব্ৰা ইহ। মৎপাদোদক নৈবেদ্য ভোজিনোম্বহ মেব যে।। মন্নাম কীর্ত্তনপরা মম স্মৃতি পরাষণাঃ। মন্মন্ত্রজাপকা নিত্য মনন্যাশ্রয সম্পদঃ ৷৷ কিং বিধিত্বং কিমিন্দ্রত্বং দেবন্ব মপর কিমু। তেয়া মল-**छा॰ य**९ किक्षि९ पूर्ल**छ॰ नास्डि** সংসূতী ৷৷ কিং দানৈ র**ন্নফলদৈঃ** কি॰ তপোতিঃ কিমশ্বরৈঃ । সে-ব্যমানেঃ ক্ষিতিতলে স মম প্রী-**छिमान् महा ॥ इन्त** छेवा**छ । छ**-গবন্ কৰ্ম্মণা কেন স স্বৎপ্ৰীতি-পরো ভবেৎ। তদ্বদস্ব মহাবাহো প্রপন্ন ভয় ভঞ্জন ৷৷ শ্রীভগবানু-বাচ। অনেকধা মন্তজন মম প্রীতিকরণ পরণ।৷ যদ্ভক্ত্যা তৎ-পদ॰ লেভে তৎ শৃণুষ পুরন্দর ৷৷ জপত্যকীদশাধ্যাবগীতানা লোক গঞ্চক । ত্যা ভক্তা তু

সংপ্রাপ্তণ তব সামাজ্য মৃত্তমণ া ইতি পাদ্মোত্তরখণ্ডে ১৬ व्यथायः ॥ শক্ৰকীডাচলঃ পু॰ সুমেরূপর্বতঃ । ইতি হলायूथः ॥ শক্রগোপঃ পু॰ ইব্রুগোপকীটঃ । ইতি জটাধরঃ॥ শক্রজঃ পু॰ কাকঃ। ইতি ত্রিকা-ওলেষঃ।। ইন্দ্রজাতে ত্রি।। শত্রজাতঃ পু॰ কাকঃ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।। ইন্দ্রজাতে ত্রি॥ শক্রজিৎ পু॰ রাবণপুত্রঃ।ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ৷৷ ইন্দ্রজেতরি ত্রি अक्थनुः की हेस्रभनुः। गखी ইতি রামধনুক ইতি চ ভাষা। इंडायतः ॥ इन्मायूषः भक्षम् কৌশিকাযুধ মিত্যপি। ঐরাব-ভ॰ রোহিত॰ স্যাদবক্ত্রণ যদি ত-क्षनुः ॥ ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ শক্ৰধজঃ পু॰ ইন্দ্ৰধজঃ। তদি-वंतन यथा। नृशवाइन উवाह । ভগবন্ শ্রোতু নিচ্ছামি তস্য উত্থাপন॰ যথা। ক্রিয়তে দিন श्राटक **ठ जवा मञ्ज विधि** वन ॥ অগন্ত্য উবাচ। বন্ধণা কথিত॰ শক্ত বৃহস্পতি সমীপতঃ। যথা তথা প্রবন্ধ্যামি বিধিণ কেতোঃ

मगुष्ट्रा ॥ वृष्ट्यां क्रवां । শুভাহে ঋকে করণে মুহূর্জে **७७ यक्टल। रेनवब्दः সূত্রধা-**तन्छ वन॰ गट्छि महायवान् ।**।** দেবী প্রতিষ্ঠা বিধিনা যাত্রাযাণ যা প্রচোদিতা। গত্বা বৃক্ষণ খ্র-ভ॰ পুষ্পা॰ ধবার্জুন প্রিয়ঙ্করণ ॥ উডুম্বরাজকর্ণঞ্চ পঞ্চৈতে শোভ-ना रुद्धः। धजार्थ वर्ज्यवद्म रित जेमानजान् जमान् ॥ क-ন্যা মধ্যে তু ষা ষষ্ঠীঃ করমানেক क्ब्रायः । এकामम क्रा वर्म 'নব পঞ্চ ক্রাপরা । অরালতা° ক্রিমিচিতা॰ তথা পক্ষি নিকেত-না । বল্মীক পিতৃবনজা সুশু-ষ্ক কোটরাস্তরা ।। ঙ্গব্জাঞ্চ ঘট-সিক্তাঞ্চ তথা স্ত্রীনামগহিতা । বিদ্যুৎ বজুহতা ক্ষৈব দগ্ধাঞ্চ প-রিবর্জযেৎ ॥ অলাভে **চন্দন**ণ আমু শাল শাক্ষয তথা। ক-ৰ্ত্তব্য শক্ৰ চিহ্নাৰ্থে ন চান্য বৃক্ষজণ ক্ষচিৎ ৷৷ শুভভূমিভবণ গ্রাহাণ শুভতোষণ শুভাবহণ ৷ ততঃ সংপূজ্যেদৃক্ষণ প্রাত্ত্বাদ-बार्थाति वे। । नत्या वृक्तनरङ वृक्क जाम्फ्रियां भाषितः। ध्रजा-র্থণ তত্ত্বতো নাথ অন্যথা উপ-

গম্যতা ।। রাত্রৌ দেখে। বলি স্ত-ब यूगव्रक उटेशव ह। वागवाना॰ মহাবৃক্ত কৃষা চান্যত্র গম্যতা।।। ধজার্থে দেবরাজস্য নক্ষান্তি স্তব অত্ত চ। পূজ্যিত্ব। ততো বৃক্ষণ बिन जूजार मागरय ।। প্রভা-তে ছেদথেম্ক শুভরপ্নাদি দ-र्न देनः। अक्रायत्रभत्रदेश्य ममूज **जतनः नमी ।। वृक्षात्रग्रान्** अजान् कीत्रानादतादश्य (प्रवणानयः । **(मर्ता फिक छथा माधू निक उक्त** হরে রপি।। প্রতিমা পূজিতা স্ব-প্লে কিপ্রণ সিদ্ধিফলপ্রদা। মৎ-मा भाष्म पिथ लाजः ऋषितः मृ ত রোদন ।। অগন্যাগনন দৃষ্ট্। আশু সিদ্ধিফলপ্রদ । ক্রমাণ স্তিল খন ধান্য শত্ৰুনাশ তথা শুভ ।। ফ্ল পুশ সিতা দূৰ। ऋदि लका क्यावराः। मध्य गाव ম্ভথা দম্ভিলাভা রাজ্য প্রদায-কাঃ ৷৷ গৌঃ সবৎসা নবসূতা मृकी भूख कमार्थमा। शक छक-রণ কৃপে ব্যাধি মোক্ষকর চি-तार II এवः स्थान् खलान् मृख्य তথা ছিন্দেত পাদগ'। উদগ্ব খঃ প্রাশ্ব্যথা বা মধু বজ্রাকৈ পর্শুনা ।। পূর্বোতরে চ পতন শক্তো

ংশব্দো হব্রণঃ শুক্তঃ। অলগ্ন পাদ-পে চান্যে অন্যথা তু পরিত্যজেৎ । অফাঙ্গুলং ত্যজেৎ মুলে অগ্রে তম্ব জলে ক্ষিপেৎ। তথা তমা-নম্বেছৎস শকটেন বৃধৈ রপি।। যুবানৈ বলসম্পন্নৈ নেষং তৎ পু-রতঃ পরং। নীষমানা যদা যতী সমা বা চতুরসুকা।।

মাধত্তে রাজ্ঞঃ পুত্রু পুরেটিইত । আরভঙ্গে বলং ভিন্দ্যাদ্রাজ্যনা-শংক্ষয় তথা ৷৷ অর্থস্য অক্ষ ভ-ঙ্গেন শান্তি ন্তত্র তু-কারযেৎ। ই-ব্ৰজ্ঞক্ত মন্ত্ৰেণ জাতদেবসমাপি বা ৷৷ তথা নীম্বা শুভে লগ্নে পুর-স্তাদুপবেশ্বেৎ। দার শোভাণ পথ রথ্যা গৃহে হটে চ কারযেৎ ॥ यना अप्रेंश्न निनामान्छ दिनाग मध षिकाण्यः। मः कटेन दर्ग শব্দৈশ্চ তানেয়া যত্ৰ উচ্ছ্যেৎ৷৷ তত্রস্থা ঞ্চিত্রকর্মাবনির্মিতে স্তা-ম্ভ বেষ্টযেৎ । বইন্তু রণ্ডজ রো-মোখেঃ শুকৈঃ শুকৈ র্যথা ক্রমণ ৷ নন্দোপনন্দ সংজ্ঞাশ্চ স্বার্যঃ প্রথমাণশগাঃ ৷৷ দেব্যে জব বি-জযাখ্যাঃ যোডশা॰শ ব্যবস্থিতাঃ ৷ অধিকে শত্ৰুজযিত্ৰী তথাৰ্থজা टेमवटें मंखाः ॥ धक शतिमा-

नार्थः मनितिषः প্রথমः পিট। स्वाज्याण्य विश्वीनानि वर्षाा-क्टियानि बुक्तियान्।। तमना॰ वि-চিত্ৰ বৰ্ণাণ প্ৰথমাণ দদ্যাৎ স্বয-ন্তুঃ। সুরক্তা॰ চতুরসূ।ঞ্.বিশ্বক-ৰ্মা দিতীৰতঃ ৷৷ অফাসায় স্বৰণ শক্তো नीनत्रका॰ প্রদাপয়েৎ। क्रकः यरमन वृज्यः तक्ररान मह-मिकः ॥ मिक्षश्री जनमाकातः वामूरमरवा यमृत्रकः। नीव्यवर्शः ত দদ্যাৎ স্কন্দো বহু বিচিত্রিত ॥ क्छन्न महत्ना ममा। पूर्वर्गाजः **७थाकमः। देवमृश्य ममृश मिट्या** देशदयः मान्नदयः वृक्षः ॥ ठळा-ক্ষাক্রতিম্ব সূর্য্যো বিশ্বেদেবাঃ প-प्रनिज्। अवत्या नियम नमूर नी न॰ नीत्ना ९ भना जा म॰ ॥ छ-ৰুণা শুক্তেণ ততে৷ বিশাল**ু** মূৰ্দ্ধ-**छा नाखः। गृ**टेश विंठिजानि वश-মাতৃভিঃ স্বানি ৰূপাণি।। যদ্যে-কেনৈব দত্তম্ব কেতে৷ স্তত্তস্য ভূ-ষণ । তদৈব ত বিজানীযাদ্য -ञ्चानि छ मूष्ट्राय ॥ अथम প্রবিশমানা ভূমি⁻ यक्टि- शस्त्रि রা-ষ্টু॰। বালানা॰ তালশব্দেন দেশ বিঘাত সমাচক্টে ৷৷ নৃপ্ৰধক্রা বিশীৰ্ণা শুভাবহা সৰ্বসান্তা চ।

শৰু সূৰ্য্য যম শক্ত সোম ধন্য वाकृटेनः ॥ वङ्गीन श्रवि मखान्छ হোতব্যাঃ দিখি চাক্তাঃ। শুক্র স্কন্দ গুরু রুজ অঞ্চরাদি প্রগা-ठेरय ।। इषा जू विधिवषङ्किषा-লা॰ লক্ষেত বুদ্ধিমান্। সুতেজাঃ সুমনো দীপ্তঃ সংহতো রুচিরপ্র-ভঃ। রক্তাশোক সমাকারো রথ **जिती यनः खजः।। मध मृ**क्जि মেঘানা॰ নাদাঃ শস্তান্ত পাবকে । ততঃ স কদলীক্ষু দণ্ডান্ পতা-কানি সমুচ্ছবে।। অন্যাশ্চ বি॰ বিধা শোভাঃ শক্ত কেন্তু সমুচ্ছ-य । श्रिष्ठेशम जू वर्षेभा । र्यः ক্লাযা॰ শোভনে ঋকে।। আশ্বি-নে বাথ শুক্লাযাণ প্রবনেনাথ উ-ष्ट्रिय । পৌরজন লগ্ন বৃল্দেঃ প-টভেরী নিনাদিত ৷৷ বিতান ধজ শোভাঢ্য॰ পতাকাভিঃ সমজ্জল॰ । বিফ্রীশ শক্ত মন্ত্রেণ সিণ্ছরক্ষা ক্তেন চ।। দৃচ মাতৃক রন্ধুস্থ শুভতোরণ মাঙ্গল । অবিলয়ি-ত মুখান মভগ্ন পিটক সম ।। ন হুত বা সমুখাপ্য কেতু বাস-ৰজণ বিভো। উচ্ছিত রক্ষযেৎ প্রাজ্ঞঃ কাকোলূক কপোতযোঃ ॥ न नेमुशायनः ननाम्नात्मारा

মপি পঞ্চিণা । যন্ত্ৰোদ্দেশেন ত॰ ক্র্য্যাৎ মুখণ কেতো র্যথাবিধি ॥ তথা সুসণস্থিত পূজ্য মুখ যন্ত্র সুষদ্রিত । রাত্রো জাগরণ क्रशामिक मञ्जानूकीर्त्तन ॥ शू-রোহিতঃ সদৈবজ্ঞঃ শুভ শাস্তি-রতঃ সদা। ছত্রপাতো নৃপ॰ হ-ন্যাৎ পতাকা মহিষীবধণ ৷৷ পি-টকে যুবরাজস্য সচিব মনুকম্প-তে। রাষ্ট্রণ তোরণপাতেন ধজে অন্নক্ষয়ে ভবেৎ ৷৷ পতিতে শক্ৰ कर ७ जू नृष मना॰ ममानित्न । ক্বমিজালক উত্থানে শলভাত্ত-করান্তব ।। সুসমে সংস্থিতে শ।-िख न्था नशतमा ह। याटा-ছিতন্তু তিষ্ঠস্তি তাবৎ পৌরাঃ স-দা হৃষ্টাঃ॥কেতো র্নিরতা যজনে ভূঞীযাদ্বিপ্রকন্যাশ্চ ৷৷ পাতে ভু **उदेशव क्याम्थात् याम्भी शृ** জা । রাত্রৌ শুভরুৎ পাতন[°] নো দৃষ্ট॰ কাক কপোতৈঃ ॥ या-,তি নৃপণ সহরাষ্ট্রণ যদৈচব কার-যেৎ কেতৃ। নগরে বা পুরে খে-টে ফদ্যেব॰ জর্বতে পৌরাঃ ॥ পুরে নগরসা দ্বারে বৃষ সিণ্ছ খগো-থিত । কেতু সমস্ত ঘোরাণা नाननः जयनः मर् ॥ विवः १ ई॰

হরিঃ কেতৃ প্রাপ্তবান ব্যবাহনাৎ। তথা ব্রহ্মস্তেনের ব্রহ্মলঃ শক্র মাগতঃ ।। তেন সোমস্য তদ্তু ততো দক্ষে সমাগতঃ
। তদঃ প্রভৃতি স্বস্থি নৃপা অদ্যাপি উচ্ছ্যু ।। এবং যঃ কারযেদ্রাজা কেতু বিজযকারকং।
তস্য পৃথী বলোপেতা সদ্বীপা
বশগা ভবেৎ ।। ইত্যাদ্যে দেবীপুরাণে ইক্রশ্বজ লক্ষণং ২১
অধ্যায়ঃ ।।

াক্রনন্দনঃ পু॰ অজ্র্নঃ। ইতি জটাধরঃ॥ ইন্সানন্দকারকে ত্রি শক্রপর্য্যায়ঃ পু॰ জটজবৃক্ষঃ। ইতিরত্নমালা॥ ইন্সবাচকশ্চ॥ শক্রপাদপঃ পু॰ দেবদারুবৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ॥ জটজবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্যকৃঃ॥

শক্রপুষ্পিকা স্ত্রী অগ্নিশিখাবৃক্ষঃ
। ইতি রত্নমালা ।।

শক্রপুষ্পী ন্ত্রী অনিশিখাবৃক্ষঃ।
· ইত্যমরঃ॥

শক্রভবন° ক্লী স্বর্গঃ। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ।।

শক্তভিৎ পু॰ ইন্দ্রজিৎ। সচ রা-বণপুত্রঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শক্রভূভবা স্ত্রী ইন্দ্রবারুণী।

শক্তাশ

ইতি শব্দচন্দ্রিকা॥ শক্রমাতা স্ত্রী ভাগী। ইভি রাজনির্ঘন্টঃ।। ইন্দ্রজননী চ।। শক্ৰমাতৃকা স্ত্ৰী শক্ৰধজাঙ্গযঞ্চি-विटमसः। यथा का निका भूतावः। সমার্যাঃ পঞ্চকর্ত্তব্যাঃ শক্রস্য নৃপসত্ম। শালময্যস্ত তাঃ স-ৰ্বা স্তুপরাঃ শক্তমাতৃকাঃ।। কে-তোঃ পাদ প্রমাণেন কার্য্যঃ শ-ক্রত্বমারিকাঃ। মাতৃকার্দ্ধ প্রমা-ণা তু ষন্ত্ৰণ হস্তদ্বয়ণ তথা ৷৷ এবণ হয়া সমারীশ্চ মাতৃকাণ কেতৃ মেব চ। একাদশ্যা॰ সিতে পক্ষে ষষ্টীনা মধিবাসন ।। ইতি তি-থ্যাদিতত্ত্ব॰ ॥ ক্রমূর্দ্ধ। স্ত্রী বন্মীকঃ। ইভি ত্রিকাওশেষঃ।। াক্রবলী স্ত্রী ইম্রবারুণী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ 11 ক্রবাহনঃ পুত মেঘঃ। ইতি भक्ठिक्कि।। क्वीक॰ क्वी इस्वयदः। इंडि রাজনির্ঘন্টঃ ॥ क्रगतामनं क्री रेख्यभगूः। रेखि श्लायुभः ॥ ক্রশাখী পু॰ সটজবৃক্ষঃ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ ॥

শক্রশালা স্ত্রী প্রতিশ্রম্য। ইতি ভূরিপ্রযোগঃ ॥ পুস্তকান্তরে স-ক্রশালা ইতি পাঠশ্চ ॥ ইন্দ্র-গৃহঞ্চ ॥

শক্রশিরঃ পু॰ বল্মীকঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। ইন্দ্রমস্তকশ্চ।। শক্রসারথিঃ পু॰ মাতলিঃ। ইতি হলাযুধঃ।।

শক্রস্তঃ পু॰ বালিবানরঃ। ইতি হলাযুধঃ।। ইন্দ্রপুত্রমাত্রঞ্চ শক্রস্থা স্ত্রী পালন্ধী। সন্দু-রুখোটী ইতি ভাষা। ইতি শব্দ-চন্দ্রকা।।

শক্রসৃষ্টা স্ত্রী হরীতকী। ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

শক্রাখ্যঃ পু॰ পেচকঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ ইন্দ্রনামকে ত্রি শক্রাণী স্ত্রী সচী। ইতি শব্দ-মালা॥

শক্রাশন কী ভঙ্গা ভাঙ্ইতি
ভাষা ৷ অস্য গুণাঃ ৷ শক্রাশনন্ত
তীক্ষোক মোহক প্রত্নাশন

া বল মেধাগ্লিক মোন্দাদোষহারি রসাযন ৷৷ ইতি রাজবল্লভঃ ৷৷ অন্য বিজয়া শব্দে
দক্ষব্য ৷৷ ইন্দ্রভোজনক ৷৷
শক্রাশনঃ পু প্রতজবৃক্ষঃ ৷
শক্রাশনঃ পু প্রতজবৃক্ষঃ ৷

ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।
শক্রাহ্মঃ পুণ ইন্দ্রমবঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। ইন্দ্রমামকে তি ।।
শক্রিঃ পুণ মেঘঃ।। বজুণা হস্তী
।। পর্বতঃ। ইতি সংক্ষিপ্তসারোলাদিবৃত্তিঃ।।

শক্তোখান ক্লী শক্ত ধজে ৭-সবঃ। অস্য বিধি ৰ্লিখ্যতে। 🕮 🏽 ঔৰ্ব উবাচ। অথাতঃ শৃণু রাজে-ম্ৰ শক্তোত্থান ধজোৎসব° । ষৎক্লত্বা নৃপতি ৰ্যাতি নো কদা-দ্বাদশ্যা॰ শ্রবণে সিতপক্ষকে। আরাধযেমৃপঃ সম্যক্ সর্ববিম্নো-পশান্তযে ॥ রাজোপরিচরো नाम बमूनामाणतु यः। नृश-স্তেনায মতুলো যজ্ঞঃ প্রাবর্ত্তি-তঃ পুরা।। প্রাবিট্কালে চ ন-ভসি দ্বাদশ্যা মসিতেতরে ৷ পু-রোহিতো বহুবিধৈ বাঁদ্যৈ স্তু-ৰ্ব্যৈঃ সমন্বিতঃ ॥ প্ৰথমণ শক্ত-क्ष्यर्थ वृक्ष मामञ्ज वर्षाय ! সাম্বৎসরো বার্দ্ধকিশ্চ ক্লতকৌ-তুক মঙ্গলঃ।। উদ্যানে দেবতা-গারে শুশানে আর্গ মধ্যতঃ। ষে জাতা স্তরব স্তা॰ স্ত বর্জযে-দাসবধজে।। বহুবল্লীযুত শুক

বহুকণ্টকসংযুত। স্বৰূ বৃক্ষাদ-নীযুক্তণ লতাচ্ছন্নণ তরুণ ত্যক্তেৎ ॥ शिक वाम ममाकीर्गः कार्रेत ৰ্বহুভি যুত। প্ৰনানলবিধন্ত ভৰু খত্নেন ৰৰ্জ্যেৎ ৷৷ নাৱী সংজ্ঞাশ্চ যে ৰৃক্ষা অভিহুম্বা অ-তিক্লশাঃ। তান্ সদা বৰ্জবৈদ্ধী-तः मर्वाम नक भूकत्न।। अर्जु-নোপ্যশ্বকৰ্ণ প্ৰিষকো ধব এব চ। ঔজুম্বরশ্চ প্রত্থৈতে কেম্বর্থে সত্তমাঃ স্মৃতাঃ ৷৷ অন্যে চ দেব मार्वामगाः मालामग खत्रव खथा েপ্রশস্তাস্ত পরিগ্রাহ্য নাপ্রশ-স্তাঃ কদাচন ।। তঞ্চ বৃক্ষণ ততো तात्वो म्पृको मख मिम शंकि । ষানি বৃক্ষে ছু ভূতানি তেভ্যঃ স্বস্তি নমো ২স্ত বঃ ৷৷ উপহার**॰** পৃহীত্বেমণ ক্রিযতাণ বাসবধ্বজঃ। পার্থিব স্থাণ বরষতে স্বস্তি তে श्ख नरगाखन ।। धकार्थ॰ **रा**व-রাজস্য পূজেষ প্রতিগৃহতা । ততোপরেক্লি ত॰ ছিত্বা মূল ম-कोञ्रून॰ भूनः ॥ जलकिए । দগ্রস্য ছিবৈশ্বণ চতুরঙ্গুল। ত-তো নীম্বা পুরদ্বারণ কেতুণ নির্ম্মা-ৰ তত্ৰ বৈ ॥ শুক্লাফীম্যা॰ ভাজ-পদে কেতু বেদী প্রবেশযে ।

দ্বাবি॰শদ্ধস্তমানস্ত অধমঃ কেতু ৰুচ্যতে ।। দাত্ৰিংশতু ততো জ্যা-যান্ দাচদারি শদেব চ। তভো **২ধিকঃ সমাখ্যাতো দ্বাপঞ্চাশ**ত্ত-(शाख्यः ॥ जयार्याः शक्षकर्खवाः শক্তमा नृशमलम । भानमगुख তাঃ সৰা স্থুপরাঃ শক্তমাতৃকাঃ।। কেতোঃ পাদ প্রমাণেন কার্য্যাঃ শক্রমারিকাঃ। মাতৃকার্দ্ধপ্র-সাণাজু যন্ত্ৰণ হস্তদ্বয়ণ তথা ৷৷ এবং ক্সবা সমারীশ্চ মাতৃকাণ কেতৃ-মেব চ। একাদশ্যা॰ সিতে পক্ষে ্ষ্টি॰ তা মধিবাসযেৎ।৷ অধিবাস্য ত্রতো য**ফি**ণ গন্ধঘারাদি মন্ত্রকৈঃ দাদশ্যাণ মণ্ডলং কৃষ্বা বাসবং বস্তৃতাত্মকণ।। অচ্যুতণ পূজ্যিত্ব। ুশক্ত পশ্চাৎ প্রপূজ্যেৎ। শ-ল্স্য প্রতিমাণ স্বর্যাৎ কানকীণ ীরবীণ তথা।। অন্য তৈজস ভূ-গ্ৰাম্বা সৰ্বাভাবে তু মৃন্মযী । তা॰ াওলস্য মধ্যে তু পূজ্যিত্ব। বি-শ্যতঃ ॥ ততঃ শুভে মুহূর্ত্তে তু কতু মুখাপযেমৃপঃ। বজুহস্ত সু-ারিম বহুনেত্র পুরন্দর।। ক্ষেমা-ি সৰ্বলোকানা পুজেষ প্ৰতি-্হতা । এছেহি সর্বামর সিদ্ধ °বৈ রভিফুতো বজুধরামরেশ।।

मम्थिठ खु॰ खवनामा भारम गृ-হাণ পূজা ভগবন্ধম স্তে ৷ এব मुखत्रवादेक पंरन क्षवनािन-ভিঃ।। ইতি মন্ত্রেণ তন্ত্রেণ নানা देनदवना दवनदेनः । जाशृहेनः পাষদৈঃ পানৈ গুঁতৈ ধানাভি রেব চ ॥ ভক্ষ্যৈ র্ভোজ্যেশ্চ বিবি-देशः भू क्रायं श्रीतिवृक्ताय । यटियू দশদিক্পালান্ গ্রহা॰শ্চ পরিপূ-करय ।। সাधानीन् সকলात्न-বান্ মাতৃঃ সর্বা স্তুনুক্রমাৎ। ত-তঃ শুভে মুহূর্ত্তে তু জ্ঞানি বৰ্দ্ধকি' সংযুতঃ ॥ কেতে। রূপান ভূমিন্ত यब्बदमग्राम्ह शिन्हदम् । विदेशः পুরোহিতঃ সার্দ্ধ গচ্ছেদ্রাজা সুমঙ্গলৈঃ । রজ্জু ভিঃ পঞ্চভি র্বন্ধ ° যন্ত্রন্নিষ্ট॰ সমাতৃক॰ । সমারীভি-শ্চ সংযুক্তণ দিক্পালানাঞ্চ পে-ট্কৈঃ।। পেটকৈঃ স্থানে পউকৈ রিতি চ পাঠঃ ॥ বৃহদ্ভি রতিকা-'জৈশ্চ নানা জব্য সুপূরিতৈঃ। यथावरेर्न यंशाप्तभारमार्किटे र्व-স্ত্ৰবেফিতৈঃ।। যুক্তণতণ কিন্ধিনী कारेन वृश्म्य एकी घ ठा मरेतः । ভূষিত॰ বহুরত্নে**শ্চ মালো** ईছ-विदेश खशा।। वरु भूटेनाः मूगदेक শ্চ ভূষিত রত্নমালযা। চিত্র-

মাল্যাম্বরধরৈ শ্চতুর্ভি রপি তো রণৈঃ ।। উত্থাপযেমহাকেতুং রা-জামাত্যৈঃ শনেঃ শনৈঃ । তম্-ত্থাপ্য মহাকেতুং পূজিতং মণ্ড-

প্রতিমাণ তাণ নযে-মূল কেতোঃ শক্ত বিচিন্তবন্। যজেত্ত-পূৰ্ৰবত্তত্ৰ শচীণ মাতলি মেব চ ৷৷ জ্বন্ত তন্য তস্য বজু মৈরাবত তথা। গ্রহা শ্চা भाष मिकभावान् महीक भन-দেবতাঃ ।। অপুপালৈয়ঃ পূজ-ং যেতু বলিভিঃ পাষসাদিভিঃ।পূ-জিতানাঞ্চ দেবানাং শশ্বদ্ধোয়ং সমাচরেৎ।। হোমান্তে তু বলি দদ্যাৎ বাসবায মহাত্মনে। তি লং ষ্তং চাক্ষতঞ্চ পুষ্পাণ দূৰ্বাণত-থৈব চ ।। এতৈস্ত জুহুষাদ্দেবান্ স্থৈঃ স্থৈ ম জৈ মরোত্তমঃ। ততো रशमायमात जू खाजरमाण ত্রাহ্মণান্ ।। এবং সংগূজ্যেমিত্যং সপ্তরাত্রণ দিনে দিনে। ব্রাহ্মণৈঃ স হিতো রাজা বেদ বেদাঙ্গ পার: গৈঃ।। সৰ্ধত্ৰ শক্ত পূজাসু যজ্ঞেষু পরিকীর্ত্তিতঃ। ত্রাতার মিতি ম-खाय॰ वामवना क्षियः मना ॥.a-ব॰ ফুস্বা দিবাভাগে শক্তোখাপন 'মাদিতঃ। खरनकं यू जारा ह । मान-

भागाः भार्थिवः स्वयः ॥ अख्याति **जत्रगास्त्र मिमि मक्ट॰ विमर्जरा**९ । সুপ্তেষু সৰ্বলোকেষু যথা রাজা ন পশ্যতি।। যশ্বাসামৃত্যু মাপ্নো-তি রাজা দৃষ্টা বিসর্জন । শক্রস্য নৃপশাদূ ল তম্মান্ধেকত ত॰ নৃপঃ ॥ विमर्क्जनमा बखाय॰ भूत्रावि-**क्टि क्रमीति**जः। मार्कः मूतामूत-গবৈঃ পুরন্দর শতক্রতো।। উপ-হার গৃহীত্বেষ মহেন্দ্রধজ গম্য-তা । সূতকেতু সমূৎপঞ্চে বারে ভৌমস্য বা শনেঃ ৷৷ ভূমিকম্পা-'দিকোৎপাতে বাসব' ন বিসর্জ-ষেৎ। উৎপাতে সপ্তরাত্তম্ভ ত-থোপপ্লব দর্শনে।। ব্যতীত্য শনি ভৌমৌচ হ্যন্যৰ্কেপি বিসৰ্জ্জ যেৎ । মৃতকে ত্বথ সংপ্রাপ্তে ব্যতীতে সূতকে পুনঃ ।। যন্মিন্ তন্মিন্ দিনে চৈব সূতকান্তে বিসর্জবেৎ । তথা রক্ষেমৃগঃ কেতু॰ পতন্তি শঙ্গনা যথা ৷৷ ন কেতৌ নৃগশা-'मृ ल यावमहि विमर्कन । **भटेन**ः শনৈঃ পাতযেতু যথোখাপন মা-দিতঃ ।। ক্তুত তথান্যথা ভগ্নে क्टो मृज्य भवाभूया । वि-সৃষ্ট॰ শক্রকেতু॰ ত॰ সালকার• ७थ। निर्णि॥ किर्णिष्टनन यख्नि

স্বগান্তথ শলিলে নৃপঃ। তিষ্ঠ কে-তো মহাভাগ যাবৎ সম্বৎসর জলে॥ভবাষ সৰ্বলোকানা ম-खतायविनानक। उथान्यकृ-য্যরবৈঃ সর্বলোকস্য বৈ পুরঃ।। রছে৷ বিসর্জমেৎ কেতু বিশে-ষোয়ণ প্রপূজনে। এবং যঃ সরুতে পূজা॰ বাসবস্য মহাত্মনঃ ॥ স চির পৃথিবী ভুক্ত্বাবাসব লো-ক মাপুষাৎ। ন তস্য রাজ্যে দুর্ভিক্ষ নেত্রো নাপ্যধর্ম্মকুৎ ॥ श्रामाञ्ज मृज्य मीकात्म ज-নানাণ তত্ত্ব জায়তে। তত্ত্ব্যঃ ·কোপি নান্যোস্তি প্রিয়ঃ শক্ত मा পार्थित ॥ छमा भूका मईপृ-জা কেশবাদ্যাশ্চ ভত্রগাঃ। স-कल कलूयशांति गांधि मूर्जिक नामि जकन ज्वनिद्यमः जर्द সৌভাগ্যকারি। সুরপতিগৃহ-গামীহার্চন॰ শব্রুকেতোঃ প্র-তিশরদ মনেকৈঃ পূজ্বেৎ শ্রী-বিবৃদ্ধ্যে ।। ইভি শ্রীকালিকাপু-तार्व ५५ जशायः ॥

াক্রে। শক্ত পুণ ইন্দ্রস্য উৎসবঃ া তৎপর্য্যায়ঃ। শক্তোখানণ ২। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। অস্য বিব-রণণ শক্তোখানশব্দে জফব্যণ।। मकः पृ श्विष्यमः। ই शि मकः

मक्रीकाषाः छत्र ।।

मक्र पृ वृषः। ই शि मिक् छिः

को मुमापूर्वामिवृद्धिः।।

मक्री खी अन्ती। ই शि मिः

को छक्ती प्रमापूर्वामिवृद्धिः।।

मिति मिषः।। मिथन।।। इत्माः

किर्माक्र भामवृद्धः। वर्षमा

विभाग्याभाव वर्षा। प्रकृ हः

कुर्माक्र भामवृद्धः। वर्षमा

यथा। यमषाथा व वम्बाध्यः। वर्षमा

यथा। यमषाथा व वम्बाध्यः। वर्षमा

वशा। यमष्री व्याप्याध्यः। वर्षमा

क्रिक्ता व वाम्बीयूथी ।। ই शि

इत्मामक्षत्री।।

मक्रा पृ इस्ती। ই शिकास्र-

किन्मगाम्गामिवृज्धिः ॥

गक्षः पुः गकि। मिवाइकविष्ठः
। यथा। कन्नवाह्य गक्षः गृत्री

रगो तक्षधृर्जिनः । ইতি हान्नावनी ॥

শক্ষরঃ পু॰ শিবং। ইত্যমরং॥
অস্য বৃৎপত্তি র্যথা। সদা ধ্যানাচ্চ ভক্তানা॰ পবন॰ ষ্মিরাময॰। ভূতনাথত্ব মপ্যস্মাত্তেনাহ॰ শক্ষরঃ স্মৃতঃ।। ইতি ক্ষন্দপুরাণ॰। অস্য ভস্মান্থি ধারণ
কারণ•্যথা। বিস্ক্রা তান্ত্রক্ষ

विकृ नयास् वृत्रख्या हनः। ना-माय मगणान महीन कामनानी-ন্ধর বুৰৌ ॥ উগ্রতারা চচ্চে (मरी॰ श्रेषा॰क खोड़ नकतः । ॥ छि शात्रमञ्ज मकलान् देगान् ॥ লোকান্ গণা জ্বত ৷৷ উগ্ৰতা-- एत अशासित प्रकाशुन्मात्र्य দ্ৰেত ৷ ততো গণাঃ কামৰূপা-स्विती हाशाश्रद्वाकिना ॥ त्वा-कान् भारतायामागृः शीठे कर्जुः রহস্যক। উৎসার্য্যমানে লো-কে তু চতুৰ্বৈ দিজাতিজিঃ ।। সন্ধ্যাচল গতো বিশ্ৰো বশি-ষ্ঠঃ স্বপিতো মুনিঃ। সোপ্যুগ্র-্ভারষা দেবাা উৎসার্যিতু মী-भया ॥ गरेनः मह धृठः श्राह भागः अर्दन् मूलात्रनः। यण्या-দহ পৃতে বানে দ্বোৎসার্যি-্ছু বুনিঃ।। ভশ্মাত্ত্বণ বাম্য ভা-বেন পূজ্যা ভব সমন্ত্রিকা। ভর্ত্-স্যান্তি শ্লেচ্ছবদ্দাস্যাদাণা স্তে ম-ব্দবুদ্ধবঃ ॥ ভবন্ধ শ্লেচ্ছা স্তব্মা-ৰৈ ভবত্যাঃ কামৰূপকে। মহা-দেবোপি ষম্মান্মাণ নিঃসার্যিত্ব मुमाजः ॥ जरमाधनः मूनिन्म । ख মেচ্ছবছেদপারগণ ৷ তমাৎ মে-চ্ছপ্রিষো ভূষাৎ শশ্বর শ্চান্থি

ভনাৰ্ক্ যা ইতি কালিকাপুরা-(न क्रश्र ज्यानिक ॥ क्रमा नीला (मरी प्रांत १ वशार জক্তহা।। নিবাবভারবিশেষঃ यशा । जल्दान् लाकत्रकार्य जू ९-मामा निथिनान् थनान् । वर्षा-স্থাপয়তু শ্রোত জগদেবন সু-খ এজেৎা৷ ইত্যুক্ত্যোপরতান্ **(मिरान्वार्व शितिकाश्रियः । य-भात्रथ॰** शृत्रिरिका मानुका मत-वश्य वः ॥ पूछोठात्र विनानाय ধর্মসংস্থাপনায চ। ভাষ্য সর্বন্ ব্ৰহ্মসূত্ৰ তাৎপৰ্য্যাৰ্থ বিনিৰ্ণষণ।। মোহ্যন্ প্রকৃতি দৈত্যান্ত ম-ধ্যাক্লভানুভিঃ। চতুর্ভিঃ সহিতঃ **गिरेषा क्वूटेंत्र इतिबद्धुरेकः ॥** যতীন্দ্রঃ শঙ্করো নাম্লা ভবিষ্যা-মি মহীতলে। মদ্বত্তথা ভবস্তো-পি মানুষী তনু মাশ্রিতাঃ ৷৷ ত भाभनुमतियाखि मार्ब जिमिव-বাসিনঃ। তদা মনোরথঃ পূর্ণো ভবতা স্যান্নসংশয়ঃ ৷৷ ইতি गांधवीय म॰ एक भनक त्रक रय 3 सर्गः ॥ 🟶 ॥ मङ्गलकात्ररक्ति । যথা। কেমঙ্করো খরিষ্টতাতিঃ म্যান্মজন্ব শঙ্করো। ইতি ত্রি-का खटनायः ॥

ান্ধরপ্রিষঃ পু॰ তিত্তিরিপক্ষী।
ইতি কেচিৎ।। শিববল্পতে ত্রি।।
নন্ধরাচার্য্যঃ পু॰ স্বনামখ্যাতাচার্য্যঃ। স তু অবৈতবাদী বেদাস্তভাষ্যকর্তা চ । যথা। শ্রী
শন্ধরাচার্য্য নরাবতারণ বিশ্বেশ্বরণ বিশ্বগুরুণ প্রণম্য। বেদান্ত
শাস্ত্র শ্রবণালসানাণ বোধাষ
স্বর্বে কমপি প্রযন্ত্রণ।। ইতি মধুসুদনসরস্বতীক্বত সিদ্ধান্তবিন্দুপ্রথমশ্লোকঃ।।

ক্ষরাবাদঃ পু॰ কপুরভেদঃ।
ইতিরাজনির্ঘন্টঃ।। কৈলাশন্চ
করী স্ত্রী মঞ্জিপা। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। শনী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শক্ষরভার্যা। যথা।
শক্ষরী শস্তুপত্নী চ শিবা শতনিনাদিনী। শুভাশুভপ্রদা নিত্যা শতসূর্য্যসমপ্রভা।। ইতি
রুদ্রামলে অম্বপূর্ণাসহস্থনামস্থোত্রণ।।

ক্ষা ন্ত্ৰী ত্ৰাসং । বিতৰ্কঃ। ইতি ॥ মেদিনী ।।

ক্ষিতঃ ত্রি ভীতঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ।। বিতর্কিতঃ। ইতি শঙ্কা-শব্দার্থ দশনাৎ।। চোরকনাম-গন্ধ দ্রব্যে পুণ। ইতিরাজনির্ঘন্টঃ শঙ্কিতবর্ণকঃ পু॰ চৌরঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

শকুঃ পু॰ স্থাণুঃ। মুডাগাছ ইতি ভाষा ॥ मध्मावित्मसः । मा-কোচ ইতি ভাষা।। শল্যাস্ত্রণ। শেল ইতি ভাষা। ইত্যমরভর-**७ ॥ मः** थावित्मयः । म जू লীলাবতীমতে দশলক্ষকোটিঃ ।। কীলঃ। গোঁজ ইতি ভাষা।। क्रमः ॥ कल्यः। ইতি মেদিনী ।। পত्रमिताकालः।। (मणुः। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। রাক্ষসঃ। ইতি गक्याना ॥ नशीनायगन्न जवा॰ । ইতি জটাধরঃ ॥ দীপ সূর্য্য-যোশ্ছাযা পরিমাণার্থণ কান্তাদি নিৰ্শ্বিতঃ ক্ৰমেণ সূক্ষাগ্ৰ দাদ-শাঙ্গল পরিমিতঃ কীলকঃ। य-থা। অকাঙ্গুলা তু সূচ্যগ্রা কা-ष्ठी घान्नून गृनिका। शक् मण्डा ভবেচ্চৈব তচ্ছাযাণ পরিকল্প-যেও।। মধ্যাত্রহীনৈ রাদিত্য यूटेक कायाकृतन र्दत्र । य-ট্পূরিত দিবাদণ্ড॰ লব্ধ॰ দণ্ডা-मिक॰ ভবে< ।। পূর্বাক্ল চ্ছায-যাতীত॰ পরাক্লছোযথৈষ্যক॰। मृटेनाक ताम वार्णं फिर्मा-क्षाः। । । । । । । । । । । । । । ।

३३। क्रां ९क्ट्रेयः । जावाण-দিবু মাসেষু চ্ছাষা মাধ্যাত্নিকী-মতা ৷৷৷ অযুনা শুজ মাসাস্তে वार्षामाणि व्रिशः। मः (थाकानामित्न जागशांत वृ-দ্বীতরে তথা।। ইতি জ্যোতি-স্তব্ধ ।। তস্য নামান্তর নরঃ। यथा । जाश कत्र गमृतः । मक्रुः अ-**मी** शब्द भक्ष जना खत्र म का या ভবেদ্বিনর দীপশিখোচ্চ্য ভক্তঃ । উদাহরণ । শঙ্কু প্রদীপান্তর-

ূ স্মিছস্মা দীপোছিতিঃ করত্রয়া চেৎ। শক্ষে স্তথা কা-ঙ্গুল সংমিতস্য তস্য প্রভা স্যাৎ कियতी वर्षाच्छ ॥ न्यानः । मक्ट् ১২ ভূঃ ৩ দীপঃ ৭ লব্ধানি চ্ছা-याङ्गुलानि ३२ । ইতি नीमाव-ত্যা॰ ছাযাব্যবহা खतीय **अथमका ७**०। हामगाञ्च-

जिकः **भक् उ**ष्णुयस भयः स्र्वः

। তকতৃদ্ধ ধনুঃ প্রোক্তণ ক্রো-

শো ধনুঃ সহস্রিকঃ।। ইতি তি-

থ্যাদিতত্ত্ব॰ ॥ শঙ্কু वर्गः भू॰ गर्मछः। ইতি वि-কাওশেবঃ॥ শঙ্কুচিঃ পু॰ শঙ্কুমৎস্যঃ। ইতি

भक्तव्यावनी ॥ শালবৃক্ষঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শালবৃক্ষঃ। ইতি त्रञ्जभावा ॥ वामनायी। देखि ত্রি শঙ্গুরঃ ट्याञ्याः ॥

শঙ্কুলা স্ত্রী উৎপলপত্রিকা। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ। পূগকর্ত্তনী। জাতী ইতি ভাষা। ইতি কেচিৎ।।

শক্ষোচঃ পুশ শক্ষুমৎস্যঃ।ইতি क्रिवाश्वरः ॥

শকোচিঃ পু মৎস্যবিশেষঃ 1 শাঁকোচ ইতি ভাষা। যথা। অথ শঙ্কুঃ শঙ্কচিঃ স্যাৎ শঙ্কো-চি শঙ্কুচীত্যপি। ইতি শব্দরত্না-वनी ॥

ञ्चलপরিমাণ°। যথা বিकृश्दर्मा- | শश्चः পু॰ क्ली সমুদ্রোভবজন্ত-বিশেষঃ। শাঁখ ইতি ভাষা। **७९** १ वर्षा पर । क्युः २ । हेठा-यतः ॥ करमाजः ७ जन्जः ८ कनजः ৫। ইতি শব্দরত্বাবলী ।। অর্ণোভবঃ ৬ পাবনধ্বনিঃ १ অন্তঃস্টিলঃ ৮ মহানাদঃ ১ শ্বেতঃ ১০ পূতঃ ১১ মুখরঃ ১২ मीर्यनामः ১७ वरुनामः ১৪ ছति-

ायः ३৫। जमा खनाः। कर्ने-ावः। भीठवः। भूषि नीर्या व-अनवः। खन्म मृन कक श्रोम चरिनाय नामिष्यकः। इछि রাজ-র্ঘন্টঃ।। অপিচ। কয়ু শৃध्रन-काि शिक मधुक कक्षेत्रेः । বা এবম্বিধা শ্চান্যে কোষ-ঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ ।। কোষস্থা রোঃ স্নিগ্ধাঃ পিত্ত বাতহরা बाह । बृण्ड्या व्ह्वर्फिका वृ-न्ह वनवर्क्षनाः ॥ **ই**তি ভাব-क्रांभः ॥ अनाक । माधान-ালো শীতৌ কষাযাবভিলে-नी । ইতি রাজবল্লভঃ ॥ 🗱 ॥ ন্যাৎপত্ত্যাদি যঁথা। অথ শন্তু রঃ শূল জগ্রাহ দানব প্রতি গ্রীষ্ম মধ্যাত্র মার্ত্তও শতক-রমুক্তমণ ।। শূলঞ্চ ভূমণণ কৃত্বা াত দানবোপরি। চকার ভ-नाख्य मत्रथयनविनाय। ॥ শব স্তেন শূলেন দানবস্যাস্থি লক । প্রেমা চ প্রের্যামাস र्लाटम চ मामत्र ॥ अञ्चि जिः াচূডস্য শখ্যজাতি ৰভূব হ। মা প্ৰকারৰূপা চ শশ্বৎ পূতা াৰ্চনে ।। প্ৰশস্ত শন্তাব্যঞ্চ गना॰ श्रीठिम॰ পর॰ । তীর্থ

তোয স্বৰূপঞ্চ পবিত্ৰণ শস্ত্ৰুনা বি-না ৷৷ শুখ্ৰশব্দো ভবেদ্যত্ৰ তত্ৰ লন্ধীশ্চ সুস্থিরা। স স্নাতঃ সর্ব-**डीर्थियू सः ऋाङः मध्यवातिना ॥** শঙ্খে হরে রধিষ্ঠান ষতঃ শৃঙ্খ স্ততো হরিঃ। তত্ত্রৈব সতত লক্ষ্মী मृ त्रीजृত ममञ्रमः ।। <u>ख</u>ीनाक्ष म-ষ্মধনিভিঃ শূদ্রাণাঞ্চ বিশেষতঃ। ভীতা রুষ্টা যাতি লক্ষীঃ স্থলম-ना९ खनाखनः ॥ इनि बक्तरेन-বর্ত্তে প্রকৃতিখণ্ডে ১৮ অধ্যাষঃ ।। 🟶 ।। অথ শঙ্মাহাত্মা । ব-কোবাচ। শৃণু শন্ত্যস্য মাহাত্ম্যু॰ সর্বপাপহর শুভ । কপিলাকী-র মাদায শথ্যে ক্লন্তা জনার্দ্দন ।।। যজ্ঞাযুত সহসুস্য স্নাপযিত্বা ল-ভেৎ ফল'। প্যস্বিন্যাঃ শুভ कीतः नष्ध क्रवा जू नातम ॥ यः স্নাপয়তি দেবেশ স গচ্ছেদ্বন্ধ-नः भनः । किञ्चा गरकामकः भ-·খ্যে যঃ স্নাপষ্ঠি মাধ্ব ৷৷ নমো নারাযণেত্যুক্তা মুচ্যতে যোনি ' শঙ্কটাৰ। শঙ্খলগ্নস্ত যত্তোষণ ভূ-মিত° কেশবোপরি ৷৷ নিঃক্ষিপে-মূর্দ্ধি সতত গঙ্গা স্নানেন তস্য कि॰। क्रश शारमाक॰ मरश्र देवख-বাষ প্রযক্তি॥ তিলমিশ্র তুল-

मा ह हान्यायन कल ल ल ए । নদী তডাগজ বারি বাগী কূপ-... <u>इ</u>र्मान्डवः ॥ शास्त्रयः उद्धत्व সর্ব॰ ক্লন্ত॰ শঙ্খে হরিপ্রিয়।গৃহীত্বা विक्शानाम् भट्य क्या ठ देवकवः ।। যো বহেৎ শিরসা নিত্যু॰ স মু-নে তাপসোত্তমঃ। ত্রৈলোক্যে যা-नि डीर्थानि वामुरमवाञ्जया मूरन ৷৷ শঙ্খ তান্যধিতিষ্ঠন্তি তস্মাৎ শधः मनार्करयः । दः भूता मा-গরোৎপক্ষো বিষ্ণুনা বিধৃতঃ ক-রে ৷৷ নমিতঃ সর্বদেবৈশ্চ পাঞ্চ-জন্য নমোস্ত তে। পুরতো বাসু-**प्रत्मा मभूष्य कल क्लार्टनः** ॥ শঙ্খঃ সমর্চ্চিতো যেন তদ্য লক্ষ্মী न पूर्ला । पर्भारानां नि मध्या किम् তमार्फित्नन ह ॥ विनय॰ যান্তি পাপানি হিমঃ সূর্য্যোদযে যথা। গর্ভা দেবারি নারীণাণ বি-नगास्त्रि महमुक्षा ॥ তব नार्तन পাতালে পাঞ্জন্য নমোস্ত তে। তীর্থোদক হরে মূর্দ্ধি ভ্রামযেৎ. শখ সংস্থিত ।। দদাতি মুক্তি" দেবেশঃ ক্ষীরসাগরজাপ্রিয়ঃ ॥ যমদুতাশ্চ জন্মাণ্ড পিশাচোরগ ताकमाः। मृख्या मरशामकः मृक्षि ভীতা যান্তি দিশো দশ ৷৷ নিত্যে

নৈনিত্তিকে কাম্যে স্নানার্চন বিলেপনে। শৃঙ্খ॰ সমর্চ্চয়তি যঃ শ্বেত্দীপে বদেদ্ধি সং ।। ইতি পান্মোত্তরখণ্ডে ১২৯ অধ্যায়ঃ ।। 🗱 ।। जय मिक्कावर्ज्यश्र-মাহাত্মা । দক্ষিণাবর্ত্রশঙ্খেন গদ্ব। প্রাক্ শ্রোতসং নদী । ক্ষণাভিযেকণ বিধিবৎ ততঃ পা-পৈঃ প্রমুচ্যতে ॥ দক্ষিণাবর্ত্তশ-ত্ত্বেন তিলমিশ্রোদকেন তু। উ-দকে নাভিমাত্রে তু যঃ সর্য্যা-দভিষেচন॰।। প্রাক্ শ্রোতস্যা॰ তু রৈ নদ্যাণ নর স্তত্তাম্ভসাপ্লুতঃ । যাবজ্জীব ক্তত॰ পাপণ তৎক্ষ-ণাদেব নশ্যতি।। দক্ষিণাবর্ত্তশ-জ্বেন পাত্র শোধ ধরে স্থিত। উদক যঃ প্রতীচ্ছেত শিরসা श्येगानमः ॥ তमा জग्रह्मा পাপ॰ তৎক্ষণাদেব নশ্যতি। ন শত্থেন পিবেতোষণ ন হন্যা-শ্বৎস্য শূকরে।। ইতি বারাহে প্রবোধনীমাহাল্যাধ্যায়ঃ॥ শधः भूः ननारोष्ट्र ॥ ऋरततः मा निधिबिटगरः॥ नथीनाम श-দ্ধত্রব্যণ। ইত্যমর মেদিনীকরৌ ।। কর্ণসমীপাস্থি। ইতি রাজ-निर्यक्तः ॥ अफैनागनायकान्छ-

তিনাগবিশেষঃ ৷৷ হস্তিদস্ত-াধ্য । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ ल्मिनिथर्बम॰था। लक्षरकारि-রতি যাবৎ। যথা। এক দশ-াতঞ্বৈ সহসূ মযুত তথা। ল-**লঞ্চ নিযুত** চৈব কোটি রর্বুদ यव ह ॥ वृन्मः थर्स। निथर्नन्ह ্র পদ্মে চ সাগরঃ। অন্ত্য । धा॰ भन्नार्क्त मन्यवृक्ता यथा-দুম ।। ইতি ভরত গৃত ব্রহ্মাও-्तां विकन ।। 🗱 ।। धर्मा । अर्था रियोजकमूनिवित्यवः। यथा। শ্বত্রি বিষ্ণু হারীত যাক্তবস্ক্যো-त्निक्तिः। यगाश्यम मय-িঃ কাত্যায়ন বৃহস্পতী ॥ প-শার ব্যাস শাগ্র লিখিতা দক্ষ গাতমৌ। শাতাতপো বশিষ্ঠ-🗦 ধর্মশাস্ত্র প্রযোজকাঃ॥ ইতি खितका वहन ।। शा त्वा ना-শেষঃ। যথা। ভক্ততুর্য্যণ গ-ভূর্য্য রণভূর্য্য মহাস্বনঃ। সং-ামপটহঃ শন্ম স্তথা চাভয-ब्रेखियः ॥ यश्वादिका नृशाजी-ভী রুঃ কোলাহলোপি চ। দ্ধবাদ্যস্য পর্য্যায় শ্চান্যে ভে-है मलामयः ॥ ইতি मक्त्रज्ञा-नी ॥

শখক ক্লী বলষঃ। ইতি মেদিনী
শখকঃ পু ক্লী কষুঃ।। শিরোরোগে পু । ইতি মেদিনী ।।
তস্য লক্ষণাদি যথা। শখকমাহ। পিত্রক্তানিলা দুফাঃ শখদেশে বিমূর্চ্ছিতাঃ। তীব্রক্তপদাহ রাগ হিশোখ সর্বস্থি দারুণ ।। স শিরো বিষক্তেগামিরুধ্যাশু গল তথা। ত্রিরাত্রা-

ত॰ হস্তি শংখকো নাম
নামতঃ ।। ত্র্যহাজ্জীবতি ভৈষজ্যণ প্রত্যাখ্যেম্য কার্মেৎ ।
পিত্ত রক্তানিলাঃ অত্র কফো
পিত্র রক্তানিলাঃ অত্র কফো
পিত্র রক্তানিলাঃ অত্র কফো
পিত্র রক্তারিতি সুশ্রুত বচনাৎ ।
বিমূচ্ছি্তাঃ প্রবৃদ্ধাঃ। ত্রিরাত্রাৎ
ত্রিরাত্রমধ্যে মার্ম্বতি । ইতি
ভাবপ্রকাশঃ ।। অস্য চিকিৎসা
শিরোরোগশন্দে দ্রম্ব্যা ।।

শধ্বনারঃ পু॰ বর্ণশঙ্করজাতিবিশেষঃ। শাখারি ইতি ভাষা।
স তু শুদ্রাগর্ত্তে বিশ্বকম্মোরসজাতঃ। ইতি বন্ধবৈর্ত্তপুরাণণ
। তৎপর্য্যাযঃ। শাধ্বিকঃ ২
কায়জকঃ ৩ ৷ ইতি শব্দরত্নাবলী। শাষ্বিকঃ ৪ ৷ ইতি জটাধরঃ ৷!

শখ্চরী স্ত্রী ললাটিকা। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।।

শখ চকी खी ननार्षिक। ইতি শক্রত্বাবলী।

শঙ্ক চূর্ণ ক্রী শগুজাতচূর্ণ। শাঁ-থেরচূণ ইতি ভাষা। অস্য গু-ণাঃ। শগুচূর্ণ কটু ক্ষার মুম্বণ ক্রিমিহরণ পরণ। ইতি রাজ-বল্লভঃ।।

শধ্যজঃ পু॰ কপোতডিম্ববদৃহ-ন্মুক্তা।ইতি কেচিৎ:৷৷ শধ্যজা-তবস্তুনি ত্রি ৷৷

শখ্দাবী পু॰ অমুবেতসঃ। ইতি ।।

শঙ্খপুরা স্ত্রী হিলমোচিকা। ইতি রত্মনালা।।

শৃখ্যঃ পু॰ শৃখ্যাদকঃ। তৎ-পর্য্যায়ঃ। শাখ্যিকঃ ২। ইতি জটাধরঃ।।

শত্রাঃ পু॰ শত্রবাদকঃ। ইতি
মুগ্ধবোধব্যাকরণং।।

শখনখং পু॰ ক্রশখং।জোকডা ইতি ভাষা। ইত্যমরভরতৌ । নখীনামগন্ধজব্য॰। ইতি
শব্দরত্বাবলী । বৃহন্ধখী। যথা
। মহা॰ স্তুসৌ শধ্দনখং শ্র্যাখ্যো গন্ধসারণং। ইতি রত্নমালা

मधनशा जी मधनशी। यशा দিধা শগ্ধনখাখ্যান্যা শুক্ত্যা-খ্যা বদরীচ্ছদঃ। ইতিরত্নমালা।। गध्यभूष्णी खी वृक्ववित्नियः। শधारनी देखि जानकनी देखि চভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। সুপুশী ২ শথাহ্বা ৩ ক্ষুমালিনী ৪ পীতপুষ্পী ৫ কম্বুপুষ্পী ৬ মেধ্যা १ मलविना भिनी ৮ कित्री है। २ শগ্রসমা ১০ ভূলগা ১১ শগ্র-यानिनी ३२। जमार्खनाः। हि-মত্ব'। তিক্তত্ব'। মেধা স্বরকারি-ত্ব°। গ্ৰহ ভূতাদিদোষ নাশিত্ব° ।বশীকরণ সিদ্ধিদাতৃত্বশ্ব। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। অপি চ। শঞ্-পুষ্পী তু তীক্ষোকা মেধ্যা ক্রমি বিষাপহা। ইতি রাজবল্লভঃ ।। অন্যচ্চ।শৃগ্বপুষ্পী তু শৃগ্বাহ্বা मझना। अमुगाणि ह। गध्रभूकी সরা মেধ্যা বৃষ্যা মানসরোগ-न् ।। तमायनी क्यारयाया प्यृ-তি কাস্তি বলাগ্নিদা। দোষা-পস্মার ভূতাসূক্ দণ্ঠ ক্রিমি বিষ-প্রণুৎ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। শश्रপ्रकः भू॰ हन्द्रमग्रहिङ्गः। यथा। লিঙ্গুণ শৃঙ্গুণ চিত্নঞ্চ শণ্ডপ্রস্থো বিধোরখ। ইতি শব্দমালা।

रकृ< পু॰ विक्ः। ইতি হেম-ज्यः ॥ ।মুখঃ পু॰ জম্ভীরঃ। ইতি ছেম-खः ॥ मृन॰ क्नी मृनक॰। ইতি রাজ-त्रेर्घेन्छैः ॥ াখ্যঃ পু॰ বৃহন্নখী। ইতি রত্ন-ाना ॥ াহ্বা স্ত্রী শৃগ্ধপুষ্পী। ইতি ाक्रिवर्गकेः ॥ াকা স্ত্রী ভূণবিশেষঃ। চোর-हनी इंठि ভाষা। यथा। मश्चि-্যা॰ শশ্বিকা চোরা। ইছি শব্দ-व्यिक। ॥ । বী জী চোরপুশী। ইত্য-রঃ ।। শ্বেতপুনাগঃ । ইতি বি-াঃ।। শ্বেতবৃন্দা। ইতি মেদিনী ্শ্বেতচুক্রা। ইতি শব্দরত্না-नी ।। तूक्षमक्रिएकः । इंछि ত্রকাণ্ডশেষঃ ॥ যবতিক্রা ্তি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। চতুর্বিধ-ীমধ্যে স্ত্ৰীবিশেষঃ ৷ তল্লক্ষণ था। मीर्घा मूमीर्घनयना वत्रमू-দরী ষা কামোপভোপরনিকা)ণশী**লযুক্তা রেখাত্র**য়েণ চ বি-্ষিত কণ্ঠদেশা সম্ভোগ কেলি-সিকা কিল শখিনী সা।। শ-

শক॰ পদ্মিনী তুষ্টা চিত্রিণী র-মৃতে মৃগণ। বৃষভণ শঞ্জিনী ভু-কী হস্তিনী রমতে হয় ।। পদ্মি-নী পদ্মপন্ধা চ মীনগন্ধা চ চি-ত্রিণী। শন্থিনী ক্ষারগন্ধা স্যাৎ মদগন্ধা চ হস্তিনী ॥ ইতি রতি-मक्षती।। मध्ययूका। यथा। म-গ্রিনী চাপিনী বাণ ভুশুণ্ডী প-রিঘাবুধা। ইতি দেবীমাহাত্ম্য॰ া। উপদেবতাবিশেষঃ। শঞ্জিনী-वामगमार्थ मर्गना९॥ मिश्रिनीयनः पु॰ मित्रीयवृकः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ শঞ্জিনীবাসঃ পু॰ শাখোটবৃক্ষঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। শখী পু বিষ্ণা সমুদ্রঃ ইতি त्मिनी ॥ भाष्ट्रिकः॥ भाष्ट्रिकः শিষ্টে জি। ইতিশব্দরত্নাবলী।। শচ ই গু গত্যা । ইতি কবিকল্প-ক্রমঃ।। ও শঞ্জতে। ইতি দুর্গা-मामः ॥ শচ ও বাচি।ইতি কবিকল্পদ্রুমঃ ॥ ঙ শচতে। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ শচিঃ স্ত্রী ইন্দ্রপদ্মী। ইতামর-টীক্রাযাণ ভরতঃ ॥ मही खी रेखना दी। उदमर्गायः । পুলোगজा २ हेन्द्रानी ७।

ইত্যমর:।। শচিঃ ৪ সচী ৫ সচিঃ ৬। ইতি ভরতঃ।। পৃতক্রতাযী १ (शिलामी ৮। रेखि क्रिश्तः ॥ गार्खी व जगकाश्नी ३० এন্দ্রী ১১ শতাবরী ১২। ইতি শব্दश्वावनी ॥ শতমূলी ॥ स्त्री-করণান্ডর॰। তত্তু বিষ্টিকরণ মি-তি কেচিৎ।। ইতি মেদিনী।। महीপতिः भू• हेस्सः। हेलामदः॥ শট ক ও শ্লাষে। ইতি কবিকল্প-प्रमाः ॥ क ७ मार्रेग्र । इंडि मूर्गामामः ॥ गढ मारम ॥ भीरगे ॥ गरछो॥ क़ि । ইতি কবিকল্পদ্রमः ॥ मात्मा श्वमामः। मीर्नि र्छिमः। শটতি লোকঃ অবসীদতি। বি-শৃণাতি। গচ্ছতি। রুজতি বা इंडार्थः। इंडि मूर्गामामः॥ **ग**िः वि जन्नः। गिर्धारक तह-প্রত্যবেন নিষ্পন্ধঃ। ইতি সিদ্ধা-खकोगूमी ॥ শটা স্ত্রী সটা।জটা।ইত্যমর-विका ॥ गिंदिः खी गिंदि । इंडि म सत्र्वा-वनी ॥

শ্দী স্ত্রী স্থনামখ্যাতৌষধিঃ।

বনআদা ইতি ভধা। কচূর ইতি

शिकी ভाষा। তৎপর্যাবः। গন্ধমূলী ২ ষড্গ্রন্থিকা ৩ কর্ছু-तः 8 भनामः **८। ই**ভाষतः ॥ সটী ৬ ষটী ৭ গন্ধশটী ৮ কর্ৰুরঃ ১ কর্চ্চুরঃ ১০। ইতি তরতাদৰঃ ॥ मूशक्षा ३३ मिंहः ३२ मिंहः ५७ शक्षमृल। ३८ शरक्षालिः ३৫ शक्ष-मृनकः ১७। ইতি শব্দরত্বাবলী ।। शक्तमणे ३१ वधूः ३৮ शक्त-मृल॰ ১৯। ইতি জটাধরঃ ॥ জी-মৃতমুল ১৬ কচ্ছোর ১৭ ছিম-का ३৮। ইতি রক্সনালা।। टेश्नी ১৯ বড্গ্রন্থিঃ ২০ সুব্রতা ২১ गन्नानी २२ शनामा २७ हिमा ২৪। ইতি গ্রন্থান্তর ।। যদ্ধুর। ২৫ অম্লনিশা ২৬ সুগন্ধমূলা २१ गन्नानी २৮ गंगीका २२ ११-লাশিকা ৩০ সুভদ্রা ৩১ তৃণী ৩২ দূৰ্বা ৩৩ গন্ধা ৩৪ পৃথ্প-লাশিকা ৩৫ সৌম্যা ৩৬ হিমো-ख्वा ७१ भन्नवशृः ७৮। व्यमा গুণাঃ। তিক্তত্বণ। অমুরসত্বণ। वयुष् । উक्ष । क्रिकार्तिष । জ্বর কফাসু কণ্ডু ত্রণদোষ রক্তা-ययश्यकातिषः। ऋमाष्यः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। অপিচ। অথ গ-ন্ধপলাশী সুগন্ধজব্য কাশীরে

প্রসিদ্ধ । শটী পলাশী ষড্গ্রন্থ সুত্রতা গন্ধমূলিকা ৷ গন্ধারিকা गन्नवध् वंध्ः शृथ्शलाणिका ॥ ভবেদান্ধপলাশী তুকষাৰা গ্ৰা-हिनी नघुः। जिका जीक्का ह कर्नु-कानुकामायननानिनी।। लाय-কাস ত্ৰণ শাস শূলাগ্মানগ্ৰহাপ-হা। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। টক ক্লী ঘৃতজলমিশ্রিতশালি-**চূ**र्न-। ययमात्रमाठी देखि ভाষा । ষথা। শালিচূর্ণ ঘৃত ভোষণ মিশ্রিত শউক বদেৎ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ ৷৷ ह क ७ क्षारय। ইতি क क्रियः ॥ क ७ भाठियत् । ইতি नुर्शामामः ॥ বধ ক্লেশ কৈভবে। ইতি ক-विकन्नफ्रमः ॥ क्लामा मूःथान् ভবঃ। কৈতবং মিত্ৰৰঞ্চনং। শ্-্তি খলঃ সাধু বঞ্চযতীত্যর্থঃ। हैि जूर्गानामः॥

ক আলস্যে ।। গত্যসংস্কৃত
ক্ষেত্ৰ। ইতি কবিকল্পদ্ৰুম্য: ।।
ক্ষাঠ্যতি বৃদ্ধঃ ক্ৰিয়াসু মন্দঃ
গ্ৰাদিত্যৰ্থঃ। ইতি দুৰ্গাদাসঃ ।।

৭ক দুৰ্বাচি। ইতি কবিকল
ক্ষাঃ ।। শঠযতি নীচঃ ল্বংসিতং

বদতীত্যর্থঃ। রমানাথন্ত সম্য-श्वांबर्ण इंकि यदा गठेगिक जगा-খদতীত্যৰ্থ ইত্যাহাসমাগুৰিণে इिं छोभताः। मगाश्वादव हे-ত্যেকে। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ क्री তগর ।। সঙ্গুম ।। ला रः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ শर्ठः पुर वधाष्ट्रभूक्षयः ॥ धृर्वः॥ **शु**ख्रुतः । इंडि यिनिनी ॥ अम्र লক্ষণ । প্রিষণ বক্তি পুরোন্যত্র বিপ্রিয়ণ সরুতে ভূশণ। ব্যক্তা: পরাধ চেফশ্চ শঠোয় কথি-• তো বুধৈঃ।। ইতি বিষ্ণুপুরাণে ७ अ॰ ८म ३४ अशारय २३ ८ ह्या-কটীকা ।। চতুৰ্বিধপত্যস্তৰ্গতপ-তিবিশেষঃ। তস্য লক্ষণ°। কা-भिनीविषयक প छे भ छूः । यथा । মৌলৌ দাম বিধায় ভাল ফল-কে ব্যালিখ্য পত্রাবলীণ কেয়্-तः जुकरगः निधाय कठरमा र्वि-नामा गूकामुकः। विश्वामः मगू-পাৰ্জ্যন্ মৃগদৃশঃ কাঞ্চী নিবে-শচ্ছলামীবী গ্রন্থি মপাকরোতি মৃদুনা হস্তেন বামজবঃ।। ইতি तमयक्षती ।।। শঠতা স্ত্রী শঠস্য ভাবঃ। তৎ-

পৰ্য্যায়ঃ। মাষা ২ শাঠ্য ত ঙ্গ-

अवम्

সৃতিঃ ৪ নিক্নতিঃ ৫ । ইতি হেম-**ठ**न्दः ॥ ञनाक । ञज्जियां॰ क-পটো ব্যাজ উপধি দ'ন্ত এব চ। কূটে কন্ধ ছল ছদ্ম মিষ কৈরব কৈতবং ৷৷ অথ শাঠ্যঞ্চ শঠতা স্পৃতি নিক্কতিশ্চ সা। হি॰সাফ-লে চতুষ্ণ স্যাৎ শাঠ্য পর্য্যায ञेतिजः ॥ भृदः कপট भर्यायः ফলে বঞ্চন মাত্রকে। উভযো-রেক পর্য্যায় ইতি কেচিৎ প্রচ-ক্ষতে।। ইতি শব্দরত্নাবলী।। শঠায়া স্ত্রী অম্বন্ধা। ইতিরাজ-निर्घकिः॥ কল্পক্রমঃ।। তালব্যাদিঃ। ই শ-

শত ইঙ সংঘ রুজোঃ।ইতিকবিকল্পজনঃ ।৷ তালব্যাদিঃ । ই শভ্যতে ৷ ঙ শগুতে ৷ কাণ্ডো বীরং
রুজতীত্যর্থঃ ৷ ইতি দুর্গাদাসঃ ৷৷
শণ ম দানে ৷ ইতি কবিকল্পজনঃ
।৷ ম শণষতি ৷ ইতি দুর্গাদাসঃ ৷৷
শণ ক্লী কুপবিশেষঃ ৷ তৎপর্যায়ঃ ৷ ভঙ্কা ২ মাতুলানী ৩
। ইতি হেমচক্রঃ ৷৷

শণঃ পুণ স্থনামখ্যাতক্ষুপঃ।তৎ পর্য্যায়ঃ। মাল্যপুষ্পঃ ২ বমনঃ ৩ কটুতিক্তকঃ ৪ নিশাবনঃ ৫ দীর্ঘশাখঃ ৬ স্বক্সারঃ ৭ দীর্ঘ-পদ্ধবঃ ৮। অস্য গুণাঃ। অমুত্ব ক্ষাযত্ব । মল গর্ত্তাসু পাতনত্ব । বাতকারিত্ব । পিত্ত কফ
তীব্রাঙ্গমর্জনাশিত্বক । ইতি
রাজনির্ঘন্টঃ ।।
 শণযন্তিকা ত্রী শণপুজী। ইতি
রাজনির্ঘন্টঃ ।।

শণপণী স্ত্রী অশনপণী। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শণপুষ্পিকা স্ত্রী ঘণ্টারবা। ঝন-ঝনিষা ইতি বনশোণ ইতি চ ভাষা। ইত্যমরভরতৌ ।।

শণপুষ্পী ন্ত্ৰী ক্ষুপবিশেষঃ। শগহলী ইতি শণই ইতি বনশণই
ইতি চ ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ।
বৃহৎপুষ্পী ২ শণিকা ৩ শণষগৈতকা ৪ পীতপুষ্পী ৫ স্থূলফলা
৬ লোমশা ৭ মাল্যপুষ্পিকা ৮
। অস্যাগুণাঃ। ক্ষুদ্ৰতিক্তম্বং।
বিমিকারিম্বং। রসনিযামকম্বঞ্চ।
ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শণসূত্রণ ক্রী পবিত্রকণ i ইত্যমরং ৷৷ দে শণসূত্রজালা ৷ শণস্য সূত্রণ শণসূত্রণ ৷ শণ শ্রমাদানে
তি সূত্রণ শণং ৷ শণ শ্রমাদানে
অন্ ৷ শণং তালব্যশাদি মুর্দ্ধিন্যণান্তঃ ইতি বছবং ৷ সনো
দন্ত্যসাদি দন্ত্যনান্ত ইতি কে-

চিৎ। তশ্মতে বন সঞ্জু দানে ই-**छामा बन्नः। मर्ला म्खामा**नि মূ দ্ধন্যণাস্ত ইত্যপরে। সণ কিণ মণি কাকণ কোণ কাণা ইতি যুদ্ধন্যণান্তে বিদ্যাভরণ ।। কা-र्भाम यूथवीजः माषिथामार्कु বৃত ত্রিবৃৎ। সনসূত্রময রা-জ্ঞো বৈশ্যস্যাবিক সৌত্রিক মি-তি মনুবচনাৎ পবিত্রক মপি তদূচ্যতে ।। আনায ইত্যাদি চতুষ্ণ জালে ইত্যেকে। আনা-য ইত্যাদি শ্লোকাৰ্দ্ধণ ক্ষচিদ্দৃশ্য-তে তৎ স্বাম্যাদ্যুপেক্ষিত মপি অন্যৈ রাদৃত মিতি বিবৃত । ই-তি তট্তীকাষাণ ভরতঃ।।

শণালুকঃ পু॰ আরেবতবৃক্ষঃ। শোণালু ইতি ভাষা। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

শণিক। স্ত্রী শণপুষ্পী। ইতি রাজনির্ঘষ্টঃ।।

भनीत॰ क्वी भागमश्रः श्रृ विनः॥

कर्मत्री ७ छे॰। इंछि स्मिनी ॥

শঙ की शवािष्ठम् इः। ইতি শক্রত্নাবলী।।

শঙঃ পু॰ নপু॰সক॰ ॥ গোপতিঃ । ইতি ভরতদ্বিৰূপকোষঃ ॥ শঙতা ত্ৰী ষণ্ডত্ব॰ । শঙ্শব্দাৎ ভাবে ত প্রত্যযস্যানন্তর পা-প্রত্যযেন নিষ্ণানা।। শণ্ডিলঃ পুং মুনিবিশেষঃ। শ-গুশব্দাদৌণাদিক ইলচ্ প্রত্য-যেন নিষ্পান্ধঃ। ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুদী।।

শণ্টঃ পুণ অন্তর্মইল্লিকঃ। অভ্য-ন্তরন্ত্রীরক্ষকোষণ। খোজা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। বর্ষবরঃ ২ ৷ তল্লকণ যথা। ষে স্বল্পসন্ত্রাঃ প্রথমাঃ ক্লীবাশ্চ ন্ত্রীস্বভাবিনঃ ৷ জাত্যা ন দুষ্টাঃ কার্য্যেষু তে বৈ বর্ষবরাঃ স্মৃতাঃ।। ইতি ৷৷ ন পুণসকণ। হিজ্জে ইতি ভাষা। ইত্যমরভরতৌ ৷৷ গোপতিঃ ৷ শাঁড ইতি ভাষা। ইতি মেদিনী ৷৷ বন্ধ্যপূক্ষা। ইতি জটাধরঃ।। উন্মত্তঃ। ইতি ধনঞ্জয়ঃ।।

শতং ক্লী দশগুণিতদশস্থা। ।

একশও ইতি হিন্দী ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। দশতিঃ ২। ইতি পুরাণং। তদাচকানি। ধার্ত্তরাফুঃ
১ শতভিষাতারা ২ পুরুষাযুষঃ
৩ রাবণাঙ্গুলিঃ ৪ পদ্মদলং ৫
ইন্দ্রযক্তঃ ৬ অন্ধিযোজনং ৭।
ইতি কবিকল্পলতা।।
শতকঃ ত্রি শতসংখ্যাবিশিষ্টঃ।

ষথা। শান্তিশতকামরুশতকাদিঃ। শতশব্দাৎ ক প্রত্যযেন
নিষ্ণারঃ॥ স্বার্থেকে শতকঞ্চ।।
শতকীর্ত্তিঃ পুণ ভাব্যর্হদিশেষঃ।
ইতি হেমচন্দ্রঃ।

শতঙ্গদঃ পু॰ করবীরঃ। ইতি ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শৃতঙ্গম্ভঃ পু॰ পর্বতবিশেষঃ। ইতি শাতঙ্গম্ভশব্দ দীকাষাণ ভরতঃ।।

শৃতকোটিঃ পু॰ বজু॰।ইত্যুমরঃ । বৃন্দসংখ্যা।। লীলাবতীমতে অজ্ঞ সংখ্যা।।

শতক্রতঃ পু॰ ইন্দ্রঃ। ইতি ধন-জমকোষঃ।।

শতখণ্ড॰ ক্লী সূবর্ণ । যথা সৌ-মেরুক॰ মহাধাতুঃ শতখণ্ডণ সৃদ্-ল্লক॰ । ইতি শব্দচন্দ্রিকা ।। শত-ভাগশ্চ ।।

শতগ্ৰন্থিঃ স্ত্ৰী দূৰ্বা।ইভি রাজ-নিৰ্ঘন্টঃ।।

শতমী স্ত্রী শস্ত্রভেদঃ ।। বৃশ্চিকালী ।। করঞ্জকঃ । ইতি মেদিনী ।। আদ্যস্য লক্ষণ । অযঃ
কণ্টক সংচ্ছমা শতমী মহতী
শিলা । ইতি বিক্রমরক্ষিতঃ ।।
দুর্গঞ্চ পরিখোপেত চ্যাটালক
সংযুত । শতমী যন্ত্রমুখ্যেশ্চ

শতশশ্চ সমাবৃত ।। গোপুর
সকবাটঞ্চ তত্র স্যাৎ সুমনোহর । সপতাক গজাকটো যেন রাজা বিশেৎ পুর ।। ইতি
মাৎস্যে রাজধর্মে দুর্গসম্পত্তিনমি ১৯১ অধ্যামঃ।। ৠ।। গলরোগবিশেষঃ। অস্য নিদান
লক্ষণ চিকিৎসাঃ রোহিণীশকে
দ্রুইব্যাঃ।।

শতচ্চদঃ পুণ কান্তস্টপক্ষী।
কাট্ঠোকরা ইতি ভাষা। ইতি
ত্রিকাণ্ডশেষঃ। শতদলপদ্মঞ্ব।।
শততমঃ ত্রি শতস্য পূরণঃ। শতশব্দান্তমট্প্রতাবেন নিম্পন্নঃ।।
শততারা স্ত্রী শতভিষানক্ষত্রণ।
ইতি কেচিৎ।।

শতদম্ভিকা ক্লী নাগদন্তী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শতক্রঃ স্ত্রী নদীবিশেষঃ। শতলজ্ ইতি হিন্দী ভাষা। সা হিমালযাদুৎপদ্মা বিপাশাষাণ মিলিতা। তৎপর্য্যায়ঃ। শিতক্রঃ
২ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ শুতুদ্রিঃ ৩
শতদ্রঃ ৪ ৷ পুত্রশোক সম্ভপ্তো
বশিষ্ঠঃ কঠে শিলাণ বদ্ধা নদ্যা মস্যাণ প্রবিষ্ঠ স্ততো ভীত্যা ইয়ণ শতধা ক্রতা ইতি

শৃতদেং। ইতি তট্টীকাষাণ তর-তংয় অস্যাজলগুণাং। শৃতদো বিপাশাযুজঃ সিন্ধুনদ্যাং। সু-শীতণ লমু স্বাদু সর্বাময়মণ। জলণ নির্মালণ দীপনণ পাচনঞ্চ প্রদত্তে বলণ বুদ্ধি মেধাযুষঞ্গ।। ইতি রাজনির্ঘণটাঃ।

শতধা স্ত্রী দূর্বা। ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা॥

শতধা ব্য শতপ্রকারণ । যথা।
আন্তীক বচনণ শ্রুত্বা যঃ সর্পো
ন নিবর্ত্ততে । শতধা ভিদ্যতে
মূর্দ্ধি শিরীষস্য ফলং যথা।
ইতি মহাভারতং ।।

শৃতধামা^ন পু• বিষ্ণুঃ ইতি জটা-ধরঃ ৷৷

শতধার॰ ক্লী বজুণ। ইতি ত্রিকা-ওপেষঃ।। শতধারাযুক্তে ত্রি। যথা। বসোঃ পবিত্রমসি শত-ধারণ বসোঃ পবিত্রমসি সহসু-ধারণ। বসোঃ পবিত্রেণ শতধা-রেণসুত্বা কামধুক্ষা। ইতি পশু-পতিপদ্ধতিঃ।।

শতপৃতিঃ পুণ ইন্দ্রঃ । বেন্ধা । ইতি
নেদিনী । স্বর্গঃ । ইতি বিশ্বঃ ।।
শতপত্রণ ক্রী পদ্মণ ৷ ইত্যমরঃ ।।
শতপত্রঃ পুণ মযুরঃ ।। সারসঃ ।।

দার্বাষাটপক্ষী। ইভি মেদিনী। রাজকীরঃ। নুরী ইভি ভাষা।। ইভি হেমচন্দ্র রাজনির্ঘটেগী।। শতপত্রকঃ পু॰ দার্বাঘাটপক্ষী। কাঠঠোকরা ইভি ভাষা। ইত্য-মরঃ।।

শতপত্রনিবাসঃ পু॰ ব্রহ্ম। ইতি
কবিকল্পতা।। পদ্মস্থে ত্রি ।।
শতপত্রী স্ত্রী পুষ্পবিশেষঃ। সেউতী ইতি ভাষা। পাটলবর্ণাসৌ গোলাব ইতি বদস্তি। তৎপর্যায়ঃ। সুমনাঃ ২ সুশীতা ও
শিববল্পতা ৪ সৌম্যগন্ধী ৫ শতদলা ৬ সুবৃক্তা ৭ শতপত্রিকা
৮। অস্যা গুণাঃ। হিমন্ত্রণ।
তিক্তন্ত্রণ। কষায়ন্ত্রণ। স্থ্র মুখস্ফোট পিত্র দাহ নাশিন্ত্রণ। ক্রচ্যন্ত্রণ। সুরভিত্বক্ষ। ইতি রাজনির্য্নটঃ।।

শতপত্রিকা স্ত্রী শতপত্রী।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শতপথিকঃ ত্রি নানাপথগামী।।
নানামতাবলম্বী। যথা। শতষফোঃ ষিকন্পথঃ। ইত্যনেন শতশব্দোত্তর পথিন্ শব্দাৎ ষিকন্ প্রত্যাবেন নিষ্পায়ঃ। ইতি
সিদ্ধাস্তকৌমুদী।।

শতপদচক্রণ ক্লী নামা নক্ত্র-खानार्थं ठकः। यथा। ठकः भ-তপদ॰ বক্ষ্যে ঋক্ষা॰শাক্ষর সম্ভ-वं । नामानिवर्गला एक या स-ক্ষরাশ্যতশকা স্তথা 11 তির্য্যগৃ-ৰ্দ্ধুগতা রেখা রুদ্র সংখ্যা লিখে-ছুধঃ। জাযতে কোন্ঠকানাঞ্চ শুতৈক ১০০ নাত্র সংশ্যঃ !৷ অ ব ক হ ডা ঐশান্যা॰ ম টপ র তা হরিতি চাগ্নেয্যাণ। ন য ভ জ था देन श्रे जाः भ म म म न ना वाय-ব্যা গাঞ্চ পঞ্চ ক্রমেনৈর বিং-শবর্ণান্ প্রযোজ্যেৎ। পঞ্ষর मगारगारग এरेकक॰ शक्ष्या अक् ।। ज्यवर्गामा खर्गा एक्याः म-ন্ধাকরযুতা স্তথা। সজাতীযে-का माञ्चाय পश्यत विनिर्वयः ॥ ঋদ্মতো রপ্যকারেণ শেন সস্য পরিগ্রহঃ। সর্য্যাৎ স পু ভু দু-गुक्गाরा वि

ন্ধ য ও ছা ভবেৎ স্তত্তে রোজেদ্বীশান গোচরে। পুষণ ঠা ভবেৎ স্তত্তে হস্তে চাগ্নেষ সংজ্ঞ কে।। ভূধ ফ ঢা ভবেৎ স্তত্তে পূর্বাষাঢে চ নৈঋতে। দুথ বা ওা ভবেৎ স্তত্তে বাষব্যে ভাজ ভিত্তরে। এবং স্তম্ভ চতৃক্কঞ্জা-

তব্য॰ স্বরবেদিভিঃ । ধিষ্ট্যানি ক্বত্তিকাদীনি প্রত্যেক° চতুরক্ষ-রৈঃ।। সাভিজিন্ত্য॰শকা স্তত্র শতৈক॰ দ্বাদশাধিক॰ । যদৃক্ষা॰ শক কোষ্ঠস্থং ক্রুরঃ সৌম্যোপি বা গ্ৰহঃ ৷৷ তত্ৰস্থো বেধযেৎ স-गाक् श्रूरमा नामानिमाक्षतः । भित्मा विका **७७** । उत्तर मण-ভ॰ পাপ খেচরৈঃ ।। মিত্রৈ মি-শ্রফল তত্র নির্বেধন শুভাশু-ভ°। যদাচ্য॰ সৰ্বতোভদ্ৰে গ্ৰ-হোপগ্ৰহ বেধতঃ ৷৷ শুভাশুভ ফল॰ সৰ্ব॰ তদিহাপি বিচিত্ত-যেৎ। পঞ্সরা অ ই উ এ ও-কারা স্তৈর্ফোগে ধিষ্ট্যানি নক্ষ-ত্রাণি ৷ অত্র চত্র্ভি ব গৈ রেক नक्ष्व॰ यथा। जे हे छ । । उव वि वृ ह। त्व त्व क कि ६। স্য ওছ ৬। কে কো হ হি १। হু হে হো ড ৮। ডি ডু ডে ডো २। यि यू (य ४०। त्या है हि हू ३३१ ८ छे छो नित्र ३२१ भूष व र्र ১৩।পে পোর রি ১৪। রু রে রোত ১৫। তি তু তে তো ১৬। न नि नू तन ३११ तन। य यि यू ४४ । যে যোভ ভি ১৯। ভুধ ফ ঢ ২০।ভে ভো জ জি ২১। জু জে

শতপদী স্ত্রী বহুগদযুক্তকীটবিশেষঃ ! কাণবিছা ইতি কাণকোটারী ইতি চ ভাষা ৷ তৎপর্যায়ঃ ৷ কর্ণজলোকাঃ ২ ৷
ত্যমরঃ ৷৷ কর্ণকাটা ৩ ভারুঃ ৪
শতপাদিকা ৫ কর্ণজলুকা ৬ ৷
ইতিশব্দরত্বাবলী ৷৷ শতপাত্ ৭
শতপাদী ৮ ৷ ইতি জটাধরঃ ৷৷
শতপদ্মণ ক্রী শ্বেতকমলণ যথা ৷
শতপদ্মণ মহাপদ্মণ পুঞ্জরীকণ
সিতাযুজ্ঞণ ইতি রত্নমালা ৷৷
শতপর্যা পুণ বংশঃ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷
ইক্ষুভেদঃ । যথা ৷ শতপর্বা ভবেৎ
কিঞ্চিৎ কোশকার গুণান্বিতঃ ৷

বিশেষাৎ কিঞ্চিদুক্তণ্চ সক্ষারঃ

প্ৰনাপহঃ।। ইতিভাবপ্ৰকাশঃ

শতপর্বা স্ত্রী দূর্বা ৷৷ বচা ৷৷ ভাগ্রপত্নী ৷ ইতি মেদিনী ৷৷
কোজাগরপূর্ণিমা ৷ ইতি শব্দরত্নাবলী ৷৷ কটুকা ৷ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷

শতপর্বিকা স্ত্রী দূর্বা ।৷ বচা । ইতি মেদিনী ॥ যবঃ । ইতি শব্দরত্বাবলী ॥

শতপর্বেশঃ পু॰ শুক্রগ্রহঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।৷

শতপাৎ) স্ত্রী কর্ণজলোকাঃ।ইতি শতপাদ্) জটাধরঃ ।। শতপাদিকা স্ত্রী কাকোলী।ইতি জটাধরঃ ।৷ কর্ণজলোকাঃ । ইতি শব্দরত্বাবলী ।।

শতপুষ্পঃ পু॰ ভারবিঃ। স তু কিরাতাজুনীযগ্রন্থকর্তা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

শতপুষ্পা স্ত্রী শাকবিশেষঃ।

শলুফা ইতি খ্যাতা। ইতি ভরতঃ।। তৎপর্য্যায়ঃ। সিতচ্চত্রা ২
অতিচ্চত্রা ৩ মধুরা ৪ মিসিঃ ৫
অবাক্পুষ্পী ৬ কারবী ৭। ইত্যমরঃ।। শতাক্ষী ৮ শতপুষ্পিকা
৯ মধুরিকা ১০ শতাহ্বা ১১ ছত্রা
১২ মিশিঃ ১৩ মিশী ১৪। ইতি
শক্রত্নাবলী।। মাধবী ১৫ মো-

W 00 0

ষা ১৬। ইতি জটাধরঃ।। অস্যা গুণাঃ। মধুরত্ব। বাত পিত্ত হ-রত্বণ। শুরুত্বঞ্চ। ইতি রাজবলভঃ ॥॥॥ ক্ষুপবিশেষঃ। মৌরী ইতি ভাষা। তৎপৰ্যায়ঃ। শতাহ্বা ২ মিসিঃ ৩ ঘোষা ৪ গোতিকা ৫ অহিচ্চত্ৰা ৬ অবাক্পুশী ৭ মা-थवी ৮ कात्रवी २ मिका ১० म॰-ষাতপত্রিকা ১১ ছত্রা ১২ বজু-পুষ্পা ১৩ সুপুষ্পিকা ১৪ শত-প্রসূনা ১৫ বছলা ১৬ পুল্পাস্থা ১৭ শতপদ্ৰিকা১৮ ৰনপূষ্পা১৯ ভূরিপুশা ২০ সুগন্ধা ২১ সূশ্ব-পত্রিকা ২২ মধুরিকা ২৩ অতি-চ্ছত্রা ২৪। অস্যা গুণাঃ। কটুত্ব । তিব্ৰুত্বণ। সিশ্বত্বণ । শ্লেমাতি-সার স্বর নেত্রবণ নাশিত্ব। विखिकर्त्रानि श्रममाष्ट्रभ ॥ 🟶 ॥ **७क्षन** ७११ । উक्षत्र । मधुत्रत्र । গুলা শূল বাভ নাশিত্ব। দীপ-नकः। शंशकः। शिखश्तिकः। क्रिनायकष्य । ইতি রাজনির্ঘ-•টঃ।। #।। অপিচ। শতাহ্বানি-ल माश्यम्ल जृष् इर्षिन भिनी । ইতি দ্রব্যগুণঃ।। অন্যক্ষ। শ-তপুষ্পা কটুঃ স্নিগ্ধা তিক্তোক্ষা কফ বাতক্কৎ। ৰুচ্যা বস্তিহিতা

নেত্র্যা বন্ধবিট্ ক্রমি শুক্রসং।!
সংগ্রাহী শীতলা তিক্তা দাহনুৎ
বাতলালযুঃ। ইতিভাবপ্রকাশঃ
।৷ অন্যমধুরিকাশকে জফব্যং॥
শতপুশিকা স্ত্রী শতপুশা। ইতি
শক্ষরত্বাবলী।।
শতপ্রস্না স্ত্রী শতপুশা। ইতি
রাজনির্ঘন্টঃ।।
শতপ্রাসঃ পুং করবীরবৃক্ষঃ।
ইত্যমরঃ।।
শতভিষক স্ত্রী শতভিষানক্ষত্রং!

ইতি শব্দরত্নাবলী॥ শতভিষা স্ত্রী অশ্বিন্যাদিসপ্ত-বিশ্শতিনক্ষত্রান্তর্গতচতুর্বি শ্-নক্ষত্রণ। তৎপর্য্যায়ঃ। শতভি-यक् २। ইতি गयतञ्जावनी ॥ অস্যা আক্ততি র্মগুলাকার শত-তারামধী। যথা। মণ্ডলাভ শত-তারকাঙ্গলৈ র্মধ্যভাজি নভসঃ প্রচেতসি। বাণ শৈল ধরণী মি-তাঃ কলাঃ শারদেন্দুমুখি তাবু-রে यंयुः ॥ দ॰ २। প॰ ৫৫। ইতি কালিদাসক্ত রাত্রিলগ্নমাননি-ৰূপণ ॥ অস্যা অধিষ্ঠাত্দে-বতা বৰুণঃ। যথা। অশ্বি যম **দ**হন কমলজ শশি শূলভূদদি-তি জীব ফণি পিতরঃ ৷ যোন্য-

শততি
বঁম দিনক্তব্যু পবন শকাগি
মিত্রাঃ। শকো নিঋ তি স্তোযণ বিশ্ব বিরিঞ্চী হরি বঁসু বঁকগঃ। অজ্বপাদো হহিরগ্রঃ পুষা
চেতীশ্বরা জানাং॥ সা তু অধোমুখী। ষথা। অক্ষেষ বহিং
যম পিত্র্য বিশাখযুক্তং পূর্বাত্রযণ
শততিষা চ নবাপ্যত্নি। এতান্যধোমুখগণানি শিবানি নিত্যাণ বিদ্যার্ঘ্য ভূমিখননেষু চ

ভূষিতানি।। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্বণ
।। # ।। তত্ত্ৰ জাত ফলং। শীত
ভীতি রতিসাহসী সদা নিষ্ঠুরো হি চতুরো নরো ভবেৎ।
বৈরিণা মতিশ্যেন দারুণো বারুণোডু যদি যস্য সম্ভবে।। ইতি
কোষ্ঠীপ্রদীপঃ।। # ।। তত্ত্ৰ জাতস্য মিশ্রপ্তণাঃ। যথা। শতানলাদিত্য বিশাখ মৈত্র শক্রোদ্ত-

वा विश्वखनाः श्रामिकाः। निवा-

জ হস্তাহিভবা জঘন্যাঃ শেষো-

দ্ভবাঃ সৎপুরুষা ভবন্তি ॥ 🛊 ॥

রবিবারাদে শতভিষাদিযোগে

দ্বরোৎপত্তি ফল যথ।। শিব-

শতভিষ বাতো ষাম্য সর্প স্ত্রি-

পূৰ্বাঃ শনি রবি সজ বারে ভূ-

७ यथी नवगा । इंश् हि मद्रन-

শতমূ

ষোগে যো হি রোগোপযুক্তঃ
পশুপতি সমদেহঃ সোপি মৃত্যুণ
প্রয়াতি।। উত্তরে বিংশতি জ্ঞে যা ছৌ মাসো শ্রবণে তথা। ধনিষ্ঠায়া মর্কুমাসণ বারুণেন দশাহকণ।। ইতি জ্যোতিঃসারধ্ত কৌশিক বচনণ।।

শতভীকঃ স্ত্রী মলিকা। ইত্যমরঃ ।। শতং বহবো বিষোগিনো ভীরবো ২স্যা ইতি শতভীকঃ। শীতভীক রিতি চ পাঠঃ।
তদা গৈমিকত্বেন শীতাদ্বিভেতীতি শীতভীকঃ। ইতি ভরতঃ।।
শতমথঃ পুং ইক্সঃ। ইতি হলাবুধঃ।।

শতমন্যঃ পু॰ ইন্দ্রঃ। ইত্যমরঃ॥
শতমানঃ পু॰ ক্লী ৰূপ্যপল॰॥
আচকঃ। ইত্যমরভরতো॥
শতমার্জঃ পু॰ অস্ত্রকারকঃ। ইতি
কেচিৎ॥

শতমূলা স্ত্রী দূর্বা।। বচা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শতমূলিকা স্ত্রী দ্রবস্তী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।

শতমূলী স্থ্ৰী স্বনামখ্যাতৌষধি-বিশেষঃ। তৎপৰ্য্যাষঃ। বহুসু-তা ২ অভীক্ষঃ ৩ ইন্দীবরী ৪

বরী ৫ ঋষ্যপ্রোক্তা ৬ ভীরুপ-ली १ नातायगी ৮ गठावती २ অহেরঃ ১০। ইত্যমরঃ ৷৷ রঙ্গি-ণী ১১ শঢ়ী ১২ দ্বীপিশত্ৰুঃ ১৩ । ইতি জটাধরঃ।। ঋষ্যগতা ১৪ १ इंडि भक्तक्वावंनी ११ भडशमी ১৪ পীবরী ১৫ ধীবরী ১৬ বৃষ্যা 39 मिर्गा ३४ मीशिका ३२ मत-কণ্টিকা ২০ সূত্ৰপত্ৰা ২১ সুপত্ৰা ২২ বহুমূলা ২৩ শতাহ্ববা ২৪ স্বাদুরসা ২৫ শতাহ্বা ২৬ লঘু-' পর্ণিকা ২৭ আত্মগুপ্তা ২৮ জটা ২৯ মূলা ৩০ শতবীৰ্য্যা ৩৯ মু-হৌষধী ৩২ মধুরা ৩৩ শতমূ-লা ৩৪ কেশিকা ৩৫ শতপত্তি-কা ৩৬ বিশ্বস্থা ৩৭ বৈক্ষবী ৩৮ शाकी ७२ वामु एव **अयह** दी ৪০ দুৰ্মনা ৪১ তৈলবল্লী ৪২। অ-। मा। खनाः । वृषाषः । यथ्तपः । হিমত্ব°। মেহ কফ বাত পিত্ত নাশিত্ব । তিক্তব । শ্ৰেপ্তব । রসায়নত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। অপি চ। শতাবরী বহুসূতা ভীরু রিন্দীবরী বরী। নারাযণী শতপদী শতবীৰ্য্য চপীৰ্ব্নী ৷৷ মহাশভাবরী স্বন্যা শতমূল্যুদ্ধু-किका। महमुवीया (इंजू के

ঋষ্যপ্রোক্তা মহোদরী । শতা-বরী গুরুঃ শীতা তিক্তা স্বাদ্ধী রসাযনী। মেধাগ্নি পুষ্টিদা স্নি-স্ধা নেত্র্যা গুল্মাতিসারজিৎ ।। শুক্র স্তন্যকরী বল্যা বাত পি-ভাসু শোধজিৎ । ইতি ভাব-প্রকাশঃ ।। ক্ষা। অন্যচ্চ । শ-তাবরী বাত পিত্ত মেহ স্প্রহরা সরা। ইতি রাজবল্পভঃ ।।

শতযফিকঃ পু॰ শতলতিকহারঃ । তৎপর্য্যাষঃ। দেবচ্ছন্দঃ ২। ইত্যমরঃ।।

শতরুজীয়ণ ত্রি শতংরুজা দেবতা অস্য ৷ ইতি সিদ্ধান্তকৌ মুদী
শতরূপা স্ত্রী বন্ধণঃ কন্যা পত্রী চ ৷ যথা ৷ এবস্তত্বাত্মকণ
রুদ্ধা জগদ্বেধা স্তৃজীজনৎ ৷
সাবিত্রীণ লোক সিদ্ধার্ণ
রুদ্ধা সমাস্থিতঃ ৷৷ ততঃ সণজপত
স্তুস্য ভিত্রা দেহ মকলায়ণ ৷ স্থী-

মুখা সন্। প্তঃ। ততঃ সংজ্পত স্তুস্য ভিত্বা দেহ মকল্মষণ। দ্রী-ৰূপ মৰ্দ্ধ মকরোদৰ্দ্ধণ পুৰুষ ৰা-প্ৰবং । শতৰূপা চ সা খ্যাতা সাবিত্ৰী চ নিগদ্যতে। সরস্বত্য-থ গাযত্ৰী ব্ৰহ্মাণী চ পরস্তপ ।। দৃষ্ট্বা তাণ ব্যথিত স্তাৰং কাম-বাণাদিতো বিভুঃ। উপযেমে স বিশ্বাত্মা শতৰূপা মনিন্দিতাণ।। ততঃ কালেন মহতা ততঃ পুত্রো ২ভবন্মনুঃ। স্বাযম্ভুব ইতি খ্যা-তঃ স বিরাডিতি নঃ শ্রুতং ॥ ইতি সাৎস্যে ৩ অধ্যায়ঃ॥

শতলুম্পাঃ) পু॰ ভারবিঃ। ইতি শতলুম্পাকঃ) ত্রিকাণ্ডশেষ ভূরি-প্রযোগে ।।

শতবীর্যা স্ত্রী শেতদূর্বা। ইত্য-মরঃ। শতাবরী। কপিলজাকা । ইতি রাজনির্যক্টঃ।।

শতবেধী পু॰ অম্লবেতসং ৷ ইত্য-মরং ৷৷

শতসহসু

কল মিতি ষাব

। যি বাসাে গবাদীনা

এতি

এহে সাবিত্র্যকসহস

পঞ্চ মধ্যমে দশোত্তমে দাদশা

রাত্র

পাষাবত

শতসহস

ম

স
প্রতিগ্রহেদিত

ইতি শুদি

তত্ত্ব

।

শতহুদা স্ত্রী বিদ্যুৎ।ইত্যমরঃ।।
বজুং । ইতি মেদিনী ।। দক্ষকন্যাবিশেষঃ। যথা। দদৌ চ
বাহুপুত্রায় দৌ তডিচ্চ শতহুদ।
। তষোঃ পুত্রাশ্চ বিদ্বাংস শচতস্ত্রো বিদ্যুতঃ শুভাঃ ।। ইতি
বিহুপুরাণে সর্গানুকীর্ত্তনে সতী

দেহত্যাগো নামাধ্যায়ঃ।।
শতাঙ্গঃ পুণ রথঃ। ইত্যমরঃ॥
তিনিসবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ
শতানকণ ক্লী খাশানণ। ইতি
ত্রিকাওশেষঃ।।

শতানন্দঃ পু॰ মুনিভেদঃ। স তু জনকরাজপুরোহিতঃ॥দেবকী নন্দনঃ। ইতি মেদিনী॥ বন্ধা॥ গৌতমমুনিঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ বিফুরথঃ। ইতি ত্রিকাপ্রশেষঃ॥ শতানীকঃ পু৽ বৃদ্ধঃ॥ মুনিভেদঃ । স তুব্যাসশিষ্যঃ॥ রাজভেদঃ

় স চ চতুর্থমুগে চন্দ্রবং ছিতীমরাজঃ। তস্য পিতা জন-মেজমঃ পুত্রঃ সহস্যানীকঃ। ইতি মেদিনী।। সুদাসরাজপুত্রঃ । ইতি শ্রীভাগরতে ৯ স্কল্পে ২২ অধ্যামঃ।।

শতার° ক্লী বজু°। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ ।।

শতারু কী । স্ব ভেদঃ। ইতি
শতারুষী ন্ত্রী । শব্দরত্বাবলী ।।
তিস্য ৰূপমাহ রক্তণ শ্যাবণ সদাহার্ত্তি শতারুঃ স্যাদ্বহুরণ ।
ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।

শতাবরী স্ত্রী শতমূলী। ইত্য-মরঃ ॥ ইন্দ্রভার্যা। ইতি শব্দ- রত্নাবলী।। শটী। ইতি মেদিনী শতাবর্ত্তঃ পু॰ বিষ্ণুঃ। ইতি হেম-চন্দ্রঃ।।

শতাবত্তী^ন পু॰ বিষ্ণুঃ। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ।।

শতাহ্বা স্ত্রী শতপূষ্পা। ইতি জটাধরঃ ॥ শতাবরী। ইতি রা-জনির্ঘণ্টঃ ॥

শতাকী স্ত্রী রাত্রিঃ। শতপুষ্পা
। ইতি শব্দরত্বাবলী। পার্বতী।
যথা। ভূষণ্চ শতবার্ষিক্যা মনাবৃষ্ট্যা মনস্তুসি। মুনিভিঃ সংস্তুতা ভূমো সম্ভবিষ্যাম্যয়োনিজা। ততঃ শতেন নেত্রাণাণ
নিরীক্ষিষ্যামি যমুনীন্। কীর্ত্তযিষ্যন্তি মনুজাঃ শতাক্ষী মিতি
মাণ ততঃ।। ইতি মার্কণ্ডেমপুরাণে দেবীমাহন্ম্যে দেব্যা শ্চরিত
স্তুতি নামাধ্যাষঃ।।

শতিকঃ ত্রি শতেন ক্রীতঃ।। শ-তস্য বিকারঃ।। শতসম্বন্ধী। ইতি সন্ধান্তকৌমুদী।।

শতেরঃ পু॰ শত্রুঃ।। হিংসা । ইত্যুণাদিকোষঃ।।

শত্য় ত্রি শতস্য বিকারঃ ॥ শ-তেন ক্রীতঃ ॥ ধনপতিসংযোগঃ ॥ শত মন্মৈ বৃদ্ধিঃ আষঃ লাভঃ শুক্ষ মুপদা বা দীযতে ইতার্থে শত্যঃ শতিকঃ। শত্যু । শতিকং । দক্ষিণাক্ষিম্পন্দনং শত্স্য নি-মিত্তমিত্যর্থঃ। ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুদী।।

শত্রিঃ পু॰ হস্তী। ইতি সিদ্ধাস্ত-কৌমুদ্যা মুণাদিবৃত্তিঃ।।

শত্রঃ পু॰ স্বদেশাদনন্তরো ২ব্য-বহিতৈকবিষযাভিনিবেশিরাজঃ । যথা। বিষযানন্তরো রাজা শত্রু মিত্র মতঃ পর মিতি।। শাতকঃ। নিপাতকারীত্যর্থঃ। তৎপর্য্যা-ষঃ। রিপুঃ ২ বৈরিঃ ৩ সপত্নঃ ৪ অরিঃ ৫ দ্বিশঃ ৬ দ্বেষণঃ १ দু-क् म प्र विषे २ विशवाः ३० छा-হিতঃ ১১ অমিত্রঃ ১২ দস্যঃ ১৩ শাত্রবঃ ১৪ অভিযাতী ১৫ পরঃ ১৬ অরাতিঃ ১৭ প্রত্যর্থী ১৮ পরিপন্থী ১৯। ইতি চামরঃ।। বৃষঃ ২০ প্রতিপক্ষঃ ২১ । ইতি জটাধরঃ ।। দ্বিষন্ ২২ ঘাতকঃ २७ एवरी २४ विषियः २७ हि॰-সকঃ ২৬ বিদ্বিট্ ২৭ অপ্রিষঃ ২৮ অভিযাতিঃ ২৯ অহিতঃ ৩০ **मिर्श्न ७३। ইতি मस्त्रञ्जा-**বলী।। তস্য জ্বোপাষো যথা। गৎमा উবাচ। मर्दिषा मभूग्राना-

যান। দান শ্রেগ্রতন নত।। স্বদত্তেনেহ ভবতি দানেনে।ভয লোকজিৎ॥নসে। ২ন্ডি রাজন্ দানেন বশবোগো ন জাযতে। দানেন বশগা দেবা ভবন্তীহ্ স-मा गृगाः ॥ मान **म्यायाशकी**वि প্রজাঃ মর্বা নৃপোত্তম। প্রিযো हि मानवान् त्वात्क मर्वत्मात्वा-गङ्गावट्य ॥ मानवानिहित्रदेवः তথা রাজা পরান্ জ্যেও। দান-বানেব শক্ষোতি সংহতান্ ভেদি-कु भन्नान् ॥ यताभानुका भसी-রাঃ পুরুষাঃ সাগরোপমাঃ। ন গৃ-হুম্ভি তথাপ্যেতে জায়ন্তে পক্ষ-পাতিনঃ॥ অন্যত্রাপি ক্বত দান করোজ্যন্য॰ তথা বশে। উপাযে-ভ্যঃ প্রদংশন্তি দান শ্রেষ্ঠতম জনাঃ ৷৷ দান শেষকর শ্রেঠি দান॰ শ্রেষ্ঠকর॰ পর॰। দানবানে-ব লোকেষু পুত্ৰত্বে প্ৰিযতে সদ। ।। ন কেবলং দানপরা জযন্তি ভূ-र्लाक त्मक॰ श्रुक्रशः मूरीताः। জযন্তি তে রাজ সুরেশ্রলোক 🖟 मूर्फुर्कर॰ यद्वित्याविताम॰ ॥ इंडि बाब्दमा ३२५ ज्यायः॥ श्री बब्-भा छेवाछ। न शका। य वत्नकर्छू मूर्गाविक्टरान जू। मटखन जान

বশান্ স্বৰ্যাৎ দণ্ডো হি বশক্কগৃ-ण॰ ॥ **স**ম্যক্ প্রণয়ন॰ তস্য ভথা কাৰ্য্য মহীফিতা। ধৰ্মশান্তানু-সারেণ সুসহাযেন ধীমতা।। তস্য मगाक् थनयन ज्या कार्या मशी-ফিতা। বানপ্রস্থাত্য ধর্মজ্ঞান্ निर्मागान् निष्णति अञ्चन् ॥ यतन শে পরদেশে চ ধর্মশাত্র বিশার-**मान्। मभीका अनुत्यामुख्य मर्द**. मट७ প্রতিষ্ঠিত[•] ।। আশ্রমী ধদি বা বণী পূজ্যো বাথ গুরু মহান্। नामरक्षा नाम तारका श्रेष्ठ यः अधर्मा न जिन्ने जि ॥ जनकान म-'ওষেডাজা দণ্ড্যাণ শৈচবাপ্যদণ্ড-यन्। देश রাজ্যপরিভূটা নরকং প্রতিপদ্যতে ৷৷ তত্মাজাজা বিনী-তেন ধর্মগান্তানুসারতঃ। দণ্ড-প্রণয়ন কার্য্য লোকানুগ্রহ কা-ম্যথা।। যত্র শ্যামো লোহিতা-কো দণ্ড শ্চরতি পাপহা। প্রজা ন্তত্র ন মুছন্তি নেতা চেৎ সাধ্ পশ্যতি।। বাল বৃদ্ধাতুর যতি দ্বি-জ স্ত্ৰী বিশ্লবাত্বতঃ। সৰ্বে বলিষ্ঠা ज्यक्तत् यि ष्यः न शाज्यः ।। দেব দৈত্যোরগগণাঃ সিদ্ধ ভূত পতত্রিগঃ। উৎক্রমেষুঃ স্বমর্য্যা-मा॰ यमि मधः न भाजरबद्धा अव

বন্ধাভিশাপেষু সর্বপ্রহরণেষু চ। সর্ব বিক্রম কোপেষু ব্যবসাযে চ তিগ্ৰতি।। পূজান্তে দণ্ডিনো দেবা न পূজ্যস্তে স্বদ্ধিনঃ। न बङ्गांग॰ বিধাতার॰ ন পূষার্য্যমনাবপি॥ य এতে মানবাঃ কেচিৎ প্রশাস্তাঃ সর্বকর্মসু। রুড মগ্রিঞ্চ শক্রঞ্চ সূ-ষ্যাচন্দ্রমসৌ তথা ।। বিষ্ণু দে-॥ वर्गणां महानान् मिखनः शृक्य-ন্তি চ। দণ্ডঃ শান্তি প্রজাঃ সর্বা দণ্ড এবাভিরক্ষতি।। দণ্ডঃ সুপ্তেষু জাগর্ত্তি দণ্ড॰ ধর্মাণ বিদু রুধাঃ। রাজদণ্ড ভয়াদেকে পাপাঃ পাপণ न क्र्बंट 11 यममध ज्यादिक পরম্পর ভ্যাদিপি। এবং হি সা-দ্বিকে লোকে সৰ্ব॰ দণ্ডে প্ৰতি-ষ্ঠিত॰ ॥ অন্ধে তমসি মজ্জেযু র্য-দি দণ্ড ন পালযেৎ। তঙ্গাৎদ-ভো দমৰ্যতি অদ**ণ্ডা**ণ দণ্ডৰত্যপি ॥ দমনাদ্ধখনাটেচ্চব তত্মাৎ দণ্ড॰ विष् र्बुशाः। ष्टमा जैटिक जिप-लाः मत्येष जीता धृषः मून-ধরস্য যজে। ভবস্য পুত্র• ধজি-नौপতिक दब्र निन्नाक ভराख् मुद्रः ॥ ইতি बाष्ट्रमा ১৯৯ ख-शाबः॥ मामरङ्गो তढाङ्क् अक्टिंगी ॥

শত্রুমঃ পুণ শ্রীরামস্য ভ্রাতা। তৎ পर्यायः। শত্রমর্দনঃ ২। ইতি শफतजावनी ॥ म जू मूर्यिवश হুতোচ্ছিষ্ট ভোজনাদসাবি। যথা। নিষ্ঠাণ গতে দত্রিম সভ্য-তোষে বিহিত্তিমে কর্ম্মণি রাজ-পত্নাঃ। প্রাশু হতোচ্ছিফ মুদা-র বংশ্যা স্তিসুঃপ্রসোতুং চতুরঃ मृश्लान्।। (को मलायामावि मू-খেন রামঃ প্রাক্ কেক্ষীতে। ভরত স্ততো ২ভূৎ। প্রাসোফ भंजूष मुमातरहरू रमका मुमि-बा मर नम्मरान ॥ रेडि ভটि कारवा ३ मर्गः ॥ শवुष्ठकननी खी मूत्रिवा। इंडि শব্দরত্বাবলী।। শত্রুজিৎ পু॰ রাজবিশেষঃ। তস্য পুত্ৰঃ ঋতধ্ৰজঃ। সএব স্বল্যা-थः। ইতি मार्कत्खमभूतानः॥ শত্রপ্পযः পু॰ বিমলাজিঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। শতুজেতরি ত্রি।। ত্রি বৈরিতাপক্লৎ। শত্ৰ স্তপঃ **इे जि मुक्कारवाधवा कि त्र १० ।।** শত্মদনঃ পু॰ শত্মঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শম্বরী ক্রী রাজিঃ। ইতি ত্রিকাপ্ত-

८भगः ॥

শদ ৯ জ ঔ শাতে। ইতি কবিকল্পদ্রঃ। ৯ অশদ্র। জ শাদঃ
শদঃ। ঔ শ্রুস্যতি। শাতঃ পতনং পাতনঞ্চ। শীযতে পত্রং
বৃক্ষাৎবাযুঃ। শদো হপিম মিত্যবিষয়ে আত্মনেপদং। কেচিদিমং তুদাদৌ পঠিত্বা তৎসামর্থ্যাৎ আত্মনেপদানিত্যত্বে শীযতী শীযন্তীত্যুদাহরন্তি। ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

দে ঔ গতৌ। আঙ পূর্বোয় মিতি
কবিকল্পক্রমঃ।। তালব্যাদিঃ।
আশীয়তে। ঔ আশাৎসীৎ।

শদঃ পু॰ কলমূলাদি। শদধাতো রচ্ প্রত্যযেন নিষ্ণায়ঃ। ইতি সিদ্ধান্তকোমুদী।। শদ্রিঃ পু॰ মেয়ঃ।। জিফুঃ। ইতি মেদিনী।। হস্তী । ইত্যুণাদি-কোষঃ।! শদ্রিঃ স্ত্রী বিদ্যুৎ। ইতি হেম-চন্দ্রঃ।। খণ্ডঃ। ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুদ্যামুণাদিবৃদ্তিঃ।। শদ্রঃ ত্রি পতনকর্তা।। গস্তা। ইতি শদধাতো রু প্রত্যযেন নিষ্পায়ঃ। ইতিব্যাকরণণ।।

শনকাবলিঃ পু॰ গজপিপ্পলী।

ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। শনপণী স্ত্রী কটুকী। ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা।।

শনিঃ পুণ রব্যাদিনবগ্রাহান্ত-র্গতসপ্তমগ্রহঃ। তৎপর্যায়ঃ। সৌরিঃ ২ শনৈশ্চরঃ ৩। ইত্য-यतः ॥ गीलवामाः ८ यन्तः ७ ছাযাত্মজঃ ৬। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ।৷ পাতঙ্গিঃ ৭ ৷ গ্রহনাযকঃ ৮ ছাযাসুতঃ ২ ভাস্করিঃ ১০ নী-नायतः ১১। ইতি শব্দরত্নাবলী ৷৷ আরঃ ১২ ক্রোডঃ ১৩ বক্রঃ ১৪ কোলঃ ১৫ সপ্তা॰শুঃ ১৬ পঙ্গঃ '১৭। ইভি জটাধরঃ ॥ কালঃ ১৮ সূর্যাপুলঃ ১৯ অসিতঃ ২০। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ॥ অস্য হ্ব-ক্ষবর্ণঃ। পশ্চিমদিঙ্ নপুণসকা-ম্ভাজজাতি তমোগুণ ক্যায়-রস মকর সম্ভরাশি নীলকান্ত-ষণি সৌরাফুদেশানামধিপতি-রয় । কশাপমুনি সন্তানঃ। শ-**जवर्गः । সূ**र्यामूथः । ठजूतक्रवा-পরিমাণঃ। क्रकवर्ववञ्चः। গৃধु-, সূর্য্যপুত্রঃ

ভল্ল বাণ বরশূল ধনুর্ধারী। অ-স্যাধিদেবতা ষমঃ। প্রত্যধিদে-বতা প্রজাপতিঃ। ইতি গ্রহ্মা-

গতত্ত্ব বৃহক্ষাতকাদ্যঃ।। অপি ह। गनि विश्वा श्रील वना বন্ধা শূদ্রাসনা ধাতুসমঃ স্থির-🕶 । কুরঃ প্রতীচী ত্ররো ২তি-বৃদ্ধে। থকরকিভীট্ দীর্ঘ সুনীল লৌহণা ইতি নীলকণ্ঠীযভাজকণ ११ 🗱 ।। অসে। २ পতি यंथा। मही-চেঃ কশ্যাপা যজে তত্মাজ্জজে বিভাবসুঃ ৷ ত্স্য ভার্যাভবৎ সংজ্ঞা পুত্রী দ্বষ্টুঃ প্রজাপতেঃ।। নাভিতেজোময় ৰূপণ সোচুণ • সাল বিবস্বতঃ। মাষাম্যী ত-ত শ্ছাযাণ সবর্ণাণ নির্ম্মমে স্বতঃ য় সংজ্ঞোবাচ তত শ্ছাযাণ সবৰ্ণৈ শূণু মে বচঃ।৷ অহু যাস্যামি সদ-नः शिज् दुः भून तब स्म। जरान निर्विणक'

११ देश क्षायाः गृट्ह द्वाणा मःखाः भाषः भिजू तालयः। यनायानाः १४ जाः मःख्वाः मवर्गायाः छंथा त्रविः॥ मार्वानः জनयायाम यन् (अर्थः यद्याः ज्ञारिकाः॥ देशि भाषा वर्गश्रायः प्रशायः ॥ ॥ ।। जमा कृतम्रकः कात्रनः यथा। এङ्गित्रस्थातं छ्व प्रसृः १६ तम्माः। ज्ञाक्राय यदाः

यागी मृर्याथुलः मरेनम्हाः ॥ অত্যন্তানমূবদন ঈয়মালিত লো-চनः। दातिनः मृलङ्ख्यः विमा-लाक गुवाह र ॥ गटनकत छ-বাচ। শিবাজ্ঞয়া শিশু ডফুণ যামি শঙ্করকিঙ্কর । বিষ্ণু প্রসুখ **(मवाना॰ गुनीना गनुरता४७**३ ॥ বিশালাক্ষ উবাচ। আজ্ঞাবহো-ন দেবানা নাহ শস্তর কিলরঃ। দার দাতু মশক্তোহ বিনা মন্মা-जू ताञ्चरा।। मत्नी वर्ष अट्रभाष চক্ষুঃ কোণাজ্ঞয়। ততঃ। শনি র-ভান্তর গন্ধা ননামান্যুকন্ধরঃ ৷৷ রত্নসিংহাসনস্থাঞ্চ পাৰ্বতী • স-স্মিতা॰ মুদা। নত॰ সূর্য্যসূত॰ দৃ-ফু। দুর্গ। সংভাষ্য যত্নতঃ ॥ শুভা-भियः परिने जरमा शृक्षे। जद अ-শল॰ শুভা। পাৰ্বভূযোচ। কথ-मानमुरकु खु॰ खाजू मिक्हामि সাম্পুত । কথ ন পশাসি ষা সাধো বালকঞ্ গ্রন্থের ।। শ-नि क्रवाठ। मर्द्ध खकंष्यंगः चाश्वि ভুঞ্জতে বাঞ্ছিত ফল । শুভা-শুভ বা মুহকর্ম কোটিকলৈ ন লুগাতে ॥ ইতিহাস চাতিগে। প্য॰ শৃণু শঙ্করবল্লভে। অকথ্য॰ জननी नाक्ताका जनक कांत्रण

য় আৰালাৎ ক্লভক্তোহণ ক্ল **अक्षारिनक्यानमः । ज्यम**ाम् রতঃ শশ্বদ্বিষয়ে বিরতঃ মদা ॥ लिতा मामे विवादश्य कन्। ° চিত্ররথস্য চ। অতিতেজিখনী শশ্তপদ্যানুরতা সতী।। এক-দা সাধাতুস্নাতা সুবেশং স্বং বি-श्राय **ह । त्रञ्चानकात म**ंयुक्ता मू-नियानम्पारिनी ।। इतिभान॰ ধ্যায়মান সামা পশোত্যুকাচ হ ৷ মৎসমীপণ সমাগত্য সম্মিতান-ল লোচনা ৷৷ শশাপ মা মপশাস্ত-মৃতুনফা স্বকোগতঃ। বাহুজ্ঞান विश्रीनक्ष भारिनक्ञानमानमः ॥ ন দৃট্টাহণ স্বয়া যেন ন ক্বত মৃত্যু-तकन । घ्या मृक्छे अमराजु मृष मर्ब॰ विनमाछि ॥ **অ**ङ्क्ष विরতে ধ্যানে তা মতোষ পুরা সতী । শাপণ মোজুণ ন শক্তা সা পশ্চা-ত্তাপ॰ চকার হ।।তেন মাত র্ন প-শ্যামি কিঞ্ছিত্ত স্বচক্ষুষা। ততঃ প্রভৃতি ন্মাুস্যঃ প্রাণিহিণ্সা ভ-यामरु ॥ इंजि जन्नदैवदर्ख गन-পতিখণ্ডে ১১ অধ্যায়ঃ ॥ 🕸 ॥ অস্য ভোগকালে। যথা । রবি र्यात्र निशानायः स्थापिक्त-দব । পক্তব ভূমিপুত্রো বৃধো-

छोन्न वामतान्।। वर्षय्यकः मू রাচার্য্য শ্চাফীবি॰শদিন॰ ভৃগুঃ। শনিঃ সার্দ্ধদ্বয়ণ বর্ষণ স্বর্ভানুঃ সা-র্দ্ধবৎসর[°]।। ইতি জ্যোতিষতত্ত্ব° ।। ৠ।। তস্য জপ মন্ত্রে। যথা। প্রণব॰ বাগ্ডব॰ মাষা॰ শ্রীমুদ্ধৃত্য শনৈশ্চ-রণ। চতুর্থ্যন্ত মনুণ প্রোক্তণ রবি-मृत्ना नंवाकतः॥ ७ वे॰ हैं। 🕮 শনৈশ্চরায়। ইতি রুডয়ামলং ॥ উৰ্দ্ধূপাণি স্তব্যন্ত্ৰণ জপেৎ। যথা। मृर्यात तार यनाना यृक्षभाटनी জপেৰুধঃ। সোম কেন্বে। রধঃ-. পাণ্যো রন্যেষা শুদ্ধপাণিকঃ ॥ ইতি চ রুড়যামল ।। 🗱 ।। তস্য হোমমন্ত্রো যথা। ওঁ শংলাদে-বী রভীষ্টবে শঙ্গো ভবন্ত বীতষে শণ্যো রভিসুবন্ত নঃ। যথা। শ-নৈশ্চরাযেতি পুনঃ শক্ষোদেবী-তি হোমধেৎ। ইত্যুদ্বাহতত্ত্বধৃত म भ ना भू ताव ।। 🗱 ।। वा तवित्यवः । তত্র বারবেলা যথা। ক্রত মুনি যম শর মঙ্গল রাম্ত্র্ ভাস্করাদি যামার্দ্ধে। প্রভবতি হি বারবেলা ন শুভাশুভকার্যকরণার ॥ ஓ॥ তত্র কালবেলা ষ্বাঞ্ক, ন্যায় বে-লা রবিতঃ শ্রাজি কালানলাগা-ঘূধযো গজেন্দু: দিনে নি গায়া-

মৃত্ বেদ নেত্র নগেষু রামা বিধু-पिछित्नो **ह ॥ 🗱 ॥ उ**ब ऋनिक-द्वना यथा। यश्री देखेक॰ मित्न-শাৎ ক্রমশ ইহ দিনে মন্ত্রিচণ্ডে-শ্বরোক্তঃ পূর্বে বারার্দ্ধযামঃ স্ব-লিক ইছ পরো মধ্যম শ্চেতি কা-**लः। *। তिक्तित शृर्वितिः। यन** ষেধো যথা। শুক্রাদিত্যদিনে ন বারুণদিশ ন জ্ঞে স্বজে চোত্ত-রা । মন্দেন্দোশ্চ দিনে ন শক্ত্র-কঙ্গভং যাম্যাং গুরৌ ন ব্রজেৎ ॥ 🕸 ॥ তত্র প্রথম রজোযোগে দোষো যথা। আদিত্যে বিধবা নারী সোমে চৈব পতিত্রত। । বেশ্যা মঙ্গলবারে চ বুধে সৌ-ভাগ্য মেব চ।। বৃহস্পতৌ পতিঃ শ্রীমান্ শুক্রে চাপত্য নেব চ ॥ শনৌ বন্ধ্যাণ বিজ্ঞানীয়াৎ প্রথ মে স্ত্রী রজস্বলা। ইতি জ্যোতি-স্তত্ত্ব ।। 🗱।। অথ নবানা গ্রহ ণা॰ দানানি। সূর্য্যে ধেনুঞ্চ তামু-🍄 গোধূম॰ রক্তচন্দন । চন্দ্রে চ-ন্দন শখ্মে চ বস্ত্রঞ্চ তিল তণ্ডুলা-ন্।। সজে বৃষঃ প্রদাতব্যে রক্ত-<u> বস্ত্র° শুডৌদন॰ বুধে কপূরি মূদ্রা</u>-ঞ্চ হরিদ্বস্ত্র° হিরণ্যক°। পীতবস্ত্র-দ্বয° জীবে হরিজা কনকানি চ॥

অশ্বঃ শুক্তে সিতোদেয়ঃ শুক্ল-ধান্যানি ষানি চ। শনৌ চস-তিলা দেযা ক্লফা গৌ লৌ হ মু-ত্তম।। ব্লাহো চ মহিষী চ্ছাগো নাষাশ্চ তিল সর্যপাঃ। অজা মেষৌ চ দাতব্যৌ কেতৌ চাশ্ন-ঞ মিশ্রিত । স্বর্ণ গো বিপ্র পূ-জাভিঃ সর্বেষাণ শাস্তি রুত্তমা ॥ इंडि प्लग्नांटिखदः॥ 🕸 ॥ গ্রহাণা॰ বলযো যথা। গুডৌ-मनः পायमक रुवियाः कीत य-िक । मरशामन इविक्रून या॰म॰ ठिलाम त्यत ह।। मन्। ९ গ্রহক্রমাচ্চেদ° দ্বিজেভ্যো ভো-জন॰ বুধঃ। শক্তিতো বা যথালা-ভ॰ সৎকৃত্য বিধিপূৰ্বক॰॥ 🗱॥ গ্রহাণা॰ দক্ষিণা যথা । ধেনুঃ শঙ্ম স্তথানড়ান্ হেম বাসো হ-য তথা। কুকা গৌ রাযসং ছাগ এতা বৈ দক্ষিণাঃ ক্রমাৎ।। ইতি সংস্কারতত্ত্ব ॥

শনিচক্রণ ক্লী নৃণাণ শুভাশুভ-জ্ঞানার্থণ শনিভোগ্যনক্ষত্রাদি সপ্তবিংশতি নক্ষত্রযুক্ত নরাকা-র চক্রণ। যথা। শনিচক্রণ নরা-কারণ লিখিদ্বা সৌরিভাদিতঃ। নাম শৃক্ষণ শুবেদত্রে ফলণ তত্র

শুভাশুভ ॥ এক মুখে দক্ষ -ख ठवांति येष्ट्रै शमदय । ऋमि-পঞ্চ করে বামে চত্বারি মস্তকে-<u>ज्य ।। दयः न्जिद्ध श्रः दयः</u> তত্ত नारमषू थः। मूरथ शनि र्জ-যো দক্ষে ভূমঃ পাদে গ্রিযো হৃদি॥ ৰামে ভী মস্তকে রাজ্য॰ - নেত্রে সৌখ্য মৃতি র্গুদে। তূ-याछ बामत्म सत्क यना विघ-করঃ শনিঃ।। তদা সৌখ্য বপু-ऋ इ इ भी त्यं स्ने कि कि कि তৃতীযৈকাদশে ষষ্ঠে যদা দৌ-খ্যকরঃ শনিঃ।। তদা বিষ্ণঃ শ-রীরস্থো শুহে বক্তে ২ঙ্গ্রি বাম-যোঃ। ষস্য পীডাকরঃ শৌরি **ख**मा চক্রে ফলস্থিদ°॥ निथिषा কুষ্ণদ্রব্যেণ তৈলমধ্যে কিপে-ত্ততঃ । নিক্ষিপ্য ভূমিমধ্যস্থ রুষপুলে প্রপূজযে ।। তুর্ষিণ ষাতি ন সন্দেহঃ পীড়াণ ত্যক্ত্রা শনৈশ্চরঃ। ইতি জ্যোভিস্তত্ত্বং॥ শনিপ্রসূঃ স্ত্রী ছাযা। সূর্য্যপত্নী। ইতি ভূরিপ্রযোগঃ॥ শনিপ্রিয° ক্লী নীলমণিঃ। ইতি কেচিৎ 11 শনিবারঃ পু॰ শনিভোগ্যসাবন-

षिन[°]। ততु উদাধাদোদমকালঃ

। যথা। সূতকাদি পরিচ্ছেদো **जिन यां मार्किमा खिथा । यथाय** গ্ৰহভুক্তিশ্চ সাবনেন প্ৰকীৰ্ত্তি-তাঃ।। দিনাধিপস্য রব্যাদে র্ভো-গ্যাণ দিনণ বারৰূপণ সাবনগণ-**त्नोकः।** উদযাদোদযান্তানো ভৌ শসাবন বাসরাঃ। ইতি তি-থ্যাদিতত্ত্ব॰।। #।। শতভিষানক্ষ-<u>बयुक यथु क्रक्ख त्या मन्गा॰ न-</u> নিবার যোগে মহাবারুণী স্যাৎ । यथा । ऋष्मभूतात्व । वाकृत्वन ममायुक्ता मरशे क्रका बरमामनी গঙ্গায়া॰ যদি লভ্যেত সূর্য্যগ্রহ-শৈতেঃ সমা ।। শনিবার সমাযু-ক্তা সা মহাবারুণী স্মৃতা। ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব ॥ 🗱 ॥ তত্ত্ৰ জাত कल॰ यथा। क्रमः मूर्यमः जल কীর্তিহীনো জ্বাযুতো মধ্যধ-নো ২ঙ্গহীনঃ। তমোগুণঃ ক্লে-শকরো নরাগাণ মন্দস্য বারপ্র-ভবে হতিমশ্বঃ ৷৷ ইতি কোষ্ঠী-প্রদীপঃ ॥ 🗱 ॥ তত্ত্ব যাত্রা নি-ষেধে। যথা। সংত্যজেদিবসে याजा॰ मृर्याताकी न्नू रिक्त ग॰। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ।। বারবেলা-দি শনিশব্দে দ্রফব্য়ণ।। শনৈঃ ব্য অজ্জত । ইত্যমুরঃ।।

যথা। শনৈ বিদ্যা শনৈঃ কন্থা শনৈঃ পর্বত মারুহেৎ। শনৈঃ কামঞ্চ ধর্মঞ্চ পঞ্চৈতানি শনৈঃ শনৈঃ।। ইতি গারুডে ১০৯ অধ্যায়ঃ।। শনৈশ্চরঃ। ইতি মেদিনী।।

গনৈশ্চরঃ পু॰ শনিঃ। ইতাররঃ
।। অস্য স্তোত্রণ ষথা। নীলাঞ্জনচ্যপ্রখাণ রবিসূনুণ মহাগ্রহণ
। ছাযায়া গর্ভসম্ভূতণ বন্দে ভক্ত্যা শনৈশ্চরণ।। ব্যাসেনোক্ত মিদণ স্তোত্রণ ষঃ পঠেৎ প্রয়তো নরঃ। দিবা বা যদি বা রাত্রো শান্তি স্তম্য ন সংশ্যঃ।। ইতি ব্যাসভাষিত স্তোত্রণ।।

শপ্ ব্য স্বীকারঃ ৷ যথা ৷ শপ্ক-রোতি ৷ ইতি সিদ্ধান্তকো মুদী ৷৷
শপ ষ ঞ ঔ 〉 কোশে ৷ ইতি ক-শপ ঔ ঞ 〉 বিকল্প জন্মঃ ৷ দ্বোতি শ-প্রতে ৷ ঔ শপ্তা ঔ অশাপ্সীৎ
৷ এ শপতি শপতে ৷ কোশ উ-ক্রিবিশেষঃ ৷ নির্ভন্ন নিতি
চতুতু জঃ ৷ সহসূশো ২সৌ শ-প্রানশপ্যৎ ৷ কোশো ভাদি
পক্ষে গালিদান ৷ শপতে ৷ ক্রিডেপি শপ্থাশী গ্তানুকারেতি

নিষমাৎ শপথে আত্মনেপদণ্
অন্যত্র পরশৈপদণ্ ৷ রুক্ষাষ্
শপতে গোপী ৷ প্রজেতি ত্বাণ্
শশাপ সং ৷ ইতি রয়ে ৷ সখ্যঃ
শপামি যদি কিঞ্চিদনুস্মরামি ৷
ইতি বাচা শরীর স্পর্শনাভাবাদিতি পাণিনীযাং ৷ কেচিত্তু শপথে নিত্য মাত্মনেপদণ্ অন্যত্র
বিভাষষা ইত্যাহং ৷ তেন প্রতিবাচ মদত্ত কেশবং শপমানাষ্
ন চেদি ভূজ্তে ৷ ইতি মাহং ৷
ইতি দুর্গাদাসং ॥

শপঃ পু॰ শপথঃ। ইতি ছেমচন্দ্রঃ।। নির্ভন্ধনিও। গালিদানণ।ইতি শপধাত্বর্থদর্শনাও।।
শপথঃ পু৽ অনৃতং বদন্ ষোরং
নরকং যাস্যামি ইন্ড্যেবং কাপং
মিথ্যানিরসনং ।। সত্যাবধারগং।ইতি সাঞ্চঃ। বাচা শরীর স্পর্শনং।ইতি গোষীচন্দ্রঃ।
শপথো দিব্যং।ইতি রমানাথঃ
। ইতি ভরতঃ।। তৎপর্য্যায়ঃ।
শপনং২।ইত্যমরঃ।। শপঃ ৩।
ইতি হেমচন্দ্রঃ।। সত্যং৪ সময়ঃ
৫ শাপঃ ৬ প্রত্যয়ঃ ৭ অভিষ্যঃ
৮।ইতি জটাধরঃ।। ক্লা। চত্ত্স্পাদব্যবহারস্য ক্রিষাপাদাসং।

यथा। जय मनथः । यूकिवना-वममामू भगदेथ दान गर्नराष्ट्र। वर्ष काल वलार अभ अभ्र मू-ক্লতাদিভিঃ॥ অর্থস্য বিবাদাস্পা-**ए** मा वल वस्त्र को वः । को ल-স্য চ বল॰ পুণ্যাপুণাত্ব॰। তদ-পেক্ষণ যথাস্যাদিত্যর্থঃ ৷ দূর্বা-করত্বস্য পুত্রাদিম্পর্শস্য চাত্রে দর্শনীযন্ত্রাৎ। অত্র মথৈতৎ ক্বত न वा इंडि প্রতিজ্ঞ। মুচ্চার্য্যাগ্নৌ জলে বা হস্ত প্রক্ষিপেৎ। এত-ন্মিথ্যাত্ত্বে মম সূক্তত নশ্যেদিতি বা ক্রমাৎ। ন দ্বগ্নি পরীক্ষাণ জল পরীক্ষাণ বা স্বর্যাৎ ইত্যভিপ্রায-বৰ্ণন॰ যুক্তণ। তদ্যা মহাভিষোগ-বিষয়কত্বেন শপথ সমভিব্যাহা-রানর্থাৎ। সুক্রতাদিভি রিত্যা-দিনা দুৰ্বা সত্যাভ্যুপগ্ৰহঃ। তথা ॥ চ বিকুঃ। সর্বেম্বোর্থজাতেষু॥ मृला॰ कनक॰ প্রকল্পযেৎ। তত্ত্র ক্ষলোনে শুত্র দূর্বাকর শাপ-यः । षिक्रकः लात्न जिनकः । ত্রিরুক্তলোনে জলকর । চতুঃ-क्रकटनारन अर्वकतः। शक्क्रकः-লোনে সীতোদ্ধৃত মহীকরে। সু-वर्गारकारन कारमा (नयः। भूज-স্য যথা সমযে বিহিতা ক্রিষা ত-

থা দিগুণে ২র্থে রাজন্যস্য ত্রিগু-ণে ২র্থে বৈশ্যস্য চতুর্গুণে ২থে ব্ৰাহ্মণস্যেতি । ক্লফলঃ কাঞ্চন রত্তি কা তমূল্যাদূনে, ক্রফলোনে এব মন্যত্র। মনুঃ। সত্যেন শা-পरयिष्ठ कवियः वाह्नायूरेधः ৷ গো বীজ কাঞ্চনৈ ৰৈশ্যে শূদ্ৰ সর্বৈস্ত পাতকৈঃ।। পুত্র দারস্য বাপ্যেব॰ শিরা॰িস স্পর্শবেৎ পৃ-থক্। ব্ৰাহ্মণেন মধৈতৎ ক্বত ন ক্লত বেতিপ্ৰতিজ্ঞা মুচ্চাৰ্য্য সত্য-মিতি বক্তব্যে। তথৈব ক্ষত্রিযেণ বাহনামুধ স্পুষ্টব্য । তথৈব বৈ-শ্যেন গো ৰীজ কাঞ্চনানা মন্য-তম॰ স্পুষ্টব্য॰। শূদ্ৰেণ তু পূৰ্বো-ক্ত॰ সৰ্ব মেব স্পুষ্টব্যে । তেষা॰ বৃথাক্কত স্পর্শানাণ পাতক হেতু-ত্বাৎ পাতকশব্দেন নির্দেশঃ। र्नायुर्वारभावः । देमविक्यावि-यम मार नात्रमः। अत्रत्भ नि-র্জনে রাত্রাবস্তর্বেশ্মনি সাহসে । न्यामाशश्रद्ध देव किया मख-বতি ক্রিয়া ।। বৃহস্পতিঃ । দেব-ব্রাহ্মণ পাদাত্ম্চ পুত্রদার শিরাত-সি চ। এতে তু শপথাঃ প্রোক্তা মনুনা স্বল্পকারণে ॥ সাহসেম্ব-ভিশাপে চ দিব্যানি তু বিশোধ

ন । অত্ৰ শপথ দিব্যযোঃ পৃথক্-ত্ব প্রতীতেঃ শপথে ন দিব্যধ-ৰ্মাঃ। কিন্তু বৈখে কৰ্দ্মণি তত্ৰ শৌ-ठार्थं॰ न्नानाहमनामि कार्याः । मि-ব্যানি তু দিব্যতত্ত্বে কথিতানি না-ত্র লিখিতানি। অত্রাভিযুক্তেন শপদঃ কর্ত্তব্য ইত্যুৎসর্গঃ। উত্ত-যেচ্ছ্যা অভিযোক্তাপি। ইত্যা-হ নারদঃ । অভিযোক্তা **শিরো**-বত্তী সহীত্রব **প্রকীর্ত্তিতঃ। ইচ্ছ**-যান্যতরঃ ক্র্যাদিতরো বর্ত্তযে-ভিরঃ । ইতরঃ শপথকতৃ ভিন্নঃ। তवा काळायनः । चाठवृर्मभ-কাদক্ষো যদ্য নো রাজ দৈবিকণ । ব্যস**ন**° জাযতে ঘোর স জ্রেষঃ শগথে শুচিঃ।। ব্যসন মাপৎ। বোর মতিপীডাকরণ। তথা চ কোষাধিকারে যস্য পশ্যেদিত্য-নুবৃত্তৌ বিকুঃ। ব্লোগোগ্নি র্ক্তাতি-মরণ রাজাতক মথাপি বা। ত ম শুদ্ধণ বিজানীযাত্তথা শুদ্ধণ বিপ-ৰ্য্যশাৎ ॥ কাত্যাখনঃ। তল্যৈক-मा न म्बना जनमा यिन मखत्व ৷ রোগো ২গি র্জাতিমরণ মৃণ দ্দ্যাৎ দ্যক সং ॥ জ্বাতিসার বিক্ষেটি গূঢাস্থি পরিগীডন । व्याद्रभग्भवद्राभक खरशामाकः

প্রজাযতে ৷৷ শিরোরগ্নাদভঙ্গশ্চ দৈবিকা ব্যাধযো নৃণাণ্য ভস্যৈ-কস্যোতি ন তু দেশব্যাপকমর-वािषः। बनुः। न तृथा मन्यः अ-र्याप सरमगार्थ नरता वृधः। বৃথা ছি শপথ সর্বন্ প্রেত্য চেছ চ নশ্যতি।। কামিনীযু বি-বাহেষু গবা॰ ভক্ষ্যে ডথেন্ধনে । বান্ধণাভ্যুপপত্তো চ শপথে নাস্তি পাতকণ ৷৷ কামিনীমিতি রহসি কামিনী সম্ভোষার্থণ বৃথা भेषा । अब विवाह मिक्कार्थ॰ গোগ্ৰাদাৰ্থণ আবশ্যক হোনে-ন্ধনার্থণ বান্ধণরকার্থ মন্দীরুত-भनातने। यमः। तृशा जू भागशः ক্সন্বা কীটস্য বধ সংযুক্ত। অন্-তেন চ যুজ্যেত বধেন চ তথা নরঃ।। তস্মান্ন শপথ॰ জর্ব্যান্নরে। মিথা। বধেন্সিত । কীটসোতি প্রাণিমাত্রোপলক্ষণণ । তত্বধপা-পেন বৃথাশপথকর্ত্তা যুজ্যত ই-তার্থঃ। ইতিব্যবহারতত্ত্ব ॥ শপন॰ ক্লী শপথঃ। ইত্যমরঃ॥ গালিঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ শश्रः भू॰ जृगवित्मसः। উन् ইতি ভাষা। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। অ-ভিশাপগ্রস্তে তি ॥

भकः की गवाषीनाः थुतः।। वृक्षगृनः। इंडि स्मिनी।।
भक्तः पूर खी महमावित्मयः।
पूँ ही इंडि छाया। इंडामतः।।
भक्ताधिनः पूर इंडीममहमाः।
इंडि जिकाश्रत्मयः।। छह पर्यायः। इंडिमाः २ वार्तिकपू तः ७
गात्मयः ४ जमठानः ६। इंडि
जिकाश्रत्मयः।।

শব্দ ক শব্দ হতে। ইতি কবি-কল্প দ্রুমান । ক শব্দ যতি। সো-পসর্গস্থাবিদ্তৌ মতঃ। প্রশ-ব্দ যতি গভীর মত্যর্থণ শিষ্যঃ স্ফুটীকরোতীত্যর্থঃ। ইতি দুর্গা-দাসঃ।।

শব্দঃ পুণ শ্রোত্তগ্রাহ্ণগ্রণগদার্থনিশেষঃ ৷ তৎপর্য্যায়ঃ ৷ নিনাদঃ ২ নিনদঃ ৩ শ্বনিঃ ৪ শ্বানঃ ৮ নিধ্যায়ঃ ৯ নিহাদঃ ১০ নাদঃ ১১ নিঃস্বানঃ ১২ নিঃস্বনঃ ১৩ আনরবঃ ১৪ আরাবঃ ১৫ সংরাবঃ ১৬ বিরাবঃ ১৭ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ আরবঃ ১৮ সংরবঃ ১৯ রাবঃ ২০ ৷ ইতি শব্দচন্দ্রিকা ৷৷ যোয়ঃ ২১ ৷ ইতি জটাধরঃ ৷৷ স চ শ্বন্যায়কো বর্ণাত্মকশ্চ ৷ যথা ৷

क्षेत्र'रयागामिकना। वर्ग एड কাদযো মতাঃ। সর্বঃ শব্দো ন-ভোবৃত্তিঃ শ্রোত্রোৎপন্নস্ত গৃহ্-তে।। वीठी छत्रक्रना एयन छानू ९-পতিস্ত কীৰ্ত্তিত। কদমগোলক-नाराष्ट्रशिखः कमािक्यार्छ ॥ উৎপन्नः का विनर्धः क देखि বুদ্ধে রনিত্যতা। সোষ ক ইতি বুদ্ধিস্ত সাজাত্য মবলম্বতে ৷৷ ত-**(मट्योयथ मिछा) मि में मिछा** পি দর্শনাৎ। ইতি ভাষাপরিচ্ছে-দঃ ৷৷ শব্দ॰ নিৰূপয়তি ৷ শব্দে৷ ধ্ৰ-निक्त वर्षक मृषद्राष्ट्रिया धनिः ' । সর্বঃ শব্দো নভোবৃত্তিঃ শ্রো-ত্রোৎপন্নস্ত গৃহতে ইতি ॥ ন-ভোবৃত্তি রাকাশসমবেতঃ। দূরস্থ শব্দস্যাগ্ৰহণাদাহ শ্ৰোত্ৰোৎপ-म रेंछि क्थेम (यागा मिकना) व-ৰ্ণা স্তে কাদযো মতা ইতি। ননু मृनकानाबटक्टरमत्ना ९ नाः ব্দে শ্রোত্তে কথমুৎপত্তি রত আ হ বীচীতরঙ্গন্যাবেন তদুৎপত্তি-স্তু কীৰ্ত্তিতা ইতি। আদ্য শব্দ-স্য বহিৰ্দশদিগবচ্ছিলো **২ন্যঃ** শ-**ৰু স্তেনৈব শব্দেন জন**্তে তে-ন চাপর স্তদ্যাপকঃ এবং ক্রমেণ শোত্রোৎপন্নো গৃহতে ইতি।

कमश्रानकनायामू शिक्षः क-मािमारा देखि। जाना मसा **प्रभावका जिल्लाहरू ।** তত শ্চান্যে দশ শব্দা উৎপদ্য-ন্তে ইতি ভাবঃ। অস্মিন্ কল্পে গৌরবাদুক্ত কস্যচিন্মতে ইতি। ননু শব্দস্য নিত্যত্বাদুৎপত্তিঃ ক-থ মত আহ উৎপন্নঃ কো বিন-ষ্টঃ ক ইতি বুদ্ধে রনিত্যতা ইতি। শব্দানা মুৎপাদ বিনাশ প্রত্যয-শালিম্বাদনিত্যম্ব মিত্যর্থঃ। ননু সএবাষণ ককার ইত্যাদি প্রত্যভি-ख्डानाष्ट्रकाना निज्य । देश-ঞ্চোৎপাদ বিনাশ বুদ্ধি ভুমৰপা চেভ্যত আহ সোয° ক ইতি বুদ্ধি- ∥ স্তু সাজাত্য শবলশ্বতে। তদেবৌ-ষধ মিত্যাদৌ সজাতীযেতি দর্শ-নাৎ ইতি। তত্ত্ৰ প্ৰত্যভিজ্ঞানস্য তৎসজাতীযত্ব বিষয়া ননু তদ্য-ক্ত্যভেদে৷ বিষয়ঃ উক্ত প্রতীতী-তি বিরোধাৎ। ইত্থঞ্চ দ্বযো রপি বুদ্যো ন ভূমত্ব মিতি। ননু সজা-তীমত্ব সোষ মিতি প্রত্যভিজ্ঞা-ষাণ ভাষতে ইতি পত্ৰ দৃষ্ট মিত্য ত আহ তদেবেতি। যদৌষধণ ম-যা ক্লত তদেবান্যেনাপি ক্লত মি-ত্যাদি দর্শনাদিতি ভাবঃ। ইতি

मिका खगूका वली ॥ 🗱॥ मनविध-শব্দা যথা। ষড্জ্যভ সগান্ধার মধ্যমঃ পঞ্চম স্তথা। অতঃ পরস্ত বিজ্ঞেযো নিষাদো ধৈবত স্তথা।। ইফ শ্চানিষ্ট শব্দশ্চ সংহতঃ প্র-বিভাগবান্। ইত্যাশ্বমেধিকপর্ব ।। 🗱 ।। अक्विटिश्यां गण नायि-শেষা যথা। শব্দো গুণানুরাগো-খঃ প্রণাদঃ সীৎক্তত নৃণাণ। প-र्मन॰ अम्राज नायम कर्मन॰ अभि-সম্ভবে ৷৷ ক্ষেডা তু সিণ্হনাদোথ ক্রন্দন॰ সুভটধ্বনিঃ। কোলাহলঃ কলকল স্তমুলো ব্যা**ঙ্গলো** র**বঃ**।। यर्भता रख भर्गात जूरगाना इ শিঞ্জিতণ হেষা ভূেষা তুরঙ্গাণাণ গজানা গর্জ বৃ ছিতে।। বিক্ষা-রো ধনুষা হস্তা রস্তে গো র্জল-দস্য চ। স্তনিত গজিত গজিঃ স্থনিত রসিতাদি চ ৷৷ কৃজিত স্যাদ্বিহঙ্গানাণ তিরশ্চাণ রুত বা-শিতে। বৃকস্য রেষণ রেবা বৃক্কন ভষণ শুনঃ॥ পীডিতানাম্ব কণি-ত মণিত রত্কৃজিত। প্রকাণঃ প্রকণ স্তম্জ্যা মর্দলস্য তু গুন্দলঃ॥ ক্ষীজনম্ব কীচকানাং ভেৰ্ব্যা না-দস্ত টটুরঃ। তারে। ২ত্যুকৈর্ধ-नि श्रांख्या गछीत्रा मधूतः कनः।।

ककनी जू कनः मृत्र এक जाता। लयान्गः। काञ्च श्रनिविकातः স্যাৎ প্রতিশ্রুত প্রতিধনিঃ ।। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ ৷৷ 🟶 ৷৷ অথৈকা-र्थानुत्लाम वित्लाम मम नकाः। नयन ३ नर्खन २ कनक ७ क्छेक ৪ মহিম ৫ কল ক ও কালিকা ৭ সরস ৮ সহাস ৯ মধ্যম ১০ স্য-দস্য ১১ নবেন ১২ তাবতা ১৩ তারতা ১৪ বিভবি ১৫ করক ১৬ ক্ষুক ১৭ কাঞ্চিকা ১৮ নন্দ্ৰ ১৯ **ज्ञुन २० म्हान २३ (योगार्याः** ২২ লগুল ২৩ নুততনু ২৪ হাব-বহা ২৫ পতদাতপ ২৬ বরুভৈ-রব ২৭ কলপুলক ২৮ বরকৈরব ২৯ বরপৌরব ৩০ তরুণীরুত ৩১ त्रमत्मामत् ७२ नम्राज्यम् ७७ দংগতীগদং ৩৪ লঙ্কাকস্কাল ৩৫ মাধ্ববল্লবব্ধমা ৩৬ নন্দনন্দন ৩৭ তদ্ধিত ৩৮ সমাস ৩৯ কা-রিকা ৪০ পাদপাঃ ৪১ জলজ ৪২ नाना ४७ यम ४४ ॥ 🕸 ॥ जाया-ন্যার্থকানুলোম বিলোম শব্দাঃ।' व॰एम ३ एमरव २ एमर्थ ७ त्रवी 8 ভানো ৫ হণ্সা ৬ জীবা ৭ যামা ৮ विजू २ वर्ष ३० तम ३১ यम ३२ কংপ ১৩ রাখা ১৪ রাখ্যা ১৫

সূত্রামা ১৬ নন্দক ১৭ মালিকা ১৮ কালিনী '১৯ রাজতে ২০ ভারতী ২১ হাসিকা ২২ গগন ২৩ করকা ২৪ ভার্গব ২৫ কট-কং ২৬ দীনরকা ২৭ মহোরগা ২৮ বাতাপিনা ২৯ পিনাকিন। ७ मानिका ७३ यमत्राक ७२ হরিদৈবে ৩৩ সব্যাযামা ৩৪ ভোবিকর্ত্তন ৩৫ নন্দনবন ৩৬ নলকূবর ৩৭ সহসানুত ৩৮ র-. সবিভবেন ৩৯ সাহমহমিক ৪০ नवज्यमाभा 83 यात ६२ वंड ৪৩ যুবা ৪৪ সদা ৪৫ বশি ৪৬ ম্বা ৪৭ লতা ৪৮ নুত ৪৯ লব ৫ বিভা ৫১॥ 🕸 ॥ অথ সংস্কৃত প্রাক্তত সম পুর্ণলঙ্গ শব্দাঃ ৷ আহার ১ হার ২ বিহার ৩ সার ৪ সমর ৫ সম্ভোগ ৬ রোগ ৭ অ-সুর ৮ সংহার ৯ অমর ১০ বার ১১ বারণ ১২ গণ ১৩ টকার ১৪ ভার ১৫ আকর ১৬ লোল ১৭ উল্লোল ১৮ বিলাস ১৯ বাষস २० इत २३ जङ्कात २२ होत २७ অন্ধুর ২৪ নীহার ২৫ উরগ ২৬ রাগ ২৭ ভাল ২৮ তরল ২৯ গোবিন্দ ৩০ কন্দ ৩১ উদর ৩২ তরুণ ৩৩ তরণি ৩৪ দাস ৩৫

ৰোহ ৩৬ সন্দোহ ৩৭ মাস ৩৮ ∥ খুর ৩৯ খর ৪০ তর ৪১ মল ৪২ সঙ্গর ৪৩ আরম্ভ ৪৪ হাস ৪৫ কর ৪৬ করি ৪৭ কিরি ৪৮ কীর **8**२ क्लान ७० क्लान ७३ शीत ৫২ মল ৫৩ মলষ ৫৪ করীর ৫৫ वागरमव ৫७ व्यमि ৫१ वीत ६৮ নর ৬৯ নরক ৬০ করক ৬১ দণ্ড ৬২ চণ্ডাল ৬৩ রঙ্গ ৬৪ দর ৬৫ সরল ৬৬ কলম্ব ৬৭ কম্বল ৬৮ আকার ৬৯ পঙ্ক ৭০ খল ৭১ व्हल १२ अत्रक्ष १७ (पर् १८ म-ন্দেহ ৭৫ সঙ্গ ৭৬ গর ৭৭ স্বরর ৭৮ তরঙ্গ ৭৯ চারু ৮০ সঞ্চার ৮১ ভঙ্গ ৮২ অরি ৮৩ হরি ৮৪ পরি-ণাহ ৮৫ কণ্ঠ ৮৬ স্বৰ্গ ৮৭ অহি ৮৮ দাহ ৮৯ পরিসর ৯০ রবি २३ हाहा २२ मञ्जू २७ मञ्जीत २८ বাহ ৯৫ অচল ৯৬ সল ১৭ সমার ৯৮ সম্ভ ৯৯ সম্ভীর ১০০ मात्र ১०১ वित्रल ১०२ कवल ১०৩ জার ১০৪ কন্দর ১০৫ উদার ১০৬ পার ১০৭ জম্বীর ১০৮ কেসরি ১০৯ বরাহ ১১০ মুরারি ১১১ কাল ১১২ কাকোল ১১৩ সম্ভল ১১৪ চমূর ১৯৫ বিরাম ১১৬ বাল ১১৭ আ-लाल ১১৮ वाष्ट्र ১১৯ রণ ১২०

সঙ্গর ১২১ চোল ১২২ ভার ১২৩ সংসার ১২৪ কেরল ১২৫ সমীরণ ১২৩ টক ১২৭ তাল ১২৮ আসার ১২৯ চামর ১৩০ ঙ্গলীর ১৩১ তু-রঙ্গ ১৩২ সূর ১৩৩ কন্ধাল ১৩৪ কন্দল ১৩৫ করাল ১৩৬ বিকাস ১৩৭ পূর ১৩৮ ছেরম্ব ১৩৯ ক্রমু ১৪० विश्व ১৪১ সিন্ধু ১৪২ বুধ ১৪৩ जन्दन्न ১৪৪ जन्म ১৪৫ इन्मू ১८७ मन्मत ১८१ मभीत ১८৮ সমূহ ১৪৯ গন্ধ ১৫০ ভীম ১৫১ অঙ্ক ১৫২ সঙ্কর ১৫৩ কিরীট ১৫৪ তমাল ১৫৫ গুঞ্জা ১৫৬ হিস্তাল ১৫৭ তোমর ১৫৮ মহীরুহ ১৫৯ বিষ ১৬০ পুঞ্জ ১৬১ হিঞ্জীর ১৬২ পিণ্ড ১৬৩ বর ১৬৪ সম্বর ১৬৫ কোণ ১৬৬ কাণ ১৬৭ সংরম্ভ ১৬৮ সোম ১৬৯ পরিরম্ভ ১৭০ বিকার ১৭১ বাণ ১৭২ বসস্ত ১৭৩ আসব ১৭৪ বেসস্ত ১৭৫ বাস১৭৬ বাসব ১৭৭ বাসর ১৭৮ কাসার ১৭৯ সার ১৮০ সরস ১৮১ কিরণ ১৮২ অরুণ১৮৩ বার্ণ১৮৪॥ৠ৷ অথ সংস্কৃত প্রাক্ত সম স্ত্রীলিঙ্গ শकाः। (श्वा) (थवा २ ववा ৩ মালা ৪ রসালা ৫ কা হলা ৬ ष्ठना १ कीना ४ नीना २ दना

३० वाला ३३ जाला ३२ फाला ৭৩ অলসা ১৪ মসী ১৫ ধরণী ১৬ খারণী ১৭ গোণী ১৮ রোহিণী ३२ तमगी २० मगी २३ वीगा २२ বাণী ২৩ বসা ২৪ বেণী ২৫ ২৬ গঙ্গা ২৭ তরঙ্গিণী ২৮ কন্দ-ली २२ लह्ती ७ नाती **७**३ রামা ৩২ ভেরী ৩৩ ব ৩৪ কালী ৩৫ করালী ৩৬ চা-মুখা ৩৭ চণ্ডা ৩৮ রণ্ডা ৩৯ जुना ६० गरी ८३ ॥ 🕸 ॥ जाश স০স্কৃত প্রাক্ত ক্লীবলিঙ্গ সম-भक्ताः। जन ३ यन २ शन ७ মূল ৪ বারি ৫ কীলাল ৬ কূল ৭ वन ৮ शनन २ मूकून ३० निक ১১ গম্ভীর ১২ তুল ১৩ সলিল ১৪ কুমল ১৫ চীর ১৬ তুচ্ছ ১৭ রা-জीव ১৮ नीत ১२ रुव २० दुज्ज उ ২১ স্টার ২২ দারু ২৩ লাল ২৪ পটীর ২৫ কারণ ২৬ রোহণ ২৭ চেল ২৮ সহর ২৯ অম্বর ৩০ यिन्द्र ७५ अपून ७२ यखन ७७ তামরস ৩৪ ঙ্গওল ৩৫ অঙ্গদ ৩৬ পুর ৩৭ অরবিন্দ ৩৮ লোহ ৪৯ অঙ্গ ৪০ তডাগ ৪১ করণ ৪২ ঙ্গল ৪৩ তোরণ ৪৪ মরণ ৪৫ তম্ব ৪৬ অল ৪৭ আগার ৪৮

ভাসুর ४৯ ॥ 🟶 ॥ जाश म रहुउ প্রাক্তত সম ক্রিষাপদানি ৷ তণ ১ দেহি ২ গচ্ছ ৩ সংহর ৪ লব্ধ ৫ চোরয ৬ নারয় ৭ অবগচ্ছ ৮ অবলোক্ষ ৯ অবচিন্ত্রয় ১০ খাদ ३५ ॥ क्षा जय निःताश्चे प्रविक्र শব্দাঃ। নীহার ১ হার ২ হরিণ ত অঙ্ক ৪ হর ৫ অট্যাস ৬ टेकनाम १ काम ৮ तम २ नातम ১০ সি॰হ ১১ শগু ১২ শেষ ১৩ অহি ১৪ হণ্স ১৫ ঘনসার ১৬ र्शन ३१ रेख ३४ नाग ३२ हि-धीत २० निर्वात २३ मत्रम्वन २२ চন্দ্রকান্ত ২৩ শূকার ২৪ সা-গর ২৫ ভডাগ ২৬ জলাশ্য ২৭ অগ ২৮ হ্র্যাক্ষ ২৯ ভক্ষক ৩০ নখ ৩১ ফত ৩২ দীক্ষিত ৩৩ অক্ষ ৩৪ নারাচ ৩৫ কাচ ৩৬ কষ্ট্ৰতা কীচক ৩৮ চঞ্চন্নীক ৩৯ চাণক্য ৪০ চারণ ৪১ গণ ৪২ ক্ষণ ৪৩ কাণ ৪৪ শোণ ৪৫ সংসার ৪৬ সারস ৪৭ রস ৪৮ অরি ৪৯ রসাল °৫০ সাল ৫১ কঙ্কাল ৫২ কাল ৫৩ কলি ৫৪ শৈল ৫৫ খল ৫৬ অনল ৫৭ অর্ক ৫৮ কিঞ্জন্ক ৫১ কল্ক ৬০ কর ৬১ শঙ্কর ৬২ কীর ৬৩ ७८ लहिंग ७६ किंग ७७

গর ৬৭ কেশব ৬৮ দেশ ৬৯ लिय १० जानम १३ नमन १२ ধনঞ্জয ৭৩ খঞ্জরীট ৭৪ কীট ৭৫ অগ্নি ৭৬ কণ্টক ৭৭ কটাহ ৭৮ किंग १२ यक ४० मक ४३ अङ ৮২ ষজ্ঞ ৮৩ জনক ৮৪ অঞ্জলি ৮৫ যন্ত্র ৮৬ যত্ন ৮৭ রত্নাকর ৮৮ অন্ধক ৮৯ ধরাধর ৯০ ধীর ৯১ শীর ৯২ নাসীর ৯৩ নারা-য়ণ ১৪ ক্লুম্ভ ৯৫ স্বাকেশ ৯৬ ॥ 🗱 ॥ जथ नित्ताष्ठा जीनिक শকাঃ। গঙ্গা ১ গীতা ২ সতী ৩ সীতা ৪ সিদ্ধি ৫ সন্ধ্যা ৬ গৃদা ৭ গ্ৰাম ৮ আশীঃ ৯ কাশী ১০ निশा ১১ नामा ১২ कांखि ১৩ শাস্তি ১৪ দযা ১৫ রসা ১৬ আর্ডা ১৭ নিজা ১৮ হরিজা ১৯ দৃক্ ২০ দ্রাক্ষা ২১ লাক্ষা ২২ ধৃতি ২৩ कथा २१ काञ्चा २৮ शाबी २२ রাত্রি ৩০ রতি ৩১ গতি ৩২ ক-ন্ধরা ৩৩ ধারণা ৩৪ ধারা ৩৫ তারা ৩৬ কারা ৩৭ জরা ৩৮ ধরা ৩৯ আজি ৪০ রাজি ৪১ রজনী ৪২ অর্ত্তি ৪৩ কীর্ত্তি ৪৪ কন্যা ৪৫ তটা ৪৬ নটা ৪৭ নারী 86 मात्री 82 मत्री **৫**॰ मानी ७३

ঘটিকা ৫২ খটিকা ৫৩ জটা ৫৪ কক্ষা ৫৫ রক্ষা ৫৬ শিখা ৫৭ मःथा ७৮ कालिको ७२ कलिका ७० कना ७১ कानी ७२ कतानी ७७ मृर्गा ७८ ॥ 🕸 ॥ जथ नित्रा-ष्ठी क्रीविनिष्य संस्माः । চরণ ১ করণ ২ চক্র ৩ ক্ষত্র ৪ নক্তর ৫ তক্র ৬ রজত ৭ শত ৮ শরীর ৯ कीत २० गीत २२ जिक् १२ जीतं ১৩ ধন ১৫ কনক ১৫ নিধান ১৩ धान ३१ मन्नान ३৮ लोन २৯ নলিন ২০ নগর ২১ গাত্র ২২ ছত্ৰ ২৩ নেত্ৰ ২৪ অস্থি ২৫ দাত্ৰ ২৬ আলিঙ্গন ২৭ স্থান ২৮ শিরঃ २৯ চরিত্র ৩০ জল ৩১ স্থল ৩২ স্থাল ৩৩ কলত্র ৩৪ চিত্র ৩৫ কী-লাল ৩৬ জাল ৩৭ অলক ৩৮ ्नान ७৯ हिन्गु ७० नित्र 83 जङ ४२ नाविग ४० हित्रग ४४ বৈন্য ৪৫ অঞ্চ ৪৬ অজিন ৪৭ যান ৪৮ অসূক্ ৪৯ কাঞ্চন ৫০ আনন ৫১ কানন ৫২ হাটক ৫৩ नाष्ट्रेक ए८ नाष्ट्रा एए देख्य ए७ চেল ৫৭ রসাতল ৫৮ অদন ৫৯ अपन ७० खान ७३ निषान ७२ দ্ধি ৬৩ চন্দন ৬৪ অকর ৬৫ লক্ষণ ৬৩ লক্ষ ৬৭ শৃস্ত্র ৬৮

भाख ७२ मल १० रल १३ ॥ 🕸॥ ज्य नित्राष्ठी किया श्रानि । আশান্তে ১ অস্তি ২ চকাস্তি ৩ নিশঁতি ৪ সৃজতি ৫ আশণসতি ৬ ক্রীডতি ৭ ধ্যাযতি ৮ অর্চতি ৯ যাচতে ১০ দ্যতি ১১ বছতি ১২ আরাধতি ১৩ ত্রস্যতি ১৪ শেতে ১৫ গচ্ছতি ১৬ যচ্ছতি ১৭ ইচ্ছ-তি ১৮ নযতি ১৯ আযাতি ২০ হন্তি ২১ ঈহতে ২২ অশ্লাতি ২৩ স্নাতি ২৪ দধাতি ২৫ যাতি ২৬ জ্যতি ২৭ হসতি ২৮ ক-রোভি ২৯। ইতি কবিকন্পল-তাৰা > স্তবকে ২ সমূম ।। শব্দকারঃ ত্রি শব্দ করোতি যঃ। ষ্থা। সতা মরুক্ষরণ পক্ষী বৈর-কার॰ নরাশন॰। হন্ত॰ কলছ-কারো ২সৌ শব্দকারঃ পপাত थः। ইতি ভটৌ ৫ সর্গঃ।। শব্দগ্রহঃ পু॰ কর্ণঃ। ইত্যমরঃ॥ শক্ষা জ्वानक ॥ শব্দনঃ ত্রি শব্দকর্ত্তা।তৎপর্য্যা-यः। त्रवनः २। इंज्यानः ॥ भक-गात्व क्री ॥ শব্দভেদী^ন পু॰ অজুনিঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। পাষঃ। ইতি কেচিৎ।। वानवित्नवः। इंडि

রামাযণ ।।

শব্দবেধী পুং অর্জুনঃ ।
ধনঞ্জয়ঃ ।। দশরথরাজ্ঞঃ । যথা ।
লক্ষশব্দেন কৌশল্যে জ্মারেণ
ধনুষ্মতা । জমারঃ শব্দবেধীতি
ময়া পাপ মিদং ক্রতং ।। ইতি বাল্মীকীষে রামায়ণে ৬৩ অধ্যায়ঃ
।। শব্দবেধী ইত্যেবং লক্ষকীর্ত্তিনেতি ষাবৎ । ইতি তট্টীকা ।।
শব্দাধিষ্ঠানং ক্লী কর্ণঃ । ইতি
হেমচক্রঃ ।।

छ छ इत् य भारत । इंडि .কবিকল্পদ্রন্যঃ।। উ শমিদ্বা শা-স্তু। ভ र শাম্যতি। ইর্ অশ্মৎ অশমীৎ। অস্মাৎ পুষাদিত্বা-মিত্য ও ইত্যন্যে। শমঃ শান্তী-ভাবঃ। শশাম বৃষ্ট্যাপি বিনা দবাগ্নি রিতি রযুঃ। শম ইতিপ-দুস্য ঞান্তস্যাপি সম্ভবে শান্তী করণেপ্যয় মিতি ধাতুপ্রদীপঃ। বরেণ শমিতু লোকানল দগ্ধু হি তত্তপঃ। ইতি জমারসম্ভবঃ। বচো নিশম্যাধিপতি দিবৌক-সা মিত্যাদাবনেকার্থত্বাৎ শ্রু-ত্বেত্যৰ্থঃ। বা শম যম ইত্যত্ৰ বা-শব্দস্য ব্যবস্থাবাচিত্বাদস্য ঞৌ নিত্য হুস্বঃ শম্যতি। ইতি

जूर्गामामः ॥ শম ও কঞ আলোচে। ইতি কবিকল্পদ্রশ্বঃ ৷৷ আলোচঃ প্র-ণিধান । বা শম যম ইত্যত্র বা শৰদ্য ব্যবস্থাবাচিদ্বাৎ অস্য স্বার্থে এেই হুসাভাবঃ ৷ ও ক শামযতে কার্য্য সুধীঃ। ঞ শা-মযতি শামষতে। নিশাময ত-मू ९ পত্তি[।] विख्ताकामण्डा यय। অয মান্মনেপদীত্যন্যে ৷ ইতি षूर्गाषामः ॥ শনঃ পু॰ শান্তিঃ। ইতামরঃ॥ নোকঃ। ইতি ত্রিকাগুশেষঃ।। পাণিঃ ৷ ইতি শ্য শব্দ টীকায়াণ त्रागाञ्चमः ॥ छेलहातः । देखि ताজनिर्यण्डः ॥ অন্তরিন্দ্রিयनि धरुः। ইতি বেদার্সারং॥ অন্তঃকরণদ যমঃ। ইতি ভগ-বল্টীতাদশমাধ্যায়স্য ৪ শ্লোক

बीधत्यागी॥ শ্যকঃ ত্রি শান্তিকারকঃ। ঞ্যন্ত-শ্মধাতো ৰ্ণক প্রত্যুষেন নিষ্পন্নঃ শমথঃ পু॰ শান্তিঃ। ইতামরঃ॥ मखी। देखि यिनिनी ॥

जिकायाः श्रीभन्तयायी ।। विटकः

পকর্মোপরমঃ। ইতি চ তস্যৈব

ও অধ্যাযদ্য ৩ শ্লোকটীকাষাণ

भवन की रखार्शश्रहमन । ইত্যমরঃ।। শাস্তিঃ। ইতি মে-मिनी II हर्बन । ইতি **ध**र्तानः II शिशा। इंडि द्यारखः॥ শ্যনঃ পু॰ যমঃ। ইভামরঃ।। মৃগভেদঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিক।।। क्लायः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শমনস্বদাঁ ক্রী ষমুনা ৷ ইত্য-यतः ॥ শমনী স্ত্রী রাত্রিঃ। ইতি শমনী-यम गक मर्गना थ।। । यनीयमः पूर निमाष्ट्रतः। ता-ক্ষসঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ শমল লী বিঠা। ইত্যমরঃ॥ পাপ॰। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণা-দিবৃত্তিঃ।। गमा छकः भू॰ कामरमवः। हेि ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। শনিঃ স্থ্রী শিশ্ব। ইতি হেম-हिन्द्रः ॥ শমিতঃ ত্রি শাস্তঃ। ইত্যমরঃ।৷ শনিরঃ পু॰ শনীবৃক্ষঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শনিরোহঃ পু॰ **शिवः । ই** ि ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। भगी जी वृक्षवित्भयः। भारे

ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। শক্ত-

ফলা ২ শিবা ও। ইতামরঃ ॥ শক্তুফলী ৪ ৷ ইতি শব্দরত্না-বলী।। শাস্তা ৫ তুঙ্গা ৬ কচরি-পूकना १ किनमधनी ४ मेनानी ৯ লক্ষীঃ ১০ তপনতন্যা ১১ ই-को ३२ छछकती ३० इविर्गन्ना **38 (यशा 36 मूत्रिक्मिनी 3%** শক্তুফলিকা ১৭ সমুদ্রা ১৮ ম-ঙ্গল্য। ১৯ সুরভিঃ ২০ পাপশম-নী ২১ ভদ্রা ২২ শঙ্করী ২৩ কে-শহন্ত্ৰী ২৪ শিবাফলা ২৬ সুপ-ত্র ২৬ সুখদা ২৭ ৷ অস্যা গুণাঃ । क्रक्षः। क्यायषः। त्रक्रिन-ত্তাতিসার নাশিষ্য ॥ তৎফল खगाः । छक्रवः । यात्वः । का ক্ষরণ। উক্ষত্বণ। কেশনাশিত্বঞ্চ 1 ইতি রাজনির্যন্টঃ॥ অপি চ। শুমী শক্ত্ফলা তুলা কেশহন্ত্ৰী-ফল। শিব। । মঙ্গল্যা চ তথা লক্ষীঃ শমীরঃ স্বল্পিক। স্মৃত। ।। শ্মী তিক্তা কটুঃ শীতা ক্ষায়া রেচনী লযুঃ। কম্প কাস শ্রম খাস স্ঠার্শঃ ক্রমিজিৎ স্মৃতা।। ইতি ভাবপ্ৰকাশঃ॥ 🛊॥ শিশ্ব। । ছিমডা ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ ।। বাগুজিঃ। ইতি মেদিনী।। শমী ত্রি শাস্তঃ। শুমো বিদ্যতে

रेमा रेजार्थ रेन् क्षेट्रायन निम्नामः ॥

শনীকঃ পু॰ মুনিবিশেষঃ। বথা।
জলাশ্য মচকাণঃ প্রবিবেশ ত
মাশ্রমণ । দদর্শ মুনি মাসীন॰
শান্ত॰ মীলিতলোচন॰ ।। ইতি
শ্রীভাগবতে ই ক্ষমে ১৮ অধ্যান্
যঃ।। অস্যার্থঃ। অচকাণঃ অপন্
শ্যন্। ত॰ প্রানন্ধ মাশ্রমণ ত
স্মিন্ মুনি॰ শমীক॰। ইতি শ্রীন্
রস্বামা।।

শমীগর্ভঃ পু॰ বান্ধণঃ। অগ্নিঃ। ইতি হেমচক্রঃ।।

শ্মীধান্য ক্লী মাষাদিঃ। ইত্যমরঃ ।। তৎপর্য্যায়গুণাঃ। শ্মীজাঃ শিষিজাঃ শিষাতরাঃ সৃপ্যাশ্চ বৈদলাঃ। বৈদলা মধুরা কক্ষাঃ কষাযাঃ কটুপাকিনঃ
।। বাতলাঃ কফ পিতস্মাবজমূতমলা হিমাঃ। ঋতে মুদ্যা মসূরাভ্যা মন্যে স্বাগ্গানকারকাঃ।। মুদ্যা মসূর্যো রাগ্গানকারিত্ব মন্যবৈদলাপেক্ষ্যা। ন তু সর্ব্যা
। এত্যো রপি কিঞ্চিদাগ্গান কারিত্ব দর্শনাৎ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ ।। ৠঃ।। অপি চ । শূক্ধান্যং
শ্মীধান্যং সমাতীতং প্রশ্সতে

৷ পরতো বাতক্রজক্ষণ প্রাযেণা-তিনব গুৰু ৷৷ যব গোধুম মা-ষাশ্চ তিলাশ্চাতিনবা হিতাঃ। পুরাণা বিরসা ককা ন তথার্থ-করা মতাঃ।। ইতি রাজবল্লভঃ।। भमीभवा खी नब्जानून्कः। ইতি জটাধরঃ ॥ শমীরঃ পু॰ অল্পাশমী। ইত্য-यत्रः ॥ भन्मा खी विमृत्। ইতামরः॥ শম্পাকঃ পু॰ আর্থধঃ। ইত্য-্মরঃ ।। বিপাকঃ ।। ষাবকঃ । ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ শম্পাতঃ পু॰ আরগ্ধঃ। ইতি नकत्रवावनी ॥ শয় গতৌ। ইতি কবিকল্পড় মঃ।। শম্বতি। ইতি দুর্গাদাসঃ।। শয়ঃ পুণ বজুণ ৷৷ মুষলাগ্রস্থ-लाश्य ७ न ० । इं । रामिनी ।। লোহকাঞ্চী। ইতি হেমচন্দ্রঃ ॥ अनुत्नागकर्यनः। ইতি শय।-ক্রত শব্দ টীকাষাণ ভরতঃ।। দ-রিদ্রঃ। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণা-দিবৃত্তিঃ।। ভাগ্যবতি ত্রি।ইতি त्रागाञ्चमः ॥ শমর की मनिन ।। बङ ।।

চিত্ৰণ।। বৌদ্ধবতবিশেষঃ। ইতি বিশ্ব হেমচন্দ্রৌ।। শম্বরঃ পু॰ মৃগবিশেষঃ।। দৈত্য-वित्मयः । ইতি মেদিনী ।। यৎ-मावित्ययः ॥ देशविद्यायः ॥ জिনভেদः। ইতি বিশ্বः॥ यूक्तः ।। শ্রেষ্ঠঃ। ইতি ধরণী।। চিত্রক-वृक्तः ॥ त्लाधुः ॥ अर्जू नवृक्तः । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। শম্বরাসুর-স্য বধোপাখ্যান শ্রীভাগবতে ১০ ক্ষন্ধে ৫৫ অধ্যাযে দ্রফার্য়ণ।। শয়রকদঃ পু বারাহীকদঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। **শर्यत्रक्रमा॰ क्री क्रमनिद्रभयः।** ७९१र्यायः। देकत्राज् २ वहन-गक्ष॰ ७ वला॰ ८ गक्षकार्ध॰ ৫ কৈরাতক ও শৈলগন্ধ ।। অস্য গুণাঃ। শীতলত্ব । তিক্ত-ष्र । উक्षष् । क्षिमानिन अम-পিত বিষ্ফোট পামাদি अश्व ত্যা তাপ বিমোহ নাশিত্বঞ্চ ৷ ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শयतमृषनः पू॰ कायत्वदः। ইতি श्लायू४३॥ শম্বরারিঃ পু॰ কামদেবঃ। ইত্য-यतः ॥ विख् । ইতি नानार्थतञ्जभाना ।। । मन्नती खी जाथूननी । हे उ

মেদিনী ৷৷ মাযা ৷ ইতি শব্দ त्रवावनी।।

भवनः भू क्री कृलणा भारथर॰ ।। मध्मद्रः। इंडि स्मिनी ।।

শ্বাক্ত তি দিবারক্ষকৈত্র। তৎপর্য্যাযঃ। দিগুণাক্ত॰ ২ দিতীযাক্তত ৩ দিহল্য ৪ দি-সীত্য ৫। ইত্যমরঃ॥

भयुः हे भू॰ भवृकः। यथा। भवृ-শ युकः) कः भ युका (छवः शृर्वः का खर् मर्बमा। ककारत विना শেষো দৃশ্যতে গ্রন্থবিস্তরে ॥ ইতি হড়চন্দ্রঃ। ইত্যমর্চীকা-ষা॰ ভরতঃ।।

শযুরঃ পু॰ শয়ূকঃ। ইতি শব্দ-त्रञ्जावनी ॥

শत्रूकः पू॰ खी जनजञ्जवित्मयः। শামুক্ ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যাযঃ । जनश्वकिः २। ইত্যমরः ॥ শমূক। ७ भयूकः ८ भयूकः C भायुकः ७ भयुः १ भायुकः ৮। इंडि भक्तज्ञावनी ॥ জनिष्यः ৯ দুশ্চরঃ ১০ পঞ্জমঞ্জঃ ১১ । रेि श्रातावनी ॥

শয়ূকঃ পু॰ গজন্মান্তভাগঃ৷৷ যোকঃ ।। শূদ্রতাপসঃ। ইতি (मिनी।। देने जित्रिविद्यास्थाः। भ-

धः। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। कृष-শখঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শমূকা স্ত্রী জলশুক্তিঃ ৷ ইতি व्राक्रनिर्घन्छः ॥

শন্তলঃ পু॰ গ্রামবিশেষঃ। জ-थूना मयलस्याद्रमावाम देखि নামা খ্যাতঃ। তত্ৰ ষষ্টিতীৰ্থানি मिं ककी हाविज्य महमु॰ मगाः स्रामाि । स्था । শञ्जल বসত স্তস্য সহসু॰ পরিবৎসরাঃ । ব্যতীতা ভ্ৰাতৃ পুত্ৰ স্ব জ্ঞাতি . मयिक्षिकिः मर ॥ শस्रत्व श्र-শুভে শ্রেণী সভাপণক চম্বরৈঃ । পতাকা ধজ চিত্রাদ্যৈ র্যথে-ন্দ্রস্যামরাবতী॥ যুত্রাস্তে যফি-তীর্থানাণ সম্ভবঃ শম্ভলে ২ভ-বৎ। মৃত্যো মোক্ষঃ ক্ষিতৌ কল্কে রকন্ধস্য ক্ষ্যাশ্র্যঃ 11 বনোপ্রন সন্তান নানা সসুম সঙ্গলৈঃ। শোভিত॰ শন্তলগ্ৰা-ম' মন্যে মোক্ষোপম' ভূবি ৷৷ ম-হী নাশ্বাস্য ভগবান্নিজ্জন্ম ক্তোদ্যমঃ। শম্ভলগ্রাম বিপ্র-र्षि मावित्वन পরাত্মকः ॥ সুম-ত্যাণ বিষ্ণুয়শসা গর্ভ মাধত্ত दिक्व । वामगा । श्वक्रशक्रमा মাধবে মাসি মাধবঃ ॥ জাতো

দদৃশতুঃ পুত্রু পিতরৌ হৃষ্ট্যা-নসৌ। ধাত্ৰী মাতা মহাষষ্ঠী नाजीत्क्वी जनामिका 11 ग-स्नामक क्रमत्याका माविजी মাৰ্জ্জনোদ্যতা।তৃদ্য বিষ্ণোর-নন্তস্য মাতৃকাদাৎ প্ৰয়ঃ সুধাণ ।। সুমতি ख॰ मूज॰ लक्ष्म विकु॰ জিকু॰ জগৎপ্রভু॰ । পূর্ণকাম। বিপ্রমুখ্যানাস্থাদাৎ গবাং শ-ত ।। ত বালক নরাকার বিক্ষুণ মন্বা মুনীশ্বরাঃ । কল্কিণ कक् विनानार्थ गाविज् ज विमू र्नू याः ॥ नामान्रर्नः खळ खमा কন্ধি রিত্যভিবিশ্রুত । ইতি किन्द्रश्रतात्व ३ व्यथायः ॥ শंखनी जी क्रिनी। इंज्यतः॥ শভুঃ পু॰ শিবঃ। ইত্যমরঃ।। बका ॥ वृक्षः। ইতি यिनिनी ॥ विक्ः। इंछि श्लायू ४३॥ मिकंः। ইতি শব্দরত্নাবলী।। শ্বেতার্কঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। শন্তুতনযঃ পু॰ কার্ত্তিকেয়ঃ। ইতি. मक्तक्रावनी।। गरनम्क ॥ भज्ञनमनः पू॰ গণেশः। ইতি শব্দরত্বাবলী॥ काর্ত্তিকেয়শ্চ॥ अ धु थिया ही जायनकी। इंडि भक्तिका।। पूर्गा ह।।

ভে॰ ক্লী শ্বেতকমলং। ইতি
রাজনির্ঘণ্টঃ।। শিবপ্রিয়ে ত্রি ।।
শাসা প্রী যুগকীলকঃ। ইত্যমরঃ।। দক্ষিণহস্ত গৃহীত তালবিশেষঃ। ইতি সঙ্গীতশাস্ত্রণ।।
শাসাক্ষেপঃ পুণ ভূমিতক্ষিপ্রযায়ী
প্রাপ্ত যাবৎভূপ্রদেশঃ। যথা।
ভূমিয়েরা বছপ্তণং যফিঃ ক্ষিপ্তা
সমাপ্র্যাৎ। ভূবঃ প্রদেশণ যাবস্তং শাসাপাতঃ স উচ্যতে।।
ইতি মার্কপ্রেষপুরাণে বিবিংশচরিতং নামাধ্যায়ঃ।।
শ্বঃ পুণ হস্তঃ। ইত্যমরঃ।। শ্ব্যা

শ্যঃ পু॰ হস্তঃ। ইত্যমরঃ।। শয়া। ।। সর্পঃ। ইতি মেদিনী ।। নিজা ।। পণঃ। ইতি বিশ্বঃ।।

শযতঃ ত্রি নিদ্রাশীলঃ। ইত্যু-গাদিকোর্যঃ।।

শষতঃ পু॰ নিদ্রালুঃ। ইতি সং-ক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ।।

শ্যথঃ পু॰ অজগরঃ।। মৃত্যুঃ।।
নিদ্রালুঃ। ইতি হেমচক্রঃ।। বরাহঃ।। মৎসাঃ। ইতি সংক্রিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ।।

শयन की निजा। শया। हैं जान निजा। भया। हैं जान निजा। भया। हैं जिल्ली । विश्व मर्ज मिन निजा। विश्व के जान । यहां का जिल्ला हैं। अनुसर्क के जान । यहां का जिल्ला है। अनुसर्क के जान । यहां का जिल्ला कि जान के जान है। जान के जान है। जान के जान है। जान के जान के जान है। जान के जान है। जान के जान के जान है। जान के जा

্মাষাভি ব্রজতে চোত্তরা**যণ** । ভদা ৰপিতি দেবেশো ভোগি-ভোগে শ্রিয় পতিঃ ।। প্রতি-मृत्थ विच्छो छित्रान् । एत गञ्जर्व শুহকাঃ। দেবানা॰ মাতর শ্চা-পি প্রসুপ্তা শ্চাপ্যনুক্রমাৎ 11 नातम उवाठ। कथयत्र मूतामी-ना॰ भगतन विधि मूखम॰। मई ११।-नुक्रत्यदेशव भूत्रकृष्ठा कनार्मनः॥ পুলস্ত্য উবাচ। মিথুনাভিগতে সূর্য্যে শুক্লপক্ষে তপোধন। এ-কাদশ্যাণ জগৎস্বামিশ্যনণ প-রিকল্পযেৎ।। শেষাহি ভোগপ-ৰ্য্যঙ্গ কৃত্ব। সংপূজ্য কেশব । क्रांभवीजकरेक्व मग्रक् म॰-পূজ্য চ দিজান্।। অনুজ্ঞ। বা-ন্ধাৰেভ্যশ্চ দাদশ্যাণ প্ৰয়তঃ শু-চিঃ। লব্ধু। পীতাশ্বরধরণ স্বস্তি निजा॰ मत्रान्य ।। ज्याम-শ্যা॰ ততঃ কামঃ স্বপতে শ্যনে শুভে। কদমানা সুগন্ধানা अ-मूरेमः পরিকল্পিতে।। চতুর্দশ্যাণ ততো যক্ষাঃ স্বপস্তি সুখশীতলে । সুবর্ণপক্ষজক্তে সুখাস্তীর্ণো-পধানকে ৷৷ পৌৰ্নমাদ্যা মুমা-নাথঃ স্বপতে চর্ম্ম সংস্তরে। বৈ-याद्यु ह कहाजात ममूल्याः

ন্যচর্মণা ৷৷ ততো দিবাকরো রাশি সংপ্রযাতি চ কর্কটি ৷ ততো ২মরাণা রজনী ভবতে দক্ষিণাখন ।। বন্ধা প্রতিপদি **७था नीत्ना**९भनम् तन् । তল্পে স্থপিতি দেবানাণ দর্শযন মাৰ্গ মুক্তমণ।। বিশ্বকর্মা দ্বিতীযা-যা॰ ভূতীয়াযা॰ গিরেঃ সূতা। বি-नायक म्हजूर्यात शक्ष्मा मि धर्मता है।। यक्ष्रा॰ ऋन्मक अभि-তি সপ্তম্যাণ ভগবানুবিঃ। কা-ত্যায়নী তথাফম্যাণ নবম্যাণ ক-মলালযা।। দশন্যা॰ ভুজগেন্দ্রা-শ্চ স্বপস্তি বাযুভোজনাঃ।একা-**प**न्गाञ्च क्रकायाः नाथा बन्नन् স্বপন্তি হি।। এষ ক্রমস্তে গদিতো निभाषाः भाषतः मूत्न । अशब्ध म् (ट्यू (मर्व्यू थावृष्कानः म-मायर्यो ॥ ककाः मम॰ वलाका-ভি রারোহন্তি নগোভ্যান্। বা-যসা শ্চাপি সৰ্বন্তি নীডানি মু-নিপুঙ্গব।। বাযস্যশ্চ তপস্ত্যেতা ঋতে। গর্ভবালসাঃ। যস্যা• তিখ্যাণ প্রস্থাপিতি বিশ্বকর্মা প্র-জাগতিঃ।। দ্বিতীয়া সা শুভা পু-गा मूभूगा भयतामिना । ङ-স্যা° তিথাবর্চ্চা হরি° শ্রীবৎসা-

कः ठलूकुं कः ॥ शरीक्षः मनः लक्षा शक्ष भूष्णामिष्ठि मूर्त । ততো দেবায় শয্যায়াং ফলানি প্রক্ষিপেৎ ক্রমাৎ 11 সুরভীণি निद्या थ॰ विक्वारिया मधु मृषनः ৷ যথা হি লক্ষ্যা ন বিষুজ্যসে স্বং ত্রিবিক্রমানস্ত জগন্ধিবাস ৷ তথা खुमृनाः भयनः मरेमव बन्माक মেবেহ তব প্রসাদাৎ ॥ তদা স্ব-भूनाः তব দেব তল্পः স্বযः हि ल-শ্ব্যা শ্বনে সুরেশ। সত্যেন তে-নামিতবীৰ্য্য বিষ্ণে গাৰ্হস্থ্যৰা-গো মম চাস্ত দেব।। ইত্যুচ্চার্য্য প্রণম্যেশ প্রস্থাদ্য চ পুনঃ পুনঃ। নক্ত॰ ভূঞ্জীত দেবর্ষে তৈলক্ষার বিবর্জিত ৷৷ দিতীযেক্লি দিজা-গ্র্যায ফল॰ দদ্যাদিচক্ষণঃ। লক্ষী-ধর প্রীয়তা মে ইত্যুক্তার্য্য নি-বেদযেৎ ৷৷ অনেন তু বিধানেন চাতুর্মাস্যত্রত চরেৎ। যাবদৃ-শ্চিকরাশিস্থঃ প্রতিভাতি দিবা-করঃ ।। ততে। বিবুধ্যন্তি সুরাঃ ক্রমশঃ ক্রমশো মুনে। নভস্যে-মাসি চ তথা যা স্যাৎ ক্লফাইমী শুভা।। যুক্তা মৃগশিরেণৈব সা তু কামাঊমী স্মৃতা। তস্যা॰ সর্বেষু লিক্ষেষু তিথো স্বপিতি শঙ্করঃ॥

বসতে সমিধানে তু তত্ত্ৰ পূজা-ক্ষা সূতা। ইতি বামনে ১৬ **अ**थायः ॥ **॥ अथ इतिगयना**-षि वावस्। । **ভ**विषा नात्रषीषरमाः । रेमजामाभारम स्रिशीश विकृ दिक्क ग्रामिशा भित्रवर्ख ह । পৌক্ষাবসানে চ সুরারিহস্তা প্র-বুধ্যতে মাসচতুষ্টযেন।। নৈত্ৰ ম-नूत्राथा। देवक्याः अवना। (शोकः রেবতী।। ভবিষ্যে। নিশি স্বাপো দিবোত্থান সন্ধ্যাযাণ পরিবর্ত্তন• । অন্যত্র পাদযোগে তু দ্বাদশ্যা মেব কার্যেৎ।। ইপঞ্চ নক্ষত্র-যোগ প্রাপ্তো ফলাতিশযঃ। এত-विधानः वागनभूतातः। এकान-শ্যাণ জগৎস্বামিশ্যনণ পরিকল্প-যেৎ। শেষাহি ভোগপর্যাঙ্কণ ক্ল-দ্বা সংপূজ্য কেশবং ॥ অনুজ্ঞাং বান্ধণেভ্যশ্চ দাদশ্যা প্রযতঃ শুচিঃ। লব্ধু। পীতাম্বরধরণ দেবণ নিদ্রাণ সমান্যেৎ। অনুজ্ঞাণ ল-कु। ইত্যন্বयः । একাদশীসমযে দিবা শ্যনীয়কল্পন রাত্রৌ দাদ-শীক্ষণে নিজেতি। বিষ্ণুধর্ম্মোত্ত-त्त्र । **श्वाखीर्गगरन** कृषा श्रीन-যেন্ডোগশাযিন । আষাত শুক্ল-দাদশ্যাণ বিষ্ণুলোকে মহীযতে।।

श्वाखीर्वभवन॰ त्नाखनाखन्नम् कः वर्णिति। वतार्श्तात भी ভগবানুবাচ। অন্যত্তু সংপ্রবন্দ্যা-মি কর্মা সংসারমোচন । কদম স্বটজ শৈচৰ ধৰকোৰ্জুনক স্তথা ।। এভি রভ্যর্চন পর্যাদিধি-দৃষ্টেন কৰ্মণা। ততঃ সংস্থাপন॰ ক্তন্ব। মম মন্ত্রবিধিঃ স্মৃতঃ।। নমো नातायवारयाञ्जा हैयः यख यूनी-রুষেৎ। পশ্যস্ত মেঘান্যপি মেঘ-শ্যামণ হ্যুপাগতণ সিচ্যমানাণ ম-হী মিমাণ। নিজাণ ভগৰান গৃহা-তু লোকনাথ বর্ষাস্বিমণ পশ্যতু त्मश्रृन्म॰ ॥ उद्घाटेश्वर शरेगात ह লোকনাথ মানা শ্চত্বারি বৈঙ্গণ্ঠ-স্য চ পশ্য নাথ। আষাত শুক্লছা-**ए**न्गा॰ मर्बन्गि कित्र॰ निव॰ । य এতেন বিধানেন ভূমি মে কর্ম্ম-কারযেৎ।। স পুমান্ ন প্রণশ্যেত্ত্ব मः मादत्र यूरा यूरा । भयत **क**रेक विधानां विकृशर्मां छ-রীযনিযেধে। খন্যত্র । ধবকঃ ক-পিখঃ। স•স্থাপন॰ সমাপন॰। ভূমি ইতি প্ৰথিব্যাঃ সম্বোধন । এব ॥ মুক্তেন মন্ত্রেণ ক্রব্ণ সুদ্বাপযেত্ত-তঃ। সুপ্তে স্ববি জগন্বাথ জগৎ मूखः ভবেদিদः ॥ विवृत्तः विव

বুধ্যেত জগৎসর্ব চরাচর । ইতি माखन भृज्यस् ॥ 🛊 ॥ श्रीरश्च ভাত্রপদে মাসি একাদশ্যাণ সি-তেহনি। কটদান ভবেদ্বিষ্ণো র্মহাপুজা প্রবর্ত্তে ।। কটদান॰ পার্শ্বপরিবর্ত্তঃ। কামৰূপীয়নি-বন্ধে। এবং সংপূজ্য বিধিবৎ ভা-जमा कालमी कित्न। यखिणात्नन **(मर्दिम॰ शार्सिन श्रीतवर्ज्दर** ॥ বাসুদেব জগমাথ প্রাপ্তেষণ দা-দশী তব। পার্শ্বেন পরিবর্ত্তস্ব সু-**খ॰ স্বপিহি মাধব ।। দ্বযি সুপ্তে** বিবুদ্ধে ত্বযি বুধ্যেত জগৎ সর্ব॰ চরাচর॰ ॥ ৠ। বন্ধপুরাণে। একা-नगात्र **खक्कारा॰** कार्जिटक गामि কেশব:। প্রসুপ্ত॰ বোধযেদ্রাত্তৌ শ্রদ্ধা ভক্তি সমম্বিতঃ।। রাত্রৌ প্রসুপ্ত মিত্যম্বযঃ। বোধনস্ত দিবৈ-ব। ক্লন্না বৈ মম কর্ম্মাণি দ্বাদশ্যাণ মৎপরে। নরঃ। মটমব বোধনা-र्थाय देव॰ मञ्ज मूमीत्रत्य ।। मत्द-ন্দ্র রুটেদ্র রভিনূযমানো ভবানৃষি ৰ্বন্দিত বন্দনীযঃ। প্ৰাপ্তা তবেয়॰ কিল কৌমুদাখ্যা জাগৃষ জাগৃষ চ লোকনাথ ৷৷ মেহা গতা নিৰ্ম্মল शूर्वहत्यः भारतमा श्रूभावि ह त्या-

কনাথ। অহ॰ দদানীতি চ পুণ্য-হেতো জাগৃষ জাগৃষ চ লোক-নাথ।। এবং কর্মাণি স্বীরন্ দ্বাদশ্যাণ যে যশস্বিনি। মম ভক্তা নরশ্রেষ্ঠান্তে যান্তি পরমাণ গতিণ ॥ অত্র মন্ত্রদ্বয় পাঠানন্তর । উ-ত্তিষ্ঠোত্তিষ্ঠ গোবিন্দ ত্যজ নিদ্রাণ ব্দগৎপতে। স্বযা চোখীয়মানেন উখিত ভুবনত্রয়ণ।। ইতি সম্পু-দাযাগত স্তৃতীয়ঃ শ্লোক ইতি বাচস্পতিমিঞাঃ। শ্যনোখান 'মন্ত্রাস্ত কল্পতরু প্রভৃতিগ্রন্থসংবা-দাল্লিখিতাঃ। তদেব দাদশ্যাণ একাদশ্যা বা রেবত্যস্তপাদ যো-গবশাদিবোখান নক্ষত্র যোগা-ভাবে তুদ্বাদশ্যা মেব কারযেদি-তি গুরুচরণাঃ।। জীমূতবাহনস্ত ভবিষ্যে। আ ভা কা সিতপক্ষেযু বৈত্র প্রবণ রেবতী। আদি মধ্যা-বসানেষু প্রস্থাপাবর্ত্ত বোধন ।।। আ ভা কা সিতপক্ষেষু আষাঢ ভাদ্র কার্ত্তিক শুক্লপক্ষেষু ৷ এযা-क कामगा। आखी मूथाः कन्नः। ভবিষ্যপুরাণ । নিশি স্বাপো দি বোত্থান সন্ধ্যায়া পরিবর্ত্তন । অন্যত্ৰ পাদযোগে তু দ্বাদশ্যা মেব কারষেৎ ৷৷ বিফুধর্মোন্তরে

। विक् र्मिवा न अशिकि न तात्वी প্রতিবৃধ্যতে। দাদশ্যা মৃক্ষ সং-रियारिश शामरियारिशा न कार्रांश ।। অপ্ৰাপ্তে দাদশী মৃক্ষে উত্থান শ-যনে হরেঃ।পাদযোগেন কর্ত্তব্যে নাহোরাত্রণ বিচিন্তবেৎ ।। বচ-নাস্তর । রেবত্যস্তো যদা রাত্রৌ দ্বাদশ্যা চ সমশ্বিতঃ। তদা বিবু-ধ্যতে বিষ্ণু র্দিনান্তে প্রাপ্য রেব-তী ।। দিনাস্তে ত্রিধাবিভক্ত দি-ন তৃতীযভাগে দিবোখান মিত্য-নুরোধাৎ। অতএব। রাত্রৌ বি-বোধো বিনিহস্তি পৌরান্।। স্বা-পো দিবা রাফু अल नृভর্তঃ। স-क्याष्ट्रय सम्मक्ना धतिनी ভবে-ষরাণা মপি রোগ দুঃখ ।। ইতি व्यक्तिः। वताश्रुतात्। द्वामन्गाः সন্ধিসমযে নক্ষত্রাণা মসম্ভবে। আ ভা কা সিতপক্ষেষু শয়নাবৰ্ত্ত-नां निकः ॥ श्रा छत्नवः भयनाति कालठजूकेयः। चामनााः निना-দৌ নক্ষত্রযোগঃ। তদভাবেপি নিশাদ্যনাদরেণ তিথ্যস্তরে পা-দযোগঃ। তস্যাপ্যভাবেপি স-স্ক্যাযা॰ নক্ষত্ৰমাত্ৰযোগঃ। তস্যা-প্যভাবে দ্বাদশ্যাণ সন্ধ্যায়া মি-তি। বিফুধর্মোত্তরে। কি॰ তম্মৈ-

ত্রাদ্যপাদেন দশম্যণশেন যো দিবা। পৌষ্ণশেষেণ কি॰ তেন প্রতিপদ্যথ যে। নিশি ।। ইতি দ-॥ শনী প্রতিপদো নিষেধাদেকাদ-শ্যাদি পৌৰ্থাস্যস্তানা তথী-না মভ্যনুজ্ঞান ।। 🕸 ।। পদ্মপুরা-ণে সৰ্বদেব শ্যনাদিক মুক্ত যথা ৷ প্রতিপদ্ধনদস্যোক্তা পবিত্রা-রোহণে তিথিঃ। শ্রিষা দেব্যা দ্বি-তীষা তু তিথীন। মুত্তমা স্মৃতা ॥ ॥ তৃতীয়া তু ভবান্যাশ্চ চতুথী তৎ-সুত্রা চ। গঞ্মী সোমরাজ্যা ষষ্ঠী প্রোক্তা গুহুসা চ।। সপ্তমী ভাস্করস্যোক্তা দুর্গাযা শ্চাফমী স্মৃতা। মাতৃণা॰ নবমী প্রোক্তা **দশ**मी वाসুকে उथा ।। এकामभी श्रवीशास्त्र घामनी ठळाशानिनः । চক্রপাণিন ইতি পণ ব্যবহার ই-**जिया । बर्याम्मी वनक्रमा मि-**বস্যোক্তা চতুর্দশী॥ মম চৈব মু-নিশ্ৰেষ্ঠ পৌৰ্ণমাসী তিথিঃ স্মৃত।। যস্য যস্য তু দেবস্য যমক্ষত্রণ তি-থিশ্চ যা।। তস্য দেবস্য তস্মি॰শ্চ শयनावर्जनामिकः। অज इतिमः॥ যনাদ্যাষাঢাদি বিধানাৎ তৎ-সাহ্চর্য্যাদন্যেষা মপি তথা । জ্যোতিষেপি ৷ ব্ৰজ্ঞতি যদা মিথ-

নং বিহাষ কর্কণ রাজবিবজ্জিতাণ তিথি॰ সূর্য্যঃ। ভবতি তদ। নিষত॰ षित्रायाणः मूत्रभयनामितिथि र्षि-তীযে মাসি ৷৷ রাজ্ঞা চন্দ্রেণ বিব-জ্জিতা॰ অমাবাস্যা॰। পূৰ্ব ক্লফপ-ক্ষে মিথুনে সংক্রান্তে ইতি শেষঃ । इतिनाटवानाशायाञ्च । ययः । ক্ষীরাকৌ শেষপর্য্যক্ষে আষাঢ্যাণ সন্বিশেদ্ধরিঃ। নিদ্রাণ ত্যজ্ঞতি কার্ত্তিক্যাণ তযো স্তণ পূজ্বেৎ স দা।। বন্ধহত্যা সমণ পাপণ ক্ষিপ্ত . মেব ব্যপোহতি। হি॰ দু। ত্মকৈশ্চ কি॰ তদ্য ষজ্ঞৈঃ কাৰ্য্যণ মহাত্মনঃ ।। প্রস্বাপে চ প্রবোধে চ পৃজি-তো যেন কেশবঃ। আষাত শু-ক্লৈকাদশী মারভ্য পৌর্ণমাসী প-ৰ্য্যন্ত বিষ্ণো নিজা গ্ৰহণৰূপ শ-যন সময়ঃ। অতএব একাদশ্যা॰ শ্यन यভिधाय छमानि निनशकः-কে কর্ম্ম কথন প্রক্ষপুরাণে। ব-রাহপুরাণীযে তু। একাদশী কা-লীন মন্ত্রে নিদ্রাগ্রহণাভিধান । যম স্মৃতো পৌৰ্নাস্যাণ শ্যনা-ভিধান । আষাটীপদস্যানুপাধে স্তত্তৈব প্রবৃত্তেঃ। এবঞ্চ ব্রহ্মপুরা-(१ यमारिंगाकामगा। अरवाधन মুক্ত॰ তথাপি তদাদি দিন পঞ্চ

মেব প্রবোধ সমযঃ। তেন বরীছ-পুরাণে দাদশ্যা প্রবোধাভিধা-ন । যম স্মৃতে কার্ত্তিক্যাণ প্রবো-ধাভিধান সর্ব সমঞ্জস মিতি। এব মেব শ্রীদত্তোপাধ্যাযাঃ। ক-শ্বতরুম্ভ একাদশ্যা মেব শ্যন॰ প্ৰবোধশ্চ। যমস্মৃতাবাষাটী কা-र्खिकीशम य्यकामगी भरा आ-ষাদস্যেশ কার্ত্তিকস্যেয় মিতি ব্যুৎপত্ত্যা ন তৎপ্রত্যযানুপপ-ত্তিঃ। অপবাদ বিষযকে স্কচিদুৎ-সর্গ প্রবৃত্তে রিভ্যাহ। শ্রীভগব-দ্বাক্যে । মৎশযনে মদুত্থানে মৎ-পার্শপরিবর্তনে । ফল মূল জ-नाशती समि नना भगरिय ।। ফলাস্বপদ মনশনপর । তে-ন সৰ্বথা অনশনপরত্বণ। ইত্যে-কাদশীতত্ত্ব ৷৷ গ্ল ৷৷ শ্ৰত্যা-ना॰ भयन विधि निरम्दि यथा। মূত উবাচ। উপাস্য পশ্চিমাণ मक्ता॰ रुषाभी॰ खानूशामा ह। ভূত্যৈঃ পরিবৃতো ভূজ্বা নাতি-তৃপ্তো ২থ সংবিশেৎ ॥ শুচি॰ দেশ বিবিক্তম্ব গোমযেন তুলে-পरिष । প্রাগুদক্ প্রবণে চৈব সংস্বপেত সদ। বুধঃ।। প্রাক্শিরা-.**শ্চ স্বপেন্নিত্য**° তথা বৈ দক্ষিণা-

শিরাঃ। স্বপেদুদক্শিরা নৈব তথা প্রত্যক্শিরা ন চ। ন চান্তর্দ্ধান-হীনে তুন তির্যাক্চ কদাচন।। শূন্যালযে খাশানে তু একবৃক্ষে ठजुष्णत्थ । यहात्मवगृत्ह ठानि মাতৃবেশ্বনি ন স্বপেৎ ৷৷ ন যক্ষ নাগায়তনে ক্ষন্স্যায়তনে তথা । দর্ভেষু চ বিনা দীক্ষা । ন স্বপেচ্চ কথঞ্চন ॥ ধান্য গেহে চ বিপ্রা-ণা॰ গুৰুণাঞ্চ তথোপরি। নাশু-**हो शर्वकीर्त जू नाश्विष्ठ नीमिश्र** खथा ॥ मित्न मत्स्रो न नशक নোত্তরাপর্যস্তকঃ। নাকাশে প-ৰ্বতে শূন্যে ন চ চৈত্যক্ৰমে তথা ।। न जू बादत श्खमाकीदर्ग नार्ज-शामखुधाविजः। शानात्म गय-নে নৈব বহুদাৰুক্ততে ন চ ৷৷ ন দ-শ্বে বিদ্যুতা চৈব বহ্নিপ্লুফে জলে তথা ৷ ন স্বপেৎ সন্ধ্যযো নিত্য ন শিরস্যাসনে কটে ।। এবং স্ব-পন্ নরে৷ নিত্য৽ সুখস্যেহ পর্-ত্রভাক্। ব্যত্যযে চ ভবেদ্যঃ মৃতো নরক মশ্বতে।। ইতি ব-ক্লিপুরাণে আক্লিকতপোনামা-शायः॥ #॥ অপि চ। সতি সূর্য্যে শয্যা চ ন পাতনীয়া সূৰ্য্যাদয়াৎ शृ र्व मृ द जान नीया। তथा ह स्मृ डिः

া ভাক্ষরাদৃষ্টশ্যানি নিত্যাগ্নি-मिलानि ह। मूर्गावः लाकि मी-পানি লক্ষ্যা বেশ্বানি ভাজন॰ ॥ আসন বসন শ্যা জাযাপত্য কমণ্ডলুঃ। আত্মনঃ শুচি রেতানি न পরেষা॰ কদাচন।। न কদাচন ইত্যনুমতি বিনা অন্যথাতিখ্যা-नूषणखः। गामः। एको प्र-শে বিবিক্তে তু গোমংঘনোপ-निश्वरक। आधनक्क्षवरन रेठव मिश्रित्भे जुना तूथः ॥ योजनाः **शृ**र्वज्ञ अक भित्रज्ञादन निधाश रह । देविनिदेक शीक्रदेख में देख तका॰ ক্লছা স্বপেত্ততঃ ।। গর্গঃ। স্বগৃহে প্রাক্শিরাঃ শেতে আযুষ্যে দ কিণাশিরাঃ। প্রত্যক্শিরাঃ প্র-বাসে ত্ন কদাচিদ্দক্শিরাঃ॥ মার্কণ্ডেযপুরাণে । প্রাক্শিরাঃ শयत्व विकाश थन यायुम्ह किन ণে। পশ্চিমে প্রবলাণ চিন্তাণ হা-নি॰ মৃত্যু॰ তথোত্তরে ॥ তথা। ন-মক্ত্যাব্যয় বিকু সমাধিকঃ স্ব-পেরিশি। মার্কণ্ডেয়ঃ। শূন্যাগা-রে শাণানে চ একবৃক্ষে চতুষ্পথে । মহাদেবগৃহে চাপি শর্করা লো-कु शान्स्यू॥ धाना भा विश्व प्त-বানা॰ গুৰুণাঞ্চ তথোপরি। ন

ठानि जन्नगरन नास्टि ना-**७**िहः ययः ॥ नार्जवाना न नग्नन নেতিরাপরমস্তকঃ। নাকাশে স-बिग्रा ह न ह देह छा प्रत्य उथा । न यर मिछार्थः ॥ रेजाङ्गिका-চারতত্ত্ব ।। 🟶 ।। অন্যচ্চ । ভুজুা চ বিধিবন্মন্ত্রৈ র্ছিজে৷ ভুক্তাবশি-खैकः। সসুস্বাদ্ধবজনঃ স্বপেৎ শুদ্বপদে৷ নিশি ৷৷ নোত্তরাভি-म्थः वना । शन्त्रमानिम्दशा म ह। न हाकारण न नरभा वा नाख-ि नागतन किष्टा। न नीनायास पद्नाया॰ भूनगागादत न टेठव शि। নাপি বংশ্যে চ পালাশে শযনে বা কদাচন।। ইতি কৌর্ম্মে উপ-রিভাগে ১৮ অধ্যায়ঃ।।ঞ্চ।। অপি চ। ক্লতপাদাদিশৌচ শ্চ ভুক্তা मायः ততো गृशी। गट्हि भगाः সমন্ত্রাঞ্চ তাথ বা দারুনির্ম্মিতা ।। भाव्यवमा कषषमा नीथ मन्नात-কস্য চ। কিংশুক্স্য বট্স্যাথ তথা সশমযস্য চ।। আরোহণাৎ ভবেৎ পাপ তস্মাত্তেষু ন চ স্ব-পেৎ।। প্ররোহ শয্যাণ সূত্রে বা অপর্ণে পরমেশ্বরি।। ন শুক্রে না-পবিত্রে চ ন তৃণে ন চ ভূতলে ৷ তুলিকাষাণ তথা বস্ত্ৰে শষ্যাভাবে

ऋरभिन्ना शै।। ऋरभन्न भेउरेट अ **ठ कनकी कम्रत्नम् ह। ३** छि মৎস্যসূক্তে ৪৪ পটলঃ ।। 🟶 ॥ অপি চ। সূর্য্যেণাভ্যুদিতো যস্ত **ज्याकः मृर्यान यः अभन् । ज-**ন্যত্রাত্রভাবাচ্চ প্রাযশ্চিত্তী-যতে নরঃ।। ইতি বিষ্পুরাণে ৩ অংশে ১১ অধ্যায়ঃ।। ক্ষান্ সুश्चि मूर्या উদেতি স সূর্যোণা-**ज्रामिकः । यित्रान् मृत्थः असः** যাতি স সূর্য্যেণ ত্যক্তঃ। সূর্য্যো-मयाखनगरयाः अभन् शाय-ক্ৰিয়তে পাতকী ভৰেদিত্য-ৰ্থঃ। ইতি তস্য দীকা চ।। কিঞ্চ। শ্বাদানকৌ দমুত্তান স্তান্ দ্বি ১৬ পার্মে চ দক্ষিণে। তত স্ত-षिछ्वान् ७२ वात्म शन्हा ९ य-नगर यथामूथ ।। वामिनगया মনলো নাভে ৰূদ্যোম্ভি জম্ভূ-নাণ। তত্মাতু বামপাৰ্শে শ্যীত ভুক্তপ্রপাকার্থ ।। ইতি ভাব-প্রকাশঃ 11

শ্যনীয় ক্লী শ্যা। ইত্যমরঃ।। শ্যনযোগ্যে ত্রি॥

শ্যনীযক ক্লী শ্যা। ইতি শব্দরত্বাবলী। শ্যানকঃ পু সর্পঃ। ইত্যুণাদি- क्षिशाः क्ष्यक्षामः । ইতি ह्य-हस्यः ॥ भयान्ः जि निषान्ः। ইত্যমরः॥ भयान्ः पु॰ অজगतः॥ अकतः । ইতি হারাবলী॥

শ্যিতঃ ত্রি নিদ্রালুঃ। ইত্যমরঃ

11 বসন্তঙ্গসুমে পুং। যথা। বসন্তঞ্গসুমঃ শেলুঃ শ্যিতো দ্বিজক্রৎসিতঃ। ইতি শব্দমালা ॥
শ্যনে ক্লী ॥

শবিতবান্ ত্রি নিজালুঃ। শীঙ ধাতোঃ ক্তবতু প্রত্যবেন নি-স্পারঃ।।

শযুঃ পু॰ অজগরঃ। ইত্যমরঃ। শযুনঃ পু॰ অজগরঃ। ইত্যুণা-দিকোষঃ।।

भगा छी श्रुष्णनः। ইতি মেদিনী
।। भीयত यव সা। তৎপর্যায়ঃ।
শযনীয়ং ২ শযনং ৩। ইত্যমরঃ
।। তল্পং ৪। ইতি জটাধরঃ ।।
শযনীয়কং ৫। ইতি শব্দরত্নাবলী ।। তস্যা গুলাঃ। সুখশয্যান্দর্শ সেব্যং নিজা পুষ্টি ধৃতিপ্রদা। শ্রুমানিল প্রান্দর্শ ব্রাক্রানা বিশ্বী বৃংহণী শুক্রবর্দ্ধনী ।
পাট্টা তু বাতলা প্রোক্তা পর্টো

ৰকোতিবাতলঃ।। ইতি রাজ-বল্লভঃ।। 🟶 ।। অপি চ। ত্রিদোষ শমনী খট্টা ভূলী বাত কফাপ-हा। ज्या वृंश्नी व्या कार्छ-পঞ্জী তু বাতলা ৷৷ অন্যৎ পুন-ব্লাহ।ভূশয্যা বাতলাতীবৰকা शिखामु नामिनी । मूमयामय-ন হদ্য পুষ্টি নিজা ধৃতিপ্রদ ॥ অমানিলহর বৃষ্য বিপরী-ত মতোন্যথা। ইতি ভাবপ্র-কাশঃ।। 🟶 ।। তদামন বিধান॰ ষ্থা। ক্তপাদাবশৌচশ্চ জু-জ্ঞ। সায় ততো গৃহী। গচ্ছেৎ শ্যা মস্ফুটিতা মেব দারুম্যীণ নৃপ।। নাবিশালা ন বৈ ভগা নাসমাণ মলিনাণন চান চ জম্ব-ম্বী শ্ব্যা মধিগচ্ছেদনাস্তৃতা ॥ ইতি বিষ্ণুপুরাণে ৩ অংশে 33 अशायः ॥ क्षा ठकान क्ल॰ यथा। बाब्दकाः। गृह शाना।-ভযোপানচ্ছত্র মাল্যানুলেপনণ । यानः वृक्षः প্রियः भया। मञ्जा-**जिखः मूथी जात्य ॥ श्रियः य-**म्बमा रुम्मामि। প্রতিগ্রহ সম-র্থেন শ্ব্যা ন প্রত্যাখ্যেষা। यथा याख्वकाः। जनाः नाकः शर्या मध्या शक्ताः भूष्यः पश्चि

ক্ষিতিঃ। মাণ্স শ্যাসন ধানাঃ প্রত্যাখ্যেষ ন বারি চ ৷৷ 🟶 ৷৷ মৃতোদ্দেশ্যক দত্ত শ্ব্যা গ্ৰহণে मिरिया यथा। बक्तभूतानः। म-য্যালন্ধার বস্ত্রাদি প্রতিগৃহ্য মৃ-তস্য চ। নরকাম নিবর্ত্তন্তে ধে-नु॰ जिनमयी॰ जथा।। 🟶 ।। मा ह ঔত্তানাঙ্গিরো দেবতাকা। যথা । ছত্র॰ রুঞ্চাজিন॰ শ্য্যা॰ রথ-মাসন মেব চ। উপানছে। তথা ষান তথা যৎ প্রাণবজ্জিত।। ঔত্তানাঙ্গিরস স্ত্রেতৎ প্রতিগ্র-হ্লীত মানবঃ। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব॰ ॥ 🗱 ॥ পুষ্পাভিষেকে শ্ব্যাপ-উক यथा। সর্বরত্ন মলকার প-উ॰ কাৰ্য্য॰ দ্বিহস্তক॰। হস্ত বি-স্তার উচ্ছাযে দশাঙ্গুল্যঃ সুশো-जन ।। स्नानाथा मार्क्रहरू পট্ট॰ বৃত্তাসনাম্বিত । শ্যাখ্য कि छवा टेमर्याक्तनूर्यान मिनी-ঠক ।। ইতি দেবীপুরাণে ত্রৈ-লোক্যাভ্যুদয়পান্দে পুষ্পাভি-' रिक नामाधायः॥ শর॰ क्री जलः। ইতি মেদিনী॥ পু॰ वावः। ইত্যমরঃ।। দধ্যগ্ৰভাগঃ। ইতি মেদিনী ।। দ্ধশর্ষ্য নামান্তর ৷ সভালি-

कः ॥ मधिশतमा नामाखतः । **मिश्यातः। मिश्यायः। क्रित्यः।** रेि तन्नगानामयः ॥ जृगवित्न-ষঃ। কাঁডা ইতি হিন্দীভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। ইযুঃ ২ কাণ্ডঃ ৩ বাণঃ ৪ মুঞ্জঃ ৫ তেজনঃ ৬ গু-स्कवः १। ইতি রত্নমালা ॥ উৎ-किं ४ भाषकः २ क्तुः ३० हे-ক্ষুপ্রঃ ১১ ক্ষুরিকাপত্রঃ ১২ বি-শিখঃ ১৩। অস্য গুণাঃ। মধু-রত্বণ। সতিক্রত্বণ। কোঞ্চত্বণ। कक खांखि मनाशर्षः। वन বীর্য্যকারিত্ব॰। নিত্য॰ নিষেবি-ত ঞ্চেৎ কিঞ্চিদ্বাতকারিত্বঞ্চ । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। অপি চ। ভদ্রমুঞ্জঃ শরো বাণস্তেজন শ্চ-ক্ষুবেষ্টনঃ। মুঞ্জো মুঞ্জাতকো-वानः चृलमर्जः मूरमधमः ॥ मूक्ष-ধ্বস্তু মধুর তুবর শিশির ত-থা। দাহ তৃষ্ণা বিসপাসু মূত্র वस्त्राक्षित्रागिष्कि ॥ मायव-ষহর বৃষ্য মেখলাসূপযুজ্য-তে। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। উশী-রঃ।। মহাপিঞ্জীতরুঃ। ইতি চ त्राजनिर्यन्छः ॥ हि॰मा । ইতি भूशावर्थ मर्भनाव ॥ **अत्रज**े की देशक्रवीन । ইতি

হেমচন্দ্রঃ !! নবনীত । ইতি
কেচিও !!
শরজন্মা পু কার্তিকেয়ঃ। ইত্যমরঃ !!
শরটঃ পু সমুস্তশাকঃ। ইতি
রক্তমালা !! রুকলাসঃ । ইত্যমরটীকা !!
শরণ ক্লী গৃহং !! রক্ষিতা। ইত্যমরঃ !! রক্ষণ !! বয়ঃ ! ইতি
মেদিনী !! ঘাতকঃ। ইতি শব্দরক্তাবলী !!
শরণা ক্রী প্রসারনী। ইতি শব্দরক্তাবলী !!

শরণাগতঃ ত্রি শরণাপয়ঃ। তৎপর্যায়ঃ। শরণাপ্তিঃ ১ অভিপ্রয়ঃ ২ শরণাথী ৩। ইতি ত্রিকাওপেষঃ ।। তদ্রুলণারক্ষণযোগ
ফল দোষো যথা। শস্ত্রহীনঞ্চ
ভীতঞ্চ দীনঞ্চ শরণাগতণ। যো
ন রক্ষত্যধর্মিঞ্চঃ সম্ভীপাকে বসেদ্মুগণ ।। রাজসূষ শতানাঞ্চ
রক্ষিতালভতে ফলণ। পরমৈশ্বর্যাযুক্তশ্চ ধর্মেণ স ভবেদিহ ।।
ইতি ত্রক্ষবৈবর্ত্তেপ্রক্ষতিখণ্ডেওও
অধ্যায়ঃ ।। য়া অপি চ। শরগাগত রক্ষাণ যঃ প্রাণে রপি ধনৈ রপি। স্কুতে মানবো জ্ঞানী

जग पूनाः निमानय ॥ नर्वभाश विनिम् दिन बिक्र खाम्र देश ति । शा वाग्रवा १८ खा खाम्रवाकः रिवाशिना मित्र पूर्वाकः ॥ इंछि शास्त्र कियारगागमारत गन्ना-माश्रामः नाम ৮ अथायः ॥ जनाक । क्वाजिल्क्र्याखाः शिय खार्क भावागिकः। बक्र-ह्णाममः जग्र भाग माह मनी-विनः ॥ शास्त्र निक्षि प्रीः महाभाजिनना मित्र । भावगाग-जहाजुल्ल न पृष्ठा निक्षिः क्र-हि९ ॥ इंछि विङ्ग प्रतारा प्राना-वशानिन्य नामाथन्यः ॥

শরণাথী ত্রি শরণাগতঃ। ইতি হেমচক্রঃ।

শরণার্পকঃ ত্রি শরণাপমঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেযঃ।।

শরণিঃ স্থ্রী পঞ্চাঃ। ইত্যমরঃ।।
সরস্তানখেতি সরণিঃ নাম্নীতি
অনিঃ ইদস্তাৎ পক্ষে ঈপি সরণী চ। সরণিঃ শ্রোণি বর্জনো
রিতি দস্ত্যাদৌ রভসঃ। শুস্থু গি
হিংসনে ইত্যস্মাৎ পূর্ববদনৌ
শরণি স্তালব্যাদিশ্চ। শুভং শুভে প্রদীপ্তে চ শরণিঃ পথি
চাবনাবিতি তালব্যাদাবজ্যঃ।

তটাক। মাণ ভরতঃ। পৃথী। ইত্যজয়ঃ।।

শরণী স্ত্রী পড়াং।। প্রসারণী। ইতি শব্দরত্বাবলী।। জয়ন্তী। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

শরওঃ পু॰ পক্ষী।। কামুকঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।। ধূর্তঃ।। শরটঃ।। ভূষণভেদঃ। ইতি মে-দিনী।। চতুপাৎ। ইতি সংক্ষি-প্রসারোণাদিবৃত্তিঃ।।

পরণাঃ ত্রি শরণীয় । শরিতবা । যথা। ধ্যেষ সদা পরিভবদ্দ মভীফদোহ তীর্থাম্পদ দিব বিরিঞ্চিনুত শরণা । ভূত্যার্তি-হ প্রণতপাল ভবান্ধিপোত ব-দে মহাপুরুষ তে চরণারবিন্দ ।। ইতি শ্রীভাগবত ।।

শরণা खी দুর্গা। यथा। विषाशिख्य घारत्रयू শরণা শরণা শরণা দেবী পুরাণে পরিপঠাতে ।। ইতি দেবীপুরাণে দেবীনিরুক্তাধ্যায়ঃ ।।
শরণাঃ পুণ বারিদঃ ।। বাতঃ ।
ইতি বিশ্বঃ ।। ভরণাঃ । ইতি
শক্ষালা ।।

শর্থ স্ত্রী বৎসরঃ॥ ঋতুবিশেষঃ
। স চাশ্বিন কার্ত্তিক মাসদ্যাদ্ধ-

कः। ইত্যমরः ॥ তৎপর্যাयः १ শরদা ২ কালপ্রভাতঃ ৩ ৷ इंडि भक्तत्रवावनी ॥ कामश्र-ভাত ৪। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ বর্ষাবসানঃ ৫ মেঘাস্তঃ ৬ প্রা-বৃডত্যয়ঃ १। তত্র জলগুণাঃ 1 বর্ষাসু নাভস বারি সেবতো-**ভिদ মেব বা। गर्ब॰ भारति एक्य-**ত্তে তডাগ° সারসম্ভ বা ।। # ।। তত্র গ্রাহ্ বাযু র্যথা। বসস্তে দক্ষিণো বাতো ভবেৎ বর্ষাসু প-শ্চিমঃ। উত্তরঃ শারদে কালে পূর্বো হেমন্ত শৈশিরে ॥ ইতি त्राक्रिविष्ठेः ॥ ॥ अति ह। भी-রদঞ্চানভিষ্যন্দি লঘু তৎ পরি-কীর্ত্তিত । হৈমস্তিক জল প্লি-গ্ধ॰ বল্যা॰ বৃষ্য॰ ছিত॰ গুরু॥ইতি त्र जिवलाजः ॥ 🗱 ॥ देवमाक्यट ভাজাশ্বিন্যানাত্মকঃ ৷ কেচিতু ঋতু ষট্ক॰ সমাখ্যাত৽ রবে রা-শিষু সংক্রমাৎ। গ্রীয়ো নেষ ৰূষৌ প্ৰোক্তঃ প্ৰাৰৃট্ মিথুন কর্কটো ॥ সি॰হ কন্যে স্মৃতা বর্ষ। তুলা বৃশ্চিকযোঃ শরৎ। ধনু র্তাহে চ হেমন্তে। বসন্তঃ अस भीनको ।। खत्मा जू। मि-नितः भूष्णमभरया जीत्या वर्षा

भद्रिक्षिमः । भाषापि मामयुरैकाः मा। खनाः। শরদ্যन পিত্তকত্রী নৃণা॰ ষধ্যবলাবহা। ইতি ভাব-প্রকাশঃ ।। ৠ ।। তত্ত্র জাত ফল॰ । নরঃ শরৎ সণ্জক লব্ধজন্ম। ভবেৎ স্কর্মা মনুজ স্তরস্বী। श्वितः मूनीला अनवान् मूनानी ধনাবিতো রাজঙ্গল প্রপন্নঃ।। ইতি কোষ্ঠীপ্রদীপঃ ॥ 🟶 ॥ তত্র वर्गनीयानि यथा। ठळ्ळ भर्ते छ। । রবিপটুতা। জলশুদ্ধতা। অগ-खाः। इ॰मः। वृषः। मर्णः। मश्च-চ্ছদঃ। পদা শেত্ৰেষঃ। ধান্য॰ া শিখিপক মদপাতঃ। ইতি ক-বিকল্পলতা ৷৷

শরৎকামী পু॰ সক্কুরঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী॥

শরৎপদ্মণ ক্লী সিতাম্ভোজণ। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ !।

শরৎপর্ব ক্লী কোজাগরপূর্ণিমা। যথা । কোজাগরঃ শরৎপর্ব শারদী দ্যুতপূর্ণিমা। ইতি জটা-ধরঃ।।

শরৎপুষ্প ক্লী আহল্য । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। সরদুদ্ভবঙ্গসূ-মঞ্চ ।। শরদ্ স্ত্রী শরৎ। ইত্যমরঃ।। শরদন্তঃ পু॰ ছেমন্তঃ। ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ।।

শরদা স্ত্রী বৎসরঃ॥শরদৃতুঃ। ইতিশব্দরত্নাবলী॥

শরদিজ তি শরৎকালজাত।

যথা। নদ্যঃ প্রাবৃষিজান্ত পী

নস কফ শ্বাসার্ত্তি কাশপ্রদাঃ
পথ্যা বাত কফাপহাঃ শরদিজা
হেমস্তজা বুদ্দিদা। সন্তাপণ
শমযন্তি সংবিদ্যতে শৈশির্য্য
বাসন্তজা স্তৃফা দাহ বমি শ্রমার্ত্তি শমদা গ্রীম্মে যথা স্থণ
গুণাঃ। ইতি রাম্বনির্দ্তিঃ।।

গরদেশসংগ্রহী স্থান কালী

শ्रमूमान्यः की न्यंद्रकानीनम्यावतः। यथा। न्यंप्रमान्यः
माधूकां मदम्बान्यः
माधूकां मदम्बान्यः
माधूकां मदम्बान्यः
मुक्षां मृना। मृत्रक्रनाथ र्व १ छक्षः
मामिक। वतम निष्ठर्वा त्व ह किः
वश्वः॥ इवि श्री शाम्यः । न्यंप्रमान्यः
स्व १ व्या व्या स्व । न्यंप्रमान्यः
स्व भ्यंद्रकानीन मति। इवि
श्रीधत्याभी।।

শারধিঃ পু॰ তূণঃ। ইতি ছেম-চন্দ্রঃ।

শরপুথা স্ত্রী নীলীবৃক্ষাক্তভি-বৃক্ষবিশেষঃ। শরফোকা ইতি হিন্দীভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। কাণ্ডপুথা ২ বাণপুথা ৩ ইষুপুথিকা ৪ শাষকপুথা ৫ ইষুপুথা ৩। তদ্যা গুণাঃ। কটুত্বণ।
উষ্ণত্বণ। ক্ষমি বাত রুজাপহত্বণ
। শেতাষা গুণাঢ্যত্বক্ষ। ইতি
রাজনির্ঘন্টঃ।। অপি চ। শরপুথো যক্কৎ প্লীহ গুলা ত্রণ
বিষাপহঃ। তিক্তঃ কষায়ঃ কাদাসু জর শাসহরো লঘুঃ।।
ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। বাণস্যাপক্ষে পুণ।।

শরভঃ পু॰ মৃগেন্দ্রবিশেষঃ।

'ইত্যমরঃ।। তৎপর্য্যায়ঃ। মহামৃগঃ ২ মহাক্ষমী ৩ মহামনাঃ
৪ অফপাদঃ ৫ মহাসিংহঃ ৬
মনস্বী ৭ পর্বতাশ্রয়ঃ ৮। ইতি
রাজনির্ঘণটঃ ।। অস্য লক্ষণণ
যথা। অফপাদূর্দ্ধন্যন উর্দ্ধৃপাদচতুর্ফয়ঃ। সিংহণ হন্তঃ সমাযাতি শরভো বনগোচরঃ।।
ইতিমহাভারতণ।। য়ঃ।। করভঃ
।। বানরবিশেষঃ। ইতি মেদিনী।। উন্টুঃ। ইতি জটাধরঃ।।
শলভশ্চ।।

শরভূঃ পু॰ কার্ত্তিকেয়ঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। শ্রাডি

শরময়ণ ত্রি শরনির্মিত । যথা। শরময়বর্হিষা দশময়বর্হি র্বাধ-বং। ইতি স্মৃতিঃ।।

শরমলঃ পু॰ পক্ষিৰিশেষঃ। গো-সালিক্ ইতি ভাষা। ইতি শব্দ-

कालान् राउ जाना राउ
किला ।। वान्याका क ॥

শরষুः श्री नमीवित्ययः। ইতি

শর্যুঃ विक्षशटकायः॥ मञ्जानानि-

র্য॰ শব্দঃ। ইতি বহুসম্মতঃ ॥ শ্রলঃ ত্রি বিগীতঃ॥ স্বচ্ছস্দ-

सः ।। वृक्कविटमट्य पूर्। इंछि मा-

त्रयणिधान ॥ मख्यमानि त-

প্যয় মিতি বহুসম্মতঃ ॥

শরলক॰ ক্লী জলণ। ইতি শব্দ-

इिक्किश ॥

শর্বনোভবः পু॰ কার্ত্তিকেয়ঃ।

ইতি কেচিৎ ॥

শরবাণিঃ পু॰ শরমুখ•।। পদাতিঃ
।। শরজীবী। ইতি হেমচক্রঃ।।

শরব্য॰ क्वी हाकार। ইতামরঃ।।

শরদাতঃ পু॰ বাণাঘাতঃ। তৎ-

भर्यायः। श्रवाकः २। ইতি

क्रिवाश्वः ॥

শরাটিঃ ন্ত্রী শরালিপক্ষী। ইতি

শব্দরত্বাবলী।।

শরাডিঃ ন্ত্রী শরালিপকী। ইতি

শব্দরত্বাবলী।।

"तांद्रा"

শরাতিঃ স্ত্রী শরালিপক্ষী। ইত্য-মরটীকাযাণ রামাশ্রমঃ ।।

শরাভ্যাসঃ পু॰ বাণশিক। তৎ

भर्यायः । উপाসनः २। **ह**ळा-

यतः ॥ विकर्षण ७ भूतनी ८

শস্ত্রাভ্যাসঃ ৫। ইতি শব্দরত্না-

वनी॥

শরারিঃ পু॰ শরালিপক্ষী। তৎ-

পর্য্যায়ঃ। আটিঃ ২ আডিঃ ৩।

ইত্যমরঃ ॥ আডী ৪ শরাডী ৫

আডিকা ৬ শরালী ৭ শরালিঃ

৮ শরাটিঃ ৯ শরালিকা ১০।

ইতি শব্দরত্নাবলী।। অস্য খ্র-

नाः। शतना रुषः। त्रिक्षषः ।

मृक्षेमनवः। वृषावः। वाष त्रकः-

इतुष् । हिमप्तशः । ইতি রাজ-

वल्ला । अभि ह। इ॰म मात्रम

কাচাক্ষ বক ক্রেঞ্চ শরারিকাঃ

। नन्नीमुत्री नकामग्राः वनाका-

माः क्षवाः मृणः ॥ क्षवाः नि-

তহরাঃ শ্বিদ্ধা মধুরা গুরবো হি-

भाः। वाज्यसम्। काशि वन-

শুক্রকরাঃ সরাঃ ৷৷ ইতি ভাব-

প্রকাশঃ ৷৷

শরারুঃ ত্রি হি॰সুঃ।ইতামরঃ॥

শরারোপঃ পু॰ ধনুঃ। ইতি জটা-

ध्रुः ॥

শরালিং শরালিকা শরালী

ন্ত্রী শরারিপক্ষী। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

শরাবঃ পু॰ ক্লী মৃৎপাত্রবিশেষঃ।
শরা ইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ
। বর্জমানকঃ ২। ইত্যমরঃ।।
মার্ত্তিকঃ ৩ সরাবঃ ৪ শালাজিরণ ৫ পার্থিব॰ ৬ মৃৎকা॰স্য॰ ৭।
ইতি শব্দরত্বাবলী ।। স্বডবদ্বয়
পরিমাণ॰। তত্ত্ব চত্ত্বফিতোলকাত্মক॰। সের ইতি ভাষা।
তৎপর্যায়ঃ। মানিকা২। ইতি
শব্দমালা বৈদ্যকপরিভাষা চ।।
শরাবতী দ্রী নদ্দী বিশেষঃ। ইত্যমরঃ।।

শরাবার্দ্ধ ক্লী স্বডবপরিমাণ।
তত্ত্ব দাত্রিংশৎতোলকাত্মক ।
আধসের ইতি ভাষা। ইতি
বৈদ্যকপরিভাষা।

শরাশ্রযঃ পু॰ তুণঃ। ইতি ছেম-চন্দ্রঃ।

শরাসন কী ধনুঃ। ইত্যমরঃ।।
।রাস্য ক্লী ধনুঃ। যথা। চিচ্ছেদ তস্য তান্ বাণান্ শরাস্যঞ্চ মহামুনে। যুযুধাতেতিসংরক্ষী পরস্পর ববৈধিবণী।।
ইতি মার্কণ্ডেযপুরাণে জৈমিনি

খঙ পুরাণ পরিপূর্ণ ।।
শরিমা পু প্রসবং। ইতি দিন্ধা-তকে মুদ্যা মুণাদিবৃত্তিং।।
শরী দ্রী এরকাতৃণ । ইতিভা-

র। প্রা এরকাতৃণ ছোভভা-বপ্রকাশঃ।।

শরীর की শীর্য্যতে রোগাদিন। য়ৎ। তৎপর্য্যায়ঃ। কলেবরং ২ গাত্রণ ৩ বপুঃ ৪ সংস্থানণ ৫ वर्षा ७ विश्रहः १ काषः ৮ प्लरुः ৯ মূর্জিঃ ১০ তনুঃ ১১ তনুঃ ১২। ইত্যমরঃ॥ ক্ষেত্রণ ১৩ পুরণ ১৪ ঘনঃ ১৫ অঙ্গ ১৬ পিঞ ১৭ ৷ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ভূতাত্মা ১৮ ষগলোকেশঃ ১৯ ক্ষন্ধঃ ২০ প-ঞ্জরঃ২১ ঙ্গল॰২২ বল॰২৩ আ-ত্মা ২৪। ইতি জটাধরঃ ।। কন্ধ २८। इंडि मसत्रत्नावनी ॥ इन्मि-রাযতন॰ ২৬ ভূঃ ২৭ মূর্ত্তিৰৎ ২৮ করণ ২৯ বের ৩০ সঞ্জঃ ७) वस्रः ७२ भूमाल ७७। ইতি ट्मह्यः ॥ 🛊 ॥ नतीत्रधर्मानि যথা। শরীরে ভম্মসাদ্ভূতে প্র-তিবিষঃ স চাত্মনঃ। জীব স্ত-ত্রাস্তরীক্ষস্থ উবাচ বিনয়ণ বিভুণ ॥ জीव উবাচ। সদুক্তি बी कपू-ক্তি ৰ্ব। কোপঃ সম্ভোষ এব চ । লোভো মোহশ্চ কামশ্চ কুৎ-

निनामानिकक वट ॥ दिना कानीक नानक मृत्यामृत्याः म-यूक्तव । मर्बः भर्ती**तशर्यांश** नः कीवमा न ठाषानः ॥ मष् द्रक স্তম ইতি শরীর জিগুণাত্মক। তচ্চ নানাপ্রকারঞ্চ প্রবোধ ক-থ্যামি তে ৷৷ কিঞ্চিৎ সন্থাতি-तिक्रक किश्रिपान तिकाधिकः। তমোতিরিক্ত॰ কিঞ্চিচ্চ ন সম॰ अविज्ञात ॥ मञ्जालया ह यू-ক্তীচ্ছ। কর্মেচ্ছা চ রজোগুণাৎ । তমোগুণাজ্জীवहि॰मा काला। ২হন্ধার এব চ ৷৷ কোপাৎ কদুক্তি ৰ্নিযত॰ কদুক্ত্যা শত্ৰুতা ভবেৎ'। ত্যা চাপ্রিয়তা সদ্যঃ শত্রঃ কঃ কস্য ভূতলে ৷৷ কো বা প্ৰিযো **২প্রিয়ো বা কঃ কো মিত্রঃ কো** तिপু जू वि। ইন্দ্রিয়াণি চ জীবানি সৰ্বত্ৰ শত্ৰ মিত্ৰযোঃ।। ইতি ব্ৰহ্ম-বৈবর্ত্তে শ্রীক্ষফজন্মধ্যও ২৪ আ-भागः॥ ॥ अथ खी भू॰नरमः সর্বাঙ্গাণি পাদাগ্রাদি শিরঃ পর্য্য-স্তানি। প্রপদ ১ অজ্যুঃ ২ গুলুঃ ৩ গাম্পিঃ ৪ জঙ্ঘা ৫ জানু ৬ উরু ৭ বজ্ফণঃ ৮ কটিঃ ৯ ত্রিক ১০ নিতম্বঃ ১১ স্ফিক্ ১২ বস্তিঃ ১৩ উপহঃ ১৪ কম্পরণ ১৫ জঘনণ

১७ জर्रेत्र॰ ১१ नाजिः ১৮ विनिः ১৯ স্তনঃ ২০ চুচক ২১ ক্রোড ২২ রোম ২৩ কক্ষঃ ২৪ অণসঃ २६ वकः २७ मा २१ शार्षः ২৮ প্রপতঃ ২৯ স্পরঃ ৩০ হন্তঃ ৩১ প্রকোষ্ঠঃ ৩২ মণিবদ্ধঃ ৩৩ অঙ্গুলিঃ ৩৪ অঙ্গুঞ্চঃ ৩৫ করভঃ ৩৬ নখঃ ৩৭ গৰ্ম ৩৮ চগেটকঃ ৩৯ কণ্ঠঃ ৪০ শিরোধিঃ ৪১ শাক্র हर यूथ॰ ८० ७b: ८६ हिंदूक॰ EC र्नुः ४७ मृकः ४१ छ। लू ६৮ तमः 8> किस्ता ए॰ नामा ए३ काः ए२ গণ্ডঃ ৫৩ লোচন ৫৪ অপাক্ ৫৫ তারা ৫৩কর্ণঃ ৫৭ ভালঃ ৫৮ মস্তক ৫৯ কেশঃ ৬০ । কবিকল্পলতা ৷৷ 🏶 ৷৷ পরমেশ্র শরীরতো দেবানা মুৎপত্তি র্যথা । সর্বে: দেবাঃ সপিতরো ব্রহ্মাদ্য। *****ठाखमधार्गाः । वित्रवाः मका-শामू ९१ द्या दे छीय र देविन की का-তিঃ।। অগ্নি স্তথাশ্বিনৌ গৌরী গজবক্ত্রো ভুজঙ্গমঃ। কার্ত্তিকেয ন্তথাদিতো। মাতরো দুর্গযা সহ ।। দিশে। ধনপতি বিফ্ ধর্মো রু-দ্রঃ শশী তথা 1 পিতর স্চৈতি **স**ণ্-ভূতাঃ প্রাধান্যেন জগৎপতেঃ ।। হিরণ্যগর্ভস্য তনৌ সর্ব এব স-

মুক্তবাঃ। পৃথক্ পৃথক্ ততো গৰ্ব॰ वर्गानाः नमख्यः ॥ अर् (ग-গ্য স্তৃহু ৰাজ্য ইতি তেৰা প্ৰনো यहान्। आवर् ए एतम्पिटि ক্ষুদ্ধ সাগর সন্মিভঃ ॥ তেষাণ বি-वनयानाना॰ विक्र ऋथाय शार्थ-ৰ। উবাচ মা॰ যজস্বেতি ধ্যাযধ মা মিতি ক্রবন্।। প্রাজাপত্য মি-দ॰ নূন॰ শরীর॰ সন্ধিনা রুভ॰। বিনাশ মূপপদ্যেত যতো নাহণ মহানহ ।। এব মুক্তা শরী ত্যক্ত্ব। বহ্নি ধিনিৰ্যযৌ। নিৰ্গতে-পি তত স্তব্মিণ স্তচ্ছ্রীরণ ন শী-ৰ্যাতে ॥ ততো ংশিনো মূৰ্ত্তিম-স্ভৌ প্রাণাপান শরীরগৌ। আ-বা॰ প্রধানা বিভ্যেব মচতু র্যাজ্য-বভরৌ।। এব মুজ্বা শরীর ভৌ বিহায ক্ষচিদান্তিতৌ। তয়ে। রপি ক্ষয়ণ ক্ষা ক্ষীণণ তৎ পুর মান্থিতঃ ॥ তত শ্চৈবাত্রবীক্ষোরী প্রাধা-ন্য মপি সংস্থিত । সাপ্যেব মুক্ত্ৰা ক্ষেত্ৰাতু নিশ্চক্ৰাম বহিঃ শুভা।। ত্যা বিনাপি তৎ ক্ষেত্ৰণ বাগূনণ ব্যবতিষ্ঠতি। ততো গণপতি बी-का माकामारथा। श्ववीखमा ॥ ন ময়া রহিত॰ কিঞ্চিচ্ছরীরস্থোপি দূরতঃ। কালান্তরেত্যেব মুক্ত্ব।

मानि निष्या प्रश्वः॥ भृषत् ভূত স্তথাপ্যেতচ্ছরীর নাপ্যনী-নশৎ। বিনা সাংখ্যঞ্চ তত্ত্বেন ত-থাপি ন বিশীর্ঘতে॥ সুষিরৈ স্ত विश्रीन स मृष्ट्री (क्वा राजिस्ड॰ । শারীর ধাতবঃ সর্বে তে জ্রযু র্বা-ক্য মেব হি ॥ অস্মাভি ব্যতিরি-ক্তস্য ন শরীরস্য ধারণ । ভবতী-ত্যেব মুক্ত্বা তে জহুঃ সৰ্বে শরী-রিণঃ ॥ তৈ ব্যপেত মপি কেত্রণ পুরুষেণ প্রপাল্যতে। তদ্দু । খ-ব্রবীৎ স্কন্মঃ সোহন্ধারঃ প্রকী-र्खिङः ॥ यश विना भन्नीतमा म-ন্তুতি রপি নেযাতে। এব নুজুা শরীরাত্ব সোব্যপেতঃ পৃথক্ স্থি-তঃ ৷৷ তেনাক্ষতেন তৎ কেৱ[°] विना मूक्जवमाञ्चिष् । जमृक्री ঙ্গণিতো ভানুঃ স আদিত্যঃ প্র-কীৰ্ত্তিতঃ ৷৷ মুখা বিনা কথণ ক্ষেত্ৰ মিন' কণ মপীষ্যতে। এব মুক্ত্বা-থ যাতঃ দ তচ্ছরীর ন শীর্যতে ११ ७७: कामामि ऋथाय गटना मा-. তৃকস ' ब्रिडः । न मशा वा जिति-জ্ঞা শরীরদা ব্যবস্থিতিঃ। এব মুক্তা স যাতন্ত শরীর তন্ন শী-ষ্যতে ॥ ততো মাষাত্ৰবীৎ কো-পাৎ সাচ দুর্গা প্রকীর্ত্তিতা। ন ম-

ষাস্য বিনা ভূতি রিত্যুক্তান্তর্দধে 🏻 পুনঃ।। ততো দিশঃ সমুতস্থু বাচ্-শৈচৰ বচো মহৎ। নাম্মাভী র-হিত কাষ ভবতীতি ন সংশ্যঃ॥ চতসু আগতাঃ কাণ্ঠা অপযাতাঃ ক্ষণাত্তদা। ততো ধনপতি ৰাষু র্মধ্যে তৎ পক্ত সম্ভবঃ ॥ শরীর-স্যেতি সোপ্যেব মুজ্বা মূদ্ধান-গো ২ভবৎ। ততো বিক্ষো মনো জ্বৰাৎ নাৰ দেহো মৰা বিনা !! ক্ষণ মপ্যুৎসহে স্থাতু মিত্যুজ্বান্ত-र्मस्य भूनः। ততো ধর্মো श्ववीष मर्व बिष° शालिखवां नर्° ॥ ই-मानी ययाभगरा कथरमञ्ज्ञित-ষ্যতি। এব মুজুা গতে ধর্মে তচ্ছ-রীর ন শীর্যতে ।। ততে। ২ববী-শ্বহাদেব অব্যক্তো ভূতনাযকঃ। यह ६ म १ एक। यश होन १ महीत নো ভবেদ্বধা।। এব মুক্ত্বা গতঃ শস্তু স্তচ্ছরীর ন শীর্যতে। তদ্-ম্বা পিতর শ্চোচু স্তন্মাত্রা যাবদ-স্মভিঃ ।। প্রাণান্তরেভি রেভশ্চ শরীর শীর্যাতে গ্রুব ৷ এব মৃক্তা **जू उ॰ দেহ॰** जाङ्गास्त्रकान माग-তাঃ।। অগ্নিঃ প্রাণো অপানশ্চ আকাশক্ষৈব ধাতবঃ। ক্ষেত্র॰ ত-**६५२** कारता जानुः कामान्दरा

यया ॥ काश्री वायू विकृ धटमी শস্তু শৈচবেন্দ্রিযার্থকাঃ ৷ এতৈ শ্মু-ক্তম্ভ তৎক্ষেত্ৰণ মুক্তাবিব সূসণ-স্থিত ।। সোমেন পাল্যমানম্ভ পু-ৰুষেণেন্দু ৰূপিণা। এবং ব্যবস্থিতে সোমে বোডশাত্মন্যথাক্ষরে ॥ প্রাথতত্ত গুণোপেত ক্ষেত্র মুখাষ যন্তবেৎ। প্রাগবস্থণ শরীরম্ব দৃষ্ট্রা সৰ্বজ্ঞপালিত ৷ তাঃ ক্ষেত্ৰদেব-তাঃ সৰ্বা বৈলক্ষ্য ভাব মাঞ্ৰিতাঃ ।। ত মেব তুফুবুঃ সর্বা স্ত দেব । পরমেশ্বর । ইতি বারাহে মহা-তপোপাখ্যান নামাধ্যায়ঃ।। 🛊 🛚 ।। শরীরায়॰ यथा । শরীর মাপঃ সোমশ্চ বিবিধণ চান্ন মুচ্যতে। প্রাণো ছগ্নি স্তথাদিত্য স্ত্রিভো-ক্তা একএব তু ।। ইতি গাৰুডে २३৫ व्यक्षायः ॥ 🛊 ॥ यानम का-যিক ক্লেশসাধ্য ব্রতণ যথা। ধর-ণ্যুবাচ। কথ মারাধ্যসে দেব ভ-ক্তিমন্ডি নঁ রৈ বিভো। স্ত্রীভি র্বা সৰ্ব মেতম্মে শৃংস ত্বণ ভূতভাবন ॥ বারাহ উবাচ। ভাবসাধ্য স্তুহ• **मिति न विरेख ने किला तर्?।** मी-ধ্য স্তথাপি ভূতানা॰ কাষক্লেশ॰ বদামি তে ৷৷ কৰ্মণা মনসা বাচা ষচ্চিত্তে। যে। নরে। ভবেৎ। ভদ্য

ব্রতানি বক্ষ্যেহণ বিবিধানি নি-বোধ মে ।। অহিণ্দা সত্য মস্তে-যণ ব্রহ্মচর্য্য মকল্কতা । এতানি মানসান্যান্থ ব্রতানি তু ধরাধ-রে ।। একভক্তণ তথা নক্ত মুপ-বাসাদিকঞ্চ যৎ । তৎ সর্বণ কা-যিকণ পুণসাণ ব্রতণ ভবতি না-ন্যথা ।। ইতি বারাহে সত্যত-পোপাখ্যান নামাধ্যায়ঃ।।

শরীরজঃ পুণ রোগঃ ।। কামদেবঃ

।। পুত্রঃ । ইতি ধরনিঃ ।। দেহজাতে ত্রি । যথা । শরীরজৈঃ
কর্মদোধৈ হাতি স্থাবরতাণ নরঃ

। বাচিকৈঃ পক্ষি মৃগতাণ মানদৈ রম্ভ্যজাতিতাণ ।। ইতি প্রাষশ্চিত্ততত্ত্বণ ।।

শরীরসংস্কারঃ পু॰ দেহসংস্কার-কর্ম্ম। শরীরস্য শোভন॰ মার্জ-নঞ্চ।।

শরীরাবরণ ক্লী চর্মা। ইতিরাজ-নির্ঘন্টঃ।। কাষবেষ্টনঞ্চ।।

শরীরী পু॰ শরীরবিশিষ্টঃ। তৎ
পর্য্যায়ঃ। ভবোদ্তবৌ চ প্রাণী
তু শরীরি জন্য জন্তবঃ। প্রাণভূচ্চেতনে। জন্মী চিত্তম্ব হৃদ্যথ
মনঃ। ইতি জটাধরঃ।। শরীরি লক্ষণ যথা। গর্ভাশ্যগতণ

खक गार्डवः कीव मः छकः। প্রকৃতিঃ সবিকারা চ তৎ সর্বণ গর্ভস**ুক্তক**া৷ কালেন বন্ধি-তে৷ গর্ভে৷ যদ্যকোপাক্ত সংযুতঃ । ভবেত্তদা স মুনিভিঃ শরীরীতি নিগদ্যতে ॥ অঙ্গোপাঙ্গ সংযুতঃ ব্যক্তাঙ্গোপাসঃ ৷৷ তম্য স্বন্ধান্য-পাঙ্গানি জ্ঞাত্বা সূঞ্রত শাস্ত্রতঃ। মস্তকাদভিধীষম্ভে শিষ্যাঃ শৃগুত ষত্নতঃ।। আদ্য মঙ্গ শিরঃ প্রো-ক্তণ তদুপাঙ্গানি সম্ভলাঃ। তদ্যা-ख मंखनुष्म क नना दे आयू ग॰ ७१। ৷ানেত্ৰদ্বৰ তথে৷ রস্ত ৰ্বৰ্ত্তে দ্বে-क्नीनित्क । मृश्विषय क्रकाना-লৌ শ্বেভভাগৌ চ বর্গনি।। প-স্থাণ্যপাঙ্গে শঙ্খো চ কণো তচ্ছ-क्नुनीष्ठयः। शानिष्ठयः करशारनी চ নাদিকা চ প্রকীর্ত্তিতা।। ওষ্ঠা-श्रतो ह मृक्ष्णो मूथ जानू इन्-ष्य । म्खान्ठ म्खर्वकीन्ठ त्रम् ন। চিব্ক॰ গলঃ ।। দ্বিভীয় মঞ্চ ত্রীবা তু যথা মূদ্ধা বিধার্য্যতে ৷ তৃতীয় বাছ্যুগল তদুপাঙ্গান্য-থো ক্রবে ।। তদ্যোপরি মতৌ ক্ষন্ধো প্রগঞ্জে ভবত স্তৃধঃ। ক-কোণিযুগ্মণ তদধঃ প্রকোষ্ঠযুগ-नः जया।। मनिवस्त्री जल शर्खी

তযোশ্চাঙ্গুলযোদশ। নথাশ্চ দ-শ তে স্থাপ্যা দশচ্ছেদ্যাঃ প্রকী-র্ত্তিতাঃ ৷৷ চতুর্থ মঙ্গ বক্ষস্ত তদু-পাদান্যথ ক্রবে। স্তনৌ পু॰স স্তথা নাৰ্য্যা বিশেষ উভযো রয়ং १। योवनागमतन नार्याः शीवत्रो ভবত স্তনৌ । গর্ভবত্যাঃ প্রসূ-তাযা স্তাবেতৌ ক্ষীরপূরিতৌ ।। क्रमयः পুखतीत्कन ममृभे महाम-ধোমুখণ। জাগ্ৰত স্তদ্বিকসতি স্ব-পতস্ত নিমীলতি।। আশ্য স্তত্ত্ব জীবসা চেতনাস্থান মুত্তম¹ অত স্তশ্মিণ স্তমো ব্যাপ্তে প্রাণি-নঃ প্রস্বপম্ভি হি ৷৷ চেতনাস্থান মুত্তম মিতি অয মভিপ্রাযঃ ॥ চেতনানা যধিষ্ঠান মনো দেহ-শ্চ সেন্সিযঃ। কেশ লোম নথা-প্রান্ত র্মলণ দ্রব্যগুণে র্বিনা ॥ ই-ত্যুক্তবতা চরকেণ সকলং শরীরং চেতনা স্থান মুক্তণ তদপেক্ষয়া হৃদয° বিশেষত শেচতনাবস্থান নিতি ৷৷ কক্ষযো ৰ্বক্ষসোঃ সন্ধী জত্রণী সমুদাহতে। কক্ষে উভে সমাখ্যাতে তযোঃ স্যাতাঞ্চ বং-ক্ষণৌ ৷৷ উদর পঞ্চম ভাগ ষষ্ঠ ু পार्श्वचर गठः। मशृष्ठेवः मः शृ-श्रेष्ठ मनख॰ मखन॰ ग्राज॰ ॥ 🟶 ॥

উপাঙ্গানি চ কথ্যন্তে তানি জা-নীহি যত্নতঃ।। শোণিতাজ্জাযতে প্লীহ। বামতো হৃদযাদধঃ। রক্ত-বাহি শিরাণা সমূল খ্যাতো **गर्श्विः ॥ श्रम्यादाग्र**ाध्य ফুপ্ফুসো রক্তফেণজঃ । অধো **দ**क्षिণত कालि श्रमगालक्टः স্থিতিঃ ॥ ততু রঞ্জক পিত্তস্য স্থান॰ শোণিতজ॰ মতং। অধক্ষ দক্ষিণে ভাগে হদযাৎ ক্লোন ডি-ষ্ঠিতি।। জলবাহি শিরা মূল তৃকা চ্ছাদনক্ষ্ত । ক্লোম ভিলকণ এতজু বাতরক্তজ । ভ ত্রাহ চ वृक्षवाग्छिः। इक्जान्निन मः-युक्रां कालीयक ममुख्य देखि। মেদঃ শোণিতযোঃ সারাদুরুযো র্যাল ভবেৎ।। তৌ তু পুরীক-রৌ প্রোক্তৌ জঠরস্থদ্য মেদদঃ। উক্তাঃ সাদ্ধা স্ত্রযো ব্যামাঃ পুণ্সা মম্ভাণি সূরিভিঃ ॥ অর্দ্ধব্যাদেন शैनानि यािष्ठाञ्जानि निर्मि-শেৎ। উঞ্চশ্চ কটী চাপি ত্রিকণ বস্তিশ্চ বংশ্বদেশী ।৷ কণ্ডরাণাণ প্র-রোহঃ म्यारमणुं। वीर्या मृज-যোঃ। স এব গর্ভস্যাধান স্ব্যা-**দা**ৰ্ভাশযে দ্ৰিযাঃ।। শঙ্খনাভ্যা-ৰুতি ৰ্যোনি স্ত্ৰ্যাবৰ্ত। সা চ কী-

ৰ্ত্তিতা।তস্যা স্তৃতীষে ত্বাবর্ত্তে গ-ভশয্যা প্রতিষ্ঠিতা ।। বৃষণৌ ভ-বতঃ সারাৎ কফাস্গ্রাণ্স মেদ-সা । বীর্য্যবাহি শিরাধারৌ তৌ मठो পৌक्रमावरहो ॥ धनमा यान भईमा भई माफजूतक्-नः। তত্র স্যু ईলয স্তিসুঃ শঞ্চ-वर्त्तनि ।। अवाहिनी ভবেৎ পূৰ্বা সাৰ্দ্ধাঙ্গুলমিতা ম-ত।। উৎসজ্জিনী তু छमधः मा সাদ্ধাঙ্গুল সন্মিতা।। তস্যা অ-धः मध्रनी मारिकाञ्चल म-मिञा। अक्षाञ्चल अभागः वृदेध র্ডদমুখ মত।।। মলোৎসর্গস্য गार्थाय॰ পायू प्लंटर विनिर्विज्ञः । পু॰मঃ প্রোথৌ স্মৃতৌ যৌ তু তৌ নিতম্বে চ যোষিতঃ।। ত-যোঃ সঙ্গলরে স্যাতা শক্থি-নী স্বন্ধ ৰফ্য-। তদুপাঙ্গানি চ। कारमा जानूनी शिखिका दरः॥ জজ্বে দ্বে ঘূটিকে পাফী তলে চ প্রপদে তথা। পাদাবঙ্গুলয স্তত্ত দশ তাসা নখা দশ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥

শরঃ পু॰ ক্রোখঃ।। বজু॰। ইতি মেদিনী।। বাণঃ। ইতি হেন-চন্দ্রঃ।। আযুধ॰। ইতি সিদ্ধাস্ত- को मूमा मूना मिन् खिः ॥

गत्तकः श्रू॰ जामुः। ইতি জটাधतः ॥

गर्ततकः श्रू॰ मधूत क्षीतः। ইতি

রাজনির্ঘন্টঃ ।। শর্করজা স্ত্রী সিতাখণ্ডঃ ৷ ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।।

नक्ता जी थखरिक्रिकिः। िनी ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। নিতা ২। ইত্যমরঃ ॥ শুক্লোপলা ৩ শুক্লা ৪ সিভোপলা ৫। ইতি রত্নমালা।। মীনাঞ্চী ৬ শ্বেতা ় মৎস্যান্তিক। ৮ অহিচ্ছত্র। ১ সুসিকতা ১০ গুডোন্ডবা ১১। অস্যা গুণাঃ। মধুরস্বং।শীতত্বং । পিত্ত দাহ শ্রম রক্তদোষ ভা-ন্তি ক্রমিকোপ নাশিত্বঞ্চ। ইতি সাধারণ শর্করা গুণাঃ।। 🕸।। অথ শর্করাবিশেষ গুণাঃ। স্নি-শ্বা পুণ্ডুক শর্করা হিতকরী ক্ষী-ণে ক্ষয়ে ংরোচকে চক্ষুষ্যা ব-লবৰ্দ্ধনী সুমধুরা ৰক্ষা চ বং-শেক্ষা। ব্যা তৃপ্তি বলপ্রদা শ্রমহরা শ্যামেক্ষুজা শীতলা নিঞ্চা কান্তিকরী রসাল জনি-তা রক্তেক্ষুজা পিত্তজিৎ ৷৷ ইত্তি পঞ্চেকুশর্করা গুণাঃ ॥ 🟶 ॥ সা-

বনালী হিমোৎপন্না হিমালী হি-মশর্করা। ক্ষুদ্রশর্করিকা ক্ষুদ্রা **७७**का जनविन्मुका ॥ श्रिमका শর্করা গৌল্যা সোক্তা তিক্তাতি-পিচ্ছিলা। বাতমী সারিকা রুচ্যা **मार शिखा**नु मारिनी ॥ रेडि यादनालगर्दता छनाः ॥ 🟶 ॥ শীতজান্যা কর্করজা মাধৰী ম-ধুশর্করা। মাক্ষিকা শর্করা প্রো-ক্তা সিতাখণ্ডশ্চ খণ্ডকঃ ৷৷ সিতা-খণ্ডোতিমধুর শ্চক্ষষ্য শ্চর্দ্দিনা-শুনঃ। জন্ঠ ত্রণ কফ শ্বাস হিকা পিত্তাসু দোষনু ।। য্যাসশর্ক-त्र। बना। मुधारमामक स्मामकः । তবরাজঃ খণ্ডসারঃ খণ্ডজা খণ্ড-भाषकः ॥ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ # 11 অপি চ। মৎস্যন্তিকাঃ খ-ঙ্গিতা গুণ শ্রেষ্ঠা যথোত্তর । বিমলাঃ শীতলাঃ মিশ্বা গুৰ্বাঃ यानुब्ताः मताः ॥ व्या स्या ক্ষত ক্ষীণ রক্তপিত্রানিলাপহাঃ। न भाषी आहिनी वन्ता क्याया বাতজিলাুরুঃ ॥ খণ্ড॰ গুরু সর্নণ রুচ্য বাতম বল পুষ্টিদ । সি-তোপলা সরা গুৰী বাতমী ন কফপ্রদা ॥ ইতি পথ্যাপথ্যবি-বেকঃ ।। ৠ ।। অন্যচ্চ । শর্করা

জ্ব শিত্তাসৃক্ মূচ্ছা ছদি তৃষা-পহা। তৃফাম স্তবরাজস্ত স্বর माश्रमु थिखनू ।। निमका का-ণিত গুড খণ্ড মৎস্যাণ্ডিকা সিতাঃ । নিৰ্ম্মলা লম্ববো জ্ঞেষাঃ সীত-বীর্য্যা যথোত্তর ।। যথা যথৈষা বৈমল্যু ভবেচ্ছৈত্যু তথা তথা । ইতি রাজবন্ধভঃ ॥ 🟶 ॥ কিঞ্চ। খণ্ডস্ত সিকতাৰূপণ সুশ্বেতণ শ-র্করা সিতা। সিতা সূমধুরা রুচ্যা বাত পিত্তাসু দাইজিৎ।। মূচ্ছা ছর্দি দ্বরান্ হস্তি সুসীতা শুক্র-কারিণী। #। ভবেশ্বধুসিতা সী-তা রক্তপিত্তহরী লযুঃ। সিতো-পলা मता लघुी वाठ পিতৃহ্রী शिया।। 🟶 ।। यथुका भक्ता कका কফ পিত্তহরী গুরুঃ । ছর্দ্যতী-সার তৃড্ দাছ রক্তক্তবুরা হিমা 11 यथा यटेथवा॰ टेनर्यानाउ॰ मध-রত্ব° তথা তথা । সেহ লাঘব শৈত্যানি রসত্বঞ্চ তথা তথা ৷৷ ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ 🗱॥ উপলা ।। কর্পরা॰শঃ।। শর্করান্বিতদেশঃ ।। রোগভেদঃ।। শকল । ইতি यिनिनी॥ भक्ता द्वागमा नि-**मान ठिकि** थ्यामि यू बङ्गास्य দ্রফব্যঃ ॥

नर्कताठनः भू॰ मानार्थक्विय-नक्तायराज्यवित्नवः । अगा বিবরণ পর্বতশব্দে জফীবাণ ৷৷ भर्कतारधनुः <u>खी</u> मानार्थभर्कद्रा-নিৰ্মিতধেনুঃ। তদিধি বঁথা। হৈতোবাচ। তৰৎস শৰ্ক-রাধেনু॰ শৃণু রাজন্ ষথার্থতঃ। व्यन् नित्थ मशैश्रुष्ठ क्रका किन क्रमाख्दत ॥ (धन्॰ भक्तरा রাজন্ রূম্বা ভারচতুষ্ট্য উ-ন্তমা কথ্যতে সন্তি শচতুর্থাণ-শেন বৎসক। তদৰ্দ্ধ মধ্যমা প্রোক্তা কনিষ্ঠা ভারকেণ তু ॥ তদ্বৎ বৎসং প্ৰদৰীত চতুৰ্ধাণ-**ભেন তত্ত্বতঃ । অथ कर्याामर्खे-**শতৈ ৰূৰ্দু॰ নৃপতিসত্তম ॥ স্ব শক্ত্যা কারবেদ্ধেনু যথাত্মান ন পীড়েবেৎ। সর্ব বীজানি সং-ञ्चाला ठजुर्निक् ममञ्जू ॥ সৌবর্ণমুখ শৃঙ্গাণি মৌক্তিকা नयत्न ७था। श्वरफन जू मूथ॰ কাৰ্য্য জিহ্বা পিফম্বী তথা।। কম্বলণ পটসূত্রেণ কণ্ঠাভরণ ভূ-ষিত । ইক্পাদা রৌপ্যখুরা नवनी छ यस्छ नी ।। अनु छ शब শ্রবণাণ সিতচামর ভূষিতা। পঞ্রত্ন সমাযুক্তাণ বস্ত্রে রাচ্ছা-

षिठा॰ **उथा ॥ गन्न** शूटेन तन॰-ক্লত্য বান্ধণায় স্বটুম্বিনে। শ্রো-वियाय मतिजाय माधुवृछाय धी-মতে।। বেদ বেদাঙ্গ বিদুম্বে তা।-शिठादभ विंदिगयठः । जानूकीय প্রদাতব্যা ন তু সৎসরিণে নৃপ।। অষনে বিষুবে পুণ্যে ব্যতীপাতে मिक्टिय। अयू भूरगियू कारनियू यमृष्ट्या वा ममार्भरय ।। मर्भा-ত্রস্ত দিজ দৃষ্ট্বা আগত শ্রোত্রি-यः गृद्ध । जामृगाय अमाजवा। **পুচ্চদেশে** विगृश ह ॥ পূर्वाङि मूथ माञ्चाय जाश वा म छेमजा थः। গাণ পূৰ্বাভিমুখীণ ক্লন্বা বৎস মু-ত্তরতো ন্যসেৎ॥ দানকালে তৃ रि मञ्जा खान् शठिषा ममर्भराष । সংপূজ্য বিধিবদ্বিপ্রণ মুদ্রিকা ক-र्गज्यरेनः ॥ ऋर्गक्ता पक्षिणः प-ত্বা বিত্তশাঠ্য বিবর্জিতঃ । হস্তে जू निक्न । पद्म शक्त भून्य अठन नाः ॥ (धन्ः ममर्गदयखमा मूर्यकः नः विलाकरयः । এकाइः भर्कः রাহারো ত্রান্ধণ স্ত্রিদিন বসেৎ ৷৷ সৰ্বপাপহরা ধেনুঃ সৰ্বকামপ্ৰ-निषिनी। সর্বকাম সমৃদ্ধস্ত জা-यटा नाज मण्याः ॥ भीषमानाः প্রসংশন্তি তে যান্তি পরমাণগতিণ

1 य रेम॰ मृन्याङ्का नठेट वाणि यानवः ॥ यूह्यद्व नर्दणा-পেভাে বিকুলোক সমস্ভি १ के बाबादर नक्बारमूना-राज्यानावावावः॥ नक्राध्य जी जिनाना नत्रक-বিশেষঃ। যথা। রত্ন শর্করা বা-লুকা পদ ধূম তম প্রভা। মহা-তমপ্রভাবেত্যখোধো নরক ভূ-यदः ॥ ইভি ट्याट्यः ॥ भर्कद्रावान् बि कर्भद्रा भवश्वाप-শঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। শর্করা ২ শর্ক-রিলঃ ৩ শার্করঃ ৪। ইত্যমুক্ত १। गर्कतामश्रमी खी देगाशीश्रका-मश्रमी । তত্ত ব্ৰতবিধি ৰ্যথা । ঈশ্বর উবাচ । **শর্করাসপ্তমী**ণ 🛭 বক্ষ্যে তদ্বৎ কল্মৰ নাশিনী ! আযু রারোগ্য বৈশ্বর্য্য যথান-ন্ত॰ প্ৰজাৰতে ॥ মাধবদ্য দি-তে পক্ষে সপ্তম্যাণ শুক্লপক্ষতঃ 1 প্রাতঃমাদ্বা তিলৈঃ শুক্লৈঃ শুক্ল यानागन्त्वशरेनः ॥ ऋषित्न श-ग्र माजिथा अकुरमन मकर्निकः। তব্যৈ নমঃ সবিত্তে তু গদ্ধপুষ্ণ निद्यम् ।। श्राभारयपूषअञ्च শর্করাপাত্র সংযুত্ত। শুক্লবস্ত্রৈ-तल क्रा एकमानान्ति श्रे

श সুवर्गीय मशायूकि यखिणातन मुक्रावर । विश्वातमभाषा रामार दिनवानीि गठाए ॥ इत्यवामृ-ত সৰ্বস্ব মতঃ কান্তিণ প্ৰস্তুছ মে । গঞ্গবাণ ভতঃ পীত্বা স্বপেত্তৎ পার্শ্বতঃ ক্বিতৌ।। সৌরসূক্তণ স্ম-রন্নান্তে পুরাণ এবণেন চ। অহো-ক্লাত্তে গশ্চাৎ অফম্যা ক্ল-**ত**निजिकः॥ ७९म**र्ब**॰ खमितिषू-বে বান্ধণায নিবেদৰেৎ ভোজ-বেচ্ছক্তিতো বিপ্রান্ শর্করা মৃত शायरमः ॥ जूक्षीजारेजन नवन॰ वर मभाय वाश्व । जत्मन वि-ধিনা সর্বণ মাসি মাসি সমাচরেৎ 11 मन्द्रभ्रताट्ख भयन॰ भर्कत्रा কলসান্বিত । সর্বোপস্কর সংযু-ক্ত॰ ভবৈথকা॰ গা॰ পয়স্বিনী॰॥ গৃহঞ্চ শক্তিতো দদ্যাৎ সমস্তো-পস্করান্বিত । সহস্রেণাথ নিষ্কা-শ' ক্সবা দদ্যাৎ শতেন বা ।। দ-শভি ৰাথ নিষ্কাণা তদৰ্জেনাথ শক্তিত্য সুবর্ণাশ্বঃ প্রদাতব্যঃ পূ-ৰ্ববমন্ত্ৰ বাচন ।। বিত্তশাঠ্য ন अवी o अर्बन् (माय॰ সমশ্रूত । অমৃত পিৰতো বক্তাৎ সূৰ্য্যস্যা-मृত विन्मवः ॥ नित्भिज् यं जमू-थानी गानि मूरकाकवः सृठाः।

भक्ता भत्र उन्मामिक्माद्रा २-भणाश्वरः।। देखे। ब्रद्ध ब्रुष्टः भूगा नक्त्रा ह्वा क्यारवाः। नक्त्रा-मश्रमी देश गाजरभय कराश्रमा ॥ तर्बमुः त्याणमानी श्व गरु-छि कर्कनी । यह अर्याप्य शत्रया ভক্তা সপর বন্ধ গছতি ৷৷ কর মেক ব্দেৎসর্গে ততো যাতি सर्थ भार । देस मनमः भृत्यो-**छि यः ऋदत्रहा शत्रिशठेडी रे मि-**ৰাকরস্য লোকে। মতি মপি চ **ममाजि मािल देमदेव त्रमत वधु-**মাৎস্যে ৭২ অধ্যায়ঃ।।

শার্করিকঃ ত্রি কর্করাবান্। ইতি निका उको मूमी ॥ শর্করিলঃ ত্রি শর্করাবান্। ইভ্য-यतः ॥

गर्वती जी इत्मावित्यवः ॥ नि ।। त्यथना । इंडि इस्ति-খিত মেদিনী।। লেখনী। ইতি श्रतिः॥ मूजाकि जामिनी दि-भहत्वरयाः द्रिक भूना वि ककात यथा शार्ठः ॥ व्यमा विवत्न भ-ৰূরীশব্দে দ্রষ্টব্য ॥

শर्करतामक॰ क्री শर्कतायुङ्क-वः। চिनित्रभाना इंछि भत्रवद

ইতি চ ভাষা। যথা। জলেন শীতলেনৈৰ ষোলিতা শুভূ শ-क्रा। अला खदक क्रा त्र मन्नि-किन्छ नमिष्ठा १। नर्वेद्वाहक नारमण्य अनिकः विष्याः मूर्य ৷ শৰ্করোদক মাখ্যাত শুক্রলণ मिभिद्रः मद्रः ॥ वनाः क्राः नयू স্বাদু বাছ পিত্তাসু নাশন। মূ-क्टा इपि ज्या कार खत गास्त्रि কর॰ পর॰।। ইতিভাবপ্রকাশঃ॥ मकः भू जनात्ना एमर्गः। मृध খাঁতো ৰ্যঞ্জ প্রত্যযেননিষ্ণন্নঃ॥ জন यानया ह शृकाः ॥ श्रेडि "मक् जरुः भू यायः। यथा। भ-আর্দ্রত জহাতি ইতি শর্দ্ধণ ৰ্জহো মাষঃ। ইতি মুগ্ধবোধব্যা-क्त्रव विकासाः पूर्णीकामः ॥ नर्कन॰ क्री अरक्षावायुः। वाज-কৰ্ম ইতি ভাষা। ইতি মনু টী-কাষাণ সল্লুকভটঃ ৷৷ শৰ্ব হিংসে।। গতৌ। ইভি কবি-. कब्रक्षकः ॥ भईति। ইति मूर्गमः मानः ॥ न्या की मूच । हेजामतः ॥ তদ্বতি ত্রি॥ नर्मां श्रू द्वाक्षयत्माशिवि-

लायः। यथा। नार्यप्रद्यां निदक

কার্য্যণ শর্মা তর্পণ কর্মাণ। শ-

पख सकस्था **अर्थाह्यकार**नस्था-ब मश्य नामानि शिवृशाः शति-কৰ্ম মিড্যেকৰাক্যভ্যা শৰ্মা-ন্ত॰ নাম প্রতীবতে। তথাচ বি-स्प्राण। ठठक नाम स्वी ठ **भिटेंछव म्भट**मङ्गि । एक भूर्बः नवाशः हि नर्या वर्यामि मःयुरु १। प्रवाद शूर्बः नद्राशः नद्रनाम তচ্চ বিশিক্ত শর্মযুক্ত। একচ্চ বিপ্রপর । শর্মা দেব শ্ট বিপ্রস্য বৰ্ষ ত্ৰাতা চ ভূভুজঃ। ভূতি দ-खन्ठ देवनामा मामः नृषमा क्।-त्रत्य ।। इंछि यमकानो । खाज ठकादान एनव नर्मारगाः ममूक ষঃ। অত্তাপি শৰ্মাদ্যন্ততা মাহ-শাভাতপঃ । শর্মান্ত বান্ধণস্য-স্যাৰশ্বান্ত ক্ষত্ৰিষ্দ্য চধনান্ত-ক্ষৈব বৈশাস্য দাসাম্ভ চান্ত্য-क्यानः ॥ देखि आद्वाख्यः ॥ শর্মারঃ পু• বস্ত্রভেদঃ। ইতি श्रव्या শর্মারা ত্রী माङ्गर्तिषा । रेजि धर्त्रानः ॥

শৰ্ষ্যা স্ত্ৰী রাত্রিঃ। যথা। ত্রিষা-মা শৰ্বরী শর্ষ্যা ক্ষয়ণী ক্ষণদা ক্ষপা।ইতিভরতধৃত বাচস্পতিঃ

मंत्रि १ क्या कात्व ह निज्योः व्याधिः भू देवववण्यन् भूकः ।

प्रवाद भक्षा वाद्या ह निज्योः व्याधिः भू व्याधिः । व्याधिः भू व्याधिः । व्याधिः । व्याधिः भू व्याधिः । व्याधिः । व्याधिः भू व्याधिः भू व्याधिः । व्याधिः । व्याधिः भू व्याधिः । व्याधिः भू व्याधिः भू व्याधिः । व्याधिः

শई हि॰टम। ইতি কবিকল্প জনঃ।।
শईত। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
শईः পু॰ শিবঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ
।। ক্ষিতিমূর্ত্তি রয়॰। যথা। বিসজ্ঞান পূর্বণ ভবিষ্য পুরাণোক্তণ
সভাব সিদ্ধ প্রাচ্চ্যশান্যাদি
দিক্ষু বামাবর্ত্তেন পূজনং। যথা
। সর্বায ক্ষিতিমূর্ত্ত্বে নম ইত্যাদি ভিথ্যাদিতত্ত্বং।। দন্ত্যসাদি রপ্যয়ণ।। বিষ্ণুঃ। যথা শর্বঃ
সর্বঃ শিবঃ স্থাণু ভূতাদি নিধিরব্যয়ঃ। ইতি তস্যসহসুনামস্থোত্তং।।

শর্বরণ ক্লী তমং ।। কন্দর্পাং । ইতি
সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ ।।
শর্বরী স্ত্রী রাত্রিঃ । ইত্যমরঃ ।।
যোষিৎ । ইতি মেদিনী ।। হরিজা । ইতি বিশ্বঃ ।। সন্ধ্যা । ইতি
সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ ।।

পর্বলা ত্রী তোমরান্ত্রণ ইত্য-মরচীকাবা রাক্মুক্ত ।। দন্ত্য-সাদি রপ্যফ ।১

শর্বাণী স্ত্রী পার্বতী। ইতি হেমচক্রঃ। দন্তাসাদি রূপ্যয়ণ শব্দঃ
শর্শরীকঃ পুণ হিংসুঃ।। খলঃ।
ইত্যুণাদিকোষঃ।। অপ্রঃ।। মকলাভরণণ।। অগ্রিঃ। ইতিসংকিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ।।

শল ও চলনে ।। স্তৃতৌ । ইতি কবিকল্পক্রমঃ ।। ও শলতে । চ-লনং কম্পঃ। স্তৃতি ব্লিহ্ন সংবরণং । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

শन জ गछो। ইতি কবিকন্প-जन्मः ॥ জ শাनः শनः । ইতি দুর্গাদাসः ॥

শল ওক শ্লাঘে। ইতি কবিকল্প-দ্রুগান ও শাল্যতে পণ্ডিত॰ ধীরঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।

শল বেগে। ইতি কবিকল্পদ্রুম্খ।। শলতি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শল° ক্লী শলকীলোন। সজাকুকাটা ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যাযঃ।শললী ২ শললং ৩। ইত্যামরঃ ॥

শলঃ পু॰ শললে।। ভূঙ্গী।। কে-ত্ৰভেদঃ।। ত্ৰহ্মা। ইতি মেদিনী শব্দরন্থাবলো ।। বভাক্ত । ইতি ত্রিকাওশেষঃ ।। উঠ্টুঃ । ইতি হেমচন্দ্রঃ ।।

শলকঃ পু
মক্তিঃ মাক্ড্সা
ইতি ভাষা। ইতি জিকাওশেষঃ
শলসঃ পু
লোকপালঃ ৷৷ লব্দবিশেষঃ। ইত্যুণাদিকোষঃ ৷
শলভঃ পু
কীটবিশেষঃ ৷ ক্
ডি ইতি পঙ্গপাল ইতি চ ভাষা
৷ তৎপর্য্যাবঃ ৷ পতজঃ ২ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ পত্রাঙ্কঃ ৩ পত্রাঙ্কঃ ৪ i
ইতি শক্রত্বাবলী ৷৷ স তু ইতি
বিশেষঃ ৷ যথা। অতিবৃষ্টি রমাবৃষ্টিঃ শলভা মূবিকাঃ খগাঃ ৷

भनन की भन । इंडामतः॥ भननी जी भन। इंडामतः॥ भनी। इंडिताकनिर्यन्टः॥

স্তত্ত্ব ।।

প্রত্যাসন্নাশ্চ রাজানঃ যডেতে:

পত্যঃ স্মৃতাঃ।। ইত্রি জ্যোতি

শলাকা দ্রী শল্যণ। মদনবৃক্ষ।

। শারিকা। শল্লকী । ছত্রাদিকাপ্ঠা। শরঃ ইতি মেদিনী।
আলেখ্যকূর্চিকা। ইতি হেমচন্দ্রঃ। অন্তি ইতিশব্দচন্দ্রিকা
লাকাপরি ব্য শলাকাক্রীডাযাণ
পরাজ্যঃ। যথা। অক্ষ শলাকা

সখ্যাঃ পরিণা। দ্যুতব্যবহারে পরাজ্বে এবাব॰ সম্বাসঃ। অ-ক্ষে বিপরীত বৃত্ত। অকপরি। এবং শলাকাপরি। একপরি। ইতি मिक्का उप्तो मूनी॥ यशि ह । बद्धकमाकमा भनाकारा दा দ্যুতে ২ন্যথাপাতন মিত্যুৰ্থে অক্ষপরি শলাকাপরি ইত্যব্য-यीजादव श्वाशि खर्या तबाय গৰ্ভদেপি অব্যয় পূৰ্ৰত্বাভাবাৎ । ইতি শব্দশক্তিপ্রকাশিকা।। শলাকাপুরুষাঃ পু॰ বৌদ্ধানাণ ত্রিষ্ঠিদৈবপুরুষাঃ। তত্র দাদশ চক্ৰবৰ্জিনঃ। চতুৰিশাতি জিনাঃ । नय वामुद्रप्रवाः। नव वलद्रप्रवाः - । नव প্রতিবাসুদেবাশ্চ। यथा। যঃ সর্বনগুলস্যেশা রাজসূযঞ যো ২যজৎ। চক্রবর্তী সার্ধ-ে ভৌম স্তে ভু দ্বাদশ ভারতে।। আর্ষভি র্ভরত স্তত্ত সগরস্ত সু-মিত্রভূঃ। মঘবা বৈজ্যিরথাশ্ব-(मन नृशनकनः ॥ मन १ जन। রোথ শান্তি সম্বর রোজিনা অপি। শুভূমস্ত কার্ত্রবীর্য্যঃ প-• घः भट्या खदाषां कः ॥ इति एव-ণে। হরিসুতো জয়ে। বিজয় ন-न्ननः। बन्नमृन् बन्नन्छः मर्दि ए

ক্বাস্ব শক্তাঃ ।। প্রজাপতা ব্রি षिशृष्ट्री बन्नमख्यः 1 স্বয়ম্ভূ রুজতনয়ঃ সোমভূঃ পু-क्ररवाखगः ॥ टेगिविः भूक्विनिः-হোপ মহাসীরং সমুদ্ভবং ! मा। পুরুষ পুশুরীকৌ দত্তো-श्विः मि॰श्नलबः ॥ नाद्रायत्ना मामत्रिशः क्रकञ्च तमूरम्तर्जृः। বাসুদেবা অমী ক্লফ নব শুক্লা वना खुभी।। अहरना विकरमा ভতঃ সূপ্রভশ্চ সুদর্শনঃ। আন-ন্দো নন্দনঃ পদ্মো রামো বিষ্ণু-দিষ স্থুমী॥ অশ্বগ্রীব স্তারকশ্চ प्यत्रका यथू दत्रव ह। निश्वस्त विन श्रद्धां निक्तन मगरधस्त्राः ।। जिनः गर बियिषः मुाः म-লাকাপুরুষা অমী। ইতি হেম-ठिल्**ड** ॥

শলাটঃ পু॰ শকটগরিমাণ । যথা । তুলা পলশত তাসাণ বিংশতা ভার আচিতঃ। শকটঃ শাকটীনশ্চ শলাট স্তে দশাচি-তঃ ii ইতি হেমচক্রঃ ।। শলাটুঃ ত্রি অপক্ষকল । ইত্য-মরঃ ।।

मना है: श्रु॰ मृनितिस्यः । है-जुर्गामित्वायः । विवाः । हेडि রাজনির্ঘণটা।।
শলাভোজিঃ পু॰ উষ্টুঃ। ইতি
হেমচন্দা।।

भनान् की मूर्गिक्ष जवावित्यवः। इंडि मिक्का उटको मूमी ॥ भनान्कः जि भनान्या जीजः

वस्त । यथा। भनानून। १ नाज-त्रमाः र्थन मा १ शक्त ठेक्। भनानूकः। भनानूकी। भाना-नूकः। भानानूकी। भनानू मूग-स्त्रिज्यादिश्यः। ইতি मिकास्त

क्रियुकी ॥

भनी खी यम्रभनाकः। ७९शर्यायः। भन्ननी २ श्वावि९ ७।
जमा मा॰मञ्जनाः। छक्रवः। श्विश्ववः। भीजनवः। करु शिवः
नामिष्यः। इठि त्राक्रनिर्वन्धः।।
भक्षः की श्ववः। बद्धनः। इठा-

শক্ত ক্লী খণ্ডণ। বন্ধবাণ ইত্য-মরঃ । মৎস্যত্বক্ । আসি ইতি ভাষা। যথা । শক্ত স্থ্যাৎ বন্ধ-দো থণ্ডে শক্ষম্ব মৎস্যবন্ধলে । ইতি ভরতধৃতকোষঃ ।।

শক্ষল ক্লী মৎস্যবক্ষক । বৃক্ষত্বক্ । শলধাতোঃ কলচ্ প্রত্যবেন নিষ্পান্ধ । ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী ।।

मकनी पु॰ मदमाः। ইতি मक-

রত্নাবলী।। শকী পু॰ মৎস্যঃ। ইতি হেম-

শঙ্গদা) স্ত্রী মেদা। ইতিরা-শঙ্গপর্বিকা) জনির্ঘন্টঃ ।।

শন্ত ও কথনে। ইতি কবিকল্প-ক্রমঃ।। ও শন্তত। কথন॰ প্র-সংশা। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

भवातिः पूर्व भावातितृकः। यथा। भवाती जी १ भवातिः मार्थ भाषा-

निम्ह मानानी मनानी ७था।

ইতি ভরতদিৰূপকোষঃ।। भना॰ की क्षिण्डा। हेवुः॥ তো-मतः। ইতি মেদিনী।। वःশक-षिका। ইতি विश्वः ॥ मूःगर्॰॥ मूर्वाकाः। ইতি শব্দরত্বাবলী।। পাপ । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ अञ्चि । यथा । अथ मटना का त-বিধিঃ। সুনিশ্চিতাণ মন্দির ভূমি याली निथाय তোষাবধি यञ्जल छा॰। अर्यगिष्मिना यथ वा न्-মাণ খাত্বাথ বা প্রশ্নবশাদ্বিধি-জ্ঞঃ ৷৷ দূৰ্বা প্ৰবালাক্ষত পুশপা-निः श्विं । श्विं देन विष मान ত্য। পৃচ্ছেদ্বিনীতো মধুরস্বরেণ শল্যস্য তত্ত্ব॰ ভবনে তদীশঃ।। छङः अशामित्या वर्गः मन्ना-

র্য্যো যত্নতো ২থ বা। ক্রমাৎ পুজাগগাদেব ফলানা ত্রান্ধ-ণাদিতঃ।। প্রণবো ধরণী ধারিণী করৌ চ তদন ন্তর । ন ভূত্যৈ নম ইত্যেষ মন্ত্রো বক্লিপ্রিয়াস্ত-कः ॥ बङ्गिथा श्वारा । मस्त्र-ণানেন কঠিনী মভিমন্ত্র্য বিভা-জ্বেৎ ৷ নবধা সদনক্ষেত্ৰণ তথা अन्हा दिल थरा थ।। व क ह छ क हाः म भ या नव ८०९ श्रमाक-ब्राणि कार्यस्थ। आगामि कार्थ नवत्क वर्षा एक मेला माथा। छि া প্রশ্নে বকারঃ পুরতো নরান্থি खरीिं ननाः मत्रकथानाि । কৌশীশদভোরগহেতুমৃত্যুপ্র-क ककाबः थ्रमना गरभो ॥ यागा॰ ठकांद्रः भ्रवगान्ति दिशा প্রভো বিনাশ প্রকরোতি শ-नाः। त्रकामिनि शास्त्रि गृहस्रि-ভানা মহন্তব বক্তি সুনিশ্চি-७ ७: १। वः भागिमिनास् नि-শোৰ্বীতি মৃত্যু প্ৰবাসাদগৃহ (यद मला । एश वायु कारन नत्रक्र मन्द्रि मात्रिष्ठा मिळ क्रय क्रिष्टि ॥ धर्नश्रमिनि नकातः প্রাহ বিপ্রান্থি বিত্ত ক্ষমকূদথ প-কারো বক্তি ঋক্ষান্থি শম্ভৌ। ত-

पिर क्वविनामः (ग्राधनानांकः হানি বিতরতি গৃহনাথস্যাপি গুপ্তস্য দেবৈঃ ৷৷ যো মধ্যভাগে ভসিত কপাল কালায়ন চাই ञ्चक्याय। यञ्चाम्भानाभः না প্ৰমাণ সৰ্বত্ৰ তথ্য কথ্যা-भि भरता।। रेख त्रका जत-भारन भनाः भाक्तं करतं करते। वङ्गाञ्चक ऋरवरत्रषु शूक्रस्य यथा वाजरयाः॥ (नवीश्रुतानः। भूकः-ষাধঃ স্থিত শল্য ন গৃহে দো-यमः ভবে । প্রাসাদে দেখিদং भवार जित्रमा विक्रम छिकः ॥ গৃহারম্ভেতিকণ্ডূতিঃ স্বাম্যাসে য-मि **कायर्छ।** गनाः वनगर्येखः ত্ৰ প্ৰাসাদে ভবনেপি বা।। ইতি क्यािंक्डिब्• ।। # ।। मथ्रमन्गी-नि यथा। नृत्था न इति स्मवत्का वायधाना न क्षार्थिकः कवि न মুরজিৎ কবিঃ শ্রুতগুরু ন স-देवकदः। श्वनी न जगवष्भदा রসিকধী ন ক্লফাশ্রমঃ স ন বজ-জনাৰীগো জগতি সপ্তশল্যানি চ।। ইতি পাদ্মোত্তরখণ্ডে ১০০ व्यशायः॥

শল্যঃ পু॰ মদনবৃষ্ণঃ।। শ্বাবিৎ । ইত্যমরঃ।। নৃপভেদঃ। স তু যুধিষ্ঠিরমাতুলঃ ।। সীনা ।। শলাকা । ইতি হেনচন্দ্রঃ ।। বিল্ববৃক্ষঃ ।। মৎ স্যভেদঃ । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।। য় ।। শল্যনিঃসরণৌষধং যথা । রুজ লাক্সলিকামূলং হিজ্জলস্য তথৈবা চ । তেন
ত্রণ মুখং লিপ্তং শল্যে। নিঃসরতিরণাৎ ।। চিরকাল প্রবিফোপি তেন মার্গেণ শঙ্কর । ইতি
গারুতে ১৯৩ অধ্যাধঃ ।।

भनाकः पू॰ भवनवृक्तः। ইতি । শব্দরত্বাবলী ॥ শলকীজন্তঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥

भनाकर्भः भू॰ भन्नकी। ইতি भक्तास्कृता।।

भन्यताम^{म्} क्षी भन्नी। इंडि ताजनिर्यकः॥

শল্যারিঃ পু॰ যুধিষ্ঠিররাজঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।

শল গত্যা । ইতি কবিকল্পক্রমঃ
।। শলকী । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।
সৌত্রধাতুর্য ।।

শन्न॰ क्वी प्रक्। ইতি শব্দর্ম।-

শলঃ পু॰ ভেকঃ। ইতি শব্দরত্না-বলীঃ।

मझक॰ क्षी चक्। ইতি मसत्रज्ञा-वनी।।

শল্লকঃ পু॰ শোণবৃক্ষঃ । ইতি জটাধরঃ।।

শলকী ন্ত্ৰী পশুবিশেষঃ। শজারু ইতি बन्न असा । माहिल ই डि शिकी जाया। जल्म यंगयः। स्था-বিৎ ২ শলকা ও শল্যঃ ৪। ইতি क्रिंशतः॥ क्रिक्लभामः ६ एक मातः ७। इंछि नकत्रञ्जावनी ॥ শল্যকঃ ৭ শল্যমৃগঃ ৮ বজুশ-लाः २ विलिमसः **४०।** जना। गा॰म खनाः। मलागाम॰ खत्र মিশ্বং শীতলং কক্ষ পিত্তজিৎ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। ভাবপ্রকা-শোক্ত গুণাঃ বিলেশ্যশব্দে ড-खेवााः ॥ वृक्कवित्मयः । ७९-পৰ্য্যায়ঃ। গজভক্ষ্যা ২ সুবহা ৩ সুরভিঃ ৪ রসা ৫ মহেরণা ৬ अन्मू क़की १ ङ्वामिनी ৮। ইত্য-মরংা৷ গজভক্ষা > সুরভী ১০ यटक्रमा ३३ यहातमा ३२ द्रापि-नी ४७ मिलकी ४८ मलकी ४७ ।

के कि जनकः ॥ मूनजीतमा ५% मिल्लकी ५१। देखि गैकाखनः ॥ मिल्लकी ५४ मिल्लक्षिका ५०। देखि मक्तन्त्र ।। क्षम्मृजी ५० मखी ५०। देखि कि गिन्नः ॥ भालकी प्रवः १९ मिल्लकी प्रवः ॥ भालकी प्रवः १९ मिल्लकी प्रवः ॥

শল্বঃ পু॰ শাল্পদেশঃ।ইত্যুণাদি-কোষঃ।।

শব বিকারে ।। গতে । ইতি কবি-কল্পজনঃ ।। শবতি চিত্ত গ্রামঃ । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

गतः की जनः। ईिछ सिमिनी।।
गतः श्रं की मृज्यतीतः। छ<शर्मायः। जनशः १। ইछामतः॥
किछिवर्कनः ७। ইछ मक्तत्रञ्ञावनी।। मृङ्कः । ইछ वत्राः
श्रूताः। का। ङका हिविध र्याः
। नके मुद्धः ममृक्तिः। छका हिविध र्याः
मृज्याः ११ कः ममृक्तिः। छका भ्रूषः।
भूजानाः ११ कः ममृक्तिः। छका भूका श्रात्माः।
भूषः। श्रात्माः विविधानि।।।
भूषः देखन ममायुक्तः कृषा दि एतः
ह मायनः। छएका वाशकः
होमा छ० मर्वः श्रितक्द्वा ह ॥
मित्रः कृषा मिनितः
छ॰ निधाय ह। जीर्थामावाङ्नः
कृषा भागनः छमा कात्रयः।।

शयामीनि ।

শিলোক্যাঃ। সরুক্তেঞ্চ গঙ্গা ह यमूना ह मतिबता ॥ क्लोनिकन চ পযোষ্ণী চ সর্বপাপ প্রণাশিনী । গণ্ডকী ভদ্রনামা চ সরযূ র্বল-मा उथा ॥ वनानि नव वातारः তীর্থণ পিন্ডারকণ তথা। পৃথিব্যাণ যানি তীর্থানি চম্বারঃ সাগরা স্ত-থা।। সৰ্বাণি মনসা খ্যাত্বা স্নান মেৰম্ভ কারখেৎ।প্রাণাদ্যাতম্ভ ত॰ জ্ঞাত্বা চিতা॰ ক্লত্বা বিধানতঃ।। তস্যা উপরি ত স্থাপ্য দক্ষিণা-ত্র॰ শির স্তথা। দেবানির মুখান ধ্যাত্ব। গৃহ্ছ হস্তে হতাশন ।। প্র-জ্বাল্য বিধিবত্তত্র মন্ত্র মেতদুদীর-यः । ऋष। मृष्कतः कर्म जान-তা বাপ্যজনতা।। মৃত্যুকালবশ প্রাপ্য নর পঞ্চত্ব মাগতঃ। ধর্মা-ধৰ্ম সমাযুক্তা লোভ মো**ছ স**-মাবৃতঃ।। দহ এতস্য গাত্রাণি দে-वलाकाय शक्तु। अव युक्त ততঃ শীঘু॰ কৃত্ব। চৈৰ প্ৰদক্ষিণ ॥ স্থলমান তথা বহ্নি শিরস্থানে প্রদাপয়েৎ। চাতুর্বর্ণেষু সংস্কার বেব॰ ভবতি পুত্ৰক।। গাত্ৰাণি বা-ननी रेठव अथाना विनिवर्खराष । নৃতনাম ততোদ্দিশ্য দদ্যাৎ পি-

ও ৰহীতলে ।। তদ। প্রভৃতি চা-শৌচত দৈবকৰ্ম ন কারবেৎ। ইতি বারাহে শ্রাজ্বোৎপত্তি নামাধ্যা-यः॥ जनाद मारु गरम जर्मेना॰ ॥ 🛊 ॥ छमा न्यान (मार्य) यथा। বারাহ উবাচ। স্পৃষ্ঠা তু মৃতক ভজে নর॰ পঞ্জ মাগতে । মম-শাস্ত্ৰ ৰহিঃ কৃত্বা যঃ শ্বাশান প্ৰ-পদ্যতে ॥ পিতর স্তদ্য সুশোণ আত্মান্ঞ পিতামহাঃ। শ্বশানে জমুকা ভূত্বা তক্ষযন্তঃ শবাণ স্ত-থা ৷৷ ততো হরে ৰ্বচঃ শ্রুত্বা কর্ম্ম-কামা বসুশ্বরা। উবাচ মধুর বা-ক্যি সৰ্বলোক হিতাষ বৈ ॥ ধর-भावाह। তব नाथ अभन्नानाः क-পাপ॰ বিদ্যুতে প্রভো। প্রাযশ্চি-ত্তঞ্চ মে ক্সছি যেন সূচ্যতি কিন্ত্ৰি-या ।। वाताक् डेवाह । मृन् मून्न-রি তত্ত্বেন যন্না॰ ছ॰ পরিপৃচ্ছিস। ক্থবিষ্যামি তে হীদে শোভন পাপনাশন ।। একাছার দিনান সপ্ত ত্রিহারণ চাপ্যপোষিতঃ। পঞ্চাব্য ততঃ পীত্বা শীঘু মুক্তা-তি কিল্বিষাৎ।। শবে স্পৃষ্টে ২প-রাধস্য এষ তে কথিতো বিধিঃ ৷ সৰ্বথা বৰ্জনীয়ো বৈ সৰ্বভাগব-তেন তু ৷৷ য এতেন বিধানেন

श्रीयन्तिक ममान्द्रद् । विमूकः সৰ্বপাপেড্যো অগরাধোন বিদ্যা-তে।। 🛊 ।। जिन है। वदाई डेवाह । ग्णृक्वे। जू मृष्ठकः प्रिति स्था प्रथ কেত্রেযু ভিন্নতি। শত বর্ষ সহ-সাণি গভেষু পরিবর্ত্ততে ॥ দশ-वर्ष मश्त्राणि छंडाल देन्छव काय-তে। অন্ধঃ সপ্ত সহসাণি মণ্ডুক-শ্চ শত॰ সমাঃ।। মক্ষিকা ত্রীণি वर्षानि विकिटें कामनाः नियाः। एग देव मुख हानग्रानि क्रकणारमा-**ब्र**द्द मगाः। रखी वर्षभ्**र**क्षिव খরো ৰাত্রি॰শকো ভবেৎ ॥ মা-कांद्रा नव वर्षानि वानद्रा मन अक है। अव न हा ब्राट्माद्यन यम क्या भन्नायनः॥ आद्यां म् मूमर-पृथ्यः पारि अवः न मःभवः। छ-তো হরে র্বচঃ শ্রেম্বা দুংখেন পরি-शृक्ष्ठि ॥ नर्व मण्मात स्माकाय প্রত্যুবাচ বসুদ্ধরা। কি দিদ ভা-यत्म (पर मान्यांगाः मूतांमाः ।। বাক্যুণ ভীষণক ক্ষেব মন কর্ম প্র-ভেদক । আচারাচ্চ পরিভূষ্ট স্তব কর্ম্মপরাষণঃ।। তরন্তি বেন मूर्गानि अधिकिछ॰ उपा वर । শ্ৰদ্মা পৃথ্যা স্ততো বাক্য লোক-नात्था जनामं नः ॥ अर्था मः त्रकः

ণার্থায় প্রত্যুবাচ বসুদ্ধরা । বা-রাহ উবাচ। স্পৃষ্ঠা তু মৃতক॰ ভূমে মম কর্মপরায়ণঃ ৷৷ একা-হার তত স্তিষ্ঠেৎ দিনানি দশ-পঞ্চ। তত এবং বিধিং ক্লত্ব। পঞ্-গব্যু প্রাশ্যেৎ গ শুদ্ধভাব বিশুক্ষাত্মা কর্ম্মণা চ ন লিগ্যতে। এতত্তে কথিত দেবি পৃষ্ঠা মৃত-क त्यव ह ॥ मायदेश्व विवृक्षाथ यख्या शूर्व शृक्छ छ । य अरङ न विशासन आयम्बिङ ममाव्यक ।। অপরাধ বিনিমু ক্তো মম লো-ক॰ স গচ্ছতি। ইতি বারাহে মৃত-मर्गन स्थानिक नामा-शायः ॥ 🛊 ॥ भवानुगमनात्मो हः ৰথা। কৃৰ্মপুৱাণ । প্ৰেতীভূত দ্বিজ বিপ্রো যোনুগচ্ছতি কাম-তঃ। শ্লাম্বা সচেল প্স্পৃষ্টাগ্নি ঘৃত। প্রাশ্য বিশুদ্ধাতি।। একাহাৎ कविरय शिक्ष देवेंट्या ह मा। बाट्टन जू। भूट्य मिनवय थी-ক্তম প্রাণাষামশত পুনঃ।। এতচ্চ ষ্তপ্রাশন শুদ্ধিহেতু স্বামিষম **भेत्रः । न जू श्रायम्ब्हिन्छा-**জনাভাবপর । তত্ত্ব তপস্তৃাত্ত-था। जनुः महार्थः। यखु योखः-বন্ধ্যবচন । ত্রান্ধণেনানুগন্তব্যো

ন তু শৃদ্রঃ কথঞ্চন। অনুগম্যান্ত সি নামা স্ফুাগ্লি ঘৃতভুক্ শু-চিঃ॥ তৎ প্রমাদাদৃনুগমনে কথ-ঞ্নেত্যভিধানাৎ। অন্তদি ন তূ-দ্তোদকে।। 🟶 ॥ শূজস্য ব্ৰাহ্মণ भेव दहरन मिरिहा यथा। मृज बान्नन (महा॰ क देनवा ॰ शृषा व-হিন্তি চেৎ। পদ প্রমাণ বর্ষঞ্চ তে-ষাঞ্চ নরকে স্থিতিঃ ৷৷ তত স্তেষা-ঞ্চ সাহাষ্য করোতি হরিৰপিণী া দদাতি মুক্তিণ তেভ্যোপি ক্রমেণ চ ৰুপামযী।। জন্ম পুণ্যবতা পো-হে কারবিদ্বা চ ভারতে। স্থান দদাতি বৈঙ্গতে নিশ্চিত জন্মভি স্ত্রিভিঃ। ইতি ত্রন্ধবৈবর্ত্তে শ্রীক্ষঞ क्यां थर ७ ८८ व्य शायः ॥ 🗱 ॥ यात्र मृष्ठि शृह जलानयामीना॰ शिक्ष র্যথা। বন্ধপুরাণ । যেষা মভক্ষ্য मा॰मक छष्ट्रतीरेत यूंठक यद । বাপী কৃপ তডাগেষু জল সৰ্বঞ্ **मूया** ।। जन्द्रतीदेत म् जनतीदेतः । উত্তর বচনে স্বণপ গ্রহণাৎ। यथा। मञ्चनभः मकर्ममः তেভ্য স্তোয মপাস্য তৎ। প্রক্ষিপেৎ পঞ্গব্যঞ্চ সমন্ত্ৰণ সৰ্বশুদ্ধি ক্লৎ ॥ অপাস্য স্বণপ তেভ্যো বহুতো-যেভ্য এব বা । শত ষষ্ট্যথ বা

ত্রি॰শৎ তোঁষ সম্ভান্ সমুদ্ধরেৎ॥ वाशी मरमाशाना । निःरमाशानः কূপঃ। তড়াগঃ পদ্মাকরঃ। শতা-দি জলাল্পস্বাদ্যপেক্ষয়া অত্যল্পস্য मर्त्वाकात्रगाजिधाना । अवः म-রণ সমযে গৃহান্ধিঃসার্য্যতে অ-नाथा गृहमा मूकें जा मा। यथा বৃহম্মনুঃ। শ্ব শূদ্র পতিতা শ্চান্ত্য। মৃতা শ্চেদ্ধিজমন্দিরে। শৌচ° তত্ৰ প্ৰবন্ধ্যামি মনুনা ভাষিত যথা।। দশরাত্রাচ্ছনি প্রেতে মা-সাচ্ছত্ৰে ভবেচ্ছচিঃ । দ্বাভ্যান্ত ॥ পতিতৈ গেহে অস্ত্যে মাসচতু-ক্টবাৎ।। অত্যন্ত্যে বৰ্জবেদোহ মিত্যেবং মনু রব্রবীৎ। দ্বাভ্যাং মাসাভ্যা॰ মাসসন্দ॰শ পাঠাৎ। অন্ত্যো স্লেচ্ছঃ। অত্যস্ত্যঃ শ্বপা-কঃ। ইতি বাচস্পতিমিশ্রাঃ। যমঃ া দিজস্য মরণে বেশা বিশুদ্ধাতি **मिनवया** । मिटेनटकन विश्र्ृ-बि त्रि প्राक्षिण त्वर्गतिः ॥ 🛊 ॥ যথোক্ত কালানম্ভর কর্ত্তব্য মাছ मञ्जी । गृष्ट् कि॰ अवकामि ज-স্তস্থ শবদূষিতে। প্রোৎসৃজ্য মৃ-শ্বয়॰ পাত্র॰ সিদ্ধানন্ধ তথৈব চ।। গৃহাদপাস্য তৎ সর্ব গোম্যে-बागत्नभरष् । (भागत्यत्मा-

পলিপ্যাথ ছাগেনায়াপ্ৰেৰুধঃ ৷৷ বান্ধণৈ মন্ত্ৰপূতৈশ্চ হিরণ্য সশ-বারিভিঃ। সর্ব মভ্যুক্ষযেদ্বেশ্য ত-তঃ শুদ্ধাত্যসংশয়ঃ।। অত্ত মন্ত্ৰা-नांतित्न गायवी। तिवनः। शक्ष-शं वा क्वूर्धा वा जू त्रस्या विश्व-দ্বাতি। দুকী দিধা ত্রিধা বাপি শু-क्वाटा यनितिकश।। महनः थ-নন॰ ভূমে রুপলেপন বাপনে। পর্য্যণ্য বর্ষণঞ্চাপি শৌচণ পঞ্চবি-ধ॰ স্মৃত ।। প্রসূতে গর্ভিণী যত্র শ্ৰিষতে যত্ৰ মানুষঃ। চণ্ডালৈ ৰ-বিত যত্র যত্র বিন্যাস্যতে শবঃ ৷ বিমূত্রোপহত বচ্চ স্বণপো যত্র **দৃশ্যতে।। এব॰ কশালভূষিষ্ঠা** ভূ-রমেধ্যাতিকথ্যতে। ক্রমি কীট প-मत्करेश मृ िषठा यदा त्यमिनी ॥ এপাযা कर्ष रैनः किश्वा वारेख दी দুষ্ঠতা॰ বজেৎ। নখ দন্ত তনুজ-ष्ठक् जूष भा• ख तरका मदेनः ॥ ভস্ম পঙ্ক তৃণৈ ৰ্বাপি প্ৰচ্ছনা ম-लिना ভবে९। वालनः मृमखद्रव পূরণ । উষিত বাসঃ। এপা ঘ-नीज्ञतमानि। ठजूकानि १-ঞ্চানা॰ মধ্যে যথাসম্ভব॰ গ্রহণ । অঙ্গিরাঃ। শৌচ॰ সহসুরোমা-ণা॰ বাষুগ্যকেন্দুরশ্মিভিঃ। রেত-

শ্বরা স্পৃষ্ট শবস্পৃষ্ট মাবিক নৈব দুয়াতি।। সহসূ রোমাণা কম্ব-লানাণ। ইতি শুদ্ধিতত্ত্বণ।। শবকামাঃ পু॰ अक्रुतः। ইতি শ-सत्रशावनी ॥ नवरान॰ क्वी नववरनार्थथे।। मजात्रभाषे देखि ভाষा। ७९-পर्यग्रयः । कार्ष्ठयलः २ । ইতি श्रातावनी ॥ (श्राप्टेः ७ श्राप्टी 8 খাটিকা ৫ শবরথঃ ৬। ইতি भक्तकावनी॥ শবরঃ পু॰ ম্লেচ্ছজাতিবিশেষঃ। ইত্যমরঃ ৷৷ মযুরপুচ্ছপরিধানো স্লেচ্ছঃ কিরাতঃ। পত্রপরিধানঃ শবরঃ। ইতি তট্টীকাষাণ ভরতঃ ।। পানীয় ॥। শিবঃ। ইতি মে-पिनी ।। শाञ्जितित्मसः ॥ श्रुः। ইত্যুণাদিকোষঃ॥ শবরথঃ পু॰ শব্যান । ইতি শ-यत्रञ्जावली ॥ শবরলোধুঃ পু॰ শ্বেতলোধুঃ। रेि तज्ञनाना ॥ শবরালযঃ পু॰ শবরগৃহ৽৷তৎ পर्यायः। शक्षाः २। हेन्यातः॥ পর্কণঃ ৩। ইতি শব্দরত্নাবলী ৷৷

শবরাবাসঃ ৪। ইতি হেমচন্দ্রঃ।

শবরাবাসঃ পু॰ শবরালযঃ। ইতি 🏻

ट्याञ्खः ॥ শবলঃ পু॰ কৰুরবর্ণঃ। তদ্বতি ত্রি । ইত্যমরঃ ॥ শবলা / স্ত্রী শবলবর্ণা গৌঃ। ইত্য-শবলী 🛭 মরভরতৌ ॥ শ্বসানঃ পু॰ পথিকঃ। ইভি निकाखरको यूनी ॥ देविनकश-দোষণ। শ্বধাতো রৌণাদিক সানচ্ প্রত্যবেন নিষ্পন্নঃ।। শশ প্লবনে। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ ।। ननी ननि खनीः ननशि কিরাত যমকাৎ। শশক্তি ভেকঃ श्चरतन १ म्ह्जीजार्थः । ज्रुकन **७** रेंग्रब रर्जन मरेंग्रव । দন্ত্যান্তোষ মপীতোকে। ইতি मूर्गामामः ॥ मनः पु॰ मृगितित्नियः। मनाद्व ইতি ধরগোশ ইতি চ ভাষা। ইত্যমরঃ।। অস্য মাণ্স গুণাঃ। **शानुष्य । क्यायष्य । मलयक्तका-**तिष् । गीठलष् । लघूष । त्गा-থাতীসার পিন্ত ব্লক্ত নাশনত্বণ। ৰক্ষত্বক । ইতি রাজবন্ধভঃ।। অপি চ। শশমাণসণ ত্রিদোষম্বণ দীপন• শ্বাসকাসনুৎ। ইতি রা-জনির্ঘণ্টঃ॥ অন্যচ্চ। শশঃ শৃ-नी लायकर्ण विरन्धा अकी-

ৰ্ত্তিতঃ। শশঃ শীতো লঘু ৰ্তাহী ৰাক্ষঃ স্বাদুঃ সদ। হিতঃ ।। বহি-ক্লৎ কফ পিত্তমো বাত সাধার-ণঃ স্মৃতঃ। স্বরাতীসার শোষাসু শ্বাসাম্য হরশ্চ সঃ ৷৷ ইতি ভাব-প্রকাশঃ।।ঞ্জা প্রাদ্ধে ২স্য মাণ-ममा मान कन यथा। इवि**या**। মেন বৈ মাসং পাষ্যেন চবৎ-সর । মাৎস্য হারিণকৌরভূ भाक्रिक क्लांग शार्ष देखः ॥ खेव রৌরব বারাহ শালৈ র্মাণ্টেম র্য-থাক্রমণ। মাসবৃদ্ধ্যাভিতৃপ্যস্তি मरखरनर शिठामराः ॥ रेठि শ্রাদ্ধতত্ত্ব° ।। # ।। বিক্তবে এত-न्या॰ममा स्मयद्व॰ यथा । यार्ग॰ মাতসত তথা চ ছাগত শাশত সম-নুযুজ্যতে। এতানি হি প্রিযাণি मुाः প্রযোজ্যাণি বসুন্ধরে ॥ ইত্যেকাদশীতত্ত্ব ৷৷ 🟶 ৷৷ চন্দ্র-लाञ्चनः। ইতি ধরণিः॥ বোলः ।। लाबुः ॥ मन्यावित्नवः । ইতি মেদিনী ॥ স তু চতুর্বিধ-পুরুষা স্তর্গতপুরুষবিশেষঃ। ত-मा नक्ष वथा। मृमूराज्य मूनी-लः किंगलाकः मूक्नः मकल-खगिवशानः मठावामी गरमायः । ইতি ব্ৰতিমঞ্জৱী ।।

শশকঃ পু৽ শশঃ যথা ৷ শশকঃ
শলকী গোধা ঋদ্দী কূর্মান্চ প৽
খনঃ ৷ ভক্ষ্যাঃ পঞ্চনখেৱেতে ন
ভক্ষ্যা শ্চান্যজাতবঃ ৷৷ ইতি
শ্মৃতিঃ ৷৷
শশপ্তক৽ ক্লী নথাবাতঃ ৷ ইতি
শক্ষালা ৷৷
শশভ্ৎ পু৽ চক্রঃ ৷ ইতি হেন-

শশভ্ভূতঃ পৃণ শিবঃ। যথা।
আত্মান বোগনি আঞ্চ চিন্তবিত্মানি বিনা। দক্ষিণে য শরীরস্য ভাগার্দ্ধণ শশভ্ভূতঃ।। ইতি
কালিকাপুরাণে ৪৪ অধ্যায়ঃ।।
শশলোম ক্লী শশকস্য রোম।
তৎপর্য্যায়ঃ। শশোর্ণ ২। ইত্যমরঃ।।

भगिषिणुः भू विकृशा ताक्रिति-শেষः। ইতি মেদিনী।। म जू চিত্ররথপুত্রঃ। ইতি পুরাণং॥ শশিষিকা স্ত্রী জীবজী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥

भगद्रनी खी जडर्दिती। देखि विकाखरगरः॥ मा ह भन्ना वम्-नरमा र्मशरमगः। जसूना ला- শশিকা

আব ইতি নামা খ্যাতঃ ॥ भगामः भू॰ हसः। ইতি इलायू ४ः ॥ कर्न् द्रः। इंछि द्राक्रनिर्यणः॥ ममाधूनिः खी कर्कितिछमः। তৎপर्यायः। रहरुना २ ज्यूनी ৩ ক্ষেত্ৰসম্ভবা ৪ ক্ষুদ্রাম্লা ৫ লো-মশকলা ৬ ধূমা १ বৃত্তকলা ৮। অস্যা গুণাঃ। শশাপুলী তিক্ত কটুশ্চ কোমলা কটুম্লযুক্তা ম-ধুরা কফাপহা। পাকে তু সামা মধরা বিদাহরুৎ কফে তু শুদ্ধা क्रिकिक मीयनी ॥ ইতি রাজ-निर्घनिः॥

भागामः भू॰ लानभकी। ইতি त्राजिमर्बन्छः॥

শশাদনঃ পু॰ শ্যেনপক্ষী।ইত্য-यतः ॥

শশিকলা স্ত্রী পঞ্চদশাক্ষরপাদ-ष्क्रत्नावित्नवः। यथा। श्वकः नि-थन मन् लघु तिश् मिन्कला। यनरक जिनक ममूमिङ भिन-क्ला ब्रज्यूवि लम्मिलिक श-গনগতা। সরসিজ নযন হৃদয সলিলনিধিং ব্যতনুত বিতত র-ভদ পরিতরল ।। ইতি ছন্দো-मङ्गती ॥ मिनास की नमून । रेडि শশিলে

রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

শশিকান্তঃ পু• চন্দ্ৰকান্তমণিঃ! ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শশিদেবः পু॰ রম্ভিদেবঃ। ইভি শব্দরত্নাবলী।।

শশিশ্বজঃ পু॰ ভল্লাটপুররাজঃ। যথা। ততঃ শশিধকো রাজা यूकामार्य পूलकान्। मूनाञा-যা মতি॰ বুধা রমা॰ প্রাদাৎ স কল্কষে ॥ বিশাখৰূপ ভূপাশ্চ क्रिताश्रम्ह म॰ यूग॰। नयाकर्व নৃপেণাপি ভল্লাট পুর মাষযুঃ।। ইতি কন্ধিপুরাণে ২৫ অধ্যায়ঃ৷৷ শশিপ্রভ॰ ক্লী স্বমুদ॰। ইতি শব্দমালা।। মুক্তা। ইতি রাজ-निर्यन्हेः ॥ हस्त्रश्राज्य वि ॥ শশিপ্রভা স্ত্রী জ্যোৎসা।ইতি क्रिंगिश्तः ॥

শশিভূষণঃ পু॰ শিবঃ। ইতি শ-नित्नथत्रमक मर्मना ।।

मिलिथा जी ठसकला।। ७५-ही।। वृद्धाञ्चमः। इष्टि स्मिमनी ॥ जबृद्धमा नक्षनामि यथा। (मुी-মো যৌ চেৎ ভবেতা॰ সপ্তাই-देक भारताथा। विष्ह्रपर ए মুরারে পাণ্ডু প্রকাশা রুশাঙ্গী म्नानक्षायः मूक्वः न जाकरा

বিজুতী সা। রাধান্তোদস্য মধ্যে
লীনা যথা চন্দ্রলেখা কিঞ্চার্তা
দ্বাং স্মরন্তী ধত্তে প্রুবং জীবযোগং॥ ইতি ছন্দোমঞ্জরী ॥
শশিবাটিকা স্ত্রী পুনর্ণবা। ইতি
রাজনির্ধন্টঃ॥

শশিশেখরঃ পু॰ শিবঃ। ইতি হলাযুধঃ ॥ বুদ্ধভেদঃ। তৎ-পর্য্যাযঃ। হেরয়ঃ ২ হেরুকঃ ৩ ঢক্রসম্বরঃ ৪ দেবঃ ৫ বজুকপা-লী ৬ নিশুম্ভী ৭ বজুটীকঃ ৮। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

শশী পুণ চন্দ্র:। যথা হিমাণ্ড শচন্দ্রমা শচন্দ্রঃ শশী চন্দ্রো হি-মদ্যুতিঃ। ইতি ভরতগৃত শব্দা-র্ণবঃ।। অর্হন্ধুজাবিশেষঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

শশোর্ণ ক্লী শশস্য লোন। ইত্য-মরঃ।।

শশ্বৎ বা পুনঃপুনঃ। ইতামরঃ॥

শ্য বধে। ইতি কবিকল্পদ্রুমঃ॥ শ্বতি। ইতি দুর্গালাসঃ॥

শঙ্কুলঃ পু॰ ছিত্তিঃ। ডরকরম্চা ইতি ভাষা। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

শকুলী স্ত্রী তিলভণ্ডুলমাষমিশ্রিতযবাগুঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা ।।
কর্ণরস্ত্রণ ইতি শব্দরত্বাবলী ।।

নৎস্যভেদঃ। সৌরী ইতি হি-ন্দীভাষা। অদ্যা গুণাঃ। শঙ্কুলী গ্রাহিনী হল্যা মধুরা তুবরা ম্যূ-তা। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।

শব্দ ক্লী বালভূণ ইত্যমন্ত্ৰ ।।
প্ৰতিভাহানো পুণ ইতি মেদিনী
শস উ বধে। ইতি কবিকল্পদ্ৰুমঃ
।৷ উ শসিদ্বা শস্ত্ৰা ৷ ইতি দুৰ্গাদাসঃ ৷৷

শস ই ও আশিষি। আও পূর্ব-কো ২য়ণ। ইতি কবিকল্পদ্রুমাঃ। ই আশংস্যাতে। ও আশংসতে। আশী রিফার্থশংসনং। ইচ্ছায়া মিত্যন্যে। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শসন॰ ক্লী ষজ্ঞার্থপশুহনন । ইতি শমনশব্দটীকাষা রামা-শ্রমঃ।।

শক্ষুলী ন্ত্ৰী পিউকবিশেষঃ ।
পুলিপিটা ইতি ভাষা ৷ অস্যা
গুণাঃ । পপটা লয়বো ককাঃ শফুল্যঃ কফ পিতলাঃ ক্ষা কাজিকুমুক্ততিলশীস্কুলী ত্যাজ্যা যথা
। মাণসৈ রিক্ষু বিকারাণ্ড কা
গ্রিক স্তিলশাস্কুলীণ ৷ মূলকণ
মাযসুপেন মধুনা চন

পাষস পূপ শব্দুলী ফ্লান্ত সংখা-ব শিগু লোহিতবৃক্ষনির্যাসামে-ধ্যপ্রভবানা ভক্ষণে কামত স্ত্য-হোপবাসঃ। অকামত স্তদর্জণ। ক্ষত্রিষাদীনা পাদ পাদহানিঃ। ইতি প্রাযশ্চিত্রবিবেকঃ।।

भेख हे त न स्रिशा है कि किंदिकन्नक्रशा हे भे खाला न स्था
शाटिश नगा उपश्वा जावा व लाशाजाद हेमन्द्रसा दिए-कृष्ठात्रन जिमार्थः । न भे खि । त दिमिकः। हे जिमार्था ।। भेखः की कन्यानः। हेज्यतः॥ भेति किंदा है जिमार्थः ।। भेका जि कन्यान्युक्तः॥ खेळः । हेज्यतः ॥ श्रेमेखः । हेजि दिमिनी॥

শস্তক কী অঙ্গুলিত্রাণ । যথা।
অঙ্গুলিত্র শস্তক শস্তক শস্তক গতা চাঙ্গুণ্ঠরক্ষক । ইতি শব্দর ব্লাবলী ।।
শস্তকেশকঃ ত্রি প্রশস্তকেশযুক্তঃ। ইতি শব্দরী ব্লাবলী ।।
শস্ত্রণ ক্লী লোহ ॥ অস্ত্রণ। ইত্যমরঃ ।। শস্ত্রাইক্স বহুধা মুক্তৈ
রিত্যাদি দর্শনাৎ শস্ত্রাস্ত্রবোঃ
কশ্চিন্ডেদমাই। যেন করধূতে
ন হন্যতে তৎ শস্ত্রণ খ্যাদি।

दिन निरक्षन हनाटि जमक की-খাদি। ইতি তটীকাৰাণ ভরতঃ।। তৎপর্য্যায়ঃ। অন্তে শন্ত্র প্রহরণ मुम्लाला ट्लि त्रायूधः। ইতি শব্দরত্বাবলী।। একৈক মন্ত্র॰ শ-खक पार्व मूं कि महमुधा। हि-চ্ছেদ नीनरेयत्वरंभा জগতा॰ य-ধুসূদনঃ ।। ইতি বিক্পুরাণে ৫ অংশে ৩০ অখ্যায়ঃ ৷৷ অন্ত্ৰ- ম-ন্ত্রাভিমন্ত্রিত । শস্ত্রণ তদিতরৎ । ইতিতট্টীকা॥ঞ্চারাজ্ঞাণ অস্ত্রাচা-र्या। यञ्जयूरक भागियूरक অযুক্তে যুক্তধারিতে। অস্ত্রাচা-র্য্যে। নিরুদ্বেগঃ স্বশলশ্চ বিশি-शाला ॥ 🛊 ॥ जनगातनियुक्तमा লক্ষণ যথা। স্থাপনা জাতি তত্ত্ব-ল্কঃ সতত প্রতিজাগৃতা। রাজ্ঞঃ স্যাদাযুধাগারে দক্ষঃ কর্মসু চো-দ্যতঃ।। ইতি মাৎস্যে ১৮৯ অ-ধ্যায়ঃ।। 🟶 ॥ শস্ত্রচিকিৎসা যথা ৷ অথাতো ২ত্যোপহরণীয় মধ্যা-यः वार्थामायः। जिविधः कर्म । পূৰ্বকৰ্ম প্ৰধানকৰ্ম পশ্চাৎক-র্মোতি। তদ্ব্যাধিণ প্রত্যুপদেক্ষ্যা-মঃ। অস্মিন্ শাস্ত্রে শস্ত্রকর্ম্ম প্রা-ধান্যাৎ শস্ত্ৰকৰ্ম্মৈব তাবৎ পূৰ্ৰ मूलराक्यांच ख नखात्रां का

ভচ্চ শত্ৰকৰ্মান্টবিধণা তামধা। ह्मा : त्वमा : तथा त्या मारायाः विज्ञावाः नीवा मिडि ।। 🐠।। অতো ২ন্যতম কর্ম চি-কীৰ্যতা বৈদ্যেন পূৰ্ৰ মেবোপক-ন্ধবিতব্যানি । তদ্বপা । যন্ত্ৰ শস্ত্ৰ শারাগ্নি শলাকা শৃঙ্গ তুম্ব জলৌ-কালাৰূ জামবোষ্ঠ পিচুপ্লোত সূত্ৰ পদ্ৰ পট মধু ঘৃত বসা পয় স্তৈল তৰ্পণ কাষায়া লেপন কন্ধ ব্যজন শীতোক্ষোদক কটাহাদীনি পরি কর্মিণশ্চ মিঞ্চাঃ স্থিরা বলবস্তঃ। ততঃ প্রশস্তেষু তিথি করণ মু হূর্ত্ত নক্ষত্রেষু দধ্যক্ষতাম পান রজৈ রগ্নিণ বিপ্রান্ ভিষজ শ্চার্চযিম্বা ক্লতবলি মঙ্গল স্বস্তিবাচন প্লঘু ভুক্তবন্ত প্রাধ্মুথ মাতুর মুপবে-**णा यस्विषद्या श्राव्या श्राव्या दिवा**ना मर्ग्म मिता चायू मसाख् धमनीः পরিহরমনুলোমণ শস্ত্রণ নিদ-शामाश्यमर्भना मक्ता ना ना রেচ্ছন্ত্র মাশু চ। মহৎ স্বপি চ পাকেষু দ্বাঙ্গুল॰ ত্রাঙ্গুল॰ বা শস্ত্র পদ মুক্তে । তত্রায়তো বিশালঃ সমঃ সুবিভক্ত ইতি ত্রণ গুণাঃ। ভবত শ্চাত্ৰ ৷৷ আষতশ্চ বিশাল-শ্চ সুবিভক্তো নিরাশ্রয়ঃ। প্রাপ্ত-

কাল হত শচাপি ত্ৰণঃ কৰ্মাণ শ-স্যতে ।। শৌৰ্য্য সাওকিষা শন্ত্ৰ-তৈক্ষ্য মস্বেদ বেপথূ। অসংযো-হশ্চ বৈদ্যস্য শস্ত্রকর্মণি শস্যতে ॥ একেন বা ব্রণেনাশুষ্যমাণে-নান্তরা বুজ্যাবেক্যাপরান্ ভ্রণা-ন্ স্ব্যাৎ ॥ ভবস্তি চাত্র। যতো यতा গতি॰ विमानू भक्ता यज যত্ৰ চ। তত্ৰ তত্ৰ ব্ৰণ স্বৰ্যাদ্যথা দোষো ন তিষ্ঠতি ৷৷ তত্ৰ জ্ৰ গণ্ড मध नना है। कि भूट है। है पछरव-ষ্ট কক্ষা স্বাক্ষি বঙ্গ্সণেষু তিৰ্য্যক্ ছেদ উক্তঃ।। চন্দ্রমণ্ডলবচ্ছেদান্ পাণি পাদেষু কার্যেৎ। অর্ধ-চন্দ্রাক্তীণ শ্চাপি গুদে মেট্রে চ বুদ্ধিমান্।। অন্যথা তু সিরা স্নাযু চ্ছেদনাদতিমাত্রণ বেদনা চিরা দ্র্ণসংরোহে। মাণসকন্দী র্ভাবশ্চেতি। মৃতগর্ভোদরাশো

ভাবশ্বেতি । মৃত্যভোদরাশো শুখারী ভগন্দর মুখরোগেম্বভুক্ত বতঃ কর্ম স্বীতি। ততঃ শস্ত্র মব-তার্য্য শীতাভি রন্ডি রাতুর মাশ্বা-দ্য সমস্তাৎ পরিপীড্যাঙ্গুল্যা ব্র-ণ মভিমৃজ্য প্রকাল্য ক্যাবেণ প্রোতেনোদক মাদায তিলক্ষ্ক মধু সর্পিঃ প্রগাঢ়া মৌষধযুক্তাণ বর্ত্তিণ প্রণিদধ্যাৎ। ততঃ ক্ষ্কে-

नाष्ट्रामा नाष्ट्रिक्षा नाष्ट्रिक-ক্ষাণ নাভিখনাণ কবলিকাণ দত্বা বস্ত্র পটেন বন্ধীয়াছেদনা রকো-देन भू रेश भू शरराज्यकारेमण মন্ত্ৰৈ রক্ষা॰ স্বৰী ত। ততে। গুগ্ল-অগুরু সর্জ্বরস বচা গৌরসর্যপ-চূর্বে লবণ নিম্বপত্রব্যামিশ্রে রা-জ্যৰুকৈ ধূ পৈ ধূ প্ৰেৰ। আজ্য শেষেণ চাস্য প্রাণান্ সমালভেড । উদস্ভাচ্চাপোগৃহীদ্বা প্রোক-मन् तका कर्म कर्गा उपकारा ।। #॥ ক্ত্যানা প্রতিঘাতার্থ তথা রক্ষোভ্যস্য চ। রক্ষাকর্ম করি-ষ্যামি বন্ধা তদনুমন্যতা ।। না-গাঃ পিশাচা গন্ধৰাঃ পিতরো য-**क** রাক্ষসাঃ। অভিজ্রবস্তি যে যে ত্বাণ বন্ধাদ্যা মন্ত তান্ সদা ॥ পৃথিব্যা মন্তরীকে চ যে চরম্ভি निশाहताः। फिक्क् वाखनिवामा-**শ্চ পান্ত স্বা॰ তে নমস্তাঃ ।।** পান্ত ছা॰ মুনযো ব্রাক্ষ্যা দিব্যা রাজর্ষৰ স্তথা। পর্বতা শৈচব ন-**मान्ठ नर्बाः मर्दिश मागताः ॥** অমী রক্ষতু তে জিহ্বাণ প্রাণান্ वायू खटेथव ह। मात्मा वरान म-পান তে পর্যাণ্যঃ পরিরক্ষতু।। উদান বিদ্যুতঃ পান্ত সমান স্ত-

मित्रवर । वन मिट्या विन्धि मिन् भित्र मिना मिला मिट्या कि छवा ।। कामा एख भाग्न भाग्

याशाक शद्बन्गानाविक यानि-**(**नंद । छछ खुछीर १ इनि वि-मूटेठावः वज्ञीयादञ्जशत्येन । न-त्य । षिठीय मिवतम शतित्या-ক্ষণাদিগ্রথিতো ত্রণ শ্চিরাদুপা সংব্লোহতি তীব্ৰৰুজশ্চ ভ্ৰবতি। অত উৰ্কুণ দোষ কাল বলাদীন-বেক্য ক্ষাযালেপন বন্ধাহারা-ठातान् विषधाए। न टेठनः पत-मानः माखर्फायः রোপবেৎ म-খ্রেনাপ্যপচারেণাভ্যম্তর মুৎ-সঙ্গ কৃত্বা ভূযে। ২পি বিকরে।তি । ভবন্তি চাত্ৰ। তম্মাদান্ত ৰ্হি-শৈচব সুশুদ্ধ রোপষেদ্রণ । ব-टिणाजीर्व वाशाय वावायामीन् विवर्जध्य ।। .श्रवं क्वांध छय-ঞ্চাপি যাবদাহৈর্য্য সম্ভবাৎ। মা-मान् यह मश्च वा नूगाः विधिदत्यः প্রশাসতে ॥ হেমস্তে শিশিরে চৈব বসস্তে চাপি মোক্ষয়েও। ত্র্যাহাৎ দ্ব্যহাচ্ছরদ্মীয়া বর্ষাস্বপি চ বুদ্ধিমান্।। অতিপাতিষু রো-গেষু নেচ্ছেদিধি মিমণ ভিষক্ । প্রদীপ্তাগার বচ্ছীযু তত্ত্ব স্ব-ৰ্য্যাৎ প্ৰতিক্ৰিযা ।। যা বেদনা শস্ত্র নিপাত জাতা তীবাঃ শ্রী- 🛮 শস্ত্রমার্জঃ পু॰ শস্ত্রমার্জনকর্তা।

র॰ প্রদুনোতি জম্ভোঃ। মৃতেন সা শান্তি মুপৈতি সিক্তা কো-কেন যঞ্চীমধুকাশ্বিতেন।। ইতি সূত্রতে ৫ অধ্যায়ঃ।। শব্रः पुः सम्मः। यथा। त्रिक्तिः ধন্ম স্তরবারিঃ শত্রো ভদ্রাত্ম-জ্ঞক সঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। শস্ত্রক॰ ক্লী লোহণ। ইত্যমরঃ॥ শস্ত্রকোশতরুঃ পু॰ মহাপিণ্ডী-তরুঃ। ইতি রাজনির্ধন্টঃ॥ শস্ত্রজীবী^{ন্} পু॰ শস্ত্রাজীবঃ। ইতি ट्याञ्यः ॥ শস্ত্রধারণজীবকঃ ত্রি শস্ত্রাজীবঃ । ইতি শব্দরত্বাবলী।। শস্ত্রপাণিঃ পু॰ শস্ত্রহস্তঃ। যথা। উন্ধাহস্তো খনিদো জ্বেয়ঃ শ-স্ত্রপাণিশ্চ ঘাতকঃ। কেশাকে-শি গৃহীতশ্চ যুগপৎ পারদারি-कः ॥ ইতি ব্যবহারতত্ত্ব॰ ॥ অ-পি চ। অগ্নিদো গরদ শৈচব শ-স্ত্রপাণি র্ধনাপহঃ। ক্ষেত্র দারা-পহারী চ ষডেতে চাততাযিনঃ ॥ इंडि श्रायम्ब्रिखिरिदकः॥ শস্ত্রভূৎ পু॰ শস্ত্রধারী। শস্ত্র• বিভতী তি কিপ্ প্রত্যেন নি-क्राधः ॥

সিকলগর ইতি ভাষা । তৎপর্য্যায়ঃ । অসিধাবকঃ ২ । ইত্যমরঃ ।। অস্ত্র্মার্জঃ ৩ অসিধাবঃ ৪ । ইতি শব্দরত্নাবলী ।।
শাণাজীবঃ ৫ ভুমাসক্তঃ ৬ ।
ইতি হেমচন্দ্রঃ ।।

শস্ত্রহতঃ ত্রি শস্ত্রাঘাতেন মৃতঃ। जिंगात्मी हामि संथा। वाष्ट्रः। ক্ষতেন মি্ষতে যস্ত তস্যাশোচ ভবেদ্বিধা। আসপ্তাহাৎ ত্রিরা-ত্র॰ স্যাৎ দশরাত্র মতঃ পর॰।। শস্ত্রঘাতে ত্রাহাদূর্দ্ধু যদি ক-শ্চিৎ প্রমীয়তে। অশৌচ প্রা-'ক্লত' তত্ৰ সৰ্ববৰ্ণেষু নিত্যশঃ।। অত্র শস্ত্রহাতপদ° ক্ষতেতর শ-ত্রঘাতপর পারিভাষিক শস্ত্র-যাত পর মপি। ষথা দেবীপুরা-ণে। পক্ষি মৎস্য মৃগৈ র্ষে তুদ ॰-क्टि मृक्रि नरेथ ईठाः। পতनान-শন প্ৰায়ৈ ৰজুাগ্নি বিষৰন্ধনৈঃ ।। মৃতা জলপ্রবেশেন তে বৈ শ-স্ত্রহতাঃ সৃতাঃ। অন্যথা কতঃ विना পতनोमिछि विनम् मृठा-ना॰ मिन গ্রহণে অনধ্যবসাযঃ স্যাৎ। ন চ শাস্ত্রীয ব্যবহারে ২ন্তরঙ্গদ্বেন পারিভাষিকদ্যৈব যুক্তম্ব মিতি বাচ্য প্রাঞ্জে পা-

রিভাষিকাপারিভাষিক শস্ত্র-ঘাত গ্ৰহণবদত্তাপি তথা যুক্ত-ত্বাৎ পারিভাষিকত্বাদেব ন প্র-করণ নিষমঃ ॥ 🐞 ॥ ক্রোধাৎ প্ৰাৰণ বিষণ বক্লিণ শস্ত্ৰ মুম্বন্ধনণ জল । গিরি বৃক্ষ প্রপাতঞ্চ যে व्यविष्ठ নরাধ্যাঃ।। মহাপাতকি নো যে চ পতিতা স্তে প্রকীর্ত্তি-তাঃ। পতিতানা॰ ন দাহঃ স্যা-बारखासि नीवित्रक्षयः ॥ नठा-শ্রুপাতঃ পিণ্ডো বা কার্য্যণ শ্রো-দ্বাদিক ক্ষচিৎ ৷৷ এতানি পতি-তানাঞ্চ ষঃ করোতি বিমোহিতঃ । তপ্তক্ৰচ্ছ দৰ্যেনৈব তস্য শুদ্ধি र्भ हानाया ॥ 🟶 ॥ छिनछत्रव म-ঃ। বিষ শস্ত্র শ্বাপদাছি তি-

শ্যাণ ক্রিয়া কার্য্যা অন্যেষাম্ব বিগহিতা ৷৷ ইতি শুদ্ধিতত্ত্বণ ৷৷ শস্ত্রহস্তঃ পুণ শস্ত্রণ হস্তে যস্য সঃ ৷ ইতি শস্ত্রপাণিশব্দদর্শনাৎ ৷৷ শস্ত্রাজীবঃ ত্রি অসিজীবী ৷ তৎ-পর্য্যায়ঃ ৷ কাণ্ডপৃষ্ঠঃ ২ আযু-ধীয়ঃ ৩ আযুধিকঃ ৪ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ কাণ্ডস্পৃষ্ঠঃ ৫ ৷ ইতি ভট্টীকা ৷৷ কাণ্ডপৃষ্ঠঃ ৬ শস্ত্রধারণজীব-কঃ ৭ ৷ ইতি শব্দরত্বাবলী ৷৷

ৰ্য্যক্ ব্ৰাহ্মণ ঘাতিনা । চতুৰ্দ-

শস্ত্রাজ্যানঃ পু• অন্ত্রশিকা তৎপর্যানষঃ । খুরলী ২ । ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।।

শস্ত্রায়স॰ ক্লী লোহ॰। ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ ।।

শন্ত্রী ছুরিকা। ইতি মেদিনী।। শন্ত্রী তি শস্ত্রবিশিক্টঃ। অস্ত্র-ধারী। শস্ত্রশব্দাদিন্ প্রত্যবে ন নিপানঃ।।

শস্প ক্লী বালতৃণ । ইত্যমর-টীকাফা ভরতঃ ॥ প্রতিভাহা-নিঃ। ইতি জটাধরঃ ॥

नगाः की वृक्षामिनिन्धः। छ०शर्यायः। कलः २। ইতামরः॥
वृक्षाणः लजामिनाकः कलः निन्धाय मागठः आमुामिकः ममाः ममाश्माताः कलः कलः कल
निन्धाले श्रिमाताः कलः कलः कल
निन्धाले श्रिमाताः कलः कलः कलः
निन्धाले श्रिमाताः कलः कलः कलः
निन्धाले श्रिमाताः सम्मुतं सकः क्रिले ममाः सममुतं सकः कः
विश्वि ममाः सममुतं सकः कः
विश्वि यः ममाः विष्णाः।
वाभाकिविक्थान्यस हैव नीतनमा मनाहता एमः हैि ननम्भवती दक्षयाः। वाःमनः
मीमकः ममाः वाखः मान्ना ह
माध्रमः हेज्यावित्वकाकः। छानवामि मखाःखः छथ। हि न-

न्मू हि॰मा खटा। तिजामा ৰু বৃষ মৃজেতি ক্যপি ষৎ শৃস্যুত ७९ किया वात्ठानि कलानि हृ-শ্যতে। তালব্যা অপি দন্ত্যাশ্চ শস্য শূকর পা॰শব ইত্যুমভেদঃ । ইতি তট্টীকাষাণ ভরতঃ॥ 🐠 🛚 ।। क्किव्यथानानि । यथा । भूत्रा॰ ক্ষেত্ৰগত প্ৰাহঃ সতুষ ধান্য মুচ্যতে। আম॰ বিভূষ মিত্যুক্ত॰ বিষ মগ মুদাহত । ইতি স্মৃতিঃ १। 🗰 ॥ श्रामा मनानि यथा । ত্ৰীহ্ষশ্চ যবা শৈচৰ গোধুমা म्हानव खिलाः । थियक्टवा श्रु-मात्रान्ठ कात्रमृषाः महीनकाः॥ উদারाः नीर्यनालयः ॥ याया यू-का। यमूत्राम्ठ निष्णावाः मन्नल-थकाः। वाष्ठा भ्रानका देश्वव শাণাঃ সপ্তদশ স্মৃতাঃ।। ইত্যো-তা ওষধীনাম্ভ আম্যাণাণ জাত-र्या बूरन। #। श्रामग्रात्ना नम्गा-नि यथा। अयरधा यिख्या दैन्ह्य वामात्रगा कर्जूमं ॥ बीर्यक ষবা মাষা গোখুমা শ্চাণব স্তিলাঃ । প্রিযঙ্গু সপ্তমা হেতে অফমা স্ত जनयकाः॥ भागाका खुथ नीवा-রা জর্ত্তিলাঃ সগবেধকাঃ। তথা বেণুষবাঃ প্রোক্তা স্তথা মর্ক টকা

মুনে ॥ প্রাম্যারণ্যাঃ স্মৃতা ছেত। ध्यधाञ्च ठजूमंग । देखि बिक्पू-রাণে ১ অংশে ৬ অধ্যায়ঃ।। 🟶 ।। নবশস্য সম্ভোগ নক্ষত্রাণি যথ।। অনুরাধা মৃগশিরো রেবতী চো-জরাত্রয় । হস্তা চিত্রা মঘা পুষ্যা শ্ৰবণা চ পুনৰ্বসুঃ।। রোহিণী নব-भागामि नवजवगामनामिष्। अं-শস্ত बवशीठामिमद्यागः अर्वि-ब्रान ।। ।। नवनग्राभाका-**कि काटना यथा। শ**র্দসন্তযোঃ কেচিন্নবয়ক্ত প্রচক্ষতে ধান্যপা-क्वभाषत्मा भागारका वनिनः স্মৃতঃ।। ইত্যনেন শর্দসম্ভ বিহি-ত নবশস্যেকেঃ শ্যামাকৈ ত্রী হি-ভি শ্চৈব ষবৈ ব্ৰম্যোন্যকালতঃ ৷ প্ৰাগ্বজ্ঞণ যুজ্যতে ২বশ্যণ নম্ব-ত্রাগ্রমণাত্যয়ঃ।। ইতি কালান্তর দর্শনাৎ শ্রাদ্ধেপি তথা। আগ্র-ষণ নবশস্যেষ্টিঃ।। বৃশ্চিকে শুক্ল পক্ষে তু নবান্ধ শস্যতে বুধৈঃ ৷ অপরে ক্রিয়মাণ হি ধনুষ্যেব ক্ল-ত ভবেৎ।। ধনুষি যৎ ক্বত আ-দ্ধ মৃগনেত্রাসু রাত্তিষু। পিতর স্তন্ম গৃহস্তি নবান্নামিষকাজ্ফিণঃ য় অপরে রুক্তপকে। পৌষে চৈ-ত्व क्रक्शरक नवाबः नाठदब्

ধঃ। ভবেৎ জন্মান্তরে রোগী পিতৃণা নোপতিষ্ঠতে ৷৷ যদাপি 🕻 ত্রীহিপাকে চ কর্ত্তব্য • ষবপাকে চ পার্থিব। নভাবাদ্যৌ মহারা-জ বিনাশ্রাদ্ধ কথখন ॥ ইতি বিষ্পৰ্মোছরৰচনে আছে প্র-**छि बी**रि यद शाकरवा निमिख-ছু প্রতীষতে। তথাপি নবোদ-কে নবান্ধে চ ইতি শাতাত্তপ ব-চনে পূৰ্বোক্ত বছৰু ৰচনেৰু চ নবামস্য শ্রুতে নবামত্ত্বেনৈবো-ভষ সাধারণ নিমিত্ত লাঘবাৎ ৷ অভিলাপ ৰাক্যে নবান্নাগম নিমিত্ত মিতি নিযোজ্যে। ন তু যবান্নাগমাদি। বৃশ্চিকে শুব্ধ-পক্ষে চ ইতি তু ধনুরাদি পর্য্যু-দস্তেতর গৌণকাল মধ্যে বৃশ্চি-ৰুস্য প্ৰাশস্তা মাত্ৰাৰ্থণ ন তু শ্রাদ্ধান্তরার্থ মিতি। ইতি মল-মাসতত্ত্ব ।। অন্যৎ নবান্নশক্তে দ্রফব্য ।।

শস্যধণনী পুণ তুমবৃক্ষঃ। ইতি
শব্দচন্দ্রিকা।। শস্যনাশকে ত্রি।।
শস্যমঞ্জরী স্ত্রী অভিনবনির্গতধান্যাদিশীর্ষকং। শীষ ইতি
ভাষা।তৎপর্য্যায়ঃ। কণিশং ২।
ইত্যমরঃ।। কণিশঃ ৩ কণিষঃ ও।

ইতি তত্তীক।।।

শস্যশূক ক্লী শস্যস্য ভীক্ষাগ্র । শুঙা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাষঃ। কিংশারুঃ ২। ইত্যমরঃ।।

শमामभद्भः श्रू॰ मालवृक्षः। ইত্য-

শস্যাৎ ত্রি শস্যভক্ষকঃ। শস্য অন্তি ইত্যর্থে কর্ত্তরি ক্বিপ্ প্র-ত্যথেন নিষ্পন্নঃ। ইতি মুগ্ধবো-ধ্ব্যাকরণং।।

भगाकः पू॰ क्ष्यभगीत्कः। ইতি
भक्तकावनी ॥

শাংশপঃ পুং শিংশপায়া বিকার
শ্চমসঃ। শিংশপাশকাদণ্প্রত্য-যে ইকারস্য আঙাদেশেন নি-শুয়ঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী।। শাংশপাষনঃ পুং মুনিবিশেষঃ। ইতি পুরাণং।।

শাকণ ক্লী পুণ পত্রপুষ্পাদি। সাগ ই হিন্দীভাষা। শক্যতে ভো-জুণ শাকণ ঘঞ প্রত্যয়ঃ। তৎ-পর্যায়ঃ। হরিতকণ ২ শিগুঃ ৩। ইত্যমরঃ।। সিগুঃ ৪। ইতি অ-জীকা।। হারিতকণ ৫। ইতি শ-ব্যর্মাবলী।। অথ শাকবর্গঃ। তত্র শাক নিরূপণণ। পত্রণ পুষ্পাণ ফলণ নালণ কন্দণ সংস্বেদজ্ঞণ

তথা। শাক ষড্বিধ মুদ্দিষ্ট॰ গুরু বিদ্যাৎ যথোত্তর ।। অর্থ শাকানা ওণাঃ। প্রায়ঃ শাকা-नि সর্বাণি বিষ্টম্ভীনি গুরুণি চ । बकानि वहवर्षाः मि मृकवि-মারুতানি চ।। শাক্ ভিনত্তি বপু রম্ভি নিহস্তি নেত্রণ বর্ণ বি-নাশ্যতি রক্ত মথাপি শুক্রণ। প্রজাক্ষয়ঞ্চ স্বরুতে পলিতঞ্চ নূন হস্তি স্মৃতি গতি মিতি প্র-বদন্তি তজ্জ্ঞাঃ।। শাকেষু সর্বে নিবসস্তি রোগাঃ সহেতবে দে-হ বিনাশনায। তস্মাদুধঃ শাক विवर्জनक कर्यााखशासम् मध-ব দোষঃ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। অপি চ। সর্বশাক মচাক্ষ্য ম-জজ্যেষ মনৈথুন । ঋতে পটো-ল ৰাস্তৃক কাকমাচী পুনৰ্বাঃ ।।ইতি রাজবল্লভঃ।।

শাকঃ পু॰ কৃক্ষবিশেষঃ । সেগোন্ ইতি ভাষা । তৎপর্য্যায়ঃ । শা-কবৃক্ষঃ ২ শাকাখ্যঃ ৩ খরপত্রঃ ৪ অজুনোপমঃ ৫ । ইতি রত্ন-মালা ।। ক্রকচপত্রঃ ৬ শরপত্রঃ ৭ অতিপত্রঃ ৮ অহীক্ষহঃ ১ শ্রে-

১০ স্থিরসারঃ ১১ গৃছ-দ্রুমঃ ১২ ৷ অস্য গুণাঃ ৷ সার-

কত্বণ। পিত্ত দাহ প্রানাপহত্বণ।। अमा वक्रन छनाः। क्क नानि-ष्व । मध्तष् । कक्ष । क्यांव-ष्य । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।। 🟶 ।। শক্তিঃ। ইতি মেদিনী।। শিরী-श्रृकः। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ नृगरভनः। ইতি विश्वः ॥ षी-পবিশেষঃ। তন্য বিবরণ যথা । সূত উবাচ। শাকদ্বীপস্য ব-कगामि यथाविष्ट निन्ध्यः। क-থ্যমান নিবোধধ শাক্ষীপণ দিজোত্তনাঃ।। জমুদীপস্য বি-স্তারাদ্বিগুণ স্তদ্য বিস্তরঃ । বি-স্তারাদ্দিগুণশ্চাপি পরিণাহঃ স-মন্ততঃ ॥ তেনাবৃতঃ সমুজোষ॰ দীপেন লবণোদধিঃ। তত্ত্ৰ পুণ্যা-জনপদা শ্চিরাচ্চ মূিযতে জনঃ॥ জত এব চ দু ভিক্ষণ ক্ষমা তেজো-যুতেষিহ। তত্ৰাপি পৰ্বতাঃ শুভূাঃ সপ্তৈব মণিভূষিতাঃ।। শাকদী-পাদি দ্বীপেষু সপ্ত সপ্ত নগা স্ত্রিষু । श्रद्धायणः প্রতিদিশ নিবিফা বর্ষ পর্বতাঃ ৷৷ রত্নাকরাজি নামা-নঃ শোভাবস্তো মহাচিতাঃ। স মাচিতাঃ প্রতিদিশ দ্বীপ বিস্তর-মানতঃ ।। উভযত্রাবগাঢাশ্চ ল-বণ ক্ষীরসাগরৌ। শাকদ্বীপে তু

वकामि मश्रिकान् महाठवान् ।। मिवर्षि गन्नर्वयुष्टः अथरमा स्व-রু রুচ্যতে। প্রাগাযতঃ স সৌবর্ণ উদ্ধো নাম পৰ্ৰতঃ ৷৷ ভত্ৰ মেখা-স্তু বৃষ্ট্যর্থণ প্রভবস্তি চ যান্তি চ। তস্যাপরেণ সুমহান্ জলধারো মহাগিরিঃ।। সৈব চন্দ্রঃ সমাখ্যা-তঃ সবৌ বিধি সমন্বিতঃ। তস্মা-নিত্য মুপাদত্তে বাসবঃ পরম• জলে ৷৷ নারদো নাম সৈবোজে मूर्ग रेगला यशाहिकः। एखाहल সমুৎপদৌ পূর্ব॰ নারদ পর্বতী।। **ত**मगांशति मूयशेन् गात्या नाम মহাগিরিঃ। যত্র শ্যামত্ব মাপলাঃ প্ৰজাঃ পূৰ্ৰ মিষাঃ কিল ৷৷ সএব मूम्पु निम नामः পर्वठमखयः । শব্দ মৃত্যুঃ পুরা তন্মিন্ দুন্দু ভি স্তাডিতঃ সুরৈঃ॥ বব্দু ত্বালাস্ত-রম্যঃ শাহ্মল শ্চান্তরালক্ত্ ৷ তস্যাপরেণ রজতো মহানম্ভো গিরিঃ স্মৃতঃ ।। সৈব সোমক ই-ত্যুক্তো দেবৈ র্বতামৃত পুরা। সম্ভূতঞ্জতঞ্চৈব মাতু রর্থে গরু-ত্মতা ৷৷ তস্যাপরে চাম্বিকেষঃ সু-মনা শৈচব স স্মৃতঃ। হিরণ্যাক্ষো বরাহেণ তস্মিন্ শৈলে নিসূদি-তঃ ৷৷ আশ্বিকেষাৎ পরো রম্যঃ

.मदो यथि ममस्रिकः। विज्ञाकस्र সমাখ্যাতঃ স্কাটিকঃ স মহাগি-রিঃ॥ যশ্মাদ্বিভাজতে নিত্য॰ বি ভ্ৰাজ স্তেন স স্তঃ। সৈবেহ কে-শবেত্যুক্তো যতো বাযুঃ প্রবাষতি য় তেষা॰ বৰ্ষাৰি বক্ষ্যামি পৰ্বতা-॥ না॰ দ্বিজোত্তমাঃ। শৃণুধ॰ নামত छानि यथायमनूशृबंभः ॥ वि ना-মান্যেব বর্ষাণি যথৈব গির্য স্তথা ৷ উদযস্যোদষ বর্ষ জলধারেতি বিশ্ৰুত ৷৷ নামা সাম্ভ ভয়মাম বৰ্ষণ তৎ প্ৰথমণ স্মৃতণ ৷৷ দ্বিতীয়ে জলধারস্য সুস্বমার মিতি স্মৃত । **छ**रमव रेगिनिज्ञ॰ नाम वर्ष॰ म॰श-तिकीर्खिङ ॥ देवचमा **जू** की-মার॰ তথৈব চ সুখোদয॰। শ্যাম পৰ্বত বৰ্ষস্ত মণীচক মিতি স্মৃত ।।। আনন্দক মিত্তি প্রোক্তণ তদেব মুনিভিঃ শুভ । সোমকস্য শুভ বর্ষণ বিজ্ঞেষণ জসুমোত্তরণ ।। ত-দেব শিব মিত্যুক্তণ বর্ষণ সোমক সংজ্ঞিত ৷ আম্বিকেযস্য মেদা-কি॰ ক্ষেমকঞ্চৈৰ তৎ স্মৃতণ ৷৷ সে-তুপৰ্বতক্স্যাপি মহাক্ৰম মিতি ষ্মৃত । তদেৰ ধ্ৰুব মিত্যুক্ত বৰ্ষণ বিভাূক সংজ্ঞিত ৷৷ দ্বীপস্য পরি-**गार्क हुत्र मीर्घत्र य्यव छ। ज**ञ्च-

ৰীপেন সংখ্যাত স্তম্য মধ্যে বন-ম্পতিঃ।। শাকো নাম মহাবৃক্ষ ন্তুস্য প্ৰজা মহানুগাঃ। এতেষু **(मव गन्नर्वाः मिकान्त मह तात्रदेवः** ॥ বিহরস্তি রমস্তে চ দৃশ্যমানা-**क टेड: मर्। उ**क भूगा जनभना শ্চাতুৰ্ণ্য সমন্বিতাঃ ৷৷ তেষ নদ্য-স্তু বৈ সপ্ত প্রতিবর্ষে সমুদ্রগাঃ। দিনায় শৈচৰ তাঃ সৰ্বা গঙ্গাঃ স-গুবিধাঃ স্মৃতাঃ ।। প্রথমা সুন্সমা-রীতি গঙ্গা শিবজনা শুভা। অ-নুতপ্তা চ নামেষা নদী সংপরি-कीर्विण ॥ मूत्रमात्री जभःमिका দ্বিতীয়া নামতঃ সতী। নন্দা চ পাবনী চৈব ভৃতীয়া পরিকীর্দ্তিতা ॥ শিবলোকা চতুথী স্যাৎ ত্রি-বিধা চ পুনঃ স্মৃতা। ঈক্ষুণ্চ পঞ্-মী জ্বেষা তথৈব চ পুনঃ কৃসূ॥ ধেনুকা চ মৃতা চৈব ষষ্ঠী সংপরি-কীৰ্ত্তিতা। সুক্ৰতা চ গভস্তী চ সপ্তমী পরিকীর্ত্তিতা ।। এতাঃ স-প্ত মহাভাগাঃ প্রতিবর্ষণ শিবো-দকাঃ। পাবযন্তি জন সর্ব শা-কদ্বীপ নিবাসিন ।। অভিগচ্ছস্তি তা শ্চান্যা নদী র্নদ্যঃ সরাংসি চ । বহুদক পরিসাবা যতো বর্ষতি বাসবঃ ৷৷ আসাম্ভ নামধেষানি

পরিমাণ তথৈব চান শক্যং পরি-मःशाजूः भूगा खाः मतिमूखमाः ।। তাঃ পিবন্তি মহাহ্নটা নদী জ নপদা স্তু তে। যে তে শান্তত্যা প্রোক্তাঃ প্রমোদা শ্চেতি বৈ শি-ৰাঃ। আনন্দাশ্ৰুমুখা শ্ৰেৰ কে-মকৈশ্চ দ্রুবিঃ সহ। বর্ণাশ্রমাচা-রযুক্তা দেশা স্তে সপ্ত বিশ্রতাঃ য় অরোগ। ৰলিন শ্রেচব সর্বে ম-রণবজ্জিতাঃ। অবসর্গিণী ন তে-बिंख जरेशवारमर्भिनी भूनः ॥ ন তত্ত্বান্তি যুগাবস্থা চতুর্যুগ ক্তা **क**চিৎ। ত্রেতাযুগ সমঃ কাল স্ত-থা তত্ৰ প্ৰবৰ্ততে ।। শাক্ষীপা-দিষু জ্ঞেয়ণ পঞ্চেষতেষু সর্বশঃ। দেশস্য তু বিচারেণ কালঃ স্বা-জাবিকঃ স্মৃতঃ ৷৷ ন তেযু শকরঃ কশ্চিদ্বৰ্ণাশ্ৰমক্তঃ কচিৎ। ধৰ্ম-স্যাব্যভিচারেণ একান্ত সুখিতাঃ প্রজাঃ ৷৷ ন তেষু মাযা লোভো বা ঈর্ষাসূষা ভষ তথা। বিপর্য্য-যো ন তেম্বস্তি তদ্ধৈ স্বাভাবিক স্মৃত ।। কালো ন চৈব ভেম্বস্তি न मट्या न ह माखिकः। अथट्या চধর্মজ্ঞা স্তে রক্ষন্তি পরস্পর ।। केंजिया ९८मा ३०२ अशायः ॥ 🗱 ॥ অপি চ। এব॰ পরন্তাৎ ক্ষীরো-

দাৎ পরিত উপবেশিতঃ শাক-षीत्था षा<u>जि॰ महाकत्याजनाया</u>-गः मनात्नन परियट्धारमन পরी-তঃ। যশ্মিন্ ছি শাকো নাম মহী-ৰুহঃ স্বন্ধেত্র ব্যপদেশকঃ। যস্য হি মহাসুরভিগন্ধ স্তদ্দীপ মনুবা-যতি। তস্যাপি প্রৈয়ত্তত এবা-ধিপতি নামা মেধাতিখিঃ। সো-পি বিভজ্য সপ্তবর্ষাণি পুত্র না-মানি তেষু স্বাত্মজান্ পুরোজব মনোজব বেপমান ধুমানীক চি-ত্ৰরেফ বছৰূপ বিশ্বাধার সংজ্ঞা-নিধাপ্যাধিপতীন্ স্বয়ণ ভগবত্য-নস্ত আবেশিতমতি স্তপোবন• প্রবিবেশ। এতেষা॰ বর্ষনর্যাদা-शित्रया नमान्छ मछ मटेखेर । ঈশান উরুশৃঙ্গো বলভদ্রঃ শত-কেশরঃ সহসুসোতা দেবপালো মহানস ইতি। অন্যা আফুদী উভয়স্পৃষ্টি রপরাজিতা গঞ্চপ-দী সহসুঞ্তি নিজধৃতি রিতি। তদ্বৰ্ষ পুৰুষা ঋতত্ৰত সত্যত্ৰত দানৱতানুৱত নামানো ভগব-ন্ত॰ বাষাত্মক॰ প্রাণাষাম বিধৃত तक खगमः भत्रम ममाधिन। यक-ন্তে। ইতি শ্রীভাগবতে ৫ ক্ষন্ধে २० ज्यशायः ॥ 🐞 ॥ युधिष्ठित

বিক্রমাদিত্য শালিবাহনাদি শ-কনরপতীনা মতীতাব্দঃ। তস্য প্রমাণ দিনপঞ্জিকাষাণ দ্রফব্যণ শাকচুক্রিকা স্ত্রী চিঞ্চা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শাকট ত্রি শক্টস্যেদ । শক্ট-বোঢ়া। ইতি মেদিনী।।

শাকটং পু॰ শ্লেমান্তকবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। যুগাদিবো-ঢা। তৎপর্য্যায়ঃ। যুগ্যঃ ২ প্রা-সঙ্গ্যঃ ৩। ইত্যমরঃ।।

শাকটাখ্যঃ পু॰ ধববৃক্ষঃ। ইতি রত্নমালা।।

শাকটাযনঃ পুণ অফশান্দিকা-স্তর্গত শান্দিকরিশেষঃ। যথা। ইন্দ্র শন্দ্রঃ কাশরুৎস্না পিশলী শাকটাযনঃ। পাণিন্যমর জৈ-নেক্রা জমস্ত্যস্কাদি শান্দিকাঃ ।। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ।।

শাকটিকঃ ত্রি শক্টগামী। শ-কটেন গচ্ছতীত্যর্থে ঠক্ প্রত্য-ষেন নিষ্পান্ত। ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুদী।।

শাকটীনঃ পুণ বিশ্বতিত্বাপ-রিমাণ । তৎপর্য্যায়ঃ । ভারঃ ২ আচিতঃ ৩ শকটঃ ৪ শলাটঃ ৫ । ইডি হেমচন্দ্রঃ ।। শাকতরঃ পু॰ শাকবৃক্ষঃ। সাগৌ ন ইতি হিন্দীভাষা। ইতি শব্দ-মালা॥

শাকপত্রঃ পুং শিগুঃ। ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ।।

শাকবালেযঃ পু॰ ত্রন্ধাযটিঃ। ইতিশব্দরত্নাবলী।।

শাকন্তরী স্ত্রী দুর্গা। যথা। ত-তোহ মখিল লোক মান্মদেহ मगुरुरेवः । ভরিষ্যামি সুরাঃ मारिक ताव्रिकः आनशात्रिकः ॥ শাকম্বরীতি বিখ্যাতি তদা যা-স্যাম্যহণ ভুবি। তত্ত্বৈব চ বর্ধি-यामि पूर्वभाषाः महामूतः ॥ ইতি মার্কণ্ডেযপুরাণে নারাযণী স্তুতিঃ।। অপি চ। ভূষঃ সুরা স্তিষ্যযুগে নিরাশনামিরীক্য মারীচ গৃহে সমাশ্রিতা। লো-কান্ ভরিষ্যামি তনুজশাকৈ স্তদা ভবিষ্যামি শাক্ষরীতি।। ইতি বামনে ৫৩ অধ্যাযঃ ॥ নগরবিশেষঃ। শাস্তরীতিখ্যাতঃ । ইতি কেচিৎ।।

শাকস্তরীয় ক্লী আজমেরাখ্য-দেশান্তর্গত শান্তরনগরীয় জ্ল লাশ্যবিশেষোদ্ভব লবণং। শা-ন্তরি ইতি খ্যাতং। ত্ৎপর্য্যায় গুণা যথা ৷ শাকস্তরীয় কথিত গডাখা রোমক তথা ৷
গডাখা লঘু বাতম মত্যুক ভেদি পিত্তল ৷৷ তীক্ষ ব্যবাধি
সুক্ষণাভিষ্যনি কটুপাকি চ ৷৷
ইতি ভাবপ্রকাশঃ ৷৷

भाकरवागाः भूः शानाकः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥

শাকরাজঃ পু॰ বাস্তৃক । রাজনির্ঘন্টঃ ॥

শাকলঃ) পুণ শকলেন প্রোক্ত-শাকলকঃ > মধীযতে শাকলা স্তে-যাণ সজ্যো হকো যোষো বা । পরম্পরাসম্বন্ধো হক্ষঃ । ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী ।।

শাকলিকঃ ত্রি শকলসম্বন্ধী।
শকল কর্দমাভ্যা মুপসংখ্যানং।
শাকলিকঃ কার্দমিকঃ। আভ্যা
মণপীতি বৃত্তিকারঃ। শাকলঃ।
কার্দমঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী
শাকবিল্বঃ পুং বার্তাঙ্গঃ।ইতি
জটাধরঃ।।

শাকবিল্বকঃ পু॰ বার্তাঙ্গঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

শাকবীরঃ পু॰ ৰাস্তৃকশাকঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ জীবশা-বঃ। ইতিরাজনির্যন্টঃ॥ শাকবৃক্ষঃ পু॰ তরুবিশেষঃ। সেগোন ইতি ভাষা। ইতি রক্ধমালা॥ অস্য পর্য্যায় গুণো শাকশব্দে জন্ধবারী॥
শাকশাকিন•) ইতি হেসচন্দ্রঃ॥
শাকশাকিন•) ইতি হেসচন্দ্রঃ॥
শাকশোকিন•) ইতি হেসচন্দ্রঃ॥
শাকশোকিন•) ইতি হেসচন্দ্রঃ॥
শাকশোকিন•) ইতি কেসচন্দ্রঃ॥
শাকশোকিন•) ইতি কিন্তী॥
শোকশোকী দ্রী জীবন্তী॥
ডৌকুপঃ॥ বার্ত্তাঙ্গঃ। ইতি রা-

জনির্ঘন্টঃ।। শাক। স্ত্রী হরীতকী। ইতি কে-চিৎ।।

भाकाश्रः क्री शळ्यूभांकि। इंछामहः ॥ राक्षनर्यागाः शळ्यूभांकि भाक्षम राघाः । आकिना
क्लम्लाकि श्रदः। यमुकः। मृलशळ कत्रीताश्र क्लाकाशिकाःकः । षक् यूभाः कत्रकरेश्व भाकः मनिविधः य्यूछः॥ छळ मृलः
मृलकारमः। शळः शरोलारमः।
कत्रीतः रःभाक्त्रामि। अशः रवळारमः। क्ला अग्नाश्राकः। काएः छल्लाकिनाछी। अधिकाएः छल्लाकिनाछी। अधिकाएः छल्लाक्ति। अधिकाएः छल्लाक्ति। अधिकापः छल्लाकिनाछी। अधिकाविश्व इंछि क्रिटि। षक् माजुलूकारमः। शून्नाः रकारिमाता-

দেঃ । করক ছিত্রকা। শক্যতে ভোক্ত মনেনেতি শাক। শাতি সামর্থ্য তনুকরোতি শোতনুক-রণে বাহল্যাৎ কঃ শাক মিত্য-ন্যে। ইভি তট্টীকাষা ভরতঃ।। শাকাষ্যঃ পুং শাক্তবৃক্ষঃ। ইভি রত্তমালা।। অস্য পর্যায় শুণো শাকশন্দে অন্তব্যো।। শাকাক ক্লী মরিচং। ইভি রাজ-নির্যুক্টঃ।।

শাকাম ক্লী বৃক্ষামণ। ইতি রাজ-নির্বনটঃ।।

भाकाञ्चरज्ञन॰ क्वी চুক্ক॰। ইতি ब्राक्षनिर्यन्हेः॥

শাকালাবুঃ স্ত্রী রাজালাবুঃ।ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

भाकिनी छी भाक्युकावृनिः। यथा। भक्षः भाकिनी गादा काल मण्णमनः वनः। अन्भः भर्वत्वा त्राका पूर्जित्म नव वृष्ठ-यः॥ भक्दो धानगापितश्नषा-द्राद्याभकीताः। भक्षः भूष्णः क-वाः कन्मः नावाः मः स्वपकः छथा । भाकः यिष्ध मूक्तिकः छक्र वि-प्राट्याखतः॥ ইकि देवत्मा-क भाक यागार भाकिनी गृश्-वािका भाकामगश्ताद्वादनन । गा-

वा पूषापिन।। काल॰ ग९मा।-मार्द्रावन। अञ्चलन यश्नान-দত্যাগঃ ঋণাদিলাভেন। ব্যযা-धिका निव्छा। ह। दन॰ कल भू-न्नामगर्द्रावन । अन्तर वर्षक-**रमभः मग्नाल भान्कामगञ्जाल**-न । পर्वटा रेगितिक मृशामग्राहत-<u> ৰেন। রাজা ভৈক্ষাদিনা। ইত্যা-</u> क्रिकछब् ।। 🛊 ॥ मूर्गाया अनू हती বিশেষঃ। যথা। ডাকিনী যোগি-নী চৈব খেচরী শাকিনী তথা। দিক্ষু পূজ্যা ইমা দেব্যঃ সুসিদ্ধ্যঃ कलमायिकाः॥ ইতি काजायनी-कन्नः ॥ बन्ना विक् न्ह इन्ह ने ने न त्रक मनानिवः। ७७: शतनित्रा দেবি ষট্ শিবাঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ ॥ मृलाशास्त्र जू बनान जाकिनी गिर्छ नारम् । गर्वे वाक्ती युक्ता वामि माखः मविष्मूकः॥ স্বাধিষ্ঠানাখ্য চক্রে তু সবিষ্ণু রাকিণীণ তথা। বাদিলান্তণ প্রবি-नामा नाट्ये जू मिर्शृत्रक ॥ ডাদি ফাস্তার্ণ সহিত ক্রদ্রঞ্চ লা-কিনী॰ তথা। অনাহতে কাদিঠা-ন্ত ঈশ্বর কাকিনী তথা।। বি-শুদ্ধাখ্যে মহাচক্রে যোডশস্বর म॰यूज॰। मनानिव॰ नाकिनीञ्च

বিন্যদেৎ পূৰ্ববত্তঃ ।। আজ্ঞা চক্ৰে তুদ্দেবেশি হ ক্ষ বৰ্ণ সমন্থি-তং ৷ পরং শিবং ব্রহ্মৰূপং হাকি-নী সহিতং ন্যদেৎ ॥ ইতি তারা-ন্যাসভেদঃ। ইতি তন্ত্রসারঃ ।। শাস্ত্রণঃ ত্রি প্রোত্তাপী। ইঙি শব্দমালা।।।

শাঙ্গনঃ পু॰ পশুপক্যাদিকপ-শঙ্গনদারা মনুষ্যশুভাশুভনি-कायक अष्टः । ज्यारमो क्षा-কৌ ৷ শুভাশুভ জ্ঞান বিনিৰ্গ-যায হেতু নৃ ণা॰ যঃ শঙ্গনঃ স উক্তঃ। গতিঃ স্বরালোকন ভাব टिको॰ म॰कीर्जियात्मा विशमा-দিকানা ।। লোকো श्यूना শा-ঙ্গন সংজ্ঞকেন জ্ঞানেন বিজ্ঞাত **!** সৰস্তকাৰ্যাঃ। নাপাৰকুপে গ-ভতি প্রসর্পন্ শাস্ত্রণ ছি দিব্যা দৃগতীন্ত্রিষেবু॥ ইতি বসম্ভর।-बाजभाजदन ३ वर्गः॥ শান্ত্ৰিকঃ পুণু পক্ষিত্তা।পা-কিষারা ইভি চিডিমার ইভি চ ভাষা। তৎপৰ্যাষঃ। জীবান্ত-কঃ ২ । ইত্যমরঃ ।। भाकत्मरः भू जूषुमशको । रेिंछ त्राजनिर्घण्डः ॥ मननम-

यक्षिनि जि ॥

শাঙ্গন্তলেযঃ পু॰ ভরতরাজঃ। ইতি জটাধরঃ॥ শঙ্গন্তলাসম্ব-দ্বিনি ত্রি॥

শাঙ্গলিকঃ ত্রি শঙ্গলান্ হস্তি য়ং।
শঙ্গলশব্দাৎ ঠক প্রত্যযেন নিপ্রায়ঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী ।।
শাক্তরঃ পুণ অনজ্বান্। ইতি হেমচন্দ্রঃ ।।

শাক্তঃ ত্রি শক্তি দেবতা যস্য সঃ । শক্ত্যুপাসকঃ। অস্য প্রশংসা যথ। । স্বৰ্গে মৰ্ত্যে চ পাতালে নাস্তি শাক্তাৎ পরঃ প্রিয়ঃ। সৌরাণাণ গাণপত্যানাণ বৈক বানা॰ তথৈব চ ।। তদক্তে চৈব শাক্তাঃ স্যুঃ ক্রমশঃ ক্রমশঃ श्रिय । भृगू पिति वतादतादर নাস্তি শাক্তাৎ পরো জনঃ ॥ শাক্তোপি শহরঃ সাকাৎ পর बन यक्पान्। जात्राधिन যেন কালী তারা ত্রিভূবনেশ্বরী ॥ रवाजनी टेंक्व माजनी हिमा চ বগলামুখী। আরাধিতা ম-হেশানি স শিবো নাত্র সংশযঃ ॥ অতিগোপ্য॰ মহেশানি শা-ক্তানা পর্ম পদ। যো জা-নাতি মহীমধ্যে স শিবে৷ নাত্ৰ म॰শयः ॥ बकामार्किङ शामा-

জ্ঞ বো ভজেৎ সতত মুদা। म बाठाित्रकात्नम मुक्ति म-ন্দির মেব হি ৷৷ পার্বতীচরণ দ্বন্দু ভজনা কিন্ধরে। ভবেৎ । স্বৰ্গভোগশ্চ মোক্ষশ্চ শাক্তা-না॰ ন ভবেৎ কিমু ॥ শাক্তানা-ক্ষৈব নিন্দা যে ঙ্গৰ্বস্তি হি ন-রাধমাঃ। তেষা॰ লোহিতপান॰ বৈ স্বস্থিতি ভৈরবীগণাঃ ৷৷ ভৈর-वा देन्हव देखत्रवाः मना हि॰मस्डि পানরান্। শাক্তান্ হি॰সন্তি গ-র্জন্তি নিন্দন্তি বহুজন্নকাঃ ।। ছি-নত্তি তেষাণ দেবেশি শিরাণস হরবল্লভা। শাক্তান। মুক্তমো না-স্তি স্বর্গে মর্ত্যে রসাতলে ॥ শা-ক্তস্ত শঙ্করে৷ জ্রেয স্ত্রিনেত্র শ্চ-ব্রুশেখরঃ। স্বয়ণ গঙ্গাধরো ভূত্বা विरुद्ध किंडियश्वल ॥ किंदी॰ প্রতি শিববাক্যণ। মদণশা কৈচব যে ভূতা স্তে শৈবা নাত্ৰ সংশযঃ। স্থদ শা কৈচৰ শাক্তাশ্চ সত্য বৈ গিরিনন্দিনি ॥ বহুবর্ষ সহসাত্তে শৈবাঃ শক্তি পরাষণাঃ। শাক্তা বৈ শঙ্করা দেবি যস্য কস্য ঙ্গলো-ভবাঃ ।। চাণ্ডালা বান্ধণাঃ শূডা ক্ষত্রিয়া বৈশ্য সম্ভবাঃ। এতে শা-ক্তা জগদ্ধাত্রিন মনুষ্যাঃ কদা-

हन ॥ शणांखि बान्यान् लांकि কেবল॰ কর্মা চক্ষুষা। ত্রাহ্মণৈঃ क्विरिय देविनाः मृदेख तत्र ठ का-তিভিঃ ৷৷ বামমার্গ প্রভাবেণ ক-ৰ্ত্তব্য॰ জপ পূজন । যে শক্তি। ব্ৰাহ্মণা দেবি ফতিয়া ব্ৰাহ্মণাঃ স্তাঃ।। বৈশ্যাশ্চ বান্ধণা দেবি সর্বে শূতাশ্চ বান্দণাঃ। বান্দণাঃ শঙ্করা শ্চণ্ডি ত্রিনেত্রা শ্চন্দ্রশে-খরাঃ।। ইতি মুগুমালাতন্ত্রে ২। ৩।৪। १। পটলাঃ।। 🕸।। শাক্তা এব দ্বিজাঃসর্বে ন শৈবা ন চ বৈ-ক্ষবাঃ । উপাসন্তে যতে। দেবীণ গাযত্রীণ পরমাক্ষরীণ।। ইতি নি-ৰ্বাণতন্ত্ৰে ৩ গটলঃ ৷৷ শক্ত্যুপাস-নানন্তর মন্যোপাসন নিষেধাে যথা। অস্যাশ্চারাধন হ্রত্তা না-नामाज्ञाधन॰ চরে९। অनामा স্মরণাদেবি যোগিনী শাপ মাল-ভেৎ ৷৷ ইতি গন্ধৰ্বতন্ত্ৰে ২ পটলঃ ॥ 🕸॥ তস্য আভ্যন্তর স্নান॰ य-থা। শাক্ত মাভ্যন্তর স্নান মুক্ত॰ গ্রীপঞ্চমী মতে। স্নান প্রকারে। দ্বিবিধো বাহ্যাভ্যস্তর ভেদ্তঃ ।। আন্তরে স্নান মভ্যন্ত রহস্য यि मान्त्रा । कथयायि ভय-धरेखा ठजूर्रग कलाश्वस्य ॥ म-

ষিত্রথ মনুশৃত্য চরণ ত্রথ মধ্যতঃ

। সুবক্ষণ সচিদানন্দ প্রবাহণ
ভাবগোচরণ ।। বিমুক্তিসাধনণ
পুণসাণ স্মরণাদেব ধ্যোগিনাণ ।
ভেন্ন প্লাবিত মান্মানণ ভাব্যেৎ
ভ্যশাস্ত্রযে ।। ইতি বিশ্বসারতন্ত্রে ২ পটলঃ ।। ৠ ।। তস্য সশ
বিশেষো যথা । তর্জ্জন্যা রজ্তণ
ধার্য্যণ স্বর্ণণ ধার্য্য মনাম্যা । এষ
এব সশঃ শাক্তে ন দর্ভো বন
সম্ভবঃ ।। ইতি শ্যামারহস্যণ ।।
শাক্তীকঃ পুণ শক্তিধারকঃ । তৎগর্যায়ঃ । শক্তিহেতিকঃ ২ ।
ইত্যমরঃ ।।

শাক্ত্যঃ ত্রি শক্ত্যুপাসকঃ। ইতি শক্তিশব্দাৎ ফ্য প্রত্যাযেন নি-ষ্পন্নঃ।।

শাক্যঃ পু॰ বুদ্ধঃ । ইতি হলা-যুধঃ ।।

শাক্যমুনিঃ পু॰ শাক্যবংশাবতীর্ণবুদ্ধমুনিবিশেষঃ । ইত্যমরঃ ।।
অস্য সপ্তপর্য্যায়া গোতম শব্দে
দ্রুষ্টব্যাঃ ।। পর্য্যাযান্তরং যথা ।
থজিৎ ২ শ্বেতকেতুঃ ও ধর্মকেতঃ ৪ মহামুনিঃ ৫ পঞ্চজানঃ ৬
সর্বদশী ৭ মহাবোধিঃ ৮ মহাবলঃ ৯ বহুদ্ধমঃ ১০ ত্রিমূর্ত্রিঃ ১১

১২ শকঃ ১৩। ইতি
শব্দরত্বাবলী । শাক্যবংশদ্বাৎ
শাক্যঃ শাক্য শ্চাসৌ মুনি শ্চেতি শক্যমুনিঃ । তথাহি শাকো
বৃক্ষবিশেষঃ তত্র ভবা বিদ্যমান
নাঃ শাক্যাঃ । পিতুঃ শাপেম
কেচিদিক্ষাসবংশ্যা গৌতমবংশজ কপিলমুনে রাশ্রমে শাক্
বৃক্ষে ক্রতবাসাশ্চ শাক্যা উচ্যভে । তদুক্তং । শাকবৃক্ষ প্রতিভ্রমণ বাসং যন্মাৎ প্রচক্রিরে ।
তন্মাদিক্ষাসবংশ্যান্তে ভূবি শাক্যা ইতি শ্রুতাঃ ।। ইত্যমরটীকাষাণ ভরতঃ ।।

শাক্যসিংহঃ পু॰ শাক্যমুনিঃ। ইত্যমরঃ।।

শাক্রী স্ত্রী দুর্গ। যথা। ইন্দ্রাণী
ইন্দ্রজননী শাক্রী শক্রপরাক্রমা। বজু। কুশকরা দেবী বজু।তেনোপগীযতে। ইতি দেবীপুরাণে দেবীনিরুক্তাধ্যায়ঃ।।
শক্রপত্নী চ।।

শাথ ঋ ব্যাপ্তৌ। ইতি কবি-কল্পদ্রমঃ।। ঋ অশশাথৎ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শাখঃ পু॰ কার্ত্তিকেষঃ। যথা। অবাপ চানিলাৎ পুত্র মগ্নিতু- ল্য গুণ পুনঃ। অগ্নিপুল্রঃ স্বনা-রস্ত শরস্তমে ব্যজায়ত।। তস্য শাখো বিশাখন্ট নৈগমেয়ন্ট পৃষ্ঠজঃ। অপত্যং ক্তিকানাঞ্চ কার্ত্তিকেয় স্ততঃ শ্রুতঃ।। ইতি নাৎস্যে ৫ অধ্যামঃ।। ছিল্তিঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিক।।।

শাখা শ্রী বৃক্ষাঙ্গবিশেষ । ডাল ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায় । লতা ২ । ইত্যমর ।। লক্ষা ৩ । ইতি জটাধর ।। শিখা ৪ । ইতি ভর-তধৃত মেদিনী ।। পক্ষান্তর ।। বাহঃ ।। বেদভাগঃ । ইতি মে-দিনী।। গ্রন্থভেদঃ। ইতি ধরণিঃ ।। অন্তিকঃ। ইতি বিশ্বঃ ।।

শাখাকন্টঃ পু॰ সুহীবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শাখানগর ক্লী মূলনগরাদন্যৎপুর । ইত্যমরঃ ॥ মূলনগরে ২সন্মিতস্য জনে । ঘদ্য স্থানায় মূলনগরস্য সনীপে ২ক্কে বা ষদন্যৎ পুর নগরাস্তর ক্রিষতে
তথশাখানগর মূলনগরস্য তরুষ্থানীষ্দ্য শাখেব । অভিষ্যদির রমণমপ্যত্র। স্যাদভিষ্যদির
মণ শাখানগর মিত্যপি । ইতি
ত্রিকাওশেষঃ ॥ ইতি তট্টাকা-

যাণ ভরতঃ।। অপি চ। আরভ্য মূলনগরাদপরণ নগরণ হি ষৎ । তদভিষ্যন্দিরমণণ শাখানগর মিত্যপি। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শাখাপিত্তঃ পুণ পাণিপাদাণস্থ মূলদাহঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শাখাপুরণ ক্লী শাখানগরণ। তৎপর্যায়ঃ। উপপুরণ২। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

गाथामा खी वृक्षामा। बाजनिर्यन्धः॥

শাখামৃগঃ পু॰ বানরঃ। ইত্য-মরঃ॥

শাখারত্তঃ পু॰ স্বশাখাণপরিত্য-জ্য শাখান্তরাধ্যযনকর্তা। তৎ-পর্য্যাযঃ। অন্যশাখকঃ ২। ইতি হেমচন্দ্রঃ ।।

শাখাশিকা স্ত্রী বটাদীনা॰ শা-খাসম্বন্ধিশিকা। নামা ইতি খ্যা- তা। তরে। মূলাদারত্য অগ্রণ যাবৎ গতা লতা গুড্চ্যাদিঃ। ইতি ভরতঃ ।। তৎপর্যায়ঃ। অবরোহঃ ২। ইত্যমরঃ।। শাখী পুণ বৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ।। বেদঃ।। তুরুদ্ধাখ্যজনঃ। ইতি মেদিনী ।। রাজভেদঃ। ইতি হেমচক্রঃ।।

भारथार्वेः भू॰ वृक्तविरमसः। भान-ওড়া ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাযঃ। পিশাচদ্রঃ ২ পীতফলঃ ৩ কর্ক-শচ্ছদঃ ৪। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। ভূতবৃক্ষঃ ৫ সকটঃ ৬ অক্ষধরঃ ৭। ইতি ভূরিপ্রযোগঃ।। গবা-ক্ষী ৮ ঘূকাবাসঃ ৯ ৰক্ষপত্ৰঃ ১০ পীতঃ ১১ কৈশিক্যোজঃ ১২ ক্ষীরনাশনঃ ১৩। অস্য গুণাঃ। তিক্তত্ব॰। উফত্ব॰। পিত্তকারি-ত্ব॰ । বাতহারিত্বঞ্চ । ইতি রাজ-निर्घन्छैः ॥ अनि ह। नार्थाछैः পীতফলকো ভূতাবাস্ক খরচ্ছ-**मः । गा**र्थाटी त्रक्लिखार्गा বাতশ্বেমাতিসারজিৎ 11 ইতি ভাবপ্রকাশঃ ৷৷

শাখ্যঃ ত্রি শাখাসম্বনী। শাখা-শব্দাৎ ফ্য প্রত্যযেন নিষ্ণান্ধঃ॥ শাঙ্করঃ ক্লী ছন্দোভেদঃ। ইতি মেদিনী । অস্য ৰূপাস্তর । শাকরং শার্তরঞ্চ ।
শাক্ষরঃ পুং বলীবর্দাঃ । ইতি
মেদিনী ।।
শাক্ষরিঃ পুং কার্তিকেয়ঃ । গণেশাঃ ইতি মেদিনী ।।
শাক্ষ্টী ত্রী শক্ষোচনৎস্যঃ ।
ইতি শক্ষরত্বাবলী ।।
শাড্যঃ ত্রি শঙ্খসম্বন্ধি । শঙ্খশকাৎ কপ্রত্যাবেন নিশ্পন্ধঃ ।।
শাঙ্খিকঃ পং জ্যাভিবিশেষঃ ।

শাখিকঃ পুণ জাতিবিশেষঃ।
শাখারি ইতিভাষা। তৎপর্যাষঃ। কাষ্বিকঃ ২। ইত্যমরঃ।।
শন্ধকারঃ ৩ কাষ্মজকঃ ৪। ইতি
শব্দরত্বাবলী ।। শন্ধবাদকঃ।
তৎপর্যাষঃ। শন্ধ্যায়াঃ ২। ইতি
জটাধরঃ।।

শাঙ্গুপ্ত স্ত্রী গুঞ্জা। ইতিরক্লা-মালা।।

শাটঃ পু॰ বস্ত্রভেদঃ। ইত্যমর-ভরতৌ।। যথা। দূরতঃ শোভ-লয়শাট পটাবৃদ

তাবচ্চ শোভতে মূর্থো বাবৎ কিঞ্চিম্ন ভাষতে। ইতি চাণক্যং। শাটকঃ পুংক্লী পটঃ। নাটক-ভেদঃ। ইত্যমরভরতৌ।। শাটিকা স্ত্রী শটী। ইত্যমর- টীকাষাণভরতঃ ॥ গাটী পুণ স্ত্রী বস্ত্রভেদঃ। শাডী ইতি ভাষা। ইত্যনরঃ ॥ অস্যা নির্মাল্যত্বণ নির্মাল্য শব্দে জ-ষ্টব্যণ ॥

গাট্যায়ন ক্লী প্রকৃতকর্মাবৈগু-बार्ञ्यमयनार्थत्यायः । यथा । যতু প্রক্তকর্মা বৈগুণ্য প্রশম-নায় শাট্যায়ন হোমাভিধান ভবদেব ভট সম্মত তন্ম প্রামা-ণিক তত্মাদপি মহাপ্রামাণিকৈ ভটনারাষণ চরণৈ গোভিল-ভাষ্যে তদপ্রমাণীক্লতত্বাৎ। ছ-ন্দোগপরিশিষ্টেপি প্রাযশ্চিতা-র্থ প্রকার ত্রষ মাত্র মুক্ত। যথা । ষত্র ব্যাহ্নতিভি র্হোমঃ প্রা-ৰশ্চিত্তাত্মকো ভবেৎ। চত্সু ন্তত্র বিজ্ঞেষা জ্রীপাণিগ্রহণে যথা।। অগি বাজ্ঞাত মিত্যেষা প্রাজাপত্যাপি বাহুতিঃ। হো-তব্যা ত্রি র্বিকল্পোষণ প্রাযশ্চিত্ত বিধিঃ স্মৃতঃ ।। ত্রি র্বিকন্স ইত্য-নেন কন্নান্তর নিষেধাৎ গো-ভিলীযকর্ম্মণি শাট্যায়ন হোমো ন যুক্তঃ। কিন্তু ব্যস্ত সমস্ত ম-হাব্যাহাতিভি শতস্ভিঃ প্রায-শ্চিত্ত হোমো যুক্তঃ। বিশারদ

প্রভৃতবাে প্যেব । শাট্যাযন হোমস্য সমূলত্বেপি শাখ্যন্তরী-যত্ব ৷ ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব ৷ ৷ শাট্যাযনঃ পুং মুনিবিশেষঃ ৷ ইতি পুরাণ ৷ ৷

শাঠ্য॰ ক্লী শঠত।।তৎপৰ্য্যায়ঃ। কপটঃ ২ ব্যাজঃ ৩ দম্ভঃ ৪ উপ-ধিঃ ৫ ছশ্ব ৬ কৈতব ৭ সস্তিঃ ৮ निक्षिः २। ইত্যमद्रः ॥ निव অমথার্থব্যবহারে। শঠ বধে ক্লেশ কৈভবে তালব্যাদিঃ অল্ তস্য কর্ম শাঠ্য প্রাঃ। কপটাদি ষট্ক ছদ্মনি সমৃত্যাদি ত্রবং চিত্তকৌটিল্যে ইত্যেকে। কপ-টাদি ষট্ক॰ বঞ্চন মাত্র ফল॰। **স**সৃত্যাদি ত্রিকম্ব হি॰সাফল মি-তি ভেদঃ। ইতি সর্বানন্দে। ম-ধুশ্চ। নবৈবৈকার্থ। ইতি বহ-বঃ। ইতি ভরতঃ॥ অপি চ। অস্ত্রিযাণ কপটে। ব্যাজ উপধি ৰ্দম্ভ এৰ চ। কূট• কন্ধ• ছল• ছন্ম মিষ কৈরব কৈতব॰।। অথ শা-ঠ্যঞ্চ শঠতা স্বসৃতি নিক্কতিশ্চ म। शि॰माফलে চতুষ্ক॰ मा। ९ শাঠ্য পর্য্যায় ঈরিতঃ 11 পূর্বঃ কপটপৰ্য্যায়ঃ কলে বঞ্চন মাত্ৰ-কে। উভযো ব্লেক পর্য্যায ইতি কেচিৎ প্রচম্মতে ৷৷ ইতি শব্দ-রত্নাবলী ৷৷

শাত ঋ ও স্লাষে। ইতি কবিকলক্রমঃ।। ঋ অশশাতৎ। ও
শাততে গুণিনং গুণী। অন্তস্থ
তৃতীয় যুক্তাদি রয় মিতি কস্যচিদ্দুমঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
শাত্তলঃ পুং শাদ্বলঃ। ইতি কে-

শাণ ক্লী শণনির্মিতবন্ত্রণ। যথ।
। ক্ষোমণ শাণ বা বান্ধণস্য কাপাসণ ক্ষত্রিয়স্য আবিকণ বৈশ্যাস্য। ক্ষুমা অতসী তস্যা ইদণ
ক্ষোমণ তসরাদি। শাণণ শণতন্ত্র
ভবণ তদুভয়ণ বান্ধণস্য। ইতি
সংস্কারতত্ত্বণ।।

हिद् ॥

শাণঃ পু কষপটিকা। কষ্টিপাতর ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ।
নিকষঃ ২ কয়ঃ ৩। ইত্যমরঃ॥
শানঃ ৪ নিকসঃ ৫ কসঃ ৬।
ইতি ভরতঃ।। আকষঃ ৭। ইতি
শব্দরত্বাবলী ॥ মাষচতুর্ফয়ুণ ।
চারিমাষা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। নিক্ষঃ ২ টঙ্গঃ ৩।
ইতি বৈদ্যকপরিভাষা।। লৌহাদীনা নিকষঃ। শানপাতর
ইতি ভাষা। ইতি মেদিনী।।

শাণাজীবঃ পু॰ অন্ত্রমার্জকঃ । যথা । শাণাজীবঃ শস্ত্রমার্জো ভূমাসক্তো ২সিধাবকঃ । ইতি হেমচম্রঃ ।।

শাণিঃ পুণ পউবৃক্ষঃ। যথা।
পটে রাজশণঃ শাণি শিচমিঃ ক
ক্থটপত্রকঃ। ইতি শব্দমালা।।
শাণিতঃ ত্রি তীক্ষীক্ষতঃ। নিশিতঃ। ক্তশাণঃ। শাণশব্দাদিত
প্রত্যে নিষ্পায়ঃ।।

শাণী দ্রী শণসূত্রমধীপটিকা।

যথা । শাণীপ্রাধাণি বন্ত্রাণি
শনীপ্রাধা মহীরুহাঃ । শূদ্রপ্রাধা স্তথা বর্ণা ভবিষ্যন্তি কলৌ যুগো। ইতি বিষ্ণুপুরাণে ৬
অংশ ১ অধ্যায়ঃ ॥ শাণী শণসূত্রমধী পটিকা তন্তুল্যানি বস্ত্রাণি । ইতি ভট্টীকা ॥ প্রাবরণাস্তরণ তামুইতি ভাষা। ইতি
মেদিনী ॥ ছিদ্রবন্ত্রণ ইতি হেমচন্দ্রঃ ॥ হস্তকটাক্ষাদিসূচনা ।
ইশারা ইতি পারস্যভাষা। ইতি
শন্ধরত্রাবলী ॥
শাণীরণ ক্লী শোণনদমধ্যস্তটঃ

ो। मर्मद्रीनमीखिः । देखि विश्वः ॥ भाषिलाः पू॰ विखवृकः। ইত্য-यतः ॥ वङ्किरछमः ॥ मूर्विवित्न-ষঃ। ইতি মেদিনী।। সতু গোত্ত-কারঃ ভক্তিসূত্রকারশ্চ। তৎ-मृज्जायामात्मात्का यथा। अ-शहा शत्र (एवः श्रीयदशयत সূরিণা। শাণ্ডিল্য শতসূত্রীয়ণ ভাষ্য মাভাষ্যতে ২ ধুনা ৷৷ শাত॰ ক্লী সুখ ।। তদ্বতি ত্রি । ইত্যমরঃ।। ক্রশঃ। ইতি বিশ্বঃ।। শাতঃ ত্রি দুর্বলঃ।। নিশিতঃ। इं ि त्यिनि ॥ श्रुष्टु तः। इं छा-यतः ॥ শাতঙ্গম্ভ॰ ক্লী কাঞ্চনণ।। ধুস্তুরঃ । इंडायतः ॥ শাতসম্ভঃ পু॰ করবীরবৃক্ষঃ। . इंडि योषिनी ॥ শাতকোম্ভণ ক্লী স্বর্ণণ ইতি ভ-রত দ্বিৰূপকোয়ঃ।। শাতন॰ ক্লী কার্শ্য॰॥ বিনাশন॰। যথা। বসস্তে সর্বশস্যানাণ জা-যতে পত্ৰ শাতন[°]। মোদমানা-শ্চ তিষ্ঠস্তি যবাং কণিশ শালি-नः॥ ইভি সারমঞ্জরী ॥ শাতগতকঃ পু॰ চক্রপ্রকাশঃ। यथा। हिल्का को मूमी जा ९-

ন্না প্রকাশো দ্যোত আতপঃ। অকন্ধা চন্দ্ৰিকাষাঞ্চ প্ৰকাশে শাতপত্ৰকঃ।। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা শাতভীরুঃ পু॰ यদনমালী। ম-লিকাভেদঃ। যথা। শাতভীরু र्जजन्मी जृमिमत्या श्कॅशानि-का। रेकि त्रव्रमाना।। । ইতি मिक्का खरको यूनी ॥ শাতলা স্ত্রী সাতলা। চর্ম্মকষা ইতি খ্যাতা। ইত্যমরটীকাষাণ ভরতঃ ৷৷ শাত্রব॰ ক্লী শত্রভাবঃ॥ শত্রুস॰-रिज्धि। रेजि यिनिनी।। শাত্রবঃ পু॰ শৃত্রুঃ।ইত্যমরঃ॥ मामः भू॰ कर्मभः।। मन्भः। ইত্য-बदः ॥ শাদহরিতঃ ত্রি শাদ্বলঃ। ইত্য-মরঃ ॥ শाष्त्र जि नेवज्नदश्नादम्भः। ইত্যমরঃ।। শাদো নবতৃণ বি-দ্যতে হত্ত শাদ্বলঃ। শস্পবাচিন এব শাদশকাদ্বলঃ স্যাৎ ন তু পঙ্কবাচিনো খনভিধানাৎ ৷ ইতি ভট্টীকাষাণ ভরতঃ।। শান এ তেজে। ইতি কবিকল্প-क्षेत्रः ॥ भान जिक्की कर्नण । व

শীশাণসতি শীশাণসতে খ্রা কর্মকারঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।। শানঃ পুণ শাণঃ। ইত্যমরটীকা-যাণভরতঃ।।

শানপাদঃ পু॰ পারিপাত্রপর্বতঃ।।
চন্দনঘর্ষণপাষাণঃ। চন্দনপিতি
ইতি ভাষা। ইতি মহাভারতে
হরিব॰শঃ।।

শানী স্ত্রী ইন্দ্রবারুণী। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।

শাস্তঃ ত্রি উপশন-প্রাপিতঃ। প্রাপ্তোপশনঃ। ইতি ভরতঃ।। তৎপর্য্যায়ঃ। শনিতঃ ২। ইত্য-মরঃ।। শ্রাস্তঃ ৩ জিতেন্সিয়ঃ ৪ । ইতি হেমচন্দ্রঃ।। শমান্বিতঃ ৫ । ইতি মেদিনী।।

শান্তঃ পুণ অভিযুক্তঃ 11 রসভেদঃ
1 ইতি মেদিনী 11 শান্তরস্সা
লক্ষণাদি যথা 1 শান্তঃ শমঃ
স্থামিভাব উক্তমপ্রকৃতি র্মতঃ 1
কল্দেন্দু সুন্দরক্ছায়ঃ শ্রীনারায়ণ
দৈবতঃ 11 অনিত্যন্নাদিনাশেষ
বস্তুনিঃসারতা তু যা 11 পরমার্থ
স্থাগ্রেম হরিক্ষেত্র তীর্থরম্য
বনাদ্যঃ 11 মহাপুক্ষ সঙ্গাদ্যা
ভ্রেম্যান্দীপনক্পিণঃ 1 রোমা-

क्षामा कानुजावा ख्या गु र्वा-ভিচারিণঃ ॥ निर्दंग इर्य अत्र मिं ভ ভ ज न यो न यह । यथो । तथा। ন্ত শ্চরত স্তথ। ধৃতজরত্কস্থা न्त्रमाध्राधः म्वामक म्राकी-जूकक मनय॰ मृखेमा रेज न्भान-রৈঃ। নিৰী জীক্তত চিৎসুধা র-সমুদা নিজায়মাণস্য মে নিংশ-ক্ষণ করটঃ কদা করপূটী ভিক্ষাণ বিলুঠিষ্যতি ৷৷ পুষ্টিস্ত মহাভা-त्रञारेने जरूरा।। नितर्कात ৰূপদ্বাৎ দ্যাবীরাদি রেষ নো। **मयावीदारमे हि की**मृতवाइना-(म) अखता गलयवज्ञामानुताना-দে রস্তে চ বিদ্যাধর চক্রবর্তি শ্বা-म्यारश्च पंर्यनामहक्राद्वाश्रमात्या ন দৃশাতে। শাস্তস্ত সৰ্বপ্ৰকারে-ণাহকার প্রশমৈক ৰূপদ্বান্ধ ত-ত্রান্তর্ভাব মর্হতি। অতশ্চ নাগা-নন্দে শান্তরস প্রধানত্ব মগান্ত॰ ।। नन् न यव मूद्द न मूथ न চিন্তা ন ছেষ রাগৌ ন চ কাচি-দিছো। রসঃ স শাস্তঃ কথিতো मूनीरेखः मर्दिषु ভाবেषु ममथ-মাণঃ !৷ ইত্যেব° ৰূপস্য শাস্ত্ৰস্য মোক্ষাবস্থায়া মেবাতা স্বৰূপাপ-ত্তি লক্ষণায়াণ প্রাদুর্ভাবাৎ। তত্ত

अक्षार्यामीना य**ভाবा** कथ॰ রসত্ত্ব মিত্যুচ্যতে যুক্ত বিযুক্ত দশাষা মবস্থিতো যঃ শমঃ সএব ষতঃ রসতা মেতি তদস্মিন্ স-ঞ্চার্য্যাদেঃ স্থিতিশ্চ ন বিরুদ্ধা। ষ শ্চান্মিন্ সুখাভাবো ২প্যুক্ত ন্তদ্য বৈষ্ব্যিক সুখপরত্বাম বি-রোধঃ।। উক্ত॰ হি। যচ্চ কাম-मूथ॰ লোকে यक मिवा॰ यह।-সুখ । তৃফাক্ষয সুখস্যৈতে না-ৰ্হতঃ ষোডশী কলা ।। সৰ্বা-কার মহন্ধার রহিতত্ব এজস্তি চেৎ। অত্ৰাম্ভৰ্তাৰ মহন্তি দ্যা वीवान्य खना ॥ जानियका९ ধর্মবীর দানবীর দেবতাবিষয-রতি প্রভৃত্যঃ। তত্র দেবতা বি-यया द्रां वंशा। कमा वादानगा बिश् मूत्रधूनी त्राथिम वमन् व-সানঃ কৌপীন শিরসি নিদ্ধা-नाञ्जल भूहे । ज्यस भीती-নাথ ত্রিপুরহর শস্তো ত্রিনম্বন প্রসীদেতি ক্রোশন্নিষিষ মিব নেষ্যামি দিবসান্।। ইতি সা-হিত্যদর্শণে ৩ পরিচ্ছেদঃ ॥

শান্ত[্]ব্য বারণ । ইতি মেদিনী।। শান্তনবঃ পুণ শান্তনুরাজপুত্রঃ । ভীষ্মঃ। ইতি ত্রিকাগুণেষঃ।। শান্তন্ঃ পু॰ দাপরযুগদ্য চন্দ্র-ব॰শীযৈকবি॰শরাজঃ। সতু গ-ঙ্গায়াণ ভীয়াণ জনমামাস। তস্য পিতা প্রতীপঃ। যথা। জযদেন স্তত্তনযো রাধিকোতো ২যুতা ষুভূৎ। তত শ্চাক্রোধন স্তম্মাৎ দেবাতিথি রমুষ্য চা৷ ঋক্ষ স্তস্য দিলীপো ২ভূৎ প্রতীপ স্তুস্য চাত্মজঃ। দেবাপিঃ শান্তনু স্ত-স্য বাহ্লীক ইতি চাত্মজাঃ ॥ য॰ য॰ করাভ্যা॰ স্পৃশতি জীৰ্ণ যৌবন মেষ্যতি ৷ শাস্তি মাপ্ণো-তি চৈবাগ্ৰ্যাণ কৰ্ম্মণা তেন শা-खनूः ॥ वाङ्गीका भागमत्ला **২ভূৎ ভূরি ভূ**রিশ্রবা স্ততঃ। শলশ্চ শান্তনো রাদীৎ গঙ্গা-याः जीय जाञ्चतान् ॥ इंडि শ্রীভাগবতে ৯ স্কন্ধে ২২ অধ্যা-**यः ॥ ७९** शर्यायः । महाजीयः ২। ইতি জটাধরঃ ॥ প্রাতীপঃ ৩। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।। প্রতী-পঃ ৪ প্রতিপঃ ৫ । ইতি শব্দ-त्रञ्जावनी ॥ कर्क है। ইতি রত্ন-याना ॥

শাস্তা স্ত্রী লোমপাদরাজকন্যা। সাচ ঋষ্যশৃঙ্গভার্যা। ইতি রা-মাষণং । শনীভেদঃ। তৎপর্য্যা- য়ঃ। শুভা ২ ভদ্রা ৩ অপর।-জিতা ৪ জয়। ৫ বিজয়া ৬। অস্যা গুণাঃ শ্মীবৎ । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।

শান্তিঃ স্ত্রী কামক্রোধাদিপ্রশমঃ । চিত্তোপশমঃ। ইতি ভরতঃ।। বিষযেভ্য ইন্দ্রিযোপরমঃ। ইতি চণ্ডীটীকাষা॰ নাগোজীভটঃ ।। তৎপর্য্যায়ঃ। শম্থঃ ২ শমঃ ৩ । ইত্যমরঃ।। প্রশমঃ ৪ উপশমঃ ৫প্রশান্তিঃ ৬। ইতি শব্দরত্না-वनी ॥ जृकाकरः १। इंजि ए-মচন্দ্রঃ ।। তল্লক্ষণ যথা। যৎকি-ঞ্চিদ্বস্ত সংপ্রাপ্য স্বন্ধ বা যদি বা বহু। যা তুক্টি জাযতে চিত্তে भाजिः मा भमारक वृदेशः ॥ ইতি शवाश्राटन कियारवाशमारतः १६ विशासः॥ ॥ । । इति दः **महत्त्रः ॥ ८गानी वित्नवः। स्था।** রাখিকোবাচ। শান্ত্যা গোপ্যা যুত স্তৃঞ্চ দৃষ্টোহণ রাসমগুলে। वमखभूष्णभगामाः मानावान् চন্দনোক্ষিতঃ।। রত্নপ্রদীপৈ র্যু-क्रम्ठ রত্ননির্মাণমন্দিরে। রত্ন-ভূষিতভূষাচ্যোঁ রত্নভূষিত্যা স-হ।। তথা দত্তক তামূল ভূ-क्कवा॰ मुद्रा विच्छा। मह्मा

মচ্চুব্দমাত্রেণ তিরোধান ক্রতণ ত্বযা।। শান্তি র্দেহণ পরিত্যজ্য ভযাদ্দীনা দ্ববি প্রভো। তত স্তদ্যাঃ শরীরঞ্চ গুণশ্রেষ্ঠ বভূব হ।। সংবিভঙ্গ্য দ্বা দত্ত প্রেরা প্ররুদতা পুরা । বিশ্বে বিষ্যিণে কিঞ্চিৎ সত্ত্বৰূপায় ব্লিফবে॥ শু-क्षमञ्चलभारेय महालदेका भूता বিভো। স্বন্মস্ত্রোপাসকেভ্যশ্চ বৈক্ষবেভ্যশ্চ কিঞ্চন ৷৷ তপস্বি-ভ্যশ্চ ধর্মায ধর্মিষ্ঠেভ্যশ্চ কিঞ্চ-ন। ইতি ত্রন্ধবৈবর্ত্তে প্রকৃতিখণ্ডে a विशायः ॥ 🐞 ॥ मूर्गा । यथा । উৎপত্তি স্থিতি নাশেষু রজাদি बिश्वना यठा। मर्बद्धा मर्बद्धा ৰাচ্ছান্তিৰাচ্ছান্তি ৰুচ্যতে ॥ इंछि प्रवीभूतात्व प्रवीनिक्रका-शायः ॥ 🗰 ॥ श्रमानाता अहरती-श प्ः यथा पि मृ ि दे छ दिका नि छे-(र्जुमूतिजिनिवृज्धिः । यथा । य-থা শস্ত্রপ্রহারাণা কবচ বিনি-বারক । তথা দৈবোপঘাতা-না॰ শান্তি র্ভবতি বারণ ।। বাল-গ্রহ ভূতগ্রহ নরাধিপ প্রবলতর শত্র দুঃসহরোগাভিভবান্ত্ত দুঃ-यक्ष अश्लोखानि निमिखकः मा-স্তিকর্মাপি মলমাসে কর্ত্তব্য ।

শুদ্ধকাল প্রতীক্ষাধা মসহত্ত্বনা-নন্য গতিকত্বাৎ। অতএবাত্মান° সভত গোপাষীত ইতি শ্ৰুতৌ সতত মিত্যুক্ত । ইতি মলমাস-॥ তত্ত্ব॰ ॥ 🗱 ॥ উপসর্গশান্তিগ।-था यथा। এया मिट्या महावीर्या স্ত্রৈলোক্যস্যেশ্বরো ২ভবৎ। শ-ত কত্না মালত্য সুশান্তি নাম নামতঃ ৷৷ তস্যোপদর্গনাশাষ नामाक्त्रविভृषिङ। अम्रांशि মানবৈ গাঁথা গীষতে ২ত্ৰ মহীত-ला।। मनाञ्चि प्रतिता है नाञ्चः সুশান্তি॰ नः প্রযক্তি। সহিতঃ निव मछ।रेमा खरेथव वनवर्छ-॥ जिः॥ **रे**छि मार्क एक पूतार छे-ख्यमश्ख्र मगाश्चाधागः ॥ 🛊 ॥ অথাজুতশান্তিঃ। তত্ত্বাজুতনি-ৰপণ । অদ্ভুতসাগরে আধর্বণা-জুতবচন । প্রকৃতি বিরুদ্ধ মন্তুত মাপদঃ প্ৰাক্ প্ৰবোধায় দেবাঃ সৃ-জন্তীতি। তেনাপজ্জানাম ভূ-गामीना॰ शूर्ब॰ श्रजाव क्षांत्राता দেব কতৃকো ২ন্ডুত ইতি ৷ এবঞ্চ वूरधाषयभवनिश्रहोषीनाः शनि-তাগণিতত্বেন প্রক্নতানামপি য-দুৎপাতত্ব তদ্ভাক্ত । তৎকারণ-ए গর্গস্প্তা বাহস্পত্যযোঃ।

অতিলোভাদসত্যাদ্বা নাস্তিক্যা-দাপ্যধর্মতঃ। নরাপচারান্ধি-যত মুপদর্গঃ প্রবর্ত্ততে ।। ততো ২পচারালিষত মপবর্জ্জন্তি দে-ব্তাঃ। তাঃ সৃজস্ত্যন্ত্তা॰ স্তা॰ स्व मिया नाजम जृमिकान् ॥ छ-এব ত্রিবিধা লোকে উৎপাতা দেবনির্শ্মিতাঃ । বিচরস্তি বিনা-भाष कटेशः मरबाधविष्ठ **চ !! : ॥** !! তা॰ क পর॰ न দর্শযেদিত্যাহ বিষ্ণুঃ। নোৎপাত দর্শবেদিতি। তত্ৰ বেলা নক্ষত্ৰমণ্ডল নিৰূপণ ৷ यथा मीलिकायाः। आग् विजि চতুর্তাগৈ দ্যু নিশো রম্ভুতেষু স र्दियु। अभिमाधि भक्क दर्भ। य-গুলপত্ৰঃ শুভাশুভৈশ্চ ৷৷ বেলা मक्षनः। जर्गामानि ठजुक ठउ जू-त्रगामित्छायू वायू र्जदब एमरव-জ্যাজ বিশাব যাম্য বুগলে পিত্ৰ্য ष्ट्र ठानलः। विश्वापि ज्य शाञ् रेवव यूगलिशिका ज्वापुनः সর্গোপান্ত্য শতান্ত্য মূলমুগলে-भारनव्याभीश्वतः ॥ शवन महरनो নেকৌ ষোগ স্তযো রতি দোষ-দঃ। সুরপতি বরুণৌ শস্তৌ যোগ স্তধে। রতিশোভনঃ।। সবরুণ ম-क्रियाः भक् छथापि नमायूषः।

'कलिवहरिजः मिट्या वायू उषा-ি গ্নিযুতোষুপঃ ।। যন্মগুলেন্ডুত জাত॰ শাস্তি স্তদ্দেবতাশ্রধা । ভথা শান্তিদ্বয় কাৰ্য্যণ মণ্ডল-बयकाखूटा ॥ 🛊 ॥ विक्थर्त्मा-ত্তরে। গ্রহক বৈক্তত দিব্য আ-স্তরীক্ষণ নিবোধ মে। উদ্ধাপাতো **मिশा॰ मार्डः পরিবেশ স্তবৈথব চ** ॥ गन्नर्दनगत्ररेक्ट वृष्टिक विक्रण छथा। এব मानीनि लाकि स्मिन् नाजमानि बिनिर्मिटमे ॥ हत স্থির ভব ভৌম ভূকম্প মপি ভূমিজণ। জলাশধানাণ বৈক্বত্য ভৌমণ তদপি কীৰ্ত্তিত ॥ 🛊 ॥ ভৌমণ চাল্পফলণ জ্ঞেষণ চিরেণ পরিপচ্যতে। নাভস॰ মধ্যফলদ॰ মধ্যকাল ফলপ্রদে ।। দিব্য ভীত্র-ফল ভেষে শীঘুকারি তথৈব চ । #। শীতোক্ষতা বিপর্য্যাসো ঋ-তূনা রিপুজ ভষ।। পুষ্পে ফ-লে চ বিক্কতে রাজ্ঞো মৃত্যু তথা দিশেৎ। অকাল প্রভবা নার্য্যঃ কালাতীতাঃ প্রজা স্তথা।। বিক্র-তাঃ প্রসবা শৈচৰ যুগ্মপ্রসবন ख्या ॥ शैनाकां अधिकाकाक कायरञ्ज यनि वा खयः ॥ शभवः পক্ষিণ শৈচব তথৈব চ সরীসৃপাঃ

। विनामः छमा पिर्मा अलमा ह विनिर्मित्। ॥ अपनार्य अक्-টারাবো হেমস্তে চাপি কোকি-লাঃ। অর্কোদযে হর্কাভিমুখঃ শ্বা-त्रारवा नृज्यः मिरमं ॥ উन्ति বসতে যত্ৰ নিপতেছা তথা গৃহে। জ্ঞেযো গৃহপতে মৃত্যু ধননাশ खरेथव ह ॥ भृशः कन्नः करभाज-শ্চ উলুকঃ শ্যেন এব চ। চিল্লশ্চ চর্মচিল্লশ্চ ভাসঃ পাণ্ডর এব চ।। গৃহে যস্য প**তম্ভ্যেতে গেহ**ণ তস্য বিপদ্যতে। পক্ষাম্মাসাত্তথা বর্ষা-मृजुः गानगृश्यिभनः॥ পङ्गाः পুত্রস্য বা মৃত্যু র্দ্রব্যঞ্চাপি বিন-শ্যতি। ব্ৰাহ্মণায গৃহ্॰ দদ্বা দদ্বা **ज्यू**ना त्यव वा ॥ भृङ्गीयाम्यिम রোচেত শাস্তি ঞ্চেমাণ প্রযোজ-ষেৎ। ইমাণ বক্ষ্যমাণাণ। 🕸। মাণ-माञ्चीनि मयानाय भागानानाम्य वाषमाः ॥ या मृगात्नाथ वा यशा शूत्रमा अविभक्ति एट । वि-কিরম্ভি গৃহাদৌ চ শ্মশান সা মহী ভবেৎ ॥ চৌরেণ হন্যতে লোকঃ পরচক্র সমাগমঃ। স॰-গ্রামশ্চ মহাঘোরো দুর্ভিক্ষণ মর-ক তথা।। অভুতানি প্রস্যস্তে তত্র দেশস্য বিজবः। অকালে

कल शुल्मानि प्रभाविखवकात्रन ।। 🟶।। মৎস্যপুরাণে। অতিবৃষ্টি त्रनावृष्ठि पू जिंकामि जरु गठः। व्यन्त्री जू मिनामृद्धः वृष्टि दर्खरा ভযাষ চ।। নিরভুে বাথ রাত্রৌ বা শ্বেত যস্যোত্তরেণ তু। ইন্দ্রা-ষুধ ততো দৃষ্ঠা উদ্ধাপাত ত-रेथव ह ॥ मिन्नाइ गतिरवरनी ह গন্ধর্বনগর তথা। পরচক্রভয বিদ্যান্দেশোপজৰ মেৰ চ ৷৷ ভা-সো वनक्कु हैः।। *।। कण्म निधन সূচনে হরিব শঃ। বক্র মঙ্গারক-क्टरक ठिकाया॰ यात मर्गनः। ठ-লত্যপৰ্ৰণি মহী গিৱীণাণ শিখৱা-ণি চ ৷৷ বাণোৎপাতে সএব ৷ দ-ক্ষিণাণ দিশ মাস্থাষ ধূমকেতুঃ স্থি-তে। হভবৎ। বক্ত মঙ্গারক শ্চক্রে রুত্তিকাসু ভযকর:।।ৠ। রুত্যচি-স্তামণো। ত্যক্তাশোচ বিবেক ত-ত্ত্ব বসুধা লোকাঃ ক্ষুধাপীডিতাঃ বিপ্রা বেদহতা স্তথা প্রচলিতা বহ্বাশিনো দুখিতাঃ। ক্ষৌণী ম-ন্দফলা নৃপাশ্চ বিকলাঃ সংগ্রাম-যোরা মহী প্রেতাঘাত দুরস্ত পীডিততরা দেবেজ্য রাঙ্বো র্থু-তৌ ৷৷ রক্তে শস্ত্রোন্মোগো মাণ-माञ्चि वनामिछि मंत्रकः । शाना

श्तिगा प्रक् कल कमूमारमा वर्षि-তে ভয়॰ বিদ্যাৎ।। অঙ্গার গাণ্শু বর্ষে বিনাশ মুপযাতি তন্নগর । উপল॰ বিনা জলধরে বিরুত। वा यका व्यानिता वृष्णा ॥ ছिज्र॰ বাপ্যতিবৃষ্টি॰ শস্যানা নীতি স॰-জনनः। #। त्थ्रकि शिक मशारम। বল্লাঃ প্রপাতে চ ফল শরটস্য প্ররোহণে। শীর্ষে রাজপ্রিযো বাপ্তি ভালে চৈশ্বর্য্য মেব চ।। ক-र्गरमा जू येगावाश्वि त्नं बरमा बंसू-দর্শন । নাসিকাযাঞ্চ সৌগন্ধ্য বক্তে নিষ্টান্ন ভোজনণ।। কণ্ঠে-टेठव खिरगा श्वाश्वि ज्जरग বিভবো ভবেৎ। ধমলাভো বা-श्यृत्व कत्रत्या र्थनवृक्षयः ।। **ख**-নমূলে চ সৌভাগ্যু হৃদি সৌ-था विवर्कन । शृत्धे निजा मशी-नाजः भार्यरमा वंश्रुमर्भनः॥ क-টিদ্ববে বস্ত্রলাভে। গুন্থে মৃত্যু স-মাগমঃ। জজে চার্থক্ষয়ে নিত্য॰ গুদে রোগভষ॰ ভবেৎ ॥ উর্বো-ख वार्नावाशि कान् कट्यर्थ-मःक्यः। वाय निक्निन्द्याः शादन ज्यन॰ निय**ङ** ज्रवि ॥ वल्लाः প্ররোহণে চৈব পতনে শরটস্য চ । वाजामाक क्लर्किव ज्वरति

প্রজাযতে ৷৷ বল্ল্যাঃ প্ররোহণ রাত্রো শরটস্য প্রপাতন । নিধ-নাৰ্থায় ভবতি ব্যাধি পীড়া বিপ-র্য্যায়ে পাতনানস্তরণ চৈবারো-হণ যদি জাষতে। পতনে ফল-मूब्रूकि द्राष्ट्र श्नाब कन ভবেৎ ৷৷ আরোহণঞের্বিক্রে অধোবক্তে চ পাতন । ভবে-দিষ্টফল॰ তস্য তৎ কালে জায-তে ধ্ৰুব॰ ॥ৠ৷ স্পৃষ্টিমাত্ৰে তযোঃ महाः मटहनः कन गावित्नः। পঞ্চাব্য প্রাশনঞ্চ সর্য্যাদর্কাব-লোকন ।। বল্লীৰূপ সুবৰ্গ্য র-क्टवरञ्जन दिकरयः । शृक्टराकाञ्ज भूमारेमा **उम**्ध পূर्वत्रयुक्त ॥॥ পঞ্গব্য পঞ্রত্ন পঞ্চামৃত স-পল্লব॰। পঞ্চৃক্কষাযঞ্চ নিক্ষি-भावाश्यख्यः ॥ भूज्यकाञ्च **भूगारिमा** र्लाकभानाः खथा ध-হান্। মৃত্যুঞ্বেন মত্রেণ সমি-দ্ধিঃ খদিরৈঃ শুভৈঃ ॥ তিলৈ র্ব্যাস্থৃতিভি র্হোম মফৌত্তর সহ-मुकः। बली गृहरगाधिक।। मृजुः-क्षयमञ्ज द्यायकमद्यः ইতি विमान कतः॥ 🗱॥ গर्गमः हिन वर्ष्ट्रण-ত্যবোঃ। যে তেষু শান্তি॰ সর্বস্তি ন তে যান্তি পরাভবং। যে তু ন

প্ৰতিদৰ্বন্তি ক্ৰিয়য়া শ্ৰদ্ধয়ামি छाः ॥ माखिकगाचा वित्याश्चा বিনশ্যন্ত্যেব তে ২চিরাৎ। 🛊 । অত্র নিমিত্তনিশ্চযবতো ২ধিকা-রো হন্যথা দোষ ইত্যাহ মৎ-স্যপুরাণ । ভিন্নমণ্ডল বেলাষা যে ভবস্তাদ্ভূতাঃ ক্ষচিৎ। তত্ত্ৰ শান্তিদ্বয়ণ কাৰ্য্যণ নিমিত্তে সজি नानाथा।। निर्नियिङक्का भासि নিমিত্ত মুপপাদযেৎ। এতচ্চ তত্তদিশেষ বিহিত শাস্তি বিষ-ষ°। অন্যথা বেলা মণ্ডল সন্দে-হে শান্তি ৰ্ন স্যাৎ।। 🟶 ॥ অতএ-বোক্ত যোগি যাজ্ঞবক্ষ্যেন। যত্ৰ ষত্ৰ চ সংকীৰ্ণ মাত্মান মন্যতে षिषः। তত্র তত্র তিলৈ হোমো গাৰত্রা সমুদাহতঃ ৷৷ গাৰত্রা প্ৰয়তঃ শুদ্ধঃ সৰ্বপাপেঃ প্ৰযুচ্য-তে। শান্তিকামশ্চ জুহুষাৎ গায-बी मक्टिंड छिंडिः ॥ रहकामक নৃপতে ঘৃঁতেন জুহুয়াৎ শুটিঃ। সাবিত্র্যা শান্তিহোমাণশ্চ স্প-ৰ্ব্যাৎ প্ৰবৃদ্ধ নিত্যশঃ।। প্ৰণব ব্যাহ্নতিভ্যাঞ্চ স্বাহাস্তো হোম-কৰ্মণি। প্ৰতিলোমা প্ৰযোক্তব্যা ফট্কারাস্তাভিচারিকে ॥ 🟶 ॥ मार्क्ट अभूतान । निरन्तन जन

मायानाः नृषमायाना याज्ञानि । নক্ষত্র গ্রহ সামান্য নরে৷ ভুঙ্জে **শুভাশুভ• ।। পরস্পরাভিরক্ষা**-চ গ্রহদোষেষু জাযতে। তথা। ভস্মাচ্ছান্তিপরঃ প্রাক্তো লোক-বাদরত স্তথা। লোকবাদা শ্চ শান্তীশ্চ গ্রহণীডাসু কারযেৎ॥ ভূদোহানুপবাসাণ্শ্চ শস্তুণ চৈ-তথা দান প্রাদ্ধ ক্রোধ বিব-ৰ্জ্জন ।। অজোহ সৰ্বভূতেষ মৈ-ত্ৰী॰ সৰ্বস্তি পণ্ডিতাঃ । বৰ্জ্জবে-দুষতী বাচ মতিবাদা স্তথৈৰ চ ।। গ্ৰহপূজাঞ্চ সৰী ত সৰ্বপীডাসু-মানবঃ। এবং শান্যস্ত্যশেষাণি ধোরাণ্নি দিজসত্তম।। প্রয়তানাণ মনুষ্যাণা॰ গ্রহকোত্থান্যনেকশঃ 1 *। লোকবাদাশ্চ তত্ত্রৈবোক্তা যথা। আকাশাদেবতানাঞ্চ দে-वामीनाक मिन्ना । श्वि-ব্যাণ প্রতিলোকে চ লোকবাদা ইতি স্মৃতাঃ।। তে চ সৰ্ৰভূত ডা-কিন্যাদ্যভিভব শাস্ত্যর্থ লৌ-किटकोषध मञ्जामसः । विषङ्ती মঙ্গলচণ্ডিক। গীতাদযঃ। চৈত্য বৃক্ষাদৌ ক্ষেত্রপাল স্বলদেবতা-भूका ह।। 🟶 ॥ তথা চাপস্তয়: 🛭

ব্রীভ্যো খবরবর্বেভ্যো ধর্মশে-ষান্ প্ৰতীযাদিত্যেক ইতি। ধ-শ্মশেষান্ শ্রুতি স্মৃতি সদাচারে-वश्रमिकान् ३७ नातायरगाना-धाराः। ভূদোহশ্চ পাত্র॰ বিনা ভূমো গোস্তন নিশ্লীড্য দুদোৎ-সর্গঃ। চৈত্যঃ পূজ্যত্বেন খ্যাতো গ্রামপ্রধানবৃক্ষঃ। তথা চ বা-গোৎপাতে হরিব॰শঃ। অনেক-শাখ শৈচত্যশ্চ নিপপাত মহীত-লে। অচিতঃ সৰ্বকন্যাভি দান-বানাণ মহাত্মনাণ ৷৷ উষতীণ অক-ল্যাণী । অভিবাদশ্চ পূজ্যমতি-क्या जायन ॥ ॥ भा भरमाभूतान । কাকস্যৈকরবশ্রাবঃ প্রভাতে मुःथमायकः। कारका रेमथूनका-সক্তঃ শ্বেতো বা যদি দৃশ্যতে।। উলূকো বসতে যত্ৰ নিপতেৎ বা তথা গৃহে। জ্ঞেযো গৃহপতে মৃ-कु र्यननाम खटेश्व ह ॥ #॥ व-রাহসংহিতাযাও। ক্রীডানরক্তো রতি মাণসলুকো ভীতো রুজার্তঃ পতিতো বিহস্কঃ। নাসৌ গৃহস্থ-স্য বিনাশহেতু দোষঃ সমুৎপা-माठ **बाक् तार्याः ॥ गृट्ह श**िक বিকারেষু সর্য্যাচ্চামর তর্পণ । দেবাঃ কপোতা ইতি বা জপ্তব্য•

मश्रुक्ति किंदिकः ॥ गावन्ति प्रयो বিবিধা দ্বিজানা সকাঞ্চনা ৰ্স্ত্ৰ-যুগোত্তরীযাঃ। এবং ক্লতে পাপ-মুগৈতি শান্তি মৃগৈ দি জৈ বাঁপি নিবেদিভ বৎ 11 দিজৈঃ পক্ষি-ভিঃ। অপিনা অন্যৈ রপি।। 🟶।। ভুজবলভীমে। একো বৃষ স্ত্রযো গাবঃ সপ্তাশ্বা নব দন্তিনঃ। সি॰হ প্রসূতিকা শৈচব কথিতাঃ স্বানি-ষাতকাঃ॥ সি॰হপ্রসূতিকা গাবঃ॥ ।।।।। মৎসাপুরাণে। অঙ্গে দক্ষি-**ণভাগে তু শস্তু** বিস্ফুরণ ভবেৎ १ जञ्चमञ्च॰ ज्या वारम भृष्ठेमा क्षियमा ह।। लाक्ष्नि शिवेकरेक्ष्व জ্ঞেষণ বিক্ষুজ্জিত তথা। বিপ-ৰ্য্যযেণ বিহিত সৰ্ব স্ত্ৰীণা ফল তथा ॥ जनिकिंदिङ्गाश्रगत्म षि-জানাণ কার্য্যণ সূবর্ণেন চ তর্পণণ मा। नधः। मूः यक्षानिक म-र्मनारमी घृष्ठ श्रितगुक ममामि-তি।। #।। মাৎস্যে। নমস্তে সর্ব-लाकिन नम एउ ज्ञनमन । কবে সৰাৰ্থ সিদ্ধাৰ্থণ গৃহাণাৰ্ঘ্যণ নমোস্ত তে।। এবং শুক্রোদয়ে ঙ্গৰ্বন্ যাত্ৰাদিযু চ ভারত। স্বান্ কামানবাপ্নোতি বিক্লোকে ম-হীযতে।। নমস্তে ংঙ্গিরসাণ নাথ

বাকপতেথ বৃহস্পতে। ক্রুর পীডিতানা মমৃতাষ নমে। নমঃ। সংক্রান্তাৰপি কৌন্তেয় যাত্রাস্থ-ज्ञानरयम् ह । अर्बन् वृङ्ग्र्शरंजः পূজা॰ সৰান্ কাষান্ সমশুতে ॥ ३॥ देवकवामृट्य कामः। अइय-জ্ঞেঃ শস্তিকৈশ্চ কিশ্কিশান্তি ন-রা ছিজ। মহাশান্তিকরঃ শ্রীমান্ তুলস্যা পূজিতো হরিঃ।। উৎ-পাতান্ দারুণান্ পুণসাণ দুর্নিমি-ত্তাননেকশঃ। তুলস্যা পূজিতো ভক্ত্যা মহাশান্তিকরো হরিঃ ৷৷ ञ्ज जन्म भूतानीत्या मञ्जः। नम-**८** उङ्क्षे विकट्ट श्रमाञ्च-त्न सार्हि ॥ 🟶 ॥ इत्नागनित-শিষ্ট॰। অথাতো রজস্বলাভিগ-মনে গো ২শ্বভার্য্যাসূ গমনে ষ-মজজননে বিজাতীযজননে বা কাক কন্ধ গৃধু বক শ্যেন ভাস চিল্ল কপোতানা॰ গৃহপ্রবেশে মা-নুষস্যোপরি বিশ্রামণে এষা মেব ক্রিয়মাণে গৃহদ্বারারোহণে অ-ন্যেষ্ চাজুতেষু কল্পদৃষ্টেন বি-विना रेशि गूलनगाशाय व्यायन्ति-ত্তাজ্যাহতী জুহোতি অন্ত্তায व्यादय खाहा माभाय विकटत क्षाय वायत्व मृयाय मृजात्

বিশ্বভ্যো দেবেভ্যঃ স্বাহেতি श्रानीशाकावृजान्यमिष्ठि ॥ • ॥ কপোত বিশেষয়তি শৌনকঃ। রক্তপাদঃ কপোতাখ্যো অরণ্যো-काः शुक्छ्विः। म क्रिष्टालाः वि-শেक्नामा मगीशक वरकालामि ॥ অন্যেষু গৃহমধ্যে বা বল্মীকল্যো-कामानिषु। कन्नमृत्येन विधिना গৃহ্খোক্তেন প্রাযশ্চিত্তাজ্যাহতীঃ অন্তুতদোষপ্রশমনার্থাঃ সপ্তা-জ্যাহতীঃ অদ্ভুতাযাগ্নযে স্বাহা ই-ত্যাদি মন্ত্রৈঃ তৎস্থালীপাকেতি-কর্ত্তব্যত্ত্বা পাষসচরুভি রেতে-ভোদেবেভ্যোজুহযাণা ছন্দোগ-পরিশিষ্ট । পশ্চাৎ ঘৃতপাযসে-ন বান্ধণান্ ভোজযিত্বা গোবরণ দত্বা শাস্তি র্ভবতীতি। গোবর° গোভোষ্ঠ। দক্ষিণাণ তাণ গাণ ক্লত্বা দোষশান্তি র্ভবতীতি। তথাচো-ক্ত । গৌ বিশিষ্টতমা লোকে व्यापि निशमास्त्र । न जर्ज श्नाष्ट्रतः राष्ट्राखानाटको वंत मू-हाटा ॥ इत्नागभितिनिके । य-স্থেষা মন্যতম মাপন্নঃ প্ৰাৰশ্চি-ত্ত॰ ন স্ব্যাক্তন্য গৃহপতে ম্রণ॰ সৰ্বস্থনাশো বা ভবতি তন্মাৎ প্রাযশ্চিত্ত॰ কর্ত্তব্য॰ কর্মাপৰর্মে

বামদেব্যগান শান্তি শান্তি রি-छि। जनवर्ग मगारश्ची। वामरमः বাগান শান্তিঃ কার্যা। আবৃত্তিঃ প্রকরণ সমাপ্তার্থা। বাহস্পত্যে। শৰযন্ত্যাসপ্তাহাৎ কম্পাদিকত নিমিত্ত মাশ্বেব। অতিবৰ্ষণোপ-ৰাস ত্ৰত দীকা জপ্য হ্বনানি ।। 🟶 ।। वर्तारः। (य চ न मांव॰ জ-নযম্ভাৎপাতা স্তান্তুমভাবক্ক-তান্। ঋষিপুত্রকুতেঃ লোকৈ বি-मगटमिं नियासि विकास চ মৎস্যপুরাণ । ব্রজ্ঞাশনি মহী-कम्भ मक्षा निर्याण निश्वनाः। পরিবেশ রজো ধূম রক্তার্কান্ত-यरयोगयोः ॥ कप्यट्या १थ तम মেহ মধু পুষ্প কলোদামাঃ।গো-शकि यमवृक्षिण्ठं निवाय यथु याध-বে ৷৷ৠ৷ তারোক্ষাপাত কলুষণ ক-शिनादर्ममू यखन । जनित्र जन-नः एकाष्टेः धूमः त्र्वानित्राञ्चलः ॥ রক্তপদারুণা সন্ধ্যা নভঃ ক্ষুরার্ণ-বোপমণ। সরিতাঞ্চাষু সংশোষণ मृक्षे औरम **७७**० वरमः ॥ 🛊 ॥ শক्তायूथ भरीतिटमो विम्राष्ट्रकवि-রোহণ । কম্পোদ্বর্ত্তন বৈক্নত্যণ त्रमन॰ দরণ॰ किटङः ॥ नमूरमशी-न मत्रमा॰ वृक्षाका। ভবनक्षवाः ।

পতনঞ্চাজিগেহানা বর্ষাসু ন ख्यावर्॰ ॥ रहित**ः एन वर्यावर्गना**-যা । কচিৎ কন্দরহাসাঢ্য । শি-नीक्षां जन किए। देखि मर्गः ना९ वर्षामू निलीरक्राकारमा न ভষাবহঃ ৷৷ 🟶 ৷৷ দিবাস্ত্রী ভূত গ-श्वर्व विगाना खु जनर्भन । श्र न-ক্ষত্র তারাণাণ দর্শনঞ্চ দিবায়রে ।। গীত বাদিত্র নির্ঘোষো বন প-ৰ্ত সানুষ্। শস্যবৃদ্ধী রসোৎপ-ত্তি রপাপাঃ শরদি স্মৃতাঃ॥ #॥ শীতানিল তুষারত্ব নর্দন মৃগ शिक्षणा त्रा विकासि मद्या-ना॰ पर्मन॰ वागवानुषी ॥ पिटना ধূমান্ধকারাশ্চ শলভা বন পর্ব-णः। উक्तः मूर्यापयाखदः (इ-মন্তে শোভনা মতাঃ।। 🟶 ।। হিম-পাতানিলোৎপাত বিৰূপ:জুত **দर्শनः । দৃফ্বাঞ্চনাভ মাকাশ** তারোক্ষাপাত পিঞ্চর ।। চিত্রা গর্ব্তেবাঃ জ্রীষু গোজাশ্ব মৃগ পক্ষিণা । পত্রাকুর লতানাঞ্চ বি-কারাঃ শিশিরে শুভাঃ ॥ 🟶 ॥ ঋতু স্বভাবজা ছেতে দৃষ্টাঃ স্ব-खो[ँ] छं जावशः । श्रावनाव চোৎপাতা দৃষ্টা স্তে ভূশদারু-वाः ॥ 🗱 ॥ जेमला नाक या भाषा

শিশূনা চেফিতঞ্ব যৎ। স্ত্রিযো ষচ্চ প্ৰভাষম্ভে তত্ৰ নান্তি ব্যতি-ক্রমঃ।। পূর্বঞ্বতি দেবেষু পশ্চা-काष्ड्रि यानुषान् । नामिणा বাগ্বদতি সত্যা ছেষা সরস্বতী ॥ বৃহস্পতিঃ। জ্যোতির্জান ত-খোৎপাত মবিদিদ্বা তু যে নৃণাণ শ্রাবযন্ত্যর্থলোভেন বিনেষাস্তে-পি যত্নতঃ ৷৷ বিনেষা দণ্ডনীয়ঃ । इंडि प्क्यांडिखवु॰ ॥ 🟶 ॥ ভৌমদিব্যান্তরীক্ষোৎপাতশান্তি ৰ্মাৎস্যে ২০২ অধ্যায়াৰ্যম ২১২ विधायभर्याख॰ प्रकेता। ७थ। **(मरी** भूतात्व महाज्यानयशात्म म-ৰ্বদৈবকী সৰ্বোৎপাতশান্তিসমা-প্তাধ্যাষে চণ্ডীশব্দে চ দ্রফব্যা। তন্ত্ৰোক্তা শান্তিঃ ষট্কৰ্মশব্দে **फर्केवा।। # 11 अथ भा**खिक পৌষ্টিককর্মদিন । তত্র বারা রবি সোম বুধ বৃহস্পতি শুক্রাণাণ তত্র নক্ষত্রাণি উত্তরাষাঢ়া উত্তর-ফল্পণী উত্তরভাত্রপৎ রোহি**ণী** চিত্রা অনুরাধা মৃগশিরঃ রেবভী পুষা অশ্বিনী হস্তা। তত্ত্ৰ চক্ৰঃ শোভনঃ। লগ্ন শোভন । ইঙ্কি জ্যোতিষতত্ত্ব ৷৷ श्रु वृङाईिषदगरः॥

জিনচক্রবর্ত্তিবিশেষঃ। ইতি হে-यहः ॥ দশगगत्रखतीरयः । যথা। ধর্মপুত্রস্য পুত্রাণ্স্ত দশ-यमा गताः मृत्। मूरक्व (का-ত্তমৌজাশ্চ ভূমিশ্রেণ্যশ্চ বী-খ্যবান্।। শতানীকো নির্মি-ত্রো বৃষসেনো জ্যজথঃ। ভূরি-म्राप्तः সুবর্চাশ্চ শান্তি রিন্দ্রঃ প্রতাপবান্।। আপো মূর্ত্তি ई-বিয়া ॰ শ্চ স্বকৃতি শ্চাব্যম স্থথা। নাভাগো ২প্রতিম শ্বৈর সৌর-ভা ঋষ্য স্তথা। প্রাণাখ্যাঃ শত-সংখ্যাশ্চ দেবভানা গণা স্তথা ा वानिभज् उ॰ इतिभा भाषा-যাত্যিষ্যতি॥ ইতি গারুডে ৮৭ ञधावः ॥

भाष्ठिकामः जि भाष्ठाण्डिमामी।
यथा । श्रीकामः भाष्ठिकामां
वा अश्यक्षः ममाठदत्र । वृष्ट्यायूः भृष्टिकामा वा उदेशवाजिइत्रम्ति।। ইতি मःकात्रञ्दः ।।
भाष्ठिगृशः की भाष्ठाानमः। मव्वार्ष्ठ भाष्ठिज्ञ छक्ति न नानमागृशः। उद्शर्मामः। आश्र्र्वनः
२। ইতি হেমচন্দ্রः ॥
भाष्ठः क्री माञ्रः। ইত্যমর

गात्रमुमती ॥

শাস্তৃতিঃ স্ত্রী বান্ধণযটিকা। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। পুস্তকান্ত-রে শ্বান্নতি রিভি চ পাঠঃ।। শাপঃ পু॰ আক্রোশঃ।। দিব্যং। ইতি মেদিনী।। আদ্যস্য পর্য্যা-यः। जकत्विः २। इंछामतः॥ অজীবনিঃ ৩ অজননিঃ ৪ অ-বগ্ৰহঃ ৫ নিগ্ৰহঃ ৬। ইতি ভ-রতঃ ।। অভিসম্পাতঃ ৭। ইতি अञ्चला । त्यमगुभर्यगयः । শপন ২ শপথঃ ৩। ইত্যমরঃ য় মিথ্যানিরসন ৪। ইতি শব্দ-ब्रञ्जावनी ॥ শাপটিকঃ পু॰ মযুরঃ। ইতি কেচিৎ 11 শাপান্তঃ পু মুনিঃ। ইভি ত্রি-का खटन्यः ॥ भाकतिकः पुः यथमाधातकः। ইতি কেচিৎ।। শाकः वि भक्तमभूकी। यथा। এकः मात्का श्रुत्रकार्थः। ইতি দাযভাগঃ ॥ সরস্বত্যা॰ স্ত্রী भाकी। ইতি কেচিৎ।।

माकत्वाधः भू॰ मकार्थछानः॥

न्यायम् ७ भगार्थकानकनाक्वा-

ন । তস্য করণ পদজ্ঞান ।

তস্য কারণ পদশক্তিজ্ঞান ।

कमाहिए नक्षणाखानः। এवः आ কাজ্কা যোগ্যতাসত্তি তাৎপৰ্য্য ख्वानक। यथा। **अ**ष्टबानस क्रन॰ ছার॰ তত্র পদার্থধীঃ। শাব্দবোধঃ॥ ফল তত্ত্র শক্তিধীঃ সহকারিণী য় ইতি ভাষাপরিচ্ছেদঃ ॥ # ॥ শাব্দবোধ প্রকারণ দর্শযতি পদ জ্ঞানিজ্বিতি। ন তু জ্ঞাযমান॰ পদ॰ করণ॰ পদাভাবে ২পি মৌ-नि स्नाकारमी भाकरवाशा । नमार्थथी तिछि नमजना नमार्थ-শ্মরণ ব্যাপারঃ। অন্যথা পদ-জ্ঞানৰতঃ প্ৰত্যক্ষাদিনা পদাৰ্থো-পিছিতাবিশি শাব্দধোধাপত্তেঃ ৷ তত্রাপি বৃত্ত্যা পদজন্যত্ব বো-शुं जनाथा घडोि निशनां न्य-বাষসম্বন্ধেন আকাশস্মরণে জা-তে আকাশস্যাপি শান্দবোধা-পত্তেঃ। বৃত্তিঃ শক্তি লক্ষণান্য-তরসম্বন্ধঃ। অত্রৈব শক্তিজ্ঞান-স্য উপযোগঃ। পূৰ্ব॰ শক্তিগ্ৰহ।-ভাবে পদজ্ঞানেপি তৎ সম্বন্ধে-न ऋत्वानू अशिखः। अलब्हानमा হি সম্বন্ধিজ্ঞান বিধ্যার্থ স্মারকত্বণ l # 1 मकिक शरमन मह शम्।-र्थमा मश्रक्षः। जन्माष्ट्रकाम्य य-র্থো বোদ্ধব্য ইতীশ্বরেছাৰপা

আধুনিকে নান্নি শক্তি রস্তোব একাদশে ২হনি পিতা নাম স্ব্যা-দিতীশ্বরেচ্ছাষাঃ সম্বাৎ আধুনি-কে তু শঙ্কেতে ন শক্তি রিতি স-म्भूमायः। नवास्त नेश्वत्त्रष्ट्रा न শক্তিঃ কিন্তিচ্ছৈব তেনাধুনিক-শঙ্কেতেপি শক্তি রস্তীতি বদস্তি । । শক্তিগ্রহশ্চ ব্যাকরণাদিতঃ। তথাছি। শক্তিগ্রহণ ব্যাকরদোপ-মানকোষাপ্তবাক্যাদ্যবহারতশ্চ । वाकामा শেষाদिवृत्ठ र्वमस्डि সানিধ্যতঃ সিদ্ধপদস্য বৃদ্ধাঃ। ধাতু প্রকৃতি প্রত্যযাদীনাণ শক্তি-গ্রহো ব্যাকরণান্তবতি কচিত্রু স-তি বাধকে ত্যজ্যতেপি। যথা। বৈষাকরণৈ রাখ্যাতস্য কর্তুরি শক্তি ৰুচ্যতে। চৈত্ৰঃ পচতীত্যা-**(मे) कर्जा मह दे**ठजम्मारङमात्र्य স্তত্র গৌরবান্ন জন্যতে কিন্তু ক্রতৌ শক্তিগ্ৰহো লাঘবাৎ ৷ ক্লতি শৈচ-ত্রাদৌ প্রকারীভূষ ভাসতে। ন চ কর্ত্ত্ রনভিধানাকৈতত্তাদিপদা-নম্ভর ভৃতীয়া স্যাদিতি বাচ্য কতৃ সংখ্যানভিধানস্য তত্ৰ ত-স্ত্রত্বাৎ । সংখ্যাভিধানযোগ্যশ্চ कर्षशामानवङ्गकः । अथगाख्य-দে৷পস্থাপ্যকর্মত্বাদীত্যস্য বিশে-

ষণত্ব তাৎপৰ্য্যাবিষযত্বমৰ্থঃ তেন চৈত্ৰ ইব গচ্ছতীত্যাদৌ ন চৈত্ৰে म॰थात्रयः। यज कर्यातने न वि-শেষণত্ব তাৎপর্য্যণ তদ্বারণাযপ্র-থমান্ডেতি। यदा ধাত্বর্থাতিরি-ক্তাবিশেষণত্ব প্রথমদলার্থঃ তে-ম চৈত্ৰ ইক গচ্ছতীত্যত্ৰ চৈত্ৰা-দে ৰ্বারণণ স্তোকণ পচতীত্যাদৌ স্তোকাদে ৰারণাষ চ দ্বিতীয়দ-ল°। তদ্য দ্বিতীয়াস্তোপস্থাপ্য-দ্বাদ্বারণ । এবং ব্যাপারেপি ন শক্তি গৌরবাৎ। রখো গচ্ছতি ইত্যাদৌ তু স্বব্যাপারে আশ্রয-ত্বে বা লক্ষণা।জানাতি ইত্যাদৌ তু আশ্রমন্বে নশ্যতীত্যাদৌ প্র-তিযোগিত্বে নিৰাচলকণা । উ-পমানাদ্যথা শক্তিগ্ৰহ স্তথোক্ত l # l এবং কোষাদপি শক্তিগ্ৰহঃ সতি বাধকে ক্ষচিত্ত্যজ্যতে যথা नीनामि शमानाः नीनक्शामो नीनामि विभिष्कं ह भक्तिः का-व वाष्यामिञ। ज्यामि नाघ-वाद नीलामि गकिः नीलामि-विनिष्धे नक्ष्णि ॥ 🕸 ॥ এव-माश्ववाकगामि । यथा । काकि-वः পिक्षम्याठाः ইত্যাদিশ-काष्ट्रिकामि শক্তিগ্রহঃ ॥ 🕸 ॥

এবং ব্যবহারাদিপি যথা। প্রধাে-জক বৃদ্ধেন ঘটমানযেত্যুক্তণ তৎ শ্ৰুষা প্ৰযোজ্য বৃদ্ধেন ঘট আ-নীত স্তদবধাৰ্য্য পাশ্বস্থো বালো ঘটান্যনৰপে কাৰ্য্য। ঘট মান্য ইতি শব্দপ্রযোজ্য॰ অবধারয়তি তত্ৰুচ ঘট মান্য গা মান্য ই-ত্যাদৌ আবাপোদ্বাপাভ্যা॰ ঘ-টাদিপদানাণ কার্য্যাম্বিভঘটাদৌ শক্তি॰ গৃহাতি॥ 🕸 ॥ এব॰ বা-ক্যশেষাদপি শক্তিগ্ৰহঃ ৷ যথা য-বম্য শ্চরু র্ভবতীত্যত্র যবপদস্য **मीर्घ**म् कविमित्के व्यार्गागा॰ थ-যোগঃ কঙ্গো চ স্লেচ্ছানা । তত্ৰ हि यथाना। अयथरवा सायर्छ छन থৈতে মোদমানা ইবোত্তিগ্ৰস্তি ৷৷ বসন্তে সৰ্বশস্যানাণ জায়তে পত্রশাতন ৷ মোদমানাশ্চ তিপ্ত-স্তি যবাঃ কণিশশালিনঃ ।। ইতি वाकारमधा९ मीर्घमृतक मिक र्निनी या करको जू मेकि जुमा ९ প্রযোগঃ। নানা শক্তিকল্পনে ' भी तवार । स्तिशमामी जू वि-নিগমকাভাবায়ানা শক্তিকল্পন॰ ॥ 🗱 ॥ এব॰ বিবরণাদিপি শক্তি-গ্রহঃ। বিবরণন্ত তৎসমানার্থপ-দান্তরেণ তদর্থকথন। যথা ঘটে।

২স্তি ইত্যস্য কলসো ২স্তীত্য-त्न विवत्रशास्य छेशास्य कल्टम শক্তিগ্ৰহঃ। এবং পচতি ইত্যস্য পাক করে।তি ইত্যনেন বিবর-ণাদাখ্যাতস্য যত্নার্থকত্ব কল্প্য-তে ৷৷ 🕸 ৷৷ এবং প্রসিদ্ধপদ সায়ি-ধ্যাদিপি শক্তিগ্ৰহঃ ৷ যথা ইহ সহকারতরো মধুরণ পিকো রৌ-তি ইত্যাদৌ পিকপদস্যশ ক্তিগ্ৰ-হ ইভি ৷ তত্ৰ জাতাবেব শক্তি ন তু ব্যক্তো ব্যভিচারাদানস্ত্যাচ্চ ।। 🕸 ।। শক্ত॰ পদস্ত ক্ষচিদেয়ীগিক। ফচিদ্রত কচিদেযাগরত কচি-क्योगिक काण । यद्याव यवार्थ **अ**व ব্যুতে তদেমীগিক যথা পাচ-क्रिंमिशन । यज्ञावयवशक्तिन-র্পেকেণ সমুদাযশক্তিমাত্রেণ বু-ধ্যতে ভদ্রত যথা গোপদ ম-खभानिभन । यब जू ज्वयय भ-क्छि विषय गगूमाय मक्ति त्रशास्त्रि তদেবাগৰত যথা পক্ষজাদিপ-দং। তথাহি পঙ্কজপদ মুব্যব শ-ক্ত্যা গদ্ধজনি কতৃ ৰূপ নৰ্থণ বো-ধ্যতি সমুদাযশক্ত্যা চ পদ্মত্বেন কপেণ পদ্ম বোধয়তি। ফ্র অব্যবাৰ্থ ৰূঢ্যৰ্থযোঃ স্বাতন্ত্ৰ্যেণ বোধ उपमोशिककाण यरशास्ति-

দাদিপদ । তত্র হি উর্দ্ধ ভেদন কর্ত্ত। তরু গুলাদি রপি বুগতে । ইতি সিদ্ধান্তমুক্তাবলী।। भाक्तिकः भू॰ मकमाञ्चदिन। देवशकतनः । जानिमाकिका যথা। ইন্দ্র শ্চন্দ্রঃ কাশরুৎনা-शिशनी भाकि। यनः । शानिना-यत टेकटनव्या क्रयसायी मिना-দিকাঃ।। ইতি কবিকল্পদ্রুমঃ॥ नवामाकिका यथा। क्रमिश्व-রঃ। সর্বর্মা। পদ্মনাভমিশ্রঃ। বোপদেবঃ। সৎসর্বানন্দঃ। ভ-রতমল্লিক প্রভৃত্যঃ ৷৷ শব্দকা-রকঃ। শব্দ॰ করোতীত্যর্থে ঠঞ্ প্রত্যযেন নিষ্পন্ধঃ। ইতি मिका खरको गुमी ॥ भयन भ ন্ধিনি ত্রি।। শাম ক্লী সাম। ইত্যমরটীকা-मात्रमुन्पती ॥ नायन॰ की यातनः।। नास्तिः। ইতি কেচিৎ।। শামনঃ পু° শমনঃ। ইতি পু-त्रावः ॥ नामनी खी मिक्शामिक्। देखि রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ শাৰিত্ৰণ ক্লী ষত্তণা পশুবন্ধনণ

॥ যজ্ঞপাত্রণ। ইতি কেচিৎ॥

শামীল ক্লী ভস্ম। ইতি সিদ্ধা-তুকোমুদী।। শামীলী স্ত্ৰী মুক্। ইতি সিদ্ধা-

भाषती जी भषतरेपछानिर्ष्मिछ-भाषा। हेक्फानामिभाषा। हेछा-भत्रज्ञत्हो॥

শাম্বিকঃ পু• শাষ্মিকঃ। ইতি জটাধরঃ।।

শাষুকঃ পু॰ শমূকঃ। শামুক্ইতি ভাষা। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শাষূকঃ পু॰ শষূকঃ। ইত্যমর-॥ দীকাবা॰ ভরতঃ।।

শান্তব॰ ক্লী দেবদারু। ইতিরা-জনির্ঘন্টঃ।।

শান্তবঃ পু॰ কপূরঃ।। শিবমন্ত্রী
।। গুয়ুলুঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।
বিষভেদঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিক।।।
শন্তপুল্রঃ।। শন্তপুক্তকঃ।। শন্তুবন্ধনিনি ত্রি।।

শান্তবী স্ত্রী নীলদূর্বা। ইতি রাজনির্বন্টঃ ।। দুর্গা। যথা। শান্তবী দেবমাতা চ চিন্তা রত্ন-প্রিযা সদা। ইতি তন্ত্রসারে দু-র্গাশতনামস্ভোত্রণ।।

শাযকঃ পু॰ বাণঃ। ইতি জটা-ধরঃ॥ খলঃ। ইত্যমরটীকাষাণ সামী।। শার ত্ক দৌর্বল্য। ইতিকবি-কল্পজ্মঃ।। অশশার্থ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শারণ তি কর্বুরবর্ণঃ। ইত্যমরঃ।।
শারঃ পুণ বাষুঃ। ইত্যমরঃ।।
অক্ষোপকরণণ । ইতি মেদিনী
।। হিণ্সনণ। কর্বুরবর্ণঃ।। স্থো
স্ত্রী। ইতি কেচিৎ।।

শারকঃ পু॰ চাতকঃ । হরিণঃ ।।
হস্তী ।। ভূকঃ ।। মযূরঃ ।। করু রবর্ণবিশিষ্টে ত্রি । ইত্যমরটীকাযাণ মুক্টাদযঃ ।।

শারঙ্গী স্ত্রী বাদ্যযন্ত্রবিশেষঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।

শারদ॰ ক্লী শ্বেতকমলণ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। সস্যাণ। ইতি ষে-দিনী শব্দরত্বাবলো)।।

শারদঃ পু॰ কাসঃ।। বঙ্গলঃ।।
ইরিন্মুদাঃ। ইতি রাজনির্ঘনীঃ
।। বৎসরঃ। ইতি মেদিনী।।
পীতমুদাঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।
বর্গাঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী।।
শারদঃ ত্রি শরজ্জাতঃ।। নৃতনঃ
।। অপ্রতিভঃ। ইতি মেদিনী।।
শালীনঃ। ইতি বিশ্বঃ।।
শারদা স্ত্রী সরস্বতী।

बिका खर्मियः ॥ मूर्गा ॥ वीनावि-শেষः । ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ बान्ती ॥ সারিবা । ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ॥ শারদাপদব্যুৎপত্তি র্যথা। শরৎকালে পুরা যশ্মাৎ নবম্যা বোধিতা সুরৈঃ। শারদা সা সমাখ্যাতা পীঠে লোকে চ নামতঃ ॥ ইতি তিখ্যা দিতত্ত্ব ।।। শারদিক ক্লী আদ্ধ । যথা। আব্দে শরদঃ ইত্যনেন ঠঞ্ প্রত্যেবন নিশান্ধঃ। ইতি সিদ্ধা-স্তকৌমুদী ॥

শারদিকঃ পুণ রোগঃ। বিভাষা রোগাতপযোঃ। ইতি ঠঞ প্র-ত্যযেন নিষ্পন্নণ। ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমদী।।

भातमी खी তোষপিয়লী দ সপ্তপর্নঃ। ইতি মেদিনী ।। কোজাগরপূর্ণিমা। ইতি শব্দরত্বাবলী
।। শরৎকালীনে ত্রি। যথা।
স্কান্দ ভবিষ্যযোঃ। শারদী চভিকাপূজা ত্রিবিধা পরিগীযতে
। সান্ধিকী রাজসী চৈব তামসী
চেতি তাং শৃণু ।। সান্ধিকী জপ
যজ্ঞাদ্যৈ নৈবেদ্যৈশ্চ নিরামিবৈঃ। মাহাত্মাণ ভগবত্যাশ্চ পুরাণাদিযু কীর্ত্তিতং।। পাঠ স্তুস্য

জপঃ প্রাক্তঃ পঠেদেবীমনাঃ প্রিযে । রাজদী বলিদানেন নৈবেদ্যেঃ দামিয়ে স্তথা ॥ সুরা মাণসাদ্যুপহারে র্জপ যজ্ঞৈ র্বি-না তু যা । বিনা মক্ত্রৈ স্তামসী স্যাৎ কিরাতানাঞ্চ সম্মতা ॥ ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বণ ॥

শারদীয়মহাপূজা স্ত্রী শরৎকা-नीनमूर्गामश्रृका। यथा। मा-त्रमीया यश्राशृका ठजुःकश्रमयी শুভা। তা॰ তিথিত্রয় মাসাদ্য ষ্ঠ্যাৎ ভক্ত্যা বিধানতঃ।। ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব ।। 🟶 ।। অপি চ। হতে ঘোরে মহাবীরে সুরাসুর ভষক্ষরে।দেবী মুপাসকা দেবাঃ প্রভূতারাক্ষ্যা স্তথা ৷৷ সমেতাঃ मर्वापता एउ (मृती॰ ज्का) जू-তোষিরে। বলিঞ্চ দদ্যু ভূ তানা॰ মহিষাজামিষেণ চ।। এবং ত-স্মিন্ দিনে বৎস প্রেত ভূত স-यात्रल° । क्रञ्जान् मर्बरम्यन्ठ পূজাশ্চ শাশ্বতী মহান্।। জল-मार्ख श्वित्न गामि विश्वाति-নিবর্হিণী । দেবী প্রত্পুজ্ঞযিত্ব। ज् व्यर्थेभी वर्कता विव् ॥ स्व चा-ত্যন্তি সদা ভক্ত্যা তে ভবস্তি মহাবলাঃ। বলিঞ্চ ষে প্রস্কৃন্তি

সৰ্বভূত বিনাশন ॥ তেষান্ত তু-যাতে দেবী যাবৎ কল্লন্ত শাঙ্করণ । क्वीष्ठा विविदेध प्लिटिंग प्रिव-लारक मूमूर्वाङ ॥ यारकु बायू রাকাশণ জলণ বহ্নি শশিতাহাঃ। তাবচ্চ চণ্ডিকাপূজা ভবিষ্যতি मना जूरि ॥ श्रावृष्ट्रेकात्न वि-लित्वन वाश्वित्न इखेनीकू ह। यहागटका नवगांश त्नांटक খ্যাতি॰ গমিয়াতি॥ ইন্দ্র উবাচ ৷ আশ্বিনে যাতিতে যোরে ন-বনী প্রতিবৎসর । শ্রোতুমি-চ্ছাম্যহু তাত উপবাস ব্ৰতাদি-কং ৷৷ নহাত্ৰতং মহাপুণ্যং শক্ষ-রाटेला রনুষ্ঠিত । কর্ত্তব্য · দে-॥ বরাজেন্দ্র দেবীভক্তিসমন্বিতঃ ।। कन्यामण्ट इत्वी भव्य एका মারভ্য নন্দিকাং। অপাশী ত্বথ देवकां ने ने कां नी वाथ वायुमः .. ।। প্রাতঃস্বাধী জিতদ্বন্দুঃ ত্রিকা-ল॰ শিবপূজকঃ। জপ হোম স-মাযুক্তঃ কন্যকাণ ভোজ্ঞেৎ স-॥ ना ॥ अर्थेगा॰ नवत्त्रश्निन। রুজানি শুভানি চ। এবং বাচিত্ত-ভাবেন কার্যেৎ সুরুসত্তম ॥ ভিশান দেবী প্রকর্ত্তব্যা হৈমী বা রাজতী পি বা। মৃদ্বাক্ষী লবণো-

পেতা খনো শূলেথ পূজ্যেৎ।। সর্বোগহার সম্পন্নো বস্ত্র রত্ন क्लोनिङिः। कात्रं एष्ठथ (माला-मीन् शृकाक दिन देनवकी । । शु-ম্পাদি জোণ বিস্বানু জাতী পু-माग हम्भदेकः। विविवाः कात-ষেৎ পূজাণ অফম্যা নুপবাসযেৎ ॥ দুর্গাগ্রতো জপেশ্বস্ত্র মেকচি-खः मुভाविङः । তদর্জধামিনী-শেষে विজয়ার্থে নৃপোত্তমঃ॥ পঞ্চাব্দ॰ লক্ষণোপেত গন্ধ ধপ मुगर्किङ । विधिव कानि का-লীতি জপ্ত্বা খন্সেন ঘাত্তয়েৎ ॥ তস্যোপ क्षित गा॰म॰ गृशीया পূতনাদিষু । নৈর্খতায প্রদাত-ব্যা মহাকৌশিক মন্ত্ৰিত ॥ ত-স্যাত্রতো নৃপঃ স্নাযাচ্ছত্রুণ ক্রমা তু পিষ্টজ । খদ্দেন ঘাত্ৰিদ্বা जू ममा । ऋन विभाशस्माः ॥ ততো দেবী॰ স্নাপষেৎ প্রাক্তঃ ক্ষীর সর্পি জঁপাদিভিঃ। সঙ্কুমা-গুরু কপূর চন্দনৈ শ্চারু ধূপ-रेकः ॥ रेङ्गानि পুষ্প রত্নানি বা-সা'নি স্বাহতানি চ। নিবেদ্য' সূপ্রভূতন্ত দেখা দেব্যাঃ সূভাবি-তৈঃ ॥ অশ্বদেধ মবাপ্ণোভ ভ-क्तिगान् भूतगञ्ग । गरानवगाः

পূজেষণ সর্বকাম প্রদাষিকা।।
সর্বেষ্ সর্ববর্ণেষ্ তব ভক্তা। প্রকীর্তিকা। ক্রত্বাপ্রোতি যশো
রাজ্যণ পূলাযু র্ধন সম্পদঃ।।
ইতি দেবীপুরাণে ২৯। ৩০ অধ্যাষাৎসঙ্গলিত নতুসক্রমকণ।
শারিঃ পুণ অক্ষোপকরণণ পাশকাদে র্বলণ। গুটিকা। ইতি
মেদিনী।। তৎপর্য্যায়ঃ। শারঃ
২ খেলনী ৩। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।
শারিঃ স্ত্রী শঙ্গনিকাভেদঃ।।
যুদ্ধার্থপজপর্য্যাণণ।। ব্যবহারাস্তরণ। ইতি মেদিনী।। কপটঃ।
ইতি ধরণিঃ।।

শারিকা স্ত্রী পক্ষিবিশেষঃ। মযনা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ।
পীতপাদ। ২ গোরাদী ৩ গোকিরাটিকা ৪। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।
সারিকা ৫ শারী ৬ চিত্রলোচনা ৭ শারিঃ ৮। ইতি শব্দরত্নাবলী।। মদনশাক্ষিকা ৯ শলাকা
১০। ইতি জটাধরঃ।। ঘীণাদিবাদনং। তৎপর্য্যায়ঃ। কোণঃ ২
। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

শারিফল° ক্লী পু• শারিপটঃ।
শারিখেলনাধারঃ। চক ইতি

শারিশ

২। ইত্যমরঃ।। ফলকঃ ৩। ইতি
শব্দরত্বাবলী।। আকর্যঃ ৪ শারিফলকঃ ৫ বিন্দৃতন্ত্রঃ ৬ অক্ষপীঠা ৭। ইতি জটাধরঃ ।।
শারিফলকঃ পুণ ক্লী শারিফলণ।
ইতি জটাধরঃ ।।

শারিবা স্ত্রী শ্যামলতা। তৎ-পর্য্যায়ঃ। গোপী ২ শ্যামা ৩ অনস্তা ৪ উৎপলশারিবা ৫। ইত্যমরঃ।। পঞ্চ শ্যামলতাযা ।। নাগজিহ্বাযা মিতি কেচিৎ। গোপ্যাদিত্র শামলভাষাণ অনস্তাদিদ্ব । অনস্তমূলে ইতি কেচিৎ। গুপূ রক্ষণে শোণা-**मिश्रामी**श् रगाना ह। स्नानी শ্যামা গোপপত্নী গোপা গো-পালিকাপি চেতি বাচম্পতিঃ। **७३॰ वा ना**तिवामृन॰ मर्देखन विल्लाधन । इंछि रेबमाक । ইতি ভরতঃ।। অস্যা গুণাঃ । বাযু পিত্ত রক্ত ভৃষণ ছর্দি স্বর নাশিত্ব । ইতি রাজবল্লভঃ ॥ শातिम्धना जी भागकवित्मयः। यथा। हुक्ती विखिष्ठीमृाजः भ-क्यी गातिमृध्वा । नयशीती চাষ্টকাক্ষে। নযঃ সাজভ্রযপত্র-

ৰ্জয়কোলাহলো ২পিচ। ইতি नक्रव्यावनी ॥ শারী স্ত্রী স্বশা। ইতি কেচিৎ।। শারীর ক্রী বৃষঃ॥ শরীরজাতে ত্রি। ইতি মেদিনী॥ #॥ শারী-'त्रमट्डा यथा। धिनम्ड॰ প্রথম॰ ঙ্গর্যাৎ বাগদণ্ড তদনন্তর । তৃ-তীয়ণ ধনদগুঞ্চ বধদগু মতঃ পর মিতি ৷৷ বুধদণ্ডোপি শারীরো বান্ধণ ব্যতিরিক্তানাণ। ইতি মি-তাক্ষরায়া ব্যবহারকাও ॥ 🛊॥ भातीत मूः थ॰ यथा। आशाज्रि-का देव विविधः भाद्गीदता गानम ম্ভথা । শারীরো বহুভি র্ভে দৈ ভিদ্যতে শ্রুষতাঞ্চ সং ৷৷ শিরো-রোগ প্রতিশ্যায় জ্বর শূল ভগ-न्दरेतः । खन्तार्गः श्वर्ये श्वाम क्ट्र्मिंगिनि त्रत्निक्शा ११ ७था-ক্ষিরোগাতীসার স্প্রাসামযুস্ণ-জ্ঞকৈঃ। ভিদ্যতে দেহজ স্তাপো মানদ শ্রোতু মর্হদি ॥ কাম ক্ৰোধ ভয দ্বেষ লোভ মোহ বিযাদজঃ। শোকাসূযাপমা-নেষ্যা মাৎস্য্যাদি ভয় স্তথা।। মানসোপি দ্বিজ্ঞেষ্ঠ তাপো-ভবতি নৈকধা। ইত্যের সাদি-**छि छि एक सार्था श्राधाविकः**

य्युठः ॥ मृःथः महमुत्मा ভिप्ति র্ভিদ্যতে মুনিসত্তম। সুন্সমার-তনু ৰ্গভেঁ জন্ত ৰহুমলাবৃতে ॥ উল্ব সংবেষ্টিতো ভুগ্ন পৃষ্ঠ গ্রীবা-তিসংহতিঃ। অত্যন্ন কটু তী-क्कांक नवरेन यांकृरजाकरेनः ॥ অতিতাপিভি রত্যর্থ বর্দ্ধমানা-जिरविषयः । श्रेमात्रवाक्रक्षनारमी নাঙ্গানাণ প্রভু রাত্মনঃ ৷৷ শক্ক-মূত্ৰ মহাপঙ্কশায়ী সৰ্বত্ৰ পীডি-তঃ। নিরুচ্ছাসঃ সচৈতন্যঃ স্মর-ন্ জন্মশতান্যথ।। আস্তে গর্ভে-তিদুঃখেন নিজকর্ম্ম নিবন্ধনঃ। জায়মানঃ পুরীষাসৃগ্যুত্র শুক্রা-বিলাননঃ।। প্রজীপত্যেন বাতে-न श्रीष्ठामानाञ्चितक्षनः। अत्था-মুখো বৈ হ্রিষতে প্রবলঃ সৃতি-याक़रेडः ॥ क्लरेग र्निकुां शि भा-পোতি জঠরামাতু রাত্রঃ। মৃ-চ্ছা নবাপ্য মহতী সংস্পৃকৌ-বাহ্বাযুনা ৷৷ বিজ্ঞান ভু শ মা-প্লোভি জাভশ্চ মুনিসত্তম। ক-.ণ্টকৈ রিব তুমাঙ্গঃ ক্রকচৈ রিব দারিতঃ ৷৷ পৃতিত্রণান্নিপতিতো ধরণ্যা॰ জমিকো यथा। कञ्च्य-निश्र वागकः भतिवर्छ १भा-নীশ্বরং ॥ স্নান পানাদিকাছার

মপ্যাপ্নোতি পরেছ্যা। অশুচিঃ .मुखरत मूखः की । म॰मामिजि স্তথা।। ভক্ষ্যনাণোপি নৈবৈষাণ সমর্থে বিনিবারণে ৷ জম্মদুঃখা-ন্যনেকানি জন্মনো খনন্তরাণি চ ৷৷ বালভাবে যদাপ্লোতি আ-ধিভৌতাদিকানি চ। অজ্ঞান ত-মসাচ্চনো মূচান্তঃকরণো নরঃ॥ ন জানাতি সতঃ কোহণক বাগ-छ। किमाशकः। ইতি विकृपु-রাণে ৬ অংশে ৫ অধ্যায়ঃ ৷৷ 🕸 ৷৷ অথাতঃ শরীরসংখ্যা ব্যাকরণণ শाরীর॰ ব্যাখ্যাস্যামঃ । শুক্র শোণিত গর্ভাশুযুস্থ মারপ্রকৃতি-বিকার সংমূচ্ছিত গর্ভ ইভ্যুচ্য- 🛚 তে। ভক্ত চেতনাৰস্থিত বাযুৰ্বি-ভজতি। তেজ এন॰ পচতি। আপ ক্লেদযন্তি। পৃথিবী সংহন্তি। আ-কাশ বিবর্জয়তি । এব বিবর্জি-

স যদ। হস্ত পাদ জিহ্ব। যাণ
কর্ণ নিতমাদিভি রঙ্গৈ রুপেত
স্তদা শরীর নিতি সংজ্ঞাং লভতে
। তচ্চ যড়ঙ্গং শাখা শ্চতসুে। ম-।
ধ্যং পঞ্চমং ষষ্ঠং শির ইতি ।। ৠ ।।
অতঃপরং প্রভ্যঙ্গানি কথান্তে।
নস্তকোদর পৃষ্ঠ নাভি ললাট
নাসা চিবক বস্তি গ্রীবা ইত্যেতা।

একৈকাঃ। কর্ণ নেত্র নাসা धा শুখাণ্স গণ্ড কক্ষ স্তন বৃষ্ণ পার্য ক্ষিক্ জানু বাহূরু প্রভৃতয়ে। বে দ্বে। বিংশভি রঙ্গুলয়ঃ। সে 🕾 😁 সিচ বক্ষ্যমাণানি। এয় এলে -বিভাগ উক্তঃ ৷৷ 🛊 ৷৷ ভদ্য 🐎 : সংখ্যানং ৷ স্বচঃ কলা ধাত্তবে ला **(माया रहा ६ शीशान**े ज्या म উधुका इनय मान्या अद्योग বৃক্ষো সোতাংসি কণ্ডরা জালানি কূর্চা রজ্জবঃ সেবন্যঃ সংঘাতাঃ সীমন্তা অন্থীনি সন্ধায় লাষবঃ (शिट्या) बर्याणि मित्रा धनटना। যোগবহানি সোতা॰িদ চ ॥ 🕸 ॥ ষচঃ সপ্ত। কলাঃ সন্ত। আশ্যাঃ সপ্ত । ধাতবঃ সপ্ত । সপ্ত শিরা-শতানি। পঞ্চ পেশীশতানি। নব স্নাযুশতানি। ত্রীণাস্থিশতা-নি। দ্বে দশোত্তরে সন্ধিশতে। সপ্তোতর মর্মাশত। চতুর্বি শ-তি ৰ্ধমন্যঃ। ত্ৰযো দোষা স্ত্ৰবো মলাঃ। নব সোতাংলি ইতি সমা-मः ॥ 🗱 ॥ विखात्त्र। २ 🕏 🥸 🛒 । স্বচো হভিহিতাঃ কলা ধাতবে ম-লা দোষা যক্ত্ৰ প্লীহানো ফুপ্ফ্ म উर्जु का समय वृक्की छ ॥ 🗱 ॥ আশ্যান্ত বাতাশ্যঃ পিত্তাশ

শ্লেয়াশযো রক্তাশয আমাশ্যঃ পক্কাশযো মূক্রাশযঃ স্ত্রীণাণ গর্ভা-गरया १ रहेम इंछि॥ 🗱 ॥ मार्फाल-वागानाञ्चानि पूरमार खीना य-र्क्तवरायशैनानि। अवन नयन दम-ন ঘাণ গুদ মেঢ়াণি নব স্বোতাণ সি নরাণাণ বহিমু খান্যেতান্যেব ন্ত্ৰীণা মপরাণি চ ত্রীণি ছে স্ত-नर्या तथ्खाजक्वरश्य ॥ 🛊 ॥ ষোডশ কণ্ডরাঃ। তাসা গভসুঃ পাদযো স্তাৰত্যো হস্ত গ্ৰীবা পৃ-প্তেষ্। তত্ত্ৰ হস্ত পাদ গতানা॰ कखताना॰ नशाः প্ররোহাঃ। বা হৃদয নিবন্ধিনীনা মধোভাগ-গতানা মেটু সোণি পৃষ্ঠ নিব-ন্ধিনীনা মধোভাগ গতানা॰ বি-ষঃ। মূৰ্জোক বক্ষো ২ক্ষ পিণ্ডা-मीनाक गा॰**मा**निता नायुष्टि जा-লানি প্রত্যেক চত্বারি চত্বারি । তানি মণিবন্ধ গুট্ক সংশ্রিতানি পরস্পর নিবদ্ধানি পরস্পর সং-ল্লিফ্টানি পরস্পর গবাক্ষিতানি চেতি। যৈ গ্ৰাক্ষিত মিদ শ-

॥ # ॥ ষট্ কূর্চ্চা স্তে হস্ত পাদ গ্রীবা মেট্রেষু। হস্তবো দ্বৌ পাদষো দ্বৌ গ্রীবা মেট্রো রে-কৈকঃ। মহত্যো মাণ্স রজ্জব

শ্চতসুঃ পৃষ্ঠবংশ মুভযতঃ পোশী নিবন্ধনার্থ ছে বাছে আভ্যন্ত-ति ह दि ॥ 🗱 ॥ मश्च (मर्नाः । শিরসি বিভক্তাঃ পঞ্চ জিহ্বা সে-ফসো রেকৈকা তাঃ গরিহর্ত্তব্যাঃ **শস্ত্রেণ।। क्रा চতুর্দশাস্থা॰ স**॰शा-তাঃ। তেবা॰ ত্রবো গুল্ক জানু ব-্জ্বণেষু। এতেনেতর সক্থি বাহ **চ काशास्त्रो । जिक भित्रभा द्विटक्टः ॥ 🛊 ॥** छ्रूर्म देनव भीय-ন্তাঃ। তে চান্থি সংঘাতবদাণ-নীয়া মত স্তৈ ৰ্ফুক্তা অস্থি সংঘা-তাঃ। যে হ্যক্তাঃ সংঘাতাম্ভ থ-वकीमटेनटक्यां ॥ 🕸 ॥ जीनि স্বষ্ঠান্যস্থি শতানি বেদবাদিনো ভাষস্তে। শল্যতম্ভে তু ত্রীণােব শতানি। তেষা সবি শ মস্থিশ-ত শাখাসু। সপ্তদশোতর শ-ত ত্রোণি পার্শ্ব পৃষ্ঠোদরোরঃসু । ত্রীবাণ প্রত্যুদ্ধণ ত্রিষটিঃ। এব মন্ত্রাণ ত্রীণি শতানি পূর্যান্তে। - একৈকস্যান্ত পাদাঙ্গুল্যা • তীণি ত্রীণি তানি পঞ্চশ। তল কূচ্চ গুল্ব সংশ্রিতানি দশ। পার্ষ্ণ্যা মে-কং। জঙ্খাযাং দে। জানুন্যেকং । এক মূরাবিতি। ত্রি॰শদেব মে-কন্মিন্ সক্থ্বি ভবস্তি। এতেনে-

তর সক্থি বাহু চ ব্যাখ্যাতৌ। শ্রোগ্যাণ পঞ্চ তেষাণ গুদ ভগ নিতমেষু চত্বারি। ত্রিকসংশ্রিত ष्मिक । পার্শ্বে ষট্ত্তি শঙ্কেব মে-किचान् षिछीत्यत्भावः । ত্রি॰শৎ। অফাবুরসি। মে অক ক সংজ্ঞে। গ্ৰীৰাষাণ নবকং। ক-প্ঠনাড্যা॰ চত্বারি। ছে হয়োঃ। দৃ-ন্তা দাত্রিশৎ। নাসাযাণ ত্রীণি । এক । जानूनि । शख कर्व गरध-দ্বেকৈক । ষট্ শিরসি। এতানি পঞ্চবিধানি ভবস্তি। তাৰ্যথা। কপাল ৰুচক তৰুণ বলয নলক সংজ্ঞানি। তেষাং জানু নিতয়াং-স গগু তালু শৠ শিরঃসু কপা-लानि। मननाञ्च क्रिकानि। शुन কৰ্ণ গ্ৰীবান্ধি কোষেষু তৰুণানি। भागि भाम भार्च भ्रष्ठामत्त्रातः मू বলষানি ৷ শেষাণি নলক সংজ্ঞা-নি ॥ 🛊॥ ভবস্তি চাত্র। অভ্যস্তর-গতৈঃ সারে র্যথা তিষ্ঠস্তি ভূরু-. हाः। व्यक्तिगादेत खथा प्रका धि्-যন্তে দেহিনা॰ গ্রুব॰ ৷৷ ভঙ্গাঞ্চি-त विनय्छेषु पश्चां एमयू मतीति-ण^{॰ १} अभीनि न विनमास्ति मा-রাণ্যেতানি দেহিনা ।। মাণ্সা-ন্যত্র নিবদ্ধানি শিরাভিঃ শ্বাযু-

ভি ख्रथा। ज्ञञ्जीन्यानयमः क्रञ्जा ন শীৰ্যান্তে পতন্তি বা ॥ 🟶 ॥ সন্ধযম্ভ দ্বিবিধা শ্চেফীবন্তঃ স্থি-রাশ্চ।। শাখাসু হয়েঃ কট্যাঞ্চ চেষ্টাবস্তস্ত সন্ধযঃ।শেষাস্ত স-ऋयः मर्स विख्छमा हि स्ति। वू-ধৈঃ ।। সংখ্যাতস্ত দশোত্তরে ছে-শতে। তেষা॰ শাখাস্বফইফি রে-কোনষষ্টিঃকোষ্ঠে।জীবাণ প্রত্যু-ৰ্দ্ধুণ ত্ৰ্যশীতিঃ। একৈকস্যাণ পা-দাঙ্গুল্যাণ ত্ৰয স্ত্ৰযো দাবঙ্গুষ্ঠে তে **ठ**ष्ट्रमंग । जानू श्रम्भ वष्मरणदा-रैककः। এব॰ সপ্তদদৈকস্মিন্ স-ক্থ্বি ভবন্তি। এতেনেতর সক্ষি वाष्ट्र ह वााथाएं। र वयः कि কপালেষু। চতুর্বি॰শতিঃ পৃষ্ঠব॰-শে। তাবন্ত এব পার্মযোঃ। উ-রুস্যকৌ। তাব্তএব গ্রীবাষাণ। ब्रयः कर्छ। नाजीयू वृषय क्लाम निवकाष्यकामना । मञ्ज পরিমাণা দস্তমূলেষু ৷ একঃ কাকলকে না-मायाक । एवे वर्ष मखनाकी নেত্ৰাশ্ৰযৌ। গণ্ড কৰ্ণ শঙ্খেম্বে-देककः। एवो श्नूमस्ती। षातूश-রিফীন্ডবোঃ শশ্বযোশ্চ। পঞ্চ-শিরঃ কপালেষু। একো মৃদ্ধি ।। 🗱।। তএতে সন্ধযো श्येविधाः।

কোরোদৃখল সাম্দা প্রতর তৃষ-সেবনী বাষসভুও মণ্ডল শঙ্খা-वर्षाः । তেষা यद्गुलि मनिवन्न শুল্ল জানু কূর্পরেষু কোরাঃ সন্ধ-सः। कका वक्का मणदनमृष्य-লাঃ। অংসপীঠ গুদ ভগ নিত-(श्यू मायूकााः। श्रीवा शृष्ठेवःम-যোঃ প্রতরাঃ। শিরঃ কটা কপা-লেষু তুন্নদেবনী। হবে। রুভয-**७** ख वायमजूखाः । कर्श समय নেত্ৰ ক্লোম নাডীযু মণ্ডলাঃ। শ্রোত্ত শৃঙ্গাটকেষু শঞ্জাবর্তাঃ। তেষা॰ নামভি রেবাক্কভযঃ প্রা-বেণ ব্যাখ্যাতাঃ ৷৷ অস্থান্ত সন্ধ-ষে। ,ছেতে কেবলাঃ পরিকীর্ত্তি-তাঃ। পেশী স্বায় শিরাণাম্ভ সন্ধি-সংখ্যা ন বিদ্যুতে।। 🟶 🛚 নব স্নাযু শতানি। তাসা শাখাসু ষট্ শ-তানি। দ্বে শতে ত্রি॰শক্ষ কোন্তে । গ্রীবাণ প্রত্যূর্দ্ধণ সপ্ততিঃ। এ-देककमाञ्च भाषामूला। यह नि-চিতা স্তা স্ত্রি॰শৎ। তাবত্য এব তল কুৰ্চ্চ গুল্কেষু। তাবত্য এব জ॰-याया॰। দশ জानूनि। চত্বারি॰শ-मृदती। मन वज्कत्व। नज यशक्-মেব মেকস্মিন্ সক্থ্বি ভবস্তি। এতেনেতর সক্থি বাহূ চ বাা-

খ্যাতৌ। ষষ্টিঃ কট্যা। অশী-তিঃ পৃষ্ঠে। পার্শ্বযোঃ ষষ্টিঃ। উর-সি ত্রি॰শৎ। ষট্ত্রি॰শৎ গ্রীবাষাণ । মূৰ্দ্ধি চজুন্ত্ৰি॰শৎ। এব॰ নব স্না-ষুশতানি ব্যাখ্যাতানি ॥ 🟶 ॥ ভবন্ডি চাত্র। স্নায়ু শ্চতুর্বিধা বি-দ্যাত্তাস্ত সৰ্বা নিবোধ মে। প্ৰতা-নবত্যো বৃত্তাশ্চ পৃথ্যশ্চ শুষিরা স্তথা।। প্রতানবত্যঃ শাখাসু স-ৰ্সন্ধিষু চাপ্যথ। ঘৃত্তান্ত কণ্ড-**जाः गर्बा विरक्षियाः जन्मेटल त्रिङ्** ।। আম পদাশযান্তেযু বস্তৌ চ श्विताः चन् । शाद्यातिम ज्या शृत्के शृथुलान्छ नित्रमंग्रथ।। त्नी ৰ্ষথা ফলকা স্তীৰ্ণা বন্ধনৈ ৰ্বহুভি র্যুতা। ভারক্ষমা ভবেদপু নৃষ্ক্রা সুসমাহিতা।। এব মেব শরীরে ৎশ্মিন্ যাবন্তঃ সন্ধয়ঃ স্মৃতাঃ। স্বাযুতি ৰ্বহৃতি ৰ্বদ্ধা স্তেন ভার-मर्। नदा**≫।। न श्**ष्रीनि न वा (शर्मा) न भित्रा न ह मक्षयः। ব্যাপাদিতা স্তথা হন্য র্যথা স্নাযুঃ শরীরিণ ।। यः সাযূः প্রবিজা-নাতি বাহ্না শ্চাভ্যন্তরা স্তথা। স গৃত শল্য মাহর্তু দেহাচ্ছ-ক্লোভি দেহিনা ।। 🟶 ।। পঞ্ পেশীশতানি ভবস্তি। তাসাণ

চত্বারি শতানি শাখাসু। কোঠে •। প্রাবা॰ প্রত্যদ্ধিকত্-দ্রি॰শং। একৈকস্যান্ত পাদাস্থ-न्ताः छिमु स्त्रिम् स्वाः शक्षमः। मग थानरम । भारमाभित्र कुर्फ সন্নিবিকী স্তাবত্য এব। দশগুল্ তলযোঃ। গুল্ক জান্বস্তরে বি॰-শতিং। পঞ্চ জানুনি। বি॰শতি करतो। দশ वक्करन। শত यिव মেকস্মিন্ সক্থি ভবস্তি। এতে নেতর সক্থি বাহূ চ ব্যাখ্যাতে । छिनुः भारमे। वका त्मरपु। 'সেবন্যা' চাপরা। ছে বৃষণযোঃ । দ্বিচোট পঞ্চ পঞ্চ। ছে বস্তি শিরসি। পঞ্চোদরে। নাজ্যা মে-का। भृष्ठीक मन्तिविकाः भक शक नीकाः। वर्षाश्वरवाः। मन বক্ষসি। অক্ষকাণসৌ প্রতি সম-खा॰ मथा । एवं श्रुमयाभागवर्याः । यह यह ९ शीर्श पूरवयु । थी-वाया क्ष्त्रमुः। व्यक्ती रुत्याः। একৈকা কাকলক গলযোঃ। দ্বে-ভালুনি। একা জিহ্বাযাণ। ওঠ-यो एवं। योगायाः एव। एव निज-বোঃ। গণ্ডযো শতসুঃ। কর্ণযো র্দ্ধে। চতস্রে। ললাটে। একা শির-শীত্যেব মেতানি পঞ্চ পেশীশতা-

नि ।।।।। मित्रा चायुष्टिं भई।।। म-স্বাযশ্চ শরীরিণাণ। পেশীভিঃ সং-বৃতান্যত্র বলবন্তি ভবন্ত্যতঃ ।। স্ত্রীণাম্ভ বি॰শতি রধিকা। দশ তা-मा॰ खनरमा द्विरक्किमान्। ११५ পঞ্চ ষৌবনে তাসা পরিবৃদ্ধিঃ। অপত্যপথে চত্যু স্তাসাণ প্রসৃ-তে ২ভান্তরতো দ্বে মুখাঞ্রিতে বাছে চ প্রবৃত্তে দে। গর্ভচ্ছিদ্র সংশ্রিতা স্থিসুঃ। শুক্রার্ত্তব প্রবে-শিন্য স্তিসু এব। পিত্ত পঞ্চাশষ মধ্যে গৰ্ভাশযো যত্ৰ গৰ্ভ স্তিষ্ঠ-তি। তাসা॰ বছল পেলব স্থূলাণু-शृथू वृद्ध इस नीर्य सित मृतू क्षक কর্কশভাবাঃ সন্ধ্যন্থি সিরাম্বাযু প্রচ্ছাদকা যথা দেশ স্বভাবত-ত্রব ভবস্তি॥#॥ভবতি চাত্র। পু• সা• পেশ্যঃ পুরস্তাদ্যাঃ প্রো-ক্তা লক্ষণ মুক্ষজাঃ। স্ত্রীণা মাবৃত্য তিষ্ঠস্তি ফল মস্তৰ্গত হি তাः।। মর্ম্ম সিরা ধমনী স্বোতসা মন্যত্র প্ৰবিভাগঃ॥ 🕸॥ শন্ধনাভ্যাক্ত-তি ৰ্যোনিঃ স্ত্ৰ্যাৰক্তা সা প্ৰকী-ৰ্ত্তিতা। তদ্যা স্তৃতীযে ত্বাবৰ্ত্তে গর্ভ শয্যা প্রতিষ্ঠিতা।। যথা রো-হিত মৎস্যস্য মুখণ ভবতি ৰূপ-তঃ । তৎস॰স্থানা॰ তথাৰূপা॰

গর্ভশয্যা বিদু রুধাঃ ৷৷ আভুগ্নো **২ভিনুখঃ শেতে গর্ভো গর্ভাশ**যে ব্রিষাঃ। স যোনিং শিরসা যাতি স্বভাবাৎ প্রসব প্রতি ।। ত্বক্ পৰ্য্যন্তদ্য দেহদ্য যো ২ম মঞ্চ বিনিশ্চযঃ। শল্যজ্ঞানাদৃতে নৈষ বৰ্ণ্যতে ংঙ্গেষু কেষুচিৎ ॥ তত্মা-নিঃদংশয়ণ জ্ঞানণ হত্তা শল্যস্য বাঞ্তা। শোধযিত্বা মৃত্ত সম্য-क् जरुरियाङ्गविनिक्षयः ॥ अ-ত্যক্ষতো হি যদৃষ্ট॰ শাস্ত্ৰ দৃষ্টঞ্চ যদ্ভবেৎ। সমাসত স্তদুভয় ভূ-যো জ্ঞানবিবৰ্দ্ধন ।। তস্মাৎ স-মস্তগাত্র মবিষোপহত মদীর্ঘ. ব্যাধিপীডিত মবর্ষশতিক নিঃ-সৃষ্টান্ত্র পুরীষ পুরুষ মবহন্ত্যা মাপগাযা নিবদ পঞ্জরস্থ মুঞ্জ বন্ধল সশ শণাদীনা মন্যত্যে-নাবেষ্টিতাঙ্গ মপ্রকাশে দেশে কোথষেৎ। সম্যক্ প্রস্থতিঞ্চো-দ্বৃত্য ততো দেহ সপ্তরাত্রাদৃশী-র বালবেণু বন্ধল কূচীনা মন্যত-মেন শনৈঃ শনৈ রবধর্ষয় জুগা-দীন্ সৰ্বানেব বাহ্যাভ্যস্তরাঙ্গ প্র-ত্যঙ্গ বিশেষান্ যথোক্তান্ লক্ষ-'বে ক্ৰফুষা।। স্নোকৌ চাত্ৰ ভবতঃ। न अन्त भव्या अर्कु (पर मृच्छ-

মো বিভুঃ। দৃশ্যতে জ্ঞান চক্ষ্ভি স্তপশ্চক্ষুর্ভি রেব চ ॥ শরীরে टेठव भाट्य ह मृखीर्थः माषिभा-রদঃ। দৃষ্ট শ্রুতাভ্যা॰ সন্দেহ ম-वारमा शाहरत् कियाः ॥ ॥ ষষ্ঠাধ্যাযঃ। অথাতঃ প্রত্যেক मर्म निर्लिंग गातीत वाशा-স্যামঃ। সপ্তোত্তর মর্মাশত। তানি মর্মাণি পঞ্চাত্মকানি। ত-म्ह्या। या॰ मयर्यावि। मितायर्या॰ नि । क्षायुमर्कानि । অञ्चिमर्कानि। मिस्रियमानि फिलि। न थन् माण्म সিরা স্নাযৃষ্টি সন্ধি ব্যতিরেকে-बानग्रानि नर्मानि ভविष्ठ यन्त्र।-তত্রৈকাদশ মোপলভ্যন্তে ॥ या॰म यन्धानि। একচত্বারি॰শ শিরামর্মাণি। সপ্তবি॰শতিঃ স্নাযু মর্ম্মাণি। অফীবস্থিমর্মাণি। বি॰-শতিঃ সন্ধিমর্মাণি ৷ তদেতৎ मत्था जत् मर्याग्ठ ॥ 🕸 ॥ তেষা মেকাদলৈকক্ষিন্ সক্থ্রি ভবস্তি ৷ এতে নেতর সক্থি বাস্থূ চ ব্যাখ্যাতৌ । উদরোরসো র্ছা-দশ। চতুদশ পৃষ্ঠে। গ্রীবাণ প্র-ত্যুৰ্দ্ধণ সপ্তত্তিশৎ। তত্ত্ৰ সক্থি মন্মাণি ক্ষিপ্ৰতল হৃদয কূৰ্ক কূৰ্চ-শিরো গুল্লেন্সবস্তি জাষাণাৰী

লোহিতাকাণি বিটপঞ্চেতি। এতে নেতর সক্থি ব্যাখ্যাত ॥ 🕸 ॥ উদরোরসোস্ত । গুদবস্তি নাভি হৃদয স্তনমূল স্তন রোহিতাপ-नाभागाभञ्जा (ठि । भृष्ठे মশ্মাণি তু কটীক তরুণ সঙ্গন্দর নিতম্ব পার্শ্ব সন্ধি বৃহত্যৎস ফল-কান্য॰সৌ চেতি॥ বাহু মশ্মণি তু किथा किया कृष्ठं कृष्ठि निता 'यनिवरक्षत्यविष्ठ कर्णतागुरि (न)-হিতাক্ষাণি কক্ষধর ঞ্চেতি। এতে-নেতরো বাহু ব্যাখ্যাতঃ। জত্ত্ব-দ্ধৃ॰ মন্মাণি । চতদ্যে। ধমন্যো ংকৌ মাতৃকাঃ। দে ক্লকাটিকে। ए विश्रुदत । एको करनो । द्वावशा-কৌ। দাবাবত্তৌ। দাবুৎকেপৌ । (को मधादका ख्रानी। श्रक শীমন্তাঃ। চত্বারি শৃঙ্গাটকান্যে-কো ২ধিপতি রিতি। তত্র তল क्षपरम्भ विख छन छन রোহি-তानि भाष्मभर्यानि। नीन धमनी মাতৃকা শৃঙ্গাটকাপান্ধ স্থপনী ফণ স্তনমূলাপলাপাপস্তম্ভ হৃদ-य नाजि भार्य मित्र वृश्जी ला-হিতাকোৰ্ব্যঃ সিরামশ্বাণি।। আ-ণি বিটপ কক্ষধর কূর্চ্চ কূর্চ্চশি-রো বস্তি ক্ষিপ্রাণ্স বিধরে একে-

পাঃ স্নাযু মর্মাণি।। কটীক ত-ৰুণ নিতশ্বাণ্স ফলক শন্থা স্তৃস্থি-মর্মাণি॥ জানু স্বর্পর সীমন্তা-ধিপতি গুল্ক মণিবন্ধ সঙ্গন্দরাবর্ত্ত ক্লকাটিকা স্কেতি সন্ধিমৰ্ম্মাণি।। তান্যেতানি পঞ্চ বিকল্পানি মর্মা-ণি ভবস্তি। তদ্মথা। সদ্যঃ প্রাণ-হরাণি। কালান্তরপ্রাণহরাণি। विশनाष्ट्रानि । देवकनाकतानि। রুজাকরাণীতি। তত্র সদ্যঃপ্রাণ হরাণ্যেকোনবি॰শতিঃ। কালা-স্তরপ্রাণহরাণি ত্রযন্ত্রি॰শৎ। ত্রী-ণি বিশল্যমানি । চতুশ্চমারি॰-শব্বৈকল্যকরাণি। অফৌরুজা-করাণীতি ।। 🟶 ।। ভবস্তি চাত্র । শৃঙ্গাটকান্যধিপতিঃ শঞ্চো কণ্ঠ শিরো গুদ°। ছদয° বস্তি নাভী চ মন্তি সদ্যো হতানি তু ॥ বক্ষো মর্ম্মাণি সীমস্ত তলক্ষিপ্রেন্দ্র বস্ত-যঃ। কটীক তৰুণে সন্ধী পাৰ্শ্বজৌ বৃহতী চ যা।। নিতশ্বাবিতি চৈতা-নি কালান্তরহরাণি তু। উৎ-ক্ষেপৌ স্থানী চৈব বিশ্বাদ্বানি নিৰ্দিশেৎ।। লোহিতাক্ষাণি জা-ন্বী কৃষ্ঠ। বিটপ কৃপরাঃ। সঙ্গ-न्मदेत कंकभदत विश्वदेत महाकारि-কে ৷৷ অংসাংস ফলকাপাসা

नीरल गरना करनी ७थ। रेवकना করণান্যাহ্ রাবত্তে ছৌ তথৈ-व हा। श्राची की मनिवस्त्री की দে দে কূর্কশিরা॰িদ চ। রুজা করাণি জানীযাদফা বেতানি বু-कियान्।। किथानि विक्रमावानि মন্তি কালান্তরেণ চ**েমর্মা**ণি নাম মাণ্স শিরা জাযুস্থি সন্ধি সন্নিপাতা স্তেষু স্বভাবত এব বি-শেষেণ প্রাণা স্তিষ্ঠস্তি। তত্মান্ম-শ্বিষভিহতাস্তান্ ভাবানাপ-দ্যস্তে।। তত্র সদ্যঃ প্রাণহরাণ্যা-भियानाभि छ भिष्ठा छ की भिष्ठ कि পযন্তি। কালান্তর প্রাণহরাণি **मिगादायानाविख्यवयाख्यीत्व** ষু ক্রমেণ চ সোম গুণেষু কালা-স্তরেণ ক্ষপযন্তি। বিশল্য প্রাণ হরাণি বাযব্যানি শল্যমুখ নি-क़रका यातमञ्जर्वायू जिन्ने जिन বজ্জীবত্যুদ্ধৃতমাত্ত্ৰে তু শল্যে ম-শ্বস্থানাশ্রিতো বাষু নিষ্কুামতি তস্মাৎ সশল্যো জীবত্যুদ্ধৃত-শল্যে। মূিযতে । বৈকল্যকরাণি ॥ সৌম্যানি সোমো হি স্থিরত্বাচ্ছৈ-ত্যাচ্চ প্রাণাবলয়ন করোতি ৷ রুজাকরাণাগ্নি বাযু গুণ ভূষিষ্ঠা-নি বিশেষতশ্চ তৌ ৰুজাকরে ৷

পাঞ্চভৌতিকীঞ্চ ৰুজামাহু রেকে । क्रिमाञ्च मां जामीना शका-না মপি সমস্তানা বিবৃদ্ধানাঞ্চ मयवायां मनाः आनश्तानि । এক হীনানা মন্পানাণ বা কালা-खत প्रांगरतानि । विशैनानाः विभवा প्रावहतानि । विशेना-না॰ বৈকল্যকরাণি। একস্মিমেব রুজাকরাণীতি। যতকৈচব মতো ২স্থি মৰ্মাস্বপ্যভিহতেষু শোণি-তাগমন ভবতি ॥ 🛊 ॥ চতুর্বি-था याञ्च मित्राः मतीत्त প्रात्यन তা মর্শ্বসু সন্নিবিষ্টাঃ। স্নাযুত্তি गा॰मानि ७८९व मन्नीन् मस्त्रर्ग দেহ॰ প্রতিপালযন্তি ।। ততঃ ক্ষ-তে মৰ্মাণি তাঃ প্রবৃদ্ধঃ সমস্ততো বাষুরভিস্তৃণোতি। বিবর্দ্ধমানস্ত স মাতরিশ্বা রুজঃ সুতীব্রাঃ প্রত-নোতি কাথে ॥ রুজাভিভূতস্ত পুনঃ শরীর প্রলীয়তে নশ্যতি চাষ্য সংজ্ঞা। অতো হি শল্যং विनिश्ख भिष्ठ्न भर्मानि यरञ्जन পরীক্ষ্য কর্ষেৎ ।। এতেন শেষ॰ ব্যাখ্যাত ৷৷ তত্ত্র সদ্যঃ প্রাণহর মন্তে বিদ্ধু কালান্তরেণ মার্যতি । কালান্তর প্রাণহর মন্তে বিদ্ধ**॰** বৈকলা মাপাদ্যতি। বিশ্ল্য প্রা-

ণহর মস্তে বিদ্ধু কালাস্তরেণ ক্লে-শ্যতি ৰুজাঞ্চ করোতি ৷ রুজা-কর মতীব্রবেদন ভবতি । তত্র সদ্যঃপ্রাণ্হরাণি সপ্তরাত্রাভ্যন্ত-রামারষম্ভি ৷ কালান্তরপ্রাণ-হ্রাণি পক্ষান্মাসাদ্বা ৷ তেম্বপি তূ किथाणि कमाहिमा खमात्रयि । বিশল্যপ্রাণহরাণি বৈকল্যকরা-ণি চ কদাচিদত্যভিহতানি মার-যন্তি ॥ 🟶 ॥ অত উদ্ধৃ॰ প্রত্যে-কশো মশ্বস্থানান্যন্ব্যাখ্যাস্যা-यः। তত্র পাদাঙ্গুপ্তাঙ্গুল্যো র্মধ্যে ক্ষিপ্রণ নাম মর্ম্ম তত্র বিদ্ধাস্যাক্ষে-शत्कन यतन । यश्याम्बूनी यन्-পূৰ্বেণ মধ্যে পাদ্ভলস্য তলহা-**एयः** नाम তलाशि क्कां जि मंत्र-ণ। ক্ষিপ্রস্যোপরিষ্টাদুভয়তঃ কূ-চেচ। নাম তত্র পাদস্য ভূমণ বে-পনে ভবতঃ। গুল্ফ সন্ধে রধ উভ-বতঃ কূৰ্চ্চশিরো নাম তত্র রুজা শোকৌ। পদ জঙ্ঘষোঃ সন্ধানে শুল্পো নাম তত্র রুজ স্তুরূপাদতা খঞ্জতা বা। পাৰ্ষিণ প্ৰতি জঙ্ঘা মধ্যে ইব্দ্ৰবস্তি নাম তত্ৰ শোণি-তক্ষযে মরণ । জ্বজ্বোর্বোঃ সন্ধা-নে জানু নাম তত্র খঞ্চতা। জা-নুন উৰ্দ্ধু মুভ্যত আঙ্গুল মাণি

ৰ্নাম তত্ৰ শোফাভিবৃদ্ধিঃ স্তব্ধ-সক্থিত। চ। উরুমধ্যে উবী নাম তত্র শোণিতক্ষষাৎ সক্থিশেষঃ । উর্ব্যা উর্জু নধে। বঙ্ক্ষণ সম্বে বাৰুমূলে লোহিতাক্ষণ নাম তত্ৰ লোহিত ক্ষযেণ পক্ষাঘাতঃ। ব-জ্ঞান কৃষণযো রম্ভরে বিটপণ নাম তত্র ষাণ্ড্য মল্প শুক্রতা বা ভবতি । এব মেতান্যেকাদশ সক্থি ম-র্মাণি ব্যাখ্যাতানি । এতেনেতর সক্থি বাহু চ ব্যাখ্যাতৌ ॥ বি-শেষতস্ত যানি সক্থি গুল্প জানু বিটপানি তানি বাহৌ মণিবন্ধ কূপর কক্ষধরাণি। যথা বজ্জণ বৃ-ষণযো রস্তরে বিটপ মেব° বক্ষঃ কক্ষযো র্মধ্যে কক্ষধর তিম্মন্ বিদ্ধে তএবোপদ্রবাঃ। বিশেষ-তস্ত মণিবন্ধে স্বপ্ততা। স্বর্পারাখ্যে স্বিঃ। কক্ষধরে কক্ষাঘাতঃ। এব যেতানি চতুশ্চত্বারি শচ্ছাখাস মর্ম্মাণি ব্যাখ্যাতানি ।। 🟶 ।। অত-छक्षु यूषदाविदया श्रम्यश्वानानान्-ব্যাখ্যাস্যামঃ। তত্র বাত বর্চো নিরসন স্থূলাম্র প্রতিবদ্ধ গুদ নাম মর্ম্ম তত্র সদ্যো মরণং। অ-গ্নাণ্স শোণিতো ২ভান্তরভঃ নটাং মূত্রাশযো বস্তি নাম

ভত্রাপি সন্দ্রোমরণ মশ্মরী ত্রণাদৃ-তে। তত্ৰাপু। ভয়তো ভিক্ষে ন জী-বভোকতো ভিমে মূত্রসুাবী বণী ভবতি ৷ স তু ষত্নেনোপক্রাস্তো রোহতি। পঞ্চামাশ্যযো মধ্যে সিরা প্রভবা নাভি নাম তত্রাপি সদ্যূএব মরণ। স্তনযো মধ্য মধি-ষ্ঠাযোরদ্যানাশ্য দার সত্ত্ব রজ স্তমদা নধিষ্ঠানং হৃদয়ং নাম তত্ৰ সদ্য এব মরণ । স্ত নযো রধস্তাৎ श्रमञ्जूल मूख्यक खनमृत्ल नाम মর্ম্মনী তত্র কফপূর্গ কোণ্ঠত্য। কাস শ্বাসাভ্যা॰ মি্যতে। স্তন চূচুকবে৷ ৰূৰ্দ্ধুণ দ্বাঙ্গুল মুভযতঃ স্তন রোহিতৌ নাম তত্র লোহিত পূৰ্ণ কোষ্ঠত্যা কাস শ্বাসাভ্যাঞ্চ ম্রিয়তে। অণ্সকূটযো রধস্তাৎপা-র্শ্বোপরিভাগযো রপলাপৌ না-ম তত্র রক্তেন পূযভাবে গতেন यत्र । উভष्टात्रात्र नार्डो বাতবহে অপস্তম্ভৌ নাম তত্ৰ বা-তপূৰ্ণকোষ্ঠত্যা কাসস্বাসাভ্যাঞ্চ মরণ । এব মেতান্যুদরোরসো র্ছাদশ মর্মাণি ব্যাখ্যাতানি॥ #॥ অতউর্নু॰ পৃষ্ঠ মর্মাণ্যনুব্যাখ্যা-স্যামঃ। তত্র পৃষ্ঠবংশ মুভযতঃ अल्टिआंगी कांख मशीन क-

টীক তরুণে নাম মর্ম্মণী তত্ত্র শোণিত ক্ষয়াৎ পাণ্ডু বিবর্ণো হীনৰূপশ্চ মুিযতে। গাৰ্শ্ব জঘন বহিৰ্ভাগে পৃষ্ঠবংশ মুভয়তো না-**তিনিয়ে जजन्म**त्त नाम मर्मागी তত্র স্পর্শাক্তান মধংকাযে চে-ফৌপযাতশ্চ। শ্রোণীকাণ্ডযো क्र १ वंगा ने या प्राप्त निवास প্রতিবদ্ধৌ নিতম্বৌ নাম তত্রাধঃ-কাযশোষে। দৌৰ্বল্যাচ্চ মরণং। অধঃ পার্শান্তর প্রতিবদ্ধৌ জ-यन लार्स यशाया सिर्धागृक्षक **ज्यना** शार्श्वनकी नाम লোহিতপূর্ণ কোষ্ঠত্যা মূ্যতে। স্তন্মূলাদুভ্যতঃ পৃষ্ঠবংশস্য বৃ-হতী নাম তত্ত্ব শোণিতাতিপ্রবৃ-ত্তি নিমিত্তৈ রূপদ্রতৈ যুি যতে। পৃষ্ঠোপরি পৃষ্ঠবংশ মুভষত স্ত্রিক সয়দ্ধে অংস ফলকে নাম তত্ৰ ৰাহ্বোঃ স্বাপঃ শোষো বা। বাহু মূৰ্দ্ধ গ্ৰীবা মধ্যে শেসপীঠ ক্ষন্ধ নি-বন্ধন। বংসো নাম তত্ৰ স্তব্ধবা-হতা। এব মেতানি চতুর্দশ পৃষ্ঠ-মর্মাণি ব্যাখ্যাতানি ॥ 🟶 ॥ অত-জ্বগতানি ব্যাখ্যাস্যামঃ । তত্র কণ্ঠ নাডী মুভযত শত-

त्या धयत्मा एव नीत्व एव ह

মন্যে ব্যত্যাসেন তত্ত্ৰ মূক্তা স্ব-রবৈক্বত মরসগ্রাহিতা চ। গ্রী-বাষা মুভ্যত শ্চতসুঃ সিরা মা-তৃকা স্তত্ত সদ্যো মরণ । শিরো গ্রীবযোঃ সন্ধানে ক্রকাটিকে না-ম তত্ৰ চলমূৰ্দ্ধতা। কৰ্ণ পৃষ্ঠতো-২ধঃ সংশ্রিতে বিধুরে নাম তত্র বাধিষ্য । যাণ মার্গ মুভ্যতঃ ॥ সোতো মাৰ্গ প্ৰতিবদ্ধে অভ্যস্ত-রতঃ ফণে নাম তত্র গন্ধাজ্ঞানণ। জ্ৰ পুচ্ছান্তযো রধো ২ক্ষো ৰাছ-তো ২পান্সে নাম তত্রান্ধ্যণ দৃ-ফ্ট্যপঘাতো বা। জ্বো রুপরি নিম্নযো রাবত্তে নাম তত্তান্ত্যণ দৃষ্ট্যপঘাতশ্চ। ব্ৰুবোঃ পুচ্ছান্ত-र्या क्रभित कर्न नना हैरया मर्रधा শঙ্ঘো নাম তত্র সদ্যো মরণ। শখ্যযো ৰূপরি কেশান্ত উৎক্ষে-পৌ নাম তত্র সশল্যো জীবতি পাকাৎ পতিতশল্যো বা নো-ফুত শল্যঃ। ক্রীবো মধ্যে স্থপনী নাম তত্ত্ৰোৎকেপবৎ। পঞ্চ স ন্ধয়ঃ সিরসি বিভক্তাঃ সীমন্তা নাম তত্তোমাদ ভ্য চিত্ত নাশৈ র্যরণ । ঘাণ শ্রোত্রাক্ষি জিহ্বা স-ন্তর্পণীনাও সিরাশাও মধ্যে সিরা সন্নিগাতঃ শৃঙ্গাটকানি তানি চ-

ত্বারি মর্মাণি তত্রাপি সদ্যোমরণ । মস্তকাভ্যন্তরোপরিষ্টাৎ সি-রাসন্ধি সন্মিপাতো রোমাবর্ত্তো ংধিপতি স্তত্রাপি সদ্যোমরণ° ॥ এব মেতানি সপ্তত্তি শদূর্দ্ধ জত্বগ-তানি মৰ্মাণি ব্যাখ্যাতানি ॥ 🕸 ॥ ভবন্তি চাত্ৰ। উৰ্ব্যঃ শিরাণসি বি-টপে চ সকক্ষপাৰ্শ্বে একৈক মঙ্গুল মিতা স্তন পূৰ্বমূল । বিদ্যাসুল षय मिত भिविक धन्न वीराग्व জানু সপর সহ স্পরাভ্যা ।। श्वषि कृष्ठे अप नाजि वपिष्ठ मृ-क्ति ठशाति शक ठ गत्न मन यानि চ দ্বে। তানি স্বপাণিতল সঞ্চিত সংমিতানি শেষাণ্যবেহি পরিবি-স্তরতো ২ঙ্গুলাদ্ধিণ।। এতৎ প্রমা-ণ মভিবীক্ষ্য বদস্তি তজ্জ্ঞাঃ শ-স্ত্রেণ কর্মাকরণ পরিহৃত্য মর্মা। পাৰ্শ্বাভিঘাতিত মপীহ নিহস্তি মর্ম্ম তম্মাদ্ধি মর্ম্ম সদন পরিব-डर्जनीय॰ ११ हिटमयू পानि চরণেयू সিরা নরাণা সক্ষোচমীযু রসৃ-গল্পমতো নিরেতি । প্রাপ্যামিত ব্যসন মুগ্র মতো মনুষ্যাঃ সংছিন্ন শাখ তরুবন্নিধন ন যান্তি।। ক্ষি-প্রেষ্ তত্র সতলেষ্ হতেষ্ রক্তণ গচ্ছত্যতীব পবনশ্চ ৰুজ্ঞ করো-

তি। এবং বিনাশ মুপ্যান্তি হি তত্ৰ বৈদ্ধ। বৃক্ষা ইবাযুধ বিঘাত নিক্সসূলাঃ।। তস্মাত্তযো রভিহ-তস্য তু পাণি পাদ ছেন্ডব্য মাশু মণিবন্ধন গুল্পদেশে। মর্ম্মাণি শ-न्याविषयार्क मूनार्तिख यन्याक মর্শ্বাসু হতা ন ভবস্তি সদ্যঃ।। জী-বস্তি তত্র যদি বৈদ্য গুণেন কে-চিৎ তে প্ৰাপুৰম্ভি বিকলম্ব মসণ-শয॰ হি। সম্ভিন্ন জর্জ্জরিত কোষ্ঠ শিরঃ কপালা জীবন্তি শস্ত্র বিহ-टेंक्न मतीतरमदेगः ॥ ছिरंसम्ह मक्थि ज्रुज्ञशाम करेत त्रत्मरेष র্যেষাণন মর্ম্মপতিতা বিবিধাঃ প্র-হারাঃ। সোম মারুত তেজা॰সি রজঃ সত্ত্ব তমাণসি চ। মর্মাসু প্রা-যশঃ পুংসাণ ভূতাত্মা চাবতিষ্ঠতে ।। মর্মামভিহত। স্তমামজীবন্তি শরীরিণঃ । ইন্দ্রিয়ার্থেম্বসংপ্রা-প্তি र्गरन। বৃদ্ধি বিপর্য্যয়ঃ ॥ রুজ-শ্চ বিবিধা স্তীব্রা ভবস্ত্যাশুহ-রে হতে । হতে কালান্তরমে তু ধ্রুবো ধাতৃক্ষযো নৃগা॰ ॥ ততো ধাত ক্ষবাজ্জন্ত বেদনাভিশ্চ ন-শ্যাতি। হতে বৈকল্য জননে কে-वन॰ देवमा देनशूना< 11 मंत्रीत॰ ক্রিয়া যুক্তণ বিকলম্ব মবাপ্ল-

या । विभनाष्मम् विख्छयः भृ-র্বোক্তণ পঞ্চকারণণ ৷৷ রুজাকরা-ণি মর্ম্মাণি ক্ষতানি বিবিধা রুজঃ ৷ পৰস্ভান্তে চ বৈকল্যণ স্ববৈদ্য ব-শগো যদি।। ছেদ ভেদাভিঘাতে-ভ্যো দহনাদারণাদপি। উপঘা-ত বিজানীযামৰ্মণাম্বল্য লক্ষ-ণ ৷৷ মৰ্ম্মাভিঘাতশ্চ ন কশ্চিদস্তি যো ২ন্নাত্যযো বাপি নিরত্যযো বা। প্রাযেণ মর্মস্বভিতাডিতাস্ত বৈকল্য মৃচ্ছস্ত্যথ বা মিুষস্তে ॥ মর্মাণ্যধিষ্ঠায হি যে 'বিকারা মূর্চ্ছন্তি কাষে বিবিধা নরাণা। প্রাযেণ তে ক্লছ্ত্বা ভবস্তি নর-मा यदेव त्रि माधायानाः ॥ 🗱 ॥ সপ্তনোধ্যাযঃ । অথাতঃ সিরা বর্ণন বিভক্তি নাম শারীর ব্যা-খ্যাস্যামঃ। সপ্ত সিরাশতানি ভ-বস্তি। যাভি রিদ॰ শরীর নারাম ইব জলহারিণীভিঃ কেদার ইব চ স্ব্যাভি রুপস্নিহ্নতে অনুগৃহ-তে চাঙ্গঞ্চন প্রসারণাদিভি বি-শেষ্যে। ক্রন্স পত্র সেবনীনা মিব চ তাসাং প্রতানা স্তাসাং নাভি মূল ততশ্চ প্রসরস্থার্দ্ধ মধ স্তি-ৰ্য্যক্ চ ।। 🟶 ।। ভবত*চাত্ৰ । যাব-ত্যস্ত সিরাঃ কাষে সম্ভবস্তি শ্-

বীরিণা । নাভ্যা সর্বা নিবদ্ধা ন্ত। প্রতন্বন্তি সমস্ততঃ ॥ নাভি-স্থাঃ প্রাণিনাণ প্রাণাঃ প্রাণানা-ভি ব্যু পাশ্রিতা। সিরাভি রাবৃ-তা নাভি শ্চক্রনাভি রিবারকৈঃ ।। তানা॰ মূলসিরা শ্চত্বারি॰শৎ। তাসা॰ বাতবাহিন্যো দশ। পিত্ত-वाहित्या मणा ककवाहित्या मण । দশ রক্তবহিন্যঃ। তাসাম্ভ বাত-বাহিনীনা বাতস্থান গতানা পঞ সপ্ততিশত ভবতি। তাবত্য এব পিত্তবাহিন্যঃ। পিত্তস্থানে কফ-বাহিন্যশ্চ। কফস্থানে রক্তবাহি-ন্যশ্চ। যক্তৎ প্লীক্লো রেব মেতা-নি সপ্ত সিরাশতানি। তত্র বাত-বাহিন্যঃ সিরা একস্মিন্ সক্থি পঞ্বি॰শতিঃ। এতেনেতর সক্থি বাহূ চ ব্যাখ্যাতৌ । বিশেষতস্তু কোষ্ঠে চতুস্ত্রি॰শত্তাসাণ গুদমে-**ঢ়া** শ্রিতাঃ। শ্রোন্যা মফৌ। দ্বে দ্বেপার্শ্বযোঃ। ষট্ পৃষ্ঠে। তাবত্য এব চোদরে। দশ বক্ষসি। এক চত্বারি॰শজ্জজুণ উদ্ধৃ৽। তাসা॰ চ-তুর্দশ গ্রীবাষা । কর্ণযো শ্চতসুঃ । नव जिल्लायाः। यह नामिकायाः । অফৌ নেত্রযোঃ। এব মেতৎ পঞ্চনপ্রত্যধিকশত বাতবহানা

সিরাণাণ ব্যাখ্যাতণ। এষ এব বি-ভাগঃ শেষাণামপি ৷৷ বিশেষত-স্তু পিত্তবাহিন্যো নেত্ৰযো দশ। কর্ণ ষোর্ঘে। এবং রক্তবহা কফব-হাশ্চ। এব মেতানি সপ্ত সিরাশ-তানি সবিভাগানি ব্যাখ্যাতানি ।।ঞ্ছা। ভবন্তি চাত্র। ক্রিয়াণ। মঞ্র-তীয়াত মনোহ॰ বুদ্ধি কর্ম্মণা॰ । করোত্যন্যান্ গুণাণ শ্চাপি স্বাঃ নিরাঃ পবন শ্চরন।। यদ। তু স-পিতে। বাযুঃ স্বাঃ সিরাঃ প্রতিপ-দাতে। তদাস্য বিবিধারোগ। জা-যন্তে বাত সম্ভবাঃ।। ভ্ৰাজিকুতা মন্ধরুচি মগ্নিদীপ্তি মরোগতা । সংসর্গৎ স্বাঃ সিরাঃ পিত্তণ সর্য্যা-চ্চান্যান গুণানপি ॥ यहा প্রত্ন-পিত• পিত্ত॰ সেকতে স্ববহাঃ সি-রাঃ। তদাস্য বিবিধা রোগা জা-যন্তে পিত্ত সম্ভবাঃ ৷৷ ক্ষেহ মঙ্গে-यू मन्तीना॰ देख्या॰ वन यूमीर्वजा॰ । করোত্যন্যান্ গুণা॰ শচাপি ব-লাসঃ স্বাঃ শিরা শ্চরন্।। যদা তু ঙ্গপিতঃ শ্লেমা স্বাঃ সিরাঃ প্রতি-পদ্যতে । তদাস্য বিবিধা রোগা জাযন্তে শ্লেম সম্ভবাঃ।। ধাতৃণা॰ পূরণ বর্ণ স্পর্শজ্ঞান মসংশ্রই । স্বাঃ সিরাঃ সঞ্চরডক্ত॰ স্বর্যাচ্চা-

ন্যান্ গুণানপি॥ যদা তু স্পিত॰ রক্ত॰ সেবতে স্ববহাঃ সিরাঃ। ত-দাস্য বিবিধারোগা জাযন্তে রক্ত-সম্ভবাঃ॥ ন হি বাত॰ সিরাঃ কা-শ্চিন্নপিত্ত॰ কেবল॰ তথা ৷ শ্লেমা-**৭**° বা বহস্ত্যেতা অতঃ সৰ্ববহাঃ স্মৃতাঃ।। প্রদুষ্টানা হি দোষাণা মুচ্ছিতানা প্রধাবতা । দ্রুব মু-মাৰ্গগমন মতঃ সৰ্বব্যাঃ স্মৃতাঃ ॥ তত্রারুণা বাতবহাঃ পূর্য্যস্তে वायूना मिताः । शिखानूकान्ठ নীলাশ্চ শীতা গৌর্য্যঃ স্থিরাঃ ककार ॥ अमृथशास द्राशिगः मिता नाजाय भीजनाः॥ 🛊 ॥ অত উদ্ধৃ প্রবক্ষ্যামি ন বিদ্ধে म्याः मित्रा जिसक् ॥ देवकनाः भ-রণঞ্চাপি ব্যধাত্তাসাণ ধ্রুবণ ভ-বেৎ। সিরাশতানি চত্বারি বি-माण्डाथाम् वृक्तिमान्॥ यहेिंव॰-শচ্চ শতং কোন্তে চতুঃষ্টিশ্চ युर्किन । শাখাসু ষোডশ সিরাঃ কোষ্ঠে দাত্রিণ্শদেব তু ৷৷ পঞ্চাশ-জ্জানুন শ্চোর্দ্ধ মবেধ্যাঃ পরিকী-র্ত্তিতাঃ। তত্র সিরাশত মেকৈক-ম্মিন্সক্থি ভবতি তাসাণ জাল-ধরা ত্বেক। তিসু শ্চাভ্যস্তরাঃ। ত-ত্রোর্বোঃ সংজ্ঞে ছে লোহিতাক

সংজ্ঞা চৈকৈতা স্তুবেধ্যাঃ। এতে-নেতর সক্থি বাছু চ ব্যাখ্যাতা-বেব মশস্ত্র কুত্যাঃ যোডশ শাখা-সু। দাত্রি॰শৎ শ্রোণ্যা॰ তাসা মফাবশস্ত্র ক্লত্যাঃ। ছে ছে বিটপ-ষোঃ কটীক তরুণযোশ্চ। অফী-বন্ধী বেকৈকস্মিন্ পার্শ্বে তাসা মেকৈকা মৃদ্ধগাণ পরিহরে । পা-র্শ্ব সন্ধিগতে চ দ্বে। চতস্ত্রে। বি॰-শতিশ্চ পৃষ্ঠবংশ মুভ্যত স্তাসা मृर्ष्कृगामित्ना एव एव शतिश्दत्रषृ-হতী সিরে। তাবত্য এবোদরে তাসাণ মেঢ়োপরি রোমরাজী মু-ভমতো ছে ছে পরিহরেৎ ৷ চ-ত্বারি॰শদ্বক্ষসি তাসা॰ চতুর্দশা-শস্ত্ৰকৃত্যা। হৃদযে দ্বে দ্বে দ্বে স্তন-মূলে। স্তনরোহিতাপলাপস্তম্বে-ষূভযতো ২কৌ। এবং দ্বাত্রিণ-नानश्च क्रज़ाः भृत्श्वेषात्रातःम्-ভবস্তি। চতুঃষষ্টি শিরা শত॰ জ-ত্ৰুণ উৰ্দ্বুণ ভবতি। তত্ৰ ষট্পঞ্চাশ-চ্ছিরোধরাযা° তাসা মফৌ চত-मुक्त मर्माम छाः शति हरत । एक क्रकाणिकरणाः एव विधूतरणाः । এব॰ গ্রীবাযা॰ ষোডশাব্যধ্যাঃ। হন্বো ৰুভযতো ২ফাবফৌ তাসা-স্তু সন্ধিধমন্যৌ ছে ছে পরিহরেৎ

। ষট্ত্রি॰শঙ্জিহ্বাযাণ তাসা মধঃ যোডশাশক্রকত্যাঃ রসবহে দ্বে বাখহে চ ছে। দ্বি দ্বাদশ নাসা-যাণ তাসা মৌপনাসিক্য শ্চতসুঃ পরিহরেৎ। তাসা নেব চ তালু-ন্যেকা॰ মৃদাবদ্দেশে। অফীত্রি॰-শদুভয়ো নেত্রযো স্তাসা মেকৈ-ক। মপাঙ্গখোঃ পরিহরেৎ। কর্ণ-যো দশ তাসাং শব্দবাহিনীনা-মেকৈকা॰ পরিহরেৎ। নাসা নে-ত্ৰগতাস্ত ললাটে ষষ্টি স্তাসাণকে-শাস্তানুগতা শভসুঃ। আবর্ত্ত-যো রেকৈকা স্থপন্যা শৈচক। প-রিহর্তব্যা। শখ্বযো দশ তাসাণ শাখ্যসন্ধিগতা মেকৈকাণ পরি-হরে । দ্বাদশ মৃদ্ধি তাস। মুৎ-ফেপষোর্দ্ধে গরিহরেৎ। সীমস্তে-ষ্বেকৈকা মেকা মধিপতাবিতি 1 এব মশহ্রত্যাঃ পৃঞ্চাশজ্জত্বণ উৰ্দ্ধ নিতি। ভবতি চাত্ৰ। ব্যাপ্ন-বস্ত্যভিতো দেহণ নাভিতঃ প্রসৃ-তাঃ সিরাঃ। প্রতানাঃ পদ্মিনী कन्मािषमािना॰ यथ। জन॰ ॥ 🗱 ॥ अरुटमा श्वागः। अथानः সিরাব্যধবিধি শারীর ব্যাখ্যা-मा। यान ऋतित कक कठ ক্ষীণ ভীৰু পরিশ্রান্ত স্ত্রী মদ্যা-

ধকর্ষিত মত বাস্ত বিরিক্তাঙ্গা-পিতানুবাসিত জাগরিত ক্লীব রু-শ গর্ভিণীনাণ কাস শ্বাস শোষ প্রবৃদ্ধন্বরাক্ষেপক পক্ষাঘাতোপ-বাস পিপাসা মূচ্ছা প্রপীডিতা-नाक मिता न विरधा । या का-वाधा वाधाननाम्का म्काननाय-ন্ত্ৰিত। যদ্ৰিত। শ্লেতা বৃত্তি।। শোনিতাবসেক সাধ্যাশ্চ বিকা-রাঃ প্রাগতিহিতা তেযু চাপক্ষের-ন্যেষু চানুক্তেনু যথাজ্যাসং যথা नगयक मिद्रा॰ निर्धाए। প্রতি-ষিক্কান। মণি চ বিক্তেপসর্গ আ-ত্যয়িকেযু সিরাধ্যংন মপ্রতি-ষিক । তত্র সিগ্ধ স্বিগ নাত্র যথাদোষ প্রত্যনীক জবপ্রায-মন্ন° ভুক্তবন্ত° ধবাগৃ° পীতবন্ত° বা যথাকাল মুপস্থাপ্যাসীন॰ স্থিত বা প্রাণানবাধমানে। ः 🖫 পট চৰ্মান্তৰ্ক্ষল লতানা মন্য-ত্ৰেন যন্ত্ৰবিদ্বা নাতিগাচ না-তিশিথিল॰ শরীর প্রদেশ মাসা-দ্য যথে।ক্ত॰ শস্ত্র॰ গৃহীত্ব। সিরা॰ বিধ্যেৎ ৷৷ৠ৷ বৈৰাতি শীতে না-ত্যুক্তে ন প্রবাতে ন চাভূতে। দিরাণা ব্যধন কার্য্য মরোগে বা कनाहन।। एक वाधामितः भूक्षयः

প্রত্যাদিত্যমুখ মরত্নিমাত্রোচ্ছি-তে উপবেশ্যাসনে সক্থ্যো রাঙ্গ-क्षिज्या निर्वेगा अर्श्वमिष्वय-স্যোপরি হস্তাবস্তগূ ঢাঙ্গুষ্ঠ কত-मुग्गी मनारवाः ज्ञाशिषा यञ्जनमा-টক গ্রীবাম্ন্ট্যো রুপরি পরিক্ষি-প্যান্যেন পুরুষেণপশ্চাৎ স্থিতে-ন বামহস্তেনোত্রানেন শাটকা-ন্ত ৰ্ষণ আহ্যিত্বা ততো বৈদ্যো জ্রষাদ্দক্ষিণহুস্তেন সিরোত্থাপ-নাৰ্থণ নাত্যায়ভশিথিলণ যন্ত্ৰমা-বেক্টযত্যসূক্ সাবণার্থণ যন্ত্রণ পৃ-ষ্ঠনধ্যে চ পীডযেদিতি কর্ম্ম পূরু-स्थ तायूशूर्व मूथ सागट्यटम्य छ ভনাসগতানা মন্তমুখ বৰ্জ্ঞা-না দিরাণা ব্যধেন যন্ত্রণ বিধিঃ েতত্র পাদব্যধ্যসিরস্য পান॰ ম-মে স্থানে সুস্থির স্থাপি যিত্বান্য পাদ मीय भक्ष् हिन मृहेकः क्षा ব্যধ্যপাদ জানুসন্ধে রংঃ শাট-কেনাবেষ্ট্য হস্তাভ্যা॰ প্রপীড্য धनः वाधाधातमात्राभित हजू-রঙ্গুল প্লোতাদীনা মন্যতমেন यकाः शामिताः विरक्षाः । ज-গ্রোপরিফীদ্ধস্তৌ গূঢাঙ্গুণ্ঠ ক্লত-মুষ্টী সম্যাসনে স্থাপ্যিত্বা সূ-रथाপविष्ठेमा शूर्ववाखाः वक्षा इ-

खिनद्रा॰ विरया । गृथुमी वि-শ্বাচ্যোঃ সন্ধৃচিতজানু সর্পরঃ मा । भागि शृष्ठे ऋस्त्रमूझा-মিতপৃষ্ঠস্যাবাক্শিরস্কস্যোপবি-खैमा विष्कृ र्जिंड शृष्ठेमा विरक्षा । উদরোরদোঃ প্রদারিতোরস্ক-স্যোমমিতশিরস্কস্য বিস্ফৃজ্জি-তদেহস্য বাহুভ্যা মবলম্বামান-দেহস্য পার্শ্ববোঃ। অবনামিত মেঢুস্য মেঢ়ে । উন্নামিত বি-দফজিস্বাগ্রস্যাধে। জিস্বাধা । অতিব্যক্তাননস্য তালুনি দন্ত-মূলেষু চ। এবং যন্ত্রোপায়ান-ন্যা॰ চ সিরোখাপন হেতূন্ বু क्यादिका गतीत्रवर्णन गांधिव **८**भन ह विषशा । या गतन्यव-কাশেষু যবমাত্রণ শস্ত্রণ নিদধ্যা-দতো ২ন্যেম্বৰ্জযবমাত্ৰ ত্ৰীহি-মাত্র॰ বা ত্রীহিনুখেন। অঙ্গা मुणित क्रिंगितिकया विरधानक्षयव মাত্র॰॥ৠ॥ ভবস্তি চাত্র। ব্যভূে বৰ্ষাস্ বিধ্যেত গ্ৰীম্মকালে তু শীতলে। হেমন্তকালে মধ্যাহ্নে শস্ত্ৰকালা ক্ৰয়ঃ স্মৃতাঃ ।। সমাক্ শস্ত্র নিপাতেন ধার্যা যা সূরেদ मृक्। भूष्ट्र ई॰ क़फ्का ভিষ্ঠেক সুবি-काला विनिर्दिश ।। यथा जन

সুম্ভ পুষ্পেভাঃ পূৰ্বণ সূবতি পীতি-का। তথা मित्राम् विकाम् पूर्छ মগ্রে প্রবর্ত্ততে ।। মূচ্ছিতস্যাতি-ভীতস্য শ্রাম্ভস্য তৃষিত্স্য চ ৷ न वश्खि मित्रा विका खथानूथि-ত যন্ত্ৰিতাঃ।। ক্ষীপদ্য বহুদোষস্য मूर्ष्क्या विक्रञ्मा ह । जृत्या ३-পরাত্নে বিসাব্যা সাপরেদ্য স্ত্র্য-**८**ङ्भि वा ॥ त्रकः मत्भव (मायञ्च ঙ্গর্যাদপি বিচক্ষণঃ। ন চাতিপ্র-मुख कर्यप्राटक्य मण्ममदेन र्ज-॥ त्य ।। विनदमा वहदमायमा वय-क्रमा नतीतिनः। शतः श्रमान मिः চ্ছম্ভি প্রস্থ শোণিত মোক্ষণে ৷৷ তত্র পাদদাহ পাদহর্ষাববান্ধ কটিপ্য বিসৰ্প বাতশোণিত বা-তকণ্টক বিচর্চিকা পাদদারী প্র-ভৃতিষু ক্ষিপ্রমর্মণ উপরিফাদ্যু-**দুলে** ত্রীহিমুখেন সিরাণ বিধ্যেৎ । শ্লীপদে তচ্চিকিৎসিতে যথা ব-ক্ষ্যতে । ক্রোফুক শিরঃ খঞ্জ প-मून वाज्यमनामू जञ्चायाः छ-য়্বস্যোপরি চতুরস্থলে। অপচ্যা মিব্রুবস্তে রধস্তাৎ দ্ব্যঙ্গুলে। জা- 🏻 न्मस्य रूपर्यारथ। च। ठजूतकूटन পৃধুস্যা । উরুমূল সংশ্রেতাম্ব গল গণ্ডে। এতে নেতর সক্থি বাহু চ

ব্যাখ্যাতে।। 🗱 ।। বিশেষতস্ত বা মবাহো সর্পরসন্ধে রভ্যন্তরতো বাহুমধ্যে প্লীক্লি কনিষ্ঠিকানা-मिकरया मरिशा वा। এব॰ मिकनवा-হৌ যক্তদালো ককোদরে চৈতা মেব চ কাশ স্থাসযো রপ্যাদিশ-স্তি । গৃধুস্যা মিব বিশ্বাচ্যা । শ্রোণিপ্রতি সমস্তাৎ দ্যঙ্গুলে প্রবাহিকাযা॰ শূলিন্যা॰ পরিক-ৰ্ত্তিকোপদণ্শ শূকদোষ শুক্রব্যা-পৎসু মেদ্রুমধ্যে। বৃষণযোঃ পা-র্ম্বে মূত্রবৃদ্ধ্যাণ। নাতে রধ শততুর-**जू**रल रमवना। वामशार्स्स मरका-**पदा । वामशार्य्य कका खनर्या** রম্ভরে ২ম্ভর্বিজধে পার্শ্বলুলে চ ৷ বাহু শোষাববাহুকষো রপ্যে: কে বদস্ত্য শধে। রন্তরে। ত্রিক সন্ধি মধ্যগ্ৰতা তৃতীয়কো অধ-কন্ধ সন্ধিগত। মন্যতর, পার্শ্বস্থ স্থিতাঞ্চতুর্থকে। হনুসন্ধি মধ্যগ-তা মপস্মারে। শধ্য কেশান্ত স-ন্ধিগতা মুরো ২পাঙ্গ ললাটেষু চোনাদে ২পসারে চ। জিহ্না-রোগেষধোজিহ্বাযাণ দন্তব্যাধি-यू छ। जाल्नि जालदायू। कर्न-যো রুপরি সমস্তাৎ কর্ণশূলে তদোগেষু চ। গন্ধাগ্রহণে নাসা-

রোগেষু চ নাসাত্রে তিনিরাকি পাক প্রভৃতিশ্বামযেযুপনাসিকে। লালাট্যা মপাক্ষ্যা কৈতা এব শি-রোরোগাধিমষ্ঠ প্রভৃতিবু রোগে-র্ম্বিতি।। 🟶 ।। অত উদ্ধৃ দু ফব্যধ-न यन् वराशामरायः । তक् मूर्वि-দ্বাতিবিদ্ধা সঞ্চিতা পিচিতা স্ব-টিতাপ্রসূতা অত্যুদীর্ণা অন্তে ২-ভিহতা পরিশুক্ষা কূণিতা বেপিতা অনুখিত বিদ্ধা শস্ত্ৰহতা তিৰ্যাধি-দ্ধা অবিদ্ধা অব্যাধ্যা বিক্ৰতা ধে-नुका भूनः भूनिक्ता निता नायुद्धि সন্ধি মর্মাসু চেতি বিংশতি দু ফী-ব্যধাঃ। তত্ত্ব যা সুশ্ব শস্ত্ৰ বিদ্ধা ন ব্যক্ত মসৃক্ সুবতি রুজা শো-ফবতী চ সা দুৰিদ্ধা। প্ৰমাণাতি-রিক্ত বিদ্ধাষা মন্তঃ প্রবিশতি শোণিত শোণিতাতিপ্ৰবৃত্তি ৰা সাতিবিদ্ধা। স্বঞ্চিতাষা মপ্যেবং। কণিপ্ৰপ্ৰমথিতা পৃপুলীভাব মা-পন্ন। পিচ্চিত। অনাসাদিতা পু-নঃপুন রন্তধোশ্চ বহুশঃ শস্ত্রাভি-হতা স্টিতা। শীত ভ্য মূচ্ছাভি রপ্রবৃত্ত শোণিতা অপ্রসূতা। তী-ক্ষা মহামুখশস্ত্রবিদ্ধা অত্যুদীর্ণা। व्यव्यत्रक्रम्। विगारस्रविद्याः व्यरस ংভিহতা। ক্ষীণ শোণিতস্যানিল-

পূর্ণা পরিশুকা। চতুর্জাগাবসা-দিতা কিঞ্চিৎপ্রবৃত্তশোণিতা কূ-ণিত। । দুঃস্থান বন্ধনাদ্বেপমান।-ষাঃ শোণিত সংমোহো ভবতি সা বেপিতা। অনুখিতবিদ্ধাযা মপ্যেব । ছিন্নাভিপ্রবৃত্তশোণিত। ক্রিযাসকরী শস্ত্রহতা। তির্যা-ক্প্রণিহিতশস্ত্রা কিঞ্চিচ্ছেষা তি-র্যাক্রিদ্ধা। বহুশঃক্ষতা হীনশস্ত্র-প্রণিধানেনাবিদ্ধা। অশস্ত্রক্ত্যা অব্যাখ্যা। অনবস্থিতবিদ্ধা বি-দ্ৰুতা। প্ৰদেশস্য বহুশো ২ব্ছট-नामाद्वाङ्वाश मूक्यू कः त्नानि-তসুবা ধেনুকা। সৃশ্বশস্ত্র ব্যধনা-षश्रम। বিচ্ছিন। পুনঃপুন বিদ্ধা । ज्ञायृष्टि मिता मिक्क गर्यम् विका বা রুজা॰ শোষ বৈকল্য মরণ বাপাদযতি।। 🟶 ॥ ভবস্তি চাত্র। দিরাসু শিক্ষিতো নাস্তি চলাছে-তাঃ স্বভাবতঃ মেৎস্যবৎপরিব-ৰ্ত্তম্ভে তত্মাদ্মত্নেন তাড়যেৎ।। অজানতা গৃহীতে তু শস্ত্ৰে কাষ-নিপাতিতে। ভবস্তি ব্যাপদশৈচ-তা বহুব শ্চাপ্যুপদ্ৰবাঃ য় স্বেহা-मि**जिः कियारयारेश में उथा** हा-পনৈ রপি। যাস্ত্যাশু ৰ্যাধ্যঃ শা-खि॰ यथा ममाक् मित्रावाधा**९।।**

সিরাব্যধ শ্চিকিৎসার্দ্ধণ শল্যত-ন্ত্ৰে প্ৰকীৰ্ত্তিতঃ। যথা প্ৰণিহিতঃ " সম্যক্ বন্তিঃ কাষ্চিকিৎসিতে॥ তত্র মিষ্ণ ষিদ্য বাস্ত বিরিক্তাস্থা-পিতানুবাসিত সিরাবিজ্ঞে গরি-र्ह्डगानि। त्काशायाम देवपून দিবাশ্বপ্ন বাখ্যাযাম যানোখানা-সন চণ্ক্ৰমণ শীতবাভাতপ বিশ্ল-का माश्राकीर्गाना वा जाया-भ रंगरक मनारख ॥ क्षा এट छरा॰ বিস্তর মুপরিফীদক্যামঃ। ভব-তশ্চাত্র । দিরা বিষাণ তুরৈস্ত कलोकाजिः शरेम खथा। जव-গাত यथा शूर्बः निर्द्राष्ट्रके (भा-निङ् ॥ अवनात्म कत्नीका मार প্রচ্ছন্ন পিণ্ডিতে হিত'। সিরাঙ্গ-व्यान्तरक ब्रस्क मुझानावू षठि श्टिं ॥ 🕸 ॥ नवत्याशायः । ष्यथार्छ। धमनी व्याकत्रवः भाती-तः बाधामाभः। **ठ**ष्विः गि ং র্ধমন্যো নাভিপ্রভবা অভিহিতাঃ া ভক্র কেচিদাহঃ দিরা ধমনী স্রোভদা মবিভাগঃ দিরা বিকা-য়া এব খমন্যঃ স্বোতাণসি চেতি । তত্ত্ব সম্যক্। অন্যা এব হি ধ্যন্যঃ সোতা দি চ. দিরাভ্যঃ ক: अक्रिश्चनानाष्ट्रामन महिर्माए

क्षीरेवरमयामाभगाक क्ववन्त्र কর্মদ্বাৎ সৌশ্ব্যাচ্চ বিভক্ত কর্ম্ম-ৰা মপ্যবিভাগ ইব কৰ্মসু ভবঙি । তাসাম্ব নাভি প্রভবাণা॰ ধম-नीना मुर्कुगा जन जन ठाटशाना-मिना कटमु खिर्गग्गाः। छेर्क গাঃ শব্দ স্পৰ্শ ৰূপ ৰুদ গন্ধ প্ৰ-শ্বাদোচ্ছাস জৃম্ভিত ক্ষুদ্ধসিত ক-थिত क्रमिणामी षित्मवान जिवश-স্ত্যঃ শরীর• ধারমস্তি। তাস্ত হা-দয মভিপ্ৰপন্না খ্ৰিধা জাষভে তান্ত্ৰি॰শৎ i তাসাম্ব বাত পিত্ত কফ শোণিত রসান্দ্রে দ্বে বহত স্তা দশ শব্দ ৰূপ রস গন্ধান ফী-ভি গৃহীতে। দ্বাভ্যাণ ভাষতে চ দ্বাভ্যা॰ ঘোষণ করোতি দ্বাভ্যাণ স্বণিতি দ্বাভ্যা প্রতিবুধ্যতে । ष ठायः वाहित्गो। ष खनाः স্ত্রিয়া বহঁতঃ স্তেন সংশ্রিতে তে এব শুক্রু নর্ম্য স্তনাভ্যা মভি-বহতঃ। তা স্ত্রেতা স্ত্রি॰শৎ সবি-ভাগা ব্যাখ্যাতাঃ৷ এতাভি ৰাৰ্কু नाटं इन्दर भार्थ शृष्ठीतः कक्ष ত্ৰীব। বাহবো ধাৰ্য্যন্তে যাপ্যত্তে চ।। 🗱 ।। ভবতি চাত্র। উদ্ধৃ• গতা-স্ত সৰ্ব স্থি কৰ্মাণ্ডোলি সৰ্বশঃ।

অধোগনাস্ত্র বক্ষ্যামি কর্ম ভাসাণ वशाययः ॥ चारशाशमास्य वाङ মৃত্র পুরীষ শুক্রার্ত্তবাদীন্যধো ব ছন্তি। তাম্ত পিত্তাশ্য মভিপ্ৰতি-পন্না স্তত্ৰন্থ মেবান্ন পান রসং বি-পক্ষ মৌক্যাদ্বিবেচযন্ত্যো ২ভি-কছন্তাঃ শরীর তপ্যস্তাপ্যস্তি চোদ্ধ্যতানা ভির্যাগ্যতানা র-সন্থানঞ্চিপ্রযন্তি মূত্র পুরীষ दिशालक विद्युप्रशास्त्रकान-া স্বাস্থ্যে চ ত্রিধা জাব্যস্ত তা জ্রি-শৎ। তাসাম্ব বাত পিত্ত কফ শোণিত রদান্ ছে ছে বহতঃ জা मण (व अववाहिकावछा भिष्ठ তোষবছেৰে মূত্ৰবন্তি মভিপ্ৰগ-মে মূত্রবছে বে শুক্রবহে বে শুক্র প্ৰাদুৰ্ভাষাৰ ৰে বিদৰ্গায় তে এব রক্ত মভিবছতো নারীণামার্তব मःडदः। एवं वर्ष्ण नित्रमत्नी कृता-स्र अधिवत्स्र । अकोवना सिर्वा-भ्गानाः धनमीनाः त्यम मर्भयस्ति। তা স্ত্রেতা স্ত্রিশৎ সবিভাগা ব্যা-খ্যাতাঃ। এতাভি রধোনাভেঃ প काणय की मृज भूतीय छन विख মেতু সক্থীনি शार्षात्छ याभात्छ চ।। # ।। ভবতি চাত্র। অধোগমা-ম্ভ দৰ্বত্তি কৰ্মাণ্যতানি সৰ্বশঃ।

তিৰ্য্যগ্গাঃ সংপ্ৰবক্ষ্যামি কৰ্মতা-চতসূণাণ ধমনীনা মেকৈকা শত্ত-ধা সহসুধা চোত্তরোত্তর বিজ-জ্যন্তে তাস্ত্বসংখ্যেষা স্তাভি রিদণ শরীরণ গবাক্ষিত বিবন্ধ মাতত-ষ্ণ। তাসা॰ মুখানি রোমকৃপপ্র-তিবদ্ধানি থৈঃ স্বেদ মভিবহস্তি तमकाणि मञ्जर्यसास्वर्दिक তৈরেব চাভ্যঙ্গ পরিষ্কোবগাঁহা-लেशन वीर्याशुखः भन्नीत मिक পদ্যক্তে ছচি বিপক্বানি। তৈরেব ম্পাৰ্শ ৰসুখ বা গৃহাতি। তা স্ত্ৰেতা শ্চম্যে ধননাঃ সৰ্বাদ্ধ-তাঃ সবিভাগা ব্যাখ্যাতাঃ। ভর-ত শ্চত্ৰ ৷৷ যথা স্বভাৰতঃ স্বানি मृगालम् विरमम् छ। धमनीना॰ তথা স্বানি রসো বৈ রুপচীযতে া৷ পঞ্জিভূতা স্তৃথ পঞ্জন্তঃ প-ঞ্চেন্সিয়॰ পঞ্চসু ভাবযন্তি। পঞ্চে-ক্ৰিয়ণ পঞ্চসু ভাবযিত্বা পঞ্ছ মা-য়াস্তি বিনাশকালে ৷৷ 🏶 ৷৷ অত উদ্ধৃ স্যোতসাণ মূলবিদ্ধলকণ मुलातकगामः। जानि ज्ञानातमा **एक तम तक गांग यामा मृ**ज পুরীষ শুক্রার্ত্তব বহানি যেশ্বধি-কার একেষা॰ বছুনি। এতেষা॰

বিশেষা বহুবঃ। তত্র প্রাণবহুে দ্বে **ত**रा मृ नः समयः तमवाश्गिम ধমনাঃ। তত্র বিদ্ধাস্য ক্রোশন বিন্যন মোহন ভূমণ বেপনানি गत्र वा खंदि । जन्नदर्ह ध्व **ত**रया यू ल यायागरया श्वताहि-ন্যশ্চ ধমন্য স্তত্ৰ বিদ্ধস্যায়ান भूलाम्यदियो इपिः शिशामास्ताः बर्न वा । উদক্বহে ছে তথে। মূল তালু ক্লোম চ। তত্ৰ বিদ্ধস্য পিপাসা সদ্যো মরণঞ। রসবহে ष छरगा मूं ल॰ इत्रय॰ त्रनवाहि-ন্যশ্চ ধমন্য স্তত্ৰ বিদ্ধান্য শোবঃ প্রাণবহ বিদ্ধবচ্চ মরণ তল্লিকা-নি চ। বক্তবহে দ্বে তবে। মূলি रक्ष भीशाती तक्तवाशिना क ধমন্য স্তত্র বিদ্ধাস্য শ্যাবাঙ্গতা স্বরো দাহঃ পাণ্ডুতা শোণিতাতি-গমন রক্তনেত্রতা চেতি। মাণ্স-बर्ट्स एवं जरमा मूल अ রক্তবহাশ্চ ধমন্য স্তত্র বিদ্ধাস্য শ্বযথু র্মাণসশোষঃ সিরাগ্রন্থযো यत्र । त्यापायत्र एव जर्याम् व॰ करी वृक्को **ह** छ्व विश्वमा स्थ-मागमनः निक्षायन जान्तामा স্থূলশোকতা পিপাসা চ। মূত্র-बट्ट एव जरमा मू न॰ विश्व त्यं पुष्

তত্র বিদ্ধাস্যানদ্ধ বস্থিত। মূত্র নি-রোধঃ স্তব্ধমেট্রতা চ । পুরীষ বহে দ্বে অবো মূলি পক্ষাশবো নাহো দুর্গদ্ধ-

তা গ্ৰথিতাম্ভতা চ। শুক্ৰবহে দ্বে ज्या मूनः खत्ने व्यत्ने ह ज्व বিদ্ধন্য ক্লীবতা চিরাৎ প্রসেকা রক্ত শুক্রতা চ। আর্ত্তববহে ছে তয়ে মূলি গৰ্ভাশ্যঃ আৰ্ত্তব্বা-হিন্যশ্চ ধমন্য স্তত্ৰ বিদ্ধাযাণ ৰ-स्नाष्ट्र देमशूनामहिक्ष मार्खव নাশশ্চ। সেবনী চ্ছেদাজ্জা প্রা-**जूर्जावः । विश्व श्वम विश्व लक्षमः** প্রাণ্ডক্ত মিতি। সোতো বিদ্ধম্ব প্রত্যাখ্যাযোপচরেদুকৃত শল্য-স্তু ক্ষত বিধানেনোপচরেৎ । মৃ-লাৎ স্বাদন্তর দেহে প্রসৃতন্ততি-বাহি যৎ। স্থোত স্তদিতি বিজ্ঞেয়॰ मित्रं भगनि विक्ठिं ।। 🛊 ।। म-শমোধ্যাयः। অথাতো গভিनी-ব্যাকরণ শারীর ব্যাখ্যাস্যামঃ । গর্ভিনী প্রথম দিবসাৎ প্রভৃতি নিত্য প্রস্থা শুচালমূতা শুক্ল-বসনা শাস্তি মঙ্গল দেবতা ব্ৰাহ্ম-ণ গুরুপরা চ ভবেম্মলিন বিক্লউ रीनगावानि न न्भूरममूर्गम पूर्न-र्गनानि . शतिश्द्रमूट्यक्रनी यान्त

কথাঃ শুদ্ধণ পর্যাবিতণ স্বাথিতণ ক্লিন্ন° চান্ন° নোপভূঞ্জীত। বহি নিজ্মণ শুন্যাগার চৈত্য শাশান বৃক্ষাশ্রধান্ ক্রোধ ভষ শঙ্রাণ-শ্চ ভারানুচ্চৈর্ভাষ্যাদিক পরি-হরেদ্যানি চ গর্ভ ব্যাপাদষস্তি। ন চাভীক্ল তৈলাভ্যাঙ্গোৎসাদ-নাদীনি নিষেবেত। ন চাষাশ্যে-চ্ছরীর॰ পূর্ব্বোক্তানি চ পরিহরেৎ । শयनागन मृघाखत्र नाजूक मशा अत्यारशं विष-ধ্যাৎ। হৃদ্য জব মধুরপ্রায স্নি-শ্বণ দীপনীয় সংস্কৃতঞ্চ ভোজনণ ভোজ্বেৎ সামান্য মেতদাপ্রস-वा । । । वित्यवज्ञ गर्जिनी প্রথম দ্বিতীয় তৃতীয় মাসেষু মধুর শীত দ্রবপ্রায় মাহার মুপদেবেত । বিশেষতস্ত তৃতীযে ষঞ্চিকৌদ-ন প্রসা ভোজ্যেক্ততুর্থে দল্লা **अक्टूब अयमा यटक मर्शिमा ८०**-ত্যেকে। চতুর্থে পয়ে। নবনীত म॰मृक माश्रातरयञ्जानम मा॰म সহিত স্বদ্যমন্ন ভোজ্যেৎ ৷ পঞ্চমে ক্ষীর সর্পিঃ সংসৃষ্ট । যন্তে श्वम रेखे। मिक्तमा मर्शिया माजा॰ भागरयासवागृ॰ वा । **मश्रास्य मर्शिः** পৃথক্পণ্যাদি সিদ্ধা মেব মাপ্যা-

ষ্যতে গর্ভঃ। অফমে বদরোদকে-ন বলাতিবলা শৃতপুষ্প পলল পযো দধি মস্তু তৈল লবণ মদন-ফল মধ ঘৃত মিশ্রেণাস্থাপয়েৎ ! পুরাণপুরীষ শুদ্ধার্থ মনুলোম-নার্থঞ্চ বাবোঃ। ততঃ পয়ে। মধুর क्यां मिटक्वन टेंडिटननान्वाम-(यमनूटनारम हि वारमे मूथ॰ श्र-সূযতে নিরুপদ্রবা চ ভবতি। অ-ত উদ্ধৃণ স্নিগ্ধাভি র্যবাগৃভি র্জাঙ্গ-লর্সৈ শ্চোপক্রমেদাপ্রসবকা-লাদেব মুপক্রাস্তা স্নিগ্ধা বলবতী সুখ মনুপদ্রবা প্রসূযতে। নবমে মাসি সৃতিকাগার মেনাণ প্রবে-শ্বেৎ প্রশস্ততিখ্যাদৌ। তত্তা-রিষ্ট বান্ধণ ক্ষত্রিয় বৈশ্য শূদ্রা-ণা॰ শ্বেত রক্ত পীত কৃষ্ণেষু ভূমি প্রদেশেষু বিশ্ব ন্যগ্রোধ তিন্দুক ভল্লাতক নিৰ্মিত সৰ্বাগার য-থাসংখ্য তন্ময়পর্য্যক্ষ মুপলিপ্ত-ভিত্তি॰ সুবিভক্ত পরিচ্চ্দ॰ প্রা-়গদার মুদগদার দক্ষিণদার বাই-হস্তায়ত ঞ্তুইস্তবিস্তৃত রক্ষা मञ्जल मण्यात्रः विरधयः ॥ 🛊 ॥ জাতে হি শিথিলে স্বক্ষৌ মুক্তে शनगवन्नत्न । मण्टल जनत्न नात्री एखमा मा जू अकारिनी।।

ভাৱাপঞ্ত প্রদ্যাবাঃ করী পৃষ্ঠ প্রতি সমস্তাদেরনা ভবতাভীক্ষণ পুরীষপ্রবৃত্তি মূত্রণ প্রসিচ্যতে स्यानित्रुवाद स्त्रया ह। अजन-বিষ্যৰাগা কৃত মলল স্বস্তিবাচ-নাণ সমার পরিবৃতাণ পুরাম ফ-লহস্তা॰ স্বভ্যক্তা মুকোদক প-রিবিক্তা মথৈনাণ সন্তাণ যবাগূ মাকণ্ঠাৎ পাৰ্যেৎ। ততঃ ফ্ৰতো-পধানে মৃদু বিস্তীর্ণে শধনে স্থিতা याज्यानक्थी नृजाना यग्कनी-্যা॰ চত্তমু ব্রিষঃ পরিণতব্যসঃ প্ৰজনন সশলাঃ কৰ্ত্তিতনখাঃ প-तिष्ठदार्व दिखि ॥ **#** ॥ व्यथाना। বিশিখান্তর মনুলোম মনুমুখ ম-ভাজাৎ ব্রেষাচ্চৈনা মেকা সু-ভগে প্রবাহম্বেতি ন চাপ্রাপ্তাবী প্রবাহস্ব । বিশিখান্তর সপত্য-ষাৰ্গণ। ততো বিমুক্তে গৰ্জনাডী-श्रवत्य मन्त्वयू त्यानि वञ्कव विक नितःम् अवाट्शाः गरेनः শনৈঃ। ততো গর্ভ নির্গমে প্র-গাঢ় ততো গর্ভে যোনিমুখ প্র-পন্নে গাততর মাবিশল্যভাবাৎ ॥ 🛊 ॥ ञ्यकान श्रवाह्ना ५ विश्वः **मूक॰ वाखरुन्॰ मृक्षा**ভিঘাতিন॰ কাস শাস গোষোপকত সজ

বিকটি বা জনষতি। তত্র প্রতি-লোম মনুলোমযেৎ। গার্ভসঙ্গে তু ষোনিং ধূপযেৎ ক্লফসর্গ নি-র্মোকেণ পিঞ্জীতকেন বা। বয়ী-যাজিরণাপুশ্দীমূলং হস্ত পাদ-যো জারষেৎ সুবর্চলাং বিশল্যা বা।। গ্লা। অথ জাতস্যোক্ত মু-বিশোধ্য যু-

তাক্ত মৃদ্ধি পিচৃ দদ্যাত্ততো नाजिनाजी मकी जूल मायमा সূত্রেণ বন্ধা ছেদযেৎ তৎসূত্রে-करमन्थ नगात्रमा जीवायाः म-या श्रीपा ।। क्षा अथ अमातः শীতাভি রম্ভি রাশ্বাস্য জাতক-শ্মণি ক্লতে মধু সূর্পি রনন্তা ত্রাক্ষী রদেন সুবৰ্চূৰ্ণ মঙ্গুল্যানামিক-या त्वश्यख्रा वनारेज्यना-ভাজা ক্ষীরবৃক্ষকষাযেণ সর্বগী-স্কোদকেন বা ৰূপ্য হেম প্ৰতপ্তে-ন বা বারিণা স্বাপয়েদেন কপি-প্ৰপত্ৰ ক্ষাষেণ বা কোন্ডেন যথা कालः यथारमभः यथावि छवशः। ধননীনাণ হাদিস্থানাণ বিবৃতত্বা-দ্নন্তর । চত্রাতাত্রিরাতাদা ন্ত্ৰীণাণ স্তন্যণ প্ৰবৰ্ত্ততে ॥ ভঙ্গাৎ প্রথমে ২ক্লি মধু সর্পি রনস্তামি-শ্র॰ মন্ত্রপুত॰ ত্রিকালণ পাষ্যেদ্ধি-

डीर्य लग्नगंत्रिकः मर्लि खुडीर्य চ। ততঃ প্রাঙ্নিবারিতস্তন্য মধু-সর্পিঃ স্বপানিতল সন্মিত দিকা-ল॰ পাষ্যেৎ।। ঞ্চা। অথ সূতিকা॰ বলাতৈলাভ্যক্তা॰ বাতহরৌষধ निःकारथरनाश्रहत्त्र मरमय रमा-या अप अप कि अप হস্তিপিপ্পলী চিত্রক শৃঙ্গবের চব্য हुनं धरामरकरनारकन शाय-ষেৎ ৷ এবং দিরাত্রণ ত্রিরাত্রণ বা ঙ্গর্যাদাদুক্ত শোণিতাৎ। বিশু-দ্ধে ততে। বিদারি গন্ধাদি সিদ্ধা[°] रव्यर्यवागृः कीत्रयवागृः वा शा-যথেৎ ত্রিরাত্ত্রণ । ততে। যব কোল ঙ্গলত্থ সিদ্ধেন জাঙ্গল রসেন শা-ल्यामन॰ ভোজरयद्य मधिवन-ষ্ণাবেক্ষ্য। অনেন বিধিন। অধ্য-জিমাস মুপসংস্কৃতা বিমুক্তাহা-রাচারা বিগত সূতিকাভিধানা मा। भून त्रार्खवनर्गनामित्छा-কে।ধন্ব ভূমিজাতা সূতিকা যৃত তৈলযো রন্যতরস্য মাজা্ পাষ-(य९। शिक्षनामि क्यायानूशाना স্নেহ নিত্যা চস্যান্দ্রিরাত্রণ পঞ্চরা-ত্ৰ॰ বা বলবতী। অবলা॰ ষ্বাগৃঁ॰ পায্যে ত্রিরাত্ত পঞ্চরাত্ত বা । অত উদ্ধৃ সিধ্বেনাম সংসর্গোণা-

পচরেৎ। প্রায়শ শৈচনা প্রভূ-তেনোক্ষোদকেন পরিষিঞ্ছে । क्लांधायाम देवथूनामीन् शतिश-রেৎ।।ৠ। ভবতশ্চাত্র। মিথ্যাচা-রাৎসূতিকাষা যো ব্যাধি রুপজা-যতে। স কৃচ্ছসাধ্যো ২সাধ্যো বা তবেদত্যয় তপৰাৎ ।। তস্মাত্তা॰ কর্ম্মণ। পরীক্ষোপচরেদেব েন-यमञ्जय माञ्चरा ।। 🟶 ।। व्यथा-পরাপতন্ত্যানাহাগ্নানৌ সরুতে তস্মাৎ কণ্ঠমস্যাঃ কেশবেফিড-यात्रुना। अमृत्ज्य । करूकानातू ক্লত বেধন সর্যপ সর্পনিশ্মোকৈ ৰ্ৰা কটুতৈল বিমিশ্ৰৈ যোনিমুখণ शृभरय । लाक्ष्मीम् नकत्क्रन वा-माः পानिभाष्ठन भानित्र्य । मृक्ति वामा। मशवृककीत मन्-(यहराष्ट्र। क्रष्ठ नाक्नीमृनककः বা মদ্য মূত্রযো রন্যতরেণ পায-ষেৎ। শালিমূল কল্কণ বা পিঞ্চ-्नाफि॰ वा गए। न मिकार्थक अर्थ लाञ्चली यश्यक्कीत मिट्यन সুরামণ্ডেন বাস্থাপথেৎ। এত রেব সিদ্ধেন সিদ্ধার্থকতৈলে-নোত্তর বৃত্তিও দদ্যাৎ। স্নিঞ্চেন বা কুপ্তনথেন হস্তেনাপহরেৎ।

প্রজাতাযাশ্চ নার্য্যা কক্ষশরীরা-য। স্তীকৈ রবিশোধিত রক্ত বা-যুনা তদ্দেশগেনাতিসংরুদ্ধণ না-ভে রধঃ পার্শ্বযোর্বস্তৌ বা অস্থ্রি বা শিরসি বা গ্রন্থি করোতি। ততশ্চ নাভি বস্তুাদর পৃষ্ঠশূলানি ভবন্তি। সূচীভি রিব নিস্তুদ্যতে ভিদ্যতে দীৰ্য্যত ইব চপক্ষাশয ৷ সমস্তাদায়ান মুদরে মূত্রসঙ্গশ্চ ভবতীতি মক্কল লক্ষণ । তত্ত वीत्रव्वानिमिक्षः जनमृयकानि-প্রতীবাপ• পায়যেৎ। যবক্ষার-**চূर्न॰ वा मर्शिषा मूर्थामरकन वा ॥** नवन हुने वा शिक्षनगिष कारथन शिक्षनगिषिष्ट्रं वा मूतायट व-क्रगां किशाय॰ वा शक्षरकारें वना প্রতীবাপ পৃথক পর্ণ্যদি ক্বাথ বা ভদ্রদারু মরিচ সংসৃষ্ট পু-রাণগুড় বা ত্রিকটুক চতুর্জা-**७**क अञ्जबुक, मिखा थारममञ्जू व। शिद्यनित्रिके मिछि॥ 🗱॥ व्यथ বাল কৌম পরিবৃত্ত কৌমব্ खाञ्चायाः नयायाः नायत्य 1 शीलू वमती निष्ठ शक्षक भा-शां टेन्हन॰ वीक्ररयः । मृक्षि চাग्गार्तर देखन शिहू यवहात-रय । भूश त्य टेक्टन व्यक्त रिम भू-

পৈঃ। রক্ষোদানি চাস্য পাণি পাদ শিরো গ্রীবাম্ববমৃজেৎ । তিলাতসী সর্যপ কণাঞ্চাত্র প্রকি-রে । অধিষ্ঠানে চাগ্নি॰ প্রস্থা-ল্যেৎ ৷ ত্রণিতোপাসনীযঞ্চাবে-ক্ষেত। ততো দশমে ২হনি মাতা-পিতরৌ হ্নত মঙ্গল কৌতুকৌ স্ব-স্তি বাচন ক্ষা নাম স্বর্যাতা ষদভিপ্ৰেত নক্ষত্ৰনাম বা।। 🛊 🛚 🖠 ততো ষথাবৰ্ণাণ ধাত্ৰী মুপেষাশ্ব-ধ্যমপ্রমাণাণ মধ্যমব্যসা মরো-গা শীলবতী মচপলা মলোলু-পা মরুশা মস্তুলা প্রসন্মক্ষীরা ম-नरशिष्ठी यनरशिकुछनी यवासा यवामितनी॰ জीवष्यमा॰ क्रा-ষ্ট্রীণ বৎসল। মক্ষুদ্রকর্ম্মিণীণ সলে জাতা মতো ভূষিষ্ঠৈশ্চ গুণৈ রশ্বি-তা॰ শ্যামা মারোগ্য বলবৃদ্ধধে বালস্য। তত্তােদ্বস্তনী করাল• क्र्यां । वयखनी नामिकामूथ **ছामियञ्चा यत्रव याशामटय । ज**-তঃ প্রশস্তাযাণ তিথৌ শিরঃস্নাতা মহতবাসস মুদল্পখণ শিশু মুপবে-भा भाजी॰ आश्रुशी मू**शत**भा म-ক্ষিণ স্তন ধৌত মীষৎ পরিসূত गिन्छा यद्यशास्त्रनः शायरय ॥ 🕸 ॥ চম্বারঃ সাগরাঃ স্তভা°

खनरयाः कीत्रवाहिनः । जवन्न সুভগে নিত্যং বালস্য বলবৃদ্ধযে ।। পষে। ২মৃতরসং পীত্বা স্বমার স্তে শুভাননে। দীর্ঘ মাযুরবা-প্লোতু দেবাঃ প্রাশ্যামৃত যথা।। অতোন্যথা নানা স্তন্যোপযো-গস্যাসান্ত্যাধিজন্ম ভবতি। অপরিনুতেপ্যতিস্তন স্তন্যপূর্ণ ন্তনগানাদুৎস্কৃহিত সোতসঃ শি-শোঃ কাস শ্বাস বনী প্রাদূর্ভাবঃ । তত্মাদেব বিধান স্তন্য ন পাযযেৎ। ক্রোধ শোকাবাৎস-ল্যাদিভিশ্চ স্ত্রিযাঃ স্তন্যনাশো -ভবতি।। 🟶 ।। অথাস্যাঃ ক্ষীর জ-नमार्थ भोमनमा मूद्रशामा यव গোধূম শালি ষ্ঠিক মাণসরস সুরা সৌবীরক পিণ্যাক লশুন अ९मा करमक्रक भृत्राहेक विम বিদারিকন্দ মধুক শতাবরী না-লৈকালাবূ কালশাক প্রভৃতীনি विषधा ॥ ॥ व्यानाः खना মপ্সু পরীক্ষেত। তচ্চেচ্ছীতল ম-মল তনু শ্বাবভাস মপ্সু ন্যস্ত মেকীভাব॰ গচ্ছত্যফেনিল মত-স্তুমক্ষোৎপ্লবতে ন সীদতি বা ত-চ্ছদ্ধ নিতি বিদ্যাত্তেন স্বমারস্যা-রোগ্য শরীরোপচয়ে বলবৃদ্ধি-

শ্চ ভবতি। ন চ কুধিত শোকার্ত্ত শ্রাম্ভ প্রদুষ্টধাতু গর্ভিণী স্বরি-তাতিক্ষীণাতিস্থূল বিদগধাভক্য বি-রুদ্ধাহার তর্পিতাযাঃ স্তন্য পা-यटयहाजीती यथक वाल ला-ষৌষধ মলানাণ তীব্ৰ বেগোৎপ-ত্তি ভযাৎ ॥ 🟶 ॥ ভবস্তি চাত্র । ধাত্যান্ত গুৰুভি র্ভোজ্যৈ বিষমে र्जायदेन खथा। जाया जिट्ट थ-ঙ্গপান্তি তত স্তন্য প্রদুষ্যতি II মিথ্যাহার বিহারিণ্যা দুষ্টা বাতা-**দयः खियाः।** দृययखि পय स्थिन শाরীরা ব্যাধ্যঃ শিশোঃ ॥ ভব-ন্তি ঙ্গশল স্তা॰শ্চ ভিষক্ সম্যাথি-ভাববেৎ ৷ অঙ্গ প্রত্যঙ্গ দেশে তু ৰুজা যত্ৰাস্য জাযতে ॥ মুহু मूकः न्यानि छ॰ न्यामामात्न ह রোদিতি। নিমীলিতাকো মূর্দ্ধ-স্থে শিরোরোগে ন ধার্যেৎ।। ব-স্তিম্বে মূত্রসঙ্গাত্তী রুজা তৃষ্য-তি मूर्ष्क् ि। विमृत्रमञ्ज देववर्षा ष्ट्रम्गाश्वानाञ्चकूकरेनः ॥ कार्ष्ठ দোষান্ বিজানীযাৎ সৰ্বত্ৰস্থাণ-শ্চ রোদনৈঃ। তেষু চ যথাভি-হিত মৃদুচ্ছেদনীয় মৌষধ মাত্র-যা ক্ষীরপস্য ক্ষীর সর্পিষা ধাত্র্যা-শ্চ কেবল মেব বিদধ্যাৎ। ক্ষীরা-

शामगाञ्जनि धाउँ। काशामग ক্ষাযাদীনাত্মন্যেব ন ধাত্র্যাঃ। তত্র মাসাদূর্দ্ধৃ কীরপাযাঙ্গুলিপ-ৰ্বদ্ব গ্ৰহণ সম্মিতা মৌষধমাত্ৰাণ বিদধ্যাৎ কোলাস্থি সম্মিতাণ ক-ক্ষমাত্রাণ ক্ষীরাম্বাদায কোলস-শ্মিতা মন্নাদাযেতি ৷৷ ঞ্চ ৷৷ যেষাণ গদানা যে যোগাঃ প্রবক্ষান্তে ২গদঙ্করাঃ। তেষু তৎকক্ষ স॰-লিপ্তৌ পাষষেত শিশু॰ স্তনৌ।। এক দ্বে ত্রীণি চাহানি বাত পি-ত্ত কক স্বরে। স্তন্যপাযাহিত সর্পি রিতরাভ্যা॰ যথার্যতঃ ॥ ন চ তৃক্ষাভযাদত্র পায়য়েত শি-শু॰ **স্তনৌ ॥ বিরেক বস্তি বম**-নান্যতে স্ব্যাচ্চ নাত্যযাৎ। यञ्जन्यक्षयाम्यमा वाय् छाच-**खि नामरय** ॥ छमा छ्छ्रेनना यूक्तमा मिर्श संधूत्रदेकः मृठ পানাভ্যঞ্জনযো র্যোজ্যণ শীতা-ষ্টুদ্বেজন॰ তথা ।। বাতেনাগ্না-পিতা॰ নাভি॰ সরুজা॰ তুণ্ডিস্৽-**ज्ञिठा॰ । भाक्र** जिल्हा अनगरम् त्त्रह त्यरमाणनाहरेनः ॥ छम-পাকে তু বালানাণ পিত্তমীণ কা-त्ररप्९ किया । त्रमाञ्चन वि-শেষেণ পানালেপনযো হিত॰।।

कीवाहावाय मर्लिः शायरय मि-দ্ধার্থক বচা মাণ্সী প্রস্যাপামা-ৰ্গ শতাবরী সারিবা ত্রাহ্মী পি-क्षनी हतिजा क्छे रेमक्षर मिक्ष[ः]। कीतामामाय मथुक वठा शिक्षनी চিত্ৰক ত্ৰিফলা সিদ্ধং। অন্নাদায দিপঞ্মূলী ক্ষীর তগর ভদ্রদারু মরিচ মধু বিডঙ্গ ডাক্ষা দিত্রান্দী সিদ্ধণ। তেনারোগ্য বল মেধাযূণ-ষি শিশো ভঁবস্তি ॥ 🟶 ॥ বাল॰ পুন গাত্রস্খ গৃহীযামটেন॰ তর্জযেৎ সহসা ন প্রতিবোধষে-দ্বিত্রাস্ ভয়াৎ। সহসা নাপহরে-দুৎক্ষিপেদ্বা বাতাদি বিঘাত ভ-ষাৎ। নোপবেশ্যেৎ কৌব্র্যা ভ্যান্নিত্য চৈন মনুবর্ত্তেত প্রিয শতৈ রজিঘা॰সুঃ। এব মনভি-হতমনা স্তৃভিবৰ্দ্ধতে নিত্য মুদগ্ৰ मञ्ज मण्णोत्ता नीरतागः मूत्रमञ्ज মনাশ্চ ভবতি। বাতাতপ বিদ্যুৎ প্রভা পাদপ লতা দর্শন দীপা-বলোকন শূন্যাগার নিমন্থান शृर्ह्यागामित्ना मूर्वर्शायमर्गठ-🏞 वानः त्रक्षः ॥ 🟶 ॥ नाः एठो বিস্জেদ্বাল নাকাশে বিষমে ন চ। নোম মারুত বর্ষেষু রজো ধূমোদকেষুচ।। ক্ষীর সাত্মাত্যা

ক্ষীর মাজ গব্য মথাপি বা। मनामाखनाभगारक्ष वीनाना॰ ঘীক্যা মাত্রযা।। ষ্ণাসকৈন মন্ত্রণ প্রাশযেল্লযু হিতঞ্চ। নিত্য মবরো-ধরতশ্চ স্যাৎ ক্রতরক্ষ উপসর্গ-ভষাৎ। প্রয়ত্তশ্চ গ্রহোপসর্গে-ভ্যোরক্যা বালা ভবস্তি॥ 🛊 ॥ অথ সমার উদ্বিজতে ত্রস্যতি রোদিতি নফসংজ্ঞো ভবতি নখ-ममदेन थीं जी याज्ञानक পतिनुम-তি দন্তান খাদতি কৃজতি জৃম্ভতে হ্লবে বিক্ষিপত্যুদ্ধু নিরীক্ষতে क्न यूषयि जन्मत्ये कुं कृता ভिषायवर्षा मीनार्खयता निनि জাগৰ্ত্তি দুৰ্বলো মানাঙ্গো মৎস্য इष्ट्रन्पत्री यथजन गरका यथा भूता ধাত্র্যাঃ স্তন্য মভিলষ্তি তথা নাভিল্যতীতি সামান্যেন গ্ৰহো-পসৃষ্ট লক্ষণ মুক্তণ বিস্তরেণো-ত্তরে বক্যামঃ ।। 🟶 ।। শক্তিমস্ত-देश्वन॰ ड्वाञ्चा यथावर्ग॰ विम्रा॰ গ্রাহ্যেৎ। অথান্মৈ পঞ্চবি॰শতি-বৰ্ষায় দ্বাদশবৰ্ষাণ পত্নী মাবহেত্ পিত্র্য ধর্মার্থ কাম প্রকাঃ প্রাপ্স্য-তীতি॥ 🕸॥ ঊনষোডশ বৰ্ষায়া মপ্রাপ্তঃ পঞ্চবি॰শতি॰। যদ্যাধত্তে পুমান্ গর্ভণ স্ক্ষিত্বং স বিপদ্য-

তে।। জাতো বা ন চির॰ জীবেৎ জীবেদা দুৰ্বলেন্দ্ৰিয়ঃ ৷ তমা-দত্যস্তবালাষাণ গর্ভাধানণ ন कात्ररय ।। जिठ्कायाः भीर्ष রোগিণ্যা মন্যেন বা বিকারে-ণোপসৃষ্টাষা গর্ভাধান নৈব क्बी ७ । পूरूषमा। त्याव विश्रमा তএব দোষাঃ সণ্ভবস্তি। তত্ৰ পূ-র্বোক্তেঃ কারণৈঃ পতিষ্যতি গর্ভে গৰ্ভাশয কটী বঙ্কণ বস্তি শূলানি রক্ত দর্শনঞ্চ। তত্ত্র শীতেঃ পরিষে-কাবগাহ প্রদেহাদিতি রূপচরে-জ্জীবনীয় শৃত শীত ক্ষীর পানে **४** । গर्ভ स्कृत्रत्व भूष्ट भूष्ट ख८म-क्षात्रगार्थः कीत मूर्भनामिनिकः পাযरिष । প্রসূত্রনানে সদাহ পার্শ্ব পৃষ্ঠ শূলাসৃগুদরানাহ মূত্র সঙ্গাঃ। স্থানাৎ স্থানঞ্চোপক্রাম-তি গর্ভে কোঠে সংরম্ভ স্তত্র স্নি-**क्षाः শীতাঃ ক্রিযাঃ। বেদনাযা॰** यहामहा क्षूष्रमहा यश्रूक श्वन खुन क क क तिक। मिक्षः भयः भक्ता ক্ষোডমিশ্রণ পায়যেৎ। মূত্রসঙ্গে पर्जापि मिक्ष । यानारह हिक्रु-मोवर्फन नः **खन व**हा मिश्वः । অত্যর্থণ সুবতি রক্তে কোষ্ঠাগা-রিকাগার মৃৎপিও সমঙ্গা ধাত-

की अभूय नवयानिका देशतिक সর্জরস রসাঞ্জন চূর্ণ মধুনাবলি- ॥ ছাৎ। যথালাভ ন্যগ্রোধাদিত্বক্ थ्वालककः वा। भयमा भाषाय-**मू**९१वामिकऋ॰व।।कटमङ मृत्रा-টক শালূক কল্ক॰ বা। শৃতেন প-यरमामुखन करनामक कन्म कारथ-न वा मर्कता यथु यथुदत्व मालि-॥ পিষ্ট ন্যগ্রোধাদি স্বরস পরিপী-ত বা। বস্তাব্যব থোন্যা ধার-यে ।।।। অথাদৃষ্টশোণিতাযা॰ বেদনাযা মধুক দেবদারু প্র-ना। मिक्तः भयः भाषत्य जल-ৰাশান্তক শতাবরী প্রস্যা সিদ্ধণ বিদারি গন্ধাদি সিদ্ধণ বা বৃহতী-ছযোৎপল শতাবরী সারিবা প-यमा। मधुक मिक्षः शयमा। क्यू-**স্গীসিদ্ধ॰ বা পযঃ পাযুয়েদিতি।** এবং ক্ষিপ্র মুপক্রান্তাষা উপাব-ৰ্ত্তন্তে ৰুজো গৰ্ভ শ্চাপ্যায়তে। ব্যবস্থিতে চ গর্ভে গব্যেনোডুম্বর শলাটু সিদ্ধেন প্ৰসা ভোজ্যেৎ া অতীতে লবণ ক্ষেহ বৰ্জ্জ্যাভি ৰ্য-বাগৃভি রুদ্দালকাদীনা পাচনী-যোপসংস্কৃতাভি রুপক্রমেত যাব-স্তো মাসা গর্ভস্য তাবস্ত্যহানি। वछामत मृत्वयू भूतावछछ॰ मी-

পনीय मःयूकः शायरयन्तिषेः বা বাতোপদ্ৰব গৃহীতত্বাৎ। স্মে-তসাণ লীষতে গৰ্ভঃ সোংতিকা-ল মবভিষ্ঠমানো ব্যাপদ্যতে ত মৃদুনা স্বেহাদি ক্রমেণোপচরেৎ । উৎক্রোশ রসসংসিদ্ধা মনর স্নেহা॰ যবাগৃ॰ পাষ্যেত। মাষ िन विस भनाषु मिकान् वा। जन्मायान् जक्रत्यमध्याद्योद्योकः ठा-নুপিবেৎ সপ্তরাত্র। কালাতী-ত স্থাযিনি গর্ভে বিশেষতঃ স-ধান্য মৃদূখল মুষলেনাভিহ-न्ता वृष्य वा यानामतन तम-বেত। বাতাভিপন্নএব শুষ্যতি গর্ভঃ। স মাতুঃ স্বক্ষিণ ন পূর্যতি मन्म॰ ज्ञान्मरक ह छ॰ वृ॰ङ्गीरेयः পযোভি র্মাণসরসৈ শ্চোপচরেৎ। শুক্র শোণিত বাযুনাভিপ্রপন্ম ম-বক্রাস্তজীব মাগ্নাপযত্যুদর । তৎ कमाहि यमृष्ट्याश्रमाञ्च देन-গনেযাপহত মিতি ভাষস্তে। ত-यिव कर्नाहिष अनीयमान ना-গোদর মিত্যাহু স্তত্রাপি লীনবৎ প্রতীকারঃ ॥ 🟶 ॥ অত উর্দ্ধুণ মা-मान्यामिक॰ वक्गायः । यश्क॰ শাক্বীজঞ্চ প্রম্যা সূরদারু চা जगरुक खिनाः क्रका खामुवली

भातीत

भंजावती ॥ वृक्षामनी श्रयमा ह লতা চোৎপলসারিবা। অনন্তা সারিবা রাহা পদ্মা মধুক মেব চ ৷ বৃহত্যৌ কাশ্মরী চাপি ক্ষীরি-रख्य। खुटा घृष्ट । शृक्षिशनी वना भिगु अम॰ खु। मध्यर्भिका ॥ শৃঙ্গাটক বিস জাক্ষা কসেরু মধুৰু সিতাঃ। বৎসৈতে সপ্ত যোগাঃ স্যু রন্ধিলোক সমাপনাঃ ॥ ষ্থাসংখ্য প্রযোক্তব্যা গর্ভ-সূত্রে প্রোযুতাঃ। কপিখ বৃহ-**जी विद्य भटि। द्वाक्यू निमिधिकाः** ।। भूनानि कीत मिक्तानि शायरय-**खिषगर्छेदम । नवदम मधुकानञ्जा** প্যদ্যা সারিবাঃ পিবেৎ ॥ ক্ষীর• শুগী প্যস্যাভ্যাণ সিদ্ধ স্যাদ্ধ-শনে হিত । সক্ষীরা বা হিতা শুগী মধুক সুরদার চ। এব মাপ্যায্যতে গর্ভ স্তীব্রা রুক্ চো-পশাম্যতি ॥ নিবৃত্তপ্রস্বাযাস্ত পুনঃ যড়ভ্যে। বর্ষেভ্য উর্দ্ধৃ প্র-সবমানায়া নার্য্যাঃ স্কমারো ২-ब्रायू ভবতি।। 🕸।। অথ গর্ভি नी॰ **व्याधार्यकाव**ाद्य इम्रं स्वाधु- ∥ রাস্লেনায়োপছিতেনানুলোমযে-क म॰गमनीयक मृनू विनशानम-शानत्या तश्रीयाक मृनूवीर्याः मधु-

রপ্রায়ণ গর্ভাবিরুদ্ধপর্গর্ভাবিরুদ্ধান্ট ক্রিয়া যথাযোগণ বিদ্বীত মৃদুপ্রায়াঃ ।। ৠ ।। ভবস্তি
চাত্র। সৌবর্গণ সুক্তও চূর্ণণ স্বন্তও
মধু ঘৃতঞ্চ বা। মৎস্যাক্ষকঃ শখ্রপুষ্পী মধু ঘৃতও চূর্ণিতও কনকণ বচা। হেমচূর্ণানি কৈটর্যঃ
শ্বেতা দুর্বা ঘৃতও মধু ।। চন্তারো
ইতিহিতাঃ প্রাশাঃ শ্লোকার্দ্ধেয়ু
চতুর্বপি। সমারাণাও বপু র্মেধার্ক বল বুদ্ধি বিবর্দ্ধনাঃ ।। ইতি স্ব্রুদ্ধারারুষ্থান
ভাত আযুর্বেদশাস্ত্রে তৃতীয
শারীরস্থান

জীভাষাযাণ এনেটোমীত্যুক্ত মেতৎ ।। ** ।। শারীরণ তপো যথা। দেব দিজ গুরু প্রাক্ত পূ-জনণ শৌচ মার্জ্জবণ। ব্রহ্মচর্য্য মহিংসা চ শারীরণ তপ উচ্য-তে ।। ইতি ভগবদ্গীতাযাণ ১৭ অধ্যায়ঃ।।

শातीतकः क्वी मह्नतार्गाक्र क-दिनाख्यीयाः माञागः । यथा । उथा ह दय यगाः भातीतक भी-याः मुखाः श्रेषं स्विधायः । दि-नाख यीयाः मानाज्यमा द्याहि-थानिज्यान यानियः मृजः ।

भामृ ल

অথাতে। ব্রন্ধজিজ্ঞাসেতি। ইতি তদ্মুন্থলিখন॰ ।। বিবিকঃ তি শবীরসম্বন্ধি।

শারীরিকঃ ত্রি শরীরসয়ন্ধি।
তৎপর্য্যায়ঃ। কালেবরিকঃ ২
গাত্রিকঃ ৩ বাপুষিকঃ ৪ সাংহননিকঃ ৫ বার্ম্মিকঃ ৬ বৈগ্রহি
কঃ ৭ কাষিকঃ ৮ দৈহিকঃ ৯
মৌর্ত্তিকঃ ১০ তানবিকঃ ১১।
ইত্যমরোক্ত শরীরপর্য্যায় শকাৎ ফিক প্রত্যযেন নিষ্পন্ধঃ।।

শার্কঃ ত্রি হিৎসকঃ। শু স্থা ভূ কম গমেত্যাদিন। ঞুক প্র-ত্যবেন নিষ্ণানঃ। ইতি মুগ্ধবো-ধব্যাকরণং।।

শার্ক্তঃ পু॰ শর্করা। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।

শার্ককঃ 'পু॰ দুগ্ধফেণঃ।। শর্করা-পিণ্ড॰। ইতি মেদিনী।।

শার্করঃ পু॰ দুগ্ধফেণঃ ৷৷ শর্করা-বিতদেশঃ ৷ ইতি মেদিনী ৷৷ শ-র্করাসম্বন্ধিনি ত্রি ৷৷

শার্করকঃ \ ত্রি শর্করাবহুলদেশঃ শার্করকঃ \ ত্রি শর্করাশব্দাৎ কণ্ ফিক প্রত্যযাভ্যাণ নিষ্পানী।। শার্করীয়ঃ ত্রি শর্করাযুক্তরদেশঃ।

। করাক আ বিদ্যাপুত্র কাতা শর্করাশকাৎ নীয় প্রত্যায়েন নিষ্ণায়ঃ।। শার্সণ ক্লী আর্দ্রকণ। ইতিরাজ-নির্ঘণটঃ।।

শার্জঃ পুণ বিষ্ণুধনুঃ।। ধনুর্মাত্রণ। ইতিমেদিনী।। শৃঙ্গসম্বন্ধিনি ত্রি শার্কষ্টা স্ত্রী মহাকরঞ্জঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। পুস্তকান্তরে শা-জোপ্ঠা ইতি চ পাঠঃ।।

भाकी पु॰ विकः। ইত্যমরः॥ ধ্রিমাত্র॰। ইতি শার্কশ্বনার্থ-দর্শনাৎ॥

শাদূলঃ পু ব্যাষ্ট্র ৷৷ উত্তর-পদে শ্রেষ্ঠার্থবাচকঃ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ রাক্ষসঃ ৷৷ পশুভেদঃ ৷ স তু সরভঃ ৷ ইতি মেদিনী ৷৷ পক্ষি-বিশেষঃ ৷ ইতি ধরণিঃ ৷৷ চিত্রকঃ ৷ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷

শাদূ লললিত ক্লী ধৃতিবৃত্তীঅক্টাদশাক্ষরপাদচ্চন্দোবিশেষঃ। ষথা। মঃ সো জঃ স ত সা
দিনেশ শ্রুতিঃ শাদূ লললিত
। ক্রন্ধা কংসমৃ গে পরাক্রম বিধিং
শাদূ লললিত য শ্চক্রে ক্ষিতিভারকারিষু সুরারাতিম্বভিদবং।
সন্তোষংপরমন্ত দেব নিবহে ত্রৈলোক্যশরণ শ্রেষো বঃ স তনোন্ধপারমহিমা লক্ষ্মীপ্রিয়তমঃ
।। ইতি ছন্দোমঞ্জরী ২ স্তবকঃ।।

भान्या

শাদূ লবাহনঃ পু॰ পঞ্বি॰শতি পূৰ্বজিনা স্তৰ্গতজিনবিশেষঃ । ইতি ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ।।

भामृ निर्वकी िष्ठ॰ क्री अविश्विवृत्वे উनिविश्विलाम्हिल्मावित्मयः। यथा। मृर्यात्थ मं म
क छ जाः मछत्रवः भामृ निवक्रीि िष्ठ॰। भाविष्म॰ श्रम् श्रात्थ ।
माञ्च तम् प्र पायया हिन्म॰
भागि गृ क्रयं । नाः यत भरम
काशिन॰ भम्म हिष्ठ॰ भीर्यापय
छ मृ व॰ न श्रिका जवना॰ करक
जवाशिन॰ सम्म हिष्ठ॰ भीर्यापय
छ मृ व॰ न श्रिका जवना॰ करक
जवमहाभामृ निविकी िष्ठिः ।।
है वि हल्मामञ्जती २ खवकः।।
भार्वतः क्री अक्षव्यम॰।। याजूरक

ত্রি। ইতি মেদিনী ॥ শর্বরীস-যদ্ধিনি চ ত্রি॥

শার্বরী স্ত্রী রাত্রিঃ। ইত্যমরটীকাষাণ ভরতধৃত বাচস্পতিঃ।।
শাল ও ঋ কথনে। ইতি কবিকল্পক্রমঃ।। কথনে প্রশণসাষাণ
। ও শালতে গুণিনণ গুণী। ঋ
অশশালৎ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
শালঃ পুণ মৎস্যভেদঃ। গজাড
ইতি খ্যাতঃ।। প্রাকারঃ।। বৃক্ষবিশেষঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। সর্জঃ

২ কার্যাঃ ৩ অশ্বর্ক র্কঃ ৪ শাস্যসম্বরঃ ৫। ইত্যমরঃ ।। শাল্বুক্ষঃ
৬। ইতি রত্মমালা ।। নদভেদঃ
। ইতি শব্দরত্মাবলী ।। শালনৃপঃ । স তু শালিবাহনরাজঃ
। ইতি বিশ্বঃ ।। বৃক্ষমাত্রণ । ইতি
রাজনির্ঘণিটঃ ।। ৠা। শালো ঝসে
ধীবর এব দাশ ইত্যুমভেদাত্তালব্যাদিঃ । দস্ত্যাদিশ্চ । কৈবর্ত্ত
ইব বন্ধ রাজীবোৎপল সালো
বসস্তকাল আজগাম । ইতি বাসবদত্ত শ্লেষাৎ । কৈবর্ত্ত পক্ষে
সালো মৎস্যবিশেষঃ । বসস্তপক্ষে সালস্য পুর্পাণ সালণ । ইতি
ভরতঃ ।।

গালগ্রামঃ পুণ বিক্ষুমূর্ত্তিবিশেষঃ
। স চ গণ্ডকুডেববজুকীটক্ত
চক্রযুক্তশিলা দারকোডবতাদ্শশিলা চ। তস্য মাহাত্ম্য লক্ষ্ণগাদি যথা।প্রসঙ্গাৎ কথ্যিষ্যামি শালগ্রামশিলার্চ্চনং। নিক্ষামো মুক্তি মাপ্নোতি মূর্ত্তিং
ধ্যাযন্ স্তবন্ জপন্।। শন্ম চক্র
গদা পদ্মং কেশ্বাখ্যো গদাধরঃ
। সাজ কৌমোদকী চক্র শন্ধী
নারায়ণো বিভুঃ।। স চ শন্ধাজপদো মাধবঃ শ্রীগদাধরঃ। গ্রন্থ

माज गध हकी वा रशंविन्नारथा। गमाधतः ॥ शम् मञ्जामिशमिटन विकु मधाय देव नमः। ममधाङ शक्षा हत्कं मधुमृतन मुर्खरय।। नरमा গদাসি চক্রাব্জ যুক্ত ত্রৈবিক্রমায চ। मावि क्लोटगानकी পদ্ম শध বামনমূর্ত্বে।। শঙ্খাজ চক্রগদি-নে নমঃ শ্রীধরমূর্ত্তযে। ইষীকেশ স্মবি গদা শখ্য পদ্মিন্নমোস্ত তে ৷৷ সাজ শৃথ গদা চক্ৰ পদ্মনাভ खक्लिए। माट्याम्तः मधा गमा চক্র পদ্মিন্নমো ২স্ত তে ॥ সাবি শগ্ৰ গদাজায বাসুদেব নমো-नयः। শथाक ठळगितिन नयः मकर्यगाय ह ।। मध्य हळ शमा-ব্ৰাষ ধৃত প্ৰদ্যুত্ম মূৰ্ত্বে। নমো **২নিরুদ্ধায় গদা শন্ত্রাক্ত বর্**ধা-तिर्ण ।। **माञ्ज मध्य ग**मा ठळ পू-ऋरवाख्य मृर्खरय । नत्या १८४१-कक क्रांय गमा मध्य विधातिए। 11 न्मि॰ र मूर्खरय शवा शका मध विशातिरा ॥ भवावि मधा गिति नयाञ्च ह्या मृर्खरा।। मन्य ह-क्वांक भन कनार्मन ब्रिट्श नयः া উপেন্দ্রণ গদিনণ সাবি পদ্ম শন্ত্র নমোস্ত তে ৷৷ সচক্রাব্জ গদা শঙ্খ युकाय इति मृर्वरय। मगमाङावि

শঙ্খায় নমঃ শ্ৰীক্ষণ মূৰ্ত্তয়ে !৷ শা-লগ্রামশিলাদারগতলগদিচক্রধৃ-ক্। শুক্লাভাখাশ্চ সো ইবাদঃ मरेनव श्रीभनाधतः ॥ नगिष्ठ-ক্ৰো বক্ৰাভঃ পূৰ্বভাগস্ত পুষ্ণলঃ । महर्यानाथ श्रमाञ्चः मृत्र ठळाख পীতকঃ ৷৷ স দীর্ঘঃ স শিরশ্ছি-(फा रा। श्रीकृष्ण वर्जुनः । নানাহার দ্বিরেখশ্চ অথ নারায-ণে। ২সিতঃ।। মধ্যে গদাক্কতা রে-খা নাভিপদ্ম মহোমতঃ। পৃথু চ-ক্রো নৃসিংহো বঃ কপিলোব্যান্তি-विन्तुकः ॥ ज्यथं वा शक्षविन्तु खु পূজন বন্ধচারিণঃ। বরাহ শক্তি লিঙ্গে। ২ব্যাদ্বিষমদ্বযুক্তকঃ।। নীল স্ত্রিরেখঃ স্থূলোথ কুর্ম্ম মূর্ত্তিঃ यितनुगान्। क्रकः मवर्ज्नावर्जः পাওরোমত পৃষ্ঠকঃ ৷৷ শ্রীধরঃ প-श्रुद्धार्थ। १वाषिनयाना श्राहि-७:। वायत्ना वर्जुत्ना नाय वाय ठळः मूदतश्रदः ॥ नानावर्णा १-নেকমূৰ্ত্তি ৰ্নাগভোগী দ্বনস্তকঃ। - खुटना मारमामद्रा नीटना मरधा ठळः मूनीलकः ॥ मःकीर्वात-কোবো হব্যাদথ ব্ৰহ্মা সুমোহি-তঃ। সদীর্ঘরেখা শুশির একচ-কাষুজঃ পৃথঃ॥ প্রত্যাচ্চিদ্রঃ স্থূল-

চক্ৰঃ ক্লেণ্ডা খবিন্দুশ্চ বিন্দুম্ । " হ্যগ্রীবে: ২ন্ধুশাকারঃ পঞ্রেখঃ সমস্ততঃ ৷৷ বৈঙ্গতো ২মলবন্ডা-তি একচক্রাত্মকো খসিতঃ । মৎ-স্যো দীর্ঘামুজাকারো দাররেখ-স্ত পাওরঃ।। বামচক্রো দক্ষরে-খঃ শ্যামো বো ২ব্যাক্রিবিক্রমঃ। শালগ্রামে দারকাযাণ স্থিতায গ-দিনে নমঃ৷৷ একেন লক্ষিতো বো श्वाकानाधाती मूमर्गनः। नश्ची-नातायला घाजा॰ विजि मूर्वि স্ত্রিবিক্রমঃ ॥ চতুর্ভিশ্চ চতুর্যু হৈ। বাস্দেবশ্চ পঞ্চিঃ। প্রদায়ঃ ষড্ভি রেবাব্যাৎ শঙ্কর্ষণ ইত-স্তুতঃ ॥ পুরুষোত্তমো ২ফজিঃ স্যাচ্চ নবব্যুহো নবান্বিতঃ। দ-শাবতারো দশভি রনিরুদ্ধো ২-বতাদথ ৷৷ দ্বাদশাত্মা দ্বাদশভি রত উর্জে। হনন্তকঃ। ইতি পাদ্মে পাতালখণ্ডে ১০ অধ্যায়ঃ ॥ 🕸 ॥ অপি চ। ঈশ্বর উবাচ। শাল-গ্রামে মণে যন্ত্রে মণ্ডলে প্রতি-মাসু চ। নিত্যন্ত শ্রীহরেঃ পূজা কেবলেন জলেন তু ॥ গণ্ডক্যা নেকদেশে তু শালগ্রামস্থল ম-হুৎ। পাষাণান্তভব শব্তৎ শাল-আম মিতি স্থিত ।। শালগ্রাম শি-

লাস্পৰ্শাৎ কোটিজন্মাযনাশনণ । কি॰ পুন র্জনন॰ তত্র হয়েঃ সা-मिश्र कात्रनः ॥ मानशारेनक य-জনাৎ শতলিঙ্গ কল গলভেৎ ৷ वरुं र्क अंगि कि भूरेना यीन क्रमः **मिना॰ नटज्य ॥ त्याष्ट्रात्म ह** চিক্লেন তেন বৈ ত্রামতে নরঃ। আদৌ শিলা॰ পরীক্ষেত সিঞ্চাণ শ্রেষ্ঠাঞ্চ মেচকাণ ৷৷ অক্নকা ম-ধ্যনা প্রোক্তা মিশ্রা মিশ্রফলপ্র-न। मर्वकामश्रमा मोगा क्रा-লা ভষ দুঃখদা ।। সিন্ধা চ শ্রীক-রী নিত্য কক্ষা দারিদ্র্য দাযিকা । কুদ্রা কুদ্রফলা প্রোক্তা স্থলা शृनकनथाना ॥ मना कार्छ दि-তো বহ্নি মস্থনে চ প্রকাশতে। যথা তথা হরি ব্যাপী শালগ্রামে প্ৰকাশতে।। প্ৰত্যহণ দাদশ শি-লাঃ শালগ্রামস্য যো ২র্চ্চয়েৎ। দারবত্যাঃশিলাযুক্তাঃ স বৈঙ্গঠে মহীযতে ॥ শালগ্রামশিলাযান্ত গহ্বর॰ লক্ষ্যতে নরঃ। পিতর স্ত-স্য তিপ্ঠন্তি তৃথাঃ কল্পান্তরণ দিবি ।। শালগ্রামশিলা যত্র যত্র দার-বতীশিলা। মৃতে বিষ্ণু পুর॰ যাতি ক্লতাৰ্থণ যোজন ত্ৰয়ণ।। জপ পু-জা চ হোমশ্চ সৰ্বণ কোটিগুণ

ভবেৎ ৷ মনস্কামঃ সদাভীষ্ট ৷ || ক্রোশমাত্রণ সমন্ততঃ ।। কীকটে-পি মৃতো যাতি বৈঙ্গগভবনং নরঃ । শালগ্রামশিলাযাণ যো মূল্য मू ९ भाष त्य शतः ॥ विटक्क । ठान्-यस्त्रा ह यः शतीकानूत्यामकः । সর্বে তে নরক° যান্তি ষাবদাহূত-সংপ্লবং ৷৷ অত স্তং বৰ্জ্জমেদেবি হরি বিক্রয়ণ ক্রয়ণ। শালগ্রামো-खरवा (मरवा रया (मरवा चात्र-কোন্ডবঃ ৷৷ উভযোঃ সঙ্গণো যত্ৰ মুক্তি স্তত্ত ন সংশযঃ। দারকো-দ্ভবঃ শুক্লশ্চ বহুচক্রেণ চিক্লিতঃ ॥ চক্রমাসীৎ শিবাকার চিৎস্বৰ প নিরঞ্জন । নমোস্ত্রোক্ষার ক-পায ममानन स्वाशित ॥ भान-গ্রামে মহাভাগ ভক্তস্যানুগ্রহণ পরু। স্বা যুত্যা ধর্মাসা ঋণগ্র-স্তদ্য মে প্রভো ৷৷ ইতি তত্ত্বৈব ३३ व्यक्षायः ॥ 🕸 ॥ व्यश्रत्रः । बान्नग উবাচ। गएकीय॰ नमी রাজন্ সূরাসুর নিষেবিতা। পু-ণ্যোদক পরীবাহৈ হ্তপাতক-সঞ্যা ৷৷ দশনামানদ পাপ স্পাৰ্শনাৎ কৰ্মজ দহেৎ। বাচি-ক স্বীয়তোষ্য্য পানতঃ পাণ-मक्ष ॥ भूता मूकीः अजानाथः

প্রজাঃ সর্বা বিপাপ্মনঃ ৷ স্ব গণ্ডা-দ্বিপুষো খনেক পাপদ্বীঃ সৃষ্টবা-न् हेमा ।। এना निने स्य भूता দা॰ স্পৃশন্তি সুতরঙ্গিণী৽। তে গর্ভভাজো নৈব দ্যা রপি পাপ-ক্তো নরাঃ।। তদ্যাণ ভবা যে চাশান শক্ত চিক্তৈ রলস্তাঃ। যে সাক্ষান্তগবন্তো হি স্ব স্বৰূপ-ধরাঃ পরাঃ ৷৷ শিলাঃ সংপৃজ্ঞযে-দৰম্ভ নিত্য চক্ৰযুতাঃ সদা। ন জাতু চিদ্জনন্যা বৈ জঠর° সমু-পাবিশেৎ ৷৷ পূজ্যেদেয়া নরো थीयान् भा**ल**शायमिला॰ वता॰। তেনাচারবতা ভাব্যু দম্ভ মোহ বিযোগিনা ।। পরদার পরজব্য বিমুখেন নরেণ চ। পূজনীযঃ প্র-যত্নেন শালগ্রামঃ সচক্রকঃ 11 দারবত্যা ভবং চক্রং শিলা বৈ গওকীভবা । পুংসাণ ক্ষণাদ্ধর-ন্ত্যেব পাপ॰ জন্মশতার্জিত॰ ॥ অপি পাপসহসাণাণ কর্ত্ত। তাব-মরো ভবেৎ। শালগ্রামশিলা আপঃ পীস্বা পূষেত তৎক্ষণাৎ ৷৷ বান্ধণঃ ক্ষতিযো বৈশ্যঃ শুদ্রো বেদপথে স্থিতঃ। শালগ্রাম॰ পূ-किषिष। गृहस्य। साक मान्याप ॥ 🗱 ॥ ন জাতু চিৎ ব্রিয়া কার্য্যণ

শালগ্রামদ্য পূজন । ভর্তৃদীনাথ मूलगा मईलांक शिंउवया ॥ মোহাৎ স্পৃঃশত মহিলা জন্মশী-ल গুণাষিতা। हिन्ना পুণ্য সমূহন্ত সম্বরণ নরকণ বজেৎ।। দ্রীপাণি মুক্তাপুষ্পাণি শালগ্রামশিলো-পরি। পরে রধিকপাপানি বদ-ন্তি ত্রাক্ষণোত্রমাঃ ৷৷ চন্দন পবিষ-পঙ্কাত প্ৰদ্বুমণ বজুসন্নিত। নৈ-বেদ্যুণ কালকূটাভণ ভবেদ্ভগবতঃ হ্ৰত ।। তত্মাৎ সৰ্বাদ্যনা ত্যজ্যঃ ব্রিষাঃ স্পর্শঃ শিলোপরি । সর্ব তী যাতি নরকং যাবদিন্দ্র। শ্চতু-র্দশ।। 🕸।। অপি পাপসমাচারো ব্ৰন্মহত্যাযুভোপি বা। শালগ্ৰাম-শিলাতোয়ু পীত্বা যাতি পরাং গ-তি॰।। তুলসী চন্দন॰ চক্রণ শদ্মে। ঘন্টাথ চক্রকে । শিলা তামুস্য পাত্রন্ত বিষ্ণো নাম পদামৃত ।। পদাসৃতম্ভ নবভিঃ পাপরাশি প্র-**मार्कः। तमस्त्रि मूनयः भास्ताः** সৰ্বশাস্ত্ৰাৰ্থ কোবিদাঃ।। সৰ্বতীৰ্থ পরিস্নানাৎ সর্বক্রতু সমর্চনাৎ। পুণ্য॰ ভবতি যজাজন্ বিন্দৌ বি-त्मी जमख्ड ।। भान शामिना ষত্র পূজ্যতে পুরুষোত্তমৈঃ। ভত্র যোজনমাত্রন্ত তীর্থকোটি সমন্বি-

ত ৷৷ য় ৷৷ শালগ্রামাঃ সমাঃ পু-জ্যাঃ সমেষু দ্বিত্যণ ন হি। বিষমা এব পূজ্যা বৈ বিষমেষু ত্রয়ণ ন ছি ৷৷ দ্বারবতী ভবং চক্রং তথা বৈ গ-**ওকীভব°। উভযোঃ সঙ্গ**েশ যত্ৰ তত্ৰ গঙ্গা সমুদ্ৰগা।। ৰাকাঃ জ-ৰ্ষ্ডি পুৰুষান্ আযুঃ শ্ৰীভি বিব-ৰ্জিতান্। তস্মাৎ স্নিগ্ধা মনো-হারি ৰূপেণ দদতি শ্রিয়ণ ৷৷ আ-যুক্ষামো নরো যস্ত ধনকামোপি-यः भूमान्। शृक्षयन् मर्व यारक्षा-াপ॰ লৌকিক নৈছিক॰।। প্রোণান্তকালে তু যস্য ভবেদ্তা-गावनामृष । वािं नाग श्दाः পুণ্য° শিলাক্কতি স্তদস্তিকে ৷৷ গ-চ্ছৎসু প্রাণমার্গেষু যস্য বিশ্রম্ত-তো ২পি চেৎ। শালগ্রামশিল। मृर्जि उपा मुक्ति न मण्मयः॥ भूता ভগবতা প্রোক্ত মম্বরীষায ধীম-তে। ব্ৰাহ্মণো ন্যাসিনো ভক্তাঃ শালগ্ৰামশিলা মম ৷৷ স্বৰূপ ত্ৰি-ত্য মহু মেত্দ্ধি ক্ষিত্যিগুলে । পাপিনা॰ পাপ নির্বারণ কর্তু॰ ধৃত মুদঞ্তা ।। নিন্দন্তি পাপি-নো যে বা শালগ্রামশিলাণ সক্লৎ । সম্ভীপাকে পচন্ত্যাশু যাবদাহূ-

ত সংপ্লবং ৷৷ পূজাং সমুদ্যতং ক-

র্তু॰ যো বার্ষতি মূট্ধীঃ। তস্য যাতা পিতা বন্ধুঃ সর্বে নরক গা-মিনঃ ।। যে। বৈ কথযতি শ্রেষ্ঠ॰ শালগ্রামার্চ্চন স্কর ৷ স ক্ত: ৰ্থো ন্যত্যাশু বৈদ্বপ্ত স্বস্তু পূৰ্ব-**জৈঃ।। ইতি চ তত্রৈব ২**০ অধ্যায° ।। 🗱।। অন্যচ্চ। শ্রীঈশ্বর উবাচ। শালগ্রামশিলাযাম্ভ ত্রৈলোক্যুণ সচরাচর । সদা বসতি তেনাত্র বিষ্ণু স্তিষ্ঠতি সৰ্বদা ॥ শালগ্ৰাম-শিল। পূজা॰ প্রসরুষ ষ্ডানন। গঙ্গা মিব মহাপুণ্যাণ চতুৰ্ব সঁফ্ল-अमा ।। ऋरकेन मनमा रयन छ।-পিতা পূজিতা তথা। যজ্ঞকোটি সমণ পুণা আশু তস্য প্রযক্ত্তি ।। ছিন্ন স্তেন মহাসেন গর্ভবাসঃ मूनांकनः । शीछ रयम मना वि-ক্ষোঃ শালগ্রামশিলাজলণ ৷৷ কা-মাশক্তোপি যো নিত্যু ভক্তিভা-ব বিবজ্জিতঃ। শালগ্রামশিলা॰ পশ্যেৎ তস্য পাপক্ষয়ে। ভবেৎ ৷৷ শালগ্রামশিলা বিপ্র হত্যাকো-টি বিনাশিনী। স্মৃতা সংকীর্ত্তিভা ধ্যাতা পূজিতা চ নমস্কৃতা।। শা-नवामिना॰ मृख्ना याखि পाপा-नि (महिनाः । जिःशः मृकु। यथा ষান্তি বনে মৃগগণা ভয়াৎ।। নম-

কৃত্বা তু যঃ স্বর্গাৎ শালগ্রাম-শিলাৰ্চ্চনণ ভক্ত্যা বা যদি বাভ-क्ता न मुक्तिः नमवाश्रूषा ।। यः সেবা॰ স্কৃতে নিত্য॰ শালগ্রাম-শিলাগ্ৰতঃ। বৈবস্বতান্ত্ৰণ তস্য न मात्रात्रव जगनी ॥ भावशाय-শিলাচক্ৰণ পয়ে দধি ঘৃতাদিকৈঃ । यः স্নাপয়তি নূন স কল্পকো-টি॰ বসেদিব।। শালগ্রামে নম-স্কারো ভাবেনাপি চ যেঃ ক্তঃ। মান বাঃ কি॰ করিষ্যন্তি মন্ডক্ত্যা ্তে মহীতলে।। মদ্যক্তি রণদর্পি-ষ্ঠা মৎপ্রভু ন নমন্তি যে। বৈষ্ণ-বা স্তে ন বিজেষা মন্ডক্তাঃ পাপ-মোহিতাঃ।। শালগ্রামশিলা যত্র তত্ৰ পুত্ৰ বসাম্যহ । পূজিতো ২হ • ন তৈ মঁত্যৈ স্থাপিত্ৰ ন তৈ ন্-রৈঃ।। ন ক্বত॰ মর্ত্যলোকে থৈঃ শালগ্রামশিলার্চ্চন । কি মর্চি-তৈ ৰ্লিঙ্গশতৈ বিঞ্চুভক্তি বহিষ্কৃ-তৈঃ ৷৷ শালগ্ৰামশিলাচক্ৰণ না-চিতি যদি পুত্রক। জন্মকোটি সহস্ৰেণ পূজিতে মধি ষৎ ফল॰।। তৎফল॰ সমবাপ্নোতি শালগ্রাম-শিলাৰ্চ্চনাৎ। অনৰ্ছণ মম নৈবে-দ্যু পত্ৰ পুষ্প ফল জল ।৷ শা-লগ্ৰামশিলাদৃষ্ট সৰ্ব যাতিপবি-

ত্রতা । নৈবেদ্য । মে ন ভাক্ত ব্যাণ ভুক্ত্বা চান্দ্রায়ণণ চরেৎ ৷৷ ভু-জ্বা কেশব নৈবেদ্য কোটিভ-ক্তি ফল॰ লভেৎ । সক্কদভ্যর্চি-তে। বিষ্ণুঃ শালগ্রামশিলাস্থিতঃ॥ ।। দদাতি বিপুলা॰ মুক্তি॰ সর্বসঙ্গ বিবজ্জিতা ৷ মল্লিঙ্গ কোটিভি দৃ -रिके र्य ६ कल॰ भू कि रें छ खरें छैं।। তৎফল॰ সমবাপ্নোতি শালগ্ৰা-বৈকপূজনাৎ। শালগ্রামশিলা-চক্ৰণ যে। বিদ্বান্ পশ্যতি ধ্ৰুবণ ॥ অৰ্চ্চযেদৈফবো নিত্য তস্য পু-गु॰ निर्दाध त्य । कार्षिनिक्र मङ्-সৈু ৰ্যৎ পূজিতৈ জাত্মবীতটে ॥ कागीवामाम्यूगानारको मिटन-নৈকেন তদ্ভবেৎ। তশ্মাদ্ভক্ত্যৈ-ব মন্তক্তিঃ প্রীত্যর্থণ মম পুত্রক॥ কৰ্ত্তব্য॰ সৰ্বদা মতৈৰ্গঃ শালগ্ৰাম-**मिलार्फन । मालशायमिलाक शी** যত্ৰ তিষ্ঠতি কেশবঃ।। তত্ৰ দেবাঃ সুরা ষক্ষা ভুবনানি চতুর্দশ। শা-লগ্রামশিলাগ্রে থৈঃ সক্লচ্ছাদ্ধণ ক্লভ॰ ভবেৎ ॥ বসস্তি পিতর স্তে-ষা॰ বিক্লোকে ন সংশযঃ। যে-পিবস্তি নরা নিত্য° শালগ্রামশি- 🎚 লাজলং ৷৷ পঞ্চাব্য সহসৈস্ত প্রা-শিতৈঃ কি' প্রযোজন'। প্রায-

म्हिट्ड ममू ९ शक्त कि॰ मारेनः कि मू (भाषरेनः ॥ हान्यायरेनः कि॰ हि-তাদৃক্ পীস্বা পাদোদক॰ শুচিঃ। ইতি পাদ্মে উত্তরখণ্ডে ১২৭ অ-थायः ॥ 🗱 ॥ कत्नर्मगरम्य-র্যানস্তরণ স চ ভারতণ ত্যক্ত্ব। যা-স্যতি। যথা। শালগ্রামো হরে মূর্ত্তি র্জগন্ধাথশ্চ ভারত। কলে দশসহসান্তে যথো তাকু৷ হরেঃ পদ॰ ॥ ইতি ব্ৰহ্মবৈবৰ্ত্তে প্ৰক্লতি-খণ্ডে ৬ অধ্যায়ঃ।। ঞ্চা। তদ্যোৎ-পত্তি लक्षनामि यथ।। जूलमूखा-চ। হেনাথ তে দ্যা নাস্তি পাষাণ मদृশमा ह। इत्वन धर्मा ज्दनन মম স্বামী দ্বয়া হতঃ।। পাষাণ হ্ন-দয স্তৃঞ্চ দযাহীনে। যতঃ প্রভো । <u>ज्याद</u> भाषानमृग खु॰ ভবেহ হরে ২ধুন। ।। শ্রীভগবানুবাচ। অহঞ্চ শৈলৰূপী চ গণ্ডকীতীর সন্নিধে। অধিষ্ঠান করিষ্যামি ভারতে তব শাপতঃ ৷৷ বজুকীটা-***** ह क्रमरया व कु म॰ खु। * ह जब देव १ তৎ শিলা স্বহরে চক্রণ করিষ্যস্তি यनीयकः ॥ . এकमारत ठजूमहळः বনমাল। বিভূষিত । নবীননীর-দাকার লক্ষ্মীনারাযণাভিধ ৷৷ এक बादत ठजू का नवीन नीत-

(माश्रमः । लच्चीकनार्मनः एडवः রহিত বনমাল্যা।। ছারদ্বে চ-তুশ্চক্রণ গোষ্পাদেন সমস্বিত। রঘুনাথাভিধ জ্ঞেয় বেষ্টিত ব-নমাল্যা 11 অতিকুদ্র দিচক্রস্ত नवीननीत्रात्था । प्रिवायनश বিজ্ঞেষণ গৃছিণাঞ্চ সুখপ্রদণ ৷৷ অ-তিক্ষুত্ৰণ দিচক্ৰঞ্চ বনমালা বিভূ-ষিত । শ্রীধর দেবি বিজ্ঞেয শ্রী-अम॰ गृहिगा॰ मम। ॥ चृलक वर्जू-লাকার রহিত বনমালযা। দ্বি-চক্রুণ স্ফুটমতান্ত জ্বেয়ণ দামো-**म**त्राज्थि ।। यथाय वर्जुलाकातः षिচক্রণ বাণ বিক্ষত । রণরামা-ভিধণ জ্ঞেষণ শরতূণ সমন্বিতণ ৷৷ ठजूमं भठकः अन्तर्भ निर्वाचनन-প্রভণ। অনন্তাখ্যঞ্চ বিজ্ঞেয়ণ চতু-ৰ্বৰ্গফল প্ৰদেও ৷৷ মধ্যমত সপ্তচক্ৰঞ্চ ছত্র তূণ সমশ্বিতং। রাজরাজেশ্বরং জ্ঞেয় রাজসম্পৎকর নৃগা ।। চক্রাকার দিচক্রঞ্ব সঞ্জীক জ-লদপ্রত । সগেষ্পদ মধ্যমঞ্ विटब्बय॰ मथुमृमन॰ 11 मूमर्गन-ক্ষৈকচক্রণ গুপ্তচক্রণ গদাধরণ। দিচক্রণ হয়বক্ত্রাভণ হয়গ্রীবণ প্রকীর্ত্তিত ॥ অতীববিস্তৃতাস্য-🕶 দিচক্রণ বিকটণ সভি। নর-

সি॰হাভিধ॰ জ্ঞেয় সদ্যো বৈরা-গ্যদ॰ নৃণা॰ ৷৷ দ্বিচক্রণ বিস্তৃতাস্য-क रनमाना ममन्त्रिः । नन्नीनृ-मि॰ इ॰ विटब्बय॰ गृहिना॰ मूथन॰ সদা।। দ্বারদেশে দ্বিচক্রঞ্ব সঞ্জী-कश्च मभ ऋूषे । वामू एम वश्च वि-জ্ঞেয়॰ সর্বকাম ফলপ্রদ॰ ॥ প্রদ্য-भ्र° मृच्चठळक नवीननीत्रमथ ७°। শুষিরে ছিজ বহুল গৃহিণাঞ্চ সু-थथान ।। एव हरक टेहकनरभ जू शृत्थे यव जू शूक्रन । महर्सवञ्च विटब्बय॰ मूथम॰ गृहिना॰ ममा ॥ অনিরুদ্ধঞ্চ পীতাভ॰ বর্ত্তু লঞ্চাতি-শোভন । সুখপ্রদ গৃহস্থানা প্র-रमिख मनीयिनः॥ ॥ भानजाय-শিলা যত্র তত্র সন্মিহিতো হরিঃ। তত্ৰৈব লক্ষী ৰ্বসতি সৰ্বতীৰ্থ সম-ষিতা।। যানি কানি চ পাপানি বৃশ্বহত্যাদিকানি চ। তানি স-ৰাণি নশ্যন্তি শালগ্ৰামশিলাচ্চ-নাৎ ৷৷ ছত্রাকারে ভবেদ্রাজ্যণ বর্তুলে চ ভবেৎশ্রিষঃ। দুঃখঞ্চ শকটাকারে শূলাগ্রে মরণ ঞ্র-ব°।। বিক্বতাস্যে চ দারিদ্র্যণ পি-ঙ্গলে হানি রেব চ। লগ্নচক্রে ভ-विकानि विनीत्न मत्न अन्त ।। বৃত্ত দান প্রতিষ্ঠা চ আদ্ধ

দেবপূজন ৷ শালগ্রামশিলাযা-देन्हवाधिश्राना अगलक ॥ म স্নাতঃ সৰ্বতীৰ্থেষু সৰ্বযজ্ঞেষু দী-ক্ষিতঃ। সৰ্বদানে চ যৎপুণ্য॰ প্ৰা-निकित्ग जूत खथा।। मर्वराद्धियू তীর্থেষু ব্রতেম্বনশনেষু চ। পাঠে চতুর্ণাণ বেদানাণ তপাসাণ করণে সতি ॥ তৎপুণ্য॰ লভতে নূন॰ ॥ শानवायभिनाक्रेगा । भान-গ্রাম শিলাতোয়ণ নিত্যণ ভুষ্টে চ যো নরঃ।। সুরেপ্সিত্তু প্রসাদঞ্চ জন্ম মৃত্যু জরাহরণ। তস্য পার্শঞ্চ वाञ्चि छै। थीनि निश्रिनानि ह॥ জীবন্মকো মহাপূতোপ্যন্তে যা-তি হরেঃ হদে°। তত্তৈব হরিণা∥ সার্দ্ধ মসংখ্য প্রাক্তত লয় ।। পশ স্ত্যেব হি দাস্যেব নিযুক্তো-मागुक्रमानि । यानि कानि ह পাপানি ব্ৰশ্বহত্যাদিকানি চ 11 ত॰ দৃষ্ঠা চ ভিষা ষান্তি বৈনতেষ মিবোরগাঃ। তৎ পাদপদ্ম রজ-সা সদ্যঃ পূতা বসুন্ধরা ॥ পুংসাং লক্ষণ তৎ পিতৃণাণ নিস্তরেত্তস্য জন্মনি। শালগ্রামশিলাতোয়ে মৃত্যুকালে চ যে। লভেৎ ॥ স-ৰ্বপাপ বিনিমুক্তো বিফুলোকণ স গচ্ছতি। নিৰ্বাণ যুক্তিণ লভতে

কর্মভোগাদ্বিমুচ্যতে ।। বিষ্ণুপা-দপ্রলীনশ্চ ভবিষ্যতি ন সংশ্-यः। भाषाधार्याभाषाः शृषा वि-थाविका॰ वरमञ्जू यः ॥ म योजि कृर्याम॰ खुक्ष यावरेष बन्नत्ना वयः। শালগ্রামশিলা ধৃষা স্বীকারণ যো ন পালযেৎ।। স প্রযাত্যসি-পত্রঞ্চ লক্ষ মম্বন্তরাবধি। তুলসী-পত্র বিচ্ছেদ শালগ্রাম করো-তি ষঃ ।। তদ্য জন্মান্তরে কান্তে স্ত্রীবিশ্লেষো ভবিষ্যতি। তুলসী-পত্র বিচ্ছেদ॰ শঙ্মণ যো হি করো-তি চ ॥ ভার্য্যাহীনো ভবেৎ সো-পি রোগী চ সপ্তজন্মসূ। শাল-গ্রামঞ্চ তুলসীণ শঘ্মঞ্চৈকত্র এব চ।। या तक्छि महाछानी म ভবেৎ শ্রীহরিপ্রিয়ঃ। ইতি ব্রহ্ম-বৈবৰ্ত্তে প্ৰক্ষতিখণ্ডে ১৯ অধ্যাষঃ ।। 🕸 ।। শূদ্রাণা॰ তৎপূজনে ২ন-ধিকারে। যথা । বিপ্র ক্ষত্রিয় বৈ-শ্যানা॰ শালগ্রামশিলার্চনে । অধিকারো ন শূদ্রাণাণ্ছরে রর্চ্চা-ৰ্চ্চনে তথা।। ইতি তত্ত্ৰৈব জন্মখ-८७ २३ अधारिः ॥ 🕸 ॥ भीन-গ্রামে সদা বিকোঃ স্থিতি স্তৎ-পূজনে বিশেষশ্চ যথা। ভূমি রু-বাচ। উক্তা যাঃ প্ৰতিমাঃ সৰ্বাঃ

সুবর্ণাদি বিনিশ্মিতাঃ। তাসু তি-ष्ठेमि म्बाम् भावधारम ह मर्बेमा ॥ कठि शृक्ता गृशामी ह व्यवि-শেষস্তু পূজনে । বিশেষো বা ভবেত্তমে রহস্য বদ মাধব ৷৷ वतार উवाठ । शृट्ट निक्र ६ य॰ নাৰ্চ্য্য শালগ্ৰামদ্বয় তথা। দে চক্রে দারকাযাস্ত নার্চ্যা সূর্য্য-দ্বয়ণ তথা ৷৷ শালগ্রামশিলা ভগা পূজনীয়া সচক্রকা । খণ্ডিতা স্ফুটিতা বাপি শালগ্রামশিলা 🛚 खंडा ॥ भिना घाष्म देव प्रवि भानवाम ममूखवाः । विधिव९ পূজিতা ষেন তস্য পুণা বদামি তে।। কোটি দাদশ লিঙ্গৈস্ত পূ-জিতৈঃ স্বৰ্ণস্কজৈঃ। যৎ স্যাৎ षामम करेन्नञ्ज मित्नदेनत्कन ७-ख्रति ॥ यः भूनः भूक्रायख्का শালগ্রামশিলাশত ৷ তৎফল **নৈব শক্তোহ° বক্তু° বর্ষশতৈ** রপি 🎚 ॥ भानगुरमा न श्रृकेदगा शैन-ৰণৈ ৰসুদ্ধরে। ত্রী শূড়কর সং-স্পার্শো বজুস্পর্শাধিকো মতঃ।। মোহান্দাঃ সংস্পূশেৎ শূদ্রো যো-ষিদ্বাপি কদাচন। সপতেমরকে रिशादत यावनाशृ ज मन्क्षव ।। यनि ভক্তি ভবৈত্তস্য স্ত্ৰীণাণ বাপি ব-

সুন্ধরে। দূরাদেবাস্পৃশন্ পূজা॰ কার্যেৎ সুসমাহিতঃ ৷৷ চরণামৃত পানেন সৰ্বপাপক্ষযো ভবেৎ ৷ অভক্যু শিবনির্মাল্য পত্র পু-ষ্পা॰ ফল॰ জল॰ ৷৷ শালগ্রামশিলা-যোগাৎ পাবন তদ্ভবেৎ সদা ৷ দদ্যান্তক্তায়যোদেবি শালগ্রাম-শিলাণ নরঃ ৷৷ সুবর্ণসহিতাণ সি-ন্ধুঃ সপৰ্বত বনাকরা। সসমুজা ভবেদ্দত্তা সৎপাত্রায বসুন্ধরে।। भानवार्यभिनायाञ्च योना ग्-म्बाउरय कि । विद्कुल क्य কর্ত্ত। বা নরকে বৈ পতেৎ দ্রুব॰॥ পূজাফল॰ ন শক্যেত বক্তু॰ বর্ষ-শতৈ রপি। এতত্তে কথিত গুহুণ প্রতিমা স্থাপন প্রতি ৷৷ শালগ্রা-মে বিশেষশ্চ লিঙ্গাদীনাঞ্চ যো ভবে । शृक्रनामि विधि काशि কিমন্যচ্ছোতু মিচ্ছসি॥ ইত্যাদি वातारह (ती शा स्मोवर्गार्का शा-शन नामाशासः ॥ 🛊 ॥ ज्य শালগু মশিলা মূর্ত্তিনিরূপণ চতুৰিংশতি মূৰ্ভিঃ স শালগাম-শিলাञ्चिज्ञिः। षात्रकामि गिला-সংস্থো ধ্যেয়ঃ পূজ্যো ২পি বা হরিঃ।। মনসো ২ভীপ্সিত॰ প্রা-প্য দেবো বৈমানিকো ভবেৎ ৷

নিদ্বানো নুক্তি মাপ্নোতি মূত্তী र्शाय॰ खतन् ज्ञुन् ॥ इंजािम গারুডে মূর্ত্তামূর্ত্তধ্যান ৪৪ অ-शा यः ॥ 🕸 ॥ जिन ह । मञ्ज हिल গদা পদ্মী কেশবাখ্যো গদাধরঃ । माज क्लोरगामकी ठळ मधी নারায়ণো বিভুঃ।। সচক্র শঙ্খাব্জ शरमा गांधवः श्रीशमाधवः। शमां ख म अ हकी वा शावित्मारहंग भ-माधतः ॥ शब्द **मधामि गमित्न वि**-কু ৰূপায় বৈ নমঃ। শৃঙ্খ জ ह ক্ৰ গদিনে ননঃ সক্ষর্ণায় চা৷ সুশস্থা স্গদাজাৰিধৃতে প্ৰদ্যায় মূৰ্ত্বে। নমো হনিরুদ্ধায় গদা শঙ্খাব্রা-বি বিধারিণে ।৷ নমে৷ গদাসি শ-খাজ যুক্ত ত্রৈবিক্রমায চ। সাসি कित्गानकी शब्द गित्र वामन-মূর্ত্তযে।। চক্রাজ শঙ্গগদিনে ন-মঃ শ্রীধর মূর্ত্তযে। স্বধীকেশ সা-वि शमा नधा शिषाबद्या नयः ॥ সাজ শন্ত গদা চক্ৰ পদ্মনাভ-স্বক্রিণে। দামোদরঃ শুখ্র গদা চক্ৰ পদ্মিন্নমো নমঃ ৷৷ সাবি শুঙ্খ शमाङाव वामुप्तवाय देव नमः। শুখাজ ঢক্র গদিনে নমঃ সম্বর্য-वाय है।। मांख मंध्र भना हळ পুরুষোত্তম মূর্ভ্রে। নমো হধো-

ক্ষজ ৰূপায় গদা শুখানি পত্মি-নে ॥ নৃসি॰ছ মূর্ত্তমে পরা গদ। শधाक धातित्। शमाक गधा গদিনে নমে। স্তৃচ্যত মূর্ত্তযে ॥ সশু ডা চক্রাজ গদ জনার্দ্দন মি-হানমে। উপেন্দ্র॰ সগদ॰ সাবি॰ পদ্ম শঙ্খিন্নমো নমঃ ৷৷ সুচক্রাব্জ गना मध युक्ताय इतिमृर्वटय । সগদাব্জাবি শখাষ নমঃ শ্রীরুক্ত-মূর্ত্তযে ।। শালগ্রাম শিলা দার গত লগ্ন ছিচক্ৰপূক্। শুক্লাভো বাসুদেবাখ্যঃ সো ২ব্যাদ্বঃ শ্রীগ-**मा**थतः ॥ नभ षिठत्का तकाञः পূৰ্বভাগে ত পুদ্ধলঃ। সন্ধৰ্যণোথ প্রদামঃ সৃদ্ধ চক্রস্ত পীতকঃ ॥ मिन अधित हिट्छा रहा श्री स्निक-ष्मञ्ज वर्जुनः। नीता पाति जि-রেখশ্চ অথ নারায়ণো হসিতঃ ৷৷ মধ্যে গদাক্তী রেখা নাভি চক্র মহোনতঃ। পৃথু চক্তো নৃসিংছো-থ কপিলো ২ব্যাৎ ত্রিবিন্দুকঃ।। অথ বা পঞ্চিন্দু স্তৎপূজন ত্ত্ৰ-ক্ষচারিণঃ । বরাহঃ শক্তিলিকে। **>ব্যাদ্বিযমন্বয চক্রকঃ।। নীল স্ত্রি** রেখঃ ফুলোথ কুর্ম্মদূর্ত্তিঃ স বিন্দু-गान्। क्रेकः मवर्जुनावर्जः भाजू বোনত পৃষ্ঠকঃ ৷৷ শ্রীধরঃ পঞ্চরে-

খে। হব্যাদ্বননালী গদাম্বিতঃ। বা-মনো বর্ত্তুলো হুস্বো বামচক্রঃ সু-द्रिश्वद्रः ॥ नानावदर्गा श्टनकपृर्वि ৰ্নাগভোগী স্বনস্তকঃ। স্থূলো দা-भाषद्या नीत्व। मत्था ठळः मनी-लकः ॥ म॰कीर्न द्वात्रत्का त्वा १-ব্যাদথ বন্ধা সুলোহিতঃ ৷ সদীর্ঘ-রেখঃ শুষির একচক্রামুজঃ পৃথা।। পৃথুচ্ছিদ্ৰ স্থলচক্ৰঃ ক্লফো বিষ্ণুশ্চ विन्तृव । इये शीरवा १ सू माका तः পঞ্চরেখঃ সকৌস্তভঃ।। বৈঙ্গপ্তে নৃণিরত্নাত একচক্রাযুজা ২সিতঃ १ मथ्रा भीर्या श्रृकाकारता ভাররেখ**শ্চ পাতৃ বং ॥ বামচক্রো** লদ্**রেখঃ শ্যামো বো ২ব্যাল্রিবি-**ত্ৰৰঃ। শালগ্ৰামে দারকাষাণ স্থি-ভাৰ গদিনে নমঃ।। একেন লক্ষি-তোষো ২ব্যাকাদাধারী সুদর্শনঃ । একদারে চতুশ্ব্রু॰ বনমালা विज्यिकः॥ वर्गतया ममायूकः গোষ্পদেন বিরাজিত । কদম্ব अम्माकातः लच्चीनातायनः विमूर ।। লক্ষীনারায়ণো দ্বাভ্যাণ ত্রিভি মূর্ত্তি স্ত্রিবিক্রমঃ। চতুতু জ শ্চ-তুবূর্য হো বাস্দেবশ্চ পঞ্চিঃ।। প্রান্ত্রঃ ষড্ভি রেব স্যাৎ সম্বর্ষণ ইত স্ততঃ। পুৰুষোত্তনো ংফভিঃ

স্যামবব্যুহো নবোমতঃ ৷৷ দশা-বতারো দশভি রনিরুদ্ধো ২বতা-দথ। দাদশাত্মা দাদশভি রত উদ্ধ মন खकः ।। विरक्षा मू र्खि मय॰ স্তোত্রণ যঃ পঠেৎ স দিবণ ব্রজেৎ । ইতি গারুডে ৪৫ অধ্যাযঃ।।ঞ্চা। অপরঞ্চ। হরিরুবাচ। নির্লক্ষণা শুভা স্যাচ্চ চক্ৰান্ধিত শিলাৰ্চ্চ-ना । जाती मूमर्गता मूर्खि न-শ্বীনারাষণো ২পরঃ ৷৷ ত্রিচক্রো ২সাবচ্যুতঃ স্যাচ্চতৃশ্ক্তে শ্চত্-ভূজঃ। বাসুদেবশ্চ প্রদায় স্ততঃ সন্ধর্মণঃ স্মৃতঃ ।। পুরুষোত্তনো श्रुकेशः माध्यवृादश म्याज्ञकः। একাদশো খনিরুদ্ধঃ স্যাদ্ধাদশো দাদশাত্মকঃ।। অত উদ্ধাননস্তঃ माञिक दिकामिरकः क्याः । সুদর্শনাদ্যা লফিতাশ্চ পূজিতাঃ गर्वकामनाः ॥ भानवामभिना ষত্র দেব দারবতী ভব। উভযোঃ সঙ্গমো যত্ৰ তত্ৰ মুক্তি ন সংশযঃ ।। ইতি গাৰুডে ৬৫ অধ্যাযঃ।। শালগ্রামঃ পু॰ ক্ষেত্রবিশেষঃ ৷ यथा। धत्रगूराह। जर्भवन् (पव-দেবেশ শালকায়নকো মুনিঃ ৷ কি॰ চকার তপঃ স্র্বন্ তব কে-ত্রে বিমুক্তিদে ।। বারাহ উ-

भानग

বাচ। অথ দীর্ঘেণ কালেন স ঋষিঃ সংশিতব্ৰতঃ । তপ্যমা-নো যথান্যায় পশ্যতে শাল মুক্তমণ।। বিশ্রামণ সরুতে তত্ত্র জফুকামে। ২থ মাণ মুনিঃ। মা-যয়া মম নূঢাত্মা শক্তো দ্রফুণ ন মা মভূৎ।। ততঃ পূৰ্বেণ পা-শ্বেন তদ্য শালদ্য সৃন্দরি। বৈশাখমাস দাদশ্যা মদ্দর্শন মুপাগতঃ।। দৃষ্টা মাণ্তত্র স মু-নি স্তপস্বী সংশিতব্ৰতঃ । তুষ্টা-व देविषिदेकः मृदेकः थानगा ह পুনঃ পুনঃ ॥ ততো १३॰ खृष-षात्ना देव अविमूर्थान मुन्नति। প্রাপ্তো ২শ্মি পরমাণ প্রীতিণ ত-মবোচণ ততো ঋষিণ ॥ তত্ৰা শ্ৰ-মে মহাভাগ স্থিত্বা ত্বণ তপসাণ-নিধে । পুত্রেণ পরমপ্রীতে। মৎক্ষেত্রে মৎসমে ভব ৷৷ অ-ন্যচ্চ গুহু° বক্ষ্যামি শালস্কায-ন তচ্ছ গু। তব প্রীত্যা প্রবক্ষ্যা-बि खटेन ७९ *क्व* बुख्य ॥ শালগ্ৰাম মিতি খ্যাত তন্নি-বোধ সুনে শুভ । ষোয বৃক স্থুয়া দৃষ্টঃ সোহ মেব ন সংশ-যঃ।। এতৎ কোপি ন জানাতি বিনা দেব মহেশ্বর ৷ এব ত-

শৈ বরং দত্বা শালক্ষায়নকাষ বৈ ।। পশ্যত স্তুদ্য বসুধে তত্ত্র-বান্তর্হিতো হভবং। বৃক্ষং দক্ষি-গতঃ ক্ষত্বা জগাম স্বাশ্রমং মুনি ।। মম তজোচতে স্থানং গিরিক্-ট শিলোচ্চযে। শালগ্রাম ইতি খ্যাতং ভক্ত সংসারমোক্ষণং ।। ইতি বারাহে শালগ্রামক্ষেত্রমা-হাত্ম্যবর্ণন নামাধ্যামঃ ।।

শালগ্রামগিরিঃ পু॰ শালগ্রা-মোৎপাদকপর্বতঃ। যথা। বা-রাহ উবাচ। কথ্যিষ্যামিতে গু-ছ॰ শালগ্রাম মিতি শ্রুত । ত-স্মিন্ ক্ষেত্রে হরে। দেবে। মু স্বৰূপেণ সংযুতঃ ৷৷ শালগ্ৰামে গিরৌ তন্মিন্ শিলাৰূপেণ তি-ষ্ঠতি। অহ তিষ্ঠামি তত্ত্বৈব গিরিকপেণ নিত্যদা ।। তব্মিন্ শিলাঃ সমগ্রাস্ত মৎ স্বৰূপা ন সংশযঃ। পূজনীযাঃ প্রযত্ত্বেন কিং পুন শ্চক্রলাঞ্ছিতাঃ।। লি-ঙ্গৰূপেণ তু হর স্তত্র দেবালযে गिरतो। निवनाजाः निना ख-ত্র চক্রনাভা স্তথা শিলাঃ ॥ সোমেশ্বরাধিষ্ঠিতস্ত শিবৰূপো গিরিঃ স্মৃতঃ। শালগ্রাম্গিরি विशु तर लात्यश्रताधियः ॥

ত্তযোঃ পৰ্বত্তযো ৰ্যো বৈ শিলা বিফুশিলাভিধাঃ ৷ রেব্যা চ ক্তুত পূৰ্বণ তপঃ শিব সুতুষ্টিদণ ।৷ মম ত্বৎ সদৃশঃ পুত্রো ভূযাদিতি বি-ধো তয়া। অহুণ কস্যাপি ন সূতঃ কিন্ধরিষ্যামি চিন্তয়ন্যা রেবাযাস্ত वरता (पर खुवनार॰ मृगलाञ्चन। নিশ্চিত্যৈব তদা প্রোক্ত প্রস ক্ষেনাস্তরাত্মনা।। লিঙ্গৰূপেণ তে দেবি গজানন পুরস্কৃতঃ। গর্ভে " তব বসিষ্যামি পুত্রে। ভূত্বা শিব-প্রিয়ে ৷৷ মম স্ব মপরা মূর্ত্তিঃ খ্যা-তা জলম্যী শিবা। শিবশক্তি বিভেদেন আবা মেকত্র সংস্থি-তৌ ॥ এব॰ দত্তবরা রেবা মৎ সান্নিধ্য মিহাগতা। রেবাখণ্ড মিতি খ্যাত ততঃ প্রভৃতি গোপ-তে।।‡।। গণ্ডক্যাপি পুরা তপ্ত॰ ব-ৰ্যাণা মযুত বিধে। শীৰ্ণপৰ্ণাশন রূষা বাষ্ভক্ষাপ্যনন্তরণ।। দিব্যং বর্ষশত তেপে বিকু চিন্তযতী 🏽 তদা। ততঃ সাক্ষাজ্জগন্নাথো হ-রি ভক্তজনপ্রিয়ঃ।। উবাচ মধুরণ বাক্য॰ প্রীতঃ প্রণত বৎসলঃ। গণ্ডকি ত্বা প্রানমান্মি তপসা বিস্মিতে ২নঘে ৷৷ অনবচ্ছিন্নযা শক্ত্যা বর॰ বর্ষ সূত্রতে। কি॰

দেয় তদ্বদস্বাশু প্রীতোশ্মি বর-वर्गिन ॥ भएकाशि भूदता मृख्री শুখ্য চক্র গদাধর । দণ্ডবৎ প্রাণ-তা ভূত্বা তত স্তোত্রণ প্রচক্রনে ॥ **जट्हा (मव गवा मृट्छ। मूर्मटर्मा** (यांगिना मिं। द्या गर्व निष्णुन् **উ॰ জগৎ স্থাবর জঙ্গম॰।। ততো** হিমাংশে সা দেবী গণ্ডকী লোক তারিণী। প্রাঞ্জলিঃ প্রণতা ভূস্বা यधुत्र वाका भववी ।। यनि प्तव প্রসম্মোসি দেয়ো মে বাঞ্ছিতো বরঃ। মন গর্ত্তগতো ভূত্বা বিফো মৎপুত্ৰতা বজ ৷৷ ততঃ প্ৰসন্মে ভগবান্ চিন্তযানাস গোপতে। কি॰ যাচিত॰ নিম্নগ্যা নিত্য৽ মৎ-**मक्**लूक्षया ॥ माम्यामि याहिन যেন লোকানা ভবনোক্ষণ । ইত্যেব° ক্লপয়া দেবে৷ নিশ্চিত্য মনসা স্বয়ণ।। গণ্ডকী মভবৎ প্রীতঃ শৃণু দেবি বচো মম। শা-লগ্ৰামশিলাৰপী তব গৰ্ৱগতঃ সদা।। তিষ্ঠামি তব পুত্ৰত্বে ভ-ক্তানুগ্রহ কারণাৎ। মৎসামি-ধ্যান্নদীনাণ দ্ব মতিশ্ৰেষ্ঠা ভবি-ষ্যদি।। দর্শনাৎ স্পর্শনাৎ স্না-नाथ भानाटेकवावगाइनाथ। इ-রিষ্যসি মহাপাপণ বাজ্মনঃ কাষ

সম্ভবং ।। ইতি বারাহে সোমেশ্বরাদিলি সমহিমাবমুক্তিকেত্রত্রিবেণ্যাদিমহিমানামাধ্যামঃ ।।
শালক্ষটকটঃ পুং সুকেশীরাক্ষসঃ । স বিদ্যুৎকেশিভার্য্যা শালক্ষটকটাবাঃ পুক্রঃ। ইতি বামনপুরাণং ।।

শালস্কাষনঃ পু॰ মুনিবিশেষঃ।। নন্দী। ইতি মেদিনী।।

শালকায়নজীবসূঃ দ্রী ব্যাস-মাতা। মথা। ব্যাসস্যাম্বা সত্য-বতী বাসবী গন্ধকালিকা। যো-জনগন্ধা দাসেয়ী শালকায়ন-জীবসূঃ।। ইতি হেমচক্রঃ।।

শালক্ষিঃ পু॰ মুনিভেদঃ। যথা।
বিশিষ্ঠো হরুক্ষতীনাথো মৈত্রাবরুণি রিত্যপি । শালাভুরীযঃ
শালক্ষি দাক্ষীপুক্রস্ত পাণিনিঃ
।। ইতি জটাধরঃ।।

শালজঃ পু॰ শালমৎস্যঃ। যথা । শালঃ শালজ গর্জকৌ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শালনির্বাসঃ পু॰ সর্জরসঃ। ধনা॥
ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। শালনঃ২ সর্জঃ ৩সর্জরসঃ৪। ইতি
রত্নমালা।। ধূনকঃ৫ বহ্নিবল্লভঃ
৬ সর্জ্রমণিঃ ৭। ইতি ত্রিকাণ্ড-

त्नियः ॥

শালপণী স্ত্রী বৃক্ষবিশেষঃ। শা-লপাণী ইতিভাষা।তৎপৰ্য্যায়ঃ । मूमना २ मूथनी ७ श्रिता 8 সৌম্যা ৫ ঙ্গমুদা ৬ গুহা ৭ ধ্ৰুবা ৮ বিদারিগন্ধা ১ অণ্ডমতী ১০ मूलर्विका ३३ मीर्घम्ला ३२ मीर्घ-পত্রিকা ১৩ বাতম্বী ১৪ পীতিনী ১৫ তম্বী ১৬ সুধা ১৭ সৰ্বানুকা-রিণী ১৮ সোফমী ১৯ সুভগা ২০ দেবী ২১ নিশ্চলা ২২ ত্রীহি-পৰিকা ২৩ সুমূলা ২৪ সুৰূপা ২৫ সুভপত্রিকা ২৬ সুপণী ২৭ শानिপতी २৮ শাनिष्ना २२। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। বিদারী ৩০ সালপণী ৩১। ইত্যমরটীকা-যা॰ ভরতঃ ।। অস্যা গুণাঃ। গ্রা-হিত্বণ। কফ পিত্ত নাশিত্বঞ্চ । ইতি রাজবল্লভঃ ॥ তিক্তম্বণ। গুরুত্বণ। উকত্বণ। বাতদোষ বি-ষমজ্ব মেহার্শঃ শোক সন্তাপ नागिष्यः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। অপি চ। শালপণী স্থিরা সৌ-या जिलनी शीवता छशा वि-मातिगन्ना मीर्घा<u>ष्ट्य</u> मीर्घशला॰-শুমত্যপি।। শালপণী গর চ্ছर्फि ত্বর শ্বাসাতিসারজিৎ। শোষ

দোষ ত্রয় হরী বৃংহণ্যক্তা রসাযনী ৷৷ তিক্তা বিষহরী স্বাদুঃ ক্ষত কাস ক্রমি প্রাণুৎ ৷ ইতি ভাবপ্রকাশঃ ৷৷

শালভঞ্জিকা স্ত্রী বেশ্যা।।কা-ষ্ঠাদিনির্ম্মিতপুল্রিকা। ইতি জ-টাধরঃ।।

শালভঞ্জী স্ত্রী কাণ্ঠাদিনির্শ্মিত-পুত্রিকা। ইতি হেমচন্দ্রঃ ॥

শালবঃ পু॰ লোধুঃ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

শালবেষ্টঃ পু॰ শালনির্যাসঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

भाजमातः पू॰ क्रमः॥ शिक्ः। ইতি विশ्वः॥

শাল। দ্রী গৃহং।ইত্যমরঃ।। বৃক্ষন্য ক্ষন্ধশাখা।। গৃহৈকদে-শঃ।ইতি মেদিনী।।

শালাকী পু॰ অস্ত্রবৈদ্যঃ ৷৷ না-পিতঃ ৷৷ শেলধারী ৷ ইতি কেচিৎ ৷৷

गानाकी खी शूङ्गिका। ইতি गमत्रञ्जावनी॥

শালাজিরঃ পু॰ ক্লী সরাবঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ শব্দরত্বাবলী চ।।

শালাঞ্চিঃ স্ত্রী শাকভেদঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।। भावानी खी विषाती। ইতি শব্দ-त्रज्ञावनी॥

भानामृगः भू भृगानः। ইতি श्रावनी।।

শালার ক্লী ছস্তিনখঃ। সো-পান া গক্ষিপঞ্জরঃ। ইতি মে-দিনী।

শালাবৃকঃ পু॰ বানরঃ॥ সঞ্জুরঃ
॥শৃগালঃ। ইত্যমরঃ॥ মৃগঃ।
ইতি শব্দরত্মাবলী॥ বিডালঃ।
ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥

শानिः पु॰ शक्तमार्ड्जातः। ইতি त्यिनि ॥ कन्यानिशाना ॥ ষষ্টিকাদিধান্য । ইত্যমরঃ ॥ তৎপর্য্যায়ঃ। মধুরঃ ২ রুচ্যঃ ৩ ৰীহিশ্ৰেষ্ঠঃ ৪ নৃপপ্ৰিয়ঃ ৫ ধা-त्माखमः ७ देवमातः १ मूक्या-রকঃ ৮। পুস্তকান্তরে মধুরস্থা-त्न कलम इंडि शार्वः। म जू **मग**विशः। यथा। ताजान विकिक সিতেতর রক্ত মুগু স্থূলাণু গন্ধ তিরিযাদিক শালিস॰জ্ঞাঃ। ত্রী-হি স্তথেতি দশধা ভূবি শালযঃ স্যু স্তেষা ক্রমেণ গুণ নাম গণ ववीमि ॥ इंछि ताजनिर्यन्छैः॥ जामा छनाः। नालरमा यथुताः भीजा मधुभाका वनावहाः ।

পিত্তমা শ্চানিল কফাঃ মিগ্ধা বন্ধাল্পবর্চ্চদঃ ৷৷ ইতি রাজবল্লভঃ ॥ 🕸 ॥ ञथ भानिधानानकन॰ । কণ্ডনেন বিনাশুক্লা হৈমস্তাঃশা-লয়ঃ স্মৃতাঃ ॥ 🗱 ॥ শালীনা ৽ না-মানি যথা। ব্লক্তশালিঃ সকলমঃ পাर्ख्कः मननामृज्यः। সুগন্ধकः कर्षभरका भशानानिन्छ पृथकः॥ পুষ্পাণ্ডকঃ পুঞ্জীক স্তথা মছিষ-गखकः । मीर्यम्कः काश्वनत्कः। श्याता त्नाधुभूष्णकः ॥ हेणा-দ্যাঃ শাল্যঃ সন্তি বহুবো বহুদে-শজাঃ ৷৷ ৠ ৷৷ অথ তেষা ওণাঃ ৷ भानरया मधुदाः सिक्षा बन्मा व-कान्नवर्ष्ठमः । क्याया नयता क्रा अर्था व्याक्त वृःश्वाः ॥ অল্পানিল কফাঃ শীতাঃ পিত্তসা मृजना खशा मानरा मक्षजृ-জাতাঃ ক্যাযা লঘুপাকিনঃ।। मरु मृज भूतीयान्ड ककाः सा-মাপকর্বণাঃ। কেদারা বাত পি-ভুমা গুরুবঃ কক শুক্রলাঃ ।। ক-याया जन्नवर्ष्ठका मधुतान्ह वना-বহাঃ। কেদারাঃ রুফক্ষেত্রজা উপ্তাঃ। স্থলজাঃ স্বাদবঃ পিত্ত কফমা বাত বহিনাঃ ৷৷ কিঞ্চিত্তি-ক্তাঃ ক্ষাধাশ্চ বিপাকে কটুকা

অপি। স্থলজা অরুষ্টভূমিজাঃ স্বয়ণ জাতাঃ। বাপিত। মধুরা ব্যা। বল্যাঃ পিত্ত প্রণাশনাঃ॥ **(क्षेत्रां को क्षेत्रके का**ः क्षाया গুরবো হিমাঃ। বাপিতাঃ ক্লফ্ট-ক্ষেত্রে অরুফক্ষৈত্রে চ। বাপি-তেভ্যো গুণৈঃ কিঞ্চিদ্ধীনাঃ প্রোক্তা অবাপিতাঃ।। রুফক্ষে-ত্রে অরুষ্ট ক্ষেক্রেচ। রোপিতা-স্ত নবা বৃষ্যাঃ পুরাণা লঘবঃ স্মৃ-তাঃ। রোপিতারোপিতা ভূষঃ শীঘুপাকা গুণাধিকাঃ।। ছিন্নক-ঢা হিমা ৰক্ষা বল্যাঃ পিত্ত ক-ফাপহাঃ। বদ্ধবিট্কাঃ ক্ষাষা-শ্চ লঘব শ্চাল্পতিক্তকাঃ ॥ 🗱 ॥ অথ রক্তশালে র্গুণাঃ ৷ রক্তশা-লি বঁর স্তেফু বল্যো বর্ণ্য স্ত্রিদো-ষজিৎ। চক্ষো। মূত্রলঃ স্বর্যঃ श्वकनः स्कृष्टि ख्रुताशंकः ॥ विय ত্রণ শ্বাস কাস দাহন্দ্রি পু-ফিদঃ। তত্মাদলান্তর গুণাঃ শা-लट्या मङ्गानयः ॥ तुक्रमानिः माउनथानी इंडि मगथरम्टम প্রসিদ্ধঃ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। শালিকা স্ত্রী বিদারিকা। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শালিক্ষঃ পু॰ শাকবিশেষঃ। শা- भानीन

ঞ্যা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। শালঞ্চঃ ২ শিতসারঃ ৩ পত্র-কেষ্টঃ ৪ লোহসারকঃ ৫। অস্য গুণাঃ । দীপনত্ব॰ । তিক্তত্ব॰ । প্লীহার্শঃ কফ বাত নাশিত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

শালিনীকরণ ক্লী ন্যগুাবন । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ তিরক্ষার ইতি যাব ৎ ॥

শালিপণী স্ত্রী মাষপণী । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।।

শালিপিষ্ট॰ ক্লী স্ফটিকণ ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

শালিবাহনঃ পু॰ রাজবিশেষঃ। স তু শককর্ত্তা বিক্রমাদিত্যশ-তুশ্চ॥

শালিহোত্রঃ পু॰ যোটকঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

শালী ত্রি শালাসম্বন্ধিঃ।। পদান্তে যুক্তবাচকঃ। যথা। চন্দন চর্ক্তিত নীলকলেবর পীতবসন বনমালী। কেলি চলম্মণিষ্পওল মণ্ডিত গণ্ডযুগ স্মিতশালী
।। ইতি জ্যদেবঃ ১৪

শালী স্ত্রী রুক্জীরক: । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥ শালীনঃ ত্রি অধৃষ্টঃ। ইত্যমরঃ শালোত্ত

॥ भानामयकी ह ॥

শानीना जी मिट्यगा । है छि त्राक्रनिर्यन्धेः ॥

भान् क्री भान्कः। ইতি শক-त्रञ्जावनी ॥

শালুঃ পু॰ কষাযদ্ৰব্য॰ ॥ চৌর-কাখ্যোষধিঃ । ইতি মেদিনী ॥ ভেকঃ । ইতি হেমচন্দ্ৰঃ ॥

भान्क की अभूमापिम्न । ७९ পर्यायः। शक्ष भूत । २ भान्कः ७ भान् । ३ जि भक्त का तनी।। भान्क की अभूमापिम्न । ३ जा-भतः। जाजीकन । ३ जि तो क-निर्यक्तः।।

শাল্কঃ পু॰ মণ্ডুকঃ। ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ।। সমুদাদিমূল॰। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।।

শালুরঃ পু॰ ভেকঃ। ইত্যমরঃ॥ শালেযঃ পু॰ মধুরিকা। ইত্য-মরঃ॥

শালেযা স্ত্রী মিশ্রেযা। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

শালেষ ত্রি শাল্যন্তবক্ষেত্র। ইত্যমরঃ।। শালাসয়দ্ধি শাল-সমৃদ্ধি চ ।।

শালোত্তরীয়ঃ পু॰ পাণিনিমুনিঃ
। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।।

শান্দলঃ পু॰ শান্দলীবৃক্ষঃ। ইতি
শব্দরত্বাবলী ।। দীপবিশেষঃ।
ইতি শব্দমালা ।। তদিবরণ
যথা। অত উর্দ্ধৃণ প্রবক্ষ্যামি শান্দলা
দ্বলস্য নিবোধত । শান্দলো
দিগুণো দীপঃ ক্রেঞ্ছিনীপস্য
বিস্তরাৎ ।। পরিবার্য্য সমুদ্রম্ভ দ্বিমণ্ডোদকণ স্থিতঃ। তত্র পুন্দিরাক্ষ

জনঃ ৷৷ সত এব সৃদুর্ভিক্ষণ ক্ষ-মা তেজোযুতা হি তে। প্রথ-মঃ সূর্য্যসন্ধাশঃ সুমনা নাম প-ৰ্বতঃ।। পীতস্ত মধ্যম স্তত্ৰ শা-তকৌস্তমযো গিরিঃ। নায়া স-र्बमूरथा नाम निर्वि । यथि ममिन তঃ।। তৃতীয় শৈচৰ সৌৰণো ভূ-ঙ্গপত্রনিভো গিরিঃ। স নামা রোহিতো নাম দিব্যো গিরিব-রো মহান্।। সুমনাঃ জশলো **प्तिनः** मूर्थामर्कः मूर्थामयः । রোহিতস্ত তৃতীযস্ত রোহিণী নাম বিশ্রুতঃ ॥ তত্র রত্নান্য-নেকানি স্বয়ণ রক্ষতি বাসবঃ। প্রজাগতি মুপাদায প্রসন্মে বি-ধিবৎ স্বয়ং ৷৷ ন তত্ৰ নদ্যো বৰ্ষ-স্বা শীতোক্ষঞ্চৈব তদ্বিধণ। বর্ণা-শ্রমাণাণ বার্ত্তা বা ত্রিষু দ্বীপেষু

विमारा ।। न गृश् न ह मरक्षां उ ঈর্ষাসূষা ভষ তথা। উদ্ভিদান্য-দকান্যত্র গিরি প্রসূবণানি চ।। ভোজন ষ্ডুদ তত্ৰ তেষা স্বয মুপস্থিত । অধনোত্তনো ন তেম্ব স্তি ন লোভো ন পরিগ্রহঃ ৷৷ অ-রোগা বলবস্তশ্চ একান্ত সুথি-তাঃ প্রজাঃ। ত্রি॰শদ্বর্ষসহস্থানিঃ মানসী॰ সিদ্ধি মাস্থিতাঃ ।। স্বস্ব-गायुः त्रकाशक धर्माम्बर्याः ठरेश-व ह। भाषानात्माय् विटब्हय॰ ही-পেষু ত্ৰিষু সৰ্বশঃ ৷ ব্যাখ্যাতঃ শानानामाना॰ दीशानाम विधिः শুভঃ। পরিমওলস্ত স দ্বীপ শ্চক্র বৎ পরিবেষ্টিতঃ ॥ সুরোদেন मगूरजन विश्वरनन ममन्निजः । ইতি মৎস্যপুরাণে ভুবনকোষে সপ্তদ্বীপনিবেশন নাম ১০০ অ-शायः ॥ 🟶 ॥ जिं ह । क्षकिषी প্রমাণাতু দিগুণেন সমস্ততঃ। সংবেষ্ট্যেক্ষুরসাম্ভোধি শাল্মলিঃ म॰ वाविष्ठः ॥ मश्च वर्षानि उ-ত্ৰৈব তত্ত্ৰৈব স্বলপৰ্বতাঃ । ঋ-জ্বাযতাঃ সুপৰাণঃ সপ্ত নদাশ্চ সুব্রতাঃ ৷৷ সমুদ শেচানত শৈচব তৃতীযশ্চ বলাহকঃ। দ্রোণঃ কর্ণ-স্ত মহিষঃ কঙ্গদান্ সপ্ত পৰ্বতাঃ॥

যোনিতোযা বিভৃষ্টা চ চন্দ্ৰা শুক্লা বিমোচনী। নিবৃত্তি শেচ-ত তা নদাঃ স্তাঃ পাপহরাঃ শিবাঃ॥ন তেষু বিদ্যতে লোভঃ -ক্রোধো বা দ্বিজসত্তমাঃ। ন চৈ-বাস্তি যুগাবস্থা জনা জীবস্তা-নাম্যাঃ।। যজন্তি সততং তত্ৰ বৰ্ণা বাষু॰ সনাতন॰ । তেষা॰ তস্যাথ সাযুজ্য সাৰপাঞ্চ স-লোকতা ।। কপিলা ব্ৰাহ্মণাঃ ব্রোক্তা রাজান শ্চারুণা স্তথা ৷ পীতা বৈশ্যা স্তথা ক্লফা দীপে श्यिम् वृष्णा विकाः ॥ ইতি কৌর্মো ভুবনবিন্যাসে ৪৬ অ-थायः ॥ 🗱 ॥ स्वाप्त्रमः। ३७ ब्रुबर्गाला ॥

শাল্মলিঃ পুণ স্ত্রী বৃক্ষবিশেষঃ।
শিম্ল ইতি ভাষা। তৎপর্যাষঃ
পিচ্ছিলা ২ পূরণী ৩ মোচা ৪
স্থিরাষুঃ ৫। ইত্যমরঃ ॥ দুরারোহা ৬ শাল্মলিনী ৭ শাল্মলঃ
৮। ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ তুলিনী ৯ সক্কুটী ১০ রক্তপুষ্পা ১১
কণ্টকারী ১২ মোচনী ১৩ ।
ইতি জটাধরঃ ॥ চিরজীবী ১৪
পিচ্ছিলঃ ১৫ রক্তপুষ্পকঃ ১৬
ভূলবৃক্ষঃ ১৭ মোচাখ্যঃ ১৮ ক্-

•টকদ্রমঃ ১৯ রক্তোৎপলঃ ২**•** त्रमाश्रुष्णः २३ वहवीर्याः २२ यगप्रभः २७ मीर्घफ्रमः २८ ग्रु-लकलः २৫ मीर्यायुः २७। ইতি ताजनिर्यण्डः ॥ कलकार्थः २१। ইতি ভাবপ্রকাশঃ ৷৷ অস্য গুণাঃ शिक्तिवन् । वृषाषः । वनाषः । स्थूत्रवः। भी**ठलवः।** क्यायवः। नयूषः । सिश्वषः । एक सिया-বৰ্দ্ধনত্বক । তদ্ৰস গুণাঃ । গ্ৰা-হিন্ত। ক্ষায়ন্ত। ক্ফনাশিন্ত্ৰঞ্চ ।। তৎ পুষ্পাণ ফলঞ্চ তদ্বিধণ। ইতি त्राक्रनिर्यन्छः ॥ भावानी भीठ-ना साही तरम शारक तमायनी। লেমল। সিন্ধ বীজা চ বৃংহণী त्रक्रिशिखिष् ॥ 🗱 ॥ भावानी-পুষ্প শাকন্ত ঘৃত দৈশ্বব নাধি-ত । প্রদর নাশ্যত্যেব দুঃসা-ধ্যঞ্চ ন সংশযঃ॥ রসে পাকে চ गधुतः कषायः भीडनः छङ । কফ পিত্তাসুজিদ্যাহি বাতল চ প্রকীর্ত্তিত ॥ ইতি ভাবপ্রকা-শাল্মলিকণ্টকৈঃ পীডান্তে ॥ শাল্যলিকঃ পু॰ রোহিতকবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ भात्रानिनी जी भात्रानिवृक्तः।

नानानी

ইতি শব্দরত্বাবলী ৷৷

শান্মলিপত্রকঃ পু॰ সপ্তচ্ছদবৃক্ষঃ । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ 11

শাল্মলিস্থঃ পু॰ গরুডঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শাল্মলী স্ত্রী শাল্মলিবৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ ।। শলতি দৈর্ঘাৎ দূরণ
গচ্চতি শাল্মলিঃ। শলজগতৌ
নামীতি মলিণ বৃদ্ধিঃ। দ্বো
রিত্যুক্তে স্ত্রীপক্ষে পাচ্ছোণাদীতি ঈপি শল্মলী চ শাল্মলি শ্চেভি কেচিৎ তমতে বিভাষমা বৃদিঃ। শল্মলী রক্তপুস্পা চ কঙ্গতী চিরজীবিকা ইতি কোষান্তর
মিতি মুঙ্গটঃ। ইত্যমরটীকাযাণ
ভরতঃ।।

শাৰালী পুণ গ্ৰুডঃ। ইতি ত্ৰি-কাওশেষঃ।।

শাল্মলীকন্দঃ পুণ্ শাল্মলিবৃক্ষমূলণ ৷ তৎপর্য্যায়ঃ ৷ বিজুলঃ ২
বনবাসকঃ ৩ বনবাসী ৪ মলমঃ
৫ মলহন্তা ৬ ৷ অস্য গুণাঃ ৷
মধুরত্বণ ৷ মলসংগ্রহরোধজ্ঞযকারিত্বণ ৷ শিশিরত্বণ ৷ পিত্ত দাহার্ত্তি শোক সন্ত্রাপনাশিত্বঞ্চ ৷
ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷

भावानीकनः पू॰ उकः कनवृकः

শাবর

। ইতি রাজনির্যকীঃ ।।

শাল্মলীবেন্টঃ পু॰ শাল্মলিনির্যাসঃ ৷ শিমুলআঠা ইতি ভাষা ৷
তৎপর্যায়ঃ ৷ পিচ্ছা ২ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ মোচরসঃ ৩ শাল্মলঃ ৪
শাল্মলীবেন্টকঃ ৫ ৷ ইতি রত্নমালা ৷৷ মোচসারঃ ৬ মোচনির্যাসঃ ৭ ৷ অস্য গুণাঃ ৷ মোচস্থাবা হিমো গ্রাহী মিন্ধো বৃষ্যঃ ক্ষায়কঃ ৷ প্রবাহিকাতিসারাম কফ পিত্তাসু দাহনুৎ !!
ইতি ভাবপ্রকাশঃ ৷৷

শাল্মলীবেষ্টকঃ পু॰ শাল্মলীবে-ষ্টঃ।ইডিরত্নমালা।।

শালঃ পু॰ দেশবিশেষঃ। যথা।
শালাস্ত কারসফীয়া মরবস্ত
দশেরকাঃ। ইতি হেমচক্রঃ।।
রাজবিশেষঃ। ইতি মহাভারত॰
শাসং পণ শিশং। ইতি শব্দ-

শাবং পুণ শিশুঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী ।। শবসম্বন্ধিনি ত্রি।
মথা। গ্রহণে শাব মাশোচণ বিমুক্তো সোতিকং স্মৃতণ। তবোঃ
সম্পত্তি মাত্রেণ উপস্পৃশ্য ক্রিযাক্রমঃ।। ইতি তিথ্যদিতত্ত্বে ব্রস্বাপ্তপুরাণণ।।

भावकः पु॰ भिष्टः। ইত্যমরः॥ শাবরঃ पु॰ পাপ॰॥ অপরাধঃ॥ লোধুবৃক্ষঃ। ইতি মেদিনী।।
শবরস্বামিরভভাষ্যবিশেষঃ।।
শিবরুততন্ত্রবিশেষশ্চ ।। শবরসম্বন্ধিনি ত্রি। যথা। সংপূজ্য
'প্রেষণ সর্ব্যাৎ দশম্যাণ শাবরোৎসবৈঃ।ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বণ
শাবরভেদাখ্যণ ক্লী তামুণ।ইতি
হেমচন্দ্রঃ।।
শাবরী স্ত্রী শুকশিষী।ইতি
মেদিনী।।

শাবরোৎসবঃ পু॰ শ্লেচ্ছক্তোৎ-সবঃ। ষথা। পূজ্যিত্বা মহাষ্ট-मा। नवमा। विनि ख्रिशा। विमर्क्कारमध्य मनगाः जू व्यवता मावदत्राष्ट्रमदेवः ॥ जन्तः भारता দিবাভাগে শ্রবণস্য যদাভবেৎ 1 তদা সংপ্ৰেষণ দেব্যা দশম্যা[°] **माव**रताष्मरेवः ॥ तार्गिनीजिः क्रमातीि र्विभागि र्नर्डिक खथा। मध वृद्य निनारेमक मृषटिकः भिटेर खर्गा ॥ श्रेटक र्व रें कु बंशविरेध लीक भूष्ण थ-कीर्ग दिश । धृनी कर्मम विरंभ-পৈঃ ক্রীডা কৌতুক মঙ্গ লৈঃ।। ভগ লিঙ্গ বিধানৈশ্চ ভগ লিঙ্গ-श्रंगीठरिकः। छग निकामि म-देक के की ७ ८ ययू त्रवा कि का १।।

পরৈ নিঞ্চিপ্যতে যস্ত যঃ পর• নাঞ্চিপত্যপি। ক্রুদ্ধা ভগবতী তস্য শাপ॰ দদ্যাৎ সুদারুণ॰।। ইতি কালিকাপুরাণে উত্তরত-ত্রে ৬০ অধ্যায়ঃ।।

শাশ্বত ত্রি নিত্য । ইত্যমরঃ।।
পারিভাষিক শাশ্বত যথা ।
শাশ্বত দেব পূজাদি বিপ্রদান
নঞ্চ শাশ্বত । শাশ্বত সগুণা
বিদ্যাঃ সুহুন্মিত্রঞ্চ শাশ্বত ।।
ইতি গারুডে নীতিসারে ১০৯
অধ্যায়ঃ।।

শাশ্বতঃ পু॰ বেদব্যাসঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শাস্কুলঃ ত্রি মাণসাশী। ইতি হেমচন্দ্রঃ।

শাস্কৃলিক প্লী শস্কুলিসমূহঃ ! ইত্যমরঃ !!

শাস উ ঙ > আশিষি। ইতিকবিশাস ল ঙ > কল্পক্ৰমঃ ৷৷ আঙ
পূৰ্বা ইতি কেবলানা মন্যপূৰ্বাণাঞ্চ প্ৰযোগ নিরাসার্থণ ৷ কিন্তু
ইদং গুরুভ্যঃ পূর্বেভ্যো নমো
বাক্যং প্রশাস্মহে ৷ ইত্যুত্তরচরিতে প্রপূর্বোপি দৃশ্যতে ৷ ঙ
আশাসতে ৷ উ আশাসিত্বা আশাস্ত্বা ৷ পঞ্চম স্বরানুবন্ধ সাম-

র্থ্যাৎ ক্ত্বা প্রত্যয়স্য ন যপ্ সমাসাভাবাদি তি গোবিন্দভটঃ।
কিন্তু অস্য উদন্বস্বকলং ছন্দস্যেবেতি ধাতুপ্রদীপঃ। ল ঙ
আশাস্তে শাসু ঙিদ্ধস ঙে ইত্যত্র জন্দদীয় শাস্তে রেব গ্রহণাদস্যোপধায়া ইকারো ন
স্যাৎ। আশী রিন্টার্থাশংসনং।
ইচ্ছায়া মিত্যন্যে। ইতি দুর্গাদাসঃ।

भाम छ क नू भामतः । हेिं

किर्विक प्रमान । छ भामिषा भि
स्कृ । क भामि । नू भाखि ।

भाखि स भाखि । ताखाः म म
गुष्ठि । हेि मूर्गामामः ॥

भामनः क्षी आखा। छ० अर्या
सः। खरवामः २ निर्मानः ७ नि
रमां छः ॥ हेि छत्र । होि भाखाः ॥ हेिं

भाखाः ॥ हेि छत्र । होि भाखाः ॥ हेिं

किरोधतः ॥ ताजम छ ज्ञाः ॥

रमशा । भाखाः ॥ माखाः ॥ हेिं

किरोधतः ॥ ताजम छ ज्ञाः ॥

रमशी । भाखाः ॥ माखाः । हेिं

रमिनी ॥

শাসনহরঃ পু॰ রাজদূতঃ।। আ-ভাব।হকঃ। ইতি কেচিৎ।। শাসিতঃ ত্রি ক্তশাসনঃ। যথা। । সুজীর্ণনন্ধ সুবিচক্ষণঃ সুতঃ
সুশাসিতা স্ত্রী নৃপতিঃ সুসেবিতঃ। সুচিন্তা চোক্তণ সুবিচার্য্য
যৎ ক্রতণ সুদীর্যকালেপি ন যাতি বিক্রিযাণ।। ইতি পঞ্চরত্নণ।।
শাসিতা ত্রি শাস্তা। ইতি ত্রিকাপ্তশেষঃ।।

শান্তা তি শাসনকর্তা। তৎপর্য্যায়ঃ। দেশকঃ ২ শাসিতা ৩
। ইতি ত্রিকাণ্ডলেষঃ।। দ্বৌ ধাতা চ বিধাতা চ পৌরাণৌ জগতঃ পতী। দ্বৌ শাস্তারৌ ত্রিলোকেস্মিন্ ধর্মাধস্মো প্রকীর্তিতৌ।। ইতি বক্লিপুরাণে গণভেদনামাধ্যায়ঃ।।

শাস্তা পুণ বৃদ্ধঃ। ইত্যমরঃ।।
উপাধ্যায়ঃ।। রাজা।। পিতা।
ইতিসংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ॥
শাস্তিঃ স্ত্রী শাসনং। ইতিশক্ষরয়াবলী॥

শাস্ত্রণ ক্লী নিদেশঃ ॥ গ্রন্থঃ ।
ইত্যমরঃ ॥ স চ গ্রন্থঃ অফাদশ
বিধঃ। তস্য বিবরণং বিদ্যাশব্দে
দ্রুষ্টব্যং॥ ৠ। শাস্ত্রোৎপত্তি র্যথা। মৎস্য উবাচ। তপ শ্চচার
প্রথম মমরাণাং পিতামহঃ। আবিভূতা স্ততো বেদাঃ সাক্ষোপা-

ক্পদক্রমাঃ ৷৷ পুরাণ সর্বশাস্ত্রা-ণা॰ প্রথম॰ ব্রহ্মণা স্মৃত । নিত্য-শব্দময়ণ পুণ্যণ শতকোটি প্রবি-স্তর ।। অনস্তরঞ্চ বক্তেভ্যো বেদা স্তস্য বিনিঃসৃতাঃ। মী-আ'শা ন্যায বিদ্যা শচ প্রমাণ তর্কদংযুতাঃ ৷৷ বেদভ্যাসরত-স্যাস্য প্রজাকামস্য মানসাঃ। ননসঃ পূৰ্বসৃষ্টা বৈ জাতা যে তেন মানসাঃ।। ইতি মাৎস্যে-৩ অধ্যাস্কঃ॥ । শাস্ত্রোক্তকর্ম কর্ত্তব্য ন তুশান্ত্র বিরুদ্ধ । যথা ৷ শ্রুতি স্মৃতি সদাচার বিহিত কর্ম্ম কেবল । সেবিতব্য চতুর্ব-হৈৰ্ণ ভজড়িঃ কেশবং সদা।। অন্য-থা নির্দ যান্তি স্মার্গাগম সে-বনাৎ। অতে। বেদ বিরুদ্ধার্থণ শাস্ত্রোক্ত॰ কর্ম্ম সংত্যক্তেৎ ।। স্ব-রুদ্ধি রচিতৈঃ শাস্ত্রেঃ প্রতার্য্যে-र ह वालिगान्। विष्ठि (अय-'সো মাৰ্গ' লোক নাশাষ কেবল' া নিন্দস্তি দেবতা বেদাণ স্তপো निमासि मिन्नुकान् । एवन एव नित्रय॰ गांखि श्रमः भाज नित्य-বনাৎ ৷৷ শ্রুতি স্মৃতি সদাচার বি-হিত কর্ম শাখত। য॰ ষ॰ ধর্মণ প্রায় ত্রেন প্রেমে। খিহি সমা চরেৎ

া। স্ব বৃদ্ধি রচিতৈঃ শাস্ত্রৈ মোহ-যিত্বা জন নরাঃ। তেন তে নির-য° যান্তি যুগানা পপ্তবি শতিঃ া৷ ইতি পাদ্মে উত্তরখণ্ডে ১৭ অ-ধ্যায়ঃ ॥ ৠ। অধ্যাদ্ধ শাস্ত্রাতি-तिक गाञ्ज निन्मा यथा। भूतान॰ ভারত বেদ ধর্মশাস্ত্রাণি যানি চ । আযুসঃ ক্ষপণাথৈব ধর্মত শ্চে-श ठाठत्व ।। भूल नातानि म॰-সারঃ পু॰সা॰ স॰মূচচেতসা॰ । বিদুষা শাস্ত্র সংভারঃ সদেযাগা-ভ্যাস বিম্নকৃৎ ॥ ইদ॰ জ্ঞেয মি-দ॰ জ্বেষ যঃ সর্বণ জ্ঞাতু মিচ্ছতি । অপি বর্ষশতেনাপি শাক্সান্ত॰ নাধিগচ্ছতি ।। বিজ্ঞাযাক্ষর ত-মাত্র জীবিতু ঞাপি সঞ্লন্। বি-হায শাস্ত্রজালানি পারলৌকি-ক মাচরেৎ।। গণ্ডিতোপি হি ভূ-র্খো ২সৌ শক্তিযুক্তো ২প্যশক্তি-কঃ। यः म॰मातामहाञ्चान॰ मग्-তারবিতু ক্ষমঃ।। ইতি বব্লিপু-तार्व मूनाम बामनी नामाधायः ॥ 🗱 ॥ दिनिविक्रक्षमाञ्जानि यथा। অন্যানি চৈব শাস্ত্রাণি লোকে-স্মিন্মোহনানি চ। বেদবাদ বিরু-দ্ধানি মটেয়ৰ কথিতানি ভূ॥ বা-ম॰ পাশুগত যোগ্য নাস্থল চৈ-

ব ভৈরবং। অদেব্য মেতৎ ক-বেদমূর্ত্তি রহু বিপ্রা নান্যশাস্ত্রা-ৰ্থবাদিভিঃ। জ্ঞাযতে মৎস্বৰ-পঞ্চ ত্যক্ত্য বেদ সনাতন ।। ইতি কৌর্ম্মে উপরিভাগে ৩৬ अधायः ॥ अ। अभि ह। कृर्य-भूतात श्यानय প্রতি দেবी-বাক্য॰। যানি শাস্ত্রাণি দৃশ্যস্তে লোকে शস্মন্ বিবিধানি চ। শ্রুতি বুৰুদ্ধানি নিষ্ঠা তে-ষা॰ হি তামসী।। করালভৈরব-ঞাপি যামল বাম মাগ্রিত। এ-বিষধানি চান্যানি মোহনার্থানি ভানি তু॥ মধা সৃষ্টানি চান্যা-নি মোহাফেষাণ ভবার্ণবে। ভ-স্থাৎ সদ্ভিঃ শ্রুতি স্মৃতি বিরুদ্ধে दर्शनि न कमाहि शमः नाखिताः ≀ ইতি মলমাসভত্ত্ব° ॥ 🗱 ॥ পৃথি-ব্যা॰ তন্ত্রশাস্তাবতরণ যথা। শি-ব উবাচ। লম্বোদর মহাভাগ भृन (म পরম॰ বচঃ । ইদ॰ মহা-সুসন্দর্ভ মম বক্তাদিনির্গত।।। নিৰ্গত পাৰ্বতীবক্তান্তন্ত্ৰ পরম मूर्ल ७ । विनिशा वश्यद्भन शब्ह দিদ্ধাঞান সুত।। যত্ৰ তিষ্ঠান্ত युन्दया दिन दिनाक श्रीत्रशः।

जिन्मानिखरेन युक्तः नीयुः पः ভব মে সুত ॥ ইত্যুক্তঃ শঙ্করে-ণাসে চাফৰাহু রভূত্ততঃ । চজু-र्जि र रेखः मः निथा निवाय यि-निर्वारयः ॥ शिव छेबाह । श-চ্ছ পুত্ৰ মহাবাহে৷ তন্ত্ৰ মাদায সত্বর । সিদ্ধাঞ্জম বন রম্য यरथक्षमा ह नम्बन ॥ अन्या अ-यसो भीषु॰ जन्न मानाय जन्नन । ইত্যুপক্ৰমা। মুনে ৰাক্য ততঃ শ্ৰুষা তত্তন্ত্ৰ মুন্যে দদৌ। এব॰ তন্ত্ৰাণি সৰ্বাণি বিলিখ্য বিনিবে-দ্যেৎ ৷৷ ইতি গাযত্রীতন্ত্রে দশম বান্ধণ পটলঃ।। 🗱।। শৈষ পাশু-পতাদি শাস্ত্রোৎপত্তি র্যথা। প্র-থমণ হি ময়া প্রোক্তণ শৈবণ পা-শুপভাদিক । মচ্ছক্ত্যাবেশিতৈ ৰিপ্ৰৈঃ সংপ্ৰোক্তানি ততঃ পরু ৷৷ কণাদেন চ সংপ্ৰোক্তং শাস্ত্ৰণ বৈশেষিক॰ মহৎ। গৌতমেন ত-থা ন্যায় সাংখ্যম্ভ কপিলেন ভু ৷৷ ধিষণেন তথা প্ৰোক্ত চাৰ্ৰাক মতিগৰ্হিত । দৈত্যানা নাশ-नार्थाय विख्ना वृक्क विशा ॥ বৌদ্ধশাস্ত্রণ তথা প্রোক্তণ লগ্ন নীলপটাদিক ৷ আপত্য শ্ৰুতি-वाक्रानाः मर्गयन् त्वाकगरिंश

।। কর্মা স্বৰূপ ত্যাজ্যত্ব মত্র বৈ প্রতিপদ্যতে । সর্বকর্মা পরিভূ-ফি কল্মমন্ত তদ্চাতে ॥ গৌত-ম প্রোক্ত শাস্ত্রার্থ নির্ভাঃ সর্ব এব হি । শার্গালী বোনি মাপ-মাঃ সন্দিধ্যাঃ সর্বকর্মসু ॥ ইতি গম্বর্বতন্ত্রে প্রথমপটলঃ ॥

শাস্ত্রকৃৎ পু॰ ঋষিঃ। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ।। শাস্ত্রকর্ত্তরি ত্রি।। শাস্ত্রগঙ্গঃ ত্রি প্রঘটাবিৎ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ ।। হারাবল্যাণ ছাত্রগণ্ড ইতি পাঠঃ।।

শাস্ত্রচক্^র ক্লী ব্যাকরণ । ইতি কেচিৎ্।।

শাস্ত্রচারণঃ ত্রি শাস্ত্রদশী । ইতি শব্দরত্বাবলী ॥

শাস্ত্রক্তঃ ত্রি শাস্ত্রবেক্তা। যথা।
অনিযুক্তো নিযুক্তো বা শাস্ত্রজ্ঞো বক্তু মর্হতি। দৈবীং বাচং
স বদতি ষঃ শাস্ত্র মুপজীবতি
।। ইতি ব্যবহারতত্ত্বধৃত নারদবচনং ।।

শাস্ত্রভক্তঃ পু॰ গণকঃ। যথা।
দৈবজ্ঞো গণকো জ্ঞানী মৌছূর্ত্তো দৈবলেখকঃ, বার্ত্তান্তিকো
জ্যোতিষিকো মৌছূর্ত্তিক প্রসূচকৌ ৷৷ সংবৎসরো বর্ষকো-

ষো রেখাজীবী গণাক্ষভূক্। তান্ত্রিকো জ্ঞাতসিদ্ধান্তঃ শাস্ত্র-তত্ত্বজ্ঞ ঈরিতঃ।। ইতিশব্দরত্না-বলী।।

শাস্ত্রদশী বি শাস্ত্রজঃ। তৎ-পর্য্যায়ঃ। অন্তর্বাণিঃ ২ শাস্ত্র-বিৎ ৩ শাস্ত্রচারণঃ ৪। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শাস্ত্রবিৎ ত্রি শাস্ত্রদশী। ইত্য-মরঃ।।

শাস্ত্রবিপ্রতিষিদ্ধঃ ত্রি শাস্ত্রনি-যিদ্ধঃ। শাস্ত্রশব্দ পূর্বক বি পূ-র্বক ষিধ ধাতোঃ কর্মাণি ক্ত প্র-ত্যাযেন নি প্রমঃ।।

শাস্ত্রশিল্পী পু॰ কাশ্মীরদেশঃ। তদ্দেশত্থে পু॰ ভুমি। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ।।

শান্ত্রী ত্রি শাস্ত্রজঃ। শাস্ত্রণ বে-ভীত্যর্থে নিন্প্রত্যযেন নিষ্পন্নঃ শাস্যঃ ত্রি শাসনীবঃ। শাসি-তব্যঃ। শাসধাতো র্য প্রত্যযেন নিষ্পন্নঃ॥

শি ন ঞ নিশানে। ইতি কবিকল্পক্রমঃ ৷৷ নিশান মিতি শ্যতে
কাপণ। শান ঞ তেজে ইত্যস্য
নিত্যসনন্তত্বাৎ। অনেকার্যত্বাৎ
নিশান মিহ তীক্ষীকরণণ। ন

ঞ শিনোতি শিনুতে খল্ল° ক-র্ম্মকারঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।। শি॰শপা স্ত্রী বৃক্ষবিশেষঃ। শিশু ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাযঃ। পি-চ্ছিলা ২ অগুরুঃ ৩ কপিলা ৪ ভষাগন্ত্রা ৫ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ অগু-রুশি॰শপা ৬। ইতি ভরতঃ ॥ क्षभाता १। ইতি জটাধরঃ।। পিঙ্গলা ৮ পিচ্ছলা ২ বীরা ১০ । ইতি রত্নমালা।। 🕸।। শি॰শপা গুরুসারা চ পিচ্ছিলা গুরুশিণ-শপা। সা চেৎ কপিলবর্ণা স্যা-**ख्या**गर्र। निगमाट ॥ क्रिव কপিল। ভস্মগর্ভা চাগুরুশি শ-পা। পিচ্ছিলা শি॰শপা যুগ্মপ-ত্রিকাগুরুচেত্যপি॥ ইতি শব্দ-রত্নাবলী।। অস্যা গুণাঃ। শি॰-শুপা বাতনাশিনী। ইতি রাজ-বল্লভঃ ।। অপি চ। শি॰শপা ক-টুকা তিক্তা কযায়া **শো**ষকারি-नी । উक्क्वीर्या श्रतस्यामः अर्थ চিত্র বনি ক্লমীন ॥ বস্তিবদুণ **माश्रम् वनामा गर्ड्याञिनी ।** ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥

শিক্ স্ত্রী শিক্য । ইতি শব্দ রত্নাবলী।। শিক্ষঃ ত্রি অব্যবশাষী। ইতি ত্রিকাওশেষঃ ॥

। শিক্থণ ক্লী মধুজাত জব্যবিশেষঃ
। নোন্ইতি ভাষা। তৎপর্যায়।
। শিক্থকণ ২ মধুজণ ৩ বিষদ
৪ মধুসম্ভবণ ৫ মোদনণ ৬ কাচণ
৭ উচ্ছিস্টনোদনণ ৮ মক্ষিকামলণ ৯ কোন্ডেমণ ১০ গীতরাগণ
১১ মিশ্বল ১২ মাক্ষিকজণ ১৩
কৌজজণ ১৪ মধুশেষণ ১৫ জাবকণ ১৬ মাক্ষিকাশ্রমণ ১৭ মধূথিতণ ১৮ মধূথণ ১৯। অস্য গুল্
গাঃ। পিচ্ছিলত্বণ। স্বাদুত্বণ।
কটুত্বণ। মিশ্বত্বণ। লেপেন স্ফ্
টিতাঙ্গবিলোপনত্বক্ষ । ইতি
রাজনির্যণ্টঃ।।

শিক্থক॰ ক্লী শিক্থ॰। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥

শিক্যণ ক্রী জব্যরক্ষার্থরজ্জুমযা-ধারবিশেষঃ। শিকা ইতি ভাষা । তৎপর্ব্যায়ঃ। কাচঃ ২ শিক্যা ত শিক্ ৪। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ শিক্যা স্ত্রী শিক্যণ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী॥

শিক্যিত ত্রি শিক্যস্থাপিতবস্তা। তৎপর্য্যায়ঃ। কাচিতঃ ২। ই-ত্যমরঃ। শিখকঃ পুণ লেখকঃ। ইতি সণক্ষিপ্তসারোণাদির্তিঃ।।
শিখণ্ডঃ পুণ মযুরপুচ্ছঃ। ইত্যমরঃ।। যথা । শিখণ্ডো হস্ত্রী
পিচ্ছ বর্হে শিখিপুচ্ছ শিখণ্ডকে
। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ চূড়া।
ইতি মেদিনী।।
শিখণ্ডকঃ পুণ কাকপক্ষঃ। জুল্
লপী ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ।।
তে ক্ষ্তিয় স্ক্রাব্রণাণ শিখাত্ত-

ল্পী ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ।।
দে ক্ষত্রিয় সমারাণাণ শিখাত্রযে। উক্তঞ্চ। বালানাঞ্চ শিরঃ
কার্য্যণ ত্রিশিখণ মুগু মেব চেতি
। শিখাপক্ষকে ইত্যন্যে। সামাধন্যন চূডায়া মিত্যন্যে। কাকপক্ষাকারত্বাৎ কাকপক্ষঃ। শিরসি খণ্ডাতে শিখণ্ডকঃ মনীষাদিঃ তালব্যাদিঃ। শিখণ্ডে তু শিখাবহে ইতি তালব্যাদে রভসঃ
। শিখাপ্তকশ্চ। শিখণ্ডক শিখাওকাবিতি বাচস্পতিঃ। ইতি
তদ্ধীকায়াণ ভরতঃ।। মযূরপুচ্ছে
ক্লী। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শিখণ্ডিকঃ পু॰ সন্ধুটঃ। ইতি হেনচন্দ্রঃ।

শিখণ্ডিক। স্ত্ৰী শিখা। যথা।
চূডা কেশী কেশপাশী শিখা
শিখণ্ডিকা সমাঃ। ইতি হেম-

टिन्सः ॥ শিখণ্ডিনী স্ত্রী যূথিকা।। গুঞ্জা । इंडि यिमिनी ॥ फुलमत् क-कना। म। यक्षमा पू॰खू धर-ণেন পুৰুষো ভূষা শিখঙীতি নায়া খ্যাতঃ। ইতি মহাভারত ।। भगृती। শिখलिन् भका ६ जि-যা॰ ঈপ্ প্রত্যযেন নিষ্ণারা।। শিখঙী পু॰ মযূরপুচ্ছঃ।। গা-**स्था**तिः। म जू फ्रांशनताङाश्च-खः ॥ ययूतः । ইতি यानिनी ॥ अक् हैः ॥ यानः। इंछि द्यहिन्द ॥ छिक्षा ॥ अर्गमृथिका। ইতি त्रोজनिर्यन्छैः ॥ विकृः । यथा । শিখণ্ডী নহুশো বৃষেতি তস্য সহসুনামস্ভোত্ত ॥

শিখর ক্লী পর্বতাগ্রও। তৎ-পর্য্যায়ঃ। কূটেও ২ শৃঙ্গও ৩ । ই-ত্যমরঃ।। শৈলাগ্রদেশক ৪ । ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শিখরঃ পু॰ ক্লী বৃক্ষাগ্রণ তৎ-পর্য্যায়ঃ ৷ শিরঃ ২ অগ্রণ ৩ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ শিরণ ৪ ৷ ইতি শব্দ-রত্নাবলী ৷৷ প্রাগ্রণ ৫ ৷ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ পর্বতশৃঙ্গণ ৷৷ পুলকঃ ৷৷ কক্ষঃ ৷৷ প্রক্লাভিমবী-জাভ্যাণিক্যণ ৷৷ সকলাগ্রণ ৷৷ ইতি মেদিনী । কোটিঃ । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।। শিখরবাসিনী স্ত্রী দুর্গা । ইতি ॥ ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।।

শিখরা স্ত্রী মূর্বা। ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা।।

শিশ্বরিণী দ্রী রসালা।। বৃত্তভেদঃ ।। নারীরত্নং ।। মলিকা।।
রোমাবলী । ইতি মেদিনী ।।
বৃত্তভেদো যথা । রসৈ রুজে
শিছন্না ষ ম ন সভ লা গঃ শিখরিণী । করাদস্য ভুফে ননু শিখরিণীদৃশ্যতি শিশো বিলীনাঃ
স্মঃ সত্যু নিষত মবধেষণ তদখিলৈঃ। ইতি ত্রস্যদেগাপানুচিত নিভৃতালাপজনিতণ স্মিতণ
বিভূৎ দেবো জগদবতু গোবর্জনধরঃ।। ইতি ছন্দোমঞ্জর্য্যাণ ২
স্থবকঃ ।। নবমালিকা।। জাক্ষাবিশেষঃ। ইতি রাজনির্ঘতীঃ ।।
মূর্বা। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

শিখরী পুণ পর্বতঃ ॥ বৃক্ষঃ ॥ অপাদার্গঃ ৷ ইতি মেদিনী ॥ কোউঃ ॥ কোষ্টিঃ ৷ ইতি হেম-চন্দ্রঃ ॥ বন্দাকঃ ॥ কক টশ্ঙ্গী ॥ সন্দুরুকঃ ॥ যাবনালঃ ৷ ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥ শিখলোহিতঃ পু॰ বৃক্ষবিশেষঃ। সঙ্গরমুডা ইতি ভাষা। ইতি শব্দচন্দ্রিকা॥

শিখা স্ত্রী অগ্নিজ্বালা। তৎপ-ৰ্য্যায়ঃ। স্থালঃ ২ কীলঃ ৩ অ-ৰ্চিঃ ৪ হেভিঃ ৫ শিখা ৬। ইত্য-মরঃ।। 🟶।। পিণ্ডিতশিখাগ্নেঃ শু-ভ সূচকত্ব॰ यथा। वायू श्रूतात्। অর্চিয়ান্ পিণ্ডিতশিখঃ সর্পিঃ কাঞ্চন সমিভঃ। স্নিগ্ধঃ প্রদক্ষিণ শৈচৰ বহ্নিঃ স্যাৎ কাৰ্য্য সিদ্ধযে ।। 🕸 ।। অগে রশুভলক্ষণ যথা। বন্ধপুরাণে। অন্নে ককে সম্ভূ-লিঙ্গে বামাবর্ত্তে ভযানকে৷ আ-র্দ্রকারে ক্রারব-**ि পাবকে ।। क्रक्षार्किमि मू पूर्ग-**ন্ধে তথা লিহতি মেদিনীং। আ-হতী জুহ্যাৎষশ্চ তদ্য নাশো ভবেৎ ধ্রুবং।। ইতি তিথিতত্ত্বং ॥ भा भित्रामधाष्ट्रकमः। ७९-পৰ্য্যায়ঃ। চূড়া ২ কেশপাশী ৩ । ইত্যমরঃ।। জুটিক। ৪ জুটিক। ৫। ইতি শব্দরত্নাবলী।। কেশী ৬ শিখণ্ডিকা ৭1 ইতি হেষচক্ৰঃ ।। ।। গাযত্র্যা শিখাবন্ধন॰ যথা ৷ গাষত্ৰ্যা তু শিখা[,] বদ্ধা নৈঋ'-ত্যাণ বন্ধরমূতঃ। জুটিকাঞ্চ ত-

়তো বন্ধা ততঃ কর্ম সমারভেৎ ।। 🟶 ।। मृजना मिथावत्स मत्या यथा। बन्न वानी मह्मानि निव-वानी मञानि ह। दिरका नाम-সহস্ত্রেণ শিখাবন্ধ করোমাহণ १। 🛊 ।। निश्रादमाहन यट्या स्था। शक्ट्र मकल। (मवा बन्न विक् यरश्वताः। जिश्ववातमा नकीः निथायुक्कः करवागारः ॥ ॥ नि-शावक्षनान् छत याठ्यनः यथा। निवस्ति श्रेशिया भीटना विक था-চমন চরেৎ। ক্লম্বোপবীত স-ব্যে ২ শে বাজ্বনঃ কাষ সংবতঃ ॥ 🛊 ॥ बुक्जनियमगठियत्न (मा-বো ৰখা। শিরঃ প্রাবৃত্য কণ্ঠ॰ वा मुक्त कष्ट्र निर्शाणि वा। ज-क्रमा शामत्याः त्नीवः आवा-স্তোপ্যশুচি র্ভবেৎ ॥ ইতি আ-क्रिकछद्व॰॥ 🛊 ॥ माथा॥ वर्शि-हुण।। नामनिकी।। अश्रमावः া। চূডামাত্রণ।। প্রপদণ। ইতি ्रामिनी ॥ श्रधानः ॥ निका ॥ ্ যুণিঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ স্মর-खतः। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শিখাকন্দ ক্লী গুঞ্জন । ইতি ब्राक्रनिर्श्निः ॥ निशायकः शुः काकशकः। ইতি

(र्याञ्चः ॥ শিখাতরঃ পু॰ দীপবৃক্ষঃ। পিল-সুজ ইভি ভাষা। ইতি ত্রিকাও-(अवः ॥ শিখাধরঃ পু॰ মযুরঃ। ইতি শব্দ-याला ॥ यक्षुरवायः । इंछि जि-का अटनायः ॥ শিখাধারঃ পু॰ মবুরঃ। ইতি শ-क्तज्ञावनी ॥ निथागृनः क्षी गृक्षनः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ मिथालुः पू॰ মगृतमिथा। ইতি व्राजनिर्घकः॥ শিখাবতী স্ত্রী মূর্বা।ইতি শব্দ-চব্দিক।॥ শিখাবরঃ পু॰ পনসবৃক্ষঃ।ইতি मक्याना ॥ শিখাবলঃ পু॰ মফুরঃ। ইত্যমরঃ॥ निशावना खी मयूत्रनिशा इंडि রাজনির্ঘন্টঃ ৷৷ শিখাবান্ পু অগিঃ।। চিত্রকবৃক্ষঃ

শিখাবান্ পু॰ অগ্নিঃ।। চিত্রকবৃক্ষঃ
। ইত্যমরঃ।। কেতৃগ্রহঃ। ইতি
শব্দরত্বাখলী।। শিখাবুক্তে ত্রি।।
শিখাবৃদ্ধিঃ স্ত্রী কাষিকাবৃদ্ধিঃ।প্রাত্যহিকদেষলাভঃ। ইতি স্মৃতিঃ।।
শিখাবৃক্ষঃ পু॰ দীপবৃক্ষঃ। ইতি
শিখাত্রশক্ষ দর্শনাৎ।।

শিথিকণ্ঠ॰ ক্লী তুখণ। ইতি রত্ন-याना ॥ শিখিতীব॰ ক্লী তুখ•। ইত্যমরঃ॥ শিখিশ্বজঃ পু॰ ধৃমঃ। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ।। কার্ত্তিকেষঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী। मिथिनी खी मगूत्रमिथा। ইতি ब्राज्जिनिर्घकः॥ শিখিপুচ্ছ ক্লী মযূরপিচ্ছণ ষথা । শিখণ্ডো হস্ত্রী পিচ্ছ বর্ছে শি-খিপুচ্ছ শিখণ্ডকে। ইতি শব্দ-त्रवावनीः ॥ শিখিপ্রিयः পু॰ नयूतमतः। ইতি ब्राक्रनिर्घकः॥ শিখিম ওলঃ পু॰ বরুণৰৃক্ষঃ। ইতি **अ**क्तत्रज्ञावनी ॥ শিখিমোদা ত্রী অজমোদা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ শিখিষূপঃ পু॰ শ্রীকারীমূগঃ।ইতি क्राक्रनिर्घक्षः॥ শিখিবৰ্দ্ধকঃ পু॰ ঙ্গমাঞঃ। ইতি भक्तंत्रज्ञावनी॥ শিখিবাহনঃ পু॰ কার্ত্তিকেষঃ। ইত্যমরঃ ॥ শিখিবত ক্লী বতবিশেষঃ। যথা । ব্রক্ষোবাচ। বক্ষ্যে প্রতিপদা-দীনি ব্যান **ব্যান অয্তা**।

প্রতিপদ্যেকভক্তাশী সমাপ্তে
কপিলাপ্রদঃ ৷৷ বৈশ্বানরপদণ
বাতি শিথিত্রত মিদণ স্মৃতং ৷
ইতি গারুডে ১২৯ অধ্যায়ঃ ৷৷
শিখী পুণ মযুরঃ ৷৷ অগ্নিঃ ৷৷ চিত্র-কর্কঃ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ কলীবর্দ্ধঃ ৷৷
শরঃ ৷৷ কেতুগ্রহঃ ৷৷ ক্রমঃ ৷৷
সকুটঃ ৷ ইতি হেমচক্রঃ ৷৷ অজ্বলামা ৷ ইতি রম্ভনালা ৷৷ সিতাবরঃ ৷৷ মেথিকা ৷ ইতি রাজ্বনির্ঘটঃ ৷৷ পর্বতঃ ৷৷ তালাকাঃ ৷৷
দীপঃ ৷ ইতি কেচিৎ ৷৷ শিখান্যুক্তে ত্রি ৷ ইতি মেদিনী ৷৷
দিগঃ পণ শারুণ ৷ ইতামবঃ ৷৷
দিগঃ পণ শারুণ ৷ ইতামবঃ ৷৷

শিশুঃ পু॰ শাক। ইত্যমরঃ।।
বৃক্ষবিশেষঃ। শজিনা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাষঃ। হরিতশ্যকঃ
২ শাকপত্রঃ ও সুপত্রকঃ ৪ উপদ॰শঃ ৫ ক্ষমাদ॰শঃ ৬ কোমলপত্রকঃ ৭ বছমূলঃ ৮ দ॰শমূলঃ ৯ তীক্ষমূলঃ ১০। অস্য গুলাঃ। কটু স্থা তিক্তস্থা উক্ষত্ব॰
। তীক্ষত্ব॰। বাত কক মুখজাডা
ব্রনদোষহরস্থা দীপনস্থা রুচ্যত্বশা ভস্য পত্রশাক গুণাঃ।
রুচ্যত্ব॰। বাত কক রুমিনাশিস্থা
। কটুস্থা উক্তস্থা দীপনস্থা।

কটুস্থা উক্তস্থা দীপনস্থা।

পথ্যত্ব ৷ পাচনত্বঞ্চ ৷৷ গ্লা অ-नि ह। लाजाञ्चला नीलिगु-ন্তীক্ষগদ্ধে। জনপ্রিষঃ। মুখমো-मः क्रकिनिशु क्ष्मूरया कृतिता-ঞ্জনঃ।। শোভাঞ্জন স্তীক্ষ কটুঃ सामृयः शिष्ट्न उथा। जन्न বাতার্ত্তি শূলম শচক্ষ্যো রো-চনঃ পরঃ ॥ 🛊 ॥ শ্বেত শিগুঃ मूठीकः माम्यूथज्यः मिठास्र-ষঃ। সমূলঃ শেতমরিচো রোচ-নো মধুশিগুকঃ ।। শ্বেতশিগুঃ কটু স্তীক্ষঃ শোফানিল নিক্নস্ত-नः। अञ्चराशश्दत्र। कृत्हा मी-পনো মুখজাডানুৎ ॥ া রক্ত-কে। বক্তশিশুঃ স্যামধুরে। বহু-লচ্ছদঃ। সুগন্ধিঃ কেশরী সি॰-ছে। মৃগারিশ্চ প্রকীর্ত্তিতঃ॥র-किनिशु मंश्रीरिंगा मध्तम्छ त-সাযনঃ। শোকাগ্বান শনীরার্ত্তি পিত্ত শ্লেমাপদারকঃ ৷৷ ইতি ताकनिर्घकः॥

শিগুজ কী শোভাঞ্জনবীজ।
তৎপর্য্যায়ঃ। শেতমরিচ ২।
ইত্যমরঃ॥ শিগুভবে ত্রি।।
শিগুবীজ কী শোভাঞ্জনবীজ
। ইতি শব্দচন্দ্রিক।।
শিঘ ই আয়ুণে। ইতি কবি-

কল্পদ্রমঃ ।। ই শিঙ্ঘাতে। ইতি
দুর্গাদাসঃ ।।
শিজ্ঞাণ ক্লী কাচপাত্রণ। লোহমলণ। নাসিকামলণ। শিক্নি
ইতি ভাষা। ইতি মেদিনী ।।
শিক্ষাণকঃ পণ শ্রেষা। ইতা-

শিজ্ঞাণকঃ পু॰ দ্বেমা। ইত্যু-ণাদিকোযঃ।।

শিজ্যাণকঃ পু॰ ক্লী নাসিকামল॰
1 ইত্যুণাদিকোষঃ 11
শিজ্যিকঃ কি মাজে ইতি শক্ত

শিঙ্খিত ত্রি ঘ্রাত । ইতি শব্দ-রত্নাবলী।

শিজ ইল কি ও অস্ফুটধনী।
ইতি কবিকল্পদ্রমঃ ।। অস্ফুটধ্বনি রিহ ভূষণ কতৃ ক এব। ভূষণানাম্ভ শিঞ্জিত মিত্যমরাৎ।
ই শিঞ্জাতে। ল ও শিঙ্কে। কি
ও শিঞ্জযতে। শিঞ্জতি মঞ্জীরণ।
তালৈঃ শিঞ্জছলয সূভাগৈ র্নর্তিঃ কান্তযানিত্যত্বাদিতি রমানথঃ। বস্তুতস্তু শিঙ্কে শিপ্রঃ পচাদিত্বাদন্ ততঃ শিঞ্জ ইবাচরতীতি কৌ শত্রন্তং। ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

শিঞ্জা স্ত্রী ভূষণশব্দঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ ধনুর্গুণঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ শিঞ্জিত ক্লী ভূষণধনিঃ। ইত্য-মরঃ।

শিঞ্জিনী স্ত্রী ধনুর্ধ্রণঃ। ইত্যমরঃ॥
নৃপুরঃ। ইতি হেসচন্দ্রঃ।।

শিঞ্জী ত্রি ভূষণশব্দবিশিষ্টঃ।
শিঞ্জা বিদ্যতে ২স্য ইত্যর্থে ইন্
প্রত্যবেন নিষ্পায়ঃ ৷৷

শিট্ অনাদরে। ইতি কবিকন্ধ-দ্রুমঃ ।। শেটতি খলং লোকঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

শিশুকী স্ত্রী খাদ্যজব্যবিশেষঃ।
যথা। শিশুকী রাজিকাযুক্তঃ
স্যান্মূলকদলডবৈঃ। সর্যপ স্বরসৈ র্বাপি শালিপিফক সংযুতৈঃ॥ শিশুকী রোচনী গুরী
পিত্ত শ্লেমকরী স্মৃতা। ইতি
রাজনির্ঘণ্টঃ॥

শিত॰ ত্রি দুর্বলঃ।। নিশিতঃ। ইতি মেদিনী।। রুশঃ। ইঙি বিশ্বঃ।।

শিতক্রঃ স্ত্রী শতক্রনদী। শতলজ্ ইতি খ্যাতঃ। ইত্যমরঃ।।
ক্ষীরমোরটঃ। ইতি রক্তমালা।।
শিতশৃকঃ পু॰ যবঃ। ইত্যমরঃ।।
দন্ত্যাদি রিত্যেকে ইতি ভরতঃ।।
গোধুমঃ। ইতি ত্রিকাপ্তশেষঃ।।
শিতিঃ ত্রি শুক্রঃ।। কুর্জ-

বৃক্ষে পু॰। ইতি মেদিনী ॥ শি-তি স্ত্রিষ্ সিতে ক্লফে ভূর্জে সা-রেপি চ ছযোঃ। ইতি শক্দ-রত্নাবলী ॥

শিতিকঠঃ পু॰ শিবঃ।ইত্যমরঃ
।। দাত্যুহপক্ষী।ইতি ত্রিকাওশেষঃ।।

শিতিচারঃ পু॰ শাকবিশেষঃ।

যথা। শিতিচারঃ সূতপুলো বিতম্মণ সুনিষ্ণকে। ইতি জটাধরঃ
শিতিচ্ছদঃ) পু॰ হ॰সঃ। ইতিশকশিতিপক্ষঃ) রত্বাবলী ।।
শিতিসারকঃ পু॰ ভিন্দুবৃক্ষঃ।
ইত্যমরঃ।।

मिथिन॰ वि क्षथः। ইতি হেস-

निथिन की मन्द्रयस्ति। मस्त्रष्। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ।। সংযোগবিশেষঃ। यथा
। প্রচমঃ নিথিলাখ্যো যঃ সংযোগ স্তেন জন্যতে। ইতি ভাষাপরিচ্ছেদঃ।। প্রচম ইতি মূলে
নিথিলাখ্য ইতি কিঞ্চিদ্বয্বাবচ্ছেদেনাব্যবাস্তর সংযোগিনি মহত্ত্বতি অব্যবে বর্ত্তমানঃ
সংযোগঃ প্রচম ইত্যেকে। অত্ত্র
মহত্ত্বপদং ন দেমং পর্মাণ্ সং-

रकागमा श्राप्तवाद्यि न कथि ति-॥ छाता । जूरका २ वनवानराष्ट्रिक বর্ত্তমানঃ সংযোগঃ প্রচযঃ তেন পরমাণ সংবোগো স্থানুক সং-ৰোগো বা ন প্রচম ইত্যপরে। रेषि मिकासमुकारनी गैका किनकत्री ॥

শিনিঃ পু• ক্তিযভেদঃ वामिटकासः ॥ শিনের্মপ্তা পু॰ সাত্যকিঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডলেবঃ।। मिशविकः श्रू॰ मिशिबिकः। इ-ত্যমরটীকাষা রমানাথঃ।।

लिलिः पु त्रिनाः। यथा। टेल-ত্যাৎশ্যন যোগাচ্চ শিপি বারি প্রচক্ষ্যতে তৎপানা দ্রকণাল্ডে-ব শিপৰো রশ্মধো মতাঃ ৷৷ তেষু প্রবেশাৎ বিশ্বেশঃ শিগিবিষ্ট ইহোচ্যতে। ইতি ব্যাসবচন ।। निर्णिविकः पु॰ बनिजः॥ मून्ठ-र्या ॥ मरम्भद्रः। ইত্যमतः॥ कि कुः। यथा। देनकक्रा वृश्का

পঃ শিপিবিক্টঃ প্রকাশনঃ। ইতি

তস্য সহসুনামজোত্রণ রমানা-

খশ্চ।। স্বস্তী। ইত্যমরটীকাষাণ

ब्रायमूकिः॥ जना नेशाखदः।

শিপবিষ্টঃ। শিবিপিষ্টঃ। ইত্য-यत्र विका॥

नावयवाख्य अन्दर्शाभनावयदव मिथः पूर् मद्रावतविद्यवः १ यथा। এব॰ বিবাছ বিধিবৎ সৌ-বর্ণে মানসাচলে। অরুদ্ধতীণ বশিষ্ঠস্ত মোদ মাপ তথা সহ।। তত্র যৎ প তিত তোষ মানসা-চল কন্দরে। বিবাহাবভূতার্থা-ষ শাস্ত্যর্থণ বসুধারুতণ।। বন্ধ বিষ্ণু মহাদেব পাণিভিঃ সমুদী-রিত । তত্তোফ সপ্তধা ভূত্বা পতিত মানসাচলাৎ ৷৷ হেমা-**एकः कम्मदत्र**ं मात्नी मत्रमाध्य পৃথক্ পৃথক্। তত্তোষণ পতিত• শিপ্রে দেবভোগ্যে সরোবরে ॥ তেন শিপ্সা নদী জাতা বিষ্ণুনা প্রেরিতা ক্ষিতি । ইতি কালি-কাপুরাবে ২৩ অখ্যামঃ।।

ि श्री निर्दित्वयः। यथा। ততো হিমবতঃ প্রস্থে প্রতীচ্যা তৎপুরস্য চ। শিপ্রণ নাম সরঃ পूर्न॰ ममृष्य र्क्याह्न नामयः ॥ छत्र-হস্থান যাসাদ্য বন্ধ শক্রাদ্যঃ मूद्राः। डेशविकी यथानगय॰ পুরক্ত্য মহেশ্বরণ ৷৷ তণ শিপ্র সংকাসার মনোজ্ঞ সর্বদেহি-ना । मीञायनजन मदि छ देव

र्मानम मिण्या ।। मृत्ये कन इत खित्रान् मिश्रानारका २ जूनरव-कत्। निशाः नाम बहीः उत्या-बिः मृजाः मक्तिवामिशः॥ भक्त-खीक नमनाटमी भावस्थी॰ ज-গজ্জনান্। ইতি কালিকাপুরা-(१३२ ज्यागियः ॥ শিকঃ পু॰ শিকা। ইত্যমর্টীকা-याः विकाविदनामः ॥ শিফা স্ত্রী বৃক্ষাণা জটাকারমূল । भिक्छ इंडि थाउ॰। उदश-यायः। कति २। देवामदः ॥ मृन॰ ७। ইতি জটাধরঃ॥ नদी श मा॰ मिका ॥ माछा। इंछि त्य-षिनी ।। **শতপু**णाबा इतिजा । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ। পদ্মকশঃ। ইতি মুস্টধৃতকামী ॥ **लिकाकः पू॰ श**षायूत्र । ইতি नकत्रशावनी ॥ শিকাকদঃ পু॰ পদামূল । তৎ-পर्यप्रायः । कत्रशांदेः २ । इंछा-बतः ॥ निकाकः ७। इंडि नक-त्रज्ञावली ॥ श्रम्भकन्मः ८ कर्क हैः ৫। ইতি জটাধরঃ।। শিকা ৬ কন্দঃ ৭। ইতি মুঙ্গটধৃতস্বামী।। निकाधतः पू॰ माथा। इंडि मक-व्यक्।।।

निकाक्ररः भ् बरेव्यः। इकि রাজনির্ঘণ্টঃ । निम् छी जी क्शिवित्नवः। हरका-नि ইতি हिम्मीकाषा। ७९ शर्या-यः। यिकता २ दला। ७ शक्ता-হারিণী ৪ দ্রবৎপত্রী ৫ বাত্মী ७ ७ छ भू भी १। जमा छनाः। करूषः। उक्षयः। वाक शृष्टेण्ल काणिषः। त्रमायत्न युक्ता ति म्बर जाण कातिष्य । इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ 11 **भिषः भ्॰** ठळचमर्यकः। इंडि मक-ठिखका ॥ निश जी कलायामिषक्। मूँ जी-ইতি ছিম্ডা ইতি চ ভাষা। তৎ-পর্য্যাষঃ। সমী ২। ইত্যমরঃ॥ সিষা ৩ সিম্বী ৪ শিম্বী ৫ শিম্বি-কা ৬ শমী ৭ সিম্বিকা ৮ শিম্বিঃ २। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শমিঃ ১০। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। শিষিঃ স্ত্রী শিষা। ইতি হেমচক্রঃ ।। এরকা। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। नियिकः भू क्रकम्लाः। यथा। क्ररक श्रवत वामख रतिमच्छ শিষিকাঃ। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ॥ শিষিকা স্ত্ৰী শিষা ৷ ইতি শব্দ-त्रकावनी ॥

শিষিপর্ণিকা দ্রী মুক্ষাপনী । ইতি রত্নমালা।। শিষিপনী দ্রী মুক্ষাপনী । ইতি

भिषिभनी खी मूकाभनी। ইভি শব্দচন্দ্ৰিকা॥

শিষী খ্রী শিষা। ইতি শব্দরত্না-বলী। মুক্ষাপনী ।। কপিকচ্চুঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শিরঃ পু॰ পিপ্পলীমূল। ইতি মেদিনী ।। মস্তক। ইতি জটা-ধরঃ।। শয্যা।। অজগরঃ। ইতি সংক্রিপ্তসারোণাদিকৃতিঃ।।

শিরঃ কী শিখর । মস্তক ।
ইত্যমরঃ ।। তচ্চ মাসমাত্রেণ ভবতি । ইতি স্থবোধঃ ।। তদ্রোগনাশকে যধ যথা । শিরোরোগ হর লেপাৎ গুজামূল ।
সকাঞ্জিক । ইতি গারুডে ১৮৮
অধ্যায়ঃ ।। প্রধান ।। সেনাগ্রাণ
। ইতি মেদিনী ।।

শিরঃকপালী পু॰ নরমন্তককপা-লধারীসন্যাসী।ইতি কেচিৎ ৷ শিরঃফলঃ পু॰ নারিকেলঃ।ইতি ত্রিকাপ্তশেষঃ ৷৷

निदःष्टा द्वी मस्कर्तपानादा-गः। एटमोनस स्था। स्थान-द्वाकिनाय्म निद्या स्थिम-युट । পदिनिके निद्यादाना ॥ শিরঃশূল বিনাশন ।। ইতি গা-রুডে ১৮৮ অধ্যায়ঃ।। গুরুজঃ পুণ ক্রেন্তঃ। ইতি শুকু-

শিরজঃ পু॰ কেশঃ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

শিরসিজঃ পুং কেশঃ। ইতি জটা-ধরঃ।

শিরসিরুহঃ পু• কেশঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

শিরস্কণ ক্রী শিরস্তাণণ । ইতি হেমচন্দ্রঃ।। শিরঃসম্বন্ধিনি ত্রি।। শিরস্ত্রণ ক্রী শিরোরক্ষণসমাহঃ। টোপ্ ইতি খ্যাতঃ । ইত্যমর-ভরতৌ ।।

শিরস্তাণ ক্লী শিরোরক্ষণসন্ধাহঃ। খোপিড়া ইতি টোপ ইতিচ
ভাষা। তৎপর্য্যাখঃ। শীর্ষণ্যং ২
শীর্ষকং ওশিরক্ষং ৪। ইতি হেমচক্রঃ।। শিরস্তাং ৫। ইত্যমরঃ।।
শিরস্যঃ পুং বিশদকচঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। শীর্ষণ্যঃ ২। ইত্যমরঃ
।। দ্বে স্বতঃ স্লানাদিনা বা নির্দ্ধলে অন্যোন্যাসংপৃত্তে কেশে।
ইতি ভরতঃ।।

শিরা ন্ত্রী ধননিঃ। শির্ইতি ভাষা। ইতি মেদিনী।। অস্যাঃ পর্য্যায়াদিক নাডীশন্দে জ ইবাং।। শিরাপত্রঃ পু॰ হিন্তালবৃক্ষঃ।
ইতি রাজনির্ঘন্তঃ। কপিখঃ।
ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।
শিরাল॰ ক্লী কর্মারকণ।ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।
শিরালকঃ পু॰ অহিতকবৃক্ষঃ।
হাডভাকা ইতি ভাষা। ইতি
শব্দচন্দ্রিকা।।
শিরাবৃত্ত॰ ক্লী সীসকণ।
রাজনির্ঘন্তঃ।।
শিরিঃ পু৽ খদ্ধঃ।। শরঃ।। হি॰সঃ

শিরিঃ পু॰ খদ্ধঃ॥ শরঃ॥ হি॰সুঃ
। ইত্যুণাদিকোষঃ॥ শলভঃ।
ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদ্যা মুণাদিবৃত্তিঃ॥

শিরীষঃ পু॰ স্বনামখ্যাতবৃক্ষঃ।
তৎপর্যায়ঃ। কপীতনঃ ২ ভভিলঃ ৩। ইত্যমরঃ॥ ভিজরঃ ৪
ভঙীরঃ ৫ ভঙীলঃ ৬। ইতিতত্তীকা॥ মৃদুপুষ্পাঃ ৭ শুকতরঃ
৮ বিষনাশনঃ ৯। ইতি রত্তমালা॥ শীতপুষ্পাঃ ১০ ভজিকঃ ১১
স্বর্ণপুষ্পারঃ ১২ সুকেষ্টঃ ১৩ বহপুষ্পাঃ ১৪ বিষহস্তা ১৫ সুপুম্পানঃ ১৮ লোমশপুষ্পাকঃ ১৯
কপীতকঃ ২০ কলিঙ্কঃ ২১ শ্যামলঃ ২২ শন্তিনীফলঃ ২৩ ম-

ধুপুষ্পঃ ২৪ ষৃত্তপুষ্ণঃ ২৫ পুস্ত-কান্তরে শিখিনীফলঃ ২৬ ভণ্ডী २१ क्षेत्रगः २४ खक्त्रूष्णः २३। অসা গুণাঃ। কটুম্বণ। শীতমণ। বিষ বাত পামাসু সন্ঠ কছুতি ত্বপোষ নাশিত্বঞ্চ। ইতি রাজ-निर्यक्टः ॥ ज्यात्रि ह । नित्रीरमा ভণ্ডিলো ভণ্ডী ভণ্ডীরশ্চ কণী-তনঃ। শুকপুষ্পঃ শুক্তরু মৃদ্-भूष्भः शुक्थियः॥ नित्रीरमा म-ধুরোনুক স্তিক্তশ্চ তুবরো লযুঃ । দোষ শোথ বিষপদ্भः काम ত্রণ বিষাপহঃ ॥ ইতি ভাবপ্র-कानः॥ 🛊 ॥ क्लेक्नितीयमा পर्यायः। करें जी किनिरी त्यंजा মহাশ্বেতা চ রোহিণী। ইতি त्रवाना ॥ 🗱 ॥ जमाखनाः । नित्रीया विष वीमर्भ स्वन प-**८काय त्याथिक । ই** छि ताक-বল্লভঃ ॥

শিরীষপত্রিকা স্ত্রী শ্বেতকিণিহী।
ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷
শিরোগৃহণ ক্লী অটালিকোপরিগৃহণ ৷ তৎপর্য্যায়ঃ ৷ চন্দ্রশালা
২ ৷ ইতি হেমচন্দ্রঃ ৷৷
শিরোতীবণ ক্লী শিরশ্চ গ্রীবা চ
দ্বোঃ সমাহারঃ ৷ যথা ৷ দ্ব-

देणुक्ष अवायीजावक क्रीरव गा। बणुमा मयाममा এक्षः मयाशावक्षु वेठार्थः । यथा । बाक्ष्रः श्रेमुकः गानिभकः भि-द्राधीवः । वेठि क्रीवनिक्रमः अव्यक्षियाः ज्युष्ठः ॥

শিরোধরা স্ত্রী গ্রীবা। ইতি হেষচন্দ্রঃ !।

শিরোধিঃ স্ত্রী আবা।ইত্যমরঃ।।
শিরোমণিঃ পুণ স্ত্রী মন্তকধার্য্যরক্ত্রণ।তৎপর্যায়ঃ। চূডামণিঃ
২ শিরোরত্বণ ৩। ইতি শক্ষরত্তাবলী।। পণ্ডিত্রস্য উপাধিবিশেষশ্চ।।

শিরোমর্মা পু॰ শুকরঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

नित्तात्रज्ञ॰ की नित्तानिः। रेजम्बः॥

শিরোকজা জী সপ্তপর্কঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ 11 শ্বস্তক-রোগশ্চ 11

भित्ताक है भू किनः। इंडि भक्त ज्ञावनी।।

শিরোরুহঃ পু॰ কেশঃ। ইত্য-মরঃ।।

শিরোরোগঃ পু॰ মন্তকপীডা। নথা। অথ শিরোরোগারিকারঃ

। অত্ত শিক্ষোরোগস্য নিবান স भाग्नाह । भिरतादागास का-ৰভে বাত পিন্ত ককৈ খ্ৰিভিঃ ৷ সন্ধিপাতেন রক্তেন ক্ষ্যেণ ক্লমি-ভি তথা ॥ সূর্যাবর্তানন্তৰাত मन्यकाकावाञ्यकाः। अकाक्म-বিধস্যাস্য লক্ষণানি প্রচক্ষ্যতে।। শিরোরোগা অত্ত শিরোরোগঃ শূলৰূপা ৰুগভিধীষতে। ৰাভ পি-ত্ত কফৈ ব্ৰিভিঃ৷ ননু বাত পিত্ত ককৈ রিত্যুক্তে তল্রিত্ব বোধাৎ। কিমর্থ তিজি রিতি পদ । বা-তণিত্ত কফানা পৃথক্ কারণৰ বোধনার্থণ। তহি সর্ব এব শিরো-রোগাঃ সমিপাতসমূত্রা ইতি ৰূপণাতদা বাতাদয উত্থণত্যা প্-थक् कात्रगानि वाक्तगानि। क-रबन तमानि करबन।। 🛊 ।। वार्छ-ৰুস্য লক্ষণ মাহ। যস্যানিমিত্ত॰ শিরসো রুজশ্চ ভবস্তি তীবা নি-শি চাতিমাত্রণ। বন্ধোপতালৈঃ প্রশমশ্চ যত্র শিরোভিতাপঃ স मभीत्ररान ॥ ভবেদিভিবিশেষঃ ।। অনিমিত্ত অতর্কিত বিপ্রকৃষ্ট নিমিত্ত । নিশি চাতিমাত্র রা-ত্রো শৈত্যেন রোগাধিক্যাৎ। প্রতাপঃ স্বেদন । শিরোভিতাপঃ

नितः भीषा॥ 🛊 ॥ देशिखक मार ষ্স্যোঞ্চ মঙ্গারচিত ষ্টেথ্য ভবে-চ্ছিরো দহুতি চাক্ষি নাশ। শীতে-ন রাত্রৌ চ ভবেচ্ছ্মশ্চ শিরোভি-তাপঃ স তু পিত্তকোপাৎ ॥ দছ-**छी**छार्वज्ञा< ॥ #॥ दिश्राचिक गार া শিরো ভবেদ্যস্য কফোপদিশ্বণ श्क्रक প্রতিষ্ঠন্ধ মথে। হিমঞ্চ । সূ-बाकि बाजा वनवश्च राजा वि-রোভিতাপঃ স কফপ্রকোপাৎ।। ককোপদিশ্ধ॰ অন্তঃকফলিপ্ত•। প্রতিষ্টর স্বরণার ।। 🛊 ॥ সামি-পাতিক মাহ।শিরোভিতাপে ব্রি-उर अवृत्त गर्नानि विकानि गमु-खविख । 🗱 । त्रक्क मार्। त्रका-ছ্মিকঃ পিত্ত সমানলিক স্পার্শাস-হত্ব শিরসো ভবেচ্চ ॥ পৈত্তি-कारकुमकलिक मारु । भितःन्थ-শাসহত্ব মিতি ৷৷ ক্লাক্ষজ মাহ ৷ ৰসা বলাস ক্ষতসম্ভবানা • শি-রোগতানা মতিসংক্ষবেণ ৷ ক্ষয প্রবৃত্তিঃ শিরসোভিতাপঃ কক্ষো ভবেদু গ্রহ্নজো ২তিমাত্র• ॥ ক্ষত-সম্ভব॰ রুধির । কফঃ ক্লছে সাধ্যঃ ।। শ্রমো ভূমতি তুদ্যেত শিরো বিভান্তনেত্রতা। মূর্চ্ছা গাত্রা-वमान क निरद्वादशदश क्यां श्चि-

कि ॥ 🗱 ॥ क्रियक मार । निख-দ্যতে ষদ্য শিরোভিমাত্রণ সংভ-ক্যমাণ স্ফুরতীব চান্তঃ। স্থাণা-क गत्क्छ प्रविद्यः मभूषः भिद्रा-ভিতাপঃ ক্রমিভিঃ স ঘোরঃ য় সংভক্ষ্যমাণ ক্লমিভি রিতি শেষঃ । খ্রাণাচ্চেতি চকারেণ ক্রমি নি-र्गरमाणि रहाधारा ॥ भाग मूर्या वर्ष गार । मूर्याामय या প্রতি गम মন্দ মক্ষি দ্রুব॰ রুক্ সমুপৈতি গা-ए॰ । विवर्काल ठा॰ खमना मरिब म्याववृत्वी विनिवर्ख्ट ह ॥ শীতেন শাস্তিণ লভতে চ কিঞ্চি-मूरकन जबः সूथमाश्रूयाचा । म-ৰাত্মক কফতম বিকার সূৰ্য্যা-वबर्ख॰ তমুদাহরস্তি ॥ সূর্যোদ-य मिछि नकीक्टा जातरजाडि याव । সূर्यामाववृत्को मूर्यमा-ধোগতৌ ।। 🟶 ।। অনস্তবাত মাহ । मायाञ्च मूकीः वर्यत्यव मन्गाः সংগীড়া ঘাটাং সরুজাং সূতীবাং । সর্বস্থি সোক্ষি ভ্রুবি শ খদেশে স্থিতি॰ করোত্যাশু বিশেষতস্তু ॥ গণ্ডস্য পার্শ্বে তু করোতি কম্পণ হনুগ্রহণ লোচনজান্ বিকারান্। **অনন্তবাত** তমুদাহরন্তি দোষ-ত্রফোত্থণ শিরসো বিকারণ।। এব

नात्या रहा गाये । वयसमा त्नवार्श्वाद १ सङ्ख्या त्रमा क का- राथा बार देशी प्रवाणिकणा -मायाः वर्षाक्षः। अव यगक বাতঃ যে অমন্তবাতঃ অক্যা-দিবু বিভি॰ করোভি। বিশেষতঃ প্রভগার্মে হিভি॰ করোভি। গী-ভষা হিজি ক্লমা কম্পাদী শ্চ करताि ॥ 🟶 ॥ नश्रक गाइ। পিত রক্তানিলা দুক্তাঃ শথ্যদেশে বিমৃচ্ছিতাঃ। তীত্র ক্রন্দাছ রাগণ হি শোথ কৰ্ম জ দাৰুণ। স শি-ব্রো বিষবছেগান্ নিরুদ্ধ্যাশু গ-ল' তথা। ত্রিরাক্রাজ্জীবিত হস্তি শখকে। নাম নামতঃ।। ত্রাহাজ্জী-বতি ভৈষজ্য• প্রত্যাখ্যেষস্য কা-রুষেৎ ৷৷ পিত্ত রক্তানিলাঃ অত্র ককোপি বোজ্যঃ। ক্তান্তাপঃ ৰুফ পিত্ত রক্তৈ রিতি সূঞাত বচ-ना । विमृष्ट्जाः श्रवृकाः। य শোখঃ। ত্রিরাত্রাৎ ত্রিরাত্র মধ্যে **भात्रग**ि।। श्रा अक्षांत्र अपन । क्काननामाधाननावनाधाः छ देशशुरेनः। (तरामः शांतवायाम ব্যাষাকৈঃ ঙ্গপিতা খনিলঃ ৷৷কে-বলঃ সকফো বাৰ্দ্ধ গৃহীত্বা শির-(मा वनी।। यना। क गंध कर्गाक

PERICH

गमामद्रीवृद्यम्याः।

नवाडीज ताकावर -मकः॥ मधन वाच वा त्याज न-जित्रको

অবশ্যায়ঃ ৷ আষাসঃ অভিবলে-न ভारताबर्नामिकिः। गानानः ৰত্নপ্ৰথ । পদ্ৰাপনিকাণ শস্ত্ৰ-পাতেনেব বজুপাতেনেব বেদ-ना॰ ॥ 🟶 ॥ ज्यथं निद्तादतां गावा॰ চিকিৎসা। বাতজাতে শিরো-রোগে ত্বেছ স্বেদ॰ বিমর্দ্দন॰। পাৰাহারোপনাহাত্ত স্থ্যাত্তা-ভাষবাপহা॰ ।। ऋके মেরওফুলে চ নাগরে তত্র পেষিত । কটুক শিরসঃ পীড়াণ ভালে লেপনতো **इट्सं ।। तमः श्वामक्र**ठाटताथ স্তুস্য নস্যা ৰিশেষতঃ। শিরঃ শৃ-ল° হরত্যেব বিধেষো নাত্র স **गरः ॥ 🗰 ॥ अथ नि**द्राविङ वि-ধিঃ। আশিরো ব্যাপি ভচ্চর্শ ষোডশাঙ্গুল মুচ্ছিত। তেনাবে-ক্ট্য শিরোধস্তামাযকক্ষেন লে-পरেष् ॥ निम्हलरमाभिविकेमा তৈলৈঃ কোক্ষেঃ প্রপুরষেৎ। ধা-त्ररामाङ्गकः भारेखा यामः यामा-ৰ্দ্ধ মেব চ ৷ শিরোবস্তি র্হরত্যেষ শিরোরোগ মরুদ্ভব।। হনু মন্যা-

FREIDE

कि क्रमार्डि महिन्द मुक्तिकान । विना छ्यानन प्रतिक निद्यान-खाः अयुकारक ॥ सिनानि शक বা সপ্ত ৰুজি ভত্গরতোপি বা। ততোপনীতক্ষেহস্ত নোচবেৰ-खिनकान ॥ निद्धा नगाँ वमन श्रीवामीनि विमर्करम् । मूटवा-কেনান্তসা গাত্ৰ প্ৰকাল্যাশ্বা-ि यिक्छि ॥ श्रामिय कात्रवा भथा॰ **ब्रब मान्यामरमा**त्रि ह । यूकान् यादान् अवशाः अ रमका निमि क्वनान्।। कर्दिना-कान् ममर्शिकान्यः कीतः शि-বেত্তথা। 🐞 ৷ পিত্তাত্মকে শিরো-রোগে শীতানা চন্দনান্তসা ।। अगूरमार्थम भग्नानाः न्यानाः সেব্যাশ্চ মারুতাঃ। সর্পিষঃ শত-ধৌতস্য শির্সা খারণ হিত ॥ त्रमः यामक्रवादत्राथः कर्ण् तः अ-कूमः नवः। भीजः ছागीलयः नर्वः वनत्ननान्वर्यत्य ॥ जमा नमा॰ ভিষণ্মদ্যাৎ পিত্তলাযাণ শিরোক্র-জি। কিন্তু মন্তক শূলেমু সর্বেশ্বেব হিত মত।। গুড নাগর ৰক্ষ্যা नमाः मस्रक भूतन् ।। त्रकरक পিত্তবৎ সৰ্বণ ভোজনালেগ সে-বন ৷৷ শীতোকবোশ্চ বিন্যাসো

विरमद्या प्रस्तरमञ्जून । सम्बद्ध गणन-(परमा बर्ट्सिकाशास्त्री-परिस्थाक्षा गविशास स्टब्स् कार्या निनाज्यती किया। भूतान मर्नि-यः गानः विरमस्य मिनि हि ॥ এরখনুল তগর শতাকা জীব-ভিকা সৈশ্বৰ রানিকে চ। ভূক विषक मध्यक्तिका ह विष्यायक इक्छिनमा देवन ॥ जजानम ভৈল বিষিপ্ৰিতঞ্চ চতুৰ্ভন ভূম-त्रम विशवः। वर्धविन्यवा नानि-करवाः अपनवाः नर्वानि इन्गः **नितरमा विकातान् ॥ ह्यूडा॰ क** किनान् भनिषाः क मखान् निः वंश मृलान् अवनिकद्वाि । मू-পৰ্ণ গৃধু প্ৰতিষ্ণ চৰ্চ্ছ সৰীন্তি বাহেনা রধিক-বলগ।। জীবভিকা অত্ৰ হরীতকী শাক্ষিশেৰক। ব-**फ्विन्नूटेंडन॰ ॥ 🛎 ॥ व्ययक व्यय** नानाय कर्खरा। वृन्हरना विशिः। পানে নদ্যে চ সর্পিঃ স্যাত্বাতরৈ र्मश्रेतः गृजः ॥ । किमरक रवा।-• ৰণঞ্চাত্তঃ শিগুৰীজৈশ্চ লাবণং। অজামূত্র মৃত নস্য কর্ত্তব্য হ্ল-मिन् ६ भत्र ।। সূর্যাবর্ডে বিধাত-ব্য॰ নস্য কৰ্মাদি ভেষজ। ৰো-জ্বেৎ সম্ভত সপি ঘৃতপুপাত্ত

जन्दर्थ। गाताः क्रीयन्तिंशाः शानक क्रीयन्तिद्धाः । क्रीयनि देशे चिद्याः दक्षी

ज्यान्त्रम् हाशकी त्रज्याक हाशिकः ॥ मूर्यावर्डः निक्षाक सत्यादेवन श्राद्याश

ा अकार एक दिन श्रव । इ (बद्ध) हि (खर्यक ।। विदत्रकः কাৰ শুদ্দিশ্চ ধূপ নিক্ষোক ভো-कन । विष्ट्रानि किलान क्रकान ममान् शिकु। बिटलशरय ॥ न-স্যাণ ৰাপ্যাচৱেক স্মাদৰ্কভেদ ব্য-পোহতি। পিবেৎ সশর্কর কীরণ नीतः वा नातिरकलकः॥ मूगी-তয়াপি পানীষ সৰ্পি ৰা নন্তত ন্তবোঃ। নন্ততঃ নাসিক্ষা পি-বেদিতাম্ব। তফোঃ সুর্য্যাবর্তা-र्काउनरमाः ॥ 🗰 ॥ जनस्रवाट कर्खवाः मूर्या। वर्खिश्या विविः। শিরাব্যধশ্চ কর্ত্তব্যো ২নস্তবাত প্রশান্তবে ৷৷ আহারণ্ট প্রদাত-ব্যো বাত পিক্ত বিনাশনঃ। মধু-মম্ভক সংযাব ঘৃতপুপৈ বিশেষতঃ ॥ मःयादः शक्कांव्यतित्ययः। अत्र-কিয়া ইতি লোকে। স চ মধুমস্ত-कः मधुत्नाशिवश्वः । घृष्ठशृत्रा २ भूभः ॥ भयाक धावी तकनी

Mask

वः। अ नथ कर्वा क नितार्क भूग मिरुडि मार्गानिर्डः (बन ॥ भवातिकायः ॥ का का की रिविद्या यक्षिकी मनित्यानीत পদ্মক । এতৎ প্রলেপন কর্ব্যা-क्र्॰थकमा विनामत्वर ॥ शीछ-তোয়াভিষেকক শীতল ক্ষীর-रमवम । करेंक्क कीत वृक्ता-ণা॰ শম্বকে লেগন॰ হিত• li**ঞ**া मर्दियु । यसीमधूक मायः मा। ज्**र्याः गञ्ज विय खत्व** । ज्या मृर्वं मृक्ष माजिकृर्व मर्याना-থিত ।। নাসিকাভ্যন্তরে ন্য**ন্ত** नर्बाः भीषवाथाः इत्तर । पृष्ठे প্ৰবোগো বোগোষ মনুভাবি-ভি রাদৃতঃ॥ আর্দ্রণ যচ্ছ ক্রিকা চূর্ণ চূর্ণিত নবসাদর । উভ-য বাজিত গন্ধান্তস্য নশ্যতি गीर्यक्रक् ॥ देखि ভावश्रकारम निद्राद्रागाधिकातः ॥

শিরোর্ভিঃ স্ত্রী শিরংপীড়া। ইন্তি লোকপ্রসিদ্ধিঃ ।। শিরোবল্লী স্ত্রী বর্হিচ্ডা। ইন্তি শব্দচন্দ্রিকা।। শিরোবৃত্তঃ ক্লী মরিচং। ইন্তি রাজনির্ঘন্টঃ।।

भितान्खकनः शुः ब्रङ्गामानार्गः । ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ निस्तादवर्धः श्रू उकीवः। रेडि ত্রিকাওশেষঃ ॥ नित्त्रादवर्षेन॰ क्री नित्रःथावत्रन॰ । গাগড়ী ইতি ভাষা। ভৎ-পর্য্যায়ঃ। উক্ষীয়ঃ ২ বেষ্টন ত বেষ্টক । ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ भित्तात्वकः ६ किटला थुकः ७ । ইতি ত্রিকাণ্ডশেবঃ ॥ শিরোন্থি ক্লী মন্তকান্থি। মাথার-थ्नी रेजि जाया। जदमर्गायः। করোটিঃ ২ শিরক্তাণ ৩ শীর্ষকণ ৪। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। **मिल म উद्ध्य । ই** ि कविकन्न-দ্ৰন্যঃ।। উঞ্ছ উদ্ধৃত শস্য শেষা-रतनः। भ भिविष्ठि शानाः मीनः । শেनिতा। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ **मिन॰ क्री पू॰ উष्टः। इंडि य्य-**मिनी ॥ জीवताशायवित्ययः । যথা। ঋতামৃতাভ্যা॰ জীবেজু ষ্তেন প্ৰয়তেন বা। সত্যান্তা-ভ্যা মপি বা ন শ্বৰ্ত্ত্যা কদাচন ।। ঋত মুঞ্ছশিল ডেব্ৰেষ মমৃত मानियाहिङ । मृज्ञ **वाहिङ** टेजकः अमृष्ठः कर्रनः स्मृष्ठः ॥ ইতি মানবে ৪ অধ্যায়ঃ।। অবা-

वि उद्यादनम् शिथ वा क्लाउन वा অপ্ৰতিহতাবকাশেষু ৰত্ৰ ৰত্ৰৌ-न्यरम। विमारस जब जबान्नी-ভ্যাণ একৈকণ কণণ সমুক্ষবিদ্বা रें छि दीशायन मर्गना । अटेक-क धानामि खंडरकाकरन मूझः । बक्षवां क्राकात्वक शास्त्राक्रय-न॰ निलः। उक्रम निलम्ह हे-ত্যেকবন্তাবঃ। তৎ সত্যসমান কলম্বাদৃত মিত্যুচাতে। ইতি ভট্টীকাষা• সলূকভটঃ॥ मिनगर्जकः भू॰ भाषानरजननः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ निना जी शायानः॥ बातायः-व्हिजमांक । रेजामतः ॥ सस्मी र्यः ॥ यनः शिला । इंछि यानिनी ॥ কপূ র:। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ निनाकनी खी नलकी वृक्तः। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। **मिनाञ्चिकः पू॰ ऐकः। ই**छि শব্দরত্বাবলী॥ भक्तिका ॥ त्नार्॰। রাজনির্ঘণ্টঃ॥ শিলাজতু ক্লী 'পৰ্বতজাতোপ-शाजूवित्नयः । निलाकि इंजि रिनीजाया। छৎ शर्यायः। देश-

गिलाक

ব্লেয়ণ ২ অর্থ্যণ ৩ গিরিজণ ৪ অ-শ্বজ ৫। ইত্যমরঃ।। শিলাজ ৬ অগজ ৭ শৈল ৮ অজিজ 🖘। इं ि तुष्त्रभाना ॥ देगत्नर॰ ১০ শীতপুষ্পক ১১। ইতি শব্দ-**इ** जिल्ला । शिलावाशिः ३२ । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। অশ্মোর্থণ ১৩ অখালাকা ১৪ অখাজতুকণ ১৫ জন্বশ্বক ১৬। অস্য গুণাঃ । जिक्कप्रः। करूपः। जेकप्रः। त्रमायगद्भ । त्यदश्यामाभात्री <u>भाक कर्शभचात्र</u> नाभिष्क १ ইতি রজনির্ঘণ্টঃ।। অপি চ। শर्कत्रा गर्बद्धागश्त्रष्ठः । साग-বাহিত্ব । অত্যুক্ত শীতকত্বঞ্চ। ইতি রাজবল্লভঃ ॥ অস্যোৎপ-**छि नाम लक्ष्य श्र्वाः। निर्मा**ट्य ঘর্মা সম্ভপ্তা ধাতুসার পরাধরাঃ । নির্যাসবৎ প্রমুঞ্জি তচ্ছিলা-জতু কীর্ত্তিত।। সৌবর্ণ রাজতণ তামু॰ আযস॰ তচ্চতুৰিধণ। শি-वाজ प्रजिक् इ देशविनियाम ইত্যপি ॥ গৈরেষ মশাজঞ্চাপি गितिष्ठ॰ रेमनशाजुष्ठ॰। मिना-হ্ব কটু তিক্তোক কটুপাক র-मायनः॥ ছেদি यागवशः शस्त्र কক মেদাশ শর্করাঃ। মূত্রকৃচ্ছ°

बिलाश

ক্ষয় শ্বাসং বাতাসূার্শাংসি পান ণ্ডুতা[•]।। **অপস্মার**॰ তথে। নাদ॰ (माथ ऋछो पत क्रमीन्। (मोव-র্ণম্ভ জবাপুষ্পবর্ণ ভবতি তদ্র-সাৎ ৷৷ মধুর কটু তিক্তম্ব শী-তল॰ কটুপাকি চ। রাজত॰ পা-গুর শীত কটুক স্বাদুপাকি চ।। তামু॰ মধুরকণ্ঠাভ॰ তীক্ষ मुकक जाया । लोश किं। यु-পক্ষাভ তত্তিক্ত লবণ ভবেৎ ।। বিপাকে কটুক শীত সর্ব-শ্ৰেষ্ঠ মুদাহত । ইতি ভাব-थकानः॥ निनाक्षनी जी कानाक्षनीवृकः । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শিলাটকঃ পু॰ অটঃ।। বিলং। इंडि यिषिनी ॥ **मिलाग्रक** की लार । रेठि রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ **भिनाशिका खी मृया। ই**তি भक्षा अक्षा শিলাদক্রঃ পু॰ শৈলেষ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শিলাধাতুঃ পু॰ সিতোপলঃ । খড়ী ইতি ভাষা। ইতি ত্রিকাণ্ড-**ल्याः ।। रेग**तिकरङ्कः । म जू 'পীতবর্ণঃ। ইতি রাজনির্যন্টঃ।।

जिट्छाथनः भिनाधाकु वर्गद्रिशा ह सक्नुनः । भिनाधाकुविद्यसञ्ज विद्ध्वत्या लाक भाखकः ॥ ইতি भक्तस्त्रावनी ॥

শিলাপটঃ পু॰ পেষণার্থশিলা। শিল্ ইতি ভাষা। ইতি কেচিৎ।।

निलाशूनः भू॰ श्विगरमागानि ला। लाज इंडि जाया। ठ॰ भर्यायः। वर्षनानः २ निलाशू-

শ্রকঃ ৩। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শিলাপুষ্প ক্লী শৈলেয়ণ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

निलाज्यः क्री टेनटनयः। ইতি জটাধরঃ॥

শিলাভেদঃ পু॰ পাষাণভেদী-বৃক্ষঃ। ইতি রত্নমালা।। প্রস্তর-ভেদকান্ত্রঞ্চ।।

শिनात्रसा जी कार्षकानी। ইতি त्राक्रनिर्यन्धः ॥

भिलावका जी अवध्यवावित्यवः
। भिलावाक् इंकि हिन्मीजावा।
छৎপर्यायः। भिलाका २ त्यानवक्रमा ७ वक्रमा ८ त्यान्यक्।
स्वा ६ भिलाषक् ७ त्यान १।
सम्ब्रा छगाः। हिनषः। सामूषः।
कृष्ट् तिह मूजद्वाथाणात्री मूल
ख्र शिख नाभिष्यः। ইकि ताक-

নির্ঘন্তঃ।। শিলাব্যাধিঃ পুং শিলাজতু। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।।

भिनामन॰ क्री टेमटनसः। ইঙি
भक्तत्रञ्जावनी ॥ প্রস্তরনির্দ্মিতাमनकः॥

शिनामातः क्री त्नारः। ইতি • ट्याट्यः॥

শিলাহ্ব॰ ক্লী শিলাজতু। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥

निनिः पुः जूर्जभव्यवृकः। देखि भक्षयाना ॥

निनिः जी बातायः रिज्यार्थः । ८गावतार्हे रेजि जाया । रेजि भक्तत्रजावनी ॥

শিলিন্দঃ পু• মৎস্যবিশেষঃ ।

কথা। শিলিন্দঃ শ্লেমলো বল্যো

বিপাকে মধুরো গুরুঃ। আম

বাতকরো হুদ্যো বাত পিত্ত হুরো মতঃ।। ইতি রাজবল্পভঃ।।

দারাধঃস্থিতকাঠ॰ । ইতি শব্দরত্মাবলী ॥ গণ্ডুপদী ॥ স্তম্ভশীর্ষ• । ইতি মেদিনী ॥

निनीकु॰ क्वी कपनी पूजा। क-तका। इंडि. त्यपिनी ॥ विश्रुषे। १ इंडि विश्वः॥

भिली खुः शुः वृक्तवित्भवः। **हे** छि

यिनि ॥ ये प्रावित्नवः । म जू ठित्रक्वक्य प्राः । इंडि कि । धतः ॥

मिनीकुक॰ की गामसक्तिका। वथा। गामसक्तिका मार्च र्नि-नीतक मिनीकुक॰। ইতি হারা-वनी।

निनीक्षी खी विश्गीएजनः॥ भर्षु-शमी।। मृखिका। इछि मिमिनी।। निनीशंमः भू॰ भामत्वाशविद्यसः । গোদ ইতি ভাষা। তৎপৰ্ব্যা-यः। भागखीतः २ भीभाः ७। 'ইতি শব্দরত্নাবলী।। পাদবন্দী-कः । इंडि ट्याह्यः ॥ जीन-षमा विश्वकृष्ठे निषान यार्। পুরাণোদক ভূষিষ্ঠাঃ সর্বর্তুষু চ भीजनाः। स प्रभा खबू काय-**खि भीभमानि वित्मयछः ॥ वि-**শেষত ইতি বচনেনান্যত্রাপি শ্লীপদানি ভবস্তি ইতি বোধ্য-তে॥।। সামান্য लक्ष्ण मार्। **ষঃ সন্ধ**রো ব**ংকণজো** ভূশার্তিঃ त्निर्भा नृगाः शामगठः क्रत्यन। छ भी भार गा र क्त कर्ग तिवा শিশ্বোষ্ঠ নাশাস্থপি কেচিদাহঃ ।। তদ্রিবিধণ। বাতিকণ পৈত্তি-ক জৈমিকঞেতি ৷ তেয়া লক্ষণ

মাহ।। # ।। বাতজ্ ক্লফ ৰক ছ ক্ষুটিত তীব্ৰবেদন । অনিমিত্ত রুজঞ্চাস্য বহুশো ত্বর এব চ ৷৷ঞ৷৷ পিত্তজ॰ পীতসঙ্কাশণ দাহ স্বর-ষুত• ভূশ•। 🗱। স্নৈয়িকস্ত ভবেৎ নিশ্ব॰ তথা পাণ্ডু গুরু স্থির: ॥ লীণাপোতানি জানীযাৎ শ্লীপ-দানি কফোচ্ছ্যাৎ। গুরুত্বঞ্চ ম-रुष्ध यत्रामां छि विना क्कान्।। ॥ जमाधा मार । वन्नीक मिव সংজাত কণ্টকৈ ৰূপচীয়তে। সৰাত্মক মহত্ত্বঞ্চ বৰ্জনীয় বি-শেষতः ॥ य९ क्षियानाशांत्र वि-হার জাতৈ জাত তথা ভূরিক-कमा पू॰मः। मामु। व मपू। बि मर्बलिकः मक्लेकः वालि विव-र्जनीय ।। 🟶 ।। जमा চिकिৎमा ॥ लब्बनारलथन स्वम द्विष्ठदेन त्रक्टमाक्रदेवः। श्रापः क्षायहदेत कृटेकः भीलमः ममूलाहदाय ॥ সিদ্ধার্থ শোভাঞ্চন দেবদারু বি-स्थोयदेश मू वयूरेजः अनित्माद । পুনর্গবা নাগর সর্বপাণা কছেন বা কাঞ্জিক মিশ্রিতেন।। শ্লীপদ মিতি শেষঃ।। ধত্তুরৈরগু নির্গুঞ্জী বৰ্ষাভূ শিশু সর্ব পৈঃ ৷ প্রলেপঃ শ্লীপদ হস্তি চিরোখ মপি দারুণ

शा अंगांश मिंग शां अंड मीलगः हित्रकालकः । मृत्लन मइह्ताशः जालमित्यान त्वानः
इह्ताशः जालमित्यान त्वानः
वाद ॥ जालमा क्वान्यानाः ककः
ज्ञान वात्रिना । मः मृद्धः लवतात्रात्र । मात्याह वक्वल कायः
तामृत्वन यूजः नित्द । भीनमानाः विनानाम त्यतमात्माम
निवृद्ध ॥ त्राक्रनीः अंडमः यू-

स्विष्ण भीना शिक्ष प्रका अर्थः विस्विष्ण भीना वर्षा जियमा पृष्ण विक्वा पृष्ण निश्रमा न्य स्विष्ण किर्याण मिला न्य स्विष्ण किर्याण भीना न्य स्विष्ण किर्याण भीना श्री कि कि स्विष्ण किर्याण विष्ण वि

त्रञ्जावनी ॥ भिनामचित्रिन वि॥

শিলোচ্যঃ পু॰ প্ৰতঃ। ইত্য-মরঃ॥

नित्नाकः भू उक्कनिनः। देशा-ভশস্যাৎ ক্ষেত্ৰাৎশেষাবচয়ন । উद्ध्न शिक ह्यांनानवला-হণেন শিষ্যতে সঞ্চীযতে উঞ্চ-শিল । উছিল্ডঞ্ছে শিলগুঞ্ছে রুদ্ধে। রিভ্যুক্তে কু গু জ্বেতি ই-জুঙ্দ্বাৎ কঃ উঞ্চশিল সংঘাত विगृ**शी**ङ विशर्याखः । भकाः नरहमूक्ष्मित्नम बृखिः करनम মুলেন চ বারিণা চ। ইতি সমা-श्राद्वषरम् । উष्ट्र॰ भिनश्रः। উঞ् ভৈক্ষণ ষচ্চান্যৎতৎপরিগ্রহণ দ্বৃত ইতি নিগমাভিধানে ক্লী-বং পুমানুঞ্ ঋতং শিলং ইতি বোপালিতে পু॰স্যঞ্চঃ। রষুকা-ব্লাহ্ণতসারে পরিণত বাক্ কল্ম-কেদারে। ভবভূতি ক্নত শিলো-ঞ্ছে তত্তল পতিত বৰ চিনুমঃ।। ইতি গোবৰ্জনঃ। কেচিদুঞ্ছ শি-লযো র্ভেদ মাহঃ। প্রতিগ্রহাৎ ' শিল' শ্রেষ স্ততোপ্যুঞ্চ: প্রশ-मारा है जि। जब भानाएम र्नि-পাত্তি পরিতাক্ত মঞ্চরীণাণ ञानानः निनः। निनः शनाः यक्षतीमः अर देखि यामी हा

खरिककणः कर्णाठवकाना क-रामाञ्च मूक्षः। छमूकः উঞ্ছো बाना कर्गाक्रयः देखि। निलः छालनामि मञ्जामि ह। देखा-नत्रकिकावाः खत्रवः॥

शिलाप॰ क्री लेखर॰। ইতি जाजनिर्वर्गः॥

শিলোন্তবং ক্লী লৈলেষণ ইতি রাজনির্বন্টঃ ৷৷ চন্দনবিশেষঃ ৷ যথা ৷ স্থীতলং চন্দনং যথ তৈলপর্ণিক মুচ্যতে ৷ উভযৌ তস্য পর্যাদৌ সোমবোনি শি-লোন্ডবং ৷৷ ইতি শব্দচন্দ্রিকা ৷৷ শিলোকাঃ পুং গক্কডঃ ৷ ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ৷৷

निम्न क्ली कलामिक कमी। इनत इंडि भारतीक जाया। कारिशती इंडि हिमी जाया। इंडामद्रः ॥ वार्मायत्मां नृज्यी वां क्रियाः मामि म्ड्रियं वां क्रियाः ख्या जानिम मृद्यामि ठड्डः यखि त्रज्ञ खतिकाः कलाः । जामिना वर्गकातामि कार्क्रकम् खारा । इंडि उद्योकायाः जतुः ॥ मृदः। इंडि त्रिमिनी ॥ निम्नकातः प्रशिक्ती। निम्निक्ताः ব্যবসাযী। কারিকর ইতি ভাষা।
। শিল্প করোতি ইত্যর্থে বণ্
প্রত্যবেন নিপানঃ।।

শিন্নকারী ত্রি শিন্নকর্মকর্তা। **ज्यान्त्रजा**षि यथा । विश्व-कन्ना ह भूजाया॰ वीर्यग्रधान॰ চকার সং। ততে। বভূবঃ পুত্রা-क नरेवर्ड भिन्नकातिनः ॥ মালাকারঃ কর্মকারঃ শঙ্কাকা-রঃ স্বিন্দকঃ। স্মতকারঃ ক॰-সকারঃ যডেতে শিল্পিনা॰ বরাঃ ।। সূত্রধার শিচত্রকরঃ স্বর্ণকার স্তথৈৰ চ। পতিতা স্তে বন্ধ-শাপাদজাত্যা বর্ণসকরাঃ ॥ স্ব-वैकातः सर्वक्रीया बाक्सना-না॰ ৰিজোত্তম। বভূব সদ্যঃ পতিতো ব্ৰহ্মশাপেন কৰ্ম্মণা ॥ সূত্রধারো দিজাতীনা শাপেন পতিতো ভূবি। শীযুঞ্চ যজ্ঞকা-र्श्व न मत्मी एवन रश्वना।। वार्किक्रम् ि हिंदाना निष् ত্রকর স্থপা। পতিতো বন্ধশা-পেন বান্ধণানাঞ্চ কোপতঃ ॥ কশ্চিদ্বণিক্ বিশেষশ্চ সংসগাৎ यर्गतिनः। यर्ग्छोर्गामि मा-ষেণ পতিতো ব্রহ্মশাপতঃ हैि बक्तरिवर्स्ड बक्तथर७ ३०

अबग्रेगः ॥

শিক্ষণালা জী ক্লী স্বৰ্ণকারাদীনাণ কৰ্মগৃহণ। কারখানা ইতি
পারদীকভাষা। তৎপর্যায়ঃ।
আবেশনণ ২। ইত্যমরঃ ।। শিদিশালা ৩ শিক্ষণালণ ৪ শিক্ষিশালণ ৫। ইতি তট্টীকা।।

শিৰশাত্ৰ জী শিৰকৰ্মগ্ৰহঃ। তৎশাক্তাৰি বহুনি সম্ভি তন্মধ্যে वाञ्चभाद्यकः निथाटा यथा। खी भूखामिक खाग मोथा छ-নক ধর্মার্থ কামপ্রদ জন্তুনা लयन मूथाम्भाम भिन भी छात्र बर्षाशरु । बानी दिवगृशांकि भुग मिला शिक्ष ममूद्र भाग-তে গেহ॰ পূৰ্ৰ মুশস্তি তেন বিবৃ-मार श्रीविश्वक्यामयः ॥ जिटेका शुरात् सूनिङ वृक्ता यत्थामि-তে गामि रनकशरक । भभाक वीर्या अमितन निमित्स एक त्रदो मोगागट श्रद्धा ॥ টৈত্ত্রে শোককর গৃহাদিরচিত मात्राधरव २र्थथमः देकार्छ मृ-ত্যুকর শুটো পশুহর তদুদ্ধি-मः अवित्। भूनाः छाजभरम **ংশিনে কৰিকর** ভুক্তাক্ষ্য জা-र्ভिक शाबा बार्स महनारवा र्म-

रनजी बाटव जिया काश्रुद्ध वामित्वा रित्न कर्क नक घंटेला পূৰ্বাপরাস্য গৃহত কর্তব্যত ভুল त्त्रय वृश्विक वृत्य यात्माखना-সাণ্ তথা। দারণ ভিন্নতথা ক-রোভি শ্রমভী রোগার্থ নাশ खना कना। मीन अनुर्गत्क मिथून-(त ठान्त्रित कार्याः शृहः ॥ कन्।-मि जियू शृर्व छ। समिमि छ। छा। ঞ্চাপাদিতো ছারণ পশ্চিমত-खित्क जनम्बाद मोत्या त्रवी युगाजः। यन्त्राद्यश्रम्युथः मिना-म् ज्वन कान्नामिक श्रानिक्र नि॰इ॰ वाणि वृषक वृण्ठिक वर्षे॰ বাতে হিত সৰ্বতঃ।। প্রাচী নেষ मादिक खद

ত্নিভে চিত্রা স্থাতিত নধ্যগা মিগদিতা প্রাচী বুবৈঃ পঞ্সা। প্রা
লাদো তবন করোতি নগরং
দিল্লুট মর্থক্ষয় হর্মো দেবগৃহে
পুরে চ নিতরা মাধু র্ধন দিল্লুখে
।। তারে মার্ক টিকে ক্রবস্য সমতা নীতে বলে বৈনতে দীপাতোৰ তদৈক্যতন্ট ক্থিতা সূত্রেব সৌমা দিশা। শঙ্গো নেত্র গুবেন ৩৬ মণ্ডলবরে ছায়া তথা
ম্ৎসায়ে জাতা পত্রবৃত্তি মন্ত্র-

श्रीकृषः शास्त्राः सम्प्रभावतः । श्रीकृषः शास्त्राः सम्प्रभावतः । श्रीकृषः शास्त्राः सम्प्रभावतः । श्रीकृषः शास्त्राः

निवः बार्ण वृषि क्ला स्थमा
व्याननः भकः श्राविष्णः श्राविष्णः तो ज्ञाननः मामगृरः ॥ ज्ञथ ज्र्
श्रिकारः ॥ ॥ ॥ १ व्या वाषणः ज्ञाननः व्याकणः ॥ ज्ञाननः व्याकणः ।। ज्ञाननः ज्ञाननः ज्ञाननः ।। ज्ञाननः ज्ञाननः ज्ञाननः ।। ज्ञाननः व्याकणः व्याकणः व्याकणः ।। ज्ञाति क्राविण्णः क्षाति व्याकणः व्याकणः ।। ज्ञाति क्राविणः व्याकणः व्याकणः व्याकणः व्याकणः व्याकणः ।। ज्ञाति क्राविणः व्याकणः व्याकणः ।। ज्ञाति क्राविणः व्याकणः व्याकणः ।। ज्ञाति क्राविणः व्याकणः ।। ज्ञाति क्राविणः व्याकणः व्याकणः व्याकणः ।। ज्ञाति क्राविणः व्याकणः व्याकणः ।। ज्ञाति क्राविणः व्याकणः व्याकणः ।। ज्ञाति क्राविणः व्याकणः व्याकणः व्याकणः व्याकणः ।। ज्ञाति क्राविणः व्याकणः व्य

श्रिक्षां क्रिक्ष व्यक्त व्यक्त विकास विकास क्रिक्ष विकास विकास विकास क्रिक्ष विकास क्रिक्ष विकास क्रिक्ष विकास क्रिक्ष विकास विकास क्रिक्ष क्र क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्स

মাশতগদ গদা পরীক্যা পুনঃ মালোনের্দ্ধ বিহীনকেথ নিভ্তে ক্ষরাধকেন্টাদুনি ॥ ভূমেঃ প্রাক্ প্রেশক্ষর কঙ্গপ্রৌম্যাপ্রি-

८म छ मद्रभ॰ कोद्राख्य॰ **द्रमा**म । वायत्वा अवशक शाना इत्र १ गा-एकाकनः बारूनः विश्राप्त त्रम् वर्गज्य मूथमः मृखिक्या । मी-माजः॥ অश्री ताकन वाबू भकत मिनि सागाः क्यां कीनकाः जानवार थमित्रार भितीय कन-छा वृका करम बिकाः। वर्ग-না' ল'শ মুঞ্জ কাশ গণজ' সূত্ৰ'ক্ৰ-মাৎসূত্রণে নিমা ভূঃক্ষুটিভোষরা विनव्छी भरेना बूंछा ना एका ॥ ক্ষপতাদিত্যত্ত বঙ্গলাদিতিচ পা-के ॥ । शक्ता नामि गृहाधि-शिन (मन्मा वृक्ता कन्मा वाशि । বাচ্চা হি কোষ্ঠাকর সংযুতেন मञ्जः बिल्लाकाः खबरमयू मृख्या।। ৰা কাচাটাতা এহ সা পাগবৰ্ণাঃ क्षामापिए कार्य मना यूक॰ । क्लाबाद्राः कार्व लाशास्का-ঢ়া তত্মাৎ কাৰ্য্য লোধন ভূমি-কাষাঃ।। শল্যা প্ৰাণ ভূপভয় হ্যানা কলং ভলোগোঃ কলহ

अनाटनी । चटताकुट्या रामि म-॥ পভানাশ স্ত্রীণা নজস্যারিভগ **ज्या** जिल्ला क्रिक खरा किन्यूथ श्रामि न्विकार খ্যাত বাস্তবপু দিশাত্রবগত वाकृत गृष्ठे॰ निद्रशा बाद जना गूर्थ गृशामि असम अकिस्टर त्नी थाम॰ मूध्थ॰ आक् थनरम भि-द्राञ्जि दश्यः अटको मूथ मिक শে এ। প্রাচ্যা॰ নাগমুখ॰ বুবৈ নি-গদিত ভাজাশ্বিনে কার্ভিকে শা-গাঁৎ কাঁন্তুন শুক্ততঃ ক্রমত্যা यास्या जला काखता क्ला চাষ্ট বিভাজিতে দিনকরাদারা-लिएथ कार्रेगान् मनानात्रक-যোশ্চ তত্র ফণিনঃ শারীরকণ ता थति ॥ । भीर्य माजृ পিতৃক্ষয়ঃ প্রথমতো খাতে রুজা পুচ্ছকে পৃষ্ঠে হানিভবে চ স্বক্ষি-अनत्न गांव शूख धामगाहिक । शृंबीरमा श्रीनाथाजन यमगूरथ थां भारत कान्नत्व भी त्वं भ-শ্চিমগে চ বঙ্কি খনন সৌম্যে थत्नदेश भटि ।। प्रक्रिन्दकारण शूर्व विভাগে পূজনপূর্ব 'শিল' সম-প্যা। স্থাপ্যা শেষশিলা দক্ষিণত र्खेष्ठाः ममर्गा विधातन ॥ ।।

বন্দপত্ৰৰা৷ সূত্ৰ-ডিভি নি नगमः उडमादित्राभनः उथा भू-र्व मिन्दिना मंदना भर्गामिन्।इ कानाभः। नात्रमः। नजमामिष् गारमम् जियु जियु वशाक्रमः शू-कांपिपिक् भिटता वायशार्था भाषा अनिकना वास्त्रभाखिश्रकः। বাজোঃ শিরসি পুচ্ছে চ বামঙ্গ-क्कि ह शृष्ठिः। आयुः कायः थ-म्बर्ग मक्त्रको थनिः एछ। ॥ 🐠 ॥ जिएक मृनि जानीय क्नार्ड भाषात्व वा एम तरेकः मगर्छ । नीर्ख छवी (लभहीना-ধিকা বা সন্ধিত্রেণিঃ পাদহীনা-बंहादेना ॥ खरन शूत्र সূরাণা॰ সূত্ৰণে পূৰ্বসূক্তঃ কথিত ইছ পৃ-থিব্যাঃ শোধনেপি দ্বিতীয়ঃ। ত-मन् गूर्थनितरण खख मण्दां गरन-স্যান্তবন বসনকালে পঞ্ধা বা-खरब्दः ॥ सः॥ वृक्ता मुक्त मकन्छ-काक कनिन खाङा। गृशक्तृत-छः नस्ड हम्भक शांदिल ह कमली জাতী তথা কেতকী। যামাদূর্দ্ধ मर्गव वृक्त भूतका कावा न मरा গৃহে পার্শ্বে কসা হরে রবীশ পুর-তো জৈনানু চন্ড্যাঃ ক্বচিৎ ৷৷ স मूक्षर्का खविनमा नानः वर्वेडि

क क्किन्स शहरीक । क वारियान क्किन नदीर क् वा त्रकार क्किन हर्ण क् व्रक्ति क्विन क्किन द्याक्ति क नक्कि क्विनी क्षी प्रताक रज्ञा नुवान व-कन्नाको। क्राका नुवान वक्शक किन्नाम

কপীতন **होट्योप्यताश्रयको ॥ ॥ छेद-**जनगगाजिम्यः अरतमः गा न्केडरका जननमा न्कारा विना-শহেন্তঃ কৰিতো ২পনব্যঃ সৃষ্ট্যা व्यमस्या ज्वत्व श्थितः श्रा।। প্রাংবশঃ প্রতিকাষকো বরুণদি-থকে। ভবেৎ সৃষ্টিত। ৰামাবৰ্ত্ত छेताहरा वसमूर्य रतो शैन-बाह बू देशः। छे शतका नद्गवार-नाजिबमनः ज्या वशा निर्मि ভঃ প্রাপ্তক্রোপি চ পূর্ণবাছ রুদি-टा भट्ट हर्ज़ा गुरंत्र ॥ •ा। হস্তঃ পৰাউযুক্তো মুনিবর রচি-ত পৰ্ব চৈক জিমাক মাজা বয়া विवास बुमन विभिनिका मिखुं हा मुखमाना । भूटेन क्षाति शृई छम्नू ह विख्यामम् लाः गर्वभू-देण निश्रशे त्रक्रकार्टिश मधुम्य

क्रिकः धारित्वा वन्न वाट्याशाः ब्लाटके। र काकि गरनागरेतक गू-बिधि बंदा वह कनादमा नागा ্টোডৰকেন আৰ নগর কোৰা-बिक साजन । धानाम श्राज्य मृगमा खरनः नर्यान र्यामिकः बाबः वर्षव मखद्येव भगवः इ-वागबाजामिक ॥ 🛊 ॥ इटजा ৰাৰু বিশ্বকৰ্মা হতাশো বন্ধা काल खारणः याग विकृ: 1 भू-त्न प्रवा ब्लाका श्वान्त म-गां अकाकाना वात्रि त्रदेव विंडका ॥ जेटना माक्रड विश्व বহ্নি বিধয় সূর্য্যন্চ ক্লডো যুখো देवन्या दमर्यास पिछ दक्रियो वज्रक हैका किया। छान वि-खनिक मिनाकत करवी श्रीवानू-**(मरवा रुमी कारबा विकृ** तिछि कत्यन मक्ता रख बत्नानिः म-তিঃ ৷৷ 🛊 ৷৷ উক্ষাটন বোগ ভ-वक मृत्यं दद्भ खंग भीषनकः अकाराः। मृज्य विनात्नाणि ध-नक्षः मात्यारः क्यारेक्षवं भीष्टनन ॥ ।। एडा बन्ना भूभारका तंखतात्व पर्छ। भारका मिनतारमी निरंदरम । र्छाष्ट्रांमी ৰাভ্যক্ৰমান্তদাসৌ কাৰ্য্যে বিশ্বী

मूर्थ संविषद्यांकि ॥ बाहनगाबिका शक्तिक आयोग-पः गांद क्या शास्त्रात अक तानि क्यि क्रीर जिः स्टेंबर । व्यादमा स्थ सान् ৰুবা বুদিতো ৰাজ্যাক গৰ্যতিকা ভাত্যা বোজন বেৰ ভূমি রখি-(बाजहमंड

1/2

र्भागकः गामस्यकः गःखः। का-ঠক স্ক্যাথা মতোগি লেখ্য মি-छाके नृवानि बसन्ति मन्दः।। इंडि बाखनाट्य ताजवन्नजम्बरन मि-अकनक्षर्वर्भः नाम ३ व्यद्या-यः ॥ ।। गृजारमक् क्रजर्म-स गिण्डः क्टा मर्ग्याः कि তৌ তথাত্ত মত্ত ভীতিখন-नः मारान्षिताः संस्थ । छटन देव ब जमा विशृष्ट निहिजः खूना-वरशवकुकः तमानाः वशनाक वाख्युक्ष (खटेनव भूषका। बृदेशः ॥ थागारम ज्वत्न छ्लात्र संस्त्र कृत्भ ह वाभी वरन कीर्याकान भूदा ह योभजवत्म र्छत्। बार्खाः भूजनकः क्षिक भूका दिना समार्थना

क्या नवाक क्यान्यक प्रश्निक क्रकि नाष विश्वकितीय रक्ष्मान नत्य जाननरमुकः । नानात्र-रंगाकी केनलानि एक देवनानि-শানীতিশা ভবৈৰ II • II আ-তা ভূপতি মনিরে চ নগরে পূজ্য क्रमूरवर्किक दिकानीविनत्तः गमक ज्वरन जीर्ल नवाना भ-हैकः। श्रामादम्य न्यान्तिक बक्रा श्वा चना मध्य कृत्श বাৰ চন্দ্ৰভাগ সহিতে ১৯৬ বাগী छडात्म बरम ॥ बेल्ना नृक्ति म-बाखिलः खर्गरमाः शक्नग्नामा विकि द्रांभ खमा गरन छमःभ ब्राल (आंट्डा जर कानिडिः । উक्रावदाय ज्याती खनवूरा मामाभवश्या समि भटक्योपि मुत्राक प्रक्रिय ज्दल बाद्य ह ना-नामनः ॥ नाविकः मनिन ह मिनिनक्टन वाटम प्रक क्रजारका मृज्य देवं जगन खरणाक विषय ना वाजि गृर्ड विकि। तार्ड लक न्यस्य ह जानुसगरम रही विद्र द्वारगी ग्रांकी भूरका निन गना-क मञ्जूषित्याः क्यानः भएनाः रेशज्कः ॥ । । व्यक्ति शक्ति। त्यो तकति के शिव र सिक्क कर । करगळ पूर्वताः भरका ज्याका-

भक्ता नृति। वृत्ता विकास विका

क्षिणिक । वाखि॰महत्वन खन एका वर्कनीया खरनामरेभय खिम-बान्क मस्का । खागर्यामा मन्तिन एका विद्यारेखरा । श्वीधरतामावथ ब्रम्धरकाशि खन्नार्कनीयः मन्दर्का मरका जानिकरकारमे मन्द्रका वस्रस्य मानिकरकारमे मन्द्रका वस्रस्य मानिकरकारमे मन्द्रका

विकास विकासिका न्विमिका कृ विदिय विकासिका न्विमिका कृ विदय। शांशानिका माक्र विकास क्रिक्ट न्वाः न्या केन्द्रियामक क्षाः क्षाः वक्षा क्षा श्रम् क्रिक्ट नमका क्षार्यमामा स्त्री क्षा-क्षार्थका निकास स्थास मक्रकः क्षार्थका नामक्षित्र। क्षां क्षा कार शिवा नय जैकी बहेशितिना-कारणितिका क्यारिया कारणिति द्वालिक वाद्यमि ह मार्काशित द्वालिक वाद्यमि ह मार्काशित व्यक्ति मुद्रा अक्य-माः बंधारिया भागित मुद्रा अक्य-माः बंधारिया भागित महाजिनाः-भ २८ जैकिङ निवद्यां मामाः द्वारका । द्वा विज्ञान न्यका व हादकी । द्वा विज्ञान न्यका विज्ञानदकायः भूद्या। वद्य जन्म नदक रच्चरक्ष ॥ वद्य जन्म

रयानगणित ज्ञान गृजनीय छ॰गम्बिन्नि ज्ञान ज्ञान मन्द्रावा ज्ञान । क्वारा श्वारा श्वारा । क्वारा ज्ञान श्वारा । क्वारा ज्ञान व्याप्त विकाश ज्ञान विकाश ज्ञान विकाश ज्ञान विकाश ज्ञान विकाश ज्ञान विकाश । क्वारा ज्ञान विकाश श्वारा व्याप्त विकाश विकाश ज्ञान विकाश विकाश ज्ञान विकाश वि

स्मार नक्त्रात्राव नक्त्रात्रात्रात्र भागः। कांद्रका संभागामा क्ष रर्वाके देन स्टब्स्किक मरका म्बक्शिन् स्री। अविष विडिंग हमाः उउनम् भागा त्त्र बावरः काकाकः विद्यान कः नाउदारेश्व क् कर्म्बाक । क मस्मृदेवः कषिष्ठः कृ नवः छवः गीजनाय वानि सन श्रमनः ग প্রোক্ত চতুর্বি-শতিলাবুল: য भगार्कम समिकद्र अकालास वण्डिक गूरेक मंत्रवाक रक्ष ब्बार्व जिल्लाक विराम जैवाव ।। भद्रीका जूगी मक्टनव्दक्का मूर्रक्रात्वामः छट्छ। ब्रिटनप्राः । तिथा न्दर्भन मनि धवादेशः পিকাৰতে ৰাপি পুন ভৰ্ত্ ॥ बाजिल्लानाः भृगूटन ह रेक र्का कार क्रू वर्का किन कथा-२८ जागाः। अवद शकानाः क्रि छ॰ महत्रु॰ (कव्यक मर्दाखन दक्व वारखाः॥।।। यस्य वद्या नक्ती-যং লভাপ্টেশ সচন্দারিং লভিঃ পট্টেছ बारावीथी। ध्यांका (नवा जर्मः याचा जनीजा यदा काल्यके भड़ काक्वका ॥ कारकारका नन्तरीयः जूतान्त (नवान्त वाटक

स्तृकानिमन्ता । रीवी ह सार्थ विष्णान्यूक भव गतामा क निका म्पोरका ॥ मूर्य अविशे नियदम निरंबरनं छथा महाक्री मूं के हिमाबिटशरम । त्यद्बों व बार्ड-क्षिरवाई नित्त संस्थ गर्रम्थ भीता अभूकाः॥ ।। वित्रथेनः শকর দিছিভাগে কণ্ড প্রস্কর্বাণ করতো বৃগাসু । হোম সুরাণা मछमछेवुङ अर्छाक मस्रोधिक विः निष् वा ।। यशाना मूटेश मंत्रि नर्वज्ञाकाः इत्य खिता वीहि वदेव स्वादेवः। शालाम मूर्वाकृत मुखब्देक स्थान जनस्य नुत्रभू-जनका। इत्य वृष्टामः मनदत्र नक् टिक्सिक क्लान्ज्याव र्त्रिका-क्ष त्मवः कृष्यः। त्रञ्जानिः निकेकः मक कमिना नूरहास वृत् वि-তান সুদিওক দিবাকরস্য।। সো वृषकुक कृष्ठ त्यव मरण वदन मान् ज्रम मक्ति वजदीत्का नदारी मुक्तः भूकि छटेथव गाका ममगामध्यं ह्यान्यम् ॥ स् ছক গৃহকতাৰ ধৰতো মাপনীক नः मागरकः गन्नर्दं नजगजं त्याः **मनवृष्ठ** ज्दन २**जिल्ला** ७**०** । প্রোক্তা নীৰজবা মৃগাৰ পিতৃ-

ভো দেয়াত সমোদকাং গৈঞ इक बतिः जोधन सिवियमगाक टमोबाबिटक ॥ मुजीबोक छ गुग का नामहत्त्र त्यच्थन्मः भकः शंबा नाकंश्य मुद्राणामुद्राक देखन जिनाः त्नवदकः॥ शाना--शानि ह शक्त्रयां न समित्र कि शाय सरहो स्थीः। त्याकीतः क ণিনে চ মুখাবিরুধে শ্রীখণ্ড তকে छथा ॥ जन्नाछात्र जूतर्नक सन भारती मधाका मुक्तः उशा । अकृत् शर्वातक श्रीतिष्ठ विभिक्षा मि স্যান্দিতে পূরিকাণ। সঙ্গীর দ-ধিক ক্ৰমেণ বিহিত ছাগাগ-वर्षा छथा गर्यारम स्कन्तिसनः 5 भवना युक्त कथा भक्ता ।। সাৰিত্ৰেপি চ লন্তকাশ্চ ৰাবিজুঃ পুপা গুড়াঃ, সামূতা দেক বাৰ বিবস্বতে মৃত্তমৃত দুৰ্মাণ তথা মো-मकाः। इत्याद्या अभूनम् विक खन्तरक (पव॰ जवा छण्णक देनदब দুগা দূতক গুয়ুলুযুতো নাসা জ্বা क्रज्ञ ।। छ । जिस्र महास्थित जमारम नजानानाः श्वितीयः बाय। शबस्वाः भा वयुक्त सर्वेश मगाबिको वर्ग मट्डा बिट्डा ॥ महान्त्रिया म निर्देश हतर का

इट्रेंब बीटडोमनदका विमार्टिंग। बद्धारिमः शृष्टानकाक्रनीया मध्यास्य संगाति खरेबन शाशाः ॥ तम्स शक शिविशिक्षाय उ क्षांक विश्वित न माः। करा-य अवस्तिवासूक कार्यादव मिनि ्रवालो ॥ यः भूजस्त्रवाञ्च यन-नाजूकरा न ज्या मुख्य छन्छीर किनिया जीवजारो वर्गणंड॰ ग्रंथन चर्म नत् छिठेछि कम रय-क् । इंडि बीमृज्यात मध्न वि-त्रिक बाद्यभाद्य ताक्रवमट्ड वास्त्राक्ष र विशासः ॥ 🐞 ॥ न्यान कान कानका निष् प्रामि-ग्रामा-छक्। शानाः मोध ৰশোভিবৃদ্ধি রশিকা যাসাজঃ क्बाइए। भाराङ्क अब वृग नि॰श् ভাৰতা কো বাগভেডাঃ ক্ৰমাৎ शाक जुकें य जानरज्यू निवनाः Cable न्त्रांश गृटह 11 यान॰ দেব গৃহাদি ভুগসদনে শাস্ত্রোক্ত হত্তেন তৎ গেছে কর্মকরস্য না-थक्का भारतन (मनः गृहर १ भारता मध कत्राज्ञामि मणि ए হস্তাস্টল ব্ৰুপতঃ ক্ষেত্ৰসাপান্ नामरणाणि नगरत गटलन नान॰ नुद्रा। जारः करमा रुख (बटेरः

লিবহা হতি বৃহালনে বৃতিক্ষ জ্বাৰনা কড়ুং গৃহ তি বিনেব চ বা-মূদ্রক্ষিণা জ্বারে স আৰঃ গুড়ঃ ট্রানে দৈবা গুণে ২উতি বিভ-গ্রামানে কৈবা গুণে ২উতি বিভ-

त्म छक्राभि

। नक्टन रम्-

जित्रामि उ बी अस खना बन्ह निनाहरका ধক মৃতে সংবৃদ্ধিতা রাক্সঃ 🏾 एम्राल दात्र क्या भाग महिरछ छ-एक विकि कु अन्य रागिरकाश मणुशकि कमराभारमस्य मृद्यत्का হিতঃ৷ বেষ্যা নেৰ কমন্ত পুৰা ভ वत्म मार्गः ज्या देखब्रदव ब्राङ्गा॰-শোগজ বাজি যান নগরে রাজা-मदव मिनदा। ।। यावनगृहर्यः গণবেৎ স্বৰিক্টাতারাবিভক্তে নবজিক শ্ৰেৰা বুবৈ ভ্তীযা बक्त विवद्या रा शक्ती जश्च-मिका व मुखा। विद्यानी इह म-श्रमः क्रम्बरा बद्ध व श्रांतिकः ৰুক্যা তানি ভবন্তি বল গৃহত ভৈত্তির চন্ডো ভবেৎ। ছানিং পৃ-করোতি পুরত স্তৃাযুঃ ক-

य ठलानाः शाद्यं बक्ति वान्दक

अवस्ता स्त्रं त्व जुगानत्य।।

करेत्रक एक्टब आजा विकिश्व गाङ्काचिः । नटरा सर्वाकानस्य -यनिद्र ह स्वयामाद्य यश्रद्धां के जितात्म।। इता तम गुरस्तिम त्रा ज्यस्न गार्डिक्स्मा करन বিভারোভ্য হত্ত ভূবৰ ফায়া-दित्र नद्या शकः ॥ शूटमा राष्ट्रा खीरिना मिन गुटक् कर क ह - तास्त नि रहार स्गाहरूड - निकटम सिक्ष कि के जिल्हा जारन ॥ क खाल खनाका विभाव वृष्ट्रा -र्द्सा र्यामाः दिला नालिका श्रन (डाक्रनमा ख्वरन १८१। वास् रगटर श्रवः। वानित्व श्रवकीविना মপি গৃহে শৌতে গজে জোজি তো যানে প্ৰীপৃহ কাৰ্নে চুপ্ৰ নে শৰো গৃহে হতিনা মাঞ্চকঃ শিল্পি ভগরিনাং হিন্তুকর জেরাং क्कार्य

विजानवहरम। वृत्यः अटका मान्यः । मर्वः शिक्शमा इत्यः ज्ञिन
गरमा वृद्धः नवरवास्य वृद्धानाः
मृक्तिग्राः ज्ञान्यः । क्राः म्याः निष्यः
शक्र अक्षामि वृद्धः निष्यः अद्याः अद्याः
स्थाः निष्यः विषयः विषयः
स्थाः निष्यः । देवसः।

প্রকাশ: কীর্তি প্রতাশেন্ত বোকানাপ নিকারতোরিয়ান্ত প্রাক্ত পর্বাক্ত প্রকাশ গাইর প্রাক্ত প্রকাশ করেনের ক্রিক্তিক করেন্দ্রক করি ক্রেক্তি ভবর ভীতরে বিশব কর্মাবিকের্মকরে লোকাঃ কর

। श्रविकात

र्त्वाविकाः श रेष्टि भूतानाः यश रमायाः Hollयरका १८था विकि श्रुवः मूनिमङ मत्याख्यः कनाम তেষা হস্ত সহসু মন্তিমপুরং মধ্য छङः गार्ककः। त्यार्थः वृत्रागरः সু ষেষু চরম ভাগান্টকেনাচিত ষধ্য বাদশভাগতঃ শুলিকল জ्यार्थः विषयाः नृषीः ॥ यार्गाः अश्वनरेगव ठानिय शूद्ध शैनः इ-ভূডিঃ পুরু প্রোক্ত কন্যস নেব यार्ग नविं मिर्दा छथा विख्रतः। প্রাম শৈচব পুরাদ্ধতো হি তদনু আমাৰ্কজঃ খেটক খেটাৰ্জেন তু কৃট মেৰ বিবুধৈং প্ৰোক্ত ততঃ थर्वि ॥ रखानाक नूगाके जा-ডণসহসু: ভূপতীনা: গ্র: তম एश मन्या वष्डि मुमस्या वृद्धा

मरत्त । छर । आशात्म तम्भा सर्वे क्रिक्ट छात्र द्वान द्वाधि द्वार क्रिक्ट क्रिक्ट । न गाम र स्वार क्रिक्ट क्रिक्ट ॥ विद्वा स्वार क्रिक्ट क्रिक्ट ॥ व्यक्त स्वार क्रिक्ट क्रिक्ट ॥ व्यक्त स्वार क्रिक्ट क्रिक्ट ॥ व्यक्ति स्वार क्रिक्ट क्रिक्ट शास्त्र देव स्वार क्रिक्ट क्रिक्ट शास्त्र हैं

স্যাপি পৱাৰুখা ভেন্সৰভি ধা वर्क अनामदिनगाः ॥ जन्मा विश नहार खड़ाः त्यारको गर्नामना मूर्यो निव जिंदनी विक् विशाज ख्या । जानू चा अश्याण्या अन পতি বৈশাভুরো ভৈরবে৷ দেব मिकिन मिक्राभाः किनियद्ता देनसा-তা বক্টো ভবেং॥ মার্গাঃ সপ্তদ-भाक शक मिबिटना यूग्रा॰ शूतार वर्षके बार्गाः स्वाजन जूर्या विन শতিকরাঃ কার্য্যা দ্রিখা বিস্তরে ৷ প্রাকারোদ্ধ বিংশহন্ত মভিতো ৰাজ্যা বিহীনো ংখিকো ব্যাসা-র্জন তদুর্জ তল্চ কশিশীর্বাণ্যত্ত-

क किर्मानिक राज्यान

থা প্ৰোক্তা স্তেন সবৈব কোণ স-हिन विमाधकी वशान। जगा ৰাথ সুবৃত্তকে চ বিশিং বৃদ্ধান न कार्यक विशाय राष्ट्रिया विश्वाद्या देवा १६ विमानकी जनक्यान शक्षाविक शक्यतात्र रीन सिंह विशा राख गरण रिका ॥ ॥ मूर्लापयः नचकत अमान विचा नमः मश्रमदेशव स्क्रिश अदकान বি॰শ॰ পৃথ্ল অবাশা দিক্ কাল **সূर्याके कता वनिष्ठ** ॥ **छात्रम** कल पछ शक्ष अजूब॰ बुङानिक **ষদ্ভবেৎ রাজদ্বার সুরাত্রতো হি** সুধিষা কাৰ্য্য॰ পুরে সর্বতঃ। প্রা-विशान नृशा रि मक्निनिन गुाः সৌম্যতঃ শুজকাঃ কর্ত্তব্যাঃ পুর মধ্যতোপি বণিজো বৈশা বিচি-रेक शृ देशः ॥ जेल तककताः ज-বিন্দ ব্লজকা বক্লো চ ভক্জীবিনঃ প্রোক্তা অন্তাজ চর্মকার বরটাঃ স্যুঃ শৌভিকা রাক্ষ্যে। পণ্যন্ত্রী-নিশ্বতো চ মারুতবুতে কোণে ন্সেলুৰকান্ বাপী কৃপ ভড়া-গ সও নখিল তোৰ তথা বাৰু-(१।। तिः र्वात ठठ्येतक भोकी

कर्खवानि मृजार्गनानिः मृत्रिकः। कीर्डि छड नृशानवा-बह्मगृदेव करेजे मुक्तिविदिक्त ्टाम्प्रदेशक्ता<u>व</u>गः का सार्गा ग्राम्य विकास रिष्ठे यट्या वार्ष्यमात्र नामकालाम् ॥ समान्यमान ।। ।। रहार भूमा-शा वर द्रक्राव मधान दहारू नरीत्रभाषा । विनिर्वेश एउ जनमा नृशांशा छवंडि श्रृकाः मूब्रमा ह मार्ग्यः।। रखा वर्षे ह टेंखब्रद्या नक्कत्र काटला प्रभा-দ্যো ভবেজজো ভীমগজোপি ভাক্তরকরৈ বুঁখা তু বিশ্বৈঃ শিশী । ध्यारकारमे रमम् अव मूनि-ভি ভিখ্যা মহাতৈরবো হস্টো শব্দর নির্শ্বিতাশ্চ সমরে দেবাসু-রে ভৈরবে।। যন্তে চাঞ্চকরে ক-इन्ड किमी मूर्याानुना विन्दत ক্তম্ভা মর্কটিকা চ পঞ্চর মতঃ বট্-वि॰मश्खा क्या । यका शृष्ठ विভाগভোপি त्रमरेन खल्गाके याजानूरिनः थ्याका न्रंजनरहा बी ह बहिटला. यशामनी लाजू-देवाः ॥ यद्या पृषाः वर्कविकाः

विमधारमास्मा कीलम ठ ठर्य-

बालि। रज अववा कृष्कार्थ-

ৰুণ ভৰানবা ক্যোভি छ ॥ क्वाक्टेनः शक्ककमा देव-ৰ্যাণ কেষা পতে হস্তমিতে १ गाँग जनी विद्य जनानिनाथा **एक जन्मदेखः श**तिकवनीयाः।। है जिंदा के अया शामिता करा দীরাঞ্জয়ণ পুণ্যবতাং বিধেষণ ম-स्था भूत्रमाणि छरेथव बास्य । ৰাণ্য শভনোপি তথৈৰ কুণা শ্ৰাৱি ক্ডানি চ ৰট্ ভডাগাঃ ॥ ।। क्शाः अमूय देवकर्यो ह जमनू शांख खशा मृत्रुष्डि खन्ना-दम्ब यत्ना इत्रक्त शत्रकः ध्याक-क ह्जामनिः। निश्रद्धा कर नन्म भक्त बर्छ। दिमामि रहेस विंछ। বিশাৰৈঃ ক্ৰমবৰ্জিতৈশ্চ কণিতা विमानशः कृशिका ॥ • ॥ काशी इ नत्यक्रम्था बिक्हा वहेक्षिका मुभाम्था ह जजा। जवा बिरक् नवकृष्ठे युका खुटकं स कृटेंगे वि-क्या भणा मा।। 🛊 ।। मदब्रा किन्छ-**क बर्गितक वृक्त हजूदकावक** মেৰ ভক্ত। ভক্তৈঃ সূভক্ত পরি-देशकबृधाः दक्ष्यदेशक षष त्यव बिश्वन् ॥ त्काके मिछ नश्चनह-मुदेकस मधाः अपर्यन जजः कः

तिर्देश जाक मधा जू ज्ञा क-मिन् ॥ ।। छखाचा त्रक हरू রুশুৰু পুতত্তক ভত্তবৃত বি-তীৰণা নন্ধাধ্যকণ স্যাৎ প্ৰতি-ভত্তৰু জ্বেষ্টা সুভত্ত পরিষ্ণ ठलूर्य ।। क्याकेटला इस्रमण्ड প্রমাণ ছারে শুভূড়িঃ সহিতানি क्रिंगा । यटवा गवाकक निर्णा বিভাগে কোণে চতুকা স্থাপি পট-नानाः ॥ ॥। भनामा बवदवा इ-ব্ৰেশ্চ দশক ক্লড়া দলৈকাধিকা দুর্গা ভৈরব মাতৃকা গণপতি ব क्रिकिक हिल्ला। मुक्तामा मुनि-মারদন্ত সকলা দারাবতী লীলি-কা লোকাঃ পঞ্ছ পিতামহাদি বি-ब्वाः जा वंशालिखी जना॥ छ-স্যোজতঃ শ্রীধর মাডকস্য সন্দর্শ-ৰাৎ পূৰ্বকলক কাশ্যাঃ। স্বানা-ক গৰা প্ৰবনস্য পুণ্য হত তবে-क्टिबिबिबिबिटेखः ॥ विशातिज्ञ कीरन दाव रचन जरका गरेनरक-म नवः भृषिद्याः। न बक्तिमः श्रः इ मश्मुवर्ष बर्लाक मोधाना-বিলানি ভূঙে।। আমে বাথ পুরে নরেক্স ভবনে তৎ ষোডশাংশং ভবেৎ মধ্যাৎ পশ্চিমদিক্ সমা-**खिल विषः पूर्ण जत्यकृतभाव**ा

चातः पश्चिम रायवश्च भूतकः का-क्या जब का बता मर्ब के बन्द भूमानि बाम क्रमा ज्लाक्या कार्य া৷ ইতি সূত্রধারমণ্ডন বির্চিচ্ছে বাস্ত্রশাস্ত্রে রাজবল্লভে প্রাকার যন্ত্ৰ বাপী কৃপ তড়াগ লক্ষণ ৪ जशायः ॥ ।। जत्या नृशासः ভবনানি বক্ষ্যে ত্বেকাতপত্তারনি পালকস্য। শত্ৰঞ্ছ হস্তাই সমন্ত্ৰ-তঞ্বাদে গৃহ চোত্তৰ মেবত-সা ৷৷ বে ছাপরে ভূমিভূজে বভূ-ৰু ত্তেষা গৃহ হন্তপত ছিহীন া তল্র্যাশরকো দ্মাপ স্তু-ফাধিকাশীভিকর গৃহত সমঙ্না আনৈকলক্ষ্ম মস্তি বস্তু প্ৰো-ক্তো মহামণ্ডলিকো নরেশঃ। অ-भी जिरुख विकात शैनः अर्वा-লা্হ পোডন বেব তস্যা। পঞ্ यूर्छट्या न्यम अनीटका उरवक्तृ হ॰ তদা করাজবন্ডিঃ। সামপ্তস্ খ্যো দ্বাযুতাধিপো ২সে তলে मरकेषु कत्रथमानः ॥ छरम्य न ক্ষাশদপি দ্বিহীন সামস্ত সংজ্ঞা ২যুতনাথ এব। তথা তৃতীয়োগি ততো দ্বিহীন ত্রিশৎকরাকা-ধিক মেব গেহ[•]।। প্রোক্তঃ প্রবী-देश कजुतानिकारमा आया हि

नरेकार मर्मु (यक्ना किंगिक वि गिष्ठिक रुकी निर्देका मन-जानि वर्षानिजानि ॥ आक्राधि-প্ৰাব্দে প্ৰাধিশাশ্চ তে স্বৰ-রাক্তা কশি সৈনিকাশ্চা তেফাণ गृत्र। व्यक्रमभाभिटेकन्त कटेत्रः त्र-माना स्निधि र्यठाका। जुशान-कार्यन ह मजिताइ॰ स्थाधिक।-রেণ ভবন্তি হীনং ৷ কীসাদ্দশাং-गाधिक त्वर रेनका अवी। मरथा नक्य जान विके।। गृह छजूई-ত্ত নিত॰ কক্লাদিবৃদ্ধ্যা দিরামান্ত নিতি প্রমাণণা ততঃ পরণ ভূপতি মন্দিরাণি ধাবচ্ছত চাউকরাদি-वृक्क ।। गार्ड्व (तका वमूर्छ गार्व बनाजिव्सा दिख्या भू-क इसानि लाटक मूनिस्मिनि जिनिश भागाया नवश ह ११३-ৰুরতো মানক বিশ্বান্তক ভিত্তে-রেব চভুদশাবুলমিতি বাবৎ স্-পাদ করণা আগারস্য ত বোড-भाभविद्धा रभारक्रेन शैरनाथ न। ভিত্তে मान मिन विधा विद्र-फि**छ॰ कब्रा॰ यथाट्यागङः ॥ टेम-**र्षा ठलकनानुलाखगनिना ने-शानुरणानाडिया वारम विध्व

ভুভ়দুক্তি রশি ত্রিশেন বি-छात्रकः। र्छात्म जिक्दबामयः नविश शीक गुरू महिला वि-প্রাদে রস ভূত বেদ গুণকাং স্যুঃ (बबनाः॥ बक्ता वाथ अ-তাৰ্দ্ধ সপ্ততিযুক্তৈ ব্যাসসা হন্তা-न् देव बीत्ररमामयका जतक ज-वत्न मशुः कित्रिं खरेमः। देन-र्यार्कन कू विखतः मिकना छ।-शाधिकः मश्राक देवर्षाः बाण्य-বিহীন মন্ধ রহিত নয়া কনিষ্ঠ ক্ৰমাৎ ॥ জ্যেষ্ঠা প্ৰতোলী তিথি इंड मन्या (थात्कामस्य विश्वक-রা চ মধ্যা। কনিষ্টিকা রুজকরা ज्यान वादम २ के मटेखन ह ताग সংখ্যা ।। বেশ্ব ব্যাস কলাংশকৈ ৰ্গগণ্ডলৈ ই জৈ জিলাকৈ বৃতৈঃ र्म्यामा जितिरथामयः विजिल्ला-ন্যাবচ্চ পটোৰ্জ কণা একৈকোপি পুন স্ত্ৰিধা নিগদিতঃ সৰ্বে ত একা-দশ ক্ষেপাঃ ষণ্ণবতৌ নখাঃ শশি-कला अकामभामा जिथा।। जिया-নে ৰুগ পৰ্বতাঃ ৮৪ স্থিপি যুতা ধি-ক্ট্যেক বিংশাশ্বিতা মধ্যো ২বংত্রি করৈ স্তদেশসহিতেঃ প্রোক্তঃ ক-निष्ठे जिथा। 🛊। वृष्ण पृष्ठ विश्वक क्केक्यूड॰ नीटेंड है टेंड क्या मन

শীর• সারুত পাতিতঞ্চ ভবনে ষ্টিকা বিভীভ তাজেৎ।। শাকঃ শাল মধূক্ সর্জ খদিরা রক্তাসনাঃ শোভনা একো ২সৌ সরলোজ্জু-नक अनमः जीशर्वनी किल्मशा হারিজঃ পিচুমর্দ চন্দনতরুঃ পদ্মা-श्राक खिन्मूकी देन एक तान यूका ভবন্তি ফলদাঃ শাকাদয়ঃ শোভ-नाः॥ 🟶 ॥ সেহোদযন্ত নবধা বি-ভক্তেৎ ৰড শণ স্তস্তোৰ্দ্বভাগ স-मक जित्र नित्र । जिल्ली श्वयंत्र সমৈক বিভাগ তুল্যা পটক ত-ক্রিকযুতো॰শ সমান এব।। শা-नानीय উদাহতো हि विवृदेश र्वाट्य यूग्राण्यकः मञ्जाण्यायू শ্বলৈশ্চ নন্দ্ৰপদতো বেদাংশতুল্য ख्या। 🛊। कानारे॰ गृह मिक्त्व निगमिछ वात्य अत्वमर्गना मृख्या "निक्ष्मण क्रुण मूनिवरेत्र बादत्रमू मैंदिं यू यथ।। भाषा जिना रेम येनू ব্লেব মধ্যে ত্ৰযো হ্যান্তে দ্ব মস্য পার্শ্বে। দ্বারোত্তমাঙ্কেন সমান-কৰ্ণাঃ শস্তা ন শস্তা ভৰনাভিব-काः ।।।।। मीभावरमा मिकन मि-धिजारभ मना विरश्रसा श्रालया সমানঃ। বামে চ মধ্যে ন শুভাষ रगरं मूत्रानर वायिनगीक मि-

देका ।। बाद्राट्य थेव्कीमूर्य ठ छ-, দধোৰাঃ যোডশাংশাধিকং সৰ্বং ৰা শুভ মিচ্ছতা চ সতত কাৰ্য্য ন্ত্ৰ পটোদধঃ। তম্যুন । ন শুভ বলা তলগত সকৌ তথা পৃষ্ঠগ কাষ্ঠ পঞ্চক এব নীত ব্ৰহিত বন্মূল পু-द्वाखत ॥ बाद्वाद्यु यमुद्र यमा প্ৰমাণ সংকীণ বা শোভন না-विक॰ ७९। दुश्व दात्रात्ग्य यानि পৃথূনি তেষা শীর্ষাণ্যেক সূত্রাণি अर्गा था नर्न वातः नी ह्यान इन জাবৈ যদা ২ ছুস্বণ তৎ করোভার্থ नामः। शिहामाः यद शृईवाख স্থৰূপণ তেষাণ ভঙ্গানৈব সৌখ্যণ কদাচিৎ ৷৷ দ্বারব্যাস রকাংশতো श्विक विष॰ कार्या॰ शृङ्॰ प्रक्रित् তুল্যা হস্তি গৃহঞ্ বাজি ভবন তেনাধিক বামতঃ। অফ্টাণ্শেথ নবা॰শকে চ বিতথে তোৱে জ-বেন্দ্রে হিত দার সৌমা গৃহক তে চ স্পুনে ভলাটকে শস্তে॥ প্রাগদারাটক মধ্যতোপি ন শুভ সূর্য্যেশ পর্জন্যতো ধান্যাধাঞ্চ যমাগ্নি পৌষ্ণ মপরে শেষাসুরণ পাপক । সৌম্যায়া মুখুরোগ নাগ গিরিজ ত্যাজ্য তথান্য-क्षुज देव निष्माङ्ग भागक न-॥

হি হিত প্রোক্তঞ্চ বাতাবনে।। দারু বিদ্ধ মশোভনক্ষ তরুণা-কোণ ভূম স্তম্ভকৈঃ কৃপেনাপি চ यार्ग प्रत्व अवदेन विक्रः छथा की-लटेकः। छेक्श्याक्तिश्वनाः विश्व পৃথিবীণ বেখো ম ভিত্তান্তরে প্রা-কারান্তর রাজ্যার্গ পরতো বে-(धा न कावद्वर ।। टेन्टर्या मार्क শতাঙ্গুলঞ্ দশভি হী নং ১৪০ ৷ ১৩০ ৷ ১২০ ৷ ১১০ চতুদ্ধারিধিঃ প্ৰোক্তণবাথ শতং দ্বশীতি সহিতণ ১৮০ ৰুশ্বং ২০০ নবভ্যাশত ১৯০ । তদ্দৎ বোডশভিঃ শতঞ্চ ১১৬ নবভি ৰ্কু তথাশীতিক ৮৯ দ্বারণ মৎস্য মতানুসারি দশকণ रवागाः विदश्यः वृदेधः ॥ 🗰 ॥ अय মপি চ কপাটোদ্বাটন বা পিয়া-ন ভষদ মধিক হীন শাখ্যো-र्वा विठाटन । शूक्र व बूविं नाम কাষ্ঠাত্র যদাবঃ স্থিত স্যাৎ।। দেবালয়খা ভবন মঠশ্চ ভা-নোঃ করৈ ৰাযুতি রত্র ভিন্ন । ज्यून जृत्नो शतिवर्जनीया ছाया গতা যস্য গৃহস্য কপে ৷৷ নৈকো लघू बायिनिया विভारंग यदश षियऐ मार्क्न वर्नरगरह। खखाम-

नः शैन मिश क्याय बनाविकः রোগকর তদা স্যাৎ ৷৷ স্তব্দো-ফীসু সুবৃত্ত ভজসহিতো ৰূপেণ ठालकृत्वा यूकः शहरतेक खथा-ভরণক य श्रव्यावनावृष्ठ । अ-ম্ভী ভত্তযুতা ক্লমার সহিত শী-র্ষণ তথা কিন্নরাঃ পত্রক্ষেতি গৃছে ন শোভন মিদ প্রাসাদকে শ্ব্যা-তে।। खत्या बत्या मंधागत्या न-শস্তো শুভ করে পট্যুপা শ-তো ৰৌ। গৃহে প্রশস্তা শত্র-जुका एउ खड़ा न कल्लन विना প্রশস্তাঃ।। হানি স্তুলামধ্যগতা খনস্য স্তম্ভেভদন্তালয় ভিত্তিমূ-ল। সংলগ্ন চত্বাৰ্য্যপি হান্যে সূঃ স্তম্ভাসন স্তম্ভশিরশ্চ শীর্ষ ॥ উৎসেধার্জ বিনির্গত॰ শরষুগা শেনাধিক শস্যতে ছাদ্য পট সমানক সুধকর নাশায নিয়ো-মত ৷ তৎ কাকস্য চ পক্ষবচ্চ अमूनाज नृर्या कालायक था-मश्रक कतानकक विवृदेशः त्था-कक ७९ वर्षिश ॥ जूगादा-र्ग मृक्षु छ छमू भित्र आमे किन भ-স্যতে দার তুঁদ্বভবঞ্চ ভূমি রপ-রা হুসার্কভাগৈঃ ক্রমাৎ। প্রাসা-रा ह मर्छ नरतन ज्वान

ছভো নে। গৃহে তন্মিন ভিত্তি। ৰু বাহুকা স্ত শুভদাঃ প্ৰায়ুমি अखान जया।। ।। श्रं कनान-ন্তর মেব বাছাৎ গৃহপ্রবেশোন ख कदबारमो । गृहमा शृष्ट समि ताज्यार्ग उपामिजृत्य में हि शृष्ठे মীক্যুণ।। জীণ গেহণ তিত্তিভন্নণ বিশীৰ্ণ তৎ পাতব্য স্বৰ্ণ নাগস্য मटेखः। গোশ टेक वं। निश्चिन। नि-শ্চবেন পূজাণ ক্লন্বা বাস্ত দোবো न ত्या ॥ इयागाणि ययख्टा গৃহপতি বৃদ্ধি যদাপীহতে সৰ্বা-भागू विविधिष्ठक कलमः पूर्वे॰ ভদেকত্র চ। প্রাজ্মিত্রে রপি বৈর মুত্তর দিশাভাগে মনস্তাপরুৎ शन्हामधिवनाम मिक्कालिम म-বস্ত্ৰ দেবভবন ধাতৃঃ গ্ৰিযো বা-**जित्ना नार्यारञ्जोवधिरञाजनमा** ख्यन॰ मा**। बा**ढिका वाम्यः । व-द्भ भी जब पिछ गद्य गपन॰ खीना॰ उथा मिक्टन स्नान॰ मा-हिव बाक बोर्निक विष॰ यागा-त्रि मरक्षा **७७**॰ ॥ मू**जी**रव वक्रत्व श्रमुद्द गणवदः मारात्वाठेकामाः शृहः बाटक युक्त शृहकः नृতा द्वन-नः गाञ्चई (प्रवाधिकः । রাজ्জा

बाज्गृह॰ गटजख जगटक क्रटज মহিষ্যা গৃহ পত্যে ধর্মগৃহ রবৌ बाषगृह॰ थ्याक॰ करव क्रीगृह॰ ॥ त्रेम थाट्या तखदा गर्मणाना मुख्रांगा वा ज्ञान विवास कार्याः। शानगातातः माजिया आगतकादन ভূঙ্কেপ্যব শস্তুকোণে শিবাৰ্চী ৷৷ প্রাক্ পশ্চিমে মারুত বহ্নিকোণে প্রোক্তা প্রবীবৈ রপি নৃত্যশালা । वर्ष्कागृहः त्राबिष्ठतमा कार्ष मा। यन्त्रिय ভোজনশালিক। **ह ॥ अ। अक् त्माञ्च नृभवन्मि** রে চ পুরতঃ স্থান তথা পুত্রক वामारक नृপতে खशायूधवताः क्र-কাতপত্রাণি চ। ছত্র চামর তা-भगाः अध्यय खाबूलब्गाकित्व रिश्वीण यमृष्ट्या ह अयन अ बानू ज्योष् छ ॥ विवचनात्था नरनः अनलः वामिजरमर् म বিতু বিধেষণ। পূষাঞ্জিত জো-জনমন্দিরঞ্ মহানসং বহিদিশা विভारम।। मारहिं । स्थार्था स्मानून দি ত্রি ভূমিণ ভানোঃ সংখ্যা ত मा भरवा विरथवा । छेङानूङ॰ मिनदारमे निरवर्ण ष्ये कार्याः **हाड्डवा जूश्जीना ।। मिक्नाला**-ন্ত ছেক শালাদি গেহণ জ্যেষ্ঠা

यशा कमामा पिक्काका । भा-লা কাৰ্য্যা লোকগেছে যুগান্তাৎ जि बाकाः मा ज्यरखब्न्नाः।। ইতি শ্রীসূত্রধার মণ্ডন বিরচিত্তে বাস্ত্রশান্তে রাজবলভে রাজগৃহ निद्वनामि लक्न ७ ज्यासः । 🐞 ।। व्यटेशकनान हि छनाकि-শাল প্রস্তারতো লক্ষণ মেব তেষা । यथानिङ वास यङ **७८थव** बवीमि द्राख्वा मथ मान-বানা"।। চত্বারো গুরবস্ত পূর্ব-শুৰুতো ২বো হুস্বতোন্যে স্মাঃ ভূষঃ পশ্চিম পুরিতঞ্চ গুরুতি खनाकरेक र्लयुखरेवः मण्टेशक মিশ্রীক্ততে নফে স্তে। বিষমে সমে শুৰু লযুৰপে তদকাৰ্কতঃ।। স্থা-त्न नरकाः मग्र मूथामनिन्न अप-किनः उ॰ क्यां विषया । প্রস্তারতঃ ষোডশক গৃহাণা প্ৰোক্তণ তথাখ্যাণ কথ্যামি তে-याः ॥ 🐞 ॥ इन्दक्ष धानाः ज्य नन्म मण्डब अंदाश काखक स-**त्मात्रमाथाः। সूरक्कु मन्माथ किन** मूर्याथा॰ क्रूत विशक धनम॰ क्रयश्रा आक्रमक रेवनून रेव-क्रक कलानि नाम महुगानि

তেবা । ইতি ক্রবাদি বোড়শ गृशानि ॥ 🐞 ॥ शामामिरणाटको विक्रवाञ्चक हि ब्रिनिक यूग्रा गू-यंट्या विषया ।। त्रमा॰ धीरत भाषित्व ह भन्नव उपक्रमान পূহ॰ কারালঞ্চ সুনাত মেব তদ-नू शास्त्रः ममृक्षः छथा। इछि त-न्यारिक ॥ ॥ महावि अववस्ट-বস্তি নিয়ত সভ্দারুকৈঃ সুন্দর প্রোক্ত তহরদক্ষ ভত্ত সমুদে श्रा देवमूथायाः निवः ॥ ७९ गर्दना७क विमानमः छ॰ उश বিলক্ষণ স্বশুভণ ধজঞ্চ। উদ্যোভ নেব॰ ত্বথ ভীয়ণঞ্চ সৌম্যাজিতে खः जनमनभ ॥ ই ि जूमता मि याज्य गृशि। । शृशिलय नगरुरक्ष् यूगनः अप्रेमा भाका-खदत्र र॰नदेश्य जूनकाश गत्रङः সৌমাণ হয় ভাবুক। তত্মাদুত্ত-ম রৌচিরে চ সত্ত ক্ষেম তথা কেপক চোদৃত্ত বৃষ মুখিতক वार यानमः जूनमः क्या ।। केलि क्माि (वाज्य गृहाि ॥ का। यदश्य रश्रत्भः अवत्र ণা মলকৃতাহৰ প্ৰথমক তত্ত্ব। ত-থাপ্যলক্ষার মিতি ক্রমেণ খ্যাত छमबा॰ त्रमश्यः शृब् ।। তবেশ्रतः

তদনু পুণ্যমতঃ সুগর্ভণ প্রোক্তিণ গৃহ॰ कनम मूर्गछ भाव तिकः। স্যাদীপিত তদনু ভত্তক বঞ্চি-তে চ দীন গৃহ বিভব কামদ মেব সংখ্যা।। ইত্যলভূতাদি যো-**उभ गृशि ।। अ** ।। यज्माक गर्द-ম্বপবৰ্গকেষু প্ৰভাব সংজ্ঞঃ ত্বথ ভাবিতঞ্ । রুকা তথান্যত্তিল-কঞ্চ তত্ত্ৰ সংক্ৰীডন সৌখ্য 'मर्डा यरणामः ॥ अमूम मिन ह কাল ভাসুর ভূষণঞ্ বসুধর মথ शिक् श्रीनानान छल्ना । ज-পিত মপি চ বিশ্বণ বৃদ্ধিদ প্ৰোক্ত स्विख्यमन् अवनग्रमः (वाष्ण• প্রোক্ত মাদ্যৈঃ ॥ ইতি প্রভবা-**पिरवाजन** शृशानि ॥ 🖚 ॥ मर्ख মুখালিক সমন্বিতাশ্চ দারুদ্বিষ-ऐकः इगवर्ग बत्धा। छछ क हू-ভাষণিক প্রভাত ক্ষেম তথা শেষ সমৃচ্ছিতক।। বিশাল সংজ্ঞ वर्ष ज्ञिक्ष र्घे विद्राध क-थिङ क्रायन। ७९ कालभानः शि नितायय मूनान त्रोटक মুনি সম্মতাশ্চ 11 বেদা গৃহণ टेठव गरमात्रमण मूख्य म छ। কথিতা চ সংখ্যা। ইত্যেকশা-नानि गृशानि विमाञ्छू उप ठषा-

र्वाधिकः अवाषि ॥ अभवत्रकः यৎ कथिত जबादम बीमणा गृदह कार्याः। यथ यख्मास्त्रक मूमिछः ब्ह्या मा भेष्णकात्यनी ॥ रेखि চুডামণ্যাদি বোডশ গৃহাণি।। ইতি চতুরুত্তর শত মেকশাল गृहानि ॥ 🖝 ॥ जाय विभानात्त्र लक्षनानि शरेष खिन्धिः क्षार्थक রস্ত্র সংখা। তথা। কোষ্ঠ প-तिर्ठा यूथा भागा भज्यमा हि ভবন্তি দিকু।। যাসাগিগা চ ক-तिनी धनमाजिरका পूर्वानना ह यहियी शिव्वाक्र गङ्गा । गानी व माजिवमनाशि ह द्यांग स्मीत्मा-ছागी मरहज निवदमा बंकनाछि-वकु। ॥ रिखना महिबी विभान खरनः **मिकार्थकः छाङ्**छः भावी মাহিষ সংজ্ঞকং মৃতিকরণ অন্ধান সূর্য্য তবেৎ। দশু ছাগ গবারি-ত ধনহর হস্তিন্যজাভ্যা তথা কাচ পোকরিণীযুত ন হি শুভ চুলী চপূৰ্বাপর ।। নাৰান্যতঃ স-खठ भाखिमक गावक्मान वर्ष अक्र देशिशः । इन्डा मित्रा निम्म চতু ক্টযঞ্চ হর্ম্মাণ দ্বিশালা প্রথমণ তথৈব ৷৷ যৎ স্বস্তিক তত্ৰসদাক মধ্যে ২লিন্দ স্তথাতো কথিত ছি-

भावाः। र जाभाकः नामिश वर्षः यान कीर्र्ख र्विमाण जवन ह-তুর্য । অলিন্দস্থা পুরতো বি-দধ্যাৎ বড়দারু মধ্যেপি চ শান্ত मः छः। जन्मामगृत्र र्यन देवभूतन চ তথা চতুর্থণ কথিত করাল।।। তিমান্ গৃহে দক্ষিণতো স্লিন্দে विख्य हिंख धन कालम् । वा-य भून र्वञ्चम भूखमः मार मर्व ভিশ্মিদ্বপি কালচক্রণ ॥ লঘুস্চ পশ্চাৎ পুরতোপি যুগা স্যাদ্দ-क्टिंग्टका तमहाक्र यदशा उटेन-পুরু সুন্দর মেব নীল স্যাৎ कोिंगिटेक्ट यथाक्ट्य ॥ अ-मिक्टिंगकः **পুরতোপি यুগ্ম** य-ऐक शृश्चः किन **मायमाथा**। ততো দ্বিতীয় থলু শাস্ত্রদ স্যা-চ্ছীল তথা কোটর নেব সংজ্ঞ ।। সৌমাণ গৃহণ মঞ্জ সংস্তঞ-**ज्जूनाक्रणः** विवृदेश विदेशयः । সুভত মন্মাদিপি বর্জমান ভুরক मर्दिव ७७ । ठजूर्थ ।। भूरथ व्यव मिकिन अनिहरेनकः यज्माक्रक **बीधतनागरधयः। त्थारक गृरह** कामम शुक्तिम ह हजुर्षक के বিনাশ মেব।। বামে তথা দক্ষিণ शिक्टियरको यूग्रा॰ मूरथ मक्श्रा म-

के बिलाइक बाहात र्या दूर मंडन त्यर हात्य यूचा वया क **দি**ণভো ২ডডিভিঃ। শৃষ্ঠেড উ কোত্ৰৰ বাহতিজঃ সুতেজ এবঃ कवारावर ना। भा जिल्लाकरक শশ্চিৰভাগতোছো স্ব্যাৎ বিশা-नक विर भिवामः। ७९ भृतिक কোপ সনাম মন্তা মনুক্ত ষট্ক जन्माका विदयवा। तयुक्तिका शूर्व-मिना विভारा अस्का अस्वकानिन বাৰ পশাৎ। বহান্ত নেতন্মহি-एक नकः जनकषः नलम मन्यूछः मा। जुनवर फिक् खिल्टर কিভাগে মুখে ত্রিক মণ্ডপ মগ্রত **%। প্রতাগ বর্জন্য নিদক্ষ দিব্য** मूर्याधिकः जोशाङ्कः ठलूर्यः ॥ **उ**रेगाव बश तमनाक वृधा श्रन दुनित्ना २क गक उठका मार्थ সিংহনাদ দ্বথ হস্তি বান জেবং ত্রণা কন্টক সেতদন্ত্য ।। শাস্তা-দি গেহানি চ ঘোডটেশব দ্বিশাল-कानीर क्यांक्रम् । नागानि ह-

THE PROPERTY OF THE PROPERTY O

नत्यः माद्रव्यः भूतन्तः। वक्तारा-नित्नानि क्त वो विक्

कविणावनित्को ॥ मूर्वाः विनावा वक् त्रमा वादव मूट्थ जि-कः मिन्छ खटेशकः। दिमा सूर्य वानव त्यव त्मर् वात्य १ भगत्वा वर्दनक अव।। शात्राम न छ । मूथ **छ ख्रवरक्थ क्षेप्रकिन छिमूक (व-**ক্তিত স্যাৎ। অলিশ যুক্ত বিম-नः दिनानः छदीर्यादछः महमध-পেন ৷৷ অৰ ছিশালেষু সমস্তকে-यू मरवा विषया। जनमाक टेठक । তদাভবেভাসুর মগ্রমুগ্ম মেকো लघू प्रिक्न पिथिजारभा अरक। लघू मंक्नि शृद्गः माखमून्यू जास मू-थम अल्लाम । एवं शृई एका निक्नि । স্তবেশ্বৰো যুগাও ভবেশ্বওপগৎ সু-टिकः ॥ मूर्य खना मिकने ख-देशका (हो यक्षरशियम् इयका-**जिशान**ा महाखरगह॰ मूथरक ত্ৰিকে তু যুগান্বিত মণ্ডগ নেত-

लन्।। मूर्य ज्या मखराटक क्रमु भा-बोदकशगुद्धकुरमण्डा र्ग (बाइब्रु बुध्य संप्राति दुव मिन रावण्या अस् दिना **पत्रमाण्डिशान द्वितश्वर्द्धाः** म्काफिशान ॥ मानीन न মুখগৈ শত্তি বুগা জবা বামভাগে। যুগা তথা পা দিখিভাগে ত্ৰ্যাপ্তে ক্ৰ এক এব ৷৷ প্রাথাসা লয়বো বি-नाम ज्यान वाद्य नवु मंस्तित ज्लाबन मः यूज्क कमनः मा-क्षिमः तीथामः। तमा खुम्बः (क गूर्थ ह ज्ञञ्ड॰ वाद्यक्रद॰ ए-ন্দিণে তস্যাপ্তে মুখমগুপস্য কল-मात्नव॰ गृश्न त्याजभा ॥ इंछि मूर्वाानि याजगग्रानि ॥ ॥ অথ ত্রিশাল ত্রিদশেক্টেশক স্যা-टिलम्गावाम मक्षणमः छः। उद्या ठवूर्थः अमूनाजिधानः इ**खा**क्ति-**जिंदाः क्यारका विदश्यः ॥ इत्यः** श्रामिष्ण उरेषत भूखः श्राम का-मञ्जूथ रुष ভज्र॰ रुऐकक मरशा च-धनः ऋरवद्गः शकः छथा काम्र

प्रकृत्य क्यांके सम्बाधि THE THAT PERSONS The state of the s द्भार र्यादि अस्माक वि क्लान्ड शराम्ब्लेनला ।। (ता-र करामी भारतकार की स्थ को नमा मण्ड जरमन । जाइम বুৰুদ্ধনা তৃতীক ন্যাৎ কৌন-नः नीता मिनः छर्थः॥ मूथस्य नम् बाद्य प्रक्रितः देवक अञ्चलक भवा मुख्य प्रथम काकशकः। देव बिर रि निनाव मधालना वि-कः गांखमन् व शक्रनामः वाहनः कोडिकासः॥ मुकामिन्य गूप-मध्य त्रव निः इ॰ एक्टब गृहरू বুৰ গজে অণি কোশ সংজ্ঞ। বা-विविक्ष मधुना क्षिक मूख्य ন্যামাণিচত্ৰ নশি রম্ভুক্ত কাঞ্চ नार्या। यूगम्य मनदेत्रका देख-রব॰ দক্ষিণে চ ভরত নরজ মে-छः गाकाजूर्यः बरवतः। भून त्रि वसू वारम रखियान वियान रूक क क्रमकरभरः छक्तजूर्यः करम ॥ वर्गानाः एकम् नागतगृरः त्मञ्चा । अनिषयूत्राः इथ छ- ॥ शर्यस्य <u>द्या मूर्य श्</u>राकः कीतः

म त्रञ्जमास्य मिनः कालाश्लक्षा-পরু ৷ বড্দারু বর ভদ্র সপ্ত লবব ভিৰ্যক্ৰুত শালৰা গান্ধৰ কি · for which of the second of t एक ग्राम्य सम्बन्धिक विकास निक्र करताछि बहुन सेन्स छप। बागामा नक्त्र गरिकी भूरछ ह ख्यम ७६ भूव रक्ष्मर ।। रेडि विक्नापि ट्वांक्रन शृशानि ॥ ।।। ত্রৈশালানি চ বোডশ প্রথমতঃ সোমক বড়দারুক তকৈকেন न्यूरवाणि भक्त मिन बरशा क-बाद शृदेवर। क्रा हो वृष्टि। পি দক্ষিণ লয়ু জুকাৰিক সাস तः हवादबा न्नरनाज्ञिक गूत-छः आक्रिकिटेन्टक। लचुः॥ भक्षा-८ अकल जुनक बन्ना गर्नम ভৎ লৌখাদ রাগাখা ভুন সং-সুতঞ্চ ভবন তৎ সর্বশাল জ त्रः। शाशांत कृतनकतः क्य-তথা ত্ৰেক ৰবৈকাশ্বিত তন্মিন্ मिन नियुक्त है वसूरक कन्यान সভ্তঃ তথা ৷ সৰ্বাশাসু লঘুত্ৰয়ং भत्रम्थ छ १ छेरू या कमा ९ ७६

সৌজাগ্য বিবৰ্ধনঞ্চ ভবনং রা-জ্ঞা॰ সদা নিৰ্দ্মিত । আনন্দ সু-थताकि पिक्न लघु रीत्य ह श्रिक ৰ্ব ক্লাগাৰা জন শেভিন গু-भारतसम्बाविक गृष्टिकः ॥ गा-विवासित नेवरण इस्तृष्ट त्-चारि लखेः कमार भरावा জিৰণ জিকক লখবো লোক ক্রিক বুলর । গেহ প্রতিনক है उस महिल इत्यन हीन मूर्थ জন্তে বযুনা চ ভড় সহিত बिक्थिक जूमरा ॥ इंडि मा-बापि द्वाजन गृश्नि॥ ।। यज्-माक्रकः खेबिममः बिमानः छ९ श्रीभवानः गूथ द्वायुकः श्रीव -मणः खीरत स्वतं बृक्ता खीजूरण र्वममूर्थक शहर।। वारेनः क्रिज्य মগ্রভোপি ঋতুভিঃ শ্রীতৈলিক• মন্দির রাগাতা রসদার যুগা স-হিত তৎ প্রীবিলাস ভবেৎ। শ্ৰীতেজে জয় মগ্ৰতশ্চ মুনিভিঃ ষড়দারু যুখান্বিত সোমাদি ত্রি-দশাদি ভূপতিগৃহাঃ পঞাধিকা वि॰मिकः ॥ ইভি जिममामिनवगृ-হাণি 🛭 🐞 🛭 ভবন নবক মুক্তণ য-क्रजुः भानमधार नवन नव्मू ४०

ममन यर्था मईटा माक्यऐक॰ দিত্য মপি চ তেষা মস্তিমণ মুগ্ম-बुक्छिं।। यलय यथ हरशहः वात्र इ-স্বাধিক স্যাৎ ভৰতি চ গুণুৰুৰ শোভন-পূৰ্বভোগি বিভিন্নলৈ চ मूकर्ना शृक्षेत्राद्धाः स्टेश क गि वाद्य (व क्रांतालक) ॥ठळा ठ्रुके वयूक्त वक्टल व्यक्त वात्याखद्व वि मन्नातिकका र गार। ज्यासर्क स्वरासर

मूनिमट श्केतिश ह नावा छ। সা॰ বডেব কথিতা ভরুন প্রসক্তে । भागानि यथा तिहरू भि नशः সুখাষ যদা তদগ্রচিতাঃ পৃথ গেব শালাঃ ৷৷ ইতি সূত্রধর মণ্ড-ন বিরচিতে বাস্ত্রশান্তে রাজবন্ধ-ভে দ্বিশাল ত্রিশাল চডঃশাল গৃ-रुलक्षण वर्णनः मुख्या २शासः ॥ 🗱 ॥ भयन यथ नृशानाः पत्र-লানা॰ শতৈক॰ নবভি রপি সু-ভানা মন্ত্ৰিণঃ ষড়িহীন বলপ-তি গুণহন্তঃ ত্রাঙ্গুলোনণ গুরোক্চ छमन् यूगमहीन॰ बाक्तगारमः थः **শন্ত** ।। ग्रारमार्क्नुजारम नठ देव-

ৰ্যাতশ্চ কলাণ্শ নাত্ৰোধিক এব मेखः। अः त्मन भारतन मनुष्ट्-यः गार विवास्ताना मधित्या-न कार्याः॥ वीलभी वनमानदनाः ति तम्बा तिष्यमा विन्दी वृ कि विस्तार साम नारत नुसार हार्याः इत्या याग् १५ नत्रक ह इसम्मरा नव्यक्र गा १ मूथः (अर्थः टेव्यावः नि-बीबजनिक शर्याक वानामनः ॥ নেব তিমান পৃষ্ঠা প্ৰস্তুত্ব মৰিকাক কিতি শ্ৰমণ ৷৷৷৷ সিংহাসনং চো सम्बानाः बढा। मत्नामक हर्ःभावग्रावि।। शास्त्राम् वा भवः कटेथद । मणाःभ वयः भ मरका विशेनः वादन ह देवसाई नम् ष्ट्रयः मा ॥ मुनि जि तथ भिर्देव र्वा जजनाग्रवमः माामूमय हैर विভारेग-जीकिएक गीठे मत्यो । কনক মপি রসাংশ সপ্তথা প্রাস-পঞ্জী শিব नव यूनि ब्रदेश मेंखि वाद्शे निद्धारको॥ इामा॰ माजम ভাগ মেব ভিথিতো ভাগেন ক-ক্ষাসন যুক্ত স্তম্ভযুগেন তোর-.পর্তণ রব্দ্নঃ শুভৈ রাজিভণ। ক-ৰ্ভব্য নৃপবন্ধত মতিমতা জ্যেষ্ঠ-ঞ্চি কাসন ভাতব্যঞ্চ যশো-जिवक्त बिटेंडः मिर्टेश न् कका-मन ।। नदेव दिन भून द्वार

ছাদ্য পুথাসন ভোরণ সংব্রু गा। शोश करा कामा विदेश नाम के अटेम नेतंगा ए टेर्मक कर कि एक ॥ हैकि निकास है। वासनामि॥ ।। राजासमा कृ विक्या विशेष्मा गृहेय करीन जि পভাক এব। দ্বিলুবিক শ্চোভষ ः यिख्दका २ ८मो यूग मुविन्कः॥ गावादेशः थियवकु धार मृब्धः वष् जिः भून एक श्रीकारकन यूजः मूयकु छिष्टिला बाजा॰ शिवाका जत्र। क কোনঃ গরিগম্বনাভ উদিত 😎 बीग हिएक। ब्रेंग देविकः नद्रश-ছিভিত বিবিধাকারে বৃতঃ পঞ हा। मिल्हा देवर्ग विवर्णिका हि भृष्टन रूपना भवादका उदर क्टबा श्टमो यिल्टिमानि अखनहि-তো ब्लब्स त्यार्भवः। बादत्रेतन

व वृत्रानुदक्ष शक्रफः शक्रदव

জালক প্রোক্তাঃ পঞ্চদশৈব ৰূপ

सम्मा दिमामिः ककामदैनः ॥ তি পাছৰৰ গ্ৰাকাঃ 11 🖝 11 क्र माचा गढाराथ कपा THE CHAPTE লো ৰুষ্ণত নলেতি জন্তসহিতা **छ भटान खन्ना अद्या ७०**५ जर-का अनुसा ह नुनी।। विद्या जला-ৰেবল নৰভাগ। ভৱৈ শত্ভিঃ महिकाह शकी। तद्वाखवा गाम्यू-गटणिन जूदेना खरबादनमाथा প্রতিভক্ত ।। ভবৈ ভোরণ का जिटेकक मणना निर्जू र देवठा-बदेक मृष्ट्रारेमा शंक मिण्ड्रवाक নৃ ত্যান্বিতঃ শোভিত ।

রক্ত কাটিক রক্তৃমি নৃপতেঃ ক্রীডাম্পদ মঞ্জণ স্ব্যাদ্দকি। ভদ্রকে চ ক্রচিরাণ ভদ্মধ্যতো বে-দিকা।।।ইতি সভাইক।। ।।

কোণ চতু ফবৈন সকলে
পাণিগ্ৰহে সন্তিকা কল্যাণ রবি-কোণকৈশ্চ নৃপতেঃ সা ভদ্রিকা সর্বদা। কোণৈঃ শ্রীধরিকা চ বিং-শৃতি মিতে স্তিস্থোৎসরাণাং গৃংহ

কোণৈ রফীভ রম্বিতা চ শুভদা **ह** खार्कत्व शिषानी ।। विदश्च मश्च कताक जुगजबदन इंडियक देवरना छ्या प्रयोग क्षेत्र ग्रम्केन्डि स्ट्रा कि रचकरण रीनर न किलाह क नदम्बायम नद्दा मान है ভঙ্তৰ হেলা নৌভিক পঞ্চলা মণিভিঃ সৌব্যাদন রাজিভা। ইতি বেদিকা চতুকীয় ।। 🍪 🕏 দীপ শুন্ত ত্রিকর মুদ্দবে বড়জি ৰুন- ক্ৰমেণ হস্তান্ত- ত- বিহিত মুগি তৈঃ পীঠ সম্ভান্নিতৰ । দীপ-স্যোৰ্দ্ধে কনক কলস শোভিত কন্ধণাদ্যৈঃ স্বর্যান্ধাতো রথ ভর-मত। नाग वट्ट विवद्धी।। इंडि শ্রীসূত্রধার মঙ্গন বিরচিতে বাস্ত-শাস্ত্রে রাজবল্লভে শ্বন সিংহাস-ন ছল্ৰ গৰাক্ষ সভাক্টক বেদিকা চতুষ্টৰ দীপস্তম্ভ লক্ষণ ৮ আ शायः॥ ।। गृश वास्ताताक ধৌরাজযোগ্যা অনন্তাহি সন্ত্য-ত্ৰ তেভাঃ কিষম্ভঃ। মধোকাশ্চ रयागा। नृशानाः नम्देका मूटनाः ভাষিতা স্তে চ কল্যাণদাশ্চ ৷৷ ত্রিশাল গৃহ দিক্ত্রেষ হুস্বমুগ্র মুখে বীথিকাগ্রে চ বডদারু মধ্য• । खनानिय ठाजूर्नियः टेठकवक्तुः।

গৰাক্ষ কোণে চ ভডে বিষেক্ ॥ बृत्य जमुतक श्रीप्रतः गाथ बृत्कः छपा जुसिका शक गरेक्षक जुरार MARKE TAND COLUMN क्षा कर राजा रहेना तकर श यह व निमञ्जून गांधा जरवा हेन्छः नकः देवनः नृद्ध नागाव (गरू॰ । खंड (धनी यशमादनन कार्या। न्ग्रमाधित्का देनव शुक्रा न ह और ॥ शैन खर्ड भानत्या दाङ् भर्षे নো বেধঃ স্যাদন্যতো বেধ এব ৷ जूरें (खरें के के में भा अयान তুলানেকা বৰ্জমানাঃশুড়াঃ স্যুঃ ৷৷ সার্দ্ধ ত্রখেণ বিভজেৎ কর তত্ত্ব मण्या बरधा नवाण्य मूमिडक क-রান্ধভিত্তিঃ। স্তম্ভাশ্চ বোড়শ্ গৃহহপি চ ভদ্ৰকেষু দক্তৈ মিতা-क नकलाम् ठजूर्य थ मा९ ॥ ভত্তে চ ভূমিৰ্য মূৰ্দ্বনাও সাৰ্দ্ধ ত্রিভূম॰ ক্থিতঞ্চ গেহ॰। প্রতাপ वर्षना मिष् नृशांगा लच्ची वि-লাসঞ্বদামি তমাৎ ৷৷ স্তম্ভা দশ দশ ভজঞ্চৈক ধোডশ নধ্যে তৎ সমৰূপ। মদন শরাবনি মা-ও সমেত লন্ধীঃ কর্মাকরোতি চ নিত্য ।৷ ভাগাঃ পঞ্জণাশ্চ পঞ্ ভবন যড়িংশতা স্তম্ভকৈঃ স্কৃ-

ডে চাৰ্দ্ধপদে চনন্দপদকৈ ভজি চতুৰ্বারকৈঃ ৷ ভজে বৈ গুণভজ-কাণি সকলেকাশীজিকা জন্তকা নাও ভুৱিজমে চ সাৰ্দ্ধপরভূঃ

गृहः ॥ यथा छ-ক্ত শতঞ্চ ভাগ সমকে ভিত্তি শ্চ তৃত্বারকণ সপ্তাণশাজি শরাণশ রাম সহিত ভজ চতুক্তিশতা। ষট্ত্রিস্পৎ দ্বিশতী চ তে তু সক-बाः खडाः किछो शृईछा नामा তৎ কমলোদ্ভবঞ্চ কথিত ভূমাৰ্দ্ধ णशासिकः ॥ इर्यारमा। **एयकः वि** ভজ্য নবধা সন্তী ভবেদ্ভাগভঃ পাদোনণ ভরণ শিরশ্চ কথিতং **शिक्षः म्रशादित ज्ञात्यः अ-ক্ষণ**দোনভাগ উদিতঃ কোণাষ্ট-বৃত্ত স্তথা ভাগাৰ্দ্ধেৰ জয়ন্তিকা নিগদিতা সা ভন্তকস্যোপরি ম गृश्त्मापयः पिथिखाटेग विंखा-জ্যু॰ দ্বিভাগেন কক্ষাসন॰ বেদি-ক। স্যাৎ। ত্রিভাগেন তৎ কণ্ঠ-एछ। निम्न (यव॰ गृहरम्गामयार्कन शीर्यः नृशानाः ॥ উद्धानं शर्षे। न् পমন্দিরে ২সৌ হস্তে চ হস্তে দি-ষবোদতঃ স্যাৎ। পাষাণতঃ সৌ-খ্যকরো নৃগাণা ধনক্ষণ সোগি करत्राजि शास्त्रा। मूर्धिक अ-

क्रिया वियुक्त नकर्क देत देखेः जू-দূঢা গৃহে ভূঃ। শস্তা ন শস্ত ভ-বনেষু চিত্ৰণ কপোত গৃঞ্জাঃ কপি-কাক ব্লোড়ণ।। শুদ্ধো থলিন্দ বি-শেষত্রত সকলা ভূম্যোচ্চরখ্যা-विका इतिग्नाभाश मख्यात्र मु-छ॰ गांध॰ जथारकामग॰। भोरा ভদ্ৰ চতুষ্কিকাভি ৰুদিতো মাণ্ডে-न बुक खरा बरेल खला मेंना-मटेक इ मूजरणा या भी मटेकः त्न-बतः ॥ तारखा गृहः इन्म ठल्कियः স্যাৎ তথৈব ঘণ্ট। কলসেন যুক্তণ ভুলার সংজ্ঞ জুথ সিংহকর্ণঃ প্রা-সাদকে তেপি বডেব শস্তাঃ॥ य-জ্জাভি গেহু ভূণ পর্ণ পটেট র্বণ-रैनः करें बाशि मृता निवाजिः। ছত্র- প্রকারেঃ কথিতক্ষ বড্ভি লোকপ্রসিদ্ধ্যা চ পরীক্ষণীয় ।। ইতি द्राष्ट्रगृशामि॥ ॥ वात्य छा-গে দক্ষিৰে বা নৃপাণা তেখা কা-ষ্যা বাৰ্টিকা ক্ৰীডনাৰ্থণ। এক দ্বি ত্তি দভসংখ্যা শতং স্যাম্বধ্যে ধা-রামগুপ তোষ ষট্রেঃ ৷৷ কেত্রণ স-প্তাবিভাগ ভাজিত ৰতো ভত্তঞ্চ ভাগত্রমণ তন্মধ্যে জলবাপিকা জিনপদৈ রেকা শতো বেদিকা ৷ স্তুট্তৈ ছাদশভিশ্চ মধ্য রচিতঃ

কোণেরু কুপাদিতঃ কর্ত্তব্যোজন ষম্ভ এষ বিধিবৎ ভোগাষ ভূমী-ভুজা ।। তস্যা চম্পক সন্দ জা-छि সুমনো बलाः সুনিৰ্বালুকা জাতী হেমসমানকেত্রক রপি শ্বেতা তথা পাটলা। নারকঃ ক-রণা বসম্ভলতিকা চারক্ত পুস্পা-**फिक॰ अधीरता उपती 5 शृग यध्-**ক। জমূশ্চ চূতক্রমাঃ।। মালুরঃ कमली ह हन्मन वहात्या श्रा শিবা চিঞ্চাশোক কদৰ নিম্নতর-বং খজু রিকা দাডিমী। কপু রাখ क्र कि॰ खका इयति भूः भूबा गटका নিযুকী প্রোক্তা নাগলতা চ বী-क्रिक्ठा गाखिमूकी नामनी ।। ডাকৈল। শতপশ্ৰিকা চ বঙ্গলা थजूत क॰कानको नान खान छनालको मुनिवदत्र। मन्तात्र भा-त्रिफरमो। अत्मा जाका विचित्र

। यम्गारक्षां न ज्ञान अक ज्ञान अकिम्मिनाय क यमि-यञ्ज ज्ञाद्याद्धर्य माना ज्ञी-ज्ञादमाय कृष्ठित वर्षा वम-रङ्गादमाय कृष्ठित वर्षा वम-रङ्गादमाय कृष्ठित वर्षा वम-रङ्गादमय । वाना और वर्षु मू-यथ वनिष्ठा भारेन र्यनाश्चिष्ठ-

প্রতিষ্ঠ শারদকেপ শীতলকল-ক্ৰীডা শুভে মণ্ডপে ৷৷ ইতি বাটি-কা।। 🐞॥ তুরসমাণা॰ গৃহ বাম-ভাগে শালা চতু:রম্ভিকরা বিধে-मा। गणकित्वा मधामिका ह देनः र्षा कनीयमी दे पंगा विशेता ॥ ব্যাসে চ জ্যেষ্ঠা তিথি হস্তমানা बरमामटेनका मनदेकः क्रायं । তদাহ ভিত্তিশ্চ কর প্রমাণা প-कार्क भक्षांकि करतामया जाए।। ভেজোহানি मशीर्या विमयल পূৰ্বাপৰান্যা মৃণাণ তে যামোত্ত-রতো মুখাদি সতত কীর্ত্তি র্যশো शानाकः। कर्खरा। शिवनः श्रे छीर कलमञ्चान बिह्त्खाम्य ठमा স্তোরণ মুচ্ছিতঞ্চ মুনিভি ই স্তৈঃ স্পোভাষিত ॥ বক্তা সাধুহযা-बूटेन निगिषिटा दिषाबुदनना-धिकः श्रीवर्म खुहि लाव विव ह मत्नाहाती विमञ्जाकुनः। त्रांगा-माम्मदेकञ्च वाकि विक्रयांगी-ত্যা তথা ভৈরবঃ শাস্তাখ্যস্ত মু-गांके माळ উদযে मान श्दाः म-श्वशा । ইত্যশ্रশালা ।। 🛊 ॥ সিংহ্বারং পূর্মানেন কার্য্য ত্রি-बाका वा गानिका उड़गीर्व। माणा गर्या ठाउँको तक्नार्थ कुला अरगनाश्वरको वाशि मा-को ।। जारग मिकन वामरक छ करिना॰ गांका इर ब्रांत्रकः कर्छ-को मृद्धाक्रको छ कन्दिम वं-कोषि जि क्षिका । मन्कीरना त-मत्ना गरेम निमित्या मन्न प्र महाकेयः मर्द्युक्त जलकाणि कृषिया नरेमः करेत्र क्षिक्षकः केशि भज्ञाना ।। भा। जल्कान-का स्वन्छ॰ भृष्ट्य नृगानम् दक्ष-का स्व क्षाण्। यक्षा जि तक्ष-का स्व क्षाण्। यक्षा जि तक्ष-कि त्रका विकीनः भर्षक्य जाना-शिक्रकानि रिहर्सा ।। जनी विह्या वामकरेत्रक होनाः भक्षान्या ज् भम् अधानना । जिलाग रिहर्सा

ৰ ৰংগাদিতাশ্চ ।। প্রোক্ত চজুঃ ৰফিৰুর পৃথতে ক্রমেণ বড়জি শ্চ করে বিহীন । বড্জাগছে। স্যাম্বলাধিণ

देशाव ह शक्ष्वहृद्धाः ॥ वक्षा इदेख मंखिरगर् शृष्ट्य रोनः रोमः शः क्ष्यः दान दिराः । मर्यमक्देख बर्यमाण्या रिकारमे ग्रामाक ध्य विक्षित्वा देशमं ध्वमः विद्याः खानिक जुगर्डका छवनः विद्याः ब्रिक्टिः गमः रदेख द्वम्विरीनः

देकः क्रमण्या जागाधिकः देवर्गः णः। देनवद्यक्ष मजामनमा अक्र-তঃ পৌরোষসং তৈবজ বি॰শ-**डाक्टेकतः विरुखतिहरू टेमर्ट्या** विश छछदव ।। दिना कक्कि শিলিনামপি পৃত্ত বেদাধিকা বি-नाक मानः रख छजुकदेश विद्रहि-कः देमदर्याथक। वागमकः। इन्धाः দ্যুত করান্তিকদা রচিতো হক্তৈঃ শান বিভয়ে হীন ছদ্ধকরেণ প-क्क निमः जुर्याः न देवसाधिकः ।। बाखिन्नंजा गान मित्र विजा-ल शैन प्रजूजिं कमरण विश्व-কা দিশক রাগানি বিভাগতশ্চ कद्मन छहर्न ठजूके दर्गन ॥ कर्ना-শিক্ষ বিভৱতো ২ধিকক শীঘুণ विभाग ममूरेगि लिहा । बादा নত মূৰ্জি-যদাপ্ৰতক্ত তৎ সম্ভতে रातिकतः अपिके ॥ द्यारम मध-किर्ड विवृद्धः भागा मानमिषः मन् जुरु । शक्ति भद भून तृशि **जिन्म गान गूनिंड नटना तित वृ**-ক্লাঃ।। এক ভার প্রাজুখ শো-ভন স্যাৎ চাতুৰ্ক্ত গাতৃ ভূগে-म देखता मुचा थानाः शन्तिय माजिएक्यू यून॰ बातः पक्तिः। वक्नीयः ॥ ইতি वाखगाट्य

রাজবলভমগুনে রাজগৃহাদি-नवद्याशास्त्रासः ॥ भिक्रिका जी ज्निविद्यावः। न-श्निमिनी देखि शिमीखाना । তৎপৰ্য্যাৰঃ। শিৰিনী ২ শীতা ওক্তেজা ৪ মৃদক্ষ। অস্যা खनः। मृजद्राभाषात्री पून पत পিত্তাপহারকত্ব। ইতি রাজ निर्मकिः॥ **शिबिनी जी कानम्दर्गीविद्या** ইতি মেদিনী।। भित्रिभावा जी की भित्रभावा। ইত্যমরটীকাষা কামী । শিক্ষী ত্রি শিক্ষকর্ত্তা। তৎপর্ব্যা-বঃ। কারুঃ ২। ইত্যমরঃ।। অস্য বিবরণ শিক্ষকারশব্দে অফব্যুণ ॥ निज्ञमश्रकी ह ॥ **निव॰ क्री यक्रवः। इंडायदः॥** मूथ ।। जन । हेजूगामिटकारः ॥ टेमक्षवः॥ ममूजनवनः॥ त्य-তটৰণ । ইতি রাজনির্বন্টঃ।। गिरः भू॰ **बन्न**णः म॰ জ्ঞारित्मयः । তস্য ব্যৎপত্তি র্যথা। শিব॰ कलाभि विमार्छ १मा निवः। শ্যতি অশুভ মিতি বা। শেরতে **२**विश्वेरस समिमानद्वा **१८की** धना विश्वा है जिन्द ।

ইতাবর টীকাষা ভরতঃ॥ ত भर्यायः। मसुः २ क्रमः ७ मध-পতিঃ ৪ শূলী ৫ নছেশ্বঃ ৬ ই-चतः १ गर्वः ৮ नेगानः २ मक-রঃ ১০ চক্রশেধরঃ ১১ ভূতেশঃ ১২ শুগুপরভঃ ১৩ গিরীশঃ ১৪ গিরিশং ১৫ মৃতঃ ১৬ মৃত্যুঞ্জয়ঃ প কুভিকাসাঃ ১৮ পিনাকী ১৯ প্রমধারিপঃ ২০ উত্তঃ ২১ কপ-मी २२ औकर्वः २७ मिछिकर्वः ২৪ কপালভূৎ ২৫ বামদেবঃ ২৬ बर्गटम्बः २१ विकालाकः २৮ जि-লোচনঃ ২৯ ক্লানুরেভাঃ ৩০ সর্বজ্ঞঃ ৩১ ধূর্জটিঃ ৩২ নীললো ছিভঃ ৩৩ হরঃ ৩৪ সারহরঃ ৩৫ ভর্গঃ ৩৬ ত্রাম্বকঃ ৩৭ ত্রিপুরাস্ত-ৰুঃ ৩৮ গৰাধরঃ ৩৯ অন্ধকরি-भू: 80 क्रजूशभी 83 व्यथकः 82 ব্যোমকেশঃ ৪৩ ভবঃ ৪৪ ভীমঃ ৪৫ স্থানুঃ ৪৬ রুজঃ ৪৭ উমাপতিঃ 8b । ইতামরः ॥ वृषणकी 8a द्वित्रिहानः ७० जगानी ७३ भा॰-শুচন্দনঃ ৫২ দিগম্বরঃ ৫৩ অউ-रामः ८३ कानश्रतः ८८ भूति है ৫৬ বৃষাকপিঃ ৫৭ মহাকালঃ ৫৮ वद्राकः ৫२ निषवर्षनः ७० शिद्रः ৬১ বীরঃ ৬২ ধরুঃ ৬৩ ভুরি: ৩৪

কটপুঃ ৬৫ ভৈরৰঃ ৬৬ ক্রবঃ ৬৭ শিবিপিকঃ ৬৮ গুড়াকেশঃ ৬৯ रमवरमवः १० यहामिछः १३। हेछि किंगिश्रकः ॥ ठीवः १२ थएनर्छः शकाननः १८ कर्छकानः १८ छ-রুঃ ৭৬ ভীরুঃ ৭৭ ভীষণঃ ৭৮ क्कानमानी १२ अंगिधतः ४० र्त्याभएनवः ४३ निकास्नवः ४२ ধরণীশ্বরঃ ৮৩ বিশ্বেশঃ ৮৪ জ্य-उः ৮৫ হরৰপঃ ৮৬ সন্ধানাটী ৮৭ সূপ্রসাদঃ ৮৮ চক্রাপীডঃ ৮৯ শূলধরঃ ৯০ ব্যাকঃ ৯১ বৃষ-ভধজঃ নহ ভূতনাথঃ ৯৩ শিপি-विकैः ৯৪ वत्त्रश्रद्धः २७ वित्यश्रद्धाः २५ विश्वनाथः २१ काणीनाथः ३৮ जरनंबतः २२ जिल्लानी ३०० বিশালাকঃ ১০১ হিণ্ডী ১০২ প্রিব-তনঃ ১০৩ বিষমাকঃ ১০৪ ভটঃ ३०६ উर्कुदब्राङाः ३०७ महाकालः ३०१ यमा खकः ১०४ नन्मी खद्रः ১०৯ व्यक्तमृर्विः ১३० व्यशि भः ১১১ ८४-চরঃ ১১২ ভ্লীশঃ ১১৩ অর্জনা-রীশঃ ১১৪ রসনাযকঃ ১১৫। ইতি ग कत्रवाबनी ॥ छेः ১১७ निना-क्षानिः ১১१ कंनधत्रधतः ১১৮ কৈলাসনিকেতনঃ ১১৯ হিৰাজি-তনযাপতিঃ ১২ া ইতি কবিকল্প-

ने ।। তमा महमुनाबानि औ মহাভারতে অনুশাসনপর্বণি ড-केवानि ॥ #॥ चना कशानि नाम कात्रण कथा। जेश्रत छेवाछ। ত্থাসীত্তত্ত বরারোহে निरतानतः। शक्यः मृन् जूट्यानि জাত"কাঞ্চন সূপ্রভ॰ ত্বলন্ত॰ প-রমণ শীর্ষণ জাতণ তস্য মহাত্মনঃ ।। म এব মব্রবীদেবি জন্ম জা-নামি তে ছহ । অতঃ ক্রোধ গ-রীতেন সংরক্তনযনেন চ।। বা-মাঙ্গুঠ নখাত্রেণ ছিম্নণ তস্য শি-द्या यया। बदकावाह। यन्त्राह्न-श्रतादश्य भित्रिष्ड्रिय प्रया मम । তন্মাচ্ছাপসমাযুক্তঃ কপালী ত্ব **ভবিষ্যति ॥ ইতি মাৎস্যে ১৫৮** व्यशायः ॥ क्षा व्यथं नित् महाः 1 छत अकाकत बरखा यथा। माछ ৰৌকার সংযুক্ত বিন্দুভূষিত ম-खक । आंगानात्था मनुः था-क्ला ७५७। कामला मनिः॥ হোঁ।। 🖷 ।। चम्र পূজা প্রাতঃ ক্ত্যাদি মাতৃকান্যাসং প্রাণাযা-मक विधाय बीक शामि नाम या-তৃকাস্থানেষু স্বর্যাৎ। ততঃ সা-मानाशृकाशकवुाक शीवनामः क्षा भौठमकी नात्म । ठठः

श्वशानि नामः। ७७३ कर्ता-॥ बनात्मो। ७७३ बेबानामाः भक्षमृती नारमः । भृषञ्च a তৎপর্যান্ত ন্যাস করা ধ্যাবেৎ । অন্যত্রানধিকারাৎ। তত উদ্ধৃ প্রাগদক্ষিণোত্তর পশ্চিমেযু মুখেষু ঈশানস্য পঞ্চলাঃ পঞ্জন ঋচঃ अलानिकाः अन्याना नत्याञा ন্যদেৎ। ততঃ পূর্ব পশ্চিম দ-ক্ষিণোত্তরেষু তৎ পুরুষস্য চত-मुक्ना विनारमः। ততा समस्य গ্রীবাষাণ অংশদ্বে নাভৌ জ-को शृष्धं वक्ति व्यात्रमात्को কলাঃ ন্যদেৎ। ততো গুহে व्यक्षत्वार्य छक्रम्रस्य छानुष्रस्य जञ्चाष्ट्रय अभिषद्य करेगाः शा-র্শ্ববোঃ বামদেবস্য ত্রবাদশক-लाः विनारम् । जन् भाग्रवाः खनरया नीमिकायाः मृद्धि वाष युर्ध्य मामाजाञ्मारकोकनाः नारमः। ততঃ शका कृषीत् छ-गानामाः शक्सरा नारमः। এব॰ মূक्तामा शन्य छ**ञ् भा**टन-ষ্বেতা ঋচো ন্যদেৎ। ভভো विनामा धारिष । मूकानीक शरगार भोकिक कवा वर्ष मू- ||

থৈঃ পঞ্চভি ব্রাকে রক্ষিত নীশ निन्तु मुझरे शूर्वन्तु रकारिथा अ। भूज॰ टेक॰ क्रुशान वर्कु महना-बारगक्त वकोक्नान् भानः छी-তিহর দধান মমিতাকল্পোজ্জ-नात्रः ভद्धि ॥ धवः धाषा गानः সৈঃ সংপূজ্য অর্ঘ্য স্থাপনং কৃষ্বা শৈবোক্ত পীঠপুজাণ বিধাৰ পুন शाका जावाह्यामि शक भूज्या-'क्षान मान পर्यास्त क्षा व्यावतन পূজा॰ विशास धृशामि विमर्क-नान्तः कर्या मगाशरम् । जमा পুরশ্চরণ পঞ্চ লক্ষজপঃ ।। ১ ।। * ॥ जनाकोकत्रमञ्जा यथा । বডকরঃ শক্তিরুদ্ধঃ কথিতো श्काकरता मनुः। शै ७ नमः निवाय हीँ। जमा भूका था-তঃক্ত্যাদি শৈবোক্ত পীঠ মশ্ব-कु नामः विधाय अयापिना-न क्वाइनगमान् आनारायक ক্সন্ত্র। ধ্যাষেৎ। বন্ধকাভণ ত্রিনে-ত্র॰ শশিসকলধরণ স্মেরবক্তৃণ ৰছন্ত হক্তঃ শূল্ কপাল বর-দ মভয়দ চারুহাস ভজামি ৷ বামোৰ স্তম্ভগাঘাঃ করতল বিল-নৎ চারু রক্তোৎপলায়া হস্তে-नाक्षिक प्रहः मिश्य विनम्

यनाबाः शियायाः ॥ ५वः शाजा মানসৈঃ সংপূজ্যার্যাস্থাপনং ক্র দ্বা শৈৰোক্ত পীঠ পূজাণ বিধায शून शाकाबाक शक्श्रशाक्षित **जान পर्यास्त्र**े विश्वायावत्र शृक्षाः क्षचा भूभनानानि विभन्जन কর্ম সমাপবেৎ। অসা পুরশ্চর न॰ ठजूकमनक्कभः॥ २ ॥ • ॥ তস্যাক্টাক্ষর মন্ত্রান্তর বথা। তারো মাবা বিযদিন্দু মনুস্বর বি-ভূষিত ৷ পঞ্চাক্ষর সমাযুক্তো বসু वर्ता मनू र्याण्डः ॥ ७ ही दशे নমঃ শিবাষ। অস্য পূজা প্রাতঃ क्रुणामि देनदर्शक शीर्र नगम। ख॰ विशाय शूर्ववष्याणि नाम॰ क्ताक्रनगारमो ह क्रवा थारबर । वरम निम्द्रवर्गः यिन्यू अविन्यू চাৰুচজাৰত শ ভালোদ্যমেত্ৰ-মীশণ স্মিতমুখকমলণ দিব্যজূবা-न्त्रांगः। वात्याकः नाख भारा त्रक्र भवनयः मः मध्याः श्रिस् ্ৰা শ্চণোত্তুৰ স্তনাথে নিহিত করতট॰ বেদ টকেন্টছস্ত॰ ৷৷ এব॰ ধ্যাত্বা মানসৈঃ সংপূজ্যাৰ্য্যস্থাপ-न॰ क्रवा भीठेशुका॰ विश्वाय भून र्शाश्वावाहनामि शक्ष्णूणाञ्चल मान शर्वाखः विशाय व्यावद्रग श्-

জा॰ कृषा धृशामि विमर्क्कनास्त्र॰ कर्या नया भरब । जमा भूत कर्तन यखेनकक्षाः॥ ७॥ 🛊॥ अथाना মৃত্যুঞ্জ যাখ্য মন্ত্রঃ। তার স্থিরা স-কর্বেন্দু ভৃষ্ণঃ সর্গ সমন্বিতঃ। ত্র্য-ব্দরাক্সা নিগদিতো মন্ত্রো মৃত্যুঞ্জ-राष्ट्रकः। ७ जूँ मः। यमा शृजा প্রাতঃরুত্যাদি শৈবোক্ত পীঠন্যা-नाख॰ विधाय अयापिनगंन॰ क-क्राक्रमारमे ह क्षा धारव । চক্ৰাৰ্কাগি বিলোচন স্মিতমুখ: পক্ষৰবান্তঃ স্থিত মুজা পাশ মৃ-গাক্ষসূত্ৰ বিলসৎপাণি হিমাণ-· **७**थाजः । काणितिनम् गमः मृ-শাপুত তনু হারাদিভূযোজ্জুল काष्णा विश्वविद्यार्न शर्थन ্তি॰ মৃত্যুঞ্জয• ভাবযে।। এব• ধ্যা-ছ। মানকৈঃ সম্পূজ্যাৰ্য্যস্থাপন• ৰুত্বা পীঠমন্বস্তা পীঠপূজা বি-शांक शून श्रीषावाहनामि शक-পুলাঞ্জলি দান পর্য্যন্ত॰ রুত্বা আবরণপূজা বিধায ধূপাদি বি-मर्क्कनान्तः कर्य ममाभरयः। ञ-ना भूत्रमहत्रन नक्वयक्रभः॥ 🗱 ॥ ॥ व्यानाशत वाननाकत ग्-ভাজ্ঞয় মন্ত্ৰঃ । মৃত্যুঞ্জয়ণ সমুক্ত।-र्या भानव विख्यः वरम् । मृज्रा-

मकः ॥ जानभाष्ट्रा अतः सहः वंबर ११ ७ ११ जनाः जनाः जातिसार काक्ष मंत्रका शक्त महिला न्हार छर्छ। जगरा । सम् तस्त्र क प्रकिशा मूर्खिः सक्त त्रभू कृती-ब्रदेश । अत्रक् रे व्यक्तिक वा বিশ্পত্যকরো মনুঃ ১৪:১৯ বিজ্ঞা ভগৰতে দকিশামূর্ত্তমে মঞ্চ বে-शं॰ श्रेयक् श्राशा। जना अवा थानःहनामि देगद्याक नीहन यव छ॰ विनामा सवाहितान॰ कंत्रावनगाटनो ह स्त्रा अक्रास्कृ ा वहेर्कः नरहाक् कि निकार क्टबाक्वनः। भाक्रमाञ्चलक्ष ত্রৈ বিচিত্তে রুপপের্যাক্তিক । त्रज्ञ महाकटेब र्वचनाटेककुणकुरून বিচিন্তা বটমূলক জিন্তব্যালাক-नायकः ॥ क्षिक त्रक्तकात्री-ক্তিকী ৰক্ষালা মৃত কলা বি-मा खान मूजाः क्रादेखाः । म्रा মুরগকক চক্রছুড জিলার বি ধৃত বিবিধভূষণ পক্ষিণামূৰ্তি শী-

शक ममूक्तावा भूम दाव विद्या। विद्यानाक कार्याक भीठे श्रूका किया मृत र्गाषा वार्ता माथ म्ञूक्षराविद्या समग्रह । विह्नाम सुनाक्षाम नर्गकः ७ जूँ मः भावर भावर ७ जूँ मः विशासकार गूजा हवा शूनानि । व्यमा शाम गुकाषिकः नर्गातुः । जिल्लाम् नर्गा नर्गागदेव । जनामगुक्तके जनकार ॥ अ -स्क्री समागा नवाका । जि ः कार्क नातिका ज्ञानित्नो वर्धिन् नुष्पारिकामितिकि गाउः रीकः अर्थ गम्बिन ।। त्र क्रम त्र प भू भी क्षेत्रक्माद्धः। जनन क्षेत्रः। ह्मा थान नजाउ नास्कृतिः दिसको पटेक फेक्टिन स्वता-अवक्षा गुजा भाजक्रापि रिकाराक श्रीके मथल विनामा श्रवाधिनग्रावः क्वाबनगरमेः छ हता बात्यरा नीन धरान क्र-क्रिक् क्रिक्ट बिरनव गानाक-स्वारभावमानमः न्वरकः । क्रिक्टिक्न प्रिमा थियान कृतः वाडमञ्जू रक्ष मृत्राहे द्राभगानि बन्धान बाचा नामटेकः मन्त्र-জ্যাৰ্ম্য কৰাণ্য লৈবোভ পীঠ शृका- विवाद श्न ब्राचावारना-नि नक्ष्म्भाक्षणिकानः गर्वाङ क्षा चानके गुज़ा-निवास प्रा-CS 11 अवः शाषा मानदेना मानः । पि विनक्ता व क्ये स्थाणात्रा

वागा नूत्रकृत्वन वाकक्षाः। वाक वर्षनात्रीयतः ॥१॥ ।। गात्रा বহি সমাৰত ভাৱৰামাল্য নীরি-छ । शासी वहि नमाका सूर्या-वत्र नमिष्ठः ॥ विन्यूमान्स विकी-ষংস্যাৎ টাভঃ সমী ভূতীৰকঃ। नीलक्श्रीष्रका मत्त्रा विश्वसर-तः भतः॥ थगागाखतः। जाहि-ভোগ্যাসনঃ সত্যো বিশুৰান্ প্ৰ-थक भूनः। विजीवा विद्वितीकका দীৰ্ঘা পাঙীব্দু ভূবিতা ৷৷ ভূতীৰা जाननी मगी बत्ता रीकवराषा-कः। नीणकश्री ब्रांका नाता वि-यह यह दश भन्नः ॥ तथा नी के हैं छि সম্ভঃ। অব্য পূজা প্রাতঃরুজ্যাদি देगदराक शीवनामाक क्रमा ॥-रा। ति नाम क्राजनात्मे ह विशाव शानः वर्गाए। बालार्का-বৃত তেজ্ঞ গৃতজ্ঞীজুটেশুখ-द्रशास्त्रुनः मार्गिट्यः कृष्ट्राम्थ-त्र अभवषी भूग कनान करेतः र पर्छ। इन विवृष्ट वित्नवविनान পঞ্চানন সুন্দর বাষ্ত্রক্পন্নি-बान यसिनाय खेरी गक्छ छ एक ॥ धर काका नामरना अ ग्कार्यामामाहि निर्वास्त्रीः ठगुना विशव भूव दी विश्वाचारा

र्नामि शक्षभूषाक्षलिमान भर्य-क क्षा जायत्र गंशुका विशाय শ্বৃপাসি বিসর্জনান্ত কর্ম সমা-পাষে । অস্য পুরশ্চরণ ত্রিলক্ষ-क्रिनः। जयः नीलक्षेः ॥ ৮ ॥ । अजाकिकत्रवा यथा । তারো হারীলকণ্ঠায় মন্ত্রশাফী-क्तः भन्नः। ७ नत्य। नीलक्शेय विमा भुजामिक मई शूर्ववर ति भे ॥ का अभा अभाकत्मसः रिख्यात्रवात्रकार यथा। ऋपयः वश-রু সাক্ষিন্ লাভো ২নভাম্বিতো केंद्र । शकाकरता मनूः প्राक खोत्राटमा। १रा॰ यजकतः। नगः निवार। उनगः निवार। जना भूक थान्यकामि निवाक नीं महत्र नामः विधाय सरा।-मिनाम भर्गाए। ততে। मृर्खि न्यामः। छठः कताकनारमा । ততো গোলকনাসঃ। ততো वागिकनानि आगागामक कृष शास्त्र । शास्त्रकिंग यस्त রজত গিরি নিভ চার্মচন্দ্রারত THE PROPERTY. ग रहा देशक रहा धनके । मधा गाम जनसार एउ वनतगटे राष्ट्रहाउ-बनानः विश्वानाः वि

শ্বীজ निथिल ভযহর পঞ্ব-ক্তু ত্ৰিনেত্ৰ ।। এব ধ্যাত্বা মা-নলৈঃ সম্পূজার্ব্য স্থাপনং ক্রম্বা रेगरवाक भीठेश्का॰ विधायं भून र्शाषावार्नामि शक्ष्यूणाञ्चल **मानभर्याखः विशायावत्रव भू**जाः क्ष भ्यामि विमक्त नासः कर्म ज्याश्रद्धः। ज्या श्रूतन्वतः वह-ত্তিত্বালকজগঃ ৷৷ ১০ ৷৷ 🛊 ৷৷ অথা-मा बाक्तरमञ्जः। अधी त्या बहि मिथदा लाखस्था माख बेदीणः। কডম্ভ শ্চণ্ডমন্ত্ৰো ২য়ণ ত্ৰিবৰ্ণাত্মা সমীরিতঃ।। উধ ফট্ ইতি মন্ত্রঃ।। অস্য পূজা প্রাতঃক্কত্যাদি শৈবো-ক্ত পীঠন্যাসাস্ত বিধাৰ ঋষ্যাদি-न्गानः क्त्रावनगात्ने इ क्वा था-ষেৎ। চণ্ডেশ্বর॰ রক্ততনু॰ ত্রিনে-ত্র॰ রক্তাশুকাচা ক্রমি ভাবধা-ৰি। টক ত্ৰিশুল ফাটিকাক্ষমা-লা॰ কমশুলু বিভ্ৰত মিন্দুর্ডে।। अवः शाचा सानदेगः सम्बद्धाः WALL STATE म्बर्गाये विक्रियेक्त वृ कि: जनका हैन रामायारना-मि गक भूगाक्षामान गर्गाउ॰ विधावावत्र गणुजाः क्षेत्रा शुगानि विमञ्जनाउ॰ कर्य ममाश्रस्थ।

षामा भूत्रम्हत्रनः जिनकाभः । **चर° हर ७ युद्धाः ।। ১১ ।। ই**ভি छ-बनादत्र निवयबाः ॥ • ॥ • ॥ विकृ निवदमा ब्रट्डामा भवा। वबार छेवाछ। नित्वा त्व मन्नि ণ স্থান তিষ্ঠতে বিগতবরঃ ৷ লোকানা প্রবরঃ শ্রেষ্ঠঃ সর্বলো-ंक वदत्र। इतः ॥ ७॰ यে विषस्ति তে দেবি नूनः या याय विन्नि । **रव** या॰ विष् ि एक दिन ष्मिष्ठ मित्र शत्र ॥ खर् यज শিব স্তত্র শিবে। ষত্র বসুশ্ধরে। অ-इ॰ छकाणि छिष्ठामि जावरमा नी-खत्र॰ क्रिष्ट ।। भिव॰ या बन्मटड ভূমে স হি মা মেব বন্দতে। লভ-তে পুছলা॰ मिक्रि यय॰ स्वा द-'ভি তত্ত্বঙঃ।। ইতি ৰাবাহে শাল-গ্রামক্ষেত্র মাহাত্ম্য বর্ণন নামা-शायः।।।।। प्रदी विकृ निवाना-मञ्जूषा स्था। जनः नातापदवा ক্ষিক্ষামাতা সমাতনঃ। বি-জ্জা সংস্থিতো দেবঃ স্বাদ্মানণ ः बर्ह्रायश्वद्रः ॥ न त्य विषुः शद्रः ७-कु (नवाका। न यहर्वयः। धरकावः प्तव (पवाचा चवानी विकृ ताव **ह** ৷৷ অহ' হি নিছিমঃ শাস্তঃ কেব-লো নিষ্পরিগ্রহঃ। মা মেব কেশ-

गतः रक्षाम्दिक। वि কি৷তেৰা বিনশাভি দিখা দে निकांकि, निमाक्रियः ॥ दस् हाः সরাঞ্চরেনিভাং, একুছিং, ভার, माध्यकः। तिनिन्तत्नतः यीमानः ৰ ৰাজি ৰৱকাৰ্ত ৷৷ তথাৎ সা शतिक्षेत्रा मिना श्रुभाव विक १ कर्पना यनमा वाहा छाउन्हान-णि बद्धकः भ देखि कोर्ला २६ ख-क्रांकः ॥ क्रां क्रमः शक्कक्रिकः पः वया । भटक भद्रार्क विकास कारन कानग्रनामकः । कान नावि जन्मा कर् कर्माक निवितः यकि ॥ काम्यामाम माद्वना जूषा त्वद्या महस्यकः। मरमार्थियः उद्योखः महमयायूत्र बामूब॰।। ७ याद्यभा बहादस्द्राः ज्यनाबीमत्नारिकः । मद्यािक লোক সংহার ভীষণ ক্লোক মা জিতঃ য়া প্রবিশ্য সপ্তল বোরণ हमा १८मी स्थ्या भूमहा निर्देशकः

UNITED PRINTING PERSON. THE STATE OF THE S CAT HAMP AND CAMPAINTE वतवत्युस्य वसी विसियाक THE PROPERTY AND A PR चित्रदक्ष देवहिन्दी व्यक्तिः॥ निवः नशादेन रक्षतानक स्काहतर स् वयान जामिका छ्टामिन्द्रेश शृ-तस्तु। मन्ध्रतः ॥ नस्तुनवदना (बनः बर्डाक्षि बीचनः । तरत रङ प्रमाः मस्युष्टि संदाख्कः श क्रां क्यानकानः अभीतान-न्द्रताहमः। बिन्ताः क्वियम्दा त्यायः देशकात्रः साक्कः ।। शीषा छ । यहनानकः अवृत मन्तः व-कः । बद्धाणि जाधवः तत्र माः लाक शबक्यकः॥ श्रीमा न्जा-न्कः जिन् कर्षः श्रवन मनना । (तान मात्राम त्मनग त्वर मारा-कि सुनिक्ता म जुड़ा ठाउर इ-मः द्याद्देशव श्रिताकशृक् । शान्ति यजारः जगराम् मधा उदाध य-अनः ॥ मः विरव्याथ स्मरवम् बनाः विक् शिनां विक् । ७८४ प्रतन-কৈঃ পৃথিৱী বিত্ৰৰ বাতি বারি-क्रम नाति क्रम स्थर अगर ह

कारांकित क्षेत्र रक्तान् क शती अनाव गन पार्वात गढिना पार अन्य गांकिंगन्तर । क्वांति के कान नीराज्य के अंतर । के लियानि ह नैदानि रेंग्जरम सार्ड मन्मर-। देवलाबिक तम्मन थनर गाडि गड्यांश्वी देवलात्रि কা ত্তেজসন্দ ভূতানি ন্টেডি স-खनाः। जिविदश २४ महकाद्य म्हर्रेक थलयः बर्ज ।। यहाँ छ মেভিঃ সহিত বন্ধাণ সমিতৌ-জস'। অব্যক্ত জগতো বোনিঃ म॰ इद्धः एक स्वाचः ॥ अव॰ সংহত্য ভূতানি তত্ত্বানি চ মহে-श्रंतः । विरयाज्यकाषारनामान প্রধান পুরুষ পর ॥ প্রধান পুংসো রজ্বো ব্রেষ সংহার স্থীর-**७:। महिश्रदब्रक्ट। जिम्हर्ण म श्र-**य॰ विमार्ड नयः ॥ अभाषाः তদব্যক্ত প্রস্তৃতিঃ পরিগীৰতে 1 প্রধান জগতো যোনি রাদ্যত-ब मटाजन । कृष्टेश निष्मारमा হাত্মা কেবলঃ পঞ্চবিশক্ষা গী यर् गूनिजिः माकी वहारनकः পিতাষহঃ ৷৷ এবং সংহারকর্ণী मकि मार्**स्त्री क्रवा। अशानक**ः

MILES OF COMME H गटका जास विश्वादः॥ ।। विकास वाका बर्डिका वथा। अञ्चलका নুবাচ। ন বন্ধা ভক্তো ভিনে। न अबु र्बक्रा ख्या। व हारु वृत्तरवा जिंदबा एजिय नना-ভন• ॥ প্রধানস্যাপ্রধানস্য ভা-, গাভাগসা ৰূপিণঃ। জ্যোতিৰ্ম্ময-मा जारगा त श्रात्का श्रात्का-र यन्नकः ॥ क खु का रक का बन्धा बरेबर भत्रवाष्ट्रनः। जन्म-ত্রৰ মিক্ ভিন্ন সৃষ্টি হিত্যন্তকা-त्रन ।। हिन्डवन् वाञ्चनाञ्चानः সম্ভব সরু চাদ্মনি। একছ বন্ধ देवज्रके भख्ना॰ स्नांज॰ जर्म ॥ नित्ता थीवानि रज्यान बदेशदेव-কস্য ধর্মিণঃ। অঙ্গানি মে তথৈ-कना जागज्य भिनः इत ॥ य-ক্যোতি রগ্রাণ স্বপর প্রকাশণ কৃ-हेर यवाक यनस्वाभ । নিতাঞ बीबानि वित्नवगरिमा शैन अत कक वयः म जिन्नाः॥ ইতি का-निकार्यार्व ३३ व्यक्तावः ॥ • ॥

অপিচ। ভতে। বদ্য बिका ठटक बटर यमाञ्चरका है 1010 কশর গৌরা-अका गरम्भन ॥ जन्मन जात्या नीवाच अक्वल केंद्र-जुकः । मधक्कगम्भवागानिः कारः ह देवकदः ॥ अख्यक्रादश-ভাগঃ পঞ্চবকু শত্তু জঃ । ক-हिकाञ्चमक कायः श्रद्धः म टल-**(**मथद्रः ॥ ञ्रेम खंखा खन्नकार्य मृक्तिमञ्जि॰ नारगाजय । यग মেবাভবৎ সূক্তা ব্ৰহ্মৰপেৰ লো-কভৃৎ।। স্থিতিশক্তি নিজা वा-माः श्रक्ताथाः नात्राक्यः। बर्हरणा देवकर कारब खान च-कि निका छवा।। विकित्त र्ভदिषिक त्रह त्यद महिश्वति। गर्व-मिकिनिसारमन ममा ठऊ। यम ॥ ज्ञाजनिक छथा कारम मा-खर्व मन्त्रारमाजवर । अख्कर्छ। ভবচ্ছন্তু: সএব পর্মেশ্বর:।। ওত ন্ত্ৰিৰু শরীরেষু স্বৰ মেব প্রকাশ-তে। জ্ঞানৰূপণ পরণ জ্যোতি র-नामि जगवान् अजुः ॥ मृकिष्-**छा खक्र वर्गा एक अव गरहर तः ।**

बना विकृ: निव (न्हां गण्डा মাপ শৃথক পৃথক। অত ত্ত্ৰণ বি-बाला है स्थार मिन गृथक्।। এক পরীক্ত বাগাঞ্চ জ্ঞান সমাক संख्या दिन छत्वय ३२ व्यथा यः श ।। बाबरेश्वय ज्याह । ज्ञ बकार मन्द्रान वन वानाम न-ভবে। বৰুবৈ ভোৰগ্নাশিস্থ একা-ওক বৰা পুরু ।। তথ্যগে পথ-গভাভ বৰাণ ক্ৰমতঃ গভি । জ্যোতীৰণ প্ৰকাশাৰ্থ স্কাৰ্থ-क भूषश्राक्त ॥ नदीतिन म म-मृत्न उक्ता अंखर्गक मूकः। हर्ज्-ভূজ প্রকাশন্ত জ্যোতিভিঃ ক-ৰলাসন ।। ভৱৈৰ চ ত্ৰিধা ভূত वर्ष बीबार समूर्त मः । छेर्नु म-बाह्य डाटगाई उम्म विकू निवा-प्रकः ॥ ज्यानुं जारमा वर्नु-त्वा जवाब नगमख्या ॥ मध ভাষা বিষ্ণু ভূতো দদৰ্শান্তস্য শ-ন্ত্রত। এক মেব শরীরন্ত তিখা कुछ मूह र्याहः। हता पपर्न **एव गर्रड छंथा गर्व मिम** जग९ ।। कनाविदेवकर काव बादका-কাৰে লখ বজেৎ। ব্ৰাদ্যাণ ত-था देवकदव ह भाखव॰ देवकदव डबा ॥ भाउव देवकद कारब

वाटका ज्ञाना कार्य । गर् লীনতা শতু রেকতার বৃহ শহুঃ श मंगर्भ वानस्त्रत्याही जिन्नकाशः পৃথগ্গত:। পর্বাছনি গাছত লীৰতা তৰপুক্ত ৰং ॥ইছি কা-निकार्बार्व ३७ वर्षाकः ॥ ।।। जगा बत्रज्वश राज्य कात्रक रहा । रेडि द्वार निगम्हार देश-वाकाः जनाममः। छनाछ भारतः रावः बकाशः विरावणः ॥ वद-ছতে দেবতাঃ সৰ্বাঃ প্ৰকাশ্চ স-कला हमाः। आश्रविष महसूभः भीर्याटक मकला करार ॥ बादार সকল কাৰ তাজু মিছানি শ-কর। দ্ব ত্যাজ্বৰ তৎকাৰ ব-जाचा मक्रतायुना ॥ व मानावय তেজোভি वंबन् अतरतः न्रहः। আপ্যায়ৰ তলা দেবাঃ শহুৱো হ্-च পোত्তि १ । बाजुदम्दवानि छाम् गर्वान् विमुख्या जिल्लाः छना। বারাই তেজনা হর্ভু 💨 গ্রাম-भरता खर्व ॥ भटेनः भटेन र्वन তেজ আহরত্যের মাধবঃ ৷ ত-म। प्रवेश वादार मखरीन वा-कायण ॥ किकारीमः बना दनर खा**ण मर्दे त्रशागदेतः ।** ज्ञाम-नाम भशापत्व यक वादार म

जनामा जिल्लाः मार्व राज्ञाशिकः। जन्मभू स्थापः चत्रसागतन ।। एक

टिका रुक नेतान लिखी नगण यद्वजन्ती म ७९क्क्शालगाद्वरणा ২ত্তৰ ৷ উৰ্ঘেৰাভাগত ভাক-भारवृक्तः मूटेखेतवः ॥ विवक्तया-জনোজাৰ: দাৰ্জনকৈববিভূতঃ । रें छि कानिकानुतार १२ जशा-तः ॥ ।। जना विवादश वर्षा । ৰশ্বর উবাচ। হিতাম সর্ব জগতা॰ मद्बागावाचन उथा। माताम् এহীতু নিছাৰি তথা সম্ভান বৃ-करम।। नाहामा • তत्र नर्बंड जर-**रहा मम मान्भुकः। ममर्स्य जनवाः** কালী বাচন্তান্ত হিমাচল।। মা-कॅटबर जेवार । इतः नरबाधा म्नद्वा चग्रम् शिविवाज्गृकः। তেৰ সপ্ৰিতা তে তু প্ৰোচু তে मनत्या गिति ॥ व महस्त्राभरती . ट्राट्या ट्रायटम्य में ट्या यकः। भा-পামুগ্ৰহৰে শক্তো ষএকো জগ-ভা প্রিশী। বং সংহরতি সর্বাণি अगिष अनिरमाख्य । या विजृ ि श्राण एक नानाकरण य-

নোহরঃ॥ স তে দুহিতর॰ ভাৰ্য্যা মাদাতু মিচ্ছতি। যদিপশ্য-সি ছদোগ্য বর ছ ছড়িভু: সম য় তদা প্রয়ছ ত্রু কালী শ-निस्टेड महामान्ट ७ व उवाह । ইতাজে ভৈ গিরিপতি বর॰ बक्नविक्ठ॰ । मूहिजून्ठ श्रिवः खादा थानाः मून मगाखना।। দাস্যামি শম্ভবে পুত্ৰীণ যুশ্মাজিং প্ৰাৰ্থিত স্তুহ । পূৰ্ব মেব তপ স্ত-প্ত্ৰা তবেশঃ পতি রীহিতঃ।। ধাতু निरंगाजन मिन कानाथा कर्जु मूष्प्रत्र । का श्नाः आर्थि-তু শক্তঃ সুতা সম বিনা হরাৎ য়। হরেণানুগৃহীতা যা তা মন্যঃ कः ममूरमाहर । इतः गृशिषा भनमा नागा मानी वाञ्चि ॥ ইত্যুক্ত্বা মেনযা সাৰ্দ্ধণ সূতাণ দা-তুক শন্তবে। অঙ্গীক্ষত্য বিসৃষ্টা **एक मूनरमा २ छ र्याट्यंत ।। एक** गन्ना यूनयः मृद्धं यद्गीित প্রমুখা षिकाः। देननद्वादका यमाठके छ-मृहू र्यमनात्रत्य ॥ श्रियवा॰ खनयाः দাতৃ তুভ্য মুৎসহতে হর। যদি-দানী প্ৰধা কৰ্ত্ব যুজাতে ক্ৰিয-তান্ত তৎ ৷৷ অক্ষাণ শ্চাপ্যনুজা-নীহি হর গত্ত নিজাস্পদ ।। मि-

क खाषा इदेः साधा मूर्ति खान् विস्केवान्। सथारयागाः नमा-ভाষা क्रमाद्भदेककरमा मूनीन्।। कालौबिवाइ मिवटम यृय याया-ত বা॰ প্রতি। ইতি চাপি হরে-ণোক্ত প্রতিশ্রতার্যবা বসুঃ।। অ্থান্যোন্য প্রিয়ত্যা রুদ্ধা রুদ্ধা গভাগভ । সময কার্যামাস বি-বাহায হরো গিরি॰।। মাধবে মা-সি পঞ্চম্যাণ সিতপক্ষে গুরো দি-নে। চক্রে চোত্তরকল্পণাণ ভর-ণ্যাদৌ স্থিতে রবৌ।। আগতা মুন-य ख़ब मतीि श्रम्था मूरुः। श्रत-ণ চিন্তিতাঃ সৰ্বে তথা ব্ৰহ্মাদ্যঃ সুরা: ॥ তথা চ সর্বে দিকপালা মুনবোষে তপোধনাঃ। শচ্যাসহ তদা শক্তো বন্ধাণ্যাদ্যান্ত মাত-तः ॥ नातमक গ**छ छ**व मिर्वि र्जकाः मूजः। এতৈঃ পরিকরেঃ मार्कः गटेन तानामिणः चटेकः ॥ কন্যা বিবাহ বিধিনা গিরিপুত্রীণ ছরো ২গ্রহীৎ টিবিবাহে গিরিণা শড়োঃ সর্গা ষেক্টো তনৌ স্থিতাঃ ॥ ए जामूनम ममका वनकाता खमा खरन् । षिजुष्का श्जृय-হাদেবো জটাঃ কেশত্ব মাগতাঃ ৷ শিরংহিত চন্দ্রখন্তঃ শোচিসা

बुवि: छ। २ छव । वना है निव মভবত্তদারত্র॰ মহার্ঘ্যক॰ ॥ বি-চিত্র বসনং ব্যাযুক্ত রাসীত্তদা দিজাঃ ? বিভূতিলেপো ২ভূত্তস্য मूगिक्षियलारगास्त्र ।। ठाक्रकारणा হর স্তত্ত বভূবান্তভদর্শনঃ। ততে **दिन्ताः मगन्नर्वाः मिका विकास**-রোরগাঃ।। বিস্ময় পর্ম প্রাপু-र्शतः मृक्षे। जशाविषः। हिमवान् মুদিত শ্চাভূৎ সহ পুত্রৈশ্চ মে-नया।। उद्घा छय नहाना भू मूक् र्वतः দৃষ্টা তথাবিধং। ইদ॰ বন্ধা তত্ত जरगो इत पृष्टु। बरनाइत ॥ সর্বণ শিবকরণ যত্মান্তত্মাদ্যস্যা-ভবৎ সুরাঃ। তন্মাৎ শিবো হয॰ लात्क्यू नाष्प्राष्ट्रतगिकः नि-वः ॥ यदश्यत्र मयायुक যঃ স্মরেদ্ধা। সতত তস্য ক-ল্যাণ বাঞ্ছিতঞ্চ ভবিষ্যতি ॥ এবং কালী মহামায়া যোগনি-**जा जगर अगूः। शृबं जा कारा**गी ভূষা পশ্চাৎ গীরিস্তাভবৎ॥ अरं मगर्थाि मठी कोली मत्या-হিতু হর ।। তথাপ্যুক্ত তপ স্তে-পে হিতাষ জগতা॰ শিবা। এব॰ সম্মোহ্যামাস কালিক। চন্দ্রশে-খরণ ৷৷ ইত্যেত্ৎ ক্থিত সর্বণ

छाक्टान्डा मछी यथा। हिमवखः নধা জূত্বা পুনঃ প্রাপ মহেশ্বর ।! इंजि कालिका भूताएन ४७ अध्रा-यः ॥ 🕶 ॥ जना खना वया। भू-वसा उवाह । रहानि नवत वाः তে সমাহ্যাও নন্দিন া প্রাহা-मज्ञम देननादनो य क्रिंग खतना-मदन ॥ ७८७। यदश वॅठनाम्मी मर्बगना धिभः। উপস্পৃশ্য জল॰ थीयान् मन्यात गणनायकान् ॥ निषना मः ग्रुठाः मर्द्व गगनाथाः সহস্শঃ। সমুৎপত্য স্বরাযুক্তাঃ প্রণতা স্ত্রিদশেশ্বরণা আগতাংশ্চ गगाममी क्ञाक्षनिभूटो। १वा-यः। সর্বান্নিবেদ যামাস শঙ্করায-মহাত্মনে।। নন্দ্যবাচ। ষানেতা-न् भगामि भर्छ। वित्नवान् ज-টিলান্ শুচীন্। এতে ৰুজা ইভি খ্যাতাঃ কোট্য একাদশৈব চ ৷৷ वानद्रामगान् श्रभामि बान् शार्षृ-ल সম विक्रमान्। এতে বৈ दात-পালা স্তে মন্নামানো যশোধনাঃ ।। रम्मशन् श्रमामि या॰क मिक शानीन् मिथिश्रकान्। यह ह विकि खथा काणिः ऋषनामः क्यात-কান্।। এতাবত্য স্তথা কোট্যঃ শাখানাম ব্জাননাঃ। বিশাখা

खावरमदांका रेमगरमबाक भ-কর।। সপ্তকোটি শতাঃ শভো অমী বৈ প্রমথোত্তমাঃ। একৈক॰ প্ৰতি দেবেশ তাৰতো৷ ছপি মা-ভরঃ ॥ ভগারুদিত দেহা শ ত্রি-त्वाः मूलभावयः। এ: उ देनवा ইতি প্রোক্তা স্তব ভক্তা গণেশ্ব-রাঃ।। তথা পাশুগতা শ্চান্যে ভন্মপ্রহরণা বিভো। এতে গণাঃ স্ত্ৰসংখ্যাতাঃ সাহায্মার্থণ সমা-গতাঃ।। পিনাকধারিণা :রৌদ্রা त्काः नगागाञा जिंग्यक्षिता-क्छू जाः ॥ श्रेष्ठाच त्याधिता वीता রক্তচর্শ্বসমাবৃতাঃ। ইমে প্রাপ্তা গণা যোদ্ধু মহাব্ৰতিন উত্তমাঃ भ मिथामामा स्वीनिनक वन्छ।-প্রহরণা खथा। निরামধা নাম-गनाः ययायाजा जगलाद्वा ॥ সার্দ্ধ দিনেত্রাঃ পদ্মাক্ষাঃ শ্রীবৎ-नाहि छवक्रमः । मनायाजाः थ-शाका वृयज्यक्रित्नावायाः ॥ মহাপাশুপতা নাম চক্র শূলধরা खशा । टेजरदा दिक्ता गार्क गट्डिफ्न नार्किट्डा हि देवः ॥ हेट्य म्राख्यक्रमाः मृल वान धनुसंताः । গণা স্তুজোম সম্ভূতা বীরভদ্র

পুরোগমাঃ ।। এতে চানো চ বহরঃ শতশো ২থ সহসূপঃ । সাহায্যার্থণ তরায়াতা যথাপ্রী-ত্যাংদিশম তান্ ॥ ততোঁভোতা গণাঃ সর্বে প্রব্যেমু র্ যকেতনং ॥ ইতি মামনপুরাণে ৬৪ অধ্যায়ঃ ।। অস্য লিকপুজাদি শিবলিক-শুন্দে জন্তব্যং ॥

भिकः श्रु॰ स्माकः ॥ कीलक श्रुः ॥ वाल्कः ॥ श्रुश्व लूः ॥ व्यक्तः ॥ श्रुश्व लूः ॥ व्यक्तः ॥ श्रुश्व ल्याः ॥ हिं व्यक्ति । हिं व्यक्ति व्यक्तः ॥ श्रुश्व । हिं व्यक्ति । व्यक्ति । व्यक्ति । व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । व्यक्ति । व्यक्ति व्यक्ति । व्यक्ति व्यक्ति । व्यक्ति व्यक्ति । व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति । व्य

শিৰকঃ পু॰ কীলকঃ।ইত্যমরঃ

। ছে খোঁটা ইতি খ্যাতে ।

গবাণ গাত্র কভূষনার্থণ গোঠে

নিখাতস্তত্তে ইতি সুভূতিঃ ।

কভূষনার্থ কাঠে ইতি কেচিৎ।

वस्र नथरके हे छि एक हिए। यव वस्रा भी मूं श्रास्त है छि एक हिए १ भाषि गांवक थूं भिनः मां उन्कर्ण नाम्नी छि छिनः चार्थ कः भिनक खानका मिः। की ना-एक नथाएक श्राम की नः की-नगरम च्या चार्थ कः की नकः १ हे छिन्न छः।।

শিবকরঃ পু॰ চতুর্বি॰শতিভূতার্ছনন্তর্গতজিনবিশেষঃ । ইতি
হেমচন্দ্রঃ ।। মঙ্গলকারকে ত্রি ।।
শিবকাঞ্চী স্ত্রী বিশেষঃ ।
যথা । শিবকাঞ্চী , বিশ্চুকাঞ্চী
কাঞ্চীযুগ্মঞ্চ সম্মতং । এতাস্ত পৃথিবী মধ্যে ন গণ্যন্তে কদাচন ।। কাশী শিবত্রিশূরস্থা কাঞ্চী হরিহরাজ্যিকা । বাম দক্ষিণ
হস্তাভ্যাণ দধার দিজপুন্ধবাঃ গ।
ইতি ভূতশুদ্ধিতন্ত্রণ ।।

শিবকীর্ত্তনঃ পু॰ ভৃঙ্গরীটঃ।। বিষ্ণুঃ।ইতি মেদিনী।। শৈবঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শিবগতিঃ পু॰ ভূতাইছিশেষঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

শিবঘর্মজঃ পু॰ মঙ্গলগ্রহঃ। অস্য প্রমাণ মঙ্গলশব্দে দ্রফার্য়ণ।। শিবঙ্গরঃ ত্রি মঙ্গলকর্ত্তা। তৎ- পর্যায়ঃ। কেনৰরঃ ২ অরিষ্ট-ভাতিঃ ৩ শিবভাতিঃ ৪। ইতি হেমচন্দ্রঃ।

शिषठजूमंभी खी ठजूमंभीकर्ख-वानिवज्जविद्युषः । यथा । न-न्मिर्क्श्रत खेवाठ । मृगूश्वाविह-তো বন্দ্ৰ বন্ধের মাহেশ্বরণ ব্ৰত । ত্ৰিষু লোকেষু বিখ্যাতা नामा निवहजुननी ॥ मार्गनी-ৰ্ষে ত্ৰেগদশ্যাণ সিতায়া নেক-**७क्क । अ**थिराक्तिरात्वा জা মহ॰ শরণ গতঃ ।। চতুর্দ-শ্যাণ নিরাহারঃ সমভার্চ্য চ শক্ষরণ ৷ সুবর্ণ বৃষত্ত দত্বা ভো-ক্ষ্যামীতি পরে ২হনি ।। এবং नियमक्र मृथु। প্রাতর খাষ मा-নবঃ। কৃতস্নান জপঃ পশ্চা-मूगरा नर् नकत्।। भूकत्र क्मरेनः छरेक्न गंक्ष धृशान्ति-भटेनः। भारमो नयः गिवारयणि भितः मर्बाशाय नयः ॥ नंनािष् वागरणवाय मिंजानि इत्रस नमः । मूथ मिन्मूम्थारम्डि श्रीक्छी-যেতি কন্ধরণ।। সন্দ্যোজাতার্য करगे जू बागदमवाब देव जूढको। ष्यात्रज्ञनगारगि ज्ञानगणी शुक्रस्य ॥ खरनो छ शुक्रमा-

যেতি তথেশাৰেতি চোদর । পাৰ্শ্বে চানভংগাৰ জ্ঞানভূত। য বৈ কটি ।। উৰ চানভ বৈ

ZIONE O GRAND व्यनदेखश्रमानाशास कामूनी हा-कर्मकुथः ॥ अभानाम नत्मा जः ्रम अन्टि द्यामाप्रत नमः। ৰ্ব্যোমকেশাত্ম কপাষ পৃষ্ঠ মৰ্ভ্য-कर्षक्रवः ॥ नमः भूटेका नम छ-.देका পাৰ্বতীঞ্চাপি পুজ্বেছ। ত-ভক্ত বৃষভ হৈম মুদক্ত সমন্বিত ॥ अक्रमानगायत्रमूङ शक्त्रज्ञ श-तिष्ठः। ভरिका मानाविरेथ र्युकः बाक्षनाय निस्त्रपट्य ।। श्रीयकाः ्रावटारवा २व मटमाङ्गाङः भि-নাকধৃক্। ততন্ত বিপ্রানমেন ত-প্ৰেচ্ছক্তিতঃ শুভান্।। পৃষদা-काक मःथाना स्रान्ध्यावृत्रश् **बः। शक्षमभा। उठः शृंका** वि-প্রান্ ভূঞ্জীত বাশ্বতঃ ৷৷ তত্বৎ ক্লফচতুৰ্দ্দশ্যা মেতৎ দৰ্বণ সমা-চরে । চতুর্দশীযু সর্বাসু সর্ব্যাৎ . शृब्दमर्फिन ।। (य जू यानवित्य-योः मू छात्रिताथ क्यां मिर्। यार्शनीयानियात्मयु खव व्याजन् मीत्ररष्थ ॥ अक्त्रीय नय खुछा॰ নম স্তে করবীরক । ত্যস্বকায ন-

ম তে হন্ত মহেশার নমঃ পর• ।।
নামত হল বহাতের হানবে চ

ममह न जाए बाथ नम एक नक्दर भूमः।। नम एक श-क्रमानमा बन्धः त्मामा क्रमान्द्रित । নমে জীমাৰ ইত্যেব দ্বা নহ ল-রণ গভঃা৷ গোৰুত্ত গোম্য कीवः पशि मर्भिः करमाप्तकः। श-क्शवाः छथा विखः यवान् शा-শৃক বারি চ !৷ ভিলাণ শ্চ রুঞান্ বিধিৰৎ প্ৰাশন ক্ৰমশঃ স্মৃত ৷ প্রতিমাসণ চতুর্দ্দশ্যে রেকৈকণ প্রাশন স্মৃত ।। মন্দারে স্মাল-তীভিশ্চ তথা ধুস্তুরকৈ রপি। भिक्षुवादेत त्रांटिक क गलिका-ভিশ্চ পাটলৈঃ।। অর্কপুষ্প কদ-দ্বৈশ্চ শতপত্ত্বৈ স্তথোৎপলে: । একৈকেন চতুর্দশ্যা মর্চবেৎ পাৰ্বতীপতি ।। পুনশ্চ কাৰ্ত্তিকে যাসি সংপ্রাপ্তে তর্পবেৎ দ্বিজান্ । जोता नीनाविदेश छ देख ईख याना विज्यदेशः ॥ क्रषा नीन ৰূষোঁৎসূৰ্গ শ্ৰুত্যুক্ত বিধিনা ন-রঃ। উমা মহেশ্বর॰ হৈমণ বৃষভঞ্চ গৰা সহ ৷৷ মুক্তাফলাফকযুত• সিতনেত্ৰত্ৰযাবৃত ।। সৰ্বোপক্ষ-রযুক্তাবা॰ শ্ব্যায়। মূদপ্তযোঃ।

তাৰুপাত্তোপরি পুনঃশানিতভূল गःवृत्रः ॥ ज्ञाना विश्वातः नोष्ठाव বেদৰত পরাষ্ট াজ্যে সাম विराम रमय॰ न चकजानित्य कि ॥ श्वनुद्ध त्याबित्व जनगणानः র্যো তত্ববেদিনি। অব্যক্তাকাষ त्रोगाय महा क्लाभकादिनि ।। সপত্নীকাৰ সংপূজ্য মাল্য বস্ত্ৰ विज्यदेशः । छद्रो मिक छद्रा र्पिय॰ जमजाद्य विद्याज्यस् ॥ न विख्णाठा॰ अबी ७ अर्बन् त्या-হাৎ পতত্যধঃ। অনেন বিধিনা-যস্ত সর্য্যাৎ শিবচতুর্দশী । । সো **২শ্বনেধ সহসুস্য ফল মাপ্পোতি** यानवः। जन्नर्छा पिकः किश्वि-দ্যদত্রামূত্র বা ক্লন্ত ৷৷ পিতৃভি ভূা তৃতি শৈচৰ তৎসৰ্বণ নাশ মা-श्र्या । मीर्यायू तारतागा कला-ভিবৃদ্ধি রত্রাক্ষণামূত্র চতুভুজ-ত্ব॰। গণাধিপত্য॰ দিবি কল্পকো-টিশত° বসিত্বা পদ মেতি শস্তোঃ ।। ন বৃহস্পতি রপ্যনন্ত মস্যাঃ ফল মিন্দ্রো ন পিতামহোপি ব कुः। न চ मिक्कगरवानानः न চাহ॰ यनि जिन्नायुज्दका देखानि বক্তে ৷৷ ভবত্যমরবল্লভঃ পঠতি ষঃ স্মরেদা সদা শুণোতি চ বি-

यथगतः मकल भाग विश्वानिः नीः। इगाः निवर्ष्णनी वयः রকামিনী কোটয়ঃ স্তবস্তিত ম निक्षिष्ठः किम् जमा हरत्रकाः जना া। যা বাথ নারী সরুতে হ छ-জ্ঞা ভর্তার মাপৃচ্ছ সূত গুরু-षा। मानि श्रमाना अत्राम्धः রস্য পর্ পদ যাতি পিনাক-शारमः ॥ इंडि गायमा निव-চতুর্দ্দশীবত ৮০ অগ্যামঃ।।।।। काञ्चनी क्रका ठजूमंगी। जज শিবত্ৰত কৰ্ত্তব্য । তদ্য বিব-রণ শিবরাত্রিশব্দে জফব্য া শিবজ্ঞা স্ত্রী শিবোপাসিকা।। মঙ্গলজ্ঞাত্রী।। শিব॰ জানাতি যা ইত্যৰ্থে ড প্ৰত্যয নিষ্ণন্ন।।। শিবজ্ঞান ক্লী শুভাশুভকাল-বোধকশান্ত্র । यहा याजानि ক্রিয়া অবশ্য কর্ত্তব্যা জ্যোতিঃ-শাস্ত্রোক্ত শুভকণ প্রাপ্তিক ন ভবতি তদা শিবজ্ঞানোক্ত শুভ সমযে কর্মা কর্ত্তু মুচিত ভবতি। এতচ্ছিবজ্ঞানোক্ত মাহেন্দ্রবো-গে ক্ত যাত্রাদি জ্বণ অমৃত-यारा कार्यामिकि॰ वत्क का-र्यानाण णूटना मृज्य अश्रमानः বা প্রাপ্নোতি । দিবা রাত্রৌ

মাঘ ফাল্পন চৈত্ৰ বৈশাখ শ্ৰাবণ ভাষেষু এতে যোগা একৰাপাঃ আশ্বিন কাৰ্ত্তিক অগ্ৰহাবণ পৌষেষু একপ্ৰকারাঃ জ্যৈষ্ঠাযাচযো কৈচকৰাপা ভবজি !!

> भाव साहित टेंडेंड देवनीय खोकी छाटजबू मिवा मधा यथा १ के कि

স্থানিরে আহ ব ৮ আ ৬ ব ৬ মা ৪ শৃংহ।

মঙ্গলারে ব ৪ শৃহ আ ৬ ব ৪ শৃহ আ ৪ শৃহ হা

বুধবারে আ৪ ব ৬ আ৪ শৃহ ব ৪ মা ৪ আ৪ শৃহ হা

ভাকনারে মা ৪ শৃহ ব ৬ মা ৬ শৃ ৪ ব ৪ শৃ ৪ হা

ভাকনারে আহ ব ২ আ ৬ ব ৬ আ ৬ শৃ ৪ আ ৪ হা

শানিবারে শৃ ৪ ব ৪ শৃহ আ ৮ শৃ ৪ ব ৪ শৃ ৪ হা

ভেমুরাত্রি দণ্ডা যথা ব

রবিরাবে শৃংমাংঅ ৪ব ৮মা৮ শৃঙ।
সোমবারে ব ২অঙব ৬অ৮ শৃ৮।
নঙ্গলারে অংব ৪শৃং ২অঙব ৬অ ৪ব ৪শৃং।
বুংবারে শৃংঅঙমা ৪ব ৪শৃং ৪অ৮।
শুরুবারে ব ১৪শৃং৪ব ৪অংশৃঙ।
শুরুবারে ব ৪অংশৃং ৪মাংব ৬শৃং ৪অংমাংশৃং।
শানিবারে শৃংব ৪অঙব ৪অংব ২অংশৃঃ।
আধিন কার্ত্তিক অগ্রহাবণ পৌষেষু

क्ति कुछा यथा ।

রবিবারে শৃংঅভব ৮অ৮শৃং মাং শৃং। সোমবারে অ৪শৃ৪অ ৩ব১৬। মঙ্গলবারে অ২ব ২অ১০ব ৬ শৃঙব৪। বুধবারে অ২মা২অ২ব ৬ অ৬শৃং মাঙব৪। গুরুবারে অ৪ব৪শৃ৪ব ৬ শৃং২অ৪ব ৬। শুক্রারে অহব২অওবও শৃ২অ৮অ ৪। শনিবারে অহব২অওবওঅ৮শৃ২ অ ৪। তেৰুরাতি দিওা যথা।

রবিবারে শুংৰ ৪ আছেৰ ৬ আ ৪ শুং আ ৮।
সোমবারে ব ৬ আছেৰ ৮ আছে ২ ব ৬।
মজলবারে মা ৬ আ ২ শুং আছে ১ব ৪ মা ৪ শুং আ ৪।
বুধবারে ব ২ আ ২ ব ৬ আছে ৮ শুং আ ৪।
শুক্রবারে শুং আছেৰ ৬ আছে ৮ শুং আ ৪।
শুক্রবারে ব ২ আ ৮ ব ৬ আছে ৮ শুং আ ৪।
শুক্রবারে ব ২ আ ৮ ব ৬ আছে ৮ শুং আ ৪।
শুক্রবারে ব ২ আ ৮ ব ৬ আছে ৮ শুং আ ৪।

्रेटकाश्रीयाज्या र्मिवा मुखा यथा।

রবিবারে শৃ ৪ আ ৬ ব ৬ আ ৬ ব ৪ মা ২ শৃ ২ ।
সেসনবারে ব ৮ আ ৪ শৃ ৬ ব ৮ শৃ ২ ।
মঙ্গলবারে আ ৬ শৃ ৪ আ ৬ ব ৬ মা ২ আ ২ মা ২ শৃ ২ ।
বুধবারে শৃ ২ ব ৪ আ ৮ ব ৬ আ ৮ শৃ ২ ।
ভু জনারে মা ২ শৃ ২ ব ৬ মা ৪ শৃ ৪ ব ৬ আ ৬ ।
ভু জনারে শৃ ২ মা ২ ব ৬ মা ২ শৃ ৪ আ ৬ ব ৪ শৃ ৪ ।
শনিবারে মা ২ শৃ ২ ব ৬ মা ৬ শৃ ৪ ব ৪ আ ৬ ।
ভু তর রাত্তি দুঙা যথা।

রবিবারে আ ৪শু ৪ব ৪অ৬ব৮শু ৪।

সোমবারে ব ৮ আ ৮ শু ৪ আ ৪ শু ২ মা ২ শু ২।

মঙ্গলবারে আ ২ব ৪মা ৪ শু ৪ব ২ আ ৬ শু ২ ব ৬।

বুধবারে আ ১০ শু ২ব ৪ আ ৪ শু ১০।

গুরুবারে শু ২ আ ৬ শ ২ব ৪ শু ২ আ ৬ শূ ৪ আ ৪।

শুনবারে আ ৬ শু ২ব ৪ শু ৬ আ ৬ শূ ২ আ ৪।

শনিবারে শূ ২ আ ২ব৮ শু ২ আ ৬ শূ ৪ আ ৬।

মতান্তরে অস্য প্রমাণ যথা। মাহেন্দ্রে বিজয়ে। নিত্যং অমৃতে কাৰ্য্যশোভন । বক্তে কাৰ্য্যবি-লশ্বঃ স্যাচ্ছন্যে চ মরণ গ্রুব ।। বৈশাখাদি আবণান্ত একভা-বেন সংবহেৎ। অমৃতাদি দিবা রাত্রো চতুর্মাস যথাক্রম ॥ यागमान दिवामातन द्वाम मन र्वव यामरक। ७९ श्रमार्गन জ্ঞাতব্য॰ দণ্ডমান॰ বিচক্ষণৈঃ।। রাত্রিমান প্রমাণেন জ্বেষো দণ্ড প্রমাণকঃ। ন বার তিথি নক্ষত্রণ ন যোগ করণ তথা।। শিবজ্ঞা-न मगामामा गर्ब गूनि र्तिहा-রয়েৎ। তথা ভাজাদি মার্গপ-र्वाख॰ मथवादा मगानित्य ॥ भूना वकामिरवागः हि लोवामि চৈত্ৰত স্থপা। ইতি জ্যোতিষ্ শিবজ্ঞান ।। 🛊 ।। অনেক প্রকা-র শিবজ্ঞান শিবাজ্ঞা শিবা-লিখিত অমৃত্যটী চ দৃষ্ট কিন্ত পরস্পর মনৈক্য জাত ॥ শিবভাভিঃ স্ত্রী কল্যাণকারিণী ৷ ইতি হেমচন্দ্রঃ।। অস্য প্র্যাষঃ শিবকরশব্দে জঠবাঃ॥ **गिवमलः क्री विक्**ठकः। ইতি क्टि ॥ भिरवन भिवाय वा

मख॰ खवायां वश्रा **र्णियमांक क्री** (प्रयमांकवृक्तः । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। निवमृ छिक। जी माज्कावित्नसः । इंडि नकत्रज्ञावनी ॥ निबमुठी जी मूर्गा। दे छ विका-अल्बरः ॥ त्याभिनीवित्वरः । दशा उन्नां शेथमा श्रीका ভতো মাহেশ্বরী পরা। কৌমা-त्री देवकवी टेठव वाताशी शक्त्री **७था ॥ नात्रिंगःशै ठरेथरेवन्त्री** निवकृषी जशास्त्री। अजाः शू-क्या बहाजागा (याशिनीः का-यहासिनौः ॥ তम्या उरशिख यक शानामि यथा। किरिका হদবাদেবী নিঃসূতা ধ্যানতো হরে: । শিবদূতীতি বিখ্যাতা শিবাশতসুস্তা। মন্ত্র মস্যাঃ थवनगामिनम् कामार्थनायकः। ষৎ প্ৰামাণকো মাতি দুৰ্লভ দেৱী শিবদূতী শিবান্মিকা । ন চিরালভতে কামানরঃ সর্বজ-ষীভবেৎ।। অন্তঃ সমাপ্তি স-हिटा विम्बुन्यूजा॰ मनावता । স্বরেণ পাস্তা দস্তোন সংস্ফো १८छन शूर्वमः ॥ म এव विन्यू

यूगन भूर्वत्शभाखाः भावकः । यश्चेत्रत कलान्दिनाः मःहिनः अ थमञ्ज्ञः ॥ मट्डा २वण लिवमृ-ত্যান্ত শিবদূতী জবপ্রদঃ। ৰপ यमा। अवकापि भूग् बर्जक म॰मङ॰ ॥ ठजुर्जुङ महाकाय॰ निन्द्रनम्नमूछि । त्रकम्ड॰ मूखमाना-जिंगजूरी किटल मूक्।। নাগঙ্গুল হারাভ্যাণ শোভিত• नथरताब्द्रल । वाष्ट्रहर्मभद्री-शानः पिक्टन मूल ठक्ष्र् ॥ वादम लाम ज्या हम् विज्रुमृद्ध পরিক্রমাৎ। कृतरकुष भीरमा-ष्ठे॰ जूजमूर्जि॰ जर्मत्र॰ ॥ निकि-প্য দক্ষিণ পাদ সন্তিষ্ঠেৎ স্বণ পোপরি। বাষপাদ শুগালস্য পৃষ্ঠে ফেরুশতৈ ई छ । ঈদুশ শি-वमृञाञ्ज मृद्धि शारमिञ्चरम ।। धानगाबाम्र थेण्या नदः कन्।-न याश्या ।। भृजनामित्राटकः বী সৰ্বান্ কাৰান্ দদাতি চ !!!!! यः निवाविक्र ७ थण्डा निवमृ তী॰ শিবপ্রদাণ। প্রণমেৎ সাধ-কো ভক্ত্যা ত্স্য কামাঃ করে স্থি-তাঃ ৷৷ যদা জ্বান জগতা প্লক্ত-বীজ হিতাষ বৈ। মহাদেবী ম-श्वाया जनामाः कायणः मृखा।।

দূত প্ৰস্থাপৰামান শিব গুৱাৰ সাধিকা। তেন সা শিবদূভীতি **प्टिंवः मर्दिः अगीयरछ।। रक्**य-ৰুৱী চ শাস্তা চবেদমাতা মহো-मद्री। कदाना का यमा (मदी छ-गामा जगमानिनी ॥ जरगामत्र ভগাহারা ভগজিহ্বা ভগা তথা ৷ এতা দাদশ যোগিন্যঃ পূজনে পরিকীর্তিতাঃ।। এতা ছাদশ र्यागिनाः शिवमृजाः मदेवव हि । विष्ठत्रिष्ठि चय॰ मिती यदा य-ত্ৰৈব গচ্ছতি॥ ইতি কালিক।-পুরাণে উত্তরতন্ত্রে ৬০ অধ্যায়ঃ ।। প্রমাণান্তর বাবনে ৫৩ व्यक्षात्य मार्कट खयनू वाटन दमवी-মাহাত্ম্যে ব্ৰক্তবীজবধাধ্যাৰে চ **जरुवा** ।। लिवक्रमः भू विवव्कः। इंडि त्राजनिर्घकेः॥

রাজানবন্টঃ।।
শিবদ্বিষ্টা স্ত্রী কেতকী। ইতি
রাজনির্ঘন্টঃ।।
শিবধাতৃঃ পু॰ পারদে। পারদে
শিববীর্ঘাণ স্যাদিতি দর্শনাৎ।।
গোদস্তমণিঃ। ইতি কেচিৎ।।

শিবনাভিঃ পু॰ শিবলিঙ্গবিশেষঃ
। যথা ৷ উত্তম॰ মধ্য মধম॰ ত্রিবিধ॰ লিঙ্গ মীরিত• ৷ চতরঙ্গল

मूर्टनर्व त्रगादिकि मूंखना। উত্তৰ লিম ৰাখ্যাক ৰুনিভিঃ भाजित्काविदेनः। छन्नकः मध्यमः (थाक छम्ब मधम स्मृत्या। শিবনাভিমৰ লিক প্রতিপ্ का बर्गिजिः। (अर्थक नर्वनि-**দে**ভ্য স্তন্মাৎ পূজ্য বিধানতঃ ॥ इंडि वीत्रमिट्यां मयः ॥ শিবপুরী স্ত্রী কাশী। ইতি হেম-**जिल**ः ॥ শিবপ্রিয়ণ ক্লী রুড়াক্ষণ। ইতি त्राजनिर्घण्डः ॥ शिवमा श्रिय-खर्वा बि ॥ শিবপ্রিয়ঃ পু॰ বকবৃক্ষঃ। ইতি किंगितः ॥ ऋिकः॥ श्रुतः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। निवथिय। जी मूर्ग। देखि नक-याना ॥ শিবমল্লকঃ পু॰ অজুনবৃক্ষঃ।

ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ৷৷

त्राक्रनिर्घन्छेः॥

यद्भः ॥

শিবমল্লিকা স্ত্রী বসুকঃ ৷ ইতি

শিবমল্লী স্ত্রী বকবৃক্ষঃ। ইত্য-

শিবরসঃ পু্ ত্রাহাৎপর্যাবিত-

त्रमः। ७९ পर्य। ग्रह्मा व्यक्ता प्रक-

कः २। जमा छनाः। मीननषः।

मन्द्रके । अज्ञव । अन्ग्राह-मच । नम्जर्भभूष । ইতি द्रार्ज-विर्वन्तः ॥

निवदािकः जी निवर्ण्यमेगी। वश कालगाधवीत्य कात्म ना-পারপণ্ড॰। মাঘমামস্য শেষে ধা প্রথমে কান্ত্রনস্য চ। ক্লকা চত্-किनी मा जू निवदािकः अकी-ৰ্ভিতা।। অত্ৰৈকস্যা স্তিথে শ্মা-शीयक काञ्चनीयटक मूथा भीव বৃত্তিভাগি অবিরুদ্ধে। ততস্ত মাঘ্যনম্ভরা চতুর্দ্দশী শিবরা-ত্ৰিঃ তস্যা মুপৰাসঃ প্ৰধান । न कारनन न राखन न शृर्भन न চার্চকা। তুষ্যামিন তথা পুলে ৰ্যথা তত্ত্ৰোপবাসতঃ।। ইতি শ-क्रिंगिटकः ॥ । । क्रांटकः । ठ-তো রাত্রো প্রকর্তব্য শিবপ্রী-नम जर्भरेतः। श्रह्रतः श्रह्रत স্নান পূজাকৈব বিশেষতঃ।। <u> चव दीकाया अर्त्रह</u>्क्यमाधा॰ ত্রত প্রতীয়তে। নরসিংহাচা-ৰ্য্যধৃতেশ্বরসংহিতাযা । শৈবে। वा देवकदा वानि या वा मा-मना शृष्क कः। मर्बः शृष्का कलः इ ि भिवता वि विश्मू थे ।। #11 मञ्च मत्र अमिला। मृत्यान अथ-

य जान पत्रा टेव्स विकीयदर । **Б ज्याद्यान हजूद्य म**-थना छथा।। ज्ञेशान मःहिजासाः। मार्य क्षकार्ज्यमा। दविवादा যদা ভবেৎ। ভৌমো বাগি ভবে-দেবি কৰ্ত্ব্য ৰত মুক্তম ।। শিব-**ৰোগস্য বোগেন তম্ভবেদুম্ভনো**-ত্তমণ। শিবরাত্তিব্রভণ নাম সর্ব . পাপ প্রণাশন ।। আচাঙাল মনু ষ্যাণাণ ভূক্তি মৃক্তি প্রদাযক। নাগরখণ্ডে। উপবাসপ্রভাবেন বলাদপি চ জাগরাৎ। শিবরা-ত্রে স্তথা তস্য লিম্মস্যাপি প্রপূজ-যা।। অক্ষান্ লভতে লোকান্ निवनायुका याश्रया । शास्त्र। वर्ष वर्ष यशासिव नद्या नात्री পতিত্রতা। শিবরাত্তৌ মহাদেব॰ কামণ ভক্ত্যা প্রপুক্তষেৎ ৷৷ ঈশা: নসংহিতাষা । এব মেব ব্ৰতং 🦫 ৰ্ব্যাৎ প্ৰতি সম্বৎসর বতী। দা-দশান্দিক মেভদ্ধি চতুৰি শান্দি-क॰ তथा।। সदीन् काबानवादशा-তি প্ৰেত্য চেহ চ মানবঃ ॥ 🛊॥ ट्याजिधृ जा स्रृज्धिः । श्रदणाय-ৰ্যাপিনী গ্ৰাহা শিবরাত্তি চত্-र्फगी। श्रामाय मार वर्मः। श्र-**प्लारका २ खमरा मूर्जु॰ वर्षिका बर**

निवारक। छेकु मनखतः। वावृत्रः त्रात्। बत्यापनास्था मृत्या ह-তস্মপি নাডিষু। ভূতবিদ্ধা তু যা তত্ত্ব শিবরাত্তিব্রত ঞ্বরেৎ।। ঈশানসংহিতাযা । মাঘে ক্ল-ठजूर्भगा यानितात्वा यशानिभि । শिवनिष्ठ दशाष्ट्र ७: क्लं िमूर्या मगপ्रजः ॥ जৎकान गाणिनी গ্রাহা শিবরাত্তি ব্রড়ে তিথিং ! व्यक्ततावामध व्याकृ युका यव **ठजूर्फभी ॥ रागश्चा मा मृभाट्य य-**স্যাণ ভস্যাণ স্ব্যাদ্ভুত নরঃ। অত্র মহানিশা দ্বে ঘটিকে রাত্রে र्यधाम यामत्याः ॥ ইতি দেবলো-ক্তা মহানিশা আছা। যটিকা একদণ্ডः। এবঞ্চ यन्तित्न अपाय निनी(था ७ यवगि भनी । ठ जूर्ननी তদ্দিনে ব্রত উভষ ব্যাপ্ত্যনুরো-शा । कालमाधवी (यरणावः। এ-তেন পরদিনে উভযব্যাপিত্বেপি পূৰ্ৰদিবসীয় ব্লাত্তি দ্বিতীয় যাম প্রভৃতি চতুর্দশী সত্ত্বে বহু প্রহর ব্যাপিত্বেন পূৰ্বদিন এব ত্ৰত মিতি नित्रखः। यमा जू शृर्दम्य निभीष माज वाशिः शतमाः अताव बाजवाशि खमा भूर्वमा वंजः। প্রধান কালব্যপ্তানুরোধাৎ। পূ-

क्राकिः निर्वाधितस्य विकृतिक हरत। अवसी निवस्तानिक कार्या क्रवज्ञातिक। अपनाननाः वि भारत छन्। नर्गाफ भारतः॥ छि-पादक भावन क्यकी माजभन वा ठ्यूमिंगा त्स्व छ्या उका-द्यापत्र मत्या जु गानि जीर्थानि गिंख देव । शुक्रिणानि जनखीर **ज्**ठारा॰ शाद्धश्य क्रख ॥ रेडि कालार। दिनमान अगादनम् स षू त्रात्बो छजूर्मनी। निरताबिन्ह मा ब्ह्यको हजूर्मभाव भादन ॥ ইভি গৌতনীৰাক। ৰদা তু পূৰ্ব-मिटन म निनीथना खिः शत्रमिटन धालार याव सामिनी छन। भन्ना আছা। প্রদোষ ব্যাপিনীতি প্রা-শুক্তৰাৎ তিখে ব্ৰিসন্ধা ব্যাপি-স্থাক ৷ এতিৰিষৰ এব লিকপুৱা-ণ । শিবরাত্তিক্তে ভূতা काम-विकाः विवर्कत्व । अक्टेन्काः णा नारभेश्रि स्व भारभः। जा सहित्रो संस्कृति

। शश्यक्त स्थापन न बार निर्मादन काशिमी क्रमूर्य नी शक्तिन उठ । बहा जू शूर्वमू निनीध रामनिनी, शर्बमूः श्राप्ताय माख वाशिमी छना भूदंनमु उंछः। यमा जू न পূর্বেদ্য বিশীথব্যান্তিঃ পরেদ্যুঃ अल्यां वा शिनी छमा भन्नमिटन। শারণত্ত পরদিনে চতুর্দশী লাভে **हर्जनाः** जनगटि जगावगाः बाः। जब थरबाभः ॥ ।।। थाज-क्रमग्र्यः ७९ मिल्लाकार्या मूर्याः **लाब ३७ १**छिषा जनामीनाा-कार जैनकारम् । यरतनारनन गृ-द्वीयानियय॰ जिंक मानतः । निबद्रांबि बङ एष्टब् कद्रिया **२**ह॰ बहाकन॰। निर्दित्र मञ्ज य চাত্ৰ ছৎ প্ৰসাদাজ্জগৎপতে।। इंडि निवब्रह्म्या निवबाबि है-खालिक। निषया। ठजूर्मभाः नि-রাহারো ভূষা শস্তে। পরেহনি। ভোক্যেহ ভুক্তি মুক্তার্থ শরণ

মে ভবেশ্বর ॥ ইতি গরুডপু-। वानीय॰ পঠে । तात्वी व्ययम-প্রহরে প্রতিষ্ঠিতে নিচে শ্রা তিষ্ঠিতে বা প্রতিষ্ঠা বিধাৰ পূ-का॰ अर्गा । दशे जाता क-**ডিভি পাদ্যাভত্তবেশ বিশামিঃ**-मार्था তেনৈব ভালত্রেশ কর-ছোটिকষা চ দশদিधन्न-कृषा **ज्**ठ छिकि॰ विशाय शा॰ शामाय नग हैजामिना विष्णानि नामा হোঁ ইতি মন্ত্রেণ প্রাণাযামণ বি-थाय भृज्रत्य । भार्थितिवादक চেত্তদা বক্ষমাণ পূজাবিধিনা পূজ্যেৎ। তত্রায়ণ বিশেষঃ। হোঁ ঈশানায ন্য ইতি প্রথমপ্রহ-রে দুগ্ধেন স্বাপষিত্বা পুন জলেন স্নাপযিত্বা। শিবরাত্রিত্রত . দেব পূজা জপ পরাষণঃ। করোমি বি-धिवज्जिः गृशांशार्गः यरम्बत् ॥ ইত্যনেনাৰ্য্য দত্বাগদ্ধাদিভিঃ সং-পূজ্য মূলমন্ত্ৰণ জপিত্বা প্ৰণমা গী-ত নৃত্যাদিভি স্ত প্রহর নষেৎ। তদ্যান তব্দুপঃ স্নান তৎ ক-था व्यवनामिकः। উপবাসক্রতৌ ছেতে গুণাঃ প্রোক্তা মনীষিভিঃ ॥ इंछि দেবीপুরাণে সামান্যতঃ শ্রবণাৎ অত্যাপি তথা ॥ 🛊 ॥

षिठी रथहरत जु वित्मयः। इसे व्याताच नमःहैि एका वानरा वर्गगढ । यमः निराम भाउन-व नर्गान रहार छ। निवर्धा-ख्बी नमानाक अनीन छन्या नह ॥ ।। ज्जीर अश्रत जू। रही বাৰৰেবাৰ নক ইতি মূতেন না-नः। अर्कावञ्चन्तां पृत्थं पातिजा **ल्गारकन मरकारः गार्वजीश्रत** । भिक्तात्वो प्रमागर्याः यूगाका छ शृह्य । । ।। ।। ।। । । ।। ।। ।। होँ मामाजाजाय नम देखि य-थूना जानः। अर्घमञ्जस्य । यरा ক্নতান্যনেকানি পাপানি হর শ-कत्र। निवतात्वी ननागार्याः উगा-কান্ত গৃহাণ মে।। ততো নমঃ শি-বায় ইতি মূলমন্ত্রণ জপিত্বা প্রভা-তে श्विष्मन हेजानि वकामान मजान् भटिष्। ज्या ह ग्रक्षप्र-রাণা। মূলমন্ত্রণ ততো জপ্তা প্র-ভাতে তৎ সমাপ্তেৰ । অবিদ্বেন ব্ৰত দেব ত্বৎপ্ৰসাদাৎ সমৰ্গিত ৷৷ ক্ষমস্ব জগতা নাথ ত্রৈলো-ক্যাধিপতে হর। যন্মযাদ্য ক্রত॰ পুণ্য॰ তক্রজস্য নিবেদিত ।। ত্বৎ-প্রসাদাম্যা দেব বত মদ্য সম: পিতে। প্রসন্মো ভব মে শ্রীমন

মভূতি প্রতিপদ্যতা ।। স্বদালো-কন মাত্রেণ পবিক্রোম্মি ন সংশ-यः। भद्रमिस्त बाषागान् ভाज-ষিদ্বা চতুদশীলাভে তত্ৰ তদলা-ভে অমাবস্যাষা পারণ সর্ব্যাৎ । তত্র ৰম্ভ:। সংসার ক্লেশদক্ষস্য बर्जनात्नन मक्त अनीम जूम्-त्या नाथ ज्वानमृद्धिश्रामाः ज्व ॥ # ॥ # ॥ छ्व भार्थिव भिव-লিঙ্গপূজা বিধিঃ ৷ তত্ৰ শিববা-का॰ काल्म। विश्रमा ज् मरेन-बार॰ खरा तथा खरा तथा। गृ-इन् विन॰ প্রভ্ষ্যামি বিপ্রাণা गिव मर्ननाथ ॥ विनः शृङाः। তথ। । শূজঃ কর্মাণি যো নিভাণ স্বীৰানি সৰুতে প্ৰিবে ৷ তদ্যা-হ মঠা গৃহামি চন্ত্ৰ ভবিভূ-ষিতে ।। তথা। ৰমোভেন শি-त्वरेनव खीनाः शृक्षा विधीयए । এবকারেণ প্রণব নিবৃত্তিঃ। এব॰ শূজস্যাপি । তথা নৃসিত্তাপ-नीट्य । मारिजी॰ श्रन्त राजू वंशी॰ जी मृज्या व्यक्ति। नाविजी॰ প্রণবং राष्ट्र विश्वी॰ औ भृत्का यि कानीयाद म मृत्छा-২ধো গচ্ছতি ইতি। নেছন্তিপ-ৰ্য্যস্ত- পৰাশরভাষ্যেপি লিখিত

। গোবিন্দভট্যমৃত । স্বাহা প্রণব मञ्बूकः भृष्य यञ्चः मनिष्युकः। भूटका नित्रम मारक्षां वाकनः भू जा वियाय ॥ 🗱 ॥ त्री जमः । त्राजातूमश्रूथः कर्गाः देनवकार्गः मरेलव हि। शिवार्कन॰ मनारशा-वः अहिः अर्याानूनश्र्यः ॥ मना **मितातात्वो। जब एक् भार क्र-**দ্রধামলে। ন প্রাচী মগ্রতঃ শস্তো নোদীচী শক্তি সংস্থিতা । ন প্রতীচীণ ষতঃ পৃষ্ঠ নতো দক্ষণ স-**মাশ্রবেৎ ।। यक्त्रानः শ**ম্ভোঃ প্রাচী মুবস্থিতবে ন স্বাশ্র্যেৎ শড়ো র্জগৎসংহারকস্যাগ্রতঃ मा॰मुबाा । शक्षवकुशक श्र-ধান ককুণ প্রাচ্যবন্থিত। এক-বজ্রুপক্ষে সুতরা তথা। তজ-প মাহ ভবিষ্যপুরাণ । সৌম্য मोनीमूज्य वाक वक्वजुः চতুভুজ । শিবৰাপ গৃহে স্ব-ষ্যাৎ প্রাসাদে বাগ্যনিন্দিত ॥ অত্রাত্রে পূজা নিষেধাৎ দেবা-গ্রেম্বস্য চাপ্যত্রে প্রাচী প্রোক্তা গুৰুক্ৰথৈঃ। ইত্যস্য ন বিষ্যঃ। किंखु जिशानामि श्रीमक्षा श्राही গ্রাহা। এতদনুসারাদ্বক্যমাণ পূ-ৰ্বাদ্যাগেষ্যন্ত পূজা। অতএব ত-

স্ত্রাম্ভর । যত্রৈর ভানুম্ভ বিষ-ত্যুদেতি প্রাচীতি তা॰ বেদবি-দো বদস্তি। তথা পুরঃ পূজক পূজ্যযোশ্চ সদাগমজ্ঞाः প্রব-দন্তি ভান্ত ৷৷ এবঞ্চ দেবতান্তর পূজা পূৰ্বায়ে প্ৰাগ্নুখেন সায় পশ্চিমাভিমুখেন রাত্রাৰুদল্পথে न कार्या। आक् अन्तिरमामगा-সাস্ত প্রাতঃ সায় নিশাসু চ। ইতি বচনাৎ।ইতি বাচস্পতি মি-শ্রাঃ। মৈব॰ পূজ। রত্নাকরোক্ত ভবিষাপুরাণীয় সপ্তাক্ষর সূর্য্যমন্ত্র প্রস্তাব এব প্রাগাদি দিঙ্নিষমা-ভিধানাৎ। ব্যবহারোপি অত্র ন তথেতি।।ঞ্চা লিঙ্গপুরাণে। বিনা-ভস্ম ত্রিপু:গুণ কিনা রুদ্রাক্ষ মা-লযা। পূজিতোপি মহাদেবো ন माजिमा कनश्रमः ॥ जन्माम्मा-পি কৰ্ত্তব্য ললাটেপি ত্ৰিপুঞ্ক । निमि पूर्वारम। आयुग्रान् त्न-वान् श्रीमान् श्रूखवान् धनवान् मूथी। বর भिष्ठे॰ লভেল্লিঙ্গ॰ পা-र्थिव॰ यः जमक्रीय ।। जनाजु পাर्थिव॰ लिङ्ग॰ एडड्म॰ म्बार्थ मा-थकः। ভবিষ্যে। मृद्धन्त्र रंगान-ক্লৎ পিও তানু কা স্যম্য তথা। ক্তব। লিঙ্গণ সক্তৎ পূজ্য বসেৎ ক-

দ্বাযুত দিবি।।।।। বাৰ্ক বিত্তপ্ৰ-म॰ लिक॰ क्लांडिक॰ नईकामम॰। नर्मामागितिकः (अर्थ मनामि हि লিঙ্গবৎ।। লিঙ্গবৎ লিঙ্গাকার । कालको भूमा। अकामन भरी-गांग न नित्र अखित दुः। अबी-**ाक्रुंटा इ्य॰ न कमाहि** म-মাচরেৎ।। অকো ২শীতি রক্তি-ক।। অঙ্গুপ্তঃ বৃহৎপৰ্বগ্ৰন্থিতঃ। অঙ্গৃষ্ঠাঙ্গুলিমানম্ভ যত্ৰ যত্ৰোপ-দিশ্যতে। তত্ৰ তত্ৰ ৰৃহৎপৰ্ব গ্ৰ-श्चि मिन्या मा। ३७ इ-टनागनित्रिंगिको । गित्रधर्य । मर्मु मर्फरमिन्न नित्रय म न গচ্ছতি। রুদ্রলোক মবাপ্নোতি ভুজুা ভোগাননুত্রমান্ ৷৷ তথা वामुकानि ह निकानि मश्रुानि ह কার্যেৎ। সহসু মর্চনাৎ সো-পি লভ'ত ৰাঞ্ছিত ফল'॥ তত-শ্চামুকতিথা বারভ্যামুক লাভ কামঃ সহসু মিত পার্থিব শিবলি-ঙ্গ পূজন মিতি যথাস্থানে বাক্যে त्व ।। क्षा बक् भूतारण। यावन-দীযতে চার্য্য ভাস্করায নিবেদি-ত । তাবন্ন পূজ্যেদ্বিষ্ণু শক্ষর। বা মহেশ্বরী॰ ॥ রাষবভটধৃত॰ । সৰ্বত্ৰৈব প্ৰশস্তোজঃ শিব সূৰ্ব্যা-

ৰ্চনং বিনা। অক্তঃ শথ্যঃ। অগ্নি-পুরাণে। তলিকৈঃ পূজ্বেমন্ত্রঃ भई (मवान् शृथक् शृथक्। शाषा প্ৰণৰ পূৰ্বস্ত তলায়া সুসমাহিতঃ ॥ नमकारतन नरखन भूम्मानि वि-नारमः १ १ १ १ । । (परी भू-রাণে। মৃদাহরণ সংঘট প্রতিষ্ঠা-হ্বান মেব চ স্নপন পূজনকৈব বিসর্জ্জন মতঃ পর়ং ৷৷ হরো ম-হেশ্বর শৈচব শূলপাণিঃ পিনাক-ধৃক্। পশুপতিঃ শিবশৈচব ম-হাদেব ইতি ক্রমাৎ।। অত্র পূ-ৰোক্ত সপ্তকৰ্মাণি পরবচনোক্ত সপ্তনামভিঃ ক্রিযানুৰূপ বিভক্তি-यक्ति र्यथायथः कार्यानि । जान्-कीर्थरया तर्थकमामस्टर्यन भार्र-ক্রমাদেব আবাহনাৎ প্রাক্ প্র-তিষ্ঠা প্রাক্ষে স্পাসন দানবৎ ॥ 🗰 ॥ তত্রানুষ্ঠান । হরাষনম ইতি মৃদাহরণ মহেশ্বরায়নম ইতি সং-ঘটন শূলপাণে ইছ সূপ্র তো ভব ইতি প্রতিষ্ঠা। ধ্যাষেদ্রি-ত্য মিত্যাদিনা ধ্যাত্বা পিনাকধ্ক্ ইহাগচ্ছ ইত্যাদ্যাবাহন পশুপ-তবে নম ইতি শ্বপন এতৎ পাদ্য নমঃ শিবাষ নম এব মর্ঘ্যাদিনা शृक्रवि । विमर्क्कना शृर्वः छ-

বিয্যপুরাণোক্ত॰ স্বভাবসিদ্ধ প্রা-टेठामानामि मिक्कू वामावर्खन পূজন । যথা। সর্বায ক্ষিতি মূ-र्जरय नमः। ভवाय जनमूर्जरय नगः। ऋजाय अधिमूर्खरयनमः। উগ্রাষ বাযুগূর্ত্তবে নমঃ। ভীমায আকাশমূর্ত্তযে নমঃ। পশুপত্যে যজমানমূর্ত্তবে নমঃ। মহাদেবায সোমমূর্ভ্রযে নমঃ। ঈশানায সূ-र्यामूर्खरय नमः। मूर्खरयारको भि-বলৈয়তাঃ পূৰাদি ক্ৰম যোগতঃ। আগ্নেযান্তাঃ প্রপূজ্যা স্তা বেদ্যাণ লিঙ্গে শিব॰ যজেৎ ॥ ততো মহা-দেব कमय ইতি সংহার মুদ্রযা विमर्करव ॥ 🛊 ॥ निक्शूताल । গো ভূ তিল হিরণ্যাদি বলি পুষ্প নিবেদনে। জ্ঞেযো নমঃ শিবা-ষেতি মন্ত্ৰঃ সৰ্বাৰ্থসাধকঃ ৷৷ সৰ্ব-মন্ত্রাধিকশ্চায মোক্কারাদ্যঃ ষড-ক্ষরঃ তন্মন্ত্রজাপী তৎকর্মারত স্ত-দাত্যানসঃ। নিষ্কামঃ পুরুষো রাজন্ স ক্লেজপদ মশুতে।। ভবি-ষ্যে পঞ্চাক্ষর মুপক্রম্য। অপবিত্রঃ পৰিত্ৰো বা সৰ্বাবস্থা• গতেগপি বা । মহাপাতক যুক্তো বা মন্ত্রস্যাস্য জপে स्था।। অধিকারী ভবেৎ স-ৰ্ৰ ইতি দেবে। খ্ৰবীচ্ছিবঃ। ইতি

তথেত্যৰ্থ:। পূৰ্বোক্ত বথা পদা-नू द्वाशा । एक यथा विकाती ভবেত্তথাত্রবীদিতার্থঃ। তথা স[‡] র্বেয়া মেব পাক্রাণা পর পাত্রণ মহেশ্বঃ। পতন্ত বাষতে ৰশা-पठीव नतकार्गवा ।। शिव मुक्ति-শ্য যদত্তে সর্বকারণ কারণ ত-দনস্ত ফল দাতু ভ্ৰতীৰ কিম-खुळ ।। मञ्चा देनद्वमाः, वज्जामि ना-দদীত কদাচন ত্যক্তব্য শিব্ৰু-फिन्ग जनामात्न न **उ**९कनः ॥ আদানে গ্রহণে। শিবধর্মে। ত न्या ९ शूटेनाः कटनः भरेत खारेय तिशि ह यद कलः। जननञ्ज कलः জ্ঞেয॰ ভক্তি রেবাত্র কারণণ।। ভ-विरया। निकानुरनभनः कार्याः **मिवागदेक्षः मूगिक्कि जिः। वर्षदकाि** শত॰ দিব্যং শিবলোকে মহীৰতে ।। भित्ररार्ध । जन्मा १ भूम श्रान নেন লিকেষু প্রতিমাসু চ। জ-भौजिवर्यकाषीनाः मूर्गिजः न न-রো ব্রজেৎ।। স্কান্দে। শুদ্ধাণ্যপি চপত্রাণি এবৃক্ষস্য সদৈব হি। দা-তব্যানীতি শেষः। ভবিষ্যে। धू-खूत्रदेक क या नित्र का महत्र शुक्क व-তে নরঃ। স গোলক ফল প্রাপ্য

त्र**शरेखम्ह रया लिकः शृक्ररय**ः मः क्र । नई भारे भ तिनिम् कः निव-लात्क मरीया ॥ ७था मर्दकाम-क्षान विव नार्विष्ठामा क्षनानव । বিশ্বপত্তাৎ পর নান্তি যেন তু-ব্যক্তি শবরং ৷৷ তথা কেশ কীটা-পৰিক্ষানি নিশি পৰ্যুষিতানি চ। স্বয় পতিত পুস্পাণি তাজেদুগ-হতানি চ।। তথা দেবদারু সমে-তঞ্চ সৰ্জ্জ শ্ৰীবাস সম্পুরুণ্য শ্রীফলণ চাজামিশ্রন্ত দহাগোতি পরা গ-ভি॰।। সৰ্জ্জঃ শাল রসঃ। শ্রীবাসঃ म्द्रवाखवः। अन्यूकः टेनटवायः। এভ্যঃ সৌগন্ধিক धूপ ষট্সহ-সু গুণোত্তর । অগুরু শতসাই-সু॰ দিগুণ ঞাসিতাগুরুণ। গুয়ুলু॰ যৃতসংযুক্তণ সাক্ষাৎ গৃহ্লাতি শ-ৰর:।। তথা। তৈলেনাপি হি (या मम्ग्रां युकाकाद्यन मानवः। তেন দীপ প্রদানেন শিববডাজ-তে জুবি।। নন্দিকেশ্বরে। অথ ख्का भिव• शृका देनदवना **मू**श-कब्रायथ । सम्बत्तवाद्यनः ध्याय , खबनी भाष कब्रदेष ॥ भावि छ-खून शक्ता कर्गामबः नूनःकृ-**७**॰। শিবাষ ७॰ চরু॰ দদ্যাৎ চ-जूर्मभागः वित्मवजः ॥ अवस्मानं

প্ৰাণ্ডক । শিবসৰ্বৰে ক্ষান্দ । এক যামুকল পৰু ৰঃ শড়ো र्तिनिदम्पर्कः । त्रशांशा मयूजः ভোগেঃ ক্রীড়তে স শিবে পুরে া৷ এক নোচাফল গৰু যঃ শি-वाय निर्देषरयः । वर्षणकः छ-থা ভোগৈঃ শিবলোকে মহীযতে १। निवभूत्रात्व । देनदनगुः घृठ ज'युक्क मधुलकं निर्वतरार । व्यक्तिसमा यखमा कल मा-প্লোতি মানবঃ।। শিবসর্বস্বে স্কা-ন্দ । পরিপঞ্চ সুস মৃষ্ট মাজ্য-সিক্তণ সুসণ্ফৃত। শিবায মাণ-म॰ मन्ना जू मृगू यद कल मानुसाद ॥ ज्राम्य कनपात्नन य्रकन পরিকীর্ত্তিত । তৎফল প্রাশ্ব-যামিত্য সূর্ব মাণ্স নিবেদনাৎ १। निवशर्सा । निऋदनी ভदन-क्ति विक नाकार महत्रकः। छरवाः मण्यू जनाय माजाः प्रती **(मवन्ड शृ** कित्छो ॥ (मवीश्रु রাণে। সব্য প্রজেত্ততো ২সব্য প্রণাল रेनव मञ्चरायः। এकी जृज्यना क्रटा यः अर्याखिः अनिक्न ॥ ছিন্ন স্তেন ভবগ্ৰন্থি ন তদ্য পুন-क्रष्डवः ॥ ভবিষ্যে। জान्जा॰ টের পাণিভ্যাণ শিরসা চ বিচক্ষ-

नः। क्रश्र अनामः प्रतिरंग गर्नान् कामानवाश्रुया ।। वित्रभूताल । गन्न भूष्म नमकादेत मू थवादेना-শ্চ সৰ্বশং। যো মা মৰ্চ্চযতে তত্ৰ **उना जूयागारः** मना ॥ गराजा-त्र । मर्वनक्षशीताणि यूट्डा বা সর্বপাতকৈঃ। সর্ব॰ তরতি তৎ পাপ ভাবয়ন্ শিব মান্মনা ।। রাষ্বভটপৃত । অধােমুখে বা-**बहुए । जिल्लामाः नक**र्खकः १ किथु जूनी तेजूनी जिः मःगृश श-तिवर्डरंग्य ॥ (थांका मञ्जात म्-দ্ৰেষ মৰ্পণে তু প্ৰশস্তে। অৰ্থ-ণে আত্মনীতি শেষঃ। স্কান্দে। নিশ্মাল্য যোহি মন্তক্ত্যা শিরসা ধারবিষ্যতি। অশুচি ভিন্নবর্যা-দো নরঃ পাপ সমস্বিতঃ ৷৷ নরকে পচ্যতে ঘোরে ভির্যাক্যোনে চ জাযতে। বন্ধহাপি শুচি ভূ স্বা নির্মাল্য যস্ত খার্যেৎ। তদ্য **পाপ॰ महम्हीयु॰ नाग**यिखा महा-ব্ৰতে ।। শুচিঃ স্নানাদিনেতি শে-्यः। এवशः। न्यृश्वे। ऋषमा निर्मा-**ला॰ मतामा जाक्षुदः १७** हिः । ইতি कालिकाभूतानीय मश्वि विययं। অনুপনীত বিষয় মিতি শ্রীদত্তঃ। বহ্ন্ট গৃহপরিশিষ্ট । অগ্রাহু

निवरेनरवमा॰ शब् ॰ शून्भ॰ कन॰ कनः। भानधाम भिनाम्भर्गा । সৰ্ব॰ যাতি পবিত্ৰতা॰ ।। কালিকা-পুরাবে। যে। যদেবার্চনরতঃ म जदेवरतमा जक्रकः। रक्रवनः সৌর শৈবে তু বৈক্ষবো নৈব ভ ক্ষয়েৎ ॥ ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব ॥ 🗱 ॥ अनाका। बक्कावाह। भिव-রাত্রি ব্রত্থ বক্ষ্যে কথাঞ্চ সর্বকা-মদা । যথা চ গৌরী ভূতেশ পৃক্তভিন্ম পরু বত ।৷ শ্রীমহা-দেব উবাচ ৷ মাঘ ফাল্লনযো র্মা-ध्या या ह क्ष्मा हजू कि भी। जगा॰ জাগরণাক্রডঃ পূজিতো ভুক্তি मुक्तिमः ॥ कामगुक्ता इतः शृ-জ্যো দ্বাদশ্যা মেব কেশবঃ। উ-পোষিতৈঃ পূজিতঃ সন্নরকাতার-যেত্তথা।। নিষাদ শ্চাৰ্নুদে রাজ। পাপী সূদরসেনকঃ। স স্কু-রৈক সম্যুক্তো মৃগান্ হয় বনং গতঃ ৷ মৃগাদিক মসংপ্রাপ্য ক্ষুৎ-পিপাসার্দ্দিতো গিরৌ ॥ রাত্রৌ তডাগতীরে স্ নিঙ্গঞ্জে জাগ্রদা-স্থিতঃ। তত্রান্তি লিঙ্গং স্বং রক্ষ্ণ-রীর॰ চাক্ষিণততঃ। পর্ণানি চাপ-তমুর্দ্ধি লিঙ্গলৈয়ব ন জানতঃ ৷৷ তেন ধূলি নিরোধাষ ক্ষিপ্ত॰ নী-

त्रक्ष निष्टरक । भन्नः श्रमारमरेनक-স্তু প্রচ্যুতঃ করপল্লবাৎ।। জানু-ভ্যা यवनी॰ गषा लिक्र॰ न्न्यृकु। श्-হীতবান্। এবং স্থানং স্পান্ধ পুজন জাগরো ২ভবৎ ৷৷ প্রাত গৃহাগভো ভার্যাদন্তান্ধ ভুক্ত-বান্স চ। কালে মৃতো যমভটেঃ পাশৈ ৰন্ধা তু নীষতে ৷৷ ভদা মন গণৈ ধূদ্ধে জিয়া মুক্তীক্তঃ স চ । अक्रुत्रन मटेश्वाज्माला मर-পার্শ্বগো ২মলঃ ৷৷ এব মজ্ঞানতঃ পুণ্য জ্ঞানাৎ পুণ্য মথাক্ষয়ণ । जरगामगा। भिवः भूका क्या।-ত্তন্নিয়ৰ বতী।। প্ৰাত দেব চতু-र्फनगा॰ जाभितयाभारः निनि॥ পূজা॰ দান॰ জপ॰ হোম॰ করি-য্যাম্যাত্ম শক্তিতঃ। চতুর্দ্দশ্যাণ নিরাহারো ভূষা শস্তো পরেহনি ভোক্ষোহণ ভুক্তি মুক্তার্থণ শরণণ भ ज्यम्बत् ॥ भक्षमवाम्रिटः স্বাদ্বা অন্তকালে গুৰু শ্ৰিভঃ। ওঁ নুমোনমঃ শিবায় গন্ধাদ্যৈঃ পূজ-যেদ্ধরণাতিল তণ্ডুল ব্রীহীণশ্চ জু-হয়াৎ স্ব শৃত চরু। হত্বা পূর্ণাই-তি॰ দদ্যাৎ শৃণুযাদ্গীত সৎকথাণ ॥ অর্দ্ধরাত্রে ত্রিযামে চ চতুর্থে চ পুন ৰ্যজেৎ। মূলমন্ত্ৰণ তথা জপ্তা

যোর মদনাভিসূতো হরঃ। বি-

প্রভাতে চ ক্ষ্মাপ্যেৎ ৷৷ অবি-মেন ব্ৰত দেব ছৎ প্ৰসাদাৎ সমর্গিত । ক্ষমস্ব জগতা নাথ देवदनाकंगिंधभरक भिव ॥ यत्र-यामा क्रुं भूगा ७ फिर्ना नि-द्विषिकः। ष्टश्रमानायया (प्रव ব্ৰত মদ্য সমৰ্পিত ।। প্ৰসঙ্গো ভব মে শ্রীমন্ মালাৃহণ প্রতিগম্যা-তা ।। স্বদালোকন মাত্রেণ প-বিত্তোন্মি ন সংশযঃ। ভোজ্যে-क्याननिशेष्क वञ्ज ष्ट्यापिकः **मरम** ॥ रमवामिरमव जृरजभ লোকানুগ্রহকারক। যশ্বযা শ্ৰদ্ধবা দত্ত প্ৰীয়তা তেন মে প্রভুঃ ॥ ইতি ক্ষাপ্য চ ষতীন্ अ्था । जामन वार्यिक । कीर्डि **পুর**॰ বজেৎ ॥ দাদশস্বপি মা-সেষু প্রন্নর্যাদিহ জাগর । य-छीन् बामन मः भूका मीभमः यर्भ মাপুষাৎ।। ইতি গাৰুডে শিব-রাত্রিভকথা ১২৪ অখ্যায়ঃ ॥ निविषक की यशासवमा दनकः । তস্যোৎপত্তি, र्यथा। তত্তা नि शक्षां यमत्ना ममर्भ व्यत्कजनः। मृक्षे। अर्जुकात्मा २ गा ७७: म थो प्रविद्धाः ॥ ७८७। माक्रवन्

বেশ ঋষৰো যত্ৰ সগন্ধীকা ব্য-বস্থিতাঃ ৷৷ তে চাপি ঋষষঃ সর্বে । যুদ্ধ। নতাত্ত্বন্। তত্ত স্তান্ প্ৰাহ ভগবান্ ভিকাণ নে প্ৰতি-দীয়তা ।৷ তত স্তে মৌনিন স্তস্থুঃ পুণ্যানি পরিচক্রাম নারদ ॥ ত॰ थिविके छम। मृक्षे। जार्गवाद्वय ষোষিতঃ। প্ৰক্ষোভ মগমন্ সৰ্বা হীনসন্ত্ৰাঃ সমন্তভঃ ৷৷ ঋতে স্ক্ৰ-क्षठो यन। यनमूचाक जाविनीः ॥ এতাভ্যা॰ ভত্পূজাসু রুত॰ বৈ সুন্থির॰ মনঃ। ততঃ সংক্ষৃতি-তাঃ সৰ্বা যত্ৰ যাতি নহেশ্বরঃ।। তত্র প্রধান্তি কামার্ত্ত। মদবিছা-লিভেন্দ্রিযাঃ। ত্যক্ত্বাপ্রমাণি শু-ন্যানি স্থানি তা মুনি বোবিতঃ।। **अनुक्रभू येथा मतः** कतिग देव **ज्ञातः । जञ्ज अ**यरमा मृख्री ভার্গবাঙ্গিরসো মুনে ৷৷ ক্রোধা-षिणा क्वन् मर्स निष्मा १ मा পততা ভুবি। ততঃ পপাত দে-वमा नित्रः भृथीः विमात्रयः ॥ অন্তৰ্জান জগামাথ ত্ৰিশুলী নীললে।হিতঃ। ততঃ স পতি-তো निष्मा विश्वित वमू शांजन ।।

রসাতল ৰিবেশাশু ব্রহ্মাণ্ড চো দ্ধতো ২ভিনৎ। তত শচাল প্-থিবী গির্যঃ সরিতো নগাঃ ॥ পাতাল ভুবনাঃ সর্বে জন্ম নাজ-সমাঃ স্থিতাঃ। সংক্রান্ভুবনান্ मृख्रा ভূলোকाদीन शिठामशः॥ कगाम माधव॰ जकुं॰ कीटनाम॰ बाग मागतः। তत मृखु। स्वी-কেশ প্রণিপত্য চ ভক্তিতঃ ৷৷ উবাচ দেব ভুবনাঃ কিমর্থ: ক্ষু-ভিতা বিভো। অথোবাচ হরি र्जकान् भारत्। निरम। महर्षि जिः॥ পতিত স্তুদ্য ভারাত্তা সঞ্চাল বসুন্ধরা। তত স্তদন্ত্রময়ণ ঞা-ত্ব। দেবঃ পিতামহঃ ॥ ভত্র গ-চ্ছামি দেবেশ এব মাহ পুনঃ পুনঃ। ততঃ পিতামহো দেবঃ কেশবশ্চ জগৎপতিঃ ৷৷ আজ-গান ত মুদ্দেশণ যত্ৰ লিঙ্গণ ভবস্য তৎ। ততো ২নস্ত হরি লিঙ্গ দৃফ্টারুছ খগেশ্বর ।। পাতাল প্রবিবেশাথ বিম্মযাত্ত্বরিতো বি-जुः। बन्ना भग्न विगातन **उ**न्नु-माक्रमा गर्नगः॥ देनवास मनछ-দুক্ষা বিশ্বিতঃ পুন রাগতঃ। বিষ্ণু ৰ্গত্বাথ পাতাল সপ্তলোক পরা-ষণঃ ।। চক্ৰপাণি বিনিক্সান্তো

'लেভেন্ত' न गर्। गूर्तना विकु॰ পিতামহ শ্চাহ হরি র্বন্ধাণ মাহ চা৷ নমো ২স্ত তে শূলপাণে ন-মো হস্ত বৃষভধজ। জীমূত বাহ-न करव गर्व जायक भक्त ॥ य-হেশ্বর হরেশান সুবর্ণাক্ষ বৃষা-কপে। দক্ষযজ্ঞক্ষকর কাল র-ज नत्या २ इ ए ।। इयामि त्रगा জগত স্তু॰ মধ্য॰ পরমেশ্বরঃ। ভ-বানস্তশ্চ ভগবান্ সৰ্বগংস্তু॰ ন-মো হস্তু তে ॥ পুলস্ত্য উবাচ। এবং সংস্তৃষমানস্ত তিমান্ দারু-वत्न इतः। मूकशी जाविषः वा-ক্য মুবাচ বদতা॰ বরঃ ।। হর উ-বাচ। কিমৰ্থ॰ দেবতানাথৌ প-রিভূত ক্রমন্তিই ।। মাণ স্তবাতে ভূশাসুস্থ কামতাপিত বিগ্ৰহণ ৷ দেবাবূচতুঃ। তবাঙ্গপাতিত লি-ঙ্গুণ যদেতজুবি শঙ্কর। এতৎ প্র-গৃছতা ভূষ স্ততো দেব বদা-वट्श। इत उवाह। यमार्क्यस्त्र ত্রিদশা মম লিঙ্গণ সুরোত্তমৌ।। তদেত প্রতিগৃহীয়া নান্যথে-তি কথঞ্চন। ভতঃ প্রোবাচ ভগ-বানেবমস্তিৃতি কেশবঃ ৷৷ বন্ধা স্বয়ঞ্জ জ্ঞাই লিঙ্গণ কনক পিঙ্গ-ল । তত শ্চকার ভগবা শ্চাত্

र्वर्गं रवार्कत्म ॥ नाजानि टेव्याः यूथानि नात्नाकि विषिठानि ह া আদ্যাণ শৈবং পরিখ্যাত খনাৎ পাশুপত মুনে ৷৷ তৃতীয় কাল-चमन छ्रथ्य क्लानिन । त्निव আসীৎ স্বয়ণ শক্তি ৰ্বশিষ্ঠস্য প্ৰি-ষঃ সুতঃ।। তস্য শিষ্যো বভূবাথ গোপায়ন ইতি শ্রুতঃ। মহাপা-শ্ভপত স্থাসীন্তারদ্বাজ স্তপোধ-নঃ।।তস্য শিষ্যোপ্যভূজাজা ঋ-ষভঃ সোমকেশ্বরঃ। কালাস্যো ভগবানাসীদাপস্তয় স্তপোধনঃ॥ তস্য শিষ্যো বকো বৈশ্যো না-য়। ক্রাথেশ্বরো মুনে। মহাব্রতী চ धनम खना भिषा क वीर्यावा-ন্।। লন্দোদর ইতি খ্যাতো জা-ত্যা শুদো মহাতপাঃ। এব॰ স ভগবান্ ব্ৰহ্মা পূজনায শিবস্য চ ।। কৃষা তু চাতুরা শ্রম্য স্বমেব ভবন॰ গতঃ। গতে ব্ৰন্ধণি সৰ্বো পি তপঃ সংহত্য ত তদ।। লিঙ্গণ চিত্রবনে সৃষ্ণ প্রতিষ্ঠাপ্য চচার হ।। ইতি বামনপুরাণে ৬ অ-ধাাযঃ ॥ 🛊 । অপি চ। ততঃ সৃষ্টি, চিন্তযতো ব্ৰহ্মণো মোহি-তদ্য । বালিখিলাঃ সমূৎপদা खन खन्न नमात्रजन् ॥ पिर्वाः

বৰ্ষসহসু ৰৈ তেপু স্তে দুশ্চরণ তপঃ। ভতঃ কালেন মহতা পা-ৰ্বতী চ পতিব্ৰতা ॥ তেষা॰ তপঃ সমালোক্য চাভি দেবী সুদুঃখি-তা। প্রসাদ্য দেবদেবেশ শঙ্ক-রু প্রাহ্ সুত্রতা ।। ক্লিশ্যন্তি বা-। এতেভ্যোপি প্রিয়ণ দেব বিধি-বৎ সরু সেব্যা ৷৷ ভচ্ছত্বা বচন (पर्गाः भिनाकी शर्ते हिन्छकः । প্রোবাচ কান্তে কালঞ্চ বচন প্রিয়যা সহ।। ন বেৎসি দেবি ত-দ্বেন ধর্মস্য গছন। গতিঃ। নৈ-তে ধর্মাণ বিজানস্তি যথার্থণ ধর্মা-চারিশঃ ॥ ন দাস্যামি বর তে-ভ্যো যন্মাত্তে মূঢবুদ্ধয়ঃ ৷ এতৎ व्याबवी (पर्वी मा देमव मं শিতব্ৰতা।। ততো ৰুদ্ৰ উবাচেদ° দেবী॰ দেবঃ স্মিতাননঃ। তিণ্ঠ স্ব মত্র যাস্যামি যত্রৈতে মুনিসত্ত-মাঃ॥ ইত্যুক্তা তু ততো দেবী শ-ৰুরেণ মহাত্মনা। গচ্চস্বেত্যাহ মুদিতা ভর্তার ভুবনেশ্বরী।। যত্র তে मूनयः गर्द कार्श्व लाग्छे म-মাশ্রিতাঃ। তান্ বিলোক্য ততো प्तरव। नशः मर्बाक्रमुखतः ॥ व-ন্যালাক্কতাপীড়ো যুবা ভিক্ষা-

কপালভূৎ। আশ্রমে পর্যাটন্ ভিক্ষাণ মুনীনাণ নিষ্তাশ্বনাণ।। দেহি ভিকা' তত শেচাকু। স जुमबा अभ गरमे। छ विला-ক্যাশ্রমগত যোষিতো বন্ধবা-**मिना** ।। मकोजूक श्रजादंन তস্য ৰূপেণ মোহিতাঃ। প্ৰোচুঃ গরস্পর কার্যানস্ত পশ্যাম ভিক্ষুক ॥ পরস্পর মিতীবোক্ত্ব। গৃহ্থ মূল কল॰ বহু। গৃহাণ ভি-ক্ষা মূচু স্তা স্ত॰ দেব॰ মুনিযোষি-তঃ ৷৷ তথ্মৈ দদ্বৈ তাণ ভিক্ষাণ পপ্রচ্ছু স্তাঃ স্মরাতুরাঃ। নার্য্য-উচুঃ। কো ২সৌ নাম ব্ৰতবিধি স্তৃয়া তাপস সেব্যতে। যত্ৰ নগ্নে-ন লিঙ্গেন বনমালা বিভূষ্িভঃ॥ ভবান্ বৈ তাপসো হৃদ্যো হৃদ্যাঃ স্মো যদি মন্যসে। ইত্যুক্ত স্তাপ স স্তাভিঃ প্রোবাচ হসিতাননঃ॥ ইদ॰ মম ব্রত কিঞ্চিন্নরহস্য প্র-কাশতে। শৃখুন্তি বহবো ষত্ৰ তত্ৰ তত্র ন বিদ্যতে ॥ তস্য ব্রতস্য সু-ভগা ইতি মন্বা গমিষ্যথ । এব মুক্তা স্তদা তেন তাঃ প্রত্যুচু স্তদা মুনি॰।। ততো ২ভ্যেত্য গমিয্যা-মে। মুনে ন কৌতুক মহৎ। ই-ত্যুক্তা তা স্তদাতীব জগৃহঃপাণি-

शब्रदेश ।। काठिककर्य वारुख्या॰ কাচিৎ কামপরা তথা। জানু-ভ্যা মপরা নাভ্যা॰ কচেযু ললনা পরা ৷৷ অপরা তু কটাৰন্ধে চাপরা পাদ্যো রপি। ক্ষোভ বিলোক্য **मूनय जालात्मयू ऋत्याविका॰ ॥** হন্যতা মিতি সংভাষ্য কান্ঠ পা-ষাণ পাণযঃ। পাতযন্তি চ দেব-मा लिश्र मूब्धा ভीषण ॥ পাতিতে তৃ ততো লিঙ্গে গতো ২ন্তৰ্দান মীশ্বঃ। দেব্যা স ভগবান্ রুজঃ কৈলাশণ নগ মাশ্রিতঃ।। পতিতে प्रवर्णवमा लिएक नएक ठताठदत । ক্ষোভো বভূব সুমহানৃষীণা॰ ভাবিতাত্মনা॰।। উবাচৈকো মু-নিবর স্তত্ত বুদ্ধিমতা বরঃ। বি-রিঞ্চিণ শরণণ যামঃ স হি জ্ঞাস্যতি চেষ্টিত° ।। এব মুক্ত্বা সৰ্বএব ঋষ-যো লজ্জিতা ভূশ। ব্ৰহ্মণঃ সদ-ন॰ জগ্মু র্দেবেঃ সহ নিষেবিত ।। ঋষষউচুঃ। অজ্ঞানাচ্চ ক্নত॰ ব-क्रमणां छि छीन पूर्वरैलः ॥ उरमा পশমনে যত্নু॰ সরু সর্বোপকারক । बदकावाठ। शब्हायः नत्न (म-द मृलभानि जिल्लाहन । अ मीनाटलवटनवमा ভविषाथ यथा পুরা।। ইত্যুক্ত্বা বন্ধণা সার্দ্ধণ কৈ-

लामः भिति मृत्यः । नम् अ त्य म-मामीन मूमया महिनः हतः ॥ छन रखानुः ममात्रस्ता बद्धाः लाक भिनामहः॥ अनखाय नम खन्नः वत्रमाय भिनाकित्न ॥ धवः खन्। महारमद्वा बद्धाः स्विन्नि खथा। উবাচ माः मा बद्धन् लिकः

भूत्राः भूनः ॥ क्रियञाः २ प्रकः শীঘু থেন মে প্রীতি রুত্তনা। ভবিষ্যতি প্রকৃষ্টা ষা লিঙ্গদ্যাত্র न म॰भयः ॥ य निष्ठ॰ शृक्षि-ষ্যম্ভি মন ভক্তি সমাশ্রিতাঃ । न তেযा॰ দूर्नज किक्षि जित-ষ্যতি হিত॰ ফল॰।। ইতি বামনে 82 **अ**शायः ॥

श्री अकृत्यन्त-স্থিতানি লিঙ্গানি যথা। সনৎ-अयात डेवाठ । व्हेमा मिक्टन ভাগে চক্রতীর্থ প্রকীর্ত্তিত । স্থানো ৰ্টস্য পূৰ্বেণ মন তীৰ্থণ প্ৰ-কীৰ্ত্তিত ।। স্থানো ৰটস্যোত্তরত खीर्थः गारमञ्जा यञः। स्रात्ना ৰ্বিদ্যা পশ্চিমতঃ স্কন্দতীৰ্থণ প্ৰা-कीर्खिङ ॥ इयानि পूग्रजीर्थानि गर्धा ऋजविः ज्ञिञः । यहारमवः সমভ্যক্য প্রাপ্থোতি পরমণ পদণ ।। বটস্য চোত্তরে পার্শ্বে ভক্ষকেণ মহান্ত্রনা। প্রতিষ্ঠিত মহালিক।

गर्बकाम श्रामायक ॥ विष्मा भूब-**जिश्वारण विश्वकर्यक्रुड॰ मङ्द**ा निष्ठ॰ প্রতার্যুখ॰ দৃষ্ট্বা সিদ্ধি মা-প্লোভি সানবঃ ॥ তত্ৰৈব লিঙ্গ-ৰূপেণ সংস্থিতা ধা সরস্বতী। তা॰ প্রণম্য প্রযন্ত্রেন বৃদ্ধি মেধাঞ্চ विन्मि ॥ विष्णार्श्वाञ्च वित्र বন্ধণা তৎ প্রভিষ্ঠিত । দৃষ্ট্রা ব-টেশ্বরণ দেব প্রমাতি পরমণ পদণ ॥ छङः सान् वहै॰ मृख्ना क्या ठानि প্রদক্ষিণ । প্রদক্ষিণীক্তা তেন मश्रदीया रम् ऋता ॥ स्राटनाः य-न्চिमिष्धारम सङ्गलीरमा मनः यु-তঃ। ত মভ্যৰ্ক্য প্ৰযন্ত্ৰেন সৰ্ৰপা-পৈঃ প্রমুচ্যতে ।। তস্য দক্ষিণদি-গ্তাগে ভীর্থ রুজাকর স্মৃত । তিমিন্ মাতঃ সর্বতীর্থ মাতো ভ-বতি মানবং।। তদ্য চোত্তরদি-গ্রাংগ রাবণেন মহাত্মনা। প্র-তিষ্ঠিত মহালিক গোকর্ণ না-ম নামতঃ ।। আযাত্মাসে যা ক্লফা ভবিষাতি চতুর্দ্দশী। তস্যাণ পশ্যতি গোকর্ণ তস্য পুণ্যফল শৃণু ।। কামতো ২কামতো বাপি ষৎ পাপ তেন সঞ্চিত। তস্মা-দ্বিমুচাতে পাপাৎ পূজ্যিত্বা হ-त॰ **ए**किः ॥ कोमात्र बन्नहर्यान

যৎপুণ্য প্রাপ্যতে নরৈঃ। তৎ-পুণ্য সকল তেষা মফম্যা যো श्रक्तिकृत्।। यनीत्कृष् शतमः ৰূপ॰ দৌভাগ্য॰ ধনসম্পদ্। স্প-माद्राश्वत माश्राज्ञा भिकाट নাত্র সংশ্যঃ।। তদ্য চোত্তরদি গ্তাগে লিঙ্গপূজা পবিভীষণঃ। অ জর শ্চামর শ্চৈব করম্বিত্বা বভূব ह।। वायाण्या ज्यानमा खना-या ठाकेंगी जत्व । जना म्यूजा সোপবাস শ্চামৃতত্ব মবাপ্ন্যাৎ ।। शृदेश्क शृक्षिष्ठः निष्ठः जिन्ना স্থানে দিজোত্তম। পুজৰিত্বা প্ৰ-यरज्ञन मर्बकाम मवाश्चराष्ट्र ॥ मृ-ষণ স্ত্রিশিরা শৈচব তত্ত্ব পূজ্য ম **टिश्रं तर्था जिलियकान्** का-মানবাপতু মুদান্বিতৌ।। চৈত্তে-মাসি সিতে পক্ষে যো নর স্তত্ত পূজ্যেৎ। তদা তৌ বরদৌ দে-বৌ প্রযক্ষেতা॰ হি বাঞ্ছিত ।। शादना बंदेमा शृद्धन इस्तिंभारम-শরঃ স্থিতঃ। ত॰ দৃষ্ট্। মুচ্যতে भारेभ तना जय मयु छरेवः॥ छ-স্য দক্ষিণতো লিঙ্গু হারীতস্য स्राप्तः इञ् । य॰ প্রণग্য প্রযন্ত্রেন সিদ্ধি মাপ্নোতি মানবং ॥ তস্য मिक्निनिशास्त्रं जू हात्रीजिंगा यहा-

श्वनः। वित्रः दिवाका विशा-**७॰ मर्बशागर्त्र॰ भित्र॰।।** कहान-ৰূপিণা চাপি ৰুডেণাপ্ত মহাত্মনা **। প্ৰতিষ্ঠিত মহালিক সৰ্বপাপ** विनागन ॥ जुकि मुक्किथान প্ৰোক্ত সৰ্ব কিন্তিয় নাশন। **उन्निक स्थार्थनात्मय अग्निरकोग**ः कन॰ मरा । जमा भन्ति म ন্তাগে লিঙ্গ দিন্ধ প্রতিষ্ঠিত া निक्ति थर जूदि था। ७॰ गर्वनिकि अबायक ।। जनमंनार भूजनाक সৰ্বসিদ্ধি হি বিন্দতি। তস্য দক্ষি-निष्धारम मृकरखन महाद्यना ॥ প্রতিষ্ঠিত যত্ত্ব লিঙ্গণ দর্শনাৎ সি-किमायक । जमा शूर्व ह मिछ। গে আদিত্যেন মহাত্মনা।। প্রতি-ষ্টিত লিঙ্গবর সর্বকিন্থিষ নাশ-ন । চিত্রাঙ্গদস্ত গন্ধর্বো রস্তা চা-अत्रमाः वता ॥ शत्रण्यतः मानू-तारगो ज्ञान मर्गनका किरनी । **मृख्ना** ज्ञानुः शृक्षिषा मान्तारशी পরস্পর•॥ আগম্য বরদ॰ দেব• প্রতিষ্ঠাপ্য মহেশ্বর ৷ চিত্রাঙ্গদে-শ্বরণ দৃষ্ট্যা তথা রভেশ্বরণ দিজ ॥ সৃভগো দর্শনীয়শ্চ সলে জন্ম স-মাপুষাৎ। তদ্য দক্ষিণতো লিঙ্গ শক্ত্রিণা স্থাপিত পুরা।। তমা

क अन्त । नहा नहम ने मिना हैमबोडाय सम्बन्धाः मान्यान विष्णात्रमः अर्थाक्षत्रगं छ। বেৰকালেৰ সুৰিনা চারাধ্য শ त्रवस्त्राता गर्वछाष् उपछातः व्याखः स्मर विमामञ्हा । शार्वाः शक्तिबारिधारम वायूना जगमायू-ना १। প্রতিষ্ঠিত মহালিক দর্শ-माद भाभ नामनः। তস্যাপি म-ক্ষিণে ভাগে লিঙ্গণ ইহমবভেশ্বরণ য় প্রতিষ্ঠিত পুণা ক্তা দর্শাৎ বি-ন্ধিদাযক । তন্যাপি পশ্চিমে ভা-গে কাৰ্ত্তবীৰ্ষ্যেণ স্থাপিত ।। ति-क्र॰ পाशहतः नत्मा पर्मना भू-ना याश्रयार। जमाश्राखदानिश्च-গে তৎপাৰ্শে স্থাপিত পুনঃ !! আরাধ্য হনুমাণশ্চাপ সিদ্ধিণ দে-व প্রসাদতঃ। তদ্যৈৰ পূর্বদিগ্রা-গে বিकृता প্রভবিকৃता ॥ আ- ∦ রাখ্য বরদং দেবং চক্রং লবাং সৃদ-र्भन । তস্যাপি পূর্বদিগুাগে ই-**ट्या वक्र**णन **प्र ॥ अठिष्ठि**छो नित्रवाती मर्वकाषथानायको । এতানি সুনিভিঃ সাধ্যৈ রাদিত্যৈ ৰ্বসুভি স্তথা।। সেবিতানি প্ৰয-জেন সর্বপাপহরাণি বৈ। স্থাণ

লিক্ষা পরিতঃ ঋষিভি তত্ত্বদর্শি-किः।। প্রতিষ্ঠিতানি निकानि (व-स-त्र-शाम विमाटा। छथा क्छ-ब्रुष्ट देन्छव याबरमायवणी समी।। बर्मु दबक विकाना पति शक्टि यठः विकः। जगाणि भूतिष्ठि। त्य वानिधिक श्रहिष्डिः ॥ थ्र-তিষ্ঠিতা ক্লেকোটি বাবৎ সমি-रिङ मंद्रः। पक्तित्वन जू त्मवमा পন্ধৰ্বৈ ৰ্যক্ষ কিন্নব্ৰৈঃ ।। প্ৰতিষ্ঠি-তানি বিশানি তেষাণ সংখ্যা ন-বিদাতে। তিসুঃ কোটাৰ্দ্ধ কো-ति ह निष्ठामा वायू तववी ।। অসংখ্যাতাঃ সহস্থাণি যে ৰুজা স্থাণু মাশ্রিতাঃ। এতজ্জাদা শ্র-क्रशाबः ज्ञानूलिकः नगावारयः।। বস্য প্রসাদাৎ প্রাপ্নোতি মনসা हिन्ति छ॰ कन । जकारमा ना म-कारमा बा প্রতিষ্ঠা স্থাণুমন্দির ।। বিমুক্তঃ পাতকৈ র্যোরেঃ প্রাপ্নো-ভি পর্ম পদ । চৈত্রমাসে ত্রযো-দশ্যা॰ দিনে পুণ্যতমে শুভে।। প্রতিষ্ঠিত স্থাণু লিঙ্গ বন্ধাণালো-क्धातिना। श्विं जि प्रतं मः रियम्ह পুজিত শাশ্বতীঃ স্মাঃ।। তশ্মন কালে নিরাহারা মানবাঃ শ্রন্ধ ষাশ্বিতাঃ। পূজ্বস্তি শিব॰ যে বৈ

তে বান্তি পরমণ পদ ৷৷ স্থাপুতী र्थ मिष् छ। । द वर्ष छ अपः কিণ। প্রদক্ষিণীকতা তৈত্ত লক্ত षीणा वमुखता ॥ इंडि वाक्स्युः ज्ञाटन ६७ व्यथायः ॥ 🖝 ॥ 🐠 शृट्ह निक्रवरार्फिननिट्यटशे व्या । श्राट् विकव्यः नाकाः भावः গ্ৰামদ্ব তথা। দে চক্ৰে দারকা-याख नार्काः मूर्वादयः छशा ।।।।। **छिम्रगाना अक्न गरिशिनि एवर्शी य**न থা। অভক্ষ্য শবনিশ্বাল্য প-ত্র॰ পুলা॰ ফল॰ জল॰। শালগ্রাম-শিলা যোগাৎ পাবন ভদ্ভবেৎ मना ॥ देखि वाद्वारह द्वीशा मी-वर्गाकी ज्ञानन नामाशायः॥ 🛊॥ লিঙ্গপূজা বিনানাপূজাকরণ নি-रिवरिश यथा । निक्रभूका॰ विना দেবি অনাপূজা॰ করোতি ষঃ। বিফলা তদ্য পূজা স্যাদন্তে নর क माश्रुवाद ॥ जन्मा लिकः मरहः শানি প্রথমণ পরিপূজ্যেৎ। #1 ७९ शृक्षन श्रेमण्या यथा। यखा-ক্টু॰ লিঙ্গপূজাযাণ রহিত সতত প্রিষে। তদ্রাষ্টুণ পতিত মন্যে বিষ্ঠা ভূমি সমং স্মৃতং ।। বন্ধ ক-जिय विष् मिवि यमि निक्न न शृः জ্বেৎ ৷ তৎক্ষণাৎ পরমেশানি

ত্রৰ ক্চাঞ্চালতা বজেৎ।। পুরু क गारमकानि मना मुक्तारक थिए । भूजरवर भन्नरवनामि छ-बाद्रा बाक्याक्यः।। निवाकन्त भूजाम् बला्ट् विक्छि जना । विश्वाशर्क मयः प्रवि जनगृशः वि-कि शार्वित ॥ भारका वा देवक त्वा वाभि देगदवा वा शत्रदमश्रति। जातो विकः ममञ्जूष्ठी विद्यभः देव बंदानरन ॥ शम्हामनाः बरहः **गानि गिव॰ श्रार्था श्रशृक्रस्य ।** শিবপূজা বিনা দেবি অন্যপূজা করোতি ষঃ।। স এব রসনাহীনঃ ঙ্গম্ভীরে। জাষতে প্রিযে। নির্মাষ পার্থিব লঙ্গ রুজ সংহারনপিণ ।। আশুতোষ মহাদেব শকর বৃষভধজ । নিশ্মাষ পার্থিক লি-ঙ্গণ বিধিবৎ পূজ্বেৎ শিবণ।। শি-বপূজ। মহেশানি যদ্যাহে সভত॰ প্রিযে। কাশীপুরু মহেশানি ত-পূজ্যাথ সৰ্ৰপূজা ফল॰ লভেৎ ११ 🛊 ११ ठजूर्विधनिष्ठः यथा । ठजू-দ্ধাপাৰ্থিক লিঙ্গু মৃৎস্না ভেদে-ন পাৰ্ৰতি।। শুক্লণ রক্তণ তথা পীত॰ রুক্তঞ্চ পরমেশ্বরি। শুক্ল-স্তু ত্রাঙ্গণে শস্ত ক্ষত্রিয়ে রক্ত মি-

যাতে।। হরিত বৈশাজাতে। তু क्रकः भूटक श्रेतिर्डिङः॥ हन्मन-ঞ্চ মহেশানি সৰ্বজাতিবু শস্তে । ইভি निकार्फनण्ड ३।२।० **अप्रेक्षाः॥ ७॥ अम् अक्**रकुानि वशा ७९ गर्वः मृत् ठार्विक शा-र्थिवमा मूथ॰ थिरि । विভावा मू-শপদ্ম ছি শিবসা বরবর্ণিনি॥ স-**ল্যোজাত** বামদেব মঘোরঞ্চ ত-তঃ পরে । তৎ পুরুষ তথেশান **शक्ष्यकुः अकीर्विछः ॥ मामा**-জাতঞ্চ বৈ শুক্ল শুক্ত শ্বাটিক সন্মিত । পীতবর্ণ তথা সৌম্য वामरावर मरना इतर ।। क्रकार्व गरवात्रक मयः जीव विवर्कनः। ब्रक्क ७९ भूक्ष (प्रवः पिवामूर्वि मदनाङ्द्र ।। नाग्यलक उट्यना-न॰ गर्दरमय निवाश्वकः। ठिश्व-বেৎ পশ্চিমে চাদ্য দিতীয়ন্ত ত-त्याखद्रा। जत्यात्रः मक्तित्। त्मवः পূর্বে তৎপুরুষ তথা। ঈশান মশ্বাতে ধোষ চিন্তবেৎ ভক্তি-তৎপরং ৷৷ ইতি তবৈব ৬ পটলং ॥ ॥ अमा भूकायाः मूथवामाक-त्रवारमाकष् यथा। मन्भूका भा-থিব লক্ষণ পর বন্ধ স্বয়ণ প্রিয়ে ৷ ততন্ত্ৰ লিঙ্গ কবচং পঠিত্বা কম-

वानत्न ॥ यूथवामाः मन्छाः हि ক্লন্বা তু পরমেশ্বরি। মাতৃকা মন্ত্র महिङ मूथवामाः मूमूर्झङ ॥ অকারাদি ক্ষকারান্ত অনুলোম विटनायङः। উচ্চাर्या भन्नत्यभा-नि मूथवाम्यः शुक्तिश्वरः ॥ मिबन् বৰ্ণ মুজাৰ্য্য পঞ্চাশন্মাতৃকা প্ৰ-ষে ৷ অনুলোম বিলোমেন সর্বেণ **চ देत्रान्दन ॥ अटनटेनेव विशादन-**न मूथवानाः करताि यः। मनि-कः मगनः मानि म निता नाव मः भरः ॥ कृजु। अरवा २३॰ (मर्द-नि मूथवामा প্রসাদতঃ। यन्त्रिन् কালে মহেশানি অসুরা বলবন্ত-ति ।। जियान् काटल मटश्मानि मूथवामा॰ करतामाइ॰। ७९ व्य-ত্বা পরমেশানি অসুরা রাক্ষসা-**क्ट रय ॥ श्रामाय एक मरहमानि ७**९ ঞ্জা পরমেশ্বরি। যে নরা ভূবি তিষ্ঠস্তি মুখবাদ্য বিনা প্রিয়ে ॥ স সর্বযাতনাভোগী অন্তে সম্ভী-রতাণ বজেৎ ৷৷ ইতি চ তত্ত্রৈব **४ शहेनः ॥ क्रा विश्वा** ভোজনদোষকারণ यथा। দে-ब्रावाठ। मूर्वाङ उव निर्मानाः बनामीनाः क्रुशानित्य। ७९ कथः পরমেশান নির্মাল্য তব দূষিত

१। अश्वेत उवाह । मधाकान विकः वजू क्रम्भः शत्रामधित । भागमाः क्रजू अगानः ममा उर्कः श्वितिः क्रियं ममा । क्रजामयः म-विक्रयं ममा । क्रजामयः म-व्यानि मूथ मूर्कः बद्रान्तन ।। कीत्राम मथानः क्रित उथिकः গরলः महर । ততঃ কর্তলীক্ত-তা তিষ্যং গর্মেশ্বরি ।। নিপীতং

॰ সৃন্ধ• তীক্ষ• বন্ধাওনাশ-बन । তिवय के के एमर **व**्राह्मिक হি সৰ্বদা মম।। ততঃ প্ৰভৃতি **(मर्दिना गूथ- जानायर्क मना)** পত্ৰ॰ বা यमि বা পুষ্প॰ ফল॰ বা বরবর্ণিনি ৷৷ অন্য হি পরমেশা-নি উপচার মনোহর । যো দ-मा**९ शत्रामानि ममुर्था**शति পাৰ্ৰতি। অগ্ৰাহণ তত্ত্ব নিৰ্মাল্যণ সাক্ষাধুন্দময় যতঃ। এতজু পর-**प्रिमानि निर्मानाः येख धात्रय**९ া৷ স ভুকৌ জাযতে দেবি নিক্ষৃতি ৰ্নাস্তি তত্ৰ বৈ। অগ্ৰাহ্ণ মন নি-র্মাল্য॰ অতএব বরাননে।। ষদ্দ-ত্তি সমুখে দেবি পুষ্পা বা পত্ৰ মুত্তম । তিমিশাল্য মহেশানি गृङ्गीयाद नित्रमा मना ॥ अथय॰ विकरत पदा विकृत्रदान भाईि ।

निर्यामा भय प्रातिम विस्कार्थी-**ए॰** वर्तानत्न ॥ त्मवामूत्र मन्या-শ্চ গন্ধৰাঃ কিন্নরাদ্যঃ। তে সর্বে পর্যেশানি বরাকাঃ ক্ষুদ্রবুদ্ধরঃ ॥ निर्मात्नाम् ह त्तर्विण अधिका-রী কথ॰ ভবেৎ । ইতি চ তত্ত্বৈব ১७ । ३८ भेटली ॥ 🟶 ॥ ठजूर्न-শ্যা॰ মহেশানি শুক্লাযাণ বরব-ৰ্ণিনি। ক্লেখায়া মহেশানি অ-मावामग्रा॰ वित्मयण्डः ॥ निर्माय **ह हर्जुम्भा॰ निक्र॰ ज्का। ह शृ**-জষেৎ ৷ একহন্তে মহেশানি নি-माय भाषितः निवः ॥ मिक्टन বামহন্তে বা নির্মাষ ফে চ পার্থি-বে ৷ তৎফল পর্মেশানি লক্ষ-লিঙ্গসমণ ভবেৎ ৷৷ ইতি লিঙ্গাৰ্চ্চ-न उत्तः ॥ 🗱 ॥ বাণলিঞ্চলক্ষণাদি-ক॰ বাণলিঙ্গশব্দে দ্রম্বর্যুণ।। 🕸 ।। व्यथ द्वी जिलक्षणका । वीत्रिम-ত্রোদষধৃত । নদী সমুক্তব রৌজ मत्गानामा विषर्वना । निर्वादन গাৎ সমণ স্নিঞ্ধণ সংজাতণ রৌড-यूठाटा ॥ मयूक्टरानि । मति ९ প্রবাহ সুংস্থান বাণলিক্ষ সমাক্র-তি। তদন্যদপি বোদ্ধব্য রৌজ-विञ्च॰ <u>मूथावङ्॥ न</u>िमात नर्म्य-দাযা॰ বাণলিঙ্গ সমাক্কতি। তদন্য-

मिश (बाबवा॰ निम॰ द्रोज॰ छ-বিবাভি ॥ ব্লোত্তলিক তথা খ্যা-ত বাণলিক সমাক্রতি। শ্বেত রক্ত তথা পীত ক্লক বিপ্রাদি পূজিত ৷৷ স্বভাৰাৎ ক্লকৰণ বা সৰ্বজাতিষু সিদ্ধিদ । নৰ্মদা স-**उ**द॰ द्रोख॰ वाननिष्ठवनीद्रिञ्।। इंछि द्वीखिलक नक्षण ॥ भिव-নাভি লক্ষণ তৎ শব্দে এন্টব্যু ।। ।। जथ रेपरिवाक वाकन । रेप-বলিঙ্গ মধিকত্য সিদ্ধান্তদৈশ্বরে ৷ क्रमार्षे मन्यानं मूल ऐरक्स्-ভূষিত । রেখাকোটর সংযুক্ত নিয়োমত সমন্বিত ।। দীর্ঘাকার-খ যক্তিক বন্ধ ভাগাদি বজ্জিত 11 का। अथ र्गाननिक नक्षण 1 লিক্ষ গোল মিতি প্রোক্ত গো-লক প্রোচ্যতে ২ধুনা। সন্মা-ওস্য ফলাকার নাগরঙ্গ ফলো-পমণ ৷৷ কাকডিম্ব ফলাকারণ গো-ললিঙ্গ মিতীরিতে । ইতি গো-न निष्ठ नक्षण ।। 🟶 ।। ज्रथार्य-निष्ठ नक्षण । उदेवर । नाना-কোল ফলাকার প্রন্ধসূত্র বিব-র্ত্তন । মূলে ফুলঞ্ যল্লিজ ক-পিখফল সন্নিভ॰ ॥ নালস্য বা কলাকার॰ মধ্যে স্থলঞ্চ যন্তবেৎ

। बर्शाकुलं वतः लिज वृश्वितां। मूमीक्रिकः॥ रेकार्यनिक नक्ननः ।। 🗰 ।। जिल्ला हि विविध यहा-बिय॰ क्रबियक । जक्रबिय॰ चय-ভূত খবড়ু বাঞ্লিকাদি। ক্ত্রি-ৰ নিৰ্শ্বিত ধাতুলিকাদি। সি-কান্তশেশরে ৷ তলিক দিবিধণ ভেৰৰ মচলক চল তথা। প্ৰ-ত্যেক खिविश खाय नित्र তদুভষাত্মক ।। প্রাসাদে স্থাপি-**७**॰ नित्र यहन॰ छिह्नामिक॰। স্থাপিত অচল গেহে স্থির লি-त्र गर्वािक्टि ॥ शक्षा ७९ खिङ निकः चयख् रेमव भान-ক'। আর্থি মানস' লিঙ্গ' তে-ষা॰ লক্ষণ মুচ্যতে ।। সিদ্ধান্ত-শেখরে। নানাচ্ছিত্র সুসংযুক্তণ नानावर्वं नगिष्ठिः। अपृक्षे मूलः यक्षिकः कर्तनः जूवि मृगारा ॥ তলিসন্ত স্বায়ত্ত মপরণ লক্ষণ-চুঁতে । स्यस् नित्र मिष्ट्राकः ७-क्र नामाविधः मणः ॥ मधाज মস্তকণ লিঙ্গণ বৈফবণ তদুদাহ্ন-ত । পদাভ মস্তক বান্ধ ছত্রা-ভ॰ শাক্র মুচ্যতে ।। শিরোযুগ্মণ তথামেয় ত্রিপদ যাম্য মীরিত । খন্নাভ নৈৰ্খত লিঙ্গ বাৰুণ

कनगरुष्ठि ॥ बाववाः अजवा-निय को बित्र गमाविष् । बै-শানসা ত্রিশুলাভ লোকপালা-मि निःमुङ ॥ वर्ष्णुनिक वा-थाां नर्वभाञ्च विनातरेकः। **ইতি यर जुलिक लक्का ।** गৎमामूरक। पृक्ती निकः गरह-मना खरख्ठमा भाईछ। नई-পাপ বিনিশ্ব ক্তঃ পরে ব্রহ্মণি লী-य छ ।। 🗰 ।। এতে या॰ भृद्धाकन स **७ देवर । विस्मिया देखना क** बू-কৈ। ভুক্তৰে চানুৰস্তঃ। পা-র্থিব ভুক্তবে শস্ত মুক্তবে চা-न्यम् ७१॥ এव॰ देव माझक छन য॰ চিক্ললিঙ্গ তথা পুনঃ। স্থির-लचीश्रम॰ एखर॰ देश्य॰ ताका-প্রদক্ষ তৎ ৷৷ পুত্রবৃদ্ধিকর তা-मु ताक्यायुः श्रवक्तन ॥ भषा-भूदांग । भातमक **महा**जृत्का সৌভাগ্যাৰ চ মৌক্তিক ৷ চন্দ্ৰ-কান্ত মৃত্যুজিৎ স্যাদ্ধাটক স-र्वकायमः ॥ 🐞 ॥ वीत्रमित्वामयः ষ্ত কলোত্তরেপি। সর্বা ফলপ্র-मा ज्य र्याश्य उपदानव हि। ज-नखामाः चुका क्रकी मनरग विमामञ्जूनाः ॥ तात्वो श्रकाम-काः गर्द वियामा घाष्ठकातिनः

। नानावर्वाञ्च विरक्तवा त्रदेन र्श-देशक क्षेत्रकः ॥ बज्जानाः ज्या-छिकामग्राम् छछान्नामि विनिर्द्धिः छ । गर्बकामक्षम भू वा निक **डा**९कानिक यङ ॥ 🛊 ॥ नक्नन-ममूक्टर । भाक्षः मोञागामः नि मः लीलाः मुक्किश्रमारंकः। छथ। ৷ ৰানা গুণোন্তৰ লিক নানা-काम धानावकः। टेनकछः खननः नित्र लोजागाच ह नावन ॥ छकारेटन जू भागाश्वः योगः भवुक्यावर्॰। छादकानिक॰ म-রিজশ্চ হত্ত্বা ভক্তা। সমর্চবেৎ।। छथा। कर्ङुतिकाना (बो जारगी চছার শ্চলনস্য চ। अक्रूमস্য ত্র-य टेन्टर मिनना ह हरू समय ॥ এতবৈ গন্ধলিকৰ ক্ৰ' সংপূজ্য ভক্তিতঃ। শিবসাযুজ্য মাপ্নো-তি বন্ধুভিঃ সহিতো নরঃ ॥ কা-ৰ্যাণ পুৰুপমষণ লিক্ষণ হ্ৰগদ্ধা স-মন্বিত । নবধঞা ধরা ভুজ্বা গবেশো ২ধিগতি ভৱেশ। রজো-ভি নিৰ্শ্বিত লিঙ্গ যং গূজয়ভি ভক্তিত:। বিদ্যাধরণদ প্রাপ্য পশ্চাৎ শিবসমো ভবেৎ ৷৷ শ্রী-কাৰো গোশকলিক কৃষা ভক্ত্যা প্রপুজবেৎ ৷ সক্রেন কাপিলে-

टेनव शायरवन श्रक्तवर्थ ॥ कार्याः रिकेक्यः निकः यव (११)-ধুম শালিজ। একামঃ পুঞ্চিকা-यक्त शूलकाम सम्मित्य ॥ जि-তাখণ্ডময় বিঙ্গ কাৰ্য্য মারো-গ্য বৰ্জন । বশ্যে লবণজ লিঙ্ক তাল ত্ৰিকটুকাম্বিত ॥ গব্যযুত-**गर॰ निक॰ म॰शृका वृक्षिवर्कन॰ ।** লবণেন চ সৌভাগ্য পার্থিব স र्बकायमः ॥ कायमः जिनिशिरको-থ তুষোথ মারণে স্মৃত । ভস্মো-थ॰ সর্বফলদ॰ গুডোখ॰ প্রীতিব-ৰ্দ্দন ।। গম্বোত্থ গুণদ ভূরি শ-र्कत्राथः मूथअनः। वःभाक्त्राथः ॥ व भक्त (गायम अर्द्धा गम ।।। কেশান্থি সম্ভব লিক সর্বশত্র বিনাশন । ক্ষোভণে মারণে পি-ফসম্ভব॰ লিঙ্গ মৃত্যম॰॥ দারিজ্য-দ॰ জ্রমোক্তৃত৽ পিষ্ট• সারস্বতপ্র-म॰ 11 मिं मूरकाखिन निक्र की-र्खि नची मूथथमः। धानामः धा-नाकः निकः कलायः कनमः ভবেৎ ॥ भूत्भाषः निरात्भागा-यू म् रेक्डा धार्जीकरनाख्य । न-বনীতোন্তবং লিঙ্গং কীর্ত্তি সৌ-ভাগ্য বৰ্দ্ধন ।। দূৰ্বাকাণ্ড সম্-खू व मणम् जूरिना मन । कर्ण् व

मखर॰ निष्ठ॰ ठना देव जूकि मू-ক্তিদা।। অযস্কান্ত॰ চতুদ্ধা তু **एखर॰** मामाना मिक्कियू। ইতি গৰুডপুৱাৰ ৷৷ সৰ্ব মণিভব **८७७॰ छब रकु ग**तिष्ठिमि । यम-লিক্স মহাভূত্যৈ সৌভাগ্যায় চ 'बोक्किक' ॥ शूकिंगृल' गर्गनी-ল॰ জ্যোভিন্তীর সমূদ্ভব॰। স্প-न्कः अनमह्या टेंडकमः मृ-ৰ্যাকান্তজ্ব ।। চন্দ্ৰাগীড॰ মৃত্যু-জিত ক্ষাটিক সৰ্বকানদ । শূ-লাখ্য মণিজ শত্ৰুক্ষষাৰ্থ মৌ-ক্তিক তথা।। আপত্য হীরক জ্ঞেষ॰ রোগহৃন্মৌক্তিকোন্ডব॰। खळकूर भूकन जीटर्थ देवमूर्याः मजू मर्ग हृ ।। नीन न मी अम॰ জ্ঞেয় স্ফাটিক সৰ্বকানদ। ইতি সারসংগ্রহঃ।। মহাভুক্তিপ্র-দ॰ হৈম॰ রাজত॰ ভূতিবর্দ্ধন॰। আরক্ট তথা কা স্ণ্ সা-यानामुक्किम ॥ ज्यू नीमायम লিঙ্গ শত্ৰুণা নাশনে হিত । कीर्खिष॰ का॰माজ॰ निञ्न॰ ताজ-ত॰ পুত্রবর্দ্ধন॰।। পৈত্তল॰ ভূক্তি মুক্তার্থণ মিশ্রজণ সর্বসিদ্ধিদণ। ইতি কালোত্তরতন্ত্রণ ॥ তত্ত্রৈব **मिव नात्रमम** वात्म । পিতृशा

মুক্তয়ে লিঙ্গণ পূজ্যণ রজত সম্ভ ব ৷ হৈমজ পত্যলোকসা প্রা-श्वरम भूजरम् भूमान्॥ भूजरम खायुक[,] वित्रः शुक्तिकारमा हि यानवः॥ 🖛॥ यदमामृत्कः। छा-मुनिक॰ करनी नार्फिं देत्र हात्रा मीमकमा **ह । त्रक्क** हन्म न विकक्ष न्य का॰माक्तर उशाक्षा मा-তৃকাভেদতন্ত্রে ১২ পটলে। পা-থিবে শিব পূজাষা সৰ্বসিদ্ধিযু-তো ভবেৎ। পাষাণে শিবপূজা-या॰ क्थिन॰ कम यीतिष्ठ॰ ॥ वर्न-লিকে চ পূজাষা শত্ৰুণা নাশ-नः ग्रन्थः। नर्विमङ्गीश्वरद्भा द्भीरभा ফল॰ ভস্মাক্তভূর্ত্তব ।। তামেপু-थि विजानीयां का राजा ह धन-मःक्राः। शक्रायाकः लक्ष्यं। ला-कावा॰ द्वांगवान् ভवেषा न्या-िंदिक गर्नमिकिः मााउथा गतक-তে थिए । लोश्लिक तिर्गा-নাশ কামদ ভন্মলিষ্ঠ ।। ৰা-न्कायाः कामामिकि र्गामस्य तिः পুহি পন । সৰ্বলিক স্য মাহাত্ম্য धर्य कामार्थ (माकमणा मण्का-दिन दिना एक विभाषानाटको न পূজ্যেৎ ।৷ 🛊 🛭 তৎ সংস্কার স্ত-दैवं वया। त्रीभाकः वर्गनिकः

ঞ্চ স্বৰ্ণপত্তে নিধাৰ চ। তক্ষা-मूखाना जलिक म्याया मिन-<u>बर्गा बाद्यक्त नाशिषा का-</u> बक्रफ अनुब्रुत्य । त्याज्य-নোপচারেণ বেদ্যান্ত পার্বতীণ ষ-**रब**ः ॥ जन्मामूखाना जनिकः গঙ্গাতোফে দিনত্ত্রয়ণ । ততো व्याज्य विधिन। मण्यात माठ-ति मूथीं ।। 🛊 ।। लक्क महीन नि-त्रशृज्यतः पारमाः यथा । निक्रः সুলকণ স্ব্যাৎ ত্যজেলিস মল-क्न । देन का शीरन ज्या का भिन्न ধিকে শত্রু বর্দ্ধন।। মানহীনে বি-नामः मानिधिक ह निख्कायः। বিস্তারে চাধিকে হীনে রাস্ট্রনা-भा **जरव** अवना शीठेरीत जू দারিদ্র্য শরে।হীনে সলক্ষয়:। বন্দসূত্র বিহীনে চ রাজ্ঞাণ রাষ্ট্র-ঞ্চ নশ্যতি।। তত্মাৎ সর্ব প্রয়য়ে-न नित्र प्रशां मूनकन ॥ 🗱 ॥ व्यथ निकथमान । त्मर्ग्वाठ । লিঙ্গপ্রমাণ দেবেশ কথযস্ব মৃষ প্রভো। পার্থিবে চ শিলাদৌ চ বিশেষো উবাচ। মৃত্তিকা তোলক গ্রাহ্ मथ वा ভোলকদ্ব। এতদন্য-मन्बी ७ कमाहिनिन भार्बि ॥

ইতি মাতৃকাভেদতন্ত্রে ৭পটলঃ।। অপি চ। মৃত্তিকা তোলক গ্ৰাহ্ মথ বা তোলকদ্বয় । ত্রিসূত্রস্য थ्यनादनन घरेन[॰] कान्नरयक्षः ॥ व्यक्षे भईमानह क्षा निक थ-भूकरय । इंडि वर्षकर्मिंगि-কাধৃত বিশ্বসারতন্ত্রণ।। 🛎 ।। ত্রি-मृबीकर्त मूकः कालाखर । लिट्य (विष्णाः छथा शीर्ष्ण मय-সূত্ৰ নিপাতনাৎ। সমকৈব বি জানীযাৎ ত্রিসূতীকরণ স্ত্রিদণ ॥ 🛊 ॥ मृखिकाट्डिपन बाद्यां। দীনা পুজাফলস্য প্রশস্তম্ব মুক্তা তত্তৈব। শুক্ল হি পার্থিব লিঙ্গ নির্ম্মায যম্ভ পূজ্বেখে। সএব পর-**त्मिणानि** जिवर्ग कलजाखत्व ॥ ক্ষত্রিযম্ভ বরারোহে রক্তণ নির্মা-য পার্থিব॰। পূজ্বেৎ সতত যস্ত ত্রিবর্গ ফলভাগ্ডবেৎ ॥ হরিত পার্থিক দেবি নির্মায যন্ত পূজ रय । म ह देवल्गा मरहणानि बिवर्ग कन जारातवः॥ क्रकः हि পार्थिवः निकः निर्माय यस জ্বেৎ। স শুড়ঃ পর্মেশানি बिवर्ग कनजाश्चरवर ॥ निनामो **চ मट्डणानि कृ**नक कनमायकः। जङ्गर्भमानः (मर्विण यदा (इमाः

जि यानकः ॥ कृत्यन प्रत्यपदि-नि कनः वहविशः नाउँ । श्रृना ९ স্থূলতর লিঙ্গ রুজাকণ পরমে-यति।। भूजनाकातगारणि कवा॰ वहविधः ग्रृष्ठः ॥ ज्ञृता द ज्ञृत्र व মিতি পার্থিবলিঙ্গে তরপর । মৃ-ন্তিকা তোলক আছ মিত্যাদি वहनार ॥ 🛊 ॥ निना काहिक মরকভাদীনা॰ পঞ্চসূত্রীকরণ মু-कः। यथा। निर्वित्रमा समानः তন্মান দক্ষ সব্যয়ে। যোন্যপ্র মপি যন্মান তদখোপি তথা ভ-त्य ॥ इंडि टेनक ॥ निक्रमा यामृशिखातः भारतिगारमानि जाम्-**नः। विक्रमा विश्व**ना त्वनी रामि স্তদর্জ সংমিতা।। স্বরী তাঙ্গুগুতো ঙ্গ' ন কদাচিদপি কচিৎ। রত্না-मि निविनर्यात्व यान विष्हा्यना-स्टरिया। इंडि जन्नास्त्रः ॥ 🛊॥ नि-ঙ্গশব্দব্যুৎপত্তি র্যথা। আকাশ লিঙ্গ মিত্যাহঃ পৃথিবী তস্য পী-ठिका। आनयः मईएमवानाः नय-নালিকমুচাতে॥ ইতি ক্ষনপুরা-११ क्षा विक्रमहिमा यथा। नित-উবাচ। ন তুষ্যাম্যার্চিতো ২চ্চা-याः भूष्य धूय निर्वष्टिनः। विरक **ধর্কিন্তে তথাতার্থণ পরণ ত্রাামি**

পাৰ্ৰতি॥ এষ দেবি পুরা ক্লতো জीतार्॰ गर्वरेषवरेजः। विक्षा-लिन भिज्यक गरमवागूत किन-देतः ॥ श्रयक्रामि मिव॰ प्रिति रश যলিকাৰ্চনে রতঃ। ত্যক্তা সৰ্বা-ণি পাপানি নিৰ্গদে। দক্ষকভাষঃ ११ ययना यमयकारता यार्यय थ-जिनमार**७। ই**তি वीत्रमिर्खामय-धृ उक्त श्रुवान । । # II जवानि-শেষেণ পূজাদিফল মপি তত্ত্বৈব। **रञ्जभू** छक देन निकः स्रभिष्ठ। सम यानवाः । लक्षांना क्षात्र्यानाः কল মাধোতি সত্তমঃ।। সুগন্ধি **চ**न्मनत्रोम निश्न बानिया छकि-তঃ। আলিপাতে সুরস্ত্রীভিঃ সু गटेका र्यक्किकिटियः ॥ 😻 ॥ वि-वर्णकनाकत्व जार खर्श्का कलक তত্ত্বব শিব नात्रम मधारम । विना निकार्फनः यगा काला-গচ্ছতি নিত্যশঃ। মহাহানি ভবে-जमा पूर्वजमा पूर्वाचानः ॥ এक-তঃ সৰ্বদানানি ব্ৰতানি বিৰিখা-नि ह। जीर्थानि नियमा युक्त नि সারাধন মেকতঃ।। ন লিসারা थनामना९ भूता (वंदम ठजुईनि) । বিদ্যতে সৰ্বশাস্ত্ৰাণা মেষ এব সুনিশ্চিতঃ ৷৷ ভুক্তি মুক্তিপ্রদণ

निकः विविधांभविवात्रमः । भूक-বিশ্বা নরো নিতা শিবসাযুজ্য गार्थ्या ।। मई गना भतिज्ञाला ক্রিয়াজাল মশেষতঃ। ভক্তা প-द्रोगया विद्यान् लिक त्यकः श्रेशु-क्रिंच ॥ इंडि केन्स भूतीन ॥ 🛊॥ अश्वत्यम मरुमानि वाज्यत्यम न-তানি চ। মহেশার্চন পুণাস্য कला॰ नार्रेडि साफ्नी॰ ॥ रेडि मर्नामृत्क ५७ भवनः ॥ 🛊 ॥ श्वरः नातायवः श्रीट्ला यनि मञ्जू अभूजरय । यत्रा मर्छा ह भा-তালে যে দেবাঃ সংস্থিতাঃ সদা।। তেষা পূজা ভবেদেবি শন্তুনাথ-স্য পূজনাৎ। ইতি মাতৃকাভেদ-**एक ॥ क ॥ स** एक मिनिकाया ৷ অসারে খলু সংসারে সার মেত-চ্চতুক্তম । কাশ্যা বাসঃ সভা मदनो गन्ना छः नेखुरम्यनः ॥ 🛊॥ ज्य भारतिनिविक महाजाः। জ্যোতিশ্বয় মহালিক কৈলাস-নগরে প্রিয়ে। তদৈয়ব ষোডশা॰-'শৈকঃ কাংশ্যাণ বিশেষশ্বরঃ স্থিতঃ ॥ शृनीलकः यरहमानि गिववीकः न होनायो। भिनामरश यथा हळ॰ लकीनां द्रायंगः भद्रः । भारतमा भठा टेगटका वाचीना तायरना न

হি।। পকার বিক্রপঞ্চ আকার । কালিকা সংগ্ৰহণ স্থান त्रक बन्धकश्च न नामाथा॥ भारत পরযেশানি ত্রন্ধ বিষ্ণু শিবাত্মকণ ৷ ৰো ৰজেৎ পারদ পিক সএব **শজু त्रवायः॥ ३**७ि माठ्काट्यमः ভয়ে ৮ পটলঃ।। তস্য নির্মাণ বি-थानः भात्रमण्टक जरुवाः ॥ 🟶 ॥ প্রকারাম্ভর শিবলিকোৎগত্তি ৰ্যথা। ততো বিবাহণ নিৰ্বৰ্ত্য ক্লভ-ক্ৰতা যথাগতাঃ। গতাঃ সৰ্বে य-ছেশোপি সত্যা সহ তদা গৃহ॰। জগাম রেমে সত্যা চ চিরু নির্ভ-त्र मानमः ॥ अथ कात्न कना हिलु সভ্যা সহ মহেশ্বরঃ ৷ রেমে ন শে-কে ত সোঢ়ু সতী শ্ৰাম্ভাভবত্ত-मा ॥ উবাচ দীনষা বাচা দেব-**(मव॰ क्रशम् क्षेत्र॰। ज्रश्वन्न हि न**-ক্লোমি তব ভার স্দু:সহ ।। ক্স-স্ব মা॰ মহাদেব ক্লপা॰ সক্ল জগৎ-পতে। নিশম্য বচন॰ তস্যা ভগ-वान् वृष्ण्यक्षः॥ निर्जतः त्रयनः ठटक गाउ॰ निर्फय यानमः। क्र्या मःभूनं त्रमनः मठी ह ठाउकरमञ् না ৷৷ উত্থানাষ খন শ্চক্ৰে উত্ত-যো স্তেজ উত্তমণ। পপাত ধর পৃষ্ঠে তৈ ব্যাপ্ত মখিল জগৎ

পাতালে ভূতলে স্বর্গে শিবলিকা স্তদাভবন্। তেন ভূতা ভবিষ্যাশ্চ निविन्ताः मत्यानयः॥ यख नि-**দ॰** তত্ৰ যোনি ৰ্যত্ৰ যোনি স্ততঃ শিবঃ। উভয়ে। শৈচব তেজোভিঃ শিৰলিক্ষণ ব্যক্তাষত ৷৷ ইতি না রদপঞ্চরাত্তে ৩ রাত্ত ।৷ 🟶 🛚 कामनाट्डल भार्थिव निवित्व मः भा यथा। मः भा भार्षित लि ঙ্গুলা যথাকাম[•] নিগদ্যতে। মৃল্লি **ঙ্গ• পার্থিব॰ নাম ভুক্তি মুক্তিক** র॰ পর॰।। দেশকালাদিক॰ জ্ঞাত্বা क्रिंग ६ लिक्षः कलक्षमः। न कः রোতি যদা জ্ঞাত্বান কার্য্যণ তস্য निकाि ॥ विमाभी नजनाङ्-मु धनाथी ह जनकंक । भूवाथी সাৰ্দ্ধসাহসু কন্যাৰ্থী চ শতত্ৰৰ ॥ विषान् निकायुक कर्यगा म-ৰ্বগাপহর পর । রাজ্যাখী শত-সাহসূ॰ কান্তাথী শতপঞ্ক ।। **মোক্ষাথী কোটিগুণিত** ভূতি-কামঃ সহসুক । ৰূপাথী ত্রিস-रमु इ जीर्थाथी दिमश्मुक ॥ সুহৃৎকামঃ সহসুত্ত বস্ত্রার্থণ শ **७३के**च- । बात्रगाय- गखना **माइनार्थः गठारुकः ॥** উচ্চ টন বশশ্চৈব সহসুস্ত যথোক্ত

1 স্তম্ভনে চ সহসূত্র দারণে চ ত দৰ্জক ৷৷ মহারাজভবে পঞ্চশত-काशित मक्टि। मङ्मु गगुज् সর্ব কামদ পরিকীর্ত্তিত।। এক পাপহর প্রোক্ত দিলিককার্থ-সিদ্দিদ'। ত্ৰিলিঙ্গ' সৰ্বকামাণাণ কারণ পর মীরিত। । তথা। লি ন্সানা মযুত ক্রা পূজা রাজভ य॰ इदार । महमुानि ह निश्नाना॰ निगजात्वाहरम् कृतः॥ काताग्-र विमुक्तार्थ मयूष्ट कात्रदयष्ट्र ४३ । ডाकिनामि ज्य शक्षमश्रम् कांत्रयख्या ॥ महमानाक शकाः শদপুত্রো হি প্রকারযেৎ। ইতি वीत्रियत्वापयधृष्ठ ॥ व्यत्नन ह ক্রমান্দেবি লক্ষণ যস্ত প্রপূজ্বেৎ । সৰ্বাভীষ্ট ফল॰ দেবি লভতে নাত্র সংশযঃ।।ৠ।। একীক্ত্য লি-ঙ্গপূজ। বিধি নিষেধৌ যথা। এ কীক্ত্য মহেশানি ৰুগল ন তুপূ জ্বেৎ। একীক্বত্য মহেশানি দ পঞ্চ শতানি চ।। প্রত্যেকেনাং বা দেবি বিল্পপত্রৈঃ প্রপূজ্বেৎ । একৈক॰ পূজ্यেक्षित्र॰ यूगन ন তু পূজ্বেৎ।। দরিজো জায়তে **फिर्ति यूगलमा ह পূজনা** । ই निकार्फनञ्जः ॥ 🟶 ॥ निवनिः

मृखिकामि निक्रमन यथा। जीर्थ মৃৎস্নাণ সমাস্ত্য নিশ্মায লিঙ্গ-मखुङ । डीर्थाजात मर्हमानि ষ্টুজস্য মৃত্তিকাণ প্রিষে।। পর্বত-প্রভবা দেবি নদীনামেত্যুদা-शङ । এত ডিয়। মহেশানি নদী क्कु जा इंडि थिए ॥ निर्वातमा ह **(मृदिना निमान) मन्याद आमायिनी।** সৰ্বাভাবে মহেশানি গোষ্পানস্থা-**१** মৃত্তিকা ।। অথবা পরমেশা-নি যত্র চিত্তণ প্রসীদতি। সুপীনণ সুন্দর রম্য শক্রা রহিত সদা ।। निर्माय भार्थियः निकः क्छनी সহিত প্রিষে। যো লিঙ্গ পর-(यगानि म इन्छः भत्रत्यश्वतः ॥ अखनी (वर्छेनी जमा मा (मवी পরমেশ্বরী । শিবস্য পূজনাৎ **मित (मित्री (मित्री ह शृक्षि**छो।। ইতি মৎস্যসূক্তণ।। 🟶।। বাণলি-ঙ্গ নিশ্মাল্য গ্রহণে প্রতিপ্রসবো यथा। वाननित्य न ठाटनी ठ॰ नठ নির্মাল্য কল্পনা। সর্বণ বাণাপি-ত॰ গ্ৰাছণ ভক্ত্যা ভক্তৈশ্চ নান্য-থা।। গ্রাহ্মাগ্রাহ্ম বিচারোয়ণ বাণ-লিঙ্গে ন বিদ্যতে ৷ তদৰ্গিত জ-লং পত্ৰং গ্ৰাছং প্ৰসাদ সংজ্ঞষা।। বাণলিঙ্গে স্বষ্ভূতে চন্দ্রকান্তেন্দ্র

প্রপূজ্যা ৷৷ অক্ষান্ লভতে

लाकान् निवनायुका मान्याद

া ইতি ভিথ্যাদিতত্ত্ব॰ ॥

সংস্থিতে। চাব্ৰাষণ সমং জ্বেষণ শক্তा देनदिना उक्कदेशः ॥ ইতি **শিवनात्रमम**ेवामः ॥ निवटनाकः पु टेकनामः। यथा । বিল্পত্তৈ রখত্তেশ্চ সে। লিঙ্গণ शृक्ररय अक्र । अर्द्वभारेश र्वि-निर्मुकः निवलाक महीयछ ।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বধৃত ভবিষ্য-পুরাণ।। শিবস্যভূবন জন চ।। শিববল্পভা স্ত্রী শতপত্রী। ইতি ताजनिर्वनिः॥ निरिश्रिय वि॥ শिवविद्या जी निश्चिगी। देखि ताक्रिवर्षके ॥ निववनी जी निजिनी। श्रीवनी । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ शिववाहनः थु जनकान्। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ রাজনির্ঘন্টঃ ॥ শিবশেখরঃ পু॰ বকবৃক্ষঃ।ইতি জটাধরঃ।। ধুস্তুরঃ। ইতি রাজ-

निर्धकेः॥ निवनामङक्ष्क ॥

শিवमायुका॰ क्षी भाक्षवित्भवः।

। স চ শিবেন সঁহযোগঃ। যথা।

নাগরখণ্ডে। উপবাস প্রভাবে-

न वलामिश ह जाशता । भिव-

রাত্রে শুথা তদ্য লিঙ্গ্যাপি

श्वित्रुक्ती जी पूर्गा देख ভন্তশাস্ত্রণ ৷৷ निवा खी नूर्गा। मूकिः॥ रथा শিবা মুক্তিঃ সমাখ্যাতা যোগি-बा॰ याकगामिबी। निवाय या॰ জপেন্দেৰী শিবা লোকে ততঃ च्युका ॥ ইष्ठि मिती भूतार १४६ जशायः ॥ 🟶 ॥ जिन ह । नि-वा कला। बना ह निवमा ह শিবপ্রিয়া। প্রিয়ে দাতরি চা-শব্দঃ শিবা তেন প্রকীর্ত্তিতা।। इंडि बन्नदिवर्एं श्रक्तिंशरध ৫৪ অধ্যাষः ॥ অপর্ঞ । শুশ্চ কল্যাণ বচন ইরেবোৎক্রফবা-**ठकः । ममृ**र्वाठक टेम्ठव वा-কারো দাত্বাচকঃ ॥ শ্রেষঃ সংঘোৎক্রফালত্রী শিবা তেন প্রকীর্ত্তিত। শিব রাশি মূর্ত্তি-. মতী শিবা তেন প্রকীর্ত্তিতা ॥ শিবো হি মোক্ষবচন শ্চাকা-রো দাতৃবাচকঃ। স্বর্য নির্বা-ণদাত্রী যা সা শিবা পরিকীর্ত্তি-ত। ।। ইতি ব্ৰহ্মবৈবৰ্ত্তে ঐক্লফ্ষ-জনাখণ্ডে ২৭ অখ্যাयः ॥ 🗱 ॥

भगीवृक्तः ॥ स्त्रीखकी ॥ भृगालः ॥ जानलकी। इंजानतः॥ जाम-वकी। ইভি **यि** मिनी ॥ वृक्ष मक्जि-বিশেষঃ। স তু দাবি॰শজিনমা-তা। ইতি ত্রিকাগুশেষঃ।। হ্রি-जा ॥ पूर्वा ॥ लादबाहना । इंडि त्राजनिर्घन्छेः ॥ 🟶 ॥ 🐐 ॥ नृशा-लमा ध्रानः खंडाखंड॰ यथ।। त्या-ভন : শুভফলাপ্তিসূচক কথ্যতে-ত্যবিতথ শিবাৰুত। শাস্ত দীপ্ত কঙ্গভা॰ বিশেষতো জ্ঞান মত্র চ गरमाशयुकारक ॥ मश्ता मिश्रका-**मिननाथ युक्ता विवयमाञ्चा ज्व-**তি প্রদীপ্তা। সা ধূমিতা যা॰ স-বিতা প্রযাতঃ শেষা দিগন্তাঃ কি-ल शक्ष मा खाद्भा। मक्ता मिटेशमी স্থলিত। দিগৈন্দ্রী প্রধূষিত। চা-নলদিক্ ক্রমেণ। প্রত্যেক মেক॰ প্রহরাফকেন ভুঞ্জে দিশোফৌ मविका क्रांचन ॥ जातमा मिनमा धर्त अवृत्व मर्म पर्वम হতাশ দিকু। শিবা রটম্ভী সরু-তে নরাণা পণ্তাস কাষ ব্যষ বন্ধনানি।। অক্লো দ্বিতীয়ে প্রহ-রস্য ভাগে সহসুনেত্রানল কাল দিক্। শিবা রটন্তী স্ক্তে ন-রাণাণ সংতাস কাষ ব্যয় বন্ধনা-

नि।। बाक्षा ज्ञीत श्रद्ध हि-नमा एठाम देवतञ्चल याजू निक् । শিবা রটন্তী সরুতে নরাণা সংজ্ঞাস কাষ ব্যয় বন্ধনানি।। मगागरा २ इ. अहरत जूतीरा প্রেতেশ রক্ষঃপতি পাশিদিক । শিবা রটস্তী ক্ষকতে নরাণাণ সং-ত্রাস কাষ ব্যষ বন্ধনানি।। আ-**(म) निर्मायाः श्रह्**ति श्रेवृत्खे त-কোধি যাদঃপতি বাতদিকু। শি-বা রটন্তী ঙ্গরুতে নরাণাণ সংত্রা-म काय वाय वन्ननानि ॥ ७८७। विठीय अर्दा तक्रमा। खाद्या-विनाथानिल जामिनक् । निता রটন্তী ঙ্গরুতে নরাণাণ সংত্রাস काय वाय वन्ननानि ॥ यात्म कु-তীষে ২পি চ যামবত্যাঃ সমীর **(मायाकत भञ्जू मिक्कू। भिवा तर्हे-**ন্তী সরুতে নরাণাণ সংত্রাস কায ব্যয বন্ধনানি ॥ সমাগতে রাত্রি जुतीययाय निमाकत्त्रमान मूरत-শ দিক্ষু। শিবা রটস্তী ঙ্গরুতে ন-রাণাণ সংত্রাস কাষ ব্যয় বন্ধনা-नि।। इंडि निवाक्ट पक्ष मीख धृ-মিত দিক্ ত্রষ যামপ্রকরণ প্রথ-य° 11 % 11 देशीतिष्ठ मिक्खय या-भरगागा । कल । विक्रक विकरिकः

শিবাৰাঃ। জনো ২খ দিকৃপঞ্ক यात्राशां क्लानि श्रांनां क মতঃ শুভানি ॥ কুতান্ত রকো वक्रगानित्वम् निकामायात्म त-किटेंछः मृगानाः। मानिकेवार्छ। শুতি রিফীসিদ্ধি লাভঃ সুভিক্ষণ প্রিয়লোকসঙ্গঃ ৷৷ রক্ষঃ প্রচেতো ৎনিল সোম শন্তু দিকু দিতীযে थहरत करा । मानिकैवार्खा-ঞাতি রিফীসদ্ধি লাভঃ সুভিক্ষণ প্রিবলোকসঙ্গঃ ।। জলেশ বা-তেশু শিবামরেশ দিক্ষারবেণ প্র-हरत वृजीय। मामिस्वार्जाव्य-তি রিষ্টিসিদ্ধি লাভঃ সুভিক্ষণ প্রি-यदनाकमञ्जः ॥ मभीत दमादमभ जुरत्रण यद्भि मिक्कु खरत्र अश्दत চতুর্থে। স্যাদিষ্টবার্ত্তাশ্রুতি রি-ই সিদ্ধি লাভঃ সুভিক্ষণ প্রিয়লো-ক্সশ্বঃ ৷৷ শশাৰু ৰুদ্ৰেন্দ্ৰ হতাশ काल मिक्कांत्रदेवः शक्ष्ययायजा-গে। স্যাদিষ্টবার্ন্ডাশ্রুতি রিষ্টসি-দ্ধি লাভঃ সৃতিক প্রিয়লোকস **दः ॥ ঈশান শক্রাগ্নি ক্রতান্ত র**-(क) निकृ यदां श्रेश्त ह यर्ष्ठ । স্যাদিষ্টবার্ত্তাশ্রুতি রিষ্টসিদ্ধি ৰ্লাভঃ সৃভিক্ষ প্রিয়লোকসঙ্গঃ ॥ ইন্দ্রাগ্নি কালাস্প পাশপাণি

मिकात्रदेवः मञ्जूमयामकादना শ্যাদিকবার্ত্তাশ্রুত রিফসিকি ল্রাভঃ সুভিক্ষণ প্রিয়লোকসঙ্গঃ ॥ অত্যন্তক্ষৈৰ্খত পাশি বাত **मिक्किका व अर्दा इत्या । मा**-দিফবার্ত্তাঞ্রতি রিফসিদ্ধি র্লা-**जः मृजिकः श्रियत्वाकमङः ॥** ইতি শ্রীবসম্ভরাজে শিবারুতে मिश्वायव्यकत्वन दि**छीय ॥ # ॥** একাদিকানা निधनास्यमाना শিবারুতানা মধুনা যদর্থণ। প্রা-**ज्ञानिकाञ्चर्कम् निक्यः गर्वः** यस्य कल॰ তত्তमुनीत्रयामः ॥ धनानाः ভীষ্টাপ্তি মভীষ্টলাভ প্ৰাৰণ ত-তে। ২থস্য ফল॰ শুভঞ্। ভয়॰ প্রলাপণ সকলক্ষ্ণ সৌখা মেকা-দিশবৈদঃ স্বৰূতে প্ৰশাস্তে ॥ ভ-यानानिकें क्षांठ तर्थशानि तिरेके ৰিষোগো মহতী চ ভীতিঃ। স্যা-দিগ্রহাপ্তি শারণঞ্চ দীপ্তে ত্বেকা-**मिना हिंद क्**ठमश्रदकन ॥ थे-স্ত্র্যাণ নিনাদে প্রথমে হর্থলাভো ज्दिष्गिजीर्य निधिषणंनकः। क-ন্যাণ তৃতীয়ে লভতে চতুর্থে অ-ধাগম পঞ্চমকে হর্মদিদি ॥ ষষ্ঠে রবে স্বপ্যতি ভূমিনাথো ভীঃ সপ্তমে স্যাদ্বিফলোফমেষ।

ত্রাসোগিভাগে প্রথমে দ্বিতীযে নরাধিপঃ ঙ্গপ্যতি ভী স্তৃতীষে ॥ ঘাত শতবুর্থে নগরস্য শব্দে শি-বাক্ততে পঞ্চমকে চ যুদ্ধণ। বদস্তি তজ্ঞাঃ কলহঞ্চ যঠে ভীঃ সপ্তমে माधिकत्वा २ छे गर्छ ॥ जात्मा **শুভ॰ मा। मशुज• विजीरम मारमा** মহাব্যাধিভষ তৃতীযে। স্বরে চ-তুর্থে স্বজনাগমঃ স্যাৎ পুত্রো ভবেৎ পঞ্চসু ফেৎক্বতেষু।। জা-যেত কন্যা রটিতে চ ষষ্ঠে ভীঃ मश्राप माषिकत्ना श्रेमञ्ज । গ্রামস্য ঘাতো দিশি রাক্ষসানা মাদ্যে দ্বিতীষে ২পি চ গোঙ্গলস্য ।। मृञ्रु ख्ठीरा वि ठञ्चानाना॰ হানি শ্চতুথেপি চ পঞ্চমে ২ত্ত। চৌরান্ড্যণ রাজভযঞ্চ মঠে ভীঃ मश्राम माविकृतना श्केमञ्ज ॥ শব্দে শিবাষা বরুণস্য ভাগে আদ্যে ভষ॰ হানি রথ দিতীযে। माजाजम्ञागमनः वृजीरम मार শ্চতুর্থে খলু চৌরভীতিঃ।। স্যাৎ পঞ্চমে রাজভযঞ্ষ ষষ্ঠে ভীঃ স-প্রমে দ্যাদ্বিফলো ২ফমস্তু। বা-ষব্যভাগে ভয় মেকশব্দে ভয়া-তিরেকে। ভবতি দ্বিতীযে ॥ বৃষ্টি স্তৃতীষে মহতী চতুর্থে মেঘাগমো

বৰ্ষতি পঞ্চমে চ। ক্ৰোধণ বিধত্তে নৃপতেশ্চ ষষ্ঠে ভীঃ সপ্তমে স্যা-বিহিতে বিরাবে মিুষেত কশ্চিৎ প্রথমে দ্বিতীযে। মহাভয়ণ বিপ্র-বধ স্তৃতীযে ক্ষত্ৰণ চতুৰ্থে খলু इनाटक है।। विष् शक्ष्य यर्शतत्व চ শূজো ভীঃ সপ্তমে স্যাদিফলো श्किमञ्ज । রাহো ততথা দর্শন মা-দ্যশব্দে কেতো ৰ্দ্বিতীযে চ তথো-ত্তরেণ।। উদ্ধাপ্রপাত স্ত্রিষু দূর্দ্দি-नक ठजूर् जिक थन् शक्र ह । मत्या ভবেছৈরিজনৈশ্চ ষষ্ঠে ভীঃ সপ্তমে স্যাদ্বিফলো ং ফমস্ত ॥ जात्मा ज्राविष्ट्रमिन गीमात-শে বৃষ্টি দিতীযে চ রবে শিবা-ষাঃ। বাত স্তৃতীযে স্বশনি শ্চতু-র্থে মিুষেত কশ্চিৎ খলু পঞ্চমে চ ।। লভেত পৃথী । নিনদে চ ষষ্ঠে ভীঃ সপ্তমে স্যাদিফলো ংউমস্ত । ইতি শিবাফকৈ ৰুতে স্বরাফক .. প্রকরণ তৃতীয় ॥ 🟶 ॥ ক্ষেম-লাভ পুনরাগমনানা নিশ্চয় যমধিগন্য বিশক্ষঃ। যেন যাতি পথিকঃ পরদেশ ত শিবা রুত-यथ अथयामः ॥ स॰ य॰ एनम॰ গম্ভ মজাদ্যতানা পুশা শব্দা-

নুষ্ঠরন্তী শৃগালী। শান্তাযাণ সা সিদ্ধৰে বাঞ্ছিতানা দীপ্তাৰাম্ব माामञीखेकवाव ॥ श्राहीः मिन সমুখভান্বিশ্ব প্রতিষ্ঠমানস্য नत्रमा बमा। यकः मृगानी भू-व्रजः करताजि वन्नः वर्षः व। श्र-करताञ्च ७मा ॥ श्राही विशी मा-ভিমুখস্য পুণ্দঃ প্রস্থানকামস্য শিवा जनका। जित्य श्र्यनाभाष **छ मिक्का जानामा भून बाङ्गिछ** কাৰ্য্য সিদ্ধৈয় ।। প্ৰত্যৰ্ক মাশা॰ চ-লিত্স্য পূৰ্ৰাণ শিবা ৰিরাবণ পুরু-यमा यमा । कद्यां १० श्रृदर्भ श्रक-রোতি তস্য সর্ব প্রকারা মভিলা-न निक्षि ॥ अञ्चालित्ना यमा ह দক্ষিণাশাণ শিবা রবণ মুক্ষতি দ-ক্ষিণেন। স্পাদিতা মুক্তা যদি নো তদানী প্রদান ভবেত্তস্য মহীপ-তিত্ব ৷৷ বৈবস্বতাশা চলিতস্য यमा मिवाकत खिष्ठे छ मिक्ट पन । শিবা চ বামা ঙ্গরুতে বিরাবং স্ न्भामाटा जमा ममस मिके ॥ शू-मान् यन। याग्रकअभ् अवामी क-রোতি শব্দ পুরতঃ শৃগালী। আ-স্তে বিবস্বানপি সম্মুখন্চেৎ ভ বেক্তদানী ষচিরেণ মৃত্যুঃ ।। নর-मा सामा कञ्च शियातमः मृ

गानजार्या। यमि शृष्ठजारम। रक्श-कात गामूक्षि गानवमा मृज्यक পুক্তেণ ভবত্যবশ্যং।। দিশং প্রতী-**ही॰ बक्क छः भृगाली नत्रमा यमा।**-ভিমুখী বিরৌতি। শান্তা স্থিতা ना उरन अमाजी मीखा जू मीख॰ কল ৰাতনোতি।। প্ৰাচেতসী॰ मक्षिणमा कार्थाः मृगानिका-क्षमि प्रक्रित्व । यमा जनानी॰ সুবহুননর্থান করোতি চার্থান-পি হস্তিপু॰সঃ॥ দিশ॰ প্রচেতঃ প-तिशालायांचाः नत्रमा यमा वज-তঃ শৃগালী। বামা বিরাব প্রক-রোতি শাস্তা ভবস্তাভিপ্রেত ফ-লামি তস্য।। বো বারুণীণ যাতি क्षिण मनुषाः मृगुन् मिवाय। त-টিতানি পৃষ্ঠে। গতস্য তস্যা-ও হতাশভীতি,রসংশয় স্যাৎ জবিণক্ষশ্চ।। যস্যোতরাশা॰ চ-লিতস্য পুশ্সঃ প্রাচ্যাণ শিবা মুঞ্চ-তি কেৎকুতানি। ভানুঃ প্রতী-চ্যাণ বিহিত স্থিতি শ্চেদপেক্ষিত সিদ্ধ্যতি তৎক্ষণেন ৷৷ মুঞ্চত্যুদী-চীণ চলিভস্য পৃষ্ঠে শিবা বিরাবণ পুরুষস্য যস্য। আন্তে চ মধ্যে নভসো বিবস্থা স্তদ্যাৰ্থ হানি ৰ্ম-রণ প্রদিষ্ট ।। সবেরকাষ্ঠা প্র-

जि यः প্রযাতি কালামুখী চাভি-মুখী বিরৌতি। তদ্যাধ্রণদ্যাভি-মতার্থ সিদ্ধি ভবেচ্চ সম্পূৎ পুন-রাগমশ্চ ॥ ভিগ্নতি ভীত্রকরো দি-শি যুস্যা ফেৎ স্বৰুতে যদি: ত-ত্র শৃগালী। তদ্বজতঃ পথিকস্য ভবেতাণ নিশ্চযতো ধন জীবিত **बार्लो ॥ एकिन्छः श्रथमः यपि** পশ্চাৎ বাৰগভা পথিকস্য শৃগা-লী৷ ফেৎ সৰুতে সৰুতে তদৰ-শ্য॰কেন ধনাপ্তি গৃহাগমনানি॥ অধ্যাস্য শান্তা॰ কন্ধভ॰ নরস্য वामा मृगानी यमि वा ब्रवेखी। তদার্থলাভ বিতরত্যবশ্য মর্থক-য॰ দক্ষিণতো রটস্তী।। বামা প্র-দীপ্তে কঙ্গভঃপ্রদেশেখলাভ॰ ভ-থানর্থ মুপাদিশন্তি। শিবারটন্তী পথি দক্ষিণা তু ক্ষিপত্যনৰ্থানথ-मकटियु ॥ भारख निगरख यनि বা প্ৰদীপ্তে পৃষ্ঠে প্ৰয়াণে প্ৰতি-ষেধ্যিত্রী। শকাষমানা তু শিবা পুরস্তাৎ নিমজ্জযত্যাপদগাধ-मिटको ।। वादम श्रमदा भूत-তোথ পৃষ্ঠে পুংসঃ শিবা জন্মতি যত্র তত্র। আযান্তি চৌরাঃ **প্রথ**-মে বিরাবে দ্বে। র্ভবেক্তক্ষর দ-र्णनकः ॥ नृशामदता २थीगमन॰

তৃতীষে তুর্য্যে ক্ষতিঃ পঞ্চমকে ২-र्थलाज्य। वांशिका मिवामि कलाय यर्छ जीः मश्रुत्य माषिकत्वा १-ঊমস্ত ।। হাহা রব॰ দুক্ততি হাট-ভাবা হাস্য ভু ত্স্যা স্তদুদাহ-রম্ভি। অগ্রেসরা বা পথি যা বি-ষাসোঃ সা দ্বিপ্রকারাপি মনো-त्रशादेखा ॥ नृशमा माजा मगरम পুরস্তাৎ প্রষাতি চেদ্বর্ম নিবেদ-ষম্ভী। সর্ব্যাচ্ছিবা বৈরি পরাভ-বং তজ্জযশ্ৰিষঞ্চাভিমতং বিদ-शा ।। कोर्या खत्तवभान्गमामा-ना (अयः श्रमा ना छिमिन श्रमि-की। निवा अमीरश्च ज् मिनि अ-দেশে সমারটন্তী নহতে ভষাষায় ज्याकारम नीख निमि अमीरेख नीटेंग न्ना॰ रुखि ज्यानि प्रती । यहां छि नर्वागां ना खनानाः-শান্তস্থিতা সৰ্বভ্যপ্ৰদাত্ৰী ৷৷ য-मा **চ नमू**ण्डत्रगा नताना॰ सक॰ मृगाली अकृरक कमाहि । जर्हे-ष्ट्रा ७९ शतित्रक्रनीयः गर्ख्यः ভাবি জলেচরেভাঃ।। ইতি শিবা क्रां शांवा अक्त्रन हजूर्य ।। #11 স্থান স্থিতানা মপি যোগভাজাণ देनियिखिकांना यूशिं मार् जू ! **শিবাবিরাবৈ রশিব॰ শিবঞ্ সুনি**-

শ্চিতার্থ• যুনিসম্মতেন ৷৷ করো-তি ফে ফে ইতি সৰ্বদিক্ষু যদা তদা স্থানবিঘাত যুদ্ধে। শিবা-विधरख कृषिण षमः थान् द्री-জান্ স্বরান্ মুঞ্তি চেদুপেকাণ ।। नित्रखत्र॰ तोि विनिक् निक् সমন্দ কারুণ্য রবাতুরা চেৎ। অ-পত্যমোহেন যদা শৃগালী ত্যক্ত-ম্পৃহা সা কথিতেহ তজ্জেঃ॥ স্থিয়া প্রদীপ্তে কঙ্গভো বিভাগে দ্বালামুখী ফেৎ স্বরুতে ২তিরৌ-জে । গ্রামস্য তস্য প্রকরোতি না-শ' তস্যাথ বা তিষ্ঠতি ষস্য মধ্যে ৷৷ গ্রামস্য মধ্য সমবাপ্য যস্য শ্বালামুখী মুঞ্চতি ফেৎক্তানি । স শুন্যতা॰ গচ্ছতি নিশ্চষেন লোকদ্য বা স্যাদস্থ প্রভূত।।। গ্রামান্তিকে সপ্তদিনানি যাবৎ মহাভযোৎপাদিত ফেৎক্তানি । বিরৌতি চেত্তৎ স্বরুতে শৃগলী তদাসি লোকস্য ভষ প্রভৃত ॥ মধ্যণ দিনে যাবদহানি পঞ্চ শিবা সমীপে নগরস্য যস্য । বিরৌভি যাত বিদধাতি তস্য ভষঞ্চ বহ্লি-প্রভব॰ প্রভৃত॰ ।। পঞ্চার্দ্ধরাত্রাণি কথঞ্চিদেষা জুরারবা ব্যাহরতে **भूगानी। यमाञ्चित्क ७**॰ वहरवा

হঠেন মুক্ষন্তি চৌরা জন সন্নিবে-শে ৷৷ স্থানস্য যস্যোপগতা সনী-প• দিনানি পঞ্চেক্তরতি প্রভা-তে। স্বরেণ রৌদ্রেণ শৃগালভা-ৰ্য্যা স্যাত্তত্ত হানি মহতী নরাণাণ ॥ সুরক্ষিতস্যাপি মনুষ্যলকৈ র্থা-মস্য শীযু॰ গ্রহণ বিধতে। ত্রয॰ দিনানাণ দিবসাবসানে শিবা র-টম্ভী পরুষ স্বরেণ ৷৷ দিক্ষারটন্তী সকলাসু রৌজ ভুনত্যখিমা প-রিতঃ পুরশ্চেৎ। শৃগালভার্য্যা খ-লু তছুবীতি যুদ্ধ নহত্তত্ৰ মহাভি-ষাত ।। স্বালা বিমুঞ্চাতিরৌ-जनामा সমাञ्रला शावि या म-মস্তাৎ। কৌমারকণ যা জনযত্য-কস্মাৎ স্বর্যাচ্ছিবা সা যুবরাজ-পাত ৷৷ রোমোদান যা জনয-ত্যকস্মাৎ কে ইত্যতিক্রুররবা ন-রাণা । মূত্র পুরীযন্ত তুরঙ্গনা-**गा॰ मा मर्बम। मामिना नित्वर** ।। তরঙ্গিণী রোধসি সৌম্যৰূপাণ-জীন্ পঞ্বা মুঞ্তি যা নিনাদান্। শিবাণ শিবাণ তাণ নৃপতিত্ব দাত্রীণ বন্দেত দেবী মভিবন্দনীযা ।। শ্মশানভূমৌ দিন মধ্যভাগে মধ্যে त्रकनगाः चगृर श्राप्तरम । या त्री-তি তস্যৈ বলি মর্যাযুক্তণ ভক্ত্যা

প্রদদ্যাদ্দদি ভদ্রমিচ্ছে ।। সর্বে-ষু কাৰ্য্যেষু সমুদ্যতেষু ৰুলিঃ শি-वाया विनिद्धमनीयः। गुङ्गाक्य त्रिन् विषय श्जूरशङा प्रदीव-লি জন্পতি তত্ৰ সিদ্ধিশা ইতি শি-বাৰুতে স্থানস্থিত প্ৰক্ৰরণ পঞ্চনণ ॥ 🛊 ॥ कथाल दलिदिशान यिना-नी॰ मान्ननागममस्जन मित्रमाः। **मिवायख बनिवाधिकतम्बन् माधि** তাथिल সমুদ্যতকার্যা: ॥ भूमा। লষণ ৰুজগৃহণ ঋশানণ চতুষ্পথণ माठृगृश् जलाखः । बक्ताबनि भठवत (यव याना बनिश्रमानाय यजाः अतिभाः ॥ द्वाभ स्थान् **Бिठ्याम्य दिल्ला विङ्गाधिक मंखिल** कः विषधा । शोद्रानिक स्माक পরীক্ষিতায়াঃ সংগৃহ গো গোময मखरीकार।। अठाखकीर्वतिहा-ষা ৰশ্ব্যায়াশ্চ বিশেষভঃ। ব্লোগা-ৰ্ত্ত নবসূতায়া নগো গোমৰ মাহ-রেৎ।। তন্মিশ্বিচিত্রণ বিভত্তণ ৰিদ-ধাৎ পিফাক্তকেনাক্টদল সরো-জ। मः भू करब खळ मूदा विभामीन् क्राय गर्वानि लाकशानान्।। মধ্যে সুতৈঃ পঞ্চভি রভ্যুপেতা শিবাৰিতা পিঊমধী প্রসন্ম। পু-জ্যা শিবা ত্যান্তি ভক্তিষোগাৎ

প্ৰভূত পূজাকত ধূপ দীপৈঃ ৷৷ माजा ७८ जो मन गाय जनते थ थी-बक भूभिक्तिकाभिष भरेषाः। मण्जूः তি রক্ত নরাসন মাক্র বৃদ্ধিমতা बलिकर्यानि कार्या।। आशास्त्री॰ বাপ চতুৰ্কশীয়া সংমন্ত্ৰ্য মন্ত্ৰেণ চ मखकुषः। बलिश शिकाशा निशि नि कदान नमान्यन्या यक् छज यिष्ट्रिशा अब यवः। ७ मित बानामूथि वलि॰ गृहान गृहान है ফট্ স্বাহা। ওঁ শিবে শিবদূতি ভ-গবভি চণ্ডে ইদ মৰ্ঘ্য ৰলিলীলা সমূচিত গৃহাণ পৃহাণ আগচ্ছ আগচ্ছ ৰাষুৰেগেন শুভ: স্ক त्रक्र कारा। ইতার্ঘ্যমন্ত্রঃ।। বলি-मानाय मञ्जाखत्। ७ नत्मा जग-বতি এন এন বলি গৃহ গৃহ गम्न भून धून मीना मिक मह मह পচ পচ ঘোরৰূপিণি ভো ভগব-তি পিবত পিবত স্বাহা।। এতস্য মন্ত্ৰ দ্বিত্যস্য মধ্যাদেকেন কেনা-भाजिमसनीयः। बनिः निवासाः দুমহাপ্রভাব পৃথক্ পৃথক্ মন্ত্র-**म् ग॰ यान्छ** ॥ छात्रृत बङ्घामन क्षिगां दिनीयिक मात्रन-শাস্ত্রদক্ষ প্রপূক্তবেত্তত্ত ভবত্য-**जी के माग्रायाद्या भवित्यामि**

তে হি।। অঙ্কেষিকা বহি ক্লভা-छ क्ज थिकानि श्र्वाकिल्यन - সার্দ্ধ। জোপ্তাঞ্চ সন্তাজা বিরৌ-তি যেহ শ্রেষকরী জবুক গেহি-नी मा ॥ शिरुविनी मई ममीहि-তেষু দেবী ভবানী ভূবি কেরবা চ া ক্লতাধিবাসা ক্লপৰা সদৈৰ শিবা-क्र ए उन यर्ड विद्यान्।। इंडि শ্রীবসন্তরাজশান্তনে সদাগদার্থ শোভৰে সমস্ত সত্যকৌতুকে বি-त्रिकः भिवाङ्ग्छः वर्षः ॥ **॥**॥ অথ ভান্ত্ৰিক শিবাবলিঃ। তদুক্ত क्ल कृषायती। विस्पृत्त थास-दत वो भागात्म वाश माधकः। या अधान देमरत्मा अक्षान ल भिरतमरय ।। कानि कानी-তি বক্তব্য॰ ততঃ সা শিবৰাপিণী। পশুৰূপা সমাষাতি প্ৰিবাৰণ-লৈঃ সহ।। ভুক্তা রৌতি বলৈশা-ना। गूथ मूखाना ज्यतः। ७-(मिर येक्नन छमा अनाश क्ना-मृष्य ।। व्यवना, यहा मिमारनन नि-যত তোষযেচ্ছিবা ৷ নিতাপ্রা-ন্ধা তথা সন্ধ্যা বন্দন পিতৃত-र्भनः।। उरिश्व अंवरमकानाः नि-ত্যতা সলপজনৈ 🕽 পশুৰূপাণ **मिवा॰ एम वी॰ त्या नाफैयिं निर्ज**

নে ৷ শিবারাবেণ তস্যাশু সর্ব মশ্যতি নিশ্চিত। জপ পূজা বিধানানি বৎকিঞ্ছিৎ সূক্তা-नि है।। शृहीका नाश बामाय শিখা রোদিতি নির্জনে। এক্যা ज्ञारक बंब निवया (पव देख-इर ॥ छेखा गईगकीना थी-তিঃ পর্য দূর্বভা। পশুশক্তিঃ পকিশক্তি নরশক্তি র্যথা ক্র-মাৎ । পুজিতা দিগুণ কর্ম সা-क • ७९ माधरमाजः। एउन मर्द অষত্নেন কর্ত্তব্য পূজন মহৎ।। রাজাদি ভ্রমাপমে দেশান্তর जराषिटक । खंडाखंडांनि क-चापि विचित्र विन गाश्तव ॥ গৃহ দেবি মহাভাগে শিবে কা-লাগিৰপিনি শুভাশুভ ফল राकु बहि गृङ्ग रिन॰ एव ॥ वय मूकार्या माछत्या चिनः अ-नक्षनिथाः। यमि त्मा जुकारा ষৎস ভাদা নৈব শুভ ভবেৎ।। শুভ বদি ভবেত্তত্ত ভুজাতে তদশেষতঃ। এব॰ জ্ঞাত্বা মহা-रमध गांखि यखायन চরে९ ॥ ইভিভন্তসারঃ 🛚 गिवाणिका खी वंगाणेबी। इंडि ভাৰপ্ৰকাশঃ ৷৷

गिवाश्वक की टेमह्नव । ইতি व्राजनिर्घन्छैः ॥ निवन्दर वि ॥ निवानी खी क्षडीवृकः। इंडि गक्रा । पूर्गा। इंडि ला-কপ্রসিক্ষা 11 শিবাপ্রিयः পু ছামঃ। ইতি ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ iা শিৰ্স্য শিকাৰা অপ্রিষবস্তুনি বল্লভেচ ত্রি গ্র निवाशीणः मू॰ वकवृष्णः।इिं त्राजनिर्घक्टः ॥ मिना मिन्दरबाः শেখরশ্চ 11 निवाकना जी नबीवृष्टः। इंडि त्राकनिर्धन्छः ॥ শিবারাতিঃ পু॰ জন্ধুরঃ ৷ ইতি मक्रमावा ॥ निकानिवट्याः भ-व्का गिरालय॰ क्री भ्रामान । श्रातवा ॥ नियालयः पू॰ तककुलनी। देखि गया ठिखका ॥ निरमागृहः । यथा। त्रामार्कनहिन्द्वकायाः । व्य मृथा जरह जीर्ष निकास-ত্রে শিবালবে। মন্ত্রমাজ প্রক-थन यूभारतभाः म जिल्लाहाः।। ইতি তিথ্যাদিতকুণা

निवानः पूर म्गानः। रेडि

ब्राक्रनिर्चन्छेः॥

শিবাস্তিঃ স্ত্রী জবন্তীবৃদ্ধ। ইতি শব্দচন্ত্ৰিকা॥ **णिवाङ्गामः भू॰ वकव्कः। ই**ভি ब्राजिनिकिशा भिवना निम्मानिक गा ন্ত্ৰী ক্লুজটা। ब्राक्निर्यन्छैः॥ शिवनागदक वि॥ **निषाकः क्री ऋषाकः। ই**তি त्राक्रनिर्वकः॥ निविः भू हिन्मुभक्तः। इंडि बिकाश्राममः ॥ खूर्व्हर्नः ॥ त्राक्रविरमयः। मह उनीनव्रवा-জপুশ্ৰঃ। ইতি নেদিনী।। তগ্য চরিত্র॰ বশা। নৈত্রেয উবাচ। मृन् ताकन् अंतकगामि समान्म॰ भिविना थथा। जनांभः मख्वान् সত্য পুরা ছোশীনরো বুবা।। সত্যদানরত জ্ঞান্বা বিবি মি-खा ७ ७ वर्गी। जिल्लागार्थः म-विषाजाः बर्खमाटम महाबदतः।। ৰিছি ছুঁ ছা কপোতন্ত হরি-ल्णानाक श्रुबरमद्रः। भन्नगांकी महीभाकः निनिमा छर्गवस्त-্ৰাঃ ॥ জাছি মাং পৃথিবীপালে-ত্যকদৎ শোনজান্তৰাৰ। স ত-বাশাস্থানাস কণোড পর্ণা-াতং মারাজান যুপমম্যাথ শ্যে-नः ध्यावाह मःमनि। वहनः मृश्

व दाजन् क्थार्डमा अपूरिनः ॥ धर्माश्चान द्वा नाष्ट्र देव भृथि-ব্যা॰ সর্বপার্থিবাঃ। তদ্বিদ্ধা ক-থ॰ কর্মা কর্ত্তু মিচ্ছসি পার্থির।। मर्बमा मुल्लामः वार्थाः वनदार्थाः স্ত ক্সাচিৎ। পরার্থা ভবতো নিত্য• সকলস্য ভরে। রিৰ ॥ নোপকারপরে ২প্যেব মুপকার-পরো জনঃ। অপকারপরে ২পি ष सूर्यकावरावः जला ।। सटेमवः বিহিতো ধাক্তা ভক্ষোবণ তণ স মুৎসৃজ। স শ্যেন মাহ সংপ্রাপ্ত खागथी महिरशे मन।। ज्याख-वारः न ममर्गिषिया करगाजकः শ্যেন ষদত্ত যুক্ত। দ্ব॰ মন্যাসে তৎ করবাণি সর্ব মৃতে কপোতাৎ খ नू जला भव।। जूला हि नूमश-खाकाः अवक्रामि विश्वम। स्था কামৰসে চান্যছক্ৰবিদ্বা কপো-**७कः।। (मानः श्राह कि त्वल्ख** প্রীতি রাসীৎ থগে দৃঢ়া। কথ-किनग जूनावि व बा॰गानि श्र-वक् रम।। ब्राक्त ज्यवदीकृत्की वत्य बा॰मानि बाहरम। अङ्ग्य-চ্ছাৰি তে সৰ্বাঃ ব্যাণসং ভুল্বা পোতেন সম নৃশঃ। উৎক্বতা

ভোলখামাস প্রস্থাইটো মনসা ত-छः ॥ जूलया धि्यमागञ्ज करिंगा-ভো ক্রভিরিচ্যতে। পুন শ্চোৎ-क्रुंग मा॰मानि छठः थामा॰ म भार्थिवः ॥ न विमार् यमा याः मः करभारकम मम् कि । एकः প্রকীণ মাধ্যাপি সাধ্য সুখ্যতে **भद्रः ॥ यहा (छन न जूबाः छ**९ म जूना माक्र १ वर्ग वरा श्री वत्रश्रीवृ न द्रारका न ह कीविरङ া ক্রুণাসক্তচিত্তেন তেনাপে-ক। কৃতা কৃচিৎ। পরদৃংখাতুরা নিত্য বসুখানি মহান্ত্যপি।। না-পেক্তম্ভ মহাত্মানঃ সর্বভূতহি-তে বতাঃ। পরার্থ মুদ্যতাঃ সম্ভঃ সম্ভঃ কি॰ কি॰ ন স্বৰ্তে ॥ তা-मृभगाबूद बाति जलरेम खर প্রপীষতে। এক এব সতা॰ মার্গো यमजीक्रजभावन ।। मर्ख मक-রোৎ ক্রোতে পাবক ষদগাণ্প-তিঃ া আত্মান পীডবিদ্বাপি माबुः मूथबर्छ भेतः ॥ द्वानयन् তांशिकान् वृत्का मूःथक महत्क चरा अथ छित्रन् मयाकटा भू-শ্বর্ষ পপাত চ।। দেব দুব্দুভ-वा तम् खना योगीनत्त्र नृत्भ । ७७ समा जमा खाद्या वाका॰

চৈতদভাষত।। শত্ৰুঃ স্বৰূপ না-স্থায় ধর্মে রাজ্ঞঃ পরিস্থিতি ৷ ই-ন্দ্ৰোহ মন্মি ভদ্ৰু তে কপোতো र्वावाहनः श। जिख्लामगादनी ত্বা॰ রাজনিম॰ বজ্ঞ মুপাগতে। মহাকারুণিকেনেই যৎক্কত তৎ मू एक त॰ ।। देनवृ शृद्ध नृशा कि कू र्न कतियाञ्जि চाপत्ति। यटल मा॰-সানি গাত্তেভ্যঃ সমুৎক্তানি পাৰ্থিব।। এষা তে সাশ্বতী কী-र्खि व्यक्तिनन् जित्राजि। पि-ব্যৰূপধর শৈচৰ পালমিত্বা মহীণ চির । সর্বান্ লোকানভিক্রম্য বন্ধলোক গমিষ্যতি ॥ এব-মুক্তা তমিন্দামী জন্মতু ব্রিদ-॥ শালয় । রাজ। তু ক্র তু মিফু। ত মুমুদে দেবতা তদা।। ইতি বহিপুরাণে শিবে রুপাখ্যান-नायाशायः॥

गिरिक। खी यानिति गरः। याँ।शान् इंडि था। छः। इंडि छत्रङः
।। जूनी इंडि शानकी इंडि ह
छाया। छ पर्यापः। याभायान॰ २। इंडा मतः॥ गिरीतथः ७
। इंडि हातावनी ।। छ जानितिधि
यथा। वङ्कि कराह। मृन् छादयहीशान महानान मनुख्यः।

ষেন বৈ দত্ত মাত্রেণ মুচ্যতে ন-त्रकार्गवाद ॥ मार्गमीर्स छएड भक्क ममूरभाषा इत्त पिंदन । माय काञ्चनत्या दानि देवणाथ-मा नत्य ह ॥ बानगाः इति মভ্যচ্চা কলসোপরি সংস্থিত । শিবিকা॰ চক্রবংশোখাণ ঋজু-माक्रमयी॰ जथा ।। जानीय म-ब्रिधि॰ विरक्षाः खजुङ्ख मगिव-তা । সংভূষা চ সগেঞূকা জা-গর॰ তত্র কার্যেৎ ॥ বিদ্যাভি-জনসম্পন্ন বিদগ্ধ শাহ্রবিত্তম। আজ্ঞাসার শুচি দক্ষ কলতা-পত্য ভূষিত ।। প্রাতঃ সভার্য্য মভ্যচ্চা বানোভিঃ স্বৰ্ভুষণেঃ। উপানচ্ছরিকাণ খদ্দাণ পটকঞ্চুক বেণুকাণী আদর্শ স্থগিকাণ পা-নীয়পাত্র॰ কা॰স্যভাজন॰। চত্বা-রো বৃষভা দেযা ধেনবঃ শুভ-লক্ষণাঃ।। শিবিকাবাহকানাস্ত তথা ছত্রস্য ধারকে। বৃত্তি দেঁযা তথা मधः वर्षा मः वामा गण जु।। वर्ष वर्ष भून (पंष॰ बाक्मनमा তদৈব তু। বৃত্তি রেব স্বসংপত্তী बर्स वर्सिंश वार्सिकी ॥ इंशागु-ত্রাতপত্রাণ সরু কেশব মে প্র-ভো। ছৎপ্রীণনায মে দত্ত শা-

खिविष्वाक्रियाय देव ॥ यद खेरला শিবিকা'দেব প্রীতো ভব জনা-र्मन। पख्रान् छान्यिपरम जन ত্বীকাষ পুত্রিণে।। সুরাপ স্তেয-রুৎ সঙ্গী ত্রনাহা গুরুতন্নগঃ। শিবিকাদান মাহাল্যাৎ মৃচ্যতে মাত্র সংশযঃ।। পিতৃপক্ষামাত্-পক্ষান্ পত্নীপক্ষা॰ স্তথৈব চ। আত্মান বন্ধুপকা শ্চ তারবে-ब्रद्रकार्गवाद ॥ जुङ्ग न विभू লান্ ভোগান্ ইহামুত্র সুথপ্র-দান্। সপত্নীকঃ সপিতৃকো বি-কুসাযুজ্য মশুতে॥ ইতি বহ্নি भूतार्व विविकामानाशायः ॥ निविशिष्ठः शू॰ मशामिवः। इंडि मक्तव्वावनी ॥ मिनिविकेम-कार्राभाव॥

শিবিরণ ক্লী নিবেশঃ। ইত্যমরঃ

। দ্বে আগন্তক সৈন্যবাসে।
কটকে ইত্যন্যে। নৃপস্য মূলস্থানে ইত্যেকে। ইতি ভরতঃ।।
শিবিরন্ত নিবেশে চ ক্লীবন্ত যুদ্ধবেশানি। ইত্যুণাদিকোষঃ।।
অথ শিবিরলক্ষণ । ঞ্জীভগবানুবাচ। শিবিরণ পরিখাযুক্ত
মুক্তঃ প্রাকার বেটিতেও। যুক্ত
দাদশশারক্ষ সিংহ্ছার পুর-

कृष्ण ॥ युक्त ि विकिर्विक क्विविषक क्लाउँकः। निविक्त-वृक द्रहिङ श्रीमिटेकन्त भूतक्-७ ।। जूनकन हैस्त्वर थान-**ণঞ্ছ তথৈৰ** চ।। 🖝।। তত্ত্ব বিহিত निविक्तकाद्ध यथा। विश्वकाङ क्वां । कमा कमा जताः कार्थः প্রশন্ত শিবিরে প্রভো। অম-व्यवस्थ रक्षा॰ वा गर्ब॰ मा॰ वकु बर्मि ॥ औडगवानुवाछ । जा-व्यय नातिरकलक गृहिनाक ध-नश्रमः। निवित्रमा यमीनादन र्शृदि भूखथा छकः॥ गर्वे मक-লাইশ্চ তরুরাজে। মনোহরঃ। त्रमालवृक्तः भूवित्रित्तृगा॰ मन्ना ९-ला ख्या ॥ खंख्यमक मर्वज जूतकादता निशासय। विद्यम्ह श-নসকৈত্ব জন্বীরো বদরী তথা।। প্রজাপ্রদশ্চ পূর্বিমন্ দক্ষিণে ধ-नम ख्या। मन्मि धम क मर्बव या हि बर्का एशी। ज बूर्क क मािष्यः कमनााम्। उक खथा। वसुर्यमण्ड शूर्वित्राम् मिक्टिश मि-जेम खथा।। मईज खंडमटेन्टव धन भूल ७७थनः । इर्यथान ७वा-কশ্চ দক্ষিণে পশ্চিমে তথা।। ঈ-भारत मूर्थमरेक्टर मई देवव निमा-

यय। সর্বত্র চম্পকঃ শুদ্ধো ভূবি **जिक्र अप ।। यनावू** काणि श्रवाख॰ यात्रात्र्कः मुकायुकः। थडकू ती कर्बिंग ठानि निविदत यञ्चलक्षाः ॥ वाख्वः काद्रतः सम्ह वार्खा**त्रम्ह** खंख्यानाः । लठाकलक एउम॰ गर्ब गर्बव নিশ্চিত ৷৷ 🛊 ৷৷ প্রশস্ত কথিত कारता निविक्षक निनामय। व-नावुरका निविद्धान्छ निविद्धा नग-त्त्रि ह ॥ वटहै। निविकः निविद्त নিত্য চৌরভষ ততঃ। নগরেষু श्रीमक्षक प्रमां भूगा ख्रा ৷ হে কারো তিন্তিভীবৃক্ষো ষত্না-ख॰ गतिवर्द्धय। भद्रवश्वमश्वानिः স্যাৎ প্রজাহানি র্ভবেৎ গ্রহে ।। निविद्र श्रिनिविद्यक्त मगद्र किश्विरात्र ह। च निविष्यः श्रीनिष्य-**म्ह नगदत्रम् ७था भूदत्र ॥ वाह्या** মতিনিষিদ্ধাণ্ট প্রাক্ত স্ত পরিব-ब्लंदिय । थब्कृतम्ह खर देन्हव निविकः गिविद्यं छथा।। न निवि-कः अगिकान्छ आत्मसू नगदत्रसू ह । वृक्षण हनकामीनाः शानाः म-क्लथमः।। आरमयू नगरत हानि শিবিরে চ তথৈব চ। ইক্রুক্শ **७७**मः मख्यः ७७म ख्या।। ञ-

শোকণ্চ শিরীবশ্চ কদুর্শ্চ শু-ভপ্রদঃ। কচ্চী হরিদ্রা শুভদা শু-जन नार्जक खथा।। र्द्रीककी ह खंडमा श्राय्य नगरत्र कृ । म वा-ট্যা ভজনা নিত্য তথা চামল-की अव ।। ।। भकाना महि ।। जन मन्नानाक जरेबर है। कलान म्टिक्यवमा॰ वाट्डो द्वापनका-तिना ।। न' ७७ अन यत्राया मू-চ্ছমকারণ পর । বানরাণা ন-রাণাঞ্চ গর্দভানা গবা মপি ॥ अक्रुताना भूगानाना भारकीता-ৰা মভদ্ৰক । ভেটকানা শূক-রাণা॰ সর্বেযাঞ্চাশুভপ্রদ॰ ॥ ঈ-শানে চাপি পূৰ্ৰিম্মন্ পশ্চিমে চ তথোত্তরে। শিবিরস্য জল॰ ভদ্র यनाखा ७७ स्व ह ॥ की एवं প্রত্থে সমানঞ্চ ন স্বর্যাক্সন্দিরণ वूधः। हजूदरम् गृष्टं कात्रा गृहि-ना॰ धन नामन॰ ॥ मीर्च अष्टः भति-মিতো নেত্রাকেনাপি সংহত । শুনোন রহিত ভত্ত শুনা শূন্য-अम॰ नृगा॰ ॥ अटङ इखबराष পূर्वः मीदवं इंखजयः छथा। भृ-হিণাণ শুক্তদুৰ্ণ দ্বারণ প্রাকারস্য शृहमा ह। न यशारमरण कर्छवा॰ किकिश्वानाथित्क एक ॥ हजू-

রসু॰ চন্দ্রবেধ• শিবির॰ মঙ্গল প্র-দ॰।। অভত্ত॰ সূর্য্যবেধঞ্চ শিবির॰ यक्लाश्रम । जञ्डम मृर्गादा ধ॰ প্রাঙ্গণঞ্চ তথৈব চ।। শিবিরা-ভ্যম্ভরে ভদ্রা স্থাপিতা তুলদী-म्गा॰ । धन भूखश्रमाजी ह भू-गामा इतिज्ङिमा ॥ প্রভাতে जुलमी॰ मृक्ता अर्नमान कल॰ ल-ভেৎ ৷ মালতী যুথিকা ক্লম্ম মাধ-বী কেতকী তথা।। নাগেশ্বরণ মল্লিকা চ কাঞ্চন॰ বঙ্গল॰ শুভা। অপরাজিতা চ শুভদা তেষা মু-म्यान मीश्रिजः॥ शूर्व ह मिक्टन-চৈব শুভদ নাত্র সংশযঃ। উদ্ধৃ ষোডশহস্তেভ্যো নৈব ন্ধ্র্যা-मगृरः गृरी ॥ উर्দ्धः विः भणिरु छ-ভাঃ প্রাকার ন শুভপ্রদ । সূ-ত্রধারণ তৈলকারণ স্বর্ণকারঞ্চ হী-व्रकः ॥ वाणिमृत्न वाममत्था न স্ব্যাৎ স্থাপন বুধঃ। আহ্মণ ক্ষ-ত্রিষণ বৈশ্যণ সচ্চুদ্রণ গণকণ শু-ভ া ভট বৈদ্য পুশকার স্থা-शरय< **गि**विज्ञांखिरक ॥**॥**।। श्ररः চ পরিখামান শতহস্ত প্রশস্ত: ক॰।পরিতঃ শিবিরাণাঞ্চ গম্ভীর॰ मगर्खकः ॥ मरक्छ शृर्वकरिक्षव পরিখা দারশীক্ষিত । শত্রো রগ-

याः विज्ञ गया त्यव मूर्थन ह

। नान्ननीनाः विश्विजीनाः हिछानानाः व्रथ्य ह। नियानाः
निश्चवाद्यानाः विष्णुवानाः मञ्जून
कः॥ धूळ्यानाः विद्यानाश्वादणाः
व्रथाना यवाञ्चिकः। व्रव्या यविद्यक्तानाः निविद्य कार्य भीनिम्नकः। वृक्कः वृक्ज्यकः पृतछा वर्क्यवृष्टः। भूज पाद धनः
हनापिणाः क्यत्नाख्यः ॥
हेवि व्यक्तिवर्द्ध श्रीक्षः क्यांनः
एकः ३०२ व्यक्षायः।।

शिवी थः प्रशासान । ইতি हातावनी ॥

শিবেষ্টঃ . पू॰ वकवृष्णः। ইতি त्राष्ट्रिमर्थकः॥ শিবপ্রিযে ত্রি॥ শিবেষ্ট। স্ত্রী দূর্ব।। ইতি রাজ-নির্যক্টঃ॥

শিশিরঃ পু॰ হিনঃ। ইতি মেদিনী
শিশিরঃ পু॰ ক্লী ঋতুবিশেষঃ।
ইত্যমরঃ।। স তু মাঘ কাল্পন
মাসন্বধাত্মকঃ। তৎপর্য্যায়ঃ।
কম্পনঃ ২ শীতঃ ৩ হিমক্টঃ ৪
কোটনঃ ৫। ফ্লচিৎ পুস্তকে কোটনঃ ৫। ফ্লচিৎ পুস্তকে কোটনালানে কোডব ইতি পাঠঃ।
ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। তৎকালীন
ন জলগুণা জলশব্দে দ্রফব্যাঃ

শিশির: ত্রি শীতগুণযুক্ত: । বথা

। শীত গুণে তর্দর্থা: সুষীম:
শিশিরো জড়ঃ । তুষার: শীতলঃ শীতো হিমঃ সপ্তান্যলিককাঃ ৷৷ ইত্যমর: ৷৷

শিশুঃ পুণ বালকঃ। তৎপর্বাযঃ। পোতঃ ২ পাকঃ ও অভঁকঃ
৪ ডিডঃ ৫ পৃথুকঃ ৬ শাবকঃ ৭।
ইত্যমরঃ।। শাবঃ ৮ অভঃ ৯
শিশুকঃ ১০ পোতকঃ ১১ ভিফকঃ ১ই। ইতি শক্রত্বাবলী।।
গর্ভঃ ১৩। ইতি জটাধরঃ।।
তস্য লক্ষণাদি যথা। বৃদ্ধাশাতা-

ত্রপঃ। শিশো রভ্যুক্তণ প্রোক্ত॰ वालमाहियन॰ मृत्रुः। त्रक्रवता-দি সম্পূৰা স্নাতব্যম্ভ সনারকৈঃ । अक् हू डाक्र ग्वानः था गन थाननाक्ष्यः। ज्यात्रस्य न वि-**ख्डिंदश** गावत्योक्षी न वक्षन॰ ॥ ইতি গোণালন্যাৰপঞ্চাননক্ত স্মৃতিমির্ণয়ঃ। অপি চা চতুর্থা-ष्ट्रतामृष्णु वायमरकी मना वयः । শিশো ব্ৰত প্ৰস্ৰব্ভি গুৰু সম্ব कि वाक्षवाः॥ देखि वक्षभूतान বচনং ৷৷ জাত মাত্ৰঃ শিশু স্তাবৎ यावष्रकी मना वयः। म हि गर्छ-मत्या एकदमा वाकि याक अमर्भः कः ॥ ভक्याज्यका ज्या त्यस्य বাচ্যাবাচ্যে তথানৃতে। তন্মিন্ काटन न (मायः मार्थ म बायटना-शनीयरा ॥ देखि मन्दहन॰ ॥ 🛊॥ ज्जाशाननक्ता यथा। शाबा-(या शक दानीत्ना वक्रगाजिम्थ-শিশুণ৷ অধ্যাপষ্টেচ প্ৰথমণ দ্বি-জাশীর্ভিঃ প্রপূজিত ।। ইতি মল-मामञ्ज्य वृष्णािवित्रमः ॥ 🛊 ॥ শিশুপুত্রণ তাকু। প্রবজ্যাত্রম-নিবেধে। যথা। মাতর॰ পিতর॰ বৃদ্ধ ভাষ্য দৈব পতিব্ৰতা । শি-.শুঞ্চ তনষ হিছা নাৰুপুতাশ্ৰমণ

बर्ज्य ॥ हेि यहानिर्वाणकु ।।।।। अवादाल नत्य अकेवाः।। निखकः पू॰ जनकद्वित्नियः। শুশুক ইড়ি ভাষা। তৎপৰ্য্যাৰঃ । উनुनी २। इछामतः।। ए उ পল ইতি খ্যাতে অভিচঞ্চলে यथरमा । निख्यात्राक्त् र्याथ-ग্যভেদঃ উলুপী। ইভি কলিঙ্গা-मयः। त्नास्य देखि भारका मध-স্যবিশেষঃ উল্পীত্যন্যে। ভা गान देखि थाए देखादक। শিশুনার এব উচ্যতে ইতি স-क्ष । তथा ह त्रज्ञकाशास्त्री हु-न्त्री निख्यातः मापून्शी नि-ৰুক তথা। উৰ্দৃ লুম্পতি ভ্ৰা-गां ि उन्नी नून ५ म न (धने ছেদে উৎপূর্ব: এহাদিয়ারিন্ यनीयामिषा छ लागः ला मी र्ग षिशुरवाकारतानि। नि-खक खूनूनी वानः ध्याष्ठी जू সকরী ৰয়ো রিতি বাচস্পতিঃ। চৰগাদিঃ কেচিৎ। শিশু রিব শিশুকঃ। শিশুকঃ শিশুমারেপি বাল-কোলু পিনো রগি। ইতি রুদ্রঃ।

ইতি ভরতঃ ॥ অপি চ। উল্

शीमाष्ट्रम्भी हून्यी हूनकी

তথা। শিশুক শেচতি পর্যায়ঃ
শিশুৰারাক্তো ঝনো। কৈশিচদুৎপত্ত মহন্যে তু পর্যায়ে।
হবং নিগদ্যতে। ইতি শব্দরত্বামারশ্চ স

ह आदि। बदारकः। ই छ दाज-बिसंग्डें: ११ क ११ मिख्यादः ११ बालकः। ই छि द्यपिनी ११ तृक-वित्यवः। ই छि द्यप्तिनी ११

निखनका जी मलिकावित्मयः।
कथा। नचीशिक नंदक गाए क्वाबानी नंदमानिका। निख-गक्का महमली छथा करू नमलाथ ।। ইতি नक्कमाना।।

শিশুচাক্রাষণ ক্রী ব্রতবিশেষঃ।
বথা। চতুরঃ প্রাত রগ্নীষাৎ
পিঞান বিপ্রঃসমাহিতঃ। চতুরোঃ ইন্তমিতে সূর্য্যে শিশুচান্তাষণ স্মৃতং।। ইতি মনুঃ।।
শিশুতা জ্রী শিশুসং। শিশোভাবঃ। শিশোরবঙ্গ। ইতি জটাবরঃ।।

শিশুৰ ক্লী শৈশবং। ইত্যমরঃ।।
তৎপর্যাকঃ বাল্যশব্দে জফব্যঃ
শিশুপালঃ পু
চেদিদেশীষরাজঃ। সতু ক্লফেন হতঃ। শিশুপালবধকাব্যং মাযেন ক্লতং।

তৎপর্বাবং । দৰবোষসূতঃ ২ চৈদ্যঃ ৩ চেদিরাত ৪। ইতি জটাধরঃ ॥ শিশুপালকঃ ৫। ইতি ত্রিকাগুশেষঃ ॥

निश्रभावकः श्रूप्त प्रस्वाक्त्र्वः । इणि जिक्साक्ष्रभावः ॥ स्कृतिक-प्रमृत्कः । इणि भक्तास्त्रका ॥ वालकभावास्क जि॥

শিশুপালহা পু• প্রীক্ষণঃ হৈছি
হেমচন্দ্রঃ ৷

শিশুভাবঃ পুণ শিশুৰণ। তান্ত্ৰি-কভাববিশেষঃ। যথা। উক্তানু-ক্ৰঞ্চ যৎকিন্দিৎ ক্ৰিয়তে সৰ্ব-দা প্ৰিয়ে। শিশুভাব ইতি খ্যা-তঃ সৰ্বতন্ত্ৰেষু গোপিতঃ।। ইতি তন্ত্ৰণ।

निख्यातः श्रू जलकत्वाक्तः।
त्नातं हेि छछक् हेकि था।
रेठावत्रकत्रको ॥ जनागर्या।
यः निछक्षक्रका जक्ष्यः ॥
जना भग्ना छगाक भागिनक
जक्ष्याः ॥ जाताक्रकार्यः ॥
हेकि व्यक्ति ॥ जिवत्रका यथः।
। निछ्वात्रक यः व्यक्तिः न
क्रवा व्य किर्क निष्ठित्रका । वक्रवा व्य क्रिक निष्ठित्रका । वक्रवा व्यक्ति भाग्न व्यक्ति । व-

শি ৰুচাতে। ভাৰতা শৈচৰ ভারা-ন্তাঃ শিশুমারীব্রিতা দিবি ॥ जावर**ङाव जू बर्वा**नि **जीव**ङा-ভাষিকানি ভু। উত্তানপাৰ ভ-मा। विद्धारमा मुखदा रन्ः॥ बटका २४तन्छ विटक्करका भएकी मुकीन याखिण्डा राषि नादायन म्हाटख अश्वरनो भूवंशामदवाः॥ বৰুণ শ্চাৰ্য্যমা চৈৰ শশ্চিমে ভস্য मक्षिमी । निश्नः मःवरमत्र ख-স্য নিত্রো ২পান॰ সমাঞ্রিতঃ ।। পুচ্ছেমিন্চ মহেন্দ্রন্ড কল্যপোথ ভতো ধ্রুবঃ। ভারকা শিশুমার-স্য নাম্ভ মেডি চতুষ্টৰণ।। ইত্যেষ मिदिदिशाय शृथिवाा जाि या॰ जथा। बीभाना मूमशीनाक পৰ্বতানাঞ্চ কীৰ্ত্তিতঃ।। বৰ্ষাণাঞ্চ नमीनाक रम ह एवम् वमान्ड देव। তেষা বৰুপ নাখ্যাত সংক্ৰপঃ व्यवज्ञान भूनः ॥ भाषा देवस्वदः কাষ স্ততো বিপ্ৰ ৰসুশ্বরা। পদ্মা-কারা সমৃত্তা পর্তাক্যাদি সং-যুতা।। জ্যোতী সি বিকু ভূ বনা-नि विकूर्यनानि विकृर्विषिटण। पि-भन्छ। नहाः अमुखान्छ म अव गर्ब॰ यमिक यमान्ति ह विश्ववर्य ॥ छ।-नश्रकारणा जगवान् यरणागावरन- यमूर्ख नंजू तस्त्रकः। कट्टा हि देशवासि ध्यापि ट्यमान कानी-हि विकान विक्षिणानि ॥ यपा हि स्वा निक्सण गर्न कर्यः कट्य कानम्यास्त्रपानः। जमा हि यक्त्रस्ट्याः क्यानि स्वस्थि ना ॥ महायहन्द

बहेकः क्लानिका क्लानिका हुन त्रक छट्टाशानुः। कटनः यक्षा স্তিমিতাত্ম নিশ্চমৈ রালক্যতে वञ्च कि यज वञ्च ॥ ইভি विस्पूर् রাণে ২ অংশে ১২ অধ্যায়ঃ ॥॥॥ অপি চ। কেচিদেতজ্যোতি র-নীক শিশুমার সংস্থানেন ভগ-বতো বাসুদেবস্য যোগধারণাযা यन्वर्वरिष्ठ। यमा भूष्ट्रात्थ १वा-क्नित्रमः ऋखनीजूजरमङ्गा अन-व जेशक्खः। जमा नामृतन अ-জাপতি রগ্নি রিজে। ধর্ম ইতি পু-চ্ছ্যুলে ধাতা বিধাতা চ কট্যাণ मश्चर्यः॥ তमा मिक्नावर्ख अख-नीज्जनद्वीद्रमा यान्गमगयनानि দক্ষিণগাম্মে নক্ষত্রাণি উপকল্পয-श्चि। मिक्किगायनानि जू मत्ता यथा শিশুমারস্য স্বস্তলাভোগ সন্ধি-বেশস্য পার্শ্বযো রুভ্যো রুপ্যব-यवाः नम मःशा खविष्ठ। शृत्धे

স্ক্রীথী আকাশ গ্রহা চোদরতঃ । भूनर्वम् भूरको प्रक्रिम वामरबाः শোৰো রাজান্তেষা চ দকিণ বা-মযোঃ পাদযো রভিজিদুত্তরাবা-ए प्रमान कामरका नीमिकरमा य-থাস-খ্য- শ্ৰবণ পূৰ্যবাচে দক্ষিণ वामत्या त्नां हनत्या र्थनिष्ठा मृनक मिकन वागरमाः कर्नरमा ग्रामी-नास नक्खानि मिकनायनानि वा-মপাৰ্শ্ব বিধিষু যুঞ্জীত। বিধিষু অ चिषु। ७८थव मृगनीयां निन्रानग-यनानि मिक्निनेशास्त्रम् आिलिना-ম্যেন বৃঞ্জীত। শতভিষা জ্যেষ্ঠে कक्तरवा एकिन वामरवा मंतरम । উত্তরাহনাবগন্তাঃ অধরাহনৌ यभः मूर्थ ठाजातकः नदेन कत উপত্र वृह्ण्णिकः कञ्चमि वक्षमा।-**मिट्छा। सम्राय नातायरंग यनि** চক্রো নাজ্যা মুশনা স্তনযো র-शिरमी वृषः आंगामानरमा तार र्गत्न द्वावनः नर्वाद्वयु द्वायम সর্বে জারাগণাঃ। এতদু হৈব ভগ-वर्छ। बिरकाः भर्वत्मवछामयः ब-প মহর্হঃ সন্মাষা প্রার্ভা বা-থ্বতো নিব্নীক্ষমাণ উপতিষ্ঠেত ন-যো নযো জ্যোতি লোকাষ কা-वायनायानियियाः शब्दय महा-

পুরুষাযাভিধীনহীতি। গ্রহক্ষ
তারানৰ মাধিদৈবিক পাপাগহ-মন্ত্রহুতা ত্রিকাল । নমস্যতঃ শ্বরতো বা ত্রিকাল নশ্যেত তথ কালজ মাশু পাপ
।। ইতি শ্রীভাগবতে ৫ ক্ষক্ষে শিশুমার সংস্থান ২৩ অধ্যাবঃ ।।
শিশুবাহকঃ পুণ বনচ্ছাগলঃ ।
ইতি হে মচন্দ্রঃ ।। বালক্ষ্রাঢরি ত্রি ।।

শিশুবাহ্নকঃ পু॰ বনচ্ছাগঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেবঃ ৷৷

শিশঃ পু॰ মেটুঃ। ইত্যমরঃ।। অস্য পর্য্যায়াঃ লিঙ্গশব্দে জ উব্যাঃ।।

শিখিদানঃ ত্রি পাপকর্মা। তৎপর্যায়ঃ। ক্লফকর্মা ২। ইত্যমরঃ ৷৷ ত্বে পাপাচারে। শশ্বমিন্দাতে ২সে শিখিদানো মনীষাদিঃ ত্বি তালব্যঃ। ক্লফণ
পাপাচারত্বাৎ মলিন কর্মাস্য
ক্লফকর্মা। কেচিত্বু অক্লফকর্মা ইতি পঠিন্তা। ত্বে নিশাপে
খিদি শৌক্লে ইত্যস্য কানে শিখিদানঃ। অক্লফণ নিশাপত্বাৎ
শুক্লণ কর্মাস্য অক্লফকর্মা শুক্লকর্মা ইত্যর্থঃ। ইতি ব্যাচক্ষতে

ह। इंडि खन्नडः ॥ # ॥ भिश्वप्रानः क्रककर्षा श्वक्रकर्षां ठ कगाहिष्। इंडि क्रहाधनः ॥
भिष वर्ष। इंडि क्रिक्क्रफ्रकः ॥
भिष कि जगर्दाशरगरग। इंडि
किर्वक्रफ्रकः ॥ जगर्दाशरग।
गः शनिरम्पीकन्न। कि स्मान्ये । स्मान्ये वर्षां वर्षां

रवमः मनविष्यः स्ना र एक निकी बाननाः ध्याका निज मान्य ণাৰিতাঃ।। ইতি কৌর্শে উপরি जाटम २८ जगानः ॥ । ज-नाक। वित्यव मन निश्च व्या यः भिकः अठकारः । मन्यस्त्र् ষে শিফী। ইহ তিষ্ঠ স্তি ধার্মিকাঃ া৷ মনুঃ সপ্তৰ্য কৈচৰ লোক স স্তান কারণাৎ। তিপ্তস্তীই চ ধর্মার্থণ তান্ শিক্ষান্ পরিচক্ষ-তে ।। रेजः भिरेकः भानिरा धर्माः ऋाभारक देव यूरण यूरण । रें विवादिमा ३२० जशायः ॥ निकाहातः प्र नाश्वावश्वः। যথা। ততঃ স্মার্তঃ স্মৃতো ধর্ম্মে। वर्गाञ्चम विज्ञाशमः । এव देव দ্বিবিধা ধর্মঃ শিক্ষাচারঃ স উ-চাতে॥ ত্রয়ী বার্ত্ত। দুওনীতিঃ প্রজা বর্ণাশ্রমেজ্যযা। শিষ্টে-রাচর্য্যতে যস্মাৎ শিক্ষাচারঃ স শাশ্বতঃ ॥ দান॰ সত্য॰ তপো श्लाट्या विस्ताजा शृजन हः মঃ। অষ্টে) তানি চরিত্রাণি শি-काठात्रमा लक्ष्मणा निका यन्या-कत्राम भन् मश्रवंगक रा মন্বভরেষ সর্বেষ্ শিকীচার স্ত-তঃ স্মৃতঃ ।। শ্রুতি স্মৃতিভা । বি- ৰিতে। ধৰ্মো বৰ্ণাপ্ৰবাস্ককঃ । শিক্ষাচার বিবৃদ্ধন্ত ধর্মাঃ স সা-ধুসন্মত্য ।। ইতি বাৎস্যে ১২০ অধ্যানঃ ॥ শিক্ষিঃ স্ত্ৰী আজ্ঞা। শাসনং ।

শোকঃ ব্রা আজ্ঞা শাসনং। ইত্যমরঃ॥ শিষ্যঃ ত্রি উপদিশ্যঃ। তৎ-

शर्यायः। ছातः २ जस्त्रवामी ৩। ইত্যমরঃ ॥ অন্তেসৎ ৪। ইতি জটাধরঃ ।। তস্য লক্ষণ यथा। বাজুনঃ কাষ বসুভি গুরু শু আয়ৰে রতঃ। এতা দৃশ গুণো-শেতঃ শিষ্যো ভবতি নারদ।। দেবভাচাৰা শুশ্ৰাষাণ ননো বাক্ কাষ কৰ্মভিঃ। শুদ্ধভাবো ম-হোৎসাহো বোদ্ধা শিষ্য ইত্তি স্মৃতঃ।। ইতি দীকাত্ত্ব॰।। অপি চ। শান্তো বিনীতঃ শুদ্ধাত্বা এ-कावान् शात्रनक्यः। সমর্থ क ज-লীনশ্চ প্রাক্তঃ সচ্চরিতো বতী ।। এব मामिखरेन बुँकः निरया। **उर्वि गानाथा । 🖚 ।** निरिक्ष-निया लक्ष बोह। शाशित कृ-त्रटाकाय गठाय क्रमणाय ह। मीनायाँ हात्र मृन्याय मञ्जद वर्ग-द्वाय ह। निक्काय ह मुर्शाय छी-र्थाइक्लाम ह। जिक्किशैनाय

(मद्बिन न दन्या मनिनाय के।। শুকৃতা শিষ্যতা ৰাশি কৰে ৰ্-সর বাসতঃ। তথা চোকে সার-मः গ্ৰহে। मन्त्रकः वाञ्चिकः नियाः वर्ष (भकः भद्रीकरषः। वर्षात्कव ভবেদেবাগো বিশ্রো গুণসম-विजः॥ वर्षप्रयम ब्राज्यस्या देव-শাস্ত বৎসরে স্ত্রিভিঃ। চতুর্ভি-र्व भरेतः भूजः कथिका निया-যোগ্যতা।। ইতি তন্ত্ৰ সারঃ ।।। जनाक । जाठांद्र गामरकस्थ न वाहार्या जेनास्वः। य खाहार्या পরাধীন স্তম্বাক্য শাস্যতে হৃদি ॥ गामत्न चित्रवृज्जिक निषाः म-क्ति कृताक्षडः। अव लक्तिनन्यु-ক্তণ শিষ্যাণ সৰ্ব গুণাৰিকে ৷৷ অধ্যা-পযে विशासन मञ्जत मनुखमः। ইতি পান্মোত্তরখণ্ডে ২৫ অখ্যা-यः॥ 🗱 ॥ शृज निराद्या खलाषः यथा। यथा भूख ख्या नित्या न ভেদः পুत निवासाः। छर्गत शिखमारन ह भारतन भतिरभाष-ণে ॥ ষথামিদাতা পুত্রক তথা শিষ্যশ্চ নিশ্চিত। ইতীদ কাণ্-भाषाया मूराठ कमत्नाखदः ॥ इं जि ब करियदाई बीक्स कक्स बर छ ७३ वधायः ॥ ॥ भूख निका-

छा॰ वित्नारम। यथा। मन १ जमा-त्र छेवां है। शूख अवां चि स्टिक्न बरुः निरमान्मारः विरन्।। न वित्नत्वां श्विमा निवामा ह পিভাষহ।। ত্রন্ধোবাচ। বিশেষঃ শিষ্য পুজ্ৰাভ্যা॰ বিদ্যতে ধৰ্মন-व्यन । श्रम् क्या नमारगारग ज्था-পি গদতঃ শৃণু॥ পুন্নামো নরকা-ভ্ৰাতি পুত্ৰ স্তেনেহ গীয়তে। শে-यभाभहतः भिषा इंडीय देविन-की अ्ष्ठिः ॥ 🐞 ॥ मन ९ अभात উবাচ। কোষ॰ পুন্নামকো দেব নরকাজাতি পুত্রকঃ। কম্মাচ্ছেষণ ততঃ পাপ॰ হরেছিষ্যশ্চ তদ্ধ।। ইতি বামনে ৫৭ অধ্যাযঃ ॥ ত্র-ক্ষোবাচ। অতঃপর প্রবক্ষ্যামি (শ্वপাপস্য लक्ष्ण । श्रान (प्रवर्षि ভূতানা মনুষ্যাণা বিশেষতঃ।। পিতৃণাঞ্চ দিজশ্ৰেষ্ঠ সৰ্ববৰ্ণেষ্ চৈ-কতঃ। ওঙ্কারাদি নিবৃত্তিশ্চ পা-পকাৰ্য্যক্তিশ্চ বা/ হত্যাদিক महाभाभ॰ दशर ध कर छथा। वृज्यानि विर करकार्थि, अञ्चलानि প্রতিগ্রহণ 🏗 কপু গাপনণ পা-. १ ॰ शतकाश्यकी नाम । अर्थावि-দ্ধণ বাক্যদৃষ্টণ নিষ্ঠুরত্বণ ষডম্বরণ।। ঢাকিছ॰ তালৰাদিছ॰ নামা বাচা-

প্যধর্মজ । মারণন্ব মধার্মিক্য । প্নরকাবহ মূচাতে।। এতৈঃ পা-পৈশ্চ সংযুক্তঃ পাতাতে যদি गहरा । उड़ानां थिक गरणरयन শেষাৎ পাপাৎ জবেততঃ ৷৷ শারীর বাচিক যজু মানসং ত্রিবিশ্বণ তথা। পিতৃ মাতৃক্তণ यफ क्छ॰ यका व्याटिक में देतः॥ জ্ঞাতিভি ৰান্ধবৈ শ্চাপি তন্মিন্ জন্মনি ধর্মাজ ৷ তৎ সর্বণ বিল-য॰ যাতি কৰ্ম্মণা সুত শিষ্যযোঃ ॥ তত্মাৎ পুত্ৰক শিষ্যক বি-খাতব্যে বিপশ্চিতা। শ্রুত মর্থ মভিগ্যাষ শিষ্যাৎ শ্রেষ্ঠতরঃ সূতঃ ।। শেষান্তারয়তে শিষ্যঃ সৰ্বত্ৰৈব হি পুত্ৰকঃ। ইতি বাষ-त्न ए ज्यायः॥

শিল্প: পু॰ শিশ্লকঃ। ইতি শব্দ-চম্রিকা।।

निद्धकः पू॰ गन्नजवावित्नवः।
निनातम्। निद्धा इछि त्नावान्
इछि एक् विता छ पर्यापः।
किनामहो छानि। ७ देखन ।

381 ईछामतः ॥ अम्यान्त्नभन धनाः । निङ्कः भत्रमा मान्त्री दम्यमास मूत्रा नथः । मर्दनी भत्रमा न्यो तत्मामा खत्रनाम-नाः ॥ दोक्यमा ईछि वा भाठः । ইতি ताक्रवस्रञः ॥ अन्य जूक्कभत्म प्रकेशः॥

শিক্ষ ও শিক্ষণে। ইতি কবিকল্পক্রমঃ ।। হুস্বী ৷ ও শিক্ষতে ৷
শিক্ষণ বিদ্যাগ্রহণ ৷ অশিক্ষতান্ত্রণ পিতৃ রেব মন্ত্রবিদিতি রযুঃ ৷ ইতি দুর্গাদাসঃ ৷৷

क्री विद्रांशामानः १ ইতি শিক্ষাশকটীকাৰাণ ভরতঃ **मिका हो भिक्क व ।। (मार्ग न क-**वृक्तः। देखि गक्तभावा।। (वर्षात्र-<u>भाजिवित्नसः। रेजामतः॥ यथा</u> । শিক্ষা করে। ব্যাকরণ নিরু-ক্ত॰ জ্যোতিষা॰ গণঃ। ছন্দো-বিচিভি ব্লিভ্যেতৈঃ যডঙ্গে। বেদ উচ্যতে ॥ ইতি। তত্র অকারা-দিবর্ণানা স্থলকরণ প্রযত্ন বো-ধিকা অ স্ব এ হ বিসৰ্জ্জনীযাঃ क्छा रेखामिका निका। रेखि তট্রীকাষা ভরতঃ।। 🛊 ।। অধ শিক্ষাশাস্ত্রণ লিখাতে। অথ শি-ক্ষাণ প্রবক্ষ্যামি পাণিনীয়মতণ

वथा। भाजानूश्र्वः उविमान्यः থোক্ত॰ লোক ৰেদৰোঃ।। প্ৰস্থি-দ্ধানপি শব্দার্থ মবিজ্ঞাত মবৃদ্ধি-जिः । शून वं की कविषामि वाहः॥ উচ্চারণে বিধি-।। ত্রিমন্টি কত্-ষষ্টি বা বর্ণাঃ শস্তুমতে সভাগ। প্ৰাক্তত সংস্কৃতে চাৰি ৰয় প্ৰো-ক্তাঃ স্বযন্ত্র ।। স্বরা বিংশতি রেকশ্চ স্পর্শানাং পঞ্চবিংশতিঃ। बानमन्छ न्यूछा इटकी ह्याबन्छ यभाः सृष्ठाः ॥ अनुसादता विनर्श-শ্চ xক এপৌ চাপি পরাশ্রিভৌ । দুস্পৃষ্ট শ্চেভি বিজেয়ে। ৯কা-রঃ প্রত এব চ।। আত্মা বুদ্ধা স-মেত্যাৰ্থামনো মুঙে বিবক্ষা। মনঃ কাষাগ্নি মাহস্তি লপ্ৰেব্ৰতি মারুত ।। মারুত স্তুরসি চরমান্ত জনযতি স্বরণ। প্রাতঃ সৰুন বো-গন্ত ছন্দো গায়ত্ৰ মাঞ্ৰিক াা कर्छ गाशासिन यूछ यशास देव-ফুভানুগণ। তারণ তাতী ৰ সৰনণ गौर्यगाः कागठान्गः॥ सामीर्या মূদ্যাভিহতো বক্তু মাপদা মারু-তঃ। বৰ্ণাঞ্জনযতে তেষাং বিজ্ঞা গঃ পঞ্ধা স্মৃতঃ 11 স্বর্তঃ কাজ-कः काना अयञ्चान् अमानकः। रेिं वर्गविषः आह निशृन छ॰

निर्वाषण ॥ जेमाल नान्मालन यतिष्ण यद्भा ज्याश हत्या नीर्यः भूछ इंछि कामरछ। नियमा अप्ति ॥ উमारल नियान भाकातावन्मा-তে শাসক ধৈবতো। স্বরিতপ্রভ-ৰা কেতে বড্জ সধ্যম পঞ্মা: ৷৷ न्यकी शानानि वर्गाना यूत्रः कर्शः শির স্থা। জিল্লামূলক দস্তাশ্চ नामित्कोत्धी ह जानू हा। अजा-বশ্চ বিবৃত্তিশ্চ শ ষ সারেক এব চ । জিহ্বামূল মুপশ্বা চ গতি রফবি-(धाञ्चभः ॥ यत्ना जाश श्रमस्नाम-**मूकातामि अतः अमः। अताखः** তাদৃশং বিদ্যাদ্যদন্যদ্যক্ত মূম্মণঃ ॥ हकातः शक्टमः र्युक्त मस्रम्।-ভিশ্চ সংযুত্থ। ঔরস্য ত বিজা-নীষাৎ কণ্ঠ্য মাহ রসংমৃত ।। ক-श्रावहावि हु य भा खालवा। अर्थ जात्श्। मा मू कना स दूत सा मखा % जू न माः मृजाः॥ जिस्रा-मूदन जू कः व्यारका मरसारका वः गुरा तूरेशः। व व ज् कर्र তালব্যা ও ঔ কঠোগ্ঠজৌ স্মৃতৌ ॥ वर्षमाञा जू क्छा। मारिका-देतकात्ररमा र्ज्यदर । अकादती-কারযো মাত্রা তযো বিবৃত সং-বৃত্ত ॥ সংবৃত মাত্রক জেব।

विवृञ्द विवादक । दोवा वा সংবৃতাঃ সৰ্বে অন্ধোৰা বিবৃতাঃ ग्र्जाः ॥ खत्रांना मृजनोटेकेन वि-বৃতং করণ স্মৃত । তেভা । বিবৃতাবেঙৌ ভাভাগ মৈটো ভ-रैथव ह ॥ अनुसात यमानाक नामिकाञ्चाम मूहारछ। अरवाग-বাহা বিজেষা আশ্ৰয়নভা-शिनः ॥ अलावूवीशानिर्दादा मखायूला खतानन्। जन्यातख কৰ্ত্তব্যো নিত্য ন্থোঃ শ ষ সেষু চ ।। অনুস্বারো বিবৃত্যান্ত বিরামে চাক্ষরদ্বে। দ্বিরোপ্টেটা তু বিগৃ-क्रीयाम्बरेजकात वकात्रयाः ॥ वााष्ट्री यथा श्दब्ध भूखान् मण्यूने ভ্যা॰ ন চ পীড়ষেৎ। ভীতাপত্ন ভেদাভ্যা তদ্বৰ্ণান্ প্ৰযোজ-रय ।। यथा সৌরাख्किका नाती ভক্রা ইত্যভিভাষতে । এবং র-লাঃ প্রযোক্তব্যাঃ খে অ রাঁ ইব (अमय।। तक्रवर्गः अयुक्षीत्रन् (ना वारमः शृबं मक्तरः। नीर्षवतः श्र-ৰুঞ্জীয়াৎ পশ্চান্নাসিক্য মাচরেৎ ॥ क्रमत्य टिक्सावः मामक्रमा-ত্ৰস্ত মৃদ্ধনি। নাসিকাষাণ তথা-र्कक तकरमाव॰ विमाजन।। श्रम-शामु करत जिर्धन् का रमान म

बंगू खंतर। भाम तक विभाजक जय-नैग इंडि निमर्नम ॥ यर्था जू क-नारबंद कन्य मूट्डी भारबी मत्मी **जत्तर । जतज्ञ क्रांस्ट क्रां** ब्रशीरविक निमर्गन ॥ এव॰ वर्गः প্ৰবোক্তব্যা নাব্যক্তা ন চণীত-त्रथ। नमायर्थ अत्यारगन बक्त-लात्क महीयत्व ॥ गीजी नीष्ट्री শিরঃকম্পী তথা লিখিতপাঠকঃ । অনপজ্ঞোদকণ্ঠশ্চ ষডেতে পা-ঠকাধমাঃ।। মা ধুর্য্য মক্ষর ব্যক্তিঃ **अमरक्कान्छ मूचदः। देश**र्याः नय সমর্থ ক ষডেতে পাঠকা গুণাঃ।। শন্ধিত ভীত মুদ্দৃষ্ট মব্যক্ত মন্-নাসিকা। কাকস্বরণ শির্সি গত॰ তথা স্থানবিবজ্জিত ॥ উপা॰-শুদুৰ্ক স্বরিত নিরস্ত বিলম্বি-क भन्नानिक अभीक । निन्भी-**जिङ अञ्चलनाक्त्रक वरमम**नी-ন॰ ন তু সানুনাস্য ।। প্রাতঃ পঠেমিত্য মুরঃস্থিতেন স্বরেণ শা-मृ नक्रा भरम । मधा मितन কণ্ঠগতেন চৈব চক্ৰাহ্ব সংকৃজি-ভ সন্ধিভেন।। তারস্ত বিদ্যাৎ স-বন ভৃতীয় শিরোগত তচ্চ স-मा थर्याकाः। ययृत रःमानाज्-ত স্বরাণা তুল্যেন নাদেন শিরঃ

ब्रिट्टन ॥ व्यक्तान्सृकी वन ख्रीय- ॥ ন্নম স্পৃষ্টাঃ শ ল স্তথা। শেষাস্পৃ-की इनः थ्याका निरवाशान्थना-नडः॥ यत्यानुनात्रिका न द्याना-দিনে। হ বাষঃ স্মৃতঃ। ঈষপ্লাদায় ন-ঞ্জন্চ শ্বাসিনন্চ কফাদ্যঃ।। ঈ্ব-চ্ছাসা॰ শ্চরো বিদ্যাৎ গোর্দ্ধানৈ তৎ প্রচক্ষতে। দাকীপুত্রঃ পাণি-निना (यदममः व्याभिकः जूवि।। इन्मः शामि ज् तममा इत्छो क লোথ পঠাতে। জ্যোতিষা মঘন॰ চক্ষু নিৰুক্ত শ্ৰোত মুচ্যতে।। निका शुंगम् दाममा गूथः दानि রণ স্তুত। তত্মাৎ সাঙ্গ মধী-ত্যৈব বন্ধলোকে মহীয়তে।। উ माउ गाथाणि वृरवान्नीना॰ अ-**मिनी मृल निविक्ट मूर्था।** উ পান্তমধ্যে স্বরিত ধৃতঞ্চ কনিষ্ঠি-काया मनूनाख त्यव ।। উनाखः थातिनी विमा धार्य मधा তো ংঙ্গুলি । নিহতন্ত কনিষ্ঠিক্যাণ স্বরিতোপকনিষ্ঠিকা॰।। অস্তো-দাত মাদ্যদাত মুদাত মনুদাতে নীচস্বরিতং। মধ্যোদাত্তং স্বরিতং দ্যুদাত্ত জ্যুদাত্ত মিতি নৰ পদশ-যা।। অগ্নিঃ সোনঃ প্র বো বীর্য্যণ ছবিষাণস্ব বৃ হস্পতি রিজ্ঞাবৃহস্প-

তী। অগ্নি ব্লিতান্তোদাত্ত সোৰ रेगामुमाख थ रेगूमाख व रे-जानूमाखः **दीयाः नी**ठस्रतिञः इ-বিষা মধ্যোদাত্ত স্বরিভি স্বরি-ত বৃহস্পতি রিভি দ্যুদাত্ত মিজ্রা-বৃহস্পতী ইতি ব্যুদাত্ত।। অ-नुमारखा समि एकरवा मूर्क माख উদাহতঃ। স্বরিতঃ কর্ণমূলে তু मर्बारमा श्रेष्ठयः ग्रृष्ठः ॥ চायस्र বদতে মাত্রাণ দিমীত্র স্ত্রেব বায-সঃ। শিখী ব্লোভি ত্রিমাত্রস্ত নঙ্গ-ল স্তু দ্বি মাত্রকণ।। স্বতীর্থাদাগতণ मक्ष **म**श्रवर्गक जिक्का । न जमा পাঠে মোক্ষোস্তি পাপাহে রিব কিন্বিষাৎ॥ সূতীর্থাদাগত• ব্যক্ত• माञ्चायाः मूदादञ्चिः। मूखदत्रन সূবক্ত্রেণ প্রযুক্তণ বন্ধ রাজতে।। মন্ত্রো হীনঃ স্বরতো বর্ণতো বা মিথ্যাপ্রযুক্তো ন ত মর্থ মাহ। স বাগ্বজু যজনান হিনস্তি যথেন্দ্ৰ-শত্রুঃ স্বরতোপরাধাৎ ।। অনক-র॰ হতাযুষ্য৽ বিস্বরণ ব্যাধিপীডি-ত॰। অক্ষতা শস্ত্ৰৰূপেণ বদ্ৰু॰ প-ততি মন্তকে।। হস্তহীনম্ব যো ২-ধীতে স্বরবর্ণ বিবজ্জিত । ঋগ্বজুঃ সামভি र्लक्षा विरयानि मिश्रक्छ-তি॥ হস্তেন বেদ॰ বোধীতে স্বর

বৰ্ণাৰ্থ সংযুক্ত। ঋয়জুঃ সামজিঃ পুতো বন্ধলোকে মহীযতে।। শ-**इतः भाइती॰.थानामाकीপृ**खाय ৰীমতে। বাদ্মবেভ্যঃ সমাহত্য দৈবী॰ বাচ মিন্তি স্থিতিঃ॥ ষেনা-क्त अयाञ्चाच यिशिया मद्रश्-রাৎ ক্লিৎন্ন ব্যাকরণ প্রোক্ত छटेचा भागिनटम नयः ॥ रमन (४)-তা গিরঃ পুংসাং বিমলেঃ শব্দবা-রিভিঃ। তম *চাজ্ঞানজণ ভিন্নণ ভবৈশ্ব পাৰিনধে নমঃ ৷৷ অক্তানা-শ্বস্য লোকস্য জ্ঞানাঞ্জন শলা-কষা। চক্ষু ৰুশ্মীলিত থেন তথ্যৈ शानिनरय नयः॥ जिनयन मूथनिः সৃতা মিমাণ ষ ইহ পঠেৎ প্রমতশ্চ मना विकः। म ভविত ধন ধানা পশু পুত্ৰ কীৰ্ত্তিমানতুলঞ্চ সুখ সমশ্বতে ।। দিবীতি দিবীতি ।। অথ শিক্ষা মাজ্যোদাক্তশ্চ হকারণ স্বরাণাণ যথা সৌরাফ্টিকা। গী-ভ্যচোস্পৃকৌদাত্ত চাবস্তু শঙ্ক-র একাদশ।। ইতি বেদশিক্ষা স-মাপ্তি মগমৎ।। 🛊।। অপি চ। अ-গ্নিৰুবাচ। বক্ষ্যে শিক্ষাণ ত্ৰিষষ্টিঃ স্য ৰ্বণা বা চতুরাধিকাঃ। স্বরা-বি॰শতি রেকশ্চ স্পশানা॰ পঞ্-वि॰শতिঃ।। यानयम्ह म्यूछ। शरकी

চন্ত্রিশ্চ ক্রাঃ স্তাঞ্জনুরারো বিসর্গশ্চ ×ক্ত এপৌ চাপি পরা-প্রিতৌ ।। নুৎসৃষ্ট শ্চেভি বিজে-ষো ৯কারঃ প্রত এব চ। রকশ্চ থে স্বরণ প্রোক্তণ ইকারঃ পঞ্চরৈ ৰ্বুঙঃ৷৷ অন্তক্ছাভিং সৰাবুক্তঃ ও-রসঃ কণ্ঠা একলঃ। আত্মা বুদ্ধ্যা সনেত্যাৰ্থ- মনো মুঙ্জে বিবক্ষযা।। মনঃ কাষামি মাহন্তি সংপ্রেষতি মারুত । মারুত স্তুরসি চরমান্দ্রণ জনষতি শ্বর• ৷৷ প্রাতঃ সবন যো-গন্ত ছন্দো গাৰত মাঞ্ৰিত। কণ্ঠে माधान्त्रित्युङ मधामः देवस् छ।-নুগ• ॥ তার• তাতী ব সবন• শী-र्यगाः क्षत्राजानूगः। त्नामीत्नी मृ-দ্ব্যুভিহতো বক্তু মাপদ্য মারুতঃ ।। বৰ্ণান্ জনষতে তেষা॰ বিভা-গাঃ পঞ্চা স্তাঃ। সরঃ কালগ-ण्डः कानाथ **अयञ्चान्** अनानण्डः ॥ অকৌ স্থানানি বর্ণানা মুরঃ কণ্ঠঃ नित खथा। किसागृनक पछा क नामित्कात्भे ह छान् ह ॥ ७ छ।-बक्त दिवृखिक न व मा द्रिक এव চ। জিহ্মামূল মুপগ্নাচ গতি রফী-विरशासनः ॥ यरमाञाव श्रम-क्कान मूकाद्राप्ति शतुः शपः। खता-स्र जामृण विला यमना घार

मुखनः ॥ अञीर्थामाग्ड॰ मक्ष মপবর্ণঞ্চ ভক্ষিত । এব মুচ্চারণ পাপ মেব মুক্তারণ শুভ ।। সু-তীৰ্থাদাগত ডাৰ্য স্নানাৰ্থ সু-बाविष्ठः । সুষরেণ সুবজ্ঞেণ প্রযুক্ত॰ বন্ধ রাজতে।। ন করা-ला न नत्शात्री नावाद्भा नान्-नामिकः। भाषामावक्किक्क्ष्यकःन-वर्गान् वङ्क् मर्श्छि॥ छेषाख न्छा-नूमाख्य अदिख्य स्ता अवः। ट्रिया मीर्यः क्षूण शेलि कानरणा नियमा अहि ॥ क्छा। वहावि हु क भ। खानवा। अर्छकावूश् । मूर मृ-र्षना अ हूत या मखा ५ जू न माः गृठाः ॥ जिस्रामृत्त जू कः প্রোক্তো দক্তোকো বং স্মৃতে। व्रेंधः। এদৈতো कथा जानत्यो ও ও কঠোষ্ঠজৌ স্বতৌ ৷৷ অৰ্দ্ধ-गावा वू कर्शा मान अकारेंद्रका-त्ररा जंदर । जताशवाका दि-জেয়া আশ্রয়স্থান তাগিনঃ।৷ অ-চোম্পৃটা যণ স্ত্রীয়ন্ত্রন স্পৃষ্টাঃ শলঃ শ্বতাঃ। শেষা স্ফা হলঃ প্রোক্তো নিবোধানুপ্রদানতঃ।। यत्या श्नूनामिका न द्यां नामि त्ना इ वायः न्यूछः। अवकाटमा भन यणः श्वामिनक श्कामयः। श्रेय-

ष्ट्राम॰ यद्या विल्राटकार्थाटेय-তৎ প্রচক্ষতে।। ইত্যাশ্লেষে শি-কাধ্যায়ঃ।।

শিক্ষাকরঃ পু॰ ব্যাসঃ। ইতি শব্দমালা॥ শিক্ষাকর্ত্তরি ত্রি॥ শিক্ষাগুরুঃ পু॰ বিদ্যাদাতা গুরুঃ । यञ्जाम् । भारता भारता भीका खुद्धः । যথা। ইয় ছি রসভাৰবিশেষ দীকাগুরো বিক্রমাদিত্যস্যাভি-ৰূপভূষিষ্ঠা পরিষৎ । ইত্যভি-खान नज्ञ खनायां ३ जहः।। শিক্ষিতঃ তি বিজ্ঞঃ।ইত্যমরঃ।৷ শিক্ষাযুক্তঃ। যথা। আপরিতো-याहित्या॰ न जाशु यत्ना अत्याश বিজ্ঞান । বলবদিপি শিক্ষিতান। মাত্মন্যপ্রত্যয° চেতঃ ।। ইত্য-ভিজ্ঞানশঙ্গভলাযা° ১ অঙ্কঃ । । শিক্ষিতাক্ষরঃ পু॰ শিক্ষাকারী। ছाजः। यथा। मामिकत्रम्थः का-লাক্ষরিকঃ শিক্ষিতাকরঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ শী ওল ঞি স্বপ্নে। ইতি কবি-

ক্ষ্যক্ৰঃ। ও ল শেতে। তি

শযিতো २ छि। य ७८०१ गया मी-

তি গণক্বতানিতাত্বাৎ পরশৈষ্ণ-

দে শপো ২লুগুাবে চেতি রমা-

নাথঃ ৷৷ বস্তুতস্ত্র শেতে শ্যঃ

4004

পশ্চাৎ শব ইবাচরতীতি কৌ সাধ্যণ। ইতি দুর্গাদাসঃ।। শীঃ ন্ত্রী শান্তিঃ।। শবমণ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

भक्त प्रावना।।
भीक अ ७ मिटक । जर्मा हिल कि कि का कर्मा । अ जिम्मीक ९ । ७ मीक कि जा गर्मा। मिटक । इलि क्रिक क्रिक

भीकंत्र क्री भद्रमाजवः। यमिनी॥

শীকরঃ পু• বাভাদিপ্রেরিভজ-লকণাঃ । ইভ্যমরঃ ।। বাষুং । ইভিমেদিনী ।।

শীৰুণ ক্লী বিলম্বাভাবঃ। তৎ-পৰ্যামঃ। ত্বরিতং ২ লঘু ৩ ফি-প্রণ ৪ অরুণ ৫ জভণ ৬ সত্তরং ৭ চপলণ ৮ ভূর্দণ ৯ অবিলম্বিতং ১০ আশু ১১। অব্যমাঃ শীঘুবা-চকাঃ মথা। সুক্ ১২ ঝটিতি भौडीदव

১৩ অঞ্জনা ১৪ অক্লাৰ ১৫ সপদি ১৬ জাক্ ১৭ ৰংকু ১৮। তছতি ত্তি। ইত্যমরঃ।। গা। লাৰজকণা ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।
শীবৃগঃ ত্তি ক্রতগামী। যথা।
হরিতে রোগোমুতাপঃ শস্যানা
নীতিভিন্চ বিশ্বংসঃ। কপিলে
শীবৃগুসম্ব ফ্লেচ্খণনো ২থ দুভিক্ষণ। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বণ ।।
বাবো পুণ। ইত্যমরে আশুগশব্দ দশনাৎ ।।

শীৰুগাৰী ত্ৰি আগুগমনশীলঃ।
শীৰুণ গছতীতাৰ্থে শীৰুশকপূৰ্বক গমধাতো ৰ্ণিন্ প্ৰতাবেন
।।

भीषुट्रा भू अक्तुः। इंडि भ-स्माना।। फ्रा क्रिक्शिव्या क्रिक्शि क्रिक्शा भू क्रिक्शिव्या। यथा। क्रिक्शा क्रिक्श इंडि ভाষा। यथा। भूडीकः माण्यनः भाषा भी-युक्रमा भव्यिक्ष । इंडि भक्ष-চঞ্জিका।।

नीयुश्नः श्रू अगस्यवृक्तः । इति त्राक्रनिर्वकः ॥ नीयुत्वधी श्रू किश्रमत्त्वधकर्त्व। । जर्भगायः । लयूरुसः २। इति रहमहस्यः ॥ भीष्। श्वी मखीव्यः। ইতি রাজ-নির্বন্টঃ।।

শীদ্বীৰ ত্তি জ্ঞান কৰি শীদ্ৰ-ভবং ৷ শীৰ্শকাৎ শীৰ প্ৰত্য-বেন নিশাৰু ৷

भीड॰ क्री हिमछनः। ইত্যমরः॥ জन॰। ইতি শব্দমাকা॥ प्रচ॰। ইতি রাজনির্ঘন্তঃ॥ শীত॰ তু-যার বানীর বহুবারক্রেবেষু চ। ইতি ভরতধৃতাজয়ঃ॥

भीठः शृ (त्रञ्जबृक्षः ॥ त्रक् वात्रकृकः। ইত্যबतः॥ ज्ञानने शनी। ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ श-श्री। निष्यः ॥ कशृतः। ইতি রাজনির্ঘন্তঃ। হিমক্ষতৃঃ। অসা বিবরণ হেমন্তশব্দে অফব্যং॥ শীতঃ ত্রি শীতলঃ। ইত্যমরঃ॥ অলসঃ। ইতি মেদিনী॥ ক্থি-তঃ। ইত্তি শব্দচন্দ্রকা॥ শীত-লডব্যগুণাঃ। পিত্তনাশিদ্ধ। বল কফ বাষু কারিদ্ধং। গুরু-দ্বং। ইত্তি রাজব্দ্ধভঃ।।

गीठकः पू॰ भीठकानः॥ मृष्टि-जः॥ मीर्यमृती। इंडि प्राप्तिनी॥ यभनभनी । इंडि भक्तकाननी ॥ वृश्विकः। इंडि भक्तकाना ॥ गीठकतः पू॰ हस्तः। इंडि हिंग- कत्रभक्ष मर्भनार ॥ भीठलभा-विषुट्क भीठकातिवि ह छि ॥ भीठकवारः भू॰ हिमकवारः ॥ यथा। कृत्र॰ जवाभन्न॰ ममाक् य-न्वभटनः भूठ॰ । भर्वती मूविषः म माक्तिम भीठकवार-कः॥ ইতি বৈদ্যক॰॥

नौजकानः पृ हिमश्रज्ः। म जू
व्यश्चायन (भीष माम बयकानाप्राकः। जल्मग्री गरः। नीजकः २
। इजि द्वितिनी ॥ द्वस्यः ७।
हेजायतः॥ महाः ४। हेजि कि।धतः ॥ देश्यनः ७। हेजि नमब्रञ्जावनी ॥ कृ (भाषकः विक्राया नग्रामा जी हेकिकागृरः। नीजकातन जत्यम् यः जेककातन ह
नीजनः॥ हेजि हानकाः॥

नीठिक तथः पु॰ हत्यः। यथा। कार्छ कार मूलि नीठिक त-वार्छ कार मूलि नीठिक त-वार्षा कर निर्देश कर कर महा मर्ख मृलित स्ता भरा। प॰ यूव जी मठी मनवठी खु। छानि धना खव देखः श्रीनित्र हाम किनिक-नया मूक्षा हितः नाजू वः।। देजु खिः।। भीज मुखः पु॰ कर वीरः। देखि

ब्रष्ट्रयांना ॥ भीष्ट्रश्री खी जनजन्मविद्यश । नीউनिছোপ ইভি ভাষা। ৰথা। শীতলী শীতসম্ভী চ শু-ক্রপুশা জলোদ্তবা। ইতি রত্ন-याला ॥ भौ छक्रकः भू॰ जङ्गितम्ब । यथा । बमाँ जुनीज की तामि नी बर्ज **छमा भी छक्त छः। बारः भी**छः **शिर्वरखाय•** बीड• श्रारः পিৰেৎ। ত্ৰ্যহণ শীত যৃত পীত্বা বাযুভকঃ পরত্রাহ ।। ইতি ষম-স্মরণাৎ। ইতি মিতাক্ষরা।। শীতগন্ধ ক্লী খেতচন্দন । ইতি ब्राकिनिर्घकः॥ শীতগুঃ পু॰ চন্দ্রঃ। ইতি রোপ-(जवः ॥ শীতচম্পকঃ পুণ দর্পণ ।। প্র-मीशः । **ইতি মেদিনী শব্দর**ত্না-बटनारी ॥ শীতগণী স্ত্রী অর্কপুষ্পিকা। অর্কহলী ইতি ভাষা। ইতি রত্ন-याना ॥ भौजभन्नवा खी जृ निक्र यूः। ইতি त्रव्याना ॥ শীতপাকিনী স্ত্রী কাকোলী।

रेि नक्याना ॥ यश्त्रयत्रा ।

रेजि क्रांकनिर्धनिः ।१ শীতপাকী স্ত্রী বাট্যালকঃ। ₹ ि गं मत्रञ्जाबनी ।। कारकानी । ইতি রম্বনালা।। एका। ইতি त्राजनिर्वकः ॥ শীতপুলা ক্লী পরিপেল। ইভি वाजनिर्वकः।। मीलभूमाः भू॰ मित्रीयवृकः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ম भीजभूभक की देगदनमः। देखि नक्रिका ॥ শীতপুলাৰঃ পুণ অকবৃক্ষঃ। ইতি वाजनिर्घनिः॥ শীতপুষ্পা স্ত্রী অতিবলা। ইতি त्राजनिर्घकः॥ শীতপ্রভঃ পু॰ কপুরঃ।ইতিরাজ-নির্ঘণটঃ॥ শীতলপ্রভাষুক্তে ত্রি শীতপ্রিয়ঃ পু॰ পর্পটঃ। ইতি त्राজनिर्यणैः ॥ শীতফলঃ পু• উডুম্বরঃ।। শেলুঃ । इंकि ब्राजनिर्धन्छेः॥ भीठवना खी यशमयना। देखि রাজনির্ঘণ্টঃ।। শীতভানুঃ পু চম্রঃ। ইতি শব্দ-ब्रष्ट्रावनी।। শীতভীকঃ স্ত্রী মলিক। ইত্য-মরঃ ॥ শীতভীতে ত্রি ॥

শীতলা

শীতমঞ্জরী স্ত্রী শেফালী। ইতি ताकिनिर्घकिः॥ भीजमम्भः पुर ठलाः॥ कश्रवः। रें (यिषिनी ॥ শীতমরীচিঃ পু॰ চন্দ্রঃ। কপুরঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শীতমূলক ক্লী উশীরণ ইতিরা-জনির্ঘণ্টঃ॥ শীতলমূলমুক্তে ত্রি শীতরমাঃ পু॰ প্রদীপঃ। ইতি किंगिधतः ॥ नीखत्रमनीदय कि ॥ শীতরশ্যিঃ পু॰ চন্দ্রঃ। বথা। ছে-निः मृर्या का समा नी जति भाः। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ।। কপূরিশ্চ শীতল॰ क्री পুশকাসীম।। देशनकः ॥ यनस्याद्धवः। छत् त्रमन । इंडि स्मिनी ।। शम्बक[°] ।। মৌক্তিকণ। ইতি রাজনির্ঘক্তঃ ॥ শৈত্য॰। ইতি শব্দরত্বাবলী॥ বীরণমূলণ। ইতি শব্দচন্দ্রিক।।। শীতলঃ পু॰ অশনপণী। ইত্য-गतः ॥ व्हिष्तियः। म कू हकू-রি॰শতিতীর্থকরমধ্যে দশমতী-র্থকরঃ। ইতি হেসচন্দ্রঃ।। বত-বিশেষঃ ৷ স তু মেষ সংক্রান্ড্যাণ কর্ত্তব্যঃ॥ চন্দ্রঃ। ইতি শব্দরত্না-वली ॥ वहवातवृक्तः । इंडि मक्त-**ठिखक।।। ठ**ण्णकः।। कश्रत्राख- ∥

पः।। त्राणः। ইতি त्राक्रनिर्व**णः।।** শীতলঃ ত্রি শীতগুণবিশিষ্টঃ। তৎপর্যায়ঃ। সুষীমঃ ২ শিশি-রঃ ৩ জড়ঃ ৪ তুষারঃ ৫ শীতঃ ৬ ছিমঃ १। ইত্যমরঃ।। ক্লী সিতোৎপল। শীতলকণ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। भी छनकः भू॰ मं अवकः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। भौजनक्षाः भू॰ हम्भकः। ইতি ताकनिर्घकः॥ गौठनপज्यः॥ भीजनजन॰ क्ली উৎপनः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। হিমবারি চ।। শীতলত। जी भीठनष्। भीठ-লস্য ভাব ইত্যৰ্থে তদ্ভাবে তাত্ব মিতি সংক্ষিপ্তসারসূত্রেণ তাপ্র-ত্যৰ নিষ্পন্না ৷৷ শীতলত্ব ক্লী জডতা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শীতলতা চ।। শীতলপ্রদঃ পু॰ চন্দন । ইতি কেচিৎ।। হিমদাতরি ত্রি।। শীতলবাতকঃ পু॰ অশনপণী। ইতি শব্দরত্নাবলী ৷৷ শীতলবা-यूयुट्ड बि ॥ भीठना जी भीठनीवृक्तः। यथा। भोजना भोठनो भोठमञ्जी शा-ওরপুষ্পিক।। ইতি শব্দচন্দ্রিক।

११ स्वरीवित्यसः। माठ वमञ्ज वि
त्का हेकारम अधिका वित्यका ।
सथा कम्म छेवा । छगवन् स्वव
स्वत्य मीछनायाः खवः छछः
। वक् वर्षारम्यम विव्यक्त हैक
छर्माण्यः ।। ज्ञेष्यत छेवा । नयाविभिन्न ।। ज्ञेष्यत छेवा । नयाविभन्न ।। ज्ञेष्यत छेवा ।। इकि
कम्म पूर्वा ।। ज्ञेष्या ।। इकि
कम्म पूर्वा ।। ज्ञेष्या ।। इकि
कम्म पूर्वा ।। ज्ञेष्या ।। विवत वर्षः
वर्षा ।। ज्ञेष्या ।। ज्ञेष्या ।। वर्षा ।
वर्षा ।। ज्ञा ।। ज्ञेष्या ।। वर्षा ।।

भीवनी खी जनजर्कितिश्वः।
भिवेनी हां श्रे हिं जाया। वरभर्यायः। भीवज्ञः २ ख्राभूणा ० जता ख्रिता ४ काना न्मातिवा १ । इंडि त्र प्रभाना ।।
भीवन्दः भू छेज्यतः। इंडि
त्राजनिर्यकः भू क्षक्र कृष्णः। इंडि
त्राजनिर्यकः भू क्षक्र कृष्णः। इंडि
त्राजनिर्यकः भू क्षक्र कृष्णः। इंडि
त्राजनिर्यकः ॥ भीवनवीर्यायुद्धः वि॥

যুক্তে ত্রি।।
শীতশিব কী সৈদ্ধবলবণ ।।
শৈলেষনামগদ্ধ দ্রব্যা ইত্যমরঃ
শীতশিবঃ পুং মধরিকা। ইত্যমরঃ।। শক্তুফলাবৃক্ষঃ। ইতি

মেদিনী।।
শীতশিবা স্ত্রী মিশ্রেয়া। ইভি
রাজনির্ঘন্তঃ। শমীবৃক্ষঃ। ইভি
রত্তমালা।।

भीजमृकः शुः षदः। ইতি किहि ॥ भीजमगृकपृक्त वि ॥
भीजमशः भुः भीन् तृकः। ইতি
कि हि ॥ भीजमश्नीत्य वि ॥
भीजमश खी नीनिमक्ष तातः॥
वामन्ति। ইতি রাজনির্ঘনীং।।
भीजकातः की स्थापिका। ইতি
রাজনির্ঘনীং।।

नील खी बायभन्नी। ইल नकब्रावनी ॥ नायनभक्तिः ।
ইलायतीकायाः जब्रत्था। यथा।
नीला नजःमतिनित्न नायनभक्रिलो हं। नीला मनाननित्रभाः
मश्रमिनी ह ॥ नीलः ग्रृञः हियश्रमिनी ह ॥ नीलः ग्रृञः हियश्रमिनी ह ॥ नीलः हिन निर्देश ।
ইलि जानवानि। ध्रतिः ॥ जजिवना ॥ अहे यिनी ॥ मूर्वा ॥
निविकाज्ना हिल ताक्रनिर्वनेः
नीलान्धः भूः कर्भृतः । ইलि
बाक्रनिर्वन्धः ॥ हस्यः । यथा ।
नीलान्धः भिक्रे यथः क्रन्यिः
मिलान्धः भिक्रे यथः क्रन्यिः
मिलान्धः भिक्रे यथः क्रन्यिः
मिलान्धः भिक्रे यथः क्रन्यिः
मिलान्धः भिक्रे यथः क्रन्यिः

ইতি জ্যোতিস্তৰ্ ৷৷ . শীতাণশুতৈল ক্লী কপূ রতৈল । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শীতাঙ্গী স্ত্ৰী হংসপদীবৃক্ষঃ।ইতি त्राक्रिवर्गण्डः॥ भीठलाद्य जि॥ শীতাদঃ পু॰ দন্তরোগবিশেবঃ। তস্য নিদান দম্ভলকে দ্রফব্য । তদৌষধ सथा। नीजाम इछ রক্তে তু তোষ নাগর সর্যপান। निकाशा बिकलाकानि अर्गा-का खूष शांत्र ।। का नीन त्ना धु क्रका यनः गिला मिथ्रम् एउ-জোহ্বা। এতচ্চূर्न यशुग्र भी-তাদে পৃতিমাণসহরণ।৷ তেজো-स्रा তেজবলা। তৈল धृठ वा বাতম্ব শীতাদে সংপ্রশস্যতে। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ শীতাজিঃ পু॰ হিমালমপ্ৰতঃ। ইতি কেচিৎ ॥ শীতার্ত্তঃ ত্রি শীতেনপীডিতঃ। তৎপৰ্য্যায়ঃ। শীতালুঃ ২। ইতি জটাধরঃ ॥ শীতালুঃ ত্রি শীতার্ত্তঃ। ইতি किंगिश्रतः ॥ শীতাবলা স্ত্রী মহাসম্পা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ শীতাশা পুণ চন্দ্রকান্তমণিঃ।ইতি

রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ শীতলপ্রস্তরশ্চ শীতীভাবঃ পু॰ মোকঃ। ইতি ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ।। শীতলত্বঞ্চ।। भीएगखम॰ क्री जनः। इंडि नक्ठिका॥ শীতা তি সীতা। রুষী। ইতা-মর্টীকাষাণ রমানাখঃ।। শীত-(याशाक्षा) শীৎকারঃ পু॰ বরস্ত্রীণাণ রতি-कालधनिः। यथा। भी एकाद्रा-রতনারীচঃ সুরতে বরুষোষিতাণ । इंडि किंगिश्रः॥ শীৎকৃত ক্লী শীৎকারঃ। ইতি वत्विः ॥ भीधः पु की शक्क्त्रमङ्ख-यमा । ইতামরভরতৌ ॥ ত্রি শীধুপানকর্তা। रेंडि मासिकाः ॥ भीधुगक्षः भू॰ वत्रमवृकः। ইতি बिका खटन्यः ॥ ममागन्नक ॥ শীন ত্রি ঘনীভূতঘৃতাদি। ইতি मुक्षदाधवग्रक्त्रनः॥ मीनः भू॰ मूर्यः॥ जजगतः। रेंडि मिनी।। শীফালিকা জ্রী শেফালিকা ৷ ইত্যমরটীকাষাণ ভরতঃ ॥ শীভ ঋ ও কখনে। ইতিকবি-

কল্পক্রমঃ।। ঋ অশিশীভৎ । ও শীভতে। কথন প্রশংসা। ইতি नर्गानामः ॥ শীভবঃ পু॰ শীকরঃ। ইতি শব্দ तञ्जावनी ॥ भी**खाः भू भिवः।। वृषः। ই** छि क्विं ॥ শীরঃ পু॰ অজগরসর্পঃ। ইতি अक्त्रज्ञावनी॥ শীরী পু॰ হরিদর্ভঃ ৷ ইতি রাজ-निर्घकः ॥ इतिकार्छ देखि वा भार्तः ॥ भीर्ग क्वी खोटनरंक । इंडि ভাবপ্রকাশঃ ৷৷ भीर्न वि क्रमः। विभीर्नः। ইতি विषिनी ॥ भीर्गमाना जी शृक्षिभगी। हेडि गक्रा किया। विभी विभावा का नीर्गवः पुः कर्निकात्रवृक्तः। ইতি শব্দচন্দ্রিক। ।। পটিকা-लाधुः ॥ निषः। ইতি রাজ-निर्घकः॥ विभीर्गशत्व क्री॥ পু॰ निष्ठकृषः। ইছি त्राजनिर्घणः ॥ विनीर्गलेख क्री नीर्नशामः पु॰ । यमः। ইতি जि-का खरणयः ॥ क्रणात्रवण्ठ ॥ শীর্ণপুশিকা ত্রী অবাক্পুশী।

ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা।। नौर्गवृष्ठ॰ की वृश्तमान । छत-गुक् रेडि ভाষा। रेडि नक-**हिन्तिका ॥ ७९** श्रवीशः । जूथ-वामः २। इंडि त्रज्ञमाना॥ मूथा-শঃ ৩। ইতি কেচিৎ ॥ অস্য গুণাঃ। কফ ভেদাগ্নি রুচি শু-क्कातिषा कात्रषा । मध्त्रषा व्यानाइ श्लीहनानिष् । लघूगा-কিম্বঞ্চ। ইতি রাজবল্লভঃ ॥ শীর্ণাজ্মিঃ পু॰ যমঃ। ইতি ছেম-ठखः ॥ क्रमनारम जि ॥ শীৰিঃ ত্রি অপকারকঃ।। হিণ্স-कः। इंडि भूधाट्डा द्वीनामिक किन् अञारान निष्णमः। ইতি निका उदकी मूमी ।१ **শौर्यः** क्री यखकः। ইত্যমরः॥ রুকাগুরুঃ। ইতি রাজনির্যনিঃ।। भीर्यक॰ क्री भिरतातक्रगमारः । টোপ্ ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যা-**यः । भीर्यगु॰ २ भित्रञ्ज॰ ७ ।** ইত্যমরঃ ।। শিরোন্থি। ইতি द्राजनिर्वनिः ॥ जयभद्राजयभ-जः । यथा याख्यकाः। जूना-शाला विष॰ कार्या निवानी ह विश्वक्षरय । यहाजिरमारगरम-णानि गौर्यक्ट शिख्याकृति॥

विश्वकार्य मिकार्थमा मत्लह निवृद्धरा भशा जिरमादगयु मश्-পাতকাদি গুরুতরাভিযোপেষু। भौर्यकरण्ड भौर्यकः श्रधानः भि-রো ব্যবহারস্য চতুম্পাদঃ জ্ব-পরাজ্য লক্ষ্ণঃ ৷ তেন দঞ্জে লক্ষ্যতে তত্ৰ ভিষ্ঠত স্থঃ তৎপ্রযুক্তনগুভাগীতার্থঃ। ইতি দিব্যতত্ত্ব ।। শীর্ষকঃ পু॰ রাহুগ্রহঃ। ইতি मक्तज्ञावनी ॥ यख्टक क्री ॥ শীर्याणी जि मखकत्क्रमकः। শীৰ্য শব্দপূৰ্বক হন ধাতোঃ ক্ শ্বভাণ সমারশীর্যাভ্যাণ হন ইতি সংক্ষিপ্তসারসূত্তেণ ণিন্ প্রত্যযেন নিষ্পন্নঃ ॥ नीर्यटक्षिकः खि वशार्यः। यथा। म नीर्यत्क्रिकिः नीर्यत्क्रा যোবধ মহতি। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। भौर्याक्षाः जि मखकत्क्षाता-পযুক্তঃ। বধ্যঃ। ইত্যমরঃ।। नीर्यगः की नीर्यकः। नित्रज्ञः। ইত্যমরঃ।। ত্রীণি শিরোরকণস-मारह টোপ্ ইতি খ্যাতে। नीर्य कः मूथ मन्त्रा भीर्घकः । भीर्य गारताङ्खि भीर्षनाः ए रा का-দিতি যঃ ৷ শির স্তাযতে শিরস্ত্রণ

ডঃ। ইতি ভরতঃ।। শीर्षणाः भू॰ विभागकाः। তৎ-পর্য্যায়ঃ। শিরস্যঃ ২। ইত্যমরঃ ।। एव खडः सानामिना वा निर्मा-ल ब्रान्यामामाभुरक करण। শীষে ভবং শীৰ্ষণ্যং চঘেকাদিতি यः। भाषमञ्ज्ञामिना नीर्यमा শীর্ষনাদেশঃ। ইতি ভরতঃ।। भौर्यत्रकः क्री भित्रज्ञानः। यथा। मित्रक्ष भीर्यतक्ष भीर्यगु॰ भी-র্যকঞ্চত । ইতি হারাবলী।। मील **बिः** मगारधी। इंछि कवि-कब्रफ्रमः॥ कि मीनिटा श्रे ৷ সমাধিঃ সেবানুভাবন প্রবৃত্তি र्वा। यः भीलिं जिला धर्म मिछि रलायुथः। ≷िछ पूर्गामामः॥ শীল ৎ ক অভ্যাসে। অতিশা-बत्न । इंडि कविकन्नफ्रमः ॥ অতিশাষন অতিশ্যকরণ ৷ जानवामि। अनिनीन९। छ-পধারণে ইত্যন্যে। শীলম নী-नितिहान मिछि क्याप्तवः । ইতি দুর্গাদাসঃ॥ भीनः की अञावः॥ मष्टः। रुज्यत्रदमित्नो ॥ শীলঃ পু॰ অজগরসর্গঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।। চরিত্র°। ইত্য-

ा मिनावा। देखि मिनाबदरोगुरी

महबीकारा-मनक्षमक्त नीवतः ही भणात्रमः॥ भा भाषमः ॥ जेशबाद्यनः ॥ त्रकान्-जावन ॥ धवर्षन । **३**कि भी-नवारका जनमें अजारका निन्ध-मः।। गाठिनिक्तवः। वया। छ-विनी अपनी भीलन अपूर्ण । ইতি ব্ৰহ্মবৰ্ষে ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ ম भीववान् जि भीवविभिकः। সৎস্বভাবঃ। ধ্বা। প্রথাশিনা শীলবতা মরাণা সমৃত্তভা-জা॰ বিজিতেন্দ্রি যাণা॰। এবম্বি-थाना मिल भागू द्रख ठिखा॰ जला-वृक्षमूनिथवामः ॥ इंछि मन-মাসতত্ত্ব ।। সমৃতঃ। ইতি শী-नमकार्यमर्थनार ॥ শীনা স্ত্রী কৌভিন্যসুনিপত্নী। यथा। वशाद्य ভाष्ण्यत्वाया॰ नमूखीया नित्रखटि । ममर्भ भी-লা সা জীণা সমূহ রক্তবাস-मा ।। ইতি তিখ্যাদিতব ।। मीबिज की हीर्ना देखिका-खरगरः॥ जजार वि॥ भीवन की देशालय ।। देशवान । ইতি यिषिनी ॥ भीतां पू॰ जकगतमर्गः। भीश-তো রৌণাদিক ক্রনিপ্ প্রত্যযেন

एक अर्थ देखिक विकास । देखि एकाक कि । अर्था श्रेष्ट । देखि मूर्गामानः ॥ स्क् जी एकाकः। देखामतः॥ स्क जी श्रेष्टिकः। देखामतः॥ स्कः जी श्रेष्टिकः। देखामतः॥ स्कः। वज्राक्ष्मः॥ मितञ्जानः॥

रेडि (र्बष्टः ॥ त्नावकवृकः।

ইভি বিশ্বঃ।।

পু॰ পক্ষিবিশেষঃ। শুষা ইভি বঙ্গভাষা শুগা ইভি হি-শীভাষা। তৎগর্যায়ঃ। কীরঃ २ । रेडामतः ॥ वक्कां ७ त्मशाँवी । माजिमश्रियः (त-ক্তত্ত্ব ৬ বক্রচঞ্চঃ ৭ চিমিঃ ৮ চিমিকঃ ৯। ইতি শব্দরত্মা-वनी ॥ भूकः ३० श्रियमर्भनः ३३ । ইতি क ताबतः ॥ यक्ष्णार्थकः ३२। जना बा॰नखनाः। शत्रब-বৃষাত্ব । বিগাকে গুরুত্ব । শী-তলত্ব। কাস খাশ ক্ষম হরত্ব। मः आहिषः। वध्यः। मीशनष्र । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। 🟶 ।। তস্য 'खल्जू हरू इ॰ यथा। वामः शर्यम् রাজগুৰঃ প্রয়াবে শুভ ভবে-किक्कि अरवर्ष । वरनहर्नाः কাষ্ঠশুকাঃ প্রযাতুঃ স্যুঃ সিদ্ধি-

सक्त्र

नाः मन् वाश्वाकः विकित् मञ्जाकानि । महिन्द विकित् । स्वित प्रमानि । स्वित प्रमानि । स्वामित क्रिया । स्वित प्रमानि । स्वामित क्रिया । महिन्द विकित् । महिन्द विकित् । महिन्द विकित् । महिन्द विकित् । स्वामित क्रिया । महिन्द विकित् । स्वामित क्रिया । स्वामित क्रिय क्रिया । स्वामित क्रिय क्रिय । स्वामित क्रिय क्रिय । स्वामित क्रिय क्रिय । स्वामित क्रिय । स्वामित क्रिय क्रिय । स्वामित क्

যোগিনী যোগমাতর ।

ত্রন্ধদন্তস্য জননী গৃহিণী মনুহস্য চ ।। ইতি বিফুপুরাণে ৪
অংশ ১৯ অধ্যাবটীকাষা শ্রীধরষামী ।। বিহ্নপুরাণে প্রজ্ঞাপতিসর্গনামাধ্যাযেপোব ।। ॥ ।।
অপি চ । দৈপাষনাচ্ছকো জজ্ঞে
ভগবানেষ শক্ষর । অংশেনৈষাবতীর্যোর্ত্তা দেপ্রাপ পর্মণ পদ ।। শুকস্যাপ্যভবন পুরাঃ পখাত্যন্ততপদ্দিন । ভূরিপ্রবাঃ
প্রভুঃ শস্তুঃ ক্লকো গৌরন্দ পঞ্চমঃ ।। কন্যা কীর্ত্তিমভী চৈব বোগমাতা ধৃত্রতা । ইতি কৌর্ফের
১৭ অধ্যায়ঃ ।। ॥ ।। সচ শ্রিক্রক্যা

কন্যা অভূৎ। ইতি পাজে পাভালখণ্ড ।। রাবণমন্ত্রী ।। শিরীঘৰ্কঃ । ইতি মেদিনী ।। বৃক্ষবিশেষঃ । শেখালকাটা ইতি
ভাষা। ইতি রত্নমালা ।।
ভক্তদে ক্রী প্রভিপর্ণ । ইতি
ভাটাধরঃ ।।

শুকজিহ্বা দ্রী বৃক্ষবিশেষঃ।
শুষাঠোঁটী ইতি ভাষা। যথা।
শুকাখা শুকনামা চ শুকজিহ্বাশুকাননা। ইতি রন্নমালা।।
শুকতরুঃ পুং শিরীষবৃক্ষঃ। ইতি
রন্নমালা।।
শুকজেনঃ পুং শিরীষবৃক্ষঃ। ইতি

भक्रमाना।।
छक्नामा खी छक्किश्चा। हेडि
त्रज्ञमाना।। भूक्रमः छदक् वि।।
छक्नाभनः भू॰ एक्रमः। हेडि
त्राक्रनिर्वर्गः। भूक्नाभक्वि॥
छक्नामः भू॰ भ्यानाक्वृक्षः।
हेठ्यमतः।। छक्वमामायुक्क वि
छक्तिशिक्षः खी भूक्नियी। हेडि
भक्रत्रावनी।।

खकপूक्ः पू॰ गञ्जकः। ইতি ह्य-চন্দ্রঃ।। खकमालाकृतकः।। खकপूक्कः क्री स्थाप्तरः। ইঙি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ শুকবৎপুচ্ছ-যুক্তে ত্রি।।

ভাবপ্রকাশঃ।

শুকপুলাঃ পুশ শিরীষবৃক্ষ। ইতি রাজনির্বকীঃ।।

শুকপ্রিয়ং পু॰ শিরীষবৃক্ষঃ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। শুকবল্লভেত্রি।। শুকপ্রিয়া জী জয়ুঃ। ইতি রাজ-নির্যক্টঃ।।

श्वक्काः भू॰ व्यक्तृकः। ≷ि রাজনির্ঘণীः॥

श्वेक्व हा श्रुष्ट का जिन्नः । ইতি ता जिन्न विदेश । श्वेक श्रिय वि ।। श्वेक वा श्वेक श्रिय वि ।। श्वेक वा श्वेक श

শব্দচন্দ্রিকা ॥ শুকস্যাদনীয-ক্রামাত্রে ত্রি ॥

তকাননা জী শুকাখ্যাবৃদ্ধঃ। ইতি
রন্ধনালা। শুকতুলামুখে তি ।।
শুকী জী কশ্যপগন্ধী। ষথা।
শুকী শোনী চ ভাষা চ সুগ্রীবা
শুচিসৃধিকা। অত্রশুচিভাষিকা
ইভাগি পাঠঃ। শুকী শুকানজনষদুল্কী প্রভ্যুল্ককান্।।
ইতি গারুভে ৬ অধ্যায়ঃ।। শুকপক্ষিণী চ।।

শুকোদর ক্রী তালীশগল্র। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।৷ কীরজঠরঞ্চ শুক্ত॰ ক্লী মাণ্সণ। ইতি শক্ত-• চব্রিকা।। কাঞ্জিক॰। ইতি হা-त्रावली ॥ **जवजवा**विरम्बः যথা। কন্দ মূল ফলাদীনি সঙ্গে-र नवगानि ह। यख मुत्रा १ छि-সৃযন্তে তচ্ছক্ত মভিধীয়তে।। অসা গুণাঃ । শুক্তণ তীক্ষোফ লবণ পিত্তরুৎ কটুক লঘু। कक क्रमुम्ताना लाथात्ना विष अर्थनूष ॥ इंछि ताजनिर्ध-की: 11 # 11 खंकि समाध्र के नि-বশাদমতা গত। ইতি প্রায-শ্চিত্তবিবেকঃ।। তস্য ভক্ষণ নি-रिर्देश यथा। यमः। जाशू भाष्क

করন্তাশ্চ ধানা বটক শক্তবং।
শাকং মাংস বপুপঞ্চ সূপং রুষর
মের চা। যবাছে পাৰসামের যচানাৎ বেহসন্তরং। সর্বং পারবক্রাবিতং ভক্তাং শুক্তম পারবক্রাবিং । তং প্রতিপ্রস্বো
যথা। যনুংগ দ্ধিভক্তাঞ্ব শুক্তেন
যু সর্বঞ্চ দ্ধিসন্তবং। ইতি ভিধ্যাদিতত্ত্বং।।

শুক্ত॰ ত্রি নিষ্ঠুর॰। ইতি মেদিনী ।। পৃত॰।। অস্ল॰। ইতি ৰিশ্বঃ।। প্লিফি॰।। নিজ্জন॰। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

শুক্তা স্ত্রী চুক্রিকা। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

শুক্তিঃ স্ত্রী জলজন্তবিশেষঃ।
বিনুক্ ইতি ভাষা। তৎপর্যাযঃ। মুক্তাম্ফোটঃ ২। ইত্যমরঃ
।। শুক্তিকা ৩। ইতি জটাধরঃ।।
মুক্তিপ্রসূঃ ৪ মহাশুক্তিঃ ৫ তৌ
তিকঃ ৬ মৌক্তিক্প্রস্বা ৭ মৌ
ক্রিকশুক্তিঃ ৮ মুক্তামাতা ৯।
অস্যা গুণাঃ। কটুত্বং। স্নিপ্নত্বং।
শাস হৃদ্গ্রহ নাশিত্বং। স্বিপ্নত্বং।
দীপনত্বক্ষ। ইতি রাজনির্যক্তঃ।
কপালখণ্ডং।। শৃদ্ধঃ। শৃধ্বন্ধঃ

॥ নখী ॥ অশ্বাবর্ত্তঃ ॥ অর্ফোরো-गः। इंडि यमिनी ॥ চक्द्रागिव-त्भवः। इंडि व्यक्तः।। ङ्ब-বরণ বথা। প্রস্তারি শুক্ল কত-श्वा श्विमाण्य मु। धर्मामण्डाः श्रेत् পঞ্চ রোগাঃ দ স্যাক্ষ্ ক্রিকা সা-कृ न शिकेकाथा जोनः निता-ণা॰ পিডিকাশ্চ ভাসা॰।। রো-গা বলাস গ্ৰথিতেন সাৰ্দ্ধ মেকা-मत्माकाः थल् मूकजारम । मू-ক্তি মাহ। শ্যাবাঃ স্যুঃ পিশিত নি ভাশ্চ বিন্দবোষণ শুক্লাভাঃ শিত নিচিতাঃ স শুক্তি সংজঃ ৷ শ্যাবা ইত্যাদি বৰ্ণত্ৰয বিকল্পো বোদ্ধ-वाः ॥ 🟶 ॥ जयामा निक्रि ९-সা । সেক আন্চোতন[্] পিণ্ডী বিডাল স্তৰ্গণ তথা। পুটপাকো-१ अनः रिजिः करेन्न त्नेव मूर्या-চরে ॥ ইতি কল্পবিধিঃ॥ তত্ত্ मिकविधि यथा। मिक्स निवास কার্যো রাত্রো চাত্যন্তিকে গদে। সেকস্ত সূত্ৰধারাভিঃ সর্বন্মিন্নয-মে হিতঃ।। মীলিতাক্ষ্য্য মৰ্ত্যস্য थारिय कञ्जूम्ल । এর धनल মুল ত্বক্ শৃত মাজ প্ৰাে হিত ৷ সুখোক্ষণ নেত্ৰষোঃ সিক্তণ বাতা-जियान्यनानन > ।। यसी देशदिक

নিম্ব করি হা করিব ইন্তানিক করিব শরিভাবা ধ উলিকা জী মুক্তাকেটেং। ইতি জটাধরঃ ম চুক্তিকা। ইতি

শুক্তিজ কী মুক্তা। ইতি হেম-চন্দ্রঃ।।

भक्रद्वावनी श

खिकियान् पूर शर्वछिति एवं । यथ। । यह स्टिंग यव वरः यहः मुक्तियान् शक्ष्मानमः । विक्षा-म्ह भातिशालम्ह मरेखर ह इन-नाहनाः ॥ देखि जिका खर्मियः॥ खिकिरीक की मुका। देखि जिका खर्मियः॥

শুক্রণ ক্লী মজ্জজাতধাতুঃ। তৎপর্য্যাষঃ। পুণস্তৃণ ২ রেতঃ ৩
বীজণ ৪ বীর্যাণ ৫ পৌরুষণ ৬
তেজঃ ৭ ইন্দ্রিষণ ৮ অমবিকারঃ
১ মজ্জারসঃ ১৮ রোহণ ১১ বলণ
১২ ৷ ইতি রাজনির্যক্টঃ ।। তস্যোৎপত্তির্যধা। রসাজক্রণ ত-

विकास वास्त्रात्यकः अज्ञा-বেশুলা ই স্বিভাগে নক্তা A Same and II o II ठमा प्रकार पर्या । गूक ला-का निक्य किए राग श्रीकेवर मृष्टागडरीक वर्शमाता की-बनाजिन उत्तरः ॥ जीवनाञ-ৰ উত্তম ইতি। যত আহ। জী-(द। रमिष् मईिमन् (मरह कु विर्णवण्डः । दीर्या त्रस्क भरम यित्रम् कीर्व याणि कयः कना द ।। 🐐 ॥ গर्डं मः জनन শুक्रमा न-ক্ষণ যথা। স্ফটিকাভ ডব প্ন-श्व॰ मथुत्र॰ मथुगित्रि छ। भूक मि-চ্ছন্তি কেচিজু তৈল ক্ষৌত্রনি-**७५ ७९ ॥ क्रा इन गर्**। ষথা প্ৰাস সৰ্পিস্ত গৃত শেচকৌ द्रामा यथा। এव॰ हि नकत्न কাৰে শুক্ৰণ তিগ্ৰতি দেহিনাণ।। অত্ত সর্পি দৃষ্টান্ডো বহুশুক্রে र ब्रम्भथरनन जिलिः मुक्तरमा ली-ভा९। ইক্রস দৃষ্টান্তস্ত সন্ধ শুক্তে পু॰िস অতিপীডনেনেকু-রস শুক্রযো লাভাৎ ॥ 🕸 ॥ তস্য कर्न मार्गः यथा। बाकुत्व पकिः ণে পার্ম্বে ৰম্ভি দারস্য চাপ্যধঃ। মূত্রপোতঃ পথে শৃক্ত॰ পুরুষদ্য

थवर्डरा ॥ ॥ वर भूकना क-রণ কারণ মাহ। ক্রৎজ দেহ স্থিত। **णुकः धमम्मनम स्था। जीवृ** ব্যাবৰূত শ্চাপি হ্ৰান্তং সংগ্ৰ-বৰ্ত্তে।। স্ত্ৰীৰু ব্যাৰষ্ত্ৰঃ সুৱত-कणः वायामः वर्षाः। अनाक। শুক্ত কামেন কামিন্যা দর্শনাৎ न्यानामि । नक म्यानार ধ্যানাৎ সংভোগাচ্চ প্রবর্ত্ততে ॥ ইতি ভাবপ্রকাশঃ ৷৷ 🛊 ৷৷ শুক্রক यकत्र जवा १वि यथा । मार्च शरेटन 3 রাজমায়ঃ ২ তিলঃ ৩ পটোল ৰাস্তৃক কাকমাচী পুনৰ্ৰাশাক ভিন্ন সৰ্বশাক ৪ তাবদমুদ্ৰব্য ৫ কারবেলকফল° ৬ কর্কেটিকফ-न १ वामाय ४ निक्र के मुक মরিচ° ১০ গুডম্বক্ ১১ পিপ্ললী শগী ভিন্ন কটুরসঃ ১২। ইতি त्राक्रवज्ञां मःगृही**ः ॥ 🗰** ॥ অপি চ। বীজক্ষযকর নিত্য ভক্ষ্য ভোজ্যঞ্চ পানক । বৰ্জ-যেৎ কার শাকাদ্যানত্যমূ বহু তিক্তকণ।। কাণ্শ্য রাজত রঙ্গস্থণ তোষণ পানেপ্যবন্ধনণ। মূত্রান্তে मृज्यबीष्कक्यकाति विवर्ष्क्रत्यं ११ 🗱 ११ 'छेक् वृक्तिक त्रक्रण' यथ। १ ভাষুাৰঃ স্বৰ্ণ দীসানাং পাত্ৰস্থং |

কল চর্মধোঃ। শুক্রবৃদ্ধিকর তা-ৰ ততু পেৰ প্ৰৰত্নতঃ ।। ইতি कानिकाभूतात्व ४२ अधायः ॥ ।। भूजन्यक्रकजनगानि सथा । পানীষণ ১ বিশেষতঃ হৈমন্তিক-जनः २ जानाषु ७ **ठम्मना**मिज-ৰ্যানুলেপন ৪ রক্তশালিধান্য ৫ হৈমস্তিক ষষ্টিকধান্য ও গো-युगः १ यायः ৮ সামান্যশৃক্ষা-রীচপত্রশাক > সামান্যক্লিমশু-ক্ষনারীচপত্রশাকজল॰ ১০ কল-স্থীশাক ১১ কাক্ষাচীশাক ১২ গোন্ধুরশাক ১৩ মুঞ্জাতকঃ ১৪ वार्खायः ३६ विमात्री ३७ रुखा-লুক ১৭ মধালক ১৮ পকামু ১৯ मूकायु॰ २० नागत्रकः २**১** বছৰাৱফল॰ ২২ পত্ককণ্টাফল॰ ২৩ কন্টাফল্যন্থি ২৪ পক্ষতাল २৫ शङ्काल २७ व्याक्कान ल॰ २१ फाका २४ थड़्कू त॰ २३ ধাত্ৰী ৩০ সন্মাণ্ডমজ্জা ৩১ তা-বন্ধৎস্যাঃ ৩২ বৃহন্মৎস্যঃ ৩৩ সমুদ্রমৎস্যঃ ৩৪ রোহিতমৎস্যঃ ৩৫ ভাকুটমৎস্যঃ ৩৬ পাঠীন-মৎস্যঃ ৩৭ ভেকলিমৎস্যঃ ৩৮ চিত্রফলমৎস্যঃ ৩৯ বাউশমৎ-স্যঃ ৪০ মদ্গুরমৎস্যঃ ৪১ বর্দ্মি-

মৎস্যঃ ৪২ ফলীমৎস্যঃ ৪৩ চি | ঙ্গুট্মৎস্যঃ ৪৪ পর্বত্যৎস্যঃ ৪৫ এলক্ষৎস্যঃ ৪৬ শকলীমৎস্যঃ ৪৭ চম্পত্ৰন্থৎ স্যঃ ৪৮ প্ৰোপ্তী-मध्नाः ४२ मक्स्मध्नाः ६० मा-मानामान्त (३) शतहामान्त (२ ভূশবাৰাত্ৰত ৫৩ অনুপৰাত্ৰত ৫৪ জলজমাণ্য ৫৫ জলেচরমাণ্য ৫৬ ছাগমাণ্স ৫৭ বারাহ্মাণ্স ৫৮ কুর্মমাণ্সণ ৫৯ ডিব্রিরি ৬০ ঙ্গলিঙ্গ ৩১ চটকানা মাণ্স ৬২ ছ্ত্সমাত্সত ৬৩ হত্সবীজ্ঞত ৬৪ শুকপকিমাণ্সণ ৬৫ মধুর ৬৬ শরারি ७१ यला ७৮ का पत्र ७२ बनाका १० वक्यां मः १३ कीर्न-बहाः १२ ममखकीतः १७ शाह-গ্ধ প৪ হস্তিনীদৃগ্ধ প৫ তাবৎ-कीत्रमञ्जानिका १७ माहियमधि ৭৭ দ্ধিসরঃ ৭৮ দ্ধিমস্ত ৭৯ নব-নীত ৮• তাবদ্যুত ৮১ তাৰদি-^{*} ক্ষুঃ ৮২ বিশেষতঃ পৌগুকেক্ষুঃ ৮৩ দন্তনিশীডিতেকুরসঃ ৮৪ ষম্ভনিশীডিতেকুরসঃ ৮৫ অগ্নি-পক্ষেকুরসঃ ৮৬ ইক্ষুফাণিত ৮৭ ইক্তিঃ ৮৮ ইক্ৰ্পণ্ড ৮৯ মধ্-ब्री २० एक शिक्षणी २३ एकी २२ चार्जक २० ल छन २८ शला धुः

৯৫ সৈন্ধবং ৯৬ অন্নং ৯৭ সতৈ-ল লবণান্বিত দগ্ধনৎস্যঃ ৯৮ रेञन नवगयुक भनानरविष्ठि कर्मगत्निशिष्ठ जनात्रपक्ष नवन বেশবার পুরস্কৃত সার্ভক কটু-रेखनगढानिख्य ध्रमाः २२ भा-ক্ষৎস্যাধ্যব্যপ্তন ১০০ মাণ্সর-मः ३०१ शद्भिकाशमाःमः ३०२ ষ্তপুরঃ ১০৩ মধুমস্তক ১০৪ मूक्तारकनकः ३०७ जुगगा ३०७ ১০৭ এরওমূল ১০৮ গোক্সুরঃ ১০৯ সামান্যবলা ১১० বিশেষ-তঃ পীতব্লা ১১১ অশ্বগন্ধা ১১২ थमात्रगी ১১७ याष्ट्रगी ১১৪ क्रमञ्जीवृक्तः ১১৫ রাজवृक्षयः वः ১১৬ শিলাজতু ১১৭। ইতি রা-क्रवल्ला मण्यशिष्ट ॥ 🖝 ॥ নেত্ররোগবিশেবঃ। ইতি মেদি-मी ।। ज्यमा विवत्न " मूक्त मदक দ্ৰস্কব্য গৈ

শুক্রঃ পু॰ গ্রন্থবিশেষঃ। তৎপর্যায়ঃ। দৈত্যগুরুঃ ২ কাব্যঃ
৩ উশনা ৪ ভার্গবঃ ৫ কবিঃ ৬।
ইত্যমরঃ।। সিতঃ ৭ আম্ফুজিৎ
৮ শতপর্বেশঃ ১ ভৃগুসূতঃ ১
ভৃগুঃ ১১ ষোডশার্চিঃ ১২ মঘাভূঃ ১৩ শ্বেতঃ ১৪ শ্বেতরথঃ ১৫।

ইতি শব্দরত্নাবলী।। ষোডশা॰-मूः ১७। ইতি জটাধরঃ ॥ 🗱 ॥ তদ্য শুক্তেতি নামকারণ বথা। নিদন্তাদিষু দৈত্যেষু ভূষএবো-थिए उर्थ । यूका बाजा गरजरवर मकी गकत यजवीर ।। मशारम्य বচো ৎ সহত শৃণু ত্বত পরমাত্ত্তী। অবিচিন্তা মসত্ৰ মৃতানা জী-बन॰ भूनः ॥ (व रूणाः अवरिष टेर्मछा। यथागङ्गा तथाङ्गिद्धः। তে সৰ্বে জীবিতা ভূষো ভাৰ্গ-द्यवाथ विमाया ॥ जिल्ल देव म-হাদেৰ ষহৎকৰ্মা ক্লত॰ রণে। স॰-জাত মফল দেব শুক্রবিদ্যাবলা-व्युषा ।। ইত্যেব मूट्क वहरन निमना अवनिमना। अध्यादाह প্রভুঃ প্রীত্যা স্বার্থসাধন মুক্তর্যণ ।। গচ্ছ শুক্র• গণপতে মমান্তিক मुशान्य । जुरु ७ मञ्जू वियामि খৰা বোৰ্গ সমেত্যতি।। ইত্যেব মুজে রুদ্রেণ রুন্দী গণপতি স্ততঃ । ত स्मास मूलाशमा ननी मल्लूका বেগবান্।। রথান্তার্গব মানিন্যে সি॰হঃ কুদ্ৰম্গণ যথা। তথাদাব হরাভ্যাস মাজগাম বিনাযকঃ ৷৷ নিপাত্য রক্ষিণঃ সর্বানথ শুক্রণ नारत्मय । ७ मानी ७ कवि॰ म-

र्वः आकिशदमत् अञ्हा । म मञ्जू না কবিশ্রেষ্ঠো গ্রস্তো জঠর মা-ছিতঃ। তুষীব ভগবস্তু ত বাশ্বী वाश्वि त्रथानता था मुक छवा ।। নৰোম্ভ তে শক্ত্র শর্ব শক্তো সহ-मु मिजाञ्चि मिता नम एउ। मृ-ফ্টেব সর্বণ ভূবনণ তবোদরে প্রা-ম্ভে। ভবন্ত॰ শরণ প্রপন্নঃ ।। ই-ত্যের মুক্তে বচনে মহাত্মা শস্তু ৰ্বচঃ প্ৰাহ ততে। বিহুস্য । নিৰ্গ-চ্ছ পুলোপি মমাধুনা ত্বং শিশ্পেন ভো ভার্গববংশচন্দ্রঃ।। নামা তু শুক্রেতি চরাচর স্থাণ স্তোষ্যস্তি নৈবাত্র বিচারণাস্তি। ইত্যেব-মুক্ত্বা ভগবান্ মুমোচ শিশ্পেন শ্কো म চ निर्क्तगाम ॥ विनिर्श-তো ভাৰ্গববংশচন্দ্ৰঃ শুক্ৰন্থ মা-পদ্য মহানুভাবঃ। ইতি বামনে ७७ जुर्गायः ॥ अ ॥ ज्यः नग्न-বৰ্ণীয়কোণ স্ত্ৰী ব্ৰাহ্মণজাতি য-জুর্বেদ রজোগুণাম্রস ব্যরাশি হীরক রত্ন ভোজকটদেশানা ম-ধিপতিঃ। ভৃগুমুনিসস্তানঃ। ন-वाजुल्मतीतः । भूषायः । भूराम्-थः। त्युठंदर्गः। ठठु जू कः। मृना-जनमाना वत कम उन् म ख्याती। শুক্লবন্তঃ। ইন্দ্রাধিদেবভাকঃ।

সচীপ্রত্যধিদেবতাকঃ। শুভগ্র-रः। जनदाङ्काल अवनः। जनहारी। क्रक्यक्रिः। बणा-खवा थाना जिल्लामी। यश्रवसः। রতীশ্বরঃ। জলভূমিচারী। শ্বিশ্ব-क्रिटिः। विश्वान यन्यागाः स्वायी চ। ইতি বৃহজ্জাতক গ্রহ্যাগত-জ্বাদ্যঃ ।। 🟶 ।। তস্য ভোগ্য॰ দি-ন॰ শুক্রবারঃ। তত্র জাত ফল॰। প্রসন্নচিত্তে৷ মতিমান্ গুণজ্ঞ মু-কেশবেশঃ সিতৰন্ত মাল্যঃ। ব-স্কুপ্রিযো ভার্গববারজাতঃ শীয়ু প্রসাদঃ সশলো নরঃ স্যাৎ ॥। তস্য ক্ষেত্ৰজাত ফলং। শুক্ৰালয়ে कावाकवाविषयभा पाठावित्थयः শ্রুতশাস্ত্রদক্ষঃ। কলিপ্রিয়ো বাত কফান্বিতঃ স্যান্মেধান্বিতো হাস্য-পটু শ্বদাত্যঃ ৷৷ গ্লেমা তস্য জেকাণ-জাতফন্ত্ৰ । ফেকাণে ভৃঞ্চনন্দ্ৰস্য সূতনুঃ পাত্ৰণ ধরিত্রীপতেঃ সৰজঃ স্বৈজনানুরাগঙ্গশলে দাতা স-তা॰ বল্লভঃ। সংপূৰ্ণ**ষ্চ ৰব্লাহ্মনা**--बाक्रवर्नः क्लीङः क्लाब्रः मिहः শান্তঃ সভারতোতিযুক্ত সুদরো থর্মানুরক্তো নরঃ ॥ 🕸 ॥ তস্য নবা॰শজাতফল । নারীরকো ললিভনযনো মঞ্কেশঃ ফুশাঙ্গঃ ||

কৰুত্ৰীবো ভবতি কনক শ্যাস कैं। मूरकगुः। कृतः द्विनः करि त्रिंधरना मानगीरना **खनरङा** वान्युरमा वियवयं स्या यानः বো ভাৰ্গবাংশে ॥ 🛊 ॥ তস্য दा-দশাংশ জাত ফলং। শূরো বহু ৰ্ষনো ভোগী নৃত্য গীভপ্ৰিয়ঃ স দা। শুচি দাতা ক্ষমী ভোকা कामगा॰टम ज्रा नंतः ॥ 🕸 ॥ 'ভস্য ত্রি॰শা॰শ জাত ফল॰।।'ব-হুপুণপরিপূর্ণঃ সুন্দর শ্চারুদ্টি र्यूविष्क्रनविदनामी लक्करमोधा-র্পতোগঃ। দিজ সুর গুরুভিক্তো দানশীলঃ রূপালু রসুরপতি গু-(ताः मागानव जि॰गका ताः।।। इंडिकाशीथनीयः॥ #॥ विक-উড়াদি সপ্তবিংশতি বোগান্তর্গত চতুৰি॰শযোগঃ। ভত্ৰ জাত ফ-न्। अपा विदाद विक्रिक ज्ञायाः नकान मालायते ते दै যুক্তঃ। জিতেনিসং স্যামা কুজা মুক্তোভিধানে জননং হি মস্য।। ইতি কোষ্ঠীপ্রদীপঃ ।। 📽 १। व्यक्तिः ॥ विवक्तव्यः ।। জ্যৈষ্ঠমাসঃ। ইত্যমরঃ॥ শুক্রকরঃ পু॰ মজ্জা। ইতি হেৰ-চন্দ্রঃ।। বীর্য্যকারকে ত্রি।।

শুক্রত্ব পু॰ মর্রঃ। ইতি শব্দ চল্লিকা।। রৈতাভীজকৈ কি শুক্রতা। দীর্যাজাতমারে বি।। শুক্রবা। দীর্যাজাতমারে বি।। শুক্রবা। তিচ্চটা। ইতি চক্রবা। শব্দট্কারাণ ভরতঃ।। বীর্দ্ধান তির্বি বি

শুক্রবারঃ পুর্ণ শুক্রগ্রহানীর দিন । বথা। তীর্থেতরক্রপ্রতি-প্রসব নাহ। শৃতিঃ । অষনে বি কুর হৈর সংক্রান্তরাণ গ্রহণের চ । উপারুর্গনি চোইসর্গে পুরাণ দৌ ভ্রবাসরে।। সুর্য্য শুক্রাদি বারেপি ন দোষ স্তিল তর্পনে । ইতিপ্রাবশ্চিত্ততত্ত্বণ।

खळाकः पू॰ मय्तः। ইতিজটি । , धतः॥

बंदः ॥

खिवरः वि मृक्तमयत्ती। मृकगद्धाः देश প্রতায निम्मतः ॥
छन्नः की, तक्ष्णः। ইভিনেদিনী
।। नवनीजः। ইভি শক্ত জিকা॥
विकत्युश्वित्मयः। ইভি জ্টাধরং॥ সভ্ চৃদুঃশুক্ল ভাগ্জুরোগং। ভিদ্বর গং যথা। প্রভারি
শুক্ল ভজাবিনাংস সাধর্ম সং-

ब्बाः थेन् शक्र द्वागाः। छत भूत মাহ। সুমেত মৃদু শক্কার্ম পুরু তৰ্ব্বতে চিব্লাৎ। অস্য চিকিৎ সা। ভূক্তা পাণিতল মৃষ্ট্রা চন্দু रवा वीम मीयटा। अहिद्रत्रदेशः তৰারি তিমিরাণি ব্যপোহতি। শ্বান ক্ষণভিলৈ ৰাপি চক্ষুষ মনিলাপহ•। আমলৈঃ সভত न्नामः शत्रमृष्टि वनातरः ॥ मूर्छ निषमदेनः शिखी मूरशाका यन देगक्षवा। शार्या। त्नाटक श्रीक **मिय लाथ कखू वाथा हती ।।** ত্রিফলা পিণ্ডিকা নেত্রে বাত পিত্ত ককাপহা। 🛊 বিশাসনাদৌ যথ मुक्ति मुक्तमकरमा प्रस्वाः ॥ श्वकः पुर वर्गविष्णयः। नामा ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাবঃ। শুভুঃ २ मूिहः ७ त्युकः ८ विमानः ए শোতঃ ৬ পাওরঃ ৭ অকীতে ৮ প্রসিতঃ ৯ গৌরঃ ১০ বলকঃ ১১ ४वनः ७२ चंड्यूनः ४७। इंख्य , মরঃ।। শ্বেতা ১৪ শ্যেতা 🎉 एगानी ३७ वियमेः ३१ मि**ण** ३५ জাবলকঃ ১১। ইতি ভট্টীকর্মা। শিতিঃ ২০ পাঞ্জঃ ২১ । ইভি मकब्रुवावनी ॥ त्रायः २२ थकः ২৩। ইতি জটাধরঃ॥ শক্রবো

গঃ। ইতি মেদিনী॥ শ্বেতৈরঙঃ । ইতি রাজনির্যন্টঃ।। শুক্লপকঃ। যথা ষট্ত্রি॰শন্মত । তত্র পক্ষাবু-**७) गारम भूक्र इरम्भे करम्भ हि।** চন্দ্রবৃদ্ধিকরঃ শুক্রা ক্রম শন্তক बाजकः ॥ देखि छिशांतिकदः ॥ भूकश्रमस्ट वि ॥।।। भूकरस्थि रथा। সুशाः भृदेकः अवाः भञ्ज की-র্ছি জ্যোৎসা শরদ্বনাঃ। প্রাসাদ লৌধ তগর মন্দারক্র হিমাজয়ঃ।। সুর্ব্যেন্দ্কান্ত কপুর করন্তা রজ छ॰ हनी। निर्माक जन्म हिंधीत **कलनः कत्रका हिमः ११ हा**द्यार्न-মাভ তন্ত্ৰীৰ স্বৰ্গকেভব্নদাভূক । लियाहिः नर्कता मुक्कः मधि गना मुशा क्वा ॥ मृशाम मिक्छ। इ॰म ৰক কৈরৰ চামর । রম্ভাগর্ত্ত পু-শুরীক কেতকী শশ্ব নির্মরাঃ ।। हंग दिनिंश श्रंक क्ट्र हुन मुक्ति क्शक्षकाः। मुक्ता असूय नेक्का प्र-स भूर्णामत्ना खनाः ॥ देवना म ক্লাশ কার্পাস হাস বাসবঙ্গরাঃ ্নারদঃ পারদঃ সন্দ খটিকা ক্ষ--ब्रिकेम्बर ॥ ইতি প্রতানি ॥ 🛊 🗓 भूक क्रक वाहकानि वस्त्रुनि यथा। সিত রুষ্ণে বিধু ছরী শিতি তারা-ন্তুক নাগরাজ ঘনসারাঃ। রাম

পথোরাশ্যজ্জু ন সিংহীজানস্ত চ श्रामामा है। विवृ केटला विकृ का । इति दुन्दः मि॰ इका। मिछी भवन द्वारको। छोत्ने नक्खं ने क्रःकवीनिका ह। अजुकः शिति कः अयम् । तागद्राजः त्यद ज • ६ । यनगादः करी दः विष अर्थना विकास विकास मान विका भरगावानि म् कनगृहः । युक्तक । ब्यब्कू नः गुज्जः शार्थ का निक्षिक निक्श नाह विनर्छ। वर्गेष्ठकः कृष्णे । हुन হাসঃ চন্দ্ৰহাস্য প্ৰদশ্ত শগ্ৰ ৰুব্ন তারকেশ সদাকাশ ব্যাস दुग ठालाकाः। नीलक्ष्युका शिद्धानिक मामिहर कर्क াং ৷৷ শবীকর্ঃ কযুকান্ডিঃ ক্রম্ব-🏞 । তারকেশ শ্চম্রঃ উজ্জুলবা-লশ্চ। সদাকাশঃ সর্বদাকাশঃ স-क्षिणम् । त्यामदकमः भिरवान-ভোবালো চা ভালাকো বলভজ खान कनको है। नीना न्यूका বলভক্তঃ ক্লকান্তিশ্চ। অধি কেশো অধিকশিৰে৷ ক্লাধিক বা-লক্ষ্য অরিফ স্তক্রণ কাকন্চ। ममामिठयः मिठाय। वञ्च॰ जिन **চ्यः थन्नगगृहरू । कलक्**री

इन्मः निक्रा । कलक्षेः निरक পারাবতে হংসে বল্লখনৌ । হি-রি জিম্বু ঘন ধিভেয়া গজাঃ সিদ্ধ মুরারিতঃ অভ্যোবাহাজানি क्रमान्त्रम्न। मडिस्टा विवरणा भ ক্লশ্যামাভিধাৰকা ভবভীতি সু-स्यः। रित्राज बैद्राच्छः-। वर् জিকগজঃ। অনিগজঃ। বনগজঃ । शक्क इति विक् गढ्जा रखी। এব॰ সৰ্বত্ত। গজা ইতি বছবটন क्रिक्मा शक्य भारता गुज्रा छ । यूत्रातिमिक् र्शना क्रक नयूटजी **ह**ा जिस्तारः উक्तिः खेताः त्यव-न्छ । क्रकाख॰ नाजीপुखद्रीक॰ नी नारक थ। यमुमाति र्वन छ छ। सूनात्वरी ह ॥ क्रकार्था श्रान्त-िनीवाहकनका श्रीता वद्री যোজ্যঃ। নীরদ ঘনোপলসিত मनाहियकत मिन्नूरवि পृथूना-জাভাঃ। সিত শ্যামবাচকা ইতি পূৰ্বৎ। ক্লফাৰ্থাগ্ৰাজটিনী বাচ-कगकाषदा यथा। क्रकनिक्त-কান্ডিঃ গঙ্গাভোগ্নকান্তিঃ। পকেন क्रक्षनमीवत्रमा ममूखदमाव का-खिः। नीतरमा निक्ति**छ। म**रखा মেয*চ। ঘনোপলসিতঃ ঘনো-পলঃ করকা তদ্বৎ সিতঃ ঘনো-

মেয়ঃ তদ্বদুপলসিতঃ কাস্তঃ। স-काश्यिकतः ठलाः मर्भ यकत्ती ह । मिकूरवि निनीश्रवाहः मयूज द्भगविनगारमे ह । शृश्वाकाञः कर्णी ज्येशानादगायाचा यगा इक्टमार है। उथा है। रहन के-লভৰক্ষায় মন্ধকারাতিদীধিতিঃ । जमाधित्कनवन्द्रार्या त्मकशीय नमक्टिनिः॥ वश्च मेरशमिषक्यायः विखु ८ रेमक्षव का खिमान्। का-টিকী চ লসলমীঃ পটা শুক ক-টি॰ বহন্।। খে তাম্বর শ্রেষণ ধ-ত্তে ছাটিকান্ত শ্রিষান্বিতঃ। অ-ৰ্জু নদ্যুতি বিদ্যোতী: ত্যেৰ মাদি मगूषरयथ ॥ 🟶 ॥ तक एथंडरा-চকানি বস্তুনি যথা। রক্ত শ্বেতৌ হরি শুচি পুষর শতপত্র সূর্য্যক স্তাজাঃ। নবহংস মহাপদ্মার্ক রু-ल्गाम्ताः कमन कीनातन।। इति শ্চন্দ্ৰ সূৰ্য্যযোঃ। শুচিঃ শ্বেত বৈ-শ্বানরযোঃ। পুন্ধর জল পদ্মযোঃ । শতপত্র॰ হংস পদ্মযোঃ। সূর্য্য-कान्तः भागितक मूर्याकारन ह। अक्तः भश्चायुक्तरमाः । नवर्^रमः নবহংসে প্রত্যগ্রসূর্য্যে চ। মহা-পদ্মঃ শ্বেতনাগে পদ্মে চ। অর্কঃ স্ফটিক সূর্য্যষোঃ। কমল জলা-

बुष्ट्रयाः वीनान जन बक्द्राः ।। সুহুতত্মাদিভি র্ভানে। রত্মেনা त्य त्रमाण्यूदेवः। जत्मराजा अम শোভাভিঃ সরোজ সমুদারিভিঃ ॥ ভানোঃ পরস্থাৎ সৃহদ্রদ্ধানি-ভিঃ সিত রক্তৌ যথা। রবিমিত্র॰ চন্দ্রঃ রবিতুলাশ্চ। ভানুরত্ন সূ-र्याकारका त्रवि भवातारभी छ । অগ্নিরত্ন॰ সূর্যাকান্তো অগ্নি পদ্ম-तारगो छ। त्रमा॰ मूक॰ मख बट्ख অধ্রশ্চ ৷ জলজ্পোভা জলজা চাদৌ শোভা চেতি পক্ষে প-দ্মকান্ডিঃ। এব॰ সরোজারিশো-ভা সরোজস্পর্দ্ধিশোভা পক্ষে সরোজারি শুলঃ। अমুদারিশো-**जा क्यूम्म्यक्तित्वाजा । शत्क** अभूकाति ताकिछाः ॥ 🟶 ॥ भीछ-শ্বেত বাচকানি বস্তুনি ৰখা। পীতশ্বেতো গৌর দিজরাজ কপ-র্দ শস্তু হরি তার্ক্যাঃ। হৈমস্তো-याकी शव यहा देख छ हत्य कलार थी-তাঃ।। গৌরঃ শ্বেত পীতবোঃ। षिजतात्जा छक् ठळाटगाः। क शर्फः मञ्जूकिोक् वतारियाः । শञ्जू र्जक जिल्लां हनत्याः। इतिः **शिक्रम मि**ण्ड्राः। তार्काः गः রুডঃ পকে উচ্চৈঃপ্রবাঃ। হৈ-

मरखामः ट्रिका १व ट्रियः। नीटक श्रिमाय । अकालम जूवर्ग जत्रज्याः। बराहज्ज जूबर्व बागारमाः। एखः वर्व न-नाक्रद्धाः। क्लर्रशेष्टः एक ब-প্রায়ে। সুশোভিতারকৃট্রীঃ वर्ग्यामनममुखिः। महत्ना-পল সৎকান্তি গাঙ্গেমছবি পে-भावः ॥ छात्रकृटि। बन्गमसूरः। পক্ষে আরক্টো রীভিঃ। সুশো-ज्य मर्गः कनक्ष ॥ । । ज्य লোকোত্তীণানি। গোপতি তা-काकाखिः तवि गरूफक्विः । পক্ষেগোপতি রিন্দ্র স্তম্য তার্ক্য खरीकः। चामरमविशिति मेरका-खद्यकः देवनामनः। इंकि क-"বিকল্পজাযা" ২ লেখে উদ্দিই-वर्गन > अनुम ।।

শক্তাদাত তিথয় ক্রমাথ পক্তাদাত তিথয় ক্রমাথ পক্ষদশ ক্তাঃ। দর্শান্তাঃ ক্রফ-পক্ষে তাঃ পূর্ণিমান্তান্চ শুক্লকে ।। ইতি ভিথ্যাদিতব্বং।। শ্বেত-বর্ণক্ষা।

শুক্রকণ্ঠকঃ পু॰ দাত্যহপদী। ইতি শব্দমালা।। শ্বেতগলযুক্তে ত্রি।। শুক্রকদঃ পু॰ মহিষকদাঃ। ইতি ताकिनिर्वाशिशा (विष्णुक्षण ।।
एक्रक्षा जी व्यक्तिका । देखि
ताकिनिर्वाशिशाः ।।
एक्रक्षा जि व्यक्तकर्या । ज्ञाकिनिर्वाशिशाः । देखि क्रोधिकः ।।
एक्रक्षे की व्यव्यक्षेत्रागः
। उरमोत्रथः वर्षा । वाष्ट्रकानः
गा वीकानि नवनीव्यकानि ।।
भधूना चार्षिणानि मूगः मूक्क्षेक्षे
स्तानि देव ।। देखि गाक्रदक ५०६
व्यागिः ॥

শুক্লম্ব ক্লী শুক্লতা। শুক্লস্ভাব ইত্যৰ্থে **স্ব প্ৰত্যবেন নিশান**।। एक्षणकः शुः ग्राहिकः। रेडि শक्छिक।। শেতमुभत्रक वि एक्रधाजूः शू॰ किंगी। इंडि হে মচন্দ্ৰঃ ম শ্বেতৰৰ্ণৰাজুদ্ৰৱাঞ্চ শুকুপকঃ পু॰ সিভপকঃ। চক্রস-शंत्रवृष्ण्य कृत्रवा भागा कि गाञ्चाहरः। जस्त्रम्यायः। तिङ खान्यानानः मार म्क्रणिति गानः न् हिः। न् क्रमानः स्वान ক্ষে বহুলো বনি চ স্মৃতহা৷ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ সত্ শুক্লপ্রতি-পদাদি পৌৰ্যাস্যস্তপক্ষণতি था घकः। इया छ्व शकावृद्धी गारम भूक करको करमा हि।

व्यव्विकतः भूतः हक मध्य-क्याप्रकः ॥ रेडिं डिथापिडवः ॥ । वर्षविद्युष्टिय ज्ञानवंशा-बिक्टिथ जीएष स्था। भूक्षणत्क তিখি প্ৰাহা ৰদ্যা মভ্যুদিতো त्रविः। क्रक्शरक छिषि आंशा य-স্যা মন্তমিতো রবিঃ ৷৷ ইতি বিষ্ণু श्राबंद ।। ।। मन्कातकर्मनः শুক্লপক্তব্যভা যথা। আশ্ব-मायनः। উদগৰনে আপুৰ্যামাৰে भटक कनाएन सकत्व छोडक-শ্বোপন্তন গোদান বিবাহাঃ বি-तारः मार्बकालिक रेट्याटक ॥ विषात्रधमा मूक्रभक्कर्वराज्य यथा। यमन भारिकाटि। ब्रत्य र्थ-त्रा र्रा मंत्र उदरङ्क्णीम् वृक्षिकः । श्वर्कत्मृषु भूरको ह विमात्रिष्ठः अनगारक ॥ ।। भू-ষ্ত্রিণারম্ভদা শুক্লপক্রব্যভা यथा। यৎ मा भू कारन। ध्या भाग भन्न প্ৰভ শুক্ল নতীতে চোত্তরাবণে ! শুক্লপক্বর্ত্তব্যতা যথা ৷ ব্যবহা-त नम्णट्य। व्यक्ति। नर्राप्ताना क्लियमा विल्विकः। উद्ध्यायन जानरम नृक्षंगरक ७८७ मिटन ॥ भा गृराबड गृरद्यद्यभारमाः भूक

শুক্লপুষ্ণঃ পু ছত্রককৃষ্ণঃ। সন্দ-পুষ্পবৃষ্ণঃ। মরুবকঃ। ইতি রত্ন-মালা।। শেতসসুমযুক্তে তি ।। শুক্লপুষ্ণা স্ত্রী নাগদন্তী।। শী-তঙ্গন্তী। ইতি রত্নমালা।।

শুক্লপুষ্পী স্ত্রী নাগদন্তী। ইভি রাজনির্ধন্টঃ।।

শুক্লপৃষ্ঠকঃ পু॰ সিন্ধুকবৃক্ষঃ। ইতি শব্দচন্দ্ৰিক।।। শ্বেতবৰ্ণপৃ-ষ্ঠমুক্তে ত্ৰি।।

श्करनः भू॰ जिनिविद्यास्य। वामूप्तवा यभी क्रका नव श्करा वनास्त्रभी । यहंदना विज्ञरमा खुदः मूथुल्मह मूम्यनः॥ या- নন্দো নন্দনঃ পদ্মো রামো বি-কুছিষ জুমী। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। শুক্লমণ্ডলং ক্লী চক্ষুংশেতক্ষেত্রং। । ইতি কেচিৎ।। শ্বেতবর্ণগোল-লবস্তু চ ৪

শুক্রেছিতঃ পু॰ শেতরোহিত-ৰৃক্ষঃ। ইতি ব্লাজনির্ঘন্টঃ।। শু-জুরোহিত্যৎস্যশ্চ।।

শুক্লা স্ত্রী উচ্চটা। ইতি রত্ন-মালা।। শেতদাতরি ত্রি।।

শুক্লবর্গঃ পুণ শ্বেতবর্ণসজাতীয-তব্যং। যথা শশ্ব শুক্তি কপর্দ-কাদি। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শুক্লবাষসঃ পু॰ বকঃ। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ।। শ্বেতকাকশ্চ।। শুক্লশালঃ পু॰ গিরিনিয়ঃ। ইতি

রাজনির্ঘণ্টঃ॥ শ্বেভশালবৃক্ষশ্চ শুক্লকীরা দ্রী কাকোলী। ইভি

রাজনির্ঘণ্টঃ।শ্বেতদুগ্ধযুক্তেত্রি শুক্লা ক্রী সরস্বতী। ইতি ত্রিকা-শুশেষঃ।। শর্করা। ইতি শব্দ-

हिल्ला। काटकानी। विमाती

।। त्रूरी। ইতি दाक्रनिर्वन्धः ॥ শেতবর্ণা চ।।

শুক্লান্দী ন্ত্ৰী শেকালিকা। ইতি ব্ৰাজনিৰ্ঘণ্টঃ॥ শ্বেতাব্যব্যুক্তে ত্ৰি॥ শুক্লাপাকঃ পু॰ মযুরঃ। ইতি হে মচন্দ্রঃ। শেতবর্ণনেত্রান্তে তি ।। শুক্লায়॰ ক্লী অমশাকঃ। ইতি রাজনির্মণ্টঃ।।

শুক্লার্ম^ন ক্লী নেত্ররোগভেদঃ। ষথা। অথ শুক্লভাগজা রোগাঃ। তেষা॰ নামানি সংখ্যাঞ্চাই। প্র-স্তারি শুক্ল কতজাধিমাণ্স মা-यूर्य म॰ ख्वाः थल् शक्रदांशाः । স্যাচ্ছজ্ঞিকা সাজ্জুন পিষ্টকা-খ্যা জাল শিরাণা পিডিকাশ্চ তাসাং॥ রোগা বলাস প্রথিতেন मार्क व्यकानत्माकाः थन् छङ्ग-ভাগে ॥ 📽 ॥ তেষু প্রস্তার্য্যর্ম-ণো লক্ষণ মাহ। প্রস্তার্যাশ্ম তনু স্তীর্ণ শ্যাব রক্ত নিভ পিত। তনুঃ পুত্তলী। স্তীর্ণ বিস্তীর্ণ। শ্যাবরক্ত মিত্যত্র বিকল্পো বো-क्तवाः॥ ॥ श्रक्तान्यार्। मूट्य-ত॰ মৃদু শুক্লাৰ্ম শুক্ল॰ ভদ্ধতে हिता । । । तकार्या र। भ-षा ७ मृद् तकार्य गया म हीय-তে দিতে। পদ্মাভ কর্ণেন রক্ত মিতার্থঃ। চীষতে উপচীযতে ॥ # ॥ अधिया मार्मा ह। भृशू मृ-षिया 'गार्य तरुलक यक्ष छ । शृथू विखीर्न । बहल भूके । य-

क्रिकि के केवर क्रकरना विकाश স্বাযুর্মাই। স্থির প্রসারি মাণসা-षाः **एकः नायुर्धा शक्ष्यः।** छितः কঠিন । শুক্ল সাবরহিত ।। 🗱।। ওজিমাই ৷ শ্যাবাঃ দ্যাঃ পিশি-° তনিভাশ্চ বিন্দবো ষণ শুক্লাভাঃ সিত নিচিতাঃ স শুক্তি সংজ্ঞঃ। শ্যাবা ইত্যাদি বর্ণত্রযে বিকল্পো विकिताः॥ 🟶 ॥ जब्जूनियाः । একো যঃ শশরুধির প্রভস্ত বিন্দুঃ শুক্লস্থো ভবতি ত মজ্জুন বদ-शिक्षा । शिक्षकिया है। त्सन्य মারুত কোপেন শুক্লে মা[°]স° স-মুমত । পিষ্টবৎ পিষ্টক বিদ্ধি यनाकामम् महिष्ण ॥ शिकेव९ **শেত॰ ॥ # ॥** मित्राष्ट्रानगार । জালাভঃ কঠিনঃ শিরোরুণঃ শি-রাণাণ সম্ভানো ভবতি শিরাদি काल म॰खः। भित्रापि कालम॰-ত্তঃ শিরাজালসংজ্ঞঃ।। 🗱।। শি-রাপিডিকামাহ। শুক্লন্থাঃ সিত পিডিকাঃ শিরাবৃতা যা স্তা বি-দ্যাদসিত সমীপজাঃ শিরাজাঃ ॥ 🟶 ॥ বলাসগ্রথিতমাহ। কা॰-স্যাভো ২মৃদু রথ বারিবিন্দু ক-(क्रा विरक्ष्या नयनिरङ वला-ममः छः । काः माजः स्व हे-

ত্যর্থঃ। অমৃদুঃ কঠিনঃ। বারি-বিন্দুকল্পঃ এতেন মনাগুলতত্বং বোধ্যতে। বলাসসংজ্ঞঃ বলাস-গ্রাথিতসংজ্ঞঃ। কচিদেকদেশে-নাপি সমৃদ্যাবগমাৎ। বথা ভীমো ভীমসেন ইভি। অতএব স্ফ্রাতে। নামসংগ্রহে বলাসগ্র-থিতপদং নির্দিষ্টং। ইভি ভাব-প্রকাশঃ।।

শুঙ্গাকর্ম কী পুণসবনসংস্কার-বিশেষঃ যেথা। অগ্নিস্ত মারু-তো নাম গর্ভাধানে বিধীষতে। পুণস্বনে চন্দ্রনামা শুঙ্গাকর্মণি শোভনঃ ।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বণ ।। তৎকর্মানুষ্ঠানণ যথা। শো-

শুঁষা ষদ্য প্রসিদ্ধিঃ।।

ভননামান মগ্নি সংস্থাপ্য বিৰু-পাক্জপাস্তা স্পণ্ডিকা সমা-প্য বটবৃক্ষস্য পূৰ্বোত্তরশাখাৰাণ कलयूंगलभालियों क्रियि तन्-পহতা ৰটশুলা ধ্বানা মাধা-**ণাম্বা ত্রিভি প্রিভি প্র্ডেকেঃ সপ্ত**-বারান্ সপ্তাড ম দ্রৈ: ক্রীণীযাৎ। मुखाना॰ मुखाना मृखानयः माधा-রণাঃ। প্রজাপতি খাঁষিঃ সোম ব-ৰুণ বসুৰুজাদিত্য মৰুদ্বিশ্বদেবা দেবতা नाटशाथनुका পরিক্রয়ণে विनिर्यागः। उँ यमानि सोभी সোমাৰ ত্বা রাজে পরিক্রীণামি। ইতি গুডকত্রযেণ একণ পরিক্রম-व॰ 11 यमामि वाङ्गी वङ्गाय चा রাজ্ঞে পরিক্রীণামি। ইতি গুডক ब्रायन विजीय॰ পরিক্রয়ণ ।। य-দ্যাসি বসুভ্যো বসুভ্য স্ত্রা রাজ্ঞে পরিক্রীণামি। ইতি গুড়কত্রযেণ **তৃতীय॰ পরিক্রয়ৰ॰ 11 यদ্যসি রু**-ডেভ্যো **রুদ্রেভ্য স্তা রাজ্ঞে প**রি-ক্রীণামি। ইতি গুড়কত্রযেণ চতু-র্থ॰ পরিক্রয়ণ ।। ষদ্যসি আদি-ত্যেভাঃ আদিত্যেভা স্থা রাজ্ঞে পরিক্রীণামি। ইতি গুড়কত্রযেণ পঞ্চন পরিক্রয়ণ ৷৷ যদ্যসি মরু-ভো মরুন্ডা স্থা রাজে পরিক্রী-

ণাৰি। ইতি গুডকত্ৰযেণ ষষ্ঠ॰ প-রিক্রযণ ।। ষদ্যসি বিশ্বেভ্যো দেবেভ্যো বিশ্বেভ্যো দেবেভ্য-ন্তু। রাজ্ঞে পরিক্রীবামি। ইতি গুডকত্তবেশ সপ্তমণ পরিক্রমণ ।। ততঃ ক্রীতা বটশুঙ্গা অনেন यखिन वृक्षानात्यः । श्रेष्ठाश-তি খি যি রেমেধ্যো দেবতা ন্য-গ্ৰোধ শুঙ্গাচ্ছেদনে বিনিষোগঃ। ওষধযঃ সুমনসো ভূত্বা অস্যাবী-র্য্যাণ সমাধত্ত ইষণ কর্ম্ম করিষ্যতি। তত স্তাণ বটশুঙ্গাণ তৃণেন বেঞ্চি-ত৷ মন্তরীকেণানীয় অন্তরীকে স্থাপথেৎ। ততঃ ক্বত শোভন-নায়ো অগ্নে রুত্তরতঃ প্রকালিত শिनाया॰ बक्काती भ्रमाती छग-বতী বা শ্ৰুত স্বাধ্যায়শীলো বা ব্রান্ধণঃ আচারতো নীহার জলে-नानावृञ्दलारकुन भूनःभूनः ११-ষযেৎ। ততো ২গ্নেঃ পশ্চিমতঃ উত্তরাত্রেষু সন্দেষু পশ্চিমাভি-मूथी॰ वधृ॰ পূৰ্ৰদিগানভমস্তকা॰ রুত্ব। পৃষ্ঠদেশে স্থিতঃ পতি দ ক্ষি-ণপাণে রঙ্গুঞ্চানামিকাভ্যাণ বস্ত্র-বদ্ধাণ পেষিত্বটশুক্ষাণ গৃহীত্বা গর্ভবত্যা দক্ষিণনাশাবিবরে শু-ঙ্গারসং নিক্ষিপতি অনেন সম্ভেণ

। প্রজাপতি ঋ ষি রন্ যুঁ প্ছন্দো

থমীন্দ্র বৃহস্পত্যো দেবতা নাআ্রেগ্রু সারস্যা দানে বিনিযোগঃ। পুমানগিঃ পুমানিন্দ্রঃ
পুমান দেবো বৃহস্পতিঃ। পুমাণসং পুত্রং বিন্দস্ব তং পুমাননুজাযতাং॥ ততা মহাব্যাহ্নতি হোমং ক্ষমা প্রাদেশ প্রমান
লাং যৃতাক্রাং সমিধং তৃষ্ণী মগ্রো
হক্ষা প্রকৃতং কর্ম্ম সমাপ্য উদীচ্যং শাট্যায়ন হোমাদি বামদেশ
ব্য গানাস্তং কর্ম্ম সমাপ্য কর্মনকার্যিত্ বাক্ষণায় দক্ষিণাং দশ্দ্যাৎ। ইতি ভবদেবঃ॥

শুঙ্গী শুণ প্লক্ষর ।। বটবৃক্ষঃ। ইতি জটাধরঃ।। শুঙ্গাবিশিষ্টে ত্রি।।

अठ इत १ वह के लोटा। विभतिल ।। क्रिंग । है कि कि विकत्नवह भा । लोठि मुक्तिः । विभतिल विख्याः । क्रिंगः आर्जवादः ।। हेत्र अस्टि अल्गाठीव । यव मूठा कि गांव वानः । मूठा विख्य यस्त्रा । क्रे मुक्तः ।
स्टित मृठी काव है कि श्राक्षः ।
त्रानाथस्त्र विष्यामः।
त्रानाथस्त्र विष्यामः।

नर्थान् व्याथगाठि । इंडि मूर्गा-मात्रः ॥

শুচ শোকে। ইতি কবিকরজনঃ

। তালব্যাদিঃ। শোচতি। শোকঃ পুত্রাদে রদর্শনাদ্ধানুভবঃ
। কিং শোচতেহাভ্যুদ্ধে বতাস্মানিতি ভটিঃ। প্রিষত্যা মাংশোচতে শোচতে। ইতি মহানাটকং। গণক্কতানিত্যন্তাদাত্মনেপদং। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শুচা দ্রী শোকঃ। ইতি শব্দরত্ন-বলী।।

शिहः पृ जिहिश विक्य क्षः

। जाया हमा मा श्री मुक्त वर्षः ।।

गृत्रा त्र त्र मा स्वार्णः ।। जी सः

। श्री क्ष मजी ।। देजार्ष मा मा स्वार्णः ।

रे जि प्रिमिनी ॥ प्रो ता प्रिः। यथा

। भाव कः भव मा न म्ह श्री कि ति मा स्वार्णः भव मा नः

मा ९ देव मू जिं भाव मा मुक्तः मू जि ति खु प्रो म्ह जि ति स्वार्णः भव मा स्वार्णः भव मा स्वार्णः । देव मा स्वार्णः भव मा मा स्वार्णः । देव मा स्वार्णः भव मा मा स्वार्णः । व्याप्त मा स्वार्णः ।।

भाव कः भव मा न मह मु हि एक मा भाव कः भव मा न मह स्वार्णः ।।

भाव कः भव मा न मह महि एक मा भाव कः भवि की जिं जाः ।। हि जि एक स्वार्णः ।। मा स्वार्णः ।।

भाव कः भवि की जिं जाः ।। मू र्याः ।।

भाव कः भवि की जिं जाः ।। मू र्याः ।।

ষথা। তপন স্তাপন শৈচব শুচিঃ সপ্তাশ্ববাহনঃ। ইতি শাষপুরা-ণ ।। চন্দ্রঃ।। শুক্রঃ।। বান্ধণঃ। ইতি কেচিৎ।।

শুটি: ত্রী কশ্যপপদ্ধা স্থানা সূতা। য়থা। ষট্ সূতাশ্চ মহা-সদা স্তামাযাঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ। শুকী শ্যেনী চ দ্বাবা চ সূত্রীবী শুচি গৃধিকা।। ইতি গারুডে ৬ অধ্যায়ঃ।।

भिक्तः जि मूक्षः शविनिष्ठः। ইত্যমরং।। मूक्षः॥ অনুপহতঃ। ইতি
মেদিমী ॥ ॥ ।। পরুষণিপর্শে
হস্তকালনাৎ শুচি র্যথা। দৈবাৎ পরজ্ঞিষণ দৃষ্টা বিরমেদেয়া
হরিণ স্মরন্। স্পৃষ্টা পরসূবর্ণঞ্চ
হস্ত প্রকালনাৎ শুচিঃ।। ইতি
বক্ষবৈবর্ত্তে জ্ঞাক্ষক্ষমখন্ডেও
অধ্যায়ঃ।।

শুচিতা স্ত্রী শুচিত্ব। যথা। শৈত্যাণ নাম গুণ স্তবৈব সহজঃ
স্বাভাবিকী স্বচ্ছতা কিং ক্রমঃ
শুচিতাণ ভবস্তি শুচ্যঃ স্পর্শেন
যস্যাপরে। কিঞ্চান্যৎ কথ্যামি
তে স্তুতিপদণ ত্বণ জীবিনাণ জীবনণ ত্বঞ্চে স্নীচ পথে ন যাস্যসি
পরঃ ক স্ত্রাণ নিষেদ্ধণ ক্ষমঃ।।

हेि बन्नगरमनः ॥

শুচিদ্রনঃ পু॰ অশ্বশ্বদান ইতি রাজনির্ঘন্তঃ। শুদ্ধবৃদ্ধণা । শুচিপ্রণীঃ ত্রি আচমন । বথা। আচানঃ স্যাদাচমন মুপন্পর্ণঃ শুচিপ্রণীঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী শুচিমলিকা ত্রী নব্দালিকা। ইতি রাজনির্ঘন্তঃ।।

किरिताहिः पृ॰ हसः। इंडि किरिताहिः पृ॰ हसः। इंडि किरिताहिः पृश्व किरिता। किरिताहिः पृश्व किरिताहिः। किरिताहिः प्रश्व किरिताहिः। किरिताहिः प्रश्व किरिताहिः। किरिताहिः प्रश्व किरिताहिः। किरिताहिः प्रश्व किरिताहिः। किरिताहिः। किरिताहिः प्रश्व किरिताहिः। किरिताहिः।

শুদীরতা স্ত্রী বীর্যাণ। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ॥

खीर्या॰ क्री वीर्याः। ইতি नकः तक्रावनी॥

শুঠ ই খোটনে। ইতি কবিকরক্রমঃ।। খোটন মিহ গজ্যাবাতঃ
। ই শুঠ্যতে। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
শুঠ্ খোটনে। ইতি কবিকরক্রমঃ।। খোটন মিহ গত্যাবাতঃ
। শুঠতি পয়ঃ সেতুনা। ইতি

जुर्गाजागः ॥

र्श्वर क जानत्मा। इठि कितकन्न-क्रमः ॥ क मार्यगिष्ठ वृक्षः क्रि-साम् मन्मः मानिष्ठार्थः । इठि मूर्गानामः ॥

खर्क है कि लायर। है छि कविकन्न ज्ञमः ॥ है मूछे रा कि मूछेषि मूछे छि शक्य माजशाद ।
तमानाथ खु जा मिश्र क्ष्म में जिल्ला क्ष्म कि ।
तमानाथ खु जा मिश्र क्ष्म कि ।
दम भिक्ति मंद्र जा जा मूछे छि
शक्य हु जा माल हो ने । व खु छ छ ।
छ अव खंकी जा वः जनाथा छ ।
वा मिकरेमाव श्री का के मान्य । व खु छ छ ।
वा मिकरेमाव श्री का वा कि पा कु ।
इक्षि मूर्गा मानः ॥

শুঠিঃ দ্রী শুন্ঠী।ইত্যমর্টীকা।।
শুন্ঠী দ্রী শুকার্ত্রকণ। শুঁঠ ইতি
ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। মহৌষধণ
২ বিশ্বণ ৩ নাগরণ ৪ বিশ্বভেষজণ ৫। ইত্যমরঃ।। শুন্ঠিঃ ৬
বিশ্বা ৭ মহৌষধী ৮। ইতি তদ্বীকা।। ইন্দ্রভেষজণ ৯ মেষজণ
১০। ইতি শব্দরত্নাবলী।। বিশ্বোষধণ ১১ কটুগ্রন্থিঃ ১২ কটুভ্রন্থ ১৩ কটুষণণ ১৪ সৌপর্বণ

oc ग्वरवतः ३७ ककातिः ३१ চান্দ্ৰক ১৮ শোষণ ১৯ নাগ-রাহ্ব॰ ২০। অস্যা গুণাঃ। ক-টুৰ'। উক্ৰ'। निश्वन'। কফ लाकानिन नृन वटकामत्राद्या-न यात्र भीशमनानिष्यः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। 🗱 ॥ অপি চ। শुशी क़िंगायवाल्यी भारती क-**पूका लघुः । ज्ञिटकाका मधुता** পাকে কফ বাত বিবন্ধনুৎ ॥ व्या वर्गा ह निःशान मृल काम ऋषाययान्। इस्ति भीशष শোথার্শ আনাহোদর মারু-তান্।। আগ্নেষগুণ ভূষিষ্ঠ তো-या॰म॰ পরিশোষবেৎ। স৽গৃত্ ন্তি মল তত্তু আহি শৃষ্ঠ্যাদযো यथा।। विवन्न जिन्नी या जुना কথ॰ গ্রাহিণী ভবেৎ। শক্তি ৰিবন্ধ ভেদে স্যাদ্যতো ন মল-পাতনে।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। 🐞।। अनाका। भूछी ठू कक वा-**छत्री मद्मश नत्रु मीलनी।** वि शास्क मथुता वृषा। शासा কটু রোচনী।। ইতি রাজবন্ধভঃ एका॰ की मधी। इंछि मक-ठिखिक। ध खा भू मनि ग्रा । इंडि इम । खाडी खी इंडिम ही क्या रेडि

हर्यः ॥ कत्रिकत्रक ॥ শুওকঃ । পু॰ শৌভিকঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।। यूक्तदिवृः। ইতি मक्यांना।। ভাভরোহঃ পু॰ ভূতৃণ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ পুস্তকান্তরে শৃঙ্গরোহ ইতি পাঠঃ।। ख्खा खी महाभानगृरु ॥ अधु-रिखनी ॥ विनाग ॥ मूत्रा । रिख-হস্তঃ। ওঁড্ ইতি ভাষা। ইতি त्मिनी ॥ निनी। इंछि विश्वः ॥ ऋषेनी। इंडि भक्तभावा॥ **ख्खानान॰ क्री यमनानगृह॰।** তৎপর্ব্যাयः। यमञ्चानः २। ইত্য-बतः ॥ बमञ्चल ०। ইতি भफ-त्रञ्जावनी ॥ শুণারঃ পু॰ শৌণ্ডিকঃ। ইতি मक्तक्वावनी॥ শুঙালঃ পু॰ হস্তী। ইতিধন-अवः ॥ শুণ্ডিক। স্ত্রী 'অলিজিহ্বা। ইতি কেচিৎ ।। শুণ্ডাশব্দার্থাপ্যেয়া।। श्रुषिका खी कृष्कृमती। देखि ব্লাজনির্ঘন্টঃ।। ি পু॰ শৌণ্ডিকঃ। ইতি শব্দ-ब्रञ्जावनी ॥ श्खी ह ॥

TOP त्राकनिर्घनिः ॥ শুতুদিঃ স্ত্রী শতক্রনদী। ইত্য-মরটীকাষাণ ভরতঃ ॥ শুতুদ্রঃ স্ত্রী শতক্রনদী। ইতি ভরতদ্বিপকোষঃ 11 **धकः क्री टेमक्कवः॥ यदिकः। इं**छि ताजनिर्वकः॥ यदिष्ठ शर्वारय সৃষ বলিখিত তদশুদ্ধ। न्धकः जि क्वनः॥ निर्फायः॥ পবিত্রঃ। ইতি মেদিনী॥ শুক্লঃ । ইতি ধরণিঃ ॥ রাগান্তরামি-শ্রিতরাগঃ। ইতি সংগীতশাস্ত্রণ ॥ ॥ गतीतानुक्वाकातन यथा । শ্রীনারদ উবাচ। মানবানাণ **ঁদিজাদীনা॰ শরীরস্যাপবিত্রতা** । ভবেৎ কেন প্রকারেণ কথ্য-তा॰ তৎ ममानिव ॥ मईएम পুরাণাদি শাস্ত্রজ্ঞানা ছিজ-মনা । জিতেন্ত্রিয় স্মৃতিবিদা তনোঃ কথষ পূততা ।। এস দাশিব উবাচ। যথা দেহাপবি-ত্ৰত্ব বিপ্ৰাদীনা যতো ভৰেৎ ॥ । एतरर्घ मृनू ७९ मई॰ नद्राना-মানুপূৰ্ৰিক ।। জাতকে মৃতকে ২মাতে জলোকোভিঃ ক্তে তথা। অপবিত্রো দ্বিজাদীনাণ

प्रदः मन्नापिक याम् ॥ जानूज-

তনু রুৎসর্গে নরো মূত্র পুরীষ-रयाः। जम्मृमा म्मार्ग तिव बन्नरक क्रेंशिन्यू।। त्रक्रशाःच नथ मृत्र पष्ठ अज्ञामिजिः कः তে। विश्रातन त्रग्िः कायः भ-স্ত্রান্ত্রেঃ কণ্টকাদিভিঃ ॥ ভুক্তৃ। স্থাননোচ্ছিফে ২পবিত্রঃ ক্ল-उदेमथुद्म। गष्टम बाक्रागी-না॰ শরীর॰ ক্ষুরকর্মণি।। জ্বরা-দিভি শ্চতুঃষষ্টি রোগৈ র্যুক্ত षिजैयनाः। वशू तथ्यकः शृका मान हात्र क्रशामिषु ॥ शूर्या-দ্যারে বমৌ শ্রান্ধ পতিতামাদি ভোজনৈঃ। তথা চ রেতঃ স্থল-নে মৰ্ত্যদেহাপবিত্ৰতা ৷৷ অপ-বিত্র॰ बिজामीना॰ বপুঃ স্যাদ্রা-ए पर्यात्व । शर्ष्ठ मानश्रहत পতিতে পাতকাদিভিঃ॥ অশৌ-চান্তেন শুদ্ধিঃ স্যাৎ জাতকে ষ্তকেপি চ। সৰ্বৰ্ণাশ্ৰমাদীনাণ उताः मक्तामिककाम् ॥ इंडि পাদ্মে উত্তরখণ্ডে ১৯ অধ্যায়ঃ।। श्वक्रक्यः पू॰ गर्मछः। इंडि ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।। পবিত্রজঙ্ঘা-ষুক্তে ত্রি।। श्वकष् वि শूका पञा यमा मः।

শুক্লদন্তযুক্তঃ। যথা। গতে ত-

त्रिन् जलगूिः भूक्षमजादनः भिथी। ज॰कपूर्दका २क्षमाना-वान् शाद्रका मृतनात्नः॥ इिज् ভটৌ ৫ সর্গঃ।।

শুদ্ধমতিঃ পু• চতৰিংশতিভূতা-र्षा खर्ग छक्तिन वित्मकः । इति द्यारखः ॥ भविजवुदको छी ॥ ভৰতি ত্রি। বথা। তদৰবে শুদ্ধ-মতিঃ প্রসূতঃ শুদ্ধমিশ্বরঃ। দি-नीश हेि द्रारक्त हैनः कीत-निशाविव ॥ इंडि तट्यो > मर्गः॥ खब्यां अ की या अवाक्षनविद्या বঃ। বথা। পাকপাত্তে যুক্ত দদ্য। ত্তৈল বা ভদভাবতঃ। তত্ৰ হিন্দু र्तिपाक जर्कत्वलम्बद्धाः॥ ছাগাদে রশ্বিরহিত মাণ্সণ তৎ **थ**७थिछ । (भोज निर्गानिष्ठः जिन् मृत्ज ज्डब्ह्र्यक्रिनः॥ निक्रयोगाः जनः मञ्चा नवन्य **१८५७ ७: । मिट्स क्**लन मः शिषा विमवातः शिवक्रिश् ॥ खवानि विजवात्रमा नागवली मलानि हि। उजुलाम्ह लवकानि শরিচানি সমাসতঃ ।। অনেন বিধিনা সিদ্ধা শুদ্ধমাণস মিতি স্ত । শুজ্মাত্সত পরত ব্যাত वनाः क्राक वृञ्गः ॥ जिलाय

শমন শেষ্ঠ দীপন ধাতুবৰ্জ-ন ৷ ইতি ভাবপ্ৰকাশঃ ৷৷

শব্দ বিলিক। জ্রী গুড় চী। ইতি
শব্দ চক্রিকা। গবিত্রলতা চন।
শুদ্ধান্তঃ পুণ অন্তঃপুরণ। নৃপস্যাসর্বগোচরকক্ষান্তরণ। ইত্যমরমেদিন্যো। রাজ্যোধিৎ।
ইত্যজ্যঃ। অশোচান্তঃ। ইতি
ধরণিঃ।

শুক্দান্তপালকঃ পু॰ অন্তঃপুররক্ষকঃ। তৎপর্যায়ঃ। গৃহদৌবারিকঃ ২ কক্ষারক্ষকঃ ৩
রাত্রিহিওকঃ ৪। ইতি শন্দমালা।। তস্য লক্ষণ যথা।
বৃদ্ধঃ সলোদাতঃ সূক্তঃ পিতৃ
পৈতামহঃ শুচিঃ। রাজ্ঞা মন্তঃপুরাধ্যকো বিনীতশ্চ তথেমাতে।। ইতি মাৎস্যে ১৮৯
অধ্যায়ঃ॥

শুক্ষান্তা স্ত্রী রাজ্ঞী। যথা। শু-ক্ষান্তশ্চ বিশুক্ষান্তে শুক্ষান্তা রাজযোষিতঃ। ইতি ধরণিঃ।।

শুক্ষাপত্নতিঃ স্ত্রী অলকারবিশে-বঃ। যথা। শুক্ষাপত্নতি রন্যস্যা-রোপার্থো ধর্মনিত্রবঃ। নাষণ শুখাংশুঃ কিং তর্হি ব্যোমগঙ্গা-সরোক্রহং॥ ইতি চন্দ্রাকোকঃ॥ श्विः जी पूर्गा यथा। यदान-চিন্তনাদাপি শোধ্যতে স হি পাতকাৎ। তেন শুদ্ধিः স্মা-थााठा (मदी क्रज्ञात) श्रिका ॥ इंडि प्रवीপुत्रात्व प्रवीनिकः काशायः ८० ॥ योर्जना । देखि क्रिवाश्वः ॥ देविषिककर्त्वार्श्य थ-याज्यक मःकातवित्मसः। सथा। শুদ্ধাশুদ্ধোঃ সংস্কার ৰূপত্তে-न এकপूरूयरेगाकरमाञ्यक्षि ৰ্ঘটতে। অশুদ্ধে ভাবৰগছে শুদ্ধে স্তদভাবৰপত্বে নৈতৎ বিরোধাৎ। অতএব শৃधैः। **ততঃ आह्न मण्डली जू नर्यादन**-कामत्म जथा। कर्जु छा बकानि-की एकि तएकः भून दाव गः॥ व्यक्ति ठर्थाशाली। कथ म-एको आक् कालारगोठमाथि-कातिविटमयनबामञ जार कर्जू ন্তাৎকালিকীতি। প্রান্ধবিধা-নাক্ষেপাত্তস্মাত্র নিষ্ঠা শুক্ষিঃ ক-बाতে। স পুন রশুদ্ধ এব কর্মা-ম্বর এব। ইতি আদ্ধবিবেকঃ। এবং শুদ্ধে ভাবৰূপত্বে অশ্যে-**চ**मा जनजावक्र भट्य विद्राक्षः । তথাত্বে অশৌচ শঙ্করোপি ন স্যাৎ। একস্মিন্ শুদ্ধাভাবৰপ-

অশেচে সত্যপরস্য ভদ্রপস্য **छमानी** छ**९ शूक्र**यीय **छिक्ति न**श প্রতিষোগ্যস্তরাভাবাদন্ৎপত্তেঃ । তস্মাৎ শুদ্ধাশুদ্ধা। ভাবনগ-ছ। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব।। 🛊 ॥ অথ।-लोहिस्काः। अयव्किमनात्नीः চ মুর্জুঞ্জেতেন শুদ্ধাতি। অথ-চেৎ পঞ্মীণ রাত্রি মতীত্য পর-তো ভবেৎ ॥ व्यव्किमनात्नी-চ॰ তদ। পূৰ্বেণ শুদ্ধাতি। অববৃ-क्षियबुद्ध । मिथि कननारगोठा-পেক্ষা স্বপুত্ৰ জননাশৌচ্যা সপিগুমরণাশোচাপেক্ষ্যা শিতৃ মাতৃ ভর্ত্ মরণাশৌচস্য। 🗰। জা-তে পুত্রে পিতৃঃ স্নান॰ সচেলম্ব বি-ধীযতে। মাতা শুদ্ধোদ্দশাহেন শ্বানাজু স্পর্শন পিতৃঃ॥ শুদ্ধে ৎ স্পর্শমাত্রে উত্তরবাক্যে তথা দ-र्भनाथ। । जननारगी मरश जू बमानवः जननः मा। जमा পূৰ্বাশৌচ ব্যগগমে শুদ্ধিঃ ব্লাত্রি-लार्य पिनष्रस्यन প্रভাতে पिन-ब्राट्य बर्जाटमी ह मर्ट्या खार्थिन-त्रत्वात्र विकि ॥ 🗱 ॥ यमा यमा তু বৰ্ণস্য বৃদ্ধৎ স্যাৎ পশ্চিম ছ-হঃ। স তত্ৰ বস্ত্ৰশুদ্ধিক গৃহশুদ্ধি করোত্যপি।। সমাপ্য দশম॰ পি-

ত বৰাশান্ত নুদাৰত ব্যাহাৰ 🎚 হি ততো গৰা প্ৰেতশূৰে চৰা-ननी ॥ अज्ञान। गाविकानांक ভাজ্বা স্বান করোভাগি। শ্বশ্র লোম নখানাক বত্তাজ্য তজ্জ-হাত্যপি।। গৌর সর্বপ কছেন ভিলতৈলেন সংযুতঃ। শিরুমা-ৰু ততঃ ক্লম্বা তোবেনাচন্য বা-भुकः ॥ वारमा मूगः नवः खब् মত্রণ শুদ্ধ মেব চ। গৃহীত্বা গাণ সুবর্ণফ মঙ্গলানি শুভানি চ।। স্ফু। সংকীৰ্তবিদ্বা তু পশ্চাৎ শুদো ভবেষরঃ। গৃহশুদ্ধিঃ প্রা-ক্তন পাকভাও পরিত্যাগ উপ-লেপাদিন।। ভ্যাজ্য ভ্যাগাই।।। অবাহঃসু নিবৃত্তেষু সুমাতাঃ ক্ল-তনদলাঃ। আশ্বসাদিপ্রসূচ্যেত বান্ধান্ ৰন্তিবাচা চ ॥ अ। अ-बात्नीहमा बर्धा जू मीर्थात्नीह॰ खरानामि । नजू शूर्वन खिन्नः ना। यकालित्व एकाि ॥ সমান লঘু চাশৌচ পুৰেবৈণব বিশুগাতি। যদি স্যাৎ সূতকে मूछि मृ जितक ह मृष्ठि खर्दार ॥ म्पारविषय अदबक्षि त्रशःमास षिद्राज्ञ । মর্বোৎপত্তি যো-গে তু নরবাচ্ছ জি রিষ্যতে ॥ 👁 ॥

अर्वाक् बग्नागण जीवाः वरि महाद शर्जन मुदः। छमा बाम-नरेंग जाना भिवरेनः अकि तिया-তে ॥ गर्जक्ाा यथामान म-हित्र ज्ञात बारः। त्राज्या जु চতুরাত্রণ বৈশ্যে গঞ্চাহ মেব চ।। অকাহেৰ তু শুদ্ৰস্য শুদ্ধি রেবা প্রকীর্তিহা। রাত্রিভি মাসভু-नगां गर्जनात्व विश्वकाणि ॥ রজস্যুপরতে সাধী মানেন ত্রী त्रकवना । एका छर्द् म पूर्श-द्भि ज्ञाना देव गरेशबरयाः ॥ देव-त कर्या । रेशत्वा ह शक्र राष्ट्रि खकाि । का मखा नाती थिजू র্গেছে সুষতে দ্বিতে ২থ বা।। य गरमोहः हरत् नगाक् शृथक्-श्रीन बाविश्वा। जदस्यार्ग (खु-কেন শুদ্ধোজু জনক ফ্রিভিঃ।। य देखः त्रशामनः अर्याः व नगना-भीनि टेवर है। याक्षरमा वा शरता বাপি স দশাহেন শুদ্ধাতি।। খ্ৰী-ণা মসস্ভানাৰ ত্ৰাহাৎ ভাগ্য-खि वाश्ववाः। यत्थारक्टनेव क-রেন শুদ্ধান্তি হি সনাভয়ঃ।। 🗱।। ষণ্যাসাভ্যন্তরে শূদ্রে মৃতে বালে बार्॰ विषूर । जनकीटक विवर्ष दि मृत्व धाकाबू भण्डिः ॥

खुडर्मनादर हु गक्कि। महा धर विश्वविद्याना-बारणोठ रेनव मूडक ॥ नृशं मक उठ्डाना मछिक रेनिकी खूँछा । निवृत्व ठूडकानाड बिन्नाकाक-कि तियार । शा मनारहन मिन-

ন্ত ভগান্তি প্ৰেত্ত সূ রাত্তেণ নঙ্গল্যাপ্ত সাম্বা ভাৰত ছি গোত্রজাঃ ॥ শুরু ছিপ্রো দশা-হেন দাদশাহেন ভূমিপঃ। বৈ-শ্যঃ পঞ্দশাহেন শূজো বাদেন শুদ্ধাতি।। দশ্যে ংহনি শুদ্ধস্য कार्वा॰ म॰ न्यानं त॰ तूरेयः। बादम-देनव विश्वकिः मा। मृज्दक गृज-কেপি বা ।াঃ। সংস্থিতে পক্ষিণীণ রাত্রিণ দৌহিত্রে ভগিনীসূতে। সং-স্কৃতে তু ত্রিরাত্রণ স্যাদিতি ধর্মে। ব্যবস্থিতঃ।। পিত্রো রুপর্যে স্ত্রীণা মূঢানান্ত কথা ভবেৎ। ত্রিরাত্তে-रैंग्व खिक्कः गामिजाश जगवान् **शिवः ॥ 🕸 ॥ यमा एकाकनकाटम** जू वाखि जिंदि विकः। जूरमो निःकिशा जल्यामः साम्। टेंहर वि-ভদ্যতি।। 🛊 ॥ চিকিৎসকো যৎ ঙ্গৰুতে তদন্যেন ন শক্যতে। জ শ্বাৎ চিকিৎসকস্পর্শে শুদ্ধো ত বতি নিতাঁশং।। 🐞।। গর্ভিণী সূ-

'तुक्रवेदा

यमा खना जमादान कात्रदर्भ क्रियट मना १८०॥ थ्येडीज्र्ड

।নুগক্তি

মতঃ ৷ সাদ্বা সচেল ল্যুক্টাপ্লিণ क्ष थाना विस्कारि ॥ अका-राष्ट्र काखित्व अकि देवत्या 'ठ माशार्म जू। मूर्फ मिनवरं প্ৰোক্ত প্ৰাণাযানশত পুনঃ।। 🐞 । न दि न्यू की वि नदबर नावा বিপ্ৰো বিশুদ্ধাতি। আচমৈয়ব তু নিঃম্বেহণ গা মালভ্যার্ক মীক্ষ্য বা ।। 🟶 ।। অসপিও॰ বিজ প্রতে বি-প্রো নিষ্ঠা বন্ধুবং। বিশুদ্ধাতি बिद्राद्वि गाजू त्राञ्चाः का वाकाः वान्।। यमान्न मिं उपाद्ध म मगार्श्न अकाि । अनम्बस भ-देइव न फिल्बिन् शृद्ध चरम् ॥ 🟶 ॥ अञ्ज्ञिक्यनाम्बाक् यमि বিপ্রো হঞ্জাতবেৎ। মৃতে সূত্রে গৃহ• গদা ত্রিরাজেণ বিভগতি ॥ অञ्चिमक्यनामूर्क्वः यावधाराः षिजाण्यः । मिवरमदैनव एकिः माबाममा कालरनन ह ॥ का স্বজাতে দিবদেনৈৰ ত্ৰ্যহাৎ ক্ষ-खिय देवेणार्याः । न्यानं विनान्-গ্ৰামনে শুজো নক্তেন শুদ্ধান্তি

११ कि ११ खड़ा शादा महिराक ॥
वाक्ष्मी ह श्रम् जिका १ मणतात्व ॥
खका छ ज्यिक भ नतामक ११
कि ११ जिमका मृजिका नाशि खछाङ् मण्मणमामि १ विद्यात्व ॥

বৈব শুদ্ধিঃ স্যাদিতি শাতাতপো रविषे ॥ 🟶 ॥ नवंशाञ्क्रनः गादा यश्या कागत्यानयः। শুধান্তি দিবলৈ রেব দশভি নাত্র म॰ भवः ॥ कात्न नत्वानकः श्वकः न পাতব্যন্ত তন্ত্ৰাহ্ । 🛊 । 🛊 ॥ व्यथ जवाश्विकः। बात्क। मृवर्ग ৰূপ্য শুখাশা শুক্তি রত্নমযানি চ । का॰गाय छामु देवजानि बश् भीमयशानि ह ॥ निर्त्वभानि वि-শুদ্ধান্তি কেবলেন জলেন তু। শুজোচ্ছিফানি শুখান্তি ত্রিধা-ক্ষারাম বারিভিঃ।। সৃতিকা শব বিশ্বৃত্ত রজন্বলা হতানি চ। প্র-क्खिवानि जनको यक याव गर्मि ।। देवजाः शिखनः। जभू রঙ্গ। যৎপাত্রণ যাবৎকাল মগ্নিণ সহেত তৎপাত্ত প্ৰকালনান্ত্ত-র॰ তাবভাগনীয় মিত্যর্থ:।। 🛊 ।। বৃহস্পতিঃ। স্বস্তুসা হেম রত্নায়ঃ কা॰সা॰ শুদ্ধোত ভঙ্গনা। অগ্নৈ ন্তামুঞ্চ রৈত্যঞ্চ পুনঃপাকেন মৃ-

मायः ॥ त्राजधर्म । शब्दलाहिः के काः माः यद ग्रवाद्यां मधानि वा । गध्रवाहिक मिन ह विश्व-रकाषमञ्ज छ छ ॥ प्रमञ्जि र्वि-देन तिर्विष्णयः। छश् ह। काः मा

न शांदरयं शांको यव माामि ভোজন মিতি। যত্র পাত্রান্তরে ভোজন তত্ত্ব শ্রুতস্যৈব তস্য मार्ह्या का मावक् किः ॥ বৌধাৰনঃ। ভিন্নকাণ্সৈয় তু বো শ্রীষাৎ নদ্যা॰ স্নাত্ব। জপেদ্ধি-জঃ। গাযত্র্যক্ষসহসূত্র একভ-ক্তঃ শুচিঃ।। দেবলঃ। তামু রজত সুবর্ণাশা স্ফটিকানাণ ভিন্ন মভিন্ন । ইতি ভিন্নত্বেপি ন দোষ इंडार्थः ॥ 🖝 ॥ विकृः । भातीदेत र्य टेलः जुत्रां ि र्य टेमा दी यमूश-হত তদভাস্তোপহত সৰ্ব লৌ-रजाय गरभी প্রতপ্ত एकाज। মণিমৰ মশামৰ মজমৰঞ্চ সপ্ত-व्राबः मरीथनत्नन गृत्रमञ्जान्दि-मयक जकरान माक्रमय मृत्रायः क्शामिछि। लोश्यमः मूर्वा-मार्फेक शद्रः ॥ 🛊 ॥ यनूः। जीनि দেবাঃ পবিত্রাণি ব্রাহ্মণানা মক-ब्रयन्। अपृष्ठे यक्ति निर्विकः यक বাচা প্রশস্যতে।। অদৃষ্ট মুপ-

যাত শকাদিভি রক্তাত ৷ অজ্ঞা-তঞ্চ সদা শুচি ইভি যাজ্ঞবক্ত্যৈক-বাক্যদাৎ । ৰাচেতি উপযাত শক্ষাযাণ পবিত্ৰণ ভবদ্বিতি ব্ৰাদ্ধ ণৈ ৰ্যনাচা প্ৰশ্যতে ইতি শুল-পাণি মহামহোপাখ্যায় জলুক-ভটৌ ৷৷ ঞ্চ ৷৷ শাতাতপঃ ৷ গোঙ্গ-ल कन्नू गालाया॰ टेजनयखन्य-खरगाः। अभीभा भागि लोगनि खीयू वालाजूद्रयू हा। ।। यन्ः। মক্ষিকা বিপু ষশ্ছাষা গৌ রশ্বঃ সূ-ৰ্য্যরশাষঃ। রজো ভূ ৰাযু র্যাশিচ ज्लात्मं (यशानि निर्मित्मः ॥॥॥ বৌধাষনঃ। অদুক্তাঃ সম্ভতা ধা-রা বাতোদ্ধৃতাশ্চ রেণবং। আক-রাঃ শুচয়ঃ সর্বে বৰ্জমিয়া সুরাক-র ।। শুখলিখিতৌ। আকর জ ব্যাণি প্রোক্তিতানি শুচীনি ॥ গো यमः। जाममा॰मः मृष्ठः क्लोखः সেহান্চ ফলসম্ভবাঃ। ফ্লেচ্ছভাও-স্থিতা দুফা নিকান্তাঃ শুচ্যঃ স্মৃ-তाः।। 🗱।। विक्षर्याख्ता । मूथव-ৰ্জ্জঞ্গগৌঃ শুদ্ধা মাৰ্ক্জার শচ জনে শুচিঃ। পুষ্পাণাঞ্চ ফলানাঞ্চ প্রো-কণাৎশুদ্ধি রিষাতে॥ 🛊॥ অত্তিঃ । মক্ষিকাঃ সম্ভত্রধারা ভূমি স্তো-য॰ হুতাশনঃ। মার্জার শ্চাপি দ-

बी ह माक्रजन्ह मना चहिः॥ ।। विधायनः। व्यत्नदकाबादक नाइन **मिला ज्यिमत्य इकिकाम्ह मन्की**-ণীভূতা ইতি। সংকীণীভূতাঃ পর-न्भत्रमस्काः ॥॥ विकृः। < বেন পুত্তক ইতি। জা শাতাতগঃ ৷ তাপন ঘৃত তৈলানা প্লাবন গোরসস্য চ। তন্মাত্র মুদ্ধৃত শু-জ্যেৎ কঠিনস্ত পযো দধি।। অবি-লীন্ত তথা সর্গি বিলীন শ্রপণে ন ভূম অবিলীন কঠিন ম 🛊 🕸 यनुः। जवगानाटेक्व मर्दिया शिक क्र श्वरन ग्रुख। (श्रीकन मण्ड्-তানাঞ্চ দারবাণাঞ্চ তক্ষণণা ইদ-खुष्टिकोमान्नरमारव । উৎक्षवन॰ <u>रजाखत निर्वाशरान की गिमाश-</u> ন্যনং ॥ ৠ ৷৷ শাতাতপঃ। ভিশস্ত পতিতৈঃ সূতিকোদক্য नाखिदेकः। मृष्ठे॰ वा म्या यमस्य তস্য নিষ্কৃতি রুচ্যতে ॥ অভ্যুক্ষ্য কিঞ্চিদুজ্তা ভুঞ্চীতাপ্যবিশক্ষি-**७: ।। 🛊 ।। (ह्नवनः । চাঙালেন** खमा वाशि मृष्ठे॰ इवि त्रविख्वयः। বিডালাদিভি ৰুচ্ছিষ্ট দৃষ্ট মন্ন विवर्जयमनाज हिन्नरगामक न्य

र्भाषिषि ॥ शास्त्रभा विख्य (था-

ক্ষণ শৌচ বহুনা ধান্য বাসসা

१ अकालत्वन प्रमाना मिक्डः (मी-চ॰ বিধীয়তে।। 🖷 ।। শুদ্ধি রিভ্য-न्वृत्लो विकृः। खडाना विकृ वि কারাণা প্রভূতানা বাবুগিদা-নেন সর্ব লবণানাক্ষেতি।। 🛊 ।। অঙ্গিরাঃ। যথা যত স্ততো হ্যাপঃ শুদ্ধি যান্তি নদীণ গতাঃ। শূদ্রা षिপ্রগৃহেশ্বরণ প্রবিষ্টম্ব সদা খ চি ॥ প্ৰবিষ্ট॰ স্বত্বাপাদক প্ৰতি-আহাদিনেতি শেষঃ ৷৷ঞা৷ স্বঙ্গণ-প॰ সকৰ্দম॰ তেভ্য স্তোষ মপাস্য তৎ। প্রক্রিপেৎ পঞ্চগব্যঞ্চ সম-ন্ত্ৰ॰ সৰ্বশুদ্ধিরুৎ।। অপাস্য স্বণ-প• তেভ্যো বহুতোবৈত্ত্য এব বা । শত যক্ষ্যথ বা ত্রিংশৎ তোষঙ্গ-खान् ममूक्तद्र ॥ भक्षभवाः ७७ স্তেষ্ প্ৰক্ষিপেন্মত্ৰপূৰ্বকণ। শতাদি অল্পদালেশক্ষা অত্যল্পস্য সৰ্বো-कात्रगां छिथाना थ।।।। तृश्यन्ः। শ্ব শৃদ্ৰ পতিতা শ্চান্ত্যা মৃতা শ্চে-দ্দিজমন্দিরে। শৌচণ তত্ত্র প্রব-ব্যামি মনুনা ভাষিত বথা। দ-শরাত্তাচ্ছনি প্রেতে মাসাৎ শৃতে ভবেচ্ছচিঃ। দ্বাভ্যান্ত পতিতে গেহে चर्डा भामठजूकेमा ॥ অত্যন্ত্যে বর্জযেক্ষোহ মিভ্যেব॰ यन् त्रवरी ।। ययः। विक्रमा यत्र-

ণে বেশ্ব বিশুদ্ধাতি দিনত্তবাৎ। দিনৈকেন বহিভূমি ব্লগ্নি ক্ষেপৰ লেপনৈঃ।।।।।। যথোক্ত কালান-ম্বরু কর্ত্তব্য মাহ সমর্ত্তঃ। গৃহশু-ক্ষিণ্প্ৰবন্ধ্যামি অন্তঃস্থ শবদূষিতে । প্রোৎস্ক্রা মৃন্মক পাত্রণ সি-क्रमण छटेषर ह ॥ भृशामशामा **७९ नर्बः भागरयनान् त्वशरय ।** গোৰবেনানুলিশ্যাথ ছাগেনাখা-शरयषूषः ॥ बाकरिव र्यञ्जशृरेजन्त হিরণ্য সশ বারিভিঃ। সর্বমভ্যু-ক্ৰেছেশ্ম ততঃ শুধ্যত্যসংশ্যঃ ।। यञ्जानात्मरण भावनी ॥ 🟶 ॥ मित्वतः। शक्षा वा ठजूर्वा वा जृ त्रत्यशा विख्याछि। मुक्ती विश ত্রিধা বাপি ভখ্যতে মলিনৈক্ধা ৷৷ দহন খনৰ ভূমে রুপলেপন वाशत्न । शर्कनावर्षभ्याशि त्नी-চ পঞ্বিশ স্ত ।। প্রসূতে গ-र्ভिगी यदा शियुष्ठ यदा यानूयः। চাণ্ডালৈ ৰুষিত যত্ৰ যত্ৰ বিন্য-স্যতে শবঃ।। বিশ্বুত্তোপছত যচ্চ ঙ্গণণো যত্ত দৃশ্যতে। এব॰ কশ্মল-ভূষিষ্ঠা ভূ রমেধ্যাতিকথ্যতে ॥ क्रिय की है अमरक्रिश मू विञा ख्व त्यिमिनी । खक्क्यां कर्य देशः कि-প্তা বাজৈ ৰা দুফতা॰ ব্ৰজেৎ ॥

নথ দম্ভ তনুজ ছক্ তুৰ পাণ্ড त्राका यरेनः। जन्म शक वृरेष वी-**शि अक्षा मिना जत्र ॥ ता-**পন মৃদন্তরেণ পুরণ ৷ জন্সা ব-नीज्ञतभाषि। देवि एकिन्द ॥॥। जिन ह। बाङ्बका छेवाह। দ্ৰব্যশুদ্ধি প্ৰবন্দ্যামি তানিবোধ-তসত্তমাঃ৷সৌবৰ্ণ রাজতাজানা শাক বজুদি চৰ্মণা ।৷ পাত্ৰাণা চমসানাঞ্চ বারিণা শুদ্ধি রিষ্যতে ৷ উক্ষবার্ভিঃ শ্রুক্ শ্রুবয়ে ধান্যা-দেঃ প্রোক্ষণেন চাা ভক্ষণাৎ দারু मृत्राप र्यख्यावमा मार्जना । मारिक क्रमक भागूरिकः श्वका-ত্যাবিক কৈশিক ।। তৈক বো-ষিমুখ পুণা পুনঃ পাকামহীম-য ।। গোমাতে চ তথা কেশ य-ক্ষিকা কীট দূষিতে। ভশ্মকেপা-विश्विकः गाविश्विक योष्क्रना-मिना ॥ जुश्र नीमक जामाना॰ কারামোদক বারিভিঃ। ভস্মা-छि र्लार का॰माना मखाछक मना ७ हि ॥ व्यवसाकमा मृ-ত্তোধৈ পদ্ধলেপাপকৰ্ষণাৎ শুচি গো তৃপ্তিদ তোষ প্রকৃতি-इ॰ महीगछ॰ ॥ छथा मा॰म॰ स **ठाखान क्यामामि निशां छिड**ा

রন্দি রমী রজ শ্চাষা গৌ রশ্বো वमूबानिनः ॥ जन्नाक विभुत्वा ষেধ্যা স্তথা চামলবিন্দবঃ। স্বাদ্বা পীদা কুভে সুপ্তে ভুক্তা রখ্যোপ-मर्भर्थ।। ज्याहासः भून द्वाहात्य বাসো ব্যুৎপরিধাষ চ। ক্ষুতে নি-ষ্ঠীবিতে স্বাপে পরিধানে ২ঞ-পাতনে।। পঞ্চস্বেতেষু নাচামেৎ দক্ষিণ শ্ৰবণ স্পূদেশ । তিন্ঠস্ত্য-भगमत्या (मवा विश्वकर्ण जू म-ক্লিণে।। ইতি গাৰুডে ৯৭ অধ্যা-यः ॥ 🛊 ॥ व्यनाकः। मनि वञ्ज প্ৰবালানা তদ্মুক্তাফলস্য চ ৷ टेनल मारूगसानाक ज्व खटचा-ষধস্য চ।।'শাক ধান্যাজিনানা-ঞ্ সংহতানাঞ্চ বাসসাং। বন্ধ-লানা মশেষাণা মমুনা শুদ্ধি রি-ব্যতে ৷৷ সঙ্গেহানা মথোক্ডেন ভিলকদ্ধেন শোধন । কার্পাদি-কানা বস্তাণা শুদ্ধিঃ স্যাৎ সহ ভন্মনা ৷৷ নাগদন্তাহি শৃঙ্গাণাণ তক্ষণাচ্ছ জি রিষ্যতে। পুনঃপা-কেন ভাঙানা যুম্বানাঞ্ ও ক্তা ।। এক তক্ষ কার্করঞ্জঃ পণ্য॰ ষোষিমুখ তথা। রখ্যাগ-ত মবিজ্ঞাত দাসবৰ্গেণ ৰৎফ্ৰত ।। বাক্যশন্ত॰ চিক্লানীত মনেকা-

खतिष्ठ मध् । किछिष्ठ वाम वृ-कानाः वानमा जू मूबः छहि।। নেজ্বানা মপি গোশালা স্তনস্বয সূতাঃ জ্রিকঃ। বাখিপুবো বিজে-व्यानाः भार्छ वागम् विन्नवः ॥ खूमि विश्वकारक बीठ मार शा क्य रमहरमः। रलगान् रत्यनार সেকাৎ বেশ্ব সন্মার্ক্তনাজ্জ नार ॥ दिन की हो दशदाद रो।-ষাতে মকিকাৰিতে। স্থারি ভন্ম कान्नानि थरकश्वनानि अक्रूटन ।। উডুররাণাঞ্চামেন কারেণ ত্রপু সীসবোঃ। কা॰স্যানা॰ ভশ্মনা अकि रखायाक्ष्मि र्जवमा ह ॥ व्यत्यशाक्तमा मृत्वात्य गन्नानश्-ব্লেন্ড। অন্যেষা মপি তদ্দুব্যৈঃ श्रीक र्गकावशातजः ॥ माजुः अ-সবনে বৎসঃ শঙ্গনিঃ ফলপাত-त्न । गर्म्तर्छ। छात्रशत्रिष्य स्रो म्गजहरन खिंहिः ॥ तथा कर्मम ভোষানি নাবঃ পথি তৃণানি চ।। যাক্সতেনৈব শুদ্ধান্তি পকেটর-চিভামি छ। শৃত জোণা চকস্যাস্ত यत्यशाखिश्रुं ज्या व्या মুক্তা সন্ত্যাজ্য শেষস্য প্রোক্ষ-ণ স্তুত। উপবাস ত্রিরাত্ত বা দূষিতানস্য ভোজনে।। অজ্ঞাতে

জ্ঞাতপূৰ্বে চ নৈব শুদ্ধি বিধীৰ-তে। উদক্যা খান নগা স্তি-काञ्चावनाविमः॥ न्यृको न्नावीज শৌচার্থণ তথেব মৃতভারিণঃ। স-त्वर मिर मः न्यूषा मतामाः साम गारदा । जारियां जू निःरत्रश् भा मामजा है मौक ह।। ইতি वा-मनभूबार्व ३८ जशायः ॥ जनाद यार्क्ट अयुतादन महाठाताशादय जरुवाः॥ ।। जनश्कि र्यथा। भटन ह समूर्य टेह्व शामाविति সরস্বতি। নর্মাদে সিন্ধু কাবেরি জলেশ্মিন্ সন্নিধি॰ জরু ।। ভূত-खिन्छ उद्ध्य प्रकेरा।। 🕸 ।। আসন শুদ্ধি বঁথা। এতে গন্ধপু-পে আৰার শক্তি কমলাসনায নমঃ। আসন মন্ত্রস্য মেরুপৃষ্ঠ श्विः मुखन इनः कृत्या (प्रवं वालन शक्ति अटह विनित्या गः। পৃথি ৰয়া ধৃতা লোকা দেবি ত্ব विकृता शृष्ठा। इक शात्रय गा॰ नि-ত্য॰ পবিত্র॰ স্বরু চাসন॰।। 🟶 ॥ यखनछिक र्यथा । शक्तरतान मूरमन मख्नः भन्नित्नाधरय । भिजनीत्य। अक्शत्वा न जल्ला-इ॰ मखनक वित्नाधरय । शक-গ্ৰা প্ৰমাণন্ত তত্ত্বৈৰ ৷ পলমাত্ৰণ

দুগ্ধভাগংগোসূত্র তাবদিষ্যতে।

যৃত্ত্ব পলমাত্র স্যাৎ গোম্য
তোলকদ্ব । দিবি প্রসৃতিমাত্র
স্যাৎ পঞ্চগব্য মিদ স্মৃত । স্থাধ্য বা পঞ্চগব্যানা সমানো ভাগইষ্যতে । মূলমত্রের সংমন্ত্রা তিনের পরিশোধ্যে । তেন সর্ববিশুদ্ধিঃ স্যাৎ সর্বপাপ নিক্তিন । ইতি তন্ত্রসারঃ ।। ।। এইশুদ্ধির্গোচরশব্দে জফব্যা ।। শুলাদনসূতঃ পুণ বুদ্ধভেদঃ ।
ইতি হেম্চক্রঃ ।।

শুধ ১ য ঔ শোচে। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ।। ৯ অশুধ্র। য শুধ্যতি লোকঃ স্নানাৎ। ঔ শোদ্ধা
। রজসা শুধ্যতে নারীত্যত্ত্ব শুধ্যতীতি কিপি শুধ্ করোতীতি
ত্রেণ কর্মনি যকি কপে । ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

শুন শ গত্যা । ইতি কবিকন্ধ দেশঃ ॥ শ শুনতি শোনিতা। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥

শুনঃ পু॰ জব্ধুরঃ। যথা। জব্ধুর-স্ত শুনিঃ শানঃ কপিলো মণ্ড-লঃ শুনঃ। ইত্যমরটীকাষাণ ভরতগৃত বাচস্পতিঃ।। শুনংশেফঃ পু॰ মুনিবিশেষঃ। স তু ঋচীক মুনিপুলঃ। অম্বরী-বেণ যজ্ঞার্থণ ক্রীক্তঃ বিশামিকে-ণ রক্ষিত্রশ্চ। ইতি রামায়ণে বা-ন্মীকীষে বালকাতে ৬১ সর্গঃ।। সক্রশিশ্নে ক্লী।। নকঃ পুণ সক্ষরঃ। ইতি রাজ-

শুনকঃ পু॰ সকুরঃ। ইতি রাজ-নির্যকঃ।।

শুনকচঞ্চুকা স্ত্রী ক্ষুদ্রচঞ্জুপঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শুনকচিলী স্ত্রী শাকবিশেষঃ । তৎপর্য্যায়ঃ। শ্বচিলী ২ শ্বান-চিল্লিকা ৩। অস্যা গুণাঃ। ক-টুত্বং। তীক্ষত্বং। কণ্ডু ত্রণনাশিত্ব-ক্ষাইতি ক্লেজনির্যন্টঃ।।

শুনাশীরঃ পু॰ ইন্দ্রঃ। ইতি ছে-রতদ্বিকাপকোষঃ।।

শুনাসীরঃ পু॰ ইন্দ্র:। যথা। শু-নাশীরো দিতালব্যঃ সুনাসী-রো দিদস্ত্যকঃ। তালব্যাদি র্দ-স্ত্যমধ্যঃ শুনাসীরশ্চ দৃশ্যতে।। ইত্যমরটীকাষাণ ভরতঃ।।

শুনিঃ পু॰ সন্ধুরঃ। ইতি হেম-চন্দ্রঃ॥

শুনী স্ত্রী। ইত্যমরঃ ।।

স্থাপী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।।

শুনীরঃ পু॰ স্ক্রীসমূহঃ। ইতি

ত্রিকাপ্তশেষঃ ।।

শুদ্ধ ক শুদ্ধো। ইতি কৰিকল্প-দ্রুমঃ । ক শুদ্ধয়তি। অযু মা-দ্বানপদীত্যেকে । ইতি দুর্গা-দাসঃ ।।

শুদ্ধ এ শুদ্ধো। ইতি কবিকল্পদ্রুমনঃ ।। শুদ্ধি রিহ শুদ্ধীভাবঃ
শুদ্ধীকরণঞ্চ। এ শুদ্ধতি শুদ্বুতে জলেন লোকঃ। যো গাণ
শুদ্ধতি সত্যেনেতি ছলামুধঃ।
গাণবাচণ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শুদ্ধাঃ পু অগ্নিঃ। ইত্যুণাদি-কোষঃ।।

শুর শ দীপ্তি হিণ্সনযোঃ। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ ।। শ শুভতি শুগুড়তি শুশোভ শুশুন্ত। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

শুন্য ক্রী শুনীসমূহঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। রিক্রে ত্রি ইতি জটাধরঃ।।

শুভ প শ দীপ্তি হিণ্সনযে । ইতি কবিকল্পদ্রনা । প শ শুন্ত-তি শুলোভ। প্রাঞ্চন্ত হ্বাদে । চ শুভ শুন্ত ভাসন হিণ্সনযো রি-তি পঠন্তি। ইতি দুর্গাদাসঃ । । শুভ ৯ ও দীপ্তো। ইতি কবি-কল্পদ্রমঃ ।। ৯ অশুভৎ। ও শোভতে । ন শোভতি সভা- নথ্যে ইতি গণক্তানিতাত্বাদিতি রমানাথঃ। বস্তুতস্ত শোভতে শোভঃ পচাদিত্বাদন্। ততঃ
শোভ ইবাচরতীতি কৌ সাধ্যণ
। ইতি দর্গাদাসঃ।।

শভত ক্লা মঙ্গলং। ইত্যমরং।।
পদ্মকান্ত । ইতি রাজনির্ঘন্তঃ।।
শভঃ পুং বিষ্ণভাদিসপ্তবিংশতি
যোগান্তর্গত ত্রযোবিংশযোগঃ।
তত্র জাভফলং। শুভপ্রসূতঃ শুভক্ষরানাং শুভোদযেকো বিদ্যাণ সমাজে। করোতি নিত্যং
শভকর্ম ধীমান্ শোভাধিকঃ
শোভন বেশধারী ।। ইতি
কোষ্ঠীপ্রদীপঃ।।

শুভঃ ত্রি ক্ষেমশালী।। খসঞ্চা-রিপুর । ইতি মেদিনী।। শুভ শুঃ ত্রি মঙ্গলান্বিতঃ। ইত্য-মরঃ।।

শুভগদ্ধক কী বোল । ইতি রাজনির্ঘন্ট ।। মঙ্গলগদ্ধযুক্তে ত্রি শুভগ্রহঃ পুং সৌম্যগ্রহঃ। সত্ শুরুঃ শুক্রঃ পাপাযুত্রধঃ অ-দ্বাধিকচন্দ্র । যথা । অর্দ্ধো-নেন্দুঃ সজো রাহুঃ শনি স্তৈ র্বৃত ইন্দুজঃ। রবিঃ পাপা ভবস্ত্যৈতে শুভা শ্চান্যে প্রকীর্ত্তিয়ঃ ।। ইভি সারসংগ্রহং ।। তদ্বারে শু-ভকর্ম করণ যথা । শুভগ্রহা-ক্বারে চ মৃদু ক্ষিপ্র ফ্রবেষু চ । শুভরাশি বিলয়ে চ শুভঃ শা-শুক পৌষ্টিকং ।। ইভি সং-স্থারতন্ত্বং ।।

শুভঙ্করঃ ত্রি মঙ্গলকারকঃ। যথা
। ক্ষেমকরঃ ক্ষেমকারো মজকর
শুভক্ষরো ইতি ভূরিপ্রযোগঃ॥
স্বনামখ্যাতাক্ষশাস্ত্রকারকে পুণ্
শুভক্ষরী স্ত্রী পার্বতী। ইতি শক্ষরত্নাবলী॥

শুভদঃ পু॰ অশ্বখনৃকঃ। ইতি রাজনির্ঘন্তঃ। শুভদাতরি ত্রি।। শুভদন্তী স্থানন্তেভবো-বিত্।। সুদতী। ইতি নৈদিনী ।। শুভপত্রিকা স্ত্রী শালপর্ণী। ইতি রাজনির্ঘন্তঃ।। মঙ্গলপত্রিকা চ শুভবাসনঃ পু॰ মুখবাসকরগন্ধঃ, । যথা। মুখবাসকরো গন্ধ আ-মোদী মুখবাসনঃ। সুখবাসন ইত্যেকে শুভবাসন ইত্যপি। ইতি শন্দরত্বাবলী।।

শুভঙ্গী থ্রী যজ্জুমিঃ। ইতি কেচিৎ।। মঙ্গলভূমিশ্চ।। শুভা স্ত্রী শোভা।। কান্তিঃ।। ইচ্ছা। ইতি মেদিনী।। বংশ- त्तां कता ।। त्यात्तां कता ।। यभी ।। श्रियकः ।। त्यं अपूर्वा । देखि । देखि । देखि ।। त्यं अपूर्वा । देखि ।। त्यं अप्यान ।। देखि ।। ज्यान थी वित्य- दः। देखि भक्त याना ।। यक्ष वक्ष- निका ह।।

শুভাঙ্গী স্ত্রী স্বেরপত্নী ।। কা-মদেবপত্নী । ইতি কেচিৎ ॥ মঙ্গলাব্যবযুক্তে ত্রি ॥

শুভাচার। স্ত্রী উমাসখী। ইতি শব্দমালা।।শোভনাচারবতী চ শুভাঞ্জনঃ পু॰ শোভাঞ্জনবৃক্ষঃ। ইতিশব্দরত্বাবলী।।

শুভাষিতঃ তি মঙ্গলযুক্তঃ। তৎ পর্য্যায়ঃ। শুভংযুঃ ২। ইত্য-মরঃ।।

শুভূ॰ ক্লী অভূক। ইতি মেদিনী ॥ গডলবণ ॥ ক্লোপ্য॰॥ কাদী-দ॰। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

শুভূঃ পু॰ শুক্লবর্ণঃ। ইত্যমরঃ॥ চন্দন॰। ইতি শব্দচন্দ্রিক।।। শুভূঃ ত্রি উদ্দীপ্তঃ।। শুক্লগুণ-

युक्तः। ইত্যমরः।।

শুভূদন্তী স্ত্রী শুভদন্তী। সাতৃ পুষ্পদন্তনামদিগ্নজকরিণী। ই-ত্যমরচীকা।৷

केष्ट्रा ३ वि यानियो ॥ यंभ- । अञ्जतियाः श्रु हत्यः । इंडि

কেচিৎ।। শেতকিরণক।। **७**जुान्छः पुर ठजः। इंडामतः॥ कर्ण तः । इंछि तालनिर्वकः ॥ ख्ञानुः भू बहिवकमः। इंडि ब्राक्षनिर्यकः ॥ स्थलानुक ॥ শুভূঃ পু বন্ধা। ইতি সিদ্ধান্ত-कोनूमा मूनामिवृद्धिः ॥ खंडः भू॰ मानविदानवः। म जू गत्वष्ठीभूखः अङ्गाम्तभोजः घ-श्विकवा इंजन्छ। यथा। विद्याह-नस्य थाङ्गाणिः शक्ष जमान्जाः ष्मृषाः। গবেष्ठी कामरनिमं জম্ভো বাস্কল এব চ ।। শম্ভুः শ্ৰেষ্ঠো ২নুজ স্তেযাণ পুত্ৰানে ৰা মতঃ শৃণু। শুন্ত শৈচব নিশু-खक विश्वक्रमत्ना यरहोक्रमः। গবেষ্টিনঃ সুতা হেতে জন্তুস্য সুত দুন্দুভিঃ।। ইত্যাদ্যে বহ্নিপু-व्राप्त क्नाभीय প্रकामगांशा-वः॥ अनाक। भूलखा छेवाह। क्नाभग नन् बांव जायाजीव विक्रमस्य। जगान्ह द्यो मूजा-वाञ्चा॰ मर्मुाकावनाथिको ।। জ্যেষ্ঠঃ শুক্ত ইতি খ্যাতো নিশু-স্ত শ্চাপরো ংসুরঃ। ইতি বাষন-**পুরাণে ৫২ অধ্যাयः ॥ অপরক**। খবি ৰুবাচ। নিশুক্ত নিহত। मृक्षे जा्जार था नमिक् । इ-नामान वन देश्व छड़ जुरका र जी कर ।। वना वर्ता भू एके मन्मा पूर्ण गर्व मायह । हे जा मि १ मिर्छा यत्र नी था था भू कि मृत्रामा दिशिक्ता नियदम्ब्या ।। छ मामाङ छट्छा प्रती मर्व मि-छा ज्ञान भू तम वक्ति ।। म ग्राजा हिंदा मू तम वक्ति ।। म ग्राजा क्षेत्र मु तम वक्ति ।। म ग्राजा क्षेत्र । हे जि मार्क रख्य-भूतार । हिंदी मार्का छा वशः भूतार । प्रती मार्का छा वशः भूतार । प्रती मार्का छा वशः

अखराजिनी स्त्री मूर्गा। रेजि नमत्रक्षाँवनी॥

७ अपूतः क्री ७ अटेम छामा भूती। ७ ९ भर्यायः। এक हज्जः २ इति गृरः ७। ইতি जूति श्रायाः॥ अधूना मंडन भूत ইতি था। छः॥ ७ अपूती जी छ अपूतः। ইতি जिका अटन्यः॥

खबर्षिनी जी पूर्गा। रेडि (रूप-इस्तः॥

শুক্ষ ক ভাবে॥ সর্জ্জনে॥ বর্জ্জ-নে। ইতি কবিকলক্রমঃ॥ ক শুক্ষয়তি।শুক্ষ লোক্সইভ্যেত্রয়ো

द्विावत्थे देविक समत्नात् । खायः कथनः। ইতি मूर्गामामः॥ खकः पूः की यस जिल्ला । याजुन देखि ভाষा। देखायद्वा। ষ্টঃ পন্থাঃ তত্ত্ৰ জাদিনা জব্য क्य विकय ज्ञानामि इ बद्भय॰ **দीय** ज **एका जगा** है जि ষটী ইতি রাজ ইতি চ খাতঃ। শ লভি প্রভিবন্ধো খনেনেভি শুল্কঃ। শল জ গতৌ তালকা-मिः नामी**ि कः निशालनाम्**ल **छेक्। यस ठाटन यस्टाटक र**व रेि चिक चिक । चर्छ। वर्द्य তি মাধবী। ষটে। রাজগ্রাহ वारशकानामि दिखि मुक्रिः। ঘটে। যাট ইতি খ্যাতে ইতি রমানাথঃ। ইতি তট্টীকাষাণ ভ-त्रजः ॥ 😝 ॥ वतामर्थग्रहनः। इंडि व्यक्तिनी ॥

खनः क्री क्रब्कूः ॥ ठा<u>म</u>ः। ইত্য

শুল ক মানে ।। সর্গে। ইতি কবি-কল্পদ্রমঃ ।। পঞ্চমস্বরমুক্ত স্তা-লব্যাদি রম্ভন্থ তৃতীকোপধঃ । সর্গঃ সৃষ্টিঃ। ক শুল্বয়তি বেধাঃ পৃথিবীণ পরিনাতি সৃজ্জতি বা ইত্যর্থঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।। खब की जारा तब्दूः। इंजा-यतः ॥ 🛊 ॥ তামুপাত্রপক্ষাম-**छो** जनात्वा यथा । जार <u>ब</u> পজु। ठक्क्शांनि मंत्री खबि देव कर । इंडि यदमामृत्क ४४ **ग**र्जनः ॥ यखकर्य ॥ जाहातः ॥ জলসমিধিঃ। ইতি মেদিনী।। শুকারিঃ পু॰ গদ্ধকঃ। ইতি **ट्याट्यः** ॥ শুশুমা স্ত্রী শুক্রপত্নী। ইতি क्वििष् ॥ শুশ্রান্ ত্রি প্রবণবিশিষ্টঃ। শ্রুণাতোঃ কুসুপ্রত্যযেন নিষ্প **सः। इंडि भिक्षा छ**को गूनी ॥ শুশাঃ ন্ত্ৰী মাতা। যথা। শি-শোঃ শুশ্রমণাথ শুশাঃ। ইতি মহাভারতে মোক্ষধর্মঃ।। रधक्तरन की जिता। यथा। रू শ্রমণোপাসনক সেবোপাস্তি রুপাসনা। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শুক্ষা স্ত্রী উপাসন । কথন ।। শ্রোত্মিচ্ছ।। ইতি মেদিনী।। শুষ য ঔ ৯ শোষে। ইতি কবি-কল্পজ্ম ।। শোষঃ মেহ রহিতী-ভাবঃ। ষ শুষ্যতি ধান্য মাত-

लान। छे लाखा। ५ अखरद।

हेि मूर्गामामः॥

खनः प्राक्षः॥ गर्डः। रेखः जनगानः॥ खनः जी त्यारः॥ निनः। रेखि त्यमिनी॥ खनितः की नित्रः॥ नःगामि-वामाः॥ गत्रः सु जि। रेखामतः॥ खनितः प्र मृतिकः। रेखि त्य-मिनी॥ खनिः। रेखि निषः॥ खनिता जी नमी। रेखि धत्रनी॥ ननीनामगन्न जना। रेखामतः॥

श्विनः भू वायुः। रेजुनानि

दगयः ॥

ভাষা। বথা। ভাষণ পর্যাবিত্রণ বাপি নীতং বা দুরদেশতঃ। জ-ক্রুস্স্য মুখাডুইণ তদন্ধং পাবনং মহৎ॥ইতিক্ষান্দে উৎকলথভং ভাষপত্রং ক্লী ক্লেরহিত্দলং॥ আতপাদিশোবিতপটশাকং। নালিতা ইতি ভাজা ইতি চ ভাষা। তস্য গুণাঃ। ভাষপত্রং প্রোমিশ্রং পিত্ত ক্লে জ্বরাপ-হং। তৎ ভাষপত্রং জলদোষ না-শনং বিশেষতঃ পিত্ত কফ জ্বরা-পহং। জলঞ্চ তস্যাপি চ পিত্ত-হারকং সুরোচনং ব্যঞ্জন যো-গ্রাকং সুরোচনং ব্যঞ্জন যো- बिस्मरीहरूमीनः। अक्त्रीमात् विस्मरीहरूमीनः। अक्त्रीमात् रेडि छाता। उगा खगा मर्गा-नस्म अकेवााः॥

उदमा न की जाडगाहिना नि-त्वरीक्रवांभा। ज्यभंगावः। উত্তর্ত ২ বলুর ৩। ইত্যমরঃ।। বন্ধুরা ৪ শুক্রলী ৫। ইতি তট্টীকা श जग खनाः। वृकानाः पाय-ल भारत वाला ना वलम लघु। जित्मायक्ष्णालयू छे॰ छक भूल-করু শুরু।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ **७६८ त्रवर्णी खी** माज्कावित्मयः । यथा। অহিভাশ্চ তথা কালী সৃষ্টা পূৰ্ব মহাত্মনা।তথা তজ-বির়পীত মন্ধ্রকানাণ মহাত্মনাণ ॥ या ठाण्यन् कथिन ला त्क मागणः एकत्त्रवणी। रेजि मथ-माभूतात्व ३७८ व्यथायः ॥ ওছলঃ ত্রি আমিষণ। ইত্যুণাদি-

টীকাষাণ ভরতঃ।।
শুক্তনী স্ত্রী শুক্তমাণসং॥ মাণসমাত্রণ । যথা । শুক্তনী শুক্তমাণসে স্যান্মাণস মাত্রেপি দৃশ্যতে। ইতি শৌক্তলশব্দটীকাষাণ
ভরতঃ ।।

কোষঃ।। আমিষাশী। ইভ্যমর-

खकर्कः प्र धनर्कः। रेडि व्राक्तिर्वकः॥

ভৰ্তৰণ পু• কিগা **ইভি ত্রিকা**-ওশেষং॥

खकाकः पुः शत्कः। इछि देवमाकः॥ त्यस्म्गावबद्धः जि खकाको जी गाधिक।। इछि भक्तात्रका।।

শুকার্ড ক্লী শুগ্রী। ইতি শক-চন্দ্রিকা।

শুকঃ পু॰ সূর্বাঃ। ইত্যুণাদি-কোষঃ।। অগ্নিঃ। ইতি সংক্রিপ্ত সারোণাদিবৃত্তিঃ।।

खग्नः क्री जिला देखि स्मिनी
।। পরাক্রমঃ। ইভি হেমচন্দ্রঃ।।
खग्नः পু॰ সূর্যাঃ। ইভি মেদিনী
।। অগ্নিঃ। ইভি ক্রিকান্তশেকঃ।।
বাযুঃ।। পক্ষী। ইভি সংক্রিপ্ত সারোণাদিবৃত্তিঃ।। অর্চিঃ।
বথা। শুমো। ইচিবি হতাশনে
। ইতি শুভাকঃ। ইত্যানরটীকান্
যাণ ভরতঃ।।

শুমা ক্রী তেজঃ। ইতি জটাবরঃ
।। সে,র্য্যাণ ইতি হেমচন্দ্রঃ।।
শুমা পুণ অগ্নিঃ।। চিত্রকবৃক্ষঃ।
ইত্যমরঃ।। অদস্তোপি শুমোতি
সর্বস্থা ইতি ভরতঃ।।

ডিকিঃ বুং কাৰ্ডা। তেজান চিক্রণ ইতি সংক্ষিত্তসায়োগাৰি বৃত্তিঃ।

भूकः भू॰ की अञ्चीकार्या खँवा ইতি ভাবা। তৎপৰ্যায়ঃ। কি॰-শাঙ্গং ২। ইত্যমরঃ।। শুসা ৩ কোশী। ইতি হেমচক্রঃ।। দৰা । ইভি मिनी।। निवशत्रपृषु-जामिकनगदनास्वकसः ॥ भू-कथ्रधाननिक्रवृष्किकत्ररयागः । छिषितत्रन वशा अथ भृकतना-याधिकातः । তত्ত मृक्टलायमा निमान गार । जक्र गाटक्करमा ৰুক্ষি॰ যোভিৰাঞ্ছি মূচধীঃ। बाधिय खमा जागरख में हा-**क्वी** ह मृक्जाः ॥ अक्रमार অনুচিতবৃদ্ধিক্রমাৎ। অনুচিতা চ वृक्तिः जृतिविकातकनकना **मृकमा (वारभन। मृक्काः।** भृत्का जनभृकः मवित्वा जन-जबिदिশयः। म जू जनमत्ना-खरः। अबपूर्व रेजामिकः। ज्या भूकश्रशाता निकृत्कि-करता वाष्मायमाम्।एक। या-গঃ শূক উচাতে। যথা। ভলা-তকান্থি জলশূক মথাজ পত্ৰ मखर्तिम् यिष्मान् महरेमध-

和每

: त्व । এত विका पृश्लीकवा-তোৰপিষ্ট ৰালেপিত মহিৰ্বি-जिमनीकृत्व शक्ता खुन नर-ধরতুরক্ষ লিক্তুলা শেষঃ - করোত্যভিমত**ং ন ছি সংশবো**-স্তি। ইত্যাদি। যতু জলশূকর-हिं यथगन्नामिटेंचन जन्हिं त्यव विञ्चवर्कन । अश्वभन्ना वदी अर्थ मान्त्री जिन्ही कलाविकः। চতুর্গুণেন দুগ্ধেন ভিলভৈদ্ন বি-পাচবেৎ ॥ ভব্তৈল মেচু বকো-क कर्न भागि विवर्धन । ए ह শূকদোষা দশ চাকৌ চ ভৰম্ভি 11 • 11 जिद्वारि नर्यिन मार 1 भीत्रमर्थभ मण्याना मुक मूर्छभ হেতুকা। পিডিকা শ্লেম বাতা-**छा। ए**छम। मर्गिका जुना ॥ শৃক দুৰ্ভগ হেতুকা শূকনিমিত্তা मूखेरवानिनिमिखा ह।। • ।। • अशी-निका याह । कठिना विषय जू-देश बीबूनाष्ठीनिका ভবেৎ। अ-ষ্ঠীলা লোহকারস্য ভাওবিশেষঃ । নিহাই ইতি লোকে। তত্ত্ব ক-छिन। इंडाशीनिका। विषदे वर्षे ব্লিতি বক্ষামাণ শূকবিশেষণ । বি-यरेम श्रुव मीरेपः। जूरेशः वरेकः 11 • 11 अथिल याह 1 मृटेक वं९

পূরিত শশ্বৎ তাথিত নাম তছ' ककार। यहिन मा मारिकः शृ-ব্লিভ তলাপিত বাদ্য থিক।।। সম্ভিকা মাহ। সম্ভিকা রক্তপি-েৰাখা জৰুকান্থিনিভা দিতা ? अखिका अख्नुना कनवार ॥॥॥ चनकी बार्। जनकी गाउथा बामृक् थरमङ् शिष्ठिकानजी । ব। চ ইক্তা সিভা স্ফোট দারুণা কথিত। চ সা।। এষা ব্লক্তপিত্ত নি-मिखा (कारा।। 🛊।। मृति गार्। মৃদিত পীডিত যজু সংরক্ষণ বা-তকোপতঃ। পাণিভ্যা॰ ভূশ স॰-মূতে সংমৃত পিডিকা ভবেৎ ৷৷ শুকদোষে জাতে পাণিভ্যাণ ভূশ সংসূত্যে পিচ্চিতে লিঙ্গে অত্যাপি বাভ কোপত ইত্যনুবৰ্ত্তে।।।।।। অবমস্থ মাই।দীর্ঘা বাহুশ্চ পিডি-কা দীর্বাতে মধ্যমস্ত যাণ। সোব-यहः ककामृष्णाः त्वननां त्रांय-र्वक्षा नीर्या नीर्याक्ताः ॥ #॥ পুষ্করিকা মাহ। পিডিকা পিডি-কাৰ্যাপ্তা পিত্ত শোণিত সম্ভবা । পদ্মকর্ণিক সম্ভানা জ্বেয়া পুদ্ধ-রিকেতি সা ॥ পিডিকাব্যাপ্তা ক্ষুদ্রপিডিকাব্যাপ্তা। অতএব প-অকৰিক সংস্থান।।। 🟶।। স্পর্শ-

বেচ্ছোণি न्नामामर्घरम्य व क्षा ॥ ।। ।। । खगा गार्। गूकाबादता नवा त्रका রক্তপিতে। ধ্বা চ সা। এবে। ভ याथा। शिष्कि भृत्क जीर्गम् छवा।। 🛎 ।। अञ्चलनक बाह् । ছिटेफ बन्यूदेश *लिंब* हिन्न यमा সমন্ততঃ। বাত শোণিতজে। ব্যা **थि तिःख्यः मजस्यानकः॥ मज** বোনক চালনী ভকুল্যদাক্ত योनकः ॥ ॥॥ इक्शाक मार्। বাত পিত্ত হৈতে জ্ঞেম স্কুক্পাকো ब्र मार्क्षा अञ्जा नित्र क्र-পাক লক্ষণ ৷৷ 🛊 ৷৷ শোশিতাবুদ নাহ।ক্রক্ষৈঃ স্ফোটেঃ সরক্তাভিঃ পিডকাভিঃ প্রপীডিত ৷ লিঙ্গ বাসুরুজ শ্চোগ্রা জ্ঞেষণ তৎ শো-विठार्बूम॰॥ वाजुक्रकः एकारेका-विञ्रात (ब्रामना।। 🛊 ॥ मा॰ मार्ब्स याह । या अपूर्णा विकासीया-मर्बूकः भाष्म मख्यः। 🛊। माःमः शाक बार्। भौदारख क्या बा॰-मानि यमा महीक दिलनाः। वि-मााउ॰ गा॰नशाकन नर्दामाय क्र-সর্ববেদনাঃ বাত পিত্ত কফজাঃ

हानि गाइ। न्नार्वहानिक खना॥ ॥ ।। विखेषि माह। विखेषि॰ ৰিপাতেন থোক মতিনিদি শেৎ। উক্ত সামিপাতিকবিদ্র-विज्ञा॰ कथरादः ॥ • ॥ जिल-कानक बार्। इकानि ठिळानाथ-ৰা শুকামি সরিষাণি তু। পতি-তানি পচন্ত্যাশু নেঢু নিরবশে-यण्डः ॥ कलानि जूका मान्जानि শীৰ্যান্তে ফদ্য দেহিনঃ সন্নিপাত यमुषाः क बिमाखाः जिनकानः कान् ॥ हिजानि नानादर्गानि । **मृकानि मृक्जगानि । मका**ः ক্ষোশস্তীতিব<। সবিষাণি সবি-ৰ শূকাখ্য জন্তবিশেষ ক্লতানি। শীর্যান্তে গলন্তি। রুক্ততিল তুল্য-ষাৎ ভিলকালকাঃ।। 🖝।। অসা-श गार । তত गा॰ मार्नुष॰ यक्त भाष्मभाकम् यः न्यृष्ठः। विजिध-শ্চ ন সিধ্যন্তি ৰে চ স্যু স্তিলকা-नकाः ॥ 🛊 ॥ अथ भूकरमायमा िहिकि भा। भृकत्नात्ययु मर्दियू विवत्रीः काद्रत्यः क्रियाः। ज-লৌকাভি হরেডক রেচযেমযু ভোজरय ।। श्रमुत् भाषुरयका-शि विकनाकार्थ मःयूठाः । की-ব্লেণ লেপ সেকাচ্চ শীতানেব ছি काब्रदय ।। नार्वी मुद्रम यका।-

阿布里

दिस गृहम्य निमार्ग्रेटिंड १ ज
गान देवन महामारमण्ड देवानः

विनागरम् ।। जूननः वृक्तीने

गानी देवनः ।। ज्ञनाक्षनः गान्स्य पिकान्य

नरम् भारत भारत्य

नरम् भारत्य श्रमाञ्चनः ग्रमान्य

नरम् भारत कृष्ण्यान्तिकः गर्न
वन भारत कृष्ण्यान्तिकः गर्न
वन भारत कृष्ण्यान्तिकः गर्न
वन भारत ।। जान्स्य पिका
नन्द्रागमा विराममाः । जनन्द्रागमा नामानि मृतीकरतािः ।

हेवि मृकरमामाधिकातः । ইवि

ভाবপ্রকাশः ।।

मृककः पू॰ श्राविष्टः। त्रमः। ইতি মেদিনী।।

শূককীটঃ পু॰ শূকযুক্তকীটবি-শেষঃ। শুষাপোকা ইতি ভাষা । তৎপর্ব্যাষঃ। বৃশ্চিকঃ ২। ই-ত্যমরঃ।। শূককীটকঃ ৩। ইতি শক্রত্বাবলী।।

भूककी हेकः पू॰ भृककी हैः। ইতি भक्त त्रावनी ॥

শূকতৃণ ক্লী তৃণবিশেষঃ । শূকডীইজি হিন্দীভাষা। তৎপর্যাযঃ। শূকং ২ শূকাঢ়া ও কনিঠক । অস্য গুণঃ। দুর্মারস্ত
শশ্নাঞ্চ শ্কাভাবে হিতঞ্চ তৎ
। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। দুর্মারস্ত

शास्त्र मर्फेद्रमु ९ इंडि ह शार्थः गा मृक्शानाः क्री खनायूक्नना-नोजः। म कू शाना चवानिः। है-ळानतः ॥ वथा। जीसामिकः ৰাদি ছ শূকসমন্বিত স্যাৎ তৎ नृत्वधाना मथ यूका यञ्चेकानि। শিশীনিগৃঢ নিভি তৎ প্রবদন্তি निश्चीशानाः जृत्भाख्य मत्था ज्-भ्रामा मनार ॥ जमा छनाः। তত্ৰ ত্ৰিলোষ শমন লঘু শূক-খান্য তেজে বলাতিশ্যবীৰ্য্য-विबृक्षिकायि। प्रत्न प्रतन नृक-ধান্যেষু সংখ্যা জ্ঞাতু শক্যা নৈৰ তৈ দৈৰতৈ বা।। ইতি রা-क्रिमिके ।। चित्र है। मृक्श-ন্যাণ শ্মীধান্যাণ স্মাতীত প্র-শ্ব্যতে পরতো বাতক্তজকণ প্রাযেণাভিনব গুরু ॥ ইতি त्राजवल्ला । यनाक । यनस সিত শুকঃ স্যাৎ নিঃশূকোতি-ষবঃ স্মৃতঃ। তোকা স্তদ্বৎসহ-রিত স্ততঃ বরণ্চ কীর্ত্তিতঃ ॥ ययः क्यार्या मधुद्रः भीजरना (लथरन) मृद्ध । बर्श्य छिनव ६ भरथा। करका त्यथामि वर्क्षनः॥ কটুপাকো ২নভিয্যনী স্বর্য্যো বলহরো গুরুঃ ৷৷ বহুবাত মলো

क्ने देशकाती ह शिक्तिनः। - কওছগামৰ শ্লেম্ব পিত্ত ষেদ-প্ৰ-नायनः॥ श्रीनम श्रामः काद्मा-क्षष्ठ लाहिल ज्हे थापूर । जन्मामिक्यदा-नान रङ्गात्मा मृान इत खड़ ॥ ३७ ज़ाब-প্রকাশঃ ॥

শূকপিভিঃ) স্ত্রী শুকশিষিঃ। ইভি শূকপিণ্ডী) শব্দনলা শব্দরত্বাব-त्ना ॥

শুকরঃ পু॰ পশুবিশেষঃ। শুওর ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাশ্বঃ। বরা-হঃ ২ স্তৰারোমা ৩ রোমশঃ ৪ রকিরিঃ ৫ চক্রদ স্টুঃ ৬ কিটিঃ ৭ দ ক্ট্ৰী ৮ ক্ৰোডঃ ৯ দম্ভাযুধঃ ১০ বলী ১১ পৃথুক্ষন্ধঃ ১২ পোত্ৰী ১৩ যোগী ১৪ ভেদনঃ ১৫ কো-লঃ ১৬ পোত্রামুখঃ ১৭ শুরঃ ১৮ বহুপত্যঃ ১৯ রদাষ্ধঃ ২০। ব-ন্যস্য ত্ৰস্য মাণসগুণাঃ৷ গুৰুত্বণ ৷ বাতহারিত্বণ। বৃষ্যত্বণ। বল স্বে-म क्त्रक्ष ॥ श्रामा छमा मा॰ স গুণাঃ । বন্যবরাহ্মাণসাদগু-क्रष्र^१। (यटम) वन वीर्या वृष्कि কারিস্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ অপি চ। লুলাপ পণ্ড বারাহ চ-भन्नी वात्रवामयः। এতে कृत्न- ॥ नृकार्श्नुष्ठः भूः छ्वमविः। कासूत्रः

मुकार्यू ,

চরাঃ প্রোক্তা বতঃ কুলে চর स्थानीर ।। कृत्वाद्यां मक्र शिखं ह्रा व्या वनावशः। अधूताः भौजनाः त्रिका मूर्जनाः क्षायर्-দ্ধনাঃ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। 🖞 मृकद्रकन्मः पूर वाद्राहीकन्मः। हें जि ब्राक्रनिर्यन्धेः ॥ শূকরপাদিকা স্ত্রী কোলশিষী। ইতি রাজনির্ষণ্টঃ ৷৷ শূকরাক্রান্তা স্ত্রী বরাহক্রান্তা। ইতি শব্দচন্দ্রিকা॥ শৃকরী স্ত্রী বরাহক্রান্তা।ইতি गक्तकावनी।। गृकत्रशक्की ह।। শৃকরেন্টঃ পু॰ কদেরুঃ। ইভি রা-

किनिर्यन्छैः॥ मृकत्रियकार्या वि मृकलः श्रु पूर्विनीजासः। इंडि (इगठनः ॥ শুকবতী স্ত্রী কপিকচ্ছঃ। ইতি

শব্দচন্দ্ৰিক।।। শৃকযুক্তে ত্ৰি।। শূকশিষা জী কপিকছঃ।ইতি नका जिका ॥

শূকশিষিঃ ন্ত্ৰী কপিকচ্ছৃঃ।ই-শু কশিষিক। जामतः उड़ीको ह।। শূকশিশ্বী শুকা স্ত্রী কপিকচ্ছৃঃ।ইতি শব্দ-ठिख्नका ॥

माना देखि कारदावा देखि ह भारत्रग्रजाया। देखि राजाबनी॥ भूजिभर्वः शुः चार्यध्यः। देखि भक्तप्रावनी॥

সূত্রঃ পু॰ চতুবৰী দ্বৰ্গত চতুর্থ-वर्षः । ७९ भर्यायः । अवत्रवर्गः २ तृवलः ७ कष्ताकः ७। है-खायतः ॥ मात्रः ८ भामजः ৫ অন্তাজন্মা ৬ জঘন্যঃ ৭ ছিজ-**म्या । इंडि अक्**रज्ञा-क्वी ॥ भगः २। ३७ क्री-बन्नः ॥ अस्तुवर्गः ३० शब्दः ३३ ा देखि द्यहसाः ॥ हजूर्यः ১२ विक्रमानः ३७ উপानकः ३८। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। 🛊 ॥ প্লক-ৰীপে জন্য সংজ্ঞা সত্যাসং। শা-वालबीदभ हेर्युत्रद्रः । अभवीदभ क्षकः। क्षिक्वीत्भ त्मवकः। भाक्षीरभ जन्जुङः। भूकत्रेषी-পে সর্বে একবর্ণাঃ। অস্যোৎ-পত্তি বঁদাণঃ পাদাৎ। অস্য শা-দ্ৰনিৰাপিতো ধৰ্মঃ জীবিকা চ बाक्रण कविय देनग खन्तरा.। অসৈকাশ্রমে। গার্হস্তঃ। ইতি শ্ৰভাগৰত° । (♣ II অধ শুদ্র-ধর্মাদি। বিপ্রাণা মর্চন দিত্য भूजधर्म्य। विशेषट्छ । **इट्यु**वी

তন্ধন গ্রাহী শত্র শ্রাধানতাণ ব্রজেৎ ।। গৃধঃ কোটিনহসাণি শতজ্মানি শৃকরঃ । শ্বাপদঃ শতজ্মানি শৃক্রো বিপ্রধনাপ-হা ।। যঃ শুলো ব্রাহ্মণীগানী নাতৃগানী স্পাতকী । সভীপা-কে পচাতে স্বাবদৈ বন্ধণঃ শ-ভং ।। সভীপাকে হপুতৈল ভ্রুঃ সর্পে রহনিশং। শক্ষ বিক্তা-কারং সক্রতে ব্যতাডনাৎ ।। ত-দা চাপ্রালযোনিঃ স্যাৎ সপ্তজ্ঞ-

कलोका मश्रक्यम् ॥ क्यादका
हि महमूक विश्वायाः कायत्व क्र
विः । क्यानिकियः भूःकनीनाः

म ज्या मश्रक्यम् ॥ गवाः वन
क्रिः मान्न भावकी मश्रक्यम्

। क्यानी क्यानी ज्याद्यावः न
भून क्यार्यः नदः ॥ इि वक्रदेवर्षः श्रीक्रकज्याश्यः ४० ज
श्रायः॥ ॥॥ ज्यान ।। इिकानाः

भाव ज्ञायः॥ ॥॥ ज्ञान । विकानाः

भाव ज्ञायः॥ ॥॥ ज्ञान । विकानाः

भाव ज्ञायः॥ ॥ ज्ञान ।। त् ज्ञानाः

क्या मृद्धिः माजकः॥ त् ज्ञानाः

क्या मृद्धिः माजकः॥ त् ज्ञातः

क्या देवद त्वत्वा ज्यः भिजान
इः। ज्ञावार्थः मश्रा मृषः ज्ञीत्य

ज्ञात्म क्राः ॥ विकानाः कञ्जः

वर्गानाः देवनानाः अविवाः। ত্রিভাঃ শুক্রাবণা কার্য্যা ইত্যবা-मीष**ठ छम। ॥ इं**डि शास्त्र मृखि थटल ३७ व्यथायः ॥ 🐙 ॥ किस्र । শুক্রাবৈৰ দিজাতীনা শুদ্রাগাণ ধর্মসাধন । কারুকর্ম তথাজীবঃ পাক্ষজ্ঞোপি ধর্মতঃ ॥ ইতি গা-রুতে ৪৯ অধ্যাবঃ ॥ 🟶 ॥ শুদ্ররা-**८** जा नित्यत्था स्था । शर्मि-कि नीवृष्ठ शास्त्र न बाधिवक्रल ज्म । न मृजतारका निवरम न शायक्षकरेन वृंटा। 🛊 ॥ नृजाय यिकान निरम्पा यथा। ने भू-ডাৰ মতিং দদ্যাৎ ক্লষরং পাৰসং मिथ। नािक्छिया यथु युङ न ह क्रकाजिन॰ श्विः ॥ न देवतात्य ৰত° ৰুষাৎ ন চ ধৰ্মান্ বদে-দুধঃ। ইতি কৌর্শ্বে উপরিভাগে ३६ व्यशायः ॥ 🟶 ॥ भूजाणाः विनाधिकात निरम्दा प्रथा। ख-যোবৰ্ণা মহাভাগ যজ্ঞসামান্য-ভাগিনঃ। শূতা বেদ পৰিত্তে-ভ্যো बाक्रदेवञ्च वहिष्कृषाः ॥ ইতি বারাহে সংসারচক্রনামা-भारः ॥ 🟶 ॥ कलो ७ धन्याः ৰথা। কলিঃ সাধিতি যৎপ্ৰোক্ত॰ শুদ্রঃ সাধিতি যোষিতঃ। তচ্চাহ

ভগবান্ সাধু ধন্যা স্চেতি পুনঃ পूनः ॥ ইতি বিकृপুরাণে ৬ অ॰-८० २ जशायः।। ७॥ जमा यहा-शानात्नी त्नात्वा यथा। जथा य-**लामा शादनन जामानी गयदनन ह** ৷ বেদাক্ষর বিচারেণ শুজ শ্চাণ্ডা-লতা ৰজেৰ ৷৷ ইতি শুদ্ৰকম-লাকর ধৃত পরাশর বচন ।। 🟶 🏗 বান্ধণস্য তদ্দভোজননিৱেধো यथा। मृजामः जामता श्रान्देव মাসং মাসার্দ্ধ মেব বা। তদেবা-নাবভিজাষেত সত্য মেতদিদু र्बुधाः ॥ অर्थानत्रश्रृजारम्। मृठः শ্বানোপি জাষতে। ত্বাদশ দশ চাট্টো চ গৃধু শৃকর পুষ্করাঃ ।। উদরস্থিতশূজামো হাধীয়ানো-পি নিত্যশং। জুহ্বন্ বাপি জপন্ ৰাপি গতি মুৰ্দ্ধুণ ন বিন্দতি॥ অ-মৃত বান্ধণস্যান্ধ ক্তিয়ান্ন প-যঃ স্মৃত । বৈশাস্য চান্ন মেবান্ন । শূদার রুধির স্মৃত।। তমাৎ শুদ্র ন ভিক্ষেত যজ্ঞার্থ সদ্দি-জাতৰঃ। শ্বশান যিব সচ্ছদ্ৰ স্ত-স্মাত্ত॰ পরিবর্জ্জফেৎ।। কণানা-মথ বা ভিক্ষাণ স্বর্য্যাচ্চাতি বিক-ষিতঃ। সচ্চ দ্রাণাণ গৃহে পর্বন্ তৎ পাপেন न निপार्छ।। विख-

कामय मञ्जारका निवृद्धाः बना মাণসতঃ। বিজভক্তো বৰিবৃত্তিঃ **मूजः** न शतिकीर्खिछः ॥ ३७ -বৃহৎপরাশরসংহিতাযা ৪ অ-शायः।। ।। जनि ह। श्रीकः। भृजात्मन जू जूरकन जेमद्रस्थन रया मृङः। न देव श्रेत्रच मृख्य শূত্রবঞ্চাধিগচ্ছতি ।। শূতায়॰ শূত্রস্বামিকামণ তদ্দত্তমপি ভো-জনকালে তদ্গৃহাবস্থিত যতদ-পি শুদ্রায়॰। তদাহাঙ্গিরাঃ। শূ-জবেশানি বিপ্রেণ ক্ষীর বা যদি বা দধি। নিবৃত্তেন ন ভোক্তব্য॰ শূদান্ত তদপি স্মৃত ৷৷ অপি শ-साद माकालफल मृठ उर्जुमानि । न जू जन्न क्रमका निना की ত মপি। স্বগৃহাগতে পুনরঙ্গিরাঃ া যথা যত স্ততো হাগঃ শুদ্ধি যান্তি নদীণ গতাঃ। শুজাদিপ্রগৃ-**ट्यम॰ প্রবিউন্ত সদা শুচি ॥** প্ৰবিষ্ট॰ স্বন্ধাপাদক প্ৰতিগ্ৰহা-দিনে তিশেষঃ। অতএব পরাশরঃ ৷ তাবন্ডবতি শুড়ামণ বাবন্ধ স্পৃ শতি দিজঃ। দিজাতি করসংস্পৃ ষ্ট॰ সর্ব॰ ভদ্ধবি রুচ্যতে॥ স্পৃশতি প্রতিগৃহাতীতি কল্পভরঃ ৷ তচ্চ সংপ্রোক্ষ্য আছ মাই বিক্সুরাণ

। नः थाकिया भृद्रीयाक्षानः পৃহ ৰাগত। ভচ্চ পাতা ভরে আ-क् माहानिजाः। चनाटल येखु वि-ন্যন্ত শুদ্ৰো কছতি নিত্যশঃ। পাত্রান্তরগত আছে দুর্মণ স্বগৃহ ৰাগত ।। এতেন স্বগৃহ নাগত-रेगाव खन्नवः छएग्रग्रगञ्मा भू-দানদোষভাগিত্ব প্রতীয়তে। তত শৈচতাদৃগপি মুমুর্ণা সর্বথা শূদ্রামণ ন ভোক্তব্য ।। ইতি श्विञ्दः ॥ 🛊 ॥ कत्नो भूज-বিশেষান্ন ভোজন নিষেধো যথা । भृटक्षम् माम भाषान कनि-ত্রার্দ্ধশীরিণাণ। ভোজ্যান্নতা গৃ-ভ্ৰুস্য তীর্থসেবাতিদূরতঃ ৷৷ এ-**जानि** लाक्छछार्थः कल রाদी মহাত্মভিঃ। নিবর্ত্তিতানি কর্মাণি ব্যবস্থাপূৰ্বক॰ বুধৈঃ।। ইতি ভি-थामिङ्ब । । । जनत्र । वान উবাচ। নাদ্যাৎ শুদ্রস্য বিপ্রো ২ন মোহাদা যদি বান্যতঃ। স শূদ্রযোনি বজতি যম্ভ ভুঙ্কে श्नानि ।। यशानान् या वि-জো ভুঞ্জে শুদ্রস্যান্ন বিগর্হিত । कीरामनं ভरतः भृत्का मृङः শ্ব। চাভিজাষতে ॥ ব্রাহ্মণঃ ক ত্রিয বিশাণ শূ ডস্য চ মুনীশ্বরাঃ।

यगादम्याप्त्रत्वन मृख खाला-नि याश्रवार ॥ 🛊 ॥ कनी छत्रव শূতবিশেষাৰ ভোজনবিধি ৰ্ৰণা । আর্ত্তিজঃ সলমিত্রঞ্গ গোপালো দাস নাপিতৌ। এতে **শু**ডেবু ভোজ্যামা সশ্চাত্মান নিবেদ--(राष्ट्रा अचीनदः अखकातः दक्व-কৰ্ম্মক এৰ চ। এতে শূচ্ছেষ্ ভো-জ্যোহ্বা দত্বা স্বল্প পণ সুবৈঃ ৷৷ পায়ন বিশ্বপক্ষ যাবসকৈব <u> अक्तरः । शिग्राकरेक्द टेडमक</u> শূদ্রাদ্গাহণ দিজাভিভিঃ ॥ ইতি কৌর্শ্বে উপরিভাগে ১৬ অ-शायः ॥ जिन ह। कन्नूशकानि ৈতৈলেন পাষসণদ্ধিশক্তবঃ। দ্বি-কৈ রেতানি ভোজ্যানি শূদ্রগেহ क्रानाशि॥ श्रा वनाक । भूषा-স্তু যে দানপরা ভবস্তি ব্রতাদি-তা বিপ্রপরাষণাস্ত্র। অঙ্গণ হি তে-ষাণ সততং সুভোজ্ঞাণ ভবেন্দ্রিজৈ मृ रहे निम॰ পুরাতনৈঃ ।। **ভস্ম**। দ্দান প্রকর্ত্তব্য ব্রতক্ষেন প্রষ্ ত্মতঃ। সৰ্বপাপ বিনাশায মহৎ-मूथविवृक्षरम ।। ইতি वङ्गिभूजात्म व्यमानाधायः ॥ 🐞 ॥ देविमिटक-তরমন্ত্রপাঠে শুদ্রাদে রপ্যধিকা-রঃ। বেদমন্তবজ্জ শূডস্যেতি ছ-

নোগাহিকাচার চিস্তামণিশৃত-শৃতৌ বেদেতি বিশেষণাৎ। এ-বঞ্চ পুরাণ মধিকতা। অধ্যেতকাণ ৰ চান্যেন ত্ৰাহ্মণ ক্ষত্তিষ বিনা। শ্ৰোতব্য মিছ শূজেণ নাধ্যেতব্য कमाह्म ॥ ইতি ভবিষ্যপুরাণ ব-চন॰ পুরাণমন্ত্রেতরপর॰। পঞ্-ৰজ্ঞ সান প্রান্ধেষু পৌরাণিক ম-खानि निविकः। भूजयिक्छा। नमकादत्रव मटखन शक्षमञ्जास श्वायर । इंडि याख्वतस्कान । ব্ৰহ্ম কত্ৰ বিশামেৰ মন্তৰৎ স্নান মিষ্যতে। তৃষ্টী মেৰ হি শুদ্ৰস্য मन्यकातकः यञः ॥ इंजि रया-গিযাক্তবক্ষ্যেন। প্রাক্ত মধিক্তত্য । অবমেব বিধিঃ প্রোক্তঃ শুজা-भा[®] मखरबिर्क्क । अमखना जू শুজস্য বিপ্রো মন্ত্রেণ গৃহ্নতে 11 ইতি বরাহপুরাণেন চ। নমস্কা-রেণেতি তৃকী মিতি মন্ত্রবর্জিত মিতি চাভিধানাদেতৎপর বৈ-দিকপরঞ্চ শুজাধিকারে গোত্য-বচন । অনুমতো ২স্য নমস্কা-রো মন্ত্র ইভি। সাবিজ্ঞীণ প্রণবণ ষজু লন্ধীণ স্ত্ৰী শুজবো র্নেচ্ছাম্ভ । সাবিত্ৰী॰ প্ৰণব॰ ষজু লক্ষী॰ জ্ৰী-मृत्जा यिन जानीया म मृत्जा

২ধো গচ্ছতীতি । ইতি তিথ্যা-দিতত্ত্ব ৷ ৷ ৷ ৷ প্রসঙ্গাদত্র কা-যক্ষেৎপত্তি লিখ্যতে। পাদ্মে मृखि थए । मृख्याता मनम क-र्श्वख्रुखर श्रानिनाः विधिः। कनः খানে হিত্স্যাস্য সর্বকাষাদ্বি-निर्गछः॥ पिराक्तभः भूगान् रख मनीगावक लायनी । विवस्थ ইতি খ্যাতো ধশ্মরাজসমীপতঃ।। প্রাণিনা॰ সদসৎকর্মলেখ্যায় স নিৰূপিতঃ। বন্ধণাতীক্ৰিযজ্ঞানী দেবাগ্যো ৰ্বজ্ঞভূক্ স বৈ। ভো-कनाक मना जन्मानाइ जिमेरिक षिटेकः॥ बन्नकारमास्टरवा यन्त्रा ६ কাৰস্থে জাতি ৰুচাতে। নানা গোত্ৰাশ্চ তদ্বংশ্যাঃ কাষস্থা ভূবি সম্ভি বৈ ।।।।। প্রকারান্তর॰ যথা । ক্ষান্দে রেণুকামাহাত্ম্যে। এব॰ र्षाक्त्रं न॰ तायः मक्ताय निर्मिः **छान् भद्रान् । এक এव यर्यो হত্ত॰** সৰানেবাতুরান্ নৃপান্ ।। কেচিদাইন মাখ্রিত্য কেচিৎ পা-তাল মাবিশন্। সগর্ভা চন্দ্রসে-নস্য ভাৰ্য্যা দাব্যাশ্ৰমণ ৰবৌ।। ততো রামঃ সমাঘাতো দাল্যাশ্রম মনুত্তম । পূজিতো মুনিনা স-**(मा) श्वर्धा भागामनामिजिः ॥**

मरमो मधाङ्करमयस्य ठटेन्य ভোজ-ন মাদরাৎ। রামস্ত ভাববামাস क्रिक्॰ अयदनात्रथः। याठ्याना-म त्रामाक काम मारहा। महाम-নিঃ।। ভতো ছৌ পরমপ্রীতো ভোজন চক্রতু মুদা। ভোজনা-নম্ভর দান্যঃ পপ্রচ্ছ ভাগবং প্র-छि॥ यद्वेश क्षाबिंछ॰ स्वरं छद्व॰ मन्निष् यहिन । द्वाम खेवाह । তবাশ্রমে মহাভাগ সগভা স্ত্রী সমাগতা। চক্রদেনস্য রাজর্বেঃ ক্তিবস্য মহাত্মনঃ।। তথ্যে ত্ব প্রার্থিত দৈহি হিণ্সেয়ণ তাণ ম-হামুনে। ততো দান্তঃ প্রত্যুবাচ **मनाभि তব বাঞ্ছিত ।। দা**ল্লা উ-বাচ। স্ত্রিষণ গর্ভ মমুণ বালণ ত-মে স্ব দাতু মর্হসি। ততো রামো श्ववीष्मानाः सम्र्थं यह यागठः॥ ক্ষত্রিষান্তকর শ্চাহণ তত্ত্বণ যাচি-তবানসি। প্রার্থিতশ্চ দ্বয়া বিপ্র কাষ্যো গর্ভ উত্তমঃ ৷৷ তস্মাৎ কাষস্থ ইত্যাখ্যা ভবিষ্যন্তি শি-শোঃ শুভা। এবং রামো মহাবাহ रिषाखर्गर्ज यूखयः॥ निर्क्रगाया-শ্রমাতস্মাৎ ক্ষত্রিযান্তকরঃ প্র-ভূঃ। কাষস্থ এষ উৎপন্নঃ ক্ষত্রি-প্যা॰ ক্ষত্রিযাত্তভঃ ॥ রামাজ্ঞ্যা

म मात्तान के अधर्याषशिक्षः। কাষস্থৰ্মো ২ সৈম দত্ত শ্চিত্ৰ গু প্রদা যঃ স্মৃতঃ ৷৷ তলোত্তজা-क कायहा मा अरगावा खडा श्ख्यन् । मार्चग्राशस्य मञ्ज् रेव धूर्षिकाः मजावामिनः ॥ म-দাচারগরা মিতাং বুলা হারছ-तार्फरन-१ लवः विद्य-शिष्ट्रवाक खिषीनाक शृक्षकाः ॥ • ॥ थकाताखतः। गाहिकानिका-मून दिर्दाष्ट्रा वः अमृष्ट । म कायङ हेि প্রোক্ত स्वता थर्मा विधीयरा ॥ कलारेब-भगाषा॰ वाश्या देवभगाविथा-জा देवरमञ्डः। निशीनाः पर-শজভানা লেখন স সমা-চরে ।। **গণকত্ব** বিচিত্র के वी-জগাটী প্রভেদতঃ। অধ্যঃ শৃ-ডজাতিভাঃ **পঞ্চ**দ**ংস্কারবান**-भो ॥ ठाञ्चर्गमा स्मदाः हि लिপि (लथन माधनाः। वाव-मायः शिन्नकर्य छज्जीवन मु-माञ्च ।। मिथा यटखाभवी-তঞ্চ বস্ত্র মারক্ত মন্ত্রদা। স্প-र्गन॰ प्रविज्ञानाक कामहारमा विवर्जयथ ॥ इंछि कमनाकत्-ভটকত শুদ্রধর্মভন্ত্র ।।

শূजक्रा॰ की भूजवर्खवाकर्मा यथा। अवया मिक्रानमा मू-जागा ना यवर्षिना । आकार ক্তাযো স্তত্ত্বণ বক্তি জীরঘুনন্দ-नः ॥ छ्व वर्गान्द्रानः। এবः भूरजाशि ग्रामानाः वृक्ति आक्रकः न्द्रा। नगकाद्यन मञ्जन कर्मा-मायामपूरः १। मानश्रमानः भू षः गापिणार् ७ भवान् अणुः। कारनम गर्बकामा थि द्रमा ज् কাষতে যতঃ।। ভতে। দান মে-বাপেক্ষিত ন তু ভোজন মপি। সামান্য সর্বজন কর্ত্তব্যত্তেন প্রতিমাসক্রক্ষপক্ষাদিবিহিত্তা-দ্ধ আভ্যুদ্ধিকশ্রাদ্ধ এবং षिकािवद मूट्याभि अर्या। দিত্যস্বযঃ। নমকারেণ মন্ত্রেণ ন তু স্বয়ণ পঠিতমন্ত্রেণ। আমা-**मर्वाक्**रियान जनस्मक निका षवा।वृज्धिः। श्रिम यम यूमाञ्च । ইতি বৃশিষ্ঠেন স্বিন্ন সৈয়বান-ত্বাভিধানাৎ। কন্দুপক্ষ্যা ভূষ্ট-ত্ব॰ ন তৃ স্বিমত্ব॰। হারীতেন স্কে-**मन् जर्क्कनरगाः श्थक्ष मूकः १** য্থা। আদীপন তাপন স্বেদন ভৰ্জন পচনাদিভিঃ পঞ্চমীতি ৷ षमार्थः। जामीशनः काष्ठानाः।

STATE COLUMN TO A CARROLL नारमः। उक्त स्वारमः। क नः छब्बातः। रेकि गक्यी नृता रेछि कबछकः। अञ्जार विवश त्मान वावशिवत्था। कन्नूगङ्गानि रेंडरतन भावमः मधि नक्तरः । ৰিজৈ রেতানি ভোজ্যানি শৃত্ত-গেহত্তান্যপি।। ইতি কুর্মপু-রাণ বচনেন শুজকত্ ক কন্দুপ-স্থাদে ৰ্ৰান্ধণস্য ভক্ষ্যত্বেন প্ৰাদ্ধে (मयक बुका । कन्पृशक जला-পদেক বিৰা কেবল পাত্ৰেণ য-ছব্লিনা গল্প। পাযসং পাকেন काठिना विकादाशमः मुक्तः। न-त्रगामभत्राष भू॰ विक्रिनिए भिग-পত্তেঃ। তথা চামরং। পরমান্ম র शायमः ইভি। मित्व ज्रामित्भ প্রান্তে গাকেন ভোজবেদ্বিজান্ १ व्ययः विधिः अर्याकवाः मृजा-ণা॰ মন্ত্ৰবজ্জিতঃ ।। ইতি শ্ৰাদ্ধ-ঠিন্তামণিধৃত বরাহপুরাণ বচন মপি কন্দুগরুপরণ। এবম্ব এতম্বচ-म॰ मक्क जगतः रेमिशलाकः ह-য় । এবি আম্মা সস্যাপি প্রাক্ষে দেষ ত্ব॰ সামগ-শ্রাদ্ধতত্ত্বে ংনুস-দ্বেষণ। তত্র জব্য দেবতা প্রকা-শার্থ আন্ধবেন মন্ত্রাঃ পাঠ্যাঃ।

राज्या स्वास्थ्य स्वास्थ ब्लिक्स । अस्त्रमा चू गूपना निट्या गढान गुरु छ। रेडि व-तार प्रताशा । जन आटकार्ड-कर्षवाणांका विविः मृखकर् क ৰ্ত্তপাঠরহিছিঃ। শুজস্য মন্ত্রপা-ठीनिधकार्त्रीमध्बी यनस्वत्माजि পুনৰ্চৰ তৎ ব্ৰিষা গ্ৰহ্গাৰ্থ প-রিভাষার্থক। ভত্তদ ভৎকর্ম-महिष्मगरखन दिश्र उपीयकर्ष-কার্যিভূত্রান্ধণো গৃহতে। তেন ত্রান্ধণেন তত্র মন্ত্রং পঠনীয় ইত্তি ভাৎপৰ্য্যণ। তত্ত্ৰ যজুৰ্বেদিকো ম-স্ত্রঃ। তথা চ স্মৃতিঃ। আর্যক্রমেণ সৰ্বত্ৰ শুজা বাজসনেষিনঃ। ত-স্মাচ্চ ডঃ স্বয়ণ কর্মা যজুর্বেদীব कात्रदेष ॥ व्यार्वक्रत्यन मून्र-ক্তক্ৰমেণ যজুৰ্বেদিসম্বন্ধিগৃহাদি-ना। ठर्जुनी विश वर्गाना यानि প্রোক্তানি বেবদা। ধর্মণান্তাণি রাজেন্দ্র শৃণু তানি নৃপোত্তম।। বিশেষ্তম্ভ শুদ্রাণাণ পাবনানি यनीविजिः। असोप्रमभूतागनि চরিত রাখবস্য চ ৷৷ রামস্য জরু-नार्कृत धर्म कामार्थनिक्र । তথোক্ত ভারত বীর পারাশ-ৰ্ষ্যেণ ধীমতা ৷৷ বেদাৰ্থণ সকল

ताका अर्थनाजाता है अर्थन रेजि.जिन्द्रा भूतात क्रमाना भोताविकारि विवि दर्गाका कविजा। जब ह क्रांटक स्टब्स-गत्र रक्तं भूजरमाहि रहरम् द्व-विजागामानार जातक शहान-मवः मृद्यम शठनीय इकि देनशि-लाकः। তम रतार्भ्तप्त भू জাণা॰ মন্তবিৰ্ক্ত ইতানেন মন্ত্ৰ-यां निरयशं यथ्याश्रहादश्न नगकादान यदान देख्यानाना-চচ। পৌরাবিকস্যাপি আছে নিষেধঃ প্রতীয়তে। এবং স্নানে-পি। ত্রন্ধ কর্ত্র বিশা নেব মন্তবৎ স্থান বিষ্যতে। তুকী মেব ছি শৃ-खना **ननकात्रकः गर्डः** ॥ रेछा-त्नन नमस्त्रात विशाना । ११३४-জ্ঞেপি। শূদ্রস্য দিজ শুশ্রবা ত-या जीवनवान् खटव । निदेश की विविदेश कीरवर विकालि हिन মাচরন্।। ভার্যারভিঃ শুচি ভূ-ত্যভর্তা প্রান্ধক্রিযারতঃ। নমৃষ্ণা-রেণ মন্ত্রেণ পঞ্চয়জ্ঞান্ন স্থাপ্রেৎ ।। ইতি नमकात्रमाब तिशासाय आकामियू प्लोजाबिकमञ्जनित्व-ধঃ। ততশ্চ স্থান প্রান্ধ পঞ্ জ্ঞেতরত্র শুদ্রস্য পৌরাণিক মন্ত্র-

MANUAL TO A कारा स्था रहक मनग म द्वा देखि मन्यक्रनार। हूजा का-या त्रभावतः देखि वाखवदाव-ठमाक मुकाबमात्व जनम्मान्-द्वाद्यन कालाख्यम् नामविद्य-दिकात्रभगाविशानाक भूजामी-ना॰ नामकंत्रद्व वम् द्यावानिक श-ন্ধতিযুক্ত নানকরণস্য চ প্রতীতে বৈদিক কৰ্মণি শূজাণা পদ্ধতি-যুক্ত নামাভিধান জিবতে ইতি ।। ।। भू जञ्जाहबदन देववहीरर्थन ছাৰ্ছে জল সক্তৎ ক্ষিপেৎ ন পি-त्व । ज्वा ह यां कवकाः । श्र-ক্ঠ তালুগান্তিল্ঞ যথাসংখ্য দ্বি-काठयः। अस्त्रतन् औ ह मृजम्ह সক্লৎ স্পৃঞ্চাভি রস্ততঃ। অন্ততো श्रमयामि मगीरान अर्छन छेख-রোত্তর মগকর্বাৎ। অভ্যাব স্পৃ-ক্টাভি বিত্যুক্ত নতু ভকিতাভি রিতি। স্ত্রী পুত্রঃ শুদ্ধ্যতে নিত্য॰ कालनाक करतार्थरवाः । देखि ভিন্নপুরাণ বচনক। বাজ্ঞবন্ধ্যঃ। श्राधा बार्मान जीर्यन विस्का নিত্য মুগম্পূদেশ । অত্ত ৰিজ-देगाव चाहबत्म बाकाछीर्थाशा-नामा खी मूजरमा न राजनाइ-

यनः। এব यেव यिতाकतायाः वाक मूक भर्तीिका । खिया ব্রেদশিক তীর্থ শুক্তমাতে স্ত देशव छ। সङ्गणाहमना एक कि दत-তবো রেব চোভবো রিভি ॥ . এতদন खद्रः ই खिया मिन्ना में न ख ত্রাহ্মণবদেব। প্রমাণান্তরম্ভ বা-জসনেষি সামগশ্রাদ্ধাহ্নিকত खर्य। त्रनूमस्त्रयः। इंडि क्लाध-**णैय औरतिरतञ्जागायाज** শ্রীরঘুনন্দনভটাচার্য্য বিরচিত। শুদ্রহুত্যবিচারণতত্ত্ব সমাপ্ত।। শুजधर्मः भू॰ শूजमां भाखविहि-তাচারঃ। তদ্য বিবরণ শূজ-ক্বত্যশব্দে দ্রফ্টব্যং ॥ मुखियः भूः भनाषुः। इंडि व्राक्रिनिर्वन्छः ॥ শूक्रमा श्रियक-त्या बि ॥ শুজপ্রেষাঃ পু॰ শুদ্রসাপরিচার-

শুজপ্রেষ্যঃ পু॰ শুজস্যপরিচার-করান্ধণাদিঃ। ইতি কেচিৎ।। শজশাসন॰ ক্লী শুজস্যাধিকারো-লেখ্যপত্রাদি র্বা। যথা। স্যাদ-ভিষ্যন্দির্মণ॰ শাখানগর মি-ভাগি। শাসন॰ ধর্মকীলঃ স্যা-মঙ্গতিঃ শুজশাসন॰॥ ইতি পুর-বর্গে ত্রিকাপ্তশেষঃ।। শুজা স্ত্রী শুজজাভিন্ত্রী। ইত্যমরঃ। শুদান কী শুদ্রানিকার।
কথা। শুদ্রানেন তু ভুক্তেন উদরন্থেন যো মৃতঃ। স বৈ থরত্ব
কুত্তবিং শুদ্রত্বানিকার। ইতি
শুক্তিত্ব।। অন্যৎ শুদ্রণকো
দক্তিবাং।

শুজাজ র্যাঃ পু॰ শুজাভার্য্যা যস্য সংশ্রোস্থানী। ইভি ব্যাকরণ॰ শুজার্ত্তা স্ত্রী প্রিযঙ্গুর্কঃ। ইভি শব্দচজ্জিকা।

শুজাবেদী পু॰ শুজাবিবাহকর্তা।

যথা। শুজাবেদী পতত্যত্রে রুতথ্য তন্যস্য চ । শৌনক্ষ্য
সুতোৎপত্ত্যা তদপত্যত্যা ভ্গোঃ।। ইতি দাযভাগঃ।।

मृजी जी नृजमा ভাষ্যা। ইত্য-মর: ॥

मृनः े बि विक्तिः। ই छि मीशमृनवान् । छाः क कव् थ्र थ्र था।
मृना खी श्रानिवध्यानः। ই छि
हलायुं थेः ।। जरशिकि स्तिका ।
ই छ हातावली ।। # ।। शक्ष विधा मृना यथा। शक्ष मृना गृह यगा हली (श्रमृश्यक्तः। कथनी (हाम प्रस्तु । क्षा या का वाह- यत।। शक्षम् नाशाशनात्मा यथा। यनः। अक्षाशन जन्म जन्म जनः। शिन्य जन्म जनः। शिन्य विवास विवा

শূনাবান্ পু॰ শূনা বিদ্যাতে যদ্য সং। কসাই ইতি ভাষা। ইতি কেচিৎ।।

তত্ত্ব ৷৷

শূন্য ক্লী আকাশ। ইতি শক চন্দ্ৰকা ।। বিন্দুঃ। ইতি হেম-চন্দ্ৰঃ।।

मृनाः बि अिन्दिन छैनः।

অভাববিশিকः। अनुमृर्गः।

थानि ইতি পারদ্য ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। বশিকঃ ২ ভুক্তঃ ৩
রিক্তকঃ ৪। ইত্যমরঃ॥ শুন্যে ৫
। ইতি ভট্টীকাষাণ ভরতঃ॥ নিজনঃ। ইতি মেদিনী।। জা। অ;
বিদ্যজীবনণ শূন্যণ দিক্শ্ন্যা
চেদবান্ধবা। পুল্রহীনণ গৃহণ শ্ন্যাণ দরিজতা।। ইতি
চাপক্যণ।।

म्नामशः पुर नलः। देखि ताक-

भन्न

मिर्वेन्डः ॥ भूगागर्धवस्ति ति ॥ भूगावामी प्रश्तिगाडः । इंडि क्रिवेदः ॥ मास्टिक्ष्ण ॥

म्मा जी मनी। देखि विश्व-दमितिनो ॥ यहाककेकिनी । कंगीयनमा देखि था। । देखि मंस्किका ॥ वस्ता। देखि दा-क्रिकिका ॥ वस्ता। देखि दा-

मृनाणियः पुः निर्जनगृहः। जंब अवन निट्यत्था यथा। मार्कटखंबः । नूनीवित्य चेणात्न ह अर्व-वृत्क छ्रुकार्थ। यहारमवगृरह চাপি শর্করা লোফ পাণ্ডব্।। काना लग विर्ध (प्रवाना खन-পাঞ্চ তথোপরি। ন চাপি ভগ্ন-नेयदन नाउंटिंग नाउंटिः वर ्॥ मार्जवामा न नग्रम्ह नाख्या-পর্যস্তকঃ। নাকাশে সর্বশূর্ম্যে **চ नर्ड टे**ड्डिंडिंडिंटिंग छथा ॥ ने ब-পেদিতার্থঃ। ইত্যাহ্লিকভত্ত্ব ।। मृशकातः पुः मृखागाः शाहकः। यथा। मृज्यारकाणकीवी यः শূপকার ইতি স্তঃ। ইতি ত্রন-देवदर्ख अक्रेडिश्ट २१ व्यशा-सः ॥ खना मखानकात्राती **जर्केवा** ॥ **भूत ७ के व स्टब्डा। शिक्त। है** सि

কবিক্সজন্য । ত'ৰ শ্ৰাজী। ক শ্ৰা । ভড়ো জড়ীজাৰা । ইতি দুৰ্গাদাৰা ।।

मृत २ व ७ विकटन । इंकि कवि क्रमक ।। ७ जल्मुन । वि-क्रमः উनामः। ই जिन्नी नामः॥ मृद्धः भूः वीतः। ই ज्ञमतः॥ यानवः। म जू श्रीक्रममा भिका-महः। ই जि व्यक्ति ॥ मृद्यः। ই जि किका अट्यकः॥ मिन्दः॥ मृकतः॥ विक्रकः॥ मानः॥ मृकतः॥ विक्रकः॥ मानः॥ नामकः॥ ममृद्रः। ই जि ताक-निर्वकः॥

मृतकः पूर मृतितिनयः। अल इिछ जाता। जर्भशावः। का-त्माप्तः २ कमः ७। इेछामद्रः॥ मृतकः अ। इिछ जीका॥ अलः दुः । इिछ जित्रा ॥ अलः ७। हेिछ प्रमिनी ॥ क्षृतः १ कमी ५ मृक्मी २ कृतकम्मकः १० मृ-नामाद्रिः ११ मृत्वः १२ वाणा-द्रिः १७ कम्मृतकः १८ कम्पर्यक्रमः ११ वहकमः १५ कृत्राक्मः १२ मृतकक्मः १० कृत्राक्माः ११ मृतकक्मः १० कृत्राक्माः ११ मृतकक्मः १० कृत्राक्माः ११ मृतकक्मः १० कृत्राक्षाः ॥

्याजयम्मार्यः मृत स्व माणि-भाग अनुरमायकात्रियम । देखि नाकिनिवकिः।। अभि । गृतरम नीशता बनः क्यायः क्षुकृष करूर विकेशी विनाम क्राः ककार्यःक्रस्टरमा लगूः ॥ तित्य-बाम्मरम भयाः भी इ छना वि-बागबः। मर्द्धशः कम्मनाकानाः শূরণঃ শ্রেষ্ঠ উচ্যতে ।। দক্রণাণ ক্লক্তপিক্তানা স্বপ্তানা ন হিতো হি সং। সন্ধান যোগ সংপ্রাপ্তঃ শূরণো গুণরুত্তমঃ।। ইতি ভাব-व्यकानः ॥ जनाक । भृत्रान मीयत्वा कृताः क्करम् । विभागा नवुः । विद्यागामनाः भरथा। वागाकमञ्ज प्लायनः ॥ इंडि রাজবন্ধতঃ ॥ 🖝 ॥ শ্যোনাক-वृक्तः। देखि भक्तभागा।। শূরণোন্ড্র পু॰ হরিজাঙ্গকী। इंडि नक् हिन्दिका ॥ मृत्रामयः पू॰ ठजूर्बि॰मिछिछ।या-्रेर्म खर्ग जार बिएन सः । देखि ८२-यहन्द्रः ॥

শূরসেনঃ পু॰ রাজবিশেষঃ।।
দেশবিশেষঃ। যথা। শূরসেনো
বদুপতি র্মপুরা মাবসন্ পুরীং।
মাথুরান্ শূরসেনাং শ্চ বিষযা-

मूर्लकः शृ अमृत्रविष्मवः। म ह कागरप्रवागजूः। हेलि एहग-हक्तः॥

मृर्शवर्गः भू॰ इखी। ইতি ত্রিকাঞ্জশেষঃ।। সল্যত্ল্য শ্রুকি ব্রুক্ত ত্রি

শৃর্পকারিঃ) ইভি হলা যুধঃ।।

শূর্পনিখা স্ত্রী রাবণভগিনী। ইভি

শূর্পনিখা স্ত্রী রাবণভগিনী। ইভি

শূর্পনিখা স্ত্রী বাবাজাশরক্ষত্নাবল্যো

শূর্পনিশি স্ত্রী শিষীবিশেষঃ।

ইতি শক্ষচন্দ্রিকা।।

শূর্পবাতঃ পু॰ শূর্পসা বাষুঃ।
স্বলারবাতাস ইতি ভাষা। তৎপর্ব্যাষঃ। ফুল্লফালঃ ২। ইতি

बिका अटमका। শূর্পঞ্চান্তিঃ পু॰ হন্তী। ইতি হারা-मृगी जी क्जमूर्णः। हेज्रानानि-कायः ॥ भूर्भनथा। इंडि भक्-याना ॥ শূর্মঃ পু॰ লৌহপ্রতিমা। ইত্য-यत्रविकाषाः त्राषम्क देः ॥ শূর্মিঃ স্ত্রী লোহপ্রতিষা। ইতি ভরত দ্বিকাপকোষঃ।। मृर्त्विका / खी लोहश्राह्य । हेडि **मृत्री** भिक्तत्रशावनी ॥ ৰুজাযা । ইতি কবিকন্প-ক্রমঃ।। দীর্ঘী। শূলতি লোক রোগঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

प्राप्ता राजप्ताना । स्वाप्ताना । स्वाप्तान

कीनः। इंडि ध्त्रिनः ॥ वाषी। इंडि क्हिंद् ।। विद्कुलकुर । यथा। अग्रेश्ला कनशमाः निर-भूमा भर्जुन्भशाः। अवनाः (क-भग्नित्या खरिवाखि करनी यूर्ग ॥ इिंछ महाভाরতে जामि-शर्व ।। अथ मृलांशिकात्रः। তত শূলসা मिक्किके निमान बाह । पाटेषः शृथक् সমস্তाম षटेम्द्रः मृत्ना श्रुशं जत्र । म-र्दिष्यः छम् , मृत्वम् आरयग भव-नः थकुः ॥ थकुः कर्छ। ॥ 🛊 ॥ ৰাতিকস্য বিপ্ৰকৃষ্ট নিদান সং-প্ৰাপ্তি লক্ষণ মাহ। ব্যাষাম পা-नामि छिरेमथूनाक अङ्गागता छजनामिभाना । कनाव मुम्ता-চকি কোরদূষাৎ অত্যর্থ ৰক্ষা-ধ্যশনাভিঘাতাৎ।। ক্যায় তি-ক্তাতিবিৰাটজাম বিৰুদ্ধবন্ধুরক अक्रमाटेकः। विष्डूक मूर्वानिन সন্ধিরোধাৎ শোকোপরাসাদ-ভিহাস্য ভাষাৎ ॥ বাযুঃ প্রবৃ-क्ला जनरविक मृतः सद शृष्ठ-भार्थ बिक विख्रामान । जीर्न अत्माद्य ह घनागत्य ह भीटि ह कान नमूरेनि गाउ ॥ मूह মুঁহু শ্চোপশম প্রকোগৈ র্বিণাত্র

সংস্তম্ভন ভোদ ভেদেঃ ৷ সংস্থেদ-नाजाक्षन यर्पनाटेलाः विद्यास **ट्याटकाम्ड मयः अवाणि॥ बा**न यारिंग यहायुक्ता निः। शानः श्वकः गत्रगामि । देवपूर्वः जीत्नवा । প্রজাগর রাত্রৌ। এবা মতিবো-गां । कनार जिन्देः। वापकी ত্বরী। কোরদূষকঃ কোজবঃ। অভ্যৰ্থকক্ষত্ৰব্যদেব। অধ্যশ-ন॰ ভুক্তস্যোপরিভোজন॰। অ-ভিষাতো লোফাদিভিঃ৷ ক্ষাষ তিক্ত ব্লসসেবা। বিৰুঢজান্ন বি-बाउ मझूतिङ यद्य कलाय भाकानि তজ্জনম॰ ভক্ষা॰। বলুর॰ শুদ্ধ-মা'স'। তস্য শূলস্য দেশ মাহ। समयामियू॥ 🟶 ॥ छमा सम्हलमा পৃথগপি লক্ষণ পঠতি। কফ পি-ভাবরুদ্ধন্ত মারুতো রসবর্দ্ধিতঃ। शिष्टः अकृत्व भूल मूक्क्षानमा। বরোধক ।। স কছেল ইতি খ্যা-তো রস মারুত কৌপজঃ। 🟶 । পাৰ্শ শুলস্যাপি লক্ষণ মাহ। কফ॰ নিগৃহ্ণ পবনঃ শূচীভি রিব নিস্তু-मन्। भार्षकः भार्यसाः मृलः স্ব্যাদায়ান সংযুক্ত ।। তেনো-চ্ছুসিতি বক্তেুণ নরোমঞ্চ ন কা-ज्काञ् । निर्फाक नाश्रयात्मय

भार्यभूवः क्षकीर्दिकः ॥ • ॥ विश्वनिमानि नाकन बार । मः ताशा । क्रिका बाब् त्रहि সংশ্ৰিত্য তিগত। বস্থি বঙ্ক । না-ভীবু ভতঃ শূলস্ত জায়তে।। বি बूब वाक मर्द्राधी विखन्तः म উচ্যতে।। 🛊 ।। अञ्चल यनुगति। জীর্ণে ভূকে। প্রদোষে রাজ্যা ক মে রাত্রিভবশীতেন ৰাতপ্রকো-शार । घनागरम वर्षाम् त्यरमामः त्य ह ।। का। छटेथव टेन खिक बार्। कात्राििजी कांक विमाहि देखन निष्णाव शिशाक अवश्ययूरियः । क वृञ्ज मोवीत मूताविकादेतः व्या ধানলাযাস রবিপ্রতালৈঃ॥ আ-गाि दिशाशाम् गरेन विषर्भः शि-ত্ত॰ প্রদ্নপ্যাশু করোতি শুল॰। তৃণ্মোহ দাহার্তিকর হি নাভ্যাণ मत्यम गृष्ट्। जुन त्नावयूकः।। मधा॰ मिट्न अभाकि ठार्फदार्व निमायकारन जनमाञार्य চ। শীতে ২তিশীতৈঃ সমুপৈতি শা-স্তি সুস্বাদুশীতৈ রপি তোজনৈ का। निल्मात्वा ताक्रमायः। भी বীর॰ সন্ধানভেদঃ। সুরাবিকা-देवः। পরিপঞ্চান্ন সন্ধান সমূৎ-পন্ন। সুরা মতা। তস্যা বিকারেঃ।

রবিপ্রতাপ আতপঃ। আম্যাতি-त्यारमा देवभूनाधिका । विमारी क्राक्नाणि बगरेन विमरेक विकि व्याथमञ्ज। अविमाहि वस्त्राभि শিৱবশাৰিদাহিত্ব ভবতি। জ-नमाज्यस्य नंत्रमि । भीएव भीछ-कारना भीरेड बांडामिडिः।।का देशीयक यारु। चानून नातिक किना छे शरवाविकादेत या रमक् পিষ্ট রুশরা ভিলশস্কুলীভিঃ। অন্যৈ ৰ্লাসজনকৈ রুপি হেন্তু-ভিশ্চ শ্লেষ্ণা প্রকোপ মুপগম্য করোতি শূল ।। হলাস কাস স प्रभाक्ति में श्वाप्तिक त्रामा **ग**रव স্তিমিত কোষ্ঠ শিরো গুরুবৈঃ। जूंकिः मरेमव हि क़क मक़रठ-তিমাত্র॰ সূর্য্যোদক্ষে ২থ শিশিরে अम्मागत्म ह।। चान्शः वर्कन म्मिकः एकाः। वार्तिकः मानृ-कामि। किलाउँ। शकु मद्रा मन कौत विरक्षमा मधिकृष्टिका । তকেণ তক্তऋषीं मार्क्रियाः नि-धः किना हेकः।। शरवाविकातः भायमापिः । शिके यावापिः । অন্যৈঃ গুৰাদিভিঃ স্তিমিত মা-ৰ্ডচৰ্মাবগুণিত নিব যৎ কোষ্ঠ শিব্লশ্চ তবো র্থক্রবৈঃ সহ ৷

मृत

मूर्याामय देखि खिशाविज्छान वम अध्यक्षाभरमाभागस्य त निनिद्धा छत वर्केसाच्यास । पन्यास्त्र स्थान क गर भगवास कारता दारे विकासक विकासक ॥ के प्र बिद्रमार्थक मार । मत्त्रम् (मदनम् जनस्मिन विन्हास्तिक जर्ब व हि भूम । भूकके ध्यम विष वकुवृद्याः विवर्जनीयः वम् छ छ-क्छाः।। गर्दम् प्रत्मेषु स्ट गृष्ठे পাৰ্শ্ব ত্ৰিক বস্তি নাভ্যামাশবেষু 1 गर्बा जर॰ जित्ना यंजि॰ भूल॰ बि-ন্দ্যাৎ। সুক্ষসাধ্য বিষ বজুতু-लाः यो त्रवाचाकचार ॥ 🗱॥ व्याय-জ নাহ। আটোগ হলাস বনী গুরুত্ব॰ স্তৈমিত্য মানাহ কফ প্র-रमदेकः। ककमा निष्मम मनाम निक्र भारमाख्य भून मूमारुत्रि ।। क्षमा क्षम्बमा। वात्रा-ন্তবং আমাদুভবে। যস্য তং শূলং ৷ অত্রামাচ্ছলে জাতে পশ্চাদ্দো-য সম্বন্ধঃ। অতএব শূলস্যাষ্ট্ৰ যুক্ত । স চ প্রথম মামাশযে ভ-वि**छ भ**ण्ठा । गम्निक्ति । येख নাভি হৃৎ পাৰ্শ্ব স্থান্য ভবভি यथा (कार्यमश्रक्षः ॥ 🐲 ॥ व्या म-

भूकना मार्चिदिभारम् सम्भवि-শেৰ মাহ াৰাভান্ধক বন্তিগত केरिक में प्रदायक हानि वास्ति माखाः । क्रियाचे परमा कव महिरक में में के लिएन हैं महि भाषार ॥ बेरे गांच करको हार-गार्चाणा मेरिट मक्ती करू यमिविके कर्रकमीविके ॥ 🐞 ॥ ত্রান্তরোক্ত মানশূল নাহ 1 অতিনাত্ত' বদা ভুক্তণ পাবকে गृमुजा॰ गरा । जित्रीक्रव उद क्लार वायूनाव्छा विश्वेषि ॥ ৰদান ন গত পাক তচ্চ্ল अकृटा ज्ना । मूर्क्शाम विमा-क्षण्या क्ष्याला मार्चित्रकिकः ॥ কম্প ৰাত মতীসার প্রমোহণ জ-नत्यमि। अविभादकार्ख्यः भृव মেভ নাহ শ্মনীষিণঃ ৷৷ অবিপা-का**द्धर॰** व्यात्माद्धर मिलार्थः॥ः॥ **শূলস্যোপজবানাহ। । त्वन**नाङि তৃষা মূচ্ছা আনাহো গৌরব জ্ব-রঃ। ভূমে। হরুচিঃ ক্লশত্বঞ্চ বল-হানি স্তথৈৰ চ। উপদ্ৰবা দলৈ-বেতে বস্য শূলস্য নাস্তি সং ৷৷ ॥ णुलिटेमाव एकप॰ পরিণাম याह। देख धिनाटेनः श्रम्भिट्या বাষঃ সমিছিতো যদা। কফ পি-

हर ममान्छा गृमकादी उदब्जी ॥ ज्ञा कीर्याच्या स्वर स्वर পরিণামক । देव তাদিনা নিদান প্রাক্ত वि स्वा। स्कृति पिना नक्ष गुरुः। बहानुक का शाक्षा अवासक्र समाव-अव-वित्मय नाइ। स्रीति क्रीर्याणाकी-(न वा यक्त मूशकाब्दा । शका-পথ্য প্রযৌগেণ ভোজনাভোজ त्नन वा।। न नयः याजि नियमा भाषाय उपाष्ट्र । तमः भू-ল মসাধ্য॰ চিকিৎসাভিধানাৎ। ॥ 🗱 ॥ जय भूनमा हिकिৎमा। ব্যন॰ লঙ্খন॰ স্থেদ॰ পাচন॰ কল-ব র্ত্তযঃ। ক্ষারচূর্ণানি গুটিকাঃ শ-गारख भूनभाखरम।। विद्धाम वा-তশূলম্ভ স্নেহ স্বেদৈ রুপাচরে । **गुन गना। जनमा मा। ६ ८४ म ७**-वम्थावशः ॥ मृखिका॰ मजना॰ शाकाल्बनीज्ञा॰ शटि किर्शं ৷ ক্ৰয়া তথ পোটলী শূলী তথা स्थिन विशायरयः ॥ मृज्जिकारयः मः॥ 🛊॥ कार्भामान्त्रि जनियका **जिल यदेव दिवस्थान्याज्यो वर्षा-**ভূ শণবীজ কাঞ্জিকযুতৈ রেকী-क्रुटेंठ दी शुथक्। स्यमः माम्य

कूर्राद्वामत्र भित्रः किर्ग् जान् श्री-गानुगी ७६ कम् वर्गिक्टका विः बर्द्ध निस्तार नागरिक अ बर्गानाशामिद्यमः॥ ।॥ कि देश के शिका क्षा जास्त्रक ब्रेद्वाशिति। भूगः मृम्खद्रः एव শান্তি গছতে সম্বর ৷৷ নাতি ब्बशाक्दरक्षण महन काञ्चि-का विष्ठः। यहनेः ययनकृतः॥॥। বিশ্ব মেরওমূলত্ত কাথ ক্রম্বা শৃত शित्व । शिष्ट्र स्रोवर्फलारभण महाः मूलिनिवाद्रगः ॥ 🐞 ॥ १७७ শালি ষবাঃ कीत्र मर्शिः शानः वि-द्रिष्ठनः। जाननानि ष्ठ याः नानि **ভেষজ॰ পিত্ত শূলিমা॰।।#।। यनी** রব্জত তামাণাণ ভাজনানি গুৰাণি চ।তোবেন পরিপূর্ণানি শলস্যো-পরি ধার্যেৎ।।।।। বিরেচন পি-ভহর প্রশস্ত রসাশ্চ শস্তাঃ শ-শ লাবকানা গঞ্চা সগুড়া বৃতস যুক্তাণ ভক্ষযেদ্বা ইরীতকীণ। প্র-লিছাচ্ছলশাস্তার্থণ ধাত্রীচূর্ণণ সং बाकिकः ।।।।। गानामः जाननः मा॰म मतिखे॰ क है क॰ त्रमः। मधूनि कीर्वाश्यः क्य मृत्व अरशकः যেৎ ॥ অরিউ ভেষজকাথসিত্ব मला ।। # ।। व्यवज्यम युक्त श-

करकानः महायके। मूट्यारकना-बूना शोखः कक मूनः अना महत्र ॥ ।। बायभूरम कियाकारी। क्रम्ब ध्वामिनी। त्रदा स बस्दः गर्वः समा समिदि वर्षनः १६० । शिकासक्त मन्त्रा milité dans lectues est महिकार नर्ग कुन किरावन । कीका वाजिका ॥ बना मक्टेर-यर्छी कर्छ मछास्य विक् रेक्स देवः । अञ्चलित्वः मूर्यादेकन्छ बिरणाक्त्रगृट्याबद्धः ॥ **।**।। वृ बाः देवबः जदेशव्यकः विकारः वि श्रास्थिक । हिन् रेमक्र मध्यक त्रफाः भूमनियात्रभः।। वाङ द्वा-গান্তৰ্গভাষান চিকিৎসাৰাং লি বিতো নাক্লাচনাৰা ব্ৰসোৎন্যক্ত विद्राहमः मृत्व विष्ठः।। अयो-**७॰ छन् ऋष। जू हिषा यदर्य विरम्ध** यरय । ज्ञाना। निकिशा छ । স-ৰ্ছ পিখানেন বিধাপ্য চ।। চূল্যাণ निद्वना दङ्गिक बानद्व अन-লো জনঃ। ৰথা তত্ত্ৰ ভবেন্দ্ৰ 🔻 किसुनाता मृता जत्य ॥ जन निकां शरक्षी ७ कृ विंठ कृ विंद कु **७॰। भारप्रधियः जारक्ति**हुर्ग॰ 🗣 মিশ্রিত ।। জলেন ভক্ষবেদ্ধি-।

छाः यश्रम्बाष्ट्रता नदः। छ-गाधा यि यष्ट्रवः जनत्मार्डन नागाजित क्षां अकात ।। ।।। व्यथ शतिकाम् वसा विकिৎमा। मबान-धान-वर्गान्यन न विवास क्षित्र क्षित्र विवास में प्रकारिक स्थानित क् निकारिकासमाथ गामूछ॰ । नावसम्बद्धाः द्वापः काक्का को केर ।। कवाक वाथ निवान कर्डेज्बीक्रा वहां। यथा-विशि बदमकी जान् शिक्षण्यार्थिन छा कनभा जिव्छा ह छथा मञ्जा देखरमरेनद्रथरजन वा। मख॰ वि-বেচন সদাঃ পক্তিশূল নিবার-বেৰ দ বিডক তখুল ব্যোষ জিকৃদ্ধন্তি সচিত্ৰক । সৰ্বাণ্যেতা-नि यःगृश मृक्कपूर्वानि कात्ररय ॥ धर्फन त्यामकान् कृषा थात्म-मूरकन वादिकाः जत्विकामा क॰ मृतः পরিগাম সমৃত্তব॰।। বি-**ज्ञा**षि याष्ठः ॥ 🛊 ॥ नागत তিল গুডকদ্ধ প্রদা সংগিষ্য যঃ পুমান্ লিছা । উগ্রু পরিণতি-শুল নশ্যেত্তস্য ত্রিরাত্তেণ।। পী-ত॰ শযুকজ॰ ভস্ম জলেনোফেন তৎক্ষণাৎ। পক্তিজ নাশ্যত্যেব

णु हो

भूले॰ विकू तिवामूत्रान्।। लाह नवा कना खरी हुनं नमधू मिन य। विलिश्न विनिश्द छाव भूल॰ वि পরিণামজ । भागिमितनाइ॰ ॥ ।। नातित्वन महजात्र व-बर्गम गुण्डिक । म्याक्यारीक RE NA CAMPANTAL N. PA-भ्रता अक्ट रहि भव रिश রিণামজ । বাভিক গৈতিক । পি টোমিক সামিপাছিক 11 नातिरक्लकातः ॥ भाग व्यथान-দ্রবস্য চিকিৎসা। অন্নদ্রবাথ্যে শূলে জুন তাবৎ স্বাস্থ্য সন্মৃতে। ষাবৎ কটুক পীতাম মন্নণ ন চ্ছ-र्मरम्पुवः ॥ ज्ञान्याद्व जन्न-পিতে শূল মাশু বিনাশবেৎ। পিত্তাৰ্ত্ত॰ বমন ক্ষমা ক্ষাৰ্ত্তঞ বিরেচনং ৷৷ অন্ধত্তবে চ তৎ কা-र्याः जत्रधिरातः समीतिष्यः। ज-রৎপিত্তেপি তৎপধ্যা প্রোক্ত ম मजरव जू य ।। जामभका नरम **एक गटक्मनजर्वः समा** । या-ষেপ্তরী সলবণা সুষিদ্ধা তৈল পাচিতা ।৷ তাদৃশী সৰ্পিষা খা-पिनमज्ञविनिशी जिल्हः । शाबीक-লভব॰ চূর্ণ ময়শ্চর্ণ সমন্বিত। ।। यकी हूर्वन वा युक्के लिशा ९ तकी-

एक उमारि । नामाक उपूरेनः সিদ্ধ সিদ্ধ কোত্রব তণুলৈ।।। থিষক ততুলৈঃ নিদ্ধ-পায়স- স-সিত হিতা। প্রিমন্থ কলু বিশে-বছণ গৌতিক পোরণ কলা ছ-न्या अवशि छक्त वर्ष । कना व सर्-भक्त वा भक्त वा नाकमभू-ভান্দা গোডিক স্তডেন সংস্কৃতি शकामणा का अन्यमकृतश्रा मशामामाधिक छथा। छनकाना यत्था भक्त् (काजवरमा) नन छ-था। प्रधिकः प्रश्ना मःकृष्ठः ज्ख्यः। मरहित है जि त्लारक।। क्षारगा शूम-ৰণ্ডক তত্ত্ৰ সৰ্পিষা গুড সম্যুক। मिन् भीन्याका मृतिक क-থিত হিত।। অন্নদ্রবো দুশ্চি-कि॰ त्या मूर्वि एक त्या वश्यमः। তস্মাত্তস্য প্রশমনে পরশ্বত্ন স-মাচরে ।। অমজবে জরৎপিত্তে विद्व र्यत्मा ज्यामानः। जन्माम-ত্রালপানাশি মাত্রাহীনানি কার্ন-रंग्य ॥ कार यह त्राधुमाः नागिमाकाः कात्रम्यकाः। ताज-मायान्त मायान्त अलयाः कश्र-भानगः ॥ एधिन्श्वतमः कीतः मर्लि र्गवा॰ मयाहिषः। वाख्रुकः कात्रब्ली ह करकी है करका नि है।।

वर्षित्वा रिवा विकास दिना दिना । मााः क्रिक्नाः। अञ्चित्रामस्य भेडा वडा वृतिहिक्शिक्षा निविष्यतेमः पता गूछः इत्हा त्रां वना ७९ कीतः निवयुक्तः नीत्र मिछार्यः ॥ ॥ ।। ।। ।। ।। ।। পথ্যানা চূর্ণ প্রত্যেকশঃ পল া বিপল লোহকিউসা তৎ সর্বণ यश् मर्शिया ॥ मयात्वाषा मय-बीयापक्यांब॰ अयान्छः। जा-দিষ্যাবসানেৰু ভোজনঙ্গা নি-ছস্তি তৎ।। অমদ্রবণ জরৎপিত্ত बञ्जिभिछ॰ जूमाक्रनः। পরিণাম স **भूथक भृतः जः**यद्य महत्राचिछः ॥ धजबखूत॰।। ●।। व्यायान॰ देनथु-ন॰ মদ্য॰ লবণ কটু ক॰ রস॰। বে-भरतायः एकः दकादः विषयः ग्-नवान् जारकः ॥ इति मृनाम श-রিণানশূলামতাব জরৎপিতাধি কারঃ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ ব্দিপি চ। অর্কপত্রণ গৃহীয়া তু बन्माद्यो जाशरयष्ट्रितः। बिन्नी-णा शृतरम् करने कर्नम् तः विम-भारति।। ।। माञ्चनक वृष्ठ की-ख॰ नवन॰ **ठा** गुंजाकरन । कृके शयः नयाग्कः हक्ःभलङ्गः श-র॰॥ সাঞ্জনক ইত্যক্ত তাগুলক

रिक्रिया नाउः ॥ ।। हुन मात्र-लकरमाब भीजः भूतार्त्रः भन्नः ा रेकिगोब्रटफ ४४०। ४४०। ३२४ व्यानाः ॥ । किन । नाबुज रैन क्वर कारता ब्राजि-का नवन विष्ठ । कर्षे लाइ-রজঃ কিউ ত্রিবৃৎ শূরণক সম ।। विव भागृज भवमा यमभा-ৰক পাচিত। এতচাগিবল। **চূ**न शिरवन्रकन वारिना। की-र्द जीर्द ह जुकी अवामि ষ্ত ভোজন । নাভিশূল মূত্র-**मृतः खन्म** सी रजवक यद ॥ नर्ब॰ मूलइद्र॰ हूर्न॰ फर्रेतानल मीभवः। পরিशास সমুখদ্য मृ-नगा ह हिन भन्न ॥ देनि शक्टि ३३३ व्यायः ॥ 🛊 ॥ ভস্য উপপদসজন্ব যথা ৷ জ-रनामत सहरू भीर गुनद्वाश विगानि ह भागाजीर्ग कर्त्र व्हर्णि ज् म बोर गव अशः। त्रकार्नुम दिमणीमा डेंगगालाख्या ग-শাः।। ইতি শাতাতগীয় কর্ম-विभाकः ॥

भृतकः भुः पूर्व्खरगिष्ठः। ইতি ह्लायुशः॥ अत भृकन हेळाल भारता मृगारा । स्था। विनीजस मार्वारी मूर्विनेक्त नूसनः। रेडि (र्माज्यः।

भूगश्रीः श्री वामाप्री। इंडि तामनिर्वकः॥

শূলযাতন° ক্লী ৰণ্ক । ইতি শন্দচন্দ্ৰকা।।

भृतप्रः पृ॰ ज्युमन्नः। ইতি
तज्ञमाना।। भृतपाज्यकि वि।।
भृतपि पृ॰ हिन्। ইতি तज्ञमाना।।

भूनधवाँ पू॰ भिकः। ইতি भक-त्रज्ञावनी ॥

मृत्रधतः पूर् मिदः। **रेडि नस**-त्रज्ञावती ॥

मृनधता खी कूर्गा देखि अप-तज्ञावनी।।

শূলধারিনী জী দুর্গ। যথা।
সতী সাধী ভবঞীতা ভবানী
ভবংষাচনী। আর্যা দুর্গা জ্বা
আদ্যা ত্রিনেত্র। শূলধারিনী।।
ইতি তন্ত্রসার যুত ভক্তনামভোত্রণ।।

मृतक् जी मूर्गा। इंडि बिकाछ-त्यवः॥ यशास्त्रत पूर्॥

শূলনাশন॰ ক্লী সৌবৰ্জলন্তবৰ । ইতি হেমচক্ৰঃ।।

म्बनवी की म्बीइन । रेंडि

गृशिकी

ब्रोक्निर्नेनेः॥

म्लपद् भ् अत्रवक्षा देखि भक्तिका ॥

भूगरबी जी बनागी। रेखि ब्राज-निर्वकः॥

मृतम् १ हिम्। इंडि जिका-अरम्यः॥

শূলা জ্বী দুউবধার্থকীলকঃ।। বেশ্যা। ইভি বিশ্বঃ।।

मृनाकृष्ठः वि निशामिननाक्या विकः भक्षाःगः। कवाव देखि भात्रगाजाया । जदभद्यायः । जिवः २ मृनाः ७। देखायतः॥ वानिजातः ॥ देखि क्रिवादः॥ मृनिकः ६। देखि क्रिक्तिका ॥ मृनिकः ६। देखि क्रिक्तिका ॥ क्रमाखनाः मृनामस्य क्रियाः मृनिकः की मृनाक्ष्यः। देखि म्याद्यका ॥

मृतिकः भू॰ मनकः। इंडिट्स हिन्दः॥ मृतस्टिङ दि।। भृतिकः भू॰ ভाषीत्रवृकः। ইडि

म्बिनी खी कर्गा। यथा। धमिनी म्बिनी खोता गिनी ठिकिनी उथा। मधिनी ठिमिनी दौन जुबुकी शतियावूंशा। देखि सि-बीमाहाबार।।

भूगान

শূলী পু॰ শিবঃ। ইত্যুদরঃ।।
শশঃ। ইতি ভাকপ্রকাশঃ।।
শূলান্ত্রধারকে শূলরোগকুরে চ
ত্রি। বয়া। বজুরে বিশ্বনি
করা বাংলা করা বিশ্বনি
করা বাংলা করা বিশ্বনি
ভাগেন জাবতে তথ প্রবৃত্তি তথা
করা জগেমরঃ।। ইতি শাতা
তপীয়কর্মাবিপাকঃ।।

मृनी खी ज्वरजमः। ज्यभगारः

1 मृनभनी २ जमाशं ७ शूतमृनिका ६ जनाश्रमा ६ वर्षमठा

७ भिक्तिना १ मिकिन वरः। द्याव्यक्ता श्वरूषः। भिक्ति वरः। द्यव्यक्तवः। भिक्ति वर्षः। द्यव्यक्तवः। भिक्ति वर्षः। द्यव्यक्तवः। भिक्ति वर्षः। द्यवर्षः। मृक्षतृष्णिका दिवषः। इं

द्राक्ति वर्षः।।

भूत्ना९था जी मामद्राजी। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা।।

শূল্য তি শূলাক্ত । কবাব্ ইতি পারস্য ভাষা। ইতামরঃ।। ভৎপাকপ্রকারো ফথা। কাল-থণাদি মাণসানি গ্রথিতানি শ-লাক্ষা। মৃত সলবণ দ্যা

निध्रा महत्न भटिए।। एतु भूमा बिछि প्राक्तः भाककर्य-विक्रमदेनुः । अमा खनाः। य नाः नगा साम्या नग निहरूत ATT BY AVER TO RE कि निवास कि विभाग हिल्लामध्य अन्त स्वासाः नाइक्नात्म कुठनाः ॥ न्व अवदि। इति कविकाक्यः ॥ भूषाङ्गा इंडि मूर्गामांमः॥ मृचः वि अंबः। रेजूमामित्कावः ो। अंदृत्त । मक्र इंडि मिदी देंडि , ह छोवा। वद्या। दङ्ख्य मया-बुक्क भिष्मुबामि निर्म्मिक। वा-भा प्रिति मूर्ण्यक गृशान शत्रत्य-श्रित्र ॥ देखि कालिकाभूतान ॥ मुक्तः भू क्रांकः ॥ व्यथात्रा । हेजुानामिटकासः ॥ म्कालः • भू• भृगालः । ইতি

শশচ জিক। ।।

শৃগালঃ পু॰ পশুবিশেষঃ। শেষাল্
ইতি জাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। শিবা ২ ভূরিমায়ঃ ৩ গোমায়ুঃ ৪
মৃগধূর্তকঃ ৫ বঞ্চকঃ ৬ ক্রোফুঃ
৭ ফেরুঃ ৮ ফেরবঃ ৯ জয়ুকঃ ১০
। ইত্যমরঃ ।। সৃগালঃ ১১ জয়ুকঃ ১২ মূত্রমন্তঃ ১৩ সরবঃ ১৪

বোররাসনঃ ১৫বন্ধা ১৬ কেরঃ ১৭ শ্বর্ত্তঃ ১৮। ইতি শব্দরত্না-वनी ॥ नाना बुकः ३२ (गामी २० करेशाहकः २३। इंडि इही-श्वः ॥ मिवाल् १३३ द्सवाकार रावुनावकः ३६। हेकि वाक निर्यकः ॥ रेम्छारज्यः । ३७ त्यमिनी ॥ तामूदमवः ॥ सिर्भूतः ॥ थनः। इंडि माद्रवज्ञानिशानः ॥ जीकः । इजात्मकार्थाकारः ॥ 🗱 ॥ मृगालमकामीमा 🐯 ভাশুভসূচকৰ থথা ৷ অনুর্থ-হেতু গতি শৰহীনঃ সদা শৃ-गानः थन् म्ख्याबः। नस्र हि ৰামা গতি রস্য শস্তো বামো निनातमा निनि यो बहुना ।। হুবা হুবেতি প্রথমণ ততন্তু টটে-তি দীর্ষঃ সূতরা॰ রবো यः। স্কা-জ্বযুকানাণ সমতঃ প্রশস্ত স্ত-मनाक्रभः क्षिञः अमीखः ॥ गृगालगटमा जियान निमायाः মুচ্চাটনার্থ দিশি পশ্চিমাষা। প্রাচ্যাণ ভষাযোত্তরতঃ শিবাব ভবত্যবাচ্যা ভবনাশনাষ ॥ ইতি বসম্ভরাজশাস্থন ।। मृगानककिकः भू॰ क्रुगिविटम्बः। শেষালকাটা ইভি ভাষা। ইভি

भक्ठिक्का ॥ भृगानरकानिः भू क्जरकानि-त्कः। (भयामन् ३७ ज्या। . जर्भशायः। कर्ककः २ । देखि ब्रह्माना। जलि ह। जथ हा-की ७ शामात्याकी ८ वमन ७ न्यानित्रक ७ ७०। वनती मन्टम मृत्रकटल वृत्क हजू से वः ॥ इंजि भक्तकावनी।। শুগালঘন্টী স্ত্রী কোকিলাকঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ শৃगानकषुः जी गापुषः॥ या के किला है जि सिन्नी।। শৃগালবিষা স্ত্রী পৃশ্বিপণী। ইতি ताक्विर्यक्रः ॥ **मृगानिका जी मृगानगत्री ॥** बामा ९ भनायन । इं जि स्मिन নী।। ভূমিক্যাঙঃ। ইতি জটা-धदः ॥ कृष्यग्गानः । (थॅक्रम-बानी देखि ভाষा। তৎপর্য্যাयः । লোমালিকা ২ দীগুজিস্থা ৩ किथिः ८ एकामूथी ७ । रेडि ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ मृगानी खी विखवः। शनायन মিতি যাবং। ইতি ত্রিকাণ্ড-लियः ॥ काकिनाकः ॥ वि-मात्री । **रे**णि त्राजनिर्यन्धेः ॥

मृशानिका ह।।
मृश्रमः जि प्रशान कहेगा छत्तनः।
स्माहे हे छ छाता ॥ हर्खा मीनाः लोह स्वभाष बर्द्धा भक्तः।
जोष्ट्र हे छ मा छुका हे छ छ
छाता। छ पर्याप्तः। छ प्रकः २
निभफः ७। हे छ प्रमानः। छ प्रकः २
निभफः ७। हे छ छिका याः छ त्रछः॥
स्माह छ छ छिका याः छ त्रछः॥
लोह त्रछ्यः। मिकल विष्ठ हेछ। प्रि छ। या।। बन्ननः। हे छि
एह सहस्रः।।

শৃথলকঃ পু॰ উষ্ঃ।ইতিরাজ-নির্যকঃ ।। পলামন নিবেধাম-পাদেরু দারুময় পাশলক্ষিত ক-রভঃ।ইত্যমরভরতো ।। শৃথ-লশ্চ।।

শৃখল। ত্রি নিগডঃ।। পুশ্করী-বস্ত্রবন্ধঃ। ইতি নেদিনী।। অ-নাৎ শৃখলশব্দে ডক্টব্যং।।
শুখলিকঃ তি শুখলাসকেং।

শুখালিতঃ ত্রি শৃখালাযুক্তঃ। নিগডিতঃ। ইতি ধনঞ্জাঃ।।

भृथनी जी काकिनाकः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শৃঙ্গ ক্লী পৰ্বতোপরিভাগঃ।তৎ পর্য্যায়ঃ।কূট ২ কূটঃ ৩ শিখ-র ৪। ইত্যমরঃ।। দ্বান্তঃ ৫ প্রা-গ্ভারঃ ৬। ইতি জটাধরঃ।।

দৈলাগ্ৰণ ৭। ইতি ত্ৰিকাণ্ডলেষঃ श जानुः। इंछि नानार्थ अवतः॥ প্রভূষণ । চিহ্নণ। ক্রীডাজলযন্ত্রণ ।। বিষাণ ।। উৎকর্মঃ। ইভি নে-मिनी।। छेर्बुः।। छीक्नः॥ शहकः। इंडि नक्त्रज्ञावली ॥ गश्यानि-म्बिर्मिख्यामाविटमयः। भिका इंडि ভाষा। यथा। कि विनागाय মনো দংখুজাৎ প্রাতঃ সমুখায वषमा वयमभान्। अत्वाधयन् শৃঙ্গরবেশ চারুশা বিনির্গতো বৎ-मभूतःभाता हितः ॥ देखि 🕮-**ভাগবতে ১**० ऋटेम्न ১२ अधारिः ।। कारबाटजकः। यथा। भृङः हि মন্মব্যৈন্ডেদ স্তদাগমন হেতুকঃ। উত্তমপ্রকৃতি প্রাযো রসঃ শুজার ইব্যতে ॥ ইতি সাহিত্যদর্পণঃ॥ #।। গোশুঙ্গ প্রথায় শিচত । যথা । खरामव ७ प्रेष्टुण यस्त्र मन्। ज-স্থিতক গবা কৰা লাস্থলচ্ছেদ্-न ज्या । शाहित कर्गम्याना गामार्कंड यवान् शित्व ॥ चित्र-রাঃ। শৃঙ্গভঙ্গে স্থিতকে চ চর্ম-নিৰ্দ্মোচনেপি বা। দশরাত্ত চরে-च छु॰ मुक्त मा यिन भी छंतव ॥ ভবদেবভট হরিনাথোপাধ্যায-ধৃত॰ সম্বৰ্ত বচন॰। শৃঙ্গভঙ্গেন্থি-

. भृत्रम्

ভঙ্গে চ কটিভঙ্গে তথৈব চ ৷
বিদি জীবতি বণুাসান্ প্রাষ্শিক্তঃ ন বিদ্যান্ত ৷৷ অত্র বণুাসোত্তরমরণে তদ্দোব শমনাষ
প্রাযশিচন্তঃ নাস্তি তদভান্তর
মরণে বংপ্রাবশিচন্তঃ ভবতি ৷
এবঞ্চ শৃকভঙ্গাদি নিমিত্তক
পাপে পৃথক্ প্রারশিচন্তঃ ন কর্তব্যং ৷ বংপ্রাযশিচন্তেনের শুরুণা প্রসন্ধান্তদেশগমসিদ্ধাঃ ৷
বণুাসোত্তরম্ভ শৃকভন্গাদি নিমিত্তক পূর্বোক্ত মাসার্দ্ধ বাবকপানং প্রাজাপত্যং বা কর্তব্যং
৷ ইতি প্রাযশিচন্তত্ত্রং ৷৷

भृतः पु॰ कृष्ठभीर्यकर्कः। ইতি মেদিনী ॥ মুনিভেদः । ইতি শব্দরত্বাবলী॥

শृक्षकः पू॰ जीतकतृष्णः। ইতি জটাধর:।।

শৃঙ্গকন্দঃ পু॰ শৃঙ্গাটকঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

ण्डकः की अध्यः। ইভित्रप्तः भावा॥भारत्रभूः। यथा। ण्डाक्कः त्राकायण। ইভি সংক্ষিপ্তमातः कात्रकशामः॥ ण्डाकार्ण्डा ॥ ण्डाक्रम् भूः ण्डाहेकः। ইভি त्राक्षनिर्वन्छः॥ मृत्रपाशी भू हम्भकः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

म्जना जी जजम्बी। इंडि भक्तिका॥

भक्षा अका मुख्यान् पू॰ अक्रवरीयजीयागई-তঃ। স তু দ্বীৰ্ষে ৮০০০ অশীতি-मश्मुरवाकनानि । अरह २००० षिमश्युरयाजनानि । विखादा . उदेथव । यथा । हिमव९ ट्रिमकृ-हेक्ट नियदकामा मिक्टिश मी-লঃ শ্বেতশ্চ শৃঙ্গী চ উত্তরে বর্ষ-পর্বতাঃ।। লক্ষপ্রমানে দ্বৌ ম-(धा) पगरीना खथा भरत्। जर-সুদ্বিতবোচ্ছাষা ভাৰদিভারিণ क **७ ॥ इ**ंडि विकृ भूतात २ जण्य २ जशायः ॥ लक्ष्यमा-ৰৌ **প্ৰাক্ পশ্চিমতো দৈ**-र्याण नियध नीतनी। यहाणि জ-बृषीण बखलाकात्रमा लक्करया-জন প্ৰমাণদ্বামধ্য রেখাষা মেব भूथाः लक्क श्रमांवदः। निषध नीटलो जू जग्रधादत्रशरका मिक-শত শ্চোত্তরতশ্চ সপ্তদশ্যো-জনসহসাস্তরিত্বাদীয় মূদেনী। তথাপি चृत्रमुकी। तक्थमाना-বিত্যুক্ত ৷ অপরে তু হেমকূটা-मत्या मभरीना मण मण न्यानाः

मुका है

হেমকৃট শ্বেতৌ নবভিষোজন-महमु थमार्गा । हिमबक्कृत्रिगा-वनीि रमाजनश्रमार्गो । छम्-कुः वीतारह। षीत्रमा मधनी-ভাবাৎ হ্রাস বৃদ্ধী প্রকীর্তিতে। ইতি তট্টীকাষা , শ্রীধরস্বামী ।। ভাগবতমতে দৈর্ঘ্যে ১০০০ দ-শসহসুযোজনানি প্রস্থে ২০০০ विमर्मुरगाजनानि। यथा। छ-ত্তরোত্তরেণেলাবৃত নীলঃ শ্বে-छः मृत्रवान् इिंछ ब्राया त्रसाक हित्रगाय ज्वागा वर्षाणा भर्या-দাগিরষঃ প্রাগায়তা উভয়তঃ क्याद्वामावधरवा विमश्मु याज-ন পৃথব একৈকশঃ পূৰ্ৰস্মাৎ পূ-ৰিম্মাদুত্তরোত্তরো দশাংশাধি-কাংশেন দৈৰ্ঘ্য এব হুসন্তি৷ এবং मिक्टिश्टननावृं ७ निष्ठिश ट्य-কূটো হিমালয় ইভি প্রাগারতা यथा नीलालयः। अयुज्याक-নোৎসেধা হরিবর্ষ কিংপুরুষ ভারতানা যথাস খৃ ।৷ ইতি শ্রীভাগবতে ৫ ক্ষন্ধে ১৬ অধ্যাবঃ **गृत्रत्वतः** की जार्ज्कः। इंछां-मतः॥ खशी। ইতি त्राक्रनिर्यन्तः ॥ खर्ठ खाल भूतं । यथा। या-क्रटा शष्ट्र भीषु व मरबाधाः

जतक श्रिष्ठ । जानीहि जमनी किन्छ जता नृशिक्षित ॥ मृज्ञत्वत्रभूतः गन्ना जहि भिज्ञः श्रुटः भम । जानकी नच्चातात्रश्रु मागळः माः नित्यम्य ॥ हेळा-श्राम्यतंमायतः नक्षाकात्स ১৪ ज्यामः ॥

भृत्रदितकः क्षी णार्धकः। ইতি (इमहन्तः॥

শৃঙ্গবেরাভমূলকঃ পু• এরকা। ইতি ভারপ্রকাশঃ।।

শৃঙ্গাট॰ ক্লী চতুষ্পথ । ইতি হেমচন্দ্ৰঃ ধরণী চ ।।

मृत्राहः शू॰ जलकककः। ইতি
ভূরিপ্রযোগ ত্রিকাণ্ডশেষে। ।।
श्वामृकककः। ইতি শকরত্বাবলী।। কামাখ্যাদেশস্পর্বতঃ।
বথা। দীপবত্যাঃ পূর্বতম্ভ শৃস্বাটো নাম পর্বতঃ। তত্র ভর্গস্য
দেবস্য লিঙ্গ মেকং প্রতিষ্ঠিতং।।
সরিত্ব সিন্ধা ত্রিস্রোতা দক্ষিণোদিবিগামিনী। শৃঙ্গাটকস্য সতত॰ স্বনন্তী আরি পাদতঃ। দক্ষিণ॰ সাগরং যাতি ভর্গস্য প্রিয়কারিণী।। সলিলে যো নরঃ স্নাতি ত্রিস্যোতাযাণ নরোত্তমঃ।
শৃঙ্গাটকং সমারুত্থ পূজ্যেলিক

শকরং । সদীপ্তকাৰঃ শুক্কাছা প্রাপ্য কামানিহাতুলানা কন্তে ভর্গগৃহণ যাতি ততো নোক ম-বাপু যাৎ ।। ইতি কালিকাপুরা-ণে ৮২ অধ্যায়ঃ ।।

मुक्राहिकः क्री ह्यूनावना इंखा-यदः ॥ अलजनकायनविद्यायः। গানিফল ইতি শিঙ্গাড়া ইতি চ ভाষा। তৎপর্যায় । जनসূচिः ২ সংখাটিকা ৩ বারিকক্টকঃ ৪ । इंडि किरोधतः ॥ भूत्राहेः ६ বারিঙ্গজ্ঞকঃ ৬। ইতি ত্রিকাও-भिषः ॥ कीत्रसङ्गः **१। कलक**-क्रिकः ४। इंडि नसमाना ॥ শৃत्राहिकः २ मृत्रक्रः ३० कल বল্লী ১১ জলাশযঃ ১২ শৃঙ্ককনঃ ১৩ मृजयूनः ১৪ विशानी ১৫। অস্য গুণাঃ ৷ শোণিত পিত্তহর ত্ব॰। লঘুত্ব॰। সরত্ব॰। বৃষ্যভমত্ব• । वित्नवाद जित्नाव वाक जुन लाक नानिष् । क्रिक्षिष्ण । यश्नमार्छारश्जूषं । श्रेष्ठि द्रा-किर्निकः।। अभि ह। श्रुक्षः। विकेखिष् । नीजनष्म । हेजि व्राज्यक्षञः ॥ 🟶 ॥ शामावित्य-यः। সমূদা ইতি হিন্দী ভাষা। यथा। एकांगा॰म॰ उन्ह्रा कर्जिः जः स्विति जिल्ला नवकः स्वित् महिन नवनार्धक मन्यून । এ-ना की तक धनाकि निष्त्रम मम-श्विन । शृंद्ध मनस्य ज्ञु किः श्र्-त्रनः श्विम किंद्र ।। भूकारे-कः मिन्न किं मिन्न श्विन याम्मः मृनः मिनि मञ्जूकः यामनः मृनार्धकः तस्य ॥ माःमः म्-कार्षकः क्रष्ठाः वृःद्दाः वनक्षः छक्षः । वान भित्वह्तः वृश्वाः क-क्षत्रः वीर्यावक्षनः ॥ हैनि ज्ञाव-প্रकाभः॥

শৃঙ্গাটকঃ পু॰ জলকণ্টকঃ।ইতি রাজবন্ধভঃ।।

मृत्रातः की लवनः॥ निन्मृतः॥ हूर्नः। ইতি মেদিনী॥ আর্তকः। ইতি শব্দচন্দ্রিকা॥ কালাগুরুঃ । ইতি রাজনির্যকঃ॥

শৃঙ্গারঃ পু॰ সুরক্তঃ ৷৷ নাটারসঃ ৷৷
গজত্যণ ৷ ইতি মেদিনী ৷৷
নাটারসমা লক্ষণ যথা ৷ পু॰ সঃ
স্তিযা ভিষাঃ পু৽সি সংযোগ
প্রতি যা স্পৃহা ৷ স শৃঙ্গার ইতি
খ্যাতো রতিকীডাদিকারণ ৷৷
ইত্যমরটীকাষা ভরতঃ ৷৷ অপি
চা শৃঙ্গ হি মন্মথোত্তেদ স্তদাগাননহেতুকঃ ৷ উত্তমপ্রকৃতিপ্রা

्री बना मूचाब हैस्रेट ॥ भ-॥ व्याणाः वर्षिषां वर्षेणां का-बनुद्राभिगै॰। वालहन॰ नारि-काः मा पंक्रियामान्छ नायकाः ।। চন্দ্ৰ চন্দ্ৰ রোলম্ব রুভাম্যু-দ্বীপন মত। জ্ববিকেপ কটা-कामि त्रनुखावः अकीर्खिजः ॥ ভাক্তোগ্রা মরণালস্য জ্গুন্সা ব্যভিচারিণঃ। স্থামীভাবো র-किः गागवर्णा २व॰ विकृटेलव-णः ।। म **চ दिश वि**थनसः स॰-ভোগশ্চ। ইতি সাহিত্যদর্শণঃ ॥ खना९ टेमथूनमटक प्रखेवा॰ ।। ः ॥ भृत्रत्रानिज्दक नत्रत्वा যথা। শৃঙ্গারাহার নিজাণা य-শ্চ.ভঙ্গণ করোতি চ। স ব্রজেৎ কালসূত্রক স্বামিনশ্চ বিশেষতঃ ।। ইতি ব্ৰহ্মবৈবৰ্ত্তে প্ৰকৃতিখণ্ডে श्र ज्यायः ॥

मृजात्रकः क्री मिन्नूतः। ইতি
ज्ञाक्कितिर्विशः॥ गृजिविशित्ये वि।
गृज्यम्पी । व्यात्रकन् প্রত্যায়েন
बिन्नान्नः। ইতি मिक्कान्तरको मूनी
॥ व्यार्थि क गृजात्रक छ छ पूर्॥
गृजात्रज्याः ॥
गृजात्रवािनः पूर् कामान्तः।

रेडिर्माय्थ (स्पाटको ॥ मुमाती पु॰ भूगः॥ भजः मण्यातः ॥ मृत्यभः। रेडितः वियो ॥ मोबिकाः। रेडि ताज-निर्वकैः॥

मृक्तिः खी बंदमावित्मयः। मिकी-बाह् इंडि जाता। बथा। बका-त्रमा खिया मृजी मृज्ञि तिङाशि कढाहिद् । मानिध्या बकात-मीडि ह नामस्यः कहिद्।। इंडि नकत्रशावनी ।।

भृश्विकः क्री वियरज्ञ मः १ हे जि स्वाबुधः ॥

मृक्षिका जी 'श्रेडिविया। ইতি नक्षत्रद्वावनी।।

শৃঞ্জিণঃ পু॰ মেঝঃ। ইতি ছেম-চন্দ্রা।

শৃদিণী স্ত্রী গোঃ। ইত্যমরঃ।।
স্বেশ্বদীবৃক্ষঃ।।
জ্যোতিশ্বতীবৃক্ষঃ। ইতি মেদিনী।।

मृक्षी श्र. इंडी।। वृक्तः।। श्रवं छः।।
मृक्ष्य एक जि। इंडि स्मिनी।।
मृक्षी जी यह मार्वित्मयः। मिक्री
इंडि कियम इंडि ह छाता।
छह शर्यायः। यमगुत्र थिया २।
इंडायतः वधु का । यमगुती १।

इे जिक्तिकः ॥ यमात्रमी ६ ज-প্রিয়া ৫ শৃক্তি ও। ইতি কেচি-দিতি ভরতঃ।। অস্যা ওপাং। यामूत्रमञ् । विश्ववः । मृ र व्यवः । কফ কোপনত্ব। শোগ পাওু মরৎপিত্তনাশিত্বঞ্ । ইতি রা-क्षवल्लाः।। व्यक्तिया।। श्रवह्ने-चथः। देजामदः ॥ कक्कं छेणुकी ॥ क्षकः ॥ विषः ॥ विषः । हेि वाजिबिर्यन्छैः ॥ जनकाद्भग्रवनं । यथा। जी मृत्री मखनवर्त । ইতি ভরতধৃত রত্নকোষঃ।। मृत्रीकनक॰ क्री व्यवसामगूर्म॰। ইতামর: 11 অলক্ষারবা ক্রঞ্জলা-ति वं भूवर्ग ७९ मृत्रीकमक मू-চাতে गृत्री जलकातः क्रमर्थः क नकः गृक्षीकनकः। व्यवकात्र मू-वर्गा गृकीि ह नाम। जी मूकी मधनवर्ष देखि तब्रस्काचः ॥ मृत्री द्वाछा हम्त्रकि क्रांतीन् শৃঙ্গিঃ শ্রেগি স্ত্রাপ্ত নামীতি ইঃ নিপাতনাৎক্রিঃ পাচ্ছোণা-দীতি ইপি শ্ৰী। ইতি ভরতঃ।। শ্নিঃ স্ত্রী অস্কুশঃ। ইত্যমরঃ।। শৃণাতি মন্মস্থান শৃণিঃ। শু স্থ গি হি॰দনে কু গু জ্যা গ্লা হা चारम नि तिछि बामिषा (क

নিঃ নিশাতনাদিহ হুস্বঃ। নামীতি ভ্ৰি ৰা। শ্ৰি বকুশবাচী
চ কাশশ্চ ভ্ৰৱাচকঃ। ইতি শ
ভেদাৎ ভালব্যাদিঃ। সরতি মশ্বাহান গছতি সৃণি দস্যাদি
রিতানো। স্ত্রিয়া মিতাত্র হুযো
রিতি পাঠঃ। ইতি মেদিনী।
আবক্ষ মগ্ন মবমত্য শ্ৰিণ শিভাগ্র মিতি মাঘঃ। স্ত্রিয়া মিতি
প্রাযিকস্বাদুক্ত মিতি মুস্পটঃ।
ইতি ভরতঃ।।

শৃত । ত্রি পককীরাজ্য প্রমাণস। ইত্যমরঃ ।। শৃত মন্ন বিরজ্জ-यमिष्ठि षार्यः। ইष्टि छत्रकः ॥ ৰুথিত। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা রত্ন-माला ह ।। आ। जथ काश विधिः। পানীয়ণ ষোডশগুণ ক্ষুন্নে দ্ৰব্য পলে কিপেৎ। মৃৎপাত্তে কাথ-বেৎ গ্রাহ্ম মন্টমাণ্শাবশেষিতণ ॥ कर्वाटमी जू शन वावर म-म्रा९ साफ्रिक जनः। ठड्क वः भाषरमञ्जीयान् रकाकः मृष-গ্রি সাধিত ।৷ সৃতঃ ক্রাথঃ ক্যা-यण्ड निर्यृहः म निश्रमाट्ड । 🛊 ॥ काथशानमाजा मार्। माळा-ত্তমা পলেন স্যাত্রিভি ব্লক্ষেপ্ত यधाया। अवना ह अनाटकन

MA

নেহ কাথৌষধেন চ ৷৷ তন্ত্ৰান্ত-রে। काथ जवाभाग वाति वित-ক্তঞ্জণ মিষ্যতে। চতুর্ভাগাবশি-खेंड शब॰ शन ह्यू खेंब॰ ॥ मी-श्वानलः महाकायः शायरयः हा-श्लिन जन। जानावर्कः श्रीत-, তাজা প্ৰস্তম্ব চিকিৎসকাঃ ॥ ক্বাথ ত্যাগ মনিচ্ছন্ত স্তৃষ্টভা-गावरमधिकः। भावन्मर्यगाभरम-শেন वृक्ष देवलाः शलक्षरः।। ञ-ষ্টভাগাবশেষিত্স্য চতুর্ভাগা-বশিষ্টাপেক্ষয়া গুরুত্বাদ্দীপ্তান-ल॰ यहाकाय॰ शनवय॰ शायरयः श्राभागि मन्नकारः शनमातः পাষ্যেৎ। মাত্রোক্তমা পলেন माषिजाषि वहनाथ। कारथ ক্ষিপেৎ সিতা মণ্টেশ শ্চতুর্থাফ্ট-म বোডশৈ:। বাত পিত্ত ক-ফাতক্ষে বিপরীত মধু স্মৃত ।। कीत्रकः श्रुश्चन् कात्रः नवनक निनाष्ठ्र। हिन् जिक रूक्ट क्षव कार्य भारगायिकः किरमर्।। कीतः घृष्ठः ७७॰ टेन्नः मृबः **ठाना९ खव॰ ७था। कद्धः** हुनी-**पिक॰ कार्य निक्लिश कर्य म**-শ্মিত্ব ৷৷ তত্ত্বোপবিশ্য বিশ্ৰা-**खः अमन्नवम्याक्याः । अवश्**

হেম ব্লক্ত মৃদ্ভাজন পরিস্থিত ॥ शिद्य अमहरूपयः शीषा পাত मसामूथ । विधागाठमा मनिनः कामृनाम्गरायाजस्य া। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। 🟶।। অ-नाक। जनामारभाषिजारकारम বক্লিনা পরিতাপিতাৎ। নিঃশৃ-তো ৰো রসংপৃতঃ স শৃতঃ সমু-माज्ञा श देखि देवनाकः ॥ শৃষ ব ৯ ও উ পর্দে। ইতি কবি-कन्नक्रमः॥ व শदम्छि निम्द-मिछ। ५ जम्४९। ७ मर्वर्छ। के मिकिया मुक्ता। भटना श्ला-तादमर्गः । मृश् थङ्मत इे मुझानि अन्नत्यशमी शाजु तरेना - **न यमारछ। अ**श्मन॰ विखवः। केंकि शाक्ति छि:। नर्भवि বৃদ্ধ সংসিতশকৈ বালঃ। ইতি त्रमानाथः। ইতি দুর্গাদাসः।। मृथ উ o क्वा क्वार । ইতি কবি-कब्रख्या । উ गर्किया मृक्या । क नर्करिं नर्कर्छ। क्रमन यार्जनावः। देनि पूर्शामामः॥ मृश् भु वृक्षिः॥ अमः। ইতি विश्वः ॥

मृश्ः भू॰ ऋष्मिजः॥ जाभानः।

ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃতিঃ৷

शू नि हि॰मत्म। ইতি कविकन्न-क्रियः ॥ नि म्नाडि मीर्नः मी-र्निः। ইতি দুর্গাদাসং ॥

(नश्त की निवन । देखि त्राक-निर्द्राधा निगु मृतः। देखि नक-চ क्रिका॥

लिश्रदः शृ लिश्राविष्ठभानाः।
इंग्रद्भः॥ यथा। लिश्राविनाञ्च
मानासा माणीष्ठः लिश्रद्धाणि ह
। इंग्रि लक्षद्भावनी ॥ गीजमा
क्षर्यविद्यायः। जन्नकः यथा।
बाम्याक्षर्रभानः माष्ट्र म हान्नः
ख्वर्यविद्यायः। जन्नकः माष्ट्र म हान्नः
ख्वर्यविद्यायः। जन्नकः माष्ट्र म हान्नः
ख्वर्यविद्यायः। जन्नकः माष्ट्र म हान्नः
ख्वर्यविद्यायः। इंग्रि मन्नीजनादमानदः॥
नय्द्याथदा यथा। नय् ख्वरः
ज्वर्यायदा यथा। नय् ख्वरः
ज्वर्यायदा म ज्वर्याय्यदाः।
इंग्रि जदेवनः॥

(भथती खी वना। इंडि भक-त्रजावनी॥

শেপঃ পু॰ শেকঃ। ই**ভি শব্দ** রত্নাবলী।।

শেপালः পু॰ देगवानः। ইতি
শব্দরত্বাবলী।।

শেষঃ পু॰ শিশ্বঃ। ইতি শব্দ-র ্যাবলী।।

শেকঃ ক্লী শিশাঃ। ইত্যমরঃ ৷৷

শুক্রপাতে সতি শেতে পততি ইতি শেকঃ। শীঙধাতো নামী-তি কস্ প্রত্যবং। শেকস শে-ফসী শেক শেপো শেবশ্চেতি পঞ্চৰপাণি তবস্তীত্যাচার্যাঃ। ইতি ভরতঃ।।

लिकानिः खी लिकानिक। इंडि नक्तत्रवादनी॥

শেকালিকা স্ত্রী পুশবৃক্ষবিশেষঃ । मिडेनी देंछि ভाষা। ७९-পर्यायः । मूवश २ निर्श्व ७ নীলিকা ৪। ইত্যমরঃ ।। চত্বারি শেকালিকামাত্রে। শিবলীতি-था नील भूभाया भकानि-কাষা মিভি কেচিৎ। শেকালি-कामि घर टमकानिकामारज निर्श्वधानि ष्वयः नीलभून्य त्य-ফালিকায়া মিতি কেচিৎ। ইতি ভট্টীকাষা ভরতঃ।। শেফালী ৪ মলিকা ৫ রজনীহাসা ৩ নি-শিপুন্সিকা १। সা শুক্লা চেৎ শেতসুরসা ৮ ভূতবেশী २ । रेठि भक्तज्ञावनी ॥ खन्नानी भीजमक्षत्री ,>> विक्रमा >२. বাতারিঃ ১৩ ভূতকেশী ১৪। অস্যা গুণাঃ। কটুম্বণ। তিক্তম্বণ। उक्क । क्क्ष । वाठ कर्क

অঙ্গসন্ধিবাত গুদবাতাদিদোষ-নাশিত্বক। ইতি রাজনির্যন্টঃ।। **भ्यानी जी भ्यानिका।** इंडि अक्तब्रावनी ॥ नीनिमञ्जूवादः 1 ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। लियूषी जी वृक्षिः। ইত্যমরः॥ শেল ঋ চাল গত্যোঃ। ইভি कविकद्याप्रयः ॥ सः अनिर्मान ा इंडि मूर्गामामः ॥ শেলুঃ পু॰ বহুবারকবৃক্ষঃ। ইত্য-वद्भा শেবঃ পু॰ মেঢ়ুঃ॥ উন্নতঃ॥ অহিঃ । इन्जानामित्कायः ॥ শেবধিঃ পু॰ নিধিঃ। ইত্যমরঃ॥ **ભ**वन॰ क्री रेगवान॰ । ইতি শব্দরত্বাবলী।। শেবলিনী স্ত্রী নদী। ইতিরাজ-निर्घकः ॥ **ભে**वान॰ क्री रेगवानः। ইতি व्यक्तक्रावनी ॥ শেবালী দ্রী আকাশমাণসী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ শেষ क्ली প্রসাদঃ। ইভি মেদিনী (अधः भू महर्सनः। म जू वन-**८** एवः ॥ वधः ॥ अनुस्तः । म ह मर्भ द्राष्ट्रः । इंडि यिनिनी ॥ खमा शान॰ यथा। क्वाम<u>श्र</u>

সংফুক্তণ চতুৰ্বাহণ কিরীটিন 1 নবামুপল্লবাকার পিঙ্গলশাশ্র লোচন ৷৷ পীতাম্বরধর দেবং শুধ্ চক্র গদাধর । করাত্রে দ-ক্ষিণে পদ্ম গদা তস্যাপ্যধঃ ফ-(त ! प्रधान गर्वाला किना गर्वा-ভরণভূষিত ।। কীরান্ধি মধ্যে শ্ৰীমন্ত মনন্ত পূজ্বেততঃ। ইতি ভবিষাপুরাণ।।।।।। গজঃ।। নাগঃ ।। স্বীক্তেতরবস্ত । ইত্যজ্যপা-লঃ।। ভগবতো দ্বিতীয়া মূৰ্ত্তিঃ। যথা। একা ভগবতো মূর্ত্তি জ্ঞা-नक्षा भिवायना । चामुरम्या-ভিধানা সা গুণাতীতা সুনিক্ষলা ৷৷ দ্বিতীয়া কালসংজ্ঞান্যা তাম-সী শেষসংজ্ঞিতা। নিহস্তি সক-**ला॰ कार्छ देवकवी পরমা তনুঃ।।** ইতি কৌর্ম্মে ৪৮ অধ্যায়ঃ।। 🟶 🛚 ।। শেষ শযন প্রকারো ষথা। অ-নম্ভ স্তত্ত্ৰ গন্ধা তু যত্ৰ ক্ষীরোদ-সাগরঃ। তত্ত্র স্বয়ণ শ্রিষাযুক্তণ मूमूक्षरु॰ জनार्षन॰ ॥ তम्যा-পধান মকরোদনস্তো দক্ষিণাণ ফণা॰ । উত্তরা॰ পাদযো শ্চক্রে উপধান মহাবলঃ ৷৷ তালবৃত্ত তদা চক্ৰে স শেষঃ পশ্চিমাণ ফ-ণা॰। স্বযন্ত বীজয়ামাস শেবৰূপী

क्रनार्कनः॥ न्या । क्रमान । व्यवाव । क्रमान । क्रमान । व्यवाव । व्यवाव । क्रमान । व्यवाव । व्यवव । व्यवव

भिषः प्रश्नी उपयुक्ति अवस्य । इंडि मिनी।। भिष्मा १ विनिस्वे भविष्ठि । एनसः भ्रान्ति। स्वार्थ जू भिषः प्रश्नानि । स्वार्थ जू भिषः प्रश्नानि । स्वार्थ ज्ञानि । स्वार्थ । स्वार

প্রবর্দ্ধন্তে তত্মাৎ শেষণ ন কা-রবেৎ ৷৷ ইতি গারুডে ১১৬ অধ্যাযঃ ৷৷

लियषः की উপकातिषः॥ भातार्थाः। भातात्म्माध्यवृद्धिकषः।
यथा। भाषषं मूशकातिषः जनगम्गवार वामितः। भातार्थाः
भाषवा छक्त मर्द्यश्चीि छिमिनिः॥ ইতাধিকরণমালাষাः
भाषवा চার্যাঃ॥ শেষদ্যভাবः।
ইতি ব্যাকরণং॥

শেষরাত্রিঃ স্ত্রী রাত্রিশেষঃ। তৎ-পর্য্যায়ঃ। উচ্চদ্রঃ২ অপররাত্রঃ ৩। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শেষা खी समिमानगर्भनः। ইঙি
यिनिग।।

শৈশরিকঃ পু॰ অপামার্গঃ। ইত্য-মরঃ ॥

লৈখরেষঃ পু॰ অপামার্গঃ। ইতি ভরতধৃতরত্মকোষঃ॥

শৈত্য ক্লী শীতলদ। যথা।
শৈত্য নাম গুণ স্তবৈব সহজঃ
স্বাভাবিকী স্বচ্ছতা কিং ক্লমঃ
শুচিতাং ভবন্তি শুচমঃ স্পর্শেন
মুস্যাপরে। কিং বান্য কথমা
মি তে স্ততিপদং দ্বং জীবিনাং
জীবনং দ্বঞ্দেমীচপথেন গচ্ছসি

शयः क खुा॰ निरविक् क्यः ॥ रेखि मचन्दमनः॥ रेमथिला॰ क्री मिथिलक्। मिथि-লদ্য ভাৰ ইত্যৰ্থে ক্ষ্য প্ৰত্যবেন निकार ॥ শৈনেষঃ পু॰ সাত্যকিঃ। সূত্ প্রীকৃষ্ণসারথিঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-Cक्रिबः ॥ देणतीयकः भू नीमविकी। इंडि রত্নসালা।। শৈরেষকোপি পাঠঃ १ मञ्जामामिक ॥ रेनन की रेनरनय ।। जाका-देननः। इंडि यिमिनी।। निला-জত। ইতি ব্লাজনির্ধন্টঃ।। শৈলঃ পু॰ পর্বতঃ। ইত্যমরঃ॥ रेगनक की रेगनक । इंडि नक्त्रज्ञावनी। टेगलगञ्च॰ क्री भावत्राञ्चनः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥ देनवगर्जास्या जी निवादका। ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ।। टेणलाजः क्री मूगिक्षिजवाविद्रणयः। छৎ भर्यायः। नी छनिव १ देन-লেষণ ৩ শিলাসন ৪ শিলেষণ e भीजन ७ देनन १ कानान्-मार्थाः ৮ देनवकः २ कृषः ३० কালানুসারি ১১ অশাপুষ্প ১২

देगलथा॰ ३७ गिलाभूमा॰ ३८ गृर॰ ১৫। ইতি রত্নমালা।। चमाखनाः देनत्त्रयम् उपे-বাাঃ॥ পৰ্ৰতজাতে ত্ৰি॥ देनवजा ं जी देन हनी।। गर्ज-शिक्षनी । इंडि ताक्रनिर्वन्छः ॥ मूर्गा। हिमटेनलजवार । कथा। ত্তৎ শ্ৰুত্বা ভগবদাক্য বিশ্বিতা रियटेगनका। इंडि गिवझिव-ত্ৰভক্ষা।। देणनभन्ना श्रुः महारमतः। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। टेननध्रः पू• श्रीक्रकः। ইতি थनक्षयः ॥ रेगनिर्यामः क्री रेगलगः। ইতি दक्ति ।। टेननशबः पू॰ विव्यवृक्तः। ইতি त्राक्रनिर्यन्छैः॥ रेमनिङ्किः जी ऐकः। देवि किंगिश्र ।। देनलताजः पूर हिमालयभई छः। इंडि वकामानमक मर्मना९ ॥ टेंगनताजमुञा जी मूर्गा। यथा। অৰূপা পরভাবত্বাদ্বহুৰূপা ক্রি-যান্মিকা। জাতা শৈলেন্দ্রগেহে সা শৈলরাজসুতা ততঃ।। ইতি मिवी भूतात्व ८६ व्यशायः ॥

रेमनरकना भू॰ मिनारकना। ইতি বাজনির্ঘন্টঃ।। रेननवीकः भू जन्नाजकन्कः। ইতি রাজনির্মণ্টঃ।। रेनलिनिवितः क्वी अभूषः। इंडि ত্ৰিকাণ্ডলেৰঃ।। देननमूज खी नाईकी। यदा। মাতঃ শৈলসুভাসপত্নি বসুষা-**मृ**कात्रशातावि वर्गादता ३१-বৈজ্যম্ভি ভবতীণ ভাগীরথীণ প্রার্থযে। ইতি বাল্মিকীয়গঙ্গা-ফক ।। জ্যোতিমতী। ইতি बाजनिर्घकः॥ रेननाथा॰ की रेननक । इंडि त्रव्याना ॥ লিখর । ইতি क्री লৈলাগ্ৰ ত্রিকাওশেষঃ ॥ रिमलाक की रेमलय । इंडि রাজনির্ঘটঃ॥ देगना हैः पूर प्रवनः॥ जिल्हः॥ শুক্লকাচঃ ।। কিরাতঃ । ইতি (यिनिनी। रेमनािकः श्रू ननी। यथा। नि-মিত্তানীদৃশান্ দৃষ্ণী ভৃত ভব্য ভবে। विजुः । त्यानामि॰ थार वहनः मित्राजः मित्रियाः ॥ হর উবাচ। নন্দিন্ জ্যোদ্য ভা-

वी तो व कथकिए शक्तां करः। निविजानी ह मृभारख अजमानि গণেশ্বর ৷৷ ভচ্ছজুবচন শ্রেম্বা रेमलापिः थार् महत्र । कः म-**ट्या**ट्या स्थारित स्थापन माजवान् ॥ ३७ वामत्न ७६ ज्यायः॥ रेमनानी प्र निहा इंडायदः॥ लिकाः भू मर्वनिष्ठी। ইতি क्रिविदः ॥ रेनली खी मत्हजः। यथा। अ-জ্ঞপ্তিঃ পরিভাষা শৈলী সঙ্কেত সমযকারাশ্চ । ইভি ত্রিকাণ্ড-त्नयः ॥ खाठार्यग्राना भिय° टैन-লী ষৎ সামান্যেনাভিধাষ বি-শেষেণ বিবৃণোভি। ইতি মুগ্ধ-বোধটীকাষা॰ দুর্গাদাসঃ ॥ रेमस्यः पू॰ विचव्यः॥ निष्ः। इंछायतः ॥ धृर्वः॥ ञामधातकः । ইতি শব্দরত্নাবলী।। रेमनृषिकः भू नहेवृखारवधी। यथा। वृद्यास्यी नहीन ह न जू रेमलृशिकः मृजः। ইতি उका-

পুরাণোক্ত । ইতি প্রাযশ্চিত-

শৈল্যিকী স্ত্ৰী শৈল্যিকজাতি-

ন্ত্ৰী। তদাৰন প্ৰায়ন্তিত যথা।

विदवकः ॥

সমর্ত্তঃ। নটা॰ দৈলু বিকী॰ টেব রজকী॰ বেণুজীবিনী॰। গদ্ধা চা-ন্দ্রামণ সর্যাৎ তথা চর্ম্মোপ-জীবিনী॰।। কামভস্ত মদাগচ্ছে-চ্চরেক্চান্দ্রামণদম । ততশ্চা-জ্ঞানত শ্চান্দ্রামণ । চান্দ্রামণে ধেম্বউক॰ । ইতি প্রামশ্চিত্ত-তত্ত্ব॰ ।।

हैनलिखः शृ॰ हिमालयः। यथा। प्रमुख एउ जला प्रती मीयका-मा॰ वाविष्ठा॰। मि॰इटमा। श्रित रेनलिखन्य मृटक महि काक्षरम्। हैजि प्रतीमाहाष्मा॰।। रेनलिखन्यः शृ॰ जूर्कवृक्षः। हैजि

রাজনির্ঘন্টঃ !৷
লৈলেয়ণ ক্লী শৈলজাখ্যগন্ধদ্রব্যা শৈলেয়ক ইতি রক্ষুচ
ইতি ছরিলা ইতি চ খ্যাতং 1
তৎপর্য্যায়া যথা ৷ শৈলেয়ণ
শৈলজং বৃদ্ধং শিলাপুক্ষাং শিলোভ্যং ৷ স্থবিরং পলিতং জীর্ণ তথা কালানুসার্য্যকং ৷৷ শিলোখঞ্চ শিলাদক্রঃ শৈলাজং
গিরিপুক্ষাকং ৷ শিলাপ্রস্কানং স্বভগং শৈলকং যোডশাহ্রয়ং ৷!
অস্যগুলাঃ ৷ শৈলেয়ং শিশিরং
ভিক্তং সুগৃদ্ধি কক্ষ পিত্তজিৎ ৷

नाइ ज्या वित शाम बनाम वितासनः ॥ इंजि त्राजनिर्द्राः ॥ ज्ञान है। देशत्मय सिनाभू- ज्ञान क्षान क्ष

देशत्वयः वि देशवयख्यः। देवि एर्यह्यः॥ भिनाजूनाः। देवि अक्तद्वादवी॥

শৈলেষঃ পু॰ সিংহঃ।। ভুনরঃ।
ইতি শব্দরক্ষাবলী।।

শৈলেষী স্ত্ৰী পাৰ্বতী। ইতি ব্ৰিকাণ্ডশেষঃ।৷

শৈলোন্ডবা স্ত্রী ক্রপাষাণভেদী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥

শৈল্য॰ ত্রি শিলাসম্বন্ধি। শিলা-যা ইদ॰ ইত্যর্থে ফ্য প্রত্যযেন নিষ্পন্ধণা।

শৈব॰ ক্লী শৈবালঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। শিবপুরাণং। যথা।
অফ্টাদশপুরাণানি পুরাণজ্ঞাঃ
প্রচক্ষতে। ব্রাহ্মণ পাদ্মণ বৈষ্ণবঞ্চ শৈবণ ভাগবতণ তথা।। ইতি
মলমাসতত্ত্বে বিষ্ণুপুরাণণ।। শি-

বসম্বন্ধিনি তি।।

रेनवः भू॰ वमूकः ॥ ध्रुखुदः । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ १। আচার-वित्मयः। यथा। व्यक्तीकत्यांग-সংযুক্তো যজেদেঘী বিধানতঃ यावक्रानः नमाधिक जावब्दैन বঃ প্রচক্ষতে ॥ ইত্যাচারভেদ-তন্ত্ৰ ।। ৠ। শিবোপাসকঃ। তৎ-পৰ্য্যায়ঃ। ঔদ্ধৃত্যোতসিকঃ ২। ইভি ত্রিকাপ্তশেষঃ।। এতস্তেদা যথা। তত শ্চকার ভগবান্ চা-তুর্বর্গত হ্রাষ্ঠনে। শাস্ত্রাণি চৈ-या॰ गूथानि नात्माञ्जितिनि-তানি চ।। আদ্যু দৈব পরি-খ্যাত মনাৎ গাশুগত নুনে ! তৃতীয় কালবদন চতুর্থঞ্চ ক পালিন ।। শৈব আসীৎ স্বয় শক্তि बंगिष्ठेगा अयः मुणः। তন্য শিষ্যো বভূবাথ গোপা-যন ইতি শ্ৰুতঃ।। মহাপাশ্ৰপত ख्रामी**खा**तवाक **ख्राभावनः ।** ত্ন্য শিষ্যোপ্যভূডাকা ঋষভঃ সোমকেশ্বরঃ ।। কালাস্যো ভ-গবানাসীদাপস্তম্ব স্তপোধনঃ। তস্য শিষ্যো ৰকো ৰৈশ্যো না-মা ক্রাথেশ্বরো মুনে ॥ বহাত্র-**ी ठ धनम खमा भियान्छ बीर्या-**

वान्। ऋज्ञानत्र देखि थाएं। জাত্যা শূদ্ৰো মহাতপাঃ ৷৷ এবং म जगवान् बन्ना भूजनाय नि-বস্য চ। রুদ্ধা তু চাতুরাশ্রম্য॰ স্বমেৰ ভবন গতঃ॥ ইতি ৰাম-ति ७ व्यक्षायः ॥ 🛊 ॥ छम्। य-कुष्ण यथा। आयाख्य देनव मा-লোক্যাহ। শ্রীমানসাবেতি জ-**होन्यानि व्यायुष्यानिष्ठ** य-ধ্যভাগঃ। বিভৃতি সংভূষিত ভা-স্থদকো ৰুদ্ৰাক্ষমালা কলিভো-कुरमश्ः ॥ ইতি विषयामञ्ज ঙ্গিণ্যা তরঙ্গঃ।। देगवन की श्रमकार्थ ।। देनवा-ल पूर। इंडि सिमिनी।। देशविनी खी नेती। इंडायदः॥ रेगवान॰ क्री जनक्रजवाविरम्बः । শেখালা ইতি ভাষা। তৎ-शर्यायः। जननीनी २ देशवनः ৩ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ শেপাল ৪ শেবলং ৫ শীবলং ৬ শেপালঃ १ जनभीनिका ৮। ইতি पाठ-म्भिण्डिः ॥ जनमीनः २ । ইতি मूक्रिकाम ३ डिं , जत्र ३ ।। टेन-वानः ১० म्यानः ১১ वातिहा-মর॰ ১২ টেশবলং ১৩ সলিলঙ্গ-

ন্তল॰ ১৪ হটপৰ্ণী ১৫ অমুতালণ

कः ५१ क्वार्कमः ५४ कारात्रः ३२। रेषि श्रातनी ॥ कनकः २०। व्यमा छनाः। नीकमवः। - विश्वष्। সম্ভাপ ত্রণনাশিত্বক। देखि द्वाकिनर्यन्छेः ॥

देणवाः भू अक्रकगा स्वाप्टिकः वित्मबः। यथा। जूत्रगाः देनवा मूजीव प्रवभून वनाभरकाः। रें जिकाश्वरमवः ॥ शाखव-रमनाभि विद्यापकः। यथा। शृके-কেত্ শেচকিতানঃ কাশিরাজ-क वीर्यावान्। शूक्रकि व अखि-় ভোজশ্চ শৈব্যশ্চ নরপুঙ্গবঃ।। हेि जगवागीजायाः ३ व्यथायः ॥ শিবসম্বন্ধিনি ত্রি॥

देननव की नित्नार्जावः। वालाः १ टेंडामतः ॥ यथा । टेम्न्स्टिव **१** जार्खिवमाना॰ (कोवत्न विक-देविवा । तार्क्तत्क मूनिवृछी-ना॰ सारगनात्छ उनुषाका॰।। इिंछ ब्रघूव राम ३ मर्गः ॥

रेनिनितः पुर नागरहिकः। इंडि व्राजनिर्यकः॥ निनिव्यमधिन ত্রি। যথা শ্রুভিঃ। তপ স্তপস্যো देशनितावृज्ः। इंछि छिथाानि-তৰ্ন্ত, 11

391 रेडि मञ्जूबाननी ११ जब- | देनद्याशाक्षाविका जी निया-गानमा। ইতি निका उक्नो मृती रेनकः पू॰ आथमकन्निकः । हेणायतः ॥ एव अथयात्रका वि-षाश्रायत्न। भिक्कन॰ भिका। त्म সক্তাৎ সরো রিভি অঃ। শিক্ষা द्धार्याभरम् । ७९ माहत्र्या ९ এছোপি শিক্ষা তামধীয়তে শৈ-का प्रस्कामिछि कः अथमः नि-ৰুণীয়ণ কল্প শাস্ত্ৰণ অধীয়তে প্রাথমকল্পিকাঃ। ইতি ভরতঃ।। শৈকিকঃ ত্রি শিক্ষাশাস্ত্রবৈতা। শিক্ষাণ বেত্তি অধীতে বা ইত্য-র্থে ফিক প্রভ্যযেন নিষ্পন্নঃ।। শো য নিশানে। ইতি কবিকল্প-क्षयः ॥ निनान भिश्राह्मीकत्र १०१ ৰ শ্যতি শত্ৰু শূরঃ। ইতি দুর্গা-कामः ॥

> শোকঃ পু চিত্তবিকলতা। ই-**ঊবিষোগানুচিন্তন**। ইতি না-গোজীভটঃ ॥ বন্ধাদিবিষোগ-জনিতা মনঃপীডা। ইতি ভাব-अकामः ॥ ७९ शर्यायः। मन् ২ শুক্ ৩। ইত্যমরঃ ॥ শুচা ৪ निःमयः ৫। ইতি শব্দরত্বাবলী ।। ल्याहन॰ ७ त्थमः १। इंडि হেষচন্দ্রঃ ৷৷ 🏶 ৷৷ ভাষিবারণহেতু

র্ষণা। ভরত পতিত দীন শোচন্ত সূভ্শ তদা। শোচ-गान विशिष्ठ वात्रवागात दर्-ত্তিঃ ৷৷ শোচমানাম্ভ সম্বেহা वाक्षवाः मूक्त खथा। शास्त्रशि গভ॰ স্বৰ্গাদশ্ৰপাতেন রাম্বাা ज्तिमास्या गण्डः सर्गः श्रुर्गन গভিতঃ পুনঃ। শোচিতো বন্ধ-वरेर्गम्छ मृजस्त्रहः भन्निज्ञकः।। ইতি বহিপুরাণাঞা অগি চা **७४ (गोकांश्रतामनः । वाळ-**বন্ধঃ। ক্তোদকান্ সমুক্তীর্ণান্ মৃদুশাদ্ল সংস্থিতান্। স্নাতান-পনুদেষ ভানিভিহালৈঃ পুরা-**उदेनः ॥ यानूर्या कपनीस्ट** निः माद्र माद्रमार्गन । सः क-রোতি স সংমূতো জলবুৰুদ স নিভে ।। পঞ্ধা সম্ভূতঃ কাৰো যদি পঞ্জ মাগতঃ। কর্মাভিঃ य गतीरतारेथ खब का गतिरा-वना ॥ शञ्जी वमूमञी नाम मूम-ধি দৈবভানি চ। কেনপ্রখ্যঃ কথ॰ নাশ॰ মৰ্ত্যলোকো ন ষা-माि ॥ क्षियाव्यं वास्तरि मूं क॰ প্রেতো ভুঙ্কে যতো ২বশঃ। অতে। ন রোদিতব্য হি ক্রিষা कार्या विधान ७: ११ देखि एकि- | लाहना जी लाका १ गार्का १

ख्वः॥ ।। जनाकः। बिकारा-নুবাচ। অশোচ্যানৰশোচ জু थेखावामा॰ के खावटम । श-তাস্নগতাস্ণত নানুশোচন্তি পশ্তিতাঃ ৷৷ অব্যক্তোষ ষচি-ख्याय यविकारकाश यू**ठहरू ।** ङ्यादिकः विविदेषमः नान्-**मा**िष्ठ् यहीत ॥ **चय दे**ठन॰ নিভাজাত নিভা বা মন্যসে मृठः। তথাপি दः महावाटहा-নৈন শোচিতু মর্ছসি ৷৷ জাত-मा रि अप्ता मृजा अर्व जमा मृञ्जा ह। जन्मानगतिशाद्यादर्थ न प लाहिजू वर्शन ॥ कही निতा यन दशाय दमर मर्बमा ভারত। তন্মাৎ সর্বাণি ভূতানি न द॰ শোচिতু मर्रा ॥ इंडि প্রীভগবদ্গীতাষা ২ অধ্যাব: ॥ শোকনাশঃ পু অশোকবৃকঃ ৷ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শোকহারী স্ত্রী বনবর্বরিকা ৷ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শোকারিঃ পু॰ কদন্তবৃক্ষঃ।ইতি नका छिका।। শোচন॰ ক্লী শোকঃ। ইভি ছেম-ठखः ॥

শৈচিণিওস্তাৎ ডন প্রত্যবাস্তা-দাৎ প্ৰত্যৰ নিশল। ইতি সং-किश्रमात्रवाकत्रवः॥ শোচিঃ ক্লী প্রভা। ইত্যমরঃ।। ल्गाहित्कमः भू अधिः॥ हिंव-कतृकः। ইত্যমরः॥ শোচ্যকঃ ত্রি অবরঃ। কুদ্রঃ । ্ইতি শব্দমালা।। ल्गाणियां क्ली वीयां। देखि नय-त्रकावनी ॥ শোঠः वि मूर्यः।। वनमः। ইতি 'रमिमी ॥ धृर्जः ॥ नीठः ॥ भा-পরতঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।। त्मान **स गट**ो ॥ वर्त । इंडि कविकन्नक्रकाः ॥ वर्षाक्र ज्ञुकी-ভাবঃ৷ শোণতি সূর্য্যঃ সন্ধ্যাষা ा इंडि पूर्शापामः ॥ **्लान की मिन्द्रशा क्रिया** ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ॥ **ए**नानः भुः त्रस्कारभनजूनावनः १ छ । क्षित्रायः । काकनमक्ष्तिः २। इंडामदः॥ तरकारभवनि-**छः ७। ই**छि मक्तव्रावनी ॥ রক্তোৎপলাভঃ ৪। ইতি জটা-थतः १। नर्मविंटगयः । छ० शर्याः যঃ। ছিরণ্যবাহঃ ২। ইত্যমরঃ ।। শোণরত্ন স্ক্রী পদ্মরাগমণিঃ । হিরণ্যবাহঃ ৩ ৷ ইন্তি ভরতঃ ৷৷

স তু অমরকত্তিক দেশাৎ পাট-লিপুত্রে গঙ্গাযাণ মিলিতঃ। ত-ज्ज्ञन थनाः। क्रिक्षः। मञार्थ-শোষাপহন্ত। পথান্ত। বङ্লिक-त्रवः। यत कीगात्रवृक्तिश्रमव्यकः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। 🛊 ।। অগ্নিঃ া। শোনাকঃ।। লোহিতাশ্বঃ।। কোকনদছাযে ত্রি। ইতি মে-मिनी ॥ ममूजितिमयः । ইতি धर्तिः ॥ तरककः ॥ त्नानाक-थए मः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শোগকঃ পু• শোনাকবৃক্ষঃ ৷ इंजामतः ॥ শোণীঝণ্টিকা স্ত্রী রক্তনৈরেয়ঃ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। त्नानिको जी अक्रवकः ॥ कन्छ-किनी। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। लागणवाः भुः तक्तभूनर्गा। देवि व्राक्तिर्घकः ॥ **लाक्नियक** की तुक्कमन । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শোণপুশকঃ পু॰ কোবিদারঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। लाग्यूकी ही जिन्दूत्रयूकी। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ ইজ্যমরঃ 11

শোণা জ্রী শোণবর্ণযুক্তা। ইতি । জটাধরঃ।।

শোণাকঃ পুণ বৃক্ষবিশেষঃ।শো
গাইতি খাতঃ। তৎপর্যায়ঃ।

শোনাকঃ ২ শুকনাসঃ ৩ শ্ব
ক্যাঃ ৪ দীর্ঘস্তঃ ৫ কটমটঃ ৬
অরলঃ ৭ স্বর্ণবন্ধ লঃ ৮ প্রান্তশা
ত্রবঃ ৯। ইতি শব্দনালা।। মঞ্

কপর্ণঃ ১০ পলোর্ণঃ ১১ নটঃ ১২
কটুলঃ ১৩ টুন্টুকঃ ১৪ শোনকঃ
১৫ অরলঃ ১৬। ইত্যমরঃ।।
স্যোনাকঃ ১৭ অরটুঃ ১৮। ইতি
তট্রীকা।।

শোণিত ক্লী রক্তণ ইত্যমরঃ ৷৷
তল্যোৎপত্তি গর্ভস্বস্য পঞ্চমেমাসি ভবতি ৷ ইতি সুখবোধঃ ৷৷
সঙ্কুমণ ৷ ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ৷৷

শোণিতচন্দন ক্লী ব্লক্তচন্দন । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ !৷

শোণিতপুর ক্লী বাণপুর । ইভি ত্রিকাওশেষঃ।।

শোণিতাহ্বসং ক্লী সন্ধুনং। ইতি রত্নমালা।।

শোণিতোৎপল ক্লী রক্তোৎ-পল । ইভিকেচিৎ ॥

শোণী স্ত্রী রক্তোৎপলতুল্যবর্ণ। স্ত্রী।ইতিব্যাকরণ জটাধরশ্চ।। भारताथनः भू मानिकाः। ইতি
। রাজনির্দকীঃ।।

শোণঃ পু রোগবিশেষঃ ৷ তৎ-পৰ্যাৰঃ। শোকঃ ২ শ্বৰণঃ ৩1 ইত্যমরঃ।। শোথকঃ ৪। ইতি नकत्रवावनी ॥ जय त्नाथाधि-কার:। তত্র শোপস্য বিপ্রকৃষ্ট निमान गार्। एका। यश ज्ङ क्रगावनाना॰ कात्राञ्च जीटकाक গুৰুপদেবা। দখ্যাম মৃচ্ছাক বি-রোধিপিস্ট গরোপসৃষ্ঠান্ন নিষে-বনঞ।। অৰ্শাস্য চেচ্চা ৰপুষো-হুশুদ্ধি মৰ্মোপদাতো বিষমা-প্রসৃতিঃ। মিথ্যোপচারঃ প্রতি-কৰ্মণাঞ্চ নিজসা হেতুঃ স্বৰপোঃ श्रीमिकेः॥ श्रीक बंगन विद्राक।-नि। আমराः পাঙুরোগাদযः। অভক্ত॰ অভোজন । আৰঃ অপকে। ভুক্তস্য রসঃ। পিষ্টগ-রোপসৃষ্টান্ন পিন্টো যো গরঃ সংযোগজ বিষ তেন সংসৃষ্ট-यमः। वश्रवा श्ककः लाध-नाईमा षश्रा श्राधनः। य-শ্মোপৰাতঃ দোষক্লত এব জ্ঞে-ষঃ। বাছহেতুক্তস্ত মৰ্মো-পহাতঃ আগন্তজনোথহেতু ব্লে-ৰ। বিষয়া প্ৰসূতিঃ আসগৰ্জ

পতনাদিকা ৷ প্ৰতিকৰ্মণা ব্য नामिना शक्कर्यानाः। मिट्या-शक्तां अग्राक्कद्र १ अश-থোঃ শোথসা। নিজ্সা আছীয-ना। সনিক্রকীনা হেতে। বাভাদেঃ । एकुः बत्काक वश्तामि ॥ 🛊॥ न्बिक्क निमान गार्। मादेवः পৃথক্ৰযেঃ সৰ্বৈ রভিঘাতাদিবা-দি। সর্বো হেতুবিশেষৈস্ত ৰূপ-ভেদো নৰাত্মকঃ।।।।। সংপ্ৰাপ্তি-शूर्वकः नायानाः लक्ष्व याश् । त-कि शिख ककान् वायु मू रही। मूछी-ৰ্ বহিঃ শিরাঃ। নীম্বা রুদ্ধগতি-देखिर् अर्वाा प्रक्षा न में खेरा। উৎসেধ সংহত শোপ ত সাহ निष्ठमामणः। मरगोत्रवः मामन-ৰ্শ্বিত্তৰ সোৎসেধ মুক্ষাথ শি ব্লাতভত্বণ। সলোমহর্ষণ বিবর্ণভা **চ मायाना लिकः य्यट्याः अपि-**ষ্ট ।। উৎসেধঃ উন্নতত্ত্ব কি বি-**शिके बूष्रिशः खाळः शृर्विका-**িষ্কচ**ষাৎ ব্যক্ত**পিত্ত কফ বাতানাণ जमूलाका । ग॰ इठ॰ वन । छमू -সেধ পোথ মাহু রিত্যব্যঃ।। তদ্য শোপস্য কি স্যাদিজাকা-क्कांबा यार्। अनवविष्ठवः मा-मनियञ शिकिः मानिङार्थः ।

চিकिৎ ना वाजिए त्रक्षानि निवृ-ত্তে:। তচ্চানকস্থিতত্ব॰ সগৌরব॰ मा । भोत्रव मेगानविष्ठ স্যাৎ। অথ চ সোৎসেক স্যাৎ। উন্নতত্ত্ব মপ্তানবস্থিত স্যাদিত্য-ৰ্থঃ।। কাভিক শোপ মাহ। চর স্তন্ স্তৃক্পরুবো ২রুবো ২সি-ভঃ প্রসুপ্তি হর্ষার্তিযুতো নিমিত্ত-তঃ । প্রশামাতি প্রোন্নত মেতি शोजिता क्वी गार अवषुः मभोत्रवार ॥ हतः मकात्री। अम्-প্তিঃ স্পর্শাজ্ঞতা। হর্ষো ২ত্র ঝিনি বিনীরোমাঞে। বা। অর্তিঃ গীডা । এउन्युष्टः। मिरायनी विक्रि वि-ষদ সমবাধারকাৎ। অতএবো-ক্তে চরকে। ক্ষেহোম মর্দনা-देना कः थानात्मा भ न वािकः । बन्हाभाक्रनवर्नः माष्ट्र त्नार्था নক্ত॰ প্রশাম্যতি।। 🐠 ।। পৈত্তিক बाह्। बृद्धः मगरमा श्मिल शील রাগবান্ ভূম জর স্বেদ তৃষা মদা-ষিতঃ। ৰ উষ্যতে স্পৰ্শৰুগক্ষি রাগরুৎ স পিত্তশোখো ভূশ-मार পাকবান্।। উষাতে সন্ত-প্যতে। ভূশ দাহ পাকবান্ ভূশ-मार्ट्। यः भाक खन्नुकः ॥ 🛊॥ देश भिक मार । छकः ख्रिः शाख्

পুরোচকাপিতঃ প্রদেক নিজা ব-वि दक्षिमानाहृ । न हुन् जना প্রশ্বো নিপীডিতো ন চোমকে জাত্রিবলী ককাছাকঃ।।।।। বন্দু क गार्। मिनानाक्र्ि मन्नर्गाद टब्बरः त्नार्था **बिलायकः ॥ ॥**।। गाविणाजिक यार । गर्वाहिकिः সন্মিপাতাচ্ছোপো ব্যানিপ্রলক্-बः । कामिश्रवक्त केवृत्क म ৰাক্ততি রিভি উক্তবাতজাদি लाथमकणलक्ष नियमार्थ॰ शकाः षाजियाज्य गार्। जियाज न भञ्जानि एक्न एक ककानि जिः। शियानिरमाष्ट्रानिरम छ-ब्राङ क्रिक्फ्टेक्सा इटेमः भू-देक क मन्यानी दे श्रवकः माबि मर्गतात्। ज्रामायाः लाह्जि-**जा मध्यायम्ह शिखनकन्ह्री।** (इ দঃ থজাদিনা ভেদঃ পাষাণাদি ना कुछ भन्नामिना नाडीवनामि চ। আদি শব্দেন লগুড় প্রহারা-मि गृश्रा । जनावरेक तरेमः। ৰূপিকচ্ছভাঃ শুকৈ:। বিসর্প वान् अगत्रगणीनः। शिखनकनः देशिखिक (भाषनक्ष क्ष ।। 🛊 ।। 奪 यकगार । विककः मिबस्थानि পরিমর্পন মূত্রণাৎ। দেশ্ট্র। দস্ত 🏻

मधाराजानविर्यानिमा वनि ।। বিঘূতা শুক্রোগছত মলবছপ্ত-मक्ति । विववृक्षामिनामां भवत्यागावपूर्वनाथ ॥ मृत्र् कटला श्रवनी ह नीट्या स्टब्स्काकदः। পরিসর্পণ শরীরোপরি সঞ্চরণ । দ'ব্ৰা বিশুণীক্তা দভাবলী। की र रेजि लाटक। मखा जटा खवाः। खनिव आनिमा मनीषा-क्षित गविषष्यभूकः। किन्न मर्शामि-বিষ॰ মারক॰ ভকতি। অবিষঞা-निमा न खुामिविष लाथ वा-थानिकत्र अवजीति विरमयः । বিমূত্তেত্যাদি বিভাদ্যুপহতত ম-लिनक वष्डा । उक्ष जक्र मः मार्कनीनिः कित्था भूगापिः छका॰ मन्मकादा भन्नत्वाभाव-**जुर्ननाथ गतः मन्दर्गगळः विवः** তন্য যোগো যায় তেন বস্তুমাৰ-थूननार। जनमधी महसानः। जः ষ মপ্যাগৰজ স্থগাপি সামান্যা-গন্তজ্ঞশোপ চিকিৎসাতো ২স্য বিশিষ্টচিকিৎসাভিধানাৎ পৃধ-ক্পঠিতঃ।। বা ক্লি ক্লি দোষা যত্ৰ শোধ- সৰ্বন্তি তদাহ। দোবাঃ भवश् मृक् हि वर्खामाणहर

STANSON BUTTON न्यूयाकाः अगूः महमग्र छ्या। का जा अव्वृत्य । नारा नवानकम्(शा । अक्षः शकानका-प्रवेश ।। जेनेजवानार । न नः निभाना क्रिनिक मिर्वनाः बत धेर है। यमा हात्व कृति नी डि শোখিন ত বিবৰ্জমেৎ ৷৷ # ৷৷৷ के के माश्राज्ञानिक मार । (वा ववा-प्तरम स्वस्ः म करिः मर्नगम् सः । অর্দ্ধাঙ্গে হরিষ্টভূতক্ষ ষ কো-क्रु॰ পরিসর্গতি।। মধ্যদেশে উরঃ-शकागरमार्था । मर्बगः मकन भतीत्रज्यः । मर्बेक देखि भार्ष्ठ সামিপাতিকঃ। অদ্ধানে অদ্ধনা-त्रीश्वताकादत । व त्कार्क् शति-সর্গতীতি পুরুষবিষয় । তথা চ। छर्कुगाभी नतः शिखा मर्यागाभी मूथा खिव । উ छ व व खि न । জাতঃ শোখে। হস্তি ন সম্পদঃ।। উर्कुगागी मूचगागी। ज्या ह छ खास्टरत। भाष्यवृद्धः स्वश्ंम्-ना॰ कः आश्रमाम्रूथ॰ इंडि। म न निधाणीलि त्नयः। जर्धागानी পাদগানী। তথা চ ভন্নান্তরে। জ্ৰীণা বজ্ৰাৎ পদ যাতি বস্তি-

জশ্চ ন সিধান্তীতি। উভয় নর ৰাব্লাক। অপর্ক। অনন্যোপত্র-ব্যুক্ত শোধঃ পাদসমুখিতঃ ৷ शूकर रिख वा नाती मूथ का व-खिट्या वरु ॥ असमर्थः। शान-সমূখিতঃ পাদাত্যা মুখিতো মু-খগাৰীতি বাৰৎ শোণঃ পুৰুষণ इंडि म कि निर्मिकः व्यमत्मा ११-जर कुंडः। त्नाकानत्या व्याधाया হতীসার গ্রহণার্শঃপ্রভূত্যঃ ভে-বা মুপদ্ৰবৈঃ ক্ৰতঃ। তদুপদ্ৰবেণ জাত ইতার্থঃ। অন্যোপদ্রবর্তঃ । অৰন্যোপদাৰ্কতঃ। অৰ্থাৎ ৰহেতুভি রেব জাতঃ। শোখ-वाशिद्यव कु त्रुन मूर्थकः मूथा-জ্ঞান্তঃ পদগামীতি যাবৎ না-রী॰ হস্তি। সোপাননোপডাব ক্তএৰ । বস্তিজঃ দ্বয়ণ পুৰুষণ नातीक रुखि (मार्गानरना) शक्य ক্তপ্ৰবা। क।। কাথ শোখস্য िकिस्मा। एकी पूनर्व देवत्र ७ পঞ্চুলী শৃত জল। বাতিকে श्वराधी गरु॰ शानाशत शतिश-देश ॥ 🛊 ॥ शरहान जिकनातिक দাৰীকাথঃ সগুগুলুঃ। হস্তি পিত্ত-ক্তত শোপ তৃকা শ্বর সমন্বিত ।। 🗰।। সুক্ফীর ভাবিতাঃ রুকা

পথ্যা মূত্ৰেণ বা যুতাঃ। যোজি-তাঃ শ্মযন্ত্যাশু শোপ শ্লেম স भृषिक ॥ 🛊 ॥ भिट्य भिञ्चिक याः अया। नर्वत्क नर्वत्यव हि । বিশ্বপত্ররসং পৃতং শোষণ জি-ভবে शिवि ।। ।। भार्य द्या-शत्रु क्या (मक लिशिक् শীতল । ভল্লাতক্যা হরেচ্ছোথ जिला क्रक्ष्मृ खिका।। यहिका नवनीजक हाना कृषा जिला विकः । व्यव मुक्षः महिवा। वद । यञ षाह। यश्वीकीत नः शिरके ज वनीज ममिश्रिकः। ज्रितं र्लिक्षः সম যাতি শোখো ভলাতকো-थिङः ॥ 🛊 ॥ यकि मुक्ष छिटेन र्लिला नवनीराजन मः बुजः । **(भाथ बाककत रिंड हिर्देश बा**-वमनमा ह ॥ क ॥ विषक्रत्भाथ-চিকিৎসা তু বিষচিকিৎসাঘাণ क्रिका ॥ ।। अथ भाषानाि কিৎসা। পথ্য। নিশা ভাগ্যমৃতা-धि मार्बी भूनर्वा मारू मट्येषध । काथ॰ अभीरमानत् भाविभान-मू-খাগত॰ হস্তাচিরেণ শোপ-॥ প-**थापिकाथः॥कः॥कन जिरकास्यरः** काथः लाम् खिरंग्र माथरम् । वाज्यसम्बद्धः त्नाथः इन्। पृत्र

गड्य ।।।।। वृन्हीय प्रवक्तम् मी गदान पञ्जी बिन्ज्यायन हुन देक दी। । मूकः मूमिकः विधिवा निशीष्ठः গীত পর শোধহর ভিষম্ভিঃ।। वृण्ठीवः वर्षाजृः ॥ ।।। दक्ष ख्या-कं वर्षाज् निश्वनात्थन त्नाथन्द । গোমুত্ৰেণাপি স্বৰীত সুখোকে-नावरमहन ।। 🛊 ।। भूनववा माझ শুন্তী শিশুঃ সিদ্ধার্থক স্তথা। অ-म्निभिक्तः मूर्यारकायः अल्लभः म-र्नाथर्थ ॥ 🖝 ॥ छाउ जिंक वा গুড নাগর• বা গুডাভযা• বা গুড পিপ্ললী॰ বা। কর্ষাভিবৃদ্ধ্যা ত্রিপ-ल अयानः शामित्रतः भक् यथानि ৰাসং।। শোৰ প্ৰতিশাৰ গলাস্য রোগান্ সশ্বাস কাশারুচি পীন-मानीन्। कीर्बन्नार्मा अर्गी वि-कातान् इनगा ७थानगम् कक वाञ्द्रागान्॥ 🛊 ॥ विश्वः श्वर्षः ন তুলা পৃশ্চীৰ রসানুপান মঞ্চা-छ । विनिष्ठि गर्बटमाथ घन-वृन्तः हथवाषु तिव ॥ 🛊 ॥ कना नागत्रक हूर्न मञ्जूष लाप ना-मनः। जाबाकीर्व अमननः मृत-भ्रः विख्याभनं ॥ 🛊 ॥ खर्छो পলত্রষণ আছণ শৃঙ্গবেরণ পলত্র-यः। भृत्रदिवसमा क्रका लाइविषे जित्याः भनः। हुर्व (मण्ड मण्डाः निविद्याः भनः। छणः निविद्याः। अ। यानककाथ कः हाणाः मृण्डाकः विभाहत्य । अकु कारणाहित्र ।। अकु कारणाहित्र ।। यानकपृष्ठः ।। यानकपृष्ठः ।। यानकपृष्ठः ।। अ। अकु मृज्यः वर्षाण् पाकः व्याप्ताः। अकु मण्डाः । अकु मण्डाः । अकु मण्डाः । यानकपृष्ठः ।। अकु मण्डाः । यानकपृष्ठः । यानकपृष्ठः ।। यानकपृष्ठः । यानकपृष्ठः ।। यानकपृष्ठः । यानकपृष्ठः । यानकपृष्ठः । यानकपृष्ठः । यानकपृष्ठः ।। यानकपृष्ठः । यानकपृष्ठः । यानकपृष्ठः । यानकपृष्ठः । यानकपृष्ठः । यानकपृष्ठः । यानकपृष्ठः ।। यानकपृष्ठः । यानकपिष्ठः । यानकपिष्ठः । यानकपिष्ठः । यानकपिष्ठः । यानकपिष्ठः । यानकपिष्ठः । यानकप

শোষমী স্ত্রী পুনর্থন। ইত্যমরঃ । শালপর্ণী। ইতি রাজনির্যন্টঃ ॥ শোষনাশকে ত্রি ॥
শোষজিৎ পুণ ভলাভকঃ। ইতি
ত্রিকাওশেষঃ ॥

শোথজিহাঃ পু॰ পুনর্ণবা। ইভি ত্রিকাওশেষঃ।।

लाथक् पृ जन्नाजकः। हेनि तत्रमाना।। लाकहात्रक वि।। लाथकः क्षी कन्नूष्ठे। हेनि तान्न-निर्वकः॥ श्विकात्रक वि। यथा। महामाञ्जभनः श्वेषा छ-श्वकृष्ण भारनः। क्रत्नाभवा-महम्बद्ध वन्नकृत्रञ्ज लाथकः॥ ইতি প্রায়শ্চিত্তভ্রষ্ত বিশ্বাস নিত্রবচন ।।

ल्गाधनः क्री लोहः। ইভি खक शाइर्थं मर्गनाए ॥ विश्वा । इंडि नक्ष्रिका ॥ कानीमः। इंडि ब्राजनिर्यन्हेः ॥ विश्वि विश्वि याजाबिकात्रनः। यथा। সূর্য্যঞ হণকালেন সমানো নাস্তি ক-भागः। তক্ত यहार क्रुड मर्व यन-স্তক্তমণ ভৰেৎ।। ন সাস ভিথি বারাদি শোধন সুর্ব্যপর্বণি ৷ ইতি নলনাসভত্ত্ব।। 🛊 ॥ ধাত্-निर्द्भाषीकत्रनः। यथा। भखनी-क्रु भवानि (रहा रहा) थ्रा-**পবে । निविद्ध** उथानि देखन हत्क ह काक्षिदक ॥ (भा-মৃত্তে চ সলখানা ক্যাবে তু ত্ৰিখা ত্ৰিখা। এব হেয়া পরেৰাঞ্চ ধাতৃনা পোধন ভবেৎ।। 🛊।। वनामिनितिकत्ननः। क्या। वन-मा पविश्वमा काथः श्विक-तः गतः । भरोत निष्माखमा সৰ্বত্ৰৈব প্ৰযুজ্যতে ॥ বাতিকে দশযুলানা কীরিণা পৈত্তিকে ब्रुट्ग । आत्रध्यारमः क्कर्क क-বাষঃ শোধন হিত ৷৷ 🛊 💵 ज्ि ह। ज्यारियनाः म त्यार्यन

ठजूर्थनार्श्वत्कन वा । व्यथ वा काथरनरेनव मिक्क यूरकामक॰ वरम् ।। श्रियायकाक त्यरमाञ्च विखिर्गाधन मीशन । इंडि ह जावश्रकामः ॥ 🐞 ॥ निश्विज श्वारिः अमानीकत्र । यथा। লেখ্য শোধন মাছ কাত্যায়নঃ । স্বহস্ত লেখ্য সন্দেহে জীবতো বা মৃতস্য চ। তৎ স্বহস্তকৃতৈ-त्रोः शरेख खरा था निर्वयः॥ 🗱 🛚 विक्रक्षनिथिতमा 🥸 स्कीक-त्रवः। यथा। ज्याधान वार् वः হস্পতিঃ। ন্যুনাধিক পূৰ্বপক। **जावबामी वित्नाथरयः। न म** मामुखद्र गाव अञारी मजा-मिद्रि ॥ काजायनः । त्ना-धरमः शृर्वशक्य मावस्माखन्नः मर्गन । উত্তরেণাবরু**জ্**স্য নি-বৃত্ত॰ শোধন॰ ভবেৎ ॥ ইতি वावश्रवेखः ॥ 🛊 ॥ अक्रमा इ-রণ । যথা। ভাজ্যান্ধরঃ শুদ্ধ্য-**जि यम् ७१३ मा। मछा। ५ कवा** তৎ খল ভাগহারে। সমেন কে-নাপাপবর্ত্তা হার ভাজ্যো ভ জেদা সতি সম্ভবে তু।। ইতি नीनावजी।। जनाद श्विनत्क जक्रवा॰ ॥

শোধনঃ পু॰ নিযুকঃ।ইতি রাজ-নিৰ্মণ্টঃ ৷৷ ल्गाधनः वि श्विकात्रकः। यथा । टेंडन टेमझन यक्ताब्स निम-भल निभाषुरेगः। बिवृष्यनषु-हैं शिरकः श्राह्म वन्तान ধনঃ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। ल्गाधनी जी मःगार्कनी। रेका-मतः ।। তাमुबली।। नीनी। ইতি क्राक्निर्घरिः ॥ শোধনীযঃ बि শোধিতব্যঃ 1 लाधाः। खश्यात्वा तनीय अ-छारयन निष्णक्षः ॥ **(माधनीवीक क्री ज्यभानः**। ₹ তি রাজনির্ঘন্টঃ ॥ **শোধিত** जि यक्तिकाम् अन्यत्नन क्रज्याधन बाधनामिः। छव-পর্য্যায়ঃ। সংমৃষ্ট ২। ইত্যমর-ভরতৌ। অপি চ। ব্যঞ্জনে কে-न की हो नि शुरक मन्यू के ला वि-**७। ইতি শব্দরত্মাবলী।। অপ-**नीजमलः। जद्भर्यायः। निर्नि-कु॰ २ मृके॰ ७ निःरमाधा॰ ८ अ नवस्कत्र॰ ৫। ইত্যমরভরতে।।। শোকঃ পু॰ শোখঃ। ইত্যমরঃ॥ लाक्त्री जी भानभी। क्रक-भूनर्गा। इंछि द्राजनिर्विष्टेः॥

(गोकनामनः श्रुः नीलवृकः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শোথনা-नदक बि॥ শোকন্ধৎ পু ভন্নাতকঃ।ইতি ভাবপ্রকাশঃ। শোথহারকে ত্রি শোভন ক্লী পদা ইতি শব্দ-ठिक्का ॥ শোভনঃ পু॰ গ্রহঃ। ইতি ধরণী ।। विकछानि मश्चवि॰माजियाभा-ন্তৰ্গত পঞ্চমযোগঃ। ইতি মে-দিমী।। ভত্র জাতকল । স্যা-চ্ছোভনঃ শোভনযোগজ্মা-দক্ষে। বিপক্ষপ্রতিলব্ধবিত্তঃ। • ममूखत न्हां क्रिय् भूशीतः म॰-मानमुद्धा मनुष्कः अवीवः ॥ ইতি কোষ্ঠীপ্রদীপঃ।। শোভনঃ ত্রি সুন্দরঃ।ইতিমে-मिनी।। अना भर्गात्मा बत्ना-खन्दन जक्रेगः ॥ শোভনকঃ পু॰ শোভাঞ্চনবৃক্ষঃ 1 ইতি শব্দচন্দ্ৰিকাঃ।। শোভান भक्कात्रक बि॥ শোভনা ত্রী হরিজা।। গোরো-চনা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শোভা স্ত্ৰী শোভন্তে খনষা। मोखिः। তৎপর্যাযः। कास्तिः ্২ দ্যুতিঃ ৩ ছবিঃ ৪। ইত্যমরঃ

।। দ্যুতী ৫ ছবী ৬। ইভি ভটীকা য় অভিখ্যা १। ইতি জটাধরঃ ॥ শুকা ৮ জাঃ ৯ শ্রীঃ ১০ ভাসা ১১ ভ। ১২। ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ সুষমা ১৩ ছায়া ১৪ বিভা ১৫ দৃক্পিষা ১৬ ভানণ ১৭ ভাতিঃ ३৮ कमा ३२ तमा २०। इंडि त्राक्रनिर्यकः॥ छमा लक्ष्यः। সা শোভা ৰূপ ভোগালৈয় ৰ্থ-माममिविज्यनः। मारेजिव का-স্তি রাখ্যাতা মন্মথাপ্যাষ্ট্রো-ब्कुला ॥ रेजुब्कुलनीलमिनः ॥ 🐞 ॥ त्रानीवित्नवः । यथा। দৃষ্ট স্তু শোভবা গোপ্যা যুক্ত-क्तकानरन। मामा मक्क মাত্রেণ ভিরোধান ক্রত ছযা।। শোভা দেহ পরিত্যজ্য জগাম চন্দ্রমণ্ডল ।। তত স্তস্যাঃ শরীর-ঞ্ নিশ্ধ তেজে। বভূব হ। সংবি-**छका घरा मंख॰** शमटयन विम्य-छ।। त्रञ्जार किकिश वर्गाय कि-ক্ষিমাণিবরায চ। কিঞ্চিৎ স্ত্রীণাণ মুখাজেভাঃ কিঞ্চিদজে চ কি-**क्ष्म ।। किक्षि** किम्मल स्वार्थ जा मह পুষ্পেভ্য শ্চাপি কিঞ্চন। কিঞ্চি-চ্চন্দন শক্ষেত্ৰ্য স্তেখিত্যশ্চা-পি কিঞ্চন ৷৷ কিঞ্চিৎ ফলেভ্যঃ

শাসোভাঃ সুপক্ষেভাশ্চ কিঞ্চন।
কিঞ্চিমৃতনবস্ত্রেভা। দুগ্ধেভাশ্চাপি কিঞ্চন।। ইতি ত্রবৈবর্তে
প্রকৃতিখণ্ডে ২ অখ্যাষঃ।। ॥।।
হরিদ্রা।। গোরোচনা। ইতি
রাজনির্যন্টঃ।।

শোভাঞ্জনঃ পুণ্ বৃক্ষবিশেষঃ। শজিনা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যা-ষঃ। শিগুঃ ২ তীক্ষণদ্ধকঃ ৩ অক্ষীবঃ ৪ মোচকঃ ৫। ইত্য-মরঃ ॥ তীক্ষণস্ধাঃ ৬ সূতীক্ষঃ १ ঘনপলবঃ ৮ শ্বেতমরিচঃ ১। ইতি জটাধরঃ।। তীক্ষঃ ১০ গন্ধঃ ३३ शक्तकः ३२ काक्षीयकः ३७ আক্ষীবঃ ১৪ শুভাঞ্জনঃ ১৫ স্ত্রী-চিত্তহারী ১৬ জবিণনশেনঃ ১৭ । ইতি नक्तज्ञावनी ॥ क्रक्श-দ্বা ১৮ মূলকপণী ১৯। ইতি त्रज्ञगाना ॥ नीनिनगुः २० जन-श्रियः २३ मूथरमामः २२ क्रयः-শিশুঃ ২৩ চক্ষুষ্যঃ ২৪ রুচিরা-ঞ্জনঃ ২৫। অসা গুণাঃ। তীক্ষ-षः। कर्षेषः। सामूषः। উकषः। পিচ্ছিলত্ব॰। জন্ত বাতাৰ্ত্তি শূল ना भिष्ठः। ठक्क् विषठः। त्राहन-ष्य । इंडि ताकनिर्वन्छः ॥ অপি চ। শোভাঞ্জনঃ কটু.

স্তিক্তঃ শোথ বিজধি গুলানুৎ। অথ শোভাঞ্জনঃ শ্যানঃ শ্বেতঃ রক্ত শ্চ। শোভাঞ্চনঃ শিগু তীক্ষ-গন্ধ কান্দীব মোচকাঃ। তদ্বীজ॰ শ্বেতমরিচ নধুশিগুঃ সলোহি-তঃ।। শিগুঃ কটুঃ কটুঃপাকে তী-क्यारक। गश्रुता लघुः। मीभरना রোচনো ৰকঃ কব স্তিক্তো বি-দাহরং।। সংগ্রাহণ্ডকলো হ-দ্যঃ পিত্তরক্তপ্রকোপণঃ। চক্ষ্যঃ কফ বাতম্বে৷ বিডাধি শ্বযথ ক্রমী-न्।। त्यतमाश्री विष भी इ खना গণ্ড ৰণান্ হরেৎ। শ্বেডঃ প্রোক্ত-श्वरंग उद्धरंग वित्यंत्रामाङ्केष्ठ-বেৎ।। প্লীহান বিজ্ঞধি হস্তি ত্রণমঃ পিত্ত রক্তক্তং ৷৷ মধুশিগুঃ थाकुश्वत्वा वित्यवाकीशनः म-রঃ। শিগু বন্ধল পত্রাণাণ খর-भः शत्रभार्तिङ्थ ॥ # ॥ हक्षाः শिगु कं वीक जिल्हा क विषता-শন । সব্যা কফ বাতম তম-স্যেন শিরোর্ত্তিন্থ।। শিগুশাক হিম স্বাদু চকুষ্য বাত পিত্তহ্বৎ । वृण्ड्न खळकू किका क्रा मन क्रिमिन् ।। क्षा जमा भूका श्वाः । শিত্যোঃ পুলান্ত কটুক তীক্ষো-

कः नायु लायन् । क्रमिहर কফ ৰাভয় বিজৰি প্লীহ গুলা-किए।। 🛊 ।। ज्या कल छनाः। ल्गाङाञ्चनकलः चामु क्यायः क्क शिखनू । भृत अर्थ क्य श्वाम श्रम्भार मीयन श्रम ॥ ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। 🛊।। অথ রক্তশোভাঞ্জন পর্য্যায়ঃ। সুর-की चानूगक्षा ठ मधुलक्षः छ-ভাঞ্জনः ॥ ইতি রত্নমালা ॥ অন্যক্ত। রক্তশোভাঞ্চনে তু-ल्गो यथु भिशु यथु जरवी। देखि नस्तज्ञावनी॥ #॥ जमा भून গুণাঃ। মধুশিগ্রো স্তৃকিহিত। রক্তপিত্তপ্রসাদন ।। ইতিভা-বপ্রকাশঃ ॥ ৠ ।। অন্যৎ রক্ত-শিগুশব্দে জষ্টব্য ।।

শোলী স্ত্রী বনহরিজা। ইতি রাজনির্বন্টঃ ॥

শোষঃ পু॰ ষশ্বরোগঃ। ইত্যমরঃ

।। শোষণ । ইতি মেদিনী ।।
তজোগস্যৌষধ যথা । বচা
ত্রিকটুকদৈব করঞ্জ দেবদারু
চ।মঞ্জিষ্ঠা ত্রিফলা শ্বেতা শিরীষো রজনীদ্বর্য ।। প্রিষম্পু নিষ্
ত্রিকটু গোমুত্রেণাব্ঘর্ষিত ।
নস্য মালেপনকৈব স্নান মৃদ্ধ-

র্ত্তন॰ তথা। অপস্মার বিষো-মাদ শোষালম্বী জ্বাপহ॰। ভূতেভ্যশ্চ ভষ॰ হন্তি রাজঘা-রে চ শাসন॰।। ইতি গারুডে ১৯৯ অধ্যায়ঃ।।

ইতি রাজনির্ঘণটঃ।।
শোষাপহা স্ত্রী ক্লীতনকং। ইতি
রাজনির্ঘণটঃ।। শোষনাশকে ত্রি
শোষিতঃ ত্রি ক্রতশোষণঃ। যথা।
জাতাপি ভক্ষিতো যেন বাতাপিশ্চ মহাসুরঃ। সমুদ্রঃ শোষি-

তো যেন স মে ২গস্তাঃ প্রসী-

पञ् ॥ ইতি মলমাসভত্ত[°] ॥

(मोक॰ क्वी एंकगनः। हें जामदः ।। जीना॰ कतन॰। ইতিমেদিনী।। त्मीकत) क्री जीर्थितरमकः । (भोकतव) वथा। वतार छना ।। শৃণু মে পরমণ গুৰুণ যন্ত্রয়া পরি-भृष्डितः। यस स्काः भन्नदेशन শুদ্ধ ভাগবতপ্রিম ॥ পর (काकामूथः स्रामः ख्याः स्खा-মুক পর । পর পৌকরব সা-ন॰ সর্বসংসার মোককং।। বত म॰ हा ह या प्ति श्रिकुलामि व সাতলাৎ। যত্ৰ ভাগীরথী গঙ্গা ষম শৌকরবে স্থিতা।। ধরণাবাচ । दक्ष लादक्ष माजीन ली-করে যে মৃতাঃ প্রভো। কি॰ বা পুণাণ ভবেত্তত্ত্ব স্বাভস্য পিবভ স্থথা।। কতি তীর্থা বিশালাক ক্ষেত্রে পৌকরবে তব। ধর্ম সণ-शालनार्थाय अबिरका बकु गई-मि॥ बद्रार छेबाह । मृक्ष्टाबन य प्ति यख भा भित्रभृक्ति। কা॰ গভি॰ তে প্রপদ্যন্তে নরাঃ শৌকরবে মৃতাঃ ৷৷ ভেষা সা नमा देव भूगा॰ गठरमाव म्टमा ব।। তত্ত্ৰ যানি চ তীৰ্থানি মম भण्यान मण्यिकाः ॥ सृन् भूनाः নহাভাগে মম কেত্রেষু সূন্রি।

প্রাপুরন্তি মহাভাগে গলা শৌ-कत्रवः প্রভি॥ দশ পূর্বাপরা॰ काणि जगन्नाम् मश्च नक ह। স্বৰ্গণ গচ্ছন্তি তে তত্ৰ ৰে মৃতা खिवू जिख्यः ॥ भगनात्मव मू-ध्यानि यूषमा सम पर्णनाए। ज-প্রজন্মান্তরে ভড়ে জাকতে বি-भूता कता। धन धाना नमृद्धा-वू बाग वान् खनवान् खिठिः। य-ख्क टेन्टर कार्यक यम कर्माभ-क्रायनः ॥ अव देव मामूरवा जृषाः অপরাধ বিবর্জিতঃ৷ পমন ত-স্য ক্রেস্য মরণ তত্র কারণ ।। ষে মৃতা ন্তত্ত সুম্রোণি কেত্তে भीकत्रत्व मया मध ठक गरा[।] পদা চতুহন্তা শ্চতুভূজাং॥ত্য-জ্বা কলেবর তুর্ণ মম লোকা-व गक्छि। इंडि वादांटर ली-করবতীর্থ নাহাত্যো আদিভা बत्रथमान गृधु जबू (काशाचानन नागाशायः॥

শৌক্তিকেষ° ক্লী মুক্তা। ইতি রাজনির্ঘণটঃ।।

শৌক্তেষ ক্লী ম্ক্তা।ইতি রাজ-নির্মাণ্ট ।। শুক্তিসম্বন্ধিনি ত্রি।। শৌক্ল্য ক্লী শুক্তা। যথা। গ-লিত জরসা শৌক্ল্য কেশাদৌ

विमुना जता। ইত্যমরः।। শোচ ক্লী শুচিতা। শুচিমণ एकिः। তमा नक्षां मि यथा। অভক্য পরিহারস্ত সংসর্গ কা-প্যনিশিতেঃ। স্বধর্মে চ ব্যবস্থা-ন॰ শৌচ যেতৎ প্রকীর্ত্তিত ।। ইত্যেকাদশীতত্ত্বে বৃহস্পতি ব ্চন॰ ॥ 🟶 ॥ অন্যচ্চ। সর্বেষ। মেৰ শৌচাৰা মৰ্থশোচণ বিশি-ষ্যতে। যো ২র্থার্থে রশুচিঃ त्नीहाम यमा वार्तिना एकिः॥ সভাগোচ সনংশোচ শোচ মিন্দ্ৰিয়নিগ্ৰহঃ। সৰ্যভূতদ্যা-लोठः जनलोठंड अक्रमः ॥ যস্য সত্যঞ্চ শৌচঞ্চ তস্য স্বর্গো न मूर्ले ७:। ই छि गाइन्ट ५ ३० अधायः॥ 🛊 ॥ अभि छ। साव-তা শুদ্ধি মন্যেত ভাবচ্ছৌচণ मयाहरत्र थयान लीह मः थाया न गिर्के क्र अनिगार ॥ শৌচন্ত দ্বিবিধণ প্রোক্তণ বাহ্ **मा**जाखतः वर्गा। मृब्द्धनाच्याः স্মৃত° বাহু°়ভাবশুদ্ধি রথান্ত-त°॥ ३७ भाक्र ७२३७, व्यक्षा-यः ॥ 🛊 ॥ शामानित्नो छन। यथा। (यथा॰ शविक मायुषा भलकी कविनागनः। शाहरया

बंदाबार्त्राणा लोहाशन बड़ी ক্ষশঃ।। ইভি রাজবল্লভঃ।। 🟶।। অপি চ। উদ্ভাৱো মৃত্তিকাভ্যা निथ॰ नात्रम यञ्जलः। कृत्या ६-সর্গ ভতঃ স্ব্যাৎ শৌচ মূত্র भूतीचरवाः ॥ ইिं भारमाखत्रथ-(७)०२ ज्यायः ॥ क्राक्षा अन-कामरभोठकाळ निशास्त्र । वाप উবাচ। দশাহ প্রাহ্ রাশৌচ সপিওেশু বিপশ্চিতঃ। মৃতেষু চা-থ জাতেষু বান্ধনানাণ দিজোত্ত-बाः। बिज्यानि टेठव कर्यानि क।-गानि চ दित्ययुक्तः। न क्या-हिहिछ किथि याशाय मन-मानि ह।। शुहीननिधना॰ खुना।-न् भालारको श्वरपिष्ठकान्। खकारमन करेल बानि देवजाना-जूश्याखणः ॥ # ॥ न न्श्रमयु ति-बानत्वा न ह एक्जाः नवाहरत्र । ठर्जुर्ल शक्ति वाङ्गि मन्यार्गः কথিতো ৰু ধৈঃ।। সূতকে জু সপি-ভানা সংস্পাদো ন প্রদুষ্যতি। সূতক সৃতিকাঞ্চৈব বৰ্জবিদ্বা न्वाः भूनः ॥ क्षा ह निर्श्रत প্রোক্ত মশোচ চাতিনির্থণে। এক দ্বি ত্রিগুণৈ যুক্তণ চতু স্ত্রোক क्टिनः श्रुठिः ॥ क्याहाजु अतः

সমাगधीषीञ जूदशिक है। हजूर्य তস্য সক্ষাৰ্প মনুঃ প্ৰাছ প্ৰজাপ-जिः।। कियाशीनमा मूर्यमा य-श्राताणिन अव ह । न्यर्थके हिन्नन-मार र्यत्रवाख बटनीठक ।। ।। ত্রিরাত্রণ দশরাত্রণ বা ভাক্ষণানাস্ত পাৰকণ। প্ৰাক্ সংস্কারাৎ ত্রিরা-क गामचामृक् मनाहक।। छे নদিবাৰ্ষিকে প্ৰেতে মাভাপিতো স্তদিব্যতে। ত্রিরাত্তেণ শুচি স্তু-रना। यपि इञास्तिर्श्वनः॥ जाप-ন্তজাত মরণে পিত্রে। ব্লেকাছ মি-ষাতে। জাতদন্তে ত্রিরাত্ত সাা-ন্দাদি স্যাভান্ত নিৰ্গুণৌ ॥ আদস্ত জননাৎ সদ্য আচুডাদেকরাত্র-ক॰। ত্ৰিব্বাত্ৰ ৰৌপন্যৰাৎ সপি-ভানা মুদাহত ।। জাতবাত্রস্য वालमा यनि माम्बद्धनः शिष्टुः। म-দ্যঃ শৌচ সপিণ্ডানা কর্ত্তব্য 'रनामतमा ह।। के कु॰ मनाशाटम-काश् मादता यकि निर्श्वनः। जर्थाकु मुख्यतनार मिश्री ना बट्गोहक्गा अकार् निर्श्वा নান্ত চূডাদূৰ্কুণ ত্রিরাত্তিকণ। অ-म ख्रुकाञ्यद्भवः अख्रुट्यम्यमि अख-মাঃ।। একরাত্র॰ সগিতানা॰ যদি ছে ২ত্যস্তনির্গুণাঃ। ব্রতাদেশাৎ

मिश्राना गर्बाक् भान विश्वीय-তে।। সর্বেষা মেব গুণিনা মূর্দ্ধুত্ত विषय॰ भूनः ॥ 🗰 ॥ अई।क् यन्।।-मण्ड खीनाः यमि मामार्ज मः मृ-वः॥ छना मानमदेन छाना मटनी-চ॰ দিব সৈঃ স্মৃত । অত উদ্ধৃষ্ণ প-তনে ব্রীগাণ স্যাদ্দশরাত্রকণ। স-माः स्नीष्ठः मिखानाः शर्व्या-বাচ্চ বা ততঃ॥ গৰ্ৱচ্যুতাৰহো-রাত্রণ সগিভে ২তান্তনির্গণে। যথেষ্টাচরণে জ্ঞাতো ত্রিরাত্র মি-**তি नि**ण्ठयः ॥ 🟶 ॥ यिन म्या 🗢 मृ-ভকে সূতি শারণে বা মৃতি ভবেৎ । শেষেণৈৰ ভবেচ্ছদ্ধি রহংশেষে ত্তিরাত্রক ।। সরগৈ। ৎপত্তিযো-গে তু মরণাচ্ছদ্ধি রিযাতে॥ #॥ अववृक्षिममारेगीठ मूर्क्रएकः खन अकाछि॥ जय हि शक्ष्मी॰ ता-ত্রি মতীত্য পরতো ভবেৎ। অ-यवृक्षिमनारनोठ॰ छमा शृर्दि । छ-জ্যতি।। **ঞ**া দেশান্তরগত॰ ঞ্-ত্বা সূতক শাব বেব তু। তাবদ-প্রয়ভো মর্ভ্যো যাবচ্ছেষঃ সমা-প্যতে।।।।। অভীতে মৃতকে প্রো-ক্ত॰ দগিভানা ভিরাত্তক। ত-থৈব মরণে সান মূর্জণ সম্বৎসরা-न्यनि ॥ विनार्थ विनशीयात्ना द्याः

विमान् वृज्जिकविंछः। महाश्ली-**४ अव्यक्ता नवीवकानू नविता** ৷৷৷৷ ত্ৰীণা নসংস্কৃতানাৰ প্ৰদা-নাৎপরতঃ সহা। সপিভানা • ত্রি-রাজ সাাৎ সংকারান্ডর্ভু রেব চ ।। অত खुबखकनाना नत्नो ठ॰ न-द्राप च्यूक । जनविवर्ग चारण म-माः त्नीव युनास्छ ।। जानजा ६ मानःत नवा चाटोजादनकता-ত্রক । সাপ্রদানাৎ তিরাক मान्नभंतां बढः भन्न ॥ 🐞 ॥ **ৰাভানহানা॰ নরবে ত্রিরাত্ত॰ স্যা-**मर्भो ठकः १ अरकामकानाः यद्वरः मूखंदक देछखरमय हि। शकिनी रवानिमदक्त वान्नत्वम् छरेथव ह ব্রহ্মচারিণা°। প্রেতে রাজনি স-জ্যোতি ৰ্যস্য স্যাদিষ্যে স্থিতিঃ ॥ গৃহে মৃতাসু দত্তাসু কন্যকাসু बारः निजुः। भन्नभृदीम् जार्याम् পুলেষু ফ্লভকেষ্ চ ।। ত্রিবাত্ত॰ माख्याहार्या चलायाचनागा-मू ह। जाहार्याभूत्व भन्नाक चटराताल गूमालञ् ॥ अकारः माामू भाषादि य वाद्य (आबिद्य ২পি চ। ত্রিব্বাত্ত মসপিত্তেৰু স্ব-গৃহে সংস্থিতেৰু চা৷ একাছৰা শ্ব-

खर्या मार्टाक्यवाख्य निवादक है ত্রিরাত্ত শব্দেশরণে শশুরে চৈত-दमत रि॥ मनाः एभो छः मम्पि छे সংগ্যক্তে সবিতে সভি।।। ए-ध्विविध्या मेगार्ट्स बामगार्ट्स खुत्रिभः। देवभाः भक्षमभारस्य ण्टा बारमन खकारि ॥ **॥**। क्ख विष् भूख मायामा (य मूर्रा वि-প্রস্য বান্ধবাঃ ৷ তেবা মপৌচে বিপ্রসা দশাহাচ্ছ্ঞ্জি রিষ্যতে ৷৷ ब्राजना देवनाग्वरणावः शैनवर्गाः मू रवानितृ। क्रयन त्नीवः क्रवा-छा॰ विश्वकार्थः न जन्मयः॥ मर्द তুত্তম ৰণানা শৌচ কৰ্মা র-ভক্তিতা:। উদ্বৰ্ণ বিশিদৃষ্টেন স্বস্ত त्नोह॰ बरवानियू ॥ बङ्गाब॰ वा তিরাত্ত স্যাদেকরাত্ত ক্রমেণ ত্ । देवना कजिय विश्वानाः नूट्य-স্বাশৌচ ষেব তু।। অৰ্দ্ধমাসো ২৭ युांब॰ विद्रांब॰ विकश्नवाः । শুড ক্ৰিৰ বিপ্ৰাণাণ বৈশ্যেষা-**म्नोठ विद्यारछ।। ब**ङ्राखः बानभा-रक विञ्राना देवना मुख्याः। जल्मेह॰ कविरय (थाक॰ करमन षिक পুত্ৰব ।। শূজ বিট্ ক্ষতিযা-ণাস্ত ব্ৰাহ্মণে সংস্থিতে সতি। দশ-রাত্তেণ শুদ্ধিঃ স্যাদিত্যাহ কম-

लाख्यः ॥ ₩ ॥ ञ्रमिश्र• दि-জ প্রেত বিপ্রো নিহ্ তা বন্ধু वर। अभिन्ना ह मरहाविन्ना मण-রাত্রেণ শুদ্ধাতি।। বদান শত্তি ভেষান্ত ত্রিরাত্তেণ ভভঃ ভটিঃ। व्यनमञ्जूष मदेश्व न ह अभिन् भृट्ह वमन् ॥ मामदद्वाखान मााबाज् तात्थव् वस्तू । मना-হেন শ্বস্পর্শে সপিও কৈব শু-দ্বাতি ৷৷ বড়াত্রেণাথ বা সর্বে ত্তিরাত্তেণাথ বা পুনঃ। জনাথ-रिक्ष्य निष्ट्र ठा बाञ्चन धनविक्कं-ত ৷৷ স্বাস্থা সংপ্রাশ্য জু মৃত **खका** खि वाक्रगामयः । व्यवत **८** कि इत वर्ग यह के विकास कि া অশোচে সংস্থানে সেহাত্ত-मामोक्ति **एका** जि॥ श्रा তীভূত দ্বিজ বিপ্রো যো ২নু গচ্ছতি কামতঃ। স্বাস্থা সচেল॰ স্ফুাগ্নি ঘৃত প্রাশ্য বিশুল্গা-**जि ॥ अकाश्य क्वित्य श्वि** देविगाना॰ माष दादश्न जू। শূজে দিনত্রয়ণ প্রোক্তণ প্রাণা-यागणा भूनः ॥ 🛊 ॥ जनम् সঞ্চিতে শুদ্রে রৌতি চেদ্রাহ্মণঃ || चकः। विद्रावः मानशार्भोत भिकारः बनाया मृष्ठः ॥ अन्दि-

मक्षनावर्वारगकार देवना मु जरवाः। अनावा टेव्य मरकाार्डि र्वाकरण ज्ञान स्वत जू ॥ जन्कि मिष्ठ वित्थ बाम्हावा द्वीछि क्रिक्षा। शास्त्रीन क्रिक्ष मरहरतान न मः भरा ॥ 🛊 ॥ व देखः महानानः अधाष्ट्यनामीन टेक्ट हि। वाऋत्वा वा शत्वा वा-शि ज प्रभार्ट्न एकार्कि ॥ • ॥ य एउया यह यक्षां जिल्लान পি কাষতঃ। তদাশৌচে নিবৃত্তে **২সৌ সান° ক্লছা বিশুদ্ধাতি॥ যা**-বত্তদন মন্নাতি দুর্ভিক্ষোপহতো-नतः। তাবস্তাহান্যশৌচ साद প্রাথশ্চিত্ত তত শ্চরেৎ ॥ 🗰 ॥ माशामारगीठः कर्तवाः विकान। যগ্নিহোত্তিণা । সপিগুনাস্ক ম-त्रत्व यत्रवामिकटत्रयू **ह** ॥ #॥ म-পিওতা তু পুরুষে সপ্তমে বিনি-বর্ত্ততে। সমানোদকভাবস্ত জ यानारमा त्रत्वमदन ॥ शिष्ठा शि তামহ শৈচৰ তথৈৰ প্ৰপিতামহঃ । लगजाक मञ्जूषीमाः मानि-**खाः माखरभोक्रयः ॥** व्यन् जानाः তথা জীণা॰ সাপিণ্ডা॰ সাপ্তপৌ-ৰুষ । জাষানা ভত্সাপিণ্ডা थार (दर शिकायरः ॥ (य देइ-

শৌচিক

A CONTRACTOR OF THE PARTY OF ক্ষিব্যান্ত সাগিতা তবে-खिना जिल्लोकन ॥ • ॥ कार्य-नः निविद्या देवना नानी नान पर्धा ह। मालाद्या नियमी टेंह-व बन्धविष्कात्रिली।। मिलिला ত্রতিন স্তাবৎ সদ্যঃশোচা উদা-স্তাঃ । রাজা চৈবাভিষিক্তশ্চ विश्राः मिबन अव हा। मटड वि-বাহকালে চ দেব্যাগে ভথৈৰ **छ। अमाश्याहि॰ अमाशाहि॰ मृ**-ভিন্দে বাপ্যুপদ্ৰবে ॥ ডিয়াহ্ব-হতানাঞ্চ বিদ্যুতা পার্থি বৈ দ্বি-देखः । महाः टमो ह॰ मगार्था छ মক্তাতি মরণে তথা ৷৷ অগ্নে ম-क्रञ्जाण्या वीत्राक्षनाणानाणाक । बाक्षनाटर्य ह मन्त्राट्य मनाः-শৌচ॰ বিধীষতে ।। 🗱 ।। নৈষ্ঠি-কানা বনস্থানা যতীনা বন্ধ-চারিণা । নাশৌচ কীর্ত্তাতে স-ক্তিঃ পতিতে চ তথা মৃতে।। পতি-**जाना॰ न माइः माञ्चारञ्जाि** র্নান্থিসঞ্চা ন চাশ্রুপাতঃ পি-एका वा कार्याः आकामिकः क-हि ।। व्यानामत्यमथाञ्चान अ-य॰ याशि वियामिङिः । विहिত॰ তস্য নাশৌচ নাগ্নি নাপ্যুদকা-

দিক'।।
।। অথ কশ্চিৎ প্রমাদেন মুষতে হার বিষাদিভিঃ।
তদ্যাশোচণ বিষাতব্যং কার্য্যইফবোদকাদিকা।।
।। জাতে
সমারে তদহঃ কামং সর্য্যাৎ প্রতিগ্রহণ। হিরণ্য ধান্য গো বাস
স্থিলাম গুড় সর্যপান্।। ফলানি পুল্পাং শাকঞ্চ লবণং কার্চ
মেব চ। তোষণ দিধ ঘৃতং ক্রীর
মৌষধণ তৈল মেব চ।। অশোচিনাং গৃহাদ্গ্রাহ্ণ শুদ্ধাম মেব
নিত্যশঃ। ইতি কোর্মে উপরিভাগে ২২ অধ্যাধঃ।। অন্যৎ
পালোভরখণ্ডে ১০৯ অধ্যাবে
দেউব্যং।।

भौहाहातः पूर शिक्षकर्म। यथा
। भौहाहात विश्वीनमा ममञ्जा
निश्कलाः कियाः। ইত্যাহ্লিकाहात्रञ्ख बक्षभूताणः॥ जन्मका। উপনীय গুৰুঃ শিষ্যः
महावाह्य পূৰ্বক। বেদ मशांभरपदमनः भौहाहाताः क भिक्षरण्य। ইতি योद्धवन्द्राः।। भौहिकः पूर वर्षभक्षत्रविरम्यः। यथा। देकवर्जमा ह कन्मायाः भौशिकारमव भौहिकः। ইতি পরাশরপদ্ধতিः।। भ्यतिकः भू॰ त्रक्रकः।
भयतेषावनी।।

শৌট ঋ গর্বে। ইতি কবিকন্ধক্রমং ৷৷ চতুর্দশবরী। ঋ অশুশৌটৎ। শৌটতি বীরং। ইতি
দর্গাদাসং ৷৷

শোদীরঃ পুণ ত্যাগী ৷৷ বীরঃ ৷
ইত্যুণাদিকোষঃ ৷৷ গর্বান্বিতে ত্রি
৷ শোটধাতো রীরণ্ প্রত্যাবেন
নিশারঃ ৷ ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদ্যা মুণাদিবৃত্তিঃ ৷৷

শৌটীর্য্য ক্লী বীর্য্য । ইতি শব্দ-রত্মাবলী ৷৷ গর্বঃ ৷ শৌটীর শ-ব্দাৎ ভাবে ক্ষ্য প্রত্যবেন নি-ত্পান্ন ৷!

শৌড ঋ গর্বে। ইতি কবিক্ল
ক্রমঃ ৷৷ চতুর্দ্দশস্বরী ৷ ঋ অণ্ডশৌডৎ ৷ ইতি দুর্গাদাসঃ ৷৷
শৌগুঃ ত্রি মক্তঃ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷
শৌগুর্যাণ ক্রী অহকারঃ ৷ ইতি
কেচিৎ ৷৷

শৌশুকঃ পুণ জাতিবিশেষঃ ৷
শুড়ী ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ
৷ মণ্ডহারকঃ ২৷ ইত্যমরঃ ৷৷
শুণ্ডারঃ ৩ শৌশু ৪ শুণ্ডকঃ ৫ ৷
ইতি শব্দরত্বাবলী ৷৷ ধ্বজঃ ৬
পানঃ ৭ পণঃ ৮ ৷ ইতি জটা-

भतः॥ कन्नभानः २ मूत्राकीवी
२० वातिवामः २२ भानविक्
२२ भकी २० वामूजीवनः २८॥
१७ हि ह्यह्यः॥ ज्ञाप्रभिक्
र्था। ज्ञा भाक्षिकवन्मायाः
देकवर्जात्मव त्मीखिकः। देकवर्जम ह कन्मायाः त्मीखिकात्मव त्मीहिकः॥ १७ भत्रामतभक्षिणः॥

শেষ্ট্রী পু॰ শেষ্ট্রিকঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।

শৌণী স্ত্রী পিপ্পদী॥ চব্য°। ইতি বিশ্বঃ॥

শৌজীরঃ ত্রি অহন্ধারী। যথা।
শৌজীরো গর্বিত স্তন্ধো মানী
চাহন্দৃদ্ধতঃ। উদ্প্রীব উদ্ধান্তরা হকুপ্রো নীচশ্চ পিশুনো
হবমঃ॥ ইতি ধনঞ্জযকোষঃ॥
শৌজঃ সুং ভাদশ্বিধপুল্রাস্তগ্রন্থান্তমাৎ শূজান্ত্রা ত্রামান্তমাৎ শূজান্তা কাজঃ। যথা। জরসঃ
ক্ষেত্রজো দত্তো গুটোৎপদ্মশ্চ
ক্ষৃত্রিমঃ। ক্রীতাপ্রিদ্ধ কানীন
শৌজ পৌনর্ভরা অপি॥ স্বয়ণ
দত্তঃ সহোটোপি দ্বাবুরস্যোরসৌ সমৌ॥ ইতি জ্টাধরঃ॥

শুক্তসম্বন্ধিনি ত্রি।।

लोकामिनः प् माकावन्मा-विश्व क्रम्निवित्मकः। इछा-मतः॥ एक सामनममा इछि मनीयापिः। एकामित्ना नाम-त्राका। छथा हि। एकामित्ना बर्णा जूरक्ष-नायव्य एकत्माप-नः। इछार्या जिथानः। एकाप-नमाभछाः भोकामिनः वास्ना-माछ इछि किः। इछ जत्रछः॥ लोधिका खी तकककृः। इछि इसम्बद्धः॥

শৌনকঃ পু॰ মুনিবিশেষঃ। যথা

া সপিগুকিরণাদুর্দ্ধৃ॰ ন দদ্যাৎ
প্রতিমাসিক॰। একোদ্দিফবিখানেন দদ্যাদিত্যাহ শৌনকঃ
।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব॰।।

শৌনিকঃ পু॰ মাণসবিক্রযকর্ত্তা।

যথা। বৈতণসিকঃ কৌটিকশ্চ

মাণসিকঃ শৌনিকঃ সমাঃ ।।
ইতি জটাধরঃ হেমচন্দ্রণত ।।

মৃগৰা। ইতি শক্ষালা।।

শৌভ ক্লী হরিশচন্দ্রপুর । ইতি বিকাপ্তশেষঃ ৷৷ তৎপর্য্যায়ঃ ৷ ব্যোমচারিপুর ২ ৷ ইতি ভূরি-প্রযোগঃ ৷৷

শৌভঃ পু॰ দেবতা। ইতি ত্রি-

का खरमवः ॥ खराकः । **३७** भक्तमाना ॥

শৌভনেযঃ ত্রি শোভনসন্ধরী। শোভনশকাৎ কেব প্রত্যাবেন নিশারঃ।।

শৌভাঞ্জনঃ পু॰ শোভাঞ্জনবৃক্ষঃ
। ইতি ভরত দ্বিকাশকোষঃ ৷৷

भोखिकः श्रू॰ हेखकानिकः। हेडि भक्तभाना।।

শৌভূেষঃ ত্রি শুভূাষা অপত্যং। ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণং॥ শুভূ-সমম্মিনি চ॥

শৌরিঃ পু॰ বিষ্ণুঃ। শনৈশ্চর-গ্রহঃ। ইত্যমরভরতৌ।। শৌর্পিকঃ ঠ ত্রি শূর্পপরিমিত॰। শৃ-শৌর্প্যঃ ঠ পশকাৎ ফিক প্রত্য-বেন ফ্যপ্রত্যবেন চ নিষ্পক্ষো।। শৌর্যাণ ক্রী আরভটী।। শক্তিঃ। ইতি মেদিনী।।

শেষণ ত্রি শুক্ষসম্বন্ধী। শুক্ষ-শব্দাৎ ক প্রত্যযেন নিম্পন্ধণ ॥ শৌক্ষিকঃ পুণ শুক্ষাধ্যক্ষঃ। ইতি হেমচক্রঃ॥

শৌদ্ধিকেষঃ পু॰ বিষভেদঃ। ই-ত্যমরঃ।। শুদ্ধিকো দেশভেদ শুত্র ভবঃ শৌদ্ধিকেষঃ কেষঃ তালব্যাদিঃ। ইতি ভরতঃ।। শোবিকঃ পুণ কণশকারঃ। কাঁশারি ইতি ভাষা। তৎপর্যাষঃ।
তামুসটকঃ ২। ইতামরঃ।। কামন্দমী ৩ কাণস্যকারঃ ৪। ইতি
ভটাধরঃ।। ভাষ্কিঃ ৫।

রকঃ ৬। ইতি শব্দর্থাবনী ।। শৌবং দ্লী শুনঃ সংখ্যাহন ।। শু-নোবৃন্দং ।। শ্বোভবং । ইতি সং কিপ্তসারব্যাকরণং ।।

শৌবন॰ ক্লী শুনোভাবং ৷৷ শুনো ২পত্য• ৷ ইতি স•ক্ষিপ্তসারক্যা-করণ• ৷৷

শৌবস্তিকণ ত্রি ভারিদিনস্থানি বস্তু। বথা। আত্মস্তরি স্থাপিনিতে নরাণাণ ফলেগ্রহীন হণ্-সিবনস্পতীনাণ। শৌবস্তিকস্থা বিভবা ন বেষাণ বজন্তি তেষাণ দখনে ন কন্মাও।। ইতি ভটো ২ সর্গং।। বেষাণ বিজ্বাং সম্পাদ্ধ দং শৌবস্তিকস্থা ভাবিদিনস্থিত তত্ত্বণ ন বজন্তি তেষাণ ক্যাজাদ্ব দখনে। শোভবং শৌবস্তিকঃ শুসোণভবার্থে কণ বিশ্বানাৎ কণি মনীযাদিস্বাৎ ত্যাগমং ব্যান রম্বরেতি উন্ নিভেব্রি রিতি বিঃ স্থতৌ ভাবে ইতি স্থা। ইতি তট্তীকা।। लोवागन जि शाममगनि । भागमगना क अठारम नि-भाग ॥ इंडि मुक्तराधवाक्रमण लोकनः भू खबमा ममानवकः । इंडि स्मिनी ॥

स्तिः वि व्यामियानी। हेनस्तः । निष्णा माण्य ज्ञानभीनः। व्यामियः व्यक्षाि व्यामियानी अहाि प्राप्तिः। एकनी एकमां एम गाम्याः गमात्वः
नि मृणात्व। वा मिन स्निक्तः
कः वानवािन मूर्कनामधः ।
एकः माण्यः नावि हेनि एकः
नः श्रद्धािष्या ऐनि निक्तः
। हेनि दिनाि दिनामः। भाकनः
हेनि भाठः हेनि सामी। हैनि

कृष्ठ १ हेत्र कर्ति । हेष्ठि कित-कृष्ठ १ हेत्र क्रति । एके जानवाद-गीमायूक जानवानि । त्यावा श्रुष्ठामियूकका । नकात्रकाद-नृष्ठात्र शक्ष्याविज्ञामि नियत्य श्रुष्ठात्र शक्ष्याविज्ञामि नियत्य श्रुष्ठात्र शक्ष्याविज्ञामि नियत्य श्रुष्ठात्र शक्ष्याविज्ञामि नियत्य श्रुष्ठात्र श्रुष्ठात्र श्रुष्ठामीना त्या-कृत्रात्र (कार्ति श्रुष्ठामीना त्या-कृत्रात्र (कार्ति शर्षाभाष्ठ (नार्त्य) 'एक किति शर्षाभाष्ठ (नार्त्य)

চূলুम् रेछामिनिकः। किन्न पो मसामी हेि धार्थमीय कम দীশ্বরৌ। তেন মৃত শ্চোততি ইতি ষ্তশ্বৎ ত বাচক্টে ইতি ক্রে ক্রীনংশ্চেভি ডিম্বাটিলো-পে ঘৃতক্ষতি পুনঃ ক্লিপি এে লোপে ঘৃতস্ক ইতি স্থিতে সং-रवाशासः ममा लात्म घृठक् इंडि (किटि ॥ इंत् चम्हूंडर অন্টোতী । অশ্চাতৎ অ-শ্চ্যোতীৎ। কর ইতি আসে **চন॰ क**र्नगक्रश तक बाटन्ह्यांच তি কুর ইতি। ইদ॰ কৰচ ম-**(म्हार्जिमिन्डि। नित्म्हार्जिस्स** স্তন্কবরী বিশ্বৰো ষাবদেতে ইতি মালত্যাণ গণক্তানিতাত্বণ 1 इंडि दूर्गामामः ॥

শ্রেচ্যাতঃ পু॰ প্রায়ারঃ। ইত্য-

শা ক্লী মুখ । ইতি মাশ্রুপক-টীকাষা ভরতঃ।

শ্বশান ক্লী শবদাহস্থান । তৎ পর্য্যায়ঃ । পিতৃবন ২ । স্ট্র্যা মরঃ ।। শতানক ও রুজাজীড়ঃ ৪ দাহসরঃ ৫ ৷ ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ ৷৷ অস্তুশয়া ৬ পিতৃকা-নন ৭ ৷ ইতি জ্বটাধরঃ ৷৷
॥ !।

তদ্য ব্যুৎপত্তি ৰ্যথা। শ শব্দেন শব প্রোক্তঃ শান শবন মূচ্যতে । निर्वष्ठि भागानार्थः गूरन ण-कार्थकाविषाः॥ यहास्त्रात्रि ह जुर्जानि अवस्य मम्शक्ति । শেরতে ২০ শবো ভ্রা খাশানম্ব ততো ভবেৎ।। মহাশ্মশান যথা । ৰাব্লাণদীতি বিখ্যাতা ৰুজাবাস ইতি বিজাঃ। মহাশ্বাশান মিত্যে-ক প্ৰোক্ত মানন্দকানন ।। ইতি শ্ৰীক্ষান্দে কাশীখণ্ডে ৩০ অধ্যাৰঃ ॥ ।। छेष्मंद वामत्व देवव प्-র্ভিকে শত্রবিগ্রহে রাজদারে খা-नारन ह य खिश्रें जि म वाक्षदः ॥ ইতি চাৰক্য ।। ৠ ।। খাশানে গদ্বা विकुम्भारमं लाखा यथा। वता इ উবাচ। **শ্মশান**° যো নরো গন্ধ। অস্বাট্মব তু মাণ স্পৃলেৎ। মম मायाभद्राधमा मृन् তत्ख्न य ফল ।। জন্মকো জাযতে ভূমে वर्षाणा नव शक ह। भृशुख সপ্তবৰ্ষাণি জাযভে খচরেশ্বরঃ । চর**ভৌ মানুষ** মাণ্**স** উভৌ তৌ গৃধু জন্বকৌ। পিশাচো জা-ষতে তত্ত্ৰ বৰ্ষাণি নব পঞ্চ চ।। ভতস্ত ঙ্গৰপোচ্ছিষ্ট ত্ৰি॰শ্বৰ্ষা-ণি খাদতি। ততো নারাষণাচ্ছু স্বা

ধরণী বাক্য মত্রবীৎ 🔃 এতমে 🛭 गत्रमः अशः लाकनाथ कनामन् । পর কৌতৃহল দেব निश्रितः वक् मर्गा। भागानः भूखती-কাক ঈশ্বরেণ প্রশংসিত। তত্ত कि॰ विश्वन॰ प्लव शावित्व निव ভাষিতে ৷৷ স তত্ৰ ব্ৰমতে নিত্যুণ ভগবাণ্জ্ব মহাদ্যতিঃ। কপাল॰ गृष्ट मिरवाज मी श्विम छ॰ यरही-জন ।। প্রশংসিতঞ্চ রুদ্রেণ ভ বতা কিং বিনিন্দিত ৷ শ্বশানং পামপত্রাক্ষ রুদ্রষ্য চ নিশি প্রিষণ ॥ বরাহ উবাচ। শৃণু তত্ত্বেন মে-दनिव देन याथानि मुख्यः। जनाः পি তে ৰ জানন্তি অন্যে শংসি-ত বতাঃ।। কৃষ্। সুদুষ্কর কর্মা স-ৰভূতপতি হ্র:। হন্বা চ বাল वृक्षानि बिश्रद्ध किर्निः खिषः॥ তেন পাপেন সংব্ৰো ন শক্ষো-তি বিচেষ্টিতু ॥ তত ঈশো মযা চোক্তো বাক্য মেব স্থাবছ । কিমিদ ভিষ্ঠদে রুজ কণ্মলেন मभान्जः ॥ जन देवन श्रियाशीय যেনাহ মিদ মাগতঃ। ততো নম বচঃ শ্রুত্বা লক্ষসংজ্ঞো নহেশ্বরঃ য়া উবাচ মধুর বাক্য পাপসম্ভ-खटलाहनः। তব विद्या अमा-

मिन यहा ७ जिथूद्र॰ १७॰ ॥ नि-হতা দানবা স্তত্ত গর্ভিণ্যশ্চ নি-পাতিতাঃ। বাল বৃদ্ধ। হতা স্তত্ত্ব विक्तूत्रां कित्या मन्। जित्रा পাপস্য দোষেণ ন শক্ষোমি বিং **टिकिन् ।** अनकेरवागवायन्ह नदेखेश्रयी क गाधव।। किं गया ষিপ্রকর্ত্তব্য মেনোবক্টেন **মা**-धव। वित्रः। তत्त्वन स्म जहि त्माधनः भाभनागनः ॥ त्यन देव ক্লতমাত্ৰেণ শীৰ্ণ মুচ্যেত কিন্ধি-বাৎ। এবং চিন্তামন তত্ত্ৰ নযা ৰুজস্য ভাষিত[•]।। কপাল মালা• मःशृंश मयनः शृष्ट् भक्त ॥ य-নৈব বচন শ্ৰুষা ভগবান্ পর-**प्राथकः**। উবাচ মা॰ পুন र्वाञ्क॰ মাণ বোধৰ জগতৎপতে।। কীদৃ भः मबला विरका यव गष्टान-হে বয় । তত স্তম্য বচঃ প্রুত্ব। শ-ষ্করস্য যশস্বিনি ॥ তৎ পাপশো-ধনাৰ্থাৰ মধাবাস প্ৰভাষিত।। भूगान मगरला क्रफ शृं छिरका তত্ত্ৰ মনুজা বিগতস্পৃহাঃ। তত্ত্ৰ গৃহু কপালানি রম তত্ত্বৈব শবর ॥ ठेक वर्षमञ्जानि मिवारमाब দূ ঢবতঃ। ততো ভক্ষ মাণনানি

পাশকৰ চিকীৰু কঃ ৷৷ ছি॰দ্যমা-নানি ভোজ্যানি বে চ ভোজ্যা खब श्रियाः। এव॰ मदेवं भंदेवः मार्कः त्रम ठव मूनिन्हिण्डः ॥ भूत्न वर्षमङ्ख् जू दिया यः ममत्ल পুনঃ। এবাসি স্বাঞান পুণা গৌতমন্য মহামুনেঃ ৷৷ তত্ত্ৰ জ্ঞা-স্যাসি চাত্মান: আশ্রমে বিধিসং-স্থিতে। প্রদাদাৎ গোতমস্যাথ ভবিতা গতকিব্বিষঃ ৷৷ এবং তস্য বর দন্ধা তত্রৈবান্তরধীয়ত ৷ রু-জোপি ভূমতে তত্ত্ব শ্বশানে পা-পসংবৃতে।। এবং ন রোচতে ভূমে শ্বশান মে কদাচন। যত্ৰ ৰুজ ক্লত পাপ স্থিত কিল ভষাবহ ম এতত্তে কথিত ভতে শ্বশান ৰে জুগুন্সিত। বিফুাপি ক্ত-সংক্ষারো মম কর্মপরাবণঃ ৷৷ প্রাযশ্চিত্ত প্রবন্ধ্যামি বেন 👒 ধ্যতি কিন্দিষাৎ। রূদ্বা চতুর্থ ভ-क्य मिनानि हम शक ह। आका-শ শ্বন প্র্যাৎ একভক্তঃ স্থ শান্তরে। প্রভাতে পঞ্চগব্যন্ত পা-তব্য॰ কৰ্মশোধন।। প্ৰমুক্তঃ সর্ব পাপেভ্যো মম লোকাষ গচ্ছতি। ইভি বারাহে খাশানপ্রবেশাগ-ৰাখ প্ৰাথশ্চিত্তনামাধ্যাখঃ ॥

थागानकाली खी कालिकादि-(भरः। जय भागानकाली। जन् कः कानीज्ञा । वानीः यागाः ততো লম্বীণ কামৰীজ মতঃ প-त्रः। कानित्क मः भूदे एक ठकुः इः रीष्ट्र गानित्थर।। अकाष्ट्रभा-ना मिर्दिन हर्ज्ज अमारिनी ।। ।। यमा। यद्यः। भग्न मकीर-न वृत् ज्वारक भवनीजन । हजूबात्रमभाषुकः यत्था मूलः मः मानित्थ ॥ मतन दुरुम् बिनि-(४९ क्वर्गामारुवर्गकः। धत-गाः विलिथमामाः ठज्कक ठ-जूकरक ॥ পूर्वामि **উ**खद्राखक मरधा रहवी॰ প্রপৃক্তবে ।। 🕸 ।। অস্যাঃ পূজাক্রমঃ। প্রাতঃরু-ত্যাদি প্ৰাণামামান্ত কৰ্ম কৃত্বা अग्रामिनाामः वर्षा ६ वर्षा । **শित्रिंग** जृश्वश्वरय नमः। ऋषि भागांनकानिकारेय (पवजारेय नमः। ७८ए वाधीकाय नमः। शानर्या गायाभक्रत्य नमः । ग्र्वादम कायवीककी नकाय न-यः। ७७: कद्रात्रनाटमो। औँ व्यक्षिणाः नयः। ही वक्तनीः ভ্যা॰ স্বাহা। 🕮 মধ্যমাভ্যাণ वर्ष्। क्वीँ यंनामिकाजाः है।

कानित्क किनिष्ठाज्याः (बोबऐ। क्रीयामि दाश्वराख क्रब्ब भूशे-न्त्राः करे। এবः समयामित्।। **ততো शानः। अञ्चलक्रिनिछाः** (परी श्रामाना वर्गा मिने। ब्र-ক্তনেত্রা॰ মুক্তকেশীঃ শুক্ষমাণ সাতিভৈরবাণ।। পিঙ্গাকীণ বাম-श्रुव यमाशूर्व **मया मक**ा म-नाः क्खिभारता **मण्डरखन मध**-তী॰ শিবা॰।। স্মিতবজ্ঞা। সৃদা-চামমা সচৰ্বণতৎপরা । নানা-লকারভূষাকী নগা স্তা স্কা-मदेवः ॥ अवः शाषा क्राम्ताकः শ্বাশানে তু বিশেষতঃ। গৃহে বাপি গৃহস্থোপি মৎস্যমাণ্টেশঃ সুভো-জনৈঃ।। নগ্নো ভূদ্বা মহাপূজা॰ প্র্যাজাক্রে বিশেষতঃ। । পু-জনন্ত शाषा यानदेमः मःभूजाः। र्घाञ्चाशनः अर्घाषः। शूनशास यत्थालाटितः मःभूका भट्डाम् ৰাক্ষ্যাদিক পদ্ধৰে। তৰহি ব সিতাকাদিক পুজ্বেৎ। অস্যাঃ **भूतम्हत्रनः जकाष्मनक्कभः ।** তথা চা বৰ্ণলক্ষণ জপেয়াত্ৰণ ভদ্দ-শাংশেন হোমবেৎ । সম্ভান্তরং । তত্ত্বৈ कामरीष्ठः সমালিখ্য कालि कादेव ममालिए । नित्मा-

एउन ह प्रतिन मश्चार्ता यन् कृष्यः॥ महीएक कानिकारवरी जनाद महत्र পूर्वस्य। इंडि जन्नमातः॥

শানবাসী পুণ লিবং। বথা।
ক্ষেত্রপঃ ক্ষেত্রপালন্চ ক্ষেত্রভঃ
ক্তিবো বিরাট্। শানাবাসী
মাণসালী থর্পরালী মখান্তরুৎ
। ইতি বটুকতৈরবন্তোত্রণ।ঞ্চা।
শানাবে বাসকর্ত্তরি ত্রি। যথা।
শবসম্বন্ধি বস্ত্রাদিকণ শালানবাসি চাণ্ডালাদিভ্যো দদ্যাৎ।
ইতি শুন্ধিতন্ত্রণ।
ইতি শুন্ধিতন্ত্রণ।

यानानत्वयां श्रः बहारमदः। इकि ट्यह्याः॥

শ্বশানবাসিনী স্ত্ৰী কালী। যথা।
শ্বশানবাসিনী সৌম্যা শিবানী
শিববল্পভা। ইতি কালিকাশতনাম স্তোত্তণ।

श्रांनानावयगिननी खी कानी।
यथा यात्रत्रावाः वहाद्रोजीः
श्रांनानावयगिननीः। हेि छखमाद्र प्रक्रिंगकाविकाधानः।।
श्रांक की भूः ब्र्यंदर्षिण्टवाव।
पाणी हेि छावा। हेणमद्रः॥
भूः सूर्थभूक्षयामा एवताः वृष्की
मणाः जलाम श्रंक উচাতে।

শানিতি নুখনামেতি শৃতিঃ শ্বনি মুখে শ্রুষতে উপলভ্যতে শ্বঞ

ত ডুঃ খাঞ্জ ক্লাৰ মুদত্তণ খা মুখণ শ্ৰেষতি শানঃ শ্ৰেৰতে ডু মিভি ডুনি শ্বশ্রু নাস্ত মিত্য-ন্যে। ইভি ভরতঃ।। 🛊 ।। ভস্য শুভাশুভ লক্ষণ যথা। নিয় বক্ত মপুত্রাণা ক্রপণানাঞ্চ হ্র-স্বক। সংপূর্ণ ভোগিনা কা-ख॰ भाक्य जिसा खख॰ मृत् ॥ সংহত চাস্ফৃটিতাপ্ত রক্তশা-ध्यन्य हो दकः। त्रकान श्रम्भ শাশ্রু কর্ণাঃ স্যুঃ পাপ মৃত্যবঃ।। ইতি পারুডে ৬৬ অধ্যায়ঃ 🛚 । 🗱 ॥ क्वांशाखनगावर्खन॰ यथा । मार्क एउ उराह । इंडि প্রতি-জ্ঞায তদা নরিব্যস্ত সুতো দমঃ ৷ কোপামৰ্য বিবৃত্তাকঃ শাশ্ৰু মা-বৰ্ত্ত্য পাণিনা ৷৷ হাহতোম্মীভি পিতর খ্যাত্বা দৈব বিনিন্দা চ া প্রোবাচ মন্ত্রিণঃ সর্বানানিনা-य পুরোহিত।। ইতি মার্কণ্ডেয श्रुतादव त्यवाधायः ॥ । ।। अमेर शात्रण कलः यथा। मानधटम् । কেশ শ্বশ্রে ধার্যতা মগ্র্যা ভব-তি সন্ততিঃ। 🐠। তস্য ক্ষৌর क्टमा यथा । तंत्रा हभूतान । मा-

खंकर्य कार्यका नथरहर मन-खन्नः। গোভিলः। क्ला आक-का मथानि वाश्यीक लिथा-वर्জः। ইতি ভাজতত্ত্বः।। आक्रम्भी जी अक्षम्यूकानाती। তৎপর্যাবः। পালিঃ ২ পালী ৩। ইতি শব্দরত্বাবলীনা পো-টা ৪। ইতি জটাধরঃ।। शील निरम्यत्वः। ইতি কবিকল-জনঃ।। গুঠাবর্গলেষযুক্তঃ। শ্লীলতি চক্ষুং পদ্মতি রাবৃতং স্থাদিত্যর্থঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।। শ্যানঃ ত্রি গতঃ। শ্যোধাতোঃ ক্রপ্রতামন নিম্পায়ঃ॥ শ্যামং ক্লী মরিচং॥ সিমুলবণং

श्री (यक्ति।।

गायः जि क्ष अविनिष्ठः।

इतिम् अविनिष्ठः। ইতাयतः॥

गायः पू॰ श्रयागम्यविः॥ त्यः

॥ वृक्षमात्रकः॥ काकिनः॥

क्षवर्नः॥ इतिप्रनः। ইতি प्र
मिनी॥ युख्रः॥ भीन्यकः॥

मायाकः। ইতি ताজনির্যনিং॥।

मयायाकः। ইতি ताজনির্যনিং॥।

मयायाकः। । गाय्युनि यथा।

क्षानि क्षयः। विद्याञ्जनाजि

जुकारि वन देखत्व बाक्नाः ॥ निवक्षे बन देवशायन द्वाम बन क्षयाः। भनिः क्रशमका कानी कित काल वसाबूताः॥ .कन কজ্বল কন্ত্রী রাজপট বিদু-রজ'। বিষ কোষ স্থা-श्वक्र भाभ छत्या निमाः।। यनी शक यमार्खाधि यमूना धूम रका-किलाः। शालाक्लामा ७४१-भा कर्भः थक्षन क्वित्नाः॥ শবল তাল তাপিঞ্জ তিলেমী-वत वलयः। तमविखु ७ भूकादतो किंग्सि श्री क्षेत्रिका।। নীলী জম্বুফল মুম্ভা কাক ফ্ল-ত্যা करीर्खेयः। जिसक्राया गः कात्रात थनास्त्रः कत्रनाम्यः ॥ ইতি কবিকল্পলভাষাণ ২ শ্লেষ-खवदक ८ अमू य॰ ॥

भगायक॰ क्वी ताह्रिस्कृष॰। हे.ज ताजनिर्धन्छः॥

শ্যামকঃ পু॰ শ্যামাকঃ। ইতি হেমচন্দ্ৰ: 11

नागकर्भः शुः वस्तः। ইতি

हलायुधः॥ निनः॥ शक्तितिन
यः। ইতি নীলকঠশকদশনাৎ

नागकन। স্ত্রী অতিবিধা। ইতি

রাজনির্ঘন্টঃ॥

गामकाका जी गक्षम्वा। रेजि ब्राक्षमिर्वकेः ॥ भागवाद्यः जी गक्षम्वा। रेजि ब्राक्षमिर्वकेः॥ भागमञ्जः भू॰ जमानवृक्यः। रेजि भक्षप्रज्ञिका॥ भागमाः भू॰ क्रक्यवंः॥ शिक्षनः । रेजि यमिनी॥ क्रक्षक्वविज

তি। ইত্যমর: ।। শ্যামলচুডা স্ত্রী গুঞ্জা। ইতি রাজনির্বন্টঃ ॥ শ্যামলভা স্ত্রী স্বনামধ্যাতলতা

। जर्भशासः। ताभी ताभा भागवन्नी माद्रितार्भनमादि-ता। जनका भादिना भागा-करकी भागनकाक्रद्य।। केंडि भक्तकावनी।। जभिन्। का निभी महाभागा मूक्टा-भनमादिना। भीर्घमूना ह भा-निभी ममूद्रविष्मा ह मा।। द्रञ्जभाना।। द्राक्रनिर्मल्खे क भर्गाय श्रम्भी मादिनाभाष्क क भर्गाय श्रम्भी मादिनाभाष्क क

শ্যামলা স্ত্রী পার্বতী। শ্যামণ শ্রীক্ষণ লাভি দদাতীতি ব্যুৎ পত্তি সিদ্ধা। ইতি কেচিৎ।। অশ্বগন্ধা।। কটভী।। জমুং।। कल्दी। देखि बाकि निर्वेशका शामितिका श्री बीकि। शामितिका श्री बीकि। शामितिका शामितिक

न्यायमुम्बदः भूः श्रीक्रयः। यथा । যাবন্তি চ শরীরাণি ভোগা-र्शि महामूत्न। श्राक्कानि ह नर्वानि बीक्रक विश्रष्ट विना॥ **খ্যায়ন্তে** যোগিন ন্তঞ্চ শুদ্ধ জ্যোতিঃস্বৰূপিণ। হস্ত পাঙ্গা-দি রহিত নির্গুণ প্রক্তেঃ পর ॥ दिक्वां ख॰ न मनारङ एङ-ক্তাঃ সৃত্বদর্শিনঃ। সতো বভূৰ ভজ্যোতি রহো ভেজ্বস্বিন বি-না।। জ্যোতি রভ্যস্তরে নিত্য শরীর॰ শ্যামসুন্দর॰। ইতি তক্ষ-বৈৰৰ্ত্তে গণপতিখণ্ডে ৪১ অখ্যা-यः॥ ।। अनाकः। भाषमुभद्र **তে मा**जाः कत्रवाय তবোদিত॰ ৷ দেহি বাসাণস ধর্মজ্ঞ নোচে-দ্ৰাক্তে ক্ৰৰামহে॥ ইতি শ্ৰীভা-গবতেদশমল্বন্ধে ২২ অধ্যায়ঃ ॥ ।। अभि । मनर्भ ব্ৰহ্মা শৰুরশ্চ সূত্রেঃ সহ। ৰস-स्त ७ अशासिता यर्थमू जात-कार्छ ।। अमृलात्रञ्जनिर्मान म-

ৰ্ভূষণ ভূষিত। কিন্ত্ৰীটিন স্ব-**थिननः ननगनानिज्यिकः ।।** শধ্য চক্র গদা পদ্ম ধারিগঞ্চ চতু-र्ज्जः। नवीननीतमः भगममून्य-तः मूमद्भाष्ट्रतः ॥ देखि बक्तदेव-वर्ख श्रह्मिष्ट ३८ विशायः॥ मागा जी मानिर्दोषशी॥ अ-প্রসূতাকনা।। প্রিয়ক্ষ্ণ। বাস্ত-किः॥ यम्ना॥ क्राकिः॥ क्रकः बिदृष्टिका।। नीलका। इंडि (यिषिनी ॥ १३ श्रुक्ः ॥ (मायलाजा ॥ खडा ॥ क्का ॥ अधिका । इंडि विश्वः ॥ अपृष्ठी ॥ कसुद्री ॥ बहेशसी ॥ वन्ता ॥ नील भू-नर्वा। शिक्षनी। इतिक।।। नीलपूर्वा॥ जूलमी॥ शत्रवी-क्षा लीः। खी। हाय।।। क्रकमात्रिवा। मि॰मेशा हे जि व्राक्रनिर्यन्छैः॥ शक्किवित्नयः । শামা ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ । वज्राही २ मननी ७ नमानी 8 मूर्गा ए प्रवी ७ চটका १ ক্লফা ৮ গোতকী ৯ পাওবিকা >॰ बाबा >> कानिका >২ नि-তিসিম্বিনী ১৩। ইতি রাজ-निर्वन्छैः ॥ ।।। भगमाया छे ९-পত্তিৰ্যথা। ভতঃ সা কালিকা

(मरी सामनिजा जगमरी। भूई ত্যক্তসতীৰপা জন্মাৰ্থ মেন का॰ यदगै।। मधयमान्बत्भव त्यनकाजर्रेदत निवा। मर्ड्य ह ममू श्रमा मा नचीतित मागता ॥ वज्रस्त्रभाष (परी नवगाः मृ গযোগতঃ। অর্দ্ধরাত্রৌ সমুৎ-পন্ন। গঙ্গেব শুনিষগুনাৎ।। তত ন্তস্যাম্ভ জাতায়া প্ৰসন্ধা শ্চাভ-वन मिनाः। जानुकृतना वदनी वां यू গম্ভীরো গান্ধলঃ শুভঃ ॥ বভূব পুপাবৃষ্টিশ্চ ভোষৰৃষ্টিঃ পরা ভ-था। জ बन् न्छा प्रयः ना खा कग-জ *চ ঘনা ঘন॰।। তদ্যান্ত জাষ-यानाया॰ मर्ब॰ खाइ। यशनाछ। তাম্ব দৃষ্ট্য মথাজাতা নীলোৎ-পলদলানুগা ।। শ্যামা সামে नका (मरी यूम याशा जिइ विजा । দেবাশ্চ इसं यजून॰ প্রাপু खब मूर मूरः ॥ जूकू वृ छ। मखती-ক্ষে শন্ধর্বা শ্চাঞ্চরোগণাঃ। তান্ত नीत्ना ९ भनम् न मामा हिम्ब छः मूठा ।। कानीि नामा हिमवा-नाजूशव क्रंड मित्म। वान्नवान्त স্বসম্ভানা নামা তা পাৰ্বতীতি চ ।। কালীভি চ তথা নামা কীৰ্ত্তিভা शितिनिमनी। इंडि कालिकाश्र-

त्राटि ८० जभावः ॥ ।। जर्म भाग बनाः। की की की हैं हैं ही हो पिक्र का नित्क की की की हूँ हूँ ही ही बारा। यथा কালীভয়ে। কামত্রমণ বহ্নি সণ-इ॰ द्रि विन्नू नयश्वि । कृष्ठियू-ঝা তথা লজ্জা যুগল তদনন্তর ॥ मिक्त का नित्क छि भू वेरी-জানি চোচ্চরেৎ। অন্তে বহি-वध् ममा९ विमा बाड्वी अकी-ৰ্ত্তিতা।। মন্বৰ্থ মাহ জামলে। ক-ক্রোজ্জলৰূপত্বাৎ কেবল মো-कनाविनी ॥ जननार्ग मगारमा-গাৎ সৰ্বতেজোময়ী শুভা। মা-ষা ত্রষেণ দেবেশি সৃষ্টি স্থিত্য-ন্তকারিণী।। বিন্দৃনা নিক্ষলত্বা-क्र देकवना कनमायिनी। वीक-ত্রষা শান্তবী সা কেবল জ্ঞান **हि** कि वा ।। भक्तीक ष्रवित्व नक्त्रानि अताधिनी। नज्जा-ৰীজন্বযেনৈব সৃষ্টি স্থিত্যস্তকারি-**गी ॥ मरशाधन भरमदेनव ममा** সন্নিধিকারিণী। স্বাহ্যা জগতা॰ মাতা সর্বপাপ প্রণাশিনী॥ 🛊 ॥ অস্যাঃ পূজাপ্রযোগঃ। প্রাতঃ-क्रुजामिक क्षा बढाठमन अ-ৰ্যাৎ। ৰখা। কালিকাভি স্ত্ৰি-

ভিঃ পীৰা কাল্যাদিভি ৰুপস্পৃ-শেৎ। দ্বাভ্যা যোগ্ঠে দ্বিরুমূজ্য टेठटकन कालएय करा। गु-খ্যাণেকণ শ্রোত্র নাভ্যুরক্ষণ जुटको क्या । जाहरेगावः বেৎ কালী বৎসরাত্তাণ প্রগশ্য-তি।। ক॰ শিরঃ। তদ্বথা। জी-মিতি ত্রিরাচামেৎ ৷ ওঁ কাল্যৈ नगः क्लानिता नगः ইতি ওপ্তৌ षि जन्मुरक्ष । ७ जलारिय नमः रें कि करा कानरय ।। ७ जरू व्यक्षारिय नमः देखि मूर्थ। ७ वि রোধিনো নমঃ ইতি দক্ষিণনাসা যাণ। ওঁ বিপ্রচিত্তাবৈ নমঃ ইতি वागनामामा । ७ उँ छेशादेयं नमः ওঁ উগ্রপ্রভাবে নমঃ ইতি নেত্র-रियाः । ७ मीश्वादेय नयः ७ नी लाटेष नगः ইতি শ্রোত্রযোঃ 1 ওঁ ঘনায়ৈ নমঃ ইতি নাভৌ। **७ वलाकारिय नगः ই**छि वक्ति । ওঁ মাত্রায়ৈ নমঃ ইতি শিরসি। ওঁ মুদ্রাবৈদমঃ ওঁ মিতাবৈ নমঃ ইত্য॰সবোঃ। ইতি মন্ত্রাচমন॰।#। ততো ভূতশুদ্ধান্ত বিধায় মাষা वीष्क्रन यथाविधि প্রণাযামত্রय॰ क्र्या । । । श्यानिगामः। ৰখা। অস্য মন্ত্ৰস্য ভৈরব ঋষি

क्रिक् इल्मा मिक्नका निका ति-বতা হুঁ। বীজ হু শক্তিঃ ক্রী कीलक॰ शूक्रवार्थ ठजुकेव नि कार्थ विनिर्यागः। ७था ह का-लीकरम। कीलकः ठामावीकः मा। ठेजूर्रशंकलश्रमः। भित्रिम देखतर्गम समस्य नमः। मूरथ छे-किक्ছनाम नगः। इपि पिक्न-কালিকাবৈ দেবতাবৈ নমঃ। গু-ए हैं। वीकायनमः। शामत्याः कृ मकुरा नमः। महास्य की কীলকায় নমঃ।।ঞ্ছা ততঃ করাঙ্গ-ন্যাসে। তদুক্ত॰ কালীতন্ত্ৰে অঞ্চ-न्याम कत्रन्यारमी स्थायमञ्जिन-ষতে। ভৈরবো ২স্য ঋষিঃ প্রো-**ट्या উक्षिक्**ष्ट्रन উদাহ্যত ।। দে-বতা কালিকা প্রোক্তা লজ্জা বী-जब वीजकः। कीलकः ठामावी-क॰ माफ्रजूर्वर्भक्लश्रम॰।। শক্তি-क कर्फरीक मानिकका मत-विशेष कियार्थ निर्यागः गा-দিত্যাদি তেন মায্যা।। 🕸।। ষড-त्रनात्रः। यष्मीर्य जाजा वीटक-न श्रवाराम कन्नरय । वीत-**ज्यालि। मीर्घ यहेक युजामान** প্রণবাদ্যেন কল্পঘেৎ। ইতি বা । जल्यथा। ७ कै। अङ्गुष्ठी जाः नमः

एँ कोँ एक्ट्र नी छा। यारा। एँ क् यशयाणा॰ वयहे अँदिकं व्यनानि-কাভ্যা॰ হঁ। ওঁ ক্রে। ক্রনিষ্ঠাভ্যাণ विषिष् कः कत्रहन शृक्षाञ्चाः करे। अवः सनमानिष्। अ कै। श्रमयाय नयः रेजामिः। এवः अ हु। जन्नुकाना नंगः रेजामि वा ।।।।।। ততো বর্ণ ন্যাসঃ। অ॰ আ॰ इ. ब. ८. ह. स. स. इ. ट. जमः इं छि ऋमर्ष । এ॰ अ॰ उँ के बि ब कि के ब भ भ म म नम रेठि मिक्स वाट्ये। **७**° ठ॰ इ॰ জে বা এ টে ট ঠ ড ড ট নমঃ ইতি ৰাম বাহৌ। व' ত' थ' म' ধণ নণ পণ কণ বণ ভণ নমঃ ইতি জিকিণ পাদে। य॰ य॰ র॰ ल॰ ব॰ न॰ यः मः इः लः कः नमः इे जिना পাদে। বিৰূপাক্ষমতে সবিন্দু-त्रषः नामः। यथा बौत्रज्ञ षः व्याः इ. अ. व. व. स. अ. १. ५ रेव समय् नारमिष्ठामि। श्रून र्निर्विन् र्यथा। ज जा हे के छे छे भ श्र र दे समय न्यूटमिन छानि। किंग्र मित्नम्न् वा नारम मिछान् निर्दिन्तृन् वाथ वर्गकान् ইত্যাচার্য্য পরিগৃহীত ভৈরবীয वाकाम्बर (यत युक्क ।।।। वाथ

विधिनामः। छम्कः वीत्रज्दाः। কেবলা॰ মাতৃকা৽ ক্লা মাতৃকা৽ তারসংপুটা ।। মাতৃকা পুটিত। তার ন্যেৎ সাধকসত্তমঃ ! শ্ৰীৰীজপুটিতা তাম্ব মাতৃকা পু-টিভম্ব তৎ।। কামেন পুটিতা॰ দেবীণ তৎপুট কাম মেৰ চ। শ-ক্তাা চ পুটিতাং দেবীং শক্তিঞ্চ ७९ भू हो। नारम ।। की। बनुष भूननां खु। स ५ ३ व शृबंवर 1 मूलन शृष्टिंा॰ (परी॰ ७६ शृष्टे॰ মন্ত্র মেব চ।। অনুলোম বিলো-त्मन नाख्या यद्यः यथाविधि। मृ-লেনাফশত পর্যাদ্যাপক তদ-নম্ভরণ ৷৷ যথা ওঁ অণ ওঁ এবং মা-তৃকা পুটিততারণ। এবং শ্রীবীজ পুটিতা তা । তৎপুটিত শ্রীবীজ । এবং কাষেন পুটিভাং মাতৃকাং । মাতৃকা পুটিত কাম। এব॰ শক্ত্যা পুটিভা মাতৃকা মাতৃ-কা পুটিভা॰ শক্তি॰ ন্যমেৎ । ज्या को॰ बन्नुक स स ५ ५ ५ ३ क পূৰ্বব । তৎ পুটিতা মাতৃকা ন্যদেৎ। মাতৃকা পুটিতঞ্চ তৎ। মন্ত্ৰপুটিতা মাভ্কা তৎপুটিত यन् । भून तन् दलाय विदलारयन কেবল মাতৃকাস্থানে ন্যস্য যু-

লেনাঊশতেন ব্যাপক সন্মাৎ। অষ ন্যাস স্তারায়া অপি কার্য্যঃ । ইতি গুপ্তেন দুর্গাষা অঙ্গবোঢা প্রকীর্ত্তিতাঃ। তারাষাঃ কালি-কাষাশ্চ উন্মুখ্যাশ্চ তথা পরে।। এতস্মিন্যাসবর্ষাচ সর্ব॰ পাপ॰ প্রণশ্যতি ৷৷ 🏶 ৷৷ তত স্তব্ধ ন্যাসঃ । ৰখা মূল ত্রিখণ্ড বিধায প্রথম-খণ্ডান্তে ওঁ আত্মতব্বাষ স্বাহেতি পাদাদি নাভিপর্যান্ত । দিতীয-খণ্ডান্তে ওঁ*বিদ্যাতত্ত্বাৰ স্বাহা ইতি নাভ্যাদি হনযান্ত। তৃতী-ষখণ্ডান্তে ওঁ শিবতত্ত্বায় স্বাহা रेि शमयामि भिद्रः পर्याखः ना-সেৎ। তদুক্ত স্বতম্বে। মূলবিদ্যা जिथकाटल अनवाटेमा यंशोविधिः। আত্মবিদ্যা শিবৈ স্তব্ধৈ স্তন্ত্ৰন্যা-**স•স**মাচরেৎ॥#॥ অথ বীজন্যা-मः। जनुकः अयात्रीकरमः। अक-त्रस्तु क्लरवार्त्रारथा ननार्छ नाजि দেশকে। গুছে বক্তে চ সৰ্বাবে मश्रेतीक॰ क्रमामारम् ।। यथा चामावीकः बन्ततस्तु विजीयवी-कः क्रमस्य ज्ञीयवीकः ननारि **হতু**র্থবীজণ নাভৌ পঞ্চমবীজণ ध्दश्यधेरीकः राकु मक्षमरीकः ग्रांदिय। जञ्जय कात्रा ।। ।।।

ভতো মূলেন সপ্তথা ব্যাপকন্যা-मः कृषा यथाविधि यूखाः अपना शास्त्र । यथा कानी ज्ञा कदा-नवन्नाः (याद्राः मुक्कद्वनीः ह-তুৰু কাং। কালিকা॰ দক্ষিণা দিবাা: মুখনালাৰিভূবিতা ।। मना क्षिमितः थम वामारशाकु कदा बुकाः। अञ्चरः बद्रप्रदेश्य मिक्टिशक्षाधभाविकाः ॥ यहा-মেঘপ্রভা॰ শামাণ তথা চৈব निगन्ती[।] क्छांवनक्रम्कानी গলক্রধিরচর্চিতা ।৷ কর্ণাবত-শতানীত শবযুগ্ম ভমানকা ।। खादमखुं। कदानामा। शीता-মতপৰোধরা ।। শবানা কর-সংঘাতৈঃ ক্লতকাঞ্চীণ হসমুখীণ। সূত্র্বেষ গলডকেধারা বিছ্নুরি-তাননা ।। ঘোররাবা মহারৌ-खी॰ भागानावयगानिनी॰। या-লাক্ষওলাকার লোচন ত্রিভ-याविकाः ॥ मञ्जताः, मकिनवाा-शिगुकान्यिककाक्रयाः । **भव**-क्य महारमव समस्याशित मः हि-তা ।। শিবাভি র্যোররাবাভি শ্চ-তুৰ্দিকু সমন্বিতা । মহাকালে-ন চ সম বিপরীতরতাতুরা া সুখপ্রসন্নবদনা প্রেরানন সরো-

ৰুহাণ। এবং সঞ্চিন্তবেৎ কালী। সর্বামার্থ সিদ্ধিদাণ। 🐠।। শব-যুগোতি বোরবাণাবত দেতি প্রে-তকর্ণাবত পেতি চ। শঙ্গস্ত পক-সংযুক্তবাণ কর্ণবিভূষিতা মিতি ৷ বিগভাসুকিশোরাভ্যা• ক্রতকর্ণা-বত সিনী মিতি চ দর্শনাদুভষ মে-ৰ পাঠঃ।। 🟶 ।। ধ্যানাম্ভর॰ স্বতন্তে । अक्षनाजिनिजाः (मदीः कत्राम-वमनाः निवाः। युख्यानावनी-কীৰ্ণা॰ মুক্তকেশী॰ স্মিতাননা॰।। महाकाल सम्दर्शाजन्त्रिणः शी-নপষোধরা । বিপরীতরতাস का॰ यात्रमः खुंग निदेवः मह।। नागयख्डाभवीजागाः ठङाकः क्रजरमध्रता । मर्वालकात्रयुकाक मूखमाना विज्विजा ।। मृज्र अ महरेमुख दक्षकाक्षी॰ पिग॰ख-का । निवादका दिन हरेनु ख रवा-গিনীভি র্বিরাজিতা ।। রক্ত-পূৰ্ণ মুখান্তোজা মদ্যপানপ্ৰম-রক্তবিষ্ণুরিতাননা ।। বিগতা-সুকিশোরাভ্যাণ ক্লভকর্ণাবতণ-मिनी। कश्रीवमक मूखानी ग-লক্ৰধিরচাৰ্চিতা ।। শ্বাশানবঙ্কি-মধ্যস্থা॰ অন্ধ কেশব বন্দিতা।

সদাঃ ক্তুশিরঃ খন্ন ব্রাভীতি कताबुकाः ॥ 🛊 ॥ शानाखतः त-ইল্যে। যথা। শবাৰ্টা॰ মহাতী-मा॰ यात्रम॰कुं।॰ इमगूथी। ठ-তুর্জুজাং খন্ন মুঙ বরাভযকরাঁণ श्रवाः ॥ मुख्यानाश्रवाः प्रतीः ननक्किसा मिगवती। এव म-किस्टिय कामी॰ यानानानय-बामिनी ।। 🗰 ।। এव धाषा মানসৈঃ সংপূজ্য শম্ভাপনং क्यां । यथा। अवादम ज्रमो ष्ट्रॅं कात्रगर्ड॰ बिकान॰ विनिश्र অব্যপাত্র সংস্থাপ্য মূলেন শুদ্ধ-जनामिना नशामिनाव मानृर्या गन्नामिक मन्ना ७ गटन्रटिका।-मिना **डीर्थ माता**श में विद्यमक লাষ দশকলাত্মনে নমঃ ইত্যা-**धातः। जः সূर्याय खनाय बाम्भकः** वाज्यत्न नमः इंडि मध्यः। উ॰ সোমমণ্ডলাষ ষোডশকলাত্মনে नमः रेंछि जलः मःभूका। उँ हाँ शमशाय नगः। ७ है। नितरम याहा। ७ हुँ मिथारेय वय है। ७ रहुँ कराग हूँ इंडाशीमामूत वायुष् ৷ অগ্ৰেওঁ হ্ৰেনতত্ত্ৰয়ায বৌৰ ট্। চতুৰ্দিকু ওঁ হুঃ অস্ত্ৰাৰ কট্। ইতাভাচ্চা। তদুগরি মৎসা মুক্ত

योक्तामा मूना मनधा जञ्जा रमन् মুদ্রবা অমৃভীক্তা অন্ত্রেণ সংক্র का जुिंनी सानिमूख अपना ভজ্জল কিঞ্চিৎ প্ৰোক্ষণীগাত্তে নিঃকিপ্য ৰুলেন তেনোদকেনা-দ্মান পুৰোপকরণপাত্যকা পী-ঠপুজা নারভেৎ।। 🟶 ।। অস্যাঃ शुका रखः। आत्मो विन्तृः त्रवी-জ ভুবনেশীক্ষ বিলিখ্য ভত স্ত্রি-কোণ তদ্বাহে ত্ৰিকোণ চতুষ্টৰ ৰৃত্ত ষষ্টদল পদ্ম পুনবৃত্তি চ-जूषीताश्वक जृगृह लिए । তদুক্ত কালীতত্ত্ব। আদৌ ত্রি-কোণ মালিখ্য ত্ৰিকোণ তৰ্ছি লিখেৎ। ভতে। বৈ বিলিখেমন্ত্রী ত্ৰিকোণত্ৰষ মুক্তমণ।। ততো বৃত্ত यगामिथा निर्थमखेममः छउः । वृक्त विनिथा विधिवनित्थक्षुभूत त्यकक ।। अभातीक तम् । नत्था जू বৈন্দৰ চক্ৰ বীজ সাযা বিভূষি-ত॰ ইতি।।।।। অত্র বিশেষাধারো ষুগুমালাযা। তারুপাত্তে কপা-ल वा यागान कार्छ निर्मिट्छ। শনি ভৌমদিনে বাপি শরীরে कृष्ठमः ज्या अर्थ (द्वीरमा १ थ লৌহে বা চক্ৰণ কাৰ্য্যণ বিধানতঃ ।। ।। যন্ত্রান্তর মাহ তন্ত্রে। শক্ত্য-

গ্নিজ্যাঞ্চ ষট্কোণ শক্তিভিশ্চ ন-बाषाकः। भएम वजूमरन ज्यिन् म्हजूबाब्रम•बृट्डिखा • ॥ शीठ-পূজা ততঃ কর্ব্যাদাধারশক্তি-পূ**र्वकः। श्रक्तिकः कम्फ्रेटेक्टर लायः** পृथी • ভবৈষ চা। সুধাষুধি गनि-बीनः विखायनिगृहः छथा। या-শান• পারিজাতঞ্চ তম্মূলে রত্নবে-मिका ॥ ভरमागित गरनः शीर्रः नारमः नादक मखमः। हजूर्षिक् बूनीन् (महान् निवा क नवमूख-कान्।। शर्मामाश्रमामी (क्वारामि হ্রী জ্ঞানাত্মনে ননঃ ইতান্ত जः भूका कि । तित्र भूकी पि कि त्य शृक्रदर । रेक्श खाना किया टेठव कामिनी काममासिनी। त-छी द्रिष्टिया नन्ना घटश टेठव यत्नाश्यनी॥ नर्बंब व्यवकाि न-মোল্ডেন পূজবেৎ। তদুপরি ফ্লোঃ महार्भिव 'यहारक्षक श्रेषामनाय নমং।। তেতঃ পুন খ্যাত্বা পূজা-अनावानीय मृनयञ्च कविष मृदी-वाबाहरबदा ७ (मरविन ७कि-সুলভে পরিবার সমন্বিতে। যাব-দ্বাণ পূজবিষ্যামি ভাবৎ দ্বণ সূ-স্থিরা ভব।। ততো মূল মুকার্য্য व्यमूकीत्मवि देशवर देश छि

हेर मित्रिरि हेर मिक्साय ইহ সমিহিতাভব। ততো হুমি **जावश्वकी अञ्चयद्यः मकनीहरूज** ধেনুষুজ্ঞবা অৰ্তীক্ত্য পর্মী-করণমুদ্রযা পরমীক্ষতা ভূতি-नगकिर्वि । सामियुकाः अपनी প্রাণপ্রতিষ্ঠাণ বিধাব মূলেন भामगामिजिः भूकरम् । ভত बृल यूकार्या এउद भाषा ययूकः **म्विकारेय नगः। अय गर्याः श्वारा** । आहमनीयः प्रथा। जानीयः निः विषयाभि। भूनताठमनीय अश । এব গস্ধো নমঃ। গ্রতানি পু-ষ্পাণি বৌষট্। ততো মূলেন পঞ भू आक्षनीन मचा धूम मीरमी पमार । वनन्यंजीकामि शर्वन मून मूकार्या এव शृर्णा नमः। मील मञ्जल । जूक्यकारणा बहामी-ণঃ সৰ্বত স্তিমিরাপহঃ। সবাহ্ছা-ভান্তর জ্যোতি দীপো ২ম প্র-তিগৃহতা ।। মূল মুচ্চা 🖚 এব **मीत्रा नगः। ७७ ७ फ्रम्बनि** ৰন্ত্ৰমাতঃ স্বাহা ইতি যণ্টা<u> স</u>ং-পূজা বামহন্তেন তা॰ वामयन् नीटि धूं श॰ एका पृक्षिभवास मी-भः ममार । ততा मृत्वन भूगी-ঞ্জলি ত্ৰষণ দত্ব। ষ্পেপিপন্ন নৈ-

त्नाः मेषा व्यावतः भूकाः म-कार ।।।।। धीयमूकीतावि वाव-রণ তে পুজবামি। ইজাজা গৃ-शैषा क्लादत्रवागामिटकारवत् अ हाँ सम्याय नयः। ७ ही नितरम वारा। ७ दुँ निशारे ववष्। **७ द्रिः कवहाय हूँ ॥ ७ द्रौँ त्न-**बबरार वीयहै। ठेजू कि कू अँ हुः **জন্ত্ৰাৰ** ফট্। বহিঃ বট্কোণে ওঁ कारेना नयः। गर्बेख अनवानि नः प्यारखन। कथालिटेना अलाटेब **ज्यक्रज्ञारिय विद्याधिरेना विश्विति-**ভাবৈ উগ্রাবৈ উগ্রপ্রভাবৈ দী-श्वादेष देठा खद्यारम् । ଓ नीला-देश नमः। अव॰चनादेश वलाकादेश ইতি দিতীষ ত্রাসে। এবং মাত্রা-বৈ মুদ্রাবৈ মিতাবৈ ইভি তৃতীৰ ত্ৰ্যস্থে। সৰ্বাঃ শ্যামা অসিকরা মুখ্ৰমালা ৰিভূবিতাঃ। ভৰ্জনী॰ ৰামহস্তেন ধার্যস্ত্যঃ **শুচিন্মিতাঃ** ॥ मिगवता रुमयूथाः च च वार्न ভূষিতাঃ। এবং খ্যাত্বাৰ্চবেৎ।। । ততো १ ইপদ্ৰেষু পূৰাদি ক্ৰমেৰ बाट्यदेश ठायू आटेय की मार्टिश অপরাজিতাধৈ বারাছৈ নার-मि॰ देश अना गन्नामिनिः भूज

ति । भवाक श्राणां विश्वामि देखत्वान भृक्तव । एका मृत्वाम भृक्तव । एका मृत्वाम भृक्तव । एका मृत्वाम मिना महाकाल भृक्तव । ॥ ॥ छमा थान । महाकाल यक एकता मिना महाकाल धृमुवर्नक । विख्य मध्य भिष्य । वाष्ट्रक मध्य भ्राणां मा प्राप्त । वाष्ट्रक मध्य भ्राणां । वाष्ट्रक मध्य भ्राणां । वाष्ट्रक मध्य भ्राणां । वाष्ट्रक विश्वाम । वाष्ट्रक विष्ट्रक विष्ट्रक विष्ट्रक विष्ट्रक विष्ट्रक विष्ट्रक विष्ट्रक विष्ट्रक विष्ट्रक विष

ল প্ৰক্ৰবাসস। ত্ৰিনেত্ৰ মু-करकभक्ष मूखमानाविख्विङ ॥ কটাভার লসচক্রখণ্ড মুগ্রু স্থ लिखि । उथा ह ज्यातीक दिन । मिया छ पिक्टन ভार्ग यहाका-क अशृक्राय । हूँ क्यूँ या ता লা॰ বা॰ আ॰ ক্রো॰ মহাকালভৈ-द्भव गर्वविद्यामाणय नालव श्री 🗬 কট্ স্বাহা ইত্যনেন পাদ্যা-দিভি রারাধ্য ত্রি স্তর্গবিদ্বা মূলে-न (मरी॰ भरकाशहादेतः भृज-(यथ। ७था ह काली जस्त्र। यहा-कानः राजमाञ्चाद भन्ठारक्रवीः श्रमुद्धरव ।।॥। कालीकर मा क-বচ ক্রেণ সমুদ্ধৃত্য যাঃ রাণ লাণ ৰা॰ আ• চ ক্ৰোন্তভঃ। মহাকা-লভৈরবেতি সর্ববিদ্যাল্যাশবেতি চ ম নাশবেতি পুনঃ প্রোচ্য মাষাণ नची ममुक्दार । कहे बाह्या

मभागूद्रका भक्तः महार्थमाधकः ॥ **ত**তো किरी॰ शादा यथाम् कि জপ্তা গুৰুত্যাদিনা বামহন্তে জ-भ॰ मनर्भा जाजाममर्थन अर्गाद ৷ ততঃ স্তম্ভা প্রদক্ষিণীকতা অ-ক্টাঙ্গ প্ৰধাম কৈয়া শ্ৰীজগমঙ্গল নাম কবচ পঠেৎ ৷৷ 🟶 ৷৷ ততে৷ व्याववर्गन्वज (प्रवास्त्र वित्नाभा मःशत मुखवा अमुकी प्रावि कम-ষেতি বিস্জা তত্তেজঃ পুম্পেণ नमः यक्षाराताशरयः। উত্তরে শিখরে দেবি ভ্য্যাণ পর্বত বাসি-नि। उक्तरमानि मम् ९ भरत शक् **प्रिक्ति समाखतः।। ३**७ि मस्त्रिन ॥ ॥। ७७ उटेंशर्यमाः किश्नि मृष्टि-ইটাণ্ডালিন্তৈ নমঃ ইতৈয়শা-न्याः मिनि मन्ना मिय भिर्केट्डा मचा किष्मि श्रीक्रुं शासामक পীত্বা নির্মাল্য শিরসি বিধৃত্য यरथक्छ॰ विरुद्धि ।। क्षा ७८०। यखटान वामश्टल कृषा मवा-रुख कनिश्रेषा याषावीकः विनि-খ্য তথা তিলক প্রয়াৎ। তথাচ। বামে ক্লে ৰন্তলেপণ মায়াণ সব্য कनिष्ठेवा। विनिश जिनक अ-ৰ্ব্যাৎ মন্ত্ৰেণানেন সাধকঃ ॥ ওঁ यः यः न्भूभामि भारद्दन रवा माः

পশ্যভি চক্ষা। স এব দাসতা याज् ताकात्ना मृक्तमणायः॥ क পকালে ভু কপু রফুক্তা জিব্বা কা-का। कभ ताला नमा जिसा क-ৰ্ভবা। জপকৰ্মণি। ইতি বিশ্বসার ৰাক্যাৎ ইক কাম্যজগ ইতি **७**व॰। ততো मृत्ननारकोखन्नः শতাভিমন্ত্ৰিত পুষ্প চন্দনঞ धृषा देव**लाका॰ वण मानरम**् । गर्बमिषियुट्या जूषा टेज्द्रदवा বৎসরান্ডবেৎ। অস্য পুরশ্চর-१ लक्ष्व अश्वा उथा ह काली-তন্ত্রে। লক্ষ নেক॰ জ্বপেমন্ত্র॰ হ-विष्णाणी मिवा खिन्निः। ब्राब्बी তাষূলপুরাস্যঃ শব্যাষা লক্ষ মানতঃ।। ব্যবস্থা মাহ স্বতন্তে। দিবা লক্ষণ শুচি ভূজা হবিষ্যাশী জপেন্নরঃ। ততন্ত্র তদ্দশাণশেন হোমযেৎ হবিষা প্রিষে ৷ অত্রা-क्रमा कालाखन गार नीवमानय-তে। লক্ষ মেক জপেয়ার হবি यानी मिवा खिक्तिः। अखिक्क **७४। तार्वो लक्स्यक ७रेथव ह** ॥ मणा॰ण॰ ट्यायरमञ्जी छर्नरम् मिं अप्रतिकि जान्युकाविकाः । বস্তুতম্ভ সমারীকলে। লক্ষ (नकः जल्मिष्माः रिवमानी पि-

ৰা শুচিঃ। রাত্রৌ তাষু লপুরাসাঃ শयगयाः लक्ष्यानजः॥ व्राजि-জপে তু কালো মুখমালাবা[•] । গতে তু প্রথমে যামে তৃতীযপ্রহ-त्राविष । निमाया**ः अ**कश्ववान ব্রাত্রিশেষে জপেন তু।। এবং ল-ক্ষৰ্য জপ্তা তদ্দশাংশন মন্ত্ৰ-विष्। अयुङ रहामस्यस्मिवि मि-বারাত্রি বিভেদতঃ।। তেন দিবা লক্ষণ জপ্তা তদ্দশাংশং হোমণ अर्या । तात्वी नक जला তদ্দশাংশং হোমং স্ব্যাদিতি র-रुगार्थः। षिजाञीनाकः मर्दि-या॰ पिता विधि तिरहाहारङ १ শূজাণাঞ্চ তথা প্রোক্তণ রাত্রা-বিষ্ট মহাফল ৷৷ অন্যত্ৰ চ ৷ দিবৈব প্রজপেমন্ত্রণ নতু রাত্রৌ कमांहन ॥ 🗱॥ अथ मखराजमाः। कौँ। १। कौँ कीँ कीँ। ७। जनरयाः शृकाश्ररयागः मर्बः शृ-**बैव** । शान निष्क्र श्वत्र छ । শবাৰতা মহাভীমাণ ঘোরদণ खुं। वत्रश्रमा। शमायुका। बि-নেত্রাঞ্চ কপাল কর্কাকরা ।।। মুক্তকেশীণ ললজ্জিহ্বাণ পিবস্তীণ ৰুধির মুহঃ। চতুৰাহ্যুতা । দে-ৰী বরাভ্যকরা সরেৎ।। অন্-

योः भूतम् तनः लक्कशः।।।।।। ७ ही है वृ बू की की की मिक्टन कानिटक की की की हूँ हूँ हीँ हीँ 1231 वामाः शृ-कामिक मिक्नाव्यकार्याः। श्रुत-**क्टन॰ लक्क्**राः ॥ 🕸 ॥ ७ ही हीं हूं हूँ कीं कीं कीं मिक (नका निरके की की की इ इ हीं दी वाशा २०॥ 🛊 ॥ है। हीँ हूँ हूँ कीँ कीँ कीँ मिस्त-कालिए की की की हैं हैं हीं हों यहा। २२॥ ॥। मिक्रियानि की की की इँ हुँ हुँ हुँ । २०। शान পূজाদিক पिक्त ।। 🛊 ॥ कीं कीं कुं। १॥ १९ हीँ कीँ (म स्राहा। ७। अमाः পূজা প্রযোগঃ। অস্য ভৈরব श्रीव विंतारेष्ठ्नः मिक्तकानी ब-ক্ষৰপা ভূবনেশ্বরীদেবতা নি-**ज**वीजः वीजः वज्जावीजः न-किः। दर्वनामापि पिक्वशंवर। शानम् । थङ्जान्दिममूथ्यमुव-দমৃতরসাপ্লাবিতাঙ্গী ত্রিনেত্রা স वा शाली कशालाकानम्ञ गरथा मूक्करकनी शिवसी। निध-

द्धावक्षकाकी यनियम्बर्गिटिका र्वूण मीश्रिक्श भागामीत्माद-পলাভা রবি শশি বিলসৎ স্বণ্ড-वानीक्शामा। अव शाचा मकि-वावर मर्ब कार्बाः । भूतकत्रवंख একবি শতিসহসূত্রপঃ।। 🛊।। ক্রী री ही । शाका की की की यारा। ।।। की की की कर्षशा । ७॥ 🛊 ॥ की की कीं की की की याशा ।। ।। ।।। अ नमः की अ नमः की का नि-कादिव श्वाहा। 38 ॥ क्षा এ छ माः পূজাপ্রযোগঃ। অস্য দক্ষিণামৃ-र्खि भाषिः शंकिष्टमः कानिको-দেৰতা। ধ্যানম্ব। চত্ত্ৰজা হ্ৰ-ফবর্ণা মুখ্রমালাবিভূষিতা। খদ্ধ-क मिक्टन भारने विज्जीनिवत-দ্বশা কতৃষ্ণ থর্গরিষ্ণেব ক্রমা-षात्मन विज्ञो। मा विथन्ती॰ জটা মেকা বিজুতী শিরদাৰ-यी।। मूख्याना धता मीटर्स जी-বাষা মধ চাপরা । বক্ষ না নাগ-হারঞ্চ বিভূতী রক্তলোচনা ॥ ক্লফবস্ত্রধরা কট্যাণ ব্যাঘ্রাজিন সমন্বিভা। বামপাদ শব হৃদি ज॰ इंगि पिक्षिण भए ॥ विवाशा निःश्रृष्ठे जुलिक्। ना गवः स्वरः

৷ সাউহাসা মহাঘোরৱাবস্কা मू जीवना ॥ शानत्वदः अनाद नर्बं पिक्नावर । श्रम्बन विक **६** यज्ञ १ । जन्म ना महत्वर्थ-मंश लक्ष्मभः॥ ।। की ही हीँ पिक्त कानित्क साहा। ১১ ।। 🗱। की हूँ ही एक्टिन कालित किए।। ३०।। ॥। की की वृ ष्ट्रं द्वीं द्वीं प्रकित्वकानित्क की की वृँ वृँ ही ही बारा। २ । এতা সা॰ দক্ষিণামূর্তি ঋ ষিঃ भ॰ क्रिष्टत्म। पक्षिणका विकारम-বতা। অন্যৎ সর্বণ দক্ষিণাবৎ ॥ 🕸 ॥ ক্রী স্বাহা। ৩। ভৈরবো-मा अधिः ॥ 🐠 ॥ कीँ कीँ हुँ रूँ दी दी काशा ।।।।।। की हुँ शुँ काश। ८। अमा ॥ अ। कौ पक्तिकानित्व काश 1211का की मूँ ही की मूँ हीँ याशा । ।। ।। की कीँ की है। है। है है की की ३७॥ #।। नमः के की की कानिकाटेर आहा। ३३ ॥ 🛊 ॥ नमः ज। जाँ किं। किं। किं कि दारा

कालिकालि हैं। 38 11 🐠 11 🐠 তাসাণ ঋষাদিক পূজাদিকঞ मिक्निगावर। भूतम्हत्रनः लक्क्लभः ।। 🟶 ।। অথ গুছকালিকামন্ত্ৰাঃ । की की की हूँ हूँ ही ही रू क्रें ही बारा १२३॥ शा की के के का अपन कीँ हूँ हीँ श्रः क्लामित्क कीँ कीँ हूँ हूँ हीँ हीँ साहा। ३७ ॥ ॥ कीँ कीँ कीँ हूँ हूँ हीँ হী গুছে কালিকে স্বাহা। ১৪ शका की हैं ही अरह कानि-कि हैं है ही वाहा। 38 शका की हैं ही मिकित का-निक हैं है ही खरह का-निक की की हैं है खरह का-निक की की हैं है हैं हीँ यारा । ३०॥ 🛊 ॥ कीँ श्वरः कानित्क ब्लीँ सारा। २ ॥ 🟶 ॥ क्वीँ पिकरनकानितक क्वीँ স্বাহা। ১০ ॥ 🟶 ॥ এতেষা সর্বণ পূৰ্ববং। বলিমন্ত্ৰস্তা এন্থেছি জ্গন্মাত জ্জ্গতা জননি গৃহ भृद्भ यय विनः मिक्तिः पिष्टि पिष्टि नव्कर अक अक क् . कृ ही है। कि कि कि ए अ का निकारिय नमः करे याहा ॥ # ॥ यहा अश्काः

ना वर्ष-म्बः। अस्टिरि वर्षका । एकिनिका । क्रिकेनिना लि सम विन गृह गृह सम नेजुन 'मानव नानवं यात्रवं यात्रव नानवं न्यूत्र क्तूत्रं हिकि हिकि निकि लिश मिरिकुँ कर् भारा॥ ।। जर **अजनामा। किन्छाः । कीं कीं** की हूँ हूँ ही ही जिसकारेना की की की रू रू ही ही बाहा।२०॥ 🛊 ॥ की की की इँ दूँ दीँ दीँ भागातकानि शश । २३॥ 🛊 ॥ की की की हूँ हुँ हु। यहाकानि की कीं कीं हूँ हूँ हीं हीं बारा १२०॥ 🟶 ॥ এতोमा॰ পूकां मिक॰ किनाब< । शानञ्ज । यहारमच</p> প্রভাণ দেবীণ ক্লফবস্ত্রপিধাষি-नी । ननक्षित्रा धातम खु। কোটরাকী॰ হসমুখী॰।। নাগ-হারলতোপেতা॰ চম্রার্জিরতশে-थताः। माः निथन्तिः करीत्य-का॰ लिलिशना॰ भव॰ श्वर॰ ॥ नागरखाभरीजात्री॰ नागमया निरमूरी । शकाममू अम ग्यूक-वनमाला॰ मरशामती॰।। मर्मु-কণসংযুক্ত মনস্ত শিরসোপরি চতুৰ্দিকু নাগকণাবেষ্টিতা গু-

ने वायक्ष्णज्ञिना । अनु भागन्नारेजन है उन किनेक का n नारगर्ने क्रमभाराईकिमिछा॰ क्रञ् नृ भूदी । विरिषं भिवत्रकण छ क নিত বৎসৰপক গা বিভূজা চি-खरगरमर्वी॰ नागवध्खाभवीजि-नी ।। नंतर प्रमावक अखन-শ্ৰুতিমণ্ডিতা ।। প্রসন্মবদনা॰ সৌম্যা॰ নবরত্ববিজ্বিতা॰। না-त्रमारेमा र्यमिगरेमः मिन वत्याहिनी ।। माणेशमा यश-ভীষা॰ সাধকাভীকটাষিনী॰।। छक्कानी केजूगनकन ।। 🛊 ॥ ভদ্রকালীমম্রান্তর•। वीक मूक्छा कानीि शममूक्तरंत्र । यहाकालिशमः हाञ्जा किलि-যুগা ততঃ পর ।। অন্ত মগিপ্রি-गाला १व॰ जजकाना। महाम-नुः॥ ७ कानि महाकानि किनि किलि करें याहा।।।।।।।।। शान॰ यथा । कृष्कामा कार्रेत्राकी यित्रय-निनम्थी युक्तकभी क्रमञ्जी ना-इ॰ जृश्वा वमञ्जी कागमधिन मिन॰ আস মেক॰ করোমি। হস্তাভ্যা॰ शांत्रक्षी ज्ञामनलिथामञ्ज्ञ भागवृथा मटेख क्वं बृक्नाटेखः

পরিবরত্ তবং পাছু কাং তথ कामी।। समाः स्वत्कत्वाहिकः प्रवित्रकाती उद्धाः । देखि इक्षिप । वञ्चकञ्च भूत्रक्ता महस्रोत्कत्रमः रगुक्रशः। देखि कुक्शनसम्बद्ध छ-खमाबः ॥ •।। अभानकानी मखा-.पिक॰ उद्धरमः अक्रेनुः ।। •।। অথ দীপাৰিতাশ্যামাপূজা। बागता। कार्जिक गांत्रि क्रका-ষা॰ পঞ্চশ্যা॰ মহানিশি। পূজ-ख (सा श्रियाञ्चन कानी,विष्ठा প্রসীদতি॥ মৃশ্বাধী॰প্রতিমা॰ রুত্বা यशकानी॰ क्षशुक्रस्य । त्याम-কেশসংহিতাষা । ভূসাকে য-স্তুমাবাস্যা নিশার্কে যোরদক্ষি-नाः। भूक्रयविधिकङ्का। সर्व-সিদ্ধীশ্বরো ভবেৎ।। ইতি। এবঞ্চ অদ্ধরাত্র॰ পুজাষা মুখ্যকালঃ। স চ কালো বদ্যুভযদিনে তদা পূ-र्विनित्न भूका यथा छटेव व । छट्वा-ভযদিনে শস্তকালে ভূতযুতা ম-দি। উনামাহেশ্বরী সা চ তিথিঃ मिक्तिथान। मठा ।। बिनान व-লিভিথাবাত্মনাশকর পরণ তত স্তত্ৰ ন কৰ্ত্তব্যে বলিদান 🚁 मुर्क्क न।। यंखनिक्किकद्र॰ छख शे-রেছি জগসাধন । রাত্রৌ পূজা

शक्रका डाडाटक विनास्त्रना। अकारमः निकिश्मिः नहारकाश-प्तः निक् क्रख्याः **७**श काली--क्रा । जुबार्क स्ट्रा भरक भक्ष-नगा॰ सर्वत्री । यदशानहादतः সংপূজ্য মহানিশি নৃপো ভবেৎ।। শনি ভৌষদিনে চেৎ স্যাত্ত জ্ঞ শতগুণ কল । ভৱে।ভযদিনে ভূতযুক্তঙ্গহাত মহানিশি ৷৷ मां राजाः कात्रिया ठकवर्जी ज्यकृष देखि। मरहश्रुती मिक-**একালী** তৎপ্রকরণোক্তত্বা ।। ॥ कार्डिकायानामग्रामा॰ कानी পূজাহেতু मार विश्वनादत । का-र्जित्क क्रकशत्क जू शक्षमगा। म-रानिनि। श्राविज् छ। यशकानी রোগিনী কোটিভিঃ সহঃ॥ অ-তো ২ত্ৰ পূজনীয়া সা তন্মিমহ-नि गानरेवः। तनि शृकामिकः नर्न निमायाः क्रियट्ड ड्र यर ॥ ভত্তদৰুষভা বাতি কালীবিদ্যা अत्रीमिछ। सरानिमि वर्षतार्ख । उभा ठ উखन्नका या था जटक । गत्र कादन ठ (मर्विग मीशय)-बाहिति है। अभावामा अ-योगामा यथादात्वी विरुक्तनः ॥ मृत्रवी॰ भूखनी॰ क्रवा मीभामिक

त्रवक्षा । दिन नामाविक क मार वामाजाय नविष्ठ ॥ न তা গীত কৌত্কক বাৰৎস্ **एक टार्य का शरक दिना निनी** ষিতি।। এতেনাস্যা দীপযাত্রা-পার্দ্ধরাত্তে বোধা। আবিভূ-তেতানেনার্জরাত্তে জন্মশ্রবণাৎ ভৱৈব পূজ। মুখোতি। তথা বৃহদ্ধপুরাণে। রাত্রৌ নিশীথ वााश्वाया यमावामा मिटेश्व जु। পৃথীতল সমাৰাতা কালীদিশ্ব-সনাধিক।।। অত স্তামত্র বৈ ভ-ক্ত্যা দেব দেবী॰ দ্বিজাতমঃ। পূ-জবেদাত্মনো ভক্ত্যা পশু পূসা-ৰ্য্য সম্পদেতি ॥ তথা গুপ্তসাধন-**ज्याः निभा जै भरत्यभानि जू**-র্যো চাস্ত মুপাগতে। প্রহরে চ গ-তে রাত্রো ষটিকে ছে পরে চ ষে ।। बहानिया সমাধ্যাতা তত का-তিৰহানিশা। অৰ্দ্ধরাক্তে গতে प्रिवि পশুভাবো न পृक्रयः ॥ অন্ধরাত্তেগতে অর্ধরাত্তাৎপরণ। ख्या। **प्रमार**ख जू या भूका छ नर्व मक्य छटवं । यष्ठे द्वारम ৰছেশানি তৎসৰ মমৃতোপম ।। मखमाजानटक ति वि गर्व कीरहा- भग छदि । अर्थे मह्यानिक सिवि ज्याजूनाः न मः भवः ॥ ज-छः भन्नः नहिणानि विषज्नाः न मः भवः । अष्ट मर्वः महिणानि भएछादि मह्यानिकः ॥ जर्मना-

लोनम् खरनार না ধ্ব श्र्विति वर्षेत्राखरागिनामाया-मा न जू छ ९ भूबं आखिः भत्रिन न ह ब्राखः भक्षमबू श्रुं व्यानिनी তদা পরেদ্যুঃ পূজেতি চেম গুপ্ত-সাধন ভদ্রোক্তবচনঞ্চ নিত্যপূজা-मिनद्रे । कार्डिकांबावानामा ब-ৰ্দ্ধরাত্তে জন্মনিমিত্তকপূজায়া বি-শেবেণাভিধানাৎ। গশুভি রপি এব ভূতহলে পূর্বদিনে অর্জরাত্র धर गृङ्गा कार्या। स्था औरकः-পূজাৰাঃ সামান্যতো নিশাষা ম-कर्डवाद्यमि जगारिया। यक्षताज-কর্তব্যতা সুখ্যতমেতি। পরস্ত যত্র शृबंदिन अर्वताळा ९ शत ममा-वामा। भद्रपित्न अर्फ्तताळा ९ शृई মেব তত্ত্র পশুভাবিনঃ পরদিনে वीव्रिक्तिगरेवाकं भूबिक्ति भूका কাৰ্য্যা ইভি। প্ৰমাণ গোপ্য-गानननीमागनीयवर्षभेषित । এব बळ श्रेषित्न अर्धताज्या-भिनायायात्रा भद्रमित्य छथा जू-

তাপি সজবাবাদিবুকা তত্ত্বাপি गर्वमित्न गुका धनकन नक-वादापिक बर्गका हरू समीरका-त्रमा म्थाबार। ज्याकः ला-মকেশভৱে। কলবারে লক্ষণ পূৰ্ববিদ্ধা ততোধিকেতি ৷ ক্ৰ-वात रेडि मनिवादबाशनमनः। मनि ভोगमित्व हिए मालुङः শতগুণ ফল মিতি প্রবণাৎ ৷৷৷ কাৰ্ত্তিকামাবাস্যায়া কালীপু-জায়া নিত্যতা মাহ মায়াতল্তে । वर्ष वर्ष 5 कर्डवा॰ कानिका-या गरहा ९ मदः । कार्तित्क छ वित्नरम् व्यवागागः निनाकः क् इंछि॥ प्रवाशित ह। श्रिक-**সম্বৎসর** স্থাৎ কালিকামা মহোৎসব । কার্ত্তিকে ভূ বিশে-(य॰ व्यवाबाजाः निनाक्तकः।। তত্র সংগ্রুত্বেক্ষরী ভোগ মো-कथमायिनी । देखि॥ धवकाब কার্তিকপদ গৌৰচাক্ত কার্তি-কপর জন্মতিথিকতাত্ত্বাৎ। ন जू नानावहरन जुलाक अवगर সৌরকার্ত্তিক পর । তথা সতি यात्रम् वर्ष जूनारकं द्राद्ध्वी ना-गावामा। थालि खबर्स क्रजा-लाभः गाष्ट्र। अव वज वस्व

ज्वादक पर्वबर छ्डानश्वमा-वाशरकः। न्यस्यूकः विस्ताद-পত্তি ভৱে। কার্ত্তিকস্যাপ্যমা-वाना। शोषठाख अयाषठः। नि-শীৰব্যাপিনী ষা তু তদ্যাণ পূজাণ मगाठदार ॥ निगीय मक्तत्राजः। এব॰ यब পूर्विं मित्न निभी थवा।-शिनामावामा। कनारकं शत्रिन-न ह ज्लार्क १ क्रिताबा ९ शतः मू-वृर्कानिवाशिनी छवाणि शृर्वनि-त्न निनीयमा ब्याकालकान्ता-ধাৎ ভূতভিখি যোগানুরোধাচ্চ **ज्वाक्त्रा** मिनएअमियाक्यरबः নাশতভাৎ। পরস্ত তুলার্কপদ॰ नानावहरन यमाखि ७९ थात्रि-काजिशारम् श्वनकनाजिशारम् ব। বোধ্য । অতএব ভিথিত ৰুধৃত गामि भूतानः। शक ब्रामि विटन-रवन बद्धकर्य विश्विष्ट नटेतः। टेन-বং বাপাধৰা পৈত্ৰা তদন্যত্ৰাশি ष्**रा**डि । इंडि । जगन्ताम हि-তাষা । মেষ পৃষ্ণি সংপ্রাপ্তে नत्र कर्क देकास्त्र । आवित्रा-मी९ जरूनमा को नगामा भरः भूयान् रेखि॥ अव त्यवादकं अध-व्यवनः भीनार्किन कनाहि छेन-वामः। यकु ज्ञीव विकि क्या

. शर्रेष्ठि:। जूनाटकं वर्षात्राद्धः व .দীপ**দাত্র**। ভিথি ভবে**ং**া ভত্ত ज्ञुक्तरबद कानीः नद्कामार्थः . निष्टिष ॥ निर्भाटिक ना जिप मी-• স্তি ক্তদখঃ কালস-বৃতা। তত্ৰাপি भूक्राबर कामी जूनार्क रेमव . मञ्चरष्य ॥ इंडि जनमून । नम्-- সাক্ষেপি ভুকার্কে ইভাত্ত ভুশ-नाः क्नाक्शाहकः। एवन जू--नादर्क कनगादकं वा देखार्थः। - ভুলার্কথাত্রপরত্বে প্রতিসম্বৎস-্র ইত্যন্য বাধাপত্তে রুক্তত্বাৎ ा जूनार्कः देनद नज्यस्मिजामा • जूनाकविश्रिक्शुका - न जारकश हेगार्थः। जूनार्कविहिण्गुकाया পৌশকার্ত্তিকজেন কর্ত্তব্যভাবাণ ৰিখে জাৎপৰ্যন্যোক্ত ছাৎ। বৰা - नर्बव ज्लाक्षिष्ठिकरम्य ज्लाः -कंगाबावागाचा क्रालक्ष्या : **१ हार**ः। म जू वित्नवग्ठमः। न - बा-পূজাৰা অপি তদম্বঃ। তেন ·ভুলাকোপলকিতামাবাস্যাৰা• किलीए। कानी शृक्रस्य इंडि ়বিধি জ্ঞেন গৌণচাজ্র কার্ত্তিকা-শ্বিশালাভঃ। তদা। নেব ত্-नाक नवस नियमार । जनाया । खूला खूब वा सक्त वा छाटवन कर्ना-

্চিৎ ভৎপর প্রতিপদানি দর্শান্ত-वाः ग्याकार्षिक षानू शशक्तिः। गू-भाकां कियानावानायाः कवाहिश वृक्तिक महाद नजू जूनादर्ग नि-भग्न । जारी क जूना के नियं जाना-वानावाः सिनीत्श कालीः भूज-ः विक्षिक श्रीकानीष्ठः । जूना कं নৈব লঙ্গাৰেদিতাক্ত তুলাৰ্কপদক তুলাকেপিলক্ষিতানাৰাস্যাপূজা-পর । । স । बन्न বাকো তু কার্ত্তিকে मानीज्रात्सथा॰ नज् तान्यात्सरथा-नि भी नहां ह्वा नियाना ६। त्क-চিন্তু উপ্ৰকণত্যা অমাৰাস্যা-ষা অন্বৰ তাৎপৰ্ব্যেণ তুলারা-শিষ্ ভাকরে ইত্যুদ্ধেখ্য ইতি ভাষ্করপদোত্তর সপ্তম্যা উপল-কণত্যা তৎকালসম্বন্ধ বোধন नावधाद देखि वनिष्ठ ॥ # ॥ তন্ত্রান্তরে। তুলারাশি গতে ভা-त्मो मीभवाजा निभाजू ह। शृक-विक्ना किया किया कामार्थ निकृत्य । कट्डा वर्कत्रावा थ श्राखाकु नावदेव यिकावयः । ना बहात्राबि क्रिकिको यक्ष ख ग-ক্ষাৰ প্ৰবেৎ ।। বহানিশাত বি-ছেরয়া আছিরাত্তাৎ পর পিকে। মাজী চতুৰ্বীয় : শন্ত তথা পূজা

ষোগ মেব छ। কালবাত্তি শ্বছে-भानि कामी जात्रा शियकत्री।। छानार्गद । यहात्राखावयादा-जा। पिक्शिकाः अगुक्रमः। सा-ৰ্ত্তিকে মাসি সুশ্ৰোণি কালীপ্ৰী-তিকর পর ।। তত্রাপি চ নিশী-থে তমহাসিদ্ধিপ্রদেশ নৃণা। নি-শীথাৎ পরতো দেবি যকু নাডী **ठ**ज्रुकेष ॥ मा यहाताळि ऋष-ক্ষটা তত্র পূজা বহাফলা। তার-ত্যোন দেবেশি পূজাৰাঃ কল-कब्रन ।। अन्त र्गरिश । जूज्यू-का गरहगानि गहातात्वी जू या त्रष्टुः। ना कानतानि ऋषिकी কালী তারা প্রিয়ন্তরী ॥ তত্র পূজা তযোঃ কাৰ্য্যা নামা পশু विश्िंभनः। विनिन्नानः बन्निजि থাবাজনাশকর শিবে ॥ সল-চূডামণো। তিথিভাঃ শতগুণ পৰ্ব দৰ্শঃ কোটিগুণোন্তরঃ। ফ-লোপচার বহুলৈ জ্যৈকে সূর্ব্যে-**ज्मक्रा ।। शृक्षिष्ठा यहाका**-नी॰ नरता निर्दाण मृक्षि। हजू-र्वर्गथन॰ मत्मं कार्खित्क कालि-কাৰ্চন ।৷ অনস্তকলদ তত্ৰ গ-

र्वयूष्क ह भई वि। निभार्क भूज-(यत्करी॰ नृत्र्धा॰ त्रुधवानिनी॰ ा। गण्ठां जिल्ली त्रात्व त्यादित गर्व-**था** विख्यकत्त्व । कालीक्र लम्खा-रव। मीरभाष्मर्ग हजूकमा म॰-মিশ্রা বা ভবেৎ স্বহুঃ। তস্যা॰ ৰা ভামনী রাত্রিঃ সোচ্যতে কা-লরাত্রিকা।। তদ্যা॰ পূজা প্রক-र्ख्या कानी जाता (अयकती। তুলা মকর মেবেবু কন্যাযা মি-থ্নে তথা। ভূতবিদ্ধাপ্যমাবা-স্যা পূজ্যা ভবতি যত্নতঃ।। ইতি জীমৃতবাহনকৃত ধর্মরত্নে কাল-বিবেকধৃতহারীতবচন া। 🛊 ৷ ১ শিবরাত্রিপ্রকরণে দেবলোক্ত ম-रानिमा यथा। यरानितम एव घिटक द्वाद्व र्यधानयाग्रयाः । ইতি। গঙ্গামাহাত্মাপ্রকরণে গৃহ-ए तज्ञाकतध्ठा जू। महानिमा जू বিজ্ঞেষা মধ্যম॰ প্রছর্ষয় । তত্ত্ স্নানণনঙ্গৰীত নিত্য নৈমিত্তিকা-**দৃতে ।। बन्नरिवदर्ख श्रीक्रकक्र**य-খতে। ষণা্হূর্তে ব্যতীতে তু রা-ত্রাবেব মহানিশা। ক্লত্যতত্ত্বার্ণ-বে বৌধাষনঃ। মহানিশা ভূবি-Cछ्डवा मथा॰ मधाम याम् दवाः। Cक्-गागरम। अयावामा। यस्त्राटक

मिक्ना॰ शृक्रत्यः भद्गाः। जन-अत्य ह यः अया। न शत्कृष्टिव मिषि ।। जूनायाः जीयवादत ह অমাবাস্যা যদা ভবেৎ। তিথিঃ সাপি মছাপুণ্যা শিবেন পরি-कीर्खिन।। वर्सि मानुर्जि वंद পুণ্য বিধিবৎ পূজ্য কণ্ডিকা । তৎফল লভতে বীর অমাবাস্যাণ निगार्कत्व॥ कानीक्रनज्खः। निमारकं भृजय्यत्कवीः भागाना-वचवामिनी॰ **इं**छि ॥ यानिनीछ-**एक । ७७९ मन्ना** जिस्ति व कि ब्राट्वो जू वन्मना। यशत्राजाविश তথা কাৰ্য্যা দেশিকস্ত্তমৈঃ 11 # ॥ श्रांशकात्वा यथा। श्रीत्वर्ग-वाठ। एपवरपव यहारपव ज॰जा-রার্ণবভারক। দেবভাষাঃ স্বাপ-कानः कथरव प्रशानित्य ॥ श्री শিব উবাচ। চতুর্দ্সপ্তাৎ পর॰ **प्ति ता**र्जः श्रथमयामकः। श्रा-পকালম্ভ কথিতঃ পূজানর্থফল-প্রদা।। পূজা হোমঃ স্তোত্ত নতী জাগ্রৎকালে প্রশাসতে। ইতি কালীসলামৃততন্ত্র।। 🟶 ।। সমুজ-मक्त पार्वि पितामूत्रगंगः भूता । नाताश का॰ अमशीयू तक खु॰ विस्कृति ॥ जाविज् छ। महा-

কালী বন্ধাও নাশনাশিনী। ত-ष्युं एका देवजान जीजा मा॰ শরণ গড়াঃ ৷৷ ভেষা মণ্টি ভষ্ণ **मृक्षे औरठाइ** विषमिति । गन्ना ধ্যানপরো ভূষা বিষণ পাতৃণ স-बाद्गरङ ॥ भूटबाङ्ग वा महावि-मा वाविज्ञा ह त्य सि । जु-ना॰ अश्वा॰ निगार्क ह प्रव मा-नेय निजिष्ठ ॥ मन्या পশু প-क्गामि निजिष्ड ठानाजस्य । তিমিন্ কালে মধা পূজ্যা ইন্দ্রে-नानामूद्रन ज् ॥ मिनूरवाह । ञ्ज काल इशे शृक्ता हैत्स्वा-भाजूदबन ह। यहारमव छवाह। वर्षताबागृशूर्खं ह गया हिट्सन পূজিতা। ততো মুহূর্ত্তে সংপূজ্যা বীরেণাপ্যসূরেণ চ েঅত আদ্যঃ পাশবঃ স্যাৎ বৈরঃ শেষঃ প্রকী-र्खिणः ॥ सामजुरदन मनून। म-ৰ্ভ্যে তেন প্ৰপূজিতা। ইভিগো-शारगाथननीनागरम ७ পটनः ॥ 🛊 ॥ काली जलमई एवं ॥ निर्मा-ৰ্দ্ধে সা ভিথি নাস্তি তদুৰ্দ্ধে ভূত-সংযুতা। ভত্রাপি পুজ্বেদেবী ভূতযুক্তাণন লঙ্গযেদিতি ৷৷ 🕸 ৷৷ অথ রক্ষাকালীপূজাপ্রমাণ । উত্তরকামাখ্যাতন্ত্রে। মারীভবে

সমাৰাতে দুৰ্ভিক্তযপীডিতে। পূক্তষেৎ পরষা ভক্তাা কালীণ कानविनामिनी।। तक्कना मर्व-ভূতানা রক্ষাকালীভি সা স্মৃতা । क्वानावत्व। मर्वविद्यानमान्त्रा-র্থণ রক্ষাকালী প্রপূজ্যে । শনি मक्लवादत ह श्राताद्य भृजदय **लिवा॰ ॥ हर्जुक्षमा। स्वायाम। न**-वमा मरुमी जिट्यो। भूकना ९ व-व्रमा काली यरथिकाङकलक्षमा ॥ कालीक्लमर्बः सः। निमामूर्थं मः दिगानी काली त्रकार्थ मामता । পূজনীয়া নৃজিঃ সর্বৈরুপচার স-मिबिटिङ ॥ विख्याठिए न कईवा॰ यथाविखवविखदेवः । **ज्या विमानत विधिव** मधु-ভিঃ পাষ্দেন চ।। পূপে শ্মোদক-म॰देव क शृथ्देकः औकदेन द्रि। नाना करेलः भाक मूरेश शक्छ-देख ऋरङ्भती ।। शृक्रदंशिष्रभा-खार्थः कानीः ब्रकाविशायिनीः। अमायमयस्य भूका कर्षका ज् তি নিচ্ছতা।। রাত্রো বিসর্জন॰ কাৰ্য্যণ ক্ৰীড়া কৌতুক মঙ্গলৈঃ। टेज्द्रवरुखा। ज्यथ वर्षमा मटह-শানি যোরে মারীভয়ে তথা। ওৎপাতিকে চ দুর্ভিকে যুদ্ধে রা-

कुँ ज्यागरा । शृकाः स्कांद भराकानाः द्रैकार्थः शक्तश्रम् । श्राकानाः द्रैकार्थः शक्तश्रम् विभावाञ्च दिमर्क्कर्यः । भूष्ट्रं विजयः कानाः श्राकारा । स्वयावजः । जन्ताः खास्त्र । निमामूर्थं महाकानीः भरामातीस्य भिवाः । कानीः देवस्नाकात्रकार्थः शृक्रस्य द्रकः भाषाकाः । सः।।

व्यथ कलहात्रीभृकाश्चमानः। মধুমাদে দ্বিতাকীয়া বৈশাখ তথা জৈয়তে অমাষাঞ্চ মহেশ্বরি ॥ इंजानि। अभागः कार्छिक টেব নবম্যা শুক্লপক্ষকে। ইতি কাত্যাযনীতল্তে ৭৮ পট্নঃ ॥ জৈতিখনসি তথামায়া সফল কালিকার্চ্চন । ইত্যুত্তরকামা-था। उत्पादक ३३ शहनः ॥ देकारके-यानि ज्याया॰ देव यश्रवाद्य य-হেশ্বরি। পূজ্ঞেৎ কালিকা॰ দে-वी॰ नानाजरवााशशातरकः॥ ज-देवव मिल्माक जू भश्ममभाग नि-मार्काटकः। भूजरबक्त करेवा वर्न-কৈঃ শক্তিতো বাপি কালিকাণ।। ইতি माबाज्य २१ भऐनः ॥ ₩॥ অথ রটম্ভীপূকাপ্রমাণ।।

মাঘে মাসাসিতে পক্ষে রটস্ত্যা-था। ठलुकनी। ठमा। निमार्क-ममरम भूक्तम्यू धमानिनी ।। हैि बायालस्य ३१ भेटनः॥ य-क्तरक्त्रतो क्षक्ठज्र्भगा। नि-नार्कटक। भूजटयम्बिक्ना॰ का-नी॰ धर्माकामार्थिमिक्सरम।। हेर्जु-ত্তরকামাখ্যাতত্ত্বে ৯ পটলঃ॥ শ্যামাকঃ পু॰ ভৃণধান্যভেদঃ। শামা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাযঃ । শ্যামকঃ ২ শ্যামঃ ৩ ত্রিবীজঃ ৪ অবিপ্রিয়ঃ ৫ সুস্মারঃ ৬ রা-क्धाना॰ १ ज्नवीटकाखमः ৮। व्यमाखनाः। यथूतवः। ठिकवः 1 क्यायपः। नयूषः। भीठनपः । বাতকারিত্ব। কর্ফ পিত্ত ব্রণ **(मायना निष्यः । সুগ্রাহিত্বঞ্চ ।** ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। অপি চ। শ্যামাকঃ শোষণো ৰক্ষো বা-তলঃ কফ পিত্তক্তৎ। ইতি ভাব-প্রকাশঃ 11

শ্যামাঙ্গঃ পু॰ বুধগ্রহঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। রুক্তকলেবরে ত্রি। ষথা। শ্যামাঙ্গী॰ শশিশে-থরা॰ নিজকরৈ দানঞ্চ রক্তোৎ-পল॰ রত্বাঢ্য॰ চসক॰ পর॰ ভষ-হর॰ সংবিভুতী॰ শাশ্বতী॰। মু- ক্তাহার লসৎ পযোধরনতা॰ নেত্রত্রযোলাসিনী॰ বন্দেহ॰ সু-রপূজিতা॰ হরবধৃ॰ রক্তারবিন্দ-হিতা॰।। ইতি তন্ত্রসারে ভূবনে-শ্বরীধ্যান॰।।

गागभी जी नीनाभी। इंडि त्राक्रनिर्यकः॥

भागाः पूर भन्नी ज्ञाणा। भागां हेण जागा। हेण जागा। हेण मद्राधा। छ<भगां गरः। वाकी तः २ मानिकः
०। हेण भक्त न्नावनी॥ भुक्षगां १ जान्नी तः ६। हेण जिले।
थतः॥ ज्यात्री विकतां वात्नी वः
थया। ज्यात्री विकतां वात्नी वः
थया। ज्यात्री भन्नी भूद्वाभाथाय याजून भुक्षत शृक्ष्य अहाथायि भित्यात्वकताद्वत्वि।
हेण क्षिण द्या। प्रक्षा मानिकः
भागिकः भूर भागाः। हेण भक्रान्नी।।

শ্যালিক। স্ত্রী পত্ন্যাভগিনী।
শালী ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ
। শ্যালী ২ কেলিঙ্গঞ্চিকা ৩।
ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শ্যাবং পুণ কপিশং। ইত্যমরং॥
স তু রুষ্ণপীতমিশ্রবর্ণঃ। ইতি
ভরত্তঃ॥ তদ্যুক্তে ত্রি॥
শ্যাবদন্ ত্রি ক্রুষণীতমিশ্রিত-

वर्गस्यकुः। देवि निकास कि बूमी॥ ग्राचमञ्डः) जि याजाविकक्रकः ग्रवमञ्चकः । वर्गमनगुष्कः প্রধানদ ভদ্বমধ্য হৃদ্দু অদন্তবি-শিক্টঃ ৷৷ প্রধানদক্তোপরি দন্তা-खत्युकः। यथा विख्ः। ज्य नतकानुज्ज मः शानाः जिरीक्ष युखीर्गाना॰ यानूरया लक्ष्णानि ভবস্তি। স্ঠাতিপাতকী। ভ্ৰন্ধ-श यश्री। সুরাপঃ শ্যাবদন্তকঃ। मृवर्शती अनथी। श्वत्र जारमा দুশ্চর্ম। ইত্যাদি। শ্যাবদস্তকঃ यভाবক्रकमञ्जः । अश्रानमञ्ज ष्वयम्यादर्खिक्षुजनसः। श्रधा-নদস্ভোপরি দস্তান্তর মিতি কে-চিৎ ৷৷ সন্ধী সমুচিতনখঃ । দুশ্ৰী স্বভাৰতঃ অনাবৃত মেটুঃ। অভএব বহারোগিণো यावक्कीव यटगीठ यात्र कृषाभू ब्रावः। क्रियाशीनमा बूर्थमा य-হারোগিণ এব চ। ষথেফীচর-निगाल श्रीतनाञ्च गटनीहकः ॥ कियाशीनमा निडादेनियिकिक कियानन्श्रीवनः। यूर्थमा गा-यजात्रिञ्गा । नार्थगायजीत-হিতস্যেতি রুজধরঃ। সহারো-

গিণঃ পাপরোগাইকান্যভূম-রোগবভঃ। তে চ উন্মাদ স্তুপ্রেল বো রাজবন্ধা শ্বাসো মধুমেহো ভগন্দর উদরো হশ্বরী ইত্য-कि भागतामा नाजरमाङाः। य त्थको हजनग मृ छ दव ना मा-সক্তস্য। এবঞ্চ ভবিষ্যপুরাণো-ক্তে॰ ৰতিচান্দ্ৰাষণপ্ৰাষশ্চিত্ত॰ অক্তপ্রাধন্চিত্তানা কণ্ঠাাদী-ना॰ माट्य (वाक्रवा॰। अनादेथ-ষা প্রায়শ্চিত্তোপদেশো বিফ-नः मारा यथा विकृश अनशी শ্যাবদন্তশ্চ দাদশরাত্রণ রুচ্ছণ চরিত্বোন্ধরেযাতা॰ ভদ্দন্তনখৌ ইতি। অত্র দ্বাদশরাত্রণ পরাক-ৰূপণ তত্ৰ পঞ্চধেনবঃ। ন তু প্রাজাপত্যা। তদ্ধাহ কর্ত্তু র্যতি-চাত্রায়ণেন বিষমশিষ্টত্বাৎ । অত্র বহুনা নেকধর্মাণা নিভি বচনাৎ আকাজ্ফিতত্বাৎ স্ব-श्रीमीना गि श्रीय मिखः। ज-তএব প্রাযশ্চিত্তবিবেকেপ্যুক্তণ এবং দুশ্চশ্মাদিশ্বপুাছ মিতি ! মহাপাতকাদতিপাতকদ্য শুরু-দ্বাৎ তচ্ছেষেপি প্রাযশ্চিত্ত দ্বি-গুণ । ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব ॥ শ্যেতঃ পু• শুক্লবৰ্ণঃ।। তদ্বতি জি

শোনাক

। ইত্যমর: ।।
শোতকোলকঃ পু॰ মৎস্যবিশেবঃ। পুঁটী ইতি ভাষা। ষথা।
সকরঃ শোতকোলকঃ। ইতি
হারাবলী।।

ल्यानः भू॰ भाषुत्रवर्गः। इछि त्यिमिनी।। शकिविद्यायः। म ঞাল ইতি বাজ্ ইতি চ ভাষা। छৎ शर्यायः। मनामनः २ शर्छी ৩। ইত্যমরঃ।। কপোতারিঃ ৪ পতন্তীরুঃ ৫। ইতি শব্দরত্না-वली।। याणिशकी ७ धार्कः १ यातकः ৮। ইতি জটাধরः॥ भागामः २ क्यामः २ क्तः ३३ বেগী ১২ খগাস্তকঃ ১৩ করগঃ 38 नीलिशक्टः ३৫ लघकर्नः ३७ রণপ্রিয়ঃ ১৭ রণপক্ষী ১৮ পিচ্ছ-বাণঃ ১৯ স্থলনীলঃ ২০ ভযকরঃ २३। इं ि ताजनिर्यकः॥ मन-যাতকঃ ২২। ইতি ভাবপ্রকা শঃ ৷৷ অস্য মাণ্সগুণাঃ প্রসহ-শব্দে जरुवाः॥ #॥ छम्। छ-ভাশুভসূচকত্ব যথা। প্রদক্ষি ণীক্তা নর বজন্তো যাত্রাসু বামেন গতাঃ প্রবেশে। শ্যে-নাঃ প্রশস্তাঃ প্রকৃতস্বরা স্তে শা-ন্তাঃ প্রদীপ্তা বিতত্ত্বরা স্তে ॥

(भारत) नृगा॰ पंकिल वाम शृष्ठे-ভাগেষু ভাগৈয়ং স্থিতি মাদধা-তি। তিপ্তন্পুরস্তামৃত্যে করো-তি यूटक जय॰ इस त्रथक्षज्यः ॥ ইতি বসন্তরাজশাঙ্গনে অঊম-वर्गः ॥ कार्शिवत्नकः । यथा । শ্যেনেনাভিচরন্ যজেত। ইতি তিখ্যাদিতব্বধৃতা শ্ৰুভিঃ ।। শ্যেনষণ্ট। স্ত্রী দন্তীবৃক্ষঃ। ইতি त्राक्रनिर्चन्छेः॥ শ্যেনচিৎ পু শোনপক্ষিরক্ষকঃ । ইতি কেচিৎ ॥ **लानी जी एव**ं ठवला। देखि ज-টাধরঃ॥ শ্যেনপত্নী চ।। শ্যৈ ও গভৌ। ইতি কবিকল্প-क्रयः ॥ जानवानि त्रसासा-দ্যোপধঃ। ও শ্যাযভে। ইতি जुर्गाजामः ॥ লৈ। ক্সাতা স্ত্রী মৃগবা। ইত্য-बद्धः ॥

শোনাকঃ পু
 বৃক্ষবিশেষঃ ।
শোনাগাছ ইতি ভাষা । তৎপর্য্যায়ঃ । মঞ্কপর্ণঃ ২ পত্রোর্ণঃ
৩ নটঃ ৪ কটুঙ্গঃ ৫ টুন্টুকঃ ৬
শুকনাসঃ ৭ ঋকঃ ৮ দীর্ঘবৃত্তঃ
৯ স্পটয়টঃ ১০ শোনকঃ ১১ অরলুঃ ১২ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ স্যোনাকঃ

১৩। ইতি ভরতঃ।। শোণঃ ১৪ व्यवपुः ३७ मीर्घवृष्ठकः ३७ । ইতি শব্দরত্বাৰলী।। পৃথুশিষিঃ **১१ मलकः ১৮। ইভি জ**টাধরঃ ॥ कठेखद्रः ३२ मबद्रक्कः २० ञत्रनुकः २३ श्रियकीवः २२ । **उट्छमा यथा।** त्यानाकः भृथः **मित्यात्ना ज्लुत्का मीर्यवृ**खः কঃ। টেন্দুকঃ পীতৰৃক্ষণ ভূত-जाह्या गुनिक्रमः ॥ निःमादेः ফলবৃস্তাকঃ পৃতিপত্রে৷ বসস্ত-কঃ। মণ্ডুকবর্ণঃ পীতাঙ্গো জ-ষুকঃ পীতপাদকঃ ।। বাতারিঃ পীতকঃ শোণঃ সলটশ্চ বিরো-চनः। जुगत्त्रस्थि। वङ्गिजब्या নেত্র নেত্র মিক্তাভিধঃ।। পুস্ত-কান্তরে টেব্দুক স্থানে টুণ্টক ফলবৃন্তাক স্থানে কল্পবৃন্তাক भीजभावक द्यारन भीजभावभ अला े शास्त अना विक्रक्रक স্থানে বহিজ্ঞ ইতি চ পাঠঃ॥ **ত**रवार्श्वनाः । त्नानाकवृगनः **जिक॰ भी**ठनक विमार्गिष । পিত্ত শ্লেমাতিসারমণ সমিপা-তত্ত্বরাপহ ।। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ श क ॥ अशि ह। त्नानाकः लायनक मामि करूक हुन्हे-

কাঃ। মণ্ডুকপর্ণ পত্ত্রোর্থ শুকনাস স্টমটাঃ॥ দীর্ঘবৃস্তো ২রলু শ্চাপি পৃথ্শিয়ঃ কটম্বরঃ।
শ্যোনাকো দীপনঃ পাকে কটুক স্তবরো হিমঃ॥ প্রাহী জিকো হনিল শ্লেম্ম পিত্ত কাশামনাশনঃ। কটু কস্য কলং বালং
কমায়ং মধুরং রোচনং লঘু দীপনং। গুল্মার্শঃ ক্রমিঙ্গৎপ্রোক্তং
গুরু বাতপ্রকোপণং ॥ ইজি
ভাবপ্রকাশঃ॥

শ্রক ই ও সর্পে। ইতি কবিকল্পক্রমঃ।। রেফযুক্তাদ্যঃ। ই শ্রক্যতে। ও শ্রন্ধতে। সর্পো গতিঃ
। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

 वा पन्दत्राधार । इंडि पूर्श-पानः ॥

खाठ् या खाका। ইতি मुकारबाध-जिकाबा॰ मूर्गामामः ॥

ख्यं म बर्रा इंडि कविकन्न-जन्मः॥ म ख्यंचार्डा इंडि मूर्मा-मामः॥

শ্রথ ৎ ক দেবিলো। ইতিকবি-কল্পদেশঃ ।। শ্রথবতি। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

শ্রে ক বত্নে।। প্রতিহাবি। ইডি
কৰিকল্প দেনঃ।। ক শ্রাথমতি
পঠিতু শিষ্যঃ। শ্রাথমতি শিশু
লোকঃ পুনঃপুন হর্ষয়তি ইত্যর্থঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শ্রথ কি বন্ধে।। নোকে।। বথে।
ইতি কবিকল্পজনঃ।। কি প্রাথবৃতি প্রথমতি। লাঘ্য প্রথমতি ক্রুটার্থ মধুর সদ্যক্ষ পদ্য প্রথমতি ক্রুটার্থ মধুর সদ্যক্ষ পদ্য প্রথমতি ক্রুটার্থ মধুর সদ্যক্ষ পদ্য প্রথমতি ক্রুটাক্ষর নাটক ।
শ্রেষ্ঠাক্ত প্রথমতীতি প্রথমক দোর্বল্যে ইত্যদন্ত সা ক্রপ ।
অনেকার্থত্বাৎ বন্ধাতীত্যর্থঃ।
ইতিদুর্গাদাসঃ।।

প্রথ ই ও দৈখিলো। ইতি কবি-কর্মননঃ।। দৈখিলা মিছ'শি-থিলীভাব স্বংকরণক। ই আ-হাতে। ও প্রহতে বক্তং শিথিল। ক্যানিভার্থঃ। প্রহতে বস্তাং লো-কঃ শিথিল। করোভি ইভার্থঃ। ইতিদুর্গাদাসঃ।।

खपनः की वशः॥ बजः॥ शूनः शूनर्चनः॥ वज्ञनः॥ त्याकनः ॥ मिषिमीकवनः। ইতি खय बाजूर्जा। श्नोत्थलारान नि-काषः॥

জন্মধানঃ ত্রি জ্রান্ম কুলা ব্যানি । ভক্ত দ্বানা সুনধা জ্ঞানবৈরাগ্যসুক্তবা । গণ্যস্ত্যাদ্মনি
চান্ধান- ভক্তাা ক্রান্তগৃহীত্বা
। ইতি জ্রাভাগবতে ১ ক্ষমে ২
অধ্যাবঃ ।।

ক্রিবিধা যথা। 🕮 ভগবানুবাচ । ত্তিবিধা ভবতি শ্রদ্ধা দেহিনাং সা স্বভাবজা। সান্ধিকী রাজদী চৈব তানসী চেতি তা॰ শৃণ্যা সন্ধান্ ৰূপা সৰ্বস্য শ্ৰদ্ধা ভব্তি ভারত । अकाभरया १४॰ भूकरवा रका य-क्क् म अव मः ॥ बक्त अ गांबि-का (प्रवान् यक तका भि काज-সাঃ। প্রেতান্ ভূতগণাংশ্চান্যে যজন্তে তামসা জনা।। ইতি শ্রীভগবদ্গীতাষা ১৭ অধ্যায়ঃ ॥ क ॥ जम्मः अन्। रशा । वक्तावाछ। अक्ताश्र्वा हेरम ध-ৰ্মাঃ প্ৰদা মধ্যান্ত সংস্থিতাঃ। শ্রদ্ধা নিত্যা প্রতিষ্ঠাশ্চ ধর্মাঃ শুদ্ধৈব কীৰ্ত্তিতাঃ।। শ্ৰুভিমাত্ৰ-त्रगाः मृत्राः श्रधानभूक्रत्यश्रताः। শ্রেকামাত্রেণ গৃহুস্তে ন করেণ ন **छक्या ॥ कायद्वारेण न द**र्छ স্তবৈধার্থস্য রাশিভিঃ। ধর্মঃ मध्यागाल मृत्यः अकाशीहेनः मृदेत ति ॥ धिका धर्माः भतः সূন্ধঃ শ্রদ্ধা জ্ঞান॰ হত তপঃ। শ্ৰদা স্বৰ্গশ্চ যোকশ্চ শ্ৰদ্ধা সৰ্ব নিদ জগৎ ৷৷ সৰ্বস্ব জীবিত ৷ वाशि पन्गाप अक्य। यपि। ना-धराख कन कि कि अकामा-

नः ততো ভবেৎ ॥ এবः अका-স্বযাঃ সৰ্বে সৰ্বধৰ্মাঃ প্ৰকীৰ্ত্তিতঃ १ दिन्नदः अक्रिया गरमा (श्राबः পূজान्छ সর্বদা ॥ ইতি বঙ্কিপুরা-(१ (४नुमानया श्राक्रा) भागवः॥ म्बनः वर्थाना मूमिए भारत धक्या প্रতिপाদन । मान मि-छाजिनिर्मिषः व्याशानसमा व-ক্যতে।। উদিতে শাস্ত্রকথিতে। व्यक्ता (मवलाका यथा। मध-ক্ততি শ্চানসূথা চ সদা এদ্ধেতি ৰীৰ্ত্তিতা। অতএব ভগবদ্দীতাসূ । অশ্রদ্ধবা হত দত্ত তপস্তপ্ত ক্লতম্ভ যৎ। অসদিত্যুচ্যতেপার্থ ন চ তৎ প্রেত্য নেহ চ।। হরি-ৰণশে বলিণ প্ৰতি ভগবদ্বাক্যণ। অশোত্রিয়ণ শুদ্ধ মধীত মত্রতণ षमिक्ष यख मन्षिका एउ । অশ্রদ্ধবা দত্ত মসংস্কৃত হবি ৰ্ভাগাঃ ষডেতে তব দৈতাপুঙ্গৰ !৷ रेि शिक्षिण्यु ।। 🗱।। योख्यकाः । अकाविधिनमायुक्तः कम् यर ক্রিষতে নৃভিঃ। সুবিশুদ্ধেন ভা-বেন তদানস্ত্যায় কল্প্যতে ৷৷ যো-গিযাজ্ঞবন্ধাঃ। বিধিহীন ভবে-मुक्टे क्रुं यशक्षिया ह यथा छ-দ্বরস্তাসুরা স্তদ্য মূট্দ্য দুষ্ঠা-

ত্মনং।। ইতি প্রায়ন্চিত্ততত্ত্বণ।।
শ্রেদ্ধালুঃ জ্রী দোহদবতী
শ্রেদ্ধালুঃ জ্রী দোহদবতী
শ্রেদ্ধালু জি । ইত্যমরং।।
শ্রেদ্ধালান্ জি শ্রেদ্ধালুকঃ
যথা

শ্রেদ্ধালান্ লভতে জ্ঞানণ তথপরঃ সংযতে জিবং । জ্ঞানণ লক্ষা পরাণ শাস্তি মচিরেণাধিগচ্ছতি।। ইতি ভগবদ্দীতাষাণ
৪ অধ্যাষঃ।।

শ্রন্থ কি দর্ত্তে ।। বধে ৷ ইতি কবিকল্পদ্রুমঃ ৷৷ কি শ্রন্থয়তি শ্রন্থতি ৷ দর্ত্তো গ্রন্থন ৷ ইতি দুর্গাদাসঃ ৷৷

শ্রন্থ গ মোকে।। প্রতিহ্নমি।
ইতিকবিকল্পক্রমঃ।। গ প্রথাতি
বংসংলোকঃ মোচ্যতীত্যর্থঃ।
প্রথাতি শিশুং লোকঃ পুনঃপুন হর্ষষতি ইত্যর্থঃ। শ্রান্থ।
ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শ্রন্থ: পৃথ বিষ্ণু:। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ।। শ্রন্থগান্থগোপ্যত্র।। শ্রন্থন ক্রী গ্রন্থন। ষথা। সন্দ-ত্রোরসনা গুম্কঃ শ্রন্থনণ গ্রন্থ-নণ সমাঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

শ্রন্থিতঃ ত্রি অস্থিতঃ। বদ্ধঃ ।।

ক্রতবধঃ ।। মুক্তঃ ।। হর্ষিতঃ ।

ইতি শ্রন্থধাতোঃ ক্র প্রত্যবেন

নিশামঃ ।।

শ্রেপিত তি যৃত দুগা জল ভিমপক্তব্য । যথা। নিশাক কথি
তে পক্তমাজ্য কীর পষঃ স্মৃত
। অন্যত্ত্ শ্রেপিত শ্রোণ সমৃদভোক্ষ ত সমে ॥ ইতি জটাধরঃ
শ্রেপিতা ত্রী কাঞ্জিক । ইতি

क्विष् ॥

শ্রম উভয ঞি ইর তপঃ খেদযোঃ। ইতি কবিকল্পজ্ঞ মঃ।। উ
শ্রমিন্বা প্রাজ্ঞা। ভ য প্রাম্যান্ত
লোকঃ তপঃকরোতি খিদ্যান্তি
বেতার্থঃ। ঞি প্রান্তাে হস্তি। অস্মাৎ
পুরাদিরালিতাে ও ইতান্যে।
ধুর্যান্ বিশাম্যেতি স ইতি
রখে প্রামৎক মন্ত্রে ইতাদন্তঃ
স্য ৰূপা। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শ্রমঃ পুণ তপং ৷৷ খেদং ৷ ইতি
শ্রমধাত্বর্থদর্শনাৎ ৷৷ শুন্তিং ৷
তৎপর্যাত্বং ৷ ক্রমং ২ ক্রেশং ৩
পরিশ্রমং ৪ প্রধাসং ৫ আযাসং
৬ ব্যাত্বামং ৭ ৷ ইতি হেমচন্দ্রং
৷৷ ক্রমথং ৮ ৷ ইত্যমরং ৷৷ শস্ত্রাভ্যাসং ৷ তৎপর্যাত্বং ৷ খুরলী ২
বোগ্যঃ ৩ অভ্যাসং ৪ ৷ ইতি চ
হেমদ্রেঃ ৷৷

खाननः पू॰ विवित्यकः। ইতি

মেদিনী।। তৎপর্য্যায়:। वृक्ति
মেদিনী।। তৎপর্য্যায়:। वृक्ति
মেদিনী।। তৎপর্য্যায়:। বৃক্তি
অমনো বৃতিঃ। বাচংযমো এতী

সাধু রনগার ঋষি মুনিঃ।।

নির্গ্রে। ভিক্লু রস্য স্থা ভপো

যোগ শমাদ্যঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ
।। নিন্দ্যজীবিনি ত্রি। ইতি

মেদিনী।।

ख्यम् श्री जूपर्यना। मा॰ भी।। मूखीती।। स्वतीरक्षाः। इंडि यिनिनी।।

শ্ৰমী ত্ৰি শ্ৰমবিশিষ্টঃ। শ্ৰম-শন্দাদস্ত্যৰ্থে ইন্প্ৰত্যযেন নি-পায়ঃ।।

প্রাক্ত পুণ আগ্রামঃ। শ্রিধাতে। রল্পত্যধেন নিষ্ণায়ঃ।।

खायन की जा स्वायः। छ । अर्था-यः। खायः २। इंडामदः।।

শ্রবঃ পু॰ কর্ণঃ।। ক্ষরণ॰। ইত্য-মরুটীকাযা॰ ভরতঃ।।

खारः की कर्नः। ইত্যমরः ॥ खारनः की कर्नः। ইত্যমরः॥ ন জ্রিয়া खारनः কর্নः। ইতি হে-মমালী। ই ত তট্তীকাষা ভর-তঃ॥ ষণ্মাসাভ্যস্তরে खारनर्या-

শ্ছিদ্র ভবতি। ইতি সুখবোধঃ

।। শ্রুতৌ ক্লী। সাতু কর্ণেন্দ্রিय-জ্ঞান । শোণা ইতি ভাষা। ইতিমেদিনী।।

व्यवनः भू॰ व्यवनानक्वः। हेछि स्मिनिगाः

व्यवनद्यामनी जी व्यवनानक्व-यूक्जाज एक बाम भी। यथा। পিতামহ উবাচ। শ্রবণদাদশীণ वत्का जुकि युक्ति श्रमायिनी[•]। এकामनी घामनी ह अवरणन ह স'যুতা।। যিজ্যা সা তিথিঃ প্রোক্তা হরিপূজাদি চাক্ষয় । একভক্তেন নক্তেন তথৈবায়া-চিতেন চ। উপৰাদেন ভক্ষ্যেণ নৈবাদ্বাদশিকো ভবেৎ।। কা॰-স্যু মাষ তথা ক্ষেত্ৰ লোভ বিতথভাষণ । ব্যাযামঞ্চ ব্যবা-यक पिरायक्ष यथाक्षनः।। णि-লাপিষ্ট॰ মসূরঞ্ দাদশ্যা॰ ব-ব্রুবেমরঃ। মাসি ভাত্রপদে শুক্লে দাদশী শুবণান্বিতা।। य-रठी दामगी एछमा উপবাসে মহাফলা। সঙ্গমে সরিতঃ স্নান॰ ৰুধযুক্তা মহাফলা।। সম্ভে সর-ত্নে সজলে যজেৎ স্বৰ্ণয় বামন । সিতবক্ত যুগচ্ছ । ছলোপান-म्यूगां विक्।।। अं नत्या वाजू (मवाय

नितः शुन्तकारकारः । स्वी बार मूच छद करे इसार देव मयः। नमः श्रीनंजदत बद्धा खूटको **मर्वाज्या**तित्व।। व्याश-काब नमः कत्को द्वनवादमा-**मतः वृक्षः । दे**बत्नाकाश्राञ्च बिहु॰ कञ्चा॰ मईशए नमः॥ न्वाचादन नमः भारती देनदवनाः ষুত্পাযস। সম্ভাত্ত মোদ-कान् मनग्र कागत्र कात्ररयि শিয় স্নাদ্বা প্ৰীতো হৰ্চ্চবিদ্বা তু क्रुज्याक्षिन ईप्तर । निया नम एउ भाविन्म तूथ खरानः-खक्।। अट्योय म॰क्य॰ कृषा সৰ্বসৌখ্যপ্ৰদো ভব। প্ৰীয়তাণ দেবদেবেশো বিপ্রেভ্যঃ কল্সা-न् षटष्ट ॥ नमा खीदा २४ वा अय्राष्ट्र गर्वान् कामानवाश्चराष्ट्र । ইতি গাৰুডে ১৪১ অধ্যায়ঃ।। व्यना प्राप्तभी गटक जरुवा ।। व्यवनगैर्षिका जी व्यावनीवृकः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শ্রবণা পুণ দ্রী নক্ষত্রবিশেষঃ। ইতি মেদিনী॥ সাতু অশ্বিন্যা-দ্যম্ভর্গত দ্বাবিংশনক্ষত্রণ। ত-স্যাঃ স্বৰূপণ শরাকারতারাত্র-ষাত্মকং। তদ্যাধিদেবো হরিঃ।

वथा। ভाরকাত্রখনিতে শরান্ত জ্জী কেশবে গগৰী মধ্যবর্জিনি। মন্তবারণগতে ২জলগতে। নির্ব-यू र्शक मही मु निश्चिकाः॥ म॰ ১ । প॰ ১৮। ইতি কালিদাসক্ত-त्रां जिन्यमिक्श्वा 🛊 ॥ उज জাতকল । শাস্তানুরক্তো বহ-পুত্ৰ মিত্ৰঃ সৎপুত্ৰ ভক্তি ৰিজি-তারিবর্গঃ। চেজ্জন্মকালে এব-गा हि यमा थ्यमा भूताव अवत्व প্রবীণঃ ॥ ইতি কোষ্ঠীপ্রদীপঃ ॥ 🗱 ॥ তত্র গৃহারস্তার্থ তৃণ কা-ष्ठानि टब्लन मः अर मिकनानि-क्गमन नित्वश कथा। (इनन॰ मः अर्देश्व कार्यामीनाः न का-द्रत्य । व्यवनारमी तूधः वर्ह्य न गटक्ष्मिकना मिन ॥ ज्ञीन পীড়া ভয়ু শোকো রাজগীড়া ধনক্ষঃ সংগ্ৰহে তৃণ কাঠানাং ক্রতে বস্বাদিপঞ্চকে।। ইতি জ্যোতিস্তৰ্ভ ॥

শ্রবণা স্ত্রী মুগুরিকাবৃক্ষঃ। ইতি রত্নমালা।।

खवाभाः भू॰ विनित्यागाभरूः। यक्ष्यभर्यः। इति निकास-कोमूमी॥

व्यविष्ठा जी धनिष्ठानक्वः।

ं ইত্যমরঃ ।।

শ্রবিষ্ঠাজঃ পু॰ বুধগ্রহঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। ভত্ত জাতে ত্রি।। শ্রব্যঃ ত্রি শ্রোতব্যঃ। শ্রবণা-হ্বাক্যাদিঃ। শ্রুধাতো র্য প্র-ত্যবেন নিম্পন্নঃ।।

শ্রা ল খেদে। ইতি কবিকদ্প
ক্রমঃ। রেকযুক্ত স্তালব্যাদিঃ।
ল শ্রাতি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
শ্রা ল ম পাকে। ইতি কবিকল্প-

वा न म भारका शक्क कावकन्न क्रमः॥ दिक्युक कावतानिः । न वावि। म व्यभवि। हेवि पूर्णामामः॥

প্রাণ ত্রি পরণ। ইতি মেদিনী।।

যৃতদুগ্ধজনভিন্নপরক্তব্যং। ইতি
জটাধরঃ।।

শ্রাণা স্ত্রী যবাগৃং। ইত্যমরং।।
শ্রাদ্ধণ ক্রী শাস্ত্রোক্তবিধানেন
পিতৃকর্ম। ইত্যমরং।। তস্য
লক্ষণ যথা। সংস্কৃতব্যঞ্জনাত্যঞ্চ
পধাে দধি ঘৃতাদ্বিতং। শ্রদ্ধাা
দীযতে যন্মাৎ শ্রাদ্ধণ তেন নিগদাতে।। ইতি পুলস্ত্যবচনাৎ
শ্রদ্ধা অমাদে দানণ শ্রাদ্ধণ
ইতি বৈদিকপ্রধােগাধীনধৌগিকং। ইতি শ্রাদ্ধতত্ত্বং।। অপিচ। সধােধনপদােপনীতান্

निवामीन् छर्भी जनतामि-শা হুবিস্তাগঃ আছে । তবু बानगिविशः। यथा। विश्वाभिजः। নিত্য নৈমিত্তিক কাম্য বৃদ্ধি-শ্রাদ্ধ সপিত্তন । পার্রণক্ষেতি विख्डिय॰ গোষ্ঠা। শুদ্ধার্থ মন্ট-ম ।। কর্মাঙ্গ নবম প্রোক্ত टेमिविक॰ मन्या स्मृत्रः। याजा-ধৈকাদশ প্ৰোক্ত পুষ্টাৰ্থ দ্বা-দশ· স্ত·॥ এতভবিষাপুরাণে विवृত । यथा ভবিষ্যে। অহন্য-हिन राष्ट्राकः जिल्ला मिल्री-या । दिश्वामय विश्वीन॰ जन-শক্তাবুদকেন ত্।। একোদিকস্ত यक्षाक । তমৈনিত্তিক মুচ্যতে। **जन्माटेमव॰ कर्जवा मयूगानाम**-यिष्कुषान्।। कामगाय जू हिज॰ कामा मिल्लाडार्थिमक्राय পাৰ্বণেন বিধানেন তদপ্যুক্তণ थगािथन ॥ वृत्को य किया প্রাদ্ধ বৃদ্ধিশাদ্ধ তদুচাতে। मर्ब॰ अमिकन॰ कार्या॰ পূৰাছে তৃপবীতিনা।। গম্বোদক তিলৈ-र्युकि वर्गा भाव ठव्केष । অর্য্যার্থ• পিতৃপাত্তেমু প্রেতপাত্ত• প্রদেচযেৎ।। যে সমানা ইতি ছাভ্যা মেতজ্জ্বেষ নপিওন ।

মিত্যেন তুল্যা শেষ স্যাদেকে।-দ্দিষ্ট স্ত্রিয়া অপি ॥ অমাবাস্যাণ ষৎ ক্ৰিয়তে তৎ পাৰ্বণ মুদাহত । ক্ৰিষতে বা পৰ্বণি ষৎ তৎ পা-ৰ্বণ মিতি স্থিতিঃ।। গোষ্ঠ্যাণ যৎ ক্রিষতে প্রাদ্ধ গোষ্ঠী শ্রাদ্ধ ত मूठाटा वश्नाः विमुषाः मण्या সুখার্থ॰ পিতৃতৃপ্তযে ॥ ক্রিয়তে শুদ্ধৰে ষত্তু বান্ধণানাম্ভ ভো-জনণ। শুদ্ধার্থ মিতি তৎ প্রোক্তণ বৈনতেয় মনীষিভিঃ।। নিষেক-কালে সোমে চ সীমস্তোশ্বযনে তथा। एकवं भू भवत्न देवव औ क्ष॰ कर्याञ्च त्यव ह।। त्वनानुष्ति-স্য যক্ষাদ্ধণ তদৈবিক মিছোচ্য-তে। হবিষ্যেণ বিশিষ্টেন সপ্তম্যা-**मियू यञ्जञः ॥ शष्ट्रन् मिणाखतः** यजु आफ नर्गाक मर्शिया। ষাত্রার্থ মিতি তৎ প্রোক্তণ প্রবে-**८** ह न म॰ ग्वः ।। ग्वीद्वाशहर्य শ্ৰাদ্ধ মর্থোপচয এব চ। পুষ্টার্থ মেতদ্বিজ্ঞেষ মৌপচাষিক মুচ্য-তে।। 🗱।। তন্য পঞ্চবিধত্ব যথা। বৃহস্পতিঃ। নিত্য নৈমিত্তিক। কাম্য বৃদ্ধিশ্রাদ্ধ তথৈব চ। পা-ৰ্বণঞ্চেত মন্না আদ্ধি পঞ্বিধণ च्यु ७ ।। कृषा भू द्वार । व्यञ् ना इनि

নিত্য স্যাৎ কাম্য নৈমিত্তিক भूनः। একে। क्रिकेष्ठ विख्छियः वृक्षिञ्चाक्ष्य भार्वनः॥ এउ९भक्षः বিধ প্রান্ধ মনুনা পরিকীর্ত্তিত ॥ 🟶 ॥ य< माभूतात्व देविधा মুক্ত যথা। নিত্য নৈমিত্তিক। কামাণ ত্রিবিধণ প্রাদ্ধ মুচাতে। **७मा देवविधाः।** विकृता निजा कामाक्र भाष्ट्र देश विधा विधार । তত্র নিত্যপদ নাবশ্যক্রপত্যা शाईरेनिका क्रिकेरमा त्रिश शति-वाशर्थं। कागालन मनावनाक-षार्थ। ইতি आक्षवित्वकः॥ #॥ व्यामावाद्वय यूनिशूट्य निमि-না তৎ পুত্ৰদ্য প্ৰাদ্ধ কৃতে। যথা। ধরণুবাচ। কো গুণঃ পি-**ज्यखमा कथर**मव প्रशृकार**छ** । কেন চোৎপাদিত প্রাদ্ধ কিম-मर्थ किमाञ्चक ।। এতদিচ্ছाম্য-হুণ শ্রোতৃণ বিস্তরেণ বদস্ব মে। বারাহ উবাচ। মনোস্ত বংশসমূ-ত আত্রেয ইতি বিশ্রুতঃ। আ-ত্রেয়ন্যাত্মজো বিপ্রো নিমিনামা তপোধনঃ॥ নিমিপুল্রস্ত ধর্মাত্মা ত্রিষু লোকেষু বিশ্রুতঃ। বর্ষাণা-ঞ্ সহস্যাণি তপস্তপ্ত্যা বসুদ্ধরে ॥ মৃত্যুকাল মনুপ্রাপ্ত স্ততঃ পঞ্ছ

माभाजः ॥ नर्यक ७॰ मूज॰ पृक्ती-নিমেঃ শোক উপাবিশৎ।। পুত্র শোকাভিসংযুক্তো দিবা রাত্রৌ চ চিন্তবন্।। নিষিঃ ক্লন্ব। ততঃ শো-क विधिना छक गांधवि॥ छः भव গতসঙ্গল স্ত্রিরাত্তে প্রত্যপদ্যত। তস্য প্রতিবিশুদ্ধস্য মাষ্মাসে जू बामनी ।। यनः मण्मृका विष-ये वृक्षि विखादगायिनी। म निम শ্চিন্তযামাস আদ্ধকল সমাহি ण्डः ॥ यानि ज्देमाव ज्ञाकानि मूला नि ह कलानि ह। यानि का-নি চ ভক্যাণি নবঞ্চ রস সম্ভব ।। যানি তদ্যৈৰ চেফ্টাৰি সৰ্ব মেত-**দুদাহর** । আমন্তা বান্ধন পূর্ব॰ च्छिज्ञा नमाहिकः ॥ मिक्नेन বৰ্ত্ততঃ সৰ্বণ ঋষিঃ স্বয় মন্সৰ্বত । সপ্তক্ষনা তত স্তত্ত যুগপৎ সমুপা विশए।। দত্ব। जू या॰म भाकानि मृलानि চ कलानि छ। शुक्रियश ত্বিপ্রান্ স সপ্তরুত্বস্ত সৃন্দরি॥ ফ্রা তু দক্ষিণাগ্রাণশ্চ স্শাণশ্চ थायकः শুकिः। थानमी खीगरक পিঞ্জ নাম গোত্র মুদাহরন্।। এতস্মিমস্তরে দেবি নারদে। দ্বি-জসত্তমঃ। জগাম তাপসারণ্য॰ খাষ্যাঞ্ডাম বিভূষিত।।। ত॰ দৃষ্ট্ৰ।

পুজ্যামাস স্বাগতেনাথ মাধ্বি । ভীতো গদাদযা বাচা নিশ্বসং-**क्र मूरु मू इः।। म**बीरफा ভाষ-তে বিপ্রঃ কারুণ্যেন সমন্বিতঃ। ক্লন্তঃ শ্লেহশ্চ পুত্রার্থে ময়া সংক-ब्रा य क्वं ज्या जर्भ विद्या विद्यान मश्च अशामान कत्वन ह। ११-শ্চাদ্বিসজ্জিত পিণ্ড দর্ভানা-स्त्रीर्या जूजला। छेनकानयनदेश-ব স্বপদব্যেন পাষিত । শোক ন্নেহ প্রভাবেন এতৎকর্ম্ম ময়া-ক্তত।। ৰ চ জ্ৰত ময়। পূৰ্ব ন দেবৈ ঋষিভিঃ ফ্রন্ত । ভ্রমণ তীব্রণ अनगामि मूनिमाना मूनाइ-ণাৎ।। নারদ উবাচ। ন ভেতব্য॰ দিজশ্রেষ্ঠ পিতর॰ শরণ॰ ব্রজ । ज्यभर्भः न ह शंभागि धर्मादेनवा-ত্র সংশযঃ।। নারদেটনব মুক্তস্ত निमि र्शान यूपाविगए। कर्याना মনদা বাচা পিতর শরণ গতঃ॥ ততোতিচিন্তযামাস বংশকর্তার মান্থনঃ। ধ্যায়মান স্ততোপ্যা-শু আজগাম তপোধনঃ॥ পুত্র-শোকেন সম্ভপ্তণ পুত্রণ দৃষ্ট্বা ত-পোধনঃ। পুত্র মাশ্বাস্যামাস বাগ্ডি রিফীভি রব্যবৈঃ৷৷ নিমে সঙ্গীত শ্ৰেষান্ পিতৃষক্ত স্তপো-

थन । পिতৃयद्धि निर्मित्छ। **धर्मा २य॰ बक्रग खर•।। ততে।** ম্ভিতরোধর্মঃ ক্রতুরেকঃ প্রতি-ষ্ঠিতঃ। ক্তঃ স্বয়ন্ত্রা পূর্বণ শ্রা-क्षित्य। विधि ऋखयः ॥ ३७ व। ब्राट्स् आस्कार्शिखनामाधायः ॥ 🗱 ॥ ञ्रिता ञ्रिता ना-তব্য॰ মাসি মাসি তিলোদক॰ । थन्या भित्रमा (मरी निर्दाणमा ह शातिनीः। देवकवी कामाशी ८५-তি অজয়। চেতি নামতঃ ।। এবং দত্তেন প্রীযন্তে পিতরশ্চ ন সং শযঃ। পরমাত্মা শরীরস্থে। দেব-তানা মধা ক্রতঃ ৷৷ ত্রয় স্তত্র ব-রারোহে দেবগাত্রাদ্বিনঃসূতাঃ। পিতৃদেবা ভবিষ্যন্তি ভোক্তারঃ পিতৃপিওকান্।। 'দেবতাসুর গ-ন্ধর্ব। যক্ষ রাক্ষস পদ্মগাঃ। পিও॰ শ্রাদ্ধস্য পশ্যন্তি বাযুভূতা ন সং শযঃ।৷ পিতৃযজ্ঞ বিশালাক্ষি ষে अर्देखि विद्या जनाः। आयुः की-ৰ্ত্তি ৰ্বল তেজো ধন পুত্ৰ পশু ব্রিষঃ ৷৷ দদস্তি পিতর স্তস্য আ-রোগ্যণ নাত্রসংশযঃ। আত্মকর্ম-বশালোকান্ প্রাপ্রস্তীহ শো-ভনান্।। তির্যাক্ষু চ বিমুচ্যক্তে প্রেভভাবাচ্চ মানবাঃ। নরকে

পচ্যমানানা ত্রাতা ভবতি মান-ৰঃ।। পূজকঃ পিতৃ দেবনা॰ সর্ব-कानः गृश्याया। विजाजीः सर्भ यिषा जू शृर्दन विधिना नदः॥ অক্ষ্য তস্য মন্যন্তে পিতরঃ শ্রা-দ্বতর্পিতাঃ। নরা যে পিতৃভক্তা স্তে প্রাপুবন্তি পরা গতি ।। कः।। পকাম তত্ত্ৰ বৈ কাৰ্য্য সুবিস্ফ-ঞ্চ শুদ্ধিতঃ। বৃত্তে তু তত্ত মধ্যা-ङ्ग्रि आकात्रस्य कात्ररय ।। स्रा-গতঞ্চ তথা ক্ৰত্বা পাদ্যাৰ্থণ মণ্ডল* শুচিঃ। পাদ্য দন্ধা তু বিপ্ৰায গৃহস্যাভান্তর নযেৎ।। আস-ন॰ কল্পষিদ্বা তু আবাহ্য তদনন্ত-तः। **अर्थाः ममाधिधा**रनन गन्न-भारेलाः थाशुका ह।। धुशः मीशः তথা বস্ত্ৰণ তিলোদক মথাপি বা ৷ পাত্রঞ্চ ভোজনস্যার্থে বিপ্রাব্রে ধার্যেত্তথা ৷৷ ভস্মনা মঙল• कार्याः शःकिरमाय निवातकः। অগ্নিকাৰ্য্যণ ভতঃ ক্লন্ত্বা অন্নঞ্চ প-রিবেশযেৎ।। তত্র কার্য্যস্ত সঙ্করঃ **शिज्नु फिला मुक्ति। यथा** मुर्थन ভোক্তব্য মিতি ক্রযাদ্দ্বিজ প্রতি ৷৷ রকোম মন্ত্রপাঠা॰শ্চ আচমে-ত বিচক্ষণঃ। তৃথাণ্স্ত ব্ৰাহ্মণান্ জ্ঞাত্ব। দদ্যাদৈ বিকির ততঃ।।

উত্তরাপোশন দম্বা পিওপ্রশ্নস্ত কার্যেৎ। দক্ষিণাভিমুখো ভূষা मर्जानाखीर्या जूजला।। लिख-मानः अन्वीं अभिकामि बिरुप्य তথা। পিণ্ডানা পূজন কার্য্য **ज्युत्रका यथाविथि ॥ बाक्यन**मा **চ श्रु ज मामक्या माज्या**न् । পিণ্ডা স্ত্ৰযন্ত বসুধে বাবতিষ্ঠন্তি ভূতলে ৷৷ আপ্যাৰমানাঃ গ্ৰিতর স্তাবত্তিপ্ঠন্তি বৈ গৃছে। উপস্পৃশ্য শুচি ভূষা দদ্যাৎ শাস্ত্রাদকা-नि ह।। अन्या नित्रमा जृत्यो निवाशमा ह शांतिनीः। देवकवी কাশ্যপী চেভি অক্ষয়া চেভি না-মতঃ ৷৷ ভক্ষবেৎ প্রথমণ পিণ্ডণ भटेजा प्रयक्ष मधामः। ভৃতীय मूमटक मम्मा धारक धव वि ধিঃ স্মৃতঃ।। পিতৃদেব॰ বিসৃজ্যা-থ ভক্তা। তু প্রণমেত্রু তান্। এব॰ **मर्त्वन जुगांखि পिजृम्बर्ग न** मः भवः ॥ मीर्यायुषाः अवक्छि পুত্ৰ পৌত্ৰ ধনানি চ। তেনোত্ত-पितृ विध्येषु मना e **आकः** वि ধানতঃ॥ অন্যূপা ততু বৈ ঞাদ্ধ॰ নিষ্ফল নাস্তি সংশ্যঃ। মন্ত্রহী-ন জিয়াহীন ষৎপ্রাদ্ধ সরু তে বিজঃ ৷৷ মন্তক্তস্যাসুরেন্দ্রস্য

ফল ভবতি ভাগতঃ। ইতি বা ब्राट्ट পिতৃयक्तनिर्गनायाशायः ॥ 🖝 ॥ ७ मा धिका तिक्ता वर्षा । भूवः भौवः अभीता ना ভ্ৰাতা বা ভাতৃসম্ভতিঃ। সপিও-সম্ভতি ৰাপি ক্ৰিয়াৰ্ছা নৃপ জায়-তে।। তেৰা মভাবে সৰ্বেধা স-মানোদকসম্ভিতিঃ। মাতৃপক্ষস্য পিণ্ডেন সংবদ্ধা যে জলেন বা ॥ ঙ্গলম্ববেপি চোৎসন্মে স্ত্রীভিঃ কাৰ্য্যাঃ ক্ৰিষা নৃপ। সংঘাতান্ত-গ তৈ ৰাপি কাৰ্য্যাঃ প্ৰেত্তস্য ষাঃ कियाः ॥ উৎসমবন্ধুরিক্থাদা कात्ररयमयनीপिछिः। शूर्वाः कि-या नधामान्छ उथा टिटवाज्राः ক্রিষাঃ।। ত্রিপ্রকারাঃ ক্রিযা-স্ত্রেতা স্তাসাণ ভেদণ শৃণুষ মে ৷ जामाइ वार्यायुशामि न्यानाना-ন্তান্ত যাঃ ক্রিযাঃ।। তাঃ পূর্বা মধ্যমা মাসি মাস্যেকোদ্দিষ্ট স**্** জ্ঞিতাঃ। প্রেতে পিতৃত্ব মাপন্দে मिश्वीकत्रशामन्।। क्रियर्छ याः ক্রিযাঃ পিত্র্যাঃ প্রোচ্যস্তে তা নৃপোত্তরাঃ। পিতৃ মাতৃ সপিতে-ख मगान मलिटेन खथा।। म॰घा-তান্তর্গতৈ শৈচব রাজ্ঞা বা ধন-হারিণা। পূর্বাঃ ক্রিষাম্ভ কর্তব্যাঃ

পুত্রাদ্যৈ রেব চোত্তরাং ৷৷ দৌ-হিত্তৈ ৰা নরশ্রেষ্ঠ কার্যা ভত্ত-नदेश खथा। गृञाश्नि ह कर्खवाः স্ত্রীণা মপুতেরাঃ ক্রিষাঃ।। প্রতি-সংবৎসরং রাজমেকোদ্দিষ্ট বি-ধানতঃ। ইতি বিফুপুরাণে ৩ অংশে ১৩ অধ্যাযঃ ॥ ঞ্চ ॥ যা-জ্ঞবন্ধ্য উবাচ। অথ প্রান্ধবি-क्षि॰ वत्का मर्व भाग अनामन॰ । অমাবাস্যাফকা বৃদ্ধিঃ ক্লঞ্পকো **২যনদ্ব**ণ।। তাব্য॰ ব্ৰাহ্মণ সম্প ত্তি বিষুবৎ সূর্য্যসংক্রমঃ। ব্যতী-পাতো গজচ্ছাযা গ্রহণ চন্দ্র সূ-ৰ্যাৰোঃ॥ আদ্ধ প্ৰতিৰুচি কৈব **धाक्षकामाः अकीर्खिजाः। # ।** অত্যাে যঃ সৰ্ববেদেষু শ্ৰোত্তিষাে विम्त्वा॥ विमार्थविक्कार्थ সামা দ্রিমধু দ্রিসুপর্ণিকঃ। স্বসূীয খাদ্বিগ্জামাতৃ যাজ্য শ্বশুর মাতৃ-লাঃ।। ত্রিণাচিকেত দৌহিত্র শি-ষ্য সম্বন্ধি বান্ধবাঃ। কর্মনিষ্ঠা স্ত পোনিষ্ঠাঃ পাঞ্চাগ্নি বন্ধচারিণঃ ।। পিতৃ নাতৃপরাশ্চৈব ত্রাহ্মণাঃ व्याक्तरमवजाः। 🛊 । त्रांशी शै-নাতিরিক্তাঙ্গঃ কাণঃ পৌনর্ভব ख्या। व्यकीन्। मत्या त्य ह त्य চাচারবিবজ্জিতাঃ। অবৈষ্ণবাশ্চ

रि नर्स न आकार्शः कमाठन ॥ ॥ नियस्रदेशक शृद्धमू र्षि-জৈ ভাব্যঞ্চ সংযতৈঃ। আচাস্ত শৈচৰ পূৰ্বাক্তে স্থাসনে সূপবেশ-ষেৎ।। यूआरेन्सरव তথা পিত্রে मूथातत्म समक्किष्ठः। को तित्व **आ अनक्शि**खा बीरगुक॰ का-ভरगाः शृषक्।। याजायशाना य-**८भाव॰ जन्न॰ व। देवश्वरमिवक॰ ।** रख्यकालन पत्रा विखेतार्थः ঙ্গানপি।। আবাহ্ন তদনুজ্ঞা-তো বিশ্বেদেবাস ইভ্যুচা। যবৈ রম্ববকীর্য্যাথ ভাজনে সপবিত্রকে ।। नत्काटनवा। शयः किञ्जा यता-नीि यवा खथा। या मिन्रा है जि মস্ত্রেণ হস্তেবের বিনিক্ষিপেৎ।। शक्तांमरक छथा धृश मालामान প্রদীপকণ। অপসব্য• ততঃ কৃত্বা शिकृता **मञ्जलकिन** ॥ विश्वना ম্ভ দশান্ দম্বা উষম্ভস্ত্যেচা পিতৃন্। আবাহ তদনুজ্ঞাতো জপেদাযান্ত ন স্ততঃ ৷৷ যবার্থস্ত जिट्रेनः कार्याः अय्रापर्गापि शृ-ৰ্বৎ। দন্ধা তু সংশ্ৰবাণ স্তেষাণ পাত্ৰে ক্লবা বিধানতঃ।। পিতৃভ্যঃ স্থানমসীতি ন্যুক্তণ পাত্রণ করো-**ण्या व्याप्त कित्र क्रिक्स** क्रिक्स क्र क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स क्रिक्स क्रि

পৃচ্ছত্যন্ন বৃতপ্পতে ।। সক্রেভি তথোক্তো ২গ্নো হত্বাসৌ পিতৃষ-জ্ঞতঃ। হতশেষ প্রদদ্যাক ভা-জনেষু সমাহিতঃ ৷৷ যথালাভো-পপয়েষু রৌপ্যেষ্ চ বিশেষতঃ। দত্বান্ন পৃথিবীতে পাত্র মিতি পাত্রাভিমন্ত্রণ ।। রুত্বেদ বিকু-तिञास निकाक्षे नित्रगरम् । সব্যাহ্বতিকা॰ গাৰ্মন্ত্ৰী॰ মধুব।-তেত্যচ তথা ৷৷ জপ্তা ৰথাস্থ বাচ্যণ ভুঞ্জীরণ স্তেপি বায়বাঃ। व्यव्यक्तिकः इविषाकः मनामित्का-ধনো হত্বরঃ॥ আভূপ্তেশ্চ পবি-ত্ৰাণি জপ্ত। পূৰ্বজপন্তপা। অন-गानाय ज्थाः इ त्मवदेकवान्यना र।। তদন প্রকিরেন্ডুমৌ দদ্যা-চ্চাপঃ সক্তৎ সক্ত। সর্ব यह य-পাদায সতিক দকিগামুখঃ ।। উচ্ছिফ मित्राधी निश्वान् अन-मा । পিতৃ यद्धव । याजागर। ना नत्थाव॰ नमाष्ठाठमन॰ ७७३ ।। স্বস্তি প্রীষ্তা মিতি চাইহব॰ विस्थानवान् जनः मम् । य-खिवाठा ততো ममामक्यगामक यেব চা। দম্বা তু দক্ষিণা॰ শব্জ্যা স্বধাকার মুদীরবেৎ। বাচ্যতা মিতানুজ্ঞাতঃ পিতৃভ্যশ্চ স্বধো-

চাতা ।। বিপ্রৈ রম্ভ স্বধেত্যুক্তো ভূমৌ সিঞ্চেত্ততো জল । দাতা-রো নো বিবর্দ্ধস্তা বেদাঃ সম্ভতি রেব চা৷ শ্রন্ধা চনো মা ব্যগম্ৎ वर प्रयक्ष भाखिष्ठ। इठ्राक्ता-পি প্রিয়ণ বাচণ প্রাণিপত্য বিসজ্জ-বেৎ ৷৷ বাজে বাজে ইতি প্রীত্যা **शि**ष्रृष् विमर्द्धनः । यन्त्रिः एउ म॰ खराः शूर्व गर्गाभारत निभा-তিতাঃ ॥ পিতৃপার• তদুৱান• क्ष विश्वान् विमर्क्करम् । अन-কিণ মনুবজা ভূঞীত পিভূদে-বিত ।। বন্ধচারী ভবেত্তাম্ব রজ-নী ভাষ্যয়া সহ। এব প্রদক্ষি-कश वृष्की नानीयूथानि ।। ষজেত ধব কর্ননু মিশ্রাঃ পিণ্ডা यदिः खिठाः। একा क्रिकः देन-বহীন মেকার্ট্যেকপবিত্রক 11 আবাহনাগ্নৌকরণরহিত অপ-সবাবং। উপতিষ্ঠতা মিত্যক্ষয় श्रात विश्रान् विमर्क्कराष्ट्र ॥ ज-ভিরম্যতাণ প্রক্রমাৎ ক্রমু স্তেভি-त्रजाः य र। 🗱। भरतामक जिटेन র্মিঞা স্বর্যাৎ পাত্র চতুষ্টয় ॥ অর্থার্থণ পিতৃপাত্তেষু প্রেতপাত্তণ প্রসেচযেও। যে সমানা ইতি দ্বাভ্যাণ শেষণ পূৰ্ববদাচরেৎ ॥

এতৎ সপিভীকরণ নেকোদিন্ট দ্ৰিষা অপি। অৰ্থাক্ সপিঙীক-त्रं भग मन्दरमहास्ट्रिय ।। ए-স্যাপ্যন্ন সোদস্তত দদ্যাৎ সং-বৎসর দিজ। পিণ্ডাণ্ড্র গোজ विथ्वरा नमामत्यो जलि वा १। 🟶 ।। इतिशास्त्रन देव मामः शा-ৰসেন তু বৎসর । মাৎস্য হা-রিণকৌরভূ শঙ্গন ছাগ পার্য তৈঃ ।। अन दोत्रव वाताह भारेन यां-टेन र्यथाक्रमः। मामवृक्ताि जू-ষ্যন্তি দত্তৈ রিহু পিতামহাঃ॥#॥ मनाइयां बर्यानगाः ययान् ठ ন সংশযঃ। প্রতিপৎ প্রভৃতিশ্বেবং कनगमीन् आकरमा ७८व९॥ भ-ত্ৰেণ নিহতামান্ত চতুৰ্দশ্যা প্ৰ-দীষতে। **৩। স্বর্গ॰ ছপত্য মোজ**-শ্চ শৌর্য্য ক্ষেত্রণ বল তথা।। পুত্রশ্রেষ্ঠান্ সসৌভাগ্যানপত্য• মুখাতা সুতান্। প্রবৃত্ত চক্ত-তা পুলান্ বাণিজ্যপ্রভৃতী -স্তথা।। অরোগিত্ব: যশো বীত-শোকতা॰ পরমা॰ গতি॰। ধন॰ বিদ্যাণ ভিষক্ সিদ্ধিণ স্প্যাণ গো-জাবিক তথা। অশ্বানাষুশ্চ বি-**धिवान्यः आक्षः मः अवक्**छि । ক্লুত্তিকাদি ভরণ্যস্ত সকামানা-

ध्यापियान्।। रखाणाः श्रीननः স্ভোব নবং আদ্ধং ক্লভং দিকাং৷ व्यायू शुकाः धनः विमाः वर्गः स्मिक मूर्यानि ह।। श्रयक्षि তথা রাজ্য• প্রীতো নিত্য• পি-তামহঃ॥ ইতি গাৰুডে ১১ অ-शायः ॥ 🛊 ॥ जिन ह। वाज শ্ৰাদ্ধ মহ॰ বক্ষো ভূক্তি মুক্তিপ্ৰ-षः नृगाः । शूर्वः नियख्याविशान् बिणि मू। उन्निठातिनः॥ अपिक-ণোপবীতেন দেবান্ বামোপবী-তিনা। পিতৃষিমন্ত্রবেৎ পাদৌ কালবেদ্বাক্য মন্ত্ৰতঃ ৷৷ ওঁ স্বাগ-ত॰ ভবন্ডি রিতি প্রশ্নঃ। ওঁ সুস্বা-গত মিতি তৈ ৰুক্তে ওঁ বিশ্বেভ্যো **(मट्व**ंड) এতৎ পामामक मर्घा॰ স্বাহা পিতৃভ্যঃ স্বধা ইতি দেব বান্ধণ পাদষো দেবতীর্থেনাভুগ্ন ঙ্গশ জল সমুম দান ।। ততো দক্ষিণামুখস্য বামোপবীতেন অ-মুক সগোত্তেভ্যঃ অম্মৎপিতৃ পিতামহ প্রপিতামহেভ্যো যথা-নাম শৰ্মভ্যঃ সগত্নীকেভ্য এতৎ शामानक गर्याः स्था इंडि शि-ত্রাদি ত্রান্ধণ পাদযোঃ পিতৃতী-র্থেন ভুগ্নঙ্গশ তিল সসুম জলদা-ন । এব মাতামহাদিষু। এতদ

আচননীয় স্বাহা স্বধেতি ত্রা-ন্ধণহন্তে। এব বো অর্যাঃ ইতি बाक्राग्रस्य श्रामानः। এछहः পুলা ইতি ব্ৰাহ্মণহন্তে পুলাদা-नः। उँ त्रिक भिन भागनः हेहा-**সধ মিত্যভিধা**য ওঁভূঃ ওঁভূবঃ **७ यः ७ मरः ७ जनः ७ ० १** ওঁ সত্য পপ্তব্যাহ্বতিভিঃ পূৰ্ব-मूथ प्रविदाक्षर्वाश्राप्तन्तनः। छे-ত্তরাভিমুখাঃ পিতরঃ ওঁদেব-তাভ্যঃ পিতৃভ্যশ্চ মহাযোগিভ্য এব চ। नमः अथादेय आङ्दिय নিত্য মেব নমে। নমঃ।। ইতি <u> बिर्क्क (१९६१) उँ जामान्त्रियम</u>-শে অমুকমাসে অমুকরাশিগতে সবিতরি অমুকস্যাণ তিথো অ-মুক সগোত্রাণা মক্ষৎপিতৃ পি-তামহ প্রপিতামহানা যথানাম শৰ্মণাণ বিশ্বেদেব পূৰ্বকণ আদ্ধ **गर॰ করিষ্যে ওঁবিশ্বেভ্যো দে-**বেভ্য ইদমাসন স্বাহা। ওঁ বিশ্বান্ দেবনাবাহ্যিয়ে ওঁ আ-বাহ্য ইত্যুক্তে ওঁবিশ্বেদেবাস আগত শৃণ্তান ইমণ হবণ এদণ इर्हि निशीम छः। अँ वित्यापिताः শূণুতেন হব ধে মে ছান্তরীকে ম উপদ্যবিষ্ট যে ২গ্নিজিছা উত

वा मज्जा जामगानिम् विनि मानस्थः। ७ ७ वस्यः नमवन्छ সোমেন সহ ব্লাজ্ঞা ঘলৈ কুণো-তি ব্রাহ্মণস্তৃ॰ রাজন্ পার্যামসি । ওঁ আগচ্ছ বহাভাগা বিশ্বে-দেবা মহাবলাঃ। यে यळ विहि-তাঃ প্রাদ্ধে সাবধানা ভবন্ত তে ৷ ওঁ অপহতা সুরা রক্ষাণসি বে-দিসদঃ। ইতি ত্রিভি র্যববিকরণ ৷ ওঁপবিত্র মহণ করিষ্যে ওঁঙ্গ-ৰূষেতি তেনোক্তে সাগ্ৰন্থপত্ৰ-দয় প্রাদেশ প্রমাণ ক্রন্তা ওঁ পবিত্রে স্থো বৈষ্ণব্যৌ অনেন ঙ্গশাস্তরেণ ছিত্বা ওঁ বিফো র্ম্মন-স। পূতে স্থ ইত্যভাূক্য সশান্ত-রেণ ত্রিবৃত ক্বন্বা পাত্রে পবিত্র-निर्विभनः। महा। मिवी त्रजीके-যে আপো ভবন্ত পীত্তমে শংষো রভিসুবম্ব নঃ। ইতি পাত্তে জ-लमानः। ७ यदात्रि यवशात्र-**प्मिट्मा स्वता**तां है **डि यब**-नान ।। ७ गन्न बाता न्ताधर्याः নিত্যপুষ্ঠাণ করীষিণীণ ঈশ্বরীণ সর্বভূতানা হ্বা মিহোপহ্রযে শ্রিষ॰ ইতি গন্ধদান । শ্চ তে লক্ষ্মীশ্চ পত্ন্যা ইতি পুষ্প-मान । **उँ** या मिन्रा व्याशः शब-

সা সংবভূবু বা অন্তরীকা উত भार्थ वीर्या हित्रग्रवर्ग यख्डिया স্তা ন আপঃ শিবাঃ সংশ্যোনাঃ সুহবা ভবম্ব ওঁধুরিলোচন সং-জ্ঞকেভ্যো বিশ্বেভ্যা দেবেভ্য এবে। १८र्या। नगः। ইতি হস্তে **২**ৰ্ঘ্যণ দত্বা অনেনৈব পাত্ৰেণ সণ্-প্লব পবিত্রগ্রহণ প্রথমপাত্রেণ সংপ্লব পবিত্রঞ্গ গৃহীত্বা ত্রাহ্মণ দক্ষিণপার্শ্বে স্পোপরি উর্দ্বুমুখ পাত্তে স্থাপন তদুপরি ক্লশদান । ততঃ ওঁধুরিলোচন সংজ্ঞকে-ভ্যো বিশ্বেভ্যো দেবেভ্য এতানি गन्न भूष्म यूग मीम वारमायूग সোত্তরীয় যজ্ঞোপবীতানি নমঃ । गन्नामिमान मिष्ठ्य मञ्ज मः क्झ मिक्ति तुखा बाक्त गवाहन । ততঃ পিতৃ পিতামহ প্রপিতামহ মাতামহ প্রমাতামহ বৃদ্ধপ্রমাতা-মহানা সপত্নীকানা শ্রাদ্ধ মহং कतिरमा। अनुब्छा शनः। उँ ऋकः ষ্বেতি ব্ৰাহ্মণৈ ৰুক্তে। ওঁ দেবতা-ভাঃ পিতৃভ্যশ্চ মহাযোগিভ্য এব চ ইতি ত্রি র্জপেণ। তত ওঁ অমু-ক সগোত্রাণাণ অস্মৎপিতৃ পি-তামহ প্রপিতামহানা যুথানাম শর্মনাণ সগত্নীকানাণ জাদ্ধণ যু-

খাস্বহ• করিয়ো। ওঁ জরুষ শ্রাদ্ধ-করণানুজ্ঞান । ওঁ অমুক মগো-ত্রেভ্যো অস্মৎ পিতৃ পিতামহ প্র-পিতামহেভ্যো যথানাম শর্ম্মভ্যঃ मुश्रीत्का हेन मामन यश । ব্ৰাহ্মণ বামপার্শ্বে আসন । ওঁ পিতৃনাবাহিষিষ্যে ও আবাহ্যে-ত্যক্তে উশস্তস্তা নিবীনহ্যশন্তঃ সমিধীমহি। উশন্শত জাবহ পিতৃন্ হবিষে অত্তবে ৷ ওঁ আ-ষাম্ভ নঃ পিতরঃ দৌন্যানে। অগ্নি-স্বাক্তাঃ পথিভি দেবিয়ানৈঃ। অ-ব্মিন্ যজ্ঞে স্বধবা মদস্তো হথি-ক্রবন্ত তে ২বন্তুস্মান্। ইত্যাবা-হন। ওঁ অপহতাসুরা রক্ষা িস विभिन्न । जि खिन विकत्न । ওঁ ভিলোসি সোমদৈবত্যো গো-সবে। দেব নির্শ্বিতঃ। প্রত্ননন্তিঃ পূক্তঃ স্বধ্যা পিতৃন্লোকান্ প্রী-ণাহি নঃ স্বাহা। তিলদান । গন্ধ পুষ্ণা হস্তাভ্যাণ দদ্ম পিতৃপাত্র মুত্থাপ্য যাদিব্যেতি পঠিম্বা অনু-ক সগোত্র অস্মৎপিতঃ অমৃক শৰ্শ্মন্ সগত্নীক এষ তে অৰ্ঘ্যঃ স্ব-ধা। এবং পিতামহাদৌ। সপবি-ত্ৰ॰ পাত্ৰ॰ গৃহীদ্বা ত্ৰাহ্মণ বামপা-র্ম্বে দক্ষিণাগ্রঙ্গশোপরি ওঁপিতৃ-

ভাঃ স্থানমসীতি অধোমুখণাত্র স্থাপন । ওঁশুস্বন্তা লোকঃ॥ পিতৃদদনাঃ পিতৃদদন মদি । অধোমুখ পাত্রস্পর্শন । ভতঃ অমুক সগোত্রেভ্যো অক্ষৎপি-তৃ গিতানহ প্রণিতানহেভ্যঃ স পত্নীকেভ্যঃ এতানি গন্ধ পুষ্প ধূপ দীপ বাদোযুগ সোত্তরীয় যজে।-পবীতানি স্বধা ৷ পিতৃতীর্থেন গ-क्षापि ए। नक्षापिए। यक्टि-ড गञ्ज সকল সিদ্ধি রস্তা। বান্ধণ বাচনা। এবা মাতামহাদীনা ম-नुकालनामि कर्य। अँ या मिट्या-তি ভূমি সন্মাৰ্জ্জন । ততো ঘৃতা क नज्ञ॰ गृशीषा पिक्तरिवायवीज॰ পিতৃরাক্ষণ। ওঁ অগ্নো করণ মহ করিষ্যে ওঁঙ্গরুয়েতি তেনোক্তে ওঁ অগ্নৰে কব্যবাহনাৰ স্বাহা। ওঁ দোনায পিতৃমতে স্বাহ। । আহতিদ্বং দেব ব্ৰাহ্মণ হস্তে দত্বা অবশিফীর্দ্ধণ পিণ্ডার্থণ স্থাপ-যিত্ব। অপর মর্দ্ধণ পিত্রাদিপাত্তে মাতামহাদিপাত্রে চ নিঃক্ষিপেৎ । পাত্রে অন্নাদি নিধায স্বশং দত্বা অধোমুখাভ্যাণ পাণিভ্যাণ পাত্রণ গৃহীয়া। ওঁপৃথিবীতে পাত্রণ দ্যোঃ পিধানণ ব্রাহ্মণস্য

মুখে অমৃতে অমৃত জু:হামি স্বা-रा। পাত্রাভিমন্ত্রণ। ইদ বিকু र्विठळ्टम जिथा निम्द्य शमः । সমূচ মস্য পাণ্শুলে বিক্ষো হব্য° রক্ষয়। ইত্যনোপর্য্যধা-मूथ षिजाष्ट्रके नित्तमन । उँ অপহতেতি ত্রি র্যব বিকরণ । ওঁ निरुन्ति गर्ब॰ यमरमधावर्ड्डदि॰ হতাশ্চ সর্বে ২সুর দানবা মযা। রক্ষাণসি যক্ষাঃ সপিশাচ সংঘা হতা মযা যাতৃথানাশ্চ সর্বে॥ ইতি সিদ্ধার্থ বিকরণ । তত ওঁ ধুরিলোচনসংজ্ঞকেভ্যো বিশ্বে-ভ্যো দেবেভ্য এতদন্ধ সমৃত मर्थानीयः मवाक्षनः साहा हेि वाति क्रगारेका तक मकन्ननः। ७ শ্রাদ্ধ নিদ মচ্ছিত্র মস্ত সকল সিদ্ধি রস্তু। ততো বামোপবীতে-ন সব্যঞ্জন সঘৃত মন্ন পিত্রা-নিপাত্তে নিধায তদুপরি ভূমি-সংলগ্ন সশং দদ্ধা ওঁ পৃথিবীতে পাত্ৰণ অভিমন্ত্ৰণ ॥ উত্তানাভ্যাণ পাণিভ্যাণ পাত্ৰ• গৃহীদ্বা ওঁ ইদ• বিষ্ণু রিত্যশোপরি উত্তানাঙ্গুণ নিবেশ্যেৎ ওঁ অপহতা ইঙি তিল বিকরণ । ভূমিপাতিত বা-মজানুঃ। অমুক সংগাতেভ্যো

-শ্বশ্বৎপিত্ পিতামহ প্রপিতাম-হেভ্যো অমুকামুকশশ্বভ্যঃ সপ ত্নীকেভ্য এতদন্ধণ সঘূতণ সপানী-ষ সব্যঞ্জন প্রতিবিদ্ধবজ্জিত श्वरा असमक्षाः। ७ स्टब्हं व হম্ভী রমৃত ঘৃত পষঃ কীলাক | পরিশুত॰ স্বধাস্থ ভর্পথত মে পি-তূন্। দক্ষিণামুখবারিধারাত্যাগঃ 1 ७ जब भिन मिह्य मञ्ज मह-ন্দ্রসিদ্ধি রস্ত । ততঃ সব্যাহ্নতি-क्ष। भाषका विमञ्जीयश यधु-॥ ৰাতা ঋতাযতে মধুক্দরন্তি সিন্ধ-वः गाधीर्भः मट्यायशीः। यध् नकः মুতোযসো মধুমৎ পার্থিব রক্জঃ यथु (मा) तञ्च नः शिका। यथुंगात्मा বনম্পতি মধুমানস্ত সূর্য্যে মাধী भीता जन्म नः। मधू मधू मधू ইতি জগঃ। যথাসুখ বাগ্বতা জুষধ মিতি ক্রয়াৎ। ভুক্তবৎসু मश्रवाशामिकः পিতৃস্তোত্র জ-পেৎ। ওঁ সপ্তব্যাধা দশার্থেরু म्गाः कानक्षत्र गित्रो। ठक-वाकाः मत्रवीत्थ रूपाः मत्रमि যানসে।। তেপি জাতাঃ স্ক্রন্থে--ত্রে বান্ধণা বেদপারগাঃ। প্রস্থি-তা দূরমধান যুষ তেভ্যোবসী-मठ। তত छुरश्चम्। मिक्नाग्राथा

বামোপবীতী। উচ্ছিষ্টাগ্ৰতঃ ওঁ অগ্নিদন্ধাশ্চ যে জীবাঃ যেপ্যদ-भाः क्रां यय। जृत्यो मरखन তৃপ্যন্ত ভৃপ্তা যান্ত পরাণ গতিণ।। ইতি ভূমৌ ঙ্গশোপরি সযৃত মন্ন• জলপ্পুত বিকিরে । ততা দেব বান্ধণ ক্রমেণ জলগণ্ডুষণ দত্বা পূৰ্ববৎ পুনঃ সব্যাহ্নতিকাণ সা-বিত্রী॰ মধুবাতেভিত্যচ॰ মধু ম-ধিতি চ জপ্ত্ব। ওঁ রুচিতণ ভবন্ধি-রিতি দেববান্ধণ প্রশ্নঃ। সুরু-চিত মিতি তেনোক্তে ওঁশেষ মন্ন নপ্যস্তীতি প্রশ্নঃ। ইটেটঃ সহ ভূঙ্কোত তেনোক্তে পিতাদি ব্রান্ধণে বামোপবীতেন ওঁ ভূ-প্তান্থ ইতি প্রশ্নঃ ওঁ তৃপ্তান্ম ই-ত্যুক্তে শেষমন্নেতি প্রশ্নঃ। ওঁ ইফৈঃ সহ ভুঙ্ক্বেতি তেনোক্তে মাতামহাদি ত্রান্ধণে তথৈব প্র-শ্বঃ। ততঃ পিত্রাদি ব্রাহ্মণে পি-**ণ্ডানহ॰ পাত**যিয়ে পাত্যেত্যু-ক্তে। তদুচ্ছিষ্টাগ্রতো ২ভ্যুক্ষণ মণ্ডলঞ্চ চতুক্ষোণ তিল বিকরণ ওঁ অমুক সগোত্র অম্মৎপিতঃ অমুক শৰ্মান্ সপত্নীক এতত্তে পিণ্ডাসন স্বধা ইখণ রেখা মধ্যে পিতামহায প্রপিতামহায চ ।

সব্যাহ্নতিকা॰ গায়ত্রী॰ মধুবাতে-তি ত্রি জঁপন্ অয়৽ সাজ্য৽ পিও৽ ক্লমা স্পোপরি অমুকগোত্রা-স্থংপিতঃ অমুকশর্মন্ সপত্নীক এষ তে পিণ্ডঃ যে চাত্ৰ স্বা মনুষা শ্চ স্ব মনু ভবৈন্ম তে স্বস্তা। এব॰ পিতামহ প্রপিতামহ মাতামহ প্রমাতামহ বৃদ্ধপ্রমাতামহেভাঃ। পিওশেষ বিকিরণ পিওাস্তিকে ৷ ওঁ লেপভুজঃ প্রীযন্তাণ ইতি স্ত-त्र करमयू रखमार्क्कन । अका-লিতেন পিওপাত্রোদকেন অ-মুক' সগোত্র অস্মৎপিতঃ অমুক শর্মন্ সপত্নীক এতত্তে জল মব-নেনিক্ষ ওঁ যে চাত্ৰ দ্বা মনু ষা স্চ দ্ব মনু তম্মৈ তে স্বধেতি পিতৃপি-ওসেচন । পিওপাত্র মধোমুখ *মুদ্রা বন্ধাঞ্জলি ওঁ অত্ত্র পিতরো* यानगक्ष॰ यथाजाग यातृवायश्च यि-**छि जन्धः। जन्धः न्नृकु। वारमन** পরাবৃত্য উদজুখন্চ প্রাণা স্ত্রিঃ সংযম্য। ওঁবসন্তাষ নম স্তুভ্য• ত্রীয়ায চ নমে। নমঃ। বর্ষাভ্য শ্চ শরৎ সংজ্ঞ ঋতৰে চ নমঃ সদা।। হেমন্তায় নম স্কুভ্যাণ নম স্কে শি-শিরায় চ৷ মাস সংবৎসরেভ্যশ্চ निव**रम**रङ्गा नरमा नुसः॥ ७ व-॥

ড্ভা ঋতুভোগ নমঃ পিতৃভোগ . नमः। ইতি জপः। वारमरेनव পরাবৃত্য দক্ষিণাভিমুখঃ অমীম-দন্ত পিতরো ধথাভাগ মাবৃষাধি-ৰত। ইতি জপঃ। বাসঃ শিথি-লীক্ষত্যাঞ্চলি ক্ষত্বা ওঁ নমো বঃ পিতরঃ পিতরো নমো বঃ। ইতি क्र १ । भृशिक्षः शिव्दता मन् । रेि गृर्वीकन । ७ मता वः পিতরো দেখা:। ইতি পিও বী-ক্ষণং। ওঁএতদ্বঃ পিতরো বাসঃ ইত্যুচ্চার্য্য অমুক্ সগোত্র ইত্যা-দিনা এতত্তে বাসঃ ওঁ যে চাত্ৰ ত্বা মনু ষা॰শ্চ দ্ব মনু তব্মৈ তে স্বধা । मगांख्य मृजमानः। वादमन शानिमा উদকপাত্র॰ গৃহীয়া ওঁ উৰ্জ্জণ বহন্তী রমৃতণ ঘৃতণ পৰঃ कीनानः इंगामिना शिर्धाशित পূৰ্স্পাপিত ৰারিধারাত্যাগঃ। পাত্র শেষোদকৈঃ প্রত্যেক পি-खरमठन । शिखवार क्रम शक्का नि দান ৷ পিণ্ডোগরি দশ হস্তঞ্চ দত্বা ওঁ অক্ষমীমদন্ত হব প্রিয়া অধূষত ুঅস্তোষত স্বভানবো विश्रो न विखेश मंजीरश शाबि-ন্দ্র তে হরীতি জপঃ। ইখ॰ মা-তামহাদে बीक्षनाना माञ्चन

সুসুপ্রোকিত মন্ত্রিতি ভূমাভ্যু-ক্ষণ ফুদ্বা। অগাণ মধ্যে স্থিত। দেবা সৰ্ব মপ্সু প্ৰতিষ্ঠিত ৷ বান্ধ-**१**मा करत्र नाखाः भिवा **जा**रमा ভবন্তুন:।। শিবা আপঃ সম্ভিতি श्र् बाद्यभग जनमान । नची র্বসতি পুলেষু লন্ধী র্বসতি পুন্ধরে । बन्दी र्वट्ड मना लाएंडे मौन-নস্য॰ সদাস্তবে॥ সৌমনস্য সস্ত পুষ্পদান । ওঁ অক্ষতঞ্চাস্ত মে পু-শ্যাণ শান্তিঃ পুষ্টি খৃতি শ্চ মে। বদ্যৎ শ্রেষকর লোকে তত্তদস্ত সদা মম ৷৷ ওঁ অক্ষতঞ্গরিউঞ্চা-স্তু যব তণ্ডুল দান । অমুক সগো-ত্রাণা মক্ষৎ পিতৃ পিতামহ প্রপি-ভামহানা সপত্নীকানা দত্ত মি-म यह পानामिक नक्षा यञ्ज देखि পিত্রাদি ব্রাহ্মণহস্তে সভিলজন দান । বজ্যানস্য প্রশ্নে অস্তিতি ব্ৰান্ধণো বদেৎ। এবং মাতামহা-দীনা মক্ষয়ে । আশিষঃ। ওঁ অ-যোরাঃ পিতরঃ সম্ভ পোত্রণ নো বৰ্জতাণ। দাতারোনোভিবৰ্জস্তাণ বেদঃ সম্ভতি রেব চ। শ্রদ্ধা চনো মা ব্যগমন্বহু দেয়ঞ্চ নো ২ন্তি তি ৷৷ অন্নঞ্চ নো বহু ভবেদতিখীণ শ্চ লুভেমহি। যাচিতারশ্চ নঃ

সন্ত যা চ যাচিয়া কঞ্চন।। এতা এবাশিষঃ সম্ভ সৌমনস্য মস্ত সু-মুখ চাম্ভ ইত্যুক্তে পিওপাত্তে व्यर्धा मश्कान् अभान् भविजानि ठाखीया भिजामि जानन प्यास्त्री স্বধাণ ব্যুচ্যিয়ে ওঁৰাচ্যতাণ ওঁ পিতৃ পিভামহ প্রপিতামহ মাতা-মহ প্রমাতামহ বৃদ্ধপ্রমাতামহে-ভ্যো ষথানাম শর্মভঙ্গ সপত্নী-কেভ্যঃ স্বধোচ্যতা অস্ত স্বধা रेकुारक फेर्ब्स वरखी त्रमृठ॰ খৃত ইভি পিঞানা মুপরি বারি-थाता॰ ममा। ७७ ७ वित्येतन-বা অস্মিন্ যজ্ঞে প্রীযন্তাণ দেব बाक्त ग्रहास वर्दनामक मान॰ खँ প্রীযন্তা মিতি তেনোক্তে ওঁছে-বভাভ্য ইতি ত্রি জ্র্কপেৎ। অ-सागूथ निखनावानि চालियना वार्चमा मिक्तिगिरी की भूकी छि-मूथः ७ वमूक मरगाजाम वमू-কশৰ্মণে ভ্ৰাহ্মণায় সপত্নীকাষ শ্রাদ্ধপ্রতিষ্ঠার্থণ দক্ষিণা মিদণ র-জত তুভ্য মহ দদে ইতি দক্ষি-ना॰ मम्गा এव॰ या जायशामी ততো দেববান্ধণায় দক্ষিণাদান । ততঃ পিতৃবাহ্মণে। পিওপাত্র মুক্তান কৃষ্যু ওঁ পিণ্ডাঃ সম্পন্নাঃ

ওঁ সুসম্পন্না ইতি পিণ্ডে ক্ষীরধা-রা॰ দন্ধা পিশুচালন । ওঁ বাজে বাজে বত বাজিনো নো ধনেষ্ বিপ্ৰা অমৃতা ঋতজ্ঞাঃ। অসা स्र পিবত মাদযধ্ব তৃপ্তা বাত পথি ভি र्तिवयारिनः॥ ইভি शिखानि वि-সৰ্জ্জন ৷ ওঁ আ মা বাজ্ব স্ত্ৰাপ্ৰাৰে৷ क्रगमगारमस्य मगाबा शृथिवी विश्व-ৰূপে অনাগন্ত পিতরা নাতরা মু-বৰ্মা মা সোমো হমুভত্বাৰ গম্যাৎ । ইতি দেব বিদৰ্জ্জন । ওঁঅভির-ম্যতা মিত্যুক্তে অভিরতাঃ **স্ম ই**-ত্রাক্ষণৈ রনুজ্ঞাতস্য নিবর্ত্তন ৷ গবাদিষু পিণ্ড প্রতিপাদন মিতি । এষ শ্রাদ্ধবিধিঃ প্রোক্তঃ পঠ-णा॰ भाभनाभनः। **अ**तनन विशि না শ্রাদ্ধঃ ক্তত বৈ যত্র প্রতিৎ । অক্ষয়ত স্যাৎ পিতৃগাঞ্চ স্বৰ্গ প্রাপ্তি প্রবা তথা। ইত্যুক্ত পা-ৰ্ণশ্ৰাদ্ধ পিতৃণা বন্ধলোকদ।।। ইত্যাদ্যে গাৰুডে পাৰ্ণশ্ৰমন্ধ २२२ व्यक्षायः॥क्षा बद्यावातः। নিত্যপ্রাদ্ধ প্রবক্যামি পূর্বতত্ত-षिट्यराय । ওঁ অমুক সগোতা-ণা মস্মৎপিতৃ পিতামছ প্রপিতা-बरान। बयुक नर्मना॰ जशब्वीका-না॰ আদ্ধণ সিদ্ধান্ধেন যুস্মভা ম-

र॰ कतिरमाः जामनापिक महा-माबित्यतनविविक्किंडः ॥ ।।। वृक्तिआक अवकागि शृईवछ-দ্বিশেষক । জাতপুত্রমুখদর্শ-नामि वृक्षिआकः भूबाजियूर्थयू **मक्ति**णां भवी ियु यसु यत वस्तर-भिखाः शिखाः रेपवजीर्थन नम-স্কারান্তেন দক্ষিণোপচারেণ ক-र्खवा । एकिंग्जान् गृशेषा उ अम्यानामीयामूक वृष्की अमूक সগোত্রাণা মক্ষৎ পিতৃ পিতাম্ছ প্রপিতামহ মাতামৃহ প্রমাতামহ বৃদ্ধপ্রমাভামহানা অমুক শর্ম-ণাণ সপত্নীকানাণ নান্দীমুখানাণ শ্রাদ্ধে কর্ত্তব্যে বসু সত্য সক্তকা-**মা॰ বিশ্বেষা॰ দেবানা॰ আদ্ধ**ণ निकाटमन यूगाम् यथा कर्खवाः। ইতি দেব ব্ৰাহ্মণামন্ত্ৰণ ওঁ করি-ষ্যসীতি তেনোক্তে ইশ্বমেব মাতৃ পিতামহী প্রপিতামহীনাণ দেব-বন্ধণামন্ত্ৰণ । তত ওঁ অমুক স-গোত্রায়া মৎপ্রপিতামছা অমূ-की (प्रवा) नामीमूथाः आकृ मिकारबन यूचामू गया कर्खवा মিতি প্রপিতামহী বান্ধণামন্ত্রণ । করিষাদীতি তেনোক্তে ইখ মেব পিতামছী আক্ষণামন্ত্ৰণ थ छङ । अध्यापन । छङ छ पनामूक नृत्यो चन्क मरगाजा-ণা ৰেখাৎ প্ৰাপিতামহ পিতামহ পিতৃণা নান্দীৰুখানা আদ্ধ मिलारम् गूमामू भवा कर्खवा মিতি বান্ধণামন্ত্রণ ওঁ করিষ্যসী-তি তেনোক্তে ইখ মেব বৃদ্ধ প্র-মাতামহাদি বাৰ্কণামন্ত্ৰণ। দেব-পিতৃ সৰ্বদেবত্ৰাহ্মণ আদ্ধ করণা-नुब्हा भनः। जामत्न ७ वित्थरम বাস আগত শৃণুতাম ইম্ হ্ব थम॰ तर्शि निशीम**छ। खँ**वित्य-**एकताः** भृनुरक्षयः इतः स्व स्य १-क्षत्रीत्क य डेश मावि खे त्य अधि জিহ্বা উত্তবা যজত্রা আসদ্যা-न्मिन् वर्शिव गामयश्रः। ७ जागः চ্ছম্ম মহাভাগা বিশ্বেদেবা ইতি विस्थित्ववावाद्न । गन्नामिना-নঞ। অচ্ছিদ্রাবধারণ বাচন । ততঃ প্ৰপিতামহী প্ৰভৃতীনা মন্-জ্ঞাপন আসন গন্ধাদিদান অচ্ছিদ্রাবধারণ । ইখণ প্রপিতা-মহাদীনা অনুজ্ঞাপন । আস-न॰ षावाइन॰ गन्नामिमान॰ । এবং বৃদ্ধপ্রমাতামহাদীনাং অ-নুজ্ঞাপনাদি করণ। ওঁবসু সত্য সম্ভকেভ্যো বিশ্বেভ্যো দেবেভ্য 🎚

এতদর সঘৃত সপানীয় স ব্যঞ্জন॰ সবদর॰ সদধি প্রতিষিদ্ধ বজ্জিত নমঃ। ইতি অলসকলন । ওঁ অমুক সগোত্তে মৎপ্রপিতা-ৰহি অমুকী দেবি নান্দীমুখি এত-**मझ- मतमत्र- ममिध नमः। इथ-**পিতামহী মাতৃবান্ধণে। ততঃ প্রপিতামহাদি বান্ধণপাত্তে ওঁ অমুক সগোত্তেভ্যো 👺 প্রপি-তামহ পিতামহ পিতৃভা এতদ-**स॰ जवनतः जनिध जवाक्षतः ज**-शानीय॰ नमः। **এव॰ वृक्त**श्रमा-जामशामिजाः ॥ 🗱 ॥ একো ষ্ট॰ পুরাবশ্য॰ তদিশেষণ বদে मृन्। প্রথম নিমন্ত্রণ পাদপ্র-কালন আসন। অদ্য অমুক সগোত্রস্য মৎপিতৃ রমুকদেবশ-র্মাণঃ প্রতিসাম্বৎরিক মেকোদ্দি-रहे॰ आकि जिक्कारमन युगानू अ र॰ कतिरया। आक्रकत्वानुख्या-পन । जामन जर्माः। गन्नामि-দান পিতৃস্থাপন ।৷ অল সঙ্গল ন জপ্য নিবীতী উত্তরাভিমুখী-ভূযাতিথিঞাদ্ধ সর্য্যাৎ। তত স্তৃপ্তি জ্ঞাত্বা দক্ষিণাভিমূখো বা-भागवीठी উচ্ছिक मगील य অগ্নিদন্ধা ইতি অন্নবিকিরণ । ওঁ

चम्क मरगांव शिष्ठ तम्करम्य-भनान् अउटल जल यस्तिनिक य ठाज या बन् या अ य बन् ভব্মে তে স্বধা ইভি ক্লেখাপরি मिक्गाम्थवादिशादामानः। देखि भाक्रटफ २२७ व्यथायः ॥ 🛊 ॥ बक्तावाह। मिश्रीकृतक वंदक्त गर्त श्रम ७९ नगार्नि। इस সতপকালে তু প্রেভান্তে পিতৃ-लिकिनः। मिश्वीकद्रवः क्रकार অপরাক্লে তৃপূর্ববং। পিতামহা-দি ত্রাহ্মণ নিমন্ত্রণ । ওঁপুরোম্বব্রো यान्तरः मः खदक्राः। प्रात्जा **এउनामनः नमः। वाममादर्य छ**। সন দান । ততঃ পিতাৰহ প্ৰপি-তামহ বৃদ্ধপ্রপিভামহানা সপ ত্বীকানা প্রাদ্ধ নহ করিব্যে। ইতানুজ্ঞাগ্রহণ । পাত্রজ্ঞাকরণ পাত্ৰোপরি দশ দৰা পাত্ৰান্ত রেণ পিধাষ অচ্ছিদ্রারধারণান্ত পরিসমাপ্য তথৈব পিজু রপি সপ ত্নীকস্য প্ৰেতান্ত নামা আছক রণানুজ্ঞাপন । দেবপাত্রাচ্ছিডা। বধারণ ৷ ভ পরিসমাপ্য পিতা মহ প্রপিতামহ বৃদ্ধপ্রপিতামহ পিতৃ ক্ৰমেণ পাত্ৰাণাং মনাক্ বা-**চন॰ উদ্ঘাটন॰ क्रश्रा दर সমানাঃ**

সৰ্নসং পিতরো বনরাজ্যো ছে-वा॰ लाकः वना नत्मा बर्खा प्तादवर क्बाजा । (व नवानाः ननन्दना जीवाजीत्वयू मामकाः তেষা শ্ৰী মৰি কল্পতা অন্মন্ लादि भेड माः।। बडम्ब-ৰবেন পিতৃপাত্তোদক পিতাম-হ প্ৰপিতামহ ৰৃদ্ধপ্ৰপিতামহ-পাত্ৰে দম্বা বৃদ্ধপ্ৰপিতামহ পা-ত্র- পরিভাজ্য পিতামহ প্রপিতা-**नर्**या क्रमक॰ পবিত্রঞ্চ পিজূ-পাত্তে নিকিপেৎ। ততঃ পিতৃত্রা-क्ष करिख भविद्यमान । भाव भू-স্পেণ শিরসঃ করপাদার্চ্চন• হস্তে ২ন্য জলদান হস্তাভ্যা পাত্ৰ मूर्था १ अँ यामित्वा छि ह भठिषा অমুক সগোত্র মৎপিত রমুক প্ৰেভ এৰ ভে অৰ্ব্যো যে চাত্ৰ স্থা মনু যাত্ৰ মনু তকৈতে স্বধা ৰ্য্যোদক পিতৃতীৰ্খেন দম্বা পিতা-মহবাক্ষণহস্তে পবিত্র দান পাত্র পুলেণ শিরঃ কর পাদার্চন ং হস্তে ২ন্য জলমান । হস্তাভ্যা পাত্র-মুখাপ্য ষাদিব্যেতি পঠিত্বা অমু-ক সগোত্ত মৎপিতামহ অমুক দেৰশৰ্মান্ সপত্নীক এষ তে ংৰ্য্যঃ

স্বধা। পিতৃপাত্তেণৈব পিতানহ जाक्र गर्दा एक मर्दा मकः ज्ञा लिय मृतकः शिखरमहनार्थः পাত্রান্তরে নিধাষ তেনৈব পা-ত্রেণ পিভামহত্রাহ্মণানা হস্ত-স্থ উদক পবিত্ৰঞ্গ সৃহীদ্বা পিতৃ-ব্ৰাহ্মণ বামপাৰ্ষে দক্ষিণাগ্ৰন্থ-শোপরি পিতৃভ্যঃ স্থানমসীতি অধোমুখপাত্র স্থাপন । পিতা-মহানা॰ গন্ধাদিদান অগ্নৌকর-ণ । দেবানা ত্তাবলিফীন্ন গি-ভামহাদিপাত্তে কিপেৎ। পি-তামহাদি পাত্রাভিমন্ত্রণাদি বাচ-ন পর্যান্ত॰ ক্রমেণ সমাপ্য পিতৃ-ব্ৰাহ্মণ পাত্ৰাভিমন্ত্ৰণ অঙ্গুঠ-निद्वमन जिल विकित्र । जि দ্ধান্ন বিকিরণ ক্লন্ধা অনুক সগো-ত্র মৎপিত রমুক প্রেত এতত্তে অন্ন॰ সঘৃত সপানীয় সবাঞ্জন প্ৰতিষিদ্ধ ৰজ্জিত যে চাত্ৰ স্বা মনু ষা॰শ্চ স্ব মনু তল্মৈ তে স্বধা। ততো দেবপ্রভৃতি আপোশান দদ্যাৎ। অতিথৌ প্রাপ্তে অতি-थिखाकः वर्गाः विद्यावनातः। ভতো विकित्रण । शिजामशामी প্ৰশ্নণ ক্লন্থা পিতৃত্ৰান্ধণে ওঁ স্বদিতণ ভবন্ডি রিভি প্রশ্নঃ অমুক সগোত্র

মৎপিতামহ অমুক শর্মান্ সপ-দ্বীক একতে পিডো বে চাত্ৰ দ্বা मन् वा॰ क व मन् उटेन्य ए अशा। ध्व मन्तरकाः। शिक्षान महिज मसा अक्ष मिक्षि तस देखि वी-চন হয় ততঃ শিত্প্রেত্রিও-পাতন ওঁ সমন্বসিদ্ধি রস্তিতি বাচন । ত সমাপ্য পিও ত্রিধা হ্নতা ৰে সমানাঃ সমনসঃ ইতি ৰন্ত্ৰৰ পঠিয়া পিতামহ এপি-তামই বৃদ্ধপ্রপিতামহ পিণ্ডেযু क्लिए । शिए वृ गमामिक পিওচালন । অভিথিত্র। ন্ধে শ্ব-দিত মিত্যাদি প্রশ্নঃ। বান্ধণা-না ৰাচমন ভুক্ত ক্ৰমেণ ভাষুল-দান সুসূপ্রোক্তি মস্ত শিবা আপঃ সম্ভ বৃদ্ধপ্রপিতামহাদি ক্র-নেণ বন্ধণানা হতে জলদান । গোত্ৰসাক্ষা মন্ত পিতৃত্ৰাকণ হস্তে ওঁ উপতিষ্ঠতা মিতি সতিল জলদান নাম গোত্তেণ উপতি-ষ্ঠতা মিতি তেনোক্তে অযোরাঃ পিতরঃ সম্ব সম্ভিতি উক্তে স্বধাণ वाहिष्टिषा इंडि शिडामशामिडा-দ্বানুজ্ঞাপন ওঁ বাচ্যতা মিত্যু-কে পিতামহাদিভ্যঃ স্বধোচ্যতা° ৷ অন্ত স্বধা ইত্যুক্তে পিতৃত্ৰান্ধণে

পিতৃভাঃ স্বধোচ্যতা ইতি অস্ত यश हेजुरक ७ फेक्ट वर्डी রমৃত ইতি দক্ষিণাভিমুখ বারি-ধারাত্যাগঃ। ওঁবিশ্বেদেবাঃ অস্মিন্ ষজ্ঞে প্ৰীৰম্ভা নিতি দেব-ব্ৰাহ্মণহন্তে ৰবোদক দাৰ । ও দেবতাভা ইতি ত্রি কর্নণঃ। পি-ভান্ পাত্ৰে ভোলবিশা আচম্য পিতামহাদিত্যো দক্ষিণা দশ্বা ততঃ পিতৃবান্ধণায় ততো অভি-थिवाक्रगाय ह। आगित्या त्य मी-যন্তা মিত্যাশীঃপ্রার্থন আশিষঃ প্রতিগৃহন্তা ইত্যক্তে দাতারো নোভিবৰ্দ্ধন্তা মিভি পাত্ৰ মুক্তান হয়। বাজে ৰাজে ইতি বিসর্জন। অভিরম্যতা মিতি পি**ভূত্রান্ধণ বি**-সর্জন। সপিত্তীকরণশ্রাদ্ধ ব্যাস প্ৰোক্ত 🚛 তব। প্ৰাদ্ধ বিকৃঃ वाष्ट्रकी कनः वासामिक र রিঃ। ইতি গাব্দুতে ২২৪ অশ্লাবং ॥ 🛊 ॥ जिथानिवित्नत्य आक्रक- 📗 রণ ফল॰ যথা। ব্যাস উবাচ। অপ শ্রাদ্ধ মমাবাস্যা প্রাপ্য কার্ব্য দিজোত্তবৈঃ। প্রিপ্তানাহার্য্যক ভক্ত ভুক্তি মুক্তি ফলপ্রদেশা পি-ভাষাহার্য্যক শ্রাদ্ধ ক্ষীপে রা জনি শস্যতে। অপরাহে বিজা-

जोनां क्षेत्राखिताबित्वं जू ॥ প্রতিপৎ প্রভৃতি ছেতা স্তিপ্রঃ क्रफनकरक। ठजूकनी वर्द्धिश्व প্রশস্তা ভূতরোত্তরা: ॥ অমাবা-मार्केका खिनुः लीव मारापिषु ত্রিষু। তিসু শ্চাম্বক্টকাঃ পুণা। गावमा मन्यी छथा।। ब्रह्मान्यी यवायुका वर्षामु जू वित्मयजः। শস্যপাক আদ্ধকালা নিত্যু প্ৰো का मिटन मिटन ॥ देनियिखिक हि कर्खवाः अश्र्व हस्यमूर्वारयाः ॥ वास्तवांनाक मद्राप नात्रकी मान-थानाथा। कामानि टेठव आक्षानि শস্যন্তি গ্রহণাদিষু।। অযনে বিষু-বে চৈব ব্যতীপাতে প্যনম্ভক । সংক্ৰান্ত্যা মক্ষৰ শ্ৰাদ্ধ তথা জ श्विमित्विशा नक्ष्तियु ह मर्दियू তথা কামে বিশেষতঃ। স্বৰ্গন্ত ল-ভতে হৃত্বা হৃত্তিকাসু দ্বিজেগভ্ৰমঃ ॥ অপত্য মথ রোহিণা। সৌম্যে তু ব্ৰহ্মবৰ্চসে। মুদ্ৰাণাণ কৰ্মণাণ সিদ্ধি মাজাবা॰ শস্য মেব চ ।। পুনৰ্বদৌ তথা ভূমিণ শ্ৰেষণ পুৰো **उदेश्व ह।** म्बान् कामान् छथा সর্পে পৈত্ত্যে সৌভাগ্য স্বেব চ ॥ वर्वास पू धनः विमा । कञ्चनाः शाननाणनः। उडाि टिखेश छेषा

र किवानाः मूरर्न मूणान्।। ৰাশিকাসিকিং স্বাতৌ চ বিশা-बाबाः जूवर्कः। टेयटक बब्नि মিতাৰি রাজ্য শক্তে ভ্রম্থৰ চ ম मृत्व इविः वास्त्रमानः निषि मार्गा छटेषत ह।। गर्वान् कायान् देवश्रदाहरव देशके इ खावरन भूनः ॥ শ্ৰেবিষ্ঠাষাণ তথা কামান্ বাৰূণে ह शतः बनः। चटिक् क्शामटक अ-यामि विदेश गृहह ७७०१ दिन **छा।॰ क्ट्**रवा द्वागा श्रिना।॰ जू-क्रगा॰ खथा।। बादगा ठाजीवन॰ ভঙ্গাৎ যদি শ্রাদ্ধ প্রবচ্ছতি। আদিত্য বারে চারোগ্য চাব্রে मोजागा भव ह।। को एक मर्ब क विक्रय॰ गर्बान कात्रान् बूथमा চ। বিদ্যা মভীফা॰ জীবে ভূ ধন॰ दैव जार्गदव भूनः॥ भटेन भटत व-ভেদাৰুঃ প্ৰতিপৎসু শুভান্ সু-कान्। कनाका॰ देव विकीशाया॰ **ज्जीकाया॰** जूद खथा ॥ शणून् क्षाः कर्यात शक्याः त्नाः जनान् मूणान्। वक्षा मू जि॰ क्र-ষি ঞাপি সপ্তম্যাণ লভতে নরঃ ॥ অফম্যা মপি বাণিজ্যুণ লভভে व्यक्तिः महा। मानवना त्यक भूतः मनगाः विश्वः वह ॥ क

কাদশ্যা স্তথা ৰূপ্যং ত্ৰদ্মবৰ্চস্থি-নঃ সূতান্। ভাদশ্যা জাতক-**गड तकरु॰ दोगा (यव ह ॥** ख्वाजिटेक्षरं बरनामगाः ठजूर्म-माख अथकाः। भक्तमाः गर्न-काम सादशांकि वाक्तनः मना ॥ তন্মাক্ষাক্ষণ নকৰ্ত্তব্য চতুৰ্দশ্যাণ দিকাভিভিঃ। শস্ত্রেণ তু হতা-नाः देव छत्र आक्षः अक्षारम् ॥ দ্ৰব্য বান্ধণসম্পত্তো ন কাল নি-ষমঃ ক্লতঃ। তত্মান্ডোগাপবর্গার্থ• **आक् अर्या ६ विका** विविः ॥ কর্মারত্তেৰু সর্ব্যোদাভ্যুদ-क भूनः। भूजक्यापियु आक्र পাৰ্ণ প্ৰণি শৃত ॥ অহ্নাছ-নি নিত্য স্থাৎ কাষ্য নৈমিত্তি-क॰ ७५।। अरका क्रिकेन विरक्षिय বৃদ্ধি আদিক পাৰ্বণ 🔊 এতৎ প-कविषः आकः मनूना शक्किर्वि-ত ৷ ৰাত্ৰাষা ষষ্ঠ নাখ্যাত তৎ अवरष्ट्रन शानरबर् ॥ अक्ररम म-প্তম প্রাদ্ধ বন্ধণা পরিকীর্তি-**७॰। देनिविकः ठाकेमः आकः** य ৰুত্বা সূচ্যতে ভ্যাৎ ।। সন্ধ্যা রা-ত্যোৰ্ন কৰ্তব্য রাহে। রন্যত্ত দ-र्मनाष्ट्र । तम्मानाक वित्मत्यन छ-ति भूग मन्जमः॥ गयाया मन्यः

खाद्धः अवारग श्यत्रककेटक । গাষন্তি পিতরোগাথাণ কীর্ত্তমন্তি य नीविनः ॥ अकेवा वह्वः भूका यरमारकाणि भयाः बर्ड्स् । य-**ज्ज्ञ वाश्वरमध्यम मीमः वा वृश्व** मूर्ज्या अखेना वहतः भू ত্ৰাঃ শীলৰম্ভো গুণাম্বিভাঃ। তে-याञ्च मगरब्जानाः स्टब्स्यारकाणि शया॰ बद्धि ।। भवा॰ धानान्-यद्य यः लाकः मस्त्रागात्रद्यः। তারিতাঃ পিতর স্তেন স যাতি প-রমাণ গতিও ৷৷ 🟶 ৷৷ বরাহপর্বতে टेठव शकासाक विटमक्डः। वाज्ञा-नमा वित्मदवन यक त्मबः स्वरः र्तः॥ शकाबाद्य अञारम ह वि-ম্বকে নীলপৰ্বতে। সৰুক্ষেত্ৰে চ ञ्कारम् जृञ्जू महानरम् ॥ क्लाद्य कञ्चजीर्थ ह दैनियाब-**गा এব চ। সরস্বত্যা॰ বিশেষেণ श्रुक्त ह वित्मुष्ठः ॥ नर्म्मायाः** ঙ্গণাবর্ত্তে জ্রীশৈলে ভদ্রকর্ণকে। বেত্রবভ্যা॰ বিশাশাখা॰ গোদাব-तायू **डीर्थियू श्रृतित्मयू हु। नमी**-নাঞ্চৈব তীরেষু তুষ্যন্তি পিতরঃ मना ।। ৠ। बीहि छि भह यदेव ऋ। ॰ देमें রম্ভিশুল ফলেন চা শ্যামাকৈশ্চ

ज्था भारक नीवादेतक श्रियम् जिः॥ लाभृटेमन्ड जिटेन सूरिका শ্মাস প্রীণযতে পিতৃন্। আমা-नामाछकानिकृत् मृषीकाक म-माजियान्।। विमातीक अक्रुखा॰-**क आक्रकारल अमागरवर । ला-**জামাধুযুতান্দ্যাৎ শক্তৃন্ শর্ক-त्रश मह।। प्रमाण्हारक अयरङ्ग-न मृक्षारेक करमक्कान्। खो মানৌ মৎস্যমাণ্দেন ত্রীন্মাসান্ স্বারিণেন তু।। ঔরভ্রেণাথ চতুরঃ नाक्रतन जु शक् ह। वशावान् ছাগমাণ্সেন পার্মতেনাথ সপ্ত বৈ ৷৷ অফ্টাবেণস্য মাণ্সেন রৌরবেণ नदेवव जू। দশমাসা ञ्च ज्ञाञ्जि बताइ महिसामिटेयः ॥ माम कृ-শৈব তু। সংবৎসরম্ভ গব্যেন প্ৰসাপায়সেন বা ৷৷ বাধী্ৰাস-স্য মাণ্দেন তৃপ্তি দ্বাদশবাৰ্ষিকী ৷ কালশাক মহাশক্ত খল্লি-त्नान्याभिषः यथु॥ ज्यानन्यादेष-क् कन्नाटख यूनानानि ह गर्नभः। ক্ৰীয়া লক্ষা সময়াথ মৃতানাহত্য देव बिकः। मना ं वास्त्र अय-ত্নেন তদস্যাক্ষ মুচ্যতে ॥ 🟶 ॥ পিপ্ললি শিগুকঞ্বৈ তথা চৈব

यगृतकः। त्रवाशामात् वाङ्गाकान्। ভূতৃণ সুরস তথা। জসুত্ত পি-अमृनः देव उष्ट्रनीयक त्यव ह। व्राजनाया॰ खथा कीत॰ माहिरक বিবৰ্জ্ঞৰেৎ ৷৷ কোডবান্ কোবি-**माता॰ म्ह भावकी॰ मित्रह॰ ७**था। বৰ্জ্জবৈৎ সৰ্বযত্ত্বেন প্ৰাদ্ধস্থানে দিকোত্তমঃ।। ইতি কৌর্ম্মে উপ-রিভাগে ১৯ অধ্যায়ঃ।।ঞ্চা। ব্যাস উবাচ। স্নাস্বা যথোক্তণ সণ্তর্প্য পিতৃন্ চন্দ্ৰকষে দিজঃ। পিঞা-স্বাহার্য্যক প্রাদ্ধ সর্ব্যাৎ সৌग্য-মনাঃ শুচিঃ।। পূর্ব মেব পরীক্ষেত ব্রাহ্মণ বেদপারগণ। তীর্থণ তন্ধ-ব্য ক্যানা প্রদানে বাভিথিঃ স্মৃতঃ ।। যে সোমপা বিরজসে। ধর্মজ্ঞাঃ শান্তচেতসঃ। ব্রভিনো নিষমস্থাশ্চ ঋতুকালাভিগামি-नः ॥ शकांत्रि त्रश्रीयात्ना य-कुर्वमितितन ह। भूवस्क् ह जिय-वन खिनश् वीथ या ভবে ॥ बि-পাচিকেত শ্ছন্দোগো জ্যেষ্ঠসাম-গ এব চা অথর্বশিরসো ২ধ্যেতা ৰুজাধ্যাখী বিশেষতঃ ।। অগ্নিছো-ज्यादा विषान् नगरविक यज्य-वि९। मञ्ज बाक्ष विदेक्ठव मन्ह স্যাদ্ধপাঠকঃ।। ঋষিত্রতী ঋ-

विकम्ह छथा बानगवार्षिकः। ब-कारमयार्थमञ्जात्मा गर्ज्ञञ्जः म-হ্সুদং ৷৷ চান্দ্রাযণ্রতচরঃ সত্য-वामी भूतानविष्। शुक्र प्रवाशि পূজাসু প্রসক্তো জ্ঞানতৎপরঃ।। বিশুক্তঃ সৰ্বতো ধীরো ত্রন্নভূতো মহাদেবার্চনর-ৰিজোতনঃ। তো বৈষ্ণবঃ शःकिशावनः॥ অহিৎসানিরতো নিত্য নপ্রক্রি গ্রাহক স্তথা। সত্রিণো দাননি-রতা বিজেয়াঃ পংক্তিপাববনাঃ ।। মাজা পিত্রো হিঁতে যুক্তঃ প্রা-ज्ञामी **ह** वा दिकः। अशाचा-विग्रुनि कीट्डा विट्डायः १ छि-भावनः ॥ ज्ञाननित्श्रे। महारयांशी বেদান্তার্থবিচিন্তকঃ। শ্রাদ্ধনিরতো ব্রাহ্মণঃ পাবনঃ ৷৷ বেদবিদ্যাব্ৰতন্মাতো ব্রহ্মচর্য্যাপরঃ সদা। আথর্বণো মুমুক্শ্চ বান্ধণঃ পণক্তিপাবনঃ ৷৷ অসমানপ্রবরকো হুসগোত্র স্ত-থৈব চ। অসম্বন্ধী চ বিজ্ঞেষাঃ ব্রাহ্মণাঃ গণক্তিপাবনাঃ ৷৷ ভো-करयराम्भागिन॰ পূर्व॰ তত্ত্বজ্ঞान-त्रिं यिं । जनार देनिष्ठिकः माछ गुणवर्दानकः छथा।। एमला-ভে গৃহস্থ বা মুমুক্ষুণ সঙ্গবজ্ঞিত

। সৰ্বালাভে সাধক বা গৃহস্থ মপি ভোজযেৎ।। প্রক্তে র্গণ-ভব্জে। यमाञ्चाि ये वर्षिः। कल॰ (वपविषा॰ তमा महमु। पिछ-রিচ্যতে ৷৷ তত্মাৎ ষত্মেন যোগী-ख गीश्रत्रखानज्दशतः। या জযেদ্ধব্য কব্যেষু স্বলাভে স্বিত-तान् विजान्॥ अव देव अथयः कन्नः अनात्न इवा कवात्याः । অনুকল্প স্তৃয় জ্বেষঃ সদা সন্তি রনুষ্ঠিতঃ ৷৷ ৠ৷৷ মাতামহ৽ মাতুল-क बर्मीयः यश्यतः श्वकः। (मोहिः विष्णिणि वस्नु मृषिण् यारकाो **চ ভৌজ্यि ॥ क्षा न ला**क्ति ভোজযেমিত্র॰ ধনৈঃ কার্য্যে। १-मा म॰ श्रद्धः। देशमाठी मिक्किना मा হি নৈবামূত্র ফলপ্রদা।। কাম॰ শ্রান্ধে হর্চযেমিত্রণ নাভিন্নপ ম-পি দ্বরিণ। দ্বিষতা হি হবি ভূক্তিণ ভবতি প্রেত্য নিষ্ফল ৷৷ বান্ধণ স্তুনধীযান স্তৃগান্নি রিব শাম্যতি। তল্মৈ হ্ব্যাণন দাতব্যাণন চ ভক্ষ-নি ছ্যতে ।। যথৌষরে বীজ মুপ্তা न वश्वा मछा कमा । छथान्त হবিৰ্দ্দত্বা ন দাতা লভতে ফলং॥ যাবতো গ্ৰসতে পিণ্ডান্ হব্য ক-ব্যেশ্বমন্ত্রবিৎ। তাবতো গ্রসতে

প্রেতা দীপ্তান্ শূলক্যাযোগুড়ান্ ॥ अभि विमा। इटेन मूका शैन-বৃত্তা নরাধমাঃ। যত্রৈতে ভুঞ্জতে र्वाः जल्दवमामूतः विकाः॥ यमा পূরুষ ৷ এষ স্বান্ধণো নার্হঃ आकामियू कमाठन ॥ भृज्ञत्थ-ষ্যো ভূতো রাজ্ঞা বৃষল আম্যা-জকঃ। বধ বঙ্গোপজীবী চ ষডে-তে बक्षवक्षवः ॥ मखाबारगारगा বৃত্ত্যর্থ॰ পতিতামনু রববীৎ। বেদবিক্রযিণো ছেতে প্রাদ্ধাদিযু বিগর্হিতাঃ।। শ্রুতিবিক্রযিণো যে जू পরপূর্বাসমুদ্ভবাঃ । অধমান্ যে যাজযন্তি গতিতা স্তে প্রকী-ৰ্ত্তিতাঃ।। অসংস্কৃতাখ্যাপকা ষে ज्ञार्थं २४गाश्वसि रव। ज्यी-ষতে তথা বেদান্ পতিতা স্তে প্রকীর্ত্তিতাঃ।। বৃদ্ধ প্রাবক নির্গ্র-ष्टाः शक्षताि विदिला जनाः। का-পালিকাঃ পাশুপতাঃ পাৰ্য্ডা যে চ তদিধাঃ।। यमाग्राश्वास्त्र श्वी॰रया-তে দুরাত্মানস্ত তামসাঃ। ন তস্য তম্ভবেচ্ছাদ্ধ প্ৰেত্য চেহ কল-প্রদেণ।। जनाश्रमी या षिकः मान लाखभी वा नित्रर्थकः। मिथा अ-মী চ যে বিপ্রা বিজ্ঞেষাঃ পণক্তি-

ष्वकाः॥ मृन्ध्या क्रमशी वृत्री वि की ह गामित्रकः। विषयक्रम नटेन्छव रचनः क्रीरमः १ भ मास्ति कः॥ यमारभा क्वलीमुक्त वी-त्रश मिरियुगिष्ठिः। वागात्रमाही मधानी मामिरकियित। विकाः ৷৷ পরিবেতা তথা হিন্দাঃ পরি-বিত্তি নিরাক্ষতিঃ। পৌনর্ভবঃ স্ব-भौमी ह ज्या नक्क मर्भकः॥ भी-ভবাদিত্রনিরতো ব্যাধিতঃ কাণ এব চ। হীনাঙ্গ শ্চাতিরিক্তাঞ্চো श्वकी भी उदेश्व ह ॥ कन्गामृशी সও গোলো ছভিশক্তো ২থ দে-বলঃ। মিত্রক্ পিশুন শৈচব নি-ত্য ভাষ্যানুবৰ্ত্তকঃ॥ মাতা পি-ত্রো র্ডরো স্ত্যাগী দারত্যাগী ত-থৈব চ। গোত্রভিদ্রুফশৌচশ্চ কাণ্ডপৃষ্ঠ স্তথৈৰ চা৷ অনপত্যঃ कृष्टेमाक्की याहरका तक्र जीवनः। मगूजरायी क्रवश वथा मगय-ভেদকः॥ বেদনিন্দাপরকৈব প-রদাররতা স্থথা। দিজনিন্দারতা-देण्ठव वर्জाः आकानि कर्मम् ॥ ক্লতম্বঃ পিশুনঃ ক্রুরো নাস্তিকো विमनिक्षकः। निव्धक् अहक रेम्ठव वित्मयां ९१ कि मृषकाः ॥ সর্বে পুন রভোজ্যামা স্তুদানার্হা

ह কৰ্মসু। বাদ্ভাৰানিরস্তাণ্ড बाद नीमाः अवर्ष्वणः ॥ मुखान-ब्रम्युक्टोकः महस्राशामन विक्रं-किः। यहान्छिविशीयक वाननः भिक्षित्वकः।। अक्षीक्रनायन्तिन्त ব সান হোম বিবৰ্জভঃ। তামসো ताजनटेक बाक्षनः भः जिन्य-कः॥ बद्याज कियू एकन विश्-তান্ধৈ ন সৰ্বতে। নিন্দিতানা-চরস্ভোব বর্জনীষাঃ প্রযন্ত্রতঃ।। ইতি কৌর্মে উপরিভাগে ২০ অ-शांचः ॥ • ॥ शांचरयरनामदेक ভূ মি শোধ্যিত্ব। সমাহিতঃ। স-মিপাত্য দিজান্ সর্বান্ সাধুভিঃ সন্মিসন্ত্রবেৎ।। শ্বো ভবিষ্যতি মে শ্ৰাক্ষ পূৰ্বেদ্য রভিপূজ্য চ। অসম্ভবে পরেদ্যু বা যথোক্তলক্ষ-ৰৈ যুঁতান্।। তদ্য তে পিতরঃ ঞ-দ্বা প্রাদ্ধকাল মুপস্থিত। অ-ন্যোন্যন্দ্ৰশা ধ্যাত্বা সম্পত্তি यत्नाष्ट्रवाः॥ बाष्ट्रदेश एउ महा-শ্বন্তি পিতরে। হস্তরীক্ষগাঃ। বা-যুভূতাক তিষ্ঠস্তি ভুক্তা যান্তি পরা॰ গতি॰।। আমন্ত্রিতাশ্চ তে विथाः आक्रकान উপन्दिल । ৰসেষু নিষ্তাঃ সৰ্বে ব্ৰহ্মচৰ্য্যপ-রায়ণাঃ ৷৷ অক্রোধনো ২ছরো

২মন্তঃ সত্যবাদী সমাহিতঃ ৷ ভা-त्र॰ टेमथून मश्रान॰ आ क्रक्रक्टर्य-ব্দুপ॰।। আমন্ত্ৰিতো বান্ধণে যে। **१ ना॰ देव अक्टल क्रन॰। म बा**लि ব্লোরব ঘোর শূকরত্ব প্রযাতি চ।। আমন্ত্রবিদ্বা বো মোহাদপর॰ মন্ত্ৰযেৎ দিজে। স তত্মাদধিকঃ পাপী বিষ্ঠাকীটো হভিজাষতে॥ आएक निमिष्ठा विट्या देश्यु ন॰ যো ২ধিগচ্ছতি। ব্ৰহ্মহত্যা ন-বাপ্নোতি তির্য্যঞ্চোনৌ স গচ্ছতি ।। ঞাদ্ধণ রন্ধা তু ভুক্তা চ যো-২ধান॰ প্রতিপদ্যতে । ভবস্তি পিতর স্তুস্য তন্মা**সং পাণশুভো**-জনাঃ ৷৷ নিমন্ত্রিতস্ত যঃ শ্রাদ্ধে প্রস্ব্যাৎ কলহু ছিজঃ। ভবস্তি তস্য তন্মাস• পিতরো মলভো-জনাঃ ৷৷ তস্মান্নিমন্ত্রিতঃ শ্রাদে নিযতাত্মা ভবেৎ দ্বিজঃ ৷ অক্রো-ধনঃ শৌচপরঃ কর্ত্তা চৈব জিতে-ক্ৰিয়ঃ।। শ্বোভূতে দক্ষিশাণ গন্ধ। षिশ॰ पर्छान् ग्याहि**छः।** সমূল।-नाश्द्रवाणि मिक्नगाञान् मूनि-র্মলান্ ৷৷ দফিণাপ্লবন স্বিশ্বং বিবিক্তণ শুভলক্ষণণা শুচিণ দে-শং বিবিক্তঞ্চ গোম্বেনোপলে প-ষেৎ।। নদীতীরেষু তীর্থেষু স্বভূ-

त्यो हैठवं मानुष्। विविद्कुक् ह তুবান্তি দত্তে চ পিতরঃ সদা ॥ পারক্যে ভূমিভাগে ভূ পিতৃণাণ নৈব নিৰ্বপেৎ। স্বামিভি স্তিছ-ন্যেত মোহাৎ যৎ ক্রিয়তে নরৈঃ ৷৷ অটব্যঃ পর্বতাঃ পুন্যা স্তীর্থা-ন্যাৰতনানি চ। সৰ্বাণ্যস্বামিকা-नगाए न हि उष् शतिश्रहः॥ छि-লানবকিরেত্তত্ত্র সর্বতো বন্ধষেদ-জান্। অসুরোগহত সর্ব তি-লৈঃ শুদ্ধাত্যজেন বা॥ তভো ২য়৽ বহুস কার নৈকব্যঞ্জন ম-চ্যুত । চোষ্য পেয সমৃদ্ধঞ্চ যথা-শক্ত্যা প্রকল্পযেও।। ততো নি-বৃত্তে মধ্যাহ্নে ন্যুপ্ত লোম ন্থান্ দিজান্। অভিগম্য যথামার্গ প্র-**বচ্ছেদ্দন্তধাবন•।। তৈল মভ্যঞ্জ-**न न्नान न्नानीयक श्थिधर। **পा**टें त्रोष्ट्रश्रेतः स्र्या ६ देवश्व-দৈবত্যপূৰ্বক ।। ততঃ ছাত্বা বিবৃ-ত্তেভাঃ প্রত্যুত্থাষ ক্রতাঞ্চলিঃ। शाना गाठमनीयक म**्थ**यटक्ल्प-থাক্রমণ।। পুস্তকান্তরে বিবৃত্তে-ভাষানে নিমিত্তেভা ইতি নিবৃ-ত্তেভ্য ইতিচ পাঠঃ॥ যে চাত্র विश्वामियाना॰ विकाः शूर्व॰ निय-দ্রিতাঃ। প্রাত্মখান্যাসনান্যেষা॰

बिमद्धार्थिश्लानि ।। मिक्निनाम्-থযুক্তানি পিতৃণা বাসনানি চ। मिक्नारेथकमर्जानि প্রाक्तिशानि **जिल्लामरेकः ।। एज्यू भरव भरवारम**-তানাসন সম্পূশন্ দ্বিজঃ। আ-সধ মিতি সংজন্মাসীরং স্তে শৃ-थक् शृथक्।। क्षी देनदव आजूरथी পিত্রে ত্রয় শ্চোদগুখা স্থপা। এ-কৈক বা ভবেত্তন্ত্ৰ দেৰ মাতা-**बट्यिशा जब्**किया एएग का-লৌ চ লোচ বাহ্মণসম্পদ। পঞ্চৈতান্ বিস্তরো হস্তি ভস্মান্ধে-হেত বিস্তরণ।। অপি বা যোজ-(यराकः बाक्षनः विकासकाः। শ্রুতশীলাদিসস্পন্ন মলকণবি-ৰজিঁত ।। উদ্ধৃত্য পাত্ৰে চাম॰ তৎ সৰ্বস্মাৎ প্ৰাক্কতাৎ পুনঃ। **(** जिंच किर्म किरम किर्म किरम किर्म किरम किर्म धवर्खस्य ॥ धारमामस्यो छन-মন্ত দদ্যাদ্য। ত্রন্ধচারিশে। তত্মা-দেক মপি শ্রেষ্ঠ বিদ্বাণ্স ভোজ-বেৎ বিজ া৷ ভিকুকো ব্রহ্মচারী বা ভোজনার্থ মুপস্থিতঃ। উপ-বিষ্টেষু ষঃ আছে কামণ ভমপি ভোজ্বেৎ।। অতিথি র্যস্য না-শ্বাতি ন তৎ শ্রাদ্ধণ প্রশস্যতে। ভশ্বাৎ প্রযন্ত্রাৎ আদ্বেরু পূজ্যা

एिथरमा बिटिंजः ॥ व्याणिया त्र-হিতপ্ৰান্ধে ভূঞ্গতে যে বিজাতয়ঃ । काकरगानि बक्खारा मान रिव न मण्याः ॥ श्रीनात्रः भ-विवः अष्ठी वनी भूक्त मास्टिको । अक्रुवाः मृकताः श्वारना वर्जाः आत्क्षम् मृतंष्टः।। वीज्यम मरा-চি॰ নগ্ন॰ মত্ত॰ ধুর্ত্ত॰ রজকলা। **ৰীলকাষাষ্বসন॰ পাৰ্ভা॰** চ বি-বৰ্জ্জ ষেৎ।। যতত্ত্ব ক্ৰিয়তে কৰ্ম বৈপত্ক ভাষাণান্ প্রতি। তৎ-मई स्मर कर्छवाः देवश्रदेमवक शूई-कः॥ यरथानिकीन् नर्वाःखान-काञ्चर्याषिज्यदेवः। जुननायजिः শিরোবেঁটি ধূপবাসোনুলেপনৈঃ ॥ তত खुावाश्रयस्मवान् बाक्रना-ना मनुख्यमा। छेन श्रुटशा स्थानगा-यः विश्वासवाम हेन्।। (५ %-বিত্ত্বেগৃহীয়া চ ভাজনে ক্ষালিতে भूबः। नषातिया जनः किथा यदानीिक यदा॰ खथा॥ या दिवा इंडि मखन इरख वर्षा निर्वन-ख्रः। अनमानाक्ष्यानानि धृ-পাদীনি চশক্তিতঃ ৷৷ অপসব্যং ততঃ কৃত্বা পিতৃ্ণা॰ দক্ষিণামুখঃ। আবাহন ততঃ স্ব্যাৎউশস্তব্ধে-ত্যচা বুধঃ। আবাহ্ তদন্তা-

তো জগেদায়ার ন স্বতঃ। শরো-দেৰ্যোদক পাত্ৰে ভিলোসীভি **जिला** खथा ॥ किथा ठार्या वथा-পূৰ্ব॰ দন্ধ। হস্তেষু বৈ পুনঃ। স॰-সুবাণ্শ্চ ততঃ সৰ্বান্ পাত্ৰে স্ব-য্যাৎ সমাহিতঃ।। পিতৃভ্যঃ স্থান মেতেন ন্যক্ত পাত্ৰ নিধাৰ তু। অগ্নো করিব্যেত্যাদায় পৃচ্চতান্ন॰ ঘৃতপ্লুত।। সরুষেতি স্নুজ্ঞাতে। जूष्वामू भवी ठव । बख्डा भवी-তিনা হোমঃ কর্ত্তব্যঃ ঙ্গশপাণি-ना ॥ প্রাচীনাবীতিনা পিত্রাণ देवश्रापवञ्च दश्यायः । प्रक्रिनः পাত্যেজ্জানু দেবান্ পরিচ-त्रन् मना ॥ পिত्रूना॰ পরিচর্য্যাসু পাত্रयिनिতর তথা। সোমাষ বৈ পিতৃমতে স্বধা নম ইতি ক্রব-ন্।। অগ্নবে কব্যবা হনাৰ স্বধেতি জুহ্যাত্তঃ। অগ্যভাবে তু বি-थमा भागादवदवाभभाषद्य ॥ महादाविष्ठित्क वाथ लाद्धे वा সুসমাহিতঃ। তত ত্তৈ রত্যনুজ্ঞা-তো গত্বা বৈ मिक्कना॰ मिन्न॰ ॥ शागरयताशिलशाबीं स्रानः রুদ্বা তৃ সৈকত ।। মণ্ডল চতুর-मु॰ वा मिक्किगायने ७ ७७०। वि क्रिष्डिमा यथा॰ मर्द्ध देशदक्त

टेव्य हि॥ छछः मः खीर्या छ । त मुद्धारिय प्रक्रिगाथकान्। जीन् পিণ্ডান্ নিৰ্পেত্তত্ত্ত হবিঃশেষান্ সমাহিতঃ।। ন্যুপ্য পিগুাত্ত্ব ত-দ্বন্ত নিশ্বজ্যালেপভাগিনা । তেষু দর্ভেম্বপাচম্য ত্রি রাষম্য শ-टेन द्रमृत्।। वष्णशृष्ट्रममक्र्या। পিতুনেব চ ৰম্ভবং। উদক নি-नरयटक्यः भटेनः शिक्षांखिरक পুনঃ।। অবজিয়েত তান্ পিগুান্ यथाज्यान् ममाहिजः। अथ পিণ্ডাবশিফান্ন বিধিনা ভোজ-(यिष्क्रिकान्।। यांश्मान् शृथांश्म विविधान् ममा १ क्रमत भाषमः १ मूल माक कलानीकृन् नरवा पि ष्ठ॰ मधू।। जन्नदेशन यथाकाम॰ विविशः ७का शिषकः। यमुक्ति-ষ্ট॰ দ্বিজেন্দ্রাণাণ তত্ত্বৎ সর্বণ নি-क्लिरबर्।। शान्ताः खिलाः क वि-विधान् भक्ता विविधा खथा । উক্তমন্ন দ্বিজাতিভ্যো দাতব্য শ্ৰেষ ইচ্ছতা।। অন্যত্ৰ ফলসূলে-ভ্যঃ পানকেভ্য স্তথৈব চ। না-জাণি পাত্যেজ্জাতু ন সপোয়া-नृङ वरम् ।। न शासन ग्शृर्भम-म् न टें एक नियम्न स्था कि दिन टेठव यक्क वक्क वक्ष भूनः

।। যাতুধানা বিলুস্পস্তি জন্মত। চোপপাদিত । স্বিল্লগাত্রো ন-তিষ্ঠেত সমিধৌ চ দ্বিজম্বনা ।। ন চাত্র শ্যেন কাকাদীন্ পক্ষিণঃ **अिंटियंश्रायः। न मम्रा**ख्व श्रस्थ ন প্রত্যক্ষলবণ তথা ৷৷ ন চাযসে-न পাত्तिन न टेठवा अक्षरा भूनः। কাঞ্বনেন তু পাত্রেণ রাজতৌতু-ষ্বরেণ চ।। দত্ত মক্ষষতা॰ বাতি খান্দোন চ বিশেষতঃ ৷৷ পাত্তে তু সৃন্মৰে বো বৈ প্ৰাক্ষে ভোজৰতে পিতৃন্।। স যাতি নরক ঘোর ভোক্তা চৈব পুরোধসা। ন প॰-ख्ना विषय मना व वाटन ह माभटबर ।। याहिका माभिका मा-छा मत्रकान् वास्त्रि माक्रवान् । खू-জীত বাগ্বতাঃ পৃষ্টা ন ক্রমু প্রা-ক্লতান্ গুণান্।। তাবদ্ধি পিত-রো ংশান্তি বাবনোক্তা হবির্গু-ণাঃ। নাগ্রাসনোপবিফস্ত ভূঞী-ত প্রথমণ দিজঃ ৷৷ বহুনাণ প-শ্যতা॰ সো ২জ্ঞঃ পণ্ক্র্যা হরতি कि विवरः। न कि शिष कर्क रमष्ट्रा-क्ति नियुक्ख विक्षांखगः॥ न মাণ্সণ প্রতিষ্ঠেতে নবান্যস্যা-ন্ধনীক্ষযেৎ। যো নাশ্বাতি দিজে। মাণ্সণ নিষ্ক্রঃ পিতৃক্র্মণি।। স-

প্ৰেত্য পশুতা॰ যাতি সম্ভবানেক-वि॰मिंछि॰। स्वाध्याय॰ व्यावत्यतन-ষা ধর্মশাস্ত্রাণি চৈব ছি।। ইতি-হাস পুরাণানি শ্রান্ধকলা শ্চ শোভনান্। ততোয়মুৎসৃজে-**ভুক্তেম্বগ্রে বিকিরন্ ভুবি ॥** শ্ৰুষ্টা স্বদিত মিত্যেব তৃপ্তানা-চামবেততঃ। আচাস্তাননুজা-নীযাদভিতো রম্যতা মিতি।। স্ব-ধান্তিতি চ ত জাযু জান্দণা স্তদ-নম্ভব্ন। ততো ভুক্তবভা তেবা मन्द्रणयः निद्रबद्धः।। यथा अम् স্তথা স্ব্যাদন্জ্ঞাতো ছিজোত-মৈঃ। পিত্রো স্বদিত মিত্যেব॰ বাচ্য গোন্তেরু সূক্রত ।। সম্পন্ন মিত্যভাূদৰে দৈবে ৰুচিত মিতা-**थि। विमृ**का बाक्तगा॰ छान् देव পিতৃ পূৰ্বস্ত বায়তঃ।। দক্ষিণাণ দিশ माकाष्क्रन् साटाटकमान् वतान् পিতুন্। দাতারো নো বিবৰ্দ্ধস্তাণ বেদঃ সম্ভতিরেব চা৷ শ্রন্ধা চনো মা ব্যগমদ্বহু দেয়ঞ্চ নো ২স্তি তি । পিণ্ডাণ্স্ত গো ২জ বিপ্রেভ্যো **प्रमाप्ति ज**ल्लि वा । । यश्य अ ততঃ পিও মদ্যাৎ পত্নী সূতা-र्थिनी। প্ৰকাল্য হস্তাৰাচ্য্য জ্ঞাতীন্ শেষেণ ভোজ্ঞ্যেৎ ৷৷

জ্ঞাতিয়পি চ ভুক্তেষু স্বান্ ভৃত্যা-ন্ ভোজ্যেত্তঃ। পশ্চাৎ স্বয়ঞ্চ পত্নীভিঃ শেষ নমণ সমাহরেও।। নোদাসবেত্তদ্চ্চিষ্ট॰ যাবন্ধস্ত॰ গতে। রবিঃ। ব্রহ্মচারী ভবেতান্ত জম্পতী রজনীয় তা া৷ দলা শ্ৰাদ্ধ' তথা ভুক্তা সেবতে যস্ত टेमथून । यहादतीवन मानामा कीर्हेरियानि॰ बद्धाः नाम ।। শুচি রক্রোধনঃ শক্তি সঞ্জাবা मी मनाहिजः। योगायक छवा-ধান কৰ্ত্তা ভোক্তা চ বৰ্জ্জমেৎ ॥ आकि क्षा श्रमीति जुक्षात य विकाजयः। यहाशावकिन्छिः खना। गांखि ए नत्रकान् वर्ना। এষ বো খভিছিতঃ সমাক্ আন্ধ-कब्रः मनाजनः॥ जात्नन वर्द्धरय-भिठा गुनामीटना १थ उद्धि । অনগ্নি রধ্বেগা বাপি তবৈথব ব্য-সনাম্বিতঃ ৷৷ আমশ্রাদ্ধ দ্বিজঃ त्रवाद वृषकञ्च मटेमव हि। जा-म आक्षा अमा अया। दिविखः आ-দ্ববান্বিতঃ॥ তেনাগ্নৌকরণ স্ব-ৰ্যাৎ পিণ্ডা স্তেনৈৰ নিৰ্ৰপেৎ । यात्नन विधिना आफ्रः अर्वा ९ সংযতমানসঃ।৷ ব্যপেতকক্ষধো নিজ্য যতীনা বর্ত্তে পদ।

তন্মাৎ সৰ্বপ্ৰযত্নেন আদ্ধণ স্থ-র্য্যাৎ দ্বিজোত্তমঃ।। আরাধিতো ভবেদীশ স্তেন সমাক্ সনাত-नः। जिनि मृन करेन दीनि अन-र्विद्यर्थता विकः॥ जिल्लामरेक उर्भरयदा शिवृन् न्नाचा ममाहि-ण्डः। न **की**वंश्रीष्ट्रका ममा-(कामान्ड॰ वा विशीयत्व।। (यवा॰ वा शि शिष्टा ममाद्विमादेशद्व था-চৰুতে। পিতা পিতামহলৈচৰ **उदेवत अ**शि**छायहः॥** त्या युगु ম্বিতে তলৈ দেষ নামাস্য তে-ন তু। ভোজযেৰাগি জীবন্ত যথাকামন্ত্ৰ ভক্তিতঃ।। ন জীবস্ত ৰতিক্ৰম্য দদাতি শ্ৰুষতে শ্ৰুতিঃ। चाम्यायनिका ममाबीजि कि ত্ৰি কষোঃ সমণ।। ঋক্থাদৰ্দ্ধণ সমা-ममा निर्यारगा शामिरा य-দি। অনিযুক্তাৎ সূতো বস্তু শুল্ক-তো জাযতে विकः॥ श्रामावी-জিনে পিণ্ড•ক্ষেত্রিণে তু ততোন্য-থা। ছৌ পিণ্ডো নিৰ্বপেত্ৰাভ্যা॰ क्लिवित वीक्रित उथा।। कीर्छ-যেদথ চৈকস্মিন্ ৰীজিন ক্ষেত্ৰি-णण्डा म्लाइनि ज् कर्ल्या **प्रिकाक्षिके विधानकः ॥ जल्मी** চে স্বে পরিকীণে কাম্য তৈ কাম-

७ ७७:। भूबाद्य देवर कर्डवा॰ खाक मञ्जूषमार्थिना ॥ एमवव ९-সৰ্ব মেব স্যান্ন বৈ কাৰ্য্যা ভিল-किया। पर्वाष्ठ शक्यः कार्या যুগান্ বৈ ভোজফেৎ দ্বিজান্।। নান্দীমুখা স্তে পিতরঃ প্রীযন্তা মিতি বাচষেৎ। মাতৃশ্রাদ্ধন্ত পূ-र्ब॰ मार् भिठ्गा॰ मामनखत्र।। ততো মাতামহানাঞ্চ বৃদ্ধৌ শ্রা-क्वयः युञ्। तिर्शृदंश मना-देव न अर्यामश्रमिकन ॥ श्राज्य খো নিৰ্বপেৎ পিণ্ডানুগবীতী স মাহিতঃ। পূর্ব॰ বৈ মাতরঃ পূজ্যা ভক্ত্যा टेठव गरनश्रतः ॥ श्रुखित्मयू পবিত্রেষু প্রতিমাসু দিজাতিষু। शूटिका धुरियम् देन दिन विमा र्शका-टेम् जू वेटेन त्रि ॥ পृक्षिषा या-ज्गनान् अर्याष्ट आक्षवमः त्रुशः 1 অকুৰা নাত্যাগন্ত যঃ **শ্ৰাদ্ধ**ণ পরিবেশযেৎ ॥ তস্য ক্রোধসমা-विको हि॰मा गिष्ड्खि गाउद्रेः। ইতি কৌর্ম্মে উপরিভাগে ২১ व्यथायः ॥ अ। माष्ट्रमा ३७। ३१ র ১৮ অখ্যায়েষু চান্যৎ জন্ধব্য ॥ 😻 ॥ खास्त्र कमनीशबः नि ষিদ্ধ ভোজনপাত্ৰতথা। ইতি হেমাজি ব্যাখ্যা আদ্ধখণ্ডে ॥ ন

জাতী সমুমানি দদ্যাৎ ন কদ-লীপত্রণ। ইতি ক্রতুবচনণ।।।।।।। लाक्षाख्य निविकानि यथा। ষাত্রা যুদ্ধ নদীপার নিখ্যালা-পো দিভোজন । দূতক্রীডা मिवानिज। आटक मश्र विवर्क ৰেৎ ৷৷ ইতি কৰ্মলোচন ৷৷ া ञ्जूिकः। म्राजक कल हरेकव मा-য॰সন্ধ্যা॰ দিৰাশ্য॰। আদ্ধকৰ্ত্ত। চ ভোক্তা চ পুনর্ক্তঞ্চ বর্জ্জ-ষেৎ।। অপি চ। বিষণুপুরাণণ।। বৰ্জ্জানি সৰ্বতা প্ৰাদ্ধ কোপো ২ধ্বামন প্রা। ভোক্তরপাত্র রাজেন্দ্র ত্রম মেতন শুস্যতে ॥ ব্লাজমার্ত্তথে। পুনর্ভোজন ম-श्वानः मृाठाधायन देमथूनः। मा-ন॰ প্রতিগ্রহণ সন্ধ্যাণ আদ্ধণ রু-षाके वर्ष्क्रंत्य ।। नवावर्क्तमान ধৃতা স্মৃতিঃ। পুনর্ভোজন নধা-नः ভারাধ্যয়ন বৈথু নং। দানং সন্ধ্যা পুনঃ স্থান আদ্ধ কৃষা-ষ্ট বৰ্জযেৎ।। ইতি আদ্ধতত্ত্ব।। আদ্ধ ত্রি শ্রদাসমন্বিত। ইতি **८**ह्यह्यः ॥ **आफ्रकर्ला** जि आफ्रकात्रकः।

ষথা। আদ্ধকর্তা চ ভোক্তা চ

भूनज् क्रक वर्कारव । इंछि

वाष्ठबः॥

धाकामवः श्रु वयः। ইতायतः ।। স তু বিবশ্বতঃ সংজ্ঞাষাণ প ত্মা' জাতঃ।। মনুভেদঃ। ইতি श्रुवान ॥

শ্রাদ্ধশাক ক্লী কালশাক। ইতি ভাবপ্রকাশঃ !!

শ্রাদ্ধিকঃ ত্রি শ্রাদ্ধভোক্তা। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী॥ আদ্ধসম্বন্ধি-खवाः। यथा योख्डवकाः। मक्ता-গৰ্জিত নিৰ্ঘাতে ভূকস্পোন্ধা-निপाত्रन। मगाना (तमः मूर-নিশ মারণাক মধীতা চ ৷৷ পঞ্-मना। ठकूमना वस्त्रा। तारु-সূতকে। ঋতু সন্ধিষ্ ভুক্তা বা শ্রাদ্ধিক প্রতিগৃহ চ।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব ॥

আদ্ধী ত্রি আদভোক্তা। আ-क्षमत्नन जुक मिनिएती रेडि সূত্রেণ নিষ্পন্ধঃ। ইতি সিদ্ধান্ত-क्रियूमी।।

প্রান্তঃ পু॰ শান্তঃ। জিতেন্দ্রিষঃ । ইতি হেমচন্দ্র:।। এমমুক্তে ত্রি । শ্রম তপঃ খেদষো ইত্যস্মাৎ ক্ত প্রত্যযেন নিষ্পন্নঃ।। যুপা। স্থি মৎপ্রাণনাথম্ভ সাধ্যম্ভী নিরম্ভর°। অতিশাস্তাসি স-

स्टांव (अरुरवा दिय मिठिजी।। ইতি কাৰ্যচন্দ্ৰিক। ॥ শ্রান্তদণ ক্লী শ্রমান্বিত্স্য-षामनामि अमानदाता व्यापा-পশমন । ইতি কেচিৎ।। শ্রাম ত্ক মন্ত্রে। ইতি কবিকল্প-ক্ৰমঃ॥ অশশ্ৰামৎ। মন্ত্ৰো ২ভি-মুখীকরণ। গুপ্তোক্তি রিভ্যে-कि। इंडि मूर्गामामः॥ शुः योजः॥ यखनः॥ শ্ৰামঃ कानः। इंडि यिनिनी।। শ্রামণেরঃ পু॰ জিনভিক্ষুশিযাঃ। **७९** १ वर्गा सः । (हन् कः २ अव-জিতঃ ৩ মহাপাসকঃ ৪ গোমী ৫। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষः॥ শ্রাষঃ পু॰ শ্রেষণ । আশ্রয়ঃ। ইত্য-मद्रः।। श्रीमश्विनि बि। यथा। श्रीप्तंवठा जमा व्यायः हिंदः । रेषि बीमकामन् প্রতাষেন नि-শন্ন মিতি সিদ্ধান্তকৌমুদী।। ত্তি শ্রেষসিজাতঃ । अभिग्नः रेजि निकाखत्कोगुनी॥ আৰঃ পু॰ অবণ। আ ধাতো ৰ্যঞ প্ৰত্যধেন নিষ্পন্নঃ।। শ্রাবকঃ পু॰ শাক্যমুনিশিষ্য-विल्याः ॥ काकः। ইতি बिकाश्व

শেষঃ॥ শ্রোতরি ত্রি॥

শ্ৰোবণঃ পু॰ পাযত্তঃ। ইতি মে-मिनी ।। देवनाथामिद्यामनामा-ন্তৰ্গত চতুৰ্থমাসঃ। শ্ৰবণানক্ত युका लोर्गामी आवनी मायव মাসে সঃ। তৎপর্যায়ঃ। নভাঃ ২ প্রাবণিকঃ ৩। ইত্যমরঃ ।। नजः १। इंडि भक्तक्वावनी ॥ न ह बिविधः मोत्र काखका। কর্ম্ক টম্বরবিকো নাসঃ সৌর-खारनः । कर्क छेष्ट्रतिथातक **एक्र**अंडिभमामिमर्गारङ। यात्र শ্চান্ত্ৰপ্ৰাবণঃ ৷ চাল্ডোপি দ্বিবি-ধো মুখ্যো গৌণশ্চ। তত্ত্ৰ মুখ্য-ठाख व्यावनीय क्रक्थि जिनामि लीर्गमारखा मात्मा लोगना-ন্তঃ প্রাবণঃ। মুখ্য লকণ প্রা-গেবোক্ত। ইতি মলমাসতত্ত্বণ ।। •।। তত্র জাতফল । লো-क श्रीमाला धनवान् वलानाः मूस्य क्लबाबाक मामयूकः। ভাজ্ঞাকরা যস্য জনস্য সর্বে স প্রাবণাখ্যে সূতরাণ প্রসূতঃ ॥ ।। অথ প্রাবণক্ত্য । তত্ত (मवीश्रुतावः। मूरक्ष जनार्मदन क्ररक भक्षमार् ज्वना क्रान । भू-क्रायमनमारमवी॰ भूशैविष्ठेश मः इंडा॰ ॥ सूरी मिजवृकः।

प्तिवी॰ म॰भूका नषा ह न मर्शक्य याश्चाद। शक्ष्याः शृक्षरयद्या-गाननञ्जामान् सर्शतगान् ॥ कीतः मश्चित्त देनर्वमाः प्रमः म-श्विषाश्चः। गाक्रर्छ। जनञ्जः वाम्किः भश्चः शृक्षः कश्च स्वव ह। छश्चा करका हैकः नागः शृक्ता-

শথক ।। কালীয় তক্ষক-कानि निक्रमः यनिভ प्रकः। य-জে তানসিতায়াগান্ দউমুক্তো षिव॰ बद्ध**ः। भू**तानाखदानि । অনস্তো বাসুকিঃ পদ্মো মহাপ-त्या १थ ७ककः। अलीतः कर्क हैः শধো ছফৌ নাগাঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ ।। পাদ্মে। শেষঃ পদ্মে। মহাপন্মঃ ঙ্গলীরঃ শথপালকঃ। বাসুকি স্ত-क्क टेन्प्रव कानीरमा मनिञ्जकः ॥ প্রাবতো ধৃতরাফুঃ কর্কো-**छेक ध्नञ्जरयो। त्रज्ञाकरत्र।** शिह्-यर्ममा भवानि ज्ञाभरयक्तवरनाम-রে। স্বৰ্ঞাপি তদশীযাৎ ত্রান্ধ-गानि । जिंद्रमा निश्रमा 😻।। 😎 প্রযোগঃ। হ-রিশ্যনানন্তর গৌণচান্তেণ শ্রা-বণ্ঠুফনবম্যাণ ক্রভন্মানাদি রু-**ल्ड्रायः।** जाना आवटन मानि रू-स्किन्टिक नक्षम्। जिस्यो जमूक-

গোত্রঃ শ্রীঅমুকদেবশর্মা সর্পত-ষাভাবকামো মনসাদেবীপূজা मर॰ कतिरया। देखि म॰कब्रा स्नु-হীবৃক্ষে পুজবেৎ। তদভাবে ঘটে জলে वा न्यामानिकः क्रम (मवी मरमञि शापा मनमारमि रेश-গচ্ছ ইত্যাবাহ্য এতৎ পাদ্য ও यनमार्दिया नयः। इंडिसन् यः था गंकि गन्न भूष्ण धृल नील देन-বেদ্যানি দদ্যাৎ। ততো ২নস্তা-**मीन् नागान् शृक्रत्य । ত** क्यीत সর্গি নৈবেদ্য প্রধান । অনস্তা-मिक॰ शामामि जिः म॰शूका **७** ষোদাব্নস্তৰপেণ বন্ধাও॰ সচ-त्राहतः। भूष्भवकात्रत्यमूर्क्ति छ-স্মৈ নিত্য নমে। নমঃ।। ইত্যনে-ন ত্রিঃ পূজ্বেৎ। এবং প্রণবাদি नयारखन य य नामा शृक्ररय । ७ वामूकरम नमः। ७ मधाम नगः। ७ कश्रमाय नगः। ७ क-क्हिं विकायनमः। उँ मध्यकाय न-यः। अंकानीयायं नयः। अंठ-क्काय नमः। अँ शिक्काय नमः। अँगशायाय नमः। अँ अलिका-य নমঃ। ওঁমণিভদ্রায় নমঃ। ওঁ-ধনঞ্জযায় নমঃ। ওঁশেষায় নমঃ । ও ঐরাবতায় নমঃ। অ্শক্তো

शक्ष श्रूणाणाः शृक्षरयः। नि-स्थानि गृह् स्थायर व्यक्तः भारत्या प्रमाद स्वरः जक्षरम् । जेण्यपित् शृक्षाद्भ गृङ्क्षा-गृनश्रभीनार्ण शृक्षपित् शृ-का यूगाद। जावनाः श्रोन-स्वामाः जाक्ष गावनाः श्रोन-स्वामाः जाक्ष गावनाकः। हेि क्रणाण्याक गावनाकः। हेि क्रणाण्याक गावनाकः।

खारना खी मधानीतृकः। ইতি
भारती।।

শ্রাবণিকঃ পু॰ শ্রাবণনাসঃ।ই-ত্যমরঃ॥

শ্রাবণী স্ত্রী শ্রাবণমাসীষপূর্ণিমা
। ষথা। পৌর্ণমাসী তথা মাঘী
শ্রাবণী চ নরোত্তম। এতাংস্ত
শ্রাদ্ধকালান্ বৈ নিত্যানাহ
প্রজাপতিং।। ইতি শ্রাদ্ধতন্ত্রণ
।। বৃক্ষবিশেষঃ। মুঞ্জী ইতি থোলস্বিদ্ধা ইতি চ হিন্দীভাষা।
তৎপর্যায়ঃ। মুঞ্জিতিকা ২ ভিন্দুং ৩ শ্রবণশীর্ষিকা ৪ শ্রবণা ৫
প্রব্রজিতা ৬ পরিব্রাজী ৭ ত-পোধনা ৮। অস্যা গুণাঃ। কন্ধায়ত্বণ। কফ্
বাত আমাতিসার কাস বিষ
চ্ছের্দ্দি নাশিষ্কা। ইতি রাজ-

निर्यकः॥ अभि ह। यू छी जिक् রপি প্রোক্তঃ আবণী চ তপো-ধনা ৷ এবণাহ্বা মুখিতিকা তথा व्यवनगीर्विका ॥ महावा-বণিকান্যা তুষা স্মৃতা ভুকদম্বি-का। कनश्री शिका इ गानिया-থা তু তপষিনী ৷৷ মুভিতিকা कर्षुः भारक वीर्यागका मसूता समुः। (यशा गक्षा भन्नी कृष्ट् क्रिमि सानार्षि शाषुन्य। भी-भागकार्भियात भी र त्यत्मा श्वमार्खित्र । यहामूखी ह छ्कु-वा। ७८१ इन्छा मर्श्विः ॥ ইতি ভাবপ্ৰকাশঃ।।#।। অন্যৎ মুণ্ডিতিকাশব্দে ডাইব্য ।।। শ্রোবন্ডী স্ত্রী ধর্মপত্তনাখ্যদেশঃ । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। শ্রোবন্ঠীয়ঃ ত্রি শ্রবণানক্ত্রসম্ব-श्रीयः। व्यविष्ठा नकार इन् थ-ত্যযেন নিম্পন্ধঃ। ইতি সিদ্ধান্ত-

শ্রি এ সেবনে। ইতি কবিকর-দ্রমঃ।। এ শ্রয়তি শ্রয়তে। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

कोगमी॥

শ্রিতঃ ত্রি মেবিতঃ । আশ্রিতঃ । শ্রিধাতোঃ ক্ত প্রত্যবেন নি-শ্বায়ঃ । ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী ।। শ্রিতান ত্রি সেবাকারকঃ।
শ্রেধাতোঃ ক্তবতু প্রত্যবেন নিশ্রেমা। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী।।
শ্রেষণমন্য স্ত্রী আত্মানণ শ্রেষণ
মন্যতে যা। ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরপণ।।

প্রিষ উ দাছে। ইতিকবিকন্ধ-ক্রমনী। উ শ্রেষিদ্ধা প্রিকৃম। ইতিদুর্গাদাসঃ।।

প্রী ক্রণ পাকে। ইতি কবিকর-ক্রমং।। ক্রম শ্রীণাতি শ্রীণীতে। ইতি দর্শাদাসং।।

श्री विश्वीः ॥ विवशः । ইত্যमद्रः ॥ दिश्वतः ॥ दिश्वा ॥ दिश्वा ॥ दिश्वा ॥ देवतः ॥
मण्यिकः ॥ दिश्वा ॥ देवतः ॥
मण्यिकः ॥ दिश्वा ॥ देवि ॥
कीर्विः । ইতি भद्रतिः ॥ दिश्वा ॥
कीर्विः । ইতি भद्रदिः ॥ दिश्वा । विश्वतः ॥
मिश्वाः । देवि भद्रदिः ॥
मुक्तः ॥ कमवाः ॥ दिश्वतृकः ॥
मृश्वाः ॥ कमवाः ॥ दिश्वतृकः ॥
मृश्वः श्वाः ॥ स्वा ॥ स्व । दिश्वत्वः ॥
मृश्वः श्वाः ॥ स्व ॥ स्व । स्व

जिक्काधिकातां क श्रीशृर्वः निम्नु मीत्रत्यः ।। देखि त्राघवखं पृष्ठः श्राध्यवखं पृष्ठः श्राध्यवखं पृष्ठः श्राध्या नामात्र प्रम्भादः वर्षामात्रा प्रम्भादः । वर्षामात्रा प्रम्भादः । वर्षामात्रा । वर्षामात्रा । वर्षामात्रा । वर्षामात्रा । वर्षामात्रा । वर्षाण् विषया । वर्षामात्रा । वर

ঞীঃ পু॰ রাগবিশেষঃ। স জু হনুমন্মতে ষড়াগান্তর্গতপঞ্ম-রাগঃ। পৃথিব্যা নাভিতো নির্গ-তঃ। অস্য জাতিঃ সম্পূর্ণা। তস্য अद्रावितः। य अ श म भ भ ध नि । অস্য গৃহণ ষড্জ স্বরঃ ৷ হেম-**ख्ट**ें ज्याद्र गानम्यरः। রাগমালাযা॰ অস্যাকারঃ। স্-न्तत्रपूक्षः। शक्तवखनबीधानः। মতান্তরে রক্তবন্ত্রপরীধানঃ। কাটিক পদ্মরাগমণিমালাগলঃ । পদ্মপুষ্পহস্তঃ। বিচিত্রসি হা-সনাৰতঃ। অসা সংমুখে গাষ-खि गायकाः ॥ 🛊 ॥ इन्मग्रट जमा जार्याः शकः। यथा। श-थमा मालबीः। उन्गाः मन्भूर्व-জাতিঃ। অস্যাঃ স্বরাবলিঃ ষ ঋ 🎚

ग म भ ध नि। जमा। गृह । य छ छ-यतः। हिमर्छो विठीयथहत्रनि-वटम गानमबरः। त्रागबालायाः তদ্যাঃ স্বৰূপণা ব্যক্তবৰ্ণান্তী।কো-भलाकी। शीठवञ्जश्रीशाना । को जूका म् जुम खीम जी नायका-फिन्ना मथीगान महहामायुका-মৃতক্রতলোপবিষ্টা ॥ ১॥ দ্বিতীযা মারবা অথবা মালবা। অস্যাঃ ষাডবজাতিঃ। অস্যাঃ স্বরাবলিঃ य १ ग म ४ नि। अमा गृश् यज्ज স্বরঃ। হিমত্তে শেষবেলাযা গা-নসম্বঃ। রাগমালাযা তদ্যাঃ ञ्चक्रण यथा। चर्वदञ्जभन्नीधाना। পুष्णयानाध्या। नायक यननार्थ মেকাকিনী সক্ষেতস্থানোপবিষ্ঠা ॥२॥ जृजीया धनाश्रीः। जनाः ষাডবজাতিঃ। অস্যাঃ স্বরাবলিঃ । य श श नि श्रागा गृह य य छ ज শ্বরঃ। হিমত্তৌ দিতীযপ্রহরদিব-**८म (শববেলাযা° বা গানসমযঃ।** রাগমালাষা তস্যাঃ স্বৰূপ া विरमाभिनीनात्री। त्रक्कवञ्जभत्री-ধানা। বিযোগজসম্ভাপেন দুঃখি-ভাতিফ্রশা। একাকিনী রোরুদ্য-याना वन्नलङ्ग्ङ्खलानविको ॥ ৩॥ চতুর্থী বসম্ভরাগিণী। অস্যাঃ

সম্পূর্ণা জাতিঃ। অস্যাঃ স্বরাব-निः व साग म श स नि। जागा शृह विष्क्रवतः। हिम्तको सक्षा-ক্লে বসন্তত্তে দিবামাত্তে চ গান-সমযঃ। রাগমালাযা তস্যাঃ স্ব-बारा मुख्यश्रूक्षाकृषिः। कमा-िष्यार् नगायवर्गा। त्रक्कवनना। ममृत्रभूष्ट्रिंगशा आगुम्मलर्खा । (योवन यमन यमयञ्जा। भूष्णया-काशनदम्भा। भूटक्यांमादन मह मर्खकी मूखंद्रशायनी िकः मूरथन রাগরক্ষুতা। বামহস্তধৃততামূ-नवीरिका। जीगनमहिक हामा কৌতুক ক্ৰীডা নৃত্য গীত বাদ্যা-সক্তা। রাগমালান্তরে উক্তগুণ-यूका बीक्षकपृर्विमम् गर्वि लि-থিতা ।। ৪ ।। পঞ্চমী আশাবরী । অস্যা ঔডবজাতিঃ । অস্যাঃ স্ব-द्वाविनः ४ नि य य थ। अग्रा গৃহ পৈবতস্বর:। হিমত্তে দিতী-্ষপ্রহরদিবসে গানসমযঃ। রাগ-यानायाः जमाः स्वत्रः। गा-মবর্ণা দ্রী। কোমলাঙ্গী। শ্বেত-भाषिणतीशाना । कृणतानूरलभ-ना। रखनात्वा व्रदेनमर्शित्विः তা। কেশৈৰ্বদ্ধ চূড়। জলমধ্য-ऋगर्व छ इ। या मूले विका । तान-

মালান্তরে উক্ত গুণযুক্তা বৃক্ষপ-ত্ৰবন্ধকটিদেশা নগা লিখিতা।। ৫ ॥ 🛊 ॥ অস্য পূত্রা অকৌ। যথা । সিন্ধুঃ ১ মালবঃ ২ গোঁডঃ অথ-বা গোণ্ডঃ ৩ অস্য স্থানে কেচিৎ কল্যাণঃ ইতি কেচিচ্চ হামীর ইতি পঠন্তি। গুণদাগরঃ ৪ জন্তঃ ৫ গম্ভীরঃ ৬ শঙ্করঃ অথবা আ-গডः १ विश्वात्रः ৮॥ 🛊॥ क-লনাথমতে শ্রীরাগঃ প্রথমরাগঃ অস্য ভার্যাঃ ষট্। ষথা। গৌরী ১ গৌলাহলী ২ ধবলী ৩ ৰুজাণী ৪ মালকৌশ অর্থাৎ কৌশিকী ৫ দেবগান্ধারী ७। তমতে পুত্রা व्यक्ती इन्मग्रवज्नाः। किञ्च গৌঁড শঙ্কর বিহাগরস্থানে ক-ল্যাণ আগড়া বিগড়া লিখিতাঃ ।। 🗰 ।। সোমেশ্বরমতেপি প্রথম রাগোষণ। অস্য রাগিণ্যঃ ষট্। यथा। यानवी अथवा यत्रवा ३ जिदिनी अथवा जित्रवनी २ रंगी-রী ৩ কেদারা ৪ মধুমাধবী ৫ পাহাডিকা অথবা পাহাডী ৬। অস্য পুলাঃ পূৰোক্তমতদ্বত্-ল্যাঃ। তন্মতে অস্য রাগস্য রা-গিণীসহিত্স্য শিশিরক্তৌ গান-সুমুখঃ ৷৷ ঞ্চা ভর্তমতে পঞ্ম-

রাগোরণ। অস্য রাগিণ্যঃ পঞ্চ । যথা। সিমুবী ১ কাফী ২ ঠুমরী ৩ পূর্বদেশে বিস্তার ইতি
থ্যাতা। বিচিত্রা ৪ শিরহটী অথ
বা সোরঠী ৫। তম্মতে অস্যাউপুত্রাঃ যথা। প্রীরমণঃ ১ কোলাহলঃ ২ সামস্তঃ ৩ শব্দরণঃ ৪
রাকেশ্বরঃ ৫ খটরাগঃ ৬ বড়হংসঃ ৭ দেশকারঃ ৮। তেষাণ্
ভার্যা যথা। বিষ্যা ১ ধ্যায়া ২
সম্ভা ৩ সূহনী ৪ শরদা ৫ কেন্
না ৬ শশ্রেখা ৭ সুরস্তী ৮।
ইতি নানা সঙ্গীতশান্ত্রতঃ সংগৃহীতং।।

শ্রীকঠঃ পুণ শিবং। ইত্যমরঃ।।
সরুজাঙ্গলদেশঃ। স তু হস্তিনাপুরস্য উত্তর পশ্চিমে বর্ত্ততে
। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

শীকণ্ঠপদলাঞ্ছনঃ পুণ ভবভূতিঃ। স তৃ মালতীমধেবনাটককর্তা। ইতি শব্দমালা।।

শ্রীকণ্ঠসখঃ পু• **সবেরঃ। ইতি** হলাযুৱঃ।।

শ্রী বন্ধাকর্কোটকী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।

শ্রীকরণ ক্লী রক্তোৎপলণ। ইতি ত্রকাণ্ডশেষঃ।। শীকরঃ পু॰ বিফুঃ। ইতি ত্রিকাপ্ত-শেষঃ।। মৃতিপ্রস্থকারবিশেষঃ। ষথা। শ্রীকরাচার্য্যাদিগ্রস্থাদর-পরাহতবিবেকানাণ। ইতি দায়-ভাগাদ্যশ্লোকটীকাষাণ শ্রীকৃষ্ণ-ভর্কালকারঃ।। শ্রীকারকে ত্রি।। শ্রীকরণ ক্লী লেখনী। ইতি শক্রপ্লাবলী।।

প্রীকান্তঃ পু॰ বিক্যু:। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

श्रीकाती मू॰ मृगविरमधः। ७९शर्यायः। निशिष्ट्रभः २ अत्र अः
७ महायदः ४ यदनः ६ दिशिहतिगः ७ जञ्चानः १ ज्ञाञ्चिकाव्याः ৮। जमा मा॰मछ्गाः।
नयुष्यः। समाष्यः। वनश्रमष्यः।
हिन्न ताजनिर्यन्षः।।

শ্রীখণ্ডঃ পু॰ ক্লী চন্দন॰। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

শ্রীগর্ত্তঃ পুণ বিকুঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ ।। খলাঃ। যথা। জসি-র্বিষশনঃ খলা স্তীক্ষধারো দুরা-সদঃ। শ্রীগর্ত্তো বিজয় শৈচব খ-শ্মপাল নমো খস্ত তে।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বং ।।

প্রিত্রহঃ পু॰ পক্ষিণঃ পানীয়শালা তেওপর্যায়ঃ। শঙ্গনিপ্রপা ২। ইতি হারাবলী।। শ্রীঘন॰ ক্লী দ্বি। ইতি জ্বটা-ধরঃ।।

এীঘনঃ পু॰ বৃদ্ধঃ। ইত্যমরঃ।। खीठक की जिभूतम्पर्याः भू-जायखिविद्यसः। यथा। वीठक-স্যোদ্ধৃতি বক্ষো তত্ত্ৰ পূজা প্ৰ-সিদ্ধযে। বিন্দুগর্ভণ ত্রিকোণম্ব क्ष वाकोत मूक्तत्व ॥ मना-রদ্বয় মধুসাফার ষোডশকোশ কণ। ত্রিরেখাম্মক ভূগেছবেন্টি-**७॰ यस मालिएथ** ।। ইতি नस बट्हाम्ट्सी ३३ जज्ञ 🔐 🚯 ॥ অপি চ। অথ ঐচক্রণ। যথা विन्तूबर जागुः अखेरकानः এठ-खर॰ य॰शतहकः। विषणात॰ চতুর্দশার স্থিতিচক্র মেতত্রয় 1 অন্টগত্র^ত বোডশদল বৃত্ত-ত্রয়ণ ভূসদনত্রয়ণ চতুর্দারসমা-युक्त भाव मृख्याञ्चकः। जम् कु जायल। विन्तृ बिकान व मूरकान मणात यूग्र यश्रम् नागः দল সংগত যোডশার। বৃত্ত-वयक ध्रवी मंगनवयक श्रीहक রাজ মুদিত পরদেবতাষাঃ 11 ठळाताजः निमृत अक्रुगामिना লিখিত সুৰ্ণ রৈজত পঞ্চরত্ন

ক্ষটিক তামাদ্যৎকীর্ণ সর্যাৎ। তথা ভূতভৈরবতন্ত্রে। অকুদা जूमगा दाशा नानिश जूमग মুখ । ৰো হত্ত যন্তে প্ৰবৰ্ত্তেত जना नर्वः इतागाहः ॥ यमा यव ক্তিৰ্জেৰি তত্ত্ব তা॰ নাৰ্ক্যযেদ্য-मि। जगान्य अधिदारेनव भारता তস্য জাৰতে ॥ প্ৰশো রালোক-ন ন সাত্তিথা সক্ষত যত্নতঃ। य-দি দৈবাৎ পশো রগ্রে লিখিতণ বিদ্যতে কচিৎ।। মনাঙ্গকতি রে-বাত্র ক্রিয়তে পাপবুদ্ধিনা। তথা ভূতভৈরবে। যো शিयान् यस्त्र মহেশানি কেশরাণি প্রকল্পযেৎ। यागिनीमहिंछ। छमा हि॰मा॰ व्यक्ति देख्यवाः ॥ इति वहना-মত্র কেশরাণি। ন রাত্রাবক্ষবেৎ ৰম্ভ সাধকন্ত কদাচন প্ৰমাদা-দক্ষিতে ৰম্বে শাপো ভৰতি তৎ-ক্ষণাৎ।। ভক্তাপরাজিতাপুলে করবীরে জবাসু চ। তত্র দেবী ব-সেমিতা ভাৰম্ভে পূজন মম।। তথা সচ্চুন্দভৈরবে। স্বর্যাচ্চ স্থ-জিলে ষম্র॰ ছন্তমাত্রণ সুসুন্দরণ। রত্নাদিবু চ নির্মাণে মান মিচ্ছা-বশান্তবেৎ ৷৷ একতোল দ্বিতো-ল॰ বা ত্রিতো**ল॰ বেদতোলক**°।

ইতোধিক নরঃ ক্লম্বা প্রাৰশ্চি-ত্তীভবেৎ গ্রুবণা৷ রক্তেন রজ-সাপূৰ্ব্য প্ৰীচক্ৰণ ভূবি পূজবেৎ। নশ্যন্তি সৰ্ব বিদ্বানি প্ৰাপ্যতে চ যথেপ্সিত ৷৷ দশভাগ সুবর্ণস্য कामुमा सामभ कथा। यख्मभ রজতস্যাথ চৈতলৌহত্ত্রয়ণ ভবেৎ ।। চক্রে १ श्विन् शृक्षश्वरत्ता हि म সৌভাগ্য মৰাপ্লুষাৎ। অনিষা-मार्के मिक्षीना मिरिला जास्ट **१** চিরাৎ ।। বিজ্ঞবে রচিতে যন্ত্রে भग्नतारग २० वा अरग। रेख-नीत्न १थ देवमृत्यां ऋगिटिक म-রকতে ২পি বা ৷৷ ধন পুল তথা मातान् यमाः मि लाउटा अन्यः। তামুম্ব কান্তিদ প্রোক্ত সুৰণ শত্রাশন ৷৷ রাজত কেমদ-देश्य कार्षिक मर्वमिकिन । अ-जलाखिकाद्य टब्डिक ॥ ॥ जाश শ্রীচক্রনাশে প্রায়শ্চিত্ত। দঞ্চণ চ স্ফুটিত ষম্ভ হত চৌরেণ বা थिरय। **উপবাস** शक्की छ मिन মেক মতন্দ্রিতঃ ।। লক্ষমাত্র॰ জ-পেদ্বিদ্যাণ ছোম তৰ্পণ পূৰ্বকণ। সম্ভক্ত্যা চ গুৰু তোষ্য বান্ধ-ণানপি ভোজ্বেৎ ৷৷ লক্ষণ জপ্তা দশাংশহোমঃ তদ্দশাংশঞ্চ তর্প ৰাজ্ঞীজঃ পুং কামদেবঃ প্রিষাজাত-

। লক্ষ মযুত মিত্যেকে। কদাচি-লুপ্তচিক্ল বা স্ফুটিতাদি বিদুষ-ৰ । ভন্ন করোভি ষো মর্ত্যো मृज्य खमा क्ल जिल्ह ॥ ७-স্মাচ্চ তীর্থরাজে বা গলাদি শরিতামরে। সমুজে বা কিপে-एकवि ठामाथा मृत्थ माश्रुमा ।। हेमड यखनाजिविषय ॥ 😻 ॥ অথ শ্রীচক্রপাদে। দকমা হাত্মাণ। शक। शुक्रत नर्भनामू यमूना (गा-**माव**त्री शाय**ी ग**त्राषात गरा প্রযাগ বদরী বারাণসী সিম্বুসু। রেবা সেভু সরস্বতী প্রভৃতিযু ব্রহ্মাণ্ডভাণ্ডোদরে তীর্থস্নান স-श्रु (का हिकलमः बीहक्न भारमा-मक ।। 🟶 ।। जाथ मनीन कल । मभाक् भञक्रवृन् कृषा यदक-ल॰ সমধাপু गाँ९। ७९कल॰ ल-ভতে ভক্ত্যা ক্ষমা শ্রীচক্রদর্শন॰ ॥ रवाष्ट्रणः वा यशामानः क्षत्रा ষ্ক্লভতে ফল । ভৎফল সম-वारक्षाि क्या शिर्वकपर्णनः ॥ সাৰ্দ্ধত্ৰিকোটিতীৰ্থেযু স্নাদ্বা বৎ कन मभू रछ। छ ९ कन । न जर्छ **ज्जा क्षा बीठकमर्भन** ॥ ইতি তন্ত্রসারঃ।।

স্থাৎ।। শাষঃ। ইভি কেচিৎ।। শ্রীতালঃ পু॰ তালর্কসদৃশবৃক वित्ययः। छ० शर्यायः। मृष् **তानः २ नची जानः ७ मृ**नूष्ट्रमः 8 विभागभनः ६ त्वथार्यः ७ यभीटन्यालनः १ भितानशक्षकः ৮ बाटमाष्ट्र ३१ व्यमा खनाः । मध्तषः। नीजवः। अवश्कः वायद्वः। शिख्याशिष्वः। कक-कातिष्व । जैवदाख्यत्कारानष्ट्रश । ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ **শ্রিদঃ পু• ক্রবেরঃ। ইত্যমরঃ**া। শোভাদাতরি ত্রি।। শ্রীধরঃ পু• বিষ্ণুঃ।। ভূতার্ছ-खनः। ইতি ह्याज्यः।। भाव-প্রামবিশেষঃ। যথা। অভিকৃত্ত षिठकम्ब वनगानाविज्यिकः । শ্রীধরণ দেবি বিজ্ঞেষণ শ্রীপ্রদণ भृहिना मा।।। इंछि दक्तिवदर्छ প্রকৃতিখণ্ডে ১৯ অধ্যায়ঃ।। **জীনন্দনঃ পু**ু কামদেবঃ। ইতি र्वित्र हिन्द्रां। बन्दी भूस का জীনিকেতনঃ পু॰ বিষ্ণুঃ। ইতি नक्तज्ञावनीं ॥

ত্রিকাওশেষঃ !!

শ্ৰীপণ ত্ৰি শ্ৰিষণপাতি ষৎ। ইতি

मुक्तरवाधवागकत्रवः ॥ শ্রীপতিঃ পু॰ বিকঃ। ইত্যমরঃ॥ शृथिवीनाथः। इंछि त्यमिनी ॥ **बिलयः सु॰** त्राज्यशः। इंडि **ट्या**ट्यः ॥ শ্রীপর্ণ ক্লী পদ্মণ। অগ্নিমস্থ-मुक्तः। देखि स्विमिनी ॥ विश्विका खी कर्यनवृक्ध । रेकायतः ॥ শ্রীপর্ণী জী গম্ভারীবৃক্ষঃ। ইত্য-मझः। क हेकल वृक्तः। ই छि (य-**फिनी ।। भाषानी** वृष्णः ॥ इर्ठ-वृक्श हैि एम् उस्ता अधि-মন্থ্যুক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ ঞ্জিকিঃ পু• সরলবৃক্রসঃ। ইত্যমরটীকাষা রামাশ্রমঃ।। প্রীপুরাঃ পুত অশ্বঃ। ইতি ত্রিকা-अटमकः। कामरमवन्ता প্রিপুষ্পা ক্লী লবঙ্গ। ইতি রাজ-निर्घनिः ॥ शत्रकार्षः । देखि त्रव्यामा ॥ **শ্রীফলঃ পু॰ বি**স্তবৃক্ষঃ। ইত্য-यतः॥ ताजापनी। देखिताजः निर्वकिः ॥ শীনিবাসঃ পু॰ বিষ্ণুঃ। ইতি শীফলা স্ত্রী নীলী।। ক্ষুত্রকার-বেলী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥ किनिका जी कुछकात्रदिनी।।

মহানীলীকৃকঃ। ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ।।

क्षिकनी खी वायनकी।। नीन । इंडिट्यिमिनी।।

শ্রীভদ্র। স্ত্রী ভদ্রস্থকঃ। ইতি। শব্দরত্বাবলী।।

শ্রীভাগবত ফ্লী অফাদশমহাপু-রাণা ভর্গতাফীদশসহসুলোক-यूक्तभूतावित्मयः। यथा । ख-ক্টাদশণ ভাগবত সার্মার্ক্ট সৰ্বতঃ। কতবান ভগবান ব্যা-मः खककाशाश्वर मृखः।। ক্ষয়ৈ ৰ্বাদশভি **ৰ্যুক্তণ ত্ৰন্ধবিদ্যা** সমন্বিত । বেদ বেদান্তসার ए९ भूतानानाक मख्या। यज সংকীৰ্ত্তিতঃ কুষ্ণো ভগৰান্ বৈ পদে পদে। শ্রীভাগবত মিত্যেব रि ग्राविष्ठ नदाः किष्य।। गूठा-ন্তে সৰ্বপাশেভ্যো বৰা নায়া গদাভূতঃ। মহীভূতা ৰথা মেরু र्फिवानाः रकमारवा यथाना मृत-ভিঃ কামধেনুনা মন্সরস্সু ৰ-থোৰ্বলী। কাৰ্ফানাত পাৰ্বতী-नात्था ताड्डा॰ जामत्रथि र्यथा।। मखीनादेश्व गम्नहा निमान काइरी यथा। भूतानाना छथा রাজন জীভাগবত মুত্তন ।।

व्यवतीम उवावछ। भूताक ७॰ ভাগবত পঠ মে পুরতো হরেঃ। চরিত দৈত্যরাজস্য প্রহ্লাদস্য চ ৰৎপতেঃ।। গৌতম উবাচ। অ-ম্বরীশ শুকপ্রোক্ত নিত্য ভা-शवक मृन्। शर्व सम्दर्भनाति यमीक्ति जवक्यः॥ ऋत्य ऋत्य रश्राभिशा कल मारक्षां मान-বং। প্রত্যখ্যাষ রাজসুষ্ফলেন শরিযুজ্যতে।। প্রতিমোক বা-জপেয়ফল তস্যোগজায়তে । পদে পদে মহারাজ তীর্থনান-ফল॰ লভেৎ।। এতদ্ভাগবত॰ प्ति पूजान मुक्तिमाधकः। छ-ত্ৰাপি দশ্যক্ষন্ধঃ সৰ্বভক্তমনো-হরঃ।। তত্তাপি রাসলীলাঢ্যা भक्षाशायी यहाकना। **श्रीभा**ई-जायाह । भईक रितनीमाण **बायहा १४ वर्ष १ क्या १ मन** ৰস্যায় মহিমা কেন হেতুনা।। রাসলীলেতি ভত্রাপি কথ্যতে স-ৰ্বতোধিকা। তত্ৰ মে কারণং শ্রো-তু মুৎকণ্ঠা বৰ্দ্ধতে ভূশ া ত্ৰী-সদাশিব উবাচ। স্বয়ণ ভগৰতো जन्म जमा नीना ह वर्गाटा थ-তীনাঞ্চ স্তুতি ৰ্যত্ৰ সৰ্ববেদাৰ্থস-শ্বিতা৷৷ স্বৰণ ভগবতো দীলা

সর্বশক্তিক দর্শিতা। দশমক্ষম

নাহান্তা এতবৈ কারণ মক।

তত্ত্বাপি রাসলীলাষা ষম্মাহান্ত্যা

মুদীরিত । তত্ত্বাপি কারণ বঢ়ি।

শ্বুপর্মতনন্দিনি।। যঃ বয় ও

গবান্ রুষাঃ পূর্বশর্মা ইতীর্যা

তে। সমর্বশক্তিসম্পূর্ণঃ সর্বলী

লাপ্রকাশকঃ ।। তল্যেব শক্ত

যোগোগ্যঃ প্রোক্তাঃ সর্বোত্ত
না যতঃ ।। শক্তীনাঞ্চ শক্তিম

তো লীলা যত্ত্বৈকতঃ হিতা। সা
লীলা সর্বতঃ শ্রেষা কীর্ত্তিভা
পরমর্ঘিভিঃ।। ইতি পালে পাতালখণ্ডে ৭১ অধ্যায়ঃ ।।

প্রীপ্রাতা পুণ অশ্বঃ। ইতি রাজ-নির্মকীঃ।। চন্দ্রঃ। সমুজোৎ-পরস্থাৎ।।

শ্রীনতিঃ স্ত্রী রাধা। যথা। প্রারাধা প্রীষ্ঠিতঃ শ্রেষ্ঠা শ্রেষ্ঠকপা
শ্রুতিপ্রিকা। ইতি নারদপদ্ধরাত্রে ত্য্যাঃ সহসুনামস্তোত্তণ।।
শ্রীষ্ঠী স্ত্রী প্রীকুলা।। বোধিক্রাম্বঃ পূর্বণ এতছকোবোজ্যঃ ।
ইতি শিক্ষাচারঃ ।।

শ্রীমন্তকঃ পুণ রসোনঃ। ত্রিকৃতিশেষঃ॥ লক্ষীশিরশ্চ।। শ্রীমান্ পুণ ভিলকবৃক্ষঃ। ইত্য- नदः॥ अश्रथक्षः। ইতি রাজ-নির্বক্তঃ॥ বিষ্ণুः। ইতি শব্দ-রত্নাৰলী॥ শিবঃ। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ॥ স্বেবঃ। ইভি শব্দবালা॥

ীমান্ ত্রি মনোজ্ঞঃ ।। ধনী । ইজি মেদিনী ।। তৎপর্য্যায়ঃ । বান্ ২ অক্ষণঃ ৩ ঞালঃ ৪। ইত্যামরঃ ।।

গ্রীমলাপহা স্ত্রী ধূমুপতা। ইতি রাজনির্গটঃ ।।

এ মুশঃ পু• কালচক্রস্য সপ্তমবৎ-मुद्रः। ইতি কেচিৎ।। পত্ৰপৃষ্ঠে শ্ৰীশক্ষিপ্ৰ । ইতি লোকপ্ৰ-**িসিদ্ধঃ। খো**ভাযুক্তাননে ক্লী।। **শ্রিমৃতিঃ ত্রী দেববিগ্রহঃ।** বিফু-श्रिका। स्था। अथ श्रीमृर्छ-यः। धकामगद्यतः। रेगली माक्रमयी स्तोही त्लगा त्लथा **इ देवक्छा। यत्नावशी मनियशी** প্ৰতিমাকীবিশা মতা ৷৷ চলাচ-লেভি দিবিধা প্রতিষ্ঠা জীবম-শিরণ। উদাসাবাহনে নস্তঃ স্থি-রাষা মুদ্ধবার্চনে।। অন্থিরাঘাণ विकन्नः मार इंखिल जू ज्व দ্বা প্রপান প্রবিলেপ্যামা ম-ন্যত্র পরিষাজ্জন ।। গোপাল

वीगृर्डि

মন্ত্রোন্দিউদ্বাত্তৎ শ্রীমূর্তি রপে-ক্ষিতা। তথাপি বৈক্ষৰ প্ৰীত্তা लिथाः अभृर्वरया श्थिनाः।।।।। ष्य श्रीमृर्खिनकनानि। इसनीर्य-পঞ্চরাত্তে। ভগবৎ 🕮 হযশীর্ষ बंकमशादम। जामिमूर्खि बामू:म-वः महर्षन वथाम्जर। ठजुर्विः পরং প্রোক্তং একৈকো ভিদ্যতে ত্রিধা।। কেশবাদি প্রভেদেন মৃ-ব্ৰিদাদশক শ্ৰুত ৷ পক্ষজ দক্ষি-বে দদ্যাৎ পাঞ্চজন্য তথোপরি ॥ वाटमानिति शका यमा ठळ हा-(धा वावश्रिकः। त्यानिमृदर्व स ভেদে।য° কেশবেতি প্রকীর্দ্রাতে ॥ ১॥ অবরোতরভাবেন ক্লভ भिष्कु राज देव। नात्रयनाचा। सा मृर्जिः शांभिना ज्ञि मुकिता॥ २॥ मब्राधः शक्षकः यमा शाक्कः नाः ज्यानिता निकत्वादर्भुगमा यमा ठळ॰ ठार्था बाविष्ठ् छ॰ ॥ वामिमृर्त्व स जिल्ला १व॰ माध-বেতি প্ৰকীৰ্ত্ত্যতে ৷ তা দক্ষিণাশঃ স্থিত চক্রণ গদা মসোপরি স্থিতা ॥ बार्यार्क्नम॰श्चिण शमा नश्च॰ চাধো ব্যবস্থিত। সন্ধর্ষণস্য ভে-দো ২য় গোৰিন্দেভি প্ৰকীৰ্ত্তাভে ।। ৪।। দক্ষিণোপরি পদ্ম॰ জু গদা-

চাধো ব্যবস্থিতা। সন্ধর্ণস্য জে-দে। ২ম॰ বিকু ব্লিতাভিশব্যাভে।। ए ॥ मिक्टिवाशित मध्यक ठक्क চাধः প্রদৃশাতে। বাষোপরিতথা नवा गमा ठाधः अमृनारक॥ य-. श्रुमृतनावा १४° (छतः महर्षन-मा চ। ৬। ত্রিবিক্রমমূর্ত্তি মাছ। मिक्टिशार्कि शमा यमा शक्क চাপाधः व्हिं**७**॰॥ वात्वार्षम् म॰-স্থিত চক্ৰ নধঃ শন্তা প্ৰদূশ্যতে। ব্ৰহ্মাণ্ডগ বামপাদ দক্ষিণ শে-यपृष्ठेग॰ ॥ १ ॥ श्रीवायनमृद्धि-यार । वनिवक्ष्य मःयूकः वाय-न॰ **ठा**शाधः ख्रि७ । नात्नार्कः क्रियानी यमा भूखनीक मधः **क्टि॰।। मक्टि**शिक्षं॰ महम्।র॰ পাঞ্চজন্য মধঃস্থিত । সপ্ততাল ध्यगार्यन रायनः कात्रस्य महा 11 ৮ ।। छेर्जु॰ प्रक्तिनक क्वतक मधः शबः वावश्रिष्ठः। वात्मार्ष्क् को-त्यामी यमा शाक्षकना मधः व्हिज॰ ।।পদ্ম। পদ্মকরা বাঁমে পার্শ্বে বস্য ব্যবন্থিতা। স্থিতো বাপ্যুপবিস্ফৌ वा मानुताश विषामवान्।। अमु-मना हि एकता २ य श्रीभाविष क्षकी खाँ छ । न निक्त नार्क्षु · मराठकः (कोरमामी जनभः क्रिं

॥ वारमार्कं निनं यमा अधः 'नवा' तिदाकटके। स्तरीहरू कि 'तिराख्य पर वर्गा भारत मन्त्रम सम्बद्धातिः अवस्थित गुजीकामान मालब खया। कहमाद्भाग निकर किक किया मी जन्म विखा। পদ্মনাটভতি আ মূর্তিঃ স্থাপিছা 'रबाक्नमायिनी । ३३। मकिरशादि **পাঞ্**জন্য মধন্তাত্ত্ব সংশেশবং ।। यदगार्क्न कोत्मामी (मवी दर्छ-রাজ স্বধঃস্থিত । অনিরুদ্ধস্য ভেদো ২য়ণ দামোদর ইতি স্থিতঃ য়া ১২ ।। এতেয়ান্ত ব্রিয়ে। কার্য্যে পদ্ম বীণাধরে শুভে। ইতি ক্র-্মেণ মার্গাদি মাসাধিপাঃ কেশ-वामरमा बामना। 🗫।। ज्य नि-জার্থসংহিতাযাণ চতুর্বিণশতিমূ-र्खयः। वामूरमरवा गमा नश्च ठळ পদ্মধরো নতঃ ৷ ১ ৷ পদ্মণ শৃত্মণ তথা চক্রণ গদাণ বহুতি কেশবঃ ।। ২ ॥ শহা পদা গদা চক্ত थटख नातायण्डं .मन।। ७। गर्ना॰ চক্রণ তথা শয়৽ পদ্ম৽ বহৃতি মা-ধবঃ ॥ ৪ ॥ চক্রণ পদ্মণ তথা শখ্ शनाक भूक्टबाखगः। ७। भन्न किर्नामकी मध ठक थए र्शार्थाक्कः ॥ ७ ॥ जन्मर्रा

নাদ। শথ পথ চক্রধরঃ স্মৃতঃ। १। उत्तर अमेर नथा नट्यो रगांविरका-क्षित्व ज्ञाना भाग भवा ज्या শ্বা চক্ত বিক্ৰিডিবঃ। ৯। क्राप्तः अवा अवा अमारक व-धम्पनः ॥ ३०॥ शर्माः महत्राकः চক্ত শ্বাভ খতে ২চ্যতঃ সদা । ३३। मधाः किटमानकीः ठळ भूर्विकः भेषा मुद्दर्थ ॥ ३२ ॥ শাৰা চক্ৰ পদা পদাধরঃ প্রদায় উচাতে। ১৩। পদা॰ কৌমোদ-কী চক্ত শঙ্খ ধতে ত্রিবিক্তমঃ া ১৪ া শশ্ব চক্র গদা পর वागत्ना वहरू मन। १३७। भन्न॰ চক্রণ গদা শধ্য শ্রীধরো বহতে ভুজে ৷৷ ১৬ ৷৷ চক্র॰ পদা॰ গদা॰ শখ নরসিংছে। বিভর্ত্তি যঃ। ১৭ । शबाः मूमर्भनः भाषाः शनाः शत्व कनार्कनः ॥ १४।। अनिकृषा कि शका नहा भन्न लगजुकः। ३२। स्वीरकरमा गमा॰ ठळ॰ शमा॰ म-अक शातरष ॥ २०॥ शत्रनाटला বছেৎ শধ্য পদ্ম চক্র পদা তথা 1 ২ ১। পদা চক্র গদা । শগ্র भटल जाटमाजदः मना ॥ २२ ॥ শধ্বংচক্রং সরোজঞ্চ গদাং বহতি যো ছরিঃ।২৩। শৃগ্র কৌমো-

मकी नचा एक इटका विकर्ति बन्धा रक्षा **बळाक्ट में हरके एक** या निक्नाशःकव क्रमाका वधनाभूदार्य है। अञ्चल्या क প্রোক্তণ প্রতিমালকণ বর্ম। বিস্তরেণ ন শক্ষোতি বৃহস্পতি त्रिश दिकाः ॥ ইछि । स्मरा-निष्ठ। श्रतः श्रीमदेव कराः भाकः রাত্রিকাঃ। প্রাকট্যাদ্ধিলালা-নাণ শ্ৰীমূৰ্ত্তিণ বহু মন্বতে ৷৷ সে-वा। निक निटेक दाव गटेकः व त्य के मृर्ख्यः। भानवामा प्राप्त करण नियरमा देनम विमारक ॥ षिज्ञा जनमगामा विजनी মধুরাক্তিঃ। সেৰ্যা খ্যানানুক-रेशव खीमृर्खिः क्रकटेमवरेजः ॥ **जनगाक** विविधाः **श्रीयमव**छा-त्रां मि मूर्खयः। श्रामूर्जाविशाव-গ্ৰে লেখ্যা স্তত্তবিশেষতঃ ॥ নিত্যকর্মপ্রসঙ্গে ২ত্র মূর্ত্তি জন্ম প্রতিষ্ঠবোঃ। বিধি में लिখিতু॰ ষোগ্যঃ স তু লেখিষ্যতে ২ গ্ৰ-ण्या ३ वि श्री हित्र चिक्ति विनारम ३৮३ विलामः ॥

শ্রীযুক্তঃ > ত্রি লক্ষীবিশিষ্টঃ। শ্রী-শ্রীযুক্তঃ > মান্।। জীবৎপুরুষনা-য়ঃ পূর্বং দাতব্যোষণ।। श्रीप्रमः कु श्रीतकः। हि स्नी

वित्रवाहन की क्रमितिल्यकः।
वात्रवाहन हेडि जावा। हेडि
वात्रवाहन हेडि जावा। हेडि
वात्रवाहन पुरु विज्ञान कर्षा
क्रितान पुरु विज्ञान कर्षा
क्रितान पुरु विज्ञान कर्षा
क्रितान विज्ञान हेडि हलायुक्षः ॥
क्रिताक त्रातिला वर्षा। नाक्षाती
क्रिताक त्रातिला वर्षा। नाक्षाती
क्रिताक त्रातिला हेवा। नाक्षाती
वात्रवाहन विव्या हेनाः॥ हेडि नक्रिजन क्रिताः॥ विखात क्रितान कर्षा।
वात्रवाहन क्रिताः॥

শ্রীরামঃ পু॰ রামচন্দ্রঃ। ইতি
শব্দরত্বাবলী।।

শ্রীলঃ ত্রি লক্ষীবান্। ইত্যমরঃ।। শোভাযুক্ত ক ।।

শ্রীলত। স্ত্রী মহাজ্যোতিয়তী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

श्रीविष्णः भू॰ विकृः ॥ विकृष्टि
इविष्णयः। मजू वक्षण्यः इविष्णयः।

मिक्गावर्खिलामावनी॥ व्यर्
जाःश्रकः। ইতি হেমচন্দ্রः ॥

मूक्रकार्डिमः। ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥

শ্ৰীবৎসকী বৃ হৃদ্বক্রাবর্ত্তহয়ঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। গ্রীবৎসভূৎ পু• বিষ্ণুঃ ইতি **८र्यम्बः** ॥

बीवध्मवाक्ष्मः भूः विकृ । रेखाः यतः॥ औव ९८मा बाक्ष्म कि इर यमा और प्रामाश्वाः। वक्तमा-নন্য ষহাপুরুষ লক্ষণ শ্বেতরো-মাবৰ্ত্ত দিশেষঃ শ্ৰীবৎস ইতি স ৰ্বে । শ্ৰীবৎসো হৃৎসঙ্গতমণি-বিশেষঃ কৌল্পভবদিতি ক্লফদা-मः। ইত্যমরটীকাষাণ ভরতঃ।। ब्योवध्याकः श्रु विकः। ইতি र्लायुधः ॥

ত্রীবরাহঃ পু॰ বিষ্ণু:। ইভি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ !!

এবিলী জী কণ্টকৰ্দভেনঃ। ७९ श्रांवः। शिववज्ञी २ कन्छे वली ७ भीवनी ८ जम्रा ६ कर्रे-कना ७ मूतादाश १। जागा গুণাঃ। কটুৰ । অমুৰ । বাত শোক ককাপহৰ্ক ॥ তৎ কল তেললেগম মত্যম রুচিক্কৎপ-इ। ইভি ब्राक्षनिर्यकः॥

শ্ৰীৰাটী জী নাগবদ্গীভেদঃ। ইভি রাজনির্যন্টঃ ॥

শ্রীরারকঃ পুণ সিতাবরশাকঃ। इंछि ब्राक्षियर्कः ॥

শ্রীবাসঃ পু॰ সরলবৃষ্ণরসঃ। টা-

व्रिमिन् रें छि जाया। उदमर्यायः । পাষসঃ ২ বৃকর্পঃ ৩ গ্রীবেন্টঃ 8 नतन जरः ৫। ইত্যমরः ॥ रिजनभरी ७ खीलिकः १। ই छि किंगिश्वः ॥ औरविभः ৮। देखि भक्तत्रवायनी ॥ जना खनाः । **এরাসঃ সরল পৃতিঃ সন্দু**রু প্রস্থিপণক । সিহ্লকঃ পরমা মাণ-मी (मरामांक मूता नथा। मर्द ২মী পরমালন্ধী রক্ষোমা স্বর-नामनाः। ইতি রাজবলভः॥ ष्यनाथ बीदियम्पदमं प्रस्वाः ॥ भद्य ।। **वि**क्ः। इंडि (यमिनी ॥ শিবঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শ্রীবাসাঃ পু॰ সরম্বাদ্ররঃ। ইত্য-यत्रिका ॥

खीविना जी महाविनावित्नवः। माजू जिस्त्रमूमती। जमाः यहेकिनम्राम् अष् वाष्ट्रा-ভিযা ন লিখিকাঃ। অথ গ্রী-विम्रा। তत्र त्मकः। खानार्वत । ভূষি শচ্জঃ শিবো মাষা শক্তিঃ क्रकाधमामत्नो। जर्काटखण्ड वि-ন্দুন্চ নবার্ণো মেরু রুচ্যতে।। ষহাত্রিপুরসুন্দর্য্যা মন্ত্রা মেরু সমুদ্ভবাঃ। সকলা ভূবনেশানী कारमणी वीजमूक्छ । जातन

जकना विष्णाः कथवावि वद्रान-त्न ॥ भका खर्वावर्षा २व॰ कलमरधा मूलाहरन । वाश्ववः পঞ্বৰ্ণাঢ্য কামরাজ মথোচ্য-তে।। गामनः गिरुटकाछः भि-वाखः भीनत्वाहत्न। कामत्राद्ध মিদ ভডে বড্বণ সৰ্মোহনু ।। শক্তিবীজ বরারোছে চক্রা-দ্য পৰ্মোছন । এতা মুপাস্য-**(मर्दिमा कामः मर्वाक्रमुम्बदः ॥** কামরাজে৷ ভবেদেবি বিদ্যেষ वक्षकिनी। वमार्थः। निक-রেকারঃ তুর্য্য ঈকারঃ তেন ক-কার একার ঈকার লকার মহা-याय। वाश्ववकृषे । निता रका-রঃ চন্দ্রঃ তেন হকার मकात लकात यशाया देखि কামরাজ কৃটি । চন্দ্রঃ সকারঃ তেন সকার ককার লকার ম-হামাযা ইতি শক্তি কৃটণ। তেন विजिः कृटिः कामब्राक्रविरंगं-यः॥ अ। जनाः शानः यथा। বালাৰ্ক মণ্ডলাভাসাণ চতুৰাহণ ত্রিলোচনা। পাশাঙ্কুশ শরা॰-শ্চাপণ ধারষন্তীণ শিবাণ এমে ৷৷ এবং খ্যাত্বা মানস পূজাদিকং वर्गा । रेडि ठवनातः॥

श्रीवृक्तः भू॰ व्यथ्यवृक्तः। देखि

रह्महन्तः ॥ विद्यवृक्तः। वशा ॥

देख मामामित्व शक्तः नवमा।

मार्जरमागवः। श्रीवृक्तः वाश
यामि पा॰ यावः शृकाः करता
मारुः॥ देखि विशामिण्डश्

শ্রীবৃক্ষকঃ পু॰ অশ্বস্যহদাবর্তঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডণেষঃ।।

প্রিবেন্টঃ পু॰ সরলবৃক্ষস্য নির্যাসঃ । ७९ भर्यायः । श्रीत्रस्ये। तृकः ধূপশ্চ চিতাগদ্ধো রসাযকঃ ! প্রীবাসঃ প্রীরসো বেফো লম্বী-विकेख विकेकः॥ विकेमाद्रा त्रगादवर्षः कीत्रगीर्यः मूथ्भकः । धृभाक खिलभर्ग मत्रेलाटका-नि रवाष्ट्रम् ॥ छम् छनाः। द्यीरव-ষ্টঃ কটু তিক্তশ্চ ক্ষায়ঃ শ্লেম পিত্তজিৎ। বোনিদোৰ রুজা-कीर्व जगन्नामान दिनायन् ॥ इंडि ब्राजनिर्यन्छः ॥ 🛊॥ जिन ह। শ্রীবাসঃ সরলঃ শ্রাবঃ শ্রীবেফৌ বৃক্ষধুপকঃ। শ্রীবাসো মধুর স্তি-कः निक्षाक खन्तः मतः ।१ পিত্তলা বাত মূর্জাকি স্বররোগ কফাপছ:। ব্লেগ হঞ্জী বেদ मिर्गका मूका कथू बन अनू ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ ।।

শ্রীশঃ পু॰ বিষ্ণুঃ।। শ্রীরাদঃ।
ইতি শব্দরত্বাবলী।।
শ্রীসক্তঃ ক্রী লবসং। ইতামরঃ।।
শ্রীসভোদরঃ পু॰ চন্দ্রঃ। ইতি

क्ति ॥

শিহনি জী বৃক্ষবিশেষঃ।
হাতিভঁডা ইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। ভূরুত্তী ২। ইত্যামরঃ
। নাগদন্তী ৩। ইতি জটাধরঃ।।
শ্রুণ গভৌ। ইতি কবিকল্পক্রমঃ।।
শ্রুবতি। রেফ রহিতোপ্যয় মিতি
কেচিৎ। শ্বতি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শ্রুণ ন পতো। শ্রুণতা। ইতি কবিকর্ম দেখা। ন শৃণোতি। রক্ষাণসীতি পুরাপি সংশৃণুমহে। ইতি মুরারো ব্যতীহারাদাঘানেপদ। সংশৃণুষ ম্যাখ্যাত। ইতি গণ্যতানিত্যঘাৎ। আভাত শব্দ্যা ক্রিয়াবিশেষণতন্য কর্মানা যা। ইতি দুর্গাদাসঃ।। শ্রুণারুঃ পুং বিকর্মত্বৃক্ষঃ। ইতি রন্ধ্যালা।। শ্রুণারিকা স্ত্রী স্ক্রিকাকারঃ। ইতি রন্ধ্যালা।।

শ্রুত ক্রী শাস্ত্রণ। ইতামরং।। শ্রুবনগোচরং। ইতি শব্দরত্বা-বলী।।

ঞাঁতঃ ত্রি অবধৃতঃ। ইতামরঃ॥ वाकर्निटः। देखि (यमिनी।। ঞ্ৰতকীৰ্ভিঃ স্ত্ৰী জনকভাতৃদশ-এজরাজকন্যা। সাশতুমপত্নী। ষধা। শত্রু মঞাপি ধর্মাত্মা অত্র-বীশ্বিথিলেশ্বরঃ। শ্রুতকীর্ত্তে র্ম-হাবাহো পাণি গৃহীয় পাণিনা ॥ इंडि बाब्बीकी एव ब्रामायत्व वा লকাণ্ডে ৭৩ সর্গঃ।। অপি চ। এব ভৰতু ভত্ত তে সশধ্জস্-তে ইমে। পত্নেগ ভজেতা॰ সহি-ভৌ শব্ৰুষ ভরতাবুভৌ ৷৷ ইতি छटेव १२ मर्गः ॥ प्रवस्ते भूः॥ কীর্ত্তিযুক্তে ত্রি। ইতি কেচিৎ।। क्षा अवस्थि। इंडि र्वित्रक्षः॥

শ্রুতবোধঃ পু॰ কালীদাসক্তত
• ছন্দোর্যন্থবিশেষঃ। যথা। ছন্দ
সা॰ লক্ষণ যেন শ্রুতসাত্তেণ

বুধাতে। তদহু॰ কথ্যিয়ামি

শুতবোধ মবিস্তরং।। ইতি ত
দ্রাস্থ্যাদ্যক্ষোকঃ।।

শ্রুতাদিঃ। ইতি ত্রিকাওশে

।। যথা। সংহিতা ঋষুজ্ব সামাণ সহিতা বৈষ্ণ শ্ৰুত্যবিভিঃ। সা-মান্যাবৈ ক্তান্তেৰ দৃশ্যন্তে দাপরে দিহ।। ইতি মাৎস্যে ১২০ অধ্যায়ঃ ।।

শ্রুত শ্রুবোনুজঃ পু॰ শনৈশ্রর-গ্রহঃ। ইতি হারাবলী।।

শ্রুতশ্রোণী স্ত্রী **ত্রবস্তী। ইতি** ভাবপ্রকাশঃ।।

ख्यानान की बन्नवामः। देखि हात्रावनी ॥

শ্রুতাধ্যয়নসম্পন্ধ ত্রি ধর্মশান্ত্রত্তঃ। বথা বাজ্তবন্ধ্যঃ। শ্রুতাধ্যয়ন সম্পন্ধাঃ জলীনাঃ সত্যবাদিনঃ। রাজ্ঞা সভাসদঃ কাব্যাঃ শত্রো মিত্রে চ বে সমাঃ।।
ইতি ব্যবহারতত্ত্বং।।

শ্রুতামিতঃ ত্রি শাস্ত্রজ্ঞঃ । বথা
। অভূন্পো বিবৃধস্থঃ পরস্তপঃ
শ্রুতামিতো দশরথ ইত্যুদাক্
তঃ ৷ গুণৈ ব্রু ভূবনহিত্ত্বলে
ন ষণ সনাতনঃ প্রিত্র মুপাগমৎ
স্ববং ৷৷ ইতি ভটিঃ ৷৷

শ্রুতার্থঃ পু॰ শান্ধবোধবিব্যী-ভূতার্থঃ । শ্রবণমাত্রবোধ্যো ২র্থঃ। যথা। শ্রুতার্থস্য পরি-ত্যাগাদশ্রুতার্থস্য কল্পনাৎ । প্রাপ্তস্য বাধাদিত্যেক পরিস-খ্যা ত্রিদোষিকা।। ইতি প্রাব-শ্চিত্ততত্ত্ব ।।

শ্রেতাযুঃ পুণ সূর্ব্যবংশীষরাজ-विटमवः। म जू जनमा ठजूमन-र्क्षा वर्षा नाजागणाय-রীবো ২ভূৎসিশ্বুদ্বীপ স্ততো ২-ভবৎ। ততঃ প্রতাযুঃ পুরো **२ ভূৎ ঋতুপাল স্ততো** ২ ভবৎ ॥ रेिं गाय्ता १७ वधायः ॥ ঞ্জুতিঃ স্ত্রী বেদং।। কর্ণঃ। ইত্য-মরঃ।। গর্ভস্থস্য পঞ্চনাসেঃ শ্রু-তি ভ্ৰতি। ইতি সুখবোধঃ॥ শ্ৰ-তীন্দ্রিয়গ্রাহঃ শব্যঃ শব্দদ্বাদিঃ । यथा। यानमा भारता भएका গন্ধত্বাদি রপি স্মৃতঃ। তথা র-সো রসজ্ঞায়া স্তথা শব্দোপি চ শ্রুতেঃ।। ইতি ভাষাপরিচ্ছেদঃ ॥ 🛊 ॥ कर्नग छञाछञ्ज्यकन মাহ। রক্তার পরুষ স্থাশ্রু কর্ণাঃ সূঃ পাপমৃত্যবঃ। নির্মাণ্টেস निव्विटि र्जागाः क्रमना रुष-कर्वकाः ॥ भ•अकर्नाम्ह त्राज्ञा-নো রোমকর্ণাঃ শতাযুষঃ। বৃ-इ ६ क शंक द्वा कादना धनिनः পরিকীর্ত্তিভাঃ।। ইতি গারুডে ৬৬ অধ্যাযঃ॥ 🗱॥ শ্রোত্তকর্ম

ग वार्डा। ইতি यिकिनी ॥ अवना-नक्ष्य । इंडि भक्तत्र वारकी ॥ यङ्कामगद्गिका। इंडि ट्य-চন্দ্রঃ॥ শোরৎ ইতি ভাষা। সা চ দ্বাবি॰শতি প্রকারা ষ্ণা। না-न्नी ठावनिका तमा ठ मूम्थी ठिखा বিচিত্রা ঘনা মাতঙ্গী সরসামৃতা मध्कती रेगजी निवा माधवी। বালা শার্সরবী কলা কলরবা याना विभाना ज्या মাত্ৰেতি শ্রুত্তযঃ পুরাণকবিভি দাবি॰শ-जिः कीर्छिजाः॥ नान्नी विभाना मुमूथी विठिता मखदः मना। यः ড্জে। মতো মুনীন্দ্রেণ ভরতেন मिद्रक है। हिंदा घना हानि-কা নিবেশাৎ সংজাযতে ২সৌ ঋষভ স্তথৈব। স্বরোপি মালা সরসা নিবেশাৎ গান্ধারনামা পৃথিতঃ পৃথিব্যা ।। মাতন্সী মাধ-বী মৈত্রী শিবাজাত স্ত পঞ্চমঃ। कला कलत्रवा वाला भार्त्रत्याञ्च পঞ্মः।। জাষামৃতা রসানাম্ব मः रगागारेक्वत्वस्य । याजा यथु-করী যোগাৎ নিষাদঃ সংপ্রজা-ষতে।। শ্রুতিস্থানে স্বরান্ বক্তৃণ নাল বক্ষাপি তত্ত্তঃ। জলে চ मुख्ता॰ यार्गा यीनाना॰ नाम

लकारा। भगतन शक्तिना संबंध তদত্ সরগতা শ্রুতিঃ। শ্রুতি ৰ্নাদৰশা প্ৰোক্তা তথাঢ্যা চ ক-লা মতা।। মথা তৈলগত সূর্গি র্যথা কান্তগতো ২নলঃ। জ্ঞায-তে ২ত্রোপদেশেন যথা স্বরগ-তা শ্ৰুতিঃ ।। বীণাদেস্ত শ্ৰুতি-জ্ঞান স্বর্জ্ঞানন্ত বংশজ । অ-শিনো বদবো রুডাঃ সহৈণা-**रहन ख्यान्दः ॥ अन्ननः**मु र्रातः র্নাদ মতো দাবি॰শতিঃ শ্রুতিঃ। इिंछ मङ्गीलमारगामतः ॥ 🕸 ॥ অনাচ্চ। তীব্ৰা সমুদ্বতী মন্দা ছন্দোবত্যস্ত ষড্জগাঃ। দযাব-তী রঞ্জনী চ রতিকা ঋযভে স্থি-তাঃ। রৌজী ক্রোধা চ গান্ধারে বজুকাথ প্রসারিণী। প্রীতিশ্চ মার্জনীত্যেতাঃ শ্রুত্বো মধ্যযা-মাশ্রিতাঃ।। ক্ষিতি রক্তা চ সন্দী-भीनग्रामाशी देहत शक्षरम। मन्म-স্থী রোহিণী রম্যেত্যেতা ধৈব-তসংশ্ৰষাঃ।। উগ্ৰাচ কোভি-ণীতি ছে নিষাদে বসতঃ শ্রুতী। ইতি সঙ্গীতরত্বাকরঃ॥

শ্রুতিকটঃ পুণ প্রাঞ্চলোহঃ।। অহিঃ।। পাপশোধনণ। ইতি মেদিনী।। আতিকটুঃ পু॰ কঠোরশকঃ।।
অলম্বারস্য দোষবিশেষঃ। ষথা
। অতিকটু শ্যুতসংস্কৃতি রক্তথেনাক্ত্যন্তিতা কবিষুক্ত বিসন্ধিকাঃ। উদাহরণং। বাচা মধুরমা
তবি শিতাপাস্তরঙ্গমা। মনাথদন মুজোল্য কার্ত্তার্থাণ সরু
মাদৃশঃ।। ইতি কাব্যচন্দ্রিকা।।
আতিকথিতঃ ত্রি অত্যুক্তঃ। বেদোক্তঃ। ইতি লোকপ্রসিদ্ধঃ।।
ক্রতিজীবিকা ত্রী ধর্মাশাস্ত্রণ।
যথা। স্মৃতি র্ধর্মসংহিতা চ সংহিতা অতিজীবিকা। ইতি
শন্মবন্থাবলী।। বেদজীবনোপার্শ্রাবলী।।

শ্রুতিতৎপরঃ ত্রি সকর্ণঃ। ইতি
জটাধরঃ।। বেদাভ্যাসরতশ্চ।।
শ্রুতিধরঃ ত্রি শ্রুতিমাত্রধারকঃ
। শ্রবণমাত্রেণাভ্যাসকর্ত্তা। জদৌষধণ যথা। হরি রুবাচ। হত্রিকর্ণস্য বৈ মূলণ গৃহীদ্বা চূর্ণবেদ্ধর। সর্বরোগ বিনিম্ক্তিণ
চূর্ণণ পলশতণ শিব।। সক্ষীরণ
ভক্ষিতণ সর্ব্যাৎ সপ্তাহেন বৃষ্ধানরণ শ্রুণ শ্রুণ মৃন্
পেন্দ্রগতি বিক্রমণ।। পদ্মগৌর
প্রতীকাশণ যুক্তণ দশশতাযুষা।

(वाष्णाकाकृष्ठिः विश्व ज्ञष्ठिः मृक्षरणाक्षिकः ॥ अधू मिनिः जन्मागुरुः कक्ष मानूकतः ज्ञर्वरः । ज्ञाकृष्ठः मन्वर्यन् महिनुगः ॥ क्याकृष्ठः श्राकृष्ठः श्राकृष्ठः । विश्व गाकृष्ठः । विश्व गाकृष्षः । विश्व गाकृष्ठः । विश्व गाकृष्णः । विश्व गाकृष्ठः । विष्व गाकृष्ठः । विश्व गाकृष्ठः । विष्व गाकृष्ठः । विष्व गाकृष्ठः

শ্রুতিবজ্জিতঃ ত্রি বধিরঃ। ইতি किरोधतः॥ त्यमत्रिक्षकः॥ শ্রুতিবেধঃ পু॰ কর্ণবেধঃ৷ তদ্য বিহিতকালো যথা দীপিকাষাণ । নো জ্যেন্দু ভ মাস সূর্য্য রবি-জ স্বাজাহ সুপ্তাচ্যুতে শস্তের্কে नयुयुवा विक् मृमूट याजाख-রাদিত্যভে। সৌমৈ জ্র্যায ত্রি-কোণ কণ্টকগতৈঃ পাপৈ স্ত্রি লাভারিগৈ রোজোব্দে শ্রুন্তি-বেধ ইজ্য দিতভে লগ্নে তু কা-লে শুভে।। ইতি জ্যোতিস্তব্ত্ত্ ॥ जनाका। তত্ত্ব তিথयः तिङ्गा-ভিন্নাঃ প্রশস্তাঃ। বারাঃ বৃহ-স্পতি বুধ শুক্রাণাণ প্রশস্তাঃ। নক্ষত্রাণি অশ্বিনী রেবতী হস্তা চিত্রা পুনর্বসু ধনিষ্ঠা মৃগশিরঃ ্পুষ্যঃ প্রবণানুরাধা উত্তরকল্প-याजी। नगानि वृष जूना धनू

र्भीन मण्डकानि। अयुश्चवर्ष। क्यमाम देव शोवाञ्चायन ভিন্ন মাসাঃ প্রশস্তাঃ। শুকুপ-কে চন্দ্রতারাদিশুকৌ হরিশয-ন ভিন্নকালে কালশুদ্ধৌ শ্ৰুতি-বেধঃ কাৰ্য্যঃ। ইতি জ্যোতিষণা। শ্রুতিকোটা স্ত্রী কর্ণকোটা-লতা। ইতি রাজনির্ধন্টঃ॥ শ্রুবঃ পু॰ ষাগঃ। ইতিজটাধরঃ ॥ সুবে ক্লী। ইতি কেচিৎ॥ শ্ৰুবা স্ত্ৰী মূৰা। ইতি রাজ-निर्घकः॥ শ্রেকাবৃক্ষঃ পু॰ বিকন্ধতবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ শ্রেটী স্ত্রী অঙ্কবিশেষঃ। তস্যা-

व्यं विश्व विश्व

७।३०।३६।२३।२४।०७। ৪৫। অথ তেষা পণকলিতৈ-क्यानि। ३। ८। २०। २०। ७७। ৫৬। ৮৪। ১২০। ১৬৫॥ তস্য শেষসূত্র ষথা ি করণসূত্র • সার্দ্ধ মার্যা। পাদাক্ষর মিতে शक्छ छन दर्भ कलक रय। बि-গুণে সমবৃত্তানা সংখ্যা তহুগো वर्ग वर्गका। यय शामाती मााजा॰ जर्कममानाथ विषया-**गा॰। উদাহরণ॰। সমানা মর্দ্ध-**जूनगानाः विषयानाः शृथक् शृ-थक्। वृज्ञानाः वन तम मः था। মনুফুপ্ছন্দসা ক্ত ।। ন্যাসঃ উত্তরো দ্বি ২ গুণঃ গচ্ছঃ ৮ लक्षा ममवृद्धानाः मःथा २६७ । তথাৰ্দ্ধসমানঞ্চ ৬৫২৮০ বিষ-মাণাঞ্চ ৪২৯৪৯০১৭৬০ ৷ ইতি नीनावजी ॥

শেকিঃ পু জ্রী নিশ্ছিত্রপণক্তিঃ
। তৎপর্য্যায়ঃ। পক্তিঃ ২ শ্রেণী
৩ বিঞ্জোলী ৪ বীথী ৫ আলিঃ
৬ পালিঃ ৭ আবলিঃ ৮ আলী
৯ পালী ১০ আবলী ১১ বীথিঃ
১২ বীথিকা ১৩ রাজী ১৪ রাজিঃ
১৫ রেখা ১৬ লেখা ১৭। ইতি
শক্ষরত্বাবলী ।। সমানশিলি

৬ পালিঃ ৭ আবলিঃ ৮ আলী
৯ পালী ১০ আবলী ১১ বীথিঃ
১২ বীথিকা ১৩ রাজী ১৪ রাজিঃ
১৫ রেখা ১৬ লেখা ১৭। ইতি
শব্দরত্বাবলী ।। সমানশিল্পি
সংহতিঃ। কম্পানি ইতি ইঙ্গরেজীয ভাষা। ইতি নেদিনী ॥
সেকপাত্র॰। ইতি বিশ্বঃ ।।
শ্রেণিকঃ পু৽ মগধদেশীযরাজবিশেষঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ ।।
শ্রেণী পু৽ জ্রী শ্রেণিঃ। ইতি
শব্দরত্বাবলী ।।

শ্রেষঃ ক্লী ধর্মাণ। মুক্তিঃ। ইত্যনরঃ।। শুভণ।। অতিপ্রশস্তে
ত্রি। ইতি মেদিনী।।

শ্রেষদী স্ত্রী হরীতকী। পাঠা।। করিপিগ্ললী। ইত্যমরঃ।। রামা। । ইতি বিশ্বঃ।। শুভযুক্তা চ।।

শ্রেষা শং পু বৃত্তার্হ দিশেষঃ। ইতি হেমচক্রঃ।।

শ্রেষান্^ন তি শ্রেষ্ঠঃ। ইত্যমরঃ॥ শুভযুক্তশ্চ।।

শ্রেষ্ঠ ক্লী গোদুগ্ধণ ইতি ত্রি-কাওশেষঃ।।

শ্রেষ্ঠঃ পু॰ জবেরঃ।। নৃপঃ।।
দ্বিজঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।
বিষ্ণঃ। ইতি তস্য সহসুনাম-

স্থোত্ৰ ॥

শ্রেষ্ঠঃ ত্রি প্রশস্তঃ। বরঃ। তৎ
পর্যায়ঃ। শ্রেয়ান্ ২ পুদ্ধলঃ ৩
সত্তমঃ ৪ অতিশোভনঃ ৫ ।
ইত্যমরঃ।। মুখ্যঃ ৬ বরেণ্যঃ ৭
প্রমুখঃ ৮ অগ্রঃ ৯ অগ্রহরঃ ১০
উত্তমঃ ১১ প্রগ্রহঃ ১২ অনুত্তমঃ
১৩ অগ্রীয়ঃ ১৪ প্রবেকঃ ১৫
অগ্রাঃ ১৬ অগ্রিয়ঃ ১৭। ইতি
শব্দরত্বাবলী ।। অনবরঃ ১৮
অগ্রিমঃ ১৯ প্রাগ্রঃ ২০ প্রাগ্রহরঃ ২১ প্রবর্হঃ ২২ । ইতি জটাধরঃ।। বৃদ্ধঃ।। জ্যেষ্ঠঃ। ইতি
শব্দরত্বাবলী ॥

শ্রেষ্ঠকাষ্ঠঃ পু॰ শাকবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শ্রেষ্ঠা দ্রী স্থলপদ্মিনী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ মেদ। । ইতি কেচিৎ ॥ উত্তমানারী চ ॥

শ্রেষ্ঠান্ন° ক্লী বৃক্ষান্ন°। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শ্রেষ্ঠাশ্রমঃ পু॰ গৃহস্থাশ্রমঃ। আশ্রমত্রযাণা পালকত্বাৎ।। শ্রেষ্ঠী পু॰ সলোত্তমশিল্পী। যথা । সলিকস্ত সলী শ্রেষ্ঠী সল-শ্রেষ্ঠিনি শিল্পিনা । ইতি জটা-ধরঃ।। শৈ স্বেদে। ইতি কবিকল্পক্রমঃ॥ শ্রাযতি রৌজালোকঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

শৈ ম পচনে। ইতি কবিকল দ্রুগানাসং।। মুর্গাদাসং।।

শ্রোণ ঋ সংঘাতে। ইতিকবিকর্মজনঃ । ঋ অশুশ্রোণৎ।
সংঘাতো রাশীকরণ । ইতি
দুর্গাদাসঃ ।।

শ্রোণঃ পু॰ পঙ্গুঃ। ইত্যমরঃ।। শ্রোণা স্ত্রী শ্রবণানক্ষত্রণা কাঞ্জি-কণ।। পক্টে ত্রি। ইতি কেচিৎ।।

শোণিঃ স্ত্রী কটিঃ। ইত্যমরঃ॥
সাতু গর্ত্তম্য মাসদ্বেদ ভবতি। ইতি সুখবোধঃ॥ পদ্মাঃ।
ইতি শব্দরত্বাবলী॥

শোণিফল॰ ক্লী কটিঃ 1 ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

শোণিফলক ক্লী কটিপার্শ্বঃ।
তৎপর্য্যায়ঃ। কটঃ ২। ইত্যমরঃ।। ফলক চর্মা তদাকারদ্বাৎ শোণিঃ ফলক মিব শ্রোণিফলক । কট্যতে আবিষতে
কটঃ কটে বর্ষা বরণযোঃ অল্
কটিঃ। ইতি কেচিৎ। ইতি
ভরতঃ।।

শোণিবিম্ব ক্লী কটিসূত্র । ইতি ধনপ্রমঃ ।।

শোণিসূত্রণ ক্লী থদ্মবন্ধনসূত্রণ।
পরতলা ইতি হিন্দীভাষা ॥
কটিবন্ধনসূত্রণ। বুন্শী ইতি
ভাষা। ইতি কেচিৎ ॥

শ্রোণ ঋ সংঘাতে। ইতিকবি- শ্রোণী স্ত্রী কটিঃ।। পভাঃ। ইতি ক্লেক্রনঃ । ঋ অশুশ্রোণৎ। ভরত দ্বিপকোষঃ।।

ক্রোভঃ ক্লী কর্ণঃ। নদীবেগঃ।
ইতি জটাধরঃ।। ই ক্রিব॰। যথা
স্থাক মকং করণং শ্রোভঃ খণ
বিষধী ক্রিব॰। ইতি হেমচক্রঃ।।
শ্রোতব্যং তি প্রবনীয়ণ। যথা।
অধ্যেতব্যং ন চান্যেন ত্রাহ্মণং
ক্রিবং বিনা। প্রোতব্য মিহ
শূদ্রেণ নাধ্যেতব্যং কদাচন ।।
ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বং।।

শ্রোতা ত্রি শ্রবণকর্তা। যথা।
অপ্রিষন্য চপথ্যস্য বক্তা শ্রোতা চ দুর্লভঃ। ইতি হিতোপদেশঃ।। পুরাণশ্রোভ্দ্বে প্রমাণ
মাহ। পঠেদর্থণ বুধ্যমানঃ প্রাব্যেষে নরোন্তমে। শ্রোতা তু
প্রাপ্রথো ভূষা শৃণুযাৎ ভক্তিতৎপরঃ।। ইতি পান্মেপাতালথণ্ডে ৭১ অধ্যায়ঃ।।

ट्याब॰ क्ली कर्ने । इंडामद्रः ॥

শোত্তিযতা। ইতি ত্রিকাণ্ড শেষঃ।।

শ্রোত্তিয়ঃ পু॰ বেদাধ্যেভূত্রান্ধণঃ । তৎপर्यगयः। ছान्ममः २। ইত্যমরঃ ৷৷ ভাষতে ধর্মাধর্মাব-নেন ইতি শ্রোত্রো বেদঃ বাসু সিতিত্ৰঃ শোত্ৰণ বেত্তি অধীতে বা শ্রোত্রিয়ঃ ঢ ষেকাদিভি ইষঃ १ इत्ना श्वीत्व देवार्थ देत ছন্দঃ শব্দস্য শ্রোত্রাদেশঃ। ইতি পরে। ছন্দো বেত্তি অধীতে বা ছান্দসঃ। ইতি পূৰ্বেণ ষ্ণঃ। ইতি ভরতঃ।। ৠ।। তস্য লক্ষণ যথা। জন্মনা বান্ধণো ভেষেঃ সংস্কা-রৈ ধিজ উচ্যতে। বিদ্যাভ্যা-সী ভবেদিপ্রঃ শ্রোত্রিষ ব্রিভি রেব হি॥ ইতিপাদ্মে উত্তরখণ্ডে ३३७ जशायः ॥ यानदि यार्कः (अयभू तार्व ठारभाव । । • ।। অপি চ। একা॰ শাখা॰ সকরা॰ বা ষড্ভি রঙ্গৈ রধীতা চ। ষট্-কর্ম্ম নিরতো বিপ্রঃ শ্রোত্রিযো नाम धर्माविष ॥ ইতি দানকম-लाक्तः॥

শোত্রিযতা স্ত্রী শোত্রিযধর্মঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। শ্রোত্র॰ ২। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। শ্রেতি ক্লী গার্হপত্যাহবনীয়
দক্ষিণাগ্নয়ঃ। যথা। ত্রয়ো ষেগার্হপত্যাহবনীয় দক্ষিণাগ্নয়ঃ।
ইদু মগ্লিত্রিক শ্রেটিত ত্রেতাগ্নিহোত্র মিত্যপি॥ ইতি জ্লিটাধরঃ।

শ্রোতঃ ত্রি শ্রুতিবিহিতধর্মাদিঃ । सथा। धर्मादेख विहिट्छ। धर्माः **ब्लो**ङः मार्खा विषा विरेकः। দানাগিহোত্রসম্বন্ধ মিজ্যা শ্রৌ-তস্য লক্ষণ ।। স্মার্কো বর্ণাশ্র-মাচারে। যমৈশ্চ নিষমৈ র্যুতঃ। পূৰ্বেভ্যো বেদ্যিত্বেহ শ্ৰৌত मश्चर्या १ क्वत्।। भटा य-জূংষি সামানি বন্ধণোঙ্গানি সা শ্রুতিঃ। মন্বস্তরস্যাতীতস্য স্মৃ-দ্বা তম্মনু রববীৎ।। ততঃ স্মার্ত্তঃ স্মৃতো ধর্মো বর্ণাশ্রম বিভাগ भाः। এব॰ বৈ দিবিখো ধর্মাঃ শিষ্টাচারঃ স উচ্যতে ৷৷ বিজ্ঞে-যঃ প্রবণাৎ শ্রোতঃ স্মরণাৎ স্মার্ত্ত উচ্যতে ॥ ইজা বেদাত্ম-কঃ শ্রেতঃ স্মার্ত্তো বর্ণাশ্রমাদ্ম-কঃ।। ইতি মাৎস্যে ১২০ অধ্যা-যঃ।। অপি চ। অধিকরণমালা-কুঝাধবাচার্য্যধৃত পরাশরভা-ষ্যে শাতাতপঃ। শ্রোত কশ্ম

স্বাণ স্বাগদন্যোপি স্মার্ত্ত মাচ-রেং। অশক্তো শ্রোত মপ্যন্যঃ স্ব্যাদাচার মন্ততঃ।। ইতি তি-থ্যাদিতত্ত্বং ।।

শ্রোত্ত ক্লী কর্ণঃ। শ্রোত্তিযকর্ম । তৎপর্য্যায়ঃ। শ্রোত্তিয়তা ২ । ইতি শব্দরত্বাবলী।। শ্রোত্ত-কর্ম্ম চ।।

শ্রোষট্ ব্য॰ দেবহবিদ্যান । ইত্যমরঃ।। দেবহবিদ্যান ই-ত্যনেনায মন্ত্রঃ সুচিতঃ। ইতি ভরতমত ।।

শ্রাহ্ব ক্লী পদা । ইতিকেচিৎ।।

শ্লক ই ও সপে। ইতিকবিকল
দ্রুষ্ণ অন্ত্যুস্ত্তীযবর্ণযুক্তাদিঃ। ই শ্লক্ষাতে। ও শ্লক্ষতে।

সপো গতিঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

क्षभ है बिष्क । है कि कि विकन्न-फ्रियः ॥ व्यस्त्र खुर्चीयवर्ग युक्क जानवाकिः । है क्षम्रात्व । है जि मूर्गामामः ॥

শ্বথ ৎক' দৌৰ্বল্যে। ইতিকবি-কল্পদ্ৰমঃ ।। অন্তাস্থত্তীযযু-ক্তাদিঃ। ক শ্বথযতি। ইতি দুৰ্গাদাসঃ ।। '

अथः जि निथिनः। यथा। नि-थिनः अक्षयः अथः। ইতি জটা- थतः ॥ मूर्वनः । ইতি अथशाष-थनम्नार ॥

শক্ত তি অন্নং। ইত্যমরং।।
মনোহরং। ইত্যুণাদিকোষঃ।।
শক্ষকং লী পুণকলং। ইতিরাজনির্ঘণটঃ॥ মনোহরঞ্।।

শ্লক্ষ পুণ অশান্তক বৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। সৃন্দর বন্ধল শ্চা। শ্লাথ ঋ ব্যাপ্তো। ইতি কবি-কল্পক্রমঃ।। অন্তান্ত তৃতীয় যুক্তঃ । ঋ অশ্লাখৎ। ইতি দুর্গা-দাসঃ।।

শ্লাষ ঋ ও কথনে। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ।। অন্তান্তত্তীয়যুক্ত
ভালব্যাদিঃ। কথন প্রশাশনা।
ঋ অশ্লাষ্থ। ও শ্লাষ্তে গুণিন ও
গুণী। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শ্লাঘা দ্রী প্রশংসা।। পরিচর্বনা
। অভিলাসঃ। ইতি মেদিনী।।

শাঘ্যঃ ত্রি শ্লাঘনীয়ঃ। প্রশংস্যঃ
। যথা। গৌরবিত। স্থাচার্য্যনিশ্রোঃ শ্লাঘ্যা স্তত্তভবন্মুখাঃ।
ইতি ত্রিকাঙ্গোষঃ।।

প্লিকু ক্লী জ্যোতিঃশাস্ত্রণ। ইত্যু-ণাদিকোষঃ।।

ল্লিকুঃ পু॰ ভ্তাঃ। ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তিঃ।। বিজঃ। ইত্যুণাদিকোষঃ ।।

শ্লিষ উ দাহে। ইতি কবিকল্প
দ্রুনঃ ।। অন্ত্যুস্তত্তীযযুক্তঃ ।
উ শ্লেষিত্বা শ্লিফুন। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

ন্নিষ ঔষ ৯ ঞি শ্লেষে। ইতি
কবিকল্পদ্দমঃ।। অন্তান্থত্তীযযুক্তাদিঃ। ঔশ্লেফা। য ন্নিষ্যতি
। ৯ অন্নিষ্ৎ। আলিঙ্গনে তু
অন্নিক্ষৎ। ঞি ন্নিফৌ ২ন্তি।
শ্লেষ আলিঙ্গনা। তচ্চ বাহুত্যা
নেব কঢ়া। ন্নিষ্যতি কামপীতি
জযদেবঃ। প্রাপ্তাবপ্যয়ণ। ন্নিয্যতি বৃক্ষণ লতা। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শ্লিষ ক্ শ্লেষে। ইতি কবিকল্প
ক্রমণ । অন্তাঙ্গতৃতীযযুক্তঃ ।

ক্লেষ্যতি। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ ॥

শ্লিষা স্ত্রী আলিঙ্গনং । ইতি

ক্রিকাণ্ডশেষঃ ॥

নিউঃ ত্রি শেষযুক্তশব্দাদিঃ।
ভিন্নার্থ কৈককপানিতবাক্যণ।
তস্য লক্ষণ যথা। নিউ মিষ্ট
মবিষ্পান্ত মেককপান্বিতং বচঃ।
ইতি সরস্বতীকঠাভরণং।।
দ্বীপদং ক্রী স্কীতপাদাদি। গোদ

ইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। পা-

प्रवाहित र १ विक (इमहन्यः ॥ অথ শ্লীপদাধিকারঃ। তত্র শ্লী-शनगा विश्रक्षे निमान गार्। পুরাণোদক ভূষিষ্ঠাঃ সর্বর্ভুষু চ শীতলাঃ। যে দেশা স্তেষু জায-खि भीनानि वित्नवङः ॥ वि-শেষত ইতি বচনেনান্যত্রাপি শ্লীপদ ভবতি ইতি বোধ্যতে ॥ 🗱 ॥ मायाना॰ लक्ष्म भार । যঃ সম্বরো বংক্ষণজো ভূশার্তিঃ শোথো নৃণা॰ পাদগতঃ ক্রমেণ। তৎ শ্লীপদ স্যাৎ কর কর্ণ নেত্র শিস্মোষ্ঠ নাসাস্বপি কেচিদাহঃ ॥ 🗱 ॥ তৎ ত্রিবিধণ। বাতিকণ পৈত্তিক॰ শ্লৈষ্মিকঞেতি। তে-ষা॰ লক্ষণ মাহ। বাতজ্ঞ ক্ল ৰাক্ষণ হি স্ফুটিতণ তীত্ৰবেদনণ। অনিমিত্তরুজ চাস্য বহুশো জ্বর এব চা। পিত্তজ্ পীত সঙ্কা-শ॰ দাহ জ্বযুত ভূশ। স্লৈয়ি-কর্ম্ব ভবেৎ স্লিগ্ধ তথা পাণ্ডু গুৰু স্থিরণ। ত্রীণ্যপ্যেতানি জা-नीया श्लीनमानि करकाष्ट्रया । शुक्रवृक्ष गर्वक गयानास्टि वि-ना कका ९ ॥ अ ।। जनाश गाइ ৷ বল্মীক মিব সংজাত কণ্টকৈ রুপচীযতে। সর্বাত্মক মহত্তম

वर्ष्क्रनीयः वित्नयण्डः ॥ यथ स्न-चनाशत विशतकारें कींड॰ তথা ভূরিকফস্য পু॰সঃ। সাসা-ব মপ্যত্ৰ তু সৰ্বলিঙ্গ সকণ্ডুকণ वालि विवर्क्कनीयः॥ 🛊 ॥ भी-পদস্য চিকিৎসা৷ লজ্মনালে-পন স্বেদ রেচনৈ রক্তমোক্ষণৈঃ ा थायः सामार्देत कृतेषः भी-शकः मयूशाहरम् ॥ ३॥ मि-ক্ষাৰ্থ শোভাঞ্জন দেবদাৰু বি-(श्रोषरेश मृ व स्टिंडः श्रीवारम्प 1 পूनर्वा नागत मर्यभागा क-ক্ষেন বা কাঞ্জিকমিশ্রিতেন॥ ২ ।। भ्लीशन भिक्ति लंगिकः।। धकृरेत-त्र निर्श्व वर्षाज् मिशु गर्य-লৈঃ। প্রলেপঃ শ্লীপদ হন্তি চি-ব্লোত্থ মপি দারুণণাতা৷ অসাধ্য মপি যাত্যন্ত শ্লীপদ চিরকা-লজ । মূলেন সহচরাযা স্তাল-মিশ্রেণ লেপনাৎ ।। তালস্য ফলরসো গ্রাহঃ ॥ ৪॥ সপ্তলা স্থূলপত্রাণাণ কল্কণ তপ্তেন বারি-ণা। সংসৃষ্ট লবণোপেত সেবি-ত শ্লীপদ হরেৎ ।।৫।। শাখো-ট বন্ধলম্বাথ গোমূত্রেণ যুত্ত शिरवर। भीभमाना विनामाय েমদোদোষ নিবৃত্তযে।। ৬।। র-

জনী গুড সংযুক্তা গোমূত্রেণ निरवद्यतः। पर्साथः भीशमः इ-खि मक्त अष्ठे॰ वित्मवंदः ॥ १॥ वर्षाज् विकलाहू नं शिक्षना म-र याजिन। मक्की ज॰ भी भार লিছাৎ চিরোখ স্নীপদ জ-(सर्।। ৮॥ भन्नई उनिका॰ ছরীতকী গোষুনা পিবতি । দ্লীপদ বিষশ্ধসূক্তো ভবভ্যদৌ সপ্তরাত্তেণ ॥ গদ্ধর্বতৈল এ-রওতৈল । গোসুনা গোমূত্রেণ ॥ ३ ॥ इंडि भील नाधिकां तः । ইতি ভাবপ্রকাশঃ ॥ 🕸 ॥ তন্য কর্ম্মবিপাকো যথা। গোতমো-পি ক্লচিদ্বিশেষ মাহ। অনৃতবা-श्वा पूरु गुरुः मः नग्रावाक्-कत्नामत्त्रा मात्रजाभी कृषेमा-की भीभिनी। देखि मिखाकता-याः आयन्छिलाशायः ॥ कृषे-माकामा मूत्रांभानमगरवनान्-. পাতকত্বাৎ তৎকর্মজন্য স্লীপ-দরোগযুক্তেন পরাকবত ক-र्खवाः। ইতি मन्नामियणः॥ দ্লীপদপ্রভবং পু॰ আমুবৃক্ষঃ। ইতি শব্দমালা।। भ्रीभमाभरः भू॰ भूलकीरवृकः। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ৷৷

भीनः वि नचीवान्। ইতি **बील मक जिका या॰ या मी ।।** स्मियः श्रु॰ म॰रयागः। তৎপर्यायः । मिक्षिः २। देखायतः ॥ मारुः ॥ जानिकनः। देखि क्षियशावर्ष मर्गना ।। ।। भकालकात्रवि-**भियः।** जमा नक्षनामि र्यथा। বাচ্যভেদেন ভিন্না যদ্যুগপদ্তা-যণ স্পাঃ। শ্লিষান্তি শব্দাঃ শ্লে-ষো ংসাবক্ষরাদিভি রম্ভধা ॥ অর্থভেদেন শব্দভেদ ইতি দ-শনে কাব্যমার্গে স্বরোন গণ্য-তে ইতি চ নযে বাচ্যভেদেন ভিন্না অপি শব্দা যদ্যুগপদুচ্চা-রণেন শ্লিষ্যস্তি ভিন্ন স্বৰূপ ম-পত্ৰতে স শ্লেষঃ।। 🟶।। স চ বর্ণ পদ লিঙ্গ ভাষা প্রকৃতি প্রত্যয বিভক্তি বচনানাণ ভেদাদফথা । क्ट्रिंगिमाञ्ज्रनः। जनकातः শঙ্কাকর নরকপাল পরিজনো বিশীৰ্ণাঙ্গো ভূঙ্গী বসু চ বৃষ এ-কো বহুবযাঃ। অবস্থেষ স্থা-ণো রপি ভবতি সর্বামরগুরো ৰ্বিধৌ বক্তে মূৰ্দ্ধি স্থিতবতি বয়ং क भून तभी।। भृथूकार्छम्रत-পাত্রণ ভূষিত নিঃশেষ পরিজ-न॰ দেব। विलम ९ करत्र गूग इन॰

मन्युं ि मय यावरवाः महनः ॥ ভক্তিপ্ৰস্থ বিলোকন প্ৰণ্যিনী नीलाएभन न्मिक्ती शाना-লম্বনভা॰ সমাধিনিরতৈ নীতে হিতপ্রাপ্তবে। লাবল্যৈকমহা-निधी तमिक्छा॰ नन्तीपृत्ना ख-মৃতী যুমাক সরুতা ভবার্ত্তি-শমন নেত্ৰে তনু ৰ্বা হরেঃ ৷৷ এষ এব বচনঞ্চেষোপি॥ মহদে সুর সন্ধব্মে ত মর্ব সমাসং গ্রাগমা হরণে। হর বহু সরণ ত চিত্ত মোহ মবসর উমে সহসা।। অয় সৰ্বাণি শাস্ত্ৰাণি হৃদি জেবু চ বক্যতি। সামর্থ্যক্রদমিত্রাণাণ মি-ত্রাণাঞ্চ নৃপাত্মজঃ।। রজনিরম-नरमोरनः भामभद्यावरनाककन-সমযপরাপ্তা পূর্বসম্পৎ সহসূ । প্রথম নিবহ মধ্যে জাতু চিত্তপ্র-সাদাদহ মুচিতরুচিঃ স্যান্ত্রন্দিতা সা তথা মে।। সর্বস্ব॰ হর সর্বস্য षः जवत्क्रमञ्चनदः। नरयाभः কারসাম্মুখ্য মাধাসি তনুবর্ত্তন॰ ৷৷ ভেদাভাবাৎ প্রক্নত্যাদে র্ভে-रमानि नवस्या ভবে ।। नवस्या-পীত্যপি ভিন্নক্রমঃ। উদাহরণ। যো ২সকুৎ পরগোত্রাণাণ পক্ষ-(फ्रांक्यक्यः। <u>अं</u>डिक्रिडा॰

বিভূদিবুধেন্দ্রঃ স রাজতে ৷৷ অত্র প্রকরণাদি নিষ্মাভাবাৎ দাব-शारथी वारको । नन् **स्रतिका** नि শুণভেদাৎ ভিন্ন প্রযন্ত্রোচ্চার্য্যা-ণাণ তদভেদাদভিন্ন প্রয়েজান ৰ্য্যাণাঞ্চ শব্দানা বন্ধে খনিয-মেনালস্বারান্তর প্রতিভোৎপ-खिरङ्कुः। भक्तास्य शर्यकः বংশ্চতি দ্বিধা ২প্যয় মর্থাল-কার মধ্যে গণিতো হন্যৈ রিতি কথ ময় শকালকারঃ। উচ্যতে। ইহ দোষ গুণালক্ষারাণা শব্দার্থ গতত্বেন যো বিভাগঃ সো ২ম্বয ব্যতিরেকাভ্যা মেব ব্যবভিষ্ঠতে । তথारि करुषानि गाउषानान्-প্রাসাদযো ব্যর্থত্বাদি প্রৌতত্বা-দ্যুপমাদ্যঃ সদ্ভাব তদভাবানুবি-ধাযিত্বাদেব শব্দার্থগতত্ত্বন ব্যব-স্থাপ্যন্তে। তথাছি। স্বযঞ্চ পল্লবা-তামু ভাস্বৎকর বিরাজিতা। ই-ত্যভহ্নেষ্য। প্রভাত সন্ধ্যে বা শ্বাপ ফললুন্ধে হিতপ্রদেতি স-**७क्र** नक्ट स्मर्य त्कि जि वादिश न-কৈকসমাশ্রযাবিতি ছযে। রপি শक्टसयञ्च मुर्गरायः। नञ्चामाः-मा। थटक्षवज्रः। व्यथटक्षयमा जूम বিষয়ঃ যত্র শব্দপরিবর্ত্তনেপি ন

লেষত্ব খণ্ডনা। যথা স্তোকেনো-গ্যতি মাযাতি স্তোকেনাযাত্য-ধোগতি । অহে। স্বসদৃশী বৃত্তি खनारकारिः थनमा ह। देखि । নচাষ মুপমা প্রতিভোৎপত্তি-হেতুঃ শ্লেষঃ। অপি তু শ্লেষপ্র-তিভোৎপত্তিহেতু রুপমা। তথা-हि। यथा कमल मित मूथ मदना-জ্ঞ মেতৎ কচতিতরা মিত্যাদৌ গুণসাম্যে ক্রিযাসাম্যে উভয্-সাম্যে বা উপমা তথা সকলক-লং পুরমেতজ্জাতং সংপ্রতি চ সি-তাণ্শুবিশ্বমিবেত্যাদৌ শব্দমাত্র সাম্যেপি সা যুক্তৈব তথা হ্যক্ত**॰** क्रफटिन। ऋूठे॰ वर्थानकातीत्व-তাবুপমা সমুচ্চযৌ কিন্তু। আ-শ্রিত্য শব্দমাত্রণ সামান্য মিহাপি সম্ভবত ইতি। নচ কমল নিব মুখ মিত্যাদি সাধারণধর্ম প্রযোগ-শূন্য উপমাবিষয় ইতি বক্তুণ युक्कः शृर्णाश्रमाया निर्विषयञ्चा-পত্তেঃ৷ দেব স্বনেব পাতাল মা-শানাণ ত্ব নিবন্ধনণ। ত্বঞ্চামর মরুভূমি রেকো লোকত্রযাত্মকঃ । ইত্যोদি শ্লেষमा চোপনাদ্যল-ক্ষার বিবিক্তোন্তি বিষয়ঃ। ইতি দ্বযোর্যোগে সঙ্কর এর উপপত্তি

পৰ্য্যালোচনে তু উপমাষা এবা-य॰ यूट्डा विषयः अनाया विषया-পহার এব পূর্ণোপমাষাঃ স্যাৎ। ন চ অবিন্দু সুন্দরী নিত্যু গললা-বণ্য বিন্দুকেত্যাদৌ বিরোধপ্রতি-ভোৎপত্তিহেতুঃ শ্লেষঃ। অপি তু শ্লেষপ্রতিভোৎপত্তিহেতু বি-রোধঃ। নছত্রার্থদ্বপ্রতিপাদ-কঃ শব্দঃ শ্লেষঃ দ্বিতীয়ার্থস্য প্র-তিভাত মাত্রস্য প্ররোহাভাবাৎ! ন চ বিরোধাভাস ইব বিরোধঃ। শ্লেষাভাস ইব শ্লেষ স্তম্মাদেব-মাদিষু বাক্যেষু শ্লেষপ্রতিভোৎ-পত্তিহেতু রলকারান্তর মেব সা-ধীযঃ। তথা চ সদ্বংশমুক্তা মণি नीनाः कवि तिव खन्नदक्षादका एनव মহান্ ভবান্। অনুরাগবতী म-স্ক্যা দিবস স্তৎপুরঃসরঃ। অহে। দৈবগতি শ্চিত্রা ন তথাপি সমা-গমঃ।৷ আদাষ চাপ মচল ক্র-षाशीन । ७१ विमममृष्टिः। य শ্চিত্র মচ্যুতশরো লক্ষ মভাজ্ঞী-লম স্তবৈশ্ব।। ইত্যাদাবেকদেশ-বিবর্ত্তিৰূপ শ্লেষ্ ব্যতিরেক সমা-সোক্তি বিরোধত্ব মুচিত ন তু শ্লেষত্ব॰ শব্দলেষ ইতি চোচ্যতে ৷ অর্থালম্বার মধ্যে চলক্ষত ইতি

কোষণ নয়ঃ কিন্তু বৈচিত্ৰ্য মল-শারঃ ইতি যত্তৈব কবি প্রতিভা-সংরম্ভগোচর স্তব্রৈব বিচিত্রতে-তি দৈবালকারভূমিঃ। মুখ মপেকিত্ব মেতেষাণ শব্দা-ना मिछि हि अनुश्रामानीना মপি তথৈবেতি তেপ্যর্থালঙ্কা-রাঃ কি॰ নোচ্যন্তে রসাদি ব্য-ঞ্জক স্বৰূপ বাচ্যবিশেষ ব্যপে-क्ष्णिन्थामामीना ननहात्रा नक छन प्लायाना मनार्थातन-कटियव धनामाया । व्यर्थ धन मियानकातानाः नमारायन्यः ৰ ব্যবস্থিতি রিতি তেপি শব্দ-गण्यानागुन्। विरशे वर्त्व মূর্দ্ধি স্থিতবভীত্যাদে চ বর্ণাদি-स्मारम अकश्रयद्वाकार्यप्रव १-র্থশ্লেষত্ব॰ শব্দভেদেপি প্রসজ্য-তামিত্যেবমাদি স্বয় বিচার্য্য । ইতি কাব্যপ্রকাশে শব্দালম্বা-त्रनिर्णया नाम २ उल्लामः ॥ **(क्षेत्रकः পू॰ क्यः। ই**ভি শব্দ-ठिखका ॥ खी यन्निका ॥ क्लिकी । इंडि विश्वयमित्नो॥ क्षिय-নাশকে ত্রি।। শ্লেমমী স্ত্রী জ্যোতিঘতী। ইতি

জটাধরঃ।। মলিকা। ইতি মে-দিনী।। ত্রিকটুঃ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

टक्षयनः जि ककी। इंडामतः ॥
टक्षयना जी वृक्षवित्यसः। यथा
१ श्रुक्षकः स्वर्णनी ह दक्षयना ह
वृषाणि ह। इंडि भक्षयाना ॥

শ্বেমালঃ ত্রি শ্বেমাযুক্তঃ। ইত্য-মরঃ।।

শ্রেষালঃ পু॰ বৃক্ষবিশেষঃ। বহু-যার ইতি খ্যাতঃ। ইতি শব্দ-ঢন্দ্রিকা।।

শেষ ইং পৃং কট্ফল কৃষ্ণঃ। ইতি
শব্দ চন্দ্রিকা।। কফনাশকে ত্রি
শেষা পুণ কফঃ। ইত্যমরঃ।।
তস্য প্রকোপ হেতু র্যথা। গুরু
মধুর রসাতি মিগ্ধ দুগ্ধেক্ষু ভক্ষ্য
দ্রবদধি দিননিদ্রা পূপ সর্পিঃ
প্রপূরিঃ। তুহিনপতনকালে
শেষাণঃ সংপ্রকোপঃ প্রভবতি
দিবসাদৌ ভুক্তমাত্রে বসস্তে
। ৠ।। তস্য লক্ষণং যথা। কৈ
মিত্যং মধুরাস্যতা শিশিরতা
শৌরুয়ং প্রদেকো মলপ্রাচুর্যাং।
স্থিরতা রসশ্চ লবণঃ কণ্ডু রতিস্বরতা। আলস্যং চিরকারিতা
কঠিনতা শোধারুচিঃ বিপ্রতা

তক্রা তৃপ্তাপদেহ কাস গুরুতা এতাঃ কফোকা রুজঃ ॥ 🟶 ॥ অস্য প্রশমতাকারণ যথা ৷ গুরু শীত মৃদু সিগ্ধা মধ্র স্থির পি-চ্ছিলাঃ৷ স্লেম্বৰঃ প্ৰশ্ৰণ যাস্তি विপরীভগুণৈ खंगाः॥ कक कात কষায় ভিক্ত কটুক ব্যাষাম নি-ষ্ঠীবন জীদেবা ধনি যুদ্ধ জাগ-র রতিক্রীডা পদাখাতন । ধূনা-ত্যুক্ষশিরো বিরেক বনন যেনো-পনাহাদিক পানাহার বিহার ভেষজ মিদ প্লেমাণ মুগ্র জ-(य ।। कः।। य ह शक्वित्या यथा **। অবলম্বক ইভ্যেকঃ ক্লেদকঃ শ্লে-**শ্ম:কাপরঃ। বোধক স্তর্পকন্চেতি टक्षमा शकविषः मृण्डः ॥ कः ॥ ७-তেষা' লক্ষণানি যথা। কফ ধায়া-ম্ভ শেষাণা॰ যৎকরোত্যবলম্বন॰ । ভতো ২বলম্বকাখ্যাতি॰ শ্লেম্মা প্রাপ্নোভাুরঃ স্থিতঃ ।। ১।। আ-নাশবাশ্রিতঃ সো ২ন্নক্রেদনাৎ क्रिंगकः युडः । २। क्षियकः क्षि-ষণাৎ সন্ধেঃ স চ সন্ধ্যাণ ব্যবস্থি-তঃ॥ ৩॥ রসনাবস্থিত স্তেম বো-ধকো রসবোধনাৎ । ৪। শিরসি প্রস্থিত শ্চাসৌ তর্গকো নেত্র তৰ্গণাৎ ৷৷ ৫ ৷৷ ৠ ৷৷ অস্য স্থানা-

নি। উরঃ কণ্ঠ শিরঃ ক্লোম পর্বা-न्यामान्यात्रमः। त्यामा ब्रानकः জিহ্বাচ কফস্থান মুরঃ পরণাঞ্চা৷ **७**९ প্রকৃতিকলকণ । গম্ভীরবু-দ্ধিঃ স্থূলাক্ষঃ স্লিগ্ধকেশো মহাব-লঃ। স্বপ্নে জলাশ্যালোকী শ্লে-ম্বপ্রকৃতিকো নরঃ।। 🕸।। স্নেহো বন্ধঃ স্থিরত্বঞ্চ গৌরবং বৃষ্যতা ব লং৷ ক্ষমা ধৃতি রলোভশ্চ কফ-কর্মাবিকারজে।। ইতি সুখবোধঃ ॥ 🗱 ॥ क्षियकत्र जवगिव यथा। ভোজনানন্তর সান জলপান বিন। তৃষা। তিলতৈল প্ৰশ্বাতে-ल॰ त्रिक्षगागलकी जव॰ ॥ शर्या वि তান্ন° তক্রঞ্চ পক্ষরম্ভাকল° দধি। মাযায়ু শর্করাতোবং সুল্লিঞ্চল-সেবনং ৷৷ নারিকেলে দরু কক-স্নান পর্যাষিত জল। তরু মুঞ্জা প্ৰকল শূণক্ৰক্ৰ টীকল ৷৷ খাতসানঞ্ ব্রাসু মূলক° শ্লেম-কারণং। তজ্জলং বন্ধরন্ধে চ ম-र्घीराविनामनः ॥ 🗱 ॥ स्मा नामकज्ञवानि यथा। वङ्किरत्रमः ভৃষ্টভঙ্গণ পঞ্চতৈলণ বিশোষকণ। ভূমণ শুদ্ধভক্ষাঞ্চ শুদ্ধপক্ষ্রী-তকী ৷৷ পিণ্ডারক মপক্তঞ্চ রম্ভাক-ল মপঞ্চক । বেশবার সিন্ধবার-

মনাহার মপানক।।। স্তৃত রো-চনাচূর্ণ সঘৃত শুষ্কশর্করণ। মরী-চণ পিপ্ললীণ শুষমার্ডকণ জীরকণ মধু।। দ্ৰব্যাণ্যেতানি গন্ধৰি স-**माःक्षिय**रतानि ह। देखि बन्नदेव-বর্ত্তে ব্রহ্মখণ্ডে ১৬ অধ্যায়ঃ।।।।।। অপি চ৷ সার্যপতৈল ১ তৈলা-ভ্যঙ্গঃ ২ উদ্বৰ্ত্তনণ ৩ শৈশিরজ-লং ৪ বাপ্যজলং ৫ কৌপজলং ৬ देनर्अंत्रकल॰ १ नात्मयकल॰ ৮ मा-गारनगारकानक॰ २ विरमस्टः-পাদশেষাফোদকণ ১০ পেষিত-বচামুস্তকনংযুক্তজলমানং অন্তরু ১২ সন্ধুমণ ১৩ পত্রকণ ১৪ কক্ষোলণ ১৫ শটী ১৬ দগ্ধভূমি-জাতশালিধান্যণ ১৭ অতিরোপ্য-थाना॰ ३৮ यवः ३२ मागमाक्था-नाः २० क्लिप्यवधानाः २३ कञ्रु-ধান্য ২২ হস্তিশ্যামাকধান্য २७ চीनकथानाः २८ मुलाः २৫ মুদ্রন্ত ২৬ রাজমায়ঃ ২৭ মসূরঃ २৮ চनकः २२ जनशः ७० ज्वती ৩১ নানাশিশ্বা ৩২ জলসংযোগি-সামান্যশুষ্কনারীচপত্রশাকণ ৩৩ হিলনোচীশাক ৩৪ শালঞ্চীশা-ক ৩৫ গ্রীমসুন্দরশাক ৩৬ পু-লৰ্বাশাক ৩৭ কলাযশাক ৩৮

ব্রহ্মীশাক ৩৯ চাঙ্গেরীশাক ৪০ পৃক্কাশাক ৪১ পালম্বীশাক ৪২ চণকপত্রশাকণ ৪৩ কৌসুম্ভশাকণ 88 ওষণীশাক ৪৫ মহারাট্রী-শাক ৪৬ কদলীমোচক ৪৭ ক্লু-দ্রবার্তাঙ্গফল ৪৮ অঙ্গারপক্ষবা-র্ত্তাঙ্গঃ ৪৯ পাণ্ডুরঙ্গফল ৫০ কার (वल्लकन॰ ७३ करकी विककन॰ ७२ পটোলনাডী ৫৩ সন্মাণ্ডনাডি কা ৫৪ বেত্রাগ্রণ ৫৫ সূরণঃ ৫৬ কেচুকমূল ৫৭ ঘৃত তৈলাভ্যাণ সিল্ধংমূল ৫৮ মূলকপুষ্প ৫৯ খণ্ডকর্ণঃ ৬০ মূলকফলণ ৬১ বা-রাহীকন্দমূলণ ৬২ আমুপেষী ৬৩ অম্লরসদাডিমণ ৬৪ মাতৃলু-ব্দত্বক্ ৬৫ লিম্পাক ৬৬ জয়ী-র॰ ৩৭ কর্কন্ধঃ ৬৮ শুক্ষসমস্ত-কোলফল ৬৯ অঞ্জীর পণ জব-नालः १३ लवलीकलः १२ जायवः ৭৩ পক্ষামিকাফল ৭৪ পক্ষতিন্দু-ক॰ ৭৫ অমবেতসণ ৭৬ মহার্ডণ ৭৭ করুণ ৭৮ কোষামুফল ৭৯ তালান্থিমজ্জ। ৮০ বালবিল্বণ ৮১ বিল্বপেষিক৷ ৮২ ধাত্ৰী ৮৩ বিভী-তক ৮৪ বিভীত্যজ্জা ৮৫ ধাত্রী-मञ्जा ৮७ नन्गावर्जम ८ माः ৮१ क्वरीमिल्लाः ৮৮ এलक्रमल्लाः

৮৯ দঙ্ভিক্ষৎস্যঃ ৯০ ত্রিক্ণ্ট-মৎসাঃ ১১ প্রোষ্ঠীনৎসাঃ ১২ মৎস্যাত্ত ৯৩ কুর্ম্মাত্ত ৯৪ খগা-ণ্ড॰ ৯৫ এণমা শে ৯৬ খন্দ্ৰিমা শে ৯৭ কুঁৰ্ম্মপাদঃ ৯৮ কপিঞ্চলমাণ-সং ১১ বর্ত্তিকাপক্ষিমাণ্সং ১০০ প্রাসন্নামদ্য ১০১ অরিফমদ্য ১০২ व्यर्गम् ३०० भूतानम् ३०८ नृ नगर ১०৫ भियोकीतः ১०७ উछी-ক্ষীর ১০৭ শৃতোফ দুগ্ধ ১০৮ ছা-গদ্ধি ১০৯ হাস্তিনদ্ধি ১১০ দ্ধি-মস্তঃ ১১১ দধিসরঃ ১১২ মথিত-তক্ৰুণ ১১৩ আৰিকয়তণ ১১৪ ঔ-कुँ कष्ठ॰ ১১৫ পঙ্কেশুরगঃ ১১৬ হিঙ্গু ১১৭ জীরকণ ১১৮ বাস্পিকা ১১৯ শুক্ষধন্যাক ১২০ কাসুন্দী-বটিকা ১২১ হরিজা ১২২ যমানী ১২৩ শুদ্ধপিপ্ললী ১২৪ আর্দ্র-शिक्षनी ३२৫ छाठी ३२७ जार्ज-क॰ ১২१ मर्यशः ১২৮ मिक्रार्थः ১২৯ পলাখুঃ ১৩০ গুডত্বক্ ১৩১ পত্রণ ১৩২ যবক্ষারঃ ১৩৩ সঞ্জি-কাকারঃ ১৩৪ টঙ্গণকারঃ ১৩৫ মঙঃ ১৩৬ ভৃষ্টতত্ত্বলঃ ১৩৭ লা-জাঃ ১৩৮ লাজমণ্ডঃ ১৩৯ অপ-ক্যবশক্তঃ ১৪০ বাট্যমণ্ডঃ স তু ज्रेषवमधः : ८३ मूलायृयः ১८२

রাগযুষঃ স চ দাডিম জাক্ষাযুক্ত मूका गृयः ১৪৩ मगृतसृयः ১৪৪ अ-লথ্যুষঃ ১৪৫ খড্যুষঃ ১৪৬ কা निक्यूयः म जू नव्यप्रामि जि মাযমিশ্রিতপঞ্চদিধি ১৪৭ পলাল-বেষ্টিত কর্দমলেপিত অঙ্গারদগ্ধ লবণবেশবার পুরস্কৃত সার্ডক ক-টুতৈল সন্তোলিত মৎস্যঃ ১৪৮ প্রদিশ্বণ ১৪৯ শালিপিষ্টক ১৫০ ভারুল ১৫১ চূর্ণ ১৫২ খদিরঃ ১৫৩ এলা ১৫৪ জাতীফল ১৫৫ কপূরিণ ১৫৬ কটুরসঃ ১৫৭ তি-क्त्रमः ३७৮ क्वायत्रमः ३७२ উক্ষমভাবদ্ৰব্যু ১৬০ মালতী-পুত্রাণ ১৬১ মল্লিকাপুষ্ণাণ ১৬২ পদাপুষ্ণা॰ ১৬৩ বন্ধলপুষ্পা৽ ১৬৪ পুরাগপুষ্প ১৬৫ কত্লারপুষ্প ১৬৬ উৎপলপুষ্প ১৬৭ পাট-লপুষ্প ১৬৮ চম্পকপুষ্প ১৬৯ রাত্রিজাগরণ ১৭০ বিল্বমূলণ ১१১ পाটना ১१२ भानभा ५१७ পৃশ্লিপণী ১৭৪ এরওমূল ১৭৫ কণ্টকারিকা ১৭৬ বিশালা ১৭৭ লোধুঃ ১৭৮ ভৃষরাজঃ ১৭৯ কে-শরাজঃ ১৮০ ডোণপুষ্পী ১৮১ ঝিন্টী ১৮২ বচা ১৮৩ শক্ৰাশন ১৮৪ হরিতা ১৮৫ দারী ১৮৬

অবস্তুজঃ ১৮৭ এডগজঃ ১৮৮ রেণুকা ১৮৯ ভূর্জঃ ১৯০ আসনঃ ১৯১ নিশ্বপত্র॰ ১৯২ ভূনিস্বঃ ১৯৩ ञ्ढेजः ১৯८ यामः ১৯৫ पूरान-ভা ১२७ करूँकी ১२१ जारछी ১৯৮ मृकी ১৯৯ क ऐक्ल॰ २०० জ্ঠ° ২০১ পারিভদ্রঃ ২০২ বাস-কঃ ২০৩ মধুযুক্ত গুড়ুচী ২০৪ পি-প্ললীমূল ২০৫ চবিকা ২০৬ গজ-**शिक्षनी २०**१ व्यर्कः २०৮ धुस्रुतः ২০৯ সামান্যগুগুলুঃ ২১০ নূত্র পুরাতনগুগুলুঃ ২১১ অরুণাত্রি-বৃতা ২১২ সিতাত্রিবৃতা ১১৩ সি-क्षुवातः २३८ मत्नाका २३७ मी-রাষ্ট্রী ২১৬ তামু ২১৭ কা স্য २५४ ॥ 🕸 ॥ स्थाप्त क्रिक जन्मानि যথ। এরওতৈল ১ অনূপদেশ-বারি ২ বার্ষিকপানীয়ণ ৩ পাল্লল-জन॰ 8 मायानामानिधाना॰ C মাষঃ ৬ অতসী ৭ নূতনধান্য ৮ মধুরনারীচশাক > কঞ্চশাক ১০ কলম্বীশাক ১১ উৎপাদিকা-শাক ১২ মধ্যমক্রমাওফল ১৩ **जनात्रकन॰ ১८ भी**र्ववृञ्जकन॰ ১৫ **टिनान** ३७ मीर्घ भटि। निका ३१ অলাব্নাডিকা ১৮ পিণ্ডালুকণ ১৯ করীয় পলাল ক্ষিতি বেণুভ্যো

জাত ছত্ৰিকাশাক ২০ বিশেষ-**७:** भनामकाञ्मण्यमञ्जनामः ২১ মধুসরুটিকা ২২ বছবারফল॰ ২৩ বালাম্লিকাকল ২৪ চীরুক ২৫ পঞ্চকটাফল ২৬ কটাফ-লান্থি ২৭ পদ্ধকদল ২৮ তাৰ-মুৎস্যঃ ২৯ পাগুরুমৎস্যঃ ৩০ ক্ষথিতমৎস্যঃ ৩১ লবণভাবিত-মৎস্যঃ ৩২ ভাকৃটমৎস্যঃ ৩৩ পাঠीমমৎস্যঃ ৩৪ শিলিন্দমৎ-স্যঃ ৩৫ ভেকলিমৎস্যঃ ৩৬ গর-ৰৎস্যঃ ৩৭ কৰ্ণকলমৎস্যঃ ৩৮ ইল্লিশ্মৎস্যঃ ৩৯ শৃঙ্গীনৎস্য:৪০ চিন্দটমৎসাঃ ৪১ বাচমৎসাঃ ৪২ চিন্দটীমৎস্যঃ ৪৩ গবাচীমৎস্যঃ অর্থাৎ পাকালমৎসাঃ ৪৪ সলি-ঙ্গপিষ্ণাণ্দ ৪৫ তাবৎক্ষীর ৪৬ আমদুগ্ধ ধণ আবিকদ্বি ৪৮ बाहियमधि ४२ शामूनधि ৫० ख-ভাষ্ণদিধি ৫১ ভাবদনৃত ৫২ মা-হিষমৃত ৫৩ তাবদিক্ষ্ণ ৫৪ বি-শেষতো ভীরুনামকেক্ষুঃ ৫৫ কা-স্তারীকুঃ ৫৬ ইকুকাণিত ৫৭ ইকুখণ্ডঃ ৫৮ নবান্ন ৫৯ চিপি-টঃ ৬০ ঘৃতপূরঃ ৬১ পাষসঃ ৬২ শস্থুলী ৬৩ সরসগুবাকফল ৬৪ মধুররসঃ ৬৫ অতিশ্যামভোজ-

ন ৬৬ লবণরসঃ ৬৭ শীতবী-র্যাদ্রব্য ৬৮ জন্দুকপুষ্প ৬৯ বৃথিকাপুষ্প ৮ বন্ধূকপুষ্প ৭৯ তাবজ্জন্তরসঃ ৭২ তাবজ্জন্তন জ্জা ৭৩। ইতি দ্রব্যগুণাৎসং-গৃহীত ।।

सिम्राजः पु॰ सिम्राजकर्कः। इजिन्द्यन्त्रप्राचनी।।

সেমাতকঃ পু॰ বছবারকবৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ।।

स्त्रियाखकः पू॰ वृक्विर्गियः। বহুষার ইতি বঙ্গভাষা। লসো-ডা ইতি হিন্দীভাষা। তৎপৰ্য্যা-ষঃ। বহুবারঃ ২ পিচ্ছিলঃ ৩ দ্বিজঙ্গৎসিতঃ ৪ শেলুঃ ৫ শীত-ফলঃ ৬ শীতঃ ৭ শাকটঃ ৮ কর্বদারকঃ ৯ ভূতদ্রুমঃ ১০ গন্ধ-भूष्यः ५५। जमा खनाः। करूषः । हिमच । मधुत्रक । क्यायक । यामूष्ण भारत्यः। क्रिम्ल-হরত্ব। আমাসুদোষ নলরোধ বহুবণার্ত্তি বিস্ফোট শান্তিকর-ত্ব। কক কারকত্বঞ্চ। ইতি রা-किनर्वन्छः ॥ जम्यायकन ७ गाः । বিক্টম্ভিত্বণ। ৰাক্ষত্বণ। পিত্ত কফাসুনাশিত্বগু ।৷ তৎ প্ৰকল खनाः। यध्तपः। त्रिक्षपः। स्न-

মলত। শীতলত। গুরুত্বণ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। সৈমিকঃ ত্রি সেমোন্ডবং। সে-মসম্মীয়া ইতি শ্লেমশব্দাৎ ফিক প্রত্যানে নিপানঃ।।

শ্লোক ঋ ও স'ঘাতে।। বৰ্জনো।
সক্জনে। ইতি কবিকল্পড়া ।।
স'ঘাত ইহু ছন্দোবিশিফ বাক্যারচনা। ঋ অশুলোকৎ।
ও শ্লোকতে কবিঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

স্নোকঃ পু॰ গদ্য ।। যশঃ। ইত্য-ষরঃ II 🕸 II স্লোকনামকারণ° যথা। মা নিষাদ প্রতিষ্ঠাণ দ্ব ম-गमः माश्रेजीः ममाः। यद त्की-क्षिय्नारमक नवधीः कानरना-হিতা। তদ্যেখা ক্রবত শিচন্তা বভূব হুদি বীক্ষকঃ। শোকা-র্ত্তেনাস্য শঙ্গনেঃ কিমিদ ব্যা-ङ्ख गया।। **हिख्यन् म ग**राश्री-জ্ঞ শ্চকার মতিমান্ মৃতি । শি-यादेशवाबवीषाका मिन॰ म मुनि পুজवः॥ भाषवत्का श्कातमय স্তন্ত্ৰী লয় সমন্বিতঃ । শোকার্ত্ত-স্য প্রবৃত্তো মে শ্লোকো ভবতু नानाथा।। ইতি রামাষণে वा-न्यीकीरय वालकार ५ मर्गः ॥

ন্ধোণ । সংহাতে। ইতি কবি- ' কল্পদ্ৰমঃ।। ঋ অশুশোণৎ । সংহাতো রাশীকরণ । ইতি দুর্গাদাসঃ।।

मूर्गामानः ॥
भः वा॰ जनागणाङः। कानि
हेि जाया। हेणायतः ॥
भरत्ययम॰ क्वी कनागनः। हेणाभरत्ययम॰ क्वी कनागनः। हेणाभरतः॥ भरत्याणा॥ भर्मा हेिल
प्रमिनी॥ कनागणपुरक्क वि॥
भ्रक हे ७ मर्ला हेिल किविकन्नप्रमा। वकात्रयुक्तामाः। हे भमार्ल। ७ श्वस्ता मर्ला गिलः
। हेिल मूर्गामानः॥

শ্বগণঃ পু॰ ক্ষুরসমূহঃ। ষথা।

দারাদে ব্বযো রিমুমো স্যাতাণ

ণিত্তন্ধিতে পরে। শ্বাপদন্যকো
স্ত বা। ন তু শ্বগণ প্রভৃতীনাণ।
ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণটীকাষাণ
দুর্গাদাসঃ।।

श्रुष्ठ १ गणां। ইতি কবিকল্পश्रुष्ठ देखे क्रमः॥ हो वकात्रयूकाश्री। भूनः भागानामा नमन्
वक्षः। ডিতৌ जू हो। এक এবেৎ পাঠবলাঘাধ্য ইতি নি-যমাৎ। ড শ্বচতে। ই শ্বঞা-তে। ড শ্বঞ্চতে। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

শঠ ক) গভৌ।। অসংফ্তে।। শ্পক্ পুণ্চ ভাল ঃ। যথা। নি-श्रुठ हे क र्भिष्कृत्छ। देखि कित-কল্পক্রমঃ।। ছৌ বকারযুক্তৌ भूनः भाष्ठामातमा त्नमन्वसः। ত্ৰযো অৰ্থাঃ। ক শ্বাঠবতি। ই ক শ্বগ্রহাত জনঃ। গছেতি কিমপি সংস্করোতি বা ইত্যর্থঃ। সংস্কা-র গত্যে। রিভি কেচিৎ। ইভি पूर्शामागः ॥ শ্বঠ ত্ক দুৰ্বাচি। ইতি কবি কল্পদ্রুমা বকারযুক্তঃ। শ্বঠ-

या नी इः। ज्ञानिक वन्ती-छार्थः। त्रमानाथञ्च ममाश्वायत्। ইত্তি মত্বা শঠৰতি সম্যাধদতী-छार्थ हेजाह। मबाद्धांग हेजा-প্যেকে। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

श्वम खुकः भू शाक्तः। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শ্বদ স্ট্রা স্ত্রী গোক্ষুরকঃ। ইত্য-यबः ॥

শ্বধূর্ত্তঃ পু॰ শৃগালঃ। ইতি শব্দ-तंत्रावनी ॥

श्विमा की विकाश निमा। इ-শ্বনিশা স্ত্রী (ত্যুমরভরতৌ ম ম. खनक्त्रिनिणा। यथा। यन्गा॰ মতা নিশি শ্বানঃ শ্বনিশ শ্বনি-मा हमा। देखि क हो धतुः ॥

যাদঃ শ্বপচঃ শ্বপ ক্। ইতি ভর-তধৃত বোপালিতঃ॥

শ্বগটঃ পু॰ চণ্ডাল ঃ। ইত্যমরঃ॥ ত্য্য সংজ্ঞা অন্ত্যাবসাধী। ত-• স্য ধর্ম্মো যথা। চণ্ডাল শ্বপচা-নাম্ভ বহিৰ্ত্তামাণ্ড প্ৰতিপ্ৰয়ঃ। অপপাত্রাশ্চ কর্ণ্ডব্যা ধনণ যে-या॰ श्व भक्तं छ॰॥ वा मा॰ मि नृ छ टि-লানি ভিন্নভাঙে যু ভোজন । কার্ফায়ঃ সমলক্ষ্মাঃ পরিব্রজ্যা চ নিত্যশঃ ৷৷ ন তৈঃ সময মন্থি-एक्ट भूकरवा धर्म गाठतन् । वावशादा विथ एखना विवादः जज़्देनः जङ्गा अञ्चल (यया श-ताधीन (पय गा फिश जाजरन । द्रांत्वो न विहरत्यु एउ श्राटमयू नगदत्रकृ ।। मिता हदत्रयुः का-র্য্যার্থ চিক্লিতা রাজশাসনেঃ। **चितास्वर निर्देश** निर्देश्य রিতি স্থিতিঃ॥ বধ্যা॰ চ হন্য मठठ॰ यथाभाञ्ज॰ नृशाक्तया । वधावामा॰ मि गृङ्गीयुः मया। नहा-**ज़्रानि** ए ॥ 🕸 ॥ ठाखानः श्वनिहः कछ। मृर्छ। देवरमञ्क खथा। मागधारमागरवी देवव म-বৈপ্ততে হন্ত্যাবসায়িনঃ॥ তৃস্যা-

মভকণে প্রাথশ্চিত্ত থথা। অ-স্থ্যাবসায়িনা মন্ন মন্দ্রীয়াদ্যস্ত কানতঃ। সতু চান্দ্রায়ণণ জ-র্যাৎ তপ্তকুচ্ছ মথাপি বা ॥ ইতি প্রাথশ্চিত্ততত্ত্বধৃতাঙ্গিরো-বচনং॥

শ্বপাকঃ পু॰ চণ্ডালঃ। ইত্যমরঃ ॥ তসোৎপত্তि र्यथा। कवु र्जा-ভ স্তথোগ্রাযাণ শ্বপাক ইতি কীৰ্ত্ত্যতে। ইতি মানবে ১০ অ-धारिः ॥ 🗱 ॥ त्रज्ञवलीयां खना न्भर्गत्व श्रायनिष्ठखः यथा। ठा-ভালেন শ্বপাকেন সংস্ফাচে-দ্ৰজন্বলা। অতিক্ৰম্য তান্যহা-नि थायन्तिख॰ मयात्रदा ॥ ত্তিরাত্ত মুপবাসঃ স্যাৎ পঞ্চা-ব্যেন শুদ্ধাতি। তা॰ নিশান্ত ব্য-তিক্রম্য স্বজাত্যুক্তম্ব কারবেৎা৷ ইতি বচনাস্তর দর্শনাৎ এতৎ কামতঃ।। অত্রাজ্ঞানে বৃহস্প-তিঃ। পতিতান্ত্য শ্বপাকৈস্ত স স্পৃষ্টা স্ত্রী রজস্বলা। তান্যহা-নি ব্যতিক্রম্য প্রায়শ্চিত্ত সমা-চলে ।। এথমে १क्कि जिन्न जन्न िजीटा राष्ट्र माठदत्र । जटश-রাত্র তৃীযেক্লি চতুর্থে নক্ত माठ तथा। ठजूर्थ द्वीजि एकि স্বানাৎ পূৰ্ব । ইতি প্ৰায**িচত্ত**-ভত্ত ॥

श्वक्वः भू॰ वीक्षभूतः। ইতি तन्न-

श्वकः श्र. वृक्षिभू वः। म ह वक् त्रिणा। यथा। वनिव-माग्रदय श्ता वृक्षः। जन्नादः श्वकः। जर्ञानाः कनीयान् हिक-का नाम जाना। श्वकः। मक्कामक् त्राः भाषिना। मज्यरः। हेनि विक्-भूतात्। ८ वार्षः १८ व्यक्ताः। श्वनिकः श्र. गृगानः। हेनि गकः। भाषा।।

শুভূ ক বিলে। গতৌ। তকে।
ইতি কবিকল্পদ্রনা । বিলণ রশ্বুকরণণা ক শুভূযতি ভাগুণ বালকঃ। তক্ষ ইতি তকি দৌস্থ্যে
ইত্যস্য ৰূপণা শুভ্যতি দীনঃ
দুংখেন জীবতীত্যর্থঃ। তক্ষশ্বানে তন্ত্র ইত্যপপাঠঃ। ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

শব্রু ক্লী ছিদ্রণ। ইত্যমরং ।।
শব্দুং পুণ শোপং। ইত্যমরং ।।
শব্দীটী স্ত্রী পীড়া। শ্বি ধাতো
রৌণাদিক ঈচি প্রত্যযেন নিষ্পামা। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী ।।

বিশে। ইতি কবিকল্পদ্রনাঃ।।
বিকারমুক্তাদিঃ। শ্বলতি। বেগঃ
শীঘুগতিঃ। ইতি দুর্যাদাদঃ।।
শ্বন্ধ ক ভাষে। ইতি কবিকল্পদ্রুমঃ।। বকারমুক্ত স্তালব্যাদি
রস্তস্থতীযোগধঃ। ক শ্বন্ধযতি। ভাষঃ কথনং। ইতি দুর্গাদ্রুমঃ।।

শ্বল বেগে। ইতিকবিকল্পদ্রনা।
বকারযুক্তাদিঃ লদ্বযান্তঃ। শ্বক্লতি। বেগঃ শীঘ্গতিঃ। ইতি
দুর্গাদাসঃ।

শ্ববৃত্তিঃ দ্রী সেবা। চাকরী ইতি
ভাষা। ইত্যমরঃ ॥ শুন ইব
বৃত্তিঃ পরপিখোপজীবনাৎ ।
ইতি ভরতঃ ॥

श्वरागः पू॰ हि॰मुशस्थः। यथा।
नामृ नः पूछतीकन वीशी हाथ
म्गामनः। श्वराग्न छत्रकून
व्याखन श्राभनः मस्यो। ইতি
किरोधतः।

শৃশুরঃ পু॰ পতি পড়্যোঃ পিতা । ইত্যমরঃ।। পূজ্যঃ। ইতি মেদিনী।।

শ্বশুরৌ পু॰ শব্দশশুরৌ। শ্ব-শুর শাশুড়ী ইতি ভাষা। দ্বিব-চনাস্ভো ২য়ণ। ইতামরঃ। শৃশুর্যঃ পু॰ দেবরঃ॥ শ্যালঃ। ইত্যমরঃ॥

শ্বনঃ ন্ত্রী পতিপক্সোঃপ্রসূঃ। भाखणी देखि जाया। देळामदः ।। ৠ।। তস্যাঃ সুষাডিঃ সহাবিশ্বা-म काর १॰ यथा। धर्मवागध উवाह । यथा তে দূহিতা দত্তা পুল্রার্থে বরবর্ণনী। সাচ স্বভার্য্যবাপ্রো-ক্তা দুহিতা জন্তবাতিনঃ।৷ অ-তো ২ৰ্থ মাগতো ২হ° তে গৃহ° প্রতি সমীক্ষিতৃ । আচার দেব-পূজাঞ্চ অতিথীনাঞ্চ তপণ ॥ এতৈষা মেক মপ্যত্ৰ স্বৰ্দ্বাপি ন দৃশ্যতে। তদাৃহ গন্ত মিচ্ছামি পিতৃণা প্রাদ্ধকাম্যযা।। স্বগৃহে নৈব ভুঞ্জামি পিতৃণা কার্য্য মিত্যত। অহে ব্যাধো জীব-ষাতী ন তু তল্লোকহিংসকঃ।। মৎসুতা জীবঘাতস্য যদূঢা স্বৎ সুতেন চ। তমাহত্ত্বঞ্চ সম্পূৰ্ণপ্ত॰ প্ৰাৰশ্চিত্ত তপোধন ৷৷ এব মু-জ্বা স চোখাষ শপ্তা নারী ত-দা ধরে। মা সুযাতিঃ সমণ শ্বশু। বিশ্বাসো ভবতু ক্ষচিৎ ৷৷ মা চ স্বুষা কলাচিৎ স্যাৎ যা শ্বশ্ৰু জীবতী মিষেৎ। এব নুক্ত্বা গ-তো ব্যাধঃ স্বগৃহণ প্রতি ভাষিনি

॥ ইতি ৰারাহে আদিক্তবৃত্তা-স্তনামাধ্যাযঃ॥

শ্বশ্রমণ্ডরৌ পু॰ শ্বশ্রশণ্ডরযোঃ সহোক্তিঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। শ্বশু-রৌ২। ইত্যমরঃ।।

यम च नू श्रावता है कि कितकन्न प्रमान विकाद क्री विकाद विकाद क्री विकाद क्र

শ্বস লু র স্বপ্নে। ইতি কবি-কল্পদ্রমঃ॥ লু শস্তি। র বৈদি-কঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

শ্বসন ক্লী শ্বসিত। নিশ্বাসঃ। ইতি মেদিনী।

শ্বসনঃ পু॰ বাযুং॥ মদনবৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ॥

स्मनागनः श्रु मर्भः।

शतावनी ।।

श्रमत्मश्रक्षः भू॰ अर्जू नवृक्षः ।

श्रेष्ठ भक्षतिस्का ॥

श्रमत्मारमुकः भू॰ मर्भः। ইতি

भक्षत्रप्रावनी ।।

श्रमित्र॰ की श्रामः। यथा। श्री
श्रम् श्रमित्र॰ का रस्पूर्ध উ
स्हाम आहतः। আনে। वहिर्मू
श्रस्र माहिःश्रामः भान এउनः

শ্বসূনঃ পু॰ ক্ষতমবৃক্ষঃ। সন্সর-•শোক্ষা ইতি ভাষা। ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা।

।। इंडि ट्याह्यः॥

শ্বস্তুন ত্রি ভবিষ্যদ্বস্তু। ইতি শব্দমালা।। ভবিষ্যৎকালে ক্লী । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শ্বস্তা॰ ত্রি শ্বোভববস্তু। ই**তি** শব্দমালা।।

श्वी शृ अक्तु तः। छ ९ शर्या गरः।
अक्तु तः श्वा ह अक्त श्वः श्वन को मृशाम भकः। को लिखक को तिखएन के भारत्य ति तिख्य को शास्त्र भी भी स्त्र को भी को स्वा भी स्व को स्व को भी स्व को स्व

श्रा जू विश्वकद्धः भूगानयः ॥ रेिं अस्त्रज्ञावनी ॥ শ্বাগণিকঃ ত্রি শ্বগণ্যেন চরভি ষঃ । यथा। यगनाय ठेक ह। यग-ণ্যেন চরতি শ্বাগণিকঃ শ্বাগণি-কী শ্বগণিকঃ শ্বগণিকী। ইতি निकाखटकोगूमी ॥ श्वाप्तछः भुः अक्रुत्रप्रभनः। ইতি मिका खटको यूनी ॥ श्वानः भू॰ अक्रूतः। ইতি শব্দ-त्रज्ञावनी ॥ খানচিল্লিক। জ্রী শুনকচিল্লী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ম श्वानी जी बक्रुती। इंडि भय-त्रज्ञावली।। স্বাপদঃ পু॰ হি॰সুপশুঃ। ইতি ट्यह्यः॥ व्याष्ट्रः। देखि भक-ब्रञ्जावनी ॥ শ্বাবিৎ ৈ পু॰ শল্যঃ। সজারুঃ ইতি श्वाविष्) ভाষा। ইত্যমরঃ॥ শ্বাশ্বঃ পু॰ ভৈরবঃ। লক্কুর বাহ-নত্বাৎ। ইতি কেচিৎ।। শ্বাসঃ পু॰ শ্বসিত ।। বাষুঃ। रें छि (रूमहस्यः ॥ ७९ भर्यायः । थानः २। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ द्योगविष्गयः। म जू वनवान्-यशानाजककः। यथा। **उत्रा**प्त- ॥

क्ट इठा॰ लाट्या ताज्यचा जेती তथा। शामन मधुरमरहो बोत्-मत्री **भागमः छकाः ॥ ই**তি नाद्ग-দোক্ত•। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব•।। স চ হীনবল উপপাতকজঃ। যথা । कलामत यह ६ भीर मृलदाश बनानि ह। सामाजीर्व खत्र ऋर्षि जुम याह भल शहाः॥ त्रकार्वृष विमर्नामा উপপাপোদ্ভবা गर्माः ৷ ইতি মলমাসতত্ত্ব ৷৷ ঞ্চা৷ অথ শ্বাসাধিকারঃ। তত্র নিদান মা-र। रेय दाव कांत्ररें। र्रिका प्रांशि-ना॰ म॰ अवर्खरा । देन दाव वह-ভিঃ শ্বাসো ব্যাধি র্ষোরঃ প্রজা-যতে।। শ্বাসস্য ভেদানাহ। ম-হোর্দ্ধ ছিম তমক ক্ষুদ্রভে দৈস্ত পঞ্চধা। ভিদ্যতে স মহাব্যাধিঃ শ্বাস একে। বিশেষতঃ ॥ 🟶 ॥ পূৰ্বৰূপ মাহ। প্ৰাগ্ৰপণ তস্য হৃৎপীড়া শূল মাগ্নান মেব চ। আনাহো বক্তুবৈরস্য শণখনি-স্তোদ এব চ।। 🕸 ।। সংপ্রাপ্তি মাহ। যদা সোতা সি সংরুধ্য মাৰুতঃ কফ পূৰ্বকঃ। বিশ্বখ্জ-তি সংরুদ্ধ স্তদা শ্বাসং করোতি সঃ।। স্রোতাণি প্রাণোদকান্ধ-वशानि। क्युर्वकः क्यः शूर्वः

প্রধান যদা দঃ। বিশ্বপুজ্তি সৰ্বতো বনাৰ্গান যাতি। সংৰুদ্ধঃ क्टक्न कृष्णयार्गः ॥ 🛊 ॥ यहा-याममा लक्ष्ण याह । উकृषयान বাতো যঃ শব্দবৎ দুঃখিতো নরঃ । উচ্চৈঃ শ্বসিতি সম্বন্ধে। মত্তর্যভ ইবানিশা। প্রণফজ্ঞান বিজ্ঞান স্তথা বিভা্মন্ত লোচনঃ। বিবৃতা-क्यानत्ना वक्तमृजवकी विभीन-वाक्।। मीनः अश्वनिष्ठः हामा দূরাৎ বিজ্ঞাযতে ভূশ। মহা-শাসোপসৃষ্টস্ত ক্ষিপ্র মেব বি-পদ্যতে ৷৷ উদ্ধৃযমানবাতঃ উদ্ধৃ৽ নীয্মানো বাতো যস্য সঃ। শ-क्रवर मक यथा मृगर। की कृक् म मक छादाधियञ् बार। यख-ৰ্ষভ ইব উচ্চৈঃ শ্বনিতীত্যম্বয়ঃ। সল্লঃ আনদ্ধঃ আনাহ্যুক্ত ইতি যাবৎ। জ্ঞান শাস্ত্রণ। বি-ख्डान॰ **उ**पर्थविनि न्हरः। विनी-র্ণবাক্ স্থালিতবচনঃ। দীনঃ গ্লানঃ। মারকশ্চাষ মহাশ্বাসঃ ॥ 🗱 ॥ छेर्क् श्वाम बार । छेर्क् ॰ श्व-সিতি যোতার্থণ ন চ প্রত্যাহরত্য-ধঃ। লেমাবৃত মুখলোতঃ ক্রেদ্ধ गन्नवशक्ति ७: ॥ छक्षम् कि विश-শ্যণ্ড বিভ্রান্তাক ইত গুড়ঃ ।

প্রমুষ্ণ বেদনার্ভশ্চ শুদ্ধাস্যো-রতি পীডিতঃ।। উর্দ্ধুখাদে প্রঙ্গ-পিতে ভূধঃশ্বাসো নিরুধ্যতে। মুহুত স্তাম্যত শ্চোদ্ধৃ শ্বাস স্ত-देमाव रखामृन्॥ मर्द्वयू श्वारमधृ-দ্ধৃ শ্বনতে। অত্র অত্যর্থ মিতি বিশেষঃ ৷৷ ন চ প্রত্যাহরত্যধঃ ন স্বাস মধঃ করে।তি। শ্লেমাবৃত্তে-ত্যাদি। শ্লেমণা আবৃত যয়ুখণ শ্রোতাণসিচ তৈঃ ক্রুদ্ধো যো-गन्नवश रखनार्षिछः। विभगान् .ইত স্ততো বিক্নতং যথা স্যাদেবং পশ্যন্ ৷ অধংশ্বাদো নিরুধ্য-তে শ্বাসো নাধঃ প্রবর্ত্তত ইত্যর্থঃ ॥ 🗱 ॥ ऄकृषाममात्रिकेमा नक-ণ মাহ। মুহ্নতো মোহ॰ প্রাপ্ন-বতঃ তাম্যতো গ্লানি প্রাপ্নুবত-का छक्षामा अन्न् आनान् হস্তি। তদ্যৈবেতি ন তু মোহ গ্লানি রহিতস্য।। 🕸।। ছিনশ্বাস মাহ। যস্ত শ্বসিতি বিচ্ছিন্নণ সর্ব প্রাণেন পীডিতঃ। নচাশ্বসিতি দৃঃখার্ত্তো মর্মাচ্ছেদ রুজার্দিতঃ॥ আনাহ ষেদ মুৰ্জাৰ্তো দহুমা-নেন বস্তিনা। বিপ্লুতাক্ষঃ পরি-कीनः अञ्जूदेककरना हनः ॥ वि-চেতাঃ পরিশুফাস্যে। বিবর্ণঃ প্র-

লপন্নরঃ। ছিন্নশাদেন বিচ্ছিন্নঃ म भीषु॰ विकश्राज्यम् ॥ विक्रि-श्र॰ निरिक्त्मि । नर्दश्रात्नि या-বন্ধলেন। মর্শ্বচ্ছেদরুজার্দিতঃ शमय नितरण्डम दमनत्यव भी-ডিতঃ। দহুমানেন বস্তিনা উপ-लक्षिकः। विश्वजाकः व्यक्षणूर्ग-নেত্রঃ। বিচেতা উদ্বিগ্নচিত্তঃ। ছিলশ্বাসেন বিচ্ছিন্নঃ সং। যস্ত শ্বসিতি বিচ্ছিন্ন নিত্যাদিলকণ-সুক্তো যঃ স নর ভিছমশ্বাদেন বি-াচ্ছিন্নঃ পীডিতো বোদ্ধব্য ইত্য-र्थः। 'মারকশ্চায' বিচ্ছিমশ্বাসঃ া। 🛊 ।। তমকশাস মাহ। প্রতি-নলোম যথা বাযুঃ শ্রোভাণস প্রতিপদ্যভে। ত্রীবাণ শিরশ্চ সংগৃহ सामानः ममूनीया ह।। করোতি পীনস স্তেন কঠে ঘুর্-রকণ তথা। অতীব তীত্রবেগঞ্চ শ্বাস প্রাণপ্রপীডক ৷৷ প্রতা-স্ব্যান্তি স বেগেন ত্রদ্যান্তে সংনি-ক্ষয়তে। প্রমোহণ কাসমানশ্চ স গচ্ছতি মুক্ শুক্ষা। শ্লেমাণা-यूठामात्नन ज्ना ज्वि मृश्य-**७:। ७८मा**व চ वित्याकारस मूङ्-র্ত্তণ লভতে সুখণ।। তথাস্যোদ্ধৃ--মতে কণ্ঠঃ কুচ্ছাচ্ছক্লেতি ভাষি-

ভুণ। ন চাপি নিজাণ লভতে শ-गानः शामभी जिला। भार्य छ-माावगृङ्गाि भंगानमा मगीतनः । আদীনো লভতে সৌখ্য মুক্ত-ঞৈবাভিনন্দতি।। উচ্ছিতাক্ষ্যো ললাটেন স্বিদ্যতা ভূশমার্তিমান্ । विश्वकारमा। सूरुः श्वारमा सूरु-देन्द्रवादधभारक ॥ त्यवायू भीक প্राथारेजः सम्मरेलम् विवर्करज । ग योशा खमकः श्वामः मारधा **रा माानरवाथिकः॥ म॰गृ**ङ् वाथ-का ममूनीया वर्कियिया। शीनमः मामानुष्य । एवन स्नियाना घूर्य-রকণ যুযু রশকণ। প্রাণ প্রতীডকণ প্রাণাধিষ্ঠান স্থান্য প্রাণীডক । প্রতামাতি তম্সি প্রবিশতীব ৷ (वर्रान श्रामर्वर्रान । मःनिक्रधा-তে নিশ্চেষ্টো ভৰতীতি চক্ৰঃ ৷ সংনিৰুধ্যতে শ্বাস ইতি জেজ্জ-টঃ। শ্লেম্বণা অমুচ্য মানেন। স্থ॰ সুখ নিৰ। উদ্ধৃতসতে ব্যথিতে। ভবতি। শ্যানঃ শ্যানিহিতা-ঙ্গঃ। অবগৃহ্লাতি পীড়য়তি। উফ-ঞ্চৈবাভিনন্দতি ইত্যনেন তম-কো বাত কফারন্ধ ইতি বোদ্ধব্যণ । উচ্ছिতाकः मृनाकः। ननाटि-ন স্বিদ্যতা উপলক্ষিতঃ। অবধ-

ম্যতে গজাৰ্চস্যেৰ সৰ্বগাত্ৰ• हालाख॥ 🛊॥ ७२क्टेमाव थि-ত্তানুবন্ধ জনিত স্বরাদি যোগেন প্রতমক স'জ্ঞা মাহ। ত্রর মূচ্ছা পরীত্স্য বিদ্যাৎ প্রতমক তুত ৷ উদাৰ্ম্বৰ্ত ৰুজো ২জীৰ্ণ ক্লিমকা-च নিরোধতঃ।। তমসা বর্দ্ধতে হুত্যৰ্থ[•] শীতৈ শ্চাশু প্ৰশাম্যতি। मञ्जूष खमनी हामा विमाध्य তमक जू जर ॥ 🛊 ॥ कृ प्रशाम बार्। ककायारमाख्यः कार्ष क्रुफा बाठ উनीत्रयन्। क्रू प्रशा-সেন সো ২তার্থণ দুঃখেনাঙ্গপ্র-বাধকঃ।। হিনস্তি ন চ গাতাণি ন চ দুঃখো যথেতরে। ন চ ভোজ-ন পানানা নিরুণজ্যুচিতা গ-তি ।। নেন্দ্রিযাগা ব্যথাঞ্চাপি काश्चिष्ट्रभाषरयक्रकः। म माथा উক্তো বলিনঃ সর্বে বা ব্যক্তল-क्रशाः ॥ क्षुषः जन्ननिमान निकः । উদीतयन् छर्द्धुः शष्ट्रन्। पूः थः मृःथश्रा मर्द यहाश्रामान-र्याशि॥ क्षा श्रामाना॰ माध्यक्षा-দিক মাহ। ক্ষুদ্রঃ সাধ্যতম স্তে-ষা॰ তমকঃ ক্লচ্ছ উচ্যতে। ত্রযঃ শ্বাসা ন সিদ্ধ্যন্তি তনকো দুৰ্বল-স্য চ ॥ কাম প্রাণহরা রোগা

बर्दा न ख्राक्यः। उथा यथा শ্বাস হিন্ধে হরতো জীব মাশু জে ।। 🟶।। অথ শ্বাসদ্য চিকিৎসা। याग हिकाजूत॰ প्रायः निरेकः स्विटेन ऋभाष्ट्रत्य । यूटेक र्ववन তৈলাভ্যা॰ তৈ রস্য গ্রথিভঃ কফঃ ।। শ্বাসো বিলয মাঘাতি মারুত-শ্চোপশামাতি। সিশ্বণ জ্ঞাদ্বা তত শৈচন॰ ভোজ্ঞ্যেক্ত রুসৌদন॰ ।। खत्रमः भृष्ट्रदित्रमा भाक्तिरकः। সমন্বিতং৷ পায়যেৎ শ্বাসকাসম্বং প্রতিশ্যায কফাপছ ।। শৃঙ্গবের मार्फकः। श्रद्धः विजीष्ठकानाः अञ् रिना माश्ररम्कामृत्व । व्यय मदलाहा नीए। मधुमहि-जः यानकाममः॥ मनमृनी नि ताना शिक्षनी विश्व (शोकरती। मृत्री जामनकी जागी खफ्ठी नागदाधिङिः ॥ यवागृ विधिन। निका॰ क्याय॰ वा नित्वन्न तुः। श्वा-म समाइ शाशार्वि हिका काम **अ**भाग्रस्य ॥ **डायनकी** जूगाय-लकी। मममूलमा वा काषः ली-করেণাবচুর্ণিতঃ। শাসকাস প্র-শননঃ পার্শুল বিনাশনঃ।৷ র-ম্ভা জন্দ শিরীষাণাণ জসুমণ পিঞ্ল-मीयुज्। शिक्षे ज्लून जात्वन

পীত্বা শ্বাস মপোছতি।। শৃন্ধী মহৌষধ কণা ঘন পুষ্ণরাণাণ চূর্বণ শটী মরিচযোশ্চ সিতাবিমিশ্রণ। ক্লাথেন পীত মমৃতা বৃষ পঞ্চমূল্যা শ্বাসণ ত্রাহেণ বিনিহ্স্তি হি ঘোর-क्षणः॥ शक्ष्मृली जू मामानगा ९ পিতে याजा कनीयमी। मर्गी याद्रप्ट (एया देगव (एया क्टक श्विटक ।। স্ব্যাণ্ডকশিফাচূর্ণ° शीछ॰ कारकन वार्तिना। नीयु॰ শমষতি শ্বাসং কাসঞ্চাপি সুদারু-ণ ।। হরিদ্রাণ মরিচণ দ্রাক্ষাণ ক-ণা॰ রামা॰ শটী॰ গুড॰। কটু ভৈ-न॰ निरुन् रुन्। प्रामान् था-**ণহরানপি।। শত॰ সঃগৃহ্ছ ভার্গ্যা-** ॥ স্তু দশমূল্যা স্তথা পর । শত॰ হরীতকীনাঞ্চ পচেত্রোযে চত্ত্র-র্গুণে ৷৷ পাদাবশেষে তক্মিণস্ত রসে বস্ত্রনিপীডিতে। আলো-ড্য চ তুলাং পূতাং গুড্স্য স্বভ্যা • ততঃ।। পুনঃপচেত্রু মৃদ্বনৌ ষ।-বলেহত্ব মেতি তৎ। শীতে চ ম-धून खब यऐशनानि विनिक्तिशब ।। बिक्रू विमूगक्षक भनमाव॰ পৃথক্ পৃথক্। যবক্ষার কর্ষযুগ্ধ भः हुन्। अकिरभेखकः ॥ जकरम-मञ्चा रमका॰ लाहमार्षि॰ भल॰

তথা।। স্বাসং সুদারুণ হস্তি কা-স॰ পঞ্চবিধণ তথা। অশাণ্যা-রোচকণ গুলা শহুন্ডেদণ ক্ষয়ণ তथा ।। अत्रवर्भश्रामा (इस कर्ठ-तारमक मीयनः। नाम्रा जागी-গুডখ্যাতো ভিষ্ঞিঃ সকলৈ র্মতঃ ।। ভাগী গুড়ঃ।। রুসো গন্ধো বিষ-ঞাপি টক্ষণঞ্চ মনঃশিলা। এতা-নি কর্ষমাত্রাণি মরিচণ চাফকর্ষ-कः ॥ कर्षे जयः कर्यग्राः भृथगज বিনিঃক্ষিপেৎ। রসঃ শ্বাসঙ্গঠা-রো ২য° সর্বশাসনিবারণঃ 11 শ্বাসন্সঠারো রসঃ। ইতি শ্বা-সাধিকারঃ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ ॥ 🛊 ॥ जनाक। विजीवकमा देव চূर्नः সমধু श्वामनागन । शिक्षली बिकना हुर्न यशु देमक्षव मः युङ ।। সৰ্বরোগ স্থর শ্বাস শোষ পীন-সহস্তবেৎ। ইতি গাৰুডে ১৮৯ विशायः ॥ 🗱॥ जमा भूतारणाक निकान यथा। धमछति ऋवाछ। অথাতঃ শ্বাসরোগস্য নিদান প্রবদাম্যহ । কাসবৃদ্ধা ভবে-ष्ट्रामः शृद्धा वा प्लाय कालरेनः ।। আমাতিসার বমথু বিম পাঙু-चरित्र त्रिश त्रा श्वानिटेन यी-শ্বিঘাতাদপি হিমায়ুনা। ক্ষুত্রক

স্তমক শিছ্মো মহানৃদ্ধৃশ্চ পঞ্চমঃ । करकाशक्रकशयनः श्वरना वि-শ्বগङ्खिः ॥ প্রাণোদকায়বাহী-নি দ্যু শ্রোতা পি দূষ্যন্। উরঃ-यः अकृत्छ श्राम **गागागग**गगुरू-वः॥ क्षा थागुनः छमा सरभार्ष শূল প্রাণবিলোমতা। আনাহঃ শন্তভেদশ্চ তত্রাপাসীত ভোজ-নৈঃ ৷ প্রেরিতঃ প্রের্যন্ কুড় স্বয়ু সশ্বন্ধ মরুৎ। প্রতিলোম্ শিরা গচ্ছেৎ উদীর্য্য পবনঃ কফ॰ ।। পরিগৃহ্থ শিরো ত্রীব মুরঃ পা-শ্বেচপীডয়ন। কাসং যুর্রকং মেহ মরুচি॰ পীনস॰ ভূশ॰।। ক-রোতি তীব্রবেগঞ্চ শ্বাসণ প্রাণো-পতাপন । প্রভামোত্তন্য বেগেন নিগুতান্তে কণ সুখী।। রুজ্বাচ্ছ-যানঃ শ্বসিতি নিষ্ণঃ স্বাস্থ্য মিচ্ছ্-তি। উচ্ছিতাকো ললাটেন স্বি-माठा ज्य मार्किमान्।। विश्वका-স্যো মুহুঃশ্বাসঃ কা ক্ত্যুক্ত স বেপথুণ। মেঘাষু শীত প্রাগ্বাতেঃ **क्षियरेन** के विवर्कत्व ।। मयाना ন্তমকঃ সাধ্যো নরো বা বলি-নো ভবেৎ। স্বর মূচ্ছাযুতঃ শী-ভৈঃ শামোৎ প্রতমকস্ত সঃ ॥ শিলাশ্বসিত বিচ্ছিন্ন মর্মচ্ছেদ-

রুজার্দিতঃ। সম্বেদ মূর্চ্ছঃ সানা-হো বস্তি দাহ নিরোধবান্।। জ-ধোদ্ষিঃ প্লাকস্ত মুছনুকৈক-লোচনঃ। শুকাসাঃ প্রলপন্ দী-(न) न्छेष्ठारय। विटाउनेः ॥ यह-তা মহতা দীনে। নাদেন শ্বসি-তি ৰুথন্। উদ্যুমানঃ সংরক্ষে। মত্তর্যভ ইবানিশ ।। প্রনম্ট জ্ঞা-ন বিজ্ঞানো বিভান্ত ন্যনান্নঃ । অক্ষণ সমাক্ষিপন্বদ্ধমূত্রবর্চা বি-भीर्गिक्।। अक्रकरकी मुङ्ग्रंहः কর্ণ শঙ্ম শিরোভিক্তক্। যো দীর্ঘ মুচ্ছ সিত্যদ্ধ ন চ প্রত্যাহরত্যধঃ ।। क्षिपातृञ्जूथः थावः कुषा-गम्बदशिक्षिणः। উर्कृकृशीकर् ভ্রান্ত মক্ষিণী পরিতঃ ক্ষিপন্।। मर्यम् ष्टिमानातम् शतिरमवी নিরুদ্ধবাক্। এতে সিদ্ধের ত্যক্তা ব্যক্তাঃ প্রাণহরা ধ্রুব ।।। ইতি গারুডে শ্বাসরোগ নিদা-न॰ ३৫৫ व्यथायः ॥ 🕸 ॥ व्यव শ্বাসরোগস্য কর্মবিপাকঃ। শ্বা-मदतारमा महानूरका पिहि पि-হাভিয়াতকঃ। কৰ্মাণা যেন ভব-**তি ত**या निगमण्डः मृन्॥ मरहार्ष्ट्र ক্তিম তমক ক্ষুদ্রা ভেদে। ২স্য পঞ্চা। স্থাসঃ সংজাযতে নুণা

পৃথক্ কর্মানুসারতঃ।। যস্ত যজ্ঞ সমাসাদ্য পশুশাস নিরুধ্য চ। হস্তি খাদস্তি বা তঞ্চ মহাশ্বাসেন পৃহতে ।। ১ ।। পৌরাণিক কথা-मरश रख वाठानाथा वरम् । म উর্দুশ্বাস মাসাদ্য দুনোত্যহরছ-নিশ।।২।। নিষিদ্ধদান গ্ৰহণাৎ ছিলশ্বাদেন গৃহতে। ৩। মর্ত্যঃ শাস্ত্রার্থ নিণ্ডিবাক্যু যো দূষ-ষত্যপি ৷৷ পীড্যতে তমকশ্বাদৈং ক্ষুদ্রৈঃ পাকস্য বিম্নতঃ । ৪।৫। পরত্র কর্মতে৷ দেহী নরকেষু বিপচ্যতে।। নরকান্তে পুনর্ব্যায়-ষোনি॰ শৃকর বাযসী। পৃথক কর্মবশাদেখানৌ গদা সংপ্রাপ্য ভপ্যতে।। মানুষদ্ব মনুপ্রাপ্য পূ-ৰ্ষোক্তেনোপগৃহতে। শ্ৰুদ্বা তূ-গ্রন্থ কদন প্রাসরোগ সমুদ্ভব ।। প্রণন্য ভরতঃ শ্রীমান্ ভৃগুণ বাচ মুবাচ হ। রাজোবাচ। শ্বাস-कर्य क्य रयन मारनन नियम ন চ ৷৷ ক্ৰতেন মুক্তো ভবতি তামে বদ প্রসাদতঃ। ভূগু রুবাচ। হা-টকীণ কারযেমূর্ত্তিণ ভক্ত্যা বরুণ বাতবোঃ।। তামুপাত্রোপরি স্থা-প্য তৎপাত্র॰ কলসোপরি। রা-জ্বত কার্যেৎ পাশ ধজ্বক্ষিব

পলদ্ব ।৷ বাম দক্ষিণতো মূৰ্ত্তি मना । जन्म निनदिकः। वार्या র্ধজসমাযুক্তা॰ গন্ধ মাল্য পরি-क् छा॰।। वद्भनगाभिमत्वा जू अ-র্যান্নাযোঃ প্রপূজন । ন চ খা-সং বিনা কাস স্তচ্ছাসঃ কাসতো-नि वा।। उन्नार भूजावियो मगाक् वायू वंक्रव अव ह। वाक्र-৭° কার্যেন্দোম॰ বরুণস্যেতি ম-खाङ ॥ युष्ठ क्लोख खिल यदिः সহসু বা স্বশক্তিতঃ। বাঘো স্তি-ল যৱৈঃ কাৰ্য্য॰ মনোবাতেতি ম-ন্ত্রতঃ।। সাদর বান্ধণ পূজ্য বন্ত্র ৰাল্যাক্ষতাদিভিঃ। কর্মোপশ-য বাক্যেন ৰান্ধণায নিবেদ্যেৎ ৷৷ সদক্ষিণাঞ্চ তন্মূর্ত্তিণ দত্বা গা-থা॰ পঠেমরঃ। ওঁনমঃ পাশ-ভূতে ভূভ্য॰ ধ্বজাধিপত্তবে নমঃ।। জলাধিপত্ত্যে তুভ্যু॰ বায়ো সর্ব-জনপ্রিয়। শুচযে দীয়তে দান॰ ধজপাশে তুরাজতো।। শ্বাস-কাসৌ হরেষাতা॰ প্রীতৌ সর্বজ-নপ্ৰিয়ে। পূৰ্বজন্ম বিপাকো-त्थी श्वामकारमो **ह मा**रूवः ॥ म-হিরণ্য° প্রযক্তানি মুক্তোহ° ত্বৎ-প্রসাদতঃ। সাদর মাধব নত্তা দিপেরান্ভাক্ষর শিবণ ৷৷ বস্ত্রা-

ন্তর ক্তে বিপ্র পুন ভানু নুদী-রষেৎ। অতঃপর প্রস্ববীত যদা मार्जुञ्जूर्वरहो ॥ 'श्वानकारमो জ্বব্যাধী দান তস্যোপশাস্ত-যে৷ পশুষাতোদ্ভবে শ্বাদে স্থ-র্যাদগ্রেন্ত তর্পণ।। ও অগ্নে মূ র্জেতি মন্ত্রেণ ছাগণ দদ্যাৎ স पिकन । कथाविष्मा खुद ताः গে স্ব্যাৎ সার্যভূ॰ নৃপ ॥ দ-ধিপাত্রণ সরজতণ সরস্বত্যৈ নি-বেদযে । निविक्तनान श्रहरा (भाषां नश्च मया हरत ।। हेक्छा-হারেণ সংতর্প্য দ্বিজঞ্চাপি প্র জাপতি । হোমেনানেন দা-নেন মুক্তো ভবতি কর্মতঃ ॥ मामतः साधवः नषा मः छर्णा वि-জপুস্বান্। সাত্বা কলসতো ইতি ভৃগুভরতোক্ত শ্বাসকাস कर्याविभाकः ॥ क्षा जिल ह । পিশুনো নরক্স্যান্তে জায়তে ু শ্বাসকাসবান্। যৃত তেন প্রদা তব্য॰ সহসুপলসন্মিত ।। ইতি শাতাতপীয কর্মবিপাকঃ।। শ্বাসকাসঃ পু॰ শ্বাসযুক্তকাস-রোগঃ। শ্বাসজনককাসঃ। যথা ৷ কাস বৃদ্ধ্যা ভবেচ্ছাসঃ পূর্বো

্বা দোষকোপনৈঃ। ইতি গারু-ए १६६ अधायः॥ अनाद-শ্বাসশব্দে দ্রফব্য় ।। শ্বাসন্সঠারঃ পু॰ শ্বাসরোগস্য-ঔষধবিশেষঃ। यथा। त्रमा श-স্বো বিষঞ্চাপি টক্ষণঞ্চ মনঃশি-লা। এতানি কর্বমাত্রাণি মরি-**एक्शिक्यक्शा** करूवियः कर्य-যুগা পৃথগত্র বিনিঃক্ষিপেৎ। तमः शामक्ठाता १ य॰ मर्बशाम নিবারণঃ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ यानव्ययानधात्रण क्री व्याणाया-यः। ইতি হেমচন্দ্রः॥ শাসহেতিঃ স্ত্রী নিজা। ইতি (इयह्यः॥ শ্বাসারিঃ পু॰ পুদ্রমূল। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥ यन गुट्छा ভবতি मान्यः॥ | शांभी े पू॰ वायुः। ইতি শব্দর্দা-वनौ ॥ श्रामयुक्क जि ॥ শ্বি টু ঐ ও ইর গতি বৃদ্ধোঃ। **इ** ि कि विकन्न प्रभागा विकास के विकास के स्थाप मिः। টু শ্বर्। धे मृषा । ও मृतः। देत अश्रद अश्रदी । इंडि पूर्गामामः ॥ শ্বিত ৯ ও আ শৌক্লো। ইভি कविकन्नफ्रमः ॥ वकात्रयुक्तः । ৯ অশ্বিতৎ। আ শ্বিতিত শ্বিত্ত

। **७ त्यञ्ख्यामामः। इ**छि मृर्गामामः॥

শিত্ৰণ ক্লী শেতসণ্ঠণ। তৎ-शर्यायः। अष्ठे॰ २। ইভামরः ॥ শ্বেত• ৩ শ্বেত্ৰ• ৪১ ইতি ভট্টাকা ।। अ।। व्यथ वश्रि जानगर क्षे ভেদমাকাত্রৈব শ্বিত্র মাহ। স্ব-ঠৈকসম্ভব শ্বিত্র কিলাসঞ্চারু-**१**॰ **७८व**९। निर्मिष्ठे मनतिम्।वि ত্রিধাত্দ্রব সংশ্রমণ।। স্বঠেকস-खव॰ ऋरिशन मह এक खुला॰ म-স্তবো নিদান যস্য তৎ। শ্বিত্র-স্য ভেদানাহ। কিলাসণ চারুণ ভবেৎ। শ্বিত্র মেব রক্ত गা॰সা-छात्रयः। नन् अर्थमा श्विजमा কো ভেদঃ ইত্যত আহ। নির্দি-ষ্ট নপরিসাবীতি। শ্বিত্র নপরি-সাবি ভবতি স্বন্ধন্ত সাবি অথচ ত্রিধাতৃদ্ভব সংশ্রষ মিতি ত্রযো ধাতবো বাত পিত্ত কফা স্তে-ভ্যঃপৃথগ্ভূতেভ্য উদ্ভবো ষস্য তৎ। অথচ ত্রযোধাতবো রক্ত यांश्म (यमांश्म मंख्या १ वि-श्रीन समा छए। अर्थ माहि-পাতিক সৰ্বধাতুগতঞ্চ ভবতি 🗷 ि एकः ॥ 🕸 ॥ स्मायुक्तम

লকণ ভেদ মাহ। বাতাজকাৰুণ গিতাতামু॰ কমলপদ্রবৎ। স-मारः রোম বিধাসি কফাচ্ছেত ष्न । अक्ष ।। जक्षुक क्या फक माण्य रमहः मू ठामित्मव । वर्ष-নৈবেদমুভয় কফা তক্ষোত্তরো-ख तथा जरून गीयला हिन्। क-यन्थे विष्ठात्मे यद्या (श्रष्ठ-ৰস্তে লোহিত বোধয়তি। যন পুষ্ট ক্রমাজক্ত মাণ্স মেদঃসূ চাদিশেৎ। তথা চ চরকঃ। অরু-**৭**° রক্তগে বাতে তামু॰ পিত্তে প-नक्टा (क्टिंग्ट क्टिमिन (मनः एड শ্বিত্রণ ঙ্বষ্ঠণ পরণ পরণ ইতি।। উভ-य॰ बिविध मिल सिख॰ वर्णन केषृ-গেব। অৰুণং তামুণ শ্বেতঞ্চ দেবি ভেদাৎ ৷৷ দ্বিধং দোষজং ত্রণ-জ্ঞ। তথা চভোজঃ। শ্বিত্রঞ দ্বিবিধ বিদ্যাদ্যোষজ ত্রণজ তথেতি ॥ 🛊 ॥ शित्र॰ माश्र ममा-ধ্য মাহ। অশুক্ল রোমাবহল ম-সংসৃষ্ট নিথো নবং। অনগ্রিদ্ধা-জ সাধ্য শিত্র বর্জা মতো ২-नाथा।। व्यवश्वः ७न्। व्यनाका। গুছ পাণিতলে ঠেষু জাত মগ্য-**ठित्रखन**ः। वर्द्धनीयः वित्मारयन কিলাস সিদ্ধি নিচ্ছতা।। গুহুণ

মেছন ভগঞ। তল মত্র পাদত-ল । সুশ্রুতেনান্তে জাত মিতি मागानाटा निर्मिखेषा ॥ 🛊 ॥ অথ শ্বিত্রস্য চিকিৎসা। বিজী-তকত্বক্ মলপু জটানাং ক্লাথেন ক্ষা গুডসংযুতেন। অৰল্গুজং বীজ মপাকরোতি শ্বিত্রাণি ক্ল-क्छानानि भूखतीकः।। यलभूः क-টুবঁরী। অবগ্রুজঃ বঙ্গচী। ১॥ সড-় ৰাবন্তুজবীজ হরিতাল তচ্চতু-र्था॰म॰। यनः मिला जालकाकी ७अ। क्व मिम्नक्।। मृद्धन श বাং পিষ্টে সবর্ণতাকারক শ্বিত্র-স্যা২। শ্বিত্রস্থ বজতাত্ত প-कार्किनाधिरकन वा। भित्रिक न्याः সিতায়াশ্চ মূলেন পরিলেপিত• ॥ গিরিকণী নীলাপরাজিতা। ধ-স্বস্তরীতিলোকে।৩।। ক্বাথঃ সবা-क ठी हुर्ने॰ थाजी थि नित्रमात्रत्याः। শড়োন্দু সন্দ ধবলং শ্বিত্রণ সংসে-বিতো হস্তি ৷৷৪৷৷ মথিতেন পিবে-क्तृर्न॰ कारकाम्यत वञ्चकः। रेजना-क्छ॰ यर्गारमयी माजिकामी शिक-হৃদ্ভবেৎ!৷ মথিত° নিৰ্জল° বিলো-ডিত পি । তক্রণ চতুর্থাণ্শ জ-लयुक्त॰ বস্ত্রপূত• দধি। ৫। খদির-স্য পলান্যকৌ সোমরাজ্যাঃ প

लहरं। जिरुला शितृमर्फन्ठ माइ मार्वाथ भर्भ हैः॥ भृथक् भनान् मगू कृ जा नि श्विषा वा भन प्रय । জলাচকৰ্বে সাধ্য যাবৎ পা-माव**्**णिषिकः ॥ काथायानकः मृ-ब्द्यो यृज्अञ् विभावत्य । व-তুঃপল সোমরাজ্যাঃ খদিরস্য পল॰ তথা।। পটোলমূল ত্রিফ-ला जायमाना मूत्रालञा। कर्या-দ্ধং কটুকঞাপি কার্ষিকান্ সৃদ্ধ পেষিতান্।৷ পলম্বৰণ কৌষিকস্য শুদ্দাগত্ৰ প্ৰদাপবেৎ। সিদ্ধং স-र्পि तिषः श्विजः इन्याष्ट्र हेवान-नः॥ अकोमगानाः अश्वीनाः श-त्रम॰ देव ७८थो यथः। स्मामहार्जी-ঘৃত নাম নির্মিত ব্রহ্মণা পুরা।। লোকানা মুপকারায শ্বিত্রস্থা-मि রোগিণা[•]।। ইতি সোমরাজী যৃত্ত ৷৷ ৬ ৷৷ মহোষধ মহামেদা নিম্বপত্রাণি সর্যপাঃ। মনঃশিলা চ সিন্দূর পদ্ম বারিণ্যবন্ধজে ।। হরিদ্রে হরিতালঞ্চ ত্রিফল। পীত-গন্ধকান্। এতানি সমভাগানি विवाक्ता॰ गानि द्वाक्टय ।। मर्शि-শুভ । দিগুণ ত্রিগুণ কীর• গোন্তঞ্চতুর্গুণ ৷৷ ভামপাত্রে

তু সংস্থাপ্য শনৈ মৃ দ্বিমনা পচেৎ । চতুৰ্ভাগাৰশেষম্ব সকল্ক মৰ-তারবেৎ।। অগ্নৌ किश्व ह निः শ-क॰ जनमूक॰ विष्कनः। अजाङ्ग পানযোগাতদাও সরান্ গদান্ क्टरा अकोमनानाः क्रश्नाः দজণা॰ শ্বিত্রিণা॰ তথা। দুর্ফনা-ডীষু মৰ্ত্যানা সুাবিণা কীটি-না॰ তথা।। অসৃক্ সু।বপরীতা যে বে চ ত্যক্তভিষক্কিযাঃ। সর্বগ্ৰ-হবিযুক্তানা শীর্ণাঙ্গানা বিশে-ষতঃ।। সৰ্বধাতু গতে স্বৰ্ষ্টে পতিত্ত- ॥ জ্র শিরোরুহে । ঘর্ষরাব্যক্তঘো-ষাণা॰ তথা সর্বাঙ্গবাতিনা॰ ॥ পানে ২ভ্যঙ্গে তথা নদ্যে বস্তি-কর্মণি নিত্যশঃ। সপ্তরাত্র প্র-যোগেণ সৰ্বন্দ্ৰ্তানি নাশ্যেৎ।। विम श्वार थरगारमन पूर्न हम् नि-ভাননঃ। জাতকেশ নথ শাশ্র র্ভাতি ষোডশ বর্ষবৎ 11 অনঙ্গ সহিত সাক্ষাৎ সর্বাময বিনা-শনঃ। এতদ্যৃত মহাশ্রেষ্ঠ ভা-র্গবেণাবভারিত ॥ মনুযাণা হিতার্থায় সর্ব্যাধিহর পর । নহামাৰ্ত্তিক মিদি ঘৃত সৰ্বাম-রার্চ্চিত ।। ৭॥ ইতি ভাবপ্রকাশঃ श 🗱 ॥ जिन्छ। शाबी थिन त्र-

याः काथः भीषा ह जबू मन्यू-তः। मध्यम् धवन भिजः इस्टि जूर्नः न मन्यस्था इकि भाकरण ३१८ जधायः॥

শিত্রমী জী পীতপর্ণী। বিছ্টী
ইতি ভাষা। ইতি শব্দচন্দ্রকা।।
শিত্রী ত্রি শিত্ররোগযুক্তঃ। যথা
। শিত্রী বস্ত্রং খা রসম্ভ চীরী লবণহারকঃ। ইতি মিতাক্ষরা।।
শিদ ই ও শৌক্রে। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ। বকারযুক্তঃ। ই শ্বিশ্যতে। ও শ্বিশতে পুওরীকং।
ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শ্বেতং ক্লী কপ্যণ ইত্যমরং ৷৷
শ্বেতং পুণ শুক্লবর্ণং ৷৷ দ্বীপবিশেষ্ট ৷৷ পর্বতভেদং ৷ ইতি মেদিনী
৷৷ কপর্দকং ৷ ইতি হেমচন্দ্রং ৷৷
শুক্রগ্রহঃ ৷৷ শ্বেতাভুং ৷ ইতি
শব্দরত্বাবলী ৷৷ শঞ্বং ৷ ইতি
কাজনির্ঘক্তং ৷৷ জীবকং ৷ ইতি
কাটাধরং ৷৷ শিবাবতারবিশেষং
৷ যথা ৷ বেদব্যাসাবতারাণি দাপরে কথিতানি তু ৷ মহাদেবাবতারাণি কলো শূণুত স্ব্রতাং ৷৷
আদৌ কলিযুগে শ্বেতো দেবদেবো মহাদ্যুতিং ৷ নামা হিতায
বিপ্রাণা মভুদ্বৈবস্বতে হস্তরে ৷৷

श्चितिक्ष्यदेव त्रा इंगरल भई-ভোত্তমে। তস্য শিষ্যাঃ শিশ্বা-যুক্তা বভূবু রমিতপ্রভাঃ॥ খে-তঃ শ্বেতশিখ শ্চৈব শ্বেতাস্যঃ খেতলোহিতঃ। চত্বার স্তে মহা-ष्रात्ना बाक्रगा विषयात्रगाः ॥ সুভাবো দমন শ্চাথ সুহোত্তঃ ক-ঙ্গণ স্তথা। লোকান্ধি রথ ষো-शीत्सा देकशीयवास मश्रम् ॥ व्यक्टिंग पविवादः मान्तवत्य वृष-ভপ্রভুঃ। ভৃগুন্ত দশমে প্রোক্ত ख आपूर्वाः शतः सृष्टः ॥ बापत्म <u> ২ত্রিঃ সমাখ্যাতো বালীচাথ ত্র-</u> যোদশে। চতুর্দশে গৌতমস্ত বেদশীর্বা ততঃ পরণ ৷৷ গোকর্ণ শ্চাভবত্তস্মাৎ গুহাবাসঃ শিখ-खाय । जिंगाना छेशामक ना-ৰুকো লাঙ্গলী ক্ৰমাৎ।। শ্বেভ স্তথাপরঃ শূলী তিজী মুজী চ বৈ ক্রমাৎ। সহিষ্ণুঃ সোমশ-या ह न जनीत्मा शिख्राम अ-ভূঃ।। বৈবস্বতে হস্তরে শস্তো রবতারা স্ত্রিশূলিনঃ। অফাবি॰-শতি রাখ্যাতা হস্তে কলিযুগে প্রভোঃ ৷৷ ইতি কৌর্ম্মে ৫০ অ-ধ্যায়ঃ ॥ 🕸 ॥ স্বেভপর্বত্দ্য প-রিমাণাদি যথা। উত্তরোত্তরে-

ণেলাৰ্ড নীলঃ শ্বেডঃ শৃন্ধবা निष्ठि ब्राया त्रमाक हित्रभाष अ-बना॰ बर्गामानित्रमः आनाम- छाः উভयতः काद्रामावश्रद्याः षिमश्रमुरगांजन शृथव এटेकक-শঃ পূৰ্ৰস্মাৎ পূৰ্ৰস্মাদৃত্ৰরোত্ত-त्ता मुना नाशिका लग देनश्र এব হুসস্তি। এবং দক্ষিণেনেলা-বৃত॰ নিষধে। হেমকুটো হিমা-লয় ইতি প্রাগায়তা যথা নীলা-দ যঃ। অযুত্রোজনোৎসেধা হরিবর্য কি॰পুরুষ ভারতানা॰ য-থাসংখ্যা ইতি শ্রীভাগবতে ৫ कटक ३७ व्यथायः ॥ 🕸 ॥ त्राज-विद्रमयः। यथा। बद्रमावाह। শ্বেতাভিজনসম্পন্ধঃ সত্যব†গ-नम्यकः। त्रयाधीजः एठः मछः গুরবঃ পরিতোষিতাঃ॥ ন তে দত্ত॰ দ্বিজেভ্যো ২ন্ন॰ কদাচিদ্ধি বুভুক্ষিতে। তন্মাতীত্রেছ সণ-জাতা কুধা তে নৃপসত্তম ৷৷ অ-मनान्ट श्रुगा न माविश्व ৰ্মহীতলে। স্বৰ্গে বাপি তথানা-ত্র অন্নদান তত্তা ২ধিক ।। ইতি বঙ্কিপুরাণে অন্নদাননামা-भागिः ॥ শ্বেতঃ ত্রি श्क्षक्रवर्गयुक्तः। हेजा-

भद्रशाक्षा (श्वववस्त्रुनि वशा । অথ খেতানি। সুধা শূচ্চৈঃ শ্ৰ-বঃ শস্তু কীর্ত্তি জ্যোৎসা শর-দ্যনাঃ। প্রাসাদ সৌধ তগর ম-नातक श्याखयः ॥ मृत्यान्य-কান্ত কপূর করম্ভা রজত হলী ৷ হিশ্মোক ভস্ম হিণ্ডীর চন্দন করকা হিমণ।। হারোর্ণনাভ ত-ন্তুন্থি স্বৰ্গকেভরদাভুকণ। শে-याशिः भर्कता मूक्षः मि गङ्गा॥ সুধা জল।। মৃণাল সিকতা হংস वक देकत्रव ठायतः। तुखागर्र शू-প্রীক কেতকী শখ্য নির্বারাঃ॥ লোগু সি ছ ধজ চ্ছত্ৰ চূৰ্ণ সূক্তি क्शर्फकाः। यूङा अभूम न क्य **षख भू**ट्यां **भटना खगाः ॥ टेकला**-স কাস কার্পাস হাস বাসব জ-क्षत्राः। नात्रमः शात्रमः जन्म थ-**िका** स्काष्टिकालयः ॥ देखि कवि-কল্পলতাযা॰ দ্বিতীয়ে শ্লেষস্তব-কে বর্ণো নাম দ্বিতীয় সসুম।। শ্বেতক ক্লী ৰূপ্য । ইতি রাজ-निर्घकिः॥

শ্বেতকঃ পু॰ বরাটকঃ। ইতি ভূরিপ্রযোগঃ।।

শেতকণ্টকারী খ্রী শুক্লকণ্ট-কারিকা। শেতরেঙ্গনী ইতি

হিন্দীভাষা। তৎপৰ্যায়ঃ। সি-তকণ্টকারিকা ২ শ্বেতা ৩ কে-ত্রদূভী ৪ লক্ষণা ৫ সিভসি•ছী ৬ সিতকুজা ৭ কুজবার্কাকিনী ৮ সিতা ২ সিক্তা ১০ কটুবাৰ্দ্রাকী ১১ ক্ষেত্রজা ১২ কপটেশ্বরী ১৩ নিঃমেহফলা ১৪ বামা ১৫ সিত-क्छ। ३७ मह्यिभी ३१ गर्मजी ३৮ हिन्नका ३२ हास्त्री २० हस्र-, भूष्णा २३ श्रियहती २२ नाजनी ২৩ দূর্লভা ২৪ রামা ২৫ ৷ অ-माखनाः। क्रांच । करूषः। উক্তত্ব। কফ বাতনাশিত্ব। **চक्षुशुष् । जीशनष्। तमनियाय-**कष्म । इंछि ताजनिर्यन्धः ॥ 🕸 ॥ খন্যক। শ্বেতা ক্ষুদ্র। চন্দ্রহাসা লম্বণা ক্ষেত্রদূতিকা। গর্দভা চন্দ্রভা চান্দ্রী চন্দ্রপুষ্পা প্রিয-ধরী।। কণ্টকারী সরা তিক্তা करूका मीशनी लघुः। करकाका পাচনী কাস শ্বাস জ্বর কফানি-লান্।। নিহন্তি পীনসং পার্শ-शीषा कृषि इताययान्। ত्रयाः ফল কটুরদ পাকে চ কটুক ভবেৎ ৷৷ শুক্রস্য রেচনণ ভেদি তিক্তা পিত। গ্রিফল্লযুঃ। হন্যাৎ क्क यक्र कर्ष्ट्र काम व्यवः क्रिय

জ্বান্।। তদুৎ প্রোক্তা সিতা क्षुषा वित्यसाकार्जकातिनी । ইতিভাবপ্রাকাশঃ॥ শ্বেতকনা দ্রী অতিবিষা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শ্বেতকিণিহী দ্রী বৃক্ষবিশেষঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। সিতাভিকটভী ২ গিরিকর্ণিকা ৩ শিরীবপত্রী ৪ কালিন্দী ৫ শতপত্রা ৬ বিষ-দ্বিকা ৭ মহাশ্বেতা ৮ মহাশৌ-खी २ महानिक**रेडी ३०। व्यम**रा গুণাঃ ক টুর । উষার । গুলা विवाद्यान मृलामायनाभिषः । বাত কফ জীৰ্নরোগ শমনত্বঞ্চ। শেতা চ তত্ৰ গুণবুক্তা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ পুস্তকান্তরে সি-তাতিকটতী স্থানে সিতালিক-**ढे** । यशानिक**ढे जी ज्ञात्म य**-হালিকটভীতি চ পাঠঃ ।। শেতঙ্গঞ্জরঃ পু॰ ঐরাবতহস্তী। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শুক্লগজশ্চ শ্বেতঙ্গশঃ পু॰ তৃণবিশেষঃ। তৎ-পর্যায়ঃ। সিতদর্ত্তঃ ২ হুস্তব্দশঃ ৩ পৃতঃ ৪ যজ্ঞীযপত্রকঃ ৫ বজুঃ ৬ ত্রন্নপবিত্রঃ ৭ তীক্ষঃ ৮ যজ্ঞ-ভূষণঃ ৯ সচীমুখঃ ১০ পুণাতৃণঃ ১১ বহিঃ ১২ পূতত্ণঃ ১৩।

অস্য মূল গুণাঃ। হিমন্ত। রু-চ্যন্ত। মধুরত্ব। পিত্ত রক্ত জ্বর তৃষা শ্বাস কামলাদোষ নাশি-তৃষা ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শ্বেতকেতঃ পু॰ বুদ্ধঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। কেতুগ্রহবিশে-ষঃ। যথা। কেতবো হৃত্র দৃশ্য-স্তে বাৰুণা স্ত্ৰয এব তে। উৰ্মি-কেতৃঃ শ্বেতকেতু ধূ মকেতু স্তৃ-তীযকঃ ৷৷ শ্বেতকেতু ৰ্যদা দৃ-শ্যেৎ শ্বেতাস্থি সরুতে মহীণ। তদা মান্যমাণ্সানি ভক্ষযন্তী-र मान्याः॥ कृष्ड्यार्ड॰ जगद রুৎস্ব॰ চক্রবদ্ভুমতে তদা ॥ অপি চ। শ্বেতঃ শস্ত্রাঙ্গল॰ ঙ্গ-• ৰ্য্যাৎ লোহিত স্ত্ৰুগ্নিজ ভব । ক্ষুদ্ভৰণ পীতকঃ সৰ্য্যাৎ ক্লফো রোগ মথোত্ত্বণ ।। অন্যচ্চ। অ-वखी शूकतातगाः यावक्षनगान-থাপরান্ দেশান্ কচিৎ কচি-জোগ দুর্ভি কৈঃ পরিপীডিতান্ ॥ শ্বেতাখ্যস্ত জটাকারী শ্যা-মো ব্যোমত্রিভাগগঃ। নিবর্ত্ত-তে ২পসব্যেন,ত্রিভাগীঙ্গরুতে প্রজাঃ।। ইতি সম্যামৃত ।। শ্বেতকেশঃ পু॰ রক্তশিগুঃ। ইতি किरियतः॥ श्वक्रकिष्ठ॥

শেতকোলঃ পু॰ শক্রমৎসাঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।।

(शृज्यमितः भू॰ एक्क्यमितः। তৎপর্যাयः। কদরः ২ শেতসা-ব্লঃ ৩ কার্যুকঃ ৪ সব্জকণকঃ ৫ সোমসারঃ ৬ সোমবৃক্ষঃ ৭ সো-মবদ্ধঃ ৮ পথিদ্রুমঃ ১। অস্য গুণাঃ। ভিক্তত্ব॰। ক্ষাযত্ব॰। কটুৰণ। উষণ্ডণ। কণ্ডুতি ভূত সপ্ত কফ বাত ত্রণনাশিত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। পুস্তকাস্ত-রে কার্ম্মকস্থানে কামুকঃ সজ্জ-কণ্টক স্থানে স্বপ্তকণ্ঠক ইতি চ शार्वः॥ अनाम् । थिनतः শেষতসারো ২ন্যঃ কদরঃ সোম-वश्वनः। कनद्रा विभएमा श्व-ণেগ মুখরোগ কফাসুজিৎ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।

শ্বেতগজঃ পু॰ ইন্দ্রন্তী। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ শুক্লবর্ণহন্তী চ ॥ শ্বেতগরুতঃ পু॰ হণসঃ। ইত্য-মরঃ॥

শ্বেতগুঞ্জ। স্ত্রী শুক্লগুঞ্জা। সাদাকুঁ চ ইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ
। শেতকাষোজী ২ ভূন্টিকা ৩
কাকাদনী ৪ কাকপীলুঃ ৫ চক্রশ্ব্যা ৬ চূডালা ৭। অস্যা

গুণাঃ। ভীক্ষত্ব•। উষণ্ডব•। তস্যা বীজ বান্তিকর । তদ্যাঃ শিফা শূল বিষনাশিনী। তদ্যাঃ পত্ৰ° বশ্যে শস্ত । ইতি রাজনির্ধন্টঃ । অপিচ। শ্বেতা রক্তোচ্চটা প্রোক্তা কুফলা চাপি সা স্মৃতা ৷ রক্তা সা কাকচিঞ্চী স্যাৎ কা-कनखी ह ब्रक्किका।। काकामनी काकशीनुः मा युजानात्रवल्लती । গুঞ্জাদ্বযন্ত কেশ্য॰ স্যাৎ বাত পিত্ত জরাপহং॥ মুখশোষ ভুম শ্বাস তৃষ্ণা মদ বিনাশন 1 त्वाभगर्बः वृशाः वनाः क वन॰ श्रवः।। क्रमीखन्थं न ষ্ঠানি রক্তা চ ধবলাপি চ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ ৷৷ অন্যচ্চ ৷ গুঞ্জা শিখণ্ডিকা ভামাু রক্তিকা কাক-শান্তিকা। শ্বেতান্যা চক্রিকা চূডা দুমাষা কাকপীলুকা।। গু-ঞ্জা কেশ্যা বলকরা রুচ্যা পিত্ত ককাপহা। নেত্রামযহরা বৃষ্যা रिख कष् धर बनान्।। क्रमीख-লুপ্ত সন্ঠানি তদক্তেতাপি শস্য-তে। ইতি यहनशानिनिष्कः॥ শ্বেতচন্দন ক্লী শুক্লচন্দন। ইত্তি वाजनिर्धन्छः॥ जमा शर्याम् खटनो जननमटन जरुद्यो ॥

শ্রেতিলী স্ত্রী শাকভেদঃ। তৎ
পর্যায়ঃ। বাস্তকী ২ সৃপথ্যা ৩
শ্রেতিলিকা ৪ সিতিলি ও উ
পচিল্লী ৬ জুরমী ৭ ক্লু ক্রবাস্তৃকী
৮। অস্যা গুলাঃ। শ্বেত্তু চিল্লী
সুমধুরা ক্লারা চ শিশিরা চ সা।
বিনাশিনী ।। ইতি রাজনির্যক্তঃ
শ্বেতচ্চদঃ পুণ হণসঃ। ইতি হলাযুধঃ ৷৷ গদ্ধপত্রঃ। বাবুইতৃলসী
ইতি ভাষা। ইতি শব্দচন্দ্রকা।।
শ্বেতজীর লঃ পুণ গৌরজীরকঃ।
ইতি রাজনির্যকঃ।
শ্বেতজিকণ ক্লী শ্বেতটক্ষণণ। ইতি
রাজনির্যকঃ।।

শেত টক্ষণ ক্লী ক্লারবিশেষঃ।
শাদাসোহাগাইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। শ্বেত টক্ষক ২ লোহি
৩ সিমুকর ৪ সিমু ৫ মালতীতীরসম্ভব ৬ শিব ৭ জাবকর ৫
৮ শীতক্ষার ৯ টক্ষণ ১০। অস্য
গুণাঃ। মিগ্ধরণ কটুরণ উক্ষ
রণ কক বাতাম ক্ষম শ্বাস
বিশ্বকাস মল নাশির্ক। ইতি
রাজনির্ঘণীঃ।

শ্বেতদূৰ্ব। স্ত্ৰী শুক্লদূৰ্বা। তৎ-পৰ্য্যায়ঃ। গোলোমী ২ সিতা-

খ্যা ৩ চণ্ডা ৪ ভত্ৰা ৫ ভাৰ্গৰী ७ দুর্মরা १ গৌরী ৮ বিমেশা-নকান্তা ৯ অনস্তা ১০ শ্বেতা ১১ দিব্যা ১২ শ্বেতকাঞ্চা ১৩ প্রচ-७। ३८ मर्मुवीर्या ३৫ मर्मुका-খা ১৬ সহসুপর্বা ১৭ সুরবল্লভা ১৮ শুভা ১৯ সুপর্বা ২০ সিত-क्ति। २३ कक् । २२ कक् । खक्र ২৩। অস্যা গুণাঃ। অতিশিশি-রত্বণ। মধুরত্বণ। বান্তি পিতামা-তিষার কাস দাহ ত্যানাশিরণ ब्रुठायक। ইতি রাজনির্ঘনিঃ।। শেতদিপঃ পু॰ ইন্দ্রহন্তী। ইতি <u>जिका ७८ मयः ॥ श्वक्र गक्र महा।</u> শ্বেভদ্বীপঃ পু॰ চন্দ্ৰদীপঃ। সচ देवक्रकाथाविक्षामा यथा। त्य-তদীপণ গতবতি দ্বয়ি জফুণ ত-দীশরণ। তত্র হায মভূৎ প্রশ্ন य गा॰ य मनू शृष्क्ति॥ इंडि बी-ভাগবতে ১০ ক্ষন্দে ৮৭ অধ্যায়ঃ ।। 🗱 ।। অপি চ। একদা ব্রন্ধণো लाकानायाख॰ नातम॰ यूनि॰। পৰ্য্যটন্যাৰণো লোকান্ দৃষ্ট্যান-দ্বাৰবীৰচং।। ভগবন্ জহি মে যুদ্ধ পত্ৰ সন্তি নহাৰলাঃ। যো-দ্ধু নিচ্ছানি বলিভি স্তুণ জানাসি জগ্ৰহ ।। মুনি ধ্যাত্বা ত স্চি-

র॰ শেওদীপ নিবাসিনঃ। মহাবলা মহাকাষা স্তত্র যাহি মহামতে । বিষ্ণুপূজারতা যে বৈ বিফুনা নিহতাশ্চ যে। ত এব তত্র
সংজাতা অজেষাশ্চ সুরাস্বৈঃ
। শ্রুদ্ধা তদ্রাবণা বেগামান্ত্রভিঃ পূজাকেণ তান্। যোজুকামঃ সমাগত্য শ্বেতদ্বীপসমীপতঃ
।। তৎপ্রভাহততেজক্ষণ পূজাকণ
নাচলত্তঃ। ত্যক্ত্রা বিমানণ
প্রথয়ে মন্ত্রিণ্ড দশাসনঃ।।
প্রবিশ্বের তদ্বীপণ ধৃতো হস্তেন যোষিতা। পৃষ্ঠশ্চ স্থণ সতঃ
কোসি প্রেষিতঃ কেন বা বদ।।
ইত্যুক্তো লীলষা স্ত্রীভি হ্স-

ঃ পুনঃ পুনঃ । রুচ্ছাদ্ধস্তাদ্বিনির্মুক্ত স্তাসাণ স্ত্রীণাণ দশাননঃ ।। আশ্চর্য্য মতুলণ
লক্বা চিস্তবামাস দুর্মাতিঃ। বিক্বুনা নিহতো যামি বৈঙ্গুর্থ।
কি নিশ্চিতঃ । মি বিক্ষুর্থথা
সপ্যেত্তথা কার্য্যণ করোমাহণ ।
ইতি নিশ্চিত্য বৈদেহীণ জহার
বিপিনে ২ সুরঃ ।। জ্ঞাবৈর পরমাত্মানণ স জহারাবনীসূতাণ ।
ইতি শ্রীব্রহ্মাণ্ডপুরাণে শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উত্তরকাণ্ডে ৪

অধ্যাষঃ ।। অন্যক্ষ। শ্বেতা॰ গঙ্গা॰ নরঃ স্নাত্বা ষঃ পশ্বেও শ্বেতমাধব॰ মৎস্যাক্ষণ মাধব-ক্ষৈব শ্বেতদ্বীপণ স গচ্ছতি ।। ইতি তীর্থচিস্তামণিঃ ।।

শ্বেতধাতৃঃ পু• খটিকা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শুক্লবর্ণধাতৃ-দ্রব্যক্ষ।।

(श्रव्भवा पृ हसः॥ कपृतः
।। मम्प्रकारकनः। ইতি মেদিনী॥
(श्रव्यन्तः पृ स्वः। ইতি
मस्तत्र श्रावनी।। श्रुक्तनीनवर्गः
(श्रव्यक्षः पृ रंभः। ইতি श्रिव्यव्यव्यक्षः प्र रंभः। ইতি श्रिव्यव्यव्यक्षः।

শ্বেতপত্ররথঃ পু॰ ব্রহ্মা। ইতি শব্দমালা।। শ্বেতপত্রো হণ্সো রথো বাহন যস্য।।

শেতপদ ক্লী সিতান্তে:জং।
তৎপর্যাবং। সিতাব্জং ২ পুণ্ডরীকং ৩ শ্বেতবারিজং ৪ হরিনেত্রং ৫ শরৎপদ্মং ৬ সারদং ৭
শন্তবন্ধতং ৮। অস্য গুণাং। হিমন্ত্রং। তিক্তন্তং। মধুরন্তং। পিত্র
দাহাসু ভুমদোষ পিপাশানাশিন্তাং। ইতি রাজনির্যন্তঃ।।
শেতপর্না স্ত্রী বারিপর্নী। পানা

শ্বেভপু

ইতি ভাষা। ইতি রত্নমালা।। শ্বেতপর্ণাসঃ পু॰ শ্বেততুলসী। যথা। অর্জ্জকঃ শ্বেতপর্ণাসো গন্ধপূত্রঃ সঠেরকঃ। ইতি রত্ন-মালা।।

শ্বেতপাটলা স্ত্রী শুক্লপাটলাবৃক্ষঃ
। ইতি জটাধরঃ ॥

শ্বেতপিঙ্গঃ পু• সি•হঃ। হেমচন্দ্রঃ।

শ্বেতপিঙ্গলঃ পু সিংহঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ শুক্লকপিলবর্ণ-যুক্তে ত্রি॥

শ্বেতিপিঙ্গলকঃ পুং সিংহঃ। ইতি শব্দমালা।।

শ্বেতপিণ্ডীতকঃ পু॰ মহাপিণ্ডী-তরুঃ। ইতি রাজনির্ঘক্টঃ।।

শ্বেতপুষ্ণঃ পু্ সিন্ধুবারবৃষ্ণঃ ৷ ইতি জটাধরঃ রাজনির্ঘণ্টশ্চ ৷৷ শুক্লসসুমে ক্লী ৷৷

শ্বেতপুষ্পকঃ পু॰ করবীরবৃক্ষঃ। ইতিরাজনির্ঘক্তঃ। শুক্লপুষ্প-যুক্তে ত্রি।।

শ্বেতপূপা স্ত্রী যোষাতকী।
শ্বেতঘোষা ইতি ভাষা। ইতি
রত্নমালা।। নাগদন্তী।। মৃপের্বারুঃ। ইতি রাজনির্ঘন্তঃ।।
শ্বেতপূপিকা স্ত্রী পুরদারী।।

শ্রেত্রা

यश्रामनभूष्मिका। इंडि রাজ-নির্ঘন্টঃ।।

শ্বেতপ্রস্নকঃ পুণ বৃক্ষবিশেষঃ।

কথা। তিক্তঃ শাকতরুঃ সেতৃবৃক্ষঃ শেতপ্রস্নকঃ। ইতি শব্দমালা।৷ শুক্রপুষ্পবুক্তে ত্রি।৷
শ্বেতভণ্ডা স্ত্রী শ্বেতাপরাজিতা।
ইতি রত্নমালা।৷

শ্রেতমন্দারকঃ পুণ বৃক্ষবিশেষঃ।
শ্বেতআক ইতি হিন্দীভাষা।
তৎপর্য্যায়ঃ। পৃথীদ্বরবকঃ ২
দীর্ঘাযুষ্যঃ ৩ সিতালকঃ ৪ দীর্যালকঃ ৫ সিতাহ্বয়ঃ ৬। ইতি
রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শ্বেতমরিচণ ক্লী শোভাঞ্জনবীজণ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ শুক্রমরিচঞ্চ ৷৷
শ্বেতমালঃ পুণ মেয়ঃ ৷৷ ধূমঃ ৷
ইতি বিশ্বঃ ৷৷ মেদিনী শব্দরব্লাবল্যোঃ শ্বতমাল ইতি পাঠঃ ৷৷
শ্বেতরক্তঃ পুণ পাটলবর্ণঃ ৷ গোলাবীরঙ্গ ইতি ভাষা ৷ ইত্যমরঃ
শ্বেতরঞ্জনণ ক্লী সীসকণ ৷ ইতি
কেচিৎ ৷৷
শ্বেতব্যাঃ প্রং শ্বেত্রক্তঃ টিকি শ্বন্

শেতরথঃ পু॰ শুক্রগ্রহঃ। ইতি শ-ব্দরত্বাবলী।। শুক্লবর্ণস্যন্দনশ্চ শেতরাজী স্ত্রী চচেণ্ডা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শেহৰ

त्थल्यािकः श्रः ह्याः। र्नायुथः॥

শেতরোহিতঃ পু॰ বৃক্ষ বিশেষঃ।
শেতরোহিত ইতি হিন্দীভাষা।
তৎপর্যায়ঃ। সিতপুলাঃ ২ সিতাহ্বয়ঃ ৩ সিতাহ্বঃ,৪ শুক্ররোহিতঃ ৫ লক্ষীবান্ ৬ জনবক্লভঃ ৭। অস্য গুণাঃ। কটুক্বং।
স্থিকারুং। ক্ষায়ত্বং। সুনীতল্লক্রণ। ক্রমিদোষ বাণ প্লীহ রক্ত নেত্রাময়নানিক্কণ। ইতি রাজনির্ঘণীঃ।।

শ্বেতলোধুঃ পু• পটিকালোধুঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শেতবচা স্ত্রী অতিবিষা। শুক্লবচা। শাদাবচ্ইতি ভাষা। তৎ
পর্যায়ঃ। মেধ্যা ২ ষড্গ্রন্থা ৩
দীর্ষপত্রিকাপ্ত তীক্ষণন্ধা ৫ হৈনবতী ৭ মঙ্গল্যা ৮। অস্যা গুলাঃ
। অতিগুণা ঢাত্বং। মতি মেধাযুঃ
সমৃদ্ধিদত্বং। কফনাশিত্বঞ্চ ।
ইতি রাজনির্যন্টঃ।। অন্যক্ত ।
পারসীকবচা শুক্লা প্রোক্তা হৈন্
মবতীতি সা। হৈমবত্যুদিতা তদ্দুলং হুন্তি বিশেষভঃ।। তত্বৎ
বচাবৎ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।
শেতবক্ষলঃ পু্ উভুম্বরবৃক্ষঃ।

শ্বেত্তৃ

ইতি জটাধরং।। শুরুত্বক্ চ ।।
পুণ চন্দ্রং। ইতি
হেনচন্দ্রং।। অজ্জুনং। ইতি
জটাধরং।। শুরুয়োটকশ্চ।।
শ্বেতবাসাং পুণ শুরুবস্ত্রধারিসস্থাসী। ইতি হলাযুধং।। পরিহিতশুক্লবসনে ত্রি।।

स्थिष्ठवाः श्रृ॰ इन्द्रः। ইতি मूक्ष-বোধব্যাকরণ॰।।

শ্বেতবাহঃ শ্বুণ অজ্ব্নঃ ৷৷ ইন্দ্রঃ ৷ ইতি কেচিৎ ৷৷

श्विताहनः श्रू॰ हक्कः ॥ व्यक्ति मः । इंडि स्मिनि ॥ मक्तः । इंडि भक्तकावनी ॥

শেষতবাহী পুণ অজ্নঃ। ইতি
শব্দরত্বাবলী । ইন্দ্রাণ্যাণ স্ত্রী ।।
শেষতবৃহ্না স্ত্রী বনতিক্তা। যথা।
শেষতবৃহ্না কপীতস্ত্র বনতিক্তা
বিসর্গিণী। শঞ্জিনী চাকচিচ্চা
চ গিরিজা ধূসরচ্ছদা। ইতি
রত্নমালা ।।

শ্বেতবৃহতী দ্রী শুক্লকুদ্রবার্ত্তা-কী ৷ তৎপর্য্যায়ঃ ৷ শ্বেতা ২ শ্বেতমহোটিকা ৩ শ্বেতসিংহী ৪ শ্বেতফলা ৫ শ্বেতবার্ত্তাকিনী ৬ ৷ অস্যা গুণাঃ ৷ বিজ্ঞেবা শ্বেতবৃহতী বাত শ্লেম্ম বিনা- শিনী। রুচ্যা ব্যঞ্জনখোগেন নানা নেত্রামযাপহা।। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।

শেতবৃক্ষঃ পু॰ বরুণবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘক্তঃ।। শুক্লতরুক্ষ ।। খেতশরপুঞ্জা ক্রী ক্ষুপবিশেষঃ।

শ্রেতশরফোঁকা ইতি হিন্দীতাবা। তৎপর্বায়ঃ। সিতশাষকা
২ সিতপুথা ৩ শ্বেতপুথা ৪
শুভূপুথা ৫। অস্যা গুণাঃ। ক
টুষণ। উষ্ণম্বণ। ক্রমি বাত রুজাপহন্বণ। গুণাঢ্যম্বক। ইতি
রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শোলশিজিনা ইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। সুতীক্ষঃ ২ মুখভঙ্গঃ
৩ সিতাহ্বয়ঃ ৪ সুমূলঃ ৫ শ্বেডমরিচঃ ৬ রোচনঃ ৭ মধুশিগুকঃ
৮। অস্য গুণাঃ। কটুম্বং। তীক্ষমণ। শোফানিলাঙ্গরাথা মুখজাত্য নাশিষ্ণ। ক্রচান্থণ। দীপনম্বন্ধ। ইতি রাজনির্মন্টঃ।। শিগুরহ্বল পত্রাণাণ সুরসঃ পরমার্তিহ্বৎ। চক্ষুয়ণ শিগুজ্বণ বীজ্ঞণ
তীক্ষোফণ বিষনাশনণ।। অবৃষ্যাণ
কফ বাতম্বণ তম্বসোন শিরোর্তিন্ৎ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।

শ্বেতশিশাপা দ্রী শুক্লশিশাপাবৃক্ষঃ তিৎপর্যায়ঃ শ্বেতপত্রাহ
শ্বেতচিল্লিকা ৩ ৷ অস্যা গুলাঃ ৷
তিক্তম্বং শিশারম্বং ৷ পিত্ত দাহ
নাশিস্কা ইতি রাজনির্ঘন্তঃ ৷৷
শ্বেতশুঙ্গঃ পুং যবঃ ৷ ইতি জটাধরঃ ৷৷ শুক্লশুঙ্গাযুক্তে ত্রি ৷৷
শ্বেতশুরণঃ পুং বনশূরণঃ ৷ ইতি
রাজনির্ঘন্তঃ ৷৷

শ্বেতসর্পঃ পু॰ বরুণবৃক্ষঃ। ইভি জটাধরঃ।। শুক্লবর্ণাহিশ্চ।। শ্বেতসারঃ পু॰ খদিরঃ। ইভি জটাধরঃ।।

শ্বেতসুরসা স্ত্রী শুক্লশেফালিকা । ইত্যমরঃ।।

শ্বেতম্পন্দা স্ত্রী অপরাজিতা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

स्थित्रका भू॰ हेन्साभाः। हेनि

किराख्याः। एक्सर्वर्गावेकणः।।
स्थित्रका भू॰ किराविकः। हेनि

कृतिश्राक्षाः। एक्सर्यक्षाः। हेनि

कृतिश्राक्षाः। एक्सर्यक्षणः।।
स्थिन। श्री वताविका।। कार्थ
शावेना।। मधिनी। हेनि स्य
मिनी।। অভিবিষা। हेनि तक्स्नः

माना।। অপরাজিতা।। শ্থ
ववृह्नी।। শ্युक्कंक्नाती।।

नायानरञ्जी। निलावकला ॥ त्थि जूर्वा ॥ व अद्योजना ॥ क्वि। मक्ता। वृक्तरजनः। किना देखि कहा दिली ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ চ্রিকা-পত্ৰী ২ পৰ্যমূলা ৩ অবিপ্ৰিষা ৪ । অস্যা গুণাঃ। অতিমধুরত্ব। भीउनद्भा खनामाञ्ख्र। क्रि कातिष्रक। देखि ताजनिर्घकः॥ শেতাত্তিবৃৎ স্ত্ৰী শুক্লত্তিবৃতা। সাদাতেউডী ইতি ভাষা। তৎ-পর্য্যাবঃ। ত্রিভণ্ডী ২ ত্রিবৃতা ৩ ত্ৰিপুটা ৪ সৰ্বানুভূতী ৫ সরলা ७ निट्गाल्या १ देत्रह्मी ৮। व्यमा श्वनाः। त्रहनवः। वाष्-ष्रः। উक्षष्। मभीत शिखब्रत শ্লেম পিত্ত শোখোদর নাশি**ছ**° । ৰক্ষত্বক। ইতি ভাবপ্ৰকাশঃ।। শ্বেভান্নিঃ ন্ত্রী কুপবিশেষঃ। তৎ-পর্য্যায়ঃ। অম্লিকা ২ পিক্টোডী ৩ পিণ্ডিকা ৪। অস্যা গুণাঃ। । यध्तपः। व्यापः। भिखनानि-षः। वनमाञ्चकः। ইতি রাজ-निर्घनिः ॥.

শ্বেভার্কঃ পু॰ শুক্লার্কবৃক্ষঃ ৷ সা-দাআকন্দ ইতি ভাষা ৷ তৎ-পর্ব্যায়ঃ ৷ তপনঃ ২ শ্বেতঃ ৩ প্রতাপঃ ৪ সিতার্ক্তঃ ৫ শর্করাপুষ্পঃ ৬ বৃত্তমল্লিকা ৭ ৷ অস্য
গুণাঃ ৷ কটুছ ৷ তিক্তত্ব ৷ উফত্ব ৷ মলশোধনকারকত্ব ৷
মূত্রক্ত্যাসু শোকার্ত্তি বণদোষ বিনাশনত্বক ৷ ইতি রাজনির্বন্টঃ ৷৷

শ্বেতাবরঃ পু॰ সিতাবরশাকঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শ্বেতাহ্বা স্ত্রী সিতপাটলা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শ্বেভেক্ষু: পু: শুক্লবর্ণেক্ষু: সাদাআকু ইতি ভাষা। তৎপর্যায়:
। সিভেক্ষু: ২ কোন্ঠেক্ষু: ৩ বংশপত্রকঃ ৪ সুবেশঃ ৫ পাণ্ডুরেক্ষু:
৬। অস্য গুণাঃ। কঠিনত্বং ।
রুচ্যত্বং। গুরুত্বং। কফ মূত্রকারিত্বং। দীপনত্বং। পিত্ত দাহ
নাশিত্বং। বিপাকে কোক্টলত্বং
। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শেতাদরঃ পুণ স্বেরঃ। ইতি
ত্রিকাণ্ডশেষঃ। শুক্রবর্ণজঠরশ্চ
শেত্রণ ক্লী শিত্রণ। ইত্যমরটীকা।।
শেভৌহী স্ত্রী ইন্দ্রাগী। ইতি
দুশ্ধবোধব্যাকরণং।।
শ্বোবদীয়া ত্রি মঙ্গলং। ইতি

८इम्ड्यः ॥

ৰ মূৰ্দ্ধন্যধকারঃ। সতু একপ-ঞাশবর্ণান্তগত সপ্তচদারি শ বৰ্ণঃ ৷ চতুন্ত্ৰি শহাঞ্চনান্তগত একত্রি॰শত্তম ব্যঞ্চনঞ্চ। স্যোচ্চারণস্থান মূর্কা। ইতি वाकत्रनः। ७९ भर्यायः। यः ৰেতো ১ বাস্দেবশ্চ ২ পীতা ৩ थाखा ४ विनायकः ६ शब्रदम्छी ७ वामवारः १ (अप्रक्षे ৮ गर्ड-विस्याहनः २ लट्डाल्ट्या ३० व-स्मोर्फ्रमः ३३ काम श्रुक् ३३ का-মধুমকং ১৩ সূত্রীঃ ১৪: উশ্বা ১৫: ब्रा १७ नका ४१ मक्क अनः ১৮ প্রিমঃ ১৯ শিবঃ २० সূর্য্যাত্মা ২১ জঠরঃ ২২ কোষো ২৩ মন্তা २८ क्टब्स २० विमातिनी २७ कनकरकी २१ यशकिया २५ युकाशा २० यहाशुः ७० णितः ७३। इंडि डब्र ।। ॴ व्यशि हा ষকারঃ শেত আগ্যাতো মূধ্ব (ना) वृष म॰ खकः। शिखः मिछः। **क गाया ह यहादवानिः ऋविन्यू** बर । ইতি मञ्जाजिशान ।। 🖝 ।। चमा बनान यथा। बकात मृन् চार्वित्र व्यक्टिकानम्यः नहा। द्व-ভচন্দ্র প্রতীকাশ স্বয়ণ পর্ম-अधनी।। চতুর্গনিষ॰ বর্ণ॰ সুধা- ॥ सः

निर्मिष्ठ विश्रहः। शक्राह्मवष्यः वर्गः भश्यानमयः मताना तकः সৰ্ব তমো যুক্তণ ত্ৰিশক্তি সহিতণ সদা। ত্রিবিন্দু সহিক্ত বর্ণ আ-शानि छव मभ्यूष्ण।। मर्वतन्य ययः दर्भः समि ভाবय পाईछि । ইতি কামধেনুতন্ত্ৰণ। 🐠 ॥ অপি চাঃ স্বাধিতা বামতো দক্ষণতা **ह** लाक्क ख्रिशः। भूनकर्षु-গতা ভাসু ৰক্লি চন্দ্ৰ দিবাৰুৱাঃ ।। याजा ज्वामी विरक्षमा शानः यमा প्रक्रमा है है वर्षा-क्तित्रञ्जः॥ का। ज्या शामः ষথা। চতুতু জা চকোরাকী। চাৰুচন্দন চৰ্চিতা ৷ শুক্লবৰ্ণা ত্রিব্যনাণ বয়দাঞ্চ শুচিন্মিতাণ া রত্নালকার ভ্কাত্যা শেক मालगाभरमाजिजाः । । सन्यवृ-লৈ রভিবন্দ্যাণ সেবিতাণ যো-ককাজিকভিঃ। এবং খ্যাছা ফ কারন্ত তথ্যন্ত্রণ দশহা ক্রপেৎ 🛭 **३**ि बर्गाकात्रञ्जः ॥

कः पृ॰ कठः। ইভি मिनी।।
भानवः॥ मर्बः॥ ८७४ः॥ गर्छविस्माठनः। ইভি কশ্চিকেক।कत्रकायः॥

यः वि विष्यः॥ (अर्थः। देखि

विमिनी १।

यश म अ अन्द्रको। ইकि कवि-विकास । म जिवन विविध । अ स्मान । ইकि पूर्गा पानः ।। यस म हि॰ दम। ইकि कविक स-के यः ।। म मद्याकि स्मीप्य ।। ইकि पूर्ग पानः ।। यह अ दमहत्म। ইकि कविक स-कमः।। अ महत्क कल । दमः। ইकि पूर्ग पानः ।।

ষচ সম্বন্ধে। ইতিকবিকল্প ক্ষাণা।
সচতি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
সচি অংশকে। ইতিকবিকল্প ক্ষাণ

यह ज॰ শকে। ইতি কবিকর জনঃ

।। ज॰ শকে অব্যবে। সটতি

পটঃ অব্যবী স্যাদিত্যর্থঃ। ইতি

দুর্গাদাসঃ।।

ষট ত্রি সংখ্যাবিশেষং। ছয় ইতি
ভাষা। তদাচকানি যথা। ৰজুকোনঃ ১ ত্রিশিরোনেত্রণ ২ অর্কঃ
৩ অঙ্গণ ৪ দর্শনণ ৫ চক্রবর্ত্তী ৬
কার্ত্তিকেমমুখণ ৭ গুণঃ ৮ রসঃ
১ খাতুঃ ১০ জরবাহুঃ ১১ ব্রূপণ
১২। ইতিকবিক্সলভা।।

ষট্কর্ম ক্লী ষট্প্রকারশাস্ত্যাদি-কর্ম। ষথা শারদাষা । জথা-ভিধাস্যে তন্ত্রে হিলমন্ সম্যক্ মট্কর্ম লক্ষণ । সর্বভন্তানুসা-

द्भिष প্रযোগः कलिमिकाः॥ भा-স্তি বশ্য স্তম্ভনানি বিদেষোচ্চাট-নে ততঃ৷ যারণাস্তানি সংশস্তি ষ-ট্কর্মাণি মনীষিণঃ।। রোগ হত্যা এহাদীনা নিরাশঃ শান্তি রীরি-छ। वनाः कनानाः मर्दशः विदशः यच मृत्रीतिष्ठशा अवृर्खित्ता धः मर्दि-ষা স্তম্ভন তদুদাহত। সিগ্ধানা ক্লেশজনন মিথে৷ বিদ্বেষণ মতণ श छक्राहेन श्राहिन जुंग्नन পরিকীর্ত্তিত । প্রাণিনাণ প্রাণ-र्तनः भातनः छन्नास्छ।। स्टम-वञा मिक्कामामीन खाषा कर्यानि সাধ্যেশা রভি বাণী রমা জ্যে-की मूर्या काली यथाक्रमणा यहे-कर्या (मवजाः श्रीकाः कुर्याएमे णाः वागृक्ररायः। जेन हत्यस निर्श्वि वांचुशीना भित्ना गठाः॥ সূর্ব্যোদক সমারভ্য বটিকাদশ-ক কমাৰ ে ঋতবঃ স্যু ৰ্সস্তা-माः चरशतावः मित्न मित्न।। वम् जीय वर्षाथा नतस्मगन् देनमिताः। यद्या। अक्रताखः म-রৎকালো হেমন্তশ্চ প্রভাতকঃ।। পূৰ্ৰাক্লণ্ড বসন্তঃ স্যাৎ মধ্যাক্লো তীম এব চ। প্রাবৃদ্রুপো ২প-वाङ्गः गाष थालायः भिनितः

त्र्युजः ॥ अथवा। উरवारवारम ह ट्युङः প্रভাতে निनिद्राभयः॥ প্রহরার্ছে বসম্ভঃ স্যাৎ জীমে यशानिकाशत्य । जूरीयात्य ह বর্ষাখ্যঃ শরদক্ত গতে রবৌ ॥।।।। ज्य कालिनियमः। (इम्बः ना-ভিকে প্রোক্তো ব**সভে**। বশ্যক র্মাণ। শিশির স্তম্ভনে প্রোক্তো বিদেষে গ্ৰীম এব চ।। প্ৰাবৃডুকা-টনে জ্রেষা শরশারণ কর্মণি 1ঞা তাথ তিথিনিষমঃ। পঞ্মী চ দ্বি-তীয়া চ তৃতীয়া সপ্তমী তথা। বু-ধেজ্যবার সংযুক্তা বিজ্ঞেষা দ্বেষ-कर्यानि ॥ क्रकाठजुमें भी जवमके भी মন্দবারকাঃ। উচ্চাটনে ভিথিঃ गरा अमारिक वित्मवज्ञाः व-जूर्नगर्धेभी कृष्ण जमानामा ज-থৈব চ। মন্দ জৌমদিনোপেতা गरा बात्रवकर्त्रावि॥. वृष हस्त्राहि-**(नारभठा भक्ष्मी ममनी ज्या।** পৌৰ্ণমাসী ভূ বিজ্ঞেবা ডিখি স্ত-स्न कर्याना। खड्यरहामस्य भ-ৰ্যাৎ শুভানি চ শুভোদরে। রৌ দকর্মাণি রিক্তার্কে মৃত্যুমো-रिग ह मात्रव॰।। का करने शृर्वम्-(था वर्मा पिक्किक्किकितारक। পশ্চিমে স্তম্ভন বিদ্যাৎ উত্তরে

শান্তিক ভবেৎ ৷৷ আকর্ষণ ম-थाटमट्य टैनचा ट्रंड मात्रमः छथा। উচ্চাটনম্ব বাষব্যেঞ্জশান্যাণ্মো-कनायकः ॥ अ॥ ज्याजिहादत् का-र्या ह मिक्न वाक्षरना वही। रमम॰ লোহিত প্রোক্ত উফীশ লো-হিত শৃত।। ভূষণ লৌছ জব্যে-न বাবেন পূজনাদিক। নরস্বাযু वित्नित्वन गात्रतन तब्बू तीतिला। ग्ठमा यूक्त मृनामा मसमा गर्फ-ভস্য বা। ক্রত্বাক্ষণালা জপ্তব্য শত্ৰণাণ বধ বিচ্ছতা।। ভগ্নেভ দস্ত মৰিভি জপেদাক্ষকৰ্মাণ। সাধ্য-কেশ সূত্র প্রোতৈ স্তরঙ্গদশনো-**ख**रेवः ॥ अक्त्यानाः मयारमाका বিদেযোচ্চাটনে জপেৎ। 🐠। গ-দ্মান্দ স্বস্তিক ভূষে। বিকট अ-क्ष्रि॰ भूनः॥ विकु॰ ভ प्रक विका र वामनानि गनीविनः। भन्नाम-मञ्जारवाका जानृत्वी तस्रवत करते।। निर्देश जृत्यो मः श्रामा **ब्यानक अक्**रोगन । जनगनि वक्कवानि ॥ अ॥ वशुकाः कम-তো ত্তেবাঃ পদ্ম পাশ গদাহ্বয়াঃ । युरलामनि थक्का थाः मास्टिका-षिषु कर्षाम् ॥ **जनः ना**खिविदशे **गर्डः वरमा बङ्कि समीत्रिकः। स्पर्धः**

त्म शृषिषी भक्ता विरष्टत त्वााय कीर्किक ॥ अक्षावेदन मृत्या नामू जृ देशांत्रि चात्रत्य चुना चन्छ-क्लाहर नमाक् उद्यक्षत मन्यु **७** ॥ ७ड९ कर्म विशाण्याः म ব্রিণা নিশ্চিতাম্বনা । 🛊 । শীতা॰-ए गिल कि नी द्याम वायू इवि क्का॰ ।। वर्नाः मू ग्रंखवीकानि विहेक्स्रम् यथाक्य । अथनक विषश्चन्त मःभूटो द्वाक्नः छथा॥ ষোগঃ পল্লব ইত্যেতে বিন্যাসাঃ यऐनु कर्यम्। याखानी खति छान् अ-यारमाधा वर्गान् वर्गाविधि॥ अ থন তিজ্জানীয়াৎ প্রশস্ত শা-जिक्निनि। यद्वार्ववस मधाद्वः मा-श्रा नामाक्षत्रः नित्थं ९।। विषर्ञ এय বিজ্ঞেয়ে। মন্ত্ৰিভি ৰশ্যকশ্বণি । আদাৰত্তে চ মন্ত্ৰঃ স্যান্ধায়া ২সৌ मः भूदेः मृष्ठः ॥ এव मा। र खड-নে শস্ত ইত্যুক্তো মন্ত্রবেদিভিঃ। नाम जालाख मरशायू मछः गा।-त्जाथन॰ मछ॰।। वित्वयनविधा-तियु थ्रमञ्ज मिन मीतिष्ठ । मञ्ज-স্যান্তে ভবেদ্বাম যোগঃ প্রোক্তা-টনে মতঃ ৷৷ অন্তে নাম্নো ভবে-ষ্মন্ত্রঃ পল্লবো মারণে মতঃ। সিত ब्रक शील भिन्न कुक ध्याः अकी

ৰ্ভিভাঃ।। বৰ্ণভো মন্ত্ৰ সংখ্ৰোক্তা দেৰতাঃ বট্সু কৰ্মসু। 🕪 মন্তাৰাণ লিখনজব্য চন্দন রোচন নি-मा।। गृरधुम ठिजाकादती मात्रत् श्केविवानि ह। त्यानाग्रित्वाव **शिकानिश्ख्रकंत्रम ख**छः।। গৃছ-ধূন দ্রিকটুক বিষাষ্টক নিতীরি-७ । प्रवंश काल मूजामीन् न-মাক্ জ্ঞাদ্বা বিচক্ষণঃ।। ষট্কশ্মা-ণি প্রযুঞ্জীত কথোক্ত কলসিদ্ধষে । **৩।** উচ্চাটনে বষট্ প্রোক্ত[°] হূঁ क्ष अन्य भारत्। खखरन ह नमः প্ৰোক্ত ৰাহা শান্তিক পৌষ্টিকে ।। हाम दर्शनियाः बाहा नाम शृकनरमा मंगः। यञ्चारख रमाक-रिष्यक्षी जनकारन यथान्त्रि ॥ অস্যার্থ: এতানি তত্তৎকর্মণি জপকালে সম্ভান্তে যোজযিত্বা ম-ञ्च॰ करणर। रहामापियू नाय॰ নিষমঃ। হোম ইতি কশ্চিৎ তন্ন ৷ অগ্নিকার্য্যে জপেৎ স্বাহা নমঃ সূৰ্বত্ৰ চাৰ্চনে। শান্তি পুটি বশ ৰেষাকৰ্ষোচ্চাটন মারণে। স্বাহা স্বধা বষট্ হৃঞ্চ বৌষট্ ফট্ যোজ-ষেৎ ক্রমাৎ। বশ্যাকর্ষণ সম্ভাপ ৰূরে স্বাহা প্রকীর্তিতা।৷ ক্রোধো-পশমনে শাস্তো প্রীতৌ যোজ্য

नत्या वृदेशः। वोषष्ट् नत्या र-नाकीश शुक्षि मृज्यक्षराय ह।। হঁ দার প্রীতিনাশে চ মারণে क्ट्रिंग्स ज्था। छेका व्रिंग विन (बर्य वय ऐ शब्रुक्स को वय ऐ।। य-खाफीशनकार्याम् वाञावारञ वसहे स्मृजः। इिंछ विद्यायवहना-क्लार्य नायः विश्विः। 🟶। শান্তি-कारमे यञ्जनिथन शङ्गामि निरम স্তত্ত্বৈব। শান্তিকে রাজত তামুণ ज् जं भक्तक वनारक। मईकार्यायु সৌবর্গ ক্রুরে স্যাৎ প্রেতকর্প ট॰ । ত্রিগদ্ধ শান্তিকে প্রোক্ত গ-ঞ্গন্ধন্ত বশ্যকে। সর্বকার্য্যে ২ফ-গন্ধঃ স্যাৎ ক্রুরে চাষ্ট বিষাণি চ ॥ भाष्ठिक लिथनी मुर्बा वन्गा-को भिथिशूष्टिका। **ए**क्स म्बानि কার্য্যাণি ক্রুরে স্যাৎ কাকপুচ্ছি-का ॥ भृत्र्यु माखिकर्या मा १६ वनाक ठिखकागृदश । प्रवानस्य ठ गर्नानि भागात्न क्रुंतकर्य ठ ।। 🟶 ।। अथ जूजाना मूनसः। मखाकाता गिंछ जूरियः भूदेरगा রুভযো রপি। তোষস্য পাবক-স্যোৰ্দ্ধে গতি স্তিৰ্য্যক্ নভম্বতঃ॥ গতি র্ব্যাম্নো ভবেমধ্যে ভূতানা मूलयः स्मृष्ठः। धत्रत्व क्रमत्य अ-

ৰ্যাৎ স্তম্ভন বশ্য মান্তবিৎ।। শান্তিক পৌষ্টিক কৰ্ম তোষ मा नगरम वरमाः। यात्रवामीनि मक्रा विभक्ताका हैना निक ।। क्लिजामितामित मेख बृहत्य চ বিহাৰসঃ। ৩। অথ ভূতানা यखनानि। वृद्धः पित छए य-ড্বিন্দুলাঞ্ছিত মাতরিশ্বনঃ।। ত্ৰিকোণ স্বস্তিকোপেত ৰহে **রর্জেন্দু সংযুত্। অ**স্তোজ মন্ত-সো ভূমে শ্চতুরসু॰ সবজুক॰॥ তত্তভূত সমাভানি মণ্ডলানি विषू र्बुथाः। वटेनंः देख तक्किना-नाएः य य नामावृञानाणि॥ স্বয়ণ বিয়ৎ মরুৎ ক্লফো রক্তো-গ্নি ৰিষদ প্ৰায়। পীড়া ভূতা-मि **अयागान छत** जनार्गद । একলক্ষণ জপেমন্ত্রণ ধ্যান ন্যা-স সমন্বিত । প্রযোগ দোষশা-স্তার্থ নাত্মরকার্থ কারণ।। ন-চেৎ कनक नात्थाि एंनवजा भाग माभूषाः। यजु। न भन्छ॰ यात्रनः कर्म अधारकमयूजः क-পেৎ। তৎ প্রাযন্চিত্তপর । ইতি তন্ত্রসারঃ।। ষট্কৰ্মা পু• ষাগাদিভিৰ্তো

बाक्षनः। ইত্যমরः॥ তথা চ।

इन्डाथायम मानाम माना शांशत्न छथा। अख्यिक हैंड इन्डः यहे क्या विश्व किहार ॥ यहे क्यांभगा हैंडि क्वोंडिः। हेडि छत्न ।

बह्कू हो की टेज्रवीविटमसः। यथा। अथ रहेकृत्रोट अत्री। **डाकिनी बाकिनी नीटक नाकि-**नी काकिनीयूग॰। याकिनी श-কিনী বীজে আছ্ত্য সুরসুন্দরি 11 जामा रेगकात मन्यूक मना-দীকার মণ্ডিত। শক্ত স্বরান্বিত। प्तिव ठाउँ य॰ वीक यानिस्थ ।। বিন্দু নাদ কলাক্রান্ত ত্রিভয় रेगनमञ्जरत । जृजीय तीकः म-বিসর্গণ ইত্যপি কেচিৎ। তন্ত্রা-खदा। উ तो चा मामन कीव॰ শিব মত্র ত্রিধা লিখেৎ। অর্কেণ <u> ৰাষা শক্ৰাভ্যাণ ক্ৰমাত্তণ মণ্ডি-</u> ত॰ ঙ্গরু॥ বিন্দুনাদান্বিত॰ চাদ্য-ছষ মন্ত্যে বিদর্গবৎ। ধ্যান ম-স্যাঃ প্ৰবন্ধ্যামি সৰ্বভূতনিক্সন্ত-ন ।। বালসূষ্যপ্রভা দেবী জ-বাঙ্গসুম সমিতা। সুপ্রমালাব-লীর্য্যাণ বলিসূর্য্য সমাণশুকাণ ।। সুবর্ণকলসাকার পীনোমভ शरवाधवाः। शामाकृत्मो भूख-

किए उर है जगमानिका ।। म-अणि निष्टिषयः ॥ वित्रावृद्धा -यण्यानि विकाय शत्रायश्रति । वश्व मन्त्रा बद्राद्मारः विकाश **७९ भू**षे॰ निरंश ।। यहि त्रकेष-**জ॰** পদ্ম॰ রবিপত্র• ততে৷ লি-থে । চতুরস্ চতুর্দার মেব॰ मखन मानिएथ ।। यङकार्त्र १० प्रिति शुक्रास्थ शृर्वविक्तित। त-**छा। मि जिल्हा ए**नि जिल्हा एवं পরিপুজ্যেৎ।। ডাকিন্যাদ্যা-শ্চ ষট্কোণে রসুপত্রে ততঃ পর । বান্ধ্যাদি মুগল পশ্চা-ভবিপত্তে ততঃ পরণ ৷৷ বালা-याः शीर्रमकीख वामामाः शृ-जरबंद क्यांद। ठजूतस्य ला क्लाबान मायूधान् लद्रतमश्रदि ।। অনেনৈৰ বিধানেন নিত্য-ধ্যাণ তৈরবীণ বজেৎ। ইতি তন্ত্রসারঃ ।।

ষট্কোগণ ক্লী লগ্নাৎষষ্ঠগৃহণ।
ততু রিপুস্থানণ। ষথা। পাতালণ হিবুকণ চৈব সুস্থদম্ভ শচতুথকণা ত্রি ত্রিকোগঞ্চ নবমণ দুশিচকাণ স্যাৎ ভৃতীযকণা। ধীস্থানণ পঞ্চমণ জ্বেফ যামিত্রণ সপ্রমণ স্মৃতণ। দ্যুনণ দুয়নণ তথা-

স্তাখ্য বট্কোণ রিপুষন্দির ॥ इंडि ज्यांडिखदः॥ ॥ ॥ विकु । ইতি রাজনির্বন্টঃ ॥ य-**७**जुः। यथा गत्नमञ्जः। वीकः यहेरकान गरधा ऋत्रमनन भूरत ভারগণ দিক্ষু লক্ষীঃ মাষা কন্দ-প্ভূমি স্তদনু রসপুটেম্বালিখে-षीक्षरें करा देखि जन्नमातः ॥ यहेठक॰ क्री भत्रीत्रस्थवाकात-यह्थकात्रकः। यथा। मश्रभ-দ্মানি তত্ত্বৈব সন্তি লোকা ইব প্রভো। গুদে পৃথীসম চক্রণ হরিদর্গণ চতুর্দলে।। লিঙ্গে তু ষড্দল চক্ৰ স্বাধিষ্ঠান মিতি ग्रुङ। ত্রিলোক বহ্নি নিলয় তপ্তচামীকরপ্রভ॰ ॥ নাভৌ मनमन ठक ऋखनिमा मन-ষিতে। নীলাঞ্জননিত ব্ৰহ্ম-ञ्चानः পूर्वक मन्त्रितः ॥ मनिशृ-রাভিধণ স্বচ্ছণ জলস্থানণ প্রকী-र्खिङ्। উদ্যদাদিত্য সংকাশ হদি চক্ৰ মনাহত ৷৷ সম্ভকাখ্য • कालभातः देवकवः वायुमिनद्रः। কণ্ঠে বিশুদ্ধ শরণ ঘোডশারণ भूदतामयः॥ भाखवी वत्रठळा-খ্য॰ চন্দ্রবিন্দু বিভূষিত । বণ্ঠ মাজ্ঞালষণ চক্ৰণ দিদল শ্বেত

यूखम[•] ॥ शात्राहक विणिशाख• यनः ज्ञानः श्रकीर्डिछः। मर्जुः पन रमकार्गः **अत्रमाद्य क्षका**ण-ক া৷ নিত্যজ্ঞানময় সত্য সহ-मानिका मनिकः॥ यहेठकानीश **खि**णानि देनेडर्खणः कथकने ॥ ইতি পাদ্মে স্বৰ্গখণ্ডে ২৭ অধ্যাষঃ ।। ।। অন্যক্ত। তত্ত্বৰপ মেক॰ তৎ ষট্চক্র॰ প্রতি লক্ষ্যেৎ। ষট্চক্ৰেপি মহামাষা কণ খ্যা-वा अयञ्जलः ॥ नायरयमृनयस्यन আদি বোডশ চক্রক। আদি ষোডশচক্রস্থাণ সাধকানন্দকারি-জপকর্ম্ম সমারতেৎ। ভ্রুবোরু-পরি নাডীনা ত্রষাণা প্রান্ত উ-চ্যতে ৷৷ তৎ প্রাস্ত ত্রিপথস্থান यहें (कान हजूत्र मून । त्रक्त वर्ग स ষোগজৈ রাজাচক্র মিতীরিজ ।। कर्छ बयांबा नाषीना वक-ন॰ বিদ্যতে নৃগা॰। সুসুশ্লেডা পি-क्लाना॰ वर्ष्कान ७९ वज्कून॰ ৷৷ ভৎ ৰ ট্চক্ৰ মিভি প্ৰোক্তণ শু-क्र॰ कर्रमा मधारा॰। ज्याना मथ नाजीना॰ समस्य टेठकला ज्या ॥ তৎ স্থান যোডশাসু স্যাৎ স-প্তাঙ্গুল প্রমাণতঃ। তৎ পীতমুক্ত

ৰোগজৈ রাদি বোডশচকক ।। খ্যানাৰা ৰথ মন্ত্ৰাণাণ চিন্তনস্য क्षत्रा है। यजानानाक रूपव-ভক্ষাদাদীতিগদ্যতে ।। ইতি কা-किकार्जार ४८ विशायः॥ .ष्यश्रकः। यूनाबादा जित्काना-(श) इंड्रा छान किया शक । बदशः चर्ञे विञ्च कार्षिभूर्याम-मक्ष्यका। छम्टर्क् कामवीकं इक म भाखीन् नामकः। जन्दि जू শিখাকারা সঙলী ত্রন্ধবিগ্রহা।। ভদ্বাহে হেমবর্ণাভ॰ বসবর্ণ চ-जूमन । उन्छ (इम ममर्था) नमा তत विভावत्य ।। जम्द्र श्री ममक्षश्र वर्षण श्रीतकः क्षां । बाहिलां उपरर्शन युका-। विश्वेन मण्डकः ॥ मूल माधात व-ট্কানা॰ মূলাধার॰ ততো বিদুঃ। ৰ শব্দেন পরু লিঙ্গ বাধিষ্ঠান **७८७। विम्: ।। ७**मृर्ष्ट्व नाजित्म-শে जू मनिशृतः मह्दक्षछः। या-ৰাভ॰ বিদ্যুদাভঞ্চ বহুতেজো ম-ৰ• ভতঃ।। মণিবন্তিম্ন তৎ পদ্ম• बिनिशूद्र जिंद्याहारक। मन्निक्र দলৈ ৰ্কুক্ত ডাদিকান্তাক্ষরাম্বিত ।। শিবেনাষিষ্ঠিত পদ্ম বিশ্ব-लादेककवात्रभः। जमूर्ष्कु श्ना-

হত পদা নুদ্যদাদিত্য সমিভ ॥ कामिठा खाकरेत्र त्रक्शरेखक म-ম্ধিষ্টিত। ভন্মধ্যে বাণলিকস্ত সূর্য্যাযুত সমপ্রভ ।। শব্দ বন্ধ-ময়ণ শব্দো ২নাহত স্তত্ৰ দৃশ্য-তে। তেনাহতাখা পদ্ম তৎ মুনিভিঃ পরিকীর্তাতে ॥ আ-নন্দসদন তত্ত্ব পুরুষাধিষ্ঠিত। **भत्रः। छ**मृष्णुष्ठ विश्वषाथाः मल ষোডশপৰজ ।। স্বরৈঃ যোড-শকৈ ৰ্যুক্তণ ধুমুবর্ণণ মহৎপ্রভণ । বিশুদ্ধি তনুতে यन्त्राৎ জীব-मा इ॰मटनाकना ।। विश्वक्षः পদ্ম মাখ্যাত আকাশাখ্য ম-হৎ পর । আজ্ঞাচক্রণ তদূর্দ্ধে তু আত্মনাধিষ্ঠিত পর । আ-ক্তাসংক্রমণ তত্র শুরো রাডের-তি কীৰ্ত্তিত। কৈলাসাখ্য ত-मृत्कुं जू ताधनी । जम्कुं जः ।। এবঞ্চ শিবচক্রাণি প্রোক্তানি তব সূত্রত। সহসারাযুক্তণ বিন্দু-नान छम्क गीतिष्ण। ইত্যে-তৎ কথিত সৰ্ব যোগমাৰ্গ ম-**ब्रुखय**ा ইভি ভন্তসার: ॥ यऐठत्रभः भू॰ जुमतः। ইতি हला-ষুধঃ।। যুকা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥ बढ्नाम्न ॥

यके क् निक्खिता शिला। मारन।। वरन। इंडि क्विक्न क्तवः॥ वृक्तभाषि केषयासः। ক ষ্ট্যতি লোকঃ ৷ নিবসতি হন্তি বলী স্যাৎ দদাতি বা ইত্য र्थः। ই ि पूर्गामामः॥

यहिं वि जमा विथा पि वि लकत्रवक यहेकर्माकाती। यथा। **टिताइडी टिनमारी हिन** হোনী তিলপ্ৰদঃ। তিলভুক্ তি-नवाशी ह वर्षे जिनी नावशीपि ।। ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব ॥

यहेिं निष्य की मन्थावित्नवः। ছত্রিশ ইতি ভাষা। যথা। আ-ক্লিকচিন্তামণৌ। আসনাভ্য-क्षत्न उद्यमुद्धन विंककर्ण। म-ग्रार्क्कन॰ मर्शितानित्रभनावार-त्न ७था।। शाम्यार्यमञ्ज्ञान्यनीय-क जानीय यथु शक्र रको। शून-রাচমনীযঞ্চ বস্ত্র যজ্ঞোপবীত-कि।। जनकारता गन्ना भूष्म धृभ मीत्यो जरेथव ह। जाश्वामिक নৈবেদ্য পুষ্পামালা তথৈব চ।। चन्दलभक मगा ह हामत्वा-জন তথা। আদর্শদর্শনঞ্চিব नगरु। द्वा २थ नर्खन ।। शीछ বাদ্যে চ দানানি স্তুতি হোম

थमकिन । प्रकार्भभानेक **ততো দেববিস**র্জন ।। উপচা-রা ইমে জেষাঃ ষট্ত্রিণশৎ সূর-পূজনে। ইত্যেকাদশীভব্ব।। षष्ट्रापः पुः ज्यतः। इज्यतः॥ उष्ट्रनानि यथा। य य हे शमा-দ্যাঃ শঙ্গনানি তেবা মাশ্চর্য্য-ৰূপাণি নিৰূপযামঃ। শ্ৰবেত वाटमा यिन मञ्जू खञ्जन् शटना-ত বা বামদিশ প্রসর্পন্।। আ-श्रामरयद्या क्रम्भः अभाउः ज्ञ उपा मा। मुगशान् अत्यापः । অত্রাপরে সন্তি চ ষট্পদা ষে যাত্রাসু তে বামগতাঃ প্রশস্তাঃ ॥ ইতি বসন্তরাজশাঙ্গনে ষট্-शकावयः ३७ वर्गः ॥ 🕸 ॥ यका। रेि ताजनिर्यण्डः ॥ यहे हत्रे ने क ষট্পদপ্রিষঃ পু॰ নাগকেশরবৃক্ষঃ । ইতি শব্দমালা।। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।। চম্পকঃ ।

ষট্পদাতিথিঃ পু॰ আন্বৃকঃ। ইতি কেচিৎ॥

यर्गनानन्त्रक्तः पूर किःकि-রাতবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ यहें थि 🏻 🔻 युंका। देखि एइन-চন্দ্রঃ॥ ভুমরপত্নী চ ॥ यहेथा अः शुः का मुकः। यथा।

ANGER SO ME: II

राष्ट्रकः की नदीद्रमा राष्ट्रवयनः। यथा। जब्ब वार्व नित्रा यशाः ষডক মিদ মুচ্যতে। ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা।।ঞ্যা বেদাঙ্গষট্শাস্ত্রা-ণি। যথা। শিক্ষা কল্পো ব্যাক্ষ-রণ নিরুক্ত জ্যোতিষ তথা। ছন্দ শ্চেতি ষডঙ্গানি বেদানাণ বৈদিকা বিদুঃ।। ইতি শব্দরত্না-वनी।।।। अभि ह। अञ्चानग्रह শিক্ষাপদ্য•। ছন্দঃ পাদৌ তু বে-দস্য হস্তে কল্পো ২থ কথ্যতে। জ্যোতিযাময়ন° নেত্র° নিরুক্ত? শোত্র মুচাতে।। শিকা ঘূাণয় रतममा मूथः ताकतनः सृतः। তস্মাৎ সাঙ্গ নধীতৈয়ৰ ব্ৰহ্ম-লোকে गशैयांत ॥ इति जि-থ্যাদিতত্ত্ব॰ ॥ 🗯 ॥ আদ্যশ্রা-कीयनानाकशीठामिकः।

त्नाकश्रमिकः ॥ ॥ यहिश्यकात्रगतावित्मयः । यथा । त्रामृतः
त्रगतावित्मयः । यथा । त्रामृतः
त्रगतावित्मयः । यथा । त्रामृतः
विकार । यथा । त्रिकः
विकार । यथा । त्रिकः
विकार । यथा । व्रिकः
विकार । व्याप्तिकः

ষড় সং পু॰ ক্ষুদ্রগোকুরকঃ। ইতি রাজনির্ঘণীকা

মাজানবন্দন্তা ষডক্ষজিৎ পুণ বিষ্ণুং। ইতি শক্ষ-মালা।। ষডক্ষজেতরি ত্রি ।। ষডভিজ্ঞঃ পুণ বুদ্ধাং। ইত্যমরং।। ষডশীতিঃ স্ত্রী রবিসংক্রান্তিবি-শেষঃ। সাতু নিথুন কন্যা ধনু-

यजनीजिठक॰ क्वी मिथून कना। ধনু শ্রীন রাশিস্থরবেঃ শুভাশু-ভ ফল জ্ঞানার্থণ নক্ষত্রাঙ্গ নরা-कात्रठकः। यथा। नूर्य टेठकः करत रवनाः भामगुर्य दयः दयः । क्लांट वान ख्या तमाः करत সব্যেতরেপি চা। वयः वयः তথা নেত্রে মস্তকে ত্রিত্র তথা। দ্বাঞ্চৈব তথা গুছে ষডশীত্যাণ স্বভে হ্রিতে।। মুখে দুঃখ করে-लाजः शामरया ज्रमण कि । काञ्चामाषिक्षन॰ वादम श्रः नाष श्रीयरङ नृशा ।। **न**गानः নেত্ৰযো শৈচৰ অপমানঞ্চ মস্ত-কে। গুছে চৈব ভবেমৃত্যুঃ বড-শীতি ফলশ্রুতিঃ।। ইতি জ্যো-তিস্তত্ত্ব ৷৷

যড়ফক ক্লী যোগবিশেষঃ।
সতু বর কন্যযোগ স্ব স্ব রাশ্যপেক্ষযা পরস্পর ষষ্ঠাইটমরাশি
সযক্ষঃ। স চ মিত্রারিভেদেন
দিবিধঃ। তত্র মিত্রষড়ফক ব্যা। শ্রীপতিরত্নমালাযাণ। মকর সমেত মিথুন কন্যা কলসৌ মৃগেন্দ্র মীনৌ চ ।। বৃষভ
তুলে অলি মেধৌ কর্ক্ক ট ধনুষী
চ মিত্রবিধৌ।। বড়ফকাবিতি-

শেষः ॥ 🐠 ॥ चित्रविष्केक बाह । यकतः कतिकल तिथुवा कना। प्यास्थ मह वाय खन्या। किर्क षटी वृष धनूषी वृश्विक भिशुतन ठातिविदशे ॥ यमि कैना। खेटम ভর্ত্ত। ভর্ত্তঃ ষষ্ঠে চ কন্যকা। ষডফক বিজানীয়াৎ বজ্জিত बिनरेंग ति ।। **₩ ।। य** छ छ का-(मो जात्रानियम गाइ। त्राक्रियः। त्रीक्रामा হ্যভয়ে র্ঘবা রপি তয়ো রৈকাধিপত্যে-পি বা তারা ষট্চ সুমিত্র মিত্র-জনন কেমার্থ সম্পদ্ যদি । य ऐकार के नव शक्ष के नुग्य धरन যোগে চ পু॰ যোষিতোঃ প্রী-ত্যাयुः मूथवृक्षि भूष्टिकनकः कार्यम विवाह छन्।। गर्भः। মরণ তার বিরোধে গ্রহ রিপু-ভাবে চিরেণ। রোগাদি নর-नार्खाः षष्कारके देवतः ভरद-माखा वामः। देमजामि या-গেপি ষডফকাদৌ তারা বিপৎ প্রতারি নৈধনাখ্যাঃ। বর্জ্যা বি-বাহে পুরুষোডুতো হি প্রীতিঃ পরা জন্মসু তারকাসু ॥ ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ৷৷ 🟶 ৷৷ মতান্তর • यथा। भि॰एइन मकतः (अएधे।

কন্যধা মেৰ উত্তমঃ। তুল্যা সহ
মীনস্ত প্ৰেডন সহ কৰ্ক টঃ ॥
ধনুষা বৃষভঃ শ্ৰেণ্ডো নিগুনেন
চ বৃশ্চিকঃ। এতৎ ষড়ফক ।
প্ৰীত্যৈ ভবভ্যেব ন সংশ্যঃ ॥
ইতি গাৰুডে ৬১ অধ্যাযঃ ॥
ষড়কীণঃ পুং মৎ স্যঃ। ইতি
কেচিৎ ॥
ষড়াননঃ পুং কাৰ্ত্তিকেয়ঃ। ইত্যা-

ষ্ডাননঃ পু॰ কার্ত্তিকেষঃ। ইত্যমরঃ ॥ তস্য কার্ত্তিকেষনাম
কারণ ষথা। অগ্নিপুত্রঃ সমারস্তু শরস্তমে ব্যজায়ত। তস্য
শাথো বিশাখন্চ নৈগ্যেযন্চ
পৃষ্ঠজঃ॥ অপত্যা ক্রন্তিকানাঞ্চ
কার্ত্তিকেষ স্ততঃ স্মৃতঃ॥ ইতি
মাৎস্যে ৫ অধ্যায়ঃ॥

ষভূষণ ক্লী মিশ্রিতষট্কটুদ্রব্যং
। যথা। পিপ্পলী মরিচং শুণ্ঠী
ত্রয় মেতদ্বিশিশ্রিভং। ত্রিকটু
ত্র্যুষণ ব্যোষণ কট্ত্রিক মথোচ্যতে।। গ্রন্থিকানল চব্যৈস্ত চতুংপঞ্চ ষড়্যণ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। অপি চ। পঞ্চকোলণ সমরিচণ ষড়্যণ মুদাহ্রতং। পঞ্চকোলগুণ তত্ত্ব কক্ষ মুক্ষণ বিযাপহং।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।
বদ্ধা স্ত্রী ষড্বিধ্গবা। যথা।

গমা গজো গ্যাদিত্যো গাষত্ৰী **ठ गनाध्यः। गया गयामूब्रेट** व्ह-व राज्ञरा मुक्लिमारिका॥ ३७ বাযুপুরাণে পষাপদ্ধতিঃ।। यञ्जय॰ তি গোষট্কযুক্ত হলাদি। यथा। अस्रोगवः अर्म्याङ्बः यञ्ज-ৰ জীবিকার্থিনা । চতুর্গব न्-সংশাৰা ছিগব ব্ৰজ্যাতিনা ॥ इंड्याङ्किकाहात्रञ्जुः ॥ 🟶 ॥ প্রত্যেষবিশেষঃ। যথা। পশুভো গোষ্গ বুলে পর ষট্তে তু यद्भवः। ३७ (इमहस्यः॥ स्वा॰ গবা॰ সমাহারঃ। ইতি দিওস-মাস নিষ্পন্ন তত্ত্ৰ ক্লী।। যদ্দ্রস্থা স্ত্রী বচা। ইতি ভাব-প্রকাশঃ॥ শ্বেতবচা ॥ শটী ॥ यशकत्रक्षः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ रुज़ुष्टि की शिक्षनीमृतः। देखि

বলী।।

ষড্জঃ পুং তন্ত্রীকঠোথিতস্বরবিশেষঃ। ইত্যমরঃ।। অস্য ব্যুৎপত্তি র্যথা। নাসাং কঠ মূর
স্তালু জিহ্লাং দন্তাংশ্চ সংগ্রিতঃ। ষড্ভাঃ সংজায়তে যালাং

दिनाकः॥ यहेश्रईनि श्रुः॥

ষদ্মুম্থিকা স্ত্রী শটী। ইত্যমরঃ॥

ষদ্দান্থী স্ত্রী বচা। ইতি শব্দরত্না-

हमा १ वर्ष हे छ मुङः॥ म ह मवृत्वत्वत्र जून । वर्षा वर्षा । वर्ण । वर्ण । वर्षा हि भारता नर्म छ हार्ष छ । वर्षा विरत्ने छि भामात १ र्या थ्यमवर्ता १। हे छ ज्व छ ।। जानरमन मर्छ मश्चवाण भरषा थ्यमवर्ता १ यर । थत्र इं हि रनार क्या छ । व्या विथ्य वर्ष । व्यमार्किक । नाम । वर्षा ६ यक व्यत्नि निष्ठः १ मर्वव्यताण काम धकः। व्यमार्किक । भर्षा व्यमा छान धकः। व्यमार्किक । स्या व्यमा छान धकः। व्यमार्किक ।

ষড্দুর্গণ ক্লী ষট্প্রকারকোউণ।
তদ্যথা। ধম্বদুর্গণ ১ মহীদুর্গণ ২
গিরিদুর্গণ ৩ মনুষ্যদুর্গণ ৪ মৃদ্দুর্গণ ৫ বনদুর্গঞ্চ ৬। ইতি মহাভারতে রাজধর্মঃ।

ষড্ধা ব্য ষ্টপ্রকারণ। ইতি ব্যাকরণণ।।

ষড্বিধণ ত্রি ষট্প্রকারণ। যথা।
সণজ্ঞা চ পরিভাষা চ বিধি নিযম এব চ। অভিদেশো হধিকারশচ বড্রিধণ সূত্রলক্ষণণ।। ইতি
মুগ্ধবোধনীকাষাণ দুর্গাদাসঃ।।

অপি চ। তত্ত্ৰ ক্ষিতি গন্ধিছেতু নানাৰপবতী মতা। ষড্বিধস্ত রস স্তত্ত্ব গদ্ধোপি দ্বিবিধা মতঃ ।। ইতি ভাষাপরিচ্ছেদঃ।।

ষড্ভুজঃ পু॰ ষড্হস্তযুক্তঃ। যথা

. । ভীম স্ত্রিপাদ স্ত্রিশিরাঃ ষড্ভুল্জা নবলোচনঃ। ভগ্ন প্রহরণো রেরিজঃ কালাস্তকষমোপমঃ ।।
ইতি ব্রন্ধবৈবর্ত্তপুরাণে মাহেশ্রন্ধরন্ধরণ ।। চৈতন্যদেবঃ ।
স তু পুরুষোত্তমক্ষেত্রে ষড্ভুল্জো ভূত্বা শ্রীজগন্নাথদেবশরীবরে লীনো হভূৎ। ইতি লোকপ্রসিদ্ধণ ।।

यज्ञा शिक्ता वित्मयः।
यत्र वृज्ञा शिक्ता । ज्या । ज्या । य्या । युक्ता । य

श्र्वमत्व ठिश्वका शीनवकः इ-লরুহাণ অগ্নিপ্রভাণ ষড্ভুজাণ मिक्टि शमाज्य विक्रुवताः वाटम শক্তি শূল পরশুধরাণ দেবী মিতি।। রুজ্রচণ্ডা। যথা। দক্ষিণ-**पटन क्र**फिठ खा॰ क्रखवर्ना॰ मिन्। ভরণভূষিতা প্রসমবদনা ষড্ ভূজা॰ দক্ষিণে বজু শূল পরশুধ-রাণ বামে পাশাকুশ কেশধরাণ रमवी मिलि॥ ठ ७ व जी। यथा। বাষ্দলে চণ্ডবতী পুমুবর্ণা প্র-সন্নবদনাণ সর্বালকারভূষিতাণ ষড্ভুক্তা॰ দক্ষিণে অঙ্কুশ পাশা-ক্ষসূত্রধরাণ বামে দণ্ড শূল ড-मक्सेता॰ **(**पती मिछि। े देखि বৃহন্ন নিকেশ্বরপুরাণোক্ত দুর্গা-পূজাপদ্ধতিঃ ।।

यजुमः भू॰ मधुता निष्य ध्यातः त्रमः। यथा। मधुत्ता नव शिख-ज्ञः क्यांत्या श्रमः कर्षे ख्या। मखीं जित्रमनी यद्या नमात्मा यज-भी तमाः।। ध्या॰ नाम नक्ष्तः।। मधुतः शीना मिछा इ तिकाति। म ह नक्षात्व। नवश्व भर्षेः श्याद्धः मिस्रवाति। म मृभात्व ।। ভিক্ত शिह्मक्षाति। वाक्र भागामा एव तमः। क्यांय ख्रवत्र

खुकः ग ह शृगीकवाषिष्॥ करू-ख कात्रम खः माग्रती हाति म চেষ্যতে। ইভি রাজনির্ঘন্টঃ।। এবা গুণা গুলুৎ শব্দে দক্টব্যাঃ षज्ञात की यण्डः। यथा। नमाः-শৌচ ভবেৰিষন্ তথাচোক্ত চতুৰিখে। গর্ভশ্রাবে চ বেদো-ক্ত॰ পূৰ্ৰকালে ছচেতসঃ ৷৷ ব্ৰা-শ্বণনা মহোরাত্রণ ক্ষত্রিযাণাণ 'দিনত্ত্ৰণ। ষড়াত্ৰকৈব বৈশ্যা-ना॰ मृजानाः द्वानभाद्भिकः।। इिंछ या गटन ३८ व्यंशायः ॥ যড়েখা স্ত্রী ষডভুজা। ইতিরাজ-নিৰ্যক্তঃ॥ বড়াজী চ।। ষড্লবণ ক্লী মৃজ্জোপেত পঞ্চ-লবণ । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। যড্বক্তঃ পু॰ কার্ছিকেযঃ। যথ। । যত স্ততো বিশাখো ২সে। খ্যা-छा लाक्ष्य वन्थः। ऋष्म বিশাখঃ ষড্বক্তুঃ কার্ত্তিকেয়শ্চ বিশ্রুতঃ ৷৷ *ইতি মৎস্যপুরাণে ১৩৪ অধ্যায়ঃ।।

ষড্বিন্দুঃ পু॰ বিফুঃ। ইতি ত্রি-কাগুলেষঃ। কীটভেদঃ। ইতি মেদিনী। শিরোরোগস্য পক্ষ-তৈলবিশেষঃ। যথা। এরগুমূলণ তগরং শভাহ্না জীবন্তিকা সৈ- স্বাব রামিকে চ। ভূকং বিভক্ষণ মধুষ্টিকা চ বিশ্বোবধণ ক্রফভিলস্য তৈলং ॥ অজ্বাপষ স্তৈলবিমিঞ্জিভঞ্চ চভূপ্তবে ভূকরসে বিপকং । ষড্বিক্সবো মাগিকযোঃ প্রদেষাঃ সর্বামিহন্যঃ
শিরসো বিকারাম্ ॥ চ্যুডাংশ্চ
কেশান্ পলিভাংশ্চ দন্তান্ মির্বিধ্য মূলান্ সুদ্টীকরোভি ।
স্পর্ণ গৃধুপ্রভিমঞ্চ চক্ষুঃ সর্বন্তি
বাহ্নো রধিকং বলক্ষা। জীবন্তিকাত্র হরীভকীশাক্ষবিশেষঃ ।
ইতি ভাবপ্রকাশঃ ॥

যঞ্জ পু॰ বৃষভঃ। যাঁড ইতি
ভাষা। তৎপর্য্যাষঃ। গোপতিঃ
২ ইট্চরঃ ৩। ইস্ত্যমরঃ॥ ষণ্ডঃ
৪ শঞ্জ ৫ শন্তঃ ৬। ইতি শব্দরত্মাবলী॥ ক্লীব॰। ইতি জটাধরামরটিকে॥ সমূহঃ। ইতি
বৃদ্ধাঃ॥

यखः श्रुः क्री अक्षामिकमयः।
भव्यत्रप्रमामिनमृदः। ইত্যमतः॥
यखानी खी टेलनमानः। इतिक्
देलि जाया।। मत्रमी ॥ काम्कद्यी। देलि समिनी ॥ मूजाकि उत्पानगाः मखामकातामो
निथिन।।

ষণ্টঃ পু॰ নপুসক। ইতি রাজ-निर्घनिः (इयहस्य मह ॥ उक्र मनि-স্পৰ্শনধোঃ প্ৰায়শ্চিত্ত মধা। नाल (अक्कन विष्कोन् वीत्रही-না॰ তথা দ্রিষ॰। দেবতা পিতৃ मक्श्य यङम्बामि निम्मदेकः॥ ক্রন্থা তু স্পর্শনীলাপণ শুদ্ধেতা-ৰ্কাবলোকনাৎ। অবলোক্য ত-থোদক্যা মন্ত্যজ্ঞ পতিত শব ।। বিধর্মি সৃতিকা ষণ্ট বিবস্তা-खारमायिनः। मृड निर्याखका॰ ৈশ্চব পরদাররতাশ্চ যে।। এ-ভদেব হি কৰ্দ্তব্য প্ৰাক্তৈঃ শো-ধন মাত্মনঃ। অভোজ্য সূতি-কা যক্ত মাৰ্জ্জারাখৃণ্শ্চ স্বৰ্কুটা-ন্।। পতিতাপবিদ্ধ চাণ্ডাল মৃ-তহারাত্মত ধর্মাবিৎ। সংস্পৃশ্য শুদ্ধাতে স্নানাদুদক্যা গ্রামসূ-करतो।। ইতি মার্কণ্ডেষে সদা-ठाताधायः॥

ষণাুসাঃ ত্রি ষাণাুসাঃ। ষণাু-সে ভব। ষণাুস শব্দাৎ কর্ম্মণি ফ্য প্রভাষেন নিষ্পন্নঃ।।

ষণাখঃ পু॰ কার্ত্তিকেয়ঃ। ইতি হ-লামুধঃ।। ষট্সংখ্যকবদনে ক্লী। তদ্বতি ত্রি।।

বণাুখা স্ত্ৰী বড্ভুজা। ইতি রাজ-

निर्मिकीः ॥

वबः की मुक्तभावमात्रगा छादः। वका। अत्र बद्धा देखि गूक्तरवाथ-ক্যাক্ষণ !!

सन क भारती। बाउ भूरती १वः। है कि कित्रक करा भाग मुक्ति गापिः 1 क जानामयि । देखि मूर्गा-मिनः ११

यम ५ छ छ म विवास ।। मत्रा ।। গতৌ। ইতি কবিকল্পদ্রুমঃ।। ৯ ज्यमहरा ज मामः ममः। छ जगायमीय। भ जीवजी जीव-खी। विशाम जात्रनी जातः । **नीपि वाधा तामगृ**टहा **अव्र**0 हि॰मा। देखि मुर्गामामः॥

ষন সম্ভক্তো। ইতি কবিকল্পক্রমঃ ॥ সম্ভক্তিঃ সেবন । সনতি গু-क्र लाकः। ইতি दूर्गानामः॥ यन म এ छ माता इंछ कवि-. क्ब्रफ्रमः ॥ म धः मत्नाि मन् তে। উ সনিদ্বা সদ্বা। ইতি मुर्शामानः ॥

যৰু গতে। ইতি কবিকল্পক্ষয়ঃ।। সঞ্তি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

षन्क 😵 🐠 मत्त्र। ইতি কবি-কল্পক্রমঃ ।। ঔ অসাজ্জীৎ । ঞি

वामः। इंडि मूर्गामामः ॥ त्रभ मरह। इंडि क्विक्ब्रफ्रमः॥ সগতি অসীষশৎ। সম্বঃ সম্বন্ধঃ । इंडि मूर्गामामः ॥

यम देवक्कदग्र। ইতি কবিকল্পদ্रभः ॥ देवक्रवाः विस्वनी छावः। मय-স্তি ষদ্বিযোগেন সীনস্তিন্যঃ স্ম-ताजूताः। देखि मृगीमामः॥ यम ७ क रेतक्करता। इंछि कवि-কল্পদ্রমঃ।। সিষ্মযিষ্তি। ইতি जुर्गाजामः ॥

সর্পণে। ইতি কবিকল্পদ্রসং ॥ मञ्चि । ইতি দুগাদাসঃ॥ ষর্জ্জ অর্জন। ইতি কবিকল্প-फ्रयः॥ निषक्जियिष्ठ। मर्क्ज-**छि धन॰ लाकः। ই**छि मुर्गा-मामः ॥

ষর্ব সর্পণে। ইতি কবিকল্পদ্রুম ।। मईछि। ইতি मूर्शामामः ।। यर्षेणी जी भिक्किवित्भवः। यथा । হাপুত্রিকা খঞ্জনিকা বর্ষপী थक्षनाकृष्ठो। ইতি শব্দরত্না-वनी ॥

यन गढो। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ।। मलि । मियालियियि । ইতি मृशीमामः ॥

गएका शिष्ठ । मज्जि वभूषि । यकिः जी मन्थावित्मयः। यापि-

ইতি ভাষা। ইতি জ্যোতিক।। विकिकः शुः शानावित्ववः। य ফিরাত্রেণ পচাতে বাটিবা ইতি স্বামিস্ভূতী। ইত্যমরভরতে।।। छৎ भर्यायः। यकि भनिः २ यः ফিজঃ ৩ নিশ্বতপুলঃ ৪ যকি-वामत्रकः ७। जमा छनाः। त्री-রো नीलः बिकित्का २व॰ विधा मामात्मा क्राः भीखला स्ना वशतो। वनाः भरथा मीभरना বীৰ্য্যবৃদ্ধি দত্তে তম্মাৎকিঞ্চি मृत्मा षि**डीयः ॥ ই**তি রাজনি-र्यन्छः ॥ य छिनः थाकीरा वि॥ যফিকা ন্ত্ৰী ষষ্টিকধান্য । যথা । হৈমন্তিক সিতাস্বিম ধান্য मुला खिला यवाः। कलाय कङ् नीवाता वाख्रक शिमदमाहिका ॥ यिकिंग कालभाकक मूलक॰ কেমুকেতর । ইতি তিথ্যাদি-তত্ত্বে হবিষ্যামপ্রকরণীয় স্মৃতি-वहनः।। किशः। भवनि विकिनः ভিঃ পাৰ্ৰণ নিত্য মিতি বাচস্প-ভিমিশ্রাঃ ॥

ষষ্টিক্য তি ষষ্টিক্ধান্যোপযুক্তক্ষেত্রাদি। ইত্যমরঃ ॥
বিষ্টিত্য তি ষক্টেঃ পূরণঃ ।
যক্টিশব্দাৎ তমট্ প্রত্যাযেন নি-

শিক্ষঃ। ইতি মুদ্ধবোধবা ক্ষরণ মন্টিধা বা মন্টিপ্রকারণ। মন্টিশব্দাৎ ধাচ্প্রত্যাযেন নিশারণ।

মন্টিনতঃ পুণ হস্তী। মন্টিবর্ষপমান্তণ বমংপূর্বার্ক্ষন্থিত্যা মন্টিমন্তঃ। ইতি সারস্বতাভিধানণ।।
শব্দমালা চ।।

য**ি** তা স্ত্রী ভুমরমারী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

ষষ্টিসম্বৎসরঃ পু॰ প্রভবাদিষ্টি-मः थाकवर्षः। यथां। जथ विकि **সম্ব**ৎসর্গণনা। শাকেন্দ্রকালঃ পৃথগাক্কতিয়ঃ ২২ শশাক্ষ নন্দা-শ্বি যুগৈঃ ৪২ ৯১ সমেতঃ। শরা-দ্রি বস্বিন্দু ১৮৭৫ হৃতঃ সলকঃ ষষ্ট্যাবশিষ্টাঃ প্রভবাদযোকাঃ ॥ वर्षवर्क्कञ्च यटक्ष्य मृटेर्याः मः-পূর্য্য খোশ্মিভিঃ ৬০। সত ব্যুৎ-ক্রমতঃ খাগ্নি হৃতেংশে মাস-कामगः॥ जमार्थः। भारकः কালঃ শক্রাজাব্দকালঃ পৃথক্ দ্বিষ্ঠঃ ভৱৈব আক্লভিষ্কঃ ২২ দাবি॰শত্যা পূরিতঃ শশান্ধ ন-ন্দাশ্বি যুগৈ রেকনবত্যধিক শ-তদ্বধাধিক চতুঃসহস্তৈঃ সমে-তো १ इः। শরাজি বস্বিন্দুহা-তঃ পঞ্চসপ্রত্যধিকাফীদশশতৈ

ৰ্যাবৎ সম্পাণ হৰ্তুণ শক্নোতি তা-বতা হতঃ কৰ্ত্তব্যঃ। সলবঃ পূৰ্ব শকাব্দঃ শরেত্যাদিনা লক্ষ্য॰-थाया युङः कार्याः स्काशक्षरणत्य शक्तारबरवा २ इस् शूर्ववद वक्ता-श्राञ्ज बाक्समाप्रियोधिक প्राचित्र । একাবশেষে প্রভবঃ দ্যাদ্যবশি-ষ্টে বিভৰাদিঃ। বৰ্ষ বৰ্জ্জন্ত যচ্ছে-ষণ বর্ষাতিরিক্তণ শরাজি বস্বিন্দু হ্ৰতাবশিষ্ট তৎ সুৰ্য্যে দ্বাদশ-ভিঃ সংপূর্ব্য খোর্ম্মিভিঃ ষষ্ট্যা সতে ব্যুৎক্রমত ইত্যনেন যক্তি-হতাবশিষ্টাঃ অকা দণ্ডাঃ ষষ্টি-হত লক্ষাপ্শকে খাগ্নি হতে ত্রিণ শতা হতে অবশিষ্ঠা অংশকা ল-का মাসাঃ স্যু রিতি।। #॥ প্রভ-বাদি ষষ্টি বর্ষাণ্যপক্রমা। আদ্যা জু বিংশতি ৰ্জান্ধী দ্বিতীয়া বৈক্ষবী স্থতা। তৃতীয়া রুজনৈরত্যা শ্রে-ষ্ঠা মধ্যাধমা ভবেৎ ৷৷ ভবিষ্যপু রাণে ভৈরব উবাচ। যন্ট্যব্দ ক-থযাম্যত্র ক্রাঃসৌম্যাশ্চ যে প্রি-যে। সংৰৎসৱফল মুখ্য প্ৰভবা-मी वनानत्व।। क्लाग छथा মেঘাঃ সর্বশস্যা চ মেদিনী। বহু-ক্ষীরা স্তথা গাৰো ব্যাধি রোগ বি-বজিতাঃ।। প্রশাস্তাঃ পার্থিবা-

শৈচৰ প্ৰভবে পরিকীর্ত্তিতাঃ । ১ া সুভিক্ষণ ক্ষেম মারোগ্যণ সর্বে বাাধি বিবৰ্জিতাঃ।। প্ৰশান্তা মা-नवाः मर्ख वङ्गमा वमुस्रता । शका खका जनाः गर्व विভবে ह বরাননে ॥২॥ রোগা বছবিধা-टैक्टव यनुष्रा वाकि अक्षताः। म-ৰ্বএব প্ৰণশ্যন্তি শুক্তে বৰ্ষে বরা-नरन्।। ७॥ উশ্বত্তঞ্চ জগৎ সর্ব॰ ধন ধান্য সমাস্ত্রণ। নিত্যোৎ-नवः श्रकावृक्तिः श्रायातम काय-তে প্রিযে।। ।। नीরোগ। क नि-রাবাধা মানকা বিগভিদ্বিষঃ। ব-হক্ষীরা স্থথা গাবঃ প্রাজাপত্যে বরাননে ॥ ৫॥ নিরাতক্ত জগৎ সূৰ্বণ ধৰ যৌবৰ গৰিতণ। অঙ্গি-রুদি প্রজাঃ সর্বা নিজ্যোৎসাহা বরাননে॥७॥ সুতিক্ষণ ক্ষেম না-রোগ্যং বর্ষাকাল সুশোভন । শत्रावृक्षिः विकाबीया औ्रार्थ সুরবন্দিতে।। १।। বহুকীরা স্তথা शास्त्र धानाक वनवखन्नः। काय-ন্তে সৰ্বশস্যানি ভাবে বৰ্ষে বরা-ননে।। ৮।। মহার্য জাষতে সর্বণ ঘৃত তৈল রুমাদিক । প্রজা-नाक ज्यक्कि र्युनि मन्वरमद्र শুভো ৯॥ নিম্পত্তিঃ সর্বশস্যা-

না । মধ্যা ধাতরি কীর্ত্তিতা। ইকু ক্ষীর গুডাদীনা প্রবলম্ব বরা-ননে ॥১০॥ সুভিক্ষ ক্ষেম বারো-গ্যাণ কাৰ্পাসস্য মহাৰ্যতা ৷ লবণ यत् गवाक नेश्वतः पूर्वज थिए ।। >> ।। मूजिकः क्य यादाभाः প্রশান্তাঃ পার্থিবাঃ প্রিষে। তব্ধ-রোপহত বিত্ত বহুধান্যে বরা-नरन।। ३२ ॥ द्रास्कु जन्म मू ক্ষণ ভস্করৈ শ্রেচাপপীডন । জা-নীযাদিগ্ৰহণ যোৱা প্ৰমাথিনি ৰৱাননে ৷৷ ১৩ ৷৷ জা**ষস্তে সৰ্ব**-শস্যানি মেদিনী নিরুপত্রৰা 1 লবণ মধু গব্যঞ্চ মহার্ষণ বিক্রমে প্রিযে 11 38 11 কোডবাঃ শালি मूला क बद्ध माया खदेशब ह । মহার্ঘণ জাযতে সর্বণ বৃষে চ সুর-বন্দিতে 113৫ 11 চণকা মুক্কা মাষা-**म्ह जनाम्ह विषयः श्रिट्यः। यहा**-ৰ্য' জাযতে সৰ্ব' চিত্ৰভানৌ ৰব্না-ননে ॥১৬॥ সুভিক্ষণ কেম মারো-গ্যু॰ বিশ্বঞ্চ নিৰুপদ্ৰব । ব্যবহা-রো ভবেৎ শ্রেষান্ স্বর্ভানৌ দে-বপূজিতে ৷৷১৭৷৷ অতিবৃষ্টিশ্চ জা-যেত ধান্যস্যাথ প্রপীডন । শ-স্যুণ ভবতি সামান্যুণ দাৰুণে দেব-বন্দিতে ৷৷ ১৮ ৷৷ বহুশস্যানি জা-

यस्य गर्दाप्रत्म मूलाहत्व। स्मी-वारकु नावेष्मरण ह भार्थित ना-ब मः भग्दा। ३२ ॥ पूर्जिकः काय-তে ঘোর সর্বোপড়াৰ সংযুত। অনাবৃষ্টিঃ সমাখ্যাতা ৰাষে সং-वर्भत्त थिए।। २०॥ जेमार्जा वर्षाव भाषा कलः देनावाशयः ष्ठ्छि। यहार्यः मर्वे किवर्य मर्व-ब्यव ब्रानटन ॥ २३॥ काजवाः भानि मुलाम्ह कन् माया खरेशव চ। সুলভ জাযতে সুস্থ জগদৈ मर्बंशात्रिनि ॥ २२ ॥ अनि अव-লা লোকা ধাৰ্নৌষধি প্ৰপীডন । জাষতে মানুষে কষ্ট॰ বিরো-विनि न मन्यर।।२०॥ मई।ः श्र-জাঃ প্ৰপীডান্তে ব্যাধিঃ শোক-শ্চ জাযতে। শিরো বক্ষো ২ক্ষি-রোগাল্চ পাপাদ্ধি বিক্ততে জনাঃ ।। ২৪।। উপক্রত জগৎ সর্ব ড-ক্ষরৈ মৃ যিকৈঃ খগৈঃ। পীডিতা-শ্চ প্ৰজাঃ সৰ্বাঃ দেশভঙ্গঃ খরে প্রিষে।। ২৫।। সুভিক্ষ কেম মা-রোগ্য॰ শস্য॰ ভবতি শোভন॰। বহুক্ষীরা স্তথা গাঝে নন্দন ন-ন্দনে প্রিষে।। ২৬।। অন্নতোষা खथा त्यया वर्षे छि थ् ७ म ७ तन । নশ্যস্তি সৰ্বশস্যানি বিজ্ঞষে নাত্ৰ

সংশ্বঃ॥২৭॥ ক্ষত্রিয়াশ্চ তথা दिवनाः नूजान नहे नर्डकाः। পীডিভাস্তে বরারোহে জবে সর্বে न मःगयः ॥ २৮॥ मदतागक छथा দেবি দাহ खुत्र সমন্বিত । অভি-ভূত জগৎ সর্ব মন্নথে সুরবন্দি-তৈ ৷৷ ২৯ ৷৷ তুষধান্য ক্ষষো দেবি সর্বশস্য মহার্যতা। ব্যবহার। চ मगाखि पूर्यारथ पूर्याथाः शकाः ॥ ७०॥ शीजात्छ गर्बणगानि (म-(म (मर्म श्वितिश्वरङ। (इयनस्य প্ৰজাঃ সৰ্বাঃ ক্ষীয়ন্তে নাত্ৰ সংশ-यः ॥ ७३ ॥ ७ऋदेतः भार्थि देव-ৈচব অভিভূত মিদ॰ জগৎ। षार्या ভवि मामात्मा विवास जू **जर॰ म**हर ॥ ७२ ॥ विषमऋ॰ জগৎ সৰ্ব বিরোধে ভয সংপ্লব ৷ বিকারী সর্বতো ২পাযো মম বা-कांब नानाथा।। ७० ॥ कठिषर्य-छि शब्कत्ना (मत्न म किम्म थ शास्त्रा विश्वरायः॥ ७८॥ मूर्जिकः काया मर्वा यो पिनी पूरा वि ষে। প্লবে প্লবস্তি তোষানি মান-वा मूः शिका जूवि ॥ ७०॥ मूवर्ग क-প্য ধান্যানি জগৎ সর্ব সুশোত-नः। बाद्यना विषक्र खर्काः मूछि

क एउत्र थिया। ७७॥ जू-ভিক্ষণ কেম মারোগ্যণ তৃপ্তা গো ৰান্ধণাঃ প্ৰিষে। সুস্থিতাঃ শো-ভনে বর্ষে প্রজাঃ সর্বাঃ সুলোচ-त्म ॥ ७१ ॥ विषयः क्र क्र मर्बः व्याञ्च ममूबाक्छ । জনানा॰ জাষতে ভদ্রে ক্রোধে ক্রোধঃ প-রস্পর• ॥ ৩৮ ॥ সর্বত্র জাষতে ক্ষেম সৰ্বশাস্য মহাৰ্যতা। বিস্বা-ৰসৌ বরারোহে কার্পাসস্য মহা-ৰ্যতা।। ৩৯॥ পার্থিবৈ নৃপিনে-टेनाम्ह ममदेखः थखमखरल । প্ৰপীড্যন্তে জনাঃ সৰ্বা ভয়ভী-তাঃ পরাভবে॥ ৪•॥ তৃণ ধান্যা-নি পীড্যন্তে গ্রীমে বর্ষতি বাসবঃ । প্লবঙ্গে পীডিতাঃ সর্বাঃ প্রজাশ্চ मुत्रविभिट्छ ॥ ८३ ॥ जायस्य म-ৰশস্যানি সুভিক্ষণ নিরুপদ্রবণ। সৌমাদৃষ্টি ভবেডাজা কালিকে **ह छङ वरम**९ ॥ ८२ ॥ मूजिकः ক্ষেম মারোগ্যে সুথঞ্চ নিরুপদ্রবং । सोमामुक्डि र्राटकाका सोत्या সৌখ্য• প্রকীর্ত্তিত• ॥ ৪৩॥ তোষ-পূর্ণো ভবেমেযো বর্ষতে চ দিনে मित्न। निक्र शक्त वाका ताकानः नर्बनाधातर्व थिया। ८८॥ वाम-वा वर्षछ पावि पारण ठाथ छ-

মণ্ডলে। অহিচ্ছত্তে কান্যসন্জে বিরোধি ক্ষিনাশক্ত ৷৷ ৪৫ ৷৷ অ-ভিভূত জগৎসর্ব ক্লেশৈ র্বহ্বি-বৈঃ প্রিযে। মারুতৈঃ ফলদাই হ-শ্চ পরিবারিণি শোর্ভনে ॥ ৪৬॥ নিষ্ণত্তিঃ সৰ্বশস্যানা সুভিক্ষণ ভবতি প্রিযে। প্রমাণিনি জ্লো-भाती जनमा याम्ट थ्रजा ॥ ৪৭॥ নিষ্পত্তিঃ সর্বশস্যানা॰ সৰ্বশস্য মহাৰ্যতা। ঘৃত তৈল-সম॰ যাতি আনন্দে নন্দতি প্র-का ॥ ८৮॥ का फ्वाः नानि युकाम्क शीषारख वत्रवर्गिन । मदो यशानि शानगानि त्राकरम ॥ निश्रुताः প্রজাः ॥ ४२॥ मृर्ভिकः জাযতে যোর পান্সেমধি প্রপী-ডন । অনলে চ সমাখ্যাত নাত্র कार्या विठातना ॥ ७० ॥ तनन **७**इः मूर्जिकः मयामार कंश्या-गार्। शिक्रल ठाउमधाकि मू-र्ভिकः नर्ममाउटि ॥ ७३॥ ८१॥ মহিষ্যো বিনশ্যন্তি যে চান্যে নট নৰ্ত্তকাঃ। বাসৰো বৰ্ষতে দে-वि শमाक्ष निह कायल ॥ जिल সৰ্যপ মাষাদি কাৰ্পাসানা মহা-ৰ্যতা। গো মহিষ্যঃ সুবৰ্ণানি কা॰-मा ठामानारमयङः ॥ ७९ मई॰

प्रिति विकीय कर्खद्या थाना म-क्ष्यः। তেন ধান্যেন লোকে। १य॰ निखितियाछि मूर्मिन ।। পা-र्थिवा मायका मीनाः कानगुरक अभीषिजाः। ६२। जायभूनाः স্মৃতা মেশা বহুশস্যা চ মেদিনী।। निष्ठुं द्वाः नार्थिवा प्रवि निकार्थ চ বরাননে। ৫৩। অক্সতোষা ঘ-ना देक्टव की दिकाः अवलाः सृष्ठाः ।। विक्रकाः भार्थिका प्रवि द्वीरज म॰वৎमत्र थिरम । ৫৪। पूर्जिक॰ মধ্যম প্রোক্ত ব্যবহারো ন ব-र्ख्राः ভবেদৈ मधामा वृष्टि पू -र्यटो ममूशिष्ट्रा १ ८८। पूर्जिके॰ জायতে লোকাঃ সর্বে দ্রবিণ ব-র্জিতাঃ।। প্রাণিনাণ জাষতে ২হ-र्षा मृन्मू एको वत्रवर्गिन। एक। य-হিষী গো হিরণ্যাদি তামু কাণ্স্যা-দ্যশেষতঃ।। তৎ সর্ব॰ দেবি বি-क्वीय कर्खरा थानामक्षयः। द्र-ক্তে সংবৎসরে দেবি ক্ররবৃদ্ধি র্ন-त्राधिभः॥ यानवाः कृत्रटाकां क मः शास्त्र ऋषितः ভবে । ৫१। **द्र्यालक महान कार्या क** मान्यो विश्व প্রপীডন•11 পাপরোগো ভবেদে-বি রক্তাখ্যে হ্যরবন্দিনি।৫৮। রোগো মরণ দুর্ভিক বিরোখো

वरूमकून॰ II क्लारिश जू विषयः সর্ব॰ সমাখ্যাত॰ হরপ্রিষে। ৫৯ । यिमिनी नज्र एकि गर्ब ভূত চরাচর ।। দেশভঙ্গশ্চ দু ভিক্ষণ ক্ষয়ে সংক্ষীয়তে প্রজা। मोतारकु मानद प्रतन पिक्त क्लाकरव छथा।। मूर्जिक काय-তে স্বোরণ ক্ষযে সণ্বৎসরে প্রি-(य। कोमूनी नर्खनामा। क समू-ना नर्यामाञ्चे ।। विकासि देन স্ধবঞ্চাপি বিনশ্যতি ন সংশযঃ। मि॰ इन॰ यशुरममध कानक्षत्र॰ তথৈব চ।। ক্ষষে ক্ষযন্তি সর্বাণি नानाथा वतवर्गिन। ७०। ३७ জ্যোভিস্তত্ত্ব ।।

ষষ্টি হাষনঃ পু॰ গজঃ॥ ধান্য-বিশেষঃ। ইতি মেদিনী রাজ-নির্মন্টশ্চ॥ ষষ্টিসংখ্যকবৎস-রঃ॥ তৎসংখ্যবযোষুতে ত্রি॥ ষষ্ঠঃ ত্রি ষগ্লা॰ পূরনঃ। ইতি মেদিনী॥

যন্ত্ৰকঃ ত্ৰি যন্তঃ। যন্ত্ৰ কণ্
প্ৰত্যুষ্টেন নিষ্ণায়ঃ।।

ষঠালুকালক ক্রী দিত্রাহানস্ত-রভুক্ত । যথা। দ্যস্তরে ত্রাস্ত-রে ভুক্ত মাহুঃ যঠালুকালক । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।। ষষ্ঠিকা ন্ত্ৰী ষষ্ঠী। ষথা। চামু-খেতাত্ৰ ষষ্ঠিকেত্যুছে । ইতি দুৰ্গোৎসবীষবলিদানপ্ৰকরণে তিখ্যাদিতত্ত্ব ।।

विश्वी काजायनी। इंडि य-দিনী।। ধোডশনাতৃকান্তৰ্গত-बाज्कावित्नयः। मा श्रक्रत्यः ষষ্ঠীকলা ক্ষন্দভার্যা চ। তদ্যাঃ खब्लानि यंथा। প্রধানা॰শস্ব-ৰূপা যা দেবসেনা চ নারদ। মাতৃকাসু পূজ্যতমা সাচ ষষ্ঠী প্রকীর্তিতা।। শিশনাণ প্রতি-विस्थिषु প্রতিপালনকারিণী । তপম্বিনী বিকুভক্তা কার্ত্তিকে-यमा कामिनी ॥ यष्ट्राण्णकणा প্রকৃতে স্তেন ষষ্ঠী প্রকীর্ত্তিতা। পুত্ৰ পৌত্ৰপ্ৰদাত্ৰী চ ধাত্ৰী ত্ৰি-জগতা॰ সতী।। সুন্দরী যুবতী রম্যা সম্ভত ভর্তু রন্তিকে। স্থানে শিশুনা॰ পরমা বৃদ্ধৰূপা **চ यात्रिनी।। शृ**का काम्मगा-**मियू यमा। वित्थय् मञ्जू ।** পূজা চ সৃতিকাগারে পরা ষষ্ঠ-मिरन मिरमाः ॥ একবি॰माजिरम देठव भृष्ठा कन्गान एक्की। শশ্লিয়মিতা চৈষা নিত্যা কা-ষ্যাহুজিঃ পরা ।। মাতৃৰূপা দ্যা-

ৰূপা শশ্বদ্ৰকণৰূপিণী। জলে ऋल ठा खती एक निमृनाः स्र গোচরে॥ ইতি বন্ধবৈবর্ত্তে প্র-क्रिक्टिक ५ व्यक्षां यह ॥ 🛊 ॥ অপি চ। শ্রীনারাষণ উবাচ। ষষ্ঠাণ্শা প্রক্তে হাঁচ সাচ প্রকীর্ত্তিতা। তস্যাঃ পূজাবিধৌ বন্ধন্ ইতিহাস নিমণ শৃণ্।৷ রা-জা প্রিয়ত্রত শ্চাসীৎ স্বায়স্তুবম-নোঃ সূতঃ। বোগীক্রো **ন বছে**-ভার্য্যাণ তপস্যাসু রতঃ সদা।। ব-ক্ষাক্তব। চ ষত্নেন ক্রতদারো ব-ভূব मः। मूहि**র॰ क्रजमात्र**ण न লেভে তনয় ততঃ।। পুত্রেফি-ষজ্ঞ তঞ্চাপি কারযামাস কশ্য-পঃ। মানিনৈয় তস্য কান্তাবৈ मूनि र्यक्डहरू मानी।। जुङ्गा ह-ৰুঞ্চ তদ্যাশ্চ সদ্যোগৰ্ত্তে। ৰভূব र। पश्रांत ७१० मा प्राची देवतः षामग व भारत ।। ७७: मूनाव সা বন্ধনার কনকপ্রভ । সর্বাব্যবসম্পন্ন মৃত মুক্তান লো-**চন॰।। श्राणानक वटको ज्ञाब्का गृ**. হীয়া বালক মুনে। এত স্মিম-खदा তত विमानक नम्भ ह।। **पप्तर्भ उ**व (प्रवीक कमनीया॰ म-ताह्या॰। मृख्ने ठा॰ श्रुत्छ। क्रा-

का जुकीव भन्नमामन ॥ भन्नक রাজা তা॰ দৃষ্ঠা গ্রীমসূর্য্যসমপ্র-ভা । তেজুসা ত্বলিভা কাস্তা শান্তাণ কন্দস্য নারদ ৷৷ প্রিষ-ত্ৰত উবাচ। কা স্বং সুশোভনে কস্য কান্ডে কান্ডাসি সুব্রতে। ক্স্য ক্র্যা ব্রারোহা ধ্ন্যা মা-ন্যা চ যোষিতা ।। দেবসেনো-वाह । बन्नत्वा यानमी कना **(मवरमनाइ गीयती। मृख्ने गा**ण यनमा थाणा मत्मो ऋन्माय जू-মিপ।। মাতৃকাসু চ বিখ্যাতা कम्लाया ह मूब्छा। वित्य र-প্তীতি বিখ্যাতা ষষ্ঠাণ্শা প্রকৃতে र्यञः ॥ इत्छात मूकु। मा (मवी गृशीय। वालक मूत्न। मशाखा-নেন তপসা জীবযামাস লীল-या।। गृशीषा वालक प्रवी ग-গন॰ গন্ত মুদ্যতা। পুন স্তুকীৰ তা॰ রাজা শুষকটো গ্রভালুকঃ॥ নৃপস্তোত্তেণ সা দেবী পরিতৃষ্টা वज्र ह। उताह छ॰ नृश॰ बन्धन বেদোক্ত কর্মনির্মিত ।। দেব-সেনোবাচ। ত্রিষু লোকেষু রাজা क्ष साम खुवमरनाः मुखः ॥ मम शृ-জাঞ্চ সৰ্বত্ৰ কার্যিত্বা স্বৰণ স্বৰ্ক ॥ जमा मामामि भूखर अन्नर्भः

অমনোহর । ইত্যেব মুক্তা সা प्रिती छटेन्य छवान्क॰ म्रा রাজা চকার স্বীকারণ তৎপূজা-र्थक जूबछः। জগाम (मरी वर्ग ঞ্চ দত্বা তক্ষৈ শুভ বরণ। আ-জগাম মহারাজঃ স্বগৃহ হৃষ্ট্যা-नमः। पिरीः তाः भूक्यामाम वा-कार्ष्णा धनः मरमे॥ ताजा ह প্রতিমানেষু শুক্লষষ্ঠ্যাণ মহোৎ-•अव•। यक्षा प्रताम्ह यद्वन কার্যামাস সর্বতঃ ৷৷ বালানা সৃতিকাগারে ষণ্ঠাহে ষত্নপূর্বক॰ ৷ তৎপূজা কার্যামাস চৈক-वि॰শতিবাসরে॥ वालाना॰ শু-ভকার্য্যে চ শুভান্মপ্রাশনে তথা १ नर्बे वर्क्सियान ऋग ८ मेव ह-कात्र ह।। शानः शृकाविशानक **স্তোত্র॰** মক্তো নিশাময়। যৎ শ্রুত ধর্মাবক্ত্রেণ কৌপুমোক্ত क সুত্রত।। শালগ্রামে ঘটে বাথ विष्युत्व १थ वा मूत्न । जिखी পুত্তলিকা॰ क्रञ्चा পূজ্ঞযেদা বি-চক্ষণঃ।। বন্তা॰শা॰ প্রকৃতেঃ শু-का॰ मूथिविशेष मूथा। मूपू-ত্ৰদাৰ শুভদা দ্যাৰূপা জ-গৎপ্ৰসূণ। শ্বেতচম্পক বৰ্ণাভা রত্নত্বণ ভূষিতাণ৷ পবিত্রকপাণ

পরমাণ দেবসেনা মহণ ভজে ॥ ইতি ধ্যান্ব। স্বশিরসি পুষ্পণ দত্ব। বিচক্ষণঃ। পুনর্ধ্যান্তা চ মূলেন পুদ্ধেৎ সূত্ৰতা সতী ৷৷ পা-मार्घाठमनीदेशक शक्त धूल थ-**मीभटेकः। टेनटवटेमा विविदेध-**শ্চাপি ফলেন শোভনেন **চ**॥ मृत्नतो॰ शुँ षष्ठीपिते स्वाट्डि বিধিপূর্বক । অফ্টাক্ষর মহাম-ন্ত্র• ষথাশক্তি জপেনরঃ ৷৷ ততঃ স্তুত্বা চ প্রণমেন্ডক্তিযুক্তঃ সমা-হিতঃ৷ স্তোত্রঞ্চামবেদোক্ত **वत्रभू**ख कलथम•॥ अकोकत्र॰ মহামন্ত্রণ লক্ষ্যা যো জপেন্মনে। স পুক্রণ লভতে নূন মিত্যাহ কম-লোভবঃ ।।।।। স্তোত্রণ শৃণু মুনি-শ্ৰেষ্ঠ সৰ্বকাম শুভাবহণ। আজ্ঞা-अन्य गर्दिया॰ गृष्ठ॰ विष्मु ना-রদ।। প্রিষত্রত উবাচ। নমো দে-देवा महारमदेवा मिटेका माटेखा নমো নমঃ। শুভাবৈ দেবসেনা-देष षटेका प्रदेवा नत्या नयः ॥ वत्रनाटेय भूजनाटेय धननाटेय न-त्या नमः। मूथमाटेष त्याक्रमाटेष यष्ठीरमदेवा नत्या नयः॥ শক्তि य-श्री भारती विकारिय ह निर्मा नयः। याषादेष मिक्कत्या शिदेना

यश्रीरमदेवा नरमा नमः॥ मातादेय मात्रनाटेय ह शाताटेय मर्बकातिटेगा वानाधिश्रेष्ट्रात्वा व यशी-एएटेवा नरमा नमः॥ कलागिना-रेय कलारिश कलमारेय ठ कर्य-ণা । প্রত্যক্ষাধৈ চ ভক্তানা ব-ष्ठीटमटेवा नटमा नमः॥ शृङ्गाटेस ক্ষনকাস্তাবৈ সৰ্বেষা সৰ্বকৰ্মসূ । एनवत्रक्रनकातिरेना यञ्जीरमरेवा नरम। नगः॥ शुक्तमञ्च खल्मारेय বন্দিতাবৈ নৃণা সদা। হি॰সা ক্রোধ বজ্জিতাবৈ ষষ্ঠীদেবৈয় ন-भा नमः॥ धनः प्ति श्रियाः দেহি পুত্র দেহি সুরেশ্বরি। ধর্মণ ति यदमा कि यष्ठीक्टिया नः মো নगঃ॥ দেহি ভূমি॰ প্রজা॰ দেহি বিদ্যাণ দেহি সুপুজি তে। कन्यानश्र क्या प्राहर मधीरमदेवा নমে। নমঃ।। ইতি দেবীঞ্চ সংস্তৃয লেভে পুত্র প্রিযব্রতঃ। যশ-বিনঞ্চ রাজেন্দ্রণ ষষ্ঠীদেবী প্রসা-দতঃ।। যন্তীস্তোত্ত নিদ্ৰ ক্ৰান্ যঃ শৃণোতি চ বৎসর । অপুত্রো লভতে পুত্ৰণ ৰৱণ সূচিৱজীবিনণ ॥ বর্ষ নেকঞ্চ বা ভক্ত্যা সংস্ত ত্যেদ॰ শ্ৰোভিচ। সৰ্বপাপ বি নিৰ্দ্মক্তা মহাবন্ধ্যা প্ৰসূষতে ॥

वौतः পুত্ৰঞ্চ গুণিনং বিদ্যাৰম্ভণ যশস্বিনং। শুচিং চিরাযুম্মন্ত মে-ৰ ষষ্ঠীদেবী প্ৰসাদতঃ ॥ কাক-বন্ধ্যা চ যা নারী মৃতাপত্যা চ যা ভবেৎ। বর্ষ শ্রুত্বা লভেৎ পুত্র ষষ্ঠীদেবী প্রসাদতঃ।। রোগযুক্তে চ বালে চ পিতা মাতা শৃণোতি চেৎ। মাসঞ্চ মুচ্যতে বাল **प्ति विभागकः।। इन्डि बक्तरेवव**-র্ত্তে প্রকৃতিখণ্ডে ৪০ অধ্যায়ঃ।।ৠ।। তিথিবিশেষঃ। স তু শুক্ল ক্লন্তপ-ক্ষভেদেন দ্বিবিধঃ। তত্ৰ চন্দ্ৰস্য वृष्कान्कृत यर्धकला कियावणः শুক্লপকীযঃ। তস্য হ্রাসান্কূল ষष्ठेकला क्रियां क्रान्थ क्र्यं शक्यों यह ।#। তৎকুত্যাদি যথা। অথ যপ্তী দা সপ্তমীযুতা গ্রাছা যুক্সাৎ। রা-জমার্ভ্রতে। জ্যৈতে মাসি সিতে পক্ষে যন্ত্রী চারণ্য সংজ্ঞিতা। ব্যজ-নৈককরা স্তস্যা মটস্তি বিপিনে-ন্ত্ৰিয়ঃ ৷৷ তা॰ বিশ্ব্যবাদিনী॰ কব্দ

মারাধযন্তি চ। কন্দ মূল ফলাহারা লভন্তে সন্ততিং শুভাগা কন্দং সূরণাদি। মূলং তদিতর এ। ভবিষ্যো। যেয়ং মার্গশিরে মাসি ষ্ঠা ভরত সত্তম। পুণ্যা পাপছ-রা ধন্যা শিবা শাস্তা শুহপ্রিয়া

॥ (मरीश्रुतार्थ टेठक मिक्कण । यशाः कलगा कर्ववा शूका म র্বোপচারিকা। ইহৈব সুথ সৌ-ভাগ্য মন্তে বিকৃপুর বক্তে ॥ ইয মেব ऋक्ष्म यष्ठी পঞ্চনী যুত-वालाया। क्रकार्येभी ऋन्वशी শিবরাত্রিচতুর্দশী। এতাঃ পূর্ব-যুতাঃ কার্য্যা স্তিথ্যন্তে পারণ ভ (त्र ॥ इंडि जन्नरेववर्डवहना ९। বিষ্ণুধর্ম্মান্তরে। অফনীঞ্চ তথা यष्ठी॰ नवभीक ठजूमंगी॰। गिरता-ভাঙ্গণ ন সৰীত পৰ্বসন্ধৌ তথৈব **हा। इं** ि खिथा पि छ व े। सि ।। সাচ কার্ত্তিকেয়াভিষেকতিথিঃ 1 यथा। खयः ऋत्मा महादावः সর্বপাপ প্রণাশনঃ। তস্য ষষ্ঠী॰ তিথি প্রাদাদভিষেকে পিতামহঃ ॥ অস্যা॰ ফলাশনো যস্ত যজে-ন্নিযত মানসং। অপুত্রোপি ল-ভেৎ পুত্রান্ অধনোপি লভেৎ ধনা। য় য মিচ্ছেত মন্সা তং ত॰ লভতি মানবঃ। ষ শৈচতৎ পঠতি স্তোত্ত্ৰণ কাৰ্ত্তিকেয়স্য মা-নবঃ ॥ তদ্য গেহে সমারাণা॰ ক্ষেমারোগ্য॰ ভবেদ্ধুব॰। ইতি বারাহে স্কন্দোৎপত্তি নামাধ্যা-यः। ঞা তত্ত্ৰ জাতফল । বিদ্বান্

वितर्भ के कुद्धः मूकीर्खिः श्रम्य-वाष्ट्र बंगकीर्गगावः। मठाश्रिक-रिष्ठा थन भूख युक्तः यही श्रम् एक। यनुक्त कि द्वायुः॥ देखि क्वाछी-श्रमीभः॥ कव यावाकद्वन रमार्था यथा। भरम्या मीक्रिका-र्थः म्याद यक्षाः व्याधियुरका क-रवः। मञ्जमा वर्थनाकः म्या-मर्थमा मञ्जभी कनः॥ यक्ष्रिक-मी द्वामनीयू न भरक्किनिनम्भु-भि। देखि रक्ष्याविञ्चवः॥

यम जू त कार्ण। ই छि कविक बा-फ मः ॥ मूर्क नामिः । जू मिखः । त दिक्तिकः । वाभः गयनः । ই छ पूर्गामामः ॥

ষস্জ সর্পরে। ইতি কবিকরজ্ঞানঃ
।। দস্তাসোপধঃ। কিপি সংযোগদিলোপে সক্ সজ্জতি। বচোপি পর্যাক্ষরণ নচ পদেবু
সংসজ্জতে। ইতি শাস্তলে
গণরুতানিত্যদ্বাৎ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ষস্ত ই লুর স্বপ্নে। ইতি কবিকল্পক্রমা। মূর্দ্ধন্যাদিঃ দস্ত্যসোপধঃ। ই সংস্তাতে। নমধ্যপাঠেপি নস্যোপধন্বাভাবাদেব
লোপাভাবে ইদনুবন্ধা বেদে-

ষূচ্চারণভেদার্থঃ। লু সংস্তি।
র বৈদিকঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ষহ য কি শক্তো। ইতি কবিকল্পদ্রুমাণ শক্তি রিহ দৈবাদিকস্য শক্ষাতো কপণতেন ক্ষমা
ইত্যর্থঃ। য সহ্যতি দুঃখণ লোকঃ সহত ইত্যর্থঃ। কি সাহ্যতি
। সএবাষণ নাগঃ সহতি কলভেত্যঃ পরিভবণ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ষহ জ ও শক্তো। ইতি কবি-কল্পক্রমঃ।। ইহাপি শক্তিঃ ক্ষমা । জ সাহঃ সহঃ। ও অন্যায়ণ সহতে নাসো। ইতি হলাযুধঃ ।ইতি দুর্গাদাসঃ।।

वश्मानुः पु॰ कमावान्॥ वज्रः॥ मय्तः। ইতি স॰ किश्वमादााण-मिवृज्ञिः॥

या है वा मा मा प्राथन । देखि तक-

ষাতবং পুণ গানণ। রসং। ইতি
নেদিনী। রাগস্য জাতিবিশেযং। স চ ষট্সরমিলিতরাগরাগিণ্ডৌ। ষথা। ঔডবং পঞ্চভিঃ প্রোক্তঃ স্বরৈঃ ষড্ভিস্ত
যাডবং। সম্পূর্ণঃ সপ্রভি জের্ব্য ॥
এবং রাগ স্ত্রিধা মতঃ। ইতি

ষাণ্মাতুরঃ পু॰ কার্ত্তিকেষঃ। ইত্য-মরঃ।।

याष्ठ्रविष्ठः जि यष्ठविष्ठियकः भाज्यत्राधानः ॥ छज्ञछदः ॥
यथा। यष्ठवष्ठरा विधायकः भाज्ञः याष्ठ्रवष्ठः छना व्याधान छज्ञ
छ्वा वा याष्ठ्रविष्ठः। ইতি निकाछ्यकोमूनी ॥

याध छ न य जिएको। ইতি কবি-कन्नफ्र भः ॥ छ जियां ध्या । न जाद्मा छ। य जाधा छ। जिक्कि निष्ण खिः। ইতি पूर्णा मात्रः॥ या छु क जामरयारा। ইতি কবি-

কল্পদ্রমঃ।। ক সাস্ত্র্যতি শো-कार्जः मयानुः। नियाञ्जविष्ठि। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ यार्छः वि यर्छः। यर्छभकाष স্বার্থে ফ প্রত্যযেন নিষ্পন্নঃ।। वि न १ ७३ वस्त्र । इं छि कवि-कन्नफ्रमः॥ मूर्कनग्रापिः। ११ ७ সিনাতি সিনীতে। ন সিনোতি मिन्दछ। इंछि पूर्गाकामः॥ বিচ প শ ঔ এ করণে। ইতি कविकन्नफ्रमः॥ श्रेष् किश्व-তি সিঞ্চতে। ঔ সেক্তা। সিষিচ্ त्रवित समूवशः। ইতি ভারবিः । इंडि मूर्गामामः ॥ विष्ठे अनामदत्र। ইতি কবিকল্প-क्रमः॥ मूर्कनग्रां निः। मिष्ठे थनः लाकः। इछि मूर्गामामः॥ বিদ্ধঃ পু॰ কামুকঃ। লোচ্চা ইতি · ভाষা। তৎপর্য্যায:। বিদ্বশ্ধः ২ ় নাগরঃ ৩ ভবিলঃ ৪ ছিদুরঃ ৫ . विष्ठः ७ वालीकः १ यहेथाखः ৮ कामरकिलः २ विषुषकः ३० । ইতি ভূরিপ্রযোগঃ ॥ পীঠকে निः ১১ शीर्रमिः ১२। ই**ভি ত্রি-** ॥ কাওশেষঃ ॥ পল্লবিকঃ ১৩। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। ষিধ উ শিবে।। শাস্ত্রে। ইতি

किविक अप्रज्ञा । मृर्क्ष न गामिः। छ व्यानि व्यानि विष्या । भिवः सक्ष्यः। जमादः र्यकः। मिरका वर्ग माञ्ज स्वानाम नः। रमध-ज्ञा भाज स्वानाम नः। रमध-जि भिषाः छकः। ইতি मूर्गा-मानः।।

ষিধ গত্যা । ইতি কবিকল্প দ্রুন্থ । সেধতি। নিষ্ঠাষা দিধিতঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ষিধ উ গত্যা । ইতি কবিকন্ধ-দ্রুন্মঃ ।। সেধতি । উ সেধিত্বা সিদ্ধা । ক্ত্বা বেটত্বাদ্যেম ডীম্বী-তি ইমো নিষেধে সিদ্ধঃ । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

ষিধ উ ষ ঔ সিদ্ধো। ইতি দুর্গাদাসঃ।। উ সেধিত্বা সিদ্ধা। য
সিধাতি। ঔ অসৈৎসীৎ। অস্মাৎ পুষাদিত্বান্নিত্য ও ইত্যন্যে। সিদ্ধি নিশ্পত্তিঃ। সিধ্যতি
যটো নিষ্পন্ধঃ স্যাৎ ইত্যর্থঃ।
ইতি দুর্গাদাসঃ।।

বিশ্ব উ হি॰সনে।। দীপ্তৌ। ইতি কবিকল্পক্রমনঃ।। উ সিম্ভিত্ব। সিন্ধা। ইতি দুর্গাদাসঃ।। বিল শ উঞ্ছে। ইতি কবিকল্প-ক্রমঃ।। উপ্ল উদ্ধৃতশস্য শেষা-

व

পহরণ । শ সিলতি ধান্য দীনঃ
। দেলিত।। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।
বিধ য উ তম্বততো । ইতি কবিকর্মজনঃ ।। তম্বততি স্তম্ভতি
গ্রন্থন য সীব্যতি বস্ত্র সৌলিকঃ । উ সেবিদ্বা স্মূম্মা ।
ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

यू अ म मन्ना क्रिक निष्क महा ।

देशि कि विकास प्रमाणि मुम्हि ।

मिन्ना मन्नानः। क्रिक सम्मान मन्नानः। क्रिक सम्मान मन्नानः। क्रिक सम्मान स्वाप्त के स्वाप्त स

য় ঞ গতৌ। ইতি কৰিকর জনঃ। ঞ সুবাব সুষুবে। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

যু গতৌ। ঐশর্যাপ্রসর্যোশ্চ। ইতি কবিকল্পজ্ঞানা। সর্তি। ইতি দুর্গাদাসঃ।

यू न केश्रयाथनवरगाः । इंडि कविकद्यक्रमः ॥ न जोडि। इंडि पूर्गापामः ॥

ষুঃ পু॰ গর্ভবিষোচন । ইত্ত্যে-

কাক্ষরকোষঃ ।।

মুট ক ভৌচ্ছো।। অনাদরে ।

ইতি কবিকল্পদ্রুনঃ ।। পঞ্চনম্বরী

ট্রুবান্তঃ। ক সুট্রয়তি । দক্তাদির্ব নিভি ভীমঃ। ভৌক্তামলীভাবঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

युष्ठ मीलन हि॰मरबाः। ইভি কবি-क्वाक्रमः॥ मूक्वनाफिः। नक्ष-मस्त्री। मूख्ठ मूबु्खाः ইভি मूर्गामामः॥

मूत्र म रेज्यारकाः। इंजि कवि-क्षेत्रक्रमः॥ मूर्कनप्राप्तः। म न्त्रिक मात्रिका मूरवातः। जा प्रीक्षिः। जेया रेमसर्गाः। इंजि पूर्णाप्राप्तः॥

ৰূহ ৯ ব তৃপি।। শক্তো। ইতি
কবিকরজনঃ।। শক্তিঃকনা।
৯ অসূহৎ। ব সূহতি দুঃখণ
মুনিঃ সহত ইত্যৰ্থঃ। সুবোহ।
ইতি দুৰ্গাদাসঃ।।

ষু ও ল সূতো। ইতি কবিকল্প-দ্রুমঃ । মূর্দ্ধন্যাদিঃ । ও ল সূতে । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

ষূষ ও ও সূতৌ। ইতি কবিকল ক্রমঃ।। ষ ও সূষতে। ও সূনঃ। সূতি গর্ত্তবিমোচন । সূতে পুত্র । নারী। অন্যত্রাপি ধর্মো ২র্থ श्रम् वर्षः । इति पूर्णामामः ॥ यू भ क्लाभा देवि कविकन्नक्रमः ॥ यूर्कनामिः। भ मूर्वि । देवि पूर्णामामः ॥

যুঃ স্ত্রী গর্ভবিষোচন । ইতি কশ্চিদেকাক্ষরকোক ।।

युम ७ निज्ञारम। ইতি कविकन्न-क्रमः ॥ वश्चेत्रज्ञी। ७ मृम्ह्यः। मिज्ञारमा निःस्क्रभः। ইতি मूर्गा-मामः॥

বুদ কণনে। ইতি প্রাঞ্চঃ কণন মবদারণ হিংসোপলকণ মিতি রমানাথেন ব্যাখ্যাত । ইতি দুর্গাদাসঃ ম

ষুদ ক আশ্রুতি হত্যোঃ।। নিরাসে। ইতি কবিকর্মদ্রমঃ ।।
রঙ্গীকারঃ। ক সৃদযতি ধনং বিপ্রায় দাতুং দাতা।
রমানাথস্ত আসুবণ ইতি:দস্ত্যসকারং পঠিদ্বা সুদযতি মদিরা
ভাত্তাৎ করতি ইত্যর্থ ইত্যাহ।
ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ষ্র ও য ঈ স্তব্যে।। হিংসে।

ইতি কবিকল্প ক্রমাণ গুর সূর্যাতে। ঈ সূর্ণাণ কৈশ্চিদয়ণ ন
মন্যতে। স্তব্যো জডীজাবাণ।
ইতি দুর্গাদাসাং।

युक्तं नामदा। ইতি कविक अफ्र मः

। द्रिक युक्तः यक्षे यती। मृक्ति

मृष्ठे लाकः। ইতি मूर्गामामः॥

युक्तां जित्वं। ইতি कविक अफ्र मः॥

नृक्षां जित्वं। ইতি कविक अफ्र मः॥

गृक्षां जित्वं। ইতि मूर्गामामः॥

युव श्रमदा। ইতি कविक अफ्र मः

।। यक्षे यति। ইতি कविक अफ्र मः

।। यक्षे यति। ইতি कविक अफ्र मः

।। यक्षे यति। यक्षि नामिः। সৃষ্ঠি।

ইতি मूर्गामामः॥

ষেক ঋষ্ট সর্গণে। ইতি কবিকর্ম জন্মঃ।। মূর্দ্ধন্যাদিঃ। অস্য যোপদেশ বিধ্যে বর্জনেপীহ পাঠঃ কন্য চিদনুরোধাৎ। ঋ অসিষেকৎ। ৪ ষেকতে। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

त्वत अ ठान गर्छाः। ই कि कविकन्नफ्रमः।। मूर्जनगिनः। स व्यतिस्तरः। ই कि मूर्गामामः।।
स्वव अक्ष्यः प्रमाता। ই कि कविकन्नफ्रमः।। स व्यतिस्वरः। धः
त्यवि स्वर्छ। धः त्यव्छ।
स्वर्य मात्राधन मूर्शकाग व्याव्यव्यकः। सिकुः त्यव्छ गुधः।
व्यवस्थः। सिकुः त्यव्छ गुधः।

ৰোডশ

হো নরপতি॰ সেবস্থি কি॰ মানিন ইত্যাদৌ গণক্কতানিত্যন্ত্ব
মাহুঃ। ইতি দুর্গাদণসং ।।
বৈ ক্ষয়ে। ইতি কবিকলজন্মঃ।।
মূর্জন্যাদিং। সামতি। ইতি
দুর্গাদাসং ।।

स्था य नात्म । ইভি ক্ৰিক্স-फ्रियः । यूर्कमाणिः। नाम देश नकीकत्रणः। य माछि यत्मा ज्रञ्जू-न्। ইভি দুর্গাদাসः ।।

ষোডন্ পু॰ ষড্দন্তযুক্তবৃষঃ। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ।।

বোডশ তি সংখ্যাবিশেষঃ।

যডধিকা দশ। বোলো ইতি
ভাষা। তদাচকৌ ইন্দুকলা
মাতৃকাশকৌ। ইতি কবিকললতা।। নিত্যবহুবচনাস্তোষণ।।
যোডশঃ তি যোডশানাং পূর্ণঃ
। যোডশন্ শকাৎ ডট্ প্রত্যযেন নিশ্ময়ঃ। ইতি সিদ্ধান্ত
কৌমুদী।।

বোডশকলাঃ স্ত্রী চক্তমণ্ডলস্য-বডিষকদশভাগাঃ। তাসাং না-নানি যথা। তত শচক্রস্য অমৃ-তাদি যোডশকলাঃ পূর্ববৎ প্রা-ণপ্রতিষ্ঠাং ক্রত্বা পূজ্ঞাবেৎ। অং অমৃতাবৈ নমঃ ১। আং মান-

राज्यमान की आकारमे वा-ডশপ্রকারদেষজব্য । তৎক্রম याद्यः माण्युमाविकाः। जूमा-मन जन बंख अमीत्मा १ म ততঃ পর । তাষুল চ্ত্র প-क्षा कि याला कि या या विष्य भगा ह शामुका शावः काश्नाः ব্লক্তত তথা। দান মেতৎ বো-ডশক প্ৰেত মুদ্দিশ্য দীষতে ॥ তৎ ষোডশ ষোডশকৈ ব্লেকো দানসাগরো ভবতি॥ 🛊॥ তত্ত্ব ज्यः शृकाषाः मानवाका ह थियमखि वित्मवंगः। जूत्र र्व्मवण विकृश विकिवर्षमञ्जा-चिक्क्त्रवर्गनामः कनः। अछि-এर् उद्धायः अमिनीक्रवः।

ভত্তৰে রসমিধানে ভাব্দিশ্য व्यक्तिकारा । ।। ज्याननका छेखा-माहिद्यां (नवडा । द्राक्रश्राना-নুত্ৰসম্প্ৰান্তিং কল । তত্ৰ वित्यभानुगटम्भा ६ व्यवयाचा चा-কালেখেন: ছীর্খেন প্রতিগ্রহঃ। অব্যন্যত্রাশি। আমেয় করতল ग्रार्ग जनगा वक्रत्वा (मवजा जृश्वि-श्वाश्विः कवा। ०।। वसमा वृश्-স্পৃতি দেবতা চক্ৰসালোক্য প্ৰা-খিঃ ফল । প্রতিক্রহে দশান্তগ্র-হণ পরিধানে ॥ ৪॥ দীপস্য অগ্নি र्ट्सवन উত্তমচকুः প্রাপ্তিः ফল॰ য়া ে। অন্নদ্য প্ৰজাগতি ৰ্দেবতা অক্ষ সুথপ্রান্তিঃ ফলণ। প্রতি-थरह मुक्जिह्न ॥ ७॥ छात्रु-লেখ্য বনস্পতি দেবত।। মেধা-বিশ্ব সুভগন্ব প্রাক্তর দর্শনীয়ন্ত -धाश्चिः कन ॥ १॥ <u>इ</u>न्जमा উद्धा-'নাঙ্গিরসো দেবতা সর্ব্ব্যাঘি বি--নিৰ্মুক্তৰ শ্ৰীমন্ত বহুপুত্ৰৰ প্ৰা-खिः कनः। প্রতিগ্রহে দঙ্গার-্ৰংগ্ৰা ৮ গা গন্ধৰ্য গন্ধৰো দেৰতা বেৰপদপ্ৰবাশ কলে ৷ কা -লান্য বনস্পতি পেবতা অভ্যস্ত नूषिष्ठरमः कवः ॥ अ॥ कव-ना रमणार्छ क्षित्रा। मूनामूक-

ष् कला।। ३५॥ भाषाचीः উछा-নালিরসোদেবতা অত্যন্তস্থিত্ব-ভবনংক্ষণ শ্রুতিগ্রহে আরো-इंग ।। ३२ ।। भामूकायूगलमा छे ত্তান।কিরুদো দেরতা স্বর্গলোক সুখগমন ফল। প্রতিক্রছে আ-ह्वाह्न ॥३७॥ (धटना कट्फा ल-क्छा। नृषाताकथाश्विः कनः। छब (धनु॰ खाजुथी गाज्रमभीश-मानीय। 'अं वा लच्चीः मईज्ञा-नाः मा ह प्लद्वद्वविद्या। (धन्-ৰূপেণ সা দেবী মম শান্তি প্ৰয-চ্ছতু।। ওম দেবস্থা যা চ ৰুজাণী শকরদা চ का প্রিয়া। ধেনু রূপেণ मा सबी यम गासि॰ প্রযচ্ছতু॥ अप्र विरक्षा बक्किन या नकी या लची धनमभा है। या लचीः नर्व-ख्**डानाः ना (४**न् र्वतमाञ्च रम ॥ खब् हर्जुर्ब्यनग या मधीः या हा-চৈৰ বিভাবসোঃ। চন্দ্ৰাৰ্ক শক্ৰ শক্তি যা ধেনুৰূপাস্ত সা শ্রিষে।। ওন্সধাস্থ পিতৃ সংঘানা সাহা ৰজ্ঞজাণ ৰজঃ ৷ সৰ্বপাপহ্রা त्वन् ज्ञाक्। जि॰ अगक् म ।। अञ् नर्दामवनयी॰ त्यवी॰ नर्दावम-'मरीख्या। मर्द्रांगिक निमिखार नर्बरनाक गिरिह्या।। थ्यक्।

মি মহাভাগা মক্ষয় সুখাষ চ

1 ইত্যুক্ষার্য উৎস্জেৎ। প্র

তিগ্রহে পুক্ত্ধারণ ॥ ১৪॥ হিরণ্যস্যামির্দ্দেবতা দীর্যাষ্ট্র প্রাপ্রিঃ ফল ।। ১৫॥ রজতস্য চশ্রুমা দেবতা উত্তমক্রপপ্রাপ্তিঃ
ফল ।। ১৬॥ ইতি শুক্দিতত্ত্ব

।। ৠ ।। গ্যাপদ্ধত্যুক্ত ষোডশদান হথা। স্বর্ণ রৌপ্য তথা
তামু কা স্যা গাবে। গজা হ্যাঃ

। গৃহ ভূমি বৃষ্যা বস্ত্রণ শ্যা
ক্ষেত্র মুপানহৌ ॥ দাস্যম প্রত্যুক্ত বোডশক

শত । ইতি বাষুপুরাণে গ্যা
মাহাত্ম্য ।।

ষোডশভুজা স্ত্রী ষোডশহস্তযুক্তা দুর্গা। যথা। যদা তু ষোডশভুজা মহামাযা প্রপৃক্তযেৎ। দুর্গাতস্ত্রেণ মস্ত্রেণ বিশেযণতত্র বৈ শৃণু ।। কন্যাযা কেন
ফপক্ষদ্য একাদশ্যা মুপোষিতঃ
। দাদশ্যা মেকভক্তর নক্তণ
কর্যাৎ পরেহনি ।। চতুর্দশ্যা
মহামাযা বোধ্যিদ্বা বিধানতঃ
। গীতবাদিত্র নির্ঘোষে নানা
নৈবেদ্য বেদনৈঃ ।। অষাচিতণ
বুধঃ ক্র্যাৎ উপবাসণ পরে

২হনি। এব মেব ব্ৰত প্ৰব্যাৎ यावरेष नवभी ভবেৎ।। জ্या-ষ্ঠাযান্ত সমভ্যচ্চ্য মূলেন প্রতি-পূজ্যেৎ। উত্তরেণার্চন ক্ষা व्यवगार्ख विमर्क्करण्य ॥ इंजि कानिकार्श्वतार (२) जशायः ॥ ষোডশমাতৃকাঃ স্ত্রী ষোডশসণ-थाकरणवीवित्ययः। यथा। त्री-ৰ্য্যাদি ষোডশমাতৃকাভ্যো নমঃ । ইতি দুর্গোৎসবপদ্ধতিঃ।। তা मा॰ नामानि यथा। शोदी शवा শচী মেধা সাবিত্রী বিজয়া জ-या। (परमिना यथा याहा मा-তরো লোকমাতরঃ ॥ শান্তিঃ পুষ্টি ধৃতি স্তুষ্টি রাত্মদেৰত্যা मह। जारमी विनायकः शृरका। অস্তেচ স্বদেবতা ৷৷ ইতি শ্ৰাদ্ধতত্ত্ব গা

ষোডশর্থিক্ক্রভুঃ পু॰ ষোডশপুরোহিতসাধ্যযাগবিশেষঃ। স
তু জ্যোতিফোমযাগঃ।। দাদশাহসাধ্যসত্রষাগশ্চ। যথা।
জ্যোতিফোমে দাদশশত গো
দক্ষিণা বিভাগঃ ষোডশর্থিজাণ
তাদ্বক্রতাভূতে সত্রাত্মকে দাদশাহসাধ্যে শতেনার্দ্ধিনো দীক্ষযন্তীত্যাদি দর্শনেন নির্ণাধিতে।

তত্র বিজ্ঞাগণ মনু রপ্যাহ। সর্বে-या मिक्तिना मूथा उपरक्षनािक-নো ২পরে। তৃতীষিন স্তৃতীযাণ-ना न्छ्या देन्हकभाषिनः ॥ দক্ষিণা গোশতবিভাগায শ্রৌ-ভকাত্যাযনোপি। অথ দাদশ স্বাদশ আদ্যেভ্যঃ ষট্ ষট্ দ্বি-তীযেভা শতসু শতসু স্তৃতী-ধেতা স্তিসু স্তিসু ইতরেতাঃ। ইত্যত্ত যোডশর্বিজাণ চতুর শ্চ-তুরঃ ক্রন্ধা চত্বারো বর্গাঃ। ইতি মলমাসতত্ত্ব ।। 🟶 ।। এষা ॰ ঋত্বি-জा॰ मामानि यथा। बक्ता > बा-ন্ধণাচ্ছণ্সী ২ আগ্নীধুঃ ৩ পোতা ৪। এতে সাৰ্ববেদীয়াঃ॥ হোতা ৫ মৈত্রাবরুণঃ ৬ অচ্ছাবাক্ ৭ আবস্তোতা ৮। এতে ঋথেদি-নঃ॥ অধর্যঃ ৯ প্রতিপ্রস্থাতা ১০ নেফা ১১ উম্বেতা ১২। এতে যাজুষাঃ।। উদ্গাতা ১৩ প্রস্তো-তা ১৪ প্রতিহর্তা ১৫ সুবন্ধণ্যঃ ১৬। এতে সামগাঃ। ইতি ম-হাভারতে মোক্ষধর্মে ১০৫ অ-भगारम नीलकर्शनिका ॥

ষোডশাশ্তঃ পুঁণ শুক্রঃ। ইতি শব্দমালা ॥ যোডশকিরণযু-ক্তে ত্রি ॥ বোডশাঙ্গঃ পু॰ বোডশপ্রকারসুগন্ধি জব্যমিশ্রিভধূপঃ। যথা।
গুগ্ধলু॰ সরল॰ দারু পত্র॰ মলযসম্ভব॰। হীবের মপ্তরু॰ সন্ত কী॰ নথী॰ লাক্ষা॰ জটামা॰সীঞ্চ শৈলজ॰। বোডশাঙ্গণ বিদু ধূপণ দৈবে পৈত্রো চ কর্মাণ গা ইতি তন্ত্রসারঃ।। বোডশাব্যধমুক্তে ত্রি।।

যোডশাজ্মিঃ পু॰ কর্ম টঃ। ইতি হেষচন্দ্রঃ।। ধোডশচরণযুক্তেত্রি ষোডশার ক্লী যোডশদলপদ্ম। ষথা। আধারে লিঙ্গ নাভৌ হ-**দय সরসিজে তালুমূলে ললা-**টে দ্বে পত্রে ষোডশারে দ্বিদশ मनपटन बामनार्क ठजूरक । वा-जात्छ वामिनात्छ ७ क क ठ সহিতে কণ্ঠদেশে স্বর†ণা॰ হক্ষৌ কোদশু মধ্যে সকলদলগত ব-ৰ্ৰপণ নমামি॥ ইভি তন্ত্ৰণ। 🗱।। জলাশযোৎসর্গীষবেদিকোপ-तिकर्खवाठळा १ यथा। यथगा-পুরাণে। রজদা মণ্ডল সর্য্যাৎ পঞ্চবর্লেন তত্ত্ববিৎ। ষোডশারণ ভবেচ্চক্রণ পদ্মগর্ত্তণ চতুর্ম্যুখণ ॥ চতুরসুম্ব পরিতো বৃত্ত॰ মধ্যে গুণোত্তর । বেদ্যা শ্চোপরি তৎ কৃত্বা গ্রহালোকপতী গুণা ।। বিন্যসেক্ষন্ততঃ সর্বান্ প্রতি-দিক্ষু বিচক্ষণঃ। ইতি জলাশ-যোৎসর্গতন্ত্ব ।।

ষোডশার্কিঃ পু॰ শুক্রগ্রহঃ।ইতি ভূরিপ্রযোগঃ।। ষোডশশিখা-যুক্তে ত্রি।।

ষোডশাবর্ত্তঃ পু॰ শখঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। ষোডশাবর্ত্তনমূ ক্রেত্তি॥

যোডশিকামু॰ ক্লী পলপরিমাণ॰ । ইতি বৈদ্যকপরিভাষা।।

যোডশী পু॰ যজ্ঞপাত্রবিশেষঃ।
যথা। অভিরাত্তে যোডশিন॰
গৃহ্লাভি নাভিরাত্তে ষোডশিন॰ গৃহ্লাভীভি। ষোডশী সসোমকপাত্রবিশেষঃ। ইভি মলমাসতত্ত্বণ।

स्वाजनी खी बानमञ्ज्ञातिकान स्वाजनिकानित्रम्यः। यथा। काली जात्रा महाविकान स्वाजनी जूतनश्रती। टेजत्रवी व्हिन्नमस्वा ह विकान धूमावजी ज्याना विकानिकानि मिक्कविकान ह माजनी कमलाश्चिन का। এजा नम महाविकान मिक्कन विकान श्रकीर्द्धजाना स्वान

পারিভাষিকী পোডয়ী মাই खानार्गदा ह्यांख॰ वाक्रणंख ঞ্ শক্রাদি সহিত পৃথক্। বা-মাক্ষি বিন্দুনাদাঢ্য বিশ্বমাতৃক-वाञ्चक ।। विमारिन स्वा**क्ट्य**-দেবি সাক্ষাৎ জাগ্ৰৎস্বৰূপিণী । ত্রিকূটাঃ সকলা ভেদাঃ পঞ্চ-कृषा जविष्ठ हि॥ देवकवी व-मुकृषे। मा। यहेकृषे। भाकती ভবে । अमार्थः। ह<u>न्याञ्चः इ</u>-কারঃ বারুণান্ত শকারঃ শক্তা-मी द्रकः। वामांकि केवातः। विमारामी भूर्बाक चामन विमा-को।। **रिकामि मिख्न कि नि** वगकियरी मना। छना जिनास्ड সকলাঃ ষট্কূট। পরমেশ্বরি।। **ठ मास्ती। जमार्थः। मिवमक्कि**-মধী পূৰ্বোক্তা বীজন্বধবতী। বে-मानिः अनवः। यक्ति जाटनी जृिवजा।। # !! जथ महारवा**ज**नी । আদ্য বীজ্বদ্ব ভদ্রে বিপরীত-ক্রমেণ হি। বিলিখ্য পরমেশানি ততো খন্যানি সমুদ্ধরেও।। অ-ন্তর্মুখী বরারোহে সমারী ত্রিপু-রেশরী। এভিন্ত পঞ্চসংখ্যাকৈ বীজৈঃ সংপৃতিতা যজেৎ ॥

ষোডশাক্ষরী। ত্রিকূটাঃ সকলা ভজে যোডশার্ণা ভবন্তি হি ।। देवकदगुरकागिवः मांगा रेगवी म-श्चेषभाकती। अमार्थः। जामा-বীজঘ্ৰ মাষা রমাত্মক । বিপ-রীত ক্রমঃ আদৌ রমা পশ্চামা-ষা। অন্তর্মধ্যে স্থিত কামবীজ भूटथ वाटनो यमाः क्रमार्याः। अिंड शक्ष्म श्यादिक वी देकः वर्षे কুটা পপ্তকৃটা নবকৃটা বা সং পুটিতা সংপুটবৎ ক্লতা তেনা-নুলোম বিলোমতঃ সংপুটিতা মি-ত্যর্থঃ। যোগিনীতন্ত্রে। শ্রীবীজ মায়া স্মর যোনিশক্তি স্তারঞ্চ মা-যা কমলাথ বিদ্যা। শক্ত্যাদি বী-জৈশ্চ বিলোমতোক্ত্যা শ্রীষো-ডশীষঞ্চ শিবপ্রদিষ্টা।। তথা চ क्रजायता । श्री याया यमरना-বাণী পরা তার শিবপ্রিয়া। হরি-প্রিষা ত্রিকূটা সা পরা বাণী মনো-ভব: 11 মাষা লক্ষী শ্মহাবিদ্যা শ্ৰী বীজ ষোডশী পরা 🛤 অথ বী-कावनी रवाफनी। क्रजकायता। শ্ৰীবীজ মাষে সংলিখ্য তথৈব চ ঙ্গমারিকাণ। শ্রীবীজ মাষে কামঞ্চ বাল্যাষা কমলা তথা ৷৷ পরাণ কা-

मक वाधीजः गागा बीवीज त्यव **छ। वीकावनी याजनीय॰ नर्ब**-তন্ত্রেষু গোপিতা।। রাজ্য দেয়॰ শিরো দেয় ন দেয়া ষোডশাক্ষ-রী।।ঞ্চা তন্ত্রান্তরে। আদ্যা স্বণ্ড-লিনী শক্তিঃ শক্তি রাদ্যা ততঃ পরা। নিবেশযেত্তষো শ্মধ্যে দেবি গোৰিন্দবলভা ।৷ ততম্ভ মন্মথ वीकः धीवीकः छमनखतः। श-**लिथा तगर्या ब्**ट्रिक् तमवकु॰ वि-নিঃক্ষিপেৎ।। ততো লোপা॰ ন্য-रमप्ति विकृषे। यथ वा शरा । আদ্যানি পঞ্চ বীজানি পশ্চাদ্বি-নাস্য সুন্দরি॥ ষোডশীয়ণ সুগো-প্যা হি স্বেহাদ্দেবি প্রকাশিতা। অস্যা মাহাত্ম্য মতল জিহ্না-কোটি শতৈ রপি॥ বক্তু॰ন শক্য-তে দেবি কি॰ পুনঃ পঞ্চভি শুঁ খৈঃ । অপি প্রিষতম দেয সুত দার थनार्षिकः॥ त्राक्षाः प्रचः निदत्र। দেষ ন দেযা যোডশাক্ষরী। তন্ত্রাম্ভরে। সিন্দুর রজসা বাপি ঙ্গন্ধন বিলেপিতে। লিখিত্ব। मर्गरयकृत्यो न ह कर्त श्रकाम-ষেৎ ৷৷ ততঃ স্বাত্ম বিশুদ্ধ্যর্থণ ল-ক্ষ মেক জপেদ্গুরুঃ। 🕸। বীজ-(साफनी मार्। निक्कामटन ।

কামো মাধা রমা বালা ত্রিকূটা खी जगाइएमी। कानी कामकना कृष्ठि॰ मर्बारिनो अनवः अरिय ।। खी-মহাষোডশীযঞ্ষা খ্যাতা ভ্ৰন-बर्य। क्वारनन मृजुग्रा विमा मर्वाञ्चादिय नियम्कृष्ठां ॥ मश्चनकः মহাবিদ্যা স্তন্ত্রাদৌ কথিতাঃ প্রি-যে। সারাৎসারতরা ভূতা যা যা विमाः म्राणिजाः ॥ वहना कि মিহোক্তেন তাসাং সারা ভূ ষো-**ज्या थिका मिठा महात्मि या** পৃষ্টা তে পুনঃ পুনঃ।।।।।। শাক্ত-कामताज्य बीक्रमा भाषावीजः তথা ঝিন্টী কামণ শক্ত্ৰণ বিষৎ क्या । जाजरतमा मृगारकन লাঞ্ছিত পরমেশ্বরী।। এতদাগ্ত-বকৃটঞ্চ পূৰ্ববৎ কামরাজক। ত থৈব শক্তিবীজম্ব সুন্দর্য্যেষা প্র-কীৰ্ত্তিতা।। অত্ৰাপি পূৰ্ববদীজ मःरयागः। याया अकातः। विकी একারঃ। পুনঃ শাক্তমাহ। এত-ন্তগণ ততো মাষা বন্ধা শক্তো श्दा श्रीना। बागरनर्जन मः मु ক্তো নাদবিন্দু বিভূষিতঃ॥ এত-षाश्चव मूक्तिके शूर्वव कामन ক্তিক°। ভগ একারঃ। অত্তাপি পূ: ৰ্ববদীজ সংযোগঃ। অত্ৰ বিশেষঃ

। बन्नवीजः यमा ममा। विकृटियू वतानता अथमा मूनती (परी षिতীযা ত্রন্ধানুশরী।। শক্তিকুটে মহেশানি অনম্ভসুন্দরী মতা। এ-ষা তু সুন্দরী বিদ্যা মতভেদেন দ-শিতা। ত্রিকূটান্তে হণসবীজ বি-ন্দুসর্গবিভূষিত ৷ এষা শ্রীপ্রাণ সং-युका मात्रिका मृश्थ बाहिनी ॥ ইতি তন্ত্রসারঃ।।ঞ্চা। ঊনবি॰শতি-शिखनानिक्या। यथा। প্রভিশ্ব লোক্তরীত্যা দাদশগিতান্যো-**जनीशिक्षाः मनाष्ट्र। इं**ठि ठी-র্থযাত্রাপ্রধোগতত্ত্ব ৷৷ তদিধান ষথা। অমাবস্যান্ত কন্যাকে তীর্থ প্রাপ্তৌ তথা নৃপ। রুত্বা ঞাদ্ধ বিধানেন দদ্যাৎযোডশ পিণ্ডকণ u कायू भूता नीय खe প্रयार ना ৰথা। উনবি॰শতি দাস্যমান পি-ওস্থানানি যথাদক্ষিণ ভাগ চতু-खेरान क्लान जब मिक्नाजान् अभान् वाखीर्या। वन्य ध्वत মৃতা যে চ গভি র্যেষাণ ন বিদ্যতে । আবাহিষিষ্যে তান্ সর্বান্ দর্ভ-शृष्ठि जिल्लामरेकः ॥ याजायश्-न्रत्न य ह गिंड (यैया॰ न विमार्ड । আবাহিষিয়ে তান্ সর্বান দর্ভ-शृत्के जिल्लामें देकः ॥ वसू वर्गक्रतन

ষে চ গভি ৰ্ষেষা॰ ন বিদ্যতে । व्यावाश्याद्या छान् गर्बान् मछ-পृष्ठि जिलामरेकः ॥ ইত্যোত স্তিলোদকৈ রাবাহ্য। আত্রন্ধ স্ত-ৰপৰ্য্যন্ত॰ দেবৰি পিতৃ মানবাঃ। তৃপ্যন্ত পিতরঃ সর্বে মাতৃ মাতা-মহাদযঃ।। অতীত সলকোমিনা -সপ্তদ্বীপনিবাসিনা । আত্রন্ধ जूव नात्नाका मिम मञ्ज जित्ना-मकः॥ ইভ্যেতাভ্যা॰ তিলোদ काञ्जनीन ममाा । ততো मृना-দিতঃ পিতৃতীর্থেন পিণ্ডান্ দ-मार । एव क्यश वया श्राप्त মৃতা যে চ গতি ৰ্যেষাণ ন বিদ্যা-তে। তেষা মুদ্ধরণার্থাষ ইন॰ शिखः नमाग्राष्ट्रः ॥ ३॥ याजाय-र्ज्ञल (य চ গতি र्विया॰ न वि-माट**ा छिया गू**क्षत्रवार्थाय देग॰ भिष्यः क्रमामारः ॥ २॥ वस्तुवर्गः জলে ষে চ গতি ৰ্যেষাণ ন বিদ্যাতে ৷ তেষা মুদ্ধরণার্খায ইমণ পিওণ मनागर्॰॥०॥ অজাতদন্তা स् কেচিৎ যে চ গর্ভে প্রপীডিতাঃ। তেষা মুদ্ধরণার্থায় ইম॰ পিঙ্ড॰ नना गाइ॰ ॥ ८॥ विश्वनका का किवाधिनका ख्या शता वि-দ্যুক্তৌর হতা ষেক্ত জেভাঃ পিও

ममागर ॥ **८॥** मावमार मृज যে চ সি॰হ ব্যায় হতাশ্চ যে। দ॰-ষ্ট্ৰিভিঃ শৃষিভি ৰাপি তেভাঃ পি-ख॰ मनागाइ॰॥ ७॥ উवस्तनमृठा বেচ বিষশস্ত্র হতাশ্চ যে। আ-ত্মাগন্ধাতিনো যে চ তেভ্যঃ পিণ্ডণ क्ला गारू 11 9 11 **अतर**ना वर्जनि-ৰনে কুধবা তৃষ্যা হতাঃ। ভূছ প্রেত পিশাচাক্ত তেভ্যঃ পিওঁ ननागरः॥ वत्न जत्न ॥ ৮॥ রৌরবে চান্ধতানিত্রে কালসূত্রে চ ষে স্থিতাঃ। তেষা মুদ্ধরণার্থায इयः भिष्णः ममागाइः॥ २॥ ञ-নেক্যাতনা সংস্থাঃ প্রেতলোকে চ ষে গভাঃ। তেষা মুদ্ধরণার্থাষ इय॰ शिख॰ मना गाइ॰ ॥ ३०॥ ज-নেক ৰাজনা সংস্থা যে নীতা য-मिक देतः। তেষा मूक्त तर्गार्थाय हैयः शिक्षः निमायाहः ॥ ३५ ॥ न-রকেষু সমস্তেষু যাতনাসু চ যে স্থিতাঃ। তেষা মুদ্ধরণার্থায ইম॰ शिखः पंताबाहः ॥ ३२ ॥ शरू-যোনিগতা যে চ পক্ষি কীট স-त्रीमृशाः। खथ वा वृक्षरयानिङ्ग **रिख्नाः भिक्षः मनायारः ॥ ५० ॥** জাত্যন্তর সহসূেষু ভূনতঃ স্বেন কর্ম গা। সানুষ্য দুর্লভ থেষা

ভिजाः शिक्षः ममागाइः ॥ ३८॥ দিব্যম্ভরীক্ষ ভূমিষ্ঠাঃ পিতরো বান্ধবাদযঃ। মৃতা অসংস্কৃতা যে চ ভেভাঃ পিঞ্জ দদামাহ। ॥১৫॥ ষে কেচিৎ প্ৰেতৰূপেণ বৰ্তম্ভে পি তরো নন।তে সর্বেজ্পি নামা-ম্ব পিওদানেন সৰ্বদা ৷৷ ১৬ ৷৷ যে বাহ্নবা বান্ধৰা বা যে ২ন্যজন্ম-নি বান্ধবাঃ। তেষা॰ পিডেখা <mark>মবা</mark> দত্তো ২ক্ষয় মুপতিষ্ঠতা ৷৷ ১৭ ৷৷ পিতৃবংশে মৃতা যে চ মাতৃবংশে চবে নৃতাঃ। গুরু শৃগুর বন্ধুনা॰ य हात्ना वाक्षवा मृठाः ॥ य म करन नुर्शिष्धाः भूख मात বিবজ্জিতাঃ। ক্রিযালোপগতা যে চ জাত্যন্ধাঃ প্ৰশ্নৰ স্তথা ॥ বিৰূপা আমগৰ্ত্তাশ্চ জ্ঞাতাজ্ঞা-তাঃ সলে মম। তেষা পিডের यया मटला श्क्या यूपालके जाः॥ ১৮ ৷৷ আত্রন্ধণো যে পিতৃবংশ-জাতা মাতৃ স্তথা বংশভৰা মদী-যাঃ। জলদ্বে যে মম দাসভূতা ভূত্যা স্তথৈবাশ্রিত সেবকাশ্ট্ ॥ মিত্রাণি সখ্যঃ পশরশ্ব বৃক্ষা দৃষ্টা স্দৃষ্টাশ্চ কৃতোপকারাঃ। জ-স্মান্তরে যে মম দাসভূতা জ্বেভ্যঃ अधा शिख गर्॰ मनानि ॥३२॥ अ-

ত্রোনবি॰শভিপিত্তে যোডশ পিও-ত্ব পারিভাষিক পঞ্চামুবৎ। ইতি ভিথ্যাদিতত্ত্ব ৷৷ াঞাএতে বা • মন্ত্রা-ণাণ দ্রীলিকোহেন দ্রীষোডশীত্বণ ভবতি ৷৷ 🛊 ৷৷ অথ মাতৃষোডশী ৷ গर्जामवगरम टेठव विषय ভূমিव-श्रीन । जमा निष्कु मनार्थाय माजृ-शिख मनागाइ ॥ ।।। यानि वानि ক্বত কন্ট বেদন। প্রসবেষ চা জ मानिक्रमणयां माञ्भिख मना-गार्।। रेनिथित्ना अनत्व देवव ়মাতু রত্যন্তদুষ্করণ। তস্যা নিষ্কুম-नार्थाय माञ्भिख मनामाइ ॥ ७ ৷৷ পদ্যাণ জনযতে মাতু দু :খৈঞ-व मूम् खत्र। তमा निष्कु मनार्थाय बाज्भिख॰ ननाबाइ॰॥ भद्धा-মিত্যত্র দন্ত্যামিতি চ পাঠঃ ॥ ৪॥ অগ্নিনা শোষতে দেহ॰ ত্রিরাত্রা-नगत्नयू ह। जना निक्रमनार्थाय बाक्लिख॰ प्रमाग्रइ॰ ॥ ६॥ नि-বেচ্চ কটুজব্যাণি ক্লেশানি বিবি-शानि ह। छम्या निस्त्रमार्थाय या-ज्लिखः प्रमाश्राहः ॥ ७ ॥ पूर्वछः ভক্ষদ্রব্যস্য ত্যাগে বিন্দতি ধৎ क्ल । जमा निकु मंगार्थाय माजृ-शिखः नमाग्रहः ॥ १ ॥ तारखो মূত্র পুরীষাভ্যাণ ভিদ্যতে মাতৃক-

र्ग हे । जना निष्मार्थाय मा ज्लिखः बलायारः॥ ।। भूजः वाशि नवाशुक् वाज्मूः थ वर-निन्। जना निद्याशीय या-कृशिखः प्रमासाइः ॥ २॥ यपा পুৰো ন লভতে তদা মাতৃশ্চ শোচন । তস্যা নিজ্মণার্থায माज्भिखः मनागाइः ॥ ३० ॥ कृषमा विश्रल भूख प्रांछ निर्जत खन । जमा निष्यभा श्रीय माजृशिखः ममाग्रहः ॥ ১১ । मिवा द्वारको यमा याजुः त्या-वनक भूनः भूनः। जमा निकु-यगर्थाय याज्ञिखः मनायाइः॥ **32 11 शृ**र्व जू मनत्य यात्रि याजू त्रछा छ नुष्ठतः। जगा निष्ठ्यश-थाय याजृशिख मनागाइ ।। ১৩ ।। গাত্রভঙ্গে ভবেমাতু ៹. নৈব প্ৰৰক্ষতি। তস্যা নিদ্ধুৰণা-थीब माजृशिख॰ मनागाइ॰ ॥ ১৪ য় অন্নাহারবতী মাতা যাবৎপু-শ্ৰো ২স্তি বালকঃ। তস্যা নিছ্-मनार्थाय माञ्भिखः ननागारः ॥ ३७ ॥ वयषादत यशारवादत भवि মাতৃশ্চ শোচন । তস্যা নিছ্ম-यनाथीय याजृशिख मनायाइ ।। ১৬॥ ইতি গৰাবা প্ৰসিদ্ধ ॥

বোডশোপচারঃ পু• বোডশ-প্রকারপুজাজবাণ। যথা। আ-সন স্বাগত পাদ্য মর্ঘ মাচম-, नीयकः। यशुभकी हमन ज्ञान বসনাভরণানি চ।। সুগন্ধিসুম-त्ना शून मीन देनद्वमा वन्मन । প্রযোজ্ববেদর্চনাযাণ উপচারাণ স্তু যোডশ।। ইতি তন্ত্রসারঃ।। **रवाज वर वर्ध्यकात**ायथा। म-প্রাসন্ধ উপোদ্যাতো হেতুতাব-मत्र खथा। निर्वा रहेक कका याद्य ষোঢ়। সঙ্গতি রিষ্যতে ॥ ইত্য-न्मिट्डो कागमीमी विका॥ म॰-शाया शाह् अकारत । इंछि मृ-ত্ৰেণ বষ্ শব্দাৎ ধাচ্ প্ৰত্যযেন নিপাতনামিশাম। ইতি মুগ্ধ-विधिवाक्रिव ।।

ষোঢান্যাসঃ পু॰ বিধিনা শরীরে
মন্ত্রবিন্যাসঃ। বথা। অথ ষোঢান্যাসঃ। তদুক্ত বীরতন্ত্রে।
কেবলা মাতৃকা ক্রমা মাতৃকা ভারসংপুটা । মাতৃকাপুটিত ভার ন্যসেৎ সাধকসত্তমঃ॥ ১ । শ্রীবীজপুটিতা ভার
মাতৃকাপুটিতর তৎ। ২। কামেনপুটিভা দেবী ভৎপুট কাম মেব চ।। ৩।। শক্ত্যা চ

পুটিতা দেবী শক্তিক তৎপু-है। नारमदा है। की बन्द्र भू-न न्रेख्न स स र रे के शर्विष ।। ৫ ৷৷ মূলেন পুটিতা দেবী তৎ-পুট॰ মন্ত্ৰ মেব চ। ৬। আনুলোম विलायन नासा मक्ष यथावि-धि ॥ गूरलनाके गङ अर्गा ९ ব্যাপক তদনন্তর । ষথা। প্র-ণবপুটিভা॰ মাভৃকা•। এব• মা-ভূকাপুটিত তার । এব জী-বীজপুটিতা তা। তৎপুটি-ত শ্ৰীবীজ। এব কাষেন পু-টিতা॰ মাতৃকা॰। মাতৃকাপুটি-ত॰ কাম॰। এব॰ শক্তা। পুটি-তা॰ মাতৃকা॰। মাতৃকাপুটি-তা॰ শক্তি॰ ন্যাসেৎ। তথা की॰ षम्पृक सा श्रा ५ २ व क शूर्व-বৎ। তৎপুটিতা মাতৃকা ने দেৎ। মাতৃকাপুটিতঞ্চ তৎ। মন্ত্রপুটিতা॰ মাতৃকা॰। তৎপু-টিত॰ মন্ত্রণ। পুন রনুলোম বি-লোমেন কেবলং মাতৃকাস্থানে ন্যস্য মূলেনাফশতেন ব্যাপক क्यां । ज्यं नाम खाताया অপি কার্যাঃ।। ইতি গুপ্তেন **मूर्गाया अक्रावा** अकीर्त्वि । তারাষাঃ কালিকাষাশ্চ উন্মৃ-

খ্যাশ্চ তথাপরে ॥ এতস্মিন্ न्यागरदर्ग ह गई॰ गान थन-**गा**छि। ইভি তন্ত্রসারঃ ॥ ফুক ম: প্রতীঘাতে। ইতি কবি-কল্পদ্ৰ ।। ন তিষ্ট ক্ষিষ্তি। हेि जूर्गामामः ॥ ফীগ মএ সংবৃতৌ। ইতি কবি-कन्नफ्रमः॥ य তिस्रेगियिष्ठि । দন্ত্যবৰ্গ দ্বিতীযোপধ ইতি কে-हि९। इंछि पूर्शानामः॥ क्टेन मि भएक। ইতি কবিকল্প-ক্রমঃ॥ মি স্তন্যতি স্তান্যতি অভিষ্টন । ইতি দুর্গাদাসঃ।। ষ্টভ ই ও স্তম্যে। ইতি কবিকল্ল~ ক্রমঃ॥ ই স্তয্যতে। ও স্তম্ভতে । তিষ্টম্যবিষতি। ইকারস্য পুন-ৰুক্তিঃ পূৰ্বত্ৰ তৎসয়ন্ধ নিষেধা-বৈব ঙিতস্ত সর্বে। এক এবেৎ পাঠবলাৎ বাধ্য ইতি বৎ। স্ত--স্তো জডীভাবঃ জডীকরণঞ্চ। স্তম্ভো স্থূণা জডীভাবৌ ইত্য-মরোক্তে:। শীতেনাবস্তরঃ জ-ডীক্কত ইত্যৰ্থঃ। ইতি ক্ৰমদীশ্ব-রোক্তেশ্চ। স্তম্ভ ইং ক্রিষানি-রোধঃ। ইতি ভীমঃ। দোষবৃদ্ধি রিতি গোবিন্দভটঃ। স্তস্তো রু-দ্বীকরণঞ্চ। স্তম্ভতে কবাটেন

গতি কৰি বিভাগ কৰি বিভাগ কৈ বিভাগ বিভাগ কৰিছে নভাগে কি কৰাৰ কৰাৰ্ছ । ভিষ্ট-স্বিষ্কৃতি । এক সৰ্বত্ত । ইভি দুগাদাসঃ ।।

উম বৈক্লব্যে। ইতি কবিকল্প ক্রেমঃ । বৈক্লব্য বিজ্ঞলীভাবঃ। স্তমতি। ভাতিষ্টমৎ। ইতি দুর্মা-দোসঃ ।।

নিট্য ন ও আক্ষদি। ইতি কবি-কল্পজনঃ। আক্ষৎ আক্ষদন । অভিযোগ ইতি ভটমলঃ। ন ও স্তিনুতে নদী পাস্থঃ। তি-ফিয়ে। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

টিপ ঋঙ শ্যুতি। ইতি কবি-কল্পদ্রমঃ।। ঋ অতিকেপৎ। ঙ স্তেপতে তিকেপে। শ্যুতি ক রণে। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ফিন য ক্লেদে। ইতি কবিকল্প-ক্রেদঃ যা বিস্তাতি তিফেন। ক্রেদঃ আর্জভাবঃ। ইতি দুর্গা-দাসঃ॥

ফীম ষ ক্লেদে। ইতি কবিকল্প- ভি দ্রুমঃ।। য ফীমাতি তিফীম। বি ক্লেদ আর্দ্রভাবঃ। ইতি দুর্গা- ফূপ

मानः॥
स्रे कव खटो। ইতি कविकन्नस्रुप्ताः॥ मूर्कनग्रामिः। कव स्रुप्ताः॥ मूर्कनग्रामिः। कव स्रुप्ताः स्रुप्ताः॥ द्वाः स्रुप्तांनानः॥

কুচ ও প্রসাদে। ইতি কবিকল্পক্রমানঃ থা মূর্দ্ধন্যাদি স্তমধ্যঃ য
প্রসাদঃ প্রসন্ধীভাবঃ। ও স্তোচতে জনং ভোক্ট্চ্যতে। ষদ্যাধো মূর্দ্ধন্যণ ইতি কেচিৎ।
স্নোচতে সোমুচ্যতে। ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

ফুভ উ ঙ স্তম্ভে। ইতি কবিকল্প
দ্রমা। উ স্তোভিদ্বা স্তব্ধা ।

ঙ স্তোভতে তুফোভিষিবতি ।

স্তম্ভো ক্ষডীভাবা তৎকরণঞ্চ
। স্তম্ভো ক্ষডীভাবাবিত্যমরোক্তেঃ। শীতেনাবস্তকো জতীক্ত ইত্যর্থঃ। ইতি ক্রমদীশ্বরোক্তেশ্চ। শাস্ত্রেণ স্তোভতে
ভূষো লযুপ্রক্রতিকো নরঃ ।
ইতি হলাবুধঃ। স্তোভতে বৃধং
শীতো বাষুঃ। ইতি চতুভূজঃ।

স্তম্ভ ইহ ক্রিষানিরোধঃ। ইতি
ভীমঃ। দোষবৃদ্ধি রিতি গোবিন্দভটঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

ফুপ ক উফ্রাষে। ইতি কবি-

कन्न प्रभागः ।। यश्चेत्रती । উচ্ছাবো-तामीकत्रनः । क ज्ञृभयि धानाः क्रयकः । ज्रुकृशियवि । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

ফুপ য ইর উচ্ছাষে। ইতি কবি কল্প দ্বাং। যথপ্রী। য জ্পা-তি। ইর অস্তৃপৎ অস্তৃপীৎ। পুষাদিদ্বান্ধিতা ও ইতানো। অতুফুপৎ। ইতি দুর্গাদাসঃ।। ফুহ উশ বধে। ইতি কবিকল্প-ডেমঃ।। মূর্জন্যাদিঃ তমধ্যঃ। উ অস্তইৎি অস্তৃক্ষৎ। শ স্তৃহতী সূহন্তী। তিফই যিষ্ঠি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ফুক্ষ গমনে। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ

। সপ্তমন্ত্ররযুক্তঃ তমধ্যঃ। স্তৃকতি। তরীফ্ট্ক্যতে। ইতি
দুর্গাদাসঃ।

ক্যুমঃ পু॰ চম্রঃ।। দীপ্তিঃ। ইতি কেচিৎ।।

কৈ সংহতো।। ধনো। ইভি
কবিকল্প ক্রমণ। অন্তন্তাদ্য যুক্ত
দন্তাবর্গাদ্য মধ্যঃ মধোগাৎ টঃ
। তেন তক্টো। তক্টাসভি।
ভাক্টাযতে। সংহতিঃ সমূহঃ।
ক্টাযতি লোকঃ একত্র সমূহাযতে শন্দাযতে বা ইত্যর্থঃ। দন্ত্যবিধো ক্যৈ বন্ধ চিবাং বন্ধনাম
দন্তাঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ষ্টগ ম এ সংবৃতী। ইতিকৃবিকল্পদ্রনা। মূর্দ্ধন্যাদি স্তমধ্যঃ
বযোগাৎ টঃ। ম তিষ্টগবিষতি। এ অন্তগীৎ। দস্ত্যবর্গদিতীযমধ্যঃ। ইতি কেচিৎ।
তিষ্ঠগবিষতি অতিষ্ঠগৎ। ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

ষ্ঠল জ স্থিতো। ইতি কবিকন্ধ-দ্রুমঃ ।। জ স্থালঃ স্থলঃ। স্থল-তি লোক স্তিষ্ঠতীত্যর্থঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

ষ্ঠা ঞি স্থানে। ইতি কবিকন্ধ-ক্রমঃ।। ঞি স্থিতো হস্তি। স্থা-ন° গতিনিবৃত্তিঃ। তিষ্ঠতি সাধু র্ধর্মো। পৃষ্ঠত স্তিষ্ঠমান ইতি বীরচরিতে প্রকাশার্থে আত্ম- নেগদবিধানাৎ শানঃ। অথ বা তাচ্ছীল্যে শতুঃ শানঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

ষ্ঠিব উ নিরাসে। ইতি কবিকল্পজনঃ। উ ষ্ঠেৰিলা গ্রুড়া। অস্য
নেম ডী শ্বী ইত্যাদিনা ইমো
নিবেধে নিপ্তাযাণ গ্রুত ইতি
ভেদঃ। নিরাস ইহ ফুৎকার
ইতি ভউমলঃ। মুখেন শ্বেশ্বাদে র্বমন মিতি কেচিৎ। ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

ষ্ঠিব, য নিরাসে। ইতি কবিকল্প-দ্রুমঃ।। য স্ঠীব্যতি। ইতি দুর্গা-দাসঃ।।

ষ্ঠীব নিরাসে। ইতি কবিকন্ধ
ক্রমঃ ।। ষ্ঠীবিতি। যণ হুস্থিনণ

মন্ত্রা ষ্ঠিবুক্লমাচমো হপীতি দীর্যিণ বিদধামঃ সএবাষণ ষ্ঠীবি
ষ্যান্ত ইত্যাদি সাধনাষ দীর্ঘী
পঠাতে। তেন হুস্থিনোগ্রহণেনাম্মিন্ গৃহীতে ভ্রাদ্যাদি ষ্ণঃ
ম্ম ইত্যাদিনা মুর্ক্লন্যষ্প্য দন্ত্যসোন স্যাৎ এবণ ষ্ঠিবজাদ্যোঃ
থে রিত্যাদিনা খে ষ্ঠকারস্য তকারে তিষ্ঠীব টিষ্ঠীব ইত্যপি
স্যাৎ। ষ্ত্রু সত্যপ্যাম্মনটি
ষ্ঠীবন মিতি নিপাতনণ তদ্স্য

সর্বসন্মত বাভাবাৎ । নিরাস ইহ ফুৎকার ইতি ভট্টসঙ্গঃ । মুখেন শ্লেমাদে র্বমন মিতি কেচিৎ । স্তীবত্যমং লোকঃ । স্তীবামি শুক্ষেকুলতাস্থিকরং । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

कन व ऊ छ भि निवारम। ই जि कन्नफ्रमः ॥ मूर्जनग्रामि र्मस्रा कविनकात्रयुक्तः। य सम्ग्रि । ৯ असम्ब । छ समिन्न स्रुस्रा। भि समयजि सामयजि । ই जि मूर्गामामः ॥

কা ল শোধনে। ইতি কবিকর
দ্রুদ্ধন্যাদি রয়ণ। দস্থ্যাদি রয় মিতি কশ্চিৎ। ল
মাতি গঙ্গায়াণ ধীরঃ। অনুপসর্গস্য এলী স্থল হ্রলেত্যাদিনা

হুষো বা স্বপ্যতি স্নাপ্যতি।
সোপসর্গস্য তু প্রস্নাপ্যতি।
ইতি দুর্গাদাসঃ।।

কিছ য উ ৯ ঞি প্রীতৌ। ইতি
কবিকল্পদ্রমা। উ ন্নেহিষ্যতি
ন্নেক্ষ্যতি। য নিহুতি বন্ধুঃ। ৯
অন্নিহৎ। ঞি নিশ্বঃ ন্নীঢো
ংস্তি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

কিছ ক স্নেহনে। ইতি কবি-কল্পদ্রমঃ।। স্নেহন স্পিনীভাবঃ । क स्वर्गि वर्डिका देखला।
रेजि मूर्गामाभः ।।
स्वृ क न ख्राची। रेजि किविकन्न
क्रामः ।। क न ख्रिजि ख्रवीणि
ख्राच। रेजि मूर्गामाभः ।।
स्वृ ७ (महत्न। रेजि किविकन्न
क्रमः ।। स्वाहत्य मुक्त। रेजि
मूर्गामाभः ॥
स्वृ य ज्राक्ष। रेजि किविकन्नक्रमः

।। দন্ত্য নকারযুক্তঃ। য সুমাতি
সুফোম। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ফুহ য উ ৯ উদ্যারে। ইতি ||
কবিকল্পদ্রনঃ।। দন্তানকারযুক্তঃ। উদ্যারো বান্তিঃ। ষ
স্মহতালং লোকঃ। উ স্নোহিযাতি সোক্ষাতি। ৯ অসুহৎ।
ইতি দুর্গাদাসঃ।।

থৈ বেষ্টে। ইতি কবিকল্পজনঃ

। প্রক্নত্যা দন্ত্যবর্গশেষোপধঃ

। সাযতি বৃক্ষণ লতা। অনুপদর্গায় এটা জ্বল জ্বলেত্যাদিনা

হুসোরা। স্বপ্যতি স্নাপ্যতি।

সোপদর্গদ্য তু প্রস্নাপ্যতি।

ইতি দুর্গাদাদঃ।

।

মি ও স্মিতে। ইতি কবিকল্প-দেনঃ। স্মিত মীষদ্ধাস্য ও স্মাষ্ঠে বধুঃ। বিস্মাপ্যতে। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

যক ও সর্পণে। ইতি কবিকল্প
দ্রুন্থা। বকারযুক্তাদিঃ কোপধঃ। ও শ্বন্ধতে যিশ্বন্ধিয়তে যা
শ্বন্ধাতে। দন্ত্যবিধাবস্য বর্জ্জনাম দন্ত্যঃ। চন্দ্রোদযন্ত ইমণ্
পঞ্চমম্বরিণ মন্তা যুক্কতে যুধুকিষতে যোধুক্যতে ইত্যাহ।

ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

শ্বদ ক্ স্বাদে ।। ছেদে। ইতি কবি-কল্পদ্রমঃ ।। স্বাদো রসোপাদা-নং। ক স্বাদ্যতি ক্ষীরং লোকঃ । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

यम ७ थीठ निरशः। ইতি

किर्वेद्याप्रभागा थीठिः थीठी
कर्त्रण । निर्दे तिमाशामानः। ७

ख्राण हि ज्ञाय न वारिषाता।

खान् मूगिक्तिः यम् ए ज्ञ्याता।

हेठि शिह्या । हेठि मूर्गामामः॥

यनु ७ कि ७ जानिष्म। हेठि

किर्वेद्या । वकात्रयुक्तामिः
। जानिष्म जानिष्म नः। ७ युका
। कि यक्तान्ति । ७ यक्ति

यूवी यूवा। अतियक्ति गा
कानी मधामः गाकुनस्म मिठि

गन्रकानिठादा । हेठि मूर्गा
मामः॥

व्यथः छ व नू कि भरव। देखि कविकब्रक्षकाः । वकात्रयुक्त मृ-र्कनगिनः। अ अवाकी । य লু স্বপিতি। ঞি সুপ্তোম্ভি। শ-कः भगनः। ইতি দুর্গাদাসः।। इर्ड क গভ্যা ।।। তকে। ইতি कविकब्रक्कमा ।। वक्षत्रयुक्क मूर्क्क-नगिषः। ७८क। मूः त्थन की वनः । क अर्लगि करना शक्क् ि मुः-খেন জীবতি বেত্যর্থঃ। অসিম্ব-र्खं । इंडि मूर्गामामः ॥ বিদ ঞি আ ৬৯ মোহ স্বেহ মোক্ষেষু। ইতি কবিকল্পদ্রসং।। 'ঞি স্বিন্নো হস্তি। আ স্বেদিত স্থিমণ তেন। ঙ স্বেদতে তিলঃ তৈল॰ মুঞ্চতি ইতার্থঃ। অস্বিদৎ। স্নেহঃ স্নিগ্ধীভাবঃ। रेि मूर्गामामः ॥ विन ৯ छ र जा कि सिनि। ই छि কবিকর্মজনঃ॥ ৯ অস্বিদৎ। ঔ স্বেত্র। য স্বিদ্যতি। আ স্বেদিত বিশ্বণ তেন। ঞি বি-মো হস্তি। স্বিদীতি নোহ স্নেহ (भारकशिक्तिशालकः। शाक-প্রকারণে ইতি প্রাক্ষঃ। ন চ স্বিদ্যতি তস্যাঙ্গ মিতি লহাযুধঃ 1 ইতি দর্গাদাসঃ ॥

'मखामकोतः। म जू वाक्षन षािं विश्ववर्गः। विमानात्र्वात्र ञ्चान पर्छः। देखि वाक्तन ॥ তৎ স্বৰূপণ যথা ৷ সকারণ শৃণু চাৰ্ৰন্ধি শক্তিৰীজ পরাৎপর । কোটি বিদ্যুলতাকার পণ্ডলী ত্রস্ব সংযুক্ত ৷ পঞ্চদেবময়ণ দেবি পঞ্পাণাত্মক সদা। রজঃ সত্ব তমোযুক্তণ ত্রিবিন্দু সন্থিতণ সদা ॥ ইতি কামধেনুতন্ত্র ।। ৠ। অস্য লেখনপ্রকারো যথা। সঞ্চিতা বামতো দক্ষণতা চ গোক্ষতি স্ত্ৰধঃ। পুনৰাদ্ধগতা তাসু বঙ্কি **চन्म निवाक** द्वाः ॥ गावा ভ्वानी বিজ্ঞেষা ধ্যান মদ্য প্রচক্ষ্যতে। ইতি ধর্ণোদ্ধারতন্ত্রণ ॥ ৠ॥ অস্য धानामि। शुक्रायताः शुक्रवर्गाः দিভুজা রক্তলোচনা । শ্বেত-**ठमन निखाश्री॰** मुक्काशादाण-শোভিতা গন্ধৰ্গীয়মানাঞ্চ স-দানন্দমযী পরা ।। অফসিদ্ধি-প্রদাণ নিত্যাণ ভক্তানন্দ বিব-দ্ধিনী । এব খ্যাত্বা সকারম্ভ তন্মন্ত্ৰণ দশধা জপেৎ।। ত্ৰিশক্তি সহিত বৰ্ণ আত্মাদি তত্ত্ব সংযু-ত । প্রণম্য সতত দেবি হৃদি ভাবয সুন্দরি ৷৷ ইভি বর্ণোদ্ধার

তন্ত্রণ।
।। তৎপর্যায়ঃ। সো

হংসঃ সুষশা বিষ্ণু ভূ ধীশ শচ্সসংজ্ঞকঃ। জগদ্বীজং শক্তিনামা
সোহং বেশবতী ভূগুঃ।। প্রকৃতি রীশরঃ শুদ্ধঃ প্রভা শ্বেতা
সলোজ্জ্বলঃ। দক্ষপাদে। ২মৃতং
ব্রান্ধী পরমাত্মা পরো হক্ষরঃ।।
সুরূপা চ গুণেশো গৌঃ কলকঠো বৃকোদরী। প্রাণাদ্যাশ্চ
পুরা দেবী লক্ষীঃ সোমো ছিরণ্যপূঃ।। দুর্গান্তারিণি সম্মোহাজ্জীবো মূর্ত্তি র্মনোহরঃ।
ইতি ভন্ত্রণ।।

সং ব্য শোভনার্থঃ। সমার্থঃ।।
সঙ্গর্থঃ। প্রক্রম্বার্থঃ। ইতি
মেদিনী।। উপসর্মবিশেষঃ।
অস্যার্থাঃ যথা। সম্ প্রকর্ষাশ্লেষ নৈরন্তর্য্য ঔচিত্যাভিম্খ্যেষ্। ইতি মুগ্ধবোধটীকাষাণ
দুর্গাদাসঃ।।

নঃ পু॰ ঈশ্বরঃ। সর্পঃ। ইতি
শব্দরত্বাবলী।। পক্ষী। ইত্যেকাক্ষরকোষঃ।। বিকুঃ। যথা।
সঃস্যাদিকৌ হরে সর্পে। ইতি
ভরতৈকার্থসংগ্রহঃ।। পূর্বোক্তপরামর্শকঃ। সেইতি ভাষা। তদশব্দস্য প্রথমৈকবচননিশ্বয়ঃ

সংজ্ঞঃ ত্রি লগ্নজানুকঃ। যথা।
প্রাজ্ঞঃ প্রগতজানুঃ স্যাৎ প্র-জ্ঞো ংত্রৈব চ দৃশ্যতে। সংজ্ঞঃ সংহতজানুশ্চ ভবেৎ সংজ্ঞো-পি তত্র হি।। ইতি সাহসাঙ্কঃ। ইত্যমরটীকাষাণ ভরতঃ।।

সংজ্ঞাপন ক্লী মারণ। ইত্যমরঃ
। বিজ্ঞাপনঞ্চ ।।
সংজ্ঞপ্তিঃ স্ত্রী মারণ। ইতি হেমচক্রঃ। বিজ্ঞাপনঞ্চ ।।
সংজ্ঞা স্ত্রী চেতনা। বৃদ্ধিঃ। নাম
। আখ্যা।। হস্তাদ্যৈরর্থসূচনা।
হস্ত জ্ল লোচনাদিভিঃ প্রধ্যেজ-

নস্জ্ঞাপনা। ইত্যমর ভরতে।
।। গাষত্রী।। সূর্য্যপত্নী। ইতি
মেদিনী।।

সম্জাসূতঃ পু॰ শনিঃ। ইতি কেচিৎ।।

সংজ্ঞা ত্রি সংহতজানুকঃ। ইত্য-মরঃ।।

সংস্থারঃ পু্ অগ্নিজতাপঃ ৷ ইত্য-মরঃ ৷৷

সংযঃ পু॰ কন্ধালঃ। ইতি শব্দ-চন্দ্ৰিকা।

সংযতঃ ত্রি বন্ধঃ। ইত্যমরঃ।।
ক্রতসংযমঃ। যথা ব্রহ্মপুরাণং।
যো যঃ কশ্চিত্তীর্থযাত্রান্ত গছেৎ সুসংযতঃ সচ পূর্বং গৃছে
স্বে। ক্রতোপবাসঃ শুচি রপ্রমন্তঃ সংপৃদ্ধযেক্তক্তিনম্যে গণেশং॥ ইতি প্রাযশ্চিত্ততত্ত্বং॥
সংযৎ পুং স্ত্রী যুদ্ধং। ইত্যমর
ভরতৌ।।

সংযত্তরঃ পুণ বাগ্নতঃ।। জন্তসমূহঃ
। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ
সংযত্তরঃ পুণ নৃপাঃ। ইত্যুণাদিকোষঃ।। •

সংযন্তা ত্রি সংযমনকর্তা। নি-যন্তা। সংপূর্বযমধাতো স্তৃন্প্র-ত্যযেন নিষ্ণান্ত।। म॰यमः भू॰ बलामाञ्च भूर्वमिन-কর্ত্তব্যাচারঃ। তৎপর্য্যষঃ। বি-यागः २ विषयः ७ यागः ८ यगः ৫ সংযামঃ ৬ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ সংয-यनः १ निषयः ৮। ইতি ধরণিঃ ।। তদ্বিধান যথা। অথ দশমী-नियमाः। मृतिमत्छात्य। का॰-স্যুত মাত্সত মসূরঞ্চ চূণকত কোর-দূষক। শাক মধু পরান্নঞ্ ত্য-জেদুপবসন্ স্ত্রিয়ণ।। অত্রোপব-সন্নিতি তদ্দিনে ভোজনাসম্ভ-বাৎ সামীপ্যাৎ পূর্বাপর দিন-যো গ্রহণ । স্মৃতিঃ। শাক॰ মাষ মসূরঞ্ধ পুনর্ভোজন মৈথু-নে। দ্যুত মত্যযুপানঞ্চ দশ-गा। देवसव खार्कः ॥ का॰मा॰ মাণ্দণ সুরাণ ক্ষৌদ্রণ লোভণ বিতথভাষণ । ব্যাযামঞ্চ ব্য-বাষঞ্চ দিবাস্বপ্নণ তথাঞ্জনণ ৷৷ তিলপিষ্ট মসুরঞ্চ দশম্যা ব-र्फ्करा९ भूगान्। मनगा त्मक-ভক্তঞ্চ স্বৰীত নিযতেন্দ্ৰিয়ং ৷৷ আচম্য দন্তকাষ্ঠঞ্চ থাদেত তদ-নন্তর । পূর্ব হরিদিনালোকাঃ সেবধ্ব চৈকভোজন ৷৷ অব-नीপृष्ठेगयनाः ख्रियाः मञ्जविव-র্জিতাঃ। সেবধু দেবদেবেশৃ•

भूतान भूक्ताख्य ।। **महत्छा** জন সংযুক্তা দাদশ্যাঞ্চ ভবিষ্য-থ। ইত্যেকাদশীতবুণ। 🗥। শ্রা-क्षशृर्विमिनकर्खवानियस्या विशा দেবলঃ। শৃঃ কর্ত্তাশ্মীতি নিশ্চিত্য দাতা বিপ্রান্নিম**ন্ত্রেব**ং। নিরা মিষ সক্ত ভুক্তা সৰ্বসুপ্তজনে शृष्ट् ॥ जमखर्व भरत्रम् सी वाक्षना न्छा क्षिभञ्जरम् । वज्राह-পুরাণ । বস্ত্রশোচাদি কর্ত্তব্য শ্বঃ কৰ্জাশ্মীতি জানতা। স্থা-**भागतायन देश विश्वा** बिमस्यरयः ॥ प खकाष्ठेक विमृ জেৎ বন্ধচারী শুচি র্ভবেৎ। বি-স্জেৎ আদ্ধীষত্ৰান্ধণেভ্যো দ-मा९ ॥ यार्क ८७ वश्वा १० । निय-खरगक शृर्वमूः शूर्वाकान् षि-कमङ्गान्। जञ्जात्थो छिक्तनः বাপি হিদ্বা যোষিৎপ্রসঙ্গিন ।। यमः। প্रार्थरयञ श्रामारा जू-ক্তান শ্যিতান্ দ্বিজান্। সর্বা-याम विनिम् रिकः काम त्काथ বিবর্জি তৈঃ॥ ভবিতব্য॰ ভবন্ডিশ্চ ধ্যে ভূতে আদ্ধকর্মণি। দক্ষিণ জানু চালভ্য স্ব॰ ম্যাত্র নিমন্ত্রি-তঃ।। এবং निमञ्जा नियमान् था-वरय देशकृकान् वूधः। छन्नियम

गार्। ज्याभटेनः भौहभटेतः সতত বন্দারিভিঃ ভবিভব্য जनस्मित बना ह आकर्वजनि ।। ইতি আন্বতন্ত্ৰণ।।।। ভীৰ্থনাত্ৰা-পূर्विमिनकर्खवानियम मार। ब-कश्राका (या यः किन्छिषमा-ক্ৰান্ত গচ্ছেৎ সুসংষতঃ স চ পূৰ্বণ গৃহে স্বে। ক্রভোপবাসঃ শুচি র-প্রমন্তঃ সংপূজ্যেন্ডক্তিনয়ো গ-পেশ°।। দেবান পিতৃন বান্ধগা° देम्हब माधून् शीमान् श्रीगयन् वि-ভশক্তা প্রযন্তাৎ। প্রত্যাগত महाि भून खरेथव एतवान् शिजू-পৰ্বত স্তদ্য তীৰ্থান্মদুক্তণ ফলণ তৎ স্যামাজ সন্দেহ এব। সুসণ-यठः शृर्विमित्न क्रुटेठकञ्कामि नियम उप्पूछद्रमितन क्राटाशवा-म इंख्याहि। উপवामहित्व यूखन মপি। প্রয়াগে তীর্থমাত্রামাণ পিতৃ মাতৃবিযোগতঃ। কচানা॰ ৰপন কাৰ্য্য বৃথা ন বিকচো ভ-বেৎ।। ইতি বিষ্ণুপুরাণাৎ। ইতি थायिक खब्द ॥ श्रा थायिक ख পূৰ্বাহরত্যে যথা। শগ্র লিখিতৌ । বাপ্য কেশ নথান্ পূর্ব ঘৃত। প্রাশ্য বহিনিশি। প্রত্যেক নিষ-

ত॰ কাল মান্মনো ব্রভ মাদিশেশ ।। ইতি প্রাযশ্চিত্ততত্ত্ব॰ ।।
সংষমকঃ ব্রি নিষম্ভা। যথা।
সএব ধাতা সর্বস্য তলিবোগকরা বয়ণ। যমসংযমনে ত্যক্তঃ
সোম্মৎ সংষমকো হরিঃ ॥ ইতি
বঙ্গিরাণে নারসিংহপ্রাদুর্ভাবাধ্যায়ঃ ॥ সংঘনী চ ॥
সংযমনং ক্লী বন্ধনং ॥ ব্রতং ।

সংষমন ক্লা বন্ধন । ব্ৰতং । ইতি মেদিনী । চতুঃশাল । ইতি সঞ্জবনশব্দটীকায়া ভ-রতঃ ।।

मः यमनी खी यमशूरी। इंछि त्मिनी।।

সংযমিতঃ ত্রি জাতসংযমঃ। সং যমশকাৎ ইতো ংস্যজাতে ই-ত্যনেন ইতপ্রত্যযেন নিম্পন্নঃ।। সংযমী পুং মুনিঃ। ইতি ধরণিঃ ।। নিগৃহীতেজিযে ত্রিঃ। যথা। যা নিশা সর্বভূতানাং তস্যাং জাগর্তি সংযমী। যস্যাং জাগ্র-তি ভূতানি সা নিশা পশ্যতো মুনেঃ।। ইতি শ্রীভগবদ্দীতা-বাং২ অধ্যামঃ।।

সংগাত্রা স্থী দ্বীপান্তরগমন । সংপূর্বো ষাভি দ্বীপান্তরগমন-বৃত্তি ন্তত স্থাসুসিতি তঃ স্ত্রি- ষামাপ্ সংযাত্রা। দ্বীপাস্তরগ-মন সমাগ্বাত্রা সংযাত্রা বা। ইতি সাংযাত্রিকশর্মটীকাষাণ স্করতঃ।।

সংখান॰ ক্লী সম্যাগনণ। সং-পূৰ্ব যাধাতো রনট্প্রভ্যমেন নিশালণ।

সংযামঃ পু॰ সংযমঃ। ইত্যমরঃ॥ म•संवः पुः **घृ**ठकीतापिशकः लाध्यः। यथा। मःयावस्र घृञ কীর গুড় গোধূম পাকজঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিক।।। পিষ্টকবি-শেষঃ। পেরাকী ইতি ভাষা। যথা। পর্মট্যঃ সাজ্য সমিতা নিৰ্দ্মিতা ষ্তভক্জিতাঃ। স্টি-ত। म्हालिकाः श्वकाः गर्कताछि र्विगर्फिजाः ॥ छक्रत्वं श्रीकरण-(मला॰ लर्क मित्रांनि ह। ना-लिटकतः नकश्रंतः वात्रवीका-ন্যনেকশঃ ৷৷ ঘৃতাক্ত সমিতা পুষ্ট রোটিকা রচিত। ততঃ। তদ্যা তৎ প্রণাত্তদ্য স্থ্যা-गूजा॰ मृणा॰ সूधीः॥ সর্গিষ প্রচুরে তাম্ব সুপচেমিপুণো জ-नः । थकात्रदेखः थकात्रायः म॰शाव डेंछि कीर्खिङः। यर्थ-কোপি সমো জ্ঞেষঃ সংযাবো-

शि खरेंग क्रं रेनः॥ ইতি ভাব-প্রকাশঃ॥

সংযুক ত্রি গুণবান্। যথা। স যন্ধী গুণবান্ সংযুক্ মিত্রযুঙ্ মিত্রবৎসলঃ। ইতি ত্রিকাঞ্জ শেষঃ।। সংযুক্তশ্চ।।

সংযুক্তঃ ত্রি সংযোগা শ্রমঃ । যথা। সর্য্যাদলাভে সংযুক্তাণ নালাভে ২পি প্রবেশিনী । ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব ।।

সংযুগঃ পু॰ যুদ্ধ । ইত্যমর: ।। সংযোগশ্চঃ ।।

সংযুতঃ ত্রি সংযুক্তঃ। ধথা।
চতুর্থী সংযুতা কার্য্যা পঞ্চমী
পর্যান তু। দৈবে কর্মণি পৈত্রে চ শুক্লপক্ষে তথা থসিতে।।
ইতি ভিথ্যাদিতত্ত্বং।।

मः रिया ११ । स्वानः ॥ नायः वर्षः छ छ । स्वारं । स्व ।

कनामः रयारगाणि विविधः। ज-ভিযাতঃ। তত্মাৎ শকো জায়-তে॥।। (नामनः। जन्मार म-(स। न जायरा। श अब थ-मानः। जञाश्वरवास या छ।-প্তিঃ সৈব সংযোগ ঈরিতঃ। কী-র্ত্তিত স্ত্রিবিধস্ত্রেষ আদ্যোন্যতর-কর্মজঃ॥ ভথোভযো: কর্মজ-ন্যো ভবেৎ সংযোগজো ২পরঃ । आपियः त्नान देननापि मः-যোগঃ পরিকীর্ত্তিতঃ॥ মেষষোঃ সন্নিপাতো বঃ স দ্বিতীয় উদাহ্ন-ण्डः। क्लान जक्रमः (याशा मण्-रयाग खंक अखरयाः ॥ षिठीयः স্যাৎ কর্মজোপি দ্বিধৈব পরি-কীৰ্ত্তিতঃ। অভিষাতো নোদন-क्ट मंक्टर्ड् तिशामियः ॥ नका-হেডু দিতীয়ঃ স্যাদ্বিভাগো ২পি ত্রিধা ভবেৎ। ইতি ভাষাপরি-एक्तः॥ 🗱॥ जित्रारं शृतिः मग-गाः लयः। यथा। छन्या था-क मणगाख (णवः मःरगा ह-ষ্যতে। উপরিষ্টাৎ প্রবেশস্ত তত্মাৎ তা॰ পরিরক্রিষেৎ ৷৷ ইতি তিখ্যাদিতবে ।। সমন্ধনা-ख॰। ইতি সংযোগপৃথক্ষন্যাধা-र्मिन्ना ।।

मः रयागशृथक्षः क्री नावि (नियः। स्था। अक्षा कर्याता নিত্যন্ধ কাম্যন্ধাত্যাণ দৈৰপ্যা-শীকারে নিত্যানিত্য সংযোগ विद्धाधः । देववः जःरयागशृथः क्षनग्रवादा मह नग्रय महजू-र्थाशास्य উक्तः। यथा। थानि-রে পশু॰ বশ্বাতি খাদির॰ বীর্য্য कामगा मृशः कडीं इंडि क्यर-তে। অত্র সংশ্বঃ। কিং কাম্য-रैगाव थामित्रना निरना भि স্যাদুত নেতি। তত্র ফলার্থত্বে-নানিত্যত্ত্বা নিত্যপ্রযোগাঙ্গতা ন যুক্তা। যতু নিত্যেপি খাদি-রম্বশ্রবণ তৎ কাম্যস্যৈর প च्छवन्ननाम यूना खायकाननार्य॰ অতো ন নিত্যে খাদিরতা ইতি প্রাপ্তে রাদ্ধান্তাষ চতুর্থাখ্যাষ সূত্র•। একস্য ভূভষত্বে সংযো-গপৃথক্ষ মিতি। অত্র সংযোগঃ मसमाजः भृथक्षः एजनः। একস্য খাদিরস্য ক্রত্বর্থত্ব পুরু-ষাৰ্থন্বৰূপোভষাত্মকন্বে বাক্য-ৰষেন চ ক্লতুশেষত্ব ফলশেষ-ত্ব লক্ষণসংযোগভেদাবগমান্ন নিত্যানিত্যসংযোগবিরোধঃ নচাশ্রমজ্ঞানার্থণ নিত্যবাক্যণ

সমিধানাদেবা শ্রমলাভাৎ ।
অত উভযার্থা খাদিরতেতি ।
এবং দগ্না জুহোতি দগ্নেন্দ্রিযকামস্য ইত্যাদাবুভযার্থ তৈব ।
দধিবস্য বেধা শ্রবণাৎ । ইতি
প্রাযম্ভিততবং ।।

मः (बागविक्रकः क्री शतम्भत्रमः ষোগেন রোগজনকখাদ্যদ্রব্যুণ १ वथा। भाकास शन शिगाक जन्य नवगमिट्यः। क्त्रीत मि बारेबन्ह श्रायः कीतः विक्रशरङ ।। প্রাণহারী তু হারীতো হরি-**जा नवरेगः गृ**णः। ऋरता रेखरन श्नटेल क् कि विष भाषृत गामि-ৰ ।। বরাহবস্যা ভূকা বলাকা े जू इत्रजामून्। म॰ युका टेमव वाक्रगा अन्त्रादियक विक्रधाटण।। অবি॰ ঙ্গসুম্ভশাকেন মৎস্যতৈ-লৈঃ কণা॰ ত্যক্তেৎ। মা॰সৈ রিক্ বিকারাণ্শ্চ কাঞ্জিকৈ স্তি-লশস্কুলী।। কপোতঃ সার্যপে ভূকৌ ঘৃত কাৎস্যে দশাহগণ। বিষ ভৃতসম কৌজ মধুনা গগণাৰু ह।। মূলক भाषসূপেন মধুনা চ ন ভক্ষবেৎ। একত্র স-ৰ্মাণসানি বিৰুদ্ধন্তে পরস্পরণ ।। त्राबाक्ष वीमर्भ मरकामत्रांगाः

वित्कािष्ठिकामाम छगम्पतानाः
। मृष्ट्रा ममाम्राम गन्ध्रश्नाः
शाक्षामयम्गामविषमा देवन ॥
किनाम मर्छ अरुनी गमानाः
लाथािष्ठमात स्त भीनमानाः।
मछानदायमा छदेश्व मृद्ध्या
विक्रका समः श्रवमिष्ठः दर्जूः॥
विक्रका रात्रजान् दिन्
निरुष्ठि विद्रहनः। वमनः मन्
मनः वाशि शृर्वमा हिरुद्मवनः
॥ ইতি मः दर्शाविक्रकः। ইতি
রাজবল্লভঃ॥

সংযোগিতঃ ত্রি জাতসংযোগঃ।
সংযোগশবাদিতপ্রত্যযেন নিপালঃ। ইতি সংযোজিতশব্দ টীকাষাণ ভরতঃ।।

मः रयागी जि मः रयागिविनिकः।
यथा। অতো वृक्तः किनिमः रयागी न मृत्न। ইতি निका छनकः।
जागिनी ॥

मः राजनः की रेमशूनः। इंडि

সংযোজিতঃ ত্রি পদার্থঃ পদার্থা-স্তরেণ সংযুক্তীরুতঃ। তৎপর্যা-যঃ। উপাহিতঃ ২। ইত্যমরঃ।। সংযোগিতঃ ৩। ইতি ভরতঃ।। সংরস্তঃ পুণ ক্রোধঃ। ইতি শব্দ- রত্নাবলী। আটোপঃ। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ।। উৎসাহঃ। যথা। কার্যারত্তেযু সংরক্তঃ স্থেষ উৎ-সাহ ইষ্যতে। ইতি সাহিত্যদ-র্পণে ও পরিচ্ছেদঃ।।

সংরাবঃ পু• শব্দঃ। ইত্যমরঃ॥
সংরাবী ত্রি প্রশস্তশব্দবিশিষ্টঃ
। সংরাবশব্দাদস্তার্থে ইন্প্রত্যযেন নিষ্পান্ধঃ॥

সংৰাতঃ ত্ৰি প্ৰৌতঃ। অঙ্কুরিতঃ
। ইতি মেদিনী।।

সংরোধঃ পু॰ রোধনং।। ক্ষেপঃ। ইতি মেদিনী।।

সংলয়ঃ ত্রি সংযুক্তঃ। সংপূর্ব লগ ধাতোঃ ক্ত প্রত্যযেন নিষ্পায়ঃ।। সংলয়ঃ পুং নিজা। ইতি হেম-চন্দ্রঃ।। প্রলয়শ্চ ।।

সংলাপঃ পুণ পরস্পরভাষণ ।
ইত্যমরঃ ॥ অন্যোন্যণ প্রীতিভাষণ সংলাপঃ । উক্তিপ্রত্যুক্রিভাবেন বিরোধরহিত মন্যোন্য ভাষণ সংলাপঃ । ইতি
পরে ২পি । রহসি ভাষণ সংলাপঃ । ইতি কৌমুদী । মিথো
২ন্যোন্যণ রহস্যপি । ইতি বফ্যাতি । স্মস্তাল্লপনণ সংলাপঃ
প্রিষাদিকথা ঘ্ঞা যুস্তালাপঃ

স তু কেনাপি ক্রিয়তে। ইদন্ত পরস্পরভাষণ মেবেতি ভেদঃ। ইতি ভরতঃ।। উক্তি প্রত্যুক্তি-মন্বাক্য সংলাপ ইতি কীৰ্ত্ত্য-ত। रेजुङ्कुननीनमनिः॥ न वरमद्भः भू वरमद्भा हेछा-मद्राः ॥ मन्द्रमञ्जि भण्दा चल शास्त्रवद्गः। यम छ निवादम নামীতি সরঃ সন্য তঃ। সংবদ্ধতি ভাবান্ ইতি বদে। ৰূপ॰ বা। रेकि जत्रकः ॥ अक्षविधययम রান্তর্গতপ্রথমবৎসরঃ। যথা। শকাব্দাৎ পঞ্চতিঃ শেষাৎ স-यानग्रानियु वदमदाः। मः भ-त्रीमान्श्वाक उत्थामाश्वका মতাঃ।। সংবৎসরাদিফল বি-कृश्त्यां उदत्र। य॰व ९ मद्र ७थ। मान छिलमा ह यहांकल । शतिशृद्धं छथा मानः यवानाक षिटकाखमाः ॥ देनाशृदं २म रखानाः शानानाकान् शृर्वत्क । উদাসংবৎসরে দানং রজ্বতস্য মহাকল ।। জ্যোতির্বিদন্তি-कामधा । প্রভবাদেশ্চ সম্ভব॰ । উচু उष्ट नमानानि वर्गाना মপি সম্ভব ।। ইতি মলমাস-তৰ্ত্ত- গা

সংবদ্ব্য বৎসরঃ। ইত্যমরঃ।। অধুনা বিক্রমাদিত্যরাজবৎস-রঃ সংবৎ ইতি খ্যাতঃ।। अ'वनम॰ क्षी जारलाहमः॥ व-भीकत्रनः। इंडि यिमिनी।। मः-बामः। ইতি द्याष्ट्यः॥ संकार की मन्द्रमनः। दर्भ-ं किया वर्षा । यनि मट्डीयटेश . बिभीकत्र १ अ वन म । ज शृह्वी वित विभीकद्रात छात्य २ न हे। ज-राज्या ति कि कि । क्र ति খনটি বশক্তিযাসাধনে মণি ম-जानावित्र। जर्वाञ्यः मध्यत्रन যত ভাদিতি রঘুঃ। সংচলন নি-ভি পাঠান্তর । ইত্যমরটীকাষা ভরতঃ ॥ স'वनन' क्री म'वनन'। हेज्र-यत जिकाशा तामा अयः ॥ সংবর জী জলং ৷৷ বৌদ্ধবত-বিশেষঃ। ইতি কেচিৎ॥ স॰-পূৰ্ব বৃ ধাতো রপ্ প্রতাযেন নি-পারণ। রভসে মকার মধ্যপাঠঃ া ভত্র সম্বধাতো রর প্রত্যযেন নিপায়ণ 11 म•वतः भू• रेक्छावित्मयः॥ म<-मावित्मयः ॥ इतिगवित्मयः ।

ইতি কেচিৎ ৷৷ রভসকোষে

সম্বর ইতি পাঠঃ ॥

म॰वर्जः शू॰ श्रनगः। ইত্যমরः॥ मूनिवित्यवः ॥ कर्यकनवृकः । रेि यिमिनी।। यिषः। रेि नकत्रज्ञावनी ॥ त्यमनाक्किव-শেষঃ। তদ্য বিবরণ মধা। ত্রি-ষুতে শাকবর্ষে তু চতুর্ভিঃ শে-বিতে ক্রমাৎ। আবর্ত্ত নিদ্ধি मःवर्छः भूकद्वः खान यद्गनः॥ षावर्छ। निर्कला स्मनः मःव-र्जन वर्षकः। शुक्रता मुक्त-জলো ডোণঃ শস্যপ্রকঃ ॥ ইভিজ্যোভিস্তত্ত্ব ।। সংগূৰ্বকা-স্ত্যস্বকারাদিবৃতধাতো বঞ প্রত্যযেন নিষ্ণন্নস্থারম-शुः। यकात्रयरशाशायः॥

म॰वर्खकः भू॰ वनामवः। इंडि भक्तक्रावनी ॥ वनस्वत्राना-क्ला। विषयाननः। देखि दिम-ठिखाः ॥

मःवर्ककी भूः वलापवः। देखि ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

भव्दर्भिः स्त्री भव्दर्धिका। रेका-মরটীকাষাণ ভরতঃ।

শু-বর্ত্তিকা স্ত্রী পদ্মস্য কেশরস-गीलङ्ग्लः। हेलामद्रः। लम्मा-**मीना॰ अंग्रिकाकादत्र नदशरख** म॰विल

ইতানো। সমাক্বৰ্ত্তে বৰ্দ্ধতে ইতি সংবর্ত্তিকা ণকঃ সংবর্ত্তমতি বেষ্টৰতীভি বা নামীতি ইপ্ৰত্য-रि मःवर्षि ब्रिशः मःवर्षि नंवशः ত্ৰিকেভি ৰোগালিতঃ। গাচ্ছো-শাদীতি উপি নংবর্তী চ অভঃ ষার্থে কে সংবর্ত্তিকা। সামা-ন্যনুতনপত্তেপি সংবর্তিকেডি र्ष्टुठखः॥ मनगात्व ह मःवर्षिः क्छि मधुः॥ भ्रदीश नम्काठ-যুদ্দশশতান্যম্ভোজ সংবর্ত্তিকে-তি সুরারিঃ। ইতি ভরতঃ।।

मःवर्ककः जि मःवर्कनकात्री। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥

मःवर्कनः की मगाग्वृक्तः॥ मः ন্দীপন । সংপূৰ্ববৃধধাতো রনট্ প্রত্যযেন নিষ্পন্ধ।।

भःविक्षा वि मगाभवृक्षिविभिः कः। यथा। जय প্रजादाश-नटेंडः भगातः कन्नक्रत्मादेश त-वकीर्ग भूटिंगः। छेवा वाश्री দশনপ্রভাভিঃ সংবর্দ্ধিতোরঃ-खनाना इ। इ। इनि त्रापो **६** श्राः ॥

সংবলিতঃ ত্রি মিশ্রিতঃ। একত্রী-কুতঃ। যথা। প্রকৃতগ্রন্থর म॰वनि उरेमाव शार्रमा धर्क यूहि- প্রতিষ্ঠারণ যুক্তণ।

ক্রিন্দানীটাকা।।

তিরিদানঃ প্রত্যেকণ

প্রথান হৈতু ক্রচাতো। ততঃ সবলিতঃ সর্বো বিভবাদিঃ সচে
তসাং ॥ ইতি সাহিত্যদর্শণে ৩
পরিচ্ছেদঃ ॥

সংবস্থঃ পুণ গ্রামঃ। ইত্যমরঃ।।
সংবহঃ পুণ সপ্তবাষুন্তর্গতপ্রশস্তবাষুঃ। স তু উদ্বহবাষো রুপরিষ্ঠঃ। ইতি সিদ্ধান্তশিরোমণিঃ।।

সংবাটিকা স্ত্রী শৃঙ্গাটকঃ। ইতি জটাধরঃ।।

সংবাদঃ পু॰ সন্দেশবাক্যণ। সমাচার ইতি যাবৎ। তৎপর্য্যাযঃ। বাচিকণ ২ সন্দেশঃ ৩।
ইতি জটাধরঃ।। সন্দেশবাক্
। ইত্যমরঃ।। বাচিকণ তদ্ভবেদেত্রে দূতত্বেনাভিসণশনণ। ইতি
শব্দরত্বাবলী।।

সংবাসঃ পুণ গৃহণ ইতি শব্দরন্ধাবলী।। পুরবাসিনাণ বিহারার্থণ পুরমধ্যে বহির্বা অনাবৃতহানণ। তৎপর্য্যায়ঃ। সন্ধিবেশঃ
২ সন্ধিকর্ষণণ ৩। ইতি জ্ঞানিধরঃ।।

मःवारः पू॰ अञ्चविमर्क्षकः। ইতি किं। स्वार्थाः

সংবাহকঃ পু॰ অঙ্গমর্দকারকঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। অঙ্গমন্দকঃ ২। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। অঙ্গমর্দঃ ৩। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

স'বাহন की अञ्चयर्मन ॥ छ। রাদিবহন । ইতি মেদিনী ॥

সংবিত্তিঃ স্ত্রী প্রতিপত্তিঃ। জনস্যাবিবাদঃ। ইতি মেদিনী।।
চেতনা। বৃদ্ধিঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী হেমচন্দ্রশ্চা।

সংবিৎ > ত্রী অঙ্গীকারঃ।। জ্ঞানগ সংবিদ্ > 11 সম্ভাষা।। ক্রিয়াকার। । বুদ্ধং। ইত্যমরঃ।। আচার । সক্ষেতঃ।। নাম।। তোষগং। ইতি মেদিনী।। সমাধিঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

সংবিদিতঃ ত্রি অঙ্গীক্ততঃ। ইত্য মরঃ।।

সংবিষা স্ত্রী অতিবিষা। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

সংবীক্ষণ ন্ত্ৰী অম্বেষণণ অপ শতবস্তুন স্তাৎপর্যোগাম্বেষণণ । ইত্যমরঃ ।। সম্যক্তাৎপর্যোগ বিবিধপ্রকারে রীক্ষণণ সংবীক্ষ-ণণ অনট্। ইতি ভরতঃ ।। সংবীত ত্রি রুজং। আবৃতং। ইত্যমরঃ।।

সংৰ্তঃ পু• আৰ্তঃ। সংপূৰ্ব বৃঞ্জ ধাতোঃ ক্ত প্ৰত্যবেন নি-ম্পন্নঃ।

সংবৃত্তঃ পু• বরুণঃ। ইতি শব্দ-মালা।।

সংবৃত্তিঃ স্ত্রী সমাক্প্রকারেণ-বর্ত্তন । আবরণ । ইতি সং-পূর্বক বৃত ধাতোঃ ক্তি প্রত্যবে-ন নিম্পন্ন। ।।

সংবেগঃ পুণ ভ্যাদিজনিত্বরা
। ইত্যমরঃ।। সমাগ্রেগশ্চ ।।
সংবেদঃ পুণ অনুভ্রঃ। তৎপর্যায়ঃ। বেদনা ২ । ইত্যমরঃ।।
দ্বে অনুভ্রে। বিদ ল মতৌ যঞ্জ
সংবেদঃ। ঞীষিশ্রন্থীতি অনে
বেদনা। ন নেত্যুক্তেঃ ক্লী বেদনণা তত্র বিশেষেণাপি সামান্যণ
বাধ্যতে ন কচিৎ ক্লভীতি অনট্
। ইত্বিভরতঃ।।

সংবেশঃ পু॰ নিজা। ইত্যমরঃ।। স্ত্রীরতবন্ধঃ। ইতি মেদিনী।। পীঠঃ। ইতি হেমচক্রঃ।।

সংবেশন ক্লী রতিক্রিয়া। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

সংব্যানং ক্লী উত্তরীয়বস্ত্র ।

हेळाबतः ॥ वज्रः । हेळि त्यः मिनी ॥

मन्मखुकः भू॰ ममया (मण्यामाः मिनवर्ती। ইতামরः।। ममया (क् मनावाता (क्षण्याचा मण्या-मामनिवर्षिता १ भता ज्ञाचा व्य-भनायमाना महात्का मिख (क्ष् मण्या ममाक् मठाः भाषा (क्षण्याः। मानाक् मिला (क्षण्याः। मिला (क्षण्याः) स्वाप्ताः। (क्षण्या ममाक् मठाः भाषाः (स्याण्याः) स्वाप्ता (क्षण्याः। हिन् ज्वतः।। नातायनी (मनावित्ययः। हिन् स्वाण्यात्रकः।।

मः भवः . पृ भित्महः। ইতামরः॥

छमा लक्ष्णं यथा। म मः भारया छ
ताक्षा थी রেকত্রা ভাবভাবযোঃ
। সাধারণাদিধর্মাদ্য জ্ঞানং সং
শবকারণং॥ ইতি ভাষাপরিছেদং॥ সংশযং লক্ষ্যতি সং
শব ইতি একধর্মিক বিরুক্ধভাবাভাবপ্রকারকং জ্ঞানং সংশয়
ইতার্থং। সাধারণেতি উভয়সাধারণো যো ধর্মা স্তজ্জ্ঞানং সং
শবসাধনং। যথা উচ্চেন্তরত্তঃ
হানুষ্পাধারণ জ্ঞাত্ব। অয়ং
হানুষ্পাধারণ জ্ঞাত্ব। অয়ং
হানুষ্পাধারণ জ্ঞাত্ব। অয়ং
বাবু নিতানিতাব্যাবৃত্তঃ

শব্দে গৃহীত্ব। শব্দে। নিত্যো ন বেতিসন্দিগ্ধে। বিপ্রতিপত্তিস্ত শব্দো খনিত্যো ন বেতিশব্দা-ত্মিকা ন সংশ্যকারণ শব্দব্যা-शिक्वानामीना॰ निन्ठयमावज-্নকত্বসাভাব্যাৎ। কিন্তুত্ৰ শ-ব্দেন কোটিদ্বযজ্ঞান জন্যতে সংশ্বস্ত মানস এবেতি। এবং खात्न श्वामाग मण्मगाविषय मण्या এव॰ व्याभामःभया-मिश बाशिकमः सं इंडामिकः বোধ্য । किञ्ज मन्यक धर्मि জ্ঞান ধন্মীল্রিযসন্নিক্ষো বা কারণ মিতি। ইতি ভট্টীকাসি-का उपुकावनी ॥

मःगयानः जि मःगययुक्तः। मः পূৰ্ৰ শীঙ ধাতোঃ শানপ্ৰত্য-ষেৰ নিষ্পন্ধঃ।।

यः भंबाशम्यानमः जि मन्मय-विषयः ॥ त्रःशयकुकः। ७९-शर्गायः। माः समिकः २। हेठा-मकः ॥ ता माभवियत्य संहि। मि। मानवस्थायः मान्निकः किकः। न्न•भव वाशवः वानमः न॰भाधिकः वि एकीक्रवरसः। यद कामारमो क कथा। कथान- । म॰गृर्व ७४४१रकाः क श्रकारयन याश्रहः यानम् स्या न छर्ष-जि मधानाराषार्थः सःगरिकति

পুরুষাদাবগ্যেতৎশব্দদ্বয প্রবৃ-ক্তিঃ স্যাৎ। ইতি ভরতঃ।। मः मधानुः वि मः मिया। ইতি (इयहन्यः ॥ সংশ্যিতা ত্রি সংশ্যকর্তা। ইঙ্কি (इयहः ॥ म॰শরণ॰ क्री त्रशतसः। ইতি मक्यामा ॥ मः निष् वि म्याक् मन्भाषिकः॥

ब्छिविययकषञ्जवान्। यथा। म॰-**শিত**॰ बठ॰। সম্যক্সম্পাদিত মিতার্থঃ।। সংশিতো ত্রাহ্মণঃ। ত্রতবিষ্যক্ষত্রবানিত্যর্থঃ। ইতি मिका उद्योगुणी ॥

म॰ एकिः खी मग्रक्रनाधनः॥ শরীরমার্জ্জন । यथा। সম্মা-कार्यक मण्डिकः मण्टमाथन वि-त्यांवत्व। देखि तञ्जनाना ॥ সংশুক্ত ক্রি জাতগাদিনা সং-

त्यानिकवस्था मः शृर्व एव धा-তোঃক প্রত্যবেন নিপান ।। সংশোধন ক্লী সংশুদ্ধিঃ। ইতি क्रिशाना ॥

निष्णेष्णः। यथा। (य त्वाभाः क्षाना॰ मुकारङ निर्गठामुद्रा-

ষাণাং। সংশোধিতাশ্যানাং স-দ্যঃ সিদ্ধি ভবৈত্তেষাং।। ইতি মধুমতী।।

সংশ্বৰ ক্লী সহকঃ। ইত্যুণাদি-কোষঃ ॥

সংশ্যানঃ ত্রি শীতেন সন্ধুচিতঃ। ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণং॥

সংশ্রমঃ পুং আশ্রমঃ। যথা।
স্তুতা সুরৈঃ পূর্ব মতীফসংশ্রমাত্তথা সুরেন্দ্রেণ দিনেষু সেবিতা
। করোতু সা নঃ শুভহেতু রীশ্বরী শুভানি ভদ্রাণ্যভিহন্ত চাপদঃ।। ইতি মার্কণ্ডেষপুরাণে
দেবীনাহাত্যো ৫ অধ্যামঃ।।

সংশ্রবঃ পু॰ অঙ্গীকারঃ। ইত্য-মরঃ।।

সংশ্রিতঃ ত্রি আ**শ্রিতঃ। বথা।**ন প্রাচী মগ্রতঃ শস্তো র্নোদীচীং শক্তিসংশ্রিতাং। ন প্রভীচীং
যতঃ পৃষ্ঠ মতো দক্ষণ সমাপ্রা
যেৎ।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বং।।

সংশ্রুতঃ ত্রি অঙ্গীরুতঃ। ইত্যা-মরঃ।।

সংশ্লিষ্টঃ ত্রি আলিষ্টঃ। মিলিতঃ। সংপূর্ব লিষধাতোঃ ক্তপ্রতা ত্যযেন নিম্পন্ধঃ।। গংশ্লেষঃ পুং আলিস্বনং। ইত্য মরঃ । মেলনঞ্চ ।।

সংশ্ব ক্লী মাযা। ষথা। সংশ্বতু সহকে জ্বেষণ সংশ্ব- তত্ত্বৈব
তে সমে। ইত্যুণাদিকোষঃ ।।

সংসক্তঃ ত্রি সংলগ্নঃ । অব্যবহিতঃ। ইত্যুমরঃ ।।

সংসক্তিঃ স্ত্রী সংসক্ততা। সং-পূর্ব সন্জধাতো র্ভাবে ক্তি প্র-ত্যুয়েন নিষ্পানা।।

সংসৎ বুলী সভা। ইত্যমরঃ॥
সংসদ্ বী সভা। ইত্যমরঃ॥
সংসরণ ক্লী প্রাণিজন্ম॥ অসযাধনৈন্যগমনং॥ ঘণ্টাপথঃ।
ইত্যমরঃ॥ রণারম্ভঃ। ইতি মে. দিনী॥ গমনং। ইতি শক্রম্লা-

বলী।।
সংসর্গঃ পুং সয়দ্ধঃ। স চ সমবাষাদিঃ। ইতি ন্যাষশাত্রং
।। ৠ ।। পাপিষ্ঠান্তাজাদিসংসর্গপ্রাযশ্চিত্তং ষথা। স্তেয়াদিমা
পতিতা ইত্যুপক্রমা উকেং। অভাজানতো বৎসরেণ পাতিত্যং। সংবৎসরেণ পতিতি পতিতেন সহাচরন্। যাজনাধ্যাপনাদেনীনাদেকশ্য্যাসনাশনাৎ
।। ইতি হারীতবচনাৎ। জ্ঞানতো বৎসরাক্লেনেতি। তদ্-

সংসুষ্টু স্তন্দোষাভাব এব। বা-শ্ববোপি পৃথগুদ্বা তৎপাপ না-श्रुवा किए। इंडि प्रविवत-हनां ।। ।। व खमा जुर्ड-**शकाबः** क्रकार्कः छमा निर्मित मद । শুকানভোজিনঃ পাদ মিত্যাহ खगवान् मनुः॥ जगाविक्छाज চণ্ডালসহিতৈকবেশ্মস্থসন্ধরীকর-ণৰপমূলপাপকৰ্ত্তু দিতীয়স স-র্গিণঃ। তথা চাপস্তয়ঃ। অন্ত্য-জাতি রবিজ্ঞাতো নিবসেদ্বস্য বেশানি। স বৈ জ্ঞান্ব। তু কালে-मं ऋर्याखिमा वित्नाधन ।। চা-ন্দ্রাযণ পরাকো বা দ্বিজাতীনাণ বিশোধন । প্রাক্তাপত্যস্ত শূদ্রা-**गा॰ उथा म॰ मर्गाम् यदगा। देव ख**ब ভুক্ত॰ পদ্বান্ধ ক্লছ্ড তেষা বি-निर्मित्मर। एउया यिश ह रेय जू-ক্ত• তেষা মৰ্দ্ধ• বিধীষতে ॥ তেষা यि ह देव जुंकि क्रिक्शामा वि-ধীযতে। অত্র তৃতীয়স সর্গণ এব প্রাযশ্চিত্তদর্শনাৎ চতুর্থসংসর্গে ·**(मार्या नान्छि। श्रायन्छिन** বেকোপ্যেব । ইতি প্রাৰশ্চিত্ত-ণ । তক্র মহাপাত্তিস স্গ্রা পাপহেতুত্ব মাহ মনুঃ। ব্রহ্মহত্যা

সুরাপান স্তেষ গুর্বঙ্গনাগমঃ। মহান্তি পাতকান্যাহঃ সংসর্গ-শ্চাপি তৈঃ সহ।। প্রাযশ্চিত মপি মনুনা দ্বৰ্শিত। এষা পাপক্তা মুক্তা চতুর্ণা মপি নিষ্কৃতিঃ। প-তিতৈঃ সংপ্রযুক্তানা মিমাঃ শৃ-ণুত নিষ্কৃতীঃ।। যো যেন পতিতে-টনষা॰ সংসর্গ॰ যাতি মানবঃ । স তস্যৈব ব্ৰতণ স্বৰ্য্যাৎ তৎ সংস-র্গবিশুদ্ধবে ।। প্রাযচিত্তীযতাণ প্রাপ্য দৈবাৎ গাপক্ততেন বা। ন সংসর্গণ ব্রজেৎ সদ্ভিঃ প্রায-শ্চিত্তে ২ক্কতে ছিব্দঃ॥ পাপিন্ঠ-সংসগী পাতকী ভবতি ইতি ক-ब्राट्मि जिंदा विकुः। यक रयन পাপাত্মনা সহ সংস্জেৎ। স ত-সৈয়বপ্রাযশ্চিত্ত সর্য্যাৎ।। গো-ত্যোপ্যাহ। ত্রন্নহ স্রাপ গু-ক্লতক্ষণ পিত্মাত্যোনিসম্বন্ধাগ স্তেনাভক্ষ্যভক্ষক নাস্তিক নিন্দ-ক নিন্দিতকৰ্মাত্যাগি পতিতা-ত্যাগি অপতিতত্যাগিনঃ পতি-তাঃ পাতক্সংপ্রযোজকাশ্চ তৈ-শ্চাক সমাচরন্। নিষিদ্ধ পতি-ত সংসর্গাৎ পততীতিশ্রুতিঃ ক-শ্বা।। 🗱।। কে তে সংসর্গপ্রকারা ইত্যত্রাহ বৃহস্পতিঃ। একশ্যা-

সন পদ্ধি ভাও গঞ্চাম মিশ্রণ ৷ যাজনাধ্যাপন খোনি স্তথা চ मर्टाजन ॥ नवश म**र**दः প্রোক্তো ন কর্ত্তব্যো ২ধনেঃ সহ । ছাগলে য়ং। আলাপাৎ গাত্র-সংস্থাৎ নিশ্বাসাৎ সহভো-জনা९। महमयाामनाशायां ९ পাপণ সংক্ৰমতে নৃণাণা৷ মুমঃ ৷ দুক্ত হি মনুষ্যাণা মন মাশ্রিত্য তিপ্ততি। যো যস্যান্ন নিহাশ্বাতি স তস্যাশ্বাতি কিল্পিষ্ ৷৷ দেবলঃ ৷ পতি তেন সহোবিত্বা জানন্ স-স্বৎসর° নরঃ। মিশ্রিত স্তেন সো কাস্তে স্বয়ঞ্চ পতিতো ভবেৎ।। যাজন থোনিসম্বন্ধ সাধ্যায় স-হভোজন । হ্বরা সদ্যঃ পতস্ত্যে-তে পতিতেন ন সংশ্যঃ ৷৷ ব্যাসঃ ৷ বৃদ্ধহা নদ্যপঃ স্তেনো গুরুতল্প-গ এব চৰ্ব মহাপাত্তকিন স্ত্রেতে य*চ टेंछ भ श्र म श्वटमं था। अः-বৎসরস্ত্র পতিতৈঃ সংসর্গণ স্কর্-তে তু যঃ। যান শ্যাসনৈ নিত্য জানন্স পতিতো ভবেৎ ॥ #॥ नन् विठीय ठ्ठीय मण्मर्गिनि थ-মাণ নাস্তি অতএব বৃদ্ধশাতা-তগঃ। অশুচি সংস্পৃশেদ্যস্ত এক এব স দুষাতি। তৎস্পৃষ্ট্য-

ন্যো ন দুষ্যেত সর্বস্রব্যেশ্বয় বিধিঃ ৷৷ তথা সংহতানাম্ত পা-ত্রাণাণ যদ্যেক মুপছন্যতে। তস্য তৎশোধন প্ৰোক্ত ন তু **७९ म्यृ**ष्ठिना मिशा छेठाएउ। ষশ্চ যেন পাপাত্মনেতি যো ষেন সংগিবেদিতি সংসগী ষেন সংসৰ্গ মিতি বিষ্ণু ৰ্যাস জাবা-লবচনৈঃ সামান্যেন পাপিষ্ঠ-সংসগী পাপী ভবতি ইতি প্রক্তি পामना मन्मर्ग পाशिक्षेमानि সংসগী পাপযুক্তো ভবজীতি এভি রেব প্রতিপাদিত ।। ৠা গ-তিতোৎপন্নানা শুদ্ধি নিচ্চ্তাণ পতিতানা॰ প্রাযশ্চিত্তসা তৃতী-বো ভাগ স্তৎপ্রায়শ্চিত্ত জ্ঞে-য°। স্ত্রী চ পতিতোৎপন্না তৃতী-যভাগস্য তৃতীযভাগ স্ব্যাৎ । ইতি প্রায়শ্চিত্তবিবেকঃ।।

সংসর্গাভাবঃ পু
 সম্বন্ধরহিতর
।
ন্যাম্মতে অভাবপদার্থবিশেষঃ
। স তু ভেদভিন্নাভাবঃ। স চ
ক্রিবিধঃ। প্রাগভাবঃ ১ ধ্বংসঃ ২
অভ্যন্তাভাবঃ ৩ । যথা। অভাবস্ত দিধা সংসর্গান্যোন্যাভাবভেদতঃ। প্রাগভাব স্তথা
ধ্বংসোপ্যত্যস্তাভাব এব চ ।।

এব॰ তৈবিধ্য মাগন্ধঃ সংস্থাভাব ইষ্যতে। ইতি ভাষাপরিচ্ছেদঃ।। ॥। ভেদত্ব॰ তাদাত্ম্যসম্বন্ধাবছিন্ধ প্রতিযোগিতাকাভাবত্ব॰। বিনাশ্যভাবত্ব॰
প্রাণভাবত্ব॰ ১ জন্যাভাবত্ব॰
প্রশান্তাবত্ব॰ ২ নিত্যসংস্থাভাবত্ব
মত্যস্তাভাবত্ব॰ ৩। ইতি সিদ্ধান্তম্বভাবলী।।

সংসগী ত্রি সংসগবিশিষ্টঃ। যথা
। বিভাগানস্করং নৈত্র্যাৎ পিতৃ
ভূতি পিতৃব্য ভূতিপুত্রাণাং ষথাযথং একত্রাবস্থানং সংসর্গঃ
তদযুক্তঃ সংসগী । এবস্তূত্স্য
সংসগিণো মৃতস্য ধনং ভজ্জাতস্যাপত্যস্য তদপত্যাভাবে
সংসগী স্বয়ং গৃহীয়াৎ। ইতি
দায়তত্ত্বং ॥

সংসর্গঃ পু॰ সম্যক্পকারেণ গমন॰ । সর্পাদিগমনবদ্যামন॰ ।
সংপূর্ব সৃপধাতো র্যঞ্জপ্রত্যাযেন নিষ্পানঃ ।।

সংস্থা তি সংস্থিতি । সম্মানন্দীলঃ। সংপূৰ্বক সৰ্প-শব্দাদিন প্ৰত্যাঘেন সংপূৰ্বক স্পধাতো ৰ্থিন্ প্ৰত্যাঘেন চ নি-শক্ষঃ।। সংসারঃ পু॰ মিথ্যাজ্ঞানজন্যবা-मना। इंछि देनगायिकाः। यथा া সংসারশ্চ মিথ্যাধীপ্রভবা বা-मना। ইতি প্রামাণ্যবাদগাদা-भत्रीिक्षनी।। यामृरकोशनिव-দ্বশারীরপরিগ্রহঃ। ইতি কলা-পদীকাষা গোপীনাখঃ ৷৷ সং-अत्रनः। इंडि अक्तत्रवादनी ॥ छৎপर्यायः। मृःश्रामारः २ ভবঃ ৩ কফকারকঃ ৪। ইতি ত্তিক ভেশেষঃ ।। সংসরস্তাত সংসারঃ সংপূর্বাৎ সৃগতাবিত্য-न्मा प्रवा ॥ # ॥ जीन ह। অস্মাদিজাযতে বিশ্ব নত্রৈব প্র-विनीयत्छ। अभागी भागमा व-দ্ধঃ করোতি বিবিধান্তনূঃ।। ন চাপ্যয়ণ সংসরতি ন চ সংসার-(ष९ প্রভুঃ। बाय॰ পৃष्टी न म-লিলং ন তেজঃ পবনো ন তৎ ।। ন প্রাণোন মনো ব্যক্ত॰ ন भकः म्भभं এव ह। न क्र त्रम গন্ধাশ্চ নাহ॰ কৰ্ত্তা ন বাগপি॥ न পानि পामि ता भायू नं हा भ-স্থো দ্বিজোত্তমাঃ। ন কৰ্ত্তা ন চ ভোক্তা বা ন চ প্রকৃতি পূরুষৌ ॥ ন মাষা নৈব চ প্রাণ শৈচত-नाः भत्रगार्थछः। जरुः कर्छ।

मूथी पूःथी रूगः. शृत्वि य মতিঃ।। সা চাইকারকভূপি-माञ्चनगादत्राभाटक करेनः। वन-স্তি বেদবিদ্বাণসঃ সাক্ষিণ প্র-ক্তেঃ পর°।। ভোক্তার মক্ষর° শুদ্ধ সৰ্বত্ৰ সমবস্থিত। তম্মা-দজ্ঞানমূলো ২য° সংসারং স-ৰ্বদেহিনা ।। ইতি কৌৰ্ম্মে ঈশ্ব-রগীতাসু ২ অধ্যাষঃ॥ কিঞ্চ। পিতৃ মাতৃ সুস্ভাতৃ কলতাদি ক্তেন চ। হুন্টো ২সক্ত্রথা रेमना यक्षाशृशीनरना गण्डः ॥ এবং সংসারচক্তে খিম্মন্ ভূমতা তাত শঙ্কটে। জ্ঞান মেতন্মধা-প্রাপ্ত মোক্ষসংপ্রাপ্তিকারকং ।। ইতি মার্কণ্ডেযপুরাণে পিতা-शूजन वामना भाषायः ॥

সংসারগুরুঃ পু॰ কামদেবঃ। ইভি
ত্রিকাণ্ডশেষঃ। জগদ্গুরুশ্চ।।
সংসারমার্গঃ পু॰ যোনিঃ। ইভি
ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

সংসারমোক্ষণ ত্রি ভবতারক।

যথা। এব মেতন্মহাশাস্ত্রণ দেবি

সংসারমোক্ষণ। মম ভক্তব্যবস্থাবৈ প্রযুক্তণ পরমণ মযা।।
ইতি বারাহে সুতস্বামিমাছাত্মানামাধ্যায়ঃ।। # 11 ভবমোচ-

त्न क्री। जनुभाषा षथा। विन-क्रवाह। जःमात्रार्वव यशानाः न-রাণা মন্যচেতসাং৷ তরণে যো ভবেৎ পোত স্তম্মে ব্যাখ্যাতৃ यर्शि॥ প्रद्वाप खेवाह। य भ-মচক্রাজকর তু শার্দ্ধিণ থগে-জ্রকেতৃ বরদ শ্রেষঃ পতি । স-মাশ্রমস্ভে ভবভীতিনাশনং সং-সারগর্ত্তে ন পতম্ভি তে পুনঃ।। বৈঙ্গপ্ত খণ্ডপরশুণ ভববন্ধ স-মুচ্ছিদ । প্রণিপতা মহাত্মান मःभारत न भूनर्जरव ॥ धा-ষেৎ দামোদর যস্ত ভক্তিন-মে। ২ চ্চ যেত বা। ন স সংসার-গৰ্ত্তে ংস্মিন্ মজ্জতে দানবেশ্ব-র।। যে মানবা বিগতরাগ প-রাবরজ্ঞা নারাযণ স্রগুরু স-তত॰ শ্বরম্ভি। তে ধৌতপাণ্ড-রপটা ইব রাজহুণ্সাঃ সংসার-সাগরজলস্য তরস্তি পার॰ ॥ ইতি বামনে ৯০ অধ্যায়ঃ॥

সংসারী পুং সংসারবিশিষ্টপ্রাণী
। ইতি হলাযুধঃ।। শরীরী ।
যথা। সংসারিণা মিতি সংসারিত্বং শরীরিত্বং শরীরিত্বঞ্চ ভোগাবচ্ছেদকত্বং ন তু চেষ্টাবত্ত্বং।
অত ঈশ্বরপরিগৃহীত রামক্রকা-

िष्यतीत्रवामानः। निशाख्वान कनावामनाया व्यम्केमा वा न मःमात्रशतम् विवकामख्यः। इंडि वोक्षाधिकातमा गामाध-त्रीपिश्रनी।।

সংসিদ্ধিঃ স্ত্রী প্রকৃতিঃ। স্বভাবঃ
। ইত্যমরঃ।। সম্যক্সিদ্ধিঃ।।
মদোগ্রা। ইতিমেদিনী।।

সংসৃতিঃ স্ত্রী সংসারঃ। ইতি শব্দরত্মাবলী। প্রবাহঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

ज॰जृकीः वि ज॰जर्गः॥ वयना-षिना **मण्डकः। इ**छि यिषिनीः কর হেমচন্দ্রো॥ বিভাগানন্তর॰ মৈত্র্যাৎ পিতৃ ভ্রাতৃ পিতৃব্য ভ্ৰাতৃপুজাণা যথাযথ একত্ৰা-বন্ধান সণসর্গ স্তদ্যুক্তঃ। অথ সংসৃষ্টধনবিভাগঃ। একপিতৃ-জাতযো রপি সোদর বিমাতৃজ-या मृ उदमयय हे शूक्र यशि अना जृ-ত্বেন সোদরস্যৈব ধনাধিকারো ন তু পিত্রাদিত্রযমাত্র পিণ্ডদাতু বিমাতৃজস্য। ক্ষচিত্তু সংসৃষ্টত্ত্বে-न विभाज्कमाभामः मृखेरमानः রেণ সহ তুল্যাধিকারিতা সো-দরস্য সংসৃষ্টত্বে সএব গৃহ্লীযা-ম সংস্ফ্যপি বিমাতৃজ ইতি।

তথা চ যাজ্ঞবক্ষ্যঃ। সংসৃষ্টি-নস্তু সংসৃষ্টী সোদরস্য তু সো-जतः। जनगळाशहरतमः जी-তস্য চ মৃত্স্য চ ॥ , অন্যোদ-र्याञ्च मः मृखी नात्ना मर्द्या धनः इत्तर। अम॰मृक्कां नि हाममार भ॰ मृरको नानायाकृषः ॥ 🕸 ॥ সংসৃষ্টিন মাছ বৃহস্পতিঃ। বিভ-ক্তো যঃ পুনঃ পিত্রা ভ্রাত্রা চৈ-কত্র সংস্থিতঃ। পিতৃব্যেণাথ বা প্রীত্যা স তু সংসৃষ্ট উচ্যতে ॥ তেন বিভাগানস্তর• মৈত্র্যাৎ পি-তৃ ভাতৃ পিতৃবা ভাতৃপুত্রাণা• যথাযথ একত্রাবস্থান সংসর্গঃ **छाम्युकः** मःमगी। এवसृष्टमा সংস্থিপো মৃত্স্য ধন তজ্জা-তস্যাপত্যস্য তদপত্যাভাবে সং मर्गी अयः गृङ्गीयाद। এवः मा দরস্য তু সোদরঃ ।। #।। তত শ্চ সংস্ফিনস্ত সংস্ফীত্যেতত্ব-চন॰ তুল্যৰূপ সম্বন্ধি সংসর্গক্ত বিশেষ প্রতিপত্ত্যর্থণ তেন সো-দরাণা সাপত্মানা ভাতৃপুত্রা-ণাণ পিতৃব্যাণাণ তুল্যানাণ সন্তা-त जन्मभी गृङ्गीषा वाकाम-বিশেষঞ্ৰতেঃ। পূৰ্বচনে সৰ্বে-ষা মেব প্ৰক্নতত্বাৎ সৰ্বেষু চাক্ষে-

পাৰ ভবাই। অতো ন ভ্ৰাতৃমাত্ৰ বিৰ্ব নিৰ' বচন মিতি জীমূত-वाह्नः॥ सामदत इन म्छिन স'সৃষ্টিন্যসোদরে চ সতি কতর छ। वट गृङ्गीयाट। এव॰ मानता-मानत्राः म॰मृक्टयाः मङात्व কতর ইত্যত্র প্রথমত আহ অ-त्मानर्गास्त्रि छ। व्यत्मानर्गाः शू-नः मः मृष्ठी मन् भृद्गीया ना-त्मानर्यामावः किञ्च अमःमृखाः-णि शृह्वकिन्छ मामद्रामान्य-कार आश्वः माम्त्रम् गृङ्गीयार ৷ তেন একত্ৰ বিষয়ে পূৰ্ৰবচনো-ক্ত সংসৃষ্টত্ব সোদরত্বযো রেকশ স্তল্যদাৰুভযো বিভঙ্গা প্ৰহণ:। তদুভয় সত্বে চ অসোদর্য্যস্যাসণ-সৃষ্টিনো ২তুল্যৰূপত্বান্ধেতি। দ্বি-**ीरिय बार्श्न मंग्रिका नानामान्**-জ ইতি। সোদরে সংসৃষ্টিনি সতি অন্যমাতৃজ্ঞঃ সংস্ক্টাপি ন গৃহ্লী-ষাৎ ! অর্থাতত্র সংসৃষ্টী সোদর এব গৃহ্লীযাৎ। সংসৃষ্টত্বাবিশে-ষেপি সোদরত্বেন তস্য বলবন্ত্বাৎ । দাবভাগকারাস্ত অন্যোদর্য্য-স্তু সংস্ফী সন্ সত্যপি সোদরে ২স'সৃষ্টিনি ধন[,] হরেৎ নান্যো-দর্যাঃ সংসৃষ্টাপি গৃহীযাদিতি পু-

ৰ্বাৰ্জিন্যাৰ্থঃ। তত্ৰ কিং সোদর স্ত-मःनी॰ न शृङ्गीयातमः वंडारशकाः য। মুত্তরার্দ্ধেনোক্তণ অসংসৃষ্ট্য-পি চাদদ্যাৎ সোদর ইতান্ধ-জ্যতে ন সংস্ফৌ খনামাতৃজ কেবলঃ। কিম্ব উভাভ্যা মেব বি-ভদ্য এহীতব্য নিত্যাহঃ। মি: তाक्कतामरमारभावः। याख्वका मीशकलिकाया॰ **गृ**लशानि बहा-मटशाभाषासास । जतगानवास मः मृखी नात्नामत्या धनः इ-রেং। অসংসৃষ্টাপি সোদর এব গৃহীয়াৎ ন তু সংসৃষ্টঃ সাপত্ন্যো ভাতা। मःमृखे ইতি গর্ৱদংসৃষ্টঃ সোদর ইতি কেচিৎ। নান্যো-দর্য্যো ধনণ হরেৎ ইতি পাঠে অ-त्यामर्याः मन् धनः न गृङ्गीया**९** ইতি ব্যাখ্যা অসংসৃষ্ট সোদর-माधिकातार्थ निषः वहन मट्डा ন পুনরুক্তি রিত্যাহঃ। রত্নাকর প্রভৃতযম্ভ কল্পতরৌ নান্যোদর্য্য-ধন॰ হরেদিতি পাঠো দৃশ্যতে স মূলভূত যাজ্ঞবন্ধ্য মিতাক্ষরা পা-রিজাত হলাযুধগ্রন্থেয়ু নান্যো-দর্য্যো ধন॰ হব্রেদিতি পাঠদর্শ-নাৎ তদনুসারব্যাখ্যাদর্শনাচ্চ লিপিকরপ্রমাদ ইত্যাহঃ। ইতি

मायलक्षा भागलक्षा क्षी मण्यू मा जावः। यथा। তেন একত্র বিষয়ে পূর্ব वচনোক্ত সংস্ফার্ক সোদরদ্ধ বোরেকশ জ্বলাদ্বাদ্বাধানি ভজা গ্রহণ। ইতি দায়তত্ত্বং।। সংস্কী পুং সংস্ফার্কাশক্ষঃ। যথা বাজ্ঞবক্ষ্যঃ। সংস্কিন জ্ব সংস্কী সোদরসা তু সোদরঃ। দদ্যাচ্চাশহরেদংশং জাতসা চ মৃতসা চ।। অন্যোদর্যাস্ত্র সংস্ কী নান্যোদর্যোধনং হরেৎ। অসংস্কাপি চাদদ্যাৎ সংস্ কৌ নান্যমাত্ত্বং।। ইতি দায়-তত্ত্বং।।

সক্ষারঃ পুণ প্রতিষত্নঃ ।। অনুভবঃ ।। মানসকর্মা। ইতি নেদিনী ।। ন্যায়মতে গুণবিশেষঃ ।
স চ ত্রিবিধঃ । বেগাখ্যসংক্ষারঃ
১ অয়ণ মূর্ত্তপদার্থস্থায়ী । কচিদ্বেমজন্যঃ ক্ষচিৎ কর্মজন্যণ্ট ।
স্থিতিস্থাপকসংক্ষারঃ ২ অয়ণ
পৃথিবীগুণঃ কেচিম্মতে পৃথিব্যাদি চতুঃপদার্থগুণঃ ! অষণ
অতীন্দ্রিয়ঃ স্পদনকারণ্ট ।
ভাবনাখ্যসংক্ষারঃ ৩ অয়ণ আজ্বানা তাতীন্দ্রিয়গুণঃ । উপো-

কানাত্মক নিশ্চযজন্যঃ। অয॰ স্মরণ প্রত্যভিত্তযোঃ কারণঞ্চ ।। অস্য প্রমাণ । সংকারতেদো বেগো ২থ স্থিতিস্থাপক ভাবনে। मृर्खमात्व जू त्राः मा कर्मा-জো বেগজঃ কচিৎ ৷৷ স্থিতিস্থাপা-কসংক্ষারঃ কিতে কেচিচ্চতুর্পি । অতীব্দিষঃ স বিজেয়ঃ কচিৎ न्भारमि कार्राः। ভाবमाथाञ्ज मःकारता कीववृद्धि त्रजीक्षियः । উপেক্ষানাত্মক স্তুদ্য নিশ্চযঃ কা-রণ ভবেৎ ৷৷ স্মরণে প্রত্যভিজ্ঞা-যা মপাসো হেত রুচাতে। ইতি **ভाষাপরিচ্ছেদ**ः ॥ कः॥ शुक्तिः ॥ जम्केविटगय कनककर्य। यथा। ষদ্যমিস্থাপনান্তর কর্মকালে বৃ-ষ্ট্যাদিশক্ষ্যা সংস্কৃতাগ্নি রন্যত্রা-নীযতে তদা পুন ভূ সংস্কারঃ ক-खँवाः। সমুষ্ উপলিপা উল্লিখ্য উদ্ভা অভ্যক্ষণেৎ এষ সংস্কা-রো খনুগতো খগ্নো ভূষঃ। ইতি গৃহান্তরাৎ। ইতি সংকারতত্ত্বণ ॥ #॥ मगविधमं कात्रा यथा। वि-বাহঃ ১ গর্ভাগান ২ পুণসর্ন ৩ সীমস্তোন্নয়ন ৪ জাতকর্ম ৫ না-মকরণ ৬ অন্নপ্রাশন ৭ চুড়াক-রণ ৮ উপন্যন > সমাবর্তন

সংস্থার

३०। यथा शाती छः। गर्जाधान तम्-পেতো বন্ধগর্ভ সন্দধাতি পু্স বনাৎ পুণ্সীকরোতি ফলস্থাপ নাৎ মাতা পিতৃজ্ঞ পাপ্মান ম-পোহতি রেতো রক্ত গর্ভোপঘা-তঃ পঞ্চপ্ৰণো জাতকৰ্ম্মণা প্ৰথম মণোহতি নামকরণেন দিতীয়ণ প্রাশনেন ভৃতীয় চূডাকরণেন চতুর্থ॰ স্বাপনেন পঞ্চমণ এতৈ র-ফাভিঃ সংস্কারে গর্ভোপয়াতাৎ পূতে। ভবতীতি। স্নান মত্র সমা বৰ্ত্তনৰূপ নিতি কল্পতরুঃ। ইতি সংকারতত্ত্বং ৷৷ # II **বাজ্ঞবন্ধ্যঃ** । গর্ভাধান মৃতৌ পু॰সঃ সবন॰ म्मना भूता। यर १ र केटम वा সীমন্তঃ প্রদবে জাতকর্ম চা৷ অ रताकां पत्न नाम ठलुर्थ यानि निकुगः। यर्छम्थाननः मानि চূডा कार्या। यशाक्रलं ॥ अवत्य-নঃ শমং যাতি বীজগর্ভ সমুপ্তবং 1 देखि मलमामञ्जुः ॥ 🗱 ॥ में ऋ-তানাস্ধিকার মাহ যাজ্ঞকরঃ। অসংফৃতান্ত সংস্কার্য্যা ভাতৃভিঃ পূৰ্বসংফ্ৰৈঃ। ভগিন্যশ্চ নিজা-मःभामस्वाःभञ्ज जूतीयकः। ज সংস্কৃতা ভ্রাতরঃ ভগিন্যশ্চ পূর্ব-म ऋटे इन्नीटेंडः। अन्य

मखेशार्गामधिकात्राभरखः हेजुा-कार्छद्या अया विवत्रक छ-ত্তৎ শব্দে এক্টব্য॰।। গরুড-পুরাণোক্ত সংস্কারা স্তব্রৈব ১৩ 1 281 २६ अथारयम् जरेगाः ११ क्षा व्य जीर्नाम गृहामि म'कात्रकल । अथ तिक्कीर्न-मिंका विधिः भूत्गा मर्शिम्दन । **प्तिकामियू कर्खर्या। यहार्छा-**গকলেপ্স্ভিঃ।। मृलामके छ। পুণ্য জীর্ণসংস্কারতো ভবেৎ। ज्याननार्थ जीटनेषु कार्याः मं-कत्रवः गूरन।। क्रकीयः शत्रकी-य॰ का यथाविज्वविञ्चदेवः। श्व-তো বা পরতো বাদ্য যন্ত সংস্কৃ-क्टर्ड मुद्राम् ॥ म योवष्ठेख मृत्या भी जावदकान मूंथी ভবেৎ। লোকেষু তেষু দেবা-ना॰ वित्रज्ञ क्ष्ये श्रुक्तिः।। यथा रगारमधराङ्ख्यू शर्श्वरत्रामेनमाः मगाः। दम्र मिति इस्टीशा कीर्गन्कातकातकः।। जनाथा वा मनाथा वा भूजनीयाः मनी मूताः। ইতি দেবীপুরাণে পূজা-विधिनामाधारिः॥

সংস্কারজঃ ত্রি সংস্কারেণ জাতঃ। সংস্কারশব্দপূর্ধক জনধাতো র্ড প্রত্যেষন নিষ্পন্নঃ ।

সংস্কারবজ্জিতঃ পু॰ উপনম্বনসংস্কারহীনঃ ৷ তৎপর্য্যায়ঃ ৷

রাত্যঃ ২ ৷ ইতি হেনচন্দ্রঃ ৷৷

দশসংস্কারহীনে ত্রি ৷৷

সংস্কারহীনঃ পু॰ বাতাঃ। ইত্য-भद्रः॥ भःकाद्रशैनव्काल भार াষমঃ। পতিতা যস্য সাবিত্রী দ-भवर्षानि शक्ष ह। बाक्षनमा वि-শেষেণ তথা রাজন্য বৈশ্যযোগ া৷ প্রাযশ্চিত্ত ভবেদেয়া প্রো-বাচ বদতা॰ বরঃ। তথা মার্ক-एखसः। विश्रमा , साफगावर्षा ९ রাজ্ঞে দাবিংশতেঃ পরং। বৈ-भागाकोधिकानका भाविजी-পতন ভবেৎ।। বিকুধর্মোত্তরে । ষোডশাবল হি বিপ্রস্য রাজ-ন্যস্য দ্বিবিংশতিঃ। বিংশতিঃ महजूर्शी ह देवगामा शतिकी-র্ত্তিতা।। সাবিত্রী নাতিরিচ্যেত অত উৰ্দ্ধুণ নিবৰ্ত্ততে। ইতি মল-মাসতত্ত্ব° 11

সংস্কৃত ক্রী লক্ষণোপেত:। ইতি মেদিনী।। পাণিন্যাদিকতব্যা-করণসূত্রেণ উপেত উপগতো লক্ষণোপেত: সাধুশব্দঃ। ইত্য-মরটীকাষা ভরতঃ।। সতুদে- ববাণী। যথা। গীর্বাণবাণীবদনং মুন্দন্দকীর্ত্তনক্ষেত্যুভ্যং
হি লোকে। সুদুর্লভং তচ্চ ন
মুগ্ধবোধান্দ লভ্যতে হতঃ পঠনীয় মেত্র ।। ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণ প্রশংসান্ধোকঃ ।।

সংস্তঃ ত্রি ক্রিমং। ইত্যমরঃ

। করণেন নিবৃত্তিঃ ক্রতিমোঘ
টাদিং। ইতি ভরতঃ।। পকঃ ।।
স্বতোগুণাভরাধানং। ইত্যমর
• টীকাষা• স্বামী।। শস্তঃ।। ভূবিতঃ। ইতি মেদিনী।। শোধিতঃ। ইতি জটাধরঃ।।

সংস্কৃষা স্ত্রী শবদাহাদিক্রিয়া।
ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। সংস্কারশ্চ
সংস্তরঃ পুং শ্যায়। যজ্ঞঃ। ইতি
হেমচন্দ্রঃ।। পল্লবাদির্নিচতশ্যা
। ইতি শব্দরত্নাবলী।।
সংস্তরঃ পুং পরিচয়ঃ। ইত্য-

মরং। সম্যক্স্ততিশ্চ ।।
সংস্তবানঃ ত্রি সদক্তা। ইত্যুগাদিকোষঃ। বাগ্মী।। উল্গাতা।। হর্ষঃ। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ।।

সংস্তাবঃ পু• ক্রতুষু দ্বিজ্মনা॰ স্তৃতিভূমিঃ। ইত্যমরঃ॥ যজ্যেষ্ স্তৃতিকারিণাণ বান্ধণানা৽ অব• স্থানভূমিঃ সংস্তাব উচ্যতে ।
ক্রত্যু যজ্ঞবিষ্যেষু দিজানাং
যা স্ত্রতিভূমিঃ স্থানং স সংস্থাব
ইত্যন্বয়ঃ। সমেত্য স্ত্যুষতে ছালোগৈ রক্র ইতি সংস্থাবঃ যঞ্
। ইতি ভরতঃ।।

সংস্ততঃ ত্রি সম্যক্প্রকারেণ স্ততিপ্রাপ্তঃ। সম্যক্স্তব্বিষ্থীভূতঃ। যথা। ভূষশ্চ শতবার্ষিক্যা
মনাবৃষ্ট্যা মনস্তদি। মুনিভিঃ
সংস্ততা ভূমৌ সম্ভবিষ্যাম্যযোনিজা॥ ইতি দেবীমাহাত্মা•॥
সংস্ত্যাযঃ পু॰ সংঘাতঃ॥ সন্ধিবেশঃ। ইত্যমরঃ॥ সংস্থান•॥
বিস্তৃতিঃ। ইতি মেদিনী॥ গৃহ•
। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥

সংস্থঃ পুঁণ চরঃ। ইতি মেদিনী।।
নিজরাস্ট্রকঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।
সংস্থঃ ত্রি অবস্থিতঃ। ইতি মেদিনী।। মৃতঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।।

সংস্থা দ্রী ন্যাষ্যপথস্থিতিঃ। ইত্যমরঃ।। সম্ভিন্ঠতে ২ন্যা সম্যানক্ষান বা সংস্থা। ইতি
ভরতঃ।৷ অস্যাঃ পর্যায়া মর্যাদাশকে জফব্যাঃ।৷ স্থিতিঃ।৷
সাদৃশ্যা নাশঃ। ইতি মেদি-

मी।। वावका।। वाकिः।। क-जूरजनः॥ ममाश्विः। ইতি (इमहन्यः ॥ अलगहजूक्यं । যথা। নৈমিত্তিকঃ প্রাক্ততিকো নিত্য আত্যন্তিকো লয়ঃ। সং-স্থেতি কবিভিঃ প্রোক্ত শচতুর্ধা-স্য স্বভাবতঃ।। ইতি পুরাণ ।। म॰ इ। न की मिह्दिमः॥ हजू-ষ্পথঃ। ইত্যমরঃ।। আফুতিঃ। मृजुः। इंछि त्मिमी।। हिङ्का ইত্যজয়পালঃ।। সম্যক্স্থিতিশ্চ সংস্থাপন ক্লী সমাক্স্থিতিপ্রা-পণ । স্থিরীকরণ । যথা। পরি-जागाय माधृनाः विनामाय ह मू-कृ छा । धर्म्म मः अन्यानार्थाय मः ভবামি যুগে যুগে।। ইতি ভগ-वक्तीजाया॰ ७ व्यक्षायः॥ मा-ধুরক্ষণেন দুষ্টবধেন চ ধর্মা স্থি-রীকর্তুণ। ইতি ভট্টীকাষাণ শ্রী-धत्रश्राभी ॥

সংস্থিতঃ ত্রি মৃতঃ। ইত্যমরঃ।।
সমাক্সিতিবিশিক্টশ্চ ।।
সংস্থিতিঃ স্ত্রী সংস্থানং॥ মৃত্যুঃ॥
গৃহং। ইতি কেটিৎ।।
সংস্পর্শঃ পুং সম্যক্স্পর্শঃ। স
তু ত্বগিন্দ্রিযগ্র্যাহ্নগুণবিশেষঃ।
যথা ছাগলেষঃ। আলাপাৎ

গাত্তসম্পূৰ্ণাৎ নিশ্বাসাৎ সহ ভোজনাৎ। সহশ্যাসনাধ্যা-ষাৎ পাপ॰ সংক্রমতে নৃণা॰ ।। ইভিপ্রাযশ্চিত্তবিবেকঃ।। मञ्चामा जी जनीनायगन्न जवा । ইত্যমরঃ।। সংক্ষালঃ পু॰ মেষঃ। ইতি ত্রি-काखटन्यः ॥ সংস্ফুটঃ ত্রি বিকসিতঃ। ইভি শবরত্বাবলী।। সংক্ষেটঃ পু॰ যুদ্ধ। ইতামর-টীকাষা॰ ভন্নতঃ ॥ সংস্ফোটঃ পু॰ যুদ্ধ॰। ইতামরঃ।। সংস্মরণ ক্লী সংস্মৃতিঃ ৷ সংস্কা-রজন্যজ্ঞান । যথা যোগিযা-জ্ঞবন্ধ্যঃ। ধ্যাযেনারাযণ নি-ত্য সানাদিষু চ কর্মদু। তদি-क्या ति विश्व वायानम् भू नः भूनः॥ गायवी देयक्वी एक य। वित्यकाः मः त्राप्तवाग देव । ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব গা সংস্তিঃ স্ত্রী সংস্মরণণা সংপূর্ব স্বধাতোঃ ক্তি প্রত্যযেন নিষ্ণান্না সংহতঃ ত্রি দৃঢসন্ধিঃ। ইভ্যমরঃ ा। भिनि ७:॥ मृतः। इंडि स्मिन-नीकत (इ यहास्यो ॥ समाक्थ-কারেণ হতশ্চ।।

া হতজানুঃ তি লগজানুকঃ। वशा अर्कः अगठकानुः मार প্রজ্ঞো ২ত্রৈব চ দৃশ্যতে। সং-জুঃ সংহতজানুশ্চ ভবেৎ সং-জ্ঞোপিতত্ৰ হি॥ উদ্বজু বৰ্দ্বজা-नुः गामृष्टु एका श्राक्षिकान्तः । ইভি ভরতধৃতসাহসালঃ।। সংহতজানুকঃ ত্রি লগজানুকঃ। **७९१र्यायः। म** ख्रुः २। हेठा-শরঃ।। সংছতজানুঃ ৩ সংজ্ঞঃ ৪ া ইতি তট্টী কাষাণ ভরতঃ।। সংহতলঃ পু॰ মিলিতপাণিদ্বয় । ইত্যমরং॥ দ্বো বাম দক্ষিণো थाजली अ॰ रहा मिलिए म॰-**२७**ल উচ্যতে। প্রতলদ্ব । भि-निष्ठ मः श्वनः मानिष्ठार्थः। সংহত লাভি সংহতলঃ হন-कनामिछि छः। निर्विमर्गेशार्ठ खी बाय मिक्ता भागी मः रही মিলিতৌ চেৎ তদা সংহতল প্র-তলাবুচ্যেতে। অস্মিন্নর্থে প্র-**ज्यायः** क्रांशित मः इंज्या ह বৰ্ত্তমানত্বাৎ নানাৰ্থঃ। ইতি ভরতঃ ৷৷ मण्रिकः खी ममूरः। रेकामतः॥ मः इननः की भंतीतः। इंजायतः

स मयाक्षाजनका।

मः इत्राधाः भूः भावकनामाग्रिः। ইতি মৎসাপুরাণ ॥ म॰ हर्यः भू॰ श्रेटमामः॥ म्लाका॥ वागुः। ইতি विश्व (यमित्ना)।। मः हरनः की मग्रक्थकाद्भगा-হতিঃ। সংপূৰ্ব হুধাতো ভাবে **২নট্ প্রত্যাযেন নিষ্পন্ন**।। সংহারঃ পু॰ নরকবিশেষঃ। ই-ত্যমরঃ॥ প্রলযঃ। ইতি হেম-एकः॥ म॰क्षिशः। ইতি करो-• খ्रुः॥ म॰ হ্রণঞ্চ।। मंश्रात्रमुखा की विमर्कनमूखा। যথা রাঘবভটধৃত । অধোমুথে वागश्र छक्षामाः मक्षश्यकः। किश्वाक्ती तक्तीं अः मःगृश পরিবর্ত্তবেৎ।। প্রোক্তা সংহা-त्रमूरजय मर्भाग जू श्रममार । অর্পণে আত্মনীতিশেষঃ। ইতি **जिथामिज्यः।। रेज्यविद्या**यः । যথা। অসিতাকো রুকু শ্রুঙ্গ ক্রোধ উন্মত্ত এব চ। কপালী ভীষণদৈচৰ সংহারা শ্চাফটভ-রবাং।। ইভি ভন্তং।। ন হিতঃ ত্রি মিলিতঃ। সংপূর্ব ধা ধাতোঃ ক্ত প্রত্যবেন নিষ্পার্মঃ।। দংহিতপুষ্পিকা স্ত্রী মিশ্রেষা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

माहिका खी यशामिक्षनीकश्या-भाखा । जदभर्यायः। भृजिः २ ধৰ্মদ'হিতা ৩ শ্ৰুতিজীবিকা ৪ । ইতি শব্দরত্বাবলী। সংহিতা बिटमचा वथा। अवः भूतान मः थानि ठजूनीक मूमासङ। ज-कोमन भूबानाना त्यस त्यव वि-मू प्राः॥ अवत्काशभूतानाना-मखोषम अकीर्दिकाः। इंडि-হাসে। ভারতঞ্চ বাল্মীক কাব্য মেব চা৷ পঞ্ক পঞ্চরাত্রাপাণ রুফ্ডনাহাত্মা মুত্তম। বাশিষ্ঠ। नात्रमीयक काशिकः भोजभी-यकः॥ अतः जन एक गात्रीयः श-খবাত্রঞ্ব পঞ্চক। পঞ্চন্যঃ সং-হিতানাঞ্চ ক্লফভক্তিসমন্বিতাঃ श बन्नवन्छ निवनगानि अशान-স্য তথৈব চ। গৌতম্স্য স্ব্যা-রুদ্য দংহিতাঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ। ইতি বন্ধবৈবর্ত্তে শ্রীক্লফজন্মখ-ত্তে ১৩২ অধ্যাবঃ।। 🛊।। অপি **छ। इन्छ अक्षमभयः भूदानः** কৌৰ্মা মুক্তমণ। চতুৰ্ধা সংস্থিত। পুণ্য গংহিতানা প্রভেদতঃ।। বান্ধী ভাগবতী শৈবী বৈক্ষবী চ প্রকীর্ত্তিতা। চতসুঃ সংহিতাঃ भूगा धर्म कामार्थ (माक्काः ॥

ইযন্ত সংহিতা ত্রান্ধী চতুর্বেদেঃ সমন্বিতা। ভবস্তি বট্সহসাণি লোকানা মত্র সংখ্যবা।। ইতি কৌর্মো ১ অধ্যাবঃ।।

সংহূতিঃ স্ত্রী বহুভিঃ ক্লুতাহ্বানং। ইত্যমরঃ।।

সংশৃতঃ ত্রি ক্বতসংহারঃ। যথা।
ত্বং বিভূত্যা বহুভি রিহ কথে
বঁদা হিতা। তৎ সংশৃতং মবৈকৈব ভিষ্ঠাম্যাজৌ হিরো ভব।।
ইতি মার্কণ্ডেযপুরাণীষ দেবীমাহান্মাণ।।

সংহাতিঃ ন্ত্রী সংহারঃ। যথা।
বিস্ফৌ সৃষ্টিৰূপা ত্ব স্থিতিৰূপা চ পালনে। তথা সংহাতিৰূপান্তে জগতো ২স্য জগন্মযে
।। ইতি মার্কণ্ডেষপুরাণে দেবীমাহাত্ম্য ।।

मःकवः पूर नामः। यथा। तिशवः मःकवः याखि कन्णागरकाशशनार्छ। नम्मर्छ ह जनः पूरमार माहाज्याः सम मृन्छाः ॥
हेि सार्कर अपूतारंग मिनीमाहाज्याः॥ अन्यः। हेि मकतज्ञावनी॥

সংক্ষিপ্তঃ ত্রি ক্রতসংক্ষেপঃ। সংক্ষেপবিশিষ্টঃ। যথা। সমা হাত্যান্যভন্তাণি সংক্ষিপ্তৈঃ প্রতিসংস্কৃতিঃ। সম্পূর্ণ মৃচ্যতে
বর্গৈর্নাম লিঙ্গান্নাসনং॥ ইত্যমরং॥ সংক্ষিপ্তঃ অল্পেনেব
বহুর্থ প্রতিপাদকত্যা হতিহিতৈঃ। ইতি তট্টীকাষাং ভরতঃ॥
সংক্ষেপঃ পুং স্তোকেন ভূষসো
হতিধানং। ইত্যমরটীকাষাং ভনরতঃ॥
চুষক ইতি বল্প ইতি চ
খ্যাতঃ॥

मः क्षुकः वि मक्ष्णनिविधः १ हेि क्षु अधावर्थ मर्गना ।। जा-क्ष्णः। यथा। मृद्या मनखः मः-क्षुकः विद्याका मनतात्रयः। म-क्षुका थिन मना। उस्र मनुख्यु इ-मायुधाः।। हेि मार्क एक्षपूता-१० (मिनीमाहाक्षाः)।

সংক্ষেপণ ক্লী বিস্তীর্ণানাং সং-ক্ষেপঃ। প্রপঞ্চরণবৈপরীত্যং । ইতি ভরতঃ।। তৎপর্য্যায়ঃ। সমসনং ২। ইত্যমরঃ।। সংহা-রঃ ৩ সমাহারঃ ৪ সংগ্রহঃ ৫ সমাসঃ ৬। ইতি জটাধরঃ।। সংক্ষোভঃ পুং চাঞ্চল্যং। সঞ্চলনং। যথা। সংক্ষোভ মক্ষরয়-

লন । যথা। সংক্ষোভ মক্ষরযু-যা মপি চিত্রতম্বোঃ। ইতি শ্রী-ভাগবত ।।

সকাশ

সকঃ পুণ) পূর্বোক্তপরামর্শকঃ।
সকা স্ত্রী) সেইতি ভাষা। তদ্শব্দস্য টেঃ পূর্বণ অকি পরত্র
আপ্প্রভাষে চ ক্রতে প্রথমৈকবচন নিষ্পায়ণ পদস্বয়ণ।।

সকটঃ পু॰ শাখোটবৃক্ষঃ। ইতি ভূরিপ্রযোগঃ।।

সকটান্ন॰ ক্লী অশুদ্ধান্ন•। ইতি সকর্মকঃ পু॰ কর্মযুক্তধাতুঃ। কর্মান্ববিক্রিয়ার্থকঃ। যথা। ক্ল

मक्किः पू॰ रेनवानः। इंडि मक्किता। क्द्रश्नवित्नयः। नाठाक्द्रश्न इंडि ভाषा। इंडि द्रव्याना।। क्केक्यूट्डि वि। यथा। मीज्ञाक मनायुङ म-क्केक्ननावित्र। इत्र भाभ म-भामार्ग ভामामानः भूनः भूनः॥ हेडि डिथानिङ्यः॥

সকরঃ ত্রি হস্তযুক্তঃ।। রাজস্ব-বিশিষ্টঃ।। শুগুষুক্তঃ।। কিরণ-বিশিষ্টঃ।। করেণ সহ বর্ত্ততে যোহসো। ইতি বহুত্রীহি সমা-স নিষ্পায়ঃ।।

সকরুণঃ ত্রি করুণাযুক্তঃ। সদ-যঃ। যথা। ভবানি স্থ দাসে মযি বিতর দৃষ্টিণ সকরুণা মিতি স্তোতৃণ কাঞ্চন্ কথযতি ভবা-নি স্ব মিতি ষঃ। তদৈব স্থ ठटेश्व मिशनि निक्रमायुक्ताशम-वी॰ मूक्षम बक्षान्य क्रू हे मूक्ष है नीताकिल्शमा॰ ।। ইल्डानम्य-लक्ती ॥

সকর্ণঃ ত্রি শ্রবণশীলঃ। তথ-পর্য্যায়ঃ। শ্রুতিতৎপরঃ ২। ইতি জটাধরঃ।। কর্ণমুক্তশ্চ।।

কেৰ্মকঃ পু॰ কৰ্মযুক্তধাতুঃ।
কৰ্মান্ববিক্রিযার্থকঃ। যথা। ক্রচিৎ সকর্মকান্ধাতো ভাবেপি
ক্রিযাব্যাপ্তি রস্তি। যথা। কাণ্
দিশণ গন্তব্য়ণ। ইতি মুগ্ধবোধটীকাযাণ দুর্গাদাসঃ।।

সকলং তি সমুদাষঃ। তৎপর্যাযঃ। সমং ২ সর্বং ৩ বিশ্বং ৪
অশেষণ ৫ ক্রৎন্মণ ৬ সমস্তং ৭
নিখিলণ ৮ অখিলণ ৯ নিঃশেষণ
১০ সমগ্রং ১১ পূর্নণ ১২ অখণ্ড
১৩ অমূলকং ১৪। ইত্যমরঃ।।
অনন্তং ১৫। ইতি শব্দরত্বাবলী
সকামঃ ত্রি কামনাবিশিষ্টঃ।
যথা। অকামো বা সকামো বা
যত্র কাপি বহির্জলে। ইহ চামুত্র দুংখানি মাঘন্মায়ী ন পশ্যতি।। ইতি ভিথ্যাদিতত্ত্বং।।
সকাশঃ পুং সমীপঃ। যথা।
দেবি দৈত্যেশ্বরঃ শুশু দ্রৈলো-

ক্যে পরমেশ্বরঃ। দূতোহং প্রে-

ষিত স্তেন স্বৎসকাশ মিহা गाकः॥ इंकि मार्केट अपूर्वा দেবীমাহাত্ম্য ।। কাশযুক্তে ত্রি সঙ্গর পু॰ সাসর ওবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। সঙ্গলঃ পু॰ শঙ্গলমৎস্যঃ৷ ইতি मक्त्रवावनी।। '**সঙ্গল্যঃ** ত্রি সগোত্রঃ। য**থা**। জারো লঙ্গ: সগোত্রাস্ত স্বজন জ্ঞাতি বান্ধবাঃ। সঙ্গল্য বন্ধ मायाम अम्यादनामका अशि ॥ ইতি জটাধরঃ॥ 🟶॥ স্বাবধ্য-र्ष्यु जना स्टेगावि । जनम भू क्रयं ने ৰ্য্যন্ত পুৰুষত্ৰয় । তেষা দশন-পুরুষপর্যান্ত সন্ততিঃ। স্বাবধ্য-धरुनारुमाविध मनमभूक्ष्मभ-র্যান্তসন্ততিশ্চ।। ৠ।। তেষা ম-त्नी ह॰ यथा। वृङ्क्ला जिः। मना-হেন সপিণ্ডাস্ত শুদ্ধ্যন্তি প্রেত সূতকে। ত্রিরাত্রেণ সঙ্গল্যাস্ত স্বাস্থা শুদ্ধান্তি গোত্রজাঃ ॥ इेंडि शिक्षिडवु॰ ॥ 🗱 ॥ मायायि-कार्तिमञ्जलााञ्च भक्षमभूक्षाय-थयः। यथा तीक्षायनः। अति-তামহঃ পিডামহঃ পিতা স্বয়ণ সোদর্য্যভাতরঃ সবর্ণাষাঃ পুলঃ

পৌত্ৰঃ প্ৰপৌত্ৰো বা এতানবি-ভক্তদাযাদান্ সপিণ্ডান্ আচ-ক্তে। বিভক্তদাবাদান্ সঙ্গ-ল্যান্ আচকতে সৎস্বস্তেষু **जनामी शर्था** जवजीजि । ইতি দাযতত্ত্ব শুদ্ধিতত্ত্বঞ্চ ৷৷ # 11 ७मा कनामानाधिकाति-ত্ব॰ যথা। বিষ্ণুঃ। পিতা পিতা-মহো ভ্ৰাতা সঙ্গল্যো যাতাম-হো মাতা চেতি কন্যাপ্রদঃ পূ-র্বনাশে প্রক্রতিস্থঃ পরঃ পরঃ ।। नातमका शिठा मंनाए यगः কন্যাণ ভ্ৰাতা বানুমতঃ পিতুঃ। মাতামহো মাতুলশ্চ সঙ্গল্যো বান্ধব স্তথা।। মাতা স্বভাবে नर्दिषा॰ श्रक्तरको यिन वर्त्तरक। **७**मा। गर्थक्रिङ्यायाः कनाः मं-मूरः यकाठयः॥ ইত্যুদাহতবः॥ मननी खी बल्मावित्नवः। अमा গুণাদি স্তালব্যশকারাদি শঙ্গ-লশব্দে দ্রস্টব্যঃ ॥

সক্তং ব্য সহ। একবারণ । ইত্যমরঃ ।। বিষ্ঠা । ইতি তট্রীকা ॥
সক্তংপ্রজঃ পুণ কাকঃ । ইত্যমরঃ ।। জাতৈকমাত্রাপত্যে ত্রি ।।
সক্তংফলা স্ত্রী কদলী । ইতি
রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

স্থা मक्तार्जः भू॰ (थमतः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ৷৷ একমাত্রগর্ভি ণ্যা॰ স্ত্রী ॥ मक्षीतः पू॰ এकवीत्रकः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ সক্তঃ ত্রি অবিরতঃ। ইতি হেম চন্দ্রঃ।৷ আসক্তশ্চ ৷৷ সক্তিঃ ত্রী সঙ্গঃ সন্জ্ধাতোঃ ক্তিঃ প্রত্যথেন নিষ্পন্না ॥ अकुः पू॰ ভৃষ্টेयवामि চূর্ণঃ। ছাতু इंडि ভाষा। यथा। ज्यो यवाः भूनर्शाना शानाहूर्वं मक्कतः। इेि इंगठिखः॥ जमा छनानिः তালব্যাদিশক্তৃশব্দে দ্রফব্যঃ।। পু॰ বিষভেদঃ। ইতি ट्रमहन्तः।। स्रार्थ (क मकुन्ह জুকল। দ্রী শমীবৃক্ষঃ। ইত্য-यतः ॥ कुक्नी खी भगीवृकः। इंडि শবরত্বাবলী।। ক্থি ক্লী উরুঃ। ইত্যমরঃ।। শকটাব্যব্বিশেষঃ। ইত্যুণাদি-द्कि। यः ॥ गं श्रु॰ तोशार्मयुक्तः। मयानः था।यट करेनः नामीि ডिः ৰনীয়াদিত্বাৎ খ্যাতে ৰ্য লোপঃ म्यानमा मञावन्छ माथृखा

মিতি সে র্ডা। ইত্যমরটীকাযাণ ভরতঃ॥ তৎপর্যায়ঃ। আক্র-ন্দঃ ২ মিত্র॰ ৩ সুস্বৎ ৪। ইতি জটাধরঃ।। ব্যস্যঃ ৫ সব্ধাঃ ৬ স্লিক্ষঃ ৭ সহচরঃ ৮। ইতি হেনচন্দ্রঃ।। সহায়ঃ। ইতি মে-দিনী ৷৷ তৎপত্নীগমনে দোষো যথা। গুরুতন্মত্রত সর্য্যাৎ রে-তः मिक्षा ऋरयानियू । मथुउः পুত্রন্য চ স্ত্রীবু ঙ্গমারী স্বস্তাজাসু চ।। ইতি প্রাযশ্চিত্ততত্ত্ব ।। मिश्रा जी मथा। यथा। भी-या॰मে वहरमविजामि मुहाम छ-ৰ্কাঃ সমস্তাঃ স্থ মে বেদান্তাঃ প-त्रमाञ्चादगिष छत्रदवा घृष॰ मटमा-পাসিতাঃ। জাতা ব্যাকরণানি বালদখিতা যুম্মাভি রভ্যর্থযে প্রাপ্তোষণ সমষো মনুক্তবিবৃ-তৌ সাহায্য মালয্যতা ।। ইতি মনুটীকাযাণ সম্পুকভটঃ ॥ मथिष की मथा। मथिगका-ভাবে স্ব প্রত্যাষেন নিষ্ণান্নণ।। मथी खी मर्हती। छৎ পर्यायः । আলিঃ ২ ব্যস্যা ৩। ইত্যমরঃ ।। স্থ্রীচী ৪। ইতি ছেমচন্দ্রঃ।। मथा॰ क्री भिज्ञा। তৎ भर्गायः । (जोक्ष ॰ ২ जोहार्ष ॰ ७ जाश्व

भनीनः १ देगवः ৮ জर्জाः २ जङ्ग ७ ° ३ ० । देखि (इयह**लः** ॥ সগ ম এ সংবৃতৌ। ইতি কবি-कब्रफ्रयः॥ य निमगरियंछि। এ अमगीए। इंडि मूर्गामामः ॥ সগন্ধঃ পু॰ জ্ঞাতিঃ। ইতি ত্রি-काखरमयः॥ भन्नयूटक वि॥ मगतः भू॰ जर्रास्त्रमः। ইতি হেমচন্দ্রঃ ।। সূর্য্যবংশীযরাজ-বিশেষঃ। স তু অযোধ্যাধিপতি বাহুরাজপুত্রঃ। তস্যোৎপ-ख्यामि यथा। সূর্য্যব॰শে **म**হा-वाष्ट्रा वाङ् नीय यशनजृ । তস্য রাজ্য• হৃত• সর্ব• হৈহুইয खानक्रक्रदेकः॥ कारमाकाः भ-হ্লবালৈচব পারদা যবনাঃ শকাঃ ৷ এতে পঞ্গণা বন্ষন্ হৈছ্যা-র্থে পরাক্রমন্।। হতরাজ্যঃ স বৈ বিপ্ৰ তদা বাহু ৰ্ৰনণ যযে।। পত्नी जू यामवी जमा श्वर्विगा-সীৎ পতিব্ৰতা ।। তৎসপত্নী পূৰ্ব মেব তস্যা গৰ্ভজিঘা স্যা ৷ ভোজনেন সহ প্রাদাৎ গর धर्मानत्वक्या।। यानवााञ्च **७**-পোষোগাৎ গর্ভো নৈব মমার হ। ন মমার চ সা রাজ্ঞী দেবা-ना मनुकम्भया।। পতि॰ मानुय-

(यो माश्री मिरवटव ७॰ वटन मना । স রাজ। বিপিনে তত্মিন্ প্রা-ণা॰ স্তত্যাজ যোগবান্।। সা তু ভর্ত্তু শ্চিতি ক্লম্বা বনে তা মধ্য-রোহত। ঔর্ব স্তাণ ভার্গব স্তাত কারুণ্যাৎ সমবার্যৎ ॥ তস্যা-শ্রমে চ সা গর্ভ সুষ্রে জ্ল-নপ্ৰভ । ব্যজাষত মহাবাহ ৰ্গ-রেণৈব সহ দ্বিজ্যা সগরো না-ৰ তেনাভূৎ বালকোতিমনোহ-রঃ। ঔর্বস্ত জাতকর্মাদি তস্য क्षा यहा बानः ॥ व्यंशाशा त्रमा-নখিলান্ শস্তাণি প্রত্যপাদয় । আগেষম্ভ মহাঘোর মমরৈ রপি **मूःमरु** ।। म তেনাস্ত্রবলেনাজৌ वटलन ह मुक्षिजः। देश्र्याः স্তালজ্ঞাণ্শ্চ জম্মে রুদ্রঃ পশৃ-নিব।। জনষামাস লোকে ংস্মিন কীর্ত্তি• কীর্ত্তিমতাম্বরঃ। ততঃ শ্-কান্ স্থবনান্ কাম্বোজান্ পা-রদাণ স্তথা।। পত্নবাণশ্চাপি নিঃ-শেষান্ কর্ত্ব্ ব্যবসিতে। নৃপঃ। তে হ্ন্যমানা বীরেণ সগরেণ মহৌজসা।। বশিষ্ঠ শরণ জগ্যুঃ সূর্য্যব॰শপুরোহিত । বশিষ্ঠঃ শরণাপন্নান্ সমযে স্থাপ্য তানৃ-ষিঃ II সগর• বার্যামাস তেভ্যো

দন্বভিষ্ণ তদা। সগর স্তাণ প্র **ि** छन्। विभाग ज्यश्वादनः ॥ ধর্মণ জবান তেষাঞ্চ বেশানন্যাণ শ্চকার হ। অর্দ্ধণ শিরঃ শকানাম্ভ মুওযানাস ভূপতিঃ।। যবনানা॰ শিরঃ সর্ব॰ কাম্বোজানা মপি দ্বি-জ। পারদান্ মুক্তকেশাণ্স্ত প-क्रवान् श्रामधातिषः ॥ निश्वाधाय वष है का तान् मर्बाटन व का त ह । কোলিদর্পা মাহিষকা দার্বা-(क्ठांनाः मदकत्नाः॥ थमा छः ষারা শ্চীনাশ্চ মদ্রাঃ কিন্ধিন্ধকা স্তথা ৷৷ কোম্ভলাশ্চ তথা বন্ধাঃ শাষাঃ কোন্ধণকা স্তথা। সর্বে তে ক্ষত্রিয়া স্তাত ধর্ম্মা স্তেষাণ নিরা-ক্রতাঃ।। পুরোহিতস্য বাক্যেন ক্লতা বিক্নভবেশিনঃ। বশে ক্লভ্য স রাজন্যান্ স্বরাজ্য মন্বশাস্ত ।। ইতি পাঘে স্বৰ্গখণ্ডে ১৫ অধ্যা-যঃ॥ ৠ। অপিচা রোহিতাচ্চ বৃকো জাতো বৃকাদাহ রজাযত । সগর স্তম্য পুলো ২ভূৎ রাজা পরমধার্ম্মিকঃ ৷৷ দ্বে ভার্য্যে সগ-রস্যাপি প্রভা ভানুমতী তথা। তাভ্যা মারাধিতঃ পূর্ব মৌর্বো श्रीः भूजकामाया।। छई खरु खरगाः आमाष गरथके वत मुख-

मः । এক। यस्किम्हमानि मूळ

(मकः छथा भन्ना। गृङ्गाज दः
मकः छान् मळी गृङ्गाप्त इः ख्रथा
। একः छान् मळी भूज मगृङ्गानः

मम्खाः ।। ততঃ यस्किम्हमानि

मूमूद्र याम्दी श्रञा। थनः खः

भृथितीः मधा विक्वा (य श्रभः

मार्गद्रा। जममञ्जन छन्द्रा।

खः ख्रमान् नाम विश्रञ्जः। जमा

भूद्रा। मिली भञ्ज मिली भाज छ
भीत्रथः।। यन छाभीत्रथी भ
झा छभः कृषावजातिज।। छभी
त्रथमा छन्द्रा। सेकि माल्द्रमा देख खशायः।।

সগর্ভঃ পু॰ সহোদরঃ। ইতি
শব্দরত্নাবলী।। অভ্যন্তরিতসূশ্বপ্রভাদিযুক্তস্পাদি। যথা।
দর্ভান্ সগর্ভানাদাষ নব সপ্ত
চপঞ্চ বা। সাগ্রান সমূলানক্রিয়ান্ দ্বিজো দক্ষিণপাণিনা
।। অম্বারব্বোন সব্যেন তর্পথেৎ
ষড্বিনাযকান্। ইতি কাশীখণ্ডে সদাচারো নাম ৩৫ অধ্যায়ঃ।।

সগর্ভা স্ত্রী গর্ৱবতী। যথা। কেচিদাহন মাশ্রিত্য কেচিৎ পাতাল মাবিশন্। সগর্ত্তা চন্দ্র-সেনস্য ভার্য্যা দাল্যাশ্রমণ যথে। ।। ইতি পাদ্মে সৃষ্টিখণ্ডে ১ অ-ধ্যায়ঃ ।। সংহাদরা। ইতি সগর্ত্ত শব্দদর্শনাৎ ।।

সগর্ভাঃ পু॰ সহোদরঃ। ইত্য-মরঃ॥

সগোত্রণ ক্লী সলং। যথা।
সলং গোত্রণ সগোত্রঞ্গ ভুল্য
গোত্রে নিগদ্যতে। ইতি শক্ষরত্নাবলী।।

সংগাত্রঃ পু॰ জ্ঞাতিঃ। সমান॰ গোত্র মস্যা যথা। সংগাত্র বান্ধব জ্ঞাতি ধন্ধু স্ব স্বজনাঃ সমাঃ। ইত্যমরঃ।।

দি জ্বী সহভোজন। ইত্য মরঃ। সমানা সহ বা জিঞ্চিঃ সঞ্জিঃ। অদঃ ক্তিঃ জ্বঞ্চোদো ইতি জ্বঞ্চে জ্বঞ্চিঃ নিপাতনাৎ সঞ্জি রাদেশঃ। সঞ্জি রপি ভূম্প সীতি পরে। ইত্যমর্মীকাযাণ ভরতঃ।।

স্ব ন হিংসে। ইতি কবিকর জুমঃ।। ন সমোতি। অসীস্বত্ । ইতি দুর্গাদাসঃ।।

मक्ष कि महाधः। इन्त्रमङ्गः॥ द्व जन्नावकात्म वर्जाति। म মাক্ কটতি আবৃণোতি সন্ধটিও
অল্। সমাগন্যোন্যও বাধতেও
২ত্র সন্বাধঃ ঘঞ্। বাচ্যলিকত।
চ। সন্বাধঃ বৃহদিপি তদ্বভূব বর্জা
ইতি মাঘঃ। ইতি ভরতঃ।।
দুংখে ক্লী। যথা। সর্বাবাধাস্
ঘোরাস্ বেদনাভ্যদিতো হপি
বা। স্মরশ্মৈতচ্চরিতঃ নরো
মুচ্যেত সন্ধটাং।। সন্ধটিং দুঃখ মৃত্রার্দ্ধ মত্রান্থবি। ইতি
দেবীমাহাদ্ব্যাস্য টীকাষাং নাগোজীভটিঃ।।

সন্ধটা স্ত্রী দেবীবিশেষঃ। সাচ
বারাণসাাণ প্রসিদ্ধা।। যোগিনীবিশেষঃ। যথা। মঙ্গলা পিঙ্গলা ধন্যা ভামরী ভদ্রিকা
তথা। উল্কা সিদ্ধিং সন্ধটা চ
বোগিন্যোক্টো প্রকীর্ত্তিতাঃ ।।
ইতি জ্যোতিষণ।।

সক্ষটাক্ষঃ পুত ধববৃক্ষঃ।। কটা-ক্ষসহিছে ত্রি। ইতিবিশ্ব হেম-চল্ড্রে।।

সক্ষথন ক্লী সমাগুষণ । যথা
। উপবাসফল নশ্যেৎ দিবাস্বপ্লাক্ষ মৈথু নাৎ। দ্ৰীণা সংপ্ৰেক্ষণাৎ স্পৰ্শাক্তাভিঃ সক্ষথনাদপি।। ইত্যেকাদশীভব্তং ।।

সঙ্কথা স্ত্রী পরস্পরভাষণ । যথা । উल्लाभः काञ्चवागत्नारना।-ক্তিঃ সংলাপ সঙ্কথে। ইতি হে-गठखः॥ मगाक्कथनकः ॥ मक्दाः पुर मन्त्राष्ट्रिना किश्वश्-लाकिः। ७९ भर्यायः। व्यवक-तः २। **हे** जामतः ॥ मकातः ७। ইতি শব্দরত্বাবলী।। অগ্নিচটৎ-कातः। इंडि यिमिनी शाताव-लो ॥ मिखिडक्। यथा। ভেদাখ্যানায় ন ঘল্পো নৈক-শেষোন সন্ধরঃ। ইত্যনরঃ।। পরস্পরাত্যন্তাভাব সমানাধি-कत्रनरमा देत्रकाधिकत्रनाः। यथा । মূর্ত্তত্ব॰ মনসি বর্ত্ততে ভূতত্ব॰ নাস্তি আকাশে ভূতত্ব বর্ত্তে মূর্ত্তর' নাস্তি। পৃথিব্যাণ ভূতর' ্ৰতে মূৰ্ত্বক্ষাম্ভীতি জাতি সান্ধ रा॰। তথাচোক্ত•। ব্যক্তে রভেদ স্তল্যত্ব সঙ্গরো ২থান-বঙ্গিতিঃ। ৰূপহানি রুসম্বন্ধে জাতিবাধক সংগ্রহঃ ॥ ইতি गिकास्रमुकावनी ॥ # ॥ वर्ग-সঙ্গরজাতিঃ। যথা। যাজ্ঞবন্ধ্য উবাচ। বক্ষ্যে সঙ্করজাত্যাদি গৃহস্থাদিবিধি॰ পর॰। विश्रा-गू क्वाविमाख्या हि कवियाया॰

বিশঃ স্ত্রিষাণ।। জাতো ২য়ৡস্ত শূদ্রাযাণ নিষাদঃ পার্যতোপি ষা। মাহিষোগ্রৌ প্রজাষেতে विष् मृजाक्रनरमा न् भाष ॥ বৈশ্যা॰ শূজাক রাজন্যা॰ মা-হিষ্যোগ্রো সুতো স্মৃতো। শৃ-काया॰ कतरना देवनागं विषान् এষ বিধিঃ স্মৃতঃ ।। ত্রাহ্মণ্যা॰ क्विवार मृत्वा देवनादिकत-হক স্তথা। শূদ্রাজ্জাতস্ত চা-ণ্ডালঃ সর্বধর্ম্মবহিষ্কৃতঃ।। ক্ষত্রি-যা মাগধ বৈশ্যাৎ শূড়াৎ ক্ষ-জার মেব চ। শূজাদাযোগব॰ देवगा जनशामान देव मूछ ॥ মাহিযোগ করণাম্ভ রথকারঃ প্রজাবতে। অসংস্কৃতাশ্চ বি-প্রাতিলোমানুলোম-ভেৰ্যাঃ জাঃ॥ জাত্যুৎকর্ষাদ্ধিজা জে-ষঃ সপ্তমে গঞ্মে হপি বা। ব্য-ত্যযে কৰ্মণা সাম্যে পূৰ্বকো-ত্তরাবর ।। ইতি গারুডে ১৬ অধ্যায়ঃ 11

मकती खी नवमृषिछकना। ইতি यमिनी॥

সঙ্করীকরণ ক্লী নববিধপাপাস্ত-গতপাপবিশেষঃ। যথা বিষ্ণুঃ। অথ পুরুষস্য কাম ক্রোধ লো- ভাখ্য রিপুত্রয় ভবতি। পরি-গ্রহপ্রসঙ্গেন বিশেষালা্ছাঞ্র-মিণঃ। তেনায মাক্রাস্তো ২তি-পাতক মহাপাতকানুপাতকো-পপাতকেষু বৰ্ত্ততে। জাতিভূ_'-শকরেষু সঙ্করীকরণেম্বপাত্রীক-त्रत्वम् मलावरत्रम् अकीर्वत्वम् ॥ ভদ্মথা। খরাশ্যেফু মৃগেভানা यकाविकवध खथा। महतोकत-ণ জ্বেষ মীনাহি মহিষদ্য চ।। তস্য প্রাযশ্চিত্ত যথা। সঙ্করা-পাত্র ক্ত্যাসু মাসং শোধন মৈ-न्मवः। मिननीकत्रनीरययु उश्वः मााम्यावक खारः॥ তथा विकुः । গ্রাম্যারণানা পশুনা হি সা मः की गीं क्रत्रनः। मक्कती क्रतनः क्र-ত্বা মাস মশ্বাতি যাবক'। র-চ্ছাতিরুচ্ছ মথ বা প্রাযশ্চিত্তন্ত कांत्रराष्ट्रा। इंजि श्रायिकज-विदिकः ॥

সন্ধর্মণ ক্লী আকর্ষণণা সম্যক্প্রকারেণ কর্ষণণা সংপূর্ব ক্লষ
ধাতো রনট্ প্রত্যাযেন নিষ্পান্ধণ
সন্ধর্মণঃ পুণ বলদেবঃ। ইত্যামরঃ।।

সকলঃ পু॰ সকলন । যোগঃ। সংপূৰ্ব কল ধাতো ভাবে অল্ প্রত্যায়ন নিশায়ঃ ।।

সঙ্গলন ক্রী একত্রীকরণ ৷

যোজন ৷ ঠিকদেওয়া ইতি
ভাষা ৷ ইতি লীলাবতী ৷৷

সঙ্গলিতঃ ত্রি লেখাদিনা সংবৃতং
৷ তৎপর্য্যায়ঃ ৷ সংগৃঢ়ঃ ২ ৷
ইত্যমর ভরতৌ ৷৷ যোজিতায়৽
৷ ঠিকদেওয়া আঁক ইতি ভাষা ৷

যথা ৷ অথ সঙ্গলিত ব্যবকলিতযোঃ করণসূত্রণ ৷ ইতি লীলাবতী ৷৷ পুঞ্জীক্রভধান্যাদি ৷
ইতি কেচিৎ ৷৷

পু॰ কর্মাণা মানস॰। **मक्**ष्णः ইতামরঃ ৷৷ সম্বন্ধ উক্তো হারী-তেন। যথা। মনসা সম্বর্থতি বাচা অভিলপতি কর্মাণা চো-পপাদযতি ইতি ভবিষাপুরাণ वहरनन ह। मक्करब्रन विना द्रा-জন্ ষৎকিঞ্চিৎ সক্তে নরঃ। **ফলश्राह्मक॰ ত**म्य धर्मामार्कि-ক্ষযোভবেৎ।। ইতি ব্রহ্মপুরা-ণেনাপি আশাস্য চ শুভ॰ কা-ৰ্য্য মুদ্দিশ্য চ মনোগত । ইত্য-গস্তাপুজনে উক্তণা মনোগত শুভ ফল আশাস্য মন্যা সঙ্ক-ষ্ম্য উদ্দিশ্য বাচা অভিলগ্য কা-ৰ্য্য কৰ্ম্মণা উপপাদ্য । ভবিষ্যে

। শুক্তি শখাশা হস্তৈশ্চ কাণ্স্য ৰূপ্যাদিভি স্তথা। সৰুল্পো নৈ-ব কর্ত্তব্যা মৃন্মযেন কদাচন ॥ গৃহীত্বৌডুম্বরণ পাত্রণ বারিপূর্ণণ গুণান্বিত । দর্ভত্রয সাগ্রমূল रुल পूष्भ जिलामिकः॥ कला-শযারামকুপে সঙ্কলে পূর্বদিগ্র थः। नाधात्रण চোত্রাস্য ঐ শান্যাণ নিক্ষিপেজ্জ্বলং।। অত্ৰ কেবল হস্ত নিষেধন্ত পাত্রান্তর मछावविषयः। मधानि मार्ठ-র্যাৎ একহন্তপরো বা। গৃহী-জৌডুষরণ পাত্রণ বারিপূর্ণ মুদ-श्र्यः। উপবাসম্ভ গৃত্লীযাদ্যদা वार्त्यावं भातरयः ॥ इं विवता ह-পুরাণদর্শনাৎ। ইতি তিথ্যা-দিতবु°॥ ₩॥ সঙ্গর*চ ভাবে मटेगज ६ कर्त्व राज्य निरम् ह মবৈতন্মকর্ত্ব্য মিতি জ্ঞানবি-শেষঃ। बङामीना॰ मक्क्रमञ्ज-वश् यथा। मक्ब्रमृनः कारमा বৈ যজ্ঞাঃ সঙ্কল্প স্ম্ভবাঃ ৷ ব্ৰতা নিষম ধর্মাশ্চ সর্বে সঙ্কল্পজাঃ স্তাঃ॥ ইত্যেকাদশীতত্ত্ব॰॥ সঙ্গল্পতা পু॰ কামদেবঃ৷ ইতি श्लायूधः॥ সম্বল্পভবঃ পু॰ কামদেবঃ। ইতি

ত্রিকাওশেষঃ।। मकब्रायानिः शूः कामरनदः। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ ৷৷ সঙ্কসূকঃ ত্রি অস্থিরঃ। ইত্য-यसः॥ मूर्वनः। इंजानित्नः यः॥ गन्भः। ইতি मिদ्रास्टरको-यूमा यूगानिवृद्धिः॥ म॰कीर्नः॥ অপবাদশীলঃ। ইতি সংক্ষিপ্ত-সারোণাদিবৃত্তিঃ ।। मकातः पुर मगार्क्जना किश्वध्-न्याप्तिः। ইতি শব্দরত্নাবলী।। व्यक्तिहरू कातः। इंडि यिमिनी मकाती जी नवमृषिककन्या। इंडि यिनिनी।। मक्षामः जि ममृगः॥ অञ्चिकः। ইতি বিশ্বঃ ॥ मिकनः पू॰ महत्नाक।। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ महीर्ण जि जनामिछि नित्रवका-শঃ। ইতি ভরতঃ।। নানাজাতি সংমিলিতং। ইতি ভানুদীক্ষি-ठः ॥ তৎপर्यायः। मक्*न* २ আকীর্ণ । ইত্যমরঃ।। নিচি-७ 81 ইতি का नार्थ व्यवतः ॥ ব্যাপ্ত ৫ সমাকীর্ণ ৬। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ मऋहेः। ইত্য-জযঃ।। পরস্পরবিজাতীযঃ।

ষ্থা। বিশেষানিষ্ণ সংকীর্ণ নানার্থে রব্যাবৈ রপি। ইত্য-মরস্লোকটীকাবাং ভরতঃ।। অ-শুদ্ধঃ। ইতিনানার্থে অমরঃ।। সন্ধীর্ণঃ পুণ অম্বষ্ঠকরণাদি চা-গুলপর্যাস্ত মিশ্রজাতিঃ। ই-ত্যমরঃ।। মিশ্রিতরাগঃ। ইতি সংগীতশাস্ত্রণ।।

मकीर्जन॰ क्री खी मग्रक्थका-द्भंग (मवर्गानारमाकात्रन[®]।। 📽 नामिकथनः। यथा। क्रयःवर्नः দ্বিষা ক্লফণ সাঙ্গোপাসাত্রপার্য-**দ**। यटेड्डः मङ्गीर्जनश्रादेय र्यज-স্তি হি সুমেধসঃ॥ ইতি শ্রীমন্তা-গবতে ১১ ক্ষন্ধে ৫ অধ্যায়ঃ না কক্ষতা ব্যাবর্ত্তয়তি। দ্বিষা কা-खा १क्रकः हेस्पनीलम्बिष्-ब्कुल । यदा विषा क्रक क्रका-বতার অনেন কলৌ ক্লফাবতা-রস্য প্রাধান্য দর্শযতি। অ-श्रामि श्रमशामीन। छेशाश्रामि কৌস্তভাদীনি। অস্ত্রাণি সুদ-र्गनामीन। शाह्यमाः जूनमा-मयः। ७९ मश्विः। यदेखः तर्फः-देनः। मक्कीर्जनः सारमाकात्रनः স্তুতিশ্চ তৎ প্রধানেঃ। সুমেধ भा विद्यिकनः। ইতি তদ্বীকা-

या॰ औधत्रयाभी ॥ 🟶 ॥ ज्या-হাত্ম্য । সন্ধীর্ত্তনধ্রনিং শ্ৰুত্বা যে চ নৃত্যন্তি মানবাঃ। তেষা পাদরজঃম্পর্ণাৎ সদ্যঃ পূতা বসৃদ্ধরা।। ইতি বৃহ্মার-कीयशूतां गा। जिला है। नामम-ক্ষীর্ত্তন থত্র ক্ষক্ষস্য পরমাত্মনঃ । স্থান তত্ত্ব পবিত্র স্যামৃতা-না॰ তত্ত্ব মুক্তিদ॰।। ইতি পান-পুরাণ ।। 🟶 ।। প্রথম সম্বীর্তনার য প্রমাণ যথা। পৃষ্করতীর্থে নার-দ॰ প্রতি বন্ধবাক্যণ। গ্রীক্রফরস সঙ্গীত॰ বীণাধনি সমন্বিত॰ । कक वर्षाध्नादेवय भृषु व गुन यः मृताः॥ त्गाशीनाः वज्रह्तनः পর রাসমহোৎসব ৷ তাভিঃ সার্দ্ধণ জলক্রীডাণ হরে রুৎকী-र्जन म्बर ।। क्रक्षमङ्गीर्जन जूर्न পুনাতি শ্রুতিমাত্রতঃ। শ্রোতা-রঞ্চ প্রবক্তারণ পুরুষেঃ সপ্তভিঃ সহ।। যত্রৈব প্রভবেদ্বৎস ত-মাম গুণকীর্ত্তন । তত্র সর্বাণি তীর্থানি পুণ্যানি মঙ্গলানি চ ॥ তৎকীৰ্ত্তনধনি শ্ৰুদ্বা সৰ্বাণি পাতকানি চ। দূরাদেব পলায-**८** उन्तर्ण्य निर्वात्रशः॥ ७-फिन॰ ग्रयः व॰ धनाः येनाः **मर्व**गः

ঙ্গল । শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্তন ৰব্ৰ তত্ৰ

देव नायू द्या बायः ॥ क्रक्न की-ৰ্ত্তনস্থানে ৰে চ নৃত্যস্তি বৈফ-বাঃ৷ তেষা পাদরজঃ স্পর্শাৎ সদ্যঃ পূতা বসন্ধরা।। উৎকী-র্ত্তনাও ভবেদ্যত্র ক্লক্ষস্য পরমা-ত্বানঃ। স্থানং তচ্চ ভবেত্তী। র্থ মৃতানা ভত্ত মুক্তিদ ।। নাত্র পাপানি ভিষ্ঠস্তি পুণ্যানি স্স্রিগাণি চ। তপস্বিনাঞ্জ্ঞ-তিনাণ ব্রতানাণ তপসাণ স্থলণ ।। বর্ত্তত্তে পাপিনা॰ দেহে পা-পানি ত্রিবিধানি চ। মহাপা-পোপপাপাতিপাপান্যের স্মৃ-তানিচ।। क्रक्षमः कीर्जनाष्णा-नाजगळ शर्गान्दश । मृहाद छ পাতকৈ স্তৈশ্চ পাপিন স্ত্রিবি-ধা জনাঃ॥ ইভি নারদপঞ্জা-ত্রে জ্ঞানামৃতসারে প্রথমৈক-রাত্রে মহোৎ দবারস্তো নাম ১০ ञ्यायः॥ গীৰ্ত্তিতঃ ত্রি সম্যগুচ্চরিতঃ॥ म॰ख ७:। यथा। अङ्गनाम्य বা জ্ঞানাদুত্তনস্নোকনাম যৎ। নংকীৰ্ত্তিত মন্ত পুংসো দহেদে-ধা যথানলঃ।। ইতি শ্রীভাগ-

তে ৬ ক্ষন্ধে ২ অধ্যায়ঃ॥

ज॰ क्री मः काठ्युकः । অপ্রফুলং। তৎপর্য্যায়ঃ। নি-দ্রাণং ২ মীলিতং ৩ মুদ্রিতং ৪। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। স্প্রং ৫ মিলি-তং ৬ নতং ৭ নিঙ্গাঞ্চিতং ৮ । সনিদ্রং ৯ অলসং ১০। ইতি রাজনির্যন্টঃ।।

मकून॰ क्री यूक्ष॰। ইত্যজयः॥ পরস্পরপরাহতবাক্যে তৎপ-র্যাযঃ। ক্লিষ্ট ২। ইত্যমরঃ॥ ष পূर्वाभत्रतिकृष्क वारका । यथा। यावब्जीव मश् भोनी ब ন্ধচারী পিতা মম ইত্যাদিঃ। মা-তাচ মম বন্ধাা স্যাৎ স্মরাভো १न् अत्या ज्वान्।। ज्व ज वमु সংহত্যোঃ সংপূর্বঃ ইজুওদ্বাৎ-কঃ। ক্লিশাতেঃ ক্রঃ ক্লিফ । পরস্পর পরাহত বিরুদ্ধ পর-ম্পরপরাহত । তত্র সরস্বতীক-প্রাভরণে তু ক্লিফলকণ যথা। দূরে यमार्थ म॰বিত্তিঃ ক্লিফे॰ নেষ্ট হি তৎ সতা ৷ যথা বিজিতাত্মভবদেয়ি গুৰুপাদহ-তো জনঃ। হিমাপহামিত্রধরৈ ৰ্ব্যাপ্ত॰ ব্যোমাভিনন্দতি ইভি। অস্যার্থঃ ৷ বিনা গরুতেন জিত ইন্দ্র স্তদ্যাত্মভবে হজন স্ত-

স্থাঃ তস্য পাদৈ রশ্বিভি হঁতে।
স্থাঃ তস্য পাদৈ রশ্বিভি হঁতে।
জনো লোকঃ ব্যোম আকাশ
মভিনন্দতি কীদৃশ হিমাপহে।
২গ্নি স্তদ্যামিত্রণ জলণ তদ্ধারয়ন্তি যে তৈ শ্বেট্য ব্যাপ্তণ।
ইতিভরতঃ ।।

সম্বলণ ত্রি জনাদিভিনিরবকা-मा । তৎপर्यायः। महीर्ग २ আকীর্ণ ৩। ইত্যমরঃ।। কলি-ল ৪ গহন ৫। ইতি কেচিৎ।। সন্ধীৰ্য্যতে স্ম জনাদিভি নির-ন্তর ব্যাপ্যতে স্ম সঙ্কীর্ণ ক্ল শ বিক্ষেপে ক্রঃ। সংস্কলতি সম্কু ल॰ ञ्रन क वन्नू **म॰**श्राः म॰ পूर्वः रेजु ७ वा कः। मः अवः দস্ত্যাদি। শকি ধাতো রুলে শ-স্কুল তালব্যাদীতি স্বামী। আ-কীর্ণ সঙ্কীর্ণবৎ। ইতিভরতঃ।। সক্ষেতঃ পু॰ স্বাভিপ্রাযব্যঞ্জক-চেষ্টাবিশেষঃ।। সঙ্কিত্যতে উ-চ্যতে হত্র। তৎপর্য্যাষঃ। প্র-জ্ঞপ্তিঃ ২ পরিভাষা ৩ শৈলী ৪ সম্বঃ ৫ আকারঃ ৬ ৷ ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। উদাহরণ যথা । সঙ্কেত প্রিযশঙ্কষা নিজপতি॰ প্রাবোচদধ্রমণ। ইতি রসসণ-

গ্রহঃ।। ন্যায়নতে যথা। সঙ্কে-তো লক্ষণা চার্থে পদবৃতিঃ। বৃত্তা পদপ্রতিপাদ্যো হর্থ এব পদार्थ ইতাভিধীয়তে। ইদ॰ পদ মিমমর্থণ বোধযত্বিতি অস্মা-ष्ट्रकामय गर्या ताष्ट्रता देखि বেচ্ছা সক্ষেত্ৰৰপা বৃত্তিঃ। তত্ৰা-ধুনিকদক্তেঃ পরিভাষা। ত্যা অর্থবোধক পদ পারিভাষিক । যথা শাস্ত্রকারাদিসঙ্কেতিত ननीवृक्तानिशनः। जेश्वतमदकः তঃ শক্তিঃ। ত্যা অর্থবোধকণ পদ বাচক। যথা গোত্বাদি विभिक्टरवाधक भवामिशम॰ তদোধ্যো १८थी भवामि वीहाः স এব মুখ্যার্থ ইত্যুচ্যতে। ইতি শক্তিবাদে গাদাধরীটীকা ৷৷

সক্ষেতনিকেতন ক্লী প্রিয়নেলনার্থাবধারিতগৃহণ যথা। স ক্ষেতনিকেতনে প্রিয় মনবলোক্য সমাঙ্গলহৃদযা বিপ্রলক্ষা। ক্য সমাঙ্গলহৃদযা বিপ্রলক্ষা। সক্ষেতকেলিগৃহ মেত্য নিরীক্ষ্য শূন্য মেণীদৃশো নিভৃত নিঃশ্বা সিতাধরাষাঃ। অক্ষাক্ষর বচন্দ্র মর্কবিকাশি নেত্রণ তায়ূল মার্ককবলীক্ষত মেব তক্ষো।। সাক্ষেত্ত্বলণ প্রতি ভর্ত্তুরনাগমন-

সকোচনী স্ত্রী লজ্জালুলতা। ইতি রত্নমালা।

সঙ্কোচপিশুন ক্লী সঙ্কুমণ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।

मकुष्मनः श्रु॰ हेक्कः। हेन्छामतः।। त्वामतन क्वी।।

সক্ত্রনঃ পু॰ ক্লী দুর্গসঞ্চরঃ।
সাঁকো ইভি ভাষা। ইত্যমরঃ॥
সন্ধামতি অনেন সংক্রমাতে
অসৌ বা সন্ধ্রমঃ ঘঞ্। দুর্গণ
সেত্বাদি সঞ্চরত্যনেন দুর্গসঞ্চরঃ করণে অল্। সঞ্চরো নির্গণ
মোহযুপথঃ। ইতি রত্নকোষঃ।
ইতি ভরতঃ।।

मह्मः भू क्रमण। मगार्थाणिमक्षातवस्थ। ই विश्वतिः ॥ तविमक्ष्मकात्ना यथा। करिः मरमुजारमा यः मकात्ना तिमस्मार है विश्वापि दः ॥
मक्ष्मणः क्री भमनः॥ मूर्यमातामास्त्र श्रात्माः कार्यानः। मूर्यमातामास्त्र श्रात्माः। कार्याः। कार्याः
तामास्त्र श्रात्माः। कार्याः। मृत्रं हः
पर्कतात्व व तिमक्ष्मणः जर्वः।
योष्ट पिनवयः भूगाः जर्याः।
योष्ट पिनवयः भूगाः जर्याः।
यत्र कर्वरिं।। प्रवीभूतात्।।
तिमक्ष्मतः। मस्यक्षम जर्वः
यस्त्र भानवः। मस्यक्षम जर्वः
यस्त्र भानवः। मस्यक्षम जर्वः
यस्त्र भानवः। मस्यक्षम जर्वः
वस्त्र विश्वापि द्यः।।

সন্ধান্তঃ ত্রি সন্ধান্তিবিশিষ্টঃ।
বথা। অসন্ধান্তমাসো ংধিমাসঃ স্ফুটঃ স্যাৎ দিসন্ধান্ত
মাসঃ ক্ষাখ্যঃ কদাচিৎ। ইতি
মলমাসতত্ত্বং। প্রাপ্তঃ। গতঃ
। ক্রমাগভধনাদি। যথা। স্ত্রীসংক্রান্তধনস্য স্ত্রীধনদ্বাভাবাৎ
অধিকার বিশেষস্যাত্র বচনাদপ্রাপ্ত্যাকাক্ষ্যা কল্পনে সাদৃশ্যাৎ স্ত্রীসংক্রান্ত ধনমাত্রস্য
পূর্বস্বামি দাষাদ্বপো ংধিকারী কল্পনীয় এতদর্থণ পত্নীপদ-

স্য স্ত্রীলক্ষকত্ব নিতি ভাবঃ । ইতি দাযভাগটীকাযা শ্রীক্ষক্ষ তর্কালকারঃ ।।

শকান্তিঃ স্ত্রী রাশ্যন্তরসংযো-गान्कृलवााभातः। यथा। ना-ডীনক্ত্র দিবসে রবি ভৌষ শনৈশ্চরাঃ। সংক্রান্তি॰ যস্য ষ্পর্বস্তি তস্য ক্লেশোভিজাযতে ॥ इंडि डियामिडवः॥ त्रि সংক্রাম্ভি র্যথা। ভবিষ্য মাৎস্য জ্যোতিষেষু। মৃগ কর্ক্নট সং-ক্রান্তী দে তুদগদক্ষিণায়নে। বি সুবতী তুলা মেষে গোলমধ্যে তথাপরাঃ।। মৃগো মকরঃ। গোলো রাশিচক্রণ। ধনু শ্মিথুন कनाामू भीत्न ह यफ्नील्यः । বৃষ বৃশ্চিক সিংহেষু সম্ভে বিষ্ণু-शभी ष्मृञा। प्रवीभूतानः। ষাবদিংশকলা ভুক্তা স্তৎ পুণ্যণ চোত্তরাযণে। নিরণশে ভাস্করে मृटके मिना छ॰ मिक्क वायदन ॥ अ-र्कतारव षमःशृर्गं निवा शृग्र य-নাগত। অন্ধরাত্তে ব্যতীতে তু বিজ্ঞেষণ চাপরে ২হনি ৷৷ সণপূ-र्व हार्षत्रात्व ह छेन्दर श्ख्यार शिवा। यानार्कः जाऋदत्र भूग यण्टर्भ नर्वतीषता। मण्णूर्भ जू-

ভষে তের্জেষ মতিরেকে পরে ২ হনি । যডশীতিমুখে ২তীতে বৃত্তে চ वियुवषया। ভविषाजायत्न भूगा মতীতে চোত্তরাযণে। আদৌ পুণ্য বিজ্ঞানীয়াৎ যদ্যভিন্ন তি-থি ভবেৎ ৷ বিংশকলা বিংশতি-তমीকলা সংক্রান্তিক্ষণাদূর্দ্ধি যা-বদ্ভবতি ভাবৎ পুণ্য। নিরণশে र नम्ता म का खिकाल हि ভাস্করো হংশরহিতো ভবতি ত-त्रिन् मृत्के मित्वि शायः। मिन-ঞ্চ দিনকর করসংস্কৃতা স্ত্রিংশনা-ডিকা ইতি জ্যোতির্বিদঃ। তদন্ত তৎসমাপ্তি যাবৎ তাবৎ পুণ্য । তথা চ বৃহদ্শিষ্ঠঃ। ত্রি॰শৎক-ক্ষটিকে নাড্যো মকরে বিংশতিঃ याञाः। नाषी मखः। উৎপলা-षिशनः यखा। विशनाजु शनः नरयः। भना यस्त्रा नरयन्। **जी॰ छ**९षका। जू तत्व फिन॰ ॥ ইতি সিদ্ধান্তসন্দর্ভাৎ। ততশ্চ **(मवीभूता**न बृश्विमिष्ठेरमा दत्रकः বাক্যত্যা কলা নাড্যোঃ পর্য্যা-যতা।। **#** য়া ব্রাত্তিস°ক্রমণে দ্বাহ অর্দ্ধরাত্রে দ্বিতি। অসম্পূর্ণে ক-लान्ग्रनार्कतार्व। कलान्ग्रनार्कः त्रा र्व जू यिन मः क्रमणः ভবে ।

তদহঃ পুণ্য মিচ্ছস্তি গাৰ্গ্য গাল-ব গোতমাঃ ৷৷ ইতি ক্ত্যচিস্ত্যা-মণি বর্ষক্রত্য ধৃত পর্গবচনাৎ। কালকৌমুদ্যাঞ্চ গালৰেত্যত্ত হা-রীত ইতি পাঠঃ। ততশ্চ কলা-ন্যুনাৰ্দ্ধরাত্রাভ্যস্তরে দাদশস্বেব সংক্রান্তিযু অনাগতং নাগতং সংক্রমণেন ষত্র দিবা তদেব পু-ণ্য॰ পুণ্যজনক। ততু পূৰ্বদিন॰ তদৈৰ সংক্ৰান্তে রনাগতত্বসম্ভ-বাৎ। তেন সংক্ৰমণকালাদৰ্বা-গেব দিবাপরার্দ্ধে স্নানাদিকণ কর্ত্রবা মিতার্থঃ। অর্দ্ধরাত্তে ব্য-তীতে কলাধিকার্দ্ধরাত্তে ব্যতী-তে। সংপূর্ণে অধ্বরাত্রে রাত্রিম-थाकन एयाः। कला नाना कितार्व দ্বিতি বচনানম্ভর ভুজবলভী-মে। অন্ধরাত্রে কলাধিক্যে যদা म॰क्कमर७ রবিঃ। তদে। তরদি-ন॰ আছ॰ স্নান দান জপাদিষু॥ অন্ধরাত্রে তু সংপূর্ণে যদা সংক্র-মতে রবিঃ। প্রাহু দিনদ্ব পুণ্ত ত্যক্তা মকর কর্মটো।। ইতি বচনাভ্যা॰ তথা প্রতীতেঃ। কা-नविदवदक कानदकीयूमार्थ भा-**তাতপ জাবালী।** পূর্ণে চেদর্দ্ধ-রাত্তে তু রবিসংক্রমণ ভবেৎ ৷

প্ৰাহ দিনদ্বৰ পুণ্য ভাকু ম-कत कर्कटो।। এতংগ र्वादश-गार कामगाधवीत्य ভवित्याख-রীষণ। মিপুনাৎ কর্কিসংক্রান্তি र्वित गामि अमिनः। श्रामार्य वा निनीत्थ वा अर्यग्रामश्नि शूर्व-তঃ ।। কার্শ্মকম্ব পরিত্যজ্য ঝরণ সংক্রমতে রবিঃ। প্রভাতে বার্দ্ধ-রাত্রে বা স্নানণ সর্ব্যাৎ পরে प्रयाचाका क्रिताल मः का छातू मस्य **২স্ত**মযেপি বা ইত্যনেন উদযো-পক্রম মন্তম্যান্তঞ্চ মানার্দ্ধ° পু-गु॰ । এবঞ্চোভযদিনে পুণ্যকা-লে পূর্বদিনাকরণ এব পরদিনে। यः कार्या यना कर्खवाः भूबाद्भ চাপরাত্নিক । নহি প্রতীক্ষতে মৃত্যুঃ ক্লত মস্য ন বা ক্লতে।। ইতি লিজপুরাণাৎ মোক্ষধর্মাস্ট ॥ তত্রাপি দক্ষিণাষণে পূর্বদিনার্দ্ধ-মাত্র মিতি বিশেষঃ। উত্তরায়ণে পরদিনার্দ্ধ মাত্র মিতি বিশেষঃ। ষানার্দ্ধ মিতি ভাস্করে ভাস্করো-পলক্ষিতে কালে দিবেতি ষাৰ্ৎ তিম্মন্ সংক্রমণে ২পি মানার্জণ পুণ্য । এতচ্চ বিষুব ষডশীতি বি-ययः। व्ययनकालरयाः भूतं मूकः

ত্বাৎ বিকুপদ্যাক্ষোভৰতঃ বোড শকলানা পঞ্দশ নাডিকানা या भूगायमा भाषाजभाषिकत्न-ন বক্ষ্যমাণস্বাৎ ৷ তেন দিবা मः जन्म विवासनामित्यन भूगा কালে বিশেষঃ। রাত্তি সংক্রমণে **७ व्यक्तताबीय यकत कर्क** है म॰-ক্রমণ ব্যতিরিক্তে সর্বেষাণ তুল্য-তেতি। অপূর্ণে শর্বরীদলে কলা-न्गनार्कतारवं देणवाणि यानार्क মিত্যনুষজ্যতে। দিবাপুণ্য মিতি ৰৎ প্ৰাপ্তক্তণ অত্ৰ তদেব মানাৰ্দ্ধ-ত্বেন বিশেষিত মিত্যপুনরুক্তিঃ ! **এব মুদ্যাস্তমষে य**न्नानार्कः **भूगा** ७९ किरमकितन मिनरका-ৰ্বেতি তত্ৰাহ সংপূৰ্ণে তুভযো রি-छि উভযোঃ পূর্বাপরদিনযো শ্মা-नार्कः भूगाः एवन शृर्विमनगासः মযপর্যান্ত॰ পরদিনস্য উদয মা-রভা মানার্দ্ধণ পুণা মিতার্থঃ। অ-তিরেকে অন্ধরাত্রাৎ পরতঃ সং-क्रमण भरत श्रहीन माना कि भूग মিতানুষজাতে। মানার্দ্ধন্ত প্রহ-त्रवरः। अर्कताजामध खित्रन् म-খাত্রস্যোপরি ক্রিযা। উর্দ্ধুণ সণ-क्रमण ভारना क्रमशब् अङ्त्रहरू ॥ পूर्वाक्तताव मःकारखो एव मि-

নার্দ্ধে তু পুণাদে। ইতি সম্বৎসর-প্রদীপ গঙ্গাবাক্যাবলীধৃত বশি-ষ্ঠ সৌরধর্ম্মবচনৈকবাক্যত্বাৎ ৷ व्यक्तताळाष्यदेश्वव पिनाक्तरमा-পরি ক্রিষা। উদ্ধৃ সংক্রমণে ভা-ता क्रमगा थर्त्रवयः ॥ देि ভোজরাজ ক্রত্যচিন্তামণি ধৃতৈ-कवाकाषाक । ज्यशः शूर्वः छर्षुः পরতঃ। ক্রিয়া স্নানাদিকা। এব-क गर्गवहनक छमक तिछि यान-ছষপর•। অন্যথা মূলভূত শ্রুত্য-ন্তর কল্পনাপত্তেঃ। এবঞ্চ ষড-শীতিমুখে ংতীতে ইত্যাদি দি-বাসংক্রমণবিষষণ। তেন দিবা ষডশী তি সংক্রমণে ভূতে ভবিষ্য-यानाकि भूगा वन वियुवहरय-পি। দিবোত্তরাষণেপি ভবিষ্য-দ্বি-শতি দণ্ডানা পুণাত্ব। অ-ত্রোত্তরাষণস্য পৃথগভিধানাৎ व्ययन देखि পদ॰ দক্ষিণায়নপর॰ शावनीवर्षनग्राषा । তেন দিবা দক্ষিণাষনে ভবিষ্যতি ভূত **बि॰मक्ष्याना॰ भूगाय॰।** ষডশীত্যাদিশ্বপ্যবকাশ মলভ-यान वर्बाक् खाजन विख्छमा নাড্যঃ পশ্চাচ্চ যোডশ। কালঃ

পরিকীর্ত্তিতঃ ৷৷ ইতি শাতাতগী-ষ । অতীতানাগতো ভোগো না-ড্যঃ পঞ্চনশ স্মৃতাঃ। ইতি দে-वीशूतानीयक वहन किया विकृ वृश्विणार्थो । भूगायाः विख्य-म्याक आक् शन्दामि साजन। वर्कतात्व वित्नय मार वामावि-ভ্যাদি। অধ্বরাত্ত সংক্রান্তাবাদৌ পূর্বদিন এব মানার্জণ পুণ্য । यमा-ভিন্না সংক্ৰান্তিকালে পূৰ্ৰদিনে চ একৈব তিথি র্ভবেৎ তেন মধ্য-রাত্রে সংক্রমণে যদুভযদিনমানা-দ্ধিণ পুণ্য মুক্তণ ভদ্তিন্নতিথিবিষ-যে। অতীতে পুন রর্দ্ধরাত্তে পূ-र्विवाङ्ग विथारज्यमिश शतमिन-দৈয়ব পূৰাৰ্দ্ধ পুণ্য মিতি তাৎপ-ব্যার্থঃ। এবঞ্চ রাত্রিসংক্রান্তে দিন এব পুণ্যন্বাভিধানাৎ। রাহ-দর্শন সংক্রান্তি বিবাহাত্যয বৃ-कियू। त्रान मानामिक अर्यू नि नि कामाबलिषु ह।। ইতি प्रिव-লেন দিনসংক্রমণস্য রাত্রিপ্রবি-के भूगकाला॰ मिं मिंका सि মিত্তেন স্থান দানাদি বিধীয়তে १७॥ 🛊 ॥ यु समा समाकिनी-शाङ्की रवाजा देवर मरहामती।

রাক্দনী নিশ্রিতা প্রোক্তা সংক্রা-खिः मश्रधा न्था। यन्ना **अन्दर्यू** विख्छिया मृति मन्ता किनी ज्था। कित्थ शाक्की॰ विकानीयानूत्थ খোরা প্রকীর্ত্তিতা।। চরে নহোদ-রী জেযা ক্রের খ কৈশ্চ রাক্সী ৷ মিশ্ৰিতা চৈব ৰিজ্ঞেষা মিশ্ৰিত-কৈন্তু সংক্ৰমে।। ইত্যেতৈ দ্বাদশ-স্বেব সংক্রান্তিষু প্রবাদি নক্ষত্র যোগাম্মনাদিৰূপত্যা সপ্তথা-ভিন্নাস্। ত্রি চতুঃ পঞ্চ সপ্তাষ্ট नव षामण अव ह। क्राट्यन चिका ছেতা তত পুণা পারমার্থিক।। ইতি দেবীপুরাণ এব ত্রি চতুরাদি षिकानाः পूगायमुकः जिल्वाः রাত্যো স্তত্তৎকালোপদেশাৎ অবকাশ মলভমান সন্ধ্যাদ্ধ সংক্রান্তিবিষয় মিতি সমযপ্রকা-भः ॥ 🟶 ॥ अवामिगनस मीनिका-याः। উগ্রঃ পূর্ব यया खकाः अव-গণ স্ত্ৰীণাত্তরাণি স্বভূ ৰাতাদিত্য হরিত্রষণ চরগণঃ পুষ্যাশ্বি হস্তা লযু:। চিত্রা মিত্র মৃগাস্ত্যভ मृष्गन खीकाहि इंट्या युक् भि-শ্রো হগ্নিঃ সবিশাখভঃ শুভফ লাঃ সর্বে স্বরুত্যে গণাঃ ৷৷ স্বস্তুকো ভরণী। স্বভূরোহিণী। বাতা-

দিত্য হরিত্রৰ স্বাতী পুনর্বসুঃ শ্র-ৰণা ধনিষ্ঠা শতভিষা। মিত্ৰ মৃ-গাস্ত্যত্ত অনুরাধা মৃগশিরো রে-वजाः। व्यक्ति इटजन्ययुक् व्यक्षिया আত্রা জ্যেষ্ঠা মূলা। অগ্নিঃ क्र-ত্তিকা। কন্মতব্ৰস্তু। ক্ৰনেণ যথা-সংখ্যেন এতা স্বটিকা স্তৎপুণ্য তস্য সংক্রমণস্য পুণাছেত্ত্বাৎ পুণ্ড পারমার্থিক মুখা। জ্ টেঃ সহসূভাগো ষঃ স কালে। ব্ৰ-বিদংক্রমঃ। ইত্যুক্ত সূত্রসংক্রম-कालीनान्छानकना श्वा मय-श्रुवा द्वि इंगार्। जुविस न-স্কুক্র চতুর্ভাগ স্তুটি রিত্যভিধীয তে। ত্রটিদ্বয়ণ লবঃ প্রোক্তো নি-भ्या स्वाप्त विश्व विश् এতদেব মতং যুক্তং। ভাতএব দে-दलन। या याः निम्रिंग नाष्ण ন্ত্ৰান্ত পুণ্যতমাং স্মৃতা ইত্যুক্তণ ৷ এবকৈতা ঘটিকাঃ পুণাত্যাঃ यानाकामिक अभागाव विकि তক্ষাশ্বন্দেত্যাদি ন সন্ধ্যাসংক্রা-ন্তি বিষয়ক নিভি। সন্ধ্যাসক্রা-ন্তি বিষয়ত্বে পারমার্থিক মিতান্-পপত্তেঃ। পুণ্য মিত্যনেনৈব সি-দ্ধে:। পারমার্থিক মিত্যত্র কল্প-তক্ষ ব্যাখ্যানানবলোকনাৎ ব্ৰ-

বিসংক্রম ইভি পাঠকল্পনং কল্পন মেব। সমযপ্রকাশক্লতাণি তথা পঠিতত্বাৎ। জীমূত্তবাহনোপি কালবিবেকে। অহ্লি সংক্রমণে भूगा महः इष्ट्रनः अकीर्विष्ठः । রাত্রৌ সংক্রমণে ভানো দিনার্দ্ধণ স্থান দানযোঃ।। ইতি বৃহদ্বশিষ্ঠা-**षिरहन शर्या त्लाहन या किराम**-कार्छो मिनभावः भूगः भूगाञ-রাস্ত বিশেষবিহিতা নাড্যঃ ই-ত্যাহ। অতএব তদ্ধৃত জাবালি বৃহস্পতিশাভাতপ্রচন মগি নঙ্গ-চ্ছতে। কথা। বৰ্ত্তমানে তুলা মে-ষে নাডা জুভবতো দশ। কাল-মাধবীষেপি। অহ্লীত্যভিধায় প্রা-শস্তাতারতমা মুক্তে। এবঞ্চ দি-वामःकारको क्रू यः मिनः भूगः ষড়শীতিমুখেতীতে ইতি বচন भूगा**छत्रभतः ॥ 🗱 ॥** नन् प्रती-পুরাণে দিবা রাত্যোঃ সংক্রমণে विशिषा कालाजिधाना मन्त्रा-সংক্রান্তেঃ কঃ কাল ইতি চেৎ। জি॰শন্মুহূর্ত্ত॰ কথিত মহোরাত্রস্ত यग्रया। इं ि विकृ भूतात्वन मन्ना-र्याः পृथगन् भाषाना । पिताता वि नम्किषागृष्ट्वीर्कन ७रग तस-ৰ্ভাবঃ। তথা চ দক্ষঃ। অহোরাত্র-

স্য ষঃ সন্ধিঃ সূর্য্য নক্ষত্র বড্রিডঃ । সাতু সন্ধ্যা সমাখ্যাতা মুনিভি खब्निं जिः॥ सागिमाळवकाः ৷ স্থাস বৃদ্ধী চ সতত দিন রাত্রোগ ৰ্যথাক্ৰমণ। সন্ধ্যা মুহূৰ্ত্ত ৰাখ্যাতা স্থাসে বৃদ্ধৌ সমা স্মৃতা।। বরাহঃ ৷ অদ্ধান্তময়াৎ সন্ধ্যা ব্যক্তীভূতা ন তারকা যাবৎ। তেজঃপরিহা-নি রুষা ভানো রক্ষোদয় যাবৎ ৷৷ অতএৰ কেনাপি মুনিনা নানা-দেশীষসংগ্রহকারেণ চ সন্ধ্যাসং-ক্রান্তিত্বেন বিশেষো নাভিহিতঃ ।। कि ।। कि ।। जनस् अ° म॰ एकशः । দিনসংক্রমণে ক্রৎস্মণদিন পুণ্য 1 ষডশীতিমুখে ২তীতে ইত্যাদ্যু-ক্ত॰ পুণ্যভর॰। মন্দা মন্দাকিনী-ত্যাদিৰপেণ ত্রি চতুরাদি ঘটি-কাঃ পুণাভমাঃ। দিমবৃত্তোত্তরা-যণাদি বিহিত বিংশতিদশুদীনাং রাত্রি প্রবিষ্টভাগস্যাপি পুণ্যস্থণা রাত্রিসংক্রমণে তু কলান্যুন প্র-থমার্দ্ধরাত্রগতে তদ্দিবসীযশে-यगायष्वर भूगार। कलाषंयाची-ক মধ্যরাত্রগতে ভদ্দিবসীয়ভি-থে রভেদে তদ্দিবসীষ শেষষা-মদ্বণ শুণ্যণ। ভেদে তু তদিব-সীষ শেষযামদ্বয় পরদিবসী-

यानायामस्यक भूगाः। উভक् मित्न भूगकात्निश भूर्वमिनाक-রণ এব পরদিনে ভিদিহিত কা-र्याः। তিथिভেদাভেদযো र्फकि শাযনে ভদ্দিবসীষ শেষধামন্বয়ণ উত্তরাষণে তু পরদিবসীষাদ্য-यागवयः भूगा मिछि। मशाबाजीय কলোত্তর শেষার্দ্ধরাত্রসংক্রমণ-याट्य जू शत्रिमामायायवर॰ भूगा भिछि। मन्नाम कम्प जू **मिनमण्ड मिनमा तां जिम्ए तां ता**ं र्वाव एक ।। ।। ।। ।। अभि व्याप्तार । শুক্লপাকস্য সপ্তম্যা বদা সংক্র-মতে রবিঃ। মহাজ্যা তদা প্রো-ক্তা সপ্তমী ভাস্করপ্রিযা।। স্নান• দান তপো হোমঃ পিতৃ দেবাভি-পূজনা সৰ্ব কোটিগুণ প্ৰো-ক্ত॰ তপনেন মহৌজসা।। ভার্ত্ত মাসপক্ষ তিথীনাঞ্চ নিমিতানা-क সর্বশঃ। ইত্যনেন প্রাপ্ততিথ্য-ল্লেখে তদিশেষণত্বেন মহাজ্যা ইত্যুল্লেখ্যণ। সংজ্ঞাবিৰে রেতদে-व প্রযোজন যন্তবা নির্দেশ ই-ত্যুক্তত্বাৎ। এবঞ্গ-সংক্রান্তি বি-শেষস্য নিমিত্তত্বেন প্রাপ্তে বি-ब्वाम्राद्मात्थानि ॥ । कार्या । একান্ততো মধা প্রোক্তাঃ কালাঃ

সংক্রান্তিসংজ্ঞকাঃ। দৈতেষু বি-দ্যতে থনিষ্ট পত শ্চাক্ষবসংজ্ঞি তাঃ ৷৷ অঞ্জ্বাপি বন্ধত্ত সপা-खिट्यानि मानदेवः। खकाटन পি হি তৎ সৰ্বণ সভ্য মক্ষযভাণ बद्धरा 🛊 ॥ भाष्ट्रा । व्यर्ग কোটিগুণিত লক বিকৃপদীযু চ । ষড়শীভিসহসুম্ব ষড়শীভ্য। মু-माम्छ ।। भछं मिन्नूकरम भूगाः जर्मु इ मिनकरम । विवृद्धे भठ-मार्मु या का या देवचन्छ क॰ ॥ था का या देवमू आयाणी कार्छ-की याघी देवनाथी शूर्विया वृ। तन-বীপুরাণে। রবিসংক্রমণে পুণ্যে ন वाराम्यञ्च यानवः। मश्रक्यव-২সৌ রোগী নির্দ্ধন স্চোপজাষ-**७॥ ॥ मीशिकाशा नाजीब-**ক্ষত্র দিবসে রবি ভৌন শনৈশ্চ-রাঃ ৷ সংক্রান্তি• যস্য ঙ্গর্বন্ডি ভস্য ক্লেশে হভিজাৰতে ৷৷ গোমূত্ৰ नर्व रिभः न्नान नरबी विधि करनम চ। বিশুদ্ধ কাঞ্চন দদ্যালাডী-क्लारबाभभाखरव।। नाजीनक-ত্রাণি চাদ্য দশ ষোডশ অফীদশ ত্রযোবি শতি পঞ্চবি শতবঃ। র-प्रभानायाः। जातावनामिन्तृत्रत्थः मुरीर्यामियाक्तः मःक्यमान

উক্তঃ। গ্ৰহাশ্চ সৰ্বে সবিতু ৰ্ব-লেন মহীসুভাদ্যাঃ ক্রমশঃ প্রশ-खाः ॥**॥। সমৎসরপ্রদীপে।** ধু-खूत्रवीक मिलिकः आयां म का-खि भाखरम। छथा मरबो सभी जि-**क** विख्यन्ना॰ में मं जिल्ला । य-দাহ্নি মেষসংক্রান্তি স্তুলাসংক্র-यन निनि। छम। প্रজा বিবর্দ্ধস্তে थन शाना ममृक्षिजिः ॥ अकार्क শনিৰারেণ মহাস'ক্রমণ যদা। তদা ভবেৎ প্রজানাশো দুর্ভি-कानि ज्यः गर्दा 🛊 ॥ यह-ত্রি॰শশ্বত নিগমৌ।। সংক্রাস্ত্যা॰ शक्षमभाक बामभागः आक्षवाम-রে। ৰস্ত্র॰ ন পীড়যেত্তত্ত্ব নচ ক্ষা-রেণ বোজযে ।। म॰ ক্রান্ড্যাঞ্চ खर्याष्ट्रणाः शकारख नवभीषित । সপ্তম্যা॰ রবিবারে চ স্নান মাম-লকৈ স্ত্যজেৎ।। শাতাতপঃ। র-विवादत्रकॅम का खा अधा देव সপ্তমীতিথো। আরোগ্যকামস্ত নরো নিম্বপত্রণ ন ভক্ষহেৎ।। 🟶 🛚 ।। ক্লত্যচিন্ত্যামণৌ গুণিসৰ্বস্বে চ। চেত্রে মাসি চ সম্পূজ্যো ষণ্টাক-र्लायहायाकः। व्याद्रागाय सूरी-মূল সংক্রান্ত্যাণ তত্র কারষেৎ ॥ शृक्षामञ्जः। यकीकर्ण महावीत्र

मर्बवाधिविनायन। विटकारिक ভবে প্রাপ্তে রক্ষ রক্ষ মহাবল।। निवभूतारन। घन्छाकरनी गनः 🕮-यान् भिवगाणीववन्नजः। 🛊। क्र-ত্যচিন্ত্যামণে। মসুর নিম্বপত্তঞ ষে। হক্তি মেষগতে রবৌ। অপি রোষান্বিত স্তস্য তক্ষকঃ কিং ক-রিষাতি॥ সম্বৎসরপ্রদীপে ভূত্ত-त्राटका त्मबदङ् ह विरक्षी छमा नाखादम विरकः खरः ॥ 🟶 ॥ न्यृिकः। भ्याति भक्तता प्रयो बातिशूनी ह गर्गती। वातिमान यक्षः। এर धर्म्मयदि। एटबा उका বিষ্ণু শিবাত্মকঃ। অস্য প্রদানাৎ मकला यय मस बदनांत्रशाः ११ देव-শাখে যো ঘট পূর্ণ সভোজ্য देव विकयात्। प्रमाठाज्युका द्वा-জেন্দ্র স ষাতি পরমাণ গতিও।। **शृ**र्वः जल्लात्मिक्ति । महार्वस्य । या मनाछि हि ययामी भक्-নমুঘটাম্বিভান্। পিতৃনুদ্দিশ্য বি-প্ৰেভ্যঃ সৰ্বপাপৈঃ প্ৰমৃচ্যতে ।। বিপ্রেভ্যঃ পাদুকে ছত্রণ পিতৃভ্যো বিষুবে শুভ। পিতৃভ্যঃ পিতৄন্-क्तिभा इंडार्थः। खब विष्वत्रा পুণ্যবিশেষজনকত্বেন বিৰক্ষিত-দ্বাৎ মেষাদাবিতি বিষুবসংকা-

ন্তি পুণাকালপর । অন্যথাকা-वष्यः क्यानाथरखः ॥ 🔷 ॥ क्राया-शर्दाभाग नामः। मःकास्ताः शकरया द्रान्छ बामगाः आक्रवा-मत्त्र। भाषः मन्त्रााः न महीज ক্লতে চ পিতৃহা ভবেৎ ॥ 🛊 ॥ দেৰীপুরাণে। অতীতানাগতো ভোগো নাড্যঃ পঞ্চশ স্মৃতাঃ ! সামিধ্যম্ভ ভবেক্তত্ৰ গ্ৰহাণা সং-ক্রমে রবেঃ।। পুণ্য পাপ বিভাগে-न कनः (मरी श्रयक्रिः) (जागः **পুণাপাপজননযোগ্যকালঃ।** পু-ग भाभ वित्वहरन विश्वामिकः । य गार्याः कियगानः हि नः मस्या-গমবেদিভিঃ। স ধর্মো য় বিগর্ছ-ন্তিত মধৰ্মা প্ৰচক্ষতে।। আগম-বেদিভিঃ ক্রিয়মাণ মিতি সম্বন্ধঃ ৷ ভান্সিকাস্তঃ। বিহিতক্রিষ্যা সা-ধ্যো ধর্মঃ পুংসো গুণো মতঃ । প্রতিষিদ্ধক্রিযাসাধ্যঃ স গুণে ২ধর্ম উচ্যতে।। অত্রৈকশ্মিষেব-कारल भूग भाभ कलाग मर्भ-नां मध्कमन भूगकान वर न्नानामिवदेखनामिख्यागः। এव মেব গুরুচরণাঃ। একাদশী প্র-করণোক্ত সংক্রাস্থ্যপবাসসা ত্র-তত্বেন ভাবৰূপদ্বান্তাব্যটিভদ্বা-

ছোভৰখাপি তত্ৰ পূজ্যে বিধে-বৃ জি রিত্যনেন পুণাকালযুক্তা-হোরাত্র কর্ত্তব্যতা অফম্যুপ-বাসবং। একাদশীতত্ত্বে এভ-ष्ट्रश বিষ্ফ । এবঞ্ রাতিপ্রা-गर्कमः कार्छो निवारमयार्कमा-ত্ৰস্য তৎপুণ্যকালদ্বাদ্রাতি মু-वृद्धीरकः नायः मस्त्रााभानमः कार्या (यव । #। बन्नभूतात्। নিত্যু দ্বয়ে র্যন্যে নিত্যু वियुवा र्वा दियाः। ह्यार्करश ৰ্ত্তৰ্বা ব্যতীপাতেষু পৰ্বসু ॥ অহোরাত্রোষিতঃ স্নানণ শ্রাদ্ধণ দান তথা জপ। যঃ করোতি প্রসন্নাত্মা তস্য স্যাদক্ষয়ঞ্চ তৎ ।। অহোরাত্রোবিতঃ পূর্বদিনে ক্তোপবাসঃ। এতৎপর মেব। অর্দ্ধরাত্রে ব্যতীতে তু স'ক্রা-ন্তি ৰ্যদহ ভবেৎ। পূৰ্বে ব্ৰতা-**मिक॰ अर्या। शत्रमुः न्नान** দানধাঃ।। ইতি ভীষপরাক্ত-শীষণ। স্নান দানবো রিত্যত্র मश्रमीनिर्फ्नां भन्निमियमीय শ্বান দানাদি নিমিত্তক পূৰ্বদি-নে উপবাস সংযমৰূপণ ব্ৰস্তা-मिक क्यामि**डार्थः। ই**डि डि-थाफिछद्रशा ।। अथ त्रि

गःकां जिश्रागनः। नवारो भक्रे নেম শকাব্দাক্ষেন পুরিতাঃ। ভূ-बान हें हे कि कार्यात्वकाशी वतात्वी (व-मयुवारक ॥ ३। ३६। ७३। ७३। २८॥ अका अनुभनारमञ्ज यरोग লকাক মিশ্রিতাঃ। দণ্ডাৎ খাগ্রী इरियु ठ ७०। ৫१ शनाकिषा **७७: भूगः।। मञ्जाव**निको वाताः সা उटा मधामिकाः भरत। य-ষসংক্রমণে ভানোঃ সিদ্ধান্ত স্ফু-টসম্মতাঃ॥ ভুজো যডিফু রামা-মী ২। ৫৬। ৩৩ কালো জাতি र्गकावनी। ७। २२। ३৮। ताम-क्टब्स श्रीयूजाक ७। ३। २७ **ज्दर्शक मृक् नवाच्छरो।। ७।** २२। ७२।। बावक मृक् त्वम वाना २। २२। ८८ व्यक्ति वीन শরৌ সুরাঃ। ৪। ৫৫। ৩৩। य-क्षांग (वर्षी मृत्नाम् ७। ८৮। ১० এক टेमलजूरवी मंत्राः॥ ১। ১৭। ৫॥ ছৌ ষডগ্নী তথা কালা ২।৩৬। ৬ অন্ধী রামাঃ শরা-वनी। ८। ७। ১৫। श्रकाशीय তথা ৰুজা ৫ ৷ ৫৩ ৷ ১১ ৷ মেয मःक्रम वात्रजः॥ जटक र्याजा वृषादमञ्ज वाजामगाः मः कटन त्रदं । ইতি জ্যোতিস্তব্ৰণ।।

नःकां डिठकः की नवां ना छ-ভাশুভজ্ঞানাৰ্থ নক্ষত্ৰাহিত ম-वाकाबहळा वथा। यृिक मक्ष मूर्य जीनि समरम नक वि नारमः। विভवः इंख भारम्यू मश्रविषुव ज्ळामा । मञ्जरक ভূপতেঃ নৌখ্য বদনে পটুতা चट्छ। सम्दर्ग ह समाश्रादका श्रिकाशि किक्टि कदा। चा-मकरत महम्मूः श मूथ भारम ह मिक्टिश । जुनन वाननादम ह কথিত বিষুবৎফল ।৷ ইতি भश्विष् वहळा । # II यह मृ कि वनत्न शक्ष ठचाति सन्दर ७था । ত্রিত্য° কর পাদেষ প্রোবি-যুবভক্তমাৎ।। মান মূর্দ্ধি মুখে टेठव॰ श्रमट्य সूथमखबः। दलाः शाम क्षा एका अपन क वाभरयाः चरा ॥ देवि कन विश्ववहळकनः ॥ 🛊 ॥ नीटर्व পঞ্চ মুখে ত্রীণি হস্তযোশ্চ ত্রয়ণ वयः। क्रि शक मनी नाट्नी গুদে চ পাদযো রসাঃ।। উত্ত-রায়ণ ভাজ্জেয়ে স্বন্দত্র স্থি-**७ः कनः। भीर्ष १९नार**ा बन्दन मुथानि म्टक्क कदत्र श्टब्स रमत्य ह मोथा। नाट्डो खंड॰

वागकदत्र श्र्यनात्ना छत् ज्व॰ वामगरम अवामः॥ हेव्याख्ता-यगठककन ।। ।। भीटर्स कीनि मूर्थ जीनि इतरम् शक रखरमाः। व्यक्ती भाषष्ठ्य श्भारकी प्रकि-**शायन ज्**क्रमार ॥ भीर्य मान॰ यूर्थ विमा सम्दर्भ विख्नक्षः । প্রবাসঃ স্যাৎ করে বামে ভি-कालाज्य मिर्गा निक्तन বামপাদে চ কিঞ্চিলাভশ্চ দক্ষি-(व ।। ইতি দক্ষিণাখনচক্রফল॰ ।। 🗱 🛚 अएक म॰ क्वयं ॰ यव वि-खुशमा भूत्य ह छ । हजात्रि मिक्टि वाट्ये बीनि बीनि नम-मट्य शक्ष निर्मिट्ण । यद्या र्षर॰ वर॰ रशका॰ मृक्ति को टेड-কক গুদে ॥ রোগো ভোগ স্তথা যান॰ বন্ধন• লাভ এব চ। ঐথর্যাণ রাজপূজা চ অপমৃত্যু রিভি ক্রমাৎ।। ইভি বিষ্ণুপদী-ठळकन ।। 🟶 ॥ मूट्य टेठक॰ करत्र त्वनाः भानमूर्या इषः चयः । ट्यांटिं वान खया दनाः कदत मत्राज्दत्रि ह।। दय दय छ्या নেত্রে মস্তবে ত্রিত্য তথা । দ্ববৈশ্ব তথা গুছে বুড়্শীত্যাণ

वाज विर्वा मूर्थ मूर्थ करत जान ताज शिक्षः । भर्षः भक्ष नाजः भाषरमा क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रया क्रिया क्रया क

সন্থানঃ পু॰ দুর্গসঞ্জঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।

সন্ধেদঃ পূ• আৰ্দ্ৰীভাবঃ। স•পূ-ৰ্ৰক ক্লিদধাতো ৰ্যঞ্ প্ৰত্যবেন নিশামঃ।।

স্থ্য ক্লী যুদ্ধ । ইতামর: ॥ সংখ্যাৰে ত্রি ॥

সখ্যতা দ্রী সখ্যত্ব । সংখ্যব-ভা। সখ্যশকাৎ ভাবে ত প্র-ভাবেন নিশালা।।

निर्वाण खी वृक्तिः। ইতি রাজনির্বাणः॥ বিচারণা। ইতামরঃ
॥ একদ্বাদিং। ইতি মেদিনী॥
मध्यास्य जि। यथा। বিগণো
বিক্রমঃ স্থ্যাঃ সংখ্যানে হ্লাদশ जिसू। বিশ্লত্যাদ্যাঃ সদৈকত্ত্বে সর্বাঃ সংখ্যান স্থ্যানোঃ
॥ স্থ্যার্থে দ্বি বহুত্বে স্ত স্তাসু

চানবভেঃ স্ত্রিষঃ। পঞ্জেঃ শক্ত-महमापि कगाष्म् थर्गाखतः ॥ তিপৰ্য্যন্ত: অফাদশযাৰৎ একা-**षिकाः मःथा। मकाः मः** स्थार्य जत्य वर्डस्ड । विष् लिष्टम् टिन मंथा मंद्रीयत्याः मामा-नाधिकद्रापान वृक्तिः। यथा अ কাশাটী একঃ পটঃ একণ স্বর্ত্ত । हि भटका व्यवधातर मन्द्रशाय এব ন তু সংখ্যাষা মিত্যর্থঃ। **एक बठा मन इं**डि माधू में घ-টানা দশেতি৷ কিন্তু দ্যেকযো ৰ্ষিৰচনৈকৰচনে ইতি সূত্ৰে দ্যে-करवा द्रिष्ठि निर्फिणार मन्था - যাত্রেপি সম্ভব ইতি ভাষ্য । ষ্টানা পঞ্ছ ইত্যপি স্যাদিতি সুভৃতিঃ। বার্ত্তাঙ্গ রেষা গুণসপ্ত युका हेिछ देवमाकः। आउम-**स्मिन मन्नमस्मा**ग्रावाषीजावः । मननकमा जिलिक्षा न भूग-কন্থ পক্ষে ক্লীবাৰেতি পক্ষে অঃ তেন আদশ• আদশেতি পাঠঃ ग वि॰म। व्यक्तीमम भन्ना वि॰म-जामाः नदी এव मःशाः मः খ্যাৰা সংখ্যেৰে চ নিত্য মেক ৰচনান্তা ভবন্তি যথা বিশ্পতি-

र्गावः गवाः विःमिजिः ॥ मःथा। हेर मःथा मःथा छतः जनाया পূৰ্বেণ বিরোধঃ স্যাৎ সংখ্যা অ-র্থো অভিধেষো যস্য স সংখ্যার্থঃ ভত্র সংখ্যার্থে বিশ্শত্যাদৌ সং-थाया॰ म॰ ८थाटम ह मामानाधि-করণ্যাৎ দ্বিচন বহুবচনে ভব-তঃ যথা ছে বিশ্শতী গাবঃ গৰাণ বা ভিস্তো বি॰শভবো গাবঃ গবা॰ বা এবং দ্বে শতে দশ শতানীভ্যা-**मि। व्यय ग**िथायः यम। वि॰म-ত্যাদীনা মনাবৃত্তি রেকৈব বিশ শতি রেক মেব শত মিত্যেব॰ স্যাৎ তদা পূৰ্বেণ একবচনান্ত-তৈব ষধোক্তণ বিশ্বতি গাবঃ গৰাণ বিণশতি রিতি৷ মদা বিণ-শ্যত্যাদে রাবৃত্তি বি॰শতিদ্বয়॰ শতদ্বয় মিত্যেব॰ স্যাৎ তদা অ-দ্বিচন বহুবচনান্ডতা স্যাৎ যথোক্ত• দ্বে বি•শতী তি-সে। বি॰শতযঃ। অতএব পরে পরিভাষত্তে। বি॰শত্যাদে রনা-वृत्त्वी वङ्ख्रिशाकवठन॰ देवि। একশেষাৎ দ্বে বিংশতী তিসো বি॰শত্যঃ ইত্যন্যেপি। স্বমতেপি वाामयः मःथामका वासा है-ত্যক্তেঃ টের্লোপ ইতি সূত্রে বি॰-

শতে एउ जुड़ाविणि डिक्फरन-নৈব একবচনাস্ভভাজ্ঞাপকাৎ ক্ষৰানি ইত্যনেন চাবৃত্তৌ দ্বিত্ব-বহুত্ব সম্ভবাচ্চাষ মর্থে৷ ২বগম্যঃ । তাসু সংখ্যাস্ বিংশতাদ্যা ন-वण्याः जीनिकाः जिम्नीत्कः নাপি সামানাধিকরণো স্ত্রিয় এব যথা বিংশত্যা পুরুক্তৈঃ বিংশতিঃ ঙ্গলানীতি বিংশতিঃ শ্রুতি রফ্টা-বি॰শতি যাবৎ এব॰ ত্রি॰শৎ শ্রু-তি রফাত্রি॰শৎ যাবৎ এব॰ চ-वातिःगनारमे॥ शक्किमंगग्रा তা যারভ্য পরাদ্ধান্ত দশগুণো-ত্তরণ দশগুণাধিকণ ক্র্যাৎ শত-मरमानि ज्वि। क्यानिजि न-(मानामामय **मर्थः** এक॰ मन-গুণিত॰ পদ্ধি রুচ্যতে। দশপঞ্জ-ষঃ শত । দশশতানি সহসু । এব॰ দশগুণিত সহসু ময্ত । এব॰ লক্ষ নিযুতাদি জ্ঞেয় । তথা চ। ব্রহ্মাঞ্জুরাণ । এক॰ দশ শতঞ্চৈব সহসু মযুত তথা । लक्ष्क नियुष्ठरेक्षव काणि तर्दुक भित्र है।। वृन्तः थर्दि। निथर्वे क শধ্ পদ্মে চ সাগরঃ। অন্ত্যুণ मधाः भवाक्षकः मन्यकृता यथा-क्रमः।। ইতি। শতः তালবা শ-

कांत्रभा मर्जु विषर्धामकांत्रभा ইতি ভরতঃ।। ●।। ना।वयट অস্যা গণনব্যবহারে কারণত্ব । একত্ব নিত্যৰম্ভনি নিত্য । অ-ন্যত্র অনিভ্য়ণ। দ্বিদ্বাদি পরা-ৰ্দ্বগৰ্যান্ত অপেকাবুদ্ধে জ্জায एक । अव अरमकावृक्तिमारम তেষা॰ নাশঃ। পর্যাপ্তিসম্বন্ধেন - ष्यत्नका अटब किश्रेखि। यथा १ গণনব্যবহারে তু হেতুঃ সংখ্যা বিধীষতে। নিতোষু নিতা মে-কল্ব মনিভ্যে খনিভ্য মিব্যভে ॥ বিদ্বাদয়ঃ পরাদ্ধান্তা অপেকা-ৰুদ্ধিজা মতাঃ। অনেকাশ্ৰয প ব্যাপ্তা এতে তু পরিকীর্ত্তিতাঃ।। অপেকাবুদ্ধিনাশাচ্চ তেযা না-(म) निक्षिण्डः। ज्यातरेककच्च-বুদ্ধি যা সাপেকাবুদ্ধি রুচ্যতে।। ইতি ভাষাপরিচ্ছেদঃ ॥ 🐞 ॥ অপি চ। শ্রীমৈত্রেষ উবাচ। প-त्रार्क्ष मः थाः जगवन् मगाठक य-ৰা তু সং। দ্বিগুনীক্লত্যা ক্লেয়ং প্রাক্তঃ প্রতিসঞ্চরঃ।। শ্রীপরা-শর উবাচ। স্থানাৎ স্থান॰ দশ-खन (अकन्यामानाट विक। ७-তো श्कोषनस्य ভाগে পরার্দ্ধ ৰভিধীষতে ৷৷ পরার্দ্ধদিত্য যতু

প্রাক্তঃ প্রলয়ে বিজ। তদা-ব্যক্তে ২খিলং ব্যক্তং সহেতো লয় মেতি বৈ।। ইতি বিফুপুরা-ণে ৬ অংশে ৩ অহ্যায়ঃ।। সম্যাতং ত্রি ক্রতসম্যাং। তৎ-পর্যায়ঃ। গণিতং ২। ইত্য-মরঃ।।

সম্যান কী সম্যা। সংগ্রিখা। থাতো রুনট্ প্রভাষেন নিম্পন্ন সম্যাবান্ পু পণ্ডিভঃ। ইভ্যা মরং॥ সম্যামুক্তে ত্রি। ইভি নেমিনী॥

সংখ্যায় জি সখ্যাযোগ্য । তৎ-পর্যায়ঃ। গণেষ ২ গণনীয় ৩ । ইতি জটাধরঃ।। গণ্য ৪। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

मकः पु॰ (यमन॰। जर्श्यागः।
प्रावाः। यथा। त्राण मको ज्
गृज्ञ्जा। इजि जिकाश्रम्भाः।
मक्रमारा यथा। म प्रमाशि
व्ह्रम्यामिक यरमामा मक्रार्थ
महरमय नरुः। পরিগ্রহঃ मक्रकृट्जा स्नाय॰ পরিগ্রহোখাশ্চ
सहाविविर्माः।। ইতি বিফুপুরাণে ৪ অংশে ২ অধ্যায়ঃ।।
অন্যচ্চ। অহোস্য দারসংবো-

গঃ কথ ত মৃধ্বিরেতসঃ। দৃষ্ঠা তবোশ্চ শৃঙ্বারণ মুনিঃ কামী বভূব হ।। জিতেন্সিষে হসতাণ সঙ্বাৎ দোষঃ সাণসগিকো ভ-বেৎ। ইতি রশ্ববৈবর্ত্তে শ্রীক্লফ-জন্মখণ্ডে ২৩ অখ্যায়ঃ।। অপি চ। অসতাণ সঙ্গদোষেণ কো ন যাতি পরাভবণ। ত্রিদশৈর্ব-শিতো বহি ভাশনা সহিতো যথা।। ইতি চাণকাণা। কিঞ্চ। যত্র যত্র হিতো জীব স্তমোধো-নেন লজ্জতে। উপহাসায় কিণ ন স্যাদসৎসঙ্গো মনীবিণাণ।। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্বণ।।

সঙ্গণিকা স্ত্ৰী অপ্ৰতিৰূপকথা। ইতি ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ।।

সঙ্গত ক্লী সৌহাৰ্দ্ণ। ইতি হেমচন্দ্ৰ:।।

সঙ্গত তি ব্ভিন্তবাকা । ইতি ভরত: ।। তৎপর্বাব: । স্পাধ না ইত্যমর: ।।

সঙ্গতিঃ ন্ত্ৰী সঙ্গন । জ্ঞান ।
ইতি মেদিনী । ন্যাখনতে ।
আনন্তৰ্যাভিধান প্ৰযোজকজিজ্ঞাসাজনকজ্ঞানবিষ্যো হৰ্থঃ। সাচ বোঢ়া। প্ৰসঙ্গঃ ১।
সঙ্গতিষ্কে সতি উপোদ্যোভাদি-

जिन्नः। यथा সামান্য लक्ष्मांचा॰ প্রসঙ্গসঙ্গতিঃ ৷৷ উপোদ্মাতঃ २। निर्मित्छोत्रनामकष् । चथा भन्नामर्भश्चवर्डकख्डात्न ह উপোদ্যাভসঙ্গতিঃ।। रেভূভা ७। वथा। श्रेजाकश्रमात्। ८१-তৃতাসঙ্গভিঃ ।। অবসরঃ ৪। व्यन खत्रवक्तवाष् । स्था। छ-প্রমানে অবসরসঙ্গতিঃ ৷৷ নি-ৰাহক ৫। কারণভানিৰাহক कार्याष्ट्र । यथा। अनुमातन का-ৰ্য্যভাসন্ধৃতিঃ।। এককাৰ্য্যন্ত্ৰণ ७। এककारी कात्रिष्। बशा হেদ্বাভাসে এককার্য্যকারিদ্ব সক্তিঃ।। ইতি অনুমিতিএন্থে क्रगमीनाठकानकातः॥

मक्रमः श्रू॰ क्री मक्रः। ইত্য
मतः॥ नणाणित्मक्रः। ইতি

श्रू॰ म्यू॰ मक्लिक्म॰ अङ्ग्रिकाया॰

छत्रछः॥ जीशू॰ मा र्षिणूनीछातः। म जितिशः। श्रूथमः ३।

मश्रमः २। উত্তमः ०। यथा।

जितिशः छ मा था। ए श्रूपमः मा जान ।

वाजि निष्क्रं न छ भत्रिक्षाः॥

कृष्टीकात्वक्रभः श्रामः श्रूपमः

मार्मः मृठः। ३। श्रीत्रभः भ-

ন্ধনাল্যানা গুণ ভূষণ বাসসা।

। প্রলোভন ঞালপানে শ্মধ্যন

নাহদ স্ত ।। ২ ।। সহাসন

বিবিক্তেমু পরস্পর সনা শ্রমঃ।
কেশাকেশিগ্রহ দৈচব সম্যক্
সংগ্রহণ স্মৃত ।। ৩ ।। ইতি মিতাক্ষরাগৃতব্যাসবচন ।।

मझतः क्री भगीवृक्षकलः। इंडि यिनिनी।।

मन्द्रः भूः युक्तः। वाभः। चन्नीकादः॥ मन्द्रिः। देखामदः ।। क्रियाकादः॥ विषः। देखि यिनिगे।।

मनवः पू॰ প্রাতঃকালাৎপর॰
মৃহূর্ত্তরয়। যথা। প্রাতঃকাল
লো মৃহূর্তা•ন্ত্রীন্ সলব স্তাবদেব তু। মধ্যার স্ত্রিমৃহূর্তঃ স্যাদপরার স্ততঃ পর॰।। সাধার
স্থিমৃহূর্তঃ স্যাচ্ছাদ্ধ• তত্র ন কাল
রমেৎ। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব•।।
সঙ্গী ত্রি সঙ্গবিশিক্টঃ। যথা।

मही जि मह्नविश्विः। यथा।

जाम्जूरा देनव मरनात्रथानामर्खा श्रि विद्धां मिनः स्वा
हा। मरनात्रथामिक भत्रमा हिछ न कायल देव भत्रमार्थमिह ॥ इकि विक्भूतार्थ ह जार्थ २ ज्यायः॥ সঙ্গীত ক্লী প্রেক্ষণার্থনুতাগীত-वानाः। यथा। भीठवानान्ठाः ত্রফ নাট্য তোর্য্যত্রিকঞ্চ তৎ। সঙ্গীত প্ৰেক্ণাৰ্থে হিমান্ শা-স্ত্রোক্তে নাট্যধর্মিক।।। ইতি ट्यह्यः ॥ न्छागीष्ठामामा শাস্ত্রণা তত্ত্ব সোমেশ্বর ভরত হন্মৎ কলনাথ মতভেদাজ-তুর্বিধণা অধুনা হনুমন্মত প্র-**চলिত । ত**मा ज्यागाः मथा। স্বরাধ্যাৰঃ ১ রাগাধ্যামঃ ২ তা-লাধ্যায়ঃ ৩ নৃত্যাধ্যায়ঃ ৪ ভা-বাধ্যাৰ: ৫কোকাধ্যায়ঃ ৬ হস্তা-ধ্যায়শ্চ ৭। ইতি সঞ্চীত্রশাস্ত্রণ ॥ 🛊 ॥ সঙ্গীতাবসানে তায়ূলদা-ন প্রমাণ যথা। তা বাসুদেবে। প্যনুরক্তচিত্তঃ সংনৃত্য গীতা-जिनदेश क्रमादेतः। नदरसम्पर्ता পরিতোষিতেন তামূলযোগে-ন বরাপ্সরোভিঃ।। তদাগতা-তি নৃবিরাহ্নতাস্ত ক্রফেপ্সযা यानयया खरेथव। क्लानि ग-স্বোত্তমৰন্তি বীরা শ্ছালিক্য গা-श्वर्व मथाश्रु था। कृटकक्र्य। ह जिनिवाम्दानव व्यनु श्रश्थं व्यवि गान्यागाः। विजय त्रगाः इति ভেজনৈব প্রৰোজ্যামাস স

त्रोशिर । इंगिका भाषार्व यूना त्रवृक्षि एउटेनव जामून यथ श्रयकः ॥ देखि द्रिवः एम छान्-यजीहत्र । जनकी जायाः ३८৮ श्रीष्ठः॥

महीिं खी जानाभः। ইতি इनाय्थः॥ मङीठकः॥ महीर्न जि जहीक्ष्णः। ইত্য-यतः॥

সঙ্গোপন॰ ক্লী সম্যক্প্ৰকারেণ গোপন॰। সংপূৰ্বক গুপধাভো রনট্প্ৰভাষেন নিম্পন্ন॰।।

मङ्गः भू॰ मभाक्षिः। हेणा मद्रः॥ म॰ क्षिण्य गृक्ष्टस्य नाना-स्थान विश्वकीनी स्था तृश्रादस रतन म॰ श्रद्धः। म॰ भूबाि श-रश्यानात्न रत्या विस्तुद्धां भ-पिस्तान। मर्थाना॰ मृत्व स्थार्याः । निवस्ता यः मभारमन म॰ श्रद्धः ए॰ विमू र्वूषाः॥ हेलि। हेलस्र श्रीक्रम अकव निवसनः मः अर्थः । ইতি क्रम्ब्य अव्याध्य अव्याध्य । ইতি क्रम्ब्य अव्याध्य अव्याध्य । नामा अश्रम अव्याध्य अवयाध्य अवयाध्

সঙ্গুৰণী স্ত্ৰী গ্ৰহণীরোগঃ ৷ তস্য নিদানাদি গ্রহণীশব্দে জ-खेता ।। जथ मामाना अश्नी-রোগস্য চিকিৎসা মাহ। গ্রহণী মাশ্রিত রোগ মজীণবদুপা-**চরে**९। नज्यतेन मीशनीरयम्ड মন্দাতীসার ভেষজ্যৈ।। দোষণ সাম নিরামঞ্চ বিদ্যাদত্তাতি-সারবৎ। অভিসারোক্ত বিধি-ना जम्यानक विभागत्य ।। (भ-.शानि भर्रे लघुझ॰ शक्षरकानानि-ভি যুত । দীপনানি চ তক্ৰঞ্চ এছণ্যা॰ साजरयस्विवक्।। कः পিথ বিশ্ব চাঙ্গেরী তক্র দাডিফ সাধিতা। যকাগৃঃ পাচষত্যাম• मक्ष मधर्वगणाभि॥ मन्दर्छ-

यि चनीक्रताि ॥ 🕬 । 🔮 स्था-नगर। जानीयन नवदेवना পত ष्रध्मागरकमदेवः । कर्ण् तः চন্দন তিল্ব ত্বক্ ক্ষীরী ভগরাম-रैनः।। जानीम निश्ननी शया। कृतकीयक विखरिकः। अशी वि ডক মরিটেঃ সমভাবৈ বিচূর্ণি रेजः ॥ यावत्छाजानि मर्बानि দদ্যান্তস্থাঞ্চ ভাবতীং। সৰ্চূণ नमाना॰मा अप्तया खलुमर्कदा ।। कर्षमाख मिन थारनग्रभूना-क्षाविक क्रमः। नाभरयम् अङ्गी॰ कामः क्यः श्राम मदत्राहकः ॥ জाতीकवामिष्टूर्ण ॥ 🕸 ॥ कि **बक॰ शिक्षनी**मृन॰ कारतो नवव शक्षकः। त्यायः श्रिकु कत्याना-क ठवा॰ टिक्ब हुर्नस्थ ॥ विकि का याजूनुक्रमा द्रोम दी माछि-মস্য বা। ক্রতা বিপাচ্যত্যামণ প্রদীপয়তি চানলং।। ক্ষারৌ স্ব-क्किका यवकारतो। লবণ প-ঞ্চক মিভি। দৈন্ধব॰ রুচক॰ চৈব বিড॰ সামুদ্রিক॰ গড় মিভি ৷ ব্যোষ শুগী भिन्ननी मतिচानि । অজ্যোদাত্র যবানিকা৷ মাত্-लूक वीजभूतक। ठिजकानिव-ष्टिका ॥ 🗱 ॥ श्रीकृत्वभवाष्ट्रकः

কোনাগর চুর্বেন মিঞ্জিভঃ সগুডঃ । এহৰী গদ মত্যুগ্ৰ তক্ৰ ভূজা শীলিতো জয়ভি৷৷ ঞীফলশলাদুঃ বিশ্বস্যামণ ফলং। গুডস্যাত্র ভা-शब्यः। विवककः॥ 🕬।। हजू-শল সুধাকাণ্ড ভ্রিফল লবণ-खय॰। **बा**र्छाटकाः अष्ठवक्षार्क-मृलावित्व छथा श्नलाथ।। मक দ্ৰবেণ বাৰ্ত্তাকো গুটিকা ভোজ-নোত্তর । ভুক্তাভুক্ত পচত্যা-শু নাশফেদ্গ্রহণীগদ ।। কাস শ্বাস তথাৰ্শ সে বিসূচীঞ্জন। ययः ॥ वाङ्ग्रिश्चिका ॥ 🕸 ॥ मुखकािंविया विख को छें छ॰ मृष्य চূর্ণিত । यथुना क मनानी ए॰ গ্ৰহণী সৰ্বজান্ত্যজেৎ ৷৷ কৌট-क रेख गवः। मूखामि हुर्भ ।। 🟶 ।। त्यात्वा वा यमि वा ब्रक्कः मूशका গ্রহণীগদঃ। গুডেনাধিক সজ্জে-ন ভক্ষিতেনাশু নশ্যতি॥ সৰ্জ্ঞঃ ताल देखि क्लां कि । मर्ब्ब तमहुर्ण ।। 🛊 ।। विद्याय भक्त यव वालक যোচসিক্ষ মাজ পৰঃ পিবভিযো मिवमजरुष। स्मा १७ श्रिक् চিরজ্ঞ গ্রহণীবিকার সাম স শোণিত ৰসাধ্য ৰপি ফিণোতি ।। (मारहा रक्षाहत्रमः। किर्णां छ

इस्ति॥ अञ्बद्य द्वायनकीत्रममा श्वक्ता मदार्कज्ला श्रष्ठमा । চূর্ণীক্ততে অস্থিত জীর চব্য ব্যো-रवज क्रका र्व्याक्र वाटेनः॥ वि फत्र मित्रु बिकला यवानी नाठी-भिधारेनाम्ह भन क्षेत्रारेनः। एषा बिवृष्ठ्रं भनानि ठाकीवरकी ठ टेजनमा भटाम्यथावय ॥ ७॰ जकरयमकरम् श्रमानः यरथके চেফ ব্রিসুগন্ধি ষক্ত । অনেন সর্বাগ্রহণীবিকারাঃ মশ্বাস কাস স্বরভেদ শোখাঃ ৷৷ শাম্যস্তি চা-य कित्र मखताका ईंग्रा भुःखु मा ह वृक्तिदर्ः। खीनाञ्च बन्ना-यय नागनः गाप कनाम्बरका নাম গুড়ঃ প্রাসিদ্ধঃ।। তৈলে ম নাক্ ত্রিবৃৎ ভৃষ্টা ত্রি সুগদ্ধিপল मिक्तं निःश्व मदेव व গৰা । खट्ड कन्गानमूर्वत्क॥ कन्गान-क खड़ा। ।। निश्चनी निश्चनी-মল চব্যক গজপিপ্ললী। খা-नाकक विषकानि यवानी मति-ठानि ह। बिकना ठाक्रत्यामा ह निनी জीतक खबा। रेमक्रवः রৌমক চাপি সামুদ্র রুচক বিড॰॥ আর্থধশ্চ ত্বক্ পশ্রু॰ मृत्यना हानमभिका। एकी।

<u> भक्त यवा टैक्टर প্রত্যেক কর্ম</u> मिछ।। पृषीकाषाः भनानाज চদারি কথিতানি হি। ত্রিবৃতাষাঃ भनानारकी एउमार्कजुना ज्या ॥ जिलटेजन भनानारकी ठायन-का। तममा ज्। अञ्ख्य मिन मर्बः শনৈ মৃ দিমিন। পচেৎ।। উড়ুম্বরণ **ठायलक॰ तामत॰ वा यथायन ।** ভাবমাত্র মিদ॰ খাদেভক্ষেদ্বা यथानन ।। निथिनान् अश्गी-ধরাগান্ প্রমেহাণ দৈচকবি॰শ-তি°। উরোষাত° প্রতিশ্যায়° मिर्निनाः रङ्किमःक्यः॥ ख्रान-পি হরেৎ সর্বান্ সর্ব্যাৎ কাস্তিণ যতি॰ স্বরং। গিচু পাঠাম্বযাজ-ন্তি রক্তপিত্তঞ্চিদ্গ্রহণ।। খাতু-कीरना वयकीनः खीयू कीनः क-ষী চ যঃ। তেভ্যো হিতশ্চ বন্ধ্যা-रेय यहाकला। १८का खडः ॥ य-हाकना। कथुडः ॥ 🛊 ॥ अयो-ভানাণ সুপঞ্চানাণ শ্বিত্রাণাণ লি-সচন্বচা । দর্গিঃ প্রস্থে পলশত। তামুপাত্তে শলৈঃ পচেৎ ৷৷ পি-প্ললী পিপ্ললীমল চিত্ৰক গজ-शिश्रनी। शानाकानि विषक्रानि मागद्र॰ यदिहानि ह ॥ ना ठाजरभाग ठ कनिकाजानि

मनाइ

বৈদ্ধবং । একৈকস্য পলং চৈকং बिवृत्छाके भगानि ह।। रेडनमा **ठ भनानारकी खडार भक्षाना**न ব ত। আমলক্যা রুসস্যাত্র প্রস্থ ত্রষ মুদীরিত ।। তাবৎপাক প্রদরীত মৃদুনা বহিনা ভিষক্। याव शर्बी अतनभः मा। ६ उति । ন ৰবতারবেৎ।। ঔডুম্বর চাম-नक वामत वा यथाकन । छा-वचाल भिनः थाटम छक्क टक्षा यथा-नल ।। অনেটনৰ বিধানেন श्रिकुक मित्न मित्न। निरुखि खर्नीतागान् अष्ठानात्मां जग-म्पतान् ॥ चत्र माना इ कट्छा ग শুল্মোদর বিসূচিকাঃ। কামলাণ পাণ্ডুরোগঞ্চ প্রমেহাণ্টেশ্চকবিণ-শতি ৷৷ বাত শোনিত বীসৰ্গ मक शक श्लीयकान्। वाछ शिख ककान् भवीन् पुकीन् एकान् मगाहरत्य।। बाधिकीना वयः-कीवा जीवू कीवान्छ स्व नद्राः। তেভ্যো হিতো গুডো ২য় স্যাৎ वस्ताना गि भूखनः ॥ वृरगा ৰল্যো ৰৃ•হণশ্চ ব্যসঃ স্থাপনঃ পর: ৷ স্ব্যাওকল্যাণগুডঃ ৷৷ 🛊 ৷৷ অতীসারাধিকারলিখিত বিল্বং ভৈল্পাত্র হিত । ইতি গ্রহণী-

রোর্গাধিকার: । ইতি ভাব-প্রকাশঃ ॥

मञ्जाम ७ १ १ ० क गूरका है ि किविक्रकार । जनमः आय९ १ ७ मः आमगर । १ १ मः आम-विश्व । श्रिकेट वाज्य भाषा निर्द्धा छि ६ के त्र १ विश्व विश्व व्याप्त निर्द्धा काण्य तमार्थ । १ १ विश्व व्याप्त मार्थ । १ विश्व व्याप्त मार्य । १ विश्व व्याप्त मार्थ । १ विश्व व्याप्त मार्य । १ विश्व

সঙ্গানঃ পূ
্যুদ্ধ। ইত্যমরঃ।।
সঙ্গানপট্যঃ পূ
্রণবাদ্য
। রণতূর্যার সংগ্রামপট্রো
২ ভর্ষডিভিনঃ। ইতি ত্রিকাওশেবঃ।।

র্থ সংগ্রাহঃ। ইত্যমরভরতো সঙ্গুহী পুং স্বটজবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

সজ্বঃ পু॰ সমূহঃ। ইত্যমরঃ॥
সজাতীয়ানাণ বিজাতীয়ানাঞ্চ
জন্তুনাণ বৃন্দে সজ্ব নাথোঁ স্যাণ
তাণ। যথা ভিক্ষু সজ্বঃ বণিক্সার্থঃ। সণ্হন্যতে পরিচ্ছিদ্যতে
হনেনেতি সজ্বঃ। সণ্পূর্বাৎ হন
যাতো নামীতি ডঃ নিপাতনাৎ
হস্য যুঃ। ইতি ভরতঃ॥

সজ্বচারী পু॰ ,মৎসাঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ। বহুভিঃ সহগামি-নি ত্রি।।

সঙ্গজীবী পুশ বাতীনঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

সজ্ঞটিঃ পুণ অন্যোন্যবিমর্দণ ।
যথা। নৈবান্যত্র মদান্ধ সিন্ধুর
ঘটা সজ্ঞট ঘণ্টারণৎকার ত্রস্ত
সমস্ত বৈরিবনিতা লব্ধস্তুতি ভূপতিঃ। ইতি বাল্মীকির্কৃত্যকাষ্টকস্তোত্রণ। গঠনণ যথা।
মৃদাহরণ সজ্ঞট প্রতিষ্ঠাহ্বান
মেব চ। স্নপনণ পূজনক্ষৈব বিসজ্জন মতঃপরণ। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বণ। চক্রবিশেষশ্চ।।
সঙ্গেটনণ ক্লী স্ত্রী মেলনণ।।

গঠন ।। ঘটনা। ইতি কেচিৎ।। সঙ্ঘটা স্ত্রী লভা। ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা।।

সঙ্গতলঃ পু॰ মিলিতপ্রতলদ্বয়• । জোডহাত ইতি ভাষা। ইত্য-মরঃ ।৷

সঙ্ঘপুষ্পী স্ত্রী ধাতকী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

मध्यर्यः भू॰ मध्यर्यनः॥ म्बर्धाः। मण्मर्यः। ইতি मक्तत्रवातनो ॥ मध्यापिता खी यूजाः॥ मध्नी ॥ जनककेकः। ইতি মেদিনী॥ यूनिः। ইতি বিশ্বः॥

সঞ্জাতঃ পু॰ সমূহঃ। নরক-ভেদঃ। ইত্যমরঃ।। হনন॰। ইতি মেদিনী।। কফঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। নাটকে গতি-বিশেষঃ। ইতি কেচিৎ।। সজ্যাতপাল্রিক। স্ত্রী শতপুষ্পা।

ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।
সঙ্গুষিত । তি সম্যাগ্যোষণাশ্রসঙ্গুষ্ট । যা । সংপূর্বঘুষধাতোঃ
ক্র প্রত্যযে ক্রতে বা রুষাম হৃষ
স্থার সংঘুষাস্বন ইত্যনেন বিকল্পেন ইমা নিষ্পান্ধে । ইতি
মুগ্ধবোধব্যাকরণ ।।

সচিঃ স্ত্রী শচী। ইত্যমর্টীকা-

সজাতী

वा॰ तांबाख्याः ॥ সচিল্লকঃ ত্রি ক্লিমচক্ষু। ইতি শব্দরত্বাবলী।। मितः पू॰ मञ्जी। महायः ॥ ইভাসরং।। क्रयः ४ जूतकः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ मितिगमः भू विमर्लः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ मही जी गही। रेखानी। भह-তে ব্যক্তণ বক্তি শচী শচঙ বা-চি তালব্যাদিঃ নামীতি ইঃপা-চ্ছোণাদীতি পকে ঈপি শচী। কৌশিকী চশচীকোশাতকীতি वर्गातम्यानायाः जानवारम्य পঠাতে। गंচी मञ्जां पिम्ह ভ ब সচতে আপ্যায়য়তি ইন্দ্র মিতি ষচঙ সেচনে পূৰ্বতঃ ইঃ ঈপ্চ। ইত্যমরটীকাষা ভরতঃ ॥ সচিঃ শচীতি ভরতদ্বিরূপকোষশ্চ ৷৷ महीनननः भूः भहीमूळः। मह क्य खः ॥ देठ जनार प्रवः। यथा । भारक मूनि राम यूरमनूगरण श्रुरग जिर्था काञ्चनरभीर्गमाग । ত্রৈলোক্যভাগ্যোদয পুণ্যকী-र्छि र्फर्नः महीनन्त्रम वाविता-मीए।। इंछि टेइडनाइस्टाप्य नार्षक ॥

मटिकः श्रु॰ जागुः। ইতি भक्तमा-ना। टिकेश मह्दर्खभारम जि॥ সচ্চারা জ্রী হরিদ্রা। ইভি শব্দ-व्यक्ति ॥ मिकि की बना है जि मूक-रवाधवाकत्रवः ॥ मिका मान की निज्ञ छ। नमू-थयक्षणः। जिक्र उका। यथा। অহ দেবো ন চান্যোম্মি এক্সৈ-বান্মিন শোকভাক্। সচ্চিদা-নন্দৰপো ২হ° নিত্যমুক্তস্বভা-विवान्।। ইত্যাङ्गिक्डवुः।। मा-कात्रदाविद्यवाला वि। चया। মুঙ্গন্দ সচিদামনদ প্রণিপত্য প্রণীযতে। ইত্যাদি মুগ্ধবোধ-नगकत्रन ॥ সজয়ালঃ ত্রি পঙ্কিলঃ। ইত্য-अतः ॥

সজাতিঃ পু॰ স্থানজাতি স্ত্রী भूरमाः भू<u>वः। यथा।</u> जवत्र् ভাঃ সবর্ণাসু জাযত্তে হি সজা-তशः। অনিন্দ্যেষু বিবাহেষু **भू** नाः मञ्जानवर्कानाः ॥ ३ छि মিতাক্ষরাযাণ আচারাধ্যায়ঃ॥ সমানজাতৌ ত্রি ৷৷

সজাতীয়ঃ ত্রি সমানধর্মাক্রান্তঃ । यथा। मजाठीरयः जनः मृथः তিরশ্চা॰ পু॰ নপু॰সক॰। ইত্য-মুরঃ।।

সজূঃ ব্য সহার্থঃ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী ভরতশ্চ॥

সজুই ত্রি প্রীতিষুক্তা। সেবাযুক্তা। ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণ

। জুষী প্রীতিসেবনযোঃ ।
জোষণ জুট্ সহ জুষা বর্ত্ততে
যা সা সজুই। ইতি তট্রীকাষা
দুর্গাদাসঃ ।। তাপসঃ । ইতি
সংক্রিপ্তসারব্যাকরণ ।।

সজ্জঃ ত্রি সমদ্ধঃ। ইত্যমরঃ।।
সন্তৃতঃ। ইতি বিশ্বনেদিন্যো।।
নিভ্তঃ। ইতি শব্দরত্রাবলী।।
সজ্জাযুক্তশ্চ।।

সজ্জন ক্লী রক্ষণার্থ দৈন্যস্থান । চৌকীতিখ্যাত । তৎপর্যায়ঃ । উপারক্ষণ ২। ইত্যমরঃ ॥ যউঃ। ইতিমেদিনী ॥ সজ্জা চ॥

मब्जनः श्रुः मिक्याणा मब्जाणा मब्जनः श्रुः मिक्याण्डदः। ख्यायाः। महाज्ञनः २ क्र-लीनः ७ व्यार्थाः ४ मुख्यः ६ माधुः ७। ইত্যমরः।। ज्ञलकः १ मधः ৮ সাধুজः २। ইতি শব-রত্মাবলী।। মেদিনীকরমতে বাচ্যলিকো ২য়া। ত্রাক্ষণং ব্যা। দাস্ত উবাচ। নিজাচার গ্রাহিণো যে সর্বস্তো বেদসন্মত । পাপাভিলাস রহিতাঃ সং
জ্জনা স্তে প্রকীর্ত্তিতাঃ ।। ইতি
পাঘ্রে ক্রিয়াযোগসারে ১৬ অধ্যায়ঃ ।। তৎসঙ্গপ্রশংসা যথা
। নলিনী দলগত জলবত্তরলং
তদজ্জীবন মতিশ্বচপলং ক্ষণ
মপি সজ্জন সঙ্গতি রেকা ভবতি ভবার্ণবত্তরণে নৌকা ।।
ইতি শ্রীশক্ষরাচার্য্যক্তমোহমুদ্রারঃ ।।

मञ्जूना जी नायकम्गादाङ्गार्थ गज मञ्जीकत् १ । छ । यह । यह । दे छामतः ।।
मञ्जा जी दिनः। माज दे छि
छाया। मझा है । माज छ ।
दे छाया। यम् जंशादा छादि
जा । श्रेष्ठ । विष्णि । दे छि
स्वाकत् १ ।।

সজ্জিতঃ ত্রি ভূষিতঃ। রুতসজ্জঃ

11 বর্ষিতঃ। সম্বদ্ধঃ। ষস্জ্জ

ধাতোঃ ক্ত প্রত্যায়েন নিম্পন্ধঃ।।

সঞ্চঃ পুং পুস্তকলেখনার্থগল্রচয়ঃ। সাঁচ্ ইতি ভাষা। যথা।
শ্রীতাডীপল্রজে সঞ্চে সনে পল্র

সুস্ঞিতে। বিচিত্রকং বিপার্শ্বে

চ চর্মণা সংপুটীক্তে।। রক্তেন

অথক্নকেন মূর্দ্ধন্যাবর্দ্ধিতেন চ
। দৃত্যুক্ত সুবন্ধেন এবংবিধক্রতেন চ।। যস্ত দাদশ সাহসীং
সংহিতা মুপলেখ্যেৎ। দদাতি
চাভিযুক্তাষ স ষাতি পরমাং গতিং।। ইতি দেবীপুরাণে বিদ্যাদানমাহাত্ম্যফলনামাধ্যায়ঃ।।
ক্ষেৎ পুং প্রতারকঃ। ইতি
সিদ্ধান্তকৌমুদী।।

সঞ্চঃ পু॰ সমূহঃ। ইত্যমরঃ।।
সংগ্রহঃ। যথা। শক্তেনাপি হি
শুজেণ ন কার্য্যো ধনসঞ্চয়ঃ।
শুজো হি ধন মাসাদ্য ব্রাহ্মণানেব বাধতে।। ইত্যাক্লিকাচারতত্ত্বণ।।

मश्यन क्षी मश्यः। यथा मः यर्छः। ठंजूर्थ ११नि कर्त्वग्र यश्चिमश्यन विदेखः। ठठः मः श्यनामृक् यत्रण्यां विशीयः তে।। ইতি শুদ্ধিতব্বং।।

मक्षी वि मक्षयिनिष्ठः। मः
গ্রহকর্তা। मक्ष्यमकामछादर्थ

हेन् প্রত্যযেন নিষ্ণায়ঃ। যথা।

मक्षयी নাব্দীদ্বি। ইতি মহাভারতং।।

সঞ্চরঃ পু॰ সেতুঃ। ইতি ত্রিকা-ভুশেষঃ।। সঞ্জো নির্গমো ২মুপথঃ। ইতি ভরতধৃতরত্বমালা।। দেহঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।
সঞ্জন ক্রী স্ত্রী কম্পনং।। সং
পূর্ব চলধাতো রনট্ প্রত্যযেন
নিষ্পন্নং।।

সঞ্চানঃ পুণ শ্যেনপক্ষী। শিক্রে ইতি ভাষা। ইতি কেচিৎ।। সঞ্চাষ্যঃ পুণ যজ্ঞবিশেষঃ। ইতি মুশ্ধবোধব্যাকরণং।।

সঞ্চারঃ পুণ দুর্গদঞ্চরঃ। ইত্যমরটীকা।। গমনণ। যথা। সক্ষারো রতিমন্দিরাবধি ইত্যাদি
কাব্যপ্রকাশঃ।। গ্রহাদেরাশ্যন্তরসংক্রমণঞ্চ।।

সঞ্চারজীবী^ন ত্রি শরণাপন্নঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

সঞ্চারিকা স্ত্রী। ইতামরঃ
।। যুগলং॥ সউনী।। ঘুাণং।
ইতিমেদিনী।।

সঞ্চারী পুণ ধূপঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ। বাযুঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা ।। ভাববিশেষঃ। যথা।
স্থাষি সান্ধিক সঞ্চারিপ্রভেদেঃ
স্যাদ্রতিঃ পুনঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। অন্যচ্চ। সঞ্চারিণঃ
প্রধানানি দেবাদি বিষয়া রতিঃ
। উদুদ্ধমাত্রস্থায়ী চ ভাব ইত্য-

ভিধীষতে৷৷ অপিচ৷ নানা-ভিন্য সম্বন্ধান্ ভাব্যস্তি রসান্ যতঃ। তম্মান্তাবা অমী প্রোক্তাঃ স্থাযি সঞ্চারি সাত্ত্বিকাঃ ॥ বাৎ-मलात्रममकातिर्गा यथा। मक्न-तिर्ग श्निक मका इर्व भवान-যো মতাঃ। বীররসসঞ্চারিণস্ত। ধৃতি মতি গৰ্ব স্মৃতি তৰ্ক রোমা-क्षाः। ইতি माहिত्यमर्भाग ७ পরিচ্ছেদঃ ॥

मक्षातिनी खी इ॰मनि। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

मकानी खी ७९१। यथा। म-ঞ্চালী প্রোচ্যতে গুঞ্জা সা তি-সো ৰূপক ভবেৎ। ইতি যুক্তি-কল্পতরুঃ 11

मक्ष्वा जी मृषीकर्गी। इंडि শবরত্বাবলী।।

मरक्ष्य जि मक्ष्यनीयः। मरकः তব্য । সংপূৰ্বক চিঞ ধাতোঃ কৰ্মাণি য প্ৰত্যযেন নিষ্পন্ন ॥

সঞ্জঃ পু॰ ব্রহ্মা।। শিবঃ। ইতি त्यिनि ॥

मक्षवन॰ क्री ज्ञात्नानाजिम्थ-গৃহচতুষ্টয় । তৎপর্য্যায়ঃ। চ-जुः भानः २। इंजामतः॥ मःय-यन ७ ठजुः गाली ४। देखि महे। खी कहे।।। क्ला देख

ভরতঃ ৷৷ সঞ্জীবন ৫ শালা ৬ निनयः १ हजुः भानकः ৮। ইতি শব্দরত্বাবলী।। সঞ্জা ত্রী ছাগী। ইতি ত্রিকাণ্ড-(अवः ॥

मक्षीवन॰ क्री मक्षवन॰। ইতি শব্দরত্বাবলী।। সম্ক্রকারেণ व्यानभात्रनक ॥

मञ्ख् की मध्छ । ইতি भक ठिखका।।

সঞ্জঃ ত্রি সংজঃ। ইত্যমর-টীকাষাণ ভরতঃ।।

সঞ্জ্ঞপন॰ ক্লী সংজ্ঞপন॰। ইত্য-यतः ॥

সঞ্জপ্তিঃ স্ত্রী সংজ্ঞপ্তিঃ। ইতি ट्याञ्खः ॥

সঞ্জা স্ত্রী সংজ্ঞা। ইতি মে-मिनी।।

সঞ্জুঃ ত্রি সংজুঃ। ইত্যমরঃ॥ সঞ্জরঃ পু• সংজ্রঃ। ইত্য-बद्ध ॥

मिं की जिं। यथा। जिं। मिं। क्षित कृष्ठिक रख শিখাযাণ ব্ৰতিনা মপি।। ইতি भक्तव्वावनी ॥

त्यविक्रीका अस्ति। १६७ सम् अक्षावकी ।

महोकः भू जिन्हः। इति नका

সটিঃ ন্ত্রী শসী। ইতি শব্দরত্না-বলী গ

সটিকা স্ত্রী গম্বপত্রা। স্টী। ইতিরাজনির্ঘন্টঃ।।

मिन खी भन्न जवावित्मयः। वन-আদা ইতি অমহরিদ্রা ইতি চ ভाষা। আবেহলদী ইভি কো-करन श्रमिका। তৎপर्यायः। শটী ২ গন্ধশটী ৩ সুগন্ধা ৪ সটিঃ ৫ শটিঃ ৬ গন্ধমূলা ৭ গ-अभूनी ৮ शनानः २ कर्बुतः ३० ষড্গ্ৰন্থিকা ১১ কৰ্বুরঃ ১২ গ ন্ধোলিঃ ১৩ গন্ধমূলকঃ ১৪। इंडि भक्तप्रावनी ॥ ১৫ ষড্গ্ৰন্থা ১৬ অম্লনিশা ১৭ वधः ३४ शक्काती ३२ मंदिका २• भनामिका २३ ममूजा २२ তृनी २७ দূৰ্বা २৪ গন্ধা २৫ शृ-थूनमानिका २७ मोगा २१ शियाख्वा २৮ शक्तवधः २२ । অস্যা গুণাঃ। সুতিক্তম্বং। অ-**ञ्जतभद्यः। नध्यः।** উकद्यः। রুচিপ্রদত্ব•। জর কফাসু কণ্ডু সঞ্জীন

खनाम वर्जामयनानिष्। इन् माप्रका इंजि त्राक्तिर्यकः॥ मह्ना खी शक्तिर्जाः॥ वामाः॥ देजि मःकिश्रमाद्रागिनिवृद्धिः॥ मठे क श्रोद्धि। देजि कविकन्न-फ्रमः॥ मश्रामिः। क माठेयि । श्रेतिर्धि गज्रमः मृत्र मःकृष्ण्यू । देजि मूर्गामामः॥

সঠী স্ত্রী শঠী। ইতি রাজ-নির্যক্টঃ॥

সণসূত্রণ ক্লী শণসূত্রণ। ইত্যমর-টীকাষাণরাযমুস্কটঃ ।।

मखः भू यखः। इंडामत्रिका॥ मिखनाः पुर मन्दर्भाः। माँ पानि ইতি ভাষা। যথা। গাষসংফ্ল-ষরাচ্ছাগ দেবামানি চ খানি-বৈ। ভুক্তানি বৈ রদস্কৃত্য তে-या मञ्जानि शालिना ।। निशा-তিতানাণ ভূপৃষ্ঠে উদ্ধৃতাকি নি-রীক্ষতাণ। সভিশৈ রপক্ষয়ন্তে নরৈ র্যাম্যে শুখাততঃ।। ইতি गार्कटख्यभूतात्व ३८ व्यथायः ॥ সঙীনণ क्री খগগতিক্রিয়া ইত্যমরঃ 🛚 খগানা পক্ষিণা গতৌ স্থানান্তর সঞ্চারে এতাঃ ক্রিষাঃ ব্যাপারাঃ। কা স্তা ই-ত্যাহ প্রথমতীন প্রভীন উ

ভ্রমনাষ ক্রম বন্ধঃ। উর্দ্ধৃণ ডীনণ উত্তীনণ বিষদামনণ। দংগতণ ডীনণ সঞ্জীনণ বৃক্ষাদৌ পত্তন মিতি।। পৃথক্ পৃথক্ পক্ষিগতি ক্রিয়াসু প্রতীনণ তির্যাগ্যমনণ উত্তীনণ উর্দ্ধৃগমনণ সণ্টীনণ স-ক্রতগমন মিত্যন্যে। ও জী ও ষ গতৌ ডীঙ চ নভোগতৌ ভাবে ক্রঃ সুন্ধাদ্যোদিতি নম্বণ। ইতি ভরতঃ।।

সৎ ত্রি সত্যা সাধুং।। বিদ্যা মানা এশস্তা। অভাহিত। ইতামরঃ।। ধীরঃ। ইতি মে-দিনী।।

সৎ ক্লী বৃদ্ধা যথা। ভগবদ্যীতা। ওস্তৎ সদিতি নির্দেশ
শো বৃদ্ধণ ব্রিবিধঃ স্মৃতঃ। বাদ্যা বিদ্ধান বিদাশ যজ্ঞাশ বিহিতাঃ পুরা।। ওস্তৎ সদিতি
বিবিধা বৃদ্ধান জগদীশ্বসা
নির্দেশা হভিধান বৃদ্ধবিদ্ধি
শিচন্তিত । তত্র ভাবদোমিতি
ব্রেদ্ধতাদি শুভিপ্রসিদ্ধে রো
মিতি বৃদ্ধান নাম। পাতঞ্জলি
রপ্যাহ অসৈয়ব বাচকঃ প্রণবঃ।
অস্য বৃদ্ধার ব্যাদি তু বাচ্য বাবিষ্ণু রিত্যাদি তু বাচ্য বা-

ठकरवा बर्डिंग्ना उपा है 1 জগৎকারণত্বেন প্রসিদ্ধত্বাদ-বিদুষা পরোক্ষাক তচ্চকো-হপি বন্ধানাম। এবং পর-মাৰ্থ সন্ত্ৰ সাধুত্ব প্ৰশস্তত্তাদিভিঃ সচ্চনোপি। অত স্তেন ত্রিবিধ निर्फिर्णन। यदा यमाय॰ जिवि-धा निर्फिण एउम शतमाञ्चना वाकागारमा निर्मिष्ठाः ॥ 🗱 ॥ বৈদিকে কৰ্মণি তেষাণ প্ৰথমতো নির্ফেশো যথা। তম্মাদোমিত্য-দাহত্য বজ্ঞ দান তপঃ ক্রিযা। প্রবর্ত্তম্ভে বিধানোক্তাঃ সতত बक्रवामिनां ।। यत्रादम्यः बक्र-(व) निर्फिण उत्थादमाभिज्यमा-হুত্য উচ্চার্য্য ক্রতা বেদবাদিনা यळामाः भार्याकाः कियाः भठठ मन्दरकलाणि श्रवर्डस्ड প্রকর্ষেণ বর্ত্তপ্তে সগুণা ভবস্তী-তি ভগবান্ শক্ষরাচার্য্য চর্ণাঃ। তদিত্যনভিসন্ধায় যজ্ঞ দান ত-পঃ ক্রিয়া। দান জ্রিয়াশ্চ বিবি-ধাঃ ক্রিষক্তে মোক্ষ কাঙ্ক্ষিভিঃ ॥ ভদিভি বন্ধণো হভিধান মুদা-ছতা ইতানুষঙ্গ। অমভিসন্ধা-ষ কৰ্ম্মণঃ ফল মিভি শেষঃ। ত च्यां एका जिमसान विना यू-

মুক্ণা কর্ম কর্ত্তব্য মিভ্যপি বো-ধ্যণ। সদ্ভাবে সাধুভাবে চ সদি-ত্যেতৎ প্রযুজ্যতে। প্রশস্তে কৰ্ম্মণি তথা সচ্ছকঃ পাৰ্থ যুজ্য-তে।। ষতো বিদ্যমানজন্মনি উৎক্রম্ট চরিতে চ সদিত্যেতৎ প্রযুজ্যতে অতো যজ্ঞাদৌ ক-শ্বাণি প্রথমতঃ সক্তব্দঃ প্রযুজ্য-**७।** ইত্যেকাদশীতত্ত্ব ॥ 🛊 ॥ অন্যৎ সন্শব্দে দ্রুইব্যং ॥ मध्यनीनः भू॰ मध्यताख्यः। यथा। मध्यनीनाम भाषाय अफरव मञ्जविकंट । मम्ग्र স্তোত্ৰ মিদ পুণ্য সৰ্বকাম কল-প্রদ•॥ ইতি বিশ্বসারতন্ত্রে বটু-**কভৈরবস্তোত্র** ॥ সভত ক্লী নিরস্তরক্রিয়া ৷৷ ভ-দ্বতি ত্রি। ইত্যমরঃ।। তৎপর্যা।-ষা অনবরতশব্দে নিত্যশব্দে চ দ্ৰক্ষৰ্যাঃ।। অপি চ। সততে ত্ব-নবরতানারতাশ্রাম্ভ সম্ভত । প্রসক্তাসক্ত নিত্যাজসানদ্ধা-বিরতানিশ ।। ইতি জটাধরঃ।। সতত্ব॰ ক্লী 'স্বভাবঃ। ইতি হেম-**क्यः** ॥ সতর্কঃ ত্রি তর্কেণ সহবর্ত্তমানঃ। সাবধানঃ। ইতি লোকপ্রসিদ্ধঃ

সতানশঃ পু॰ গৌতমমুনিপুত্রঃ । সচ জনকরাজপুরোহিতঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী ৷৷ <u>শতিঃ ত্রী দান ।। অবসান ।</u> ইতি সাভিশব্দটীকাযাণ ভরতঃ৷৷ मठी द्वी पूर्गा॥ माश्री। देखि (मिनी।। भोतासुमृ िका। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। দানং।। অব-সান । ইতি নানার্থ সাতিশব্দ-টীকাষা ভরতঃ।। 🟶।। স্থানবি-শেষে সভ্যফৌত্তরশতনামানি यथा। तन्त्रावाठ। সर्वशा मई जु-তেষু অফব্যা সৰ্বতো ভূবি। স-প্তলোকেষু যৎকিঞ্চিত্রছিত ন মষা বিনা।। তথাপি ষেষু স্থানে-ৰু জন্টব্যাঃ সিদ্ধিমীপ্সভিঃ। স্ম-ৰ্ত্তব্যা ভূতিকানৈ ৰ্বা তা বক্ষ্যা-মি প্রযন্ততঃ।। বারাণস্যাণ বি-नानाकी देनियर विक्धातिनी । প্রযাগে ললিতাদেবী কামুকা गक्षभाषता। भानतम अभूषा-নাম বিশ্বকাষা তথেশ্বরে। গো-মস্তে গোমতী নাম মন্দরে কা-মচারিণী।। মদোৎকটা চৈত্র-রথে জযন্তী হস্তিনাপুরে। কা-ন্যঙ্গজে তথা গৌরী রম্ভা মল-

যপৰ্বতে।। একামুকে কীৰ্ত্তি-

मजी विश्वा॰ विष्यश्वदत विषूः । পুষ্ণরে পুরুষ্ভতি কেদারে মার্গদাযিনী।। নন্দা হিমবতঃ পৃষ্ঠে গোকর্ণে ভদ্রকর্ণিকা। স্থা-নেশ্বরে ভবানী তু বিল্বকে বিল্ব-গত্রিকা।। শ্রীশৈলে মাধবী নাম ভত্রা ভদ্রেশ্বরে তথা। জ্বা ব-ताहरेगल जू कमना कमनानरम ।। इन्द्रकाष्ट्राञ्च इन्द्रानी कानी कालक्षदा ७था। मशालिएक जू किंग मारकार्टे क्यरमधुद्री॥ অত্র কপিলাম্বরা ইতি চ পাঠঃ ৷৷ गान्यात्म महारमवी निवनिरङ्ग জনপ্রিয়া। सांशाभूगा। अभाती তু সন্তানে ললিতা তথা।। উৎ-शलाकी महमात्क हित्रगात्क यः ट्राब्शना। शश्याः यहना नाय विभना शूक्राखाखाय। विभागा-या गरयात्राकी लाहेला भूखुवर्क त्। नातायनी मूलार्स **ज् बिक्** टि इन्डमून्नती।। विशूरल विश्रे ना नाम कन्यानी मनगाठतन । किं देवी का दिने दिन् मुगन्ना बाधदव वतन ।। त्गामा अदब जिः मक्षा। जू गन्नाषादा त्रिश्रिया। **শिवक्र८७ गिवानका निक्नी एक**- ∥ বিকাতটে ৷৷ রুক্মিণী দারবত্যাস্ত

ताक्षा वृन्मावत्न वत्न। तमवकी মথুরাষাম্ব পাভালে পরমেশ্বরী॥ চিত্ৰকূটে তথা সীতা ৰিন্ধো বি-क्याधिरामिनी। मशाबादत कती-রা ভু হরিশ্চন্দ্রে তু চন্দ্রিকা।। র-মণা রামতীর্থে তু যমুনাযা • মৃগা-वर्णे। कत्रवीदतः यहानश्री समा-দেবী বিনাষকে।। অরোগা বৈদ্য-नारथ जू गर्गकारल गरर्भती। ज-ভবে ত্যুক্তীর্থে তু অমৃতা বিশ্ব-কন্দরে।। উষ্ণভীর্থেত্যত্র অশ্বতী-र्थिक न गार्ठः ॥ माण्टका माण्यी नाम बाहा बाट्यद्र भूद्र । इश-লাণ্ডে প্রচণ্ডা তু চন্তিকামরকণ্ট-**ब्ला।** भारमश्रद वज्ञादम् थ-ভাষে পুষ্ণরাবতী। দেবমাতা সর-স্বত্যা॰ পারা পারাতটে মতা ॥ य-হালষে মহাভাগা প্ৰোক্যাণ পি-बरनचती। मि श्वि। क्रव्यांटि তু কার্ত্তিকেযে ভূ শঙ্করী।। উৎ-পলাবর্ত্তকে লোলা সুভদ্রা শো-**१मङ्करम । महामिद्धवरन नन्दी** রনঙ্গা ভরতা শ্রমে ॥ জালন্ধরে বিশ্বমুখী তারা কিছিন্ধপর্বতে ৷ प्तिवनाक्रवतन शुक्ति (श्रीश काश्री-त्रमक्षा जीयात्मवी हियादजी চত্টি বস্তেশরে তথা। কপাল

মোচনে শুদ্ধি স্মাষা কাষাৰরো-र्दि ।। अद्याकादन अनि नीम ধৃতিঃ পিখারকে তথা। কালা তু ठळ जानाय। यटाहाटम निकातिः ती।। स्वनाया प्रमुखा साम तक्या। वर्कनी उथा। असी का बतनादी वनवीदन बटनामका ॥ यत्रश (इसकृटके कू अभूष्य महावामिनी १ का अन्तर्थ रमनीका छू निधि देवं धर्मानद्य। भाषा दान्य-मत्म भाईजी भिवनमिरधो। एतव-লোকে তথেন্দ্ৰাণী বন্ধাস্যেযু স-बाजूना॰ देवकेवी उथा। व्यक्क्किजी भाजी बाह्य द्रायामू ह जिल्लाखना া চিত্তে বন্ধকলা নাম শক্তিঃ সৰ্বশরীরিণাণ। 🟶 । এতদক্ষেশতঃ প্ৰোক্তণ নামাঊশত মুত্তমণ।। অ-কৌত্তরঞ্চ তীর্থানা শত নেত-मूमाञ्चल। यः भरिष्कृत्यादाभि नर्बभारेभः अयू ठारा ।। अयू ठी-থেষু ষঃ ক্লবা স্নানণ পশ্যতি মা-নবঃ। সর্বপাপবিনিশ্মুক্তঃ কর শিবপুরে বদেৎ।। মস্ত মৎপর-শংকাল করোত্যেতেযু মানবং। স ভিত্বা ব্ৰহ্মসদন পদমভ্যেতি শান্ধর ।৷ নামাইশতক মস্ত

व्यावरयिक्वियमित्रिशे। जृजीयाया यथाकिमा॰ वरुभूत्वा ভবেমরः ॥ शामात्न आक्रकात्न वा अ-इनाइनि वा भूनः। प्रवार्कन-विरधी विद्यान् शर्यन् बन्नाधिश-क्छि।। धर॰ बम्डी मा ठल ममा-राश्चीन गाश्चना। अ কালে চ দক্ষ প্রাচেতসো ভবৎ ৷৷ भार्वे । हा अवत्या नियम हार्यः ধারিণী। মেনাগর্ত্ত সমুৎপন্না ভুক্তি মুক্তি ফলপ্রদা।। অরুম্বতী ব্দপস্তোতত্তদাপ্তা যোগ মুত্তমণ। পুৰুরবাশ্চ রাজর্ষি লোকেযু জ-যতা মগাৎ।। যযাতিঃ পুত্রলা-ভন্ত ধনলাভন্ত ভাৰ্গবঃ। তথা-ন্যে দেব দৈত্যাশ্চ বাহ্মণাঃ ক্ষ-खिरा खथा।। देवनाः मूजाम्ह বহবঃ সিদ্ধি নীযু ৰ্যথেপ্সিতা । যত্রৈতল্লিখিত তিন্তেৎ পূজ্যতে দেবসিমধৌ।। ন তত্র শোক-দৌর্গত্য॰ কদাচিদ্পি জাযতে । ইতি মৎস্যপুরাণে ১৩ অধ্যাষঃ शकश मार्विवी। यथा। यम-**छेवा** । माविजीवत्रनात्न प्रः সাবিত্রীকলা সতী। প্রাপ্তা পুরা ভূভূতাচ তপদা তৎসমা শুভে ৷৷ যথা শ্ৰীঃ শ্ৰীগতেঃ ক্ৰোডে

ভবানীব ভবোরসি। সৌভাগ্যা সুপ্রিয়া ত্বঞ্চ ভব সত্যবতি প্রিয়ে ।। ইতি বন্ধবৈবর্তে প্রকৃতিখণ্ডে २८ अक्षायः ॥ 🏶 ॥ विकामाना । यथा। ज्यानमात्मन निजुः श्र-যুক্তা দক্ষ্যা কন্যা ভবপূৰ্বপত্নী । मञी मञी यागिवम्फेटमश , তा॰ জন্মনে শৈলবধূ॰ প্রপেদে ॥ ইতি সমারসম্ভবে ১ সর্গঃ ॥ সভীনঃ পু॰ ব॰শঃ। ইভি শব্দ-याला॥ मठीलकः। इंछायत-টীকাষাণ ভরতঃ।। সতীনকঃ পু॰ সতীলকঃ। ইত্য-মরটীকা ॥ সতীর্থঃ পু॰ পরস্পরৈকগুরুশি- || ষ্যঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।। मठीर्थाः भू॰ शत्रम्भदितकश्चर्कः শিষ্যঃ৷ ইত্যমরঃ॥ একে। ২-ভিমোগুরু র্যেষাণতে খন্যোন্যণ সতীর্থ্যাঃ। সমানে তীর্থে গুরৌ বসম্ভি সতীর্থ্যাঃ। ঢ বেকাদিভি यः। জ্যোতির্জনপদেত্যাদিনা मः। जीर्थ मृषियुष्ठे জলে গুরৌ ইতি বক্ষাতে। ইতি ভরতঃ।। অপিচ। স্যাৎ সতীর্থঃ সতী-র্থ্যোপি তথৈকগুরু রিত্যপি। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

সতীলঃ পু॰ ব॰শং। ইভি হারা-বলী। বাষ্ঃ। ইত্যমর্টীকাষাণ রাষমুস্টঃ। কলাষঃ। যথা। কলায় স্থিপুটঃ প্রোক্তঃ সতী-লো বর্তুলো মতঃ। ইভি ভর-তব্তব্যাড়িঃ।৷

मञीलकः भू॰ कलायः। यथा। কলাযম্ভ সতীলকঃ হরেণু খণ্ডি-কৌ চাস্মিন্। ইত্যমর:॥ চত্বা-রি কলাযে। মটর ইতি খ্যাতে। কলাযশকো বিশেষে সামান্যে চ অতএব মাষকলাষ ইত্যাদি প্রযোগঃ। কড়াতে ভুজাতে কলাযঃ। কড ভক্ষণে নামীতি वायः गगीयानिषा ९ ७ मा वाः । তিলেন তিলবৎ ক্লফ্বৰ্ণ চিক্লে-ন সহ বৰ্ত্তে সতীলঃ নিপাত-नामिकात्रमा मीर्घः सार्थ तक मठीनकः मखाक्तिः। शि्राङ ভক্ষণার্থ॰ হরতি মনো বা হরে-শুঃ নামীতি এশুঃ। খণ্ডাতে বি-मार्गाए थिकः भृदि रेकः। কলাষ স্ত্রিপুটঃ প্রোক্তঃ সতী-ला वर्जुला यजः। श्रत्नशः कः ণ্টকা জ্রেযেতি তু ব্যাডিঃ। ইভি ভরতঃ ॥ खी कनायवित्नवः। সতীল।

তেওড়া ইতি ভাষা। যথা। সতীলা নিঙিকা তিন্টীতি শব্দ-চন্দ্ৰকা।

সতুৰ জী তুষষ্ক্তশস্য । ধান্য । । বথা। শস্য ক্তেগত প্ৰাহঃ সতুষ ধান্য সুচাতে। আন বিতৃষ মিজ্যুক্ত বিল মল মুদা-ক্তে ।। ইতি শ্ৰান্ধতব ।।

সভূট্ ত্রি ভৃষণযুক্তঃ। তৎ-পর্য্যাযঃ। ভৃষিতঃ ২ তর্ষিতঃ ৩। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।।

সতের: পু॰ তুষ:। ইতি সংকি-গুসারোণাদিবৃত্তি:।।

म् क्री उन्ह । এতছिবরণ मधीनमञ्जाद পর সংশব্দে उक्केराः ॥

ग्रू का त्रः भू कि विकासः ।
स्था । कि विवृक्तः ग्रू का त्या
बक्र कृः भिश्वभावकः । इंडि
भक्ष हिक्का ॥

সৎকর্তা পু বিক্ষু । বথা। সৎ-কর্তা সংক্লতঃ সাধু রিভি তস্য সহসুনামস্তোত্ত ।।

সংকর্ম কী বেদবিহিতক্রিষা।
বথা। বিষ্ণুপুরাণে। সংকর্মযোগ্যোন জনো নৈবাপঃ শৌচকারণ ৰশ্মিষনুদিতে তলৈ

নমো দেবাষ ভাষতে। ইতি প্রায়শ্চিত্ততত্ত্ব ।।

সৎকাঞ্চনারঃ পুণ রক্তকাঞ্চনঃ।
যথা। কোবিদারে চমরিকঃ
সন্ধালো যুগপত্রকঃ। স্থকাঞ্চন
নারঃ কামালু হ্যবাহ্ন শ্রুরঃ
। ইতি শন্ধচন্দ্রকা।।

সংকাণ্ডঃ পু॰ চিল্লঃ। ইতি শব্দ-চন্দ্ৰিকা।।

সৎকারঃ পু
প্জা। যথা।
এবজ্তাঃ সভাসদঃ সভাষা
থথা সীদন্তি উপবিশন্তি তথা
দান মান সৎকারে রাজ্ঞা কর্তব্যাঃ। ইতি ব্যবহারতত্ত্ব ।।
শবদাহাদিক্রিষা। ইতি লোকপ্রসিদ্ধিঃ।।

সৎক্তঃ ত্রি পুজিতঃ। ক্রতসৎ-কারঃ। যথা। তত্ত্বী কঞ্চিৎ স কালঞ্চ মুনিনা তেন সৎক্রতঃ। ইতি দেবীমাহাদ্ম্যং।।

সৎকৃতিঃ স্ত্রী সৎকারঃ। সৎ-ক্রিয়া শব্দার্থ দর্শনাৎ।।

সংক্রিয়া দ্রী শবদাহাদিকিয়া। তৎপর্য্যায়ঃ। সংক্রিয়া ২ । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। সংক্রারঃ ৩। ইতি শব্দরত্মাবলী।। সম্মান্ত যথা যনুঃ। মুটে ২পব-

জিতে জাতিমধ্যস্থো ববসং গবাং। প্রদদ্যাৎ প্রথমং গো-ভিঃ সৎক্রতস্য হি সৎক্রিষা।। ইতি প্রাযশ্চিত্ততত্ত্বং।।

সত্তমঃ ত্রি অতিশোভনঃ। ইত্য-মরঃ॥ পূজ্যতমঃ॥ সাধীষান্॥ উত্তমঃ। ইতি মেদিনী॥

দত্তা স্ত্রী জাতিবিশেষণ ইতি ভাষাপরিচ্ছেদঃ।। বিদ্যমানতা । ষথা। যদ্যপি পাপস্য কার্য্যা-নবিত্ত্বেন তৎসত্তাষা মপ্রা-মাণ্য প্রতিভাতি। ইতি প্রায-শ্চিত্ততত্ত্ব ।। সাধুতা। সতো ভাব ইত্যর্থে সচ্চকাৎ ত প্রত্য-যেন নিশামা।।

मलः क्ली यखः॥ महाहानः॥

वाष्ट्राह्मनः॥ खत्रगः॥ देकछः

वः। ইতি মেদিনী॥ श्रमः॥

गृरः॥ দানः॥ मद्रावतः॥

रेठातकार्थदकायः॥ यागिति
त्मयः। यथा। देनियदय स्नियि
यक्तद्व अवयः त्मीनकाहयः॥

मलः यर्गाय त्माकाय मरमुम
य यामछ॥ किमाग्र याखाय

क्लाजीना हीर्यम् देवस्य वयः॥

खानीना हीर्यम् देवस्य कथायाः

मक्कना रुद्रः॥ ইতি শ্रीভाগव-

उ अत्य > अवगवः ॥ ।। द्यानगाङ्गाधामलः यथा। त्ज्या-ভিটোমে দাদশ গোশত দ-কিণা বিভাগঃ ষোডশদ্বিজাণ তৰিক্তীভূতে সম্ৰাত্মকে দাদ-नार मार्था नर्जना किरना मी-क्षेत्र जामि मर्गानम निर्गिष-তে।। তচ্চ সাবন মানেন কর্ত্ত-वाः। यथा। जञानाभागाना-थ সাবনেন লोकांक वर्जा-षावराद्रकन्त्र। ३७ भनगान-তত্ত্ব াা 🗱 🛭 সদক্ষিণ সততা-ষদান । তল্পিকস্পর্শনাদি नित्यद्या यथा। नालदशब्दन विषिकोन् वीत्रशैनाः उथा खि-য । দেবতা পিতৃ সচ্ছাস্ত্ৰ ৰজ্ঞ मखानिनिन्दिकः ॥ क्रषा जु ग्णमनानामः शुरकाछार्काव-लाकनाए। इंडि मार्क्ट खय-**পুরাণে সদাচারাধ্যায:॥ সত্র**ণ সদক্ষিণ সভতালদান ৷ ইতি তটীকা ৷৷

সম্র বা সহ। ইতি শব্দরত্না-বলী জটাধরশ্চ ॥

मल्याना जी बन्नामिनानगृहः। जर्थायः। शक्रियाः २। इजि (इमहस्यः॥ मळा का मह। हेला प्रतः।

मळा कि भृ ता कि विष्यः। मलू

श्रीक के मान्यम् ता । भरत ज्ञा ।

हेलि कि कि भूता (१ २ १ व्या । स्राः।।

मिला कि । हेल् । कि । क्या । क्या ।

मिला कि । हेल् । कि । कि । कि ।

मिला कि । हेल् । कि । कि ।

मिला कि । हेल् । कि ।

मिला कि । हेलि ।

मिला कि । हेलि ।

मिका कि । हिला के । हिला ।

सिका मिका मिला ।।

मखी भू॰ गृष्ट्रशिक्षः। इंडामद्रः॥ दि गृष्ट्रस्थ। मख॰ महाहान दि हाउ रा मखी हेन्। महाद्रुष्ट्र मुख॰ हिंड काद्रुष्ट्र मुक्त माक्का हर स्व काद्रुष्ट्र महाहान है कि उद्रुष्ट्र महाहान है कि उद्रुष्ट्र है कि उप्रुष्ट्र है कि उपरुष्ट्र है कि उपरुष्ट है कि उ

বোঃ। ইতি। সন্তিণা নিত্য প্রবৃত্তামদানানা সত্তে ২মদা-নে। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব ॥

সত্ত্ব॰ ক্লী প্রক্তে গুণবিশেষঃ। অত্ত সত্ত্বণ প্রকাশকজান সুখ-হেতৃঃ। সতো ভাবঃ সত্বং। ত্ব তৌ ভাবে ইতি ত্ব নিপাতনা-ভলোপ ইতি কেচিৎ। সত্ত্ব দিতকার মিতি বছবঃ। ইত্যমর ভ রতৌ ॥ 🕸 ॥ মহাভারতমতে সুখজনকগুণঃ। তস্য ধর্মাঃ ৬। প্রসাদঃ ১ হর্ষঃ ২ প্রীতিঃ ৩ অ-मत्मिरः ४ ४ जिः ८ मृजिः ७। 'ইতি মোক্ষধর্মঃ।। ডব্য়ণ।। অ-मुः॥ वावमायः। ইতামরः॥ পিশাচাদিঃ।। বল•।। স্বভাবঃ।। আত্মা।। চিত্ত । ইতি মেদিনী া। রসঃ॥ আযুঃ॥ ইতি ধরণিঃ া। সবেরঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। ধন ।। আত্মতা। ইতি শব্দ-त्रज्ञावनी ॥

সত্ত্বঃ পু॰ ক্লী জন্তুঃ। ইত্যমরঃ॥
সত্ত্বতা স্ত্রী সত্ত্বস্য ভাবঃ। সত্ত্ব
শব্দাৎ ভাবে ত প্রত্যথানন্তর॰
আপ্ প্রত্যধেন নিম্পন্ন।॥

সত্ত্বসম্পন্নঃ ত্রি সত্তপ্রাপ্তঃ। স-ত্ত্বশকাৎ সংপূর্বপদধাতোঃ ক্ত প্রত্যয় নিশারঃ ॥

সৰুখঃ ত্রি সৰুবৃত্তিশালী।
সৰুপ্রধানঃ। যথা। উর্দৃণ
গচ্ছন্তি সৰুস্থা মধ্যে তিষ্ঠন্তি
রাজসাঃ। জবন্য গুণবৃত্তস্থা
অধ্যোগচ্ছন্তি তামসাঃ।। ইতি
ভগবদ্দীতাবাণ ১৪ অধ্যাবে ১৮
শোকঃ।।

সংপত্ৰ ক্লী পদ্মস্য নবদল।। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা।।

সৎপথঃ পু॰ প্রশস্তপথঃ। তৎ-পর্য্যায়ঃ। অতিপন্থাঃ ২ সুপন্থাঃ ৩ অর্চিতাধা ৪। ইত্যমরঃ ॥ সুপথঃ ৫। ইতি শব্দরত্বাবলী।। সৎপশুঃ পু॰ বজ্ঞীষপশুঃ। ইতি কেচিৎ।। শোভন পশুশ্চ।। নৎপুত্ৰঃ পু॰ উত্তৰসম্ভানঃ ম বেদাদিবিহিতপিত্রাদিকার্য্যক-र्छा। यथा। भूबादमा नत्रका-দ্যস্মাত্রাযতে পিতর সূতঃ 1 মুখসন্দর্শনেনাপি তদুৎপত্তী যতেত সঃ।। ইতি বৃহস্পত্যুম্ভক নরক নিস্তারায ঋণমস্মিন্ সম-ম্যতি অমৃতত্বঞ্ বিন্দৃতি। শিতা পুত্ৰদ্য জাতদ্য পশেচ্চ জীব-তো মুখ । ইতি বশিষ্ঠোক্ত ঋ-ণাপন্যনায় চ যৎপশ্যেদিভি

নিষম বিধান ভদত্তত পুত্ৰকা-र्या भूजभद्गः। मर्भूजस मूर्थम-র্শন বিনাপি নরকনিস্তারকঃ ! তথা চ বিষ্ণুপুরাণ । সৎপুক্তেন তু জাতেন বেণোপি ত্রিদিব॰ যযৌ। পুমামো নরকাল্রাতঃ স তেন সুমহাত্মনা।। ব্ৰহ্মপুরাণে পি। সমুৎপঙ্গেন ভো বিপ্রাঃ সৎপুত্রেণ মহাত্মনা। ত্রাতঃ न भूक्षवाायुः भूषाद्या नत-काखना॥ इंडि खिन्निडवः॥ সৎপুরুষঃ পু॰ পূজ্যমানপুরুষঃ। ইতি সংকিপ্তসার সমাসপাদঃ॥ সৎপ্রতিগ্রহঃ পু॰ সাধুজনদত্ত-দ্ৰব্যগ্ৰহণ । সন্ত্যঃ সাধুভাঃ প্রতিগ্রহঃ দানগ্রহণ ৷ যথা ৷ मश्च विजागमा धर्मा नारमा ना-**डः क्राया ज्यः । अयोगः क-**ৰ্শ্বযোগশ্চ সৎপ্ৰতিগ্ৰহ এব চ।। रेडि मान्दर ३० ज्यासः॥

সংপ্রতিপক্ষঃ পুণ তুল্যব্যক্তিঃ।
প্রতিযোগী। ন্যাযমতে। সাখ্যাভাব ব্যাপ্যবৎ পক্ষঃ। যথা
। হুদো বহ্নিমান্ ধুমাদিত্যাদৌ
বহ্নভাব ব্যাপ্যবন্ধুদাদিঃ ।
ইতি সংপ্রতিপক্ষগ্রন্থঃ।। তল্প

পন সমর্থ সমান বলোপন্থিত্যা প্রতিরুদ্ধ কার্য্য লিঙ্গত্ব॰ তত্ত্ব॰ বলঞ্চ ব্যাপ্তি পক্ষধর্মতে বিরো-ধি বোধকান্যগমকতোপ্যিক-ৰূপ সম্পত্তি মন্ত্র্যা জ্ঞাযমানে-ম প্রতিরুদ্ধ কার্য্যত্ব॰ বা তত্ত্ব॰ । ইতি গঙ্গেশোপাধ্যামক্তচি-স্তামণিঃ ৷৷

স্বংকলঃ পু॰ দাডিমবৃক্ষঃ। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা।। শোভনফলব-ভূকশ্চ।।

সতা॰ ক্লী ক্তবুগণ।। শপথঃ।। ষথার্থঃ। তদ্বতি ত্রি। ইতি মে-मिनी॥ निकाखः। ইতি नक-त्रज्ञावली ॥ 🐞 ॥ वशार्थ मान-ৰ্ব্যাৰঃ। ভধ্য॰ ২ ঋত॰ ৩ সম্য-क् 81 हेजायतः॥ अविजय॰ ৫ ভূত ৬। ইতি জটাধরঃ।। তল্প-कन वथा। वथार्थ कथन यक नर्वताक मुस्थानः। তৎসত্য ্মিতি বিজ্ঞেষ মসত্য• তদ্বিপৰ্য্য-ब ।। ইভি পাছে ক্রিয়াবোগ-नादत ३७ ज्यशायः ॥ 🖷 ॥ ७-দাকারা ব্থা.৷ সত্যঞ্চ সমতা टेव प्रयटेन्व नमः नयः। च-মাৎসর্য্য ক্ষমা চৈব হ্রী স্তিতি-কানসূষতা।। ত্যাগো ধ্যান

मथायादः शृष्टिन्छ मुख्यः प्रया। অহিণ্সা চৈৰ রাজেন্দ্র সত্যাকা-রা স্রযোদশ ৷৷ ইতি মহাভারতে রাজধর্মঃ।। 🟶 ।। তস্যাপালনে प्लिट्सा यथा। कृषामार्गथकार्थक সভ্য॰ হস্তি ন পালযেৎ। স রু-छन्नः कालमृत्व वरमरक्षवहर्षु-গ ৷৷ সপ্তজন্মসু কাৰু চ সপ্ত-জন্মসু পেচকঃ। ততঃ শূদ্রো य-হাব্যাধী জন্মসপ্ত ততঃ শুচিঃ।। ইতি বন্ধবৈবৰ্ত্তে প্ৰক্ষতিখণ্ডে ৪৮ অধ্যায়ঃ!! 😻।। অপি চ। সত্যেন লোক জয়তি সভ্যস্ত পরম তপঃ । ৰথাভূত প্ৰসাদন্ত সত্য মাহ র্মণীষিণঃ।। ইতি কৌর্মে উপ-রিভাগে ১৪ অধ্যাম্যা 🏶 🛚 তস্য প্রসংশা যথা। সত্য মাধাস্যতি হরিঃ সত্য • নিষ্কপট • বদ। বদ তৎ স্বভ্ৰষণ ভ্যক্তা সভ্যণ ক্ৰহি সুসংসদি।। বর কুপ শতাদ্বাপী ৰর বাপীশতাৎক্রতৃঃ। বর ক্র তুশতাৎ পুত্ৰঃ সত্যা পুত্ৰশতাৎ কিল।। নহি সত্যাৎ পরো ধর্মো নানৃতাৎ পাতক পর । নহি माजूः भरता वस् नं श्वक र्यञ्जनाष **भद्रः ॥ इं**छि बक्षदेवदर्ख *জ*ग्र-थर७ २६ जशायः ॥ ।। जिन ह ।

ভন্মাৎ সত্যু পরু বন্ধ সত্য মেব পর॰ তপঃ। সত্য মেব পরো य-ক্তঃ সত্য মেব পরং শ্রুতং ৷৷ সত্যং বেদেযু জাগর্ত্তি সত্যঞ্চ পরমণ-পদ । কীর্ত্তি র্যশশ্চ পুণ্যঞ্চ পি: ज्राप्तविषं शुक्रनः॥ जात्मा विधि-শ্চ বিদ্যা চ সর্বণ সত্যে প্রতিষ্ঠি-ত । সত্য যত্ত্ত স্তথা বেদা মন্ত্রা দেবাঃ সরস্বতী।। ব্রত্তর্য্যা তথা সত্যু ওক্ষারঃ সত্য মেব চ। স জ্যেন বাষু রভ্যেতি সত্তোন তপ-তে রবিঃ॥ সত্যেনাগ্নি র্দহেমিত্য॰ স্বৰ্গ॰ সত্যেন গচ্ছতি। সত্যেন চাপঃ কিপতি পর্জন্যো ধরণী-তলে।। পরেণ সর্বদেবানা স-ৰ্বতীৰ্থাবগাহন । সত্যস্য বচ-নালোকে সর্ব মাপ্পোত্যসংশ্যং ॥ অশ্বমেধ সহসুঞ্চ সত্যঞ্চ তুল্যা ধৃত । অশ্বমেধ সহসু। कि সত্য-যেব বিশিষ্যতে ।। সত্যেন দে-বাঃ প্রীযন্তে পিতর ঋষয় স্তথা। মনুষ্যাঃ সিদ্ধ গন্ধৰাঃ সত্যাৎ সিদ্ধি মিতো গতাঃ ৷৷ অগাধে বিপুলে শুদ্ধে সত্যতীর্থে শুচি-সুদে। স্নাতব্য ফনসা যুক্তিঃ রান তৎপরম স্মৃত ৷৷ আগ্না-ः वा भन्नार्थ वा भूखार्थ वाभि

যানবাঃ। অনৃত যে ন ভাষত্তে তে বুধাঃ স্বৰ্গগাসিনঃ। তন্মাৎ সত্যক্তত॰ পঞ্চ তদনন্তকলণ ভ-বেৎ। ইতি বহ্নিপুরাণে দানাব-ञ्जिन्यनागाशायः ॥ 🗱 ॥ जिलि চ। তডাগ শতদানেন যৎপুণ্য॰ লভতে নরঃ। ততোধিকঞ্চ লভ-তে বাপী দানেন নিশ্চিত ।৷ দ-শবাপী প্রদানেন যৎফল লভ-তে নরং। ততোধিকঞ্চ লভতে পুণ্য কন্যাপ্ৰদানতঃ ৷৷ দশকন্যা প্রদানেন যৎফল লভতে নরঃ। ততো ২ধিকঞ্চ লভতে যউজ্ঞকেন নরাধিপঃ।। শতযন্তেন লভতে यर भूगा भूगाकृष्क्रनः। ততো श्विकक नाजराज भूखानामर्गतन চাা দৰ্শনে শত পুত্ৰাণা যৎ পুণ্য লভতে নরঃ। তৎপুণ্য লভতে নূন॰ পুণ্যবান্ সত্যপালনাৎ ॥ ন ছি সত্যাৎ পরো ধর্মো নান্-ভাৎ পাতক নরঃ। ন হি গঙ্গা-সমণ ভীৰ্থণ ন দেবঃ কেশবাৎ প-तः॥ ইতি बन्नरिवर्खभूतान ॥ ॥ অন্যক্ত। সত্য মূল জগৎ সৰ্ব॰ সৰ্ব॰ সত্যে প্ৰতিষ্ঠিত । সি-দ্ধি॰ লভন্তে সভ্যেন ঋষষো বে-দপারগাঃ ৷৷ সত্যেন দীষতে

কন্যা সত্য জন্মন্তি আন্দৰ্ণাঃ। সত্যু বদন্তি রাজানঃ সত্যেন বসুধা ধৃতা।। সত্যেন গম্যতে স্বৰ্গ॰ নোক্ষণ সভ্যেন প্ৰাপ্যতে। সূর্য্য স্তপতি সত্যেন সোমঃ সভ্যেন রাজ্তে।। যমঃ সভ্যেন হরতি সত্যেনেন্দ্রে বিরাজতে । বরুণশ্চ স্বরেশ্চ তৌ চ সত্যে প্ৰতিষ্ঠিতৌ।। তৎ সত্য अম ন-শ্যেত যদ্যহ॰ নাগবে পুনঃ। ইতি বারাহে মথুরামাহাত্ম্যে অ-স্বকতীর্থ প্রভাব বর্ণন নামাধ্যা-यः।। ಈ।। অন্যচ্চ। সত্য॰ य-স্ভোষ আস্তিক্য তথা চেন্দ্রিয নিগ্ৰহঃ। দেবতাভ্যৰ্চন পূজা ব্রাহ্মণানা বিশেষতঃ।। সত্য ভূতহিত বাক্য মস্তেষ স্বাগত পরে ৷৷ নিষ্মাঃ পঞ্চ সত্যাদ্যাঃ বাহ্ম মাভ্যন্তর দিধা।। ইতি शाक्रटफ ८२ ज्यायः ॥ 🛊 ॥ অপিচা যে হথা ধর্মেণতে স-ত্যা যে ২ধর্মেণ গতঞ্জিযঃ। স-ত্যশোচ মনঃ শৌচ শৌচ মি-ক্ৰিয় নিগ্ৰহঃ।। সৰ্বভূতদযা শৌ-**চ॰ জলশৌ চঞ্চ পঞ্চম॰। यमा म** ত্যঞ্চ শৌচঞ্চ তদ্য স্বর্গো ন দুর্ল্ল-ড়ঃ।। সত্য হি বচন যস্য সো

২শ্বনেধাদ্বিশিষ্যতে । ইতি গা--ৰুডে ১১৩ অধ্যায়ঃ।। 🏶 ।। অপি-চ। ন সা সভা যত্ৰ ন সন্তি বৃদ্ধা वृक्षा न य ए न वमिछ धर्या । মাসৌ ধর্মো যত্র নো সত্য মস্তি নো তৎ সত্যা যচ্চলেনানুবিদ্ধা য়া ব্রাহ্মণোপি মনুষ্যাণা মাদি-ভ্যৈকৈব ভেজসা । শিরোপি স-ৰ্গাত্ৰাণাণ ব্ৰতানাণ সত্য মুত্তমণ ॥ ইতি शाक़रफ ১১৫ অধ্যাयः । कि। जका यथा। यः मर्बछः সর্ববিৎ ষদ্য জ্ঞান্য্য তথঃ স্-र्बमा वनी मर्बरमाना यः शृथि-ব্যাণ তিষ্ঠন্ পৃথিক্যা অন্তরঃ সো ২কাময়ত বহুস্যাণ ম ঈক্ষত ত-ত্তেজা ২সুজৎ সত্য জ্ঞান ন-নন্ত বন্ধ ইত্যাদ্যাঃ। ইতি শ্রী-ভাগবতদশনকন্ধীয় ৮৭ অখ্যা-ৰীযতৃতীষশ্লোকটীকাষাণ শ্রীধর-बागी ॥ 🛊 ॥ जिल्हा जर মাত্মা পর বন্ধ সত্য জ্ঞান নন-স্তক । বিজ্ঞান মানন্দো বন্ধ সত্তত্ত্বমসি কেবল' ৷৷ নিত্য' শু-क॰ वृक्षियुक्छ॰ मङा मानन महय॰ । যো সাবাদিত্য পুরুষঃ সোসা-ৰহ মখণ্ডতঃ।। ইতি ধ্যায়ন্ বি-ষুচ্যেত ব্ৰহ্মণো ভববন্ধনাৎ ।

ইতি গাৰুডে ৪৯ অধ্যাযঃ ॥ সত্য[ু] ব্য প্ৰশ্বঃ॥ স্বীকারঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

সত্যঃ পু॰ শ্রীরামঃ। যথা। কৌ-শল্যানন্দনঃ শ্রীশঃ সত্যোদশ-मूथा छकः। इंडि नक्तज्ञावनी ॥ বিষ্ণুঃ। যথা। ঔভ্তমেপ্যস্তরে বিক্ঃ সত্যৈঃ সহ স্বধোত্তমৈঃ । সত্যায়া মভবৎ সত্যঃ সত্য-वारणा जनार्धनः॥ इंछि कीर्षा १८ व्यायः ॥ क्षा वनाक । সভ্যব্রত সভ্যপর ত্রিসভ্য স-ত্ত্যস্য যোনি[,] নিহিতঞ্চ **সত্যে।** স্ভাস্য স্ভা মৃ<mark>তস্ভানেত্র</mark>ণ সত্যাত্মক প্রাণ শরণ প্রপন্নাঃ ৷৷ ইতি শ্রীভাগবতে ১০ স্কন্ধে ১ অধ্যায়ঃ ৷৷ 🗱 🛚 প্রতিশ্রুত • দত্য° ক্বত নিতি হৃষ্টাঃ প্রথম• **সত্যত্বেন স্তবস্তি সত্যত্ৰত মি**-তি। সত্যু॰ বত সকলে। যস্য । সত্য॰ পর॰ শ্রেষ্ঠ॰ প্রাপ্তিসা-ধন যশ্মন্ত। ত্রিসভ্য জি-য়পিকালেষু সৃষ্টেঃ পূর্বণ প্রল-যানন্তর স্থিতিসমধে চ সত্যু অব্যভিচারেণ বর্ত্তমান । ভ-দেবাহুঃ। সত্ত্যস্য ষোনি মিতি। সচ্চজেন পৃথিব্যপ্ তেজা 'সি।

তাশব্দেন বায়াকাশো। এব॰ সচ্চ ত্যশ্চ সত্ত্যণ ভূতপঞ্চক । ত সত্য মিত্যাচক্ষতে ইতি শ্রুতেঃ ৷ তৃষ্য যোনি কারণ অনেন স্ফেঃ পূৰ্ব বৰ্তমানতোক্তা। তথা সত্ত্যে তত্মিমেব নিহিত• অন্তর্যামিত্যা স্থিত অনেন স্থি-তি সমযে চ সতাত্ব মুক্ত । তথা मखामा मछा॰ छटेमाव मखामा সত্যু পার্মার্থিক নাশেপি অ-বশিষ্যমাণ ৰূপণ অনেন প্ৰল-যেপ্যৰধিত্বেন সত্যত্ব দৰ্শিত এব॰ ত্রিসত্যত্ব মুপপাদিত•। তথা ঋত সত্য নেত্র । ঋতঞ্চ সূন্তা বাণী সভাঞ্চ সমদর্শন । তথা ভগবতা ব্যাখ্যাস্যমানত্বাৎ স-ত্যঞ্চ সমদর্শন মিতি ঋতঞ্চ সূন্-ভাবাণী কবিভিঃ পরিকীর্ত্তিতা।। ইতি তথে নেত্ৰ নয়নসাধন নেতার প্রবর্ত্তক মিতি যাবৎ ৷ এব॰ সৰ্বপ্ৰকারেণ সত্যাত্মক॰ দ্বাণ ব্যণ শ্রণ প্রপন্না ইত্যর্থঃ ৷ **इे जि बी धर वा भी ।। # ।। जयभ**-বৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। না-न्नीयूथ आफारनवः। यथा। इस्टि-প্রান্ধে ত্রতু দক্ষঃ সত্যো নান্দী-मूर्थ वमुः। देनिमिखित्क कान

সত্যনা

সভ্যক কী সভ্যকারঃ। ইভি কেচিৎ।। সভ্যা ।। ভদ্মুক্তে ত্রি সভ্যকারঃ পুণ অবশ্যা মথৈতৎ-ক্রেভব্য মিভি সভ্যাকরণ । ভৎ পর্য্যায়ঃ। সভ্যাপন ২ সভ্যা-ক্রভিঃ ৩। ইভ্যমরঃ।। সভ্যাপ-না ৪। ইভি বোপালিভঃ।। সভ্যকারক্রভঃ ত্রি অবশ্যা মন্দৈ

ভৎক্রেতব্য মিতি সত্য কৃষ্ণ যদেব । বাষনা ইতি ভাষা। ইতি মিতাক্ষরা।।

माणा करा है। स्वान्य का माणा करा है। स्वा वा से का माणा करा है। स्वा वा से का माणा करा है। स्वा वा से का से

ঋষি রাদ্যো ভবিষ্যসি ।। ইতি বারাহে সত্যত্তপ উপাখ্যান নামাধ্যায়ঃ।।

সত্যধৃতিঃ পু॰ ঋষিবিশেষঃ।

যথা। সর্বতন্ত দাযাদ মহল্যা

সংপ্রস্থতে। শতানন্দং ঋষিশ্রেষ্ঠ তস্যাপি সুমহাতপাঃ॥
তদ্য সত্যধৃতি নাম মুনি বেদ
স্য পার্গঃ। ইতি মাৎস্যে ৪৮
অধ্যায়ঃ।

সত্যনারাষণঃ পু॰ দেবতাবি-শেষঃ। সত্যপীর ইতি ভাষা। তস্য ব্ৰতক্থা ফ্থা। একদা মুনযঃ সর্বে সর্বলোকহিতে র-णाः। সুরমো নৈমিষারণ্যে গো-ষ্ঠী ঞ্চকু শ্বনোরমাণ।। তত্রান্তরে यशास्त्रज्ञा वाामित्या। यशाय-भाः। मूजः भिषागरे। युक्तः म-মাবাতো হিঃ সারন্।। তমা-যান্ত সমালোক্য সূত শাস্ত্রা-র্থপারগ । নেমুঃ সর্বে সমুখায সৌনকাদ্যা স্তপোধনাঃ ৷৷ সো-পি তান্ সহসা ভক্ত্যা মুনীন্ **পরমবৈক্ষবান্।** ননাম দণ্ড-वर्ष्ट्रायो गर्दभर्षाविषाभद्रः ॥ व-वामंत्र महावृक्षि रेख फेटल मू-নিপুক্ষ থৈঃ। উবাস স সভা-

भरका मर्दिः नियागरेन वृज्यः ॥ ভত্তোপবিষ্ট ভ সূত শৌনকো मूनिमखमः। तकाक्षिन दिमा या-ह मूवाह विनयाश्विष्टः॥ त्नीनक উবাচ। মহর্যে সূত সর্বজ্ঞ কলি-কালে সমাগতে। কেনোপাযেন ভগবন্ হরিভক্তি ভক্কেগা ।। কলৌ সর্বে ভবিষ্যম্ভি পাপকর্ম পরাষণাঃ। বেদবিদ্যা বিহীনা-শ্চ তেষা[•] শ্ৰেষঃ কথ• ভবেৎ ৷৷ কলাবয়গভপ্রাণা লোকাঃ স্বন্ধা-युव खथा। निर्धनाक खिवराखि নানাপীড়া প্রপীডিতাঃ ৷ প্রযা-সদাধ্য পুরুত শাস্ত্রেষু জাযতে দিজ। ভঙ্গাৎ কেপি করিষ্য-खि करली न मूक्त ज जनाः॥ मू-ক্তেষু বিনক্টেযু প্রবৃত্তে পাপক-र्भावि। अवः भाः अनयः मर्दि गः भिया छि जुता नया है।। ऋब अटेम त-ল্পবিভৈ রল্পকালৈশ্চ সত্তম। ষথা ভবেমহাপুণ্য তথা কথ্য সূত নঃ য় ষস্যোগদেশতঃ পুণ্যু পাপ বা প্রকৃতে জনঃ। স তন্তাগী ভবে-শ্বৰ্ত্তা ইভি শান্তেষু নিশ্চিত ।। श्रुरगाभरमंगी ममसः देक छदेव क িবিবিজ্জিতঃ। পাপায়ন বিরোধী চ চদারঃ কেশবোপমাঃ॥ জ্ঞান॰

সংশ্রীপ্য সংসারে যঃ পরেভ্যো ন ষচ্ছতি। জ্ঞানৰাপী হরি স্তব্যৈ ध्यमम हैव तिक्छा। खानतेजः **क्ट तरेज्ञक अतमरखायक्रमतः ।** म एक यः मूक्ष नृ न॰ नत्रक १४-রো হরিঃ।। ত্রতেন তপদা কিয়া প্রাপ্ততে বাঞ্ছিত ফল । সর্বণ তৎ শ্ৰোতৃ মিচ্ছামি কথমস্ব মহা-यटा। इत्यव यूनिभाषृ व त्वल বেদাঙ্গারগঃ। স্বদৃতে নছি ব-ক্তান্যো যত স্তু॰ ব্যাসশাসিতঃ ॥ मृष्ठ छेवाठ। धरनगिम प॰ मूनि-**ट्यिष्ठे प याय देवस्मता जिमेश स्वड** ममञ्ज लाकामा हिङ वाङ्गि সर्वना ॥ भृगू भोनक वक्गानि ষৎস্বয়া শ্রোতু মিষ্যতে। নার-प्तितेव युक्कः मन् जगवान् कम-**काপिडिः।। সুরর্ষবে यदेशवाङ् छ**९ भृगृत्र मगाहिजः। 🖚। একদা না-त्रान रयागी भन्नान् शहका व्यक्त ॥ পर्याप्टेन् विविधान् त्लाकान् य-র্তালোক মুপাগমৎ। তত্র দৃষ্টা क्रमाः मर्दं नाना मूःथ ममन्रिजाः ৷ মানা বোনি সমুৎপন্নাঃ ক্লি-শ্যস্তে পাপকর্মভিঃ। কেনোপা-ষেন চৈতেষা দুঃখনাশো ভ বেৎ দ্রুবণা ইতি সঞ্চিন্তা মনসা

বিকলোক গত স্তদা । তত্ত্ব না-রাষণ দেব শক্তরবর্গ চত্তু জগা শৠ চক্রধর দেব বনমালা বি-ज्यकः। मृक्षा छः स्मवरमस्य अ॰ त्याञ् अमूशव्यत्य।। माद्रम উবাচ। নম স্তে বান্মনোভীত ब्ला यान खणकरय। ज्यापि य-शाख्शीनाम निर्श्वनाम खनाम-নে।। সর্বেষা মাদিভূতাৰ ভক্তা-না মার্ত্তিনাশিনে শ্রুত্বান্তোত্তণ ততো বিষ্ণু নারদ প্রত্যভাষত ।। শ্ৰীভগবানুবাচ। কিমৰ্থ মাগতো-সি স্থ কিন্তে মনসি বর্ত্ততে। ক-থয়স্থ মহাভাগ তৎ সর্ত্ত কথ্যা-মি তে।। নারদ উবাচ। মর্ত্য-लाटक जनाः मट्ड नामाटमाक সমন্বিতাঃ। নানা যোনি সমুৎ-পদ্মাঃ পচ্যান্তে পাপকর্মণা ।। তৎ কথ॰ শ্মবেশ্বাথ লঘূপাযেন ত-দ্বদ। শ্ৰোতু নিচ্ছানি তৎ সর্ব॰ কুপান্তি যদি তে নযি ॥ 🕮 ভগ-वान्वाह। माधू शृक्षे प्या वर्म-लाकान् अरुका गाया। य दक्षा মুচ্যতে মোহাৎ তৎ শৃণুষ্ব বদা-মি তে।। ত্ৰত মন্তি মহাপুণ্য স্বৰ্গে চ ভূবি দুর্লক্ত। তব ক্ষেহাম্মযা বিপ্রপ্রকাশীক্রিষতে ২ধুনা । 🕬।

সভানারাবগলৈতভুত সমাখি-খানতঃ। হয়। বদাঃ সুখ জুকু। পরত্র মোক্ষ মালভেৎ ৷৷ তৎ শ্রু-"ত্বা ভগবদ্বাক্যণ নারদঃ পুন রব্র-वीर। कि॰ कल॰ कि॰ विधानक ক্লভ° কেনেতি বা ব্ৰভ• II ভৎ-সর্বণ বিস্তরাদুহি কদা কার্য্যণ হি **छबुछ॰। श्रीजगवान्वाह। मृः**श्र **(माकां मि ममन धन धाना विव-**র্দ্ধন । সৌভাগ্য সম্ভতিকর गईव विकय्था ।। यत्रिन् क-স্মিন্ দিনে মর্ত্যো ভক্তি শ্রহা সমন্বিতঃ। সত্যনারাষণ দেবং यद्भवुरको निमानुरथ ॥ वाम्नदेव ৰ্ত্ৰান্ধণৈ শৈচৰ সহিতো ধৰ্ম্মতৎ-পরঃ। নৈবেদ্য॰ ভক্তিতো দদ্যাৎ সপাদ । जका मूखम ।। त्रुकालन যৃত की त॰ গোধ্যস্য চ চূর্ব॰। অভাবে শালিচূর্ণয়া শর্করায়া গ্ণডড তথা।। সপাদ সৰ্বভক্ষ্যাবি একীক্বত্য নিবেদ্যেৎ। বিপ্রায দক্ষিণা দদ্যাৎ কথা প্ৰেত্বা জ-বৈঃ সহ।। তত*চ বন্ধুভিঃ সাদ্ধ॰ বিপ্ৰেভ্যঃ প্ৰতিপাদযন্ ৷ প্ৰসাদ• ভক্ষবেৎ ভক্ত্যা নৃত্য গীতাদিক চরেৎ ৷৷ ততঃ স্তম্বা গৃহ• গছেৎ ষ ত্যনারাষণ স্মরন্। এবং ক্তে

यनुष्राानाः वाञ्चामिकि छद्द গ্রুবেণ। বিশেষতঃ কলিষুগে না-ন্যোপাষো হস্তি ভূতলে। কথা ষস্য প্ৰবক্ষ্যামি ক্লুতক্লত্যো ভবেৎ विकः॥ ।। कन्टि कानी भूद्र গ্রামে আসীদিপ্রশ্চ নির্দ্ধনঃ। কু ধা তৃক্ষাসলো ভূষা সতত ভূম-তে মছীণা৷ দুঃখিত বান্ধাণ দূ-कु। जगबान् वाका गिथायः। तृका-বান্ধণৰূপঃ সন্পপ্ৰছ দিজ মা-দরাৎ ।। কিমর্থ ভুষদে বিপ্র-মহী॰ রুৎস্নাঞ্চ দুঃখিতঃ। তৎ-সৰ্ব শ্ৰোভু মিচ্ছামি কথ্যতা यि द्वाहरू ॥ विश्व छेवाह । ব্রাহ্মণোতিদরিজো ২হণ ভিকা-र्थं खुया मही। उनाय यनि জানাসি রূপয়া কথ্য প্রভো।। বৃদ্ধ উবাচ। সত্যনারায়ণো দে-वा दाञ्चिकार्थकन श्राप्तः। जमा-রু দিজশার্দ্যল জরুষ বত মৃত্তমণ । यथ क्रञ्च। मर्त्रमृः (थएका) मूर्रका ত্বতি মানবঃ। বিধানঞ্ ব্ৰত-ন্যাস্য বিপ্ৰাযাভাষ্য ষত্নতঃ ম ত্যনারাযণো বৃদ্ধ স্তব্রৈবান্তর-ীয়ত। ততঃ প্রাতঃ করিষ্যামি তি মনসি চিস্তিত ॥ ইতি **স শ্ব্য বিশ্রো ২সৌ রাত্রো নি**-

षा॰ म ठावउ९। उठः व्यक्ति সমুখাৰ সভানাৱাৰণত্ৰভ গা ক রিষ্যে ংহক সক্ষ্য ভিকার্থ মগ-मिष्कः। जिल्लास्य पित्न विश्वः প্ৰচুৱ প্ৰাপ্তবান্ধন গা তেনৈৰ বন্ধুড়িঃ দাৰ্দ্ধণ সত্যস্য ব্ৰত মাচ-द्ति । मर्बमूः थ विनिर्म्मुकः मर्ब-সম্পৎসমশ্বিতঃ॥ বভূব স বিজ শ্ৰেষ্ঠো ৰত্যাস্য প্ৰভাবতঃ 1 ততঃ প্রভৃতি কালঞ্ মাসি মাসি ব্রত ক্রত।। সূত উবাচ। এবং नातायगरमामः ब्रञः क्रवा पि-জোত্তমঃ। সর্বপাপ বিনিম্ ক্রেন मूर्ल ७° (भाक भाश्रुयार ।। उठक তদ্যথা বিপ্রঃ পৃথিব্যা সঞ্জিম্য-তি। তদৈতৎ সর্বদুঃখণ হি নরা-্ৰাঞ্চ বিনশ্যতি।। এবং নারায-ণেনোক্ত° নারদায মহাত্মনে । মযাপি কথিত বিপ্ৰ কিমনাৎ কথ্যামি তে।। ইতি প্রীক্ষপপু-রাণে রেবাখণ্ডে সত্যনারাষণ विश्रमः वादमा नाम ३ व्यक्षायः ॥ ॥ শৌনক উবাচ। তত্মাদিপ্র ব্রত কেন পৃথিব্যাণ চরিত মুনে । তৎ দৰ্ব॰ শ্ৰোতু মিচ্ছাৰি শ্ৰদ্ধা-স্মাক প্রজায়তে ৷৷ সত উবাচ ৷ मृन्धः यूनयः मर्व ज्याप्तान ক্ত ভূবি। একদা স ঘিজবরো यथाविखव विखदेत ॥ वसूजिः येकरमः मार्सः बठः कर्तुः मम् দ্যক্ত। এত সিমেৰ কালে जु कार्धकेषुः नगागिः॥ विशे कार्रक मण्डाला विश्वमा बिलतः ৰবৌ। ভৃক্ষা পীডিতাত্মা স विश्रः मृक्षा उथाविशः॥ श्रानिशः তা দিজশ্ৰেষ্ঠ কিমিদ ক্ৰিয়তে খ্বা। ক্তে কি॰ ফল মাপ্নোতি বিস্তরাদদ মে প্রভোগ বিপ্র উ বাঁচ ৷ সভানারায়ণস্যেদ ব্রতং मर्दिकाष्ट्रथमः। मूःथ लाकामि শ্ৰমন সৰ্বত বিজ্ঞগপ্ৰদ া৷ ধনা-দি সম্ভতিকর সর্বেষা মীপ্সি-**७**थन । यमा श्रमानात्य मर्बः बैन बानाानिक॰ मह्य ॥ ठठख **স উত্ত** জ্ঞাত্বা কাষ্ট্ৰকৰ্ত্তাতি-र्विष्ठः। भरभो कल॰ প্রসাদক कुंका क्रमगत यस्यो।। मठाना-क्षेषिण एवर हिस्त्रमन् श्रिवमान-र्भाः क्षेत्रे॰ विक्वीय नगदत था-भारक ठामां यक्षन ॥ (कटेनव मडाटेमबना खंड यहा कंदरीया-रं। देंछि मिक्सा यमेंमा कार्छ॰ क्षेत्री जू यखें दिया। जिनी में नेनदित ক্ষমে ধনিনা॰ যত্র সংস্থিতিঃ।

छिमित्न काष्ठेमृकाक विञ्चन थी-श्ववानतम् ॥ ७७: अमन्नहानयः मुशक्क पत्नी कल । भक्ता १ श्-छ जूका त्राध्यमा ह हुर्वक ॥ প্ৰত্যেকন্ত সপাদক গৃহীত্বা গৃহ-মাষ্থো। ভতে। বন্ধুন্ সমাহৃষ চকার বিধিনা ব্রতং ৷৷ ভদ্বতস্য প্রসাদেন ধন পুত্রান্বিতো ২ভবৎ । इंश लात्क मूथ जुका हात्छ मठा भूतः बर्यो ॥ इं ि श्रीकन्म পুরাণে রেবাখণ্ডে সভ্যনারাযণ কথা বিপ্র কান্তকেতুসংবাদে৷ ২ विधायः॥ 🛊॥ मृख উवाह। श्र-न तना अवकामि मृग्ध मूनि-मखमाः। जामीमूकाम्राथा नाम मृপতि ईलिना यतः ॥ জিতে छि-ষঃ সত্যবাদী ষযৌ দেবালয় প্র-**তি। मिटन मिटन धन॰ मन्ना विका-**म् मटखायत्य मूरीः ॥ ভार्या **७**मा श्रेम्था ह मदबाक्रवमना म-তী। সন্মিতাস্যা শরদিন্দু সক-টাক্ষণ চ বিভূতী।। কাঞ্চীঞ্চ বি-ভূতী শ্যামা মালতীমাল্যভূষিতা । ভর্জশীলা ব্রন্ত সভ্যুণ সিম্বু-তীরে ২করোন্মনে।। এতন্মিন্ন-ন্তরে তত্র সাধুঃ কোপি সমাগতঃ । वानिकार्थः वरुषटेन तज्ञादेमाः

পরিপূরিতঃ। নাবং সংস্থাপ্য ত-ত্তীরে জগাম তত্তট প্রতি ॥ मृक्षे। তত बङ नगाक् भथक विनयात्रिजः। नाधू ऋवाह। कि-निष॰ षद्भरि द्राक्षन् ভिक्रियुट्क-ন চেতসা।। প্রকাশ সরু তৎ-সৰ্ব শ্ৰোতু মিচ্ছামি সম্পুতি। রাজোবাচ। পূজন জিযতে সা-ধে। বিষ্ণো বতুলতেজসঃ। বত-ক সজনেঃ সার্দ্ধি পু<u>ল্</u>রাদি প্রাপ্ত-ৰে মধা ৷৷ প্ৰত্যুৱাচ ততো নম্বা রাজান মধুর বচঃ। সত্য কথ-ৰ মে রাজন্ ত্রত মেতৎ করো मार् ॥ ममाणि मञ्जू काञ्जि সত্য মেতৎ সুতবত । ততে। নিবৃত্য বাণিজ্যাৎ সানন্দ গৃহ-মাগতঃ।। ভাৰ্য্যাবৈ কথিত সৰ্ব ব্ৰভঞ্চ সন্ততিপ্ৰদেশ। তদা ব্ৰত করিষ্যামি যদা মে সম্ভতি র্ভবেৎ ।। ষৎকিঞ্চিদ্দিবসে তস্য ভার্য্যা **बी**नावजी मजी। गर्त्रयूकानम-চিত্তা ভবদ্ধর্মপরাষণা।। পূর্ণে গৰ্ৱে ততো জাতা বালিকা চাভি-নিশ্মল।। দিনে দিনে বৰ্দ্ধমান। শুকুপক্ষে যথা শশী।। ততে। ব-ণিক্সুভাষাশ্চ জাতকশ্মাদিকঞ্চ রন্। নামা কলাবতী চেতি ভন্না-

মকরণ ক্রত।। ততো লীলাবতী প্রাছ স্বামিন মধুর বচঃ। ন ক-রোবি কিমর্থয়া পুরা যক্ত প্রতি-व्यञ् ॥ विवाहमयत्य श्लामाः कतियामि ज्रु॰ श्रियः। ইতি ভার্য্যা॰ সমাশ্বাস্য জগাম নগর॰ প্রতি।। ততঃ কলাবতী কন্যা ব-ৰ্দ্ধিতা পিতৃবেশ্মনি। দৃষ্ট্বা কন্যাণ ততঃ সাধু র্নগরে বন্ধু জিঃ সহ।। মন্ত্রবিদ্বা ক্রন্ত দূত প্রেরবিদ্বা म धर्मावि । विवाहार्थक कन्यामा বর শেষ্ঠ বিচার্যন্ ৷৷ তেনা-জ্ঞপ্তশ্চ দূতো ২সৌ কাঞ্চনণ ন-গর ষযৌ। ভঙ্গাদেক বণিক্-পুত্র॰ সমাদাযাগতো হি সঃ।। *ष्*रुष्टे। छ॰ मून्पतः वाल॰ विवर्भू-শ্ৰণ গুণাম্বিত'। জ্ঞাতিভি ৰ্বন্ধুভিঃ সার্দ্ধণ পরিতুফেন চেতসা।। দ-ত্তবান সাধু রাহূ্য কন্যাণ বিধি-বিধানতঃ। ততো ভাগ্যবশাত্তে-ন বিশাৃত বত মৃত্যা। বিবাহ সমযে ২প্যস্যা স্তেন রুফৌ ২ভ-বদ্বিভূঃ। ততঃ কালেন কিয়তা निक्रधर्यविभात्रमः ॥ वाशिक्रा-র্থণ গতঃ শীঘুণ যামাত্রা সহিতো विक्। রত্নসারপুরে রম্যে গড়া-সিন্ধু সমীপতঃ।। বাণিজ্যে স্বরু

তে সাধু যামাত্রা শ্রীমতা সহ। পুরী নির্মায নগরে চন্দ্রকেতো न् भमा ह।। এত श्रिक्तिय काल जू সভ্যনারায়ণঃ প্রভুঃ। ভুফপ্রতি জ্ঞ মালোক্য শাপণ তল্মৈ প্রদত্ত-বান্।। অদ্য প্রভৃতি কালঞ্চ মহা-দুঃখণ ভবিষ্যতি। তশ্মিষেৰ দিনে রাজ্যে ধন মাদায তক্ষরঃ ৷৷ তে-देनव वर्जना बाजः शृष्ठेदमभः वि-लाकवन्। छ० भन्छाकावकाम् म्छान् मुख्रा छींछन চেতসা ।। ধন সংস্থাপ্য তত্ত্বৈব গতঃ শীষু মলফিতঃ। ততো দূতাঃ সমাষা-छ। यजारस मञ्जदना विवक्।। मृ-ষ্ট্ৰা নৃপধন তত্ৰ বন্ধা দূতা বণিক্ সূতো। হর্ষযুক্তা ধাবমানা উচু मृ शमभीशबः॥ छऋतो को म-यानीटो वित्नाकाछा १४ अ-ভো৷ তে নৃপাজ্ঞা সমাদাষ দৃত বদ্ধা তু তাবুভৌ॥ স্থাপিতো দ্বৌ মহাদুর্গে কারাগারে ২বিচা-द्रयन्। সृञ উবাচ। यायया म-छारा विज्ञा न व्यं छक्ष छर्य। विष्टः। তত স্তবো ধনি সচ গৃহীত চ-জ্রকেত্না।। তচ্ছাপাচ্চ তযো র্গেছে ভার্য্যা চ দুখিতাভবৎ । চৌরেণাপহত সর্ব গৃহে ফচ

व्हिज् धन ।। जावि धावि **मगावृ** ক্তা কুৎপিপাসাতিপীডিতা। অ-মচিস্তাপরা ভূমা ভূমতে চ গৃহে गृह्य। ७७: कनावंछी कना ৰভা্ম প্ৰতিবাসরে। একস্মিন্ দিবসে রাত্তৌ ক্ষুধার্তা দিজমন্দি-রে ৷৷ গদ্বাপশ্যদ্ভুত তত্র সত্য-নারাষণস্য সা। উপবিশ্য কথা क्षा वतः आर्थियही मूना।। अ-माप • जन्म क्षा यत्यो तात्वो गृह॰ প্রতি। ততো লীলাবতী ক্ন্যাণ ভৎস্থামাস তাণ ভূশণ ॥ পুত্রি রাত্রৌ স্থিতা সত্র কিস্তে মনসি বৰ্ততে। দিজালযে বতং মাত দ্ঁফ বাঞ্ছিতসিদ্ধিদ ।। তৎ শ্ৰদ্ধা কন্যকাবাক্যুণ ব্ৰত্ত কর্তু পমুদ্যতা। সমুতা মার্থি-গ্ভার্যা সভ্যনারাযণস্ট চা बङ हत्क ह देव माधी चम्नु जिः यक्रितः मर । ७ र्क् कामाण्यती ক্ষিপ্র নাগচ্ছেতা ন্মাশ্রম ॥ ইতি দে**ব॰** বর° যাচে সত্যদেব• পুনঃপুনঃ। অপরাষম্ভ ভর্তু শে জামাতৃঃ কম্ব মহসি ৷৷ বতেন তস্যা স্তব্টো ২সৌ সভ্যনারায-ণঃ প্রভূঃ। দর্শবামাস স্বপ্ন হি इक्षरक्षु नृत्राख्य ।। विमाती

মোচয প্ৰাত বঁণিজৌ নৃপসক্তম। দেয় ধনক তৎসর্ব বিধিনা দ্বি-গুণীক্তে ।। নো চেৎ স্বাণ নাশ-যিষ্যামি সরাজ্য ধন পুত্রক । এ-ব মাভাষ্য রাজান খ্যানগম্যো হভব**ং প্রভুঃ।। ততঃ প্রভাতস**-মথে রাজা চ স্বজ্ঞ নৈঃ সহ। উ-পবিশ্য সভামধ্যে প্রাহ দূতজন প্রতি।। বন্ধৌ মহাজনৌ শীযু॰ মোচযধ বৃথিক্সুতী। ইতি রা-ভেত। বচঃ প্ৰদন্তা মোচবিদ্বা মহা-জনो।। भगभीय नृशमाख প্রোচুশ্চ বিন্যায়িতাঃ। আনী-তৌ দ্বৌ বণিক্পুত্রৌ মুক্জৌ নি-गि वस्त्रनाथा। एटा महाकरनी নত্ব। চন্দ্ৰকেতু নৃপোত্তম। স্মৃত্ব। **চ পূ**र्ववृजा**न्छ॰ विश्वगान्त्रभ विश्व**-লো।। রাজ। বণিক্সুতো বী-ক্ষ্য প্রোবাচ সাদর কচঃ। टेम-বাৎ প্রাপ্ত মহৎকট্য ইদানীণ नार्खि ए ज्या। हेमानी त्यव यू-ক্ত স্তু॰ ক্রুরকর্মাদিক পর। ততো নৃপবরঃ শ্রীমান্ স্বর্ণ রত্ন বিভূষণৈঃ ।। অলঙ্জ্য বণিক্পুত্রো বচসা-প্রীণযভূশণ। পুরা নীতঞ্চ যদ্ব্যণ षि গুণীক্তা দত্তবান্।। প্রোবাচ তৌ ততো রাজা গচ্ছ সাধো নি-

জাশ্রমণ। রাজান প্রনিপত্যাই গম্ভব্য॰ ত্বৎপ্রসাদতঃ।। যাত্রা॰ ক্রত্বা ততঃ সাধু শাঙ্গলাচার পূ-ৰিকা । আক্ষেত্তো ধন দন্ধা महर्या नगतः यरगे।। कियकृत्त গতে সাধে সত্যনারাষণঃ প্রভুঃ । জিজাসাণ ক্লতবান্ সাধে। কি মস্তি তরণো তব।। ততো মহা-জনে৷ মত্তো হেল্যা চ প্রহ্ম্য চ । কথ পৃচ্ছিস ভো দ্ভিন্ মুদ্রাণ কি॰ লব্ধু থিছসি।। লভা পদ্রা-**फिक्टेक्ट वर्ज्ड ज्ज्रत्थे यम १** নিষ্ঠুরঞ্চ ৰচঃ শ্রুত্বা সত্যুত ভবতু-তে বচং।। এব মৃক্তা গতঃ শীঘু॰ দণ্ডী তস্য সনীপতঃ। কিষ্দূরে ততো গদ্বা স্থিতঃ সিন্ধুসমীপতঃ ॥ গতে দণ্ডিনি সাধুশ্চ ক্রতনি-ভ্যক্তিষ স্তদা। উথিতা[,] তর্নী मृक्षे विश्वयः शत्यः यदयो।। **ल**ङा পত্রাদিক দৃষ্ট্ব। মূচ্ছিতো ন্যপ-তভুবি। লক্ষসণজ্ঞো বণিক্পুত্ৰ স্তত শ্চিস্তাপরো ২ভবৎ ৷৷ শ্ব-खतः मूहिजुः कारखा वहनरकम মত্ৰবীৎ। জামাতোবাচ। কিম-র্থ॰ সরুতে শোক॰ শাপাদেভক দণ্ডিনঃ। শক্যতে তেন সর্ব॰ ছি কর্তু॰ হর্তু॰ ন সংশযঃ॥ তত স্তর্ভ

व्रनः वादमा वाञ्चिजार्था ভविषा-তি। জাৰাতুশ্চ বচঃ শ্ৰেদ্বা তৎ-मकामः भे खना। मृक्षे ह प স্থিন জ্বক্ত্যা নত্বা প্রোবাচ সা-দর । ক্ষমস্ব চাপরাধ । মে যদুক্ত । छव मित्रिशो।। यया मूत्राञ्चना **प्तिय मुरक्षा २ इ॰ छव मायसा ।** মর্হসি॥ বতঃ পর্ক্তাঃ সর্বে ক-मानादः हि नाधवः। भूनः भून-ম্ভতো নত্বা রুরোদ শোকবিছ্ব-**णः ।। ত** মুবাচ ততো দণ্ডী বিল-পম্ভ বিলোক্য চ। মারোদীঃ শৃণু মে বাক্য মমপূজা পরাদ্বাখঃ ।। या यवज्राय पूर्व्एक लक्षः मूःथः মুহু শুহুঃ। তৎ শ্ৰুদ্বা ভগবদ্বাক্য• स्तृ कर्जु ममूमाणः॥ माधु-क्रवाह। ज्ञायारयाहिकाः मर्द बनामा जिमित्वोकमः। न का-**মক্তি গুণ ৰূপণ ত্বাশ্চ**ৰ্য্য মিদণ প্রভো ।। মূঢো ২হ । দ্বা কথ জানে মোহিত স্তব মাষকা। প্র-সীদ পূজ্যিষ্যামি ষথাবিভবিস্ত-देवः ॥ পুত্র विতক মফিত পা-হি মাণ শরণাগত। শ্রুত্বা ভক্তি-যুক্ত ৰাক্য পরিতৃষ্টো জনার্দ-मः॥ तत्रक वाञ्चिल पदा छटेब-

ৰান্তরধীযত। ততোসৌ নাব মারুহ দৃষ্টা রত্নাদিপুরিতা ।। क्रुगबा मञादावमा यथ्यनः वा-क्षिष्ठ भग । इंजु कु सकरेनः मार्कः शृकाः कृषा यथाविधि ॥ হর্ষেণ মহতা সাধুঃ প্রাবাণ চাক-द्धां षिकः । ·नावः मः रशाका বেগেন স্বদেশ মগমত্তদা ৷৷ হতো জামাতর প্রাহ পশ্য বৎস পুরী মন। দূতঞ প্রের্যামাস নিজ-विखमा दक्कर ॥ ততো श्रमो নগর গন্ধা সাধুভার্য্যাণ বিলো-ক্য চ। উবাচ বাঞ্চিত বাক্য नषा वकाञ्चल उपा।। निकटि নগরস্যৈব জামাত্রা সহিতো ব-ণিক্৷ আগতৌ বন্ধুবৈগৈশ্চ ধনৈ ৰ্বন্থ প্ৰথা।। শ্ৰুত্বা দূত মুখা-দ্বাক্য মহাহর্ষযুতা দতী। দত্য-পূজা ততঃ ক্লম্বা প্রোবাচ তন্-জা প্রতি।। বজানি শীযু মাগচ্ছ সাধুসন্দর্শনাষ চ। ইতি মাতৃবচঃ শ্ৰেষা বত কৃষা সমাপ্য চ।। প্ৰ-সাদ স পরিত্যজ্য গতা সা চ পতি•প্রতি। তেন রুফ্টঃ সত্যদে-বো ভর্তার তরণী স্তথা ৷৷ সংহত্য চ धटेनः मार्कः कटल जियन् मयः প্ৰথ। ততঃ কলাৰতীকন্যানা

लाका बिक अिं। (भारकन মহতা তত্ত্ব ৰুদন্তী চাপতভূবি। मृक्षे। তথাविधाः कन्। न मृक्षे। তৎপতি তরী া৷ ভীতেন মহ-তा माधुः कियान्धर्या मिष्ण यहः । বিচিন্ত্যমানা স্তে সর্বে বভূবু স্তরিবাছকাঃ।। ততো লীলাব-**ठी माश्री मृक्षु। তदिख्ला म**छी। বিললাপাতিদুংখেন ভর্তার ঞেদ मबवी ।। इमानी (नोक्या मा-क मन्त्रा श्जूनलिक्छ । न कारन क्न रेमर्टन रहलया वा-পহারিত ৷৷ সত্যদেবস্য মাহা-ত্ম্যাণ কিণ জ্ঞাতুণ ন হি শক্যতে। ইত্যুক্তা বিললাপাথ তত্ৰস্থা স্ব-জনৈঃ সহ।। ততো লীলাবতী-কন্যা॰ ক্রোডে ক্সন্তা রুরোদ চ। ততঃ কলাবতীকন্যা নফে স্বামি-নি দুঃখিতা।। গৃহীত্বা পাদ্কা॰ তস্য অনুগন্ত মনো দধে। কন্যা-ষা শ্চরিত দৃষ্টা সভার্য্যঃ সুজ্জ-নো বণিক্।। অতিশোকেন সস্ত-প্ত শ্চিন্তৰানাস ধৰ্মবিৎ। হুতো হি সত্যদেবেন জামাতা সত্য-মাযযা।। সত্যপূজা করিষ্যামি যথাবিভববিস্তিরৈঃ। ইতি সর্বা-न् ममार्य कथिउक मत्नात्रथः॥

मदा ह मखबद्धायो मजातमयः भू-नः भूनः। ७७ खरुः मजारम्दर्भ गगनाचनिक्र अजि॥ क्रिगाम य-**इन १७५० देनदिषा यदयना है।** আগজা স্বামিন ডফু মতো ২-मृत्ना १७व९ श्रजुः॥ गृहः ११-শ্বা প্রসাদঞ্চ ভুক্তা চাষাতি সা পুনঃ। नक्ष उर्वृ मूथा मार्था छ-বিষ্যতিন সংশ্বঃ ৷৷ ততশ্চ প্রা-ণদ বাক্য শ্ৰেদ্বা গগণ মণ্ডলাৎ । ক্ষিপ্রণ তদা গৃহণ গদ্বা প্রসাদণ প্রতিভুজ্য চা৷ অপশ্যৎ পুন ব্লাগত্য পতি॰ নাব॰ জনৈঃ সহ । ७७: कलावठी जुकी जगाम পি তর॰ প্রতি।। এহি তাত গৃহ• याहि विनयः अकृत्य कथः। ७९ শ্ৰুত্বা কন্যকা বাক্য সন্তুষ্টো **২ভূদণিক্সুতঃ।। পূজন সত্য-ए** त्रिका क्षेत्र विधिविधान कः । थटेन वंसूगटेनः मार्कः जगाम নিজমন্দির ।। পৌর্ণমাস্যাঞ্চ সং-ক্রাস্ত্যাণ পূজাণ ক্রন্তা যথাবিধি ৷ रेर लात्क मूथ ज़ुका ठार छ সত্যপুর যযৌ।। ইতি এক্ত পুরাণে রেবাখণ্ডে শ্রীসত্যনারা-ষণকথাষা ৰণিক্ সাধু মোক্ষ-বৰ্ণনো নাম ৩ অধ্যায়ঃ ॥ 🟶 ॥

সূত উবাচ। অথ চান্যৎ প্রব ক্ষ্যামি শৃণুধ্ব মুনিসত্তমাঃ। আ-সীদ্বত্শধজো রাজা প্রজাপালন তৎপরঃ ।। প্রসাদ॰ সত্যদেবস ত্যক্ত্বা দুঃখ মবাপ সঃ। একদা স বন গদ্ধা হন্ধা চ বিবিধান্ মৃগান ।। আগত্য বটমূলে চ দৃষ্টা স ভাস্য পূজন । গোপাঃ দৰ্বতি সম্ভক্তা ভক্তিযুক্তাঃ স্বান্ধবাঃ। রাজা দৃষ্ট্য তু দর্পেণ নাগতে ন ননাম সং। ততো গোপগণাঃ नर्द अनामः नृशनिम्दिशे॥ मः স্থাপ্য পুৰ রাগত্য ভুক্তাঃ সর্বে ষ্থেন্সিত । ততঃ প্রসাদ । সণ্তা -জ্য রাজা দুঃখ মবাপ সং॥ তস্য পুত্রশত নক্ত ধন ধান্যাদিকঞ্চ ষৎ। সভ্যদেবেন তৎ সর্ব॰ না-শিত মম নিশ্চিত ৷৷ অত স্ত-ত্ৰৈৰ গচ্ছামি যত্ৰ দেবস্য পূজ-ন । মনসেভি বিনিশ্চিভ্য যথে। গোপাল সন্নিধিণ। ভতো ২সৌ সভ্যদেবস্য পূজা॰ গোপগণৈঃ সহ। ভজ্জি শ্রদ্ধান্বিতো ভূত্বা চকার বিধিবমৃপঃ। সভ্যদেব-প্রসাদেন ধন পুলাবিতো ২ভ-वर । इंड लाक मूथ जुना চাত্তে विक्शूभूतः यत्यो ॥ य हेम॰

ঙ্গরুতে সত্যত্রত॰ পরমদুর্লভ॰ । শৃণোতি চ কথা পুণ্যা ভুক্তি मुक्कि कलक्षमाः॥ धन वानगामि-ক তদ্য ভবেৎ সত্য প্রসাদতঃ ৷ দরিজে। লভতে বিত্ত॰ বন্ধে। মৃ-চ্যেত বন্ধনাৎ।। ভীতো ভযাৎ প্রামুচ্যেত সত্য মেতলসংশ্যঃ 1 ঈপ্সিতঞ্চ ফল॰ ভুক্ত্বা চান্তে সত্য-পুর বজেৎ ৷ ইতি বঃ কথিত বিপ্রাঃ সত্যনারায়ণত্রত ৷ যুৎ **ৰুত্বা সৰ্বদুঃখেভ্যো সু**ক্তো ভবতি यानवः ॥ वित्ययञः कलियूत्रा মত্য পূজা কথা ফল । সত্য-নারাষণ কেচিৎ সত্যদেব তথা পরে।। নানা ৰূপধরো ভূত্বা স-ৰেবা মীপ্সিতপ্ৰদঃ। ভবিষ্যতি কলৌ সভ্যত্ৰতৰূপী সন্যতনঃ॥ ষ ইদ পঠতে নিত্য শ্ৰোতি यूनिमल्याः। छमा नमास्ति भा-পানি সত্যদেব প্রসাদতঃ ৷৷ ইতি শ্রীক্ষন্দপুরাণে রেবাখণ্ডে সত্য-নারায়ণ কথা নাম ৪ অধ্যায়ঃ ।। 🟶 ।। ইতি শ্রীসত্যনারাযণত্রত-कथा मगार्था। क्रिटिश्रुखरक **अक्षायनाय नाखि। क्रिक्ट छ-**বিষ্যপুরাণে ইতি ক্লত্বা এতৎকথা লিখিতা ৷৷ঞা৷ অথ সত্যনারায়ণ-

পূজাপদ্ধতিঃ। আদৌ স্বস্তিবা-চন পূর্বক॰ সঙ্গল্প স্বাণ । জ-**(माठा) मि अम्किटिशी द्रांद्र्वी** অমুকগোত্ত শ্রীঅমুকদেবশর্মা অমুককামঃ গণেশাদি দেবত। পূজা পূৰ্বক শ্ৰীসত্যনারাযণ পূ-জন কথাশ্রবণ নহ॰ করিষ্যে। ভতঃ সূক্তণ পঠেৎ ৷ তত আসন श्वकाामिक॰ कृषा गरनमामि प्न-বতা নবগ্ৰহ দিকপালান্ পূজ-(स्थ। नन्त्री मदन्त्री ज्यानि-পুরুষ অনাদিপুরুষ শ্রীরাম ল শ্বন পূজা॰ ক্লছা যব ডিলৈঃ স **छानाता**यव गावाङ्ख्यः **द्यव** ব্যাহ্নতীঃ সমৃচ্চাৰ্য্য ভগৰন্সত্য-नातायन देशभक्त हेशभक्त हेर তিষ্ঠ ইহতিষ্ঠ মম পূজাণ পৃহাণ ইত্যাদিনা আবছ পুলা গৃহী-चा भाराय । भारय मञा छ ণাতীত গুণত্রষ সমন্বিত । বো-কনাথ ত্রিলোকেশ পীতাম্বর-थतः इति ।। इन्हीयत्रमनाभाषः नाश हक गमाध्यः। नायावनः চতুৰাহণ শ্ৰীবৎসপদভূষিত। ।। গোবিন্দ গোঙ্গলানন্দ জগতঃ পিতর গুরু। ইতি ধ্যাত্বা এতৎ পাদ্যু সত্যনাৱায্ণাৰ নমঃ ৷

অৰ্থ মন্ত্ৰস্তু। ব্যক্তাব্যক্ত স্বৰা⁹ পাষ হৃষীকপত্তে নমঃ। মধা নিবেদিতো ভক্ত্যা অর্ঘো ২য়ং প্রতিগৃহতা ।। এয়ো ২র্ঘঃ শ্রী-সত্যনারায়ণাষ নমঃ। পুষ্পা-क्षनि॰ गृशैषा। नम एउ विश्व-ৰূপায় শুড়া চক্ৰধরাষ চ। পদ্ম-নাভাষ দেবাষ স্বীকপত্ৰে নমঃ ৷৷ নমো ২নস্ত স্বৰূপায ত্রিগুণাত্ম বিভাসিনে। নৈবেদ্য गृशिषा। प्रतीयः वञ्च भाविन्त তুভা মেব সমর্গিত । গৃহাণ সুমু-খো ভূষা প্রসীদ পুরুষোত্তম।। **ज्ञा अक्षिण वक्षा श्राप्ट**ा অচ্যুত পুত্তরীকাক্ষ নৃদিংহণ रेमञामृपनः। स्यीरकः कःगः হ্লাথ বাগীশ বরদাযক ৷৷ গুণ-ত্রয়ণ গুণাতীত গোবিন্দণ গরু-**७४कः।** जनार्भनः जनानमः জানকীবলভ জ্বণা৷ প্রণমামি সদা সভ্যনারাষণ মতঃ পর । **पृर्गाम वियाम स्थादत भज्**ङिः পদিপীডিতে।। বিবিধাপৎসূ मूरकेषु ज्यात्नाइणि यक्तयः। নামান্যেতানি সঙ্কীৰ্ত্ত্য ঈক্ষিত क्न याश्रुयाय ॥ जन्मातायन দেব বন্দেছ কামদ শুভা ৷

वीलका ह छड॰ विश्व॰ दिन छ- । महाकृतः की हजूर्गानाः श्रथः दिम नदशः छटा प्रकि- यगुगः। यशः। कृठः महाकृतः । किन्तावधाद्रशः दिखानाशे वाणत विक्रितो । किर्मानशास् । किर्मानशास्त्रशः विक्रानशास्त्रशः विक्रानशास्त्रशः । विक्रानशास्त्रशः ।

সভ্যপুর ক্রী বিফুলোকঃ। বথা।
ঈপ্সিতঞ্চ কলং জ্বুকা চান্তে সভ্যপুর বসেৎ। ইতি বং কথিভং বিপ্রাঃ সভ্যনারাখণত্রতং ॥
ইতি ক্ষমপুরাণীষ সভ্যনারাখণত্রতক্থা।।

সভাফলঃ পু॰ বিঅবৃক্ষঃ। রাজনির্ঘন্টঃ॥

मठाखामा खी क्रक्म प्रीटिणः।
इंडि मक्त प्रपादी ।। मा ह
क्षिक्ष मगाक महिका खर्म छर्म छर्म । जरको मइक्ष खाः मर्वा क्रिकागामा मइक्ष खाः मर्वा क्रिकागामा मइक्ष का क्रिकाग मठाखामा ह
कालिकी ह छिरिच्या।। मिखिक्म। का यवडी ना प्रक्रिडी
मृतका। मृगीला नाम छन्न नी
महिका का क्रिका मुगीला नाम छन्न ।।
इंडि भारमं উত্তর্ধতে ৬৯
खशायः।।

সভ্যভারতঃ পু• বেদব্যাসঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।।

ষযুগণ। যথা। ক্তে॰ সত্যযুগণ विजाशी दानत रिक्टियो। কলি ঝর্মরকঃ কর্মাষ্গণ পাপস্ত পাতক ।। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ **%।। তস্য ক্ত নাম কারণ** ষথা। তদুপাধিকতঃ কালো ব্ৰন্দণো জন্ম মৃত্যুক্ত। শত সম্বৎসরে বন্ধা লয় প্রাপ্নোতি হি স্ববি।। লফান্তে স্কাভিম-ধ্যাদুখিতঃ সৃজতি প্রভুঃ। ভতঃ ক্তযুগান্তেহ্ণ কাল্য সদ্ধর্ম-পালক ।। ক্তক্তাঃ প্রজা যত্ৰ ভন্নামা না॰ ক্বত॰ বিদুঃ। ইতি কল্কিপুরাণে ১৯ অধ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ जन्मी यथा। शर्म क्ट-তুষ্পাদভবৎ ক্বতে পূর্ণে জগত্র-यः। (परा यर्थाञ्चरः नमा क्ट-রক্তি ভূবি সর্বভঃ ৷৷ সর্বশস্যা ৰসুমতী শুফুপুফজনাবৃতা । শাঠ্য চৌৰ্ধ্যানৃতৈ হীনা আধি-ব্যাধি বিৰক্ষিতা।। বিপ্ৰাবেদ-विषः मूमक्षणयूका नायाञ्च ह-র্য্যাব্রতঃ পূজা হোমপরাঃ প্র-তিত্রতধরা যাগোদ্যতাঃ ক্ষত্রি-ষাঃ। বৈশা বস্তুষু ধর্মতো विनियदेयः श्रीविक्रूज्जानदाः

मृजास विकरमवनाक्षतिकथानाभाः मभर्याभिताः ॥ ইতি
कक्षिभूतात् २৮ व्यथायः ॥॥॥
जम्पूर्णमानः यथा। हजाति वीति
व्य टेहकः क्रजामियू यथाक्रमः ।
मण्याजानि महमाति विश्वनानि
मजानि ह॥ ইতি बीजागवरक
३२ क्रव्य ४ व्यथारय २ क्याकः
गिकायाः बीधतस्यामी ॥
मजार्यावनः भूः विमाधतः ।

সত্যরতঃ পু॰ সত্যরতরাজপুত্রঃ
। যথা। ত্রিধন্বনঃ সুতো জাত
ক্রয়ারুণ ইতি স্মৃতঃ। তস্য সত্যরতো নাম তন্মাৎ সত্যরতঃ
ন্মৃতঃ।। তস্য পুল্রো হরিশ্চন্দ্রো
হরিশ্চন্দ্রাচ্চ রোহিতঃ। ইতি
মাৎস্যে ১২ অধ্যাবঃ।।

ইতি জটাধরঃ ৷৷

সত্তলোকঃ পু॰ সপ্তলোকান্তগ্ৰহলাকবিশেষঃ। ষথা। ষড্গুণেন তপোলোকাৎ সত্তলোকো বিরাজতে। অপুনর্মারকা
যত্র ত্রন্ধলোকো হি স স্মৃতঃ।।
ইতি বিষ্ণুপুরাণে ২ অংশে ৭
অধ্যাযঃ।। জনলোকাপেক্ষবৈব ষড্গুণেন দাদশকোট্যচ্ছাবেণ তপোলোকানন্তর॰ স-

ত্যলোকঃ। নতু তপোলোকাৎ বজ্ঞণেনেতি মস্তব্যে। তথা-সতাফটবারি শৎকোট্যাছাৰ ব্বেন বন্ধাণ্ডে ত্যাবকাশাভা-वार । সুর্য্যাও পোলযো রস্তঃ কোট্যঃ স্যুঃ পঞ্চবিংশতি রিতি শুকোক্তেঃ। সত্যলোক এব কক্ষাভেদেন ব্রহ্মধিষ্ট্যাৎ পর্ देवक्रकेटलाकामि (छवरः। এवश्र ভূতলাদূর্দ্ধ পঞ্চদশলক্ষোত্রা স্ত্রবোবি শতিঃ কোট্যো ভবস্তি । मठाताकामृक्ष्यः शक्षममन-কোনকোটি দ্বাদগুকটাহ ইতি एखर । जभून यातकाः भूनम्। ত্যশূন্যাঃ। ইভিভট্টীকা।। मजावनाः पू॰ श्विः। ইजामतः॥ সত্যবাদিনি ত্রি ৷৷

সত্যবতী স্ত্রী ব্যাসমাতা। তৎপর্য্যায়ঃ। কালী ২ বােজনগস্বা ৩ গন্ধকালী ৪ ঝষােদরী ৫
ব্যাসমাতা ৬ সত্যা ৭ চিত্রাঙ্গদপ্রস্থা ৮ বিচিত্রবীর্য্যস্থা ৯ কস্ত্রা
১০ দাসেষী ১১ দাসনন্দিনী ১২
। ইতি শক্ষরত্বাবলী ।। নারদপত্নী ।। ঋচীকমুনিপত্নী। ইতি
মেদিনী ৷৷ সত্যবিশিষ্টে ত্রি ৷৷ ঞাঃ
ঋচীকপত্নাঃ প্রমাণান্তরং যথা।

বন্ধপুলো ভৃগু নাম ঋচীক স্তৎ-সুতো ২ভবৎ। স ভার্যার্থী চরন্ जृत्यो कानामकः गङः भूता ॥ ममर्भ ठातवाशङ करहा ई॰ ज-ममू खद॰। अभिक्मा जूछ॰ गाधि॰ छभङ्॰ नुभनखयः॥ ञत्रभाङ्मा তস্যাথ পুত্ৰকাষস্য ভূভ্তঃ। স ভাষ্যमा मूला ज्वत्छ (मवकना)-मया खरेवः॥ शहीरका जृधभूख ন্তা॰ ভাষ্যার্থ॰ সমষাচত। গাধি॰ নৃপতিশাৰ্দূল স চোবাচ নৃপো मूनि।। একতঃ भगागकर्गाना ग-শ্বানা চন্দ্ৰবৰ্চসা । সহসু মেক । या प्रमाखित्य शूली अमीयरा।। **अ**ठीक छेवाह । मामाग्याग्यमङ-সুন্ত তব রাজ-স্তথাবিধণ। ঞ্চিৎকাল প্রতীক্ষম যাবত্তদহ भानत्य ॥ शक्राकलामृथिञ्च म-ত্ত॰ সম্যক্ প্রচেত্স। আদাযাশ্ব-সহসূত্র মুনি গাধি মথাভ্যমাৎ ।। তানশান্ গাধি রাদাষ পুত্রী॰ সত্যবতী স্বকা । ঋচীকাম দ-দৌ লক্ষী॰ কেশবাষেব সাগরঃ।। ঋচীকো গাধিতনযা লক্ষা ভা-ৰ্য্যা মনিন্দিতা । মুদিতঃ স তধা द्रिय यथाकाम[॰] चकाञ्चरम ॥ ক্লতদার সূত শ্রেষা ত্রফু পুত্র

স্বক ভৃগুঃ। অথাজগাম মতি-यान सूरा॰ पृष्ट्री ननन ह।। प-म्भाजी ज॰ ममामीन॰ जृख॰ प्रव-গণাৰ্চিত। পূজ্যিত্বা সমাসীন॰ ভৰ্তু ভৌ কুডাঞ্লী।। ততো ज्यः नुषा चीषा नृथी उरेन ग-वरी । दब वृगीत्र मागामि वा-**इक्टिंग् वतवर्गिन।।** जात्मयः मूक-র॰ বাপি ষত্র তে বর্ত্ততে স্পৃহ।। ততঃ সভাবতীপুত্র তপ আয়ায পারগ ।। মাতৃ চ বীর মতুল পুত্র বর মবাচত। স টেব মস্ত্রি-जुरेकुव जूषा धाननत उमा। বিশ্ব মাবর্ত্য মনসা যত্নাৎ শ্বাসং সসৰ্জ্জ সং। ত্যা নিঃশ্বাস বাতা-जू निमृত देव हक् दय ।। ভरिमा-তৎ দ্বিত্যণ দত্বা ভৃগু স্তা মিদ ম-ব্ৰবীৎ। চরুদ্বয় গৃহাণ দ্বং সুষে সত্যবতি স্বয়ণ।। সাদ্রা ঋতৌ ঋ-তৌ মাতা তদা ত্বঞ্চ করিষ্যথঃ। আলিঙ্গাশ্বখনৃক্ষণ তে মাতা পুণ-স্বনাষ বৈ।। চরু মারক্তক চেমণ সা ভোক্ষ্যতি সূত স্ততঃ। স্বঞ্চো-ডুম্ববৃক্ষন্ত সমালিম্য সিতং চরুণ ॥ ভক্ষবৈতেন পুত্র স্তে ভবিষ্য-তি সনাতনঃ। এব মুক্ত্বা ভৃগু-र्याटा यरथष्ठः मानि मःगूनः॥

অবাপ মাত্রা সহিতা ভর্ত্রা পিত্রা চ ভাবিনী। অথ সানদিনে १-শ্বথ মালিক্যারক্তক চরু ।৷ অ-দ্যাৎ সত্যবতী তস্যা মাতা কল্প সিত চরু । 🐞। পরিবর্তম ত क्छाना मिराक्टारना ज्य मूनिः॥ অথাগতা সুষা তাৰ বচনঞেদ-मजवी । विभर्गम सुगा ज्या বৃক্ষালিঙ্গনকর্মণি ৷৷ তথা চরু প্রাশনে চ তত্ত্রেদ ন্তে ভবিষ্যতি। বান্ধণঃ ক্ষতিযাচার স্তব পুলো ভবিষ্যতি ৷৷ ক্ষত্রিখো ব্রাহ্মণাচা-রো মাতু স্তে ভবিতা সূতঃ। ত্যুক্তা ভৃগুণা সাধী তদা সত্যব তী ভৃগু॰॥ পুনঃ প্রসাদযামাস পৌত্রো মে ২স্ত্রিত তাদৃশঃ। এব মস্ত্রিতি প্রোক্ত্বাস তত্তৈবা खर्कर४ ज्**७ः॥ अथ कात्व मृ**ज॰ मीख॰ জयमशिक गांधिका। मू ষুবে জননী তস্যা বিশ্বামিত্রণ তপোধনণ।। জমদগ্নি স্ততো বে-দান্ চতুরঃ প্রাপ মা চির॰ । প্রাদ্রাসদ্ধনুর্বেদঃ স্বয়ণ তামিন্ মহাত্মনি।। বিশ্বামিত্রোপি সক-লান্ বেদানপি ভথাচিরাৎ । ধনুর্বেদ তথা রুৎন্ন বিপ্র শ্চা-ভূত্তপোধনঃ ৷৷ জাত্মল্যমান স্তে-

জন্বী জমদগ্নি মহাতপাং। বে-দৈ স্তপোভিঃ দ মুনীনত্যক্রাম-চ্চ সূর্য্যবং।। ইতি শ্রীকালিকা-পুরাণে জামদগ্ন্যোপাখ্যানে৮৪ অধ্যায়ঃ।।

সভাবতীসূতঃ পু• ব্যাসঃ। **ই**ভি

সভাবাক্ পু॰ ঋষিঃ। ইভি শব্দরত্নাবলী।। কাকঃ। ইভি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। সভাবাদিনি ত্রি।।
সভাবাদী ত্রি ষথার্থবক্তা। তৎ
পর্যায়ঃ। সভ্যোদ্যঃ ২। ইভি
শব্দমালা।।

সত্যবান্[°] পু॰ রাজবিশেষঃ। সতু সাবিত্রীপতিঃ। ইতি মেদিনী॥ সত্যযতি ত্রি।।

সত্যবৃত্তঃ ত্রি সত্যবাদী। ই**তি** কেচিৎ।।

সত্যবতঃ ত্রি ত্রেতামুগে সূর্য্যবংশীযপঞ্চবিংশরাজঃ। যথা।
ত্রিধন্ধনঃ সুতো জাত স্ত্রয়ারুণ
ইতি স্মৃতঃ। তস্য সত্যবতো
নাম তস্মাৎ সত্যরতঃ স্মৃতঃ।।
ইতি মাৎস্যে ২২ অধ্যায়ঃ।।
স চ ত্রিশঙ্কুরাজঃ। যথা। ত্রিধন্ন স্ত্রয়ারুণঃ ত্রয়ারুণাৎ সত্যবতঃ। যোহসৌ ত্রিশঙ্কুসং-

মাতা। ইতি শব্দরত্নাবলী।।

দুর্গা। ইতি বন্ধবৈবর্তে প্রক্লভি-

জ্ঞা মবাপ চাণ্ডালতা মুপগতশ্চ । बामगवार्षिका। यनावृष्णा॰ বিশ্বামিত্রস্য কলত্রাপত্যপোষ-গার্থ চাণ্ডাল পরিগ্রহ পরিহর-नार्थक जाइवीजीत्त्र नाट्यारथ मृगमा'म मनुमिन ववसा शति-ভুষ্টেন চ বিশ্বামিত্রেণ সশরীরঃ স্বর্গণ আরোপিতঃ। ত্রিশঙ্কো र्श्तिकासः। देखि विक्पूत्रात्व ৪ অংশে ৩ অধ্যায়ঃ।। সত্যসঙ্কাশঃ ত্রি সত্যসন্মিভঃ। ইভি কেচিৎ ৷৷ সত্যসঙ্গরঃ পু॰ ঙ্গবেরঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ৷৷ অন্যাযরহিত-युक्तश्रा সত্যসন্ধঃ পু॰ রামানুজভরতঃ।। জনমেজমঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী

। শ্রীরামচন্দ্রঃ। যথা। রাজেন্দ্র॰

সত্যসন্ধ দশর্থতন্য শ্যাম-

ल॰ भाखमूर्छि॰। वल्प लाका-

ভিরাম রযুঙ্গলভিলক রাঘব

রাবণারি ।। ইতি মহানাটকে

১ অঙ্কঃ।। সত্যপ্রতিক্তে ত্রি ॥

সভ্যসন্ধা স্ত্রী জৌপদী। ইতি

সত্যা স্ত্রী সীতা। সাচ রাম-

পত্নী।। সভ্যবতী। সাতু ব্যাস-

गयत्रञ्जावनी ॥

ब्रख. ॥ সত্যাক্ততিঃ স্ত্রী অবশ্যং মবৈং তৎক্রেতব্য মিতি সত্যকরণ । তৎপর্য্যায়ঃ। সত্যন্তারঃ ২ সভ্যাপন ৩। ইত্যমরঃ।। সত্যাগ্নিঃ পু॰ অগস্তামূনিঃ। इेंडि भक्तज्ञावनी ॥ সত্যানৃত॰ ক্লী বাণিজ্য•। ইত্য-মরঃ।। কিঞ্চিৎসত্য • কিঞ্চিদস-ত্যা সত্যসহিত মন্ত বা ষ্ত্র ৷ ইতি ভরতঃ।। সত্যাপন• ক্লী সত্যাকৃতিঃ । ইত্যমরঃ 11 সত্যাপনা স্ত্রী সত্যাক্ততিঃ। ই-ত্যমরটীকাষা বোপালিতঃ।। मर्ल्यामाः वि मलावामी। ইতি नक्याना ॥ সত্র ত্ওক সম্বন্ধে ।। সম্ভতৌ । ইতি কবিকল্পদ্রুমঃ।। দস্ত্য-বর্গাদ্যমধ্যঃ। সম্ভতি নির্বাহ ক্রিষেতি ভটমল্লঃ। ও সত্রযতে । সত্রাপষতে প্রতিজ্ঞাণ সাধ্ঃ। সম্ভতি বিস্তারণ মিতি গোবিন্দ-ভটঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ मज॰ क्री यङ्किविटम्यः। यथा।

म्ममा

देनियस श्नियिसकत्व अवसः भागितकामसः। मृद्धः वर्गाय द्याकाय मश्मुमय याम्छ।। किन याग्र याख्याय क्लाव्याः न्दिकट्द वयः। जामीना मी-र्यम्या कथायाः मक्ष्मा श्रदः ।। ইতি শ্রীভাপবতে ১ ক্লেকে ১ অধ্যায়ঃ।।

সত্রাজিৎ পুণ রাজবিশেষঃ। সত্র শ্রীক্ষশ্বসুরঃ। সত্যভামাপিতা । পরে শশিধজরাজশ্চ বভূব। ইতিকক্ষিপুরাণে ২৭ অধ্যায়ঃ।। সত্রিজাতকণ ক্রী মাণসব্যঞ্জন-বিশেষঃ। যথা। মাণসংবছ্গৃতে ভূষ্টণ সিজ্বা চোফাষুনা মুহুঃ। জীরকাদ্যৈঃ সমাযুক্তণ পরিশু-হুণ ভদুচ্যতে।। তদেব যুত ত্ত-ক্রাঢ্যণ প্রদিশ্ধণ সত্রিজাতকণ। ইতি শক্ষচন্দ্রিকা।।

সত্ব° ক্লী গুণবিশেষঃ। ইত্যমরঃ ।। অস্য বিবরণণ দ্বিত্তকার সত্ত্ব-শব্দে দ্রফব্যণ ।।

সম্বরণ ক্লী শীঘুণ। সহ স্বরষা বর্ত্তে সম্বরণ।। তদ্বতি ত্রি । ইত্যমরভ্ররতৌ।।

সৎসারঃ পু• বৃক্ষবিশেষঃ।। চিত্র-করঃ।। কবিঃ। ইতি কেচিৎ ।। উত্তমসারষুক্তে তি।।
সথুৎকার॰ কী অমূকত। ইতি
হেমচন্দ্রঃ।। থুৎকারেণ সহ বর্ত্তমানঞ্চ।।
সদেশকঃ পুণ কর্কটিঃ। ইতি রাজ

নির্ঘণীঃ । দেশযুক্তে ত্রি ।। সদংশবদনঃ পুং কঙ্কপক্ষী। ইতিঃ রাজনির্ঘণীঃ ।।

সদঞ্জন ক্লী সসুমাঞ্জন । যথা । রীতিপুষ্প পুষ্পকেতু পৌষ্প-ক সসুমাঞ্জন । সদঞ্জনক চা-কুষ্য মাক্ষিক গাতুমাক্ষিক ।। ইতি শক্ষচন্দ্রকা ।।

मनन की गृरः। रेलामदः।।

मनन की गृरः। रेलामदः।।

मनः खी की मला। रेलामदः।।

मनाः भूः विधिमनीं। रेलामदः।।

मनां नां नां निर्मालि किला । निर्मालि किला । मनि

माधवः कार्यका रेलि विकार माधवः कार्यका।

मणा। এकः कर्मानियुक्तः मा।

पिलीय ख्राधातकः। ज्लीयः

श्रम्यकः कार्याल्लः कर्म मनाः

রেৎ।। কর্মনিবৃক্তঃ আচার্ব্যঃ
সচ ব্রহ্মাসকে হোমকর্মনি ব্রহ্মা
। বৃষণ হোমাকরণে হোভাসি।
বৃষণ প্রথারকর্মাকরণে প্রকিন্
নিষিরপি। তন্ত্র্যারকঃ পৃত্তকথারকঃ। প্রশ্নবক্তা সদস্যঃ ।
ইতি সংস্থারতত্ত্বং।।।। সভ্যঃ।
বৃথা। সভ্যাঃ সদস্যাঃ পার্বদ্যাঃ
সভাস্তারাঃ সভাসদঃ। সামাজিকা ইত্যাদি হেমচন্দ্রঃ।।

সদা ব্য সর্বকালঃ। সর্বদা। ইত্যমরঃ॥ পরোপকারনিযতঃ সদাভব মহাজন। ইতি বিষ্ণু-পুরাণা।

সদাগতিঃ পু॰ বাষুঃ। ইত্যমরঃ
। সৃষ্যঃ। নিৰ্বাগ্ণ। সদীশ্বরঃ
। ইতি মেদিনী।।

मणां हातः पृ माश्वा माहतवः।

जन्नक्षाणि यथा। मत्रवं जि ज्ञान प्रतिक्षिणः प्रमाण येणस्त ।

जिल्ला विश्विष्णः प्रमाण विकायर्वः श्री हेण्या । जिल्ला प्रमाणः

व जाहातः भातम्भर्याक्रमागणः

व वर्गानाः मास्तानानाः मणाहातः म सहार्षणः । देवि ममः

व क्षाहातः स्वाहि । देवि समः

व क्षाहातः समः

व क्ष

শৃণু সংপ্রতি। যানবশ্য নৃপঃ कर्वााखायाङः मंकलान् मृन् ॥ माथदः कीनटमायान्छ मह्दनः সাধুবাচকং। তেখা মাচরণ যজু সদাচারঃ স উচ্যতে ॥ আগ-মেষু পুরাবেষু সংহিতাসু যথো-मिलान्। ममुक्तिक ममाठाता॰-खान् गृद्रीयाकाृश्यव ।। अधीन् यद्भव्यापादिक त्रिवान् रशदिन ख शृक्षरा । आर्कः शिजृन् ৰজেদমৈ ভূ তানি বলিভি স্তথা ৷৷ বৈত্ত প্ৰসাধন স্নান দম্ভধা-वन मञ्जनः। मर्बः गृश्यव अ ৰ্য্যাৎ নিষেকাদ্য বিধিণ তথা।। ষট্কর্মসু নিষ্প্রীভ রাজা বিপ্রা-न् ममञ्जुः। छरेथत कवियानी-नि स्व स्व कर्यानि स्वाक्रिय ।। ষঃ **স্বধর্মা**ণ পরিত্যজ্য পরধর্মাণ সমাচরেৎ। ত॰ শতেন নৃপো मखाः भून खित्रिविरगंकरम् ॥ नाम्बर्मत्त्रम् क्रत्यम् वित्नरेगः-তান্সমাচরেৎ। অবশ্যুণ পার্থি-वा ताजन् विष्णया अ भृगृष्ठ त ॥ नंतरकाटन महारहेग्रा॰ पूर्श-যাঃ পরিপূজন । নীরাজন দ-শयां अर्यादेश दलवृक्तरय ।। পৌষে মাসি তৃতীয়াষাণ সর্য্যাৎ

भूगाजित्वहनः। भूकविषा धि-यः (मरीः ञीशक्याः नृभ क्टत्र ॥ धीयछा धन धानामा वृक्तरम न्-পদত্তমঃ। জৈতে দশহরাধান্ত विरक्ध तिकि॰ मयाहरत्र ॥ त्रस्यो হরিস্থে দ্বাদশ্যাণ শক্তপূজাণ সমা-চরেৎ। বিশেষ্যৈতা স্তু নৃপতিঃ ष्ट्रयाप मर्वः वङ्वादेयः॥ এভिः ক্রতৈ বলং রাজ্যং কোষ শ্চাপি বিবৰ্দ্ধতে। অক্ততেশ্বেষু ষজ্ঞেষু मूर्जिक भद्रक ख्या। **काय** छ न्श खन्यारम्य यख्वः मयाहरत्र । শরৎকালে মহাঊন্যাণ দুর্গাযাঃ পুজনে বিধিঃ।। পুরা প্রোক্তস্ত বিধিনা তেন কাৰ্য্যন্ত পূজন 1 ইতি কালিকাপুরাণে ৮৬ অধ্যা-यः ॥ 🕸 ॥ जिल्हा महाहादत्र বিশেষা খ্যা কথিত স্তব পার্থিব । नित्यद्यु वित्ययाः ख मृण् (यन श्चिरयगुर्छ।। ज्ञान्भूका छथा दिखु॰ बिवा मिश भूतकतः। ख-मञ्चा **ठ उथा मान** न जुक्षीयाम्-शः किष्।। श्वत्यम्भित्शवस নিত্য মেব পুরোহিতৈঃ। অফ্-ত্বা চামিছোত্রন্ত ভূঞ্জমরক মাপু-या ।। नातकिए गृह् ताका त-ত্বদ্ধি পরিবজ্জিতে। স্বপেত্তথা

जिया गार्क न कलाहन महिल्य ॥ जुकामः जैकनः नामाख्या-शाखाकन न्भः। वृक्षिक कता-था गाय जागव मृखिकाः॥ नि-बाएका वृखान वृक्तिवृक्तिकता ন তাঃ। বুদ্ধিবৃদ্ধিহরামিতা॰ তাজেদ্রাজা চ ভোজনে।। ভো-जरमनवश् वृक्तिवृक्तिरहजूः नृ-পোত্তনঃ। ন পর্যায় বিহীনন্ত व्यादतारक्षामन नृभः॥ न यान न शकानश्व माद्रारहषीका जा-कावः। रेनकञ्च विष्ठतत्रजाका क-मािष्टिमि निक्करन ॥ यम्रदश्रु॰ न जुङ्गीया कना ि निश्र जांक-নে। কদাপি নোপসেবেত ছফ্ট-गा॰ गा॰मदेगपूरन॥ जमात्रानः গৰাঞ্ৰাদ্ধণ তিলৈ স্তৰ্পণ মেব চা ন জীবৎপিতৃকো ভূপঃ স্ব্যাৎ क्षाय याश्रुयाय।। न क्वाजा-দী° স্তন্যান্ রাজা রাজ্যে ২ভি-ষেচযেৎ। পিতৃণা প্রাদ্ধষেদি-ত্য মৌরসে তনষে সতি ৷৷ ঔরসঃ ক্ষেত্ৰজনৈচৰ দত্তঃ ক্ষত্ৰিম এব চ। গূঢ়োৎপক্ষো ২পবিদ্ধশ্চ ভাগা-र्श खनश हरम।। कानीनक म-হোটশ্চ ক্ৰীড়ঃ পৌনৰ্ভৰ স্থৰা । यग् भृत क (भाषाक बिष्ट्य

পুত্ৰপাণ্ডলাঃ ৷৷ অভাবে পূৰ্ৰ शृर्विषा॰ भन्नान् ममि उपिरविष्य । পৌনর্ভব স্বয়ণ দত্তণ দাসণ রা-**ब्हा न र्या** ज्राप्य ।। प्रवापा শ্চাপি তন্যা নিজগোত্তেণ সং-স্থিতাঃ। আযান্তি পুত্ৰতাং সম্য-भनावीक ममूखवाः ॥ পिजू (र्भा-ত্ত্রেণ যঃ পুত্রঃ সংস্কৃতঃ পৃথিবী-পতে। আচুডান্ত ন পুত্রঃ সঃ পুত্ৰতা ষাতি চান্যতঃ।। চূডা-मा यमि मःकाता निक्रावाद्वन देव क्रुंगः। फ्लाम्मा खनया (ख-मूग त्रनाथा माम উচাতে।। উদ্ধৃষ शक्ष्यावर्गाकलाका मान्ह मूल। न्श । গৃহীদ্বা পঞ্বধীয় পুত্রেষ্টি। প্রথমণ চরেৎ ।। পৌনর্ভবয় ত-নয়॰ জাতমাত্র॰ সমানবেৎ। কুত্বা পৌনভব স্তোম জাত-মাত্ৰস্য তস্য বৈ।। সৰ্বাণ্স্ত স-र्य्याथ मःकात्रान् काठकर्यापि-काषदः। क्रूटा भूनर्जवरसाय त्रुष्टः भोगर्जव खथा।। अस्का-किन्छै॰ भिजूः सर्याम आक्र॰ भा-र्बनामिक । क्वींंजाम्मा वनिज्ञा बरेनाः मा मोमीजि निगमारण ॥ ভদ্যাণ ৰো জাৰতে পুৰ্ত্ৰো দাসঃ भूबाह्य म मृष्टा। न ब्रांटका ब्रां-

জ্যভাক্ স স্যাদিপুলানপি শ্রা-দ্ধরুৎ।। অধমঃ সর্বপুত্রেভ্য ন্ত ধর্মশাস্ত্রাণি সংহিতাঞ্চ মুনীরি-তা ।। नाशाभरयज्ञा भृटेज र्वि-हिठाना ९ यमृष्ट्या । यमा तारका সদা শূড়াঃ পুরাণ সংহিতা তথা ।। পঠिন্ত সামহীনাশো রাজা রাফ্টেন সাম্বযঃ। মোহাদ্বা কা-মতঃ শুদ্রঃ পুরাণ সংহিতা ম্যু-তি॰।। পঠন্মরক মাপ্নোতি পিতৃ-ভিঃ সহ পাপক্ত। শূডোক্তা বিহিত যদ্য যশ্চ মন্ত্ৰ উদাহতঃ॥ छज्यः विश्ववननाका। इः भृतेषः मरेमव शि न याजरम्भः मृ-**ज॰ वावश्रातमा मनांत्न ॥** निरंग-জ্যা তত্ত্ব ত॰ ভূপ তামিশ্রে তেন পচ্যতে। হীনাযুশ্চ ভবেল্লোকো রাজা চাপি সহারষঃ॥ কান ব্যঙ্গ মন্ধ্ৰপুত্ৰণ বানভিজ্ঞ মজি ভেব্ৰিষণ। ন হস্ত্ৰ ব্যাধিত বাণি नुनार्या अस्तारा ॥ हन **नमा धन॰ त्रा**का न गृङ्गीया क माठन। न विकानाः उथा ममा क्रानि विश्वानाशि॥ नारती **्रंट् कामू (काबाउ** शक द्राजा क्षास्त्र। लाइक क्रांत्रक छ

পরত্রেহ্ বিষীদভি॥ অনাযুষ্য॰ न क्रिंगांजू कर्त्रा जूभः कमाहन। সতত আশুষো বৃদ্ধো যতেত স-करेन बेरेनः ।। न कृतवादा नासे-ম্যা॰ ন ষঠ্যা॰ নৃপসত্তমঃ। অঞ্জ-নাভ্যঞ্নে স্ব্যাত্তামূলস্যাপি ভোজন া৷ অতিসূত্ম তথা পূৰ্ণ গ্ৰহণ চন্দ্ৰ সূৰ্য্যযোগ। নালোক-ষেৎ স্বৰণ রাজা রক্তণ সূর্য্যণ ত-থৈৰ চা৷ উৎপাত জাৰতে ৰতু দিব্য ভৌমঞ্চ নাভস ৷ নেক্ষেত यञ्जाम् शकि मृ खु। नामा वा-र॰ পूनः ॥ সর্বদা মঙ্গল॰ রত্ন॰ शांतरय मर्पृर्वया। व्यवजाका-দিত গাত্র ন বিপ্রেভ্যঃ প্রদর্শ যে ।। ন তোষে স্বং মুখং পশ্যে-भागायाः मानि शर्वम्। नादताः হেত খর চোফু ন বামী মপি ভাৰিণী ।। এবং নম্যুতো রাজা छ्त्रकः विवर्कमन्। आज्ञानः विखा ब्रम्भ मना वीर्याः विवर्काः यে ।। वीजक्यकतः निजाः छ-**का॰ ভোজ্যঞ্চ পানক•। ব**ৰ্জ य कात भाकामान छात्रु वह-তিক্তকণা কাণ্স্যরাজত রঙ্গমুণ छ।य॰ शादनशावक्रन॰। क्रांच क्रिश्वाक कानिकासकः॥ क्रकतः वीक्रक्यकाति विवक्तः । एक्रारम् मञ्ज विकास

যেৎ ৷৷ তামায়ঃ স্বৰ্গীসানা পা-**बक्॰ कल. हम्बर्गाः। एडक्**रक्विक-র॰ তোষ• তদুপাসীত যত্নতঃ ॥ সৰ্বমূলেষু ক্তোষু সদাচারেম্ব-নুষ্ঠিতঃ। ভুক্তেই বিবিধান ভো-गारेनसः सानः बर्फर भरत्।। শ্রীমার্কণ্ডেয উবাচ। এব মৌর্বস্ত সগর শশাস মুনিপুঙ্গবঃ। শা-ञ्चानि टेठव नर्बानि ननाठातान् म खश्कान्।। वल्मः कथशामान সগরায মহাত্মনে। ভন্নাস্তি ষৎ भूदतीर्द्वन कथिछ॰ मगताय न।। রাজনীতিঃ সতা॰ নীতি র্যক্ষান্য-চ্ছান্ত্রসম্ভব । সংহিতাসু পুরা-भ्यू यकाशगरहाय ख्रिङ ॥ नर्बः च्याव मगरता मूथारे बिमा थी-মতঃ। তেষাম্ব কথিত কিঞ্চিদুদ্ধৃ-**छा विकमखगाः ॥ विक्**षरस्री-ত্তরে পূর্ব॰ মযা রহিদ ভারতে। রাজনীতি সদাচার বেদ বেদা-ঙ্গ সঙ্গত ৷৷ রহস্য পতত বিক্ষে वैकिश विक्रमखनाः। यकान्ति-ত মন্যত্ৰ গদিত বা সসংশ্ৰশ্য সংশ্বক্ষেনং তেমু যুম্মত্যং ক-किए किए। अनुक्र मन्मर्क

না॰ ফল॰ লভেৎ। ইতি শ্ৰীকা-লিকাপুরাণে ৮৯ অধ্যাযে রাজ-নীতি সদাচারাদিক সমাপ্ত ॥ 🛊 ॥ ज्यनाका अवयष्ठेतुः। म-দাচারো নিগদিত স্তব যো ২ক্মা-ভিরাদরাৎ। লক্ষণ ভদ্য বক্ষা-विख्य वृत्र निभाष्ट्र ॥ शृहरस्न जना कार्या यानात्रश्रतिशाचन । ন ছাচারবিহীনস্য ভদ্র মত্র পর-ত্র চ।। যজ্ঞ দান তপা সীহ পুরু-ষস্য ন ভূতবে। ভবস্তি यः সম্-झञ्चा ममाठातः अवर्खए ॥ पू-त्राहाद्रा हि शूक्ररवा त्वर नामूब नम्बि। कार्या। यञ्जः ममाठादत ভাচারো হস্তালকণ ॥ তস্য স্বৰূপণ বক্ষ্যামঃ সদাচারস্য রা-काम । भृगुदेशक मना खुक यनि **ध्यारका हि वाञ्चिम ॥ शर्य्या २ मा** মূল ধন মৃদ্য শাখা পুলাঞ্চ কামঃ कल मणा (मोकः। जामा मना-চারতরুঃ সুকেশিন্ সংসেবিতো বেন স'পুণ্যভোক্তা ৷৷ ব্রাক্ষ্যে बृह्र्ए अथरम विवृत्धामन्यातः क्लिववर्त्र भश्यीन्। প্রাভাতিক॰ यत्रल (यव वाकाः यमुक्तवान् एम-'ৰণতি স্ত্ৰিনেত্ৰঃ।। সুকেশি রুবাচ ৷ কি তদ্ক সুপ্রভাত শহরেণ

মহাত্মনা। প্রভাতে যৎ পঠন মর্ত্যো মুচ্যতে পাপবন্ধনাৎ ॥ ঋষষ উচুঃ। শ্রাষতা॰ রাক্ষসশ্রেষ্ঠ সুপ্রভাত হরোদিত। শ্রুত্বা স্মৃ-দ্বা পঠিদ্বা চ সর্বপালেঃ প্রমুচ্য-তে।। বন্ধা মুরারি স্ত্রিপুরান্তকা-রী ভানুঃ শশী ভূমিসুতো বুধশ্চ । শুরুর সশুক্রঃ সহভানুজেন স্ব-ৰ্বন্ত সৰ্বে ৰম সুপ্ৰভাত ।। ' ভৃগু ৰশিষ্ঠঃ ক্ৰছু রঙ্গিরাশ্চ মনুঃ পূল-खाः भूनशः मरगाज्यः। देतरजा यत्रीष्ठि भग्नवरमा तिज्भ कर्वश्व সর্বে ৰম সূপ্রভাত ।। সনৎ স যারঃ সনকঃ সনন্দনঃ সনাতনো शामूर्ति शिक्रलो **ह । मक्ष**यताः সূপ্রভাত।। পৃথী সগন্ধা সরসা ন্তথাপঃ সম্পর্শ বাষু জুলিভঞ্ তেজঃ। নভঃ সশব্দ মহতা স হৈব সৰ্বন্ত সৰ্বে মম সুপ্ৰভাত।।। मर्खीर्गाः मर्ख्यनावनाम् म-तामि क्या जूवनानि मश्च नर्वञ्च मर्स् यम मूथाजाजः॥ इथः थ-ভাতে পর্যণ পবিত্রণ যঃ সংস্ম-त्रवा मृग्राफ ज्ङा। मृःस्र নাশো ননু সূপ্রভাতে ভবেচ্চ

সত্যু ভগবৎপ্রসাদাৎ ৷৷ ততঃ ममूत्राय विठिखरमा धर्मा छ-थार्थक विश्व भया। उथाय পশ্চাদ্ধরি রিত্যদীর্য্য গচ্ছেত্ত-দোৎসর্গবিধি[•] हि কর্ত্তু ।। न দে-ব গো ৰান্ধণ বহি মাৰ্গে ন রাজ-यार्ग न ठलुमार्थ ह। अर्याम्ब-থোৎসৰ্গ মপীহ গোষ্ঠে প্ৰচ্ছা-मा भीर्य मूथ मानिकक ॥ उन्न ल्गीठार्थ मूनाह्द्रम्म अदन बन পাণিতলে চ সপ্ত। তথোভয়োঃ **११ हरू खरेशका** नित्र छरेशका मृष मारदाका। नाखकंनाजा-ক্ষস মূষিকস্থলায়চাবশিফা সদ-नामि ज्ञा। वन्त्रीक मृटेकर हि শৌচনাষ গ্রাহ্যা সদাচারবিদা-नदत्र।। छेम श्रूथः काला श्रद्धी ভুবিস্থঃ সমাচমেদন্তি রফেণি-লাভিঃ। আচম্য চ ত্রিঃ পরিমৃজ্য চ দ্বি স্ততঃ স্পৃশেচ্চাত্মশিরঃ ক-রেণা৷ সন্ধ্যাণ স নির্বর্ত্ত্য ততঃ ক্র-মেৰ কেশাত্ৰচ সংশোধ্য চ দস্ত-ধাবন । ক্লন্তা তথা দৰ্পণ দৰ্শনঞ্চ क्ष भित्रः यान मथाङ्किक्ष ॥ সংপূজ্য তোষেন পিতৃন্ সদেবান্ হোমঞ্চ ক্লছালভন শুভানা । क्रुषा वहि निर्गमनः अभाखः पूर्वाः

मिथ मर्लि त्रर्थामञ्जूषः ॥ स्वन् नवर्माः वृष्ठः मूवर्गः मृत्राा-ময়ণ স্বস্তিক মক্ষতানি। লাজা মধু ত্রাহ্মণ কন্যকাশ্চ শ্বেতানি পুষ্পাণ্যথ শোভনানি।। হুতাশ-नः ठन्मन नर्कातिश्व नश्रश्यतृक्वश সমালভেত। ততন্ত্র স্ব্যান্নিজ-জাতি ধর্মণ দেশান্শিক জল-अर्थ ने वा ।। यदगाबिशका न हि সম্ভাজেত তেনাপি সিদ্ধি সমু-পাচরেত। নাসৎপ্রলাপ ন চ স-छाशीन न निर्श्रुद्ध नागम भा**खरी**-नः।। वाकाः वरमः जाशुक्रतन रयन निरम्मा ज्यादेशन ह भर्म-एको। मञ्च^० न ठान्यम् ख्रानिय् স্ব্যাৎ সন্ধ্যাসু ভক্ষ্য সুরত **मिवा ह ।। मर्बामू (यानीयू भन्ना-**वलाम् त्रक्षमलास्यव कल्लम् धीतः । वृथाछन॰ वृथामान॰ वृथा ह %-শুমারণ। ন কর্ত্তব্য গৃহত্তেন বৃ-थानात्रপत्रि अरु ॥ वृथा हे नामि-তাহানি বৃ থাদানাদ্ধনক্ষঃ। বৃ-থাপশুদ্ধঃ প্রাপ্নোতি ঘাতনান্ধ-রক মহৎ।। সন্তত্যাহানি রঙ্গা-যা। বর্ণসঙ্করতো ভম্ব॰। ভেতব্য-क ভবেজাকে वृथा मात्रभित्र-अश्या भक्रत्य भक्रमाद्य ह न

नमाठा

कार्या। वृक्षि क्खरेयः। भत्रश्चः नत কাষৈৰ গরদারাশ্চ মৃত্যুৰে!! নে কেৎ পরন্ত্রিষণ নগাণ ন সম্ভাবেদ্য **७**कतान्। उनका मर्ननः ज्यानः मखायाध्य विवर्क्डरयः ॥ देनकामः নে তথা ছেষণ সুন্দর্য্যা পরজাষ-ৰা। তথৈৰ সাম মাতৃশ্চ ত থৈব দুহিতু জুপি॥ ন ভাষ্যা বীক্যতে नशा शुक्रायण कमा हन। न ह जा-ৰীত বৈ নগ্নো ন শাষীত কদাচন ।। দিখাসসোপি ন তথা পরিভূম-শমিষ্যতে। ভিন্নাসন ভাজনা-मीन् मृत्रकः भित्रवर्क्करण्या न-ন্দাসু নাভ্যঙ্গ মুগাচরেত কৌরঞ্চ विकाम् ज्याम् यामः । পূर्वाम् যোবিৎ পরিবর্জনীয়া ভদ্রাসূ স ৰাণি সমালভেত ৷৷ নাভ্যঙ্গ মৰ্কে ন চ ভূমিপুত্রে কৌরঞ্চ শুক্রে র-বিজে চ মাণসং। বুধেষু ষোষিম সমাচরেত শেষেযু সর্বাণি সদৈব वर्षा ।। हिलामू रख अवत्वस् তৈল ক্ষোর বিশাখাস্বভিজিৎ সু बर्काः। मूल मृत्ग ভाजभनाम् মাণসং বোরিশ্বয়। ক্রন্তিকবোত্ত-तात्र्।। मरित्व वर्काः भवत्न कृतक्-नित्र खथा अञीहाा॰ तकनीहरत्र-न। जूकीज देनदिश ह किना-

মুখোন চ প্ৰতীচী ৰভিভোজনী-यः ॥ दिवालयः देछज्ञानः हः कुष्णशः विमाधिकशाणि एकः श्रामिन । क्यां व ताय गयत **ह शीमान् विकान् मृगान् गान्छ** निगाहद्रम्।। यानगन्तन्थः व-मनानि यञ्जटा नारेना श्राताव हि शतरप्छ। आराक्ट्रितः भाग-ত্যা চ নিত্যু নিষ্কাৰণ চৈৰ বি-न। निगाम् ॥ अट्शभद्रारभ श्रक-নাভিযাতে মুক্জা চ জন্মৰ্কগতে শশাকে। নাভাঙ্গিত কাষ মু-গম্পূশেক স্নাতো ন কেশান্ বি-ধুনীত চাপি।। গাত্রাণি চৈবাস্ব-রপাণিনা চ স্নাতো ২বমূজ্যাত্র-क्रनी हरत्रण। वरमह दिएए मृ রাজকেষু সুসংহিতস্বীযজনেষু নিত্য ।। অক্রোধনা ন্যাযপরা অমৎসরাঃ রুবীবলা ছৌষধিজা-**७ य**ण्ठ । न ए अपू (मरण यू तरण क वृक्षिमान् यन्मिम्रां मध्कि छिनु-শক্তः ॥ জনোপি নিত্যোৎ স্ব वकटेवदः मनाकिशीयू क निमाठ-রেজ। ঋষষউচুঃ। ষম ভোজ্য॰ महावादश मना धर्माक्टिक न देतः। यत्काकाक ममूक्तिके कथिया। মহে বৰ ।। তাজ্য মন পৰ্যাষিত।

মেহাক্ত চিরস ভৃত। অমেহা ত্রীহ্যঃ ক্লক্ষা বিকারাঃ পাষসা স্তথা ৷৷ শশকঃ শল্পকো গোধা তথা भन्नी ह कक्क्शः। उपविषय-কাদীনি ভোজ্যানি মনু রব্রবীৎ ।। মণি বস্ত্র প্রবালানা তদমুক্তা-ফলসা **চ। दे**शल फारू स्याशिक कृ । शुरुषोयथमा ह ॥ **भाक धा**-ন্যাজিনানাঞ্চ সংহতানাঞ্চ বাস-मा । वद्यलाना यटम्याना मयूना শুদ্ধি রিষ্যতে ।। সঙ্গেহানা ম-থোক্ষেন ভিলকক্ষেন চাবিকং। কার্পাদিকানা বস্ত্রাণা শুদ্ধিঃ স্যাৎ সহ ভত্মনা ৷৷ নাগদন্তা-স্থি শৃঙ্গাণা তক্ষণাচ্ছন্ধি রিষ্য-তে। পুনঃপাকেন ভাণ্ডানা মৃন্ম-ষানাঞ্জন্ধতা।। শুদ্ধ ভৈক্যা কারুহস্তঃ পণ্য যোষিমুখ তথা ৷ রথ্যাগত মবিজ্ঞাত দাসবর্গেণ ষৎ ক্তে।। বাক্যপূত চিরানী-ত মনেকান্তরিত লঘ্। চেষ্টিত বাল বৃদ্ধানা বালস্য তু মুখ শুচি।। শ্লেচ্ছানা মপি গোশালা স্তনন্ধযসূতা স্ত্রিয়ঃ। বাশ্বিপুষো षिटजन्मानाः भार्य वागम्विन्मवः ॥ ভূমি ৰিশুধ্যতে খাত দাহ গো-क्य (महरेनः। लिलामूरस्थनाष

সেকাৎ বেশ্ম সম্মাৰ্ক্তনাজ্জলাৎ ।। क्लिकी हो विश्व श्राह्म । তে মক্ষিকাম্বিতে। মৃদারি ভস্ম কারাণি প্রকেপ্তব্যানি শুদ্ধযে ॥ উত্মরাণা ফায়েন ক্ষারেণ ত্রপু সীসযোঃ। কা॰স্যানা॰ ভস্মনা শুদ্ধি স্তোষাচ্ছদ্ধি র্জবস্য চ ॥ অনেধ্যাক্তদা মৃত্তোবৈ ৰ্গন্ধাপ-হরণেন চ। অন্যেষা মপি তদ্দু-ব্যে শুদ্ধি र्गन्नावशात्रकः॥ माजूः প্রসবনে বৎসঃ শঙ্গনিঃ ফলপা-তনে। গर्मछ। ভারহারিছে শ্বা मृग গ্রহণে শুচিঃ।। রথাা কর্দিম তোযানি গাবঃ পথি তৃণানি চ। মারুতেনৈব শুদ্ধান্তি পক্ষেফক-চিতানি চা। শৃত জোণাতকস্যা-ন্ন মনেধ্যাভিপ্পৃত ভবেৎ। অগ্র মুদ্ধৃত্য সন্ত্যজ্য শেযস্য প্রো-ক্ষণ স্মৃত ৷৷ উপবাস ত্রিরাত্রণ বা দ্যিতান্নস্য ভোজনে। অ-জ্ঞাতে জ্ঞাতপূৰ্বেচ নৈব শুদ্ধি विधीयत्व।। উनकाम् वृ नशा-শ্চ সুতিকান্ত্যাবশাষিনঃ। স্পৃ-कु। आयोज मोठार्थं जरेथव म्-তহারিণঃ ৷৷ সম্মেছ মস্থি সংস্পৃশ্য সবাসাঃ স্নান মাচরে । আল-ভৈয়ৰ তুনিঃম্বেহ্ণ গা মালভ্যাৰ্ক

मीका हा। न लब्बरय नद्भ क्रयः वर्जान मूर्वल ७था। गृशामु व्हिक বিমূত্র পাদাস্তাণসি ক্ষিপেছহিঃ ।। পঞ্পিণ্ডাননুদ্ধৃত্য ন স্বাযাৎ পরবারিণি। স্বাষীত দেবখাতেষু मत्त्र। दुन मित्रिश्मू ह।। त्नान्।-नामि विकालम् श्राख खिर्छ ९ कमाठन। नाल १ अङ्गनिविष्रेः বীরহীনা তথা দ্রিষণা দেবতা পিতৃ সচ্ছান্ত্ৰ যজ্ঞ সত্ৰাদি নিন্দ-কৈঃ। ক্সত্বাত্ ম্পর্শনালাপণ শু-দ্ধ্যতে ংকাবলোকনাৎ।। অভো-জ্যাঃ সৃতিকা ষণ্ট মার্জারাখু শ্ব সকুটাঃ। পতিতাপবিদ্ধ নগাশ্চ চাণ্ডালা শ্চাধমাশ্চ যে ॥ #॥ স্-কেশি রুবাচ। ভবক্তিঃ কীর্ত্তিতা-ভোজ্যা য এতে সৃতিকাদযঃ। অমীষাণ শ্রোতু মিচ্ছামি তত্ত্তো **लक्ष**गानि ह।। श्वय छेतुः। बाक्ष-ণী বান্ধণশৈচৰ যাৰচ্ছেষত্ব মাগ-ভৌ। তাবুভৌ সূতিকেত্যক্তৌ ত্তযো রন্ধ বিগর্হিত।। ন জুছো-ত্যুচিতে কালে ন স্নাতিচ দদ।-छि ह। পিতৃদেবার্চনাদ্ধীনঃ স ষন্টঃ পরিগীয়তে।। দন্তার্থণ জপ-তে যশ্চ তপ্যতে যজতে তথা । ন পরতার্থ মুদ্দুক্তো সাজ্জারঃ

পরিকীর্দ্তিতঃ ৷৷ বিভবে সতি নৈ-বান্তি ন দদাতি জুহোতি চ। ত-মাহ রাখু তসাম ভুজা রচ্ছেৰ শুদ্ধাতি।। সভাগতানা যঃ স-ভ্যঃ পক্ষপাত সমাশ্রেষ। ত-यादः ब्रह्में एति खगाणाद्यः विगर्शिक ॥ अश्रम् यः मग् मृ জ্য পরধর্মণ সমাচরেৎ। অনা-পদি স বিদ্বন্তিঃ পতিতঃ পরিকী-ৰ্ত্তাতে।। বেদত্যাগী পিতৃত্যাগী শুরু বহুত্ত্বক স্তথা। গোত্রাহ্ণণ जीवधक्रमेशविष्यः म উচ্যতে ॥ যেষাণ ঙ্গলে ন বেদোস্তি ন শাস্ত্রণ নৈব চ ৰত। তে নগাঃ কীর্ত্তি-তাঃ সন্তি স্তেষা মন্নণ বিগৰ্হিত ।। আশাৰ্ত্তানা মদাতা চ তিষেধকঃ। শরণাগত॰ য ভ্যজভি म हा खाला बद्या न त्रः ॥ क्षा (या বান্ধবৈ: পরিত্যক্তঃ দাধুভি র্রান্ধ-গৈ রপি। স্বঞ্জাশী যশ্চ তদ্যাল্ ভুক্তা চান্দ্রায়ণ চরেৎ ৷৷ যে৷ নিত্যকর্মণো হানি পর্যামেমি-ত্তিকস্য চ। ভুক্তান্ন তস্য শু-ধ্যেত ত্রিরাত্রোপোষিতো নরঃ ৷৷ নিত্যস্য কর্মণো হানিঃ কেবলং মৃত জন্মসু। ন তু নৈমিত্তিকো-**ष्ट्रिकः** कर्न्डदगा हि कथक्षन ॥

জাতে পুত্রে পিতুঃ স্নান সচেল-मा विशेषा । गृष्ठ ह मर्बवस्नून। মিত্যাহ ভগবান্ ভৃগুঃ।। প্রেতা-य সলিল দেয विकिश्व। जू शा-ত্রজৈঃ। প্রথমেক্সি চতুর্থে বা স-श्वरम वाश्विमक्षयः ॥ 'छर्कुः मक्षयः नारत्वा मक्रम्भारमा विशेषात्र । সোদকৈস্ত ক্রিয়া কার্ব্যা অশু-टेक छ मिश्डेटकः । विट्यादकः ন শস্ত্ৰায়ু ৰব্ধি পাত মৃতেষু চ। তথা গৃহীত সন্মানে দেশান্তর মৃতে তথা ৷৷ সদ্যঃশৌচ ভৱে-षिष्ठन् তচ্চাপুক্তেণ চতুৰিধণ। গ-डमारव তদেবোক্ত॰ পূর্ণকালে ন বৈ চরেৎ।। বাহ্মণান। মহোরাত্রণ कलियानाः निनवयः। युजावः চৈব বৈশাস্য শূজাণা ছানশা-क्रिकः॥ मन बामन गामार्कः या-ममःथामिटेन क देखः। न्नान्। क-শ্বক্রিবাঃ স্বর্যুঃ সর্বে বর্ণা যথাক্র-भ॰ ।। প্রেত মুদ্দিশ্য কর্ত্তব্য মে-কোদ্দিষ্ট বিধানতঃ। সপিণ্ডী-করণ কার্য্য প্রেত্তস্য বৎসরা-ন্তরৈঃ।৷ ততঃ পিতৃত্ব মাপন্নে দ-र्भ পৌर्गापि जिः शुरुः। श्री नन-खमा कर्खवा॰ यथाव्यकितिमर्भ-ন ।। পিতুরর্থ সমুদ্দিশ্য ভূমি

क्षिक्ष यथा अर्यातम् নাস্য সুপ্রীতা পিতরো যান্তি রা-क्रम ।। याम्य मिस्टें छय॰ कि क्षि॰ व कांगा प्रविष्ठः गृह्र। उखप्रधन বতে দেয় তদেবাক্ষয় মিচ্ছতা।। অধ্যেতব্যা ত্রয়ী নিত্যু ভাব্যঞ্চ বিদুষা সদা। ধর্মতো ধন মাহা-ৰ্যা॰ যফব্যঞ্চাপি শক্তিতঃ॥ আ-চারু পর্বতো মান্বাজুগুপ্সামেতি ক্লাক্ষস। তৎ কর্ত্তব্য মশক্ষেন যন্ধ গোপ্য মহাজনে।। এব মাচ্র-তো লোকে পুৰুষদ্য গৃহে সতঃ। ধর্মার্থ কাম সংপ্রাপ্তিঃ পরত্তৈহ চ শোভনা ৷৷ এয তুদ্দেশতঃ প্রো-ক্তো গৃহস্থাশ্ৰম উত্তমঃ।ঞ্চা বান-প্রস্থাপ্রমণ ধর্মাণ তে বক্ষ্যামো ২ব-ধাৰ্য্যতা ।। অপত্য সম্ভতি দৃষ্ট্ৰ। প্রাভ্রে। দেহ্দ্য চাষ্তি । বান- ' প্রস্থাশ্রমণ গচ্ছেদাত্মনঃ শুদ্ধিকা-রণণা তত্রারণ্যোপভোগেন ত-পোভি শ্চাত্মকর্ষণ । ভূমৌ শয্যা ব্ৰন্দচৰ্ষ্যণ পিতৃদেবাতিথিক্ৰিয়া॥ হোম ব্রিসবন স্নান জটা বন্ধল-धातनः। वनारमङ् निरविविषः वानश्रविधि खुयः॥ #॥ मर्बम्य-পরিত্যাগো বন্ধচর্য্য মমানিতা। জিতেন্দ্রিয়ত্ব নাবাসে নৈকন্মিন

বসতে চিরণ ৷৷ অনারস্ত স্তথাহা-রেভিকা বিপ্রে ছনিন্দিতে। আ-ত্মজ্ঞান বিবেকশ্চ তথাছাত্মা-वरवाधनः।। ठजुर्थ ठाञ्चरम धर्मा হস্মাভি স্তে প্রকীর্তিতাঃ। 🛊। বৰ্ণধৰ্মাণি চান্যানি নিশাম্য निশाहत। भार्श्या बक्कहर्याक বানপ্রস্থ ত্রযাশ্রমাঃ। ক্ষল্রিয়স্যা-পি গদিতা য আচারো দিজস্য হি।। বৈখানসত্বং গার্হস্য মাশ্রম-षिতय॰ বিশঃ। গ। হ'স্থা মুত্তম॰ ত্বেক॰ শুজস্য ক্ষণদাচর।। স্থানি वर्गाव्यरमाञ्जानि धर्मानी इ न हा ॥ প্ৰেৰ্থ যো হাপ্ৰতি তস্যাসৌ পরিঙ্গপ্যতি ভাস্করঃ ৷৷ স্পতিঃ क्लनाभाग पिरुद्रागिविवृक्तरम। ব্যাশ্র পততে তদ্য নর্দ্য ক্ষণদা-* চর॥ তস্মাৎ স্বধর্ম্মণ ন ছি সণ ত্য-জেত ন হাপষেচ্চাপি তথাত্মবং-শং। যঃ সংত্যক্তেক্সাপি নিজং হি ধর্ম্মণ তম্মৈ প্রঙ্গপ্যেত দিবা-করশ্চ।। পুলস্ত্য উবাচ। ইত্যেব মুক্তো মুনিভিঃ সুকেশিঃ প্রণম্য-**छान् बक्र श**रीग्रहर्योन्। जगाम ॥ **ट्यां अ**कीयः मृहर्म्युह ॥ র্ধশ্ম মবেক্ষমাণঃ ৷৷ ইতি শ্রীবাম-नर्तार्व ३८ ज्यापः ॥ 🟶 ॥ ञ-

नाद शास्त्र वर्षथर ३२। ००। ०১ অधार यम् विकृ भूतार ० ज॰र १४ अधार यमक्र अप्न त्रात्व मना हात्र नायका धार वहा-त्वाक नीय ।।

সদাচারবান্ ত্রি সদাচারবিশি-ফঃ। সদাচারী। সদাচারশব্দা-দস্তার্থে বতু প্রত্যেয় নিষ্পানঃ ॥ সদাতনঃ পুণ বিফুঃ। ইতি ত্রি-কাগুশেষঃ॥ নিত্যে ত্রি। ইত্য-মরঃ॥

मनाटाया खी बनायनी। ইতি
भक्त क्रिका॥ क्रव्याया। ইতি
मनानीता भक्त भंना ।।
मनानानः पू॰ बेतावडः॥ शराणः॥ यहरुषी। ইতি यिननी॥ निष्णानान क्री॥
मनानमः पू॰ भिवः। यथा।

मानमः पूर निवार वया।
मानमः मानवा वया।
मानिवः मानवा विश्वा मानवा म

अविकः

जगवजीवाकाः ॥ मनानर्जः भू॰ शक्षनभकी। इंडि नक जिका।। गर्ने मान्डा-কারকে ত্রি।। ममानीतवहा खी कत्राचानमी। । इंडि मक्तव्यावनी ॥ ममानीता खी कत्राचानमी। इंडामतः॥ भोतीविवारमम्पर শঙ্করকরগলিভসম্পূদানভোষ প্রভবত্বাৎ করস্য তোষণ বিদ্য-তে অত্রেতি করতোষা অর্শ আ-দিস্বাদঃ। শ্রাবণে এতদ্বৰ্ক্তণ স-ৰ্বা নদ্যো রজস্বলা ইমন্ত ন রজ-স্বলা। অতএব সদা সর্বদা নীর-यमा। ইতি मनानीद्गा। তথা চ मृिकः। ज्यामि कर्करे एवी बार्॰ भन्ना तजन्नना। **मर्वा त**क्छ-বহা নদ্যঃ করতোষায়ুবাহিনী ॥ ইতি ভরতঃ ॥ मनाभूष्णः भू॰ नातित्कनवृक्तः। इंडि मक्याना ॥ সর্বদাঙ্গসুম-যুক্তে ত্রি।। मनाभूष्णी जी त्रकार्कवृष्णः । **इं** त्रिव्याना ॥ সদাপ্রসূনঃ পু॰ রোহিতকঃ।। **जर्कः ॥ जन्मः । ই**তি রাজ-निर्घकः ॥

महाक्लः पू॰ ऋत्रकनः॥ नाक्रि क्वः।। উजुषतः। ইভি यिनि-नी ।। विचः। ইতি कि विश्वतः ॥ मनाकना जी जिमिश्री भूणाः। ইতি ব্লাজনির্ঘন্টঃ ৷৷ বার্ত্তাঙ্গ-বিশেষঃ। সলাবাগুন ইতি बनीवाधन देखि मँदवावाधन ইতি চ ভাষা। অস্যা গুণাঃ । मनाकना जित्नायत्री द्रक्लिक थमामनी। क्ख् कष्ट्रती टेठव वार्जाकी खनवखता। इंछि दा-জবল্লভঃ ৷৷ সদাভদ্রা স্ত্রী গম্ভারীবৃক্ষঃ। ইতি त्रव्याना ॥ ममारयागी पु विकः। इंडि ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। হরিশ্বনে ম-धूगाः नवर्जनकनजागी। यथा। मनायूनिः मनारयाशी यथुया॰-ममा वर्জनाए। निताधि नीक्न-গোজ্মী বিফুভক্তশ্চ জাষতে ॥ ইতি তিখ্যाদিতত্ত্ব॰ ॥ ममृक् जि जूना । इंडामतः ॥ नमृभः जि मयः। ইত্যমরः॥ উচিতঃ। ইতি মেদিনী।। ममृमण्यासनः क्री निम्लेनः। इंडि ত্রিকাওশেষঃ।। **ममृकः** बि ममृगः। ইতামরः॥

मामनः जि निकितः। रेजामतः ॥ प्रभाविजः। स्था। जप्तम मत्वरमी निकटि प्रमद्वमात्रि তৌ ক্রমাথ। ইতি ধরণিং।। मखुणः वि मजाः। ইछि इम-DES: 11

। इंडि यिनिनी।।

महाः वा जरकार। जरभरीयः । जनिर। ইত্যমরः॥ एव **७९कर**् ७९काटा। मगार्न १-क्रि महाः कठ क कर रेजामिना নিপাতঃ। সদ্যঃ পততি মাণ্সে-न इंछि मशिन मूक्जनिङाकी । षय मस्त्रामि। देखि छत्र ॥ मनाःक्ष्ठ॰ क्री नाग। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ।। তৎক্ষণক্লতে ত্রি।। সদ্যঃপ্রাণকরঃ ত্রি তৎক্ষণাৎ-वलकात्रक खवालिः। यथा। म দ্যোষাত্য নবামঞ্চ বালান্ত্রী ক্ষীরভোজন । যৃত মুক্ষোদক-देश्व महाः था वक्तावि यह ॥ ইভি চাণক্যণ া

नाःथागरतः बि <u>जिट्कानार</u>-ववायुका नीगकजवानि। यथा । শুষ্ক মাণ্সণ দ্রিয়ো বৃদ্ধা বা लक् उक्रन मिर्। अञ्चार रेय-

थून॰ निजा मगःथानर्त्रानि बहै ॥ इंडि ठावका ॥ नमाः खिकः जी नमाः त्नी हः। यथा। प्रभाखतम् छ दात्न म-माः शक्ति यें वि गृत्व। देवि भाक्टफ ३०१ व्यक्तायः ॥ मर्घ की गृर । ইতামর: ॥ जन । मनाः माथा खी क्रिक्ष्यः । हें जि जका जिका।।

महाःरगोह॰ क्री छ०क्रगाक्रिकः। यथा। मिल्लिनः कात्रवा देवना দাসী দাসাশ্চ ভূত্যকাঃ। অগ্নি-यान् (खांबिरमा त्राष्ट्रा महाःरमी-চাঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ॥ ইতি গারুডে ३०१ व्यशायः ॥ 🛊 ॥ व्यनाकः । कात्रवः भिन्नित्ना देवला नामी দাসা স্তথৈর চা দাতারো নি-যমী চৈব বন্ধবিদ্রন্ধচারিণৌ ৷৷ সত্রিণো ব্রতিন স্তাব্ৎ সদ্যঃ-শৌচা উদাহতাঃ। রাজা চৈবা-ভিষিক্তশ্চ প্রাতঃ সত্রিণ এব চা यख्ड विवाहकाटन ह प्रवियारभ **ত** देशव ह। जानाः टमोह॰ जानाशा-**७** मृ जिंदक वाश्राभाषात्।। जि-ষাহ্ব হতানাঞ্চ বিদ্যুতা পার্থি-देव फिटकः। ममाः लोहः मभा-খ্যাত সজাতিমরণে তথা।। जटमो मङ्ग्यश्वान नीजाधमान-

भानाभटक। बाक्सनाटर्स ह म॰ना-**रख महाः एमोरु विधीयछ ॥ ই**ভি কৌর্ম্মে উপব্লিভাগে২২ অধ্যায়ঃ ॥ । । अगत्रका अथ महाः-ल्गिष्ठः। ভज विकृः। नात्नीष्ठः রাজ্ঞা॰ রাজকর্মণি নু ব্রতিনাণ ব্ৰতে ন সত্ৰিণা সত্ৰে ন কাৰ্কণা স্বকর্মণি ন রাজাজ্ঞাকারিণাণ छिक्छिया न दिवश्री छित्री विवाह-যোঃ পূৰ্বসমৃতযোঃ ইতি। সত্ৰি-ণাণ নিত্য প্রবৃত্তামদানানাণ সত্তে অন্নানে ৷ করেবঃ সূপকারাদ্যাঃ । आित भूतात्व। मूनकादत्व यद-কর্ম করণীয় নরেশ্বিহু। তদন্যো নৈব শক্ষোতি তন্মা জ্ব্ধঃ স সূ-পর্ব্যা কৃর্মপুরাণে । কারবঃ निश्चित्वा देवना नामा नामा छ-থৈৰ চ। দাভাৱো নিষমী চৈব वक्वविद्वकातिर्गे॥ मिलिर्ग बन তিন স্তাবৎ সদ্যঃশোচা উদাস্থ **काः। जामिश्र्तारम। मिन्निन न्छि-**ত্রকারাদ্যাঃ কর্ম ষৎ সাধযন্ত্রত । তৎকর্ম নান্যো জানাতি ত-স্মাৎ শুদ্ধঃ স্বকর্মাণি।। দাসা দা-সাশ্চ ষৎকৰ্ম সৰ্বস্তাপি চ লীল-ষা। তদন্যোন ক্ষমঃ কর্ত্তুণ তেন তে শুচয়ঃ স্মৃতাঃ॥ চিত্র করাদ্যক-

भाः गिब्रिनः। जामा नकाटकने-निर्दिककाम्गाः। भाजाजभः। य्-नाकर्षकद्राः भूषा माना माना স্তব্যৈর চ। স্নানে শরীর সংস্কারে গৃহকর্মণাদূষিতাং ৷৷ স্মৃতিং ৷ স-माः म्पृत्मा गर्जमातमा ज्ङमाम স্ত্ৰ্যহাচ্চ্চিঃ। বৈদ্যা অপি চিকিৎ-সাযা মেব। তথা চ স্মৃতিঃ। চি-কিৎসকে৷ যৎ ঙ্গৰুতে ভদন্যেন ন শক্যতে। তস্মাৎ চিকিৎসকঃ স্পর্শে শুদ্ধো ভবতি নিত্যশঃ ম দাতার আবশ্যক প্রত্যহ॰ গো **ज्**यि श्रिकामिनात्न श्रेकुः। তেষা তদান এব। প্রত্যহ দান-ঞ। দাতব্য প্রত্যহ পাত্রে ইতি याख्वकार। कामाहि कमान-কারিণাম্ব দানে প্রক্রান্তে অশৌ-চ নাস্তি তাবৎ যাবত্তৎ কর্ম্ম স্প-ৰ্বস্তি ইতি। হারলতাপ্যেব । পূৰ্ৰ সঙ্কল্পিত জব্যদানেপি নাশৌ-চণা তথা চ মিতাক্ষরাষাণা পূর্ব স-ক্ষল্পিত জব্য দীয়মান ন দুয়াতি । ইতি। चामिপুরাণে। निवृত्छ ক্লচ্ছ হোমাদৌ ব্ৰাহ্মণাদিযু ভো-জনে। গৃহীত নিষমস্যাপি ন স্যা-দন্যস্য ক্স্যচিৎ।। নিমন্ত্রিতেষু বিপ্রেষু প্রারন্ধে প্রান্ধকর্মণি ৷

नियजनाचि विश्वना त्राधावांच-बजना ह।। (बर्व्ह शिवृत् विकेश्यू नारगोक विमादक कठिया आ জাপত্যাদি ক্লফে সমাপ্তে হোম यां अद्भव नगारश्च जम्मूर्गार्थ মবশ্যু ময় বান্ধণা ভোজ্যিত-बा। देखि गृहीछनियस्य। य खनाः শৌচে ২ন্যঙ্গলজাতানা মপি ভূঞ্জানানা দোষাভাবঃ৷ ক্সা চিদ্দাতৃ ভোক্তো রিত্যর্থঃ। এব॰ প্রারন্ধ শান্ধেপি ক্লচিদিত্যনেন দাতৃ ভোক্ত্রো রশৌচাভাবঃ। ত-থা চ বিষ্ণুঃ। ত্রত ষজ্ঞ বিবাহেষু শ্রান্ধে হোমে ২র্চনে জপে। আ-ब्रत्क मुख्क न मामनावरक जू সূতক ইতি। পরাশরঃ। দীকি-তেম্বভিষিক্তেমু ত্রত তীর্থ পরে-ষুচা তপো দান প্রসক্তেযু না-**(भोठ॰ मृ**छमूछ्रक ॥ यक्रमाना-ना॰ সোমধাগাঙ্গ দীক্ষণীবেফৌ ক্লতাষা দীক্ষিতত্ব ভবতি তেন मीक्गीरयक्राखतकाल यक्रमान-मा यदक्य ज्वारमोहः नास्ति। অভিবিক্তেযু ক্ষত্রিষ নৃপতিষু। তী-র্থণ গঙ্গাদি। শুরু রিতি কশ্চিৎ।। कालगाधवीत्य कृषाभूतानः । का-ন্যোপবাদে প্রক্রান্তে অন্তরা মৃ-

ত সূত্ৰে। তত্ত্ৰ কাম্য বত স-क्या देश का नाम किन विविद्धि छ ।। एव मानार्कनः चरः वर्ड्करवः वना बाता ज् कात्ररयः। छथा ह मद-স্যপুরাণ । পর্ত্তিণী সূতিকা নক্তণ अभाती ह तकश्रमा। यमा छन्ना তদান্যেন কারবেৎ ক্রিয়তে সদা ॥ উপবাসাচরণে গর্ত্তাদি পী-ডাসম্ভাবনাযা॰ নক্ত॰ ভোজন॰ त्रव्याद। উপবাদেরশক্তস্য ত-**(मिर्क कल मिक्ट्डः ।। जनजारम-**ন রোগাণা কি মিষ্ট ব্রত মুচ্য-তা । ইতি নারদপ্রশানস্তর । উপবাসেম্বশক্তানা নক্ত ভো-জন মিষ্যতে। ইতি মৎস্যপুরাণ এবেশ্বরপ্রতিবচনাৎ। স্বয় মশুদ্ধা क्षमात्रा शृकामिक कात्रय । कारिक यूर्यामानि मना शुका-শুদ্ধিকালে স্বয়ণ ক্রিয়তে। স্মৃতি পরিভাষাযা মপ্যেব । বিষ্ণুঃ। বহুকালিক সংৰুৱো গৃহীতশ্চ পু-রা ষদি। সৃতকে মৃতকে চৈব ব্ৰ-ব্ৰতপর । নিত্যানাস্থারন্ধানা ম-নারন্ধানা মবিশেষেণ কর্ত্তব্যতা ৷ নাশৌচ মিত্যনুবৃত্তৌ বন্ধপুরাণ । निष्ठिकमाथ वानामा जिकार्थ॰

প্রস্থিতস্য চ। নৈষ্ঠিকস্য বন্ধ-চারি বিশেষস্য। অন্যন্য চতুর্থা-শ্রমিণঃ। অশৌচিভিক্ষাগ্রন্থণে দোষাভাবঃ। ইতি হারলতাপ্র-ज्**ठ**यः ॥ कोर्त्यः। नमाःस्नीठः সমাখ্যাত দুর্ভিকে চাপ্যুপপ্তবে ৷ ডিম্বাহ্বহতানাঞ্বিদ্যুতা পা-र्थि देव बि रेकः ॥ जमाःरमोरु সমাখ্যাত শাপাদিমরণে তথা। উপপ্লবে রাজবিপ্লবৈ। ঔপ-সর্গিকাত্যস্তমরকপীডনে চ স-দ্যঃশৌচ মুক্ত । তথা চ পরা-উপসর্গমৃতে চৈব স-माः स्थाठ॰ विश्वीय**र** । অতএব वालमालि ह कर्कायाः नमाः त्नी-চ॰ বিধীষতে। ইতি ষাজ্ঞবন্ধ্যব-চনে খনিরুদ্ধভট শূলপাণি প্র-ভৃতিভি রৌপদর্গিকাত্যস্তমরক পীডাযাণ সদ্যঃশোচণ বিধীযতে ইত্যক্ত•। উপসর্গশ্চ ত্রিবিধোৎ-। পাতঃ। তথা চ গর্গদ হিতা বার্হ-স্পত্যযোঃ। অতিলোভাদসত্যা-षा নাস্তিক্যাদ্বাপ্যধর্মতঃ। ন-রাপচারান্ধিয়ত মুপদর্গঃ প্রার্থতি-তে।। অতে। ২পচারান্নিয়ত ম-পবর্জন্তি দেবতাঃ। তাঃ সৃজ-ন্তান্ত্রাণস্তাবদিব্য নাভদ ভূ-

মিজান্।। তএব ত্রিবিধা লো-কে উৎপাতা দেবনির্দ্মিতাঃ। বি-**চরন্তি বিনাশাষ ক**পৈঃ সম্ভাব-ৰম্ভিচ।। যদ্যপ্ৰাপদৰ্গঃ স্মৃতে। রোগ ভেদোপপ্লবস্বো রপীতি বিশ্বকোষাদুপসর্গস্যোভ্যবাচ-কত্ব তথাপ্যত্র মুনি প্রযুক্তত্বে-নান্তরঙ্গদাৎ ত্রিবিধোৎপাতাম্ব-কোপদর্গো গৃহতে ন তুরোগ-বিশেষাত্মক ইতি। এতেনোপসৃ-জ্ঞীতি ব্যুৎপত্ত্যা দেহাভ্যস্তর এব যাবদ্বৰ্ত্তে তাবৎকাল মরণ এব সদ্যঃশৌচ• বহিৰ্ভাবে ত্ৰণ প-রম্পরষা মরণে সতি স্বজাত্যক্তা-শৌচ মেবেতি ত্রাহ মিতি দর্শন স্মৃতিসারপ্রদীপা ইতি বাচম্প-তিমিশ্রোক্ত হেষণ। দিজৈ র্রা-ऋदेवः। भाषामीठामि भटक-নাভিচারমৃতদ্য গ্রহণ । কূর্মাপুরাণাভ্যাণ ষদ্ধান্ধণহতস্যা-শৌচাভাব উক্তঃ স বুদ্ধিপূৰ্বক-হননে বোদ্ধব্যঃ। প্রমাদহতে ष्रत्मोनामारसाव जनाथा महीनि वहनः निर्दिषयः मा। । यथा । বিষ শস্ত্ৰ শ্বাপদাহি তিৰ্য্যগ্ ব্ৰা-ন্ধণযাতিনা । চতুর্দশ্যা জিযা কাৰ্য্যা অন্যেষাম্ভ বিগহিত। ।।

गत्माञा

বিষাদি সাহচার্যাৎ ব্রাহ্মণক্রন্তযাতো ২স্যান্তীতি প্রতীয়তে।
যক্ষাত্র যে চ বৈ ব্রাহ্মণৈ হঁতা
ইতি ব্রহ্মপুরাণীয়ণ সাধকছেনোপন্যন্তণ প্রাদ্ধবিবেকে তকিন্তাণ। মহাপাতকিনো যে চ
পতিতা স্তে উদাহ্নতাঃ। ইত্যুতরার্দ্ধেন পাতিত্য মতিধায়
তেষাণ প্রাদ্ধানিয়েধাৎ। জাবালঃ। দূর্ভিক্ষে রাষ্ট্র্ সম্পাতে
শক্র গো ব্রহ্ময়াতিতে। পতিতে ২নশনপ্রেতে বিদেশক্ষে
শিলো ন চ।। নাশোচ মিত্যর্থঃ
। ইতি শুদ্ধিতত্ত্বণ।।

সদ্যক্ষঃ ত্রি নূতন । ইতি হেম-চন্দ্রঃ।।

সদ্যোজাতঃ পূণ বৎসঃ। ইতি শক্চন্দ্রিকা।। শিবঃ। যথা।
ভক্ষে নানাবিধৈ র্যুক্তণ ব্রাহ্মনাবিধে র্যুক্তণ ব্রাহ্মনাব নিবেদ্বেৎ। প্রীয়তাণ দেবদেবে। হত্ত সদ্যোজাতঃ পিনাকধৃক্।। ইতি মাৎস্যোদিব চতুর্দ্দশীবতে ৭৯ অধ্যাষঃ।। সদ্যোজাতায় নমঃ। ইতি শিবরাত্রিবতে শিবস্নানমন্তঃ। ইতি তিথ্যাদিত বৃঞ্চ।। তৎক্ষনাবিধার বি।।

সধর্মা

সম্যোভাবী পু॰ তর্ণকঃ। স-দ্যোজাতবৎসঃ। ইভি শব্দ-চন্দ্রিকা॥

সক্রঃ ত্রি গমনকর্ত্ত।। সদধা-তোরু প্রত্যবেন নিম্পন্নঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী।।

সদ্দাণ পুণ প্রামঃ। সংশকপূর্বক বসধাতো রথচ্ প্রত্যথেন নিষ্ণান্ধঃ। ইতি কেচিৎ।।
কিন্তু সংপূর্ব বসধাতো রথ প্রত্যথে সম্বস্থ ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদ্যাণ নিষ্ণাদিতং।।

সদৃত্ত ক্লী সাধুষভাব:। সচরি-ত্রণ ইতি জটাধর:।। তদ্যুক্তে ত্রি। যথা। নাসমঞ্জসশীলৈস্ত সহাসীত কদাচন। সদৃত্যারি-কর্ষো হিক্ষণার্জ মপি শস্তে।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বণ।।

সদৃত্তিভাক্ ত্রি সদৃত্তিবিশিষ্টঃ।
যথা সারাবল্যাণ। পথ্যাশিনাণ শীলবভাণ নরাণাণ সদৃত্তিভাজাণ বিজিতেন্দ্রিযাণাণ। এবথিধানা মিদ মাযুরত্র চিন্ত্যণ
সদা বৃদ্ধানুনিপ্রবাদঃ।। ইতি
নলনাসভত্ত্বণ।।

मधर्य। बि मम्भः। यथा। जूलाः मगानः मम्भः मक्षः मम्भः मयः। माधात्रं मध्याति मवर्वः महिन् मृक्।। हेि द्यरुखः॥ मयानधर्य्यकुक्षः।।
मध्यातिनी जी न्यां। यथा
। मध्यातिनी जी न्यां। यथा
। मध्यातिनी जी न्यां। यथा।
हिनी गृहा। हेि ह्लायुधः॥
मध्यानिनी वधृषी माफित्रकेष्य
मध्यानिनी वधृषी महस्ती भानिगृहीनी गृहिनी गृहा।। हेिन
रुक्षः॥

সংশ্বী ত্রি সমানধর্মাচারী।

যথা। পশুনা সমজো হন্যে
যা সমাজো হথ সধর্মিণা ।

ইত্যমরঃ ॥

मिशः भू॰ जिति। ইতি তিকा कि भिशः भू॰ वृष्णः। ইতি मिक्का-छक्तिमूना मूनानिवृज्ञिः।। मधीनी खी मथी। ইতি হেম-চন্দ্রঃ।।

স্থাড় ত্রি সহচরঃ। ইত্যমরঃ।।
সনঃ পু: গ্রী হস্তিকর্ণাক্ষালঃ।
যথা। কর্ণাক্ষালে সনঃ সনী।
ইতিশব্দরত্বাবলী।।

मनः पु॰ घन्छा शां हिन्यू मः। ইতি
भक्त लिकां।।

मनकः भू॰ विक्थूभातियम् एकः। हेि गक्रवावनी ।। म जू बक्रन শ্চতুম্পুত্রান্তর্গতপুত্রবিশেষঃ । यथा। पृथ्वा शाशीयनी॰ मृष्टि॰ নাজান বহ্বমন্যত। ভগব-দ্যানপূতেন মনসান্যাণ স্ততো श्रृष्डि ॥ जनक्ष जनक्ष ज-नाजन गर्थाषाज्या मन १ मन १ मन तक भूनीन निक्षिशानुकृतत्वनः ॥ তান্বভাষে স্ভঃ পূজান্প্র-জাঃ সৃজত পুত্রকাঃ। তমৈছ-त्याकथर्यात्वा वांमूरमवनताय-ণাঃ।। ইতি শ্রীভাগবতে ৩ ক্ষন্ধে ३२ व्यथायः ॥ जमा वामञ्चानः জনলোকঃ। ইতি কাশীখণ্ড।।

मन पू॰ बना। ইতি विकाध-(व वक्त वाव दिला) ॥ मन्द वा मर्बमा। ईणामत्रणिका-बा॰ बाबाखवः॥ मन द भाराः भू उक्त गः भू छः । **७९** शर्यायः । देवशाबः २ । हे-ভ্যমরঃ॥ বৈধাতকিঃ ৩। ইতি ভরতঃ ৷ ধাতৃপুক্রঃ ৪ বেধায়ঃ ৫। ইতি শব্দরত্বাবলী।। তয়া-মব্যুৎপত্তি র্যথা। সনৎ ব্রহ্মা **छ**म्। ज्ञादश्यादश्यादश्यादश्या ন্ধিত্য ঙ্গমার স্তেন সনৎঙ্গমারো ৰাপীতি স্বামিমতণ ইতি ভরতঃ ॥ जन्नामकात्रनः यथो। यटथा ६-পন্ন স্তথৈবাহণ সমার ইতি বিদ্ধি মাণ্য তত্মাৎসনৎঙ্গমারেভিনা-মৈতন্মে প্রতিষ্ঠিত ।। ইতি মহা-ভারতে হরিব॰শঃ।।ৠ।। স চ ধর্ম-স্যৌরসেন অহিংসাযাণ জাতঃ ' পশ্চাৎ বন্ধণো দত্তপুল্রঃ। অ-य॰ माधामनः। यथा। श्री नात्रम উবাচ। কোষ সনৎঙ্গমারেতি ষস্যোক্ত॰ ব্ৰহ্মণা স্বয়ণ। ত্ৰাপি তেন গদিভ বদ মা মনুপূৰ্বতঃ॥

পুলস্ত্য উবাচ। ধর্মাস্য ভার্য্যা-

। मण्याञ्च॰ मूनिमापृ ल याग-

হিংসাখ্যা তদ্যাং পুত্ৰ চতুষ্টয়ং |

শাস্ত্রবিচারক'।। জ্যেষ্ঠঃ সনৎ-সমারো ২ভূৎ দ্বিতীয়শ্চ সনা-তনঃ ৷ ভূতীয়ং সনকো নাম চতু-র্থশ্চ সনন্দনঃ।। সাংখ্যবেতার यभतः किभनः वाष्ट्र यामूतिः। দৃফুী গঞ্চশিখ শ্রেষ্ঠ যোগযুক্ত তপোনিধিণা জ্ঞানষোগণ ন তে पम् ज्ञां यां ° त्मां श कनीयमा । জ্ঞান মাদ্য মহাযোগ কপিলা-मि नं ठावम् ॥ मन व क्यात का-ভ্যেত্য ব্ৰহ্মাণ কমলোদ্ভবং ৷ অ-পৃচ্ছদেযাগবিজ্ঞান ত মুবাচ প্র-জাপতিঃ ৷৷ কথযিষ্যামি তে সাণ-খ্য॰ যদি পুত্রেতি মে বচঃ। শৃণো-সি সরুষে তচ্চ জ্ঞান সাংখ্য শ্রুতো ভব ৷৷ পিতামহবচঃ শ্রুত্বা সাধ্যঃ প্রাহ তপোধন। সত্য হি তব পুলোহু দেব ষোগং বদস্ব-মাণ।। ত মুবাচ মহাযোগী স্বন্ধা-তা পিতরৌ यमि । मारमार्ट ह ততঃ সূনু দাষাদো মেসি পুত্রক।। সনৎসমারঃ প্রোবাচ দাযাদপ-রিকল্পনা। যেষা হি ভবতা প্রোক্তা তান্ মে ব্যাখ্যাতু মর্হসি ॥ তদুক্ত॰ সাধ্যমুখ্যেন বাক্য॰ শ্ৰেষা পিতামহঃ। প্ৰাহ প্ৰহ্ম্য जगवान् मृगू वय्टमिक नात्रम्॥

इिं वामदन ७१। ७৮ व्यक्षादरो । স চ পঞ্হাযনব্যক্ষঃ চূডাদি-म कात (वत्र मका। विशेषक । यथा। उक्तां मुक्षरमा ताजा রত্নত্বিতা। গৃহীত্বা ক-नाका॰ त्रया। नात्रनाय मटनी মুদা।। গৃহীত্বা চ সভার্যাণ ত॰ পুত্র ধাতা মুদান্বিতঃ। প্রযথো **बन्धानकक (मरवरेक मू** निज्ञिः ॥ সহ।৷ তত্রাজগাম নগ্নন্চ প্রস্থা লন্ ব্রশ্বতেজসা। সনৎঙ্গমারো ভগবান্ সাক্ষাচ্চ বালকো যথা ॥ मृत्युः পূर्वकः वयम। यटेशवः পঞ্হাযনঃ। অচুডো ২নুপবী-ক্লকেতি মন্ত্ৰণ জপতি যস্য না-রায়ণো গুরুঃ। অনস্তকাল ক-ল্পঞ্চ ভ্ৰাতৃভিশ্চ ত্ৰিভিঃ সহ ॥ देवकवाना मधनीटमा ख्वानिना-क श्वरता र्श्वकः। जाताकृष्ट्री ना-রদ স্ত' ভাূতরঞ্চ সতা বরং ৷৷ সহসা শিরসা ভূমৌ দণ্ডবৎ প্র-ণনাম তে। উবাচ নারদ বালঃ প্রহ্স্য পরমার্থকে ।। ইতি ব্রহ্ম-বৈবর্ত্তে শ্রীক্লফজন্মখণ্ডে ১২৯ অধ্যায়ঃ ॥ ৠ॥ জিনমতে দ্বা-দশসাৰ্বভৌমান্তৰ্গতসাৰ্বভৌম-

जिमः। ३७ि (२ य हस्यः ॥ সনন্দঃ পু॰ বন্ধনঃ পুত্রচতৃষ্ট-ষান্তৰ্গতপুত্ৰবিশেষঃ। সতু জ नताकवामी। इंडि काशीथंख॰ ।। ने वर मिरायन्याः। जामा छ-র্পণ নিবীতিনা প্রত্যন্ত্রুখেন প্রা-জাপত্যতীর্থেন সামগেন কর্ত্ত-ব্যং। তদিতরেণ উদগ্র্থেন ক-ৰ্ত্তব্যং। যথা দক্ষঃ। প্ৰাদেশমা-ত্র মৃদ্ধৃত্য সলিল॰ প্রাধ্ব খঃ সু-রান্। উদত্মনুষ্যাণ স্তৃপ্যেত পি-जून मिक्क अथा ।। व्यदेश स **७**र्थारकतान् मन्यान् अन्य-ধ্যতঃ ! পিতৃ স্ত সশমূলাগ্রে विधिः कोटमा यथाक्रमः ॥ क्र-ভোপবীতী দেবেভ্যো নিবীতী চ ভবেত্ততঃ। মনুষ্যাণ স্তর্পযে-**एक्या अविभू**लान्यी॰ खथा ॥ সনকশ্চ সনন্দশ্চ তৃতীয়শ্চ স-নাতনঃ। কপিল শ্চাসুরি শেচব বোঢ়ঃ পঞ্চশিখ खथा ॥ সর্বে তে তৃপ্তি মাযান্ত মন্দত্তেনামূনা मन्। व्यत्ननाञ्जलिषयः। यथा। **এ**रेकक मञ्जलि (मर्ग (हो (हो जु मनकामयः। जर्रे छि शिजत ন্ত্ৰীণ্স্ত্ৰীন্ স্ত্ৰিয় স্ত্ৰেকৈক মঞ্জলিণ ৷৷ পরিশিউপ্রকাশধৃত সামবে-

দীষ ষট্ত্রি॰শদ্বান্ধণং। মনুষ্যালণ দেকা দিক্ যা প্রতীচীতি।
তথা চ জ্যোতিকোমে ক্রমতে।
প্রাচীণ দেকা অভজন্ত দক্ষিণাণ
পিতরং প্রতীচীণ মনুষ্যাঃ উদীচী
মসুরাঃ অপরেষা মুদীচীণ মনুষ্যাঃ বিক্সুরাণে। প্রাজাপ-ত্যেন তীর্থেন মনুষ্যাণ ন্তর্পথেৎ পৃথক্। ইত্যাহ্লিকাচারতত্ত্বণ।।
সনপর্ণী স্ত্রী অসনপর্ণী। ইতি
শব্দরত্বাবলী।।

সনসূত্র॰ ক্লী পবিত্রক । দ্বে শণ-সূত্র জালে। শণস্য সূত্র° শণসূ-ত্র॰ শণতি দদাতি সূত্র॰ শণঃ। শণ अग्रमादन अन् भग छानवामि मूर्कनावाखः। ইতি वहनः। मत्ना मखामानि मंखानश्यः। ইতি কেচিৎ। তন্মতে ষনদুঞ্ **मात्न रे**छामा ब्रुपः। मत्ना म স্তাসাদি মূর্ দ্বন্যণান্ত ইতাপরে। সণ কিণ মণি কাকণ কোণ কাণা ইতি মূর্দ্ধন্যণাস্তে বিদ্যাভরণঃ। कार्भाम मुभवीज मा। विश्व-স্যোর্দ্বৃত তিবৃৎ। সনসূত মৰ রাজে বৈশ্যস্যাবিকসৌ ত্তিক ।। ইতি মনুবচনাৎ পবি-ত্রক মপি ভদুচ্যতে। ইত্যমর-

টীকাষা ভরতঃ।। সনা ব্য নিত্য । ইত্যমরঃ।। भू॰ विकृशा भिवः॥ সনাতনঃ बका।। পिতृगंगििथः। ইতি **ट्यह्यः।। निवामन्याः।** जमा প্রমাণ সনন্দশব্দে জফব্যং। म ह बद्धनः भूखः। यथा। मनद-अयादता थर्षान्छ मनकन्छ मना-তনঃ। সনন্দ শ্চাপি সূর্য্যশ্চ যে শের বা ব্রহ্মণঃ সুতাঃ।। বিচ-ক্ষণা ন ষদ্বজুং কে বা খন্যে **জডবুদ্ধयः॥ ইতি বন্ধবৈবর্ত্তে** প্রকৃতিখণ্ডে ৩১ অধ্যায়ঃ ৷৷ সতু জনলোকবাসী। ইতি কাশी-খণ্ড ।। বব্লিপুরাণমতে তু ত-পোলোক इ देखि (छमः ॥ देव-ফবরাজঃ। ইতি মৎস্যপুরাণা। সনাতনঃ ত্রি নিভ্যণ। ইত্যমরঃ ।। সুনিশ্চলঃ। ইতি বিশ্বঃ।। সনাতনতমঃ পু॰ বিকুঃ। ইতি তসা সহসুনামস্তেত্রি ॥ मनाष्ट्री खी पूर्गा। नचीः॥ সরস্বতী। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ তস্যা ব্যৎপত্তি র্যথা। गर्ब-কালে সনা প্রোক্তা বিদ্যমানে তনীতি চ। সৰ্বত্ৰ সৰ্বকালেযু विषामाना मनाउनी!!

বন্ধবৈবর্ত্তে প্রক্ষতিখণ্ডে ৫৪ অধ্যায়ঃ।। অপি চ। নির্গুণস্য চ
নিত্যস্য বাচকশ্চ সনাতনঃ।
সদা নিত্যা নির্গুণা যা কীর্ত্তিতা
সা সনাতনী।। ইতি ব্রহ্মবৈব
র্ত্তে জ্রীক্ষজন্মখণ্ডে ২৭ অধ্যাযঃ।। অনাচ্চ। স্থিতিং করোতি
ভূতানাং সৈব কালে সনাতনী
।ইতি দেবীসাহান্যাং।।

সনাৎ ব্য নিত্য । ইত্যমরটীকাষা রামাশ্রমঃ । বিষ্ণুঃ ।
ইতি ত্যা সহসুনামস্তোত্র ।।
সনাথা দ্রী জীবস্তত্কা। ইতি
জটাধরঃ ।।

সনাভিঃ পু॰ সপিঙঃ। জ্ঞাতিঃ। ইত্যমর মেদিনীকরৌ।।

সনাভিঃ ত্রি তুলাঃ। ইন্তি মে-দিনী।। শ্লেহযুক্তঃ। ইন্তি শব্দ-রত্নাবলী।।

সনামকঃ পু॰ শোভাঞ্জনঃ। ইতিশলচন্দ্ৰিকা।। সমাননাম যুক্তে ত্ৰি।।

निः श्रृ॰ शृका।। मानः। ইতি
निकाछ को मूमा मूगा मितृ जिः।।
निः श्रृ॰ खी অধ্যেষণা। ইত্যमतः।। श्रृका दियाक नः। তক হে

ख्रता ज्याक कर्य अर्दि जािन-क्रि । সাযতে দীয়তে পুশা-দিক মত্র সনিঃ ধন দুঞ্চ দানে নামীতি ইঃ পাচ্ছোণাদীতি ঈ-পি সনী চ। অস্বেধণাদিবদধ্যে-যণা। ইতি ভরতঃ।। দিক্। ইতি শক্ষালা।।

সনিতঃ ত্রি প্রতিপন্নঃ। ইতি হেষচন্দ্রঃ।।

সনিগ্রীব॰ ক্লী সনিপ্তেব॰। ইভ্য-মরটীকাষা ভরতঃ।।

সনিষ্ঠেব॰ ক্লী অমূক্ত । ইত্যমরঃ।। নিষ্ঠেবো মুখবারিবিন্দুঃ
তেন সহ বর্ততে ইতি সনিষ্ঠেব।
নি পূর্ব চিবে র্যঞ্জ গুণঃ সনিষ্ঠীব
মিতি কচিৎ পাঠে। লিপিকরপ্রমাদাদিতি মুজটঃ। ইত্যমরটীকাষা ভরতঃ।।

সনী স্ত্রী সনিঃ। ইত্যনটীরকাষাণ ভরতঃ॥ হস্তিকর্ণাস্ফালঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

সনীডঃ ত্রি নিকটঃ। ইত্যমরঃ॥ নীডযুক্তশ্চ॥

সন্তঃ পু॰ স•ছতলঃ। ইতি শব্দ-চন্দ্ৰিকা।। সৎশব্দস্য প্ৰথমা বহুবচনান্তৰূপঞ্চ।।

मञ्जुः की मुज्जः॥ उद्गि बि।

সম্ভাপি

ইত্যমরঃ ৷৷

সম্ভতাত্যাসঃ পুং নিরস্তরাত্যা-সঃ। যথা। স্বাধ্যায়ঃ সম্ভতাত্যা-সঃ। ইতি ভূরিপ্রযোগঃ।।

সম্ভিভঃ স্ত্রী গোত্রণ। ইত্যমরঃ
। পংক্তিঃ।। বিস্তারঃ।। গরস্পরাভবঃ।। পুত্রঃ।। কন্যা। ইতি
বিশ্বঃ।।

সম্ভপ্তঃ ত্রি অধগমনাদিনা শ্রা-ন্তঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। সন্তাপিতঃ ২ ধূপিতঃ ৩ ধূপাযিতঃ ৪ দূনঃ ৫। ইত্যমরঃ॥ তপ্তঃ ৬। ইতি শব্দরত্মবলী॥ অগ্নিজতাপযুক্তঃ । যথা। আদিক্ষদাদীপ্তরুশানু-কল্প সিংহাসনং তস্য সপাদ-পীঠং। সম্ভপ্ত চামীকর বল্পব-জুং বিভাগ বিন্যস্ত মহার্যরত্নং॥ ইভি ভটিকাব্যে ৩ সর্গঃ॥

সন্তমসং ক্লী বিশ্বক্তমঃ। ব্যাপকান্ধকারঃ। ইত্যমরঃ।। মোহঃ। যথা। মমাপি কিং নো
দযসে দযাধন ত্বদজ্জ্মিগ্নং যদিবেশ্বমে মনঃ। নিমজ্জ্যন্ সন্তমসে পরাশ্বং বিধিস্ত বাচ্যঃ ক্ল
তবাগসঃ কথা।। ইতি নৈষধে
১ সর্গঃ।।

সম্ভৰ্পণ ক্লী জাক্ষা দাডিম খ-

ज्जू ती कमली मर्कती लाजा हूर्न मधाजा मः भिलिछः । देखि ता-जिन्दं ।। जृक्षिकात् कि । यथा। भूगा महावक्षममृङ्जू-येः मज्ज्ञं । भाक्षमाः व्यत-गः। ज्ञज्ञाल लाक्षित्रय म ताजा यथा ध्यत विद्व ति विश्व भीतः ।। देखि जिपिकात्य > मर्गः।।

সন্তানঃ পু॰ কল্পবৃক্ষঃ।। ব॰শঃ। ইত্যমরঃ।। বিস্তারঃ।। অপত্য• । ইতি মেদিনী।।

সস্তানিক। স্ত্রী ক্ষীরসরঃ।। মক টজালকঃ।। ছুরিকাফলং।।
ফেণঃ। ইতি হারাবলী।৷ আদ্যস্য গুণাঃ। সম্তানিকা গুরুঃ
শীতা বৃষ্যা পিত্তাসু বাতজিৎ।
ইতি রাজনির্ঘণটঃ।।

সম্ভাপঃ পু॰ অগ্নিজতাপঃ। তৎ পর্য্যায়ঃ। সংজ্ব ২ । ইত্যমরঃ । তাপঃ ৩ প্রোষঃ ৪ উষ্ণা ৫ । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। সম্যক্তা-পনঞ্চ।।

সম্ভাপনঃ পু॰ কামদেবস্য পঞ্চ-বাণাম্ভর্গতবাণবিশেষঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। সম্যক্তাপ-কারকে ত্রি।।

সস্তাপিতঃ ত্রি অধাদিনা শ্রাস্তঃ

সন্দ শিক। স্ত্রী সূচ্টী। সাঁডাশী

। ইত্যমরভরতৌ।। অস্য পর্য্যা-यः मख्खनरम प्रस्ताः ॥ সন্তিঃ স্ত্রী দানণ। অবসানণ। ইত্যমরে সাতিশক্ষীকাষাণনী-লকপঃ ৷৷ সতিশ্চ সাতিশ্চ সতি সাতী। সনোতে ব্লাশিষি তিগ-ন্তুস্য এতো নিপাত্তো। পক্ষে সনুতাৎইতি বাক্যে তিকি ক্লতে হবত্রতে রিতি ইম্ নিষেধে বন তনেত্যত্র তিকি বৰ্জ্জনাৎনলো-পাভাবে সন্তিঃ। ইতি মুগ্ধ-বোধনীকাষা॰ দুর্গাদাসঃ॥ স-खि**णत्म। निर्तिमर्गाट्म** बजन ভাবে ইত্যুমাৎ অন্তি প্রত্যুষেন निष्णमः। यथा। मिख त्रंगा ज নপদা বহুষাঃ পরিতঃ স্কন্। ইতি মহাভারতে বিরাটপর্ব।। সম্ভক্তঃ ত্রি সন্তোষযুক্তঃ। যথা। গচ্ছ भ ममताः मर्स गृशीषार्काः य गालवः। मञ्जूषे। वत सन्माकः मर्प्यमानी॰ मूर्शृष्टिजाः ॥ ইতি ছন্দোগবৃষোৎসর্গতন্ত্ব।। मरस्रायः भूः मस्रिक्षः। ७९-পर्याग्यः। धृष्ठिः २ साम्राः ७। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। সন্দেশঃ 🦖 কন্ধমুখঃ৷ সাঁডাসী

ইতি ভাষা। ইতি হেমচঞ্রঃ।।

ইতি চিম্টা ইতি চ ভাষা ।।
লৌহষদ্রবিশেষঃ। কাতারি ইভি
ভাষা। ইতি মেদিনী ।।
সন্দর্ভঃ পু॰ রচনা। ইতি হলাযুধঃ।। প্রবন্ধঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। প্রস্কাণ যথা। সন্দর্ত্তোরসনা শুমুঃ প্রস্থনণ গ্রন্থনা হাতি হেমচন্দ্রঃ।। তস্য
লক্ষণণ যথা। গঢ়ার্থস্য প্রকানশ্চ সারোক্তিঃ প্রেণ্ঠতা তথা
। নানার্থবত্তণ বেদাত্তণ সন্দর্ভঃ
কথাতে বুধৈঃ।। ইতি কাপ সন্নাতনগোসামিক্তে প্রভাগবতীয় ষট্সন্দর্ভস্য প্রথমসন্দর্ভকারিকা।।

मन्मर्गन की मग्रक्थकाद्र । हर्मन । यथा। मन्दर्भनार्थ मद्या-या नहीं भूलिन मृद्धिः। म ह देनग खुश (खुरश (हरीमृद्धः) श्रद्ध कुशन।। इकि मार्कर धुर-श्रद्धार । एकी मार्गा । । मन्द्रा की हाम। इका मद्रा ।

সন্দান ক্লী দাম। ইত্যমরঃ।।
সমানদানঞ্চ।
সন্দানঃ পু॰ গজস্যাষ্ঠীবতোরধোভাগঃ। ইতি ত্রিকাঞ্ডশেষঃ।।

मन्नानिका जी अद्रिंशनिदः ।

ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ সন্দানিতঃ ত্রি বন্ধঃ। ইত্যমরঃ॥ मनानिनी जी लागृह । ला-बानि ইতি ভাষা। ইতি হেম-हिन्द्रः ॥ সন্দাবঃ পু॰ পলায়ন । ইত্য-यतः ॥ मन्नारः पुः गूथ ठात्वार्धमारः! ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ ষন্দিগ্ধঃ ত্রি সন্দেহযুক্তঃ। যথা 1 ন তাবৎ সন্দিগ্ধ সাধ্য ধর্মত্বণ পক্ষত্ব মিতি পক্ষতামূলণ ৷৷ जिम्किकाणिः जि जिम्मरिवियर তবুদ্ধিযুক্তঃ। সন্দিগ্ধা মতি র্যস্য ইতি বহুত্ৰীহিসমাসনিষ্ণন্নঃ 11 मिक्षार्थः शुः मत्मइवियशी-ভূতার্থঃ।। তদিশিষ্টে ত্রি।। मिष्ठः वि वृक्षः। ইতামরः॥ मिक्छ की वार्छ। ই**छ भय**ः রত্নাবলী॥ কথিতে ত্রি॥ मिक्कार्थः भूः मत्नमहतः। ইতি কেচিৎ 11 সন্দ্রিকানঃ ত্রি সন্দিয়ঃ৷ যথা৷ সন্দিহানঃ সাংশ্যিকঃ সংশ্যা-পর্মানসঃ। ইতি জটাধরঃ॥ मनी जी थेणा यथा। नियमा थिएकां मनी। ইতি विकाध-

ट्यांबः ॥ जन्मी भाः भू॰ ययू त्रिशावृक्षः । ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা।। जल्मनः पूर जन्यामः। इंडि नक-রত্নাবলী গ স্থনামখ্যাতমিফা-মবিশেষশ্চ গ गत्मगवाक् खी मःवामः। ७९-शर्यायः। बाहिकः २। ইত্য-यतः ॥ मत्मिणश्द्रः भू॰ पृष्ठः। हेळा-यदः ॥ मत्मभशतकः पूर मृङः। ইতি ट्याञ्चः ॥ गत्महः भू । शक्षर्माकविक्रका-ভাবাভাবপ্রকারক জ্ঞান । हैि मिक्का खमुकावनी॥ ७९-পर्यायः। विठिकिৎमा २ म॰-শ্যঃ ৩ দ্বাপরঃ ৪। ইত্যমরঃ।। मत्मारः पुर ममृशः। ইতামরः॥ मखावः पू॰ भणायनः। ইত্য-बद्धः ॥ সন্ধা জী স্থিতিঃ।। প্রতিজ্ঞা। इैि सिमिनी।। मन्नानः। हैि भक्तज्ञावनी।। मन्ता। यथ।। मन्ना विकरियवी शिवृथमः। ইতি ভরতধতবাচস্পতিঃ ।। मक्षान॰ की महामङ्जीकर्वन ।

इं ि नयनानमः। ७९ शर्यायः । অভিষবঃ ২। ইত্যমরঃ ॥ স-স্বানী ৩ সন্ধিকা ৪। ইতি শব্দ-त्रज्ञावली।। मन्नीयट मन्नान॰ वंशाक्त कलामीन् वहकालं সন্ধাষ ষৎ ক্রিযতে। ইতি ভর-**७:11 मञ्चर्येन । ই** ि सिमिनी ।। काञ्जिकः। इंडि इनायूधः ॥ यित्रा।। অবদ॰শः॥ मौत्राखु॰ । ইতি রাজনির্দণীঃ।। ধনুষি বাণযোজন । বথা। তদাশু-ক্তসন্ধান প্রতিসংহর শাষক । আর্ত্তরাণায় বঃ শস্ত্রণ ন প্রছ-র্ভু মনাগসি।। ইত্যভিজ্ঞান শ-अखनायां ३ जकः॥ जत्यस्न । ইতি লোকপ্রসিদ্ধ ।।

সন্ধানিতঃ ত্রি সন্ধানবিশিষ্টঃ। সহ্যটিতঃ। সন্ধানশব্দাদিত প্রত্যবেন নিষ্পন্ধঃ।।

मञ्जानिनी खी গোগৃহ। ইভি কেচিৎ।।

नक्षानी जी नक्षानः। ইতি শব্দ-त्रञ्जावनी॥ ज्ञश्रामाना। ইতি टেমচন্দ্রঃ॥

সন্ধিঃ পু॰ রাজাদীনা॰ বন্ধুণা-স্তর্গতগুণবিশেষঃ। সতু স্বর্ণাদি দানেন বন্ধুডিঃ প্রীত্যুৎপাদ-

नां भिजीकत्रनः ॥ जःरवांगः । তৎপর্য্যায়ঃ। শ্লেষঃ ২। ইত্যমর-ভরতৌ ॥ সুরুষা ॥ ভগণ।। সঙ্গ-টন॰ ॥ ৰূপকাণা॰সুখাদ্যঙ্গ ॥ সা-वकामः। ইতি यिमिनी।। एउनः । ইতি विश्वः॥ वागकत्रगमण्ड वर्ग-ষ্যস্য মেলন । ভদ্য লক্ষণাদি র্যথা। অধ্বমাত্রোচ্চারণকালেনা-ব্যবহিত্যো র্বর্ণষো র্ক্তভরোচ্চা-রণ সন্ধিঃ। অতএব শ্লোকার্দ্ধযো ৰ্মস্ত্ৰাদ্ধিয়ে ৰা ন সন্ধিঃ। ভত্ৰ অৰ্দ্ধ-মাত্রোচ্চারণ কালব্যবধানস্যো-চিতত্বাদিতি প্রাঞ্চঃ। স্বমতে তু সন্ধ্যাযসূত্রবিহিতকার্য্য সন্ধি রিতি সন্ধিলক্ষণ । তেন পিপক্ষা-मि **भकाना॰ সংযোগান্তলু**পি লু-পি न मन्ना। माविधी देखि निष्य-ধেপি সন্ধিগ্ৰহণাৎ সন্ধিলুপ্যেৰ ন সন্ধি ব্লিভি নিযমাৎ ঝপ ঝসো রিত্যনেন চপজবৌ পিপক্ পিপ-গ্ ইতি। ভিন্নপদে তু সন্ধি ৰিভা-ষষেতি বোধ্যণ। তথা চ। সন্ধি রেকপদে নিত্যো নিত্যো ধাতৃ-পদর্গবোঃ। সূত্রেষু চ ভবেমিত্যঃ টৈশবান্যত্র বিভাষ্যা ॥ ইতি প্রাঞ্চঃ। একপদে ইতি স্বভাবা-(मक्नराम नियास्त्री। यथा मानः

मिक्की

७तव नामा हेजानि। म यारम यूत्रातिः श्वीदक्षः बाय कः गरीमः इंड्रानि। शाकुन-সর্গয়ো স্তু অধীতে উপেত্য ই ত্যাদি। অন্যক্র অত্র অন্তঃ অ-बासः देव बेन्युः देरहन्युः हेला मि। धाजूशमर्गरयाः मयाममा निकाषाटमक्रमणश्रद्धार्मित्वर्थे-मिष्को ७ साः भूनक्रभानानः অনিত্য সমাদে কদাচিদেক-পদেপি সন্ধি বিভাষ্যতে ইভি জ্ঞাপনার্থ । তেন উচ্চারিত রুচির ঋচাণ চাননানাণ চতুর্ণা ইত্যাদি সিদ্ধিঃ। ইতি মুগ্ধবো-थवाकत्रविकायाः मूर्गामामः ॥ 🗱 🛚 गर्बाक्त्रमिक्क स्थामज्ययन ভবতি। গাত্রসন্ধিঃ সপ্তমাদৈ र्ভवि । इंडि मूथदवाधः ॥ यूग-मिक्क र्युगमाय्य तिहमिक र्यायी-भटक ठ जरुवाः ॥

मिक्षका खी यमामक्षान । ইতি শব্দরত্বাবলী।

मिक्षरहोतः भुः होत्रविरम्बः। मिक्षानरहात देखि ভाषा। यथा । मिक्षरहोत्रस्त हात्रकः। देखि भक्षभाना॥

সন্ধিজীবকঃ ত্রি সস্ত্যা বিভবা-

সন্ধিপু

ষেষী। তৎপর্যায়ঃ। পাশ্বকঃ
২। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।
সন্ধিতঃ ত্রি সন্ধিযুক্তঃ। মিলিতঃ। যথা। অস্মন্বরান্দিব্যবপুঃ
সন্ধিতঃ সন্ধিমানসৌ। আর্য্যসাদার্য্যরাজাথাঃ খ্যাতো ভূবি
ভবিষ্যতি।। ইতি রাজতরঙ্গিগ্যাং হতরঙ্গঃ।।

मिक्तिनी खी व्यर्जनां का खा शि १ इंडामद्रः ११ सा खडूमडी व्य-रजन बाकान्ता निष्णामिड देमप्-ना मा मिक्तिनी। गर्डिन मक्तान॰ मक्ता मा विमार्ड बमाः मिक्त-नी हेन्। हेडि ज्वरुः ११ ब-कानमुक्ता रगेः। हेडि स्मिनी भक्तक्वावनी ह ११

সন্ধিপূজা স্ত্রী শারদীয়মহাপূজান্তর্গততৃতীয়া পূজা। যথা
কালিকাপুরাণবচনান্তরং। অফুনী নবনী সন্ধৌ তৃতীয়া খলু
কথ্যতে। তত্র পূজ্যা ত্বহং পুল্র
যোগিনীগণসংযুতা।। জ্যোতিযোগিনীগণসংযুতা।। জ্যোতিযোগিনীগণসংযুতা।। জ্যোতিযোগিনীগণসংযুতা।। জ্যোতিবে। অফুন্যাং সন্ধিযোগে সকল
পরিজনৈঃ পূজ্যেৎ সত্বভাবৈঃ
। সপ্তমীপূজাবৎ মহাফুন্যাদিক্রত্য মপি ষ্টিদ্ভাত্মিকায়া মেব ন তু পরদিবসীয় খণ্ডতিথো

किञ्च भृद्धीक मन्नान्द्राधि । পূজা। এবঞ্চ পূর্ণাক্টন্যাণ মহা-ফমীপূজা তৎ পরদিনে অফমী নবম্যোঃ সন্ধিপূজা তৎ পরদি-নে মহানবমীপূজা প্রাগুক্ত ন-ন্দিকেশ্বরপুরাণাদ্যক্তোদযগা-मि जिथान् द्वाक्षा । ज भन्नि न मगगा विमर्जन शृकान्-রোপেনাধিকদিনলাভাৎ। अ-ना ५ मूर्गामत्क जरुवा ॥ সন্ধিবন্ধঃ পু॰ ভূমিচম্পকঃ। ইতি শक्छिका॥ সন্ধিবন্ধন ফ্লী শিরা। ইভি

সন্ধিমতিঃ পু॰ কাশ্মীরদেশীয-জযেন্দ্ররাজমন্ত্রী। স চ পরে রাজ। বভূব। যথা। সুতো মহী-মহেন্দ্রস্য জয়েন্দ্র স্তস্য ভূপতেঃ । স্বা মাজানুভূজো রাজা বু-ভোজাথ প্রথ্পথঃ।। ভূদজুতোদস্তভবভক্তিবিভূষি-তः। রাজ্ঞः मन्त्रियि ग्रायसी মতিমতাম্বরঃ।। অম্মদ্রাদিক্য-वश्रः मिक्का मिक्कानरमो । আর্য্যন্তাদার্য্যরাজ্যখ্যঃ খ্যাতো ভূবি ভবিষ্যতি ৷৷ ইতি রাজ-

किंछि ॥

তরঙ্গিণা ২ তরঙ্গঃ ৷৷ भागाविव थर्छिथाविश मिक्ष मिक्षित्रक्षका जी मूकका। देखि किं विश्वा मित्रना शी मूकका।। निर्मा। यिन । इंडि यिनिनी ॥ निश्चादिन। जी कानवित्नयः। म जू व्यर्शाताजामित्रमनकाम-काशः। यथा वागः। छेलारखः मिक्किरवलायाः निमाया निवम-স্যাত। তামেব সন্ধ্যাণ তস্মাজু প্রবদন্তি মনীষিণঃ।। ইত্যা ব্লি-কভত্ত্ব• 11

मिक्षहाद्रकः पूरः मिक्षिति देश यथा। बन्मिटि द्वा भावनः मार সম্ভিলঃ সন্ধিহারকঃ। ইতি হা-রাবলী। ।

সন্ধ্যা দ্রী কালবিশেষঃ। সভু দিবারাত্রিসম্বন্ধিদণ্ড**দ্যব্বপঃ**। তৎপর্য্যায়ঃ। পিতৃপ্রসূঃ ২ । रेठागतः॥ मन्ना ७ विकटेनवी ৪। ইতি ভরতধৃত বাচস্পতিঃ ॥ माय॰ ৫ দিনান্ত॰ ७ निमापि १ দিবসাত্যয়ণ ৮। ইতি রাজ-निर्घनिः॥ मायाङ्गः २ विकालः ১০ বন্ধভূতিঃ ১১' সাবঃ ১২ । इंडि मक्तं क्वावनी।। मा ह का-লস্য ভাষ্যা। ষ্থা। কালস্য

তিলো ভাৰ্যাশ্চ সন্ধ্যা রাজি দি नानि ह। चाकि विना निवाली ह সংখ্যা কর্ত্ত ন শক্তাতে।। ইতি वन्नदेवदर्छ श्रक्तिभए७ ३ व्यथा-यः ॥ ॥ बात्व तामा सम्बद्ध কৰাত্মককালঃ। ৰখা। ত্ৰিয়ামাণ রজনী প্রাহ স্তাজ্যাদ্যম্ভ চতুষ্ট यः। नाषीनाः छमू एक महात्रा मि ৰসাদ্যন্ত সংজ্ঞিতে।। ইতি প্ৰায শ্চিত্তভন্ত্ৰণ। তৎসাৰ্থক্যণ যথা। मगुरफ हिमवर्शार्यं नमा ममा-क मूर्गटा ताजावश्नि मन्नागगाः কদ্য গুপ্তঃ পরিগ্রহঃ॥ ইতি জি थापिङद्भा 🗱 ॥ विमन्नाकानीः নোপাসনা।। তৎকালোপাস্যা াৰতা। যথা। অথ সন্ধ্যো-লাসনং। তত্ত্র ছন্দোগপরিশিষ্টং। অত উৰ্দ্বুণ প্ৰবক্ষ্যানি সন্ধ্যোপা-मनिक विधि। अनर्ड कर्माना विश्रः मन्नाशीत्ना यठः ग्रृठः ॥ অতঃ প্রাতঃস্বানানস্তরণ।। তথা। এতৎ সন্ধ্যাত্রয় প্রোক্ত তান্ধ-ণ্য॰ যদধিষ্ঠিত । যস্য নাস্ত্যাদর স্তত্ৰ ন স ব্ৰাহ্মণ উচ্যতে ।। শাতা-তপঃ। অত্রান্ধণাস্ত ষট্প্রোক্তা ঋষিণা তত্ত্ববাদিনা। আদ্যোরা জভূত ভেষাণ দিতীয় ক্রয় বি-

करी।। जृजीदमा वर्गाजाः मा-कर्जूरथी जायराजकः। शक्यन्त ভূত স্তেষা প্রামস্য নগরস্য চ।। অনাগভান্ত বঃ পূৰাণ সাদিত্যা-ক্ষৈৰ পশ্চিমাণ। নোপাসীত দ্বি-জঃ দ্ব্ব্যাণ দ্বটো হত্তাকাণঃ স্-তঃ।। রাজভূতো াজসেবকঃ। আৰাদে ভূতো ভরণীযঃ। গ্রাম लक्ष बाइ बार्क्ट उपभूतान । **তথা শূজজনপ্রা**যাঃ সুসমৃদ্ধর-ষীবলাঃ। ক্ষেত্রোপষোগ ভূম-ধ্যে বসন্তি র্প্রামসণ্ডিক ।। অত্র সন্ধ্যাত্রষস্য নিভ্যন্নাভিধানাৎ সৰ্বকাল মুপস্থান সন্ধ্যায়াঃ পা-ৰ্ষিবেষ্যতে। অন্যত্ৰ সূতকাশৌ-চ বিভুমাত্র ভীতিতঃ ৷৷ ইতি বিফুপুরাণীষে সন্ধ্যাষা ইত্যেক-वहना ख्रुभाटी। धर्मा दका दबा दका যুক্তঃ। এব সেব নব্যবদ্ধিমানঃ। সর্বকাল প্রাতর্মধ্যাত্র সাম কপ কালত্ত্য। অন্যথা তদুপাদান॰ বার্থণ সাাৎ। বিভূম শ্চিত্তবিকে-পঃ। তেন ক্ষতাদাবপি সন্ধ্যা মা-চরস্তি। অতএব যাজ্ঞবন্ধা: । সৰ্বাবস্থোপি যো বিপ্ৰঃ সন্ধ্যো-পাস্নতৎপরঃ। ব্রাহ্মণ্যাচ্চ ন হীষেত অহ্যজন্মগতোপি সন্।।

সৰ্বাবক্ষোপি নিত্য সেবকাদি-কর্ম্মরতোপি। ষ্থোচিতশৌচে প্যশক্তোপি ইতি রত্নাকরঃ। স্থ-স্বাদ্যবস্থাপৰোপীতিমুক্ত ।। ।।। সন্ধ্যাত্রষসাধারণলকণ মাহ যো-গি ষাজ্ঞবদ্ধ্যঃ। ত্ৰষাণাঞ্চৈৰ বে-**দানা॰ बक्षामीना॰ স্বাম্বঃ**। সন্ধিঃ সর্বসুরাণাঞ্চ তেন সন্ধ্যা थकीर्विण ॥ 🗱 ॥ मस्राप्तर কালস্ত অহোৱাত্ত সম্বন্ধি মুহূ র্ত্তাত্মকঃ। তথা চ দক্ষঃ। অহো-রাত্রস্য যঃ সন্ধিঃ সূর্য্য নক্ষত্র ব-জ্জিতঃ। সাচসন্ধ্যা সমাখ্যাতা मुनिভि खब्रवानिভिः॥ সূর্য্য न-ক্ষত্র বজ্জিতঃ। অর্জাস্তমিতা-क्तां निष्ठ मूर्यामधन श्रक्षेर्छ জো নক্ষত্র বিজ্ঞিতঃ। তথা চ वतारः। অकाखमयाय मन्ना ব্যক্তীভূতা ন তারকা যাবৎ। তেজঃপরিহানি রুষা ভানো র-र्काषय॰ याव<।। **अ**व व्याषास-**छ। উक्ता। পরিমাণ মাহ দক্ষঃ।** রাত্র্যস্তকালে নাড্যৌ ছে সন্ধ্যা-দিঃ কাল উচ্যতে। দর্শনাদ্রবি রেখাষা স্তদন্তো মুনিভিঃ স্মৃতঃ।। नाजी मध्या (याशीयाळवकाः । হ্রাস বৃধ্বী চ সতত দিন রাত্র্যো

र्वशाक्यः। मह्या मृद्र्व नाशाका द्रात्न वृत्की नमा चृष्ठा ॥ ।। অত্যোপাসনাষা অপি সন্ধ্যান্ত याह वामः। छैनाट्ड मिस्ट्वा-या॰ निभाषा पिरममा है। छ। यर मक्ता जन्मा जू श्रवन जि मनी विनः য় উপাত্তে ব্ৰহ্মামাণ প্ৰাণাঘা-मानि क्वियदयं ि यावं ॥ 🛊 ॥ তৎকালে উপাস্যা অপি দেবতা সন্ধা। তথা চ যাজ্ঞবন্ধ্যঃ। স-ন্ধৌ সন্ধ্যা মুপাদীত নাস্তগে ताकारक त्रवो ॥ # ॥ উপাস-নোপক্রম মাহ সম্বর্তঃ। প্রাতঃ সন্ধ্যাণ সনক্ষত্ৰা মুপাসীত খথা-বিধি ৷ সাদিত্যাণ পশ্চিমাণ স-স্ব্যাণ অদ্ধাস্তমিতভাক্ষরাণ।। স-নক্ষত্রা মিত্যনেন তদ্যুক্তকালে উপক্রমা প্রাতঃসন্ধ্যা মুপাসীত। এব মেবার্দ্ধাস্তমিভভাক্ষরারন্ধাণ পশ্চিমা॰ সাদিত্যা মিত্যনেন ত-দ্যুক্তকালে উপক্রম্য উপাসীতে-**जार्थः ॥ 🟶 ॥ यशाङ्क मन्तागा** व्यक्षेत्रपृष्टिं काल यात्र सृष्टिः। भूक्षाभरते छथा मस्त्रा मनकरख প্রকীর্ত্তিতে। সমসূর্য্যেপি মধ্যাত্কে मूङ् कं मञ्जरमाणिति॥ माण्यायन গৃহ্ণ ৷ অরণ্যে সমিৎপাণিঃ সন্ধ্যা

মুপান্তে নিত্য• বাগ্বত উত্তরাপ-व्राजिमूर्य। श्वरुमिन मानकव দর্শনাৎ। অভিক্রান্তাবাং মহা-वाक्षीः गाविजीः सरायनामि জ্পু এবং প্রাতঃ প্রাগ্নুখ স্তিষ্ঠন্ আমণ্ডল দশ্ৰাদিতি৷ উত্তর্গ-পরাভিমুখো বাষুকোণাভিমুখঃ। **्रकाव॰ विवृ**र्गाि व्यश्वस्मिम মিতি। উভয দিগফীমভাগ মিতি बाव । बामः। भाषवी नाम शृंबीट्स माविजी मशारम मितन । नवस्त्री ह नायादङ्ग देनव नम्ना ত্তিষু স্মৃতা।। প্ৰভিগ্ৰহাম দোষাচ্চ পাতকাদুপপাতকাৎ। গাযত্রী - প্রোচ্যতে তস্মাৎ গায়ন্ত ভাষ-তে যতঃ।। সবিভূদ্যোতনাৎ সৈব সাবিত্রী পরিকীর্ত্তিতা। জগতঃ প্রসবিত্রীত্বাৎ বাগুপত্বাৎ সরস্ব-ভী।। তৈত্তিরীয ব্রাহ্মণণ। উদ্য-স্ত মস্ত থাক্ত আদিত্য মভিধ্যা-যন্ সৰ্বন্ আক্ষণো বিদ্বান্ সক-় **ল॰ ভদ্র মশ্বুতে।** অসাবাদিত্যো ব্ৰহ্মা ইতি ব্ৰহ্মব সন্বহ্মা-েভ্যেতি য এব॰ বেদেত্যয মর্থঃ। বক্ষ্যমাণপ্রকারেণ প্রাণাযামাদি-ক॰ সৰ্বন্ যথোক্ত নামৰূপো-পেত॰ मन्त्रागकमा वाठा यानि-

ত্য ব্বন্ধেতি খ্যাযন্ ঐহিক নামু-ত্রিকঞ্চ সকলভড় সম্পুতে। য এব মুক্ত ধ্যানেন শুদ্ধান্তঃকরণো ত্ৰন্ধ সাক্ষাৎ সক্তে স পূৰ্ব মপি ৰক্ষৈব সন্ প্ৰজ্ঞাবান্ চিরজীবি-ত্ব' প্রাপ্তো যথোক্ত জ্ঞানেনা-জ্ঞানোপশ্যে ব্ৰক্ষৈব প্রাপ্নোতি। ইতি পরাশরভাষ্যে মাধবাচার্য্যঃ ।। অতএব ব্যাসঃ। ন ভিন্না॰ প্র-তিপদ্যেত গাযত্রী বন্ধণা সহ। সোহ মশ্মীত্যুপাদীত বিধিনা यन क्निहि॰॥ अ। गायबी इ ভর্গপদ প্রতিপাদ্য ঈশ্বরঃ। অহ॰ জীবৰূপোশ্মি ভবানি ইতি। অ-**জ १ ९ यार्थ न क** न या की दिश्वत्या রহকার প্রতিফলিতত্বোপাধি র-ছিতেন চিদ্রাপেণেক্যে । ষ্টা-কাশ গৃহাকাশযো রূপাধি রিভ্য-ৰগমাৎ। ঐক্য মিব ভাবযন্ উ-পাগীত। যাজ্ঞৰক্ষ্যোপি। যা স-ন্ধ্যা সা তুগাৰতী দিধা ভূমা প্ৰ-ভিষ্ঠিতা। সন্ধ্যা উপাসিতা ষেন বিষ্ণু জেন উপাসিতঃ ॥ 🟶 ॥ উ-পাসনাষাঃ ফল মাহ সএব। গ-বাণ সর্পিঃ শরীরস্থণ ন করোত্যঙ্গ-পোষণ । নিঃসৃত বিশ্বসংযুক্ত পুন স্তাসাণ তদৌষধণী৷ এবং স

हि भत्रीत्रकः मर्शिवं भन्नरम्य-॥ तः। विना **का** भागना दाव न क-রোতি হিত নৃষ্।। প্রশ্ব ব্যাহা **जिजाक गाम्बा बिज्यम**्ह । উপাস্য পরম বন্ধ আত্মা যত্ত প্রতিষ্ঠিতঃ।। ত্রিভষেন প্রণবাদি ত্রিত্ত্বেন ব্রহ্মপ্রতিসাদকেনো-চ্চারিতেম তদর্থাবগবেম উপা-मा॰ थमामनीय॰। उनाइ मध्य। বাচ্যঃ স ঈশবঃ প্রোক্তেশ বাচকঃ প্রণবঃ শ্বৃতঃ। বাচকেপি চ বি-खाटा वाठा अव अमीपि ॥ जू ज्रवः स खरा **পृर्वः** सर मित यग्रुवा। काम् जा उद्यानस्टर्म তস্মাৎ ব্যাহাত্যঃ স্কৃতাঃ॥ জ্ঞান-দেহেন তত্ত্বজ্ঞানস্য চিক্রপেশ্বর-मा (मर्ट्स मदीत बर्णन वास्त्र) উক্তাঃ। তেন ভদ্বাচ্যোপীশবঃ। क्ष्री भू द्राव । अक्षान भू द्रज्ञः का-ला बन्न विक् गरम्बद्धाः। मञ्ज রদ স্তম স্তিসুঃ ক্রমান্তাহতমঃ স্তাঃ।। এডক্রপেণাপি ভাবনী-याः। ইত্যাङ्गिकानात्रञ्जू॰॥॥॥ विशिष्ठ। निनाख मन्नाः मूर्वाः পূর্ব। মৃকৈ যুতা বুধঃ। উপত্তি-छि॰ वशानाय नगगान्या भा-ৰ্থিব ৷৷ "সৰ্বকাল মুপস্থান স-

স্বাৰাঃ পাৰিবেষাতে ৷' অন্যত্ৰ সূতকাশৌচ বিভ্রমাত্র ভীভিতঃ ॥ সূर्यागाञ्जामित्वा यस वासः मृर्या । यभन्। यभावाजूत-ভাবাচ্চ প্রায়শ্চিতীয়তে নরঃ ॥ **ज्या**मन्मिट्ड मृर्या मन्भाव म-হীপতে। উপভিচেদরঃ সন্ধ্যাণ ममूर्याक मिमा खर्जा ।। उभिछ-श्रेष्ठि देव जन्ना। एक न शृक्षा न श-শ্চিমাণ। বজন্তিতে দুরাত্মান স্তা-भित्रु नतक नृग॥ देखि क्किश्रू क्राटन ७ जन्टन ३३ जशायः ॥।।।। **बीकि** ठिटणसम् मन्ना वित्यस यथा। जृभि क्रवाहः। त्मवत्मचः কথ সন্ধ্যাণ দীকিতঃ সরুতে বদ ৷ কেন মন্ত্ৰেণ বা ভক্ত স্তব কৰ্ম-भर्तायनः॥ बाताङ् खेवाछ। भृगू মাধবি তত্ত্বেন সন্ধ্যা মন্ত্ৰ মনুত্ত**ম**° । यथा वनिष्ठ देव मूर्याः मन्नाः भूई॰ ठिद्धा॰ जथा ॥ जनाक्षनि॰ গৃহীত্বা চ মম ভক্ত্যা ব্যবস্থিতঃ ৷ गूर्छ । भान गाञ्चाय हैन नख मू-मार्दार ।। यक्षः। ভरवास्व या-मि॰ **राकु महर गामि**छा॰ मर्दि मिनी বন্ধ ৰুত্ৰেন্ত্ৰা স্তাৰ্প ক্ৰকো মথা-সীৎ ধ্যান যোগ স্থিতা তে সন্ধ্যা मः छ। वामु एवतः नम् कि वयः एवत

শাদি ব্যক্তৰূপণ ক্ৰত্না চাত্মনি দেব সংস্থা তথাপি সংসারার্থণ কর্মা তৎ কারণ মেব সন্ধ্যা সংস্থা বা-मुर्मित बरमा बमः। अरबरेनत जू महान नकाा॰ नवाख् मीकिउः। रेणि वादार्थ ठलूबनीकानामा शावः १। 🖝 १। ने ब्रा अन्ना वर्षा १ मृगव छेतू । कथ नृत्व मिव ৰাতি ভাৰাণো দশ্বকিছিবঃ। অ-मशिका हि न जहि वमुकः व-द्भिया भूता।। मृठ छेवाछ। माय॰ প্রাতশ্চ বঃ সন্ধ্যা ৰূপান্তে ংক্ষর बानमः। জপन् हि भावनीः प्र-বী- গাযন্ত্রী- বেদমাতর- ৷৷ তপ-সা ভাবিতো দেব্যা ব্রাহ্মণঃ পৃত किबियः। न नीत्म अिंग्ड्रा-ता जिलि श्री ममागता ।। त চান্যে দাৰুণাঃ কেচিৎ গ্ৰহাঃ সূ-ব্যাদযো দিবি। তে চাস্য সৌম্য-ভা• যান্তি শিবাঃ শিবতরা স্তথা া। ষত্ৰ তত্ৰ গভ• টেচন• দাৰুণাঃ পিশিতাশনাঃ। যোরৰপা মহা-কাৰাঃ প্ৰভবস্তি ন রাক্ষসাঃ ।। ইতিবঙ্কিপুরাণে আশ্বমেধিকনা-শাধ্যাৰঃ।। 🛊।। অপি চ। নিত্য• নিত্য • ত্রিসন্ধ্যাঞ্চ করিষ্যাসি দিনে ष्टित। बधादङ्ग ठानि नायादङ्ग

প্রাত রেব শুচিঃ সদা।। সন্ধ্যা-হীনো ২শুচি ৰ্নিত্য মনৰ্হঃ সৰ্ব-कर्षाम्। यमञ्चा अकृत्व कर्या ब তস্যক্ষভাগ্তবে ।৷ নোপত্তি-ষ্ঠতি যঃ পূৰ্বাণ নোপাত্তে যম্ভ প-न्तियाः। त नुष्ठवस्थिः कार्याः न-र्दमा विकक्षां ।। यात्रकीत-নপৰ্ব্যন্ত যন্ত্ৰি সন্ত্ৰ্যুণ করোভি চ। স চ সূৰ্য্যমমে৷ বিপ্ৰান্তেজনা তপ-সা সদা।। তৎপাদপদ্ম রজসা সদ্যঃ পৃতা বসুদ্ধরা। জীবমুক্তঃ न जिन्दी नक्ताशृटा हि सा षिजः ॥ তীর্থানি চ পবিত্রাণি তদ্য সম্পর্শমাত্রতঃ। ততঃ পা-পানি ষাভ্যেব বৈনতেযাদিবো-রগাং॥ ন গৃহস্তি সুরা ভেষা॰ পিতরঃ পিশু তর্পণ । স্বেচ্ছ্যা চ দ্বিজাতিশ্চ ত্রিসন্ধ্যরহিতস্য চ ।। विकृषक विशेनण विमन्तात-হিতো দিজঃ। একাদশী বিহী-नक विषशीता यथात्रशः ইভি ব্ৰহ্মবৈৰ্যৰ্ত্ত প্ৰক্লতিখণ্ডে ২১ व्यक्षायः ॥ व्यनाद कोर्या ३१ অধ্যায়ে গারুডে ২১৫। ২২০ অ-शायरवा र्जकेरा ।। 🟶 ॥ जनन সন্ধ্যা॰ পঞ্চ মহাযজ্ঞ নৈত্তিক৽

স্মৃতিকর্ম চ। তন্মধ্যে হাপষে তেষা॰ দশাহান্তে পুনঃ ক্রিযা।। रेि **छिक्किछब्•्॥ 🐠 ॥** नाय• मक्तानित्यथ काला यथा। क-র্মোপদেশিন্যাণ ব্যাসঃ। সং-ক্ৰান্ত্যাণ পৰ্কবোরক্তে ৰাদশ্যাণ প্রান্ধবাসরে। সাৰু সন্ধ্যা । দৰীত ক্ৰতে চ পিতৃহা ভবেৎ॥ रेि विशामिवदः॥ ।। ७५-कात्न गरनानि नित्यद्वा स्था। শ্বপ্ন মধ্যয়ন শ্বান মুৰ্ব্ত ভো-জন•গতিঃ। উভষোঃ সন্ধাষোঃ निंजा॰ मधारङ्ग देवत वर्ष्ट्रस्थ ॥ देखि किट्यं ४६ व्यथायः ॥ मक्ता द्वी नतीविदमयः॥ यूग-मिक्षः। ইভিনেদিনী ॥ চিস্তা॥ मः अवः॥ मीया। मन्नानः॥ अमूयवित्ययः। देखि द्यारखः॥ मक्ता॰नः श्रु॰ यूगमिकः। यथा। চহার্যা হঃ সহসাৰি বর্ষাণান্ত ক্তত যুগ । তস্য তাবচ্ছতী मक्ता मक्ता॰मन्छ उथाविधः ॥ ইওরেষু সসন্ধ্যেষু সসন্ধ্যাণশেষু সহসাৰি শতানি চা৷ ইতি মা-नत्व ३ व्यथायः ॥ ठेषार्वाक् রিতি ৷ চত্বারি বর্ষসহস্যাণি ক্র-

७ मू ११ को ल॰ यशाम्र या विकास ত্যা তাৰদ্বৰ্ষশতানি সন্ধা৷ স্-ন্ধ্যাণশশ্চ ভবতি যুগদ্য পূৰ্ৰা দ্ৰ-ক্ল্যা উত্তরশ্চ সন্ধ্যা শং। তদুক্ত विक्भूतात्। छर अमारेनः म-তৈঃ সন্ধ্যা পূৰাণ ভত্তাভিধীৰতে। मन्त्रा'भक्ष छक्टला यूभमा-নম্ভরো হি বং।। সন্ধ্যা সন্ধ্যা --भरवा ब्रख र्यः कारला भूनिज्ञ भ । यूगाशः म जू विख्वयः क्रज ত্রেতাদি সংজ্ঞকঃ।। বর্ষ সংখ্যা চেय॰ मिवामात्नन তरेमावानख-त्र श्रक्रञ्चार । मिटेवा वर्ष मह-সৈস্ত হত ত্রেতাদি সংজ্ঞিত। চতুৰ্যুগ দাদশভি স্তদিভাগ নি-বোধ মে।। ইতি বিষ্ণুপুরাণবচ-নাচ্চ। ইতরেহিতি অন্যেষু ত্রে-তা দ্বাপর কলিযুগেষু সন্ধ্যা স-স্ধ্যাণ্শ সহিতেষু একহান্যা সহ-সাণি শতানি চ ভবস্তি। তেনে-जिल्लामारा
। बीनि वर्ष महम्। ণি ত্রেভাষ্গণ ভদ্য ত্রীণিবর্ষশতা-नि मन्त्रा मन्त्रा भन्त। এव ए বর্ষসহস্তে ভাপরঃ তদ্য ছে বর্ষ-শতে সন্ধ্যা সন্ধ্যা গ্ৰহ । এব॰ वर्षमह्मु किनः। उत्माकवर्ष-শত॰ সন্ধ্যা সন্ধ্যা॰শশ্চ। ইতি

कब्रुक्छिएः ॥ मञ्जाहनः पू॰ পर्वछितिस्थयः। यथा। आद्रायताशरमाय का-পোভস্য বচঃ স্মরন্। জগ্মুতু দিশিশা কাণ্ডা বত্ত সন্ধ্যাচলঃ क्रिडः ॥ काष्डानाय नमी छव বশিষ্ঠেনাবতারিতা। তস্ম স্তী-त्त यहारेणला त्रिक्षकाषा ना छमा।। मक्षां विशिष्ठेः क्रञ्कान् তত্ত্ৰ যন্মাদ্বিধেঃ সূতঃ। অতঃ সন্ধ্যাচল নাম ভস্য গাম্বস্তি দেবতাঃ।। ইতি কালিকাপুরাen co অধ্যায়ঃ ।। # ।। অপি-**5।** क्लाञ्काथायश्टेममारेन-শান্যা॰ পৰ্বতোত্তমঃ। তুকঃ मन्त्राहला नाम विनर्छ। यव मश्चवान्।। नित्य नीम्ना जूताक-र्सः भाषाष्ट्रकमूजः भूता। व শিষ্ঠো স্থশরীরোভূকজাপাচ্চ-নিমি স্তথা ৷৷ ততো ৰক্ষোপদে-**(**भन निर्कात कामनाशिक । সন্ধ্যাচলে তপস্তেপে তস্য বিষ্ণু রভূতদা।৷ প্রতাক স্তুসা দেব-मा वत्रमानामहामूनिः। अमृ-তান্যবভাধ্যথে সঞ্জ ক্লমা গিরে स्टि।। তত্ৰ সাদ্বা চ পীদা চ भर्तीय थान भृतिक। जन्मान-

मृज म् । जु मना नाम न नी वता ম নিংস্তা তত্ত্ব চাপ্লুত্য চিরাষু-রগদে ভবেৎ। ইতি চ কালি-कानुदार्ग ५३ व्यक्षायः ॥ मबागानाणी भू भिवः। इं भिक-त्रवावनी जिका खरनरयो।। मसाभूगी जी काणी। रेडि রাজনির্ঘণ্টঃ।। यक्षावनः भू ताकमः। ইতি ত্ৰিকাণ্ডলেষঃ।। मक्ताविनः भू॰ निवानयश्चिम्-**ज्काश्रीकिनिर्मि** उर्वः । यथा । स्मिताम्ज्यां एम म क्यादनरमा वृत्राः। ইতি श्राता-वनी ॥ मस्ताजुः क्री मूदर्ग देशदिकः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। मञ्जादाग॰ क्री मिसृदः। ইতি त्राक्रनिर्घकः ॥ সন্ধ্যারামঃ পু॰ একা। ইতি শব্দ-त्रवावनी॥ मनः भू॰ भियानवृकः। ইত্য-यत्रविकाषाः खत्रवः ॥ সন্ধকঃ পু॰ খৰ্বঃ। ইতি সন্ধক জ শব্দটীকাষাণ ভরতঃ।। সন্নকক্রঃ পু॰ পিযালবৃক্ষঃ। ইত্য-भद्रः॥ मह्मकः थर्द्धा फ्रः ऋरक्षा

ংগ্যতি সন্নকক্ত রিতি স্বামী।
সন্নকো ক্রন্ডেতি ছৈ নামনী
ইতি সোমনন্দী। ইতি ভরতঃ।।
সন্নতঃ স্ত্রী প্রণতিঃ।। ধনিঃ।
ইতি মেদিনী।। নমুতা। ধথা
হরিবংশাে ষত্র হীঃ প্রীঃ দ্বিতা
তত্র যত্র প্রীস্তত্র সন্নতিঃ। সন্ন
ভি হী স্তথা শ্রীশ্চ নিত্যুণ ক্রকে
মহাত্মনি।। ইতি তিথ্যাদিভত্ত্বং।।

সন্নদ্ধঃ ' ত্রি বর্ষিতঃ। ক্রতসন্নাহঃ

। ব্যাচঃ। ব্যহবিন্যাসযুক্তঃ।

ইতি মেদিনী ।। আততাষী ।

বধোদ্যতঃ। ইত্যমরটীকাষাণ
রাষমূপ্টঃ।। মন্ত্রাদিসণ্যুতঃ।

ইতি শব্দরত্বাবলী ।।

मन्नशः पुर मम्हः॥ पृष्ठेष्ठाशिः वनः। ইত্যমরমেদিনীকরে ।। দলাহঃ পুর অক্তানং। দাঁজোন যা ইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। বর্ম ২ ককটঃ ৩ জগরঃ ৪ কবচং ৫ দংশঃ ৬ তনুত্রং ৭ মাষী ৮ উরচ্ছদঃ ৯। ইতি হেমচক্রঃ।। দলাহুঃ পুর যুদ্ধযোগ্যসজঃ। যথা। রাজবাহু স্তুপবাহুঃ সন্মাহুঃ সনরোচিতঃ। ইতি হেম-চন্দ্রঃ।। मिकर्यः पूरञी माविधाः। छ८ পर्यायः। পार्यः २ मगीभः ७ সবিধ ৪ সমীপাভ্যাস ৫ সবে-শঃ ৬ অস্তিকঃ ৭ সদেশ ৮ অ-ভ্যাগ্রণ ৯ সনীডণ ১০ সমিধানণ ১১ উপাস্ত ১২ নিকট ১৩ উ-পকণ্ঠ॰ ১৪ महिरुके॰ ৯৫ সম-ৰ্যাদ ১৬ অভ্যৰ্ণ ১৭ আসনঃ ১৮ मनिधिः ১৯। ইতি হেমচন্দ্রঃ ।। न्यायमण्ड वियत्यक्षियमञ्जूकः । সচ জ্ঞানসা কারণ । সতু षिविधः। तोकिकमिक्षक्यः ज-लोकिकमिकर्यका॥ लोकि-ক সন্নিকর্ম শ্চ ষড্বিধঃ। ইঞ্জিय-मः रयागः > इिल्यमः युक्तमयः বাষঃ ২ ইন্দ্রিষসংযুক্তসমবেত-সমবাষঃ ৩ শ্রোত্রাদিসমবাষঃ 8 **८** वांबानिममंदर्जमयारः ८ **जमामिविद्यायण्या ७। जाली**-কিকসন্নিকর্যস্ত ত্রিবিধঃ। সামা-नालक्षा ३ छ्वानलक्षा २ (या-शकः ७। यथा। महत्रः यफ्-বিধে হেতু রিন্দ্রিষণ করণ মতণ । विषयिष्यमगरका व्याभातः मानि वर्जविधः ॥ जवाश्रह्य সংযোগাৎ সংযুক্তসমবাযতঃ । जरवायू मगरवणानाः उथा ७९-

সমবাষতঃ ৷৷ তত্ত্ৰাপি সমবে-তানা॰, শব্দস্য সমবাষতঃ । **७ इंडोना॰** সম্বেভসম্বাম্নেন **जलाइः ॥** विटमयग्ज्या ज्वन-ভাবানা গ্ৰহো ভবেং ৷ যদি স্যাদুপলভ্যেতেতাব ফত্র প্র সজ্যতে।। প্রত্যক্ষণ সমবাষস্য विरमयग्ठमा ভবে । जानी किकः मन्निकर्य जितिभः भित-कीर्विजः॥ मामानानकना छा-নলক্ষণা যোগজ স্তথা। আস-ত্তি রাশ্রযাণায় সামান্যজ্ঞান মিষ্যতে।। তদিব্রিষজ তদ্ধর্ম-েবোধসামগ্র্যপেক্ষ্যতে। বিষয়ী . ষস্য তলৈয়ৰ ব্যাপারো জ্ঞান-লক্ষণঃ ৷৷ যোগজো দ্বিবিধঃ প্রোক্তো যুক্ত যুঞ্জান ভেদতঃ। যুক্তদ্য দৰ্বদা ভান চিস্তাদ হ-ক্রতো হপরঃ ॥ ইতি ভাষাপ-तिरष्ड्मः ॥

সমিকর্ষণ ক্রী সমিধানণ তৎ পর্য্যায়ঃ। সমিধিং ২। ইতি স-কীর্ণবর্গে অমরঃ।। সমিধণ ৩। ইতি ভরতঃ।।

সন্ধিক্ষণী ত্রি সন্ধিকর্যবিশিষ্টা। নিকটা। ইতি বিশিষ্যনিম্বর্তের্গ অমরং॥ অস্যপর্যাষ্ণ সমীপ

भरक जरुवाः ॥ मिश्र की मिश्रान । ইতি ভরতধৃতবোপালিতঃ।। निक्षां की निक्षे । इंडि (इम्हिक्सः॥ आधारः। यथा। আরম্ভঃ সংশ্যানা মবিন্য ভব-ন পত্তন সাহসানা দোষাণা সন্নিধান কপট শতন্য ক্ষেত্ৰ মপ্রত্যধানা । দুস্ত্যাজ্য যম-इिंड मूत नत वृष्टिङ मर्बमाया-করণ্ড॰ স্ত্রীৰূপণ কেন লোকে বিষ মমৃতময় ধর্মনাশায় সৃষ্ট ॥ ইভি শান্তিশতক॰॥ निविधः खी निवर्यः। ইত্য-यतः ॥ ইন্দিযগোচतः। ইতি व्यक्तिनी ॥ সমিপতিতঃ ত্রি একত্রীক্ততঃ।

সামসাগতঃ ত্রি একত্রাহ্নতঃ।
বিশ্রিতঃ। সংনি পূর্বক পতধাতোঃ ক্ত প্রত্যাবেন নিম্পন্নঃ।।
নির্মিতঃ পুণ তালভেদঃ। যথা
। এক এব শুরু র্যত্র সন্নিপাতঃ স
উচ্যতে। ইতি সঙ্গীতদামোদরঃ
।। বিকারোৎপাদক মিলিতদোযত্রয়ণ। অস্য ত্রযোদশ নাম
লক্ষণানি যথা। শীষ্ণ স্তাম্ত্রিক দৈচব মসাধ্য শিতত্তবিভূমঃ।
কন্টসাধ্যঃ কণ্ঠসক্তঃ কর্ণিকো

জিম্বগ স্তথা।। কফাৎ কফ তমো **ट्या क्रिकाट्या इस्टि गानवः ।** অন্তকো ভগ্ননেত্রশ্চ রক্তমিবী নিপাতকঃ ॥ শীতাঙ্গণ্ড প্রলা-পশ্চ অভিন্যাসো ২তিমারকঃ। क्छाठवाः भर्तमा देवदेनाः भन्न-शां**ा खर्याम्य ॥ #॥ याख्वी** যে। শীঘুগ স্তান্ত্ৰিক শ্চিত্তবিভূমঃ क्षेत्रक्षकः। कर्निका जिस्रा-ৈচব কগ্ৰাছ শ্চান্তক স্তথা।। ভূ-গ্রনেত্রো বিলাপশ্চ প্রলাপঃ শী-তলাঙ্গকঃ। অভিন্যাস শ্চেতি বি-দ্যাৎ সন্নিপাতা স্রযোদশ !! # !! ममामाः स्नियाना भूनं मृतः का-সোহতিবেদনা। শোথশ্চ লক্ষ-ণান্যেব॰ শীঘুগে সান্নিপাতিকে ॥১॥ অভিতন্ত্রা স্বরঃ শ্বাসঃ কাস স্তাপোতিসারকঃ। স্থলকণ্ঠঃ সি-তা শ্যামা জিহ্বা কণ্ঠে চ কৃজতি ।। শ্রুতি রক্সা চেতি বিদ্যাৎ তা-ন্ত্ৰিকে সান্ধিপাতিকে। ২। মদো মোহো ভূম স্তাপো হাস্য শীত প্রলাপন ।। নিত্য বৈকল্পিত। পীড়া বিকটাক্ষ নিরীক্ষণ । লক্ষ-নৈঃ সন্নিপাতোষ জ্ঞাতব্য শ্চিত্ত विज्ञा ॥ ७॥ क्रेश्रा ब्रा মূর্চ্ছা দাহঃ কম্প বিলাপন । ॥

ৰোহ স্তাপঃ শিরোর্ত্তিশ্চ বাতা-र्जः প্रनयः गठः॥ क्रेष्ट्रकः म-ब्रिशाक कर्के शांश विनिर्मित्न ६ । ৪। জ্বঃ কর্ণান্ত শোপশ্চ শ্বাসঃ कः अनाभनः॥ (समः कर्छ-গ্ৰহ স্তাপ স্তুণ্মোহো ভষ মেব চ । কর্ণিকে সন্মিপাতে চ লক্ষণানি **ख्रव खिहि ॥ ७॥ मह**ो कठिन। জিহ্বা কাসঃ শ্বাসোতিবিহ্বলঃ ৷ মূকো বধিরতা তাপো বলহানি-শ্চ লক্ষণ ।। জিস্তুগঃ সন্নিপাতো **২ম॰ কফাৎ কফতরঃ পরঃ। ৬।** মোহ স্তাপঃ প্রলাপশ্চ ব্যথা ক-ঠে ভূমঃ শ্রমঃ।। বেদনা চ তৃষা জাডা॰ খাসশ্চ লক্ষণৈ রিমেঃ। কফাৎ কন্টতরো জেবঃ কগ্রা-रः नामिनाछिकः॥ १॥ मारश यारः नितःकल्ला रिका यामा-ঙ্গমৰ্দ্দন । সন্তাপশ্চান্তকো জ্ঞে-যঃ সন্ধিপাতো ২তিমারকঃ ॥৮॥ শ্বসন লোচনে ভুগে স্মৃতি স্থূলা স্বরো হধিকঃ। মোহঃ প্রলাপন॰ কম্পো ভূষো নিদ্রা চ লক্ষণৈঃ।। জ্ঞাতব্যো ভুগনেক্রো ২য়ণ সন্ধি-পাতঃ ক্ষাকরঃ। মা রক্ত নি-ष्ठीवन॰ মূর্ক্। স্বরো মোহ স্তৃষা जुमः ॥ वास्ति रिकािजनात्र क

मण्डानात्मा समि वाथा। मखन॰ भागित ब्रक्क एन एक वृ लक्ति वि-বৈঃ।। জ্ঞাতব্যস্পন্নিপাতোষ• রক্তগ্রীবী নিপাতকঃ । ১-। প্র-লাপ তাপ কর্ণার্ভিঃ প্রজ্ঞানাশো **২ভিতাপবান্।। জ্ঞেষঃ প্রলাপক** শ্চিটেছঃ সন্মিপাভোতিমারকঃ। ১১। শরীর হিষবৎ শীত মতি-मात्रक कम्भनः।। कर्ननारमा इ-স্ততাপো হিক্কা শ্বাসঃ ক্রমোত্তরণ । সর্বাঙ্গশীতলো হস্তি শীতাঙ্গঃ সমিপাতকঃ ॥ ১২ ॥ ত্রিদোষঞ্চ বাক্। নিশ্চেতন মতিশ্বাসোম-ন্দাগ্নি বলহীনতা।। মৃত্যুত্ল্য মভিন্যাস॰ সন্নিপাতঞ্চ লক্ষধেৎ । ১৩। ইতি চক্তুপ । निमखः ॥ 🛊 ॥ ब॰ मृक्षे यमा मखदः म छमा म-দ্মিপাতঃ। সন্মিপাত বিধি রনি-মিক্ত তিৰিখাতায়। ইতি কলা-পৰ্যাকরণে ৪ বৃত্তৌ ২ প্রকরণণ।। সমূহঃ। যথা। ধূমজ্যোতিঃ স-লিল মরুতাণ সন্মিপাতঃ ক্র মেঘঃ मत्मार्थाः क शहू कत्रदेशः आ-ৰিভিঃ প্ৰাপৰীযাঃ। ইত্যোৎসু-क्रामि प्रतिभागम् अञ्चक छ॰ यं या-क्र कामार्खा हि श्रक्ति क्रभग

(इंडि त्ययः । इंडि त्ययः पूजः ।। मगुक्थकाद्वर्गं भडनः ।। मगुक्थकाद्वर्गं भडनः

সন্ধিপাতজ্বরঃ পু্ ত্রিদোষজজ্বরঃ । স তু অউপ্রকারন্বরান্তর্গতন্ত্ব-রবিশেষঃ। অফত্ব বিবৃণোতি। ৰাতিকঃ পৈত্তিকঃ লৈমিক শ্চে-ভিত্ৰখঃ। দ্বন্দুজাশ্চ ত্ৰযঃ। বা-তগৈত্তিকঃ বাতল্পৈত্মিকঃ গিত্ত-লৈষিকশ্চেতি।। সংঘাতনঃ স-ন্নিপাতিক একঃ। দ্বাল্বলৈকো-बरेनः यहे मा शीन मधानिरेक क ष्ট्। मदेग देश्वरका विकाता एउ সন্নিপাতা স্ত্রযোদশ।। ইতি চর-কেণ ত্রযোদশ সমিপাতা উক্তাঃ । তে যথা। বাতোল্বণঃ ১ পিত্তো-चनः २ करकाचनः ७। वाड পিতোৰণঃ ৪ বাতমোৰাৰণঃ ৫ পিত্তশ্লেষোজনঃ ৬ এবং ষট্। অধিকবাতে। মধ্যপিতে। হীন-কফঃ ১ অধিকবাতো মধ্যক-ফো হীনপিত্তঃ ২ অধিকপিত্তো মধ্যবাতো হীনকফঃ ৩ অধিক-পিত্তো মধ্যমকফো হীনবাতঃ ৪ অধিকককো মধ্যবাতো হীনপি-ত্তঃ ৫ অধিককফো মধ্যপিত্তো • হীনবাতশ্চেতি ৬ ষট্। ত্ৰ্যন্ত্ৰণ

अकः ३१ अव॰ जरगाममा। च्या তু ত্রিদোষজম্বেন সাম্যাৎ সামি-পাতিক এক এব গণিতঃ ৷৷ আগ-ম্বজোপি এক এব। অত্র আগন্তু-জশব্দেন অভিঘাতাদযো হেত-व् উচ্যত্তে। अबिहिष्याश्यः का-र्याकात्रवरया त्रद्धां प्राप्ता वा ইতি ত্বরাধিকারে ভাবপ্রকাশঃ ॥ 🛊 ॥ ज्य मिनाज्बताधिकात মাহ। তত্র সন্মিপাত ব্রস্য বিপ্র-ক্ষুষ্ট সন্ধিক্ষ কারণ কথন পূর্বি-का॰ मल्पुालि गार्। जिल्हा यज-নকৈ ৰ্বাভ পিত্ত লেক্সামগেহগাঃ৷ বহি নির্দ্য কোষ্ঠাগি রদগা জু-त्रकातिनः ॥ 🗱 ॥ शृह्यक्त भाइ । প্রাগুপাণি ত্রিদোষাণা স্যু স্ত্রি-मियञ्चत नृगा॰। •। সिश्राज खुत्रमा मायानग्रानि लक्क्वानग्रह । ক্ষণে দাহঃ ক্ষণে শীত মস্থি সন্ধি **मि**रताङ्गजा। माम्रारव कल्रव রক্তে নিজুমে চাপি লোচনে।। मयतो मुझरको करने कर्छः मृरेक রিবাৰুতঃ। তন্দ্রা মোহঃ প্রলা-পশ্চ কাস শ্বাসো হরুচি ভূ মঃ।। পরিদগ্ধ। খরস্পর্শা জিহ্বা সুস্তা-কভা পরা। ষ্ঠীবন রক্তপিত্তস্য কফেনোম্মিঞ্জিতস্য চ ৷৷ শির

त्मा लाठम॰ ज्या निर्धानात्मा शिव राथा। स्वतं मूळ भूतीयांगा॰ वित्रामर्भन यम्भः।। ऋगषः नाजि গাত্রাণা॰ প্রতিত কণ্ঠকুজন । কোঠানা শ্যাব ব্লক্তানা বঙ্গ नामाक मर्भमः॥ यूकदः (मुण्ड-সা'পাকো গুরুত্ব মুদরস্য চ। চিরাৎ পাকশ্চ দোযাণা সমি-পাত্রবাক্তিঃ।। লোচনে সা-मादि माञ्चेशी। कल्ट्य १ संटब्हा নিভূমে নিগতে সটিলে চ। কণ্ঠঃ **गृ**देक दिव धानगादेखे दिवावृज्य । जिन्दी शतिमक्षा शतिमक्षित छ।-যতে। অথ বা পরিদক্ষেব রুক। मृगाटा। मुखाक्रा निथिनगा-ত্রতা। পরা অতিশ্বিতা। ষ্ঠীবন भिजामि कंकन गुक्रमा तक्रमा পিত্তস্য চ ষ্ঠীবনশী শিরসো লো-ঠন মিত স্ততঃ শিরশ্চালন । রু-শত্ব নাতিগাত্রাণা গাত্রাণা ম-তিশ্যিত কার্শ্যণ ন ব্যাধিপ্রভ-বাৎ। প্রতত নিরম্ভর । কোঠঃ ৰরটীদফ্ট সংস্থানঃ কোঠ ইত্যক্তি-**भीगंटक।** मागिः क्लिमा वर्षः । मृक्ष भवेठनेष मह्मेवठनष् व।। **मु**ां छना॰ कर्ननानानीना॰ ॥ ಈ॥ ননু বাতাদযঃ পরস্পর বিরুজ গু

ण उर्चा॰ मञ्रिककार्यात्रस्क-ত্ব॰ নোপপদ্যতে পরস্পরোপষা-তा ९ मह्न मिन्नद्या दिव। ७९ কৃথ বাত পিত্ৰ কফা মিলিছা বিকারোৎপাদকাঃ। অত্র সমা-शान गूक मृज्यलन।। विकरिक রপি ন ছেতে গুণৈ ছস্তি পরস্প-রে । দোষাঃ সহজ সাত্ম্যত্বাদিষ যোর মহীনিব।। গদাধরস্ত হেছ-স্তর মুক্তবান্। দৈবাদ্দোষ স্বভা-বাদা দোষাণা সান্নিপাতিকে ৷ বিরুদ্ধেশ্চ শুণেঃ কশ্চিমোপষা-তঃ পরস্পর মিতি।।#।। ননু ভিন্ন-চয় প্রকোপ কালানা বাত পি-ত্ত কফানা॰ যুগপদুখানাভাবাৎ কথ সভূষ সন্মিপাতত্বরারস্তকত্ব মুপপদ্যতে। উচ্যতে। ত্রিদে। য-জনক নিদান ৰলেন যুগপদেষাণ প্রকোপাদিতি সিদ্ধান্তঃ ॥ 🕸 ॥ অথ সামান্যসন্মিপাতজ্বস্য ত্র-र्याम्भ विरम्यानात्र। এरकाच्य ব্ৰেষ স্তে স্যু দ্ব্য স্থাৰিণ চ তথেতি ষট্। ত্রাহ্মণশ্চ ভবেদেকে। বি-জ্ঞেষঃ স তু সপ্তমঃ।। প্রবৃদ্ধ ম-ধাহীনৈস্ত বাত পিত্ত ককৈশ্চ यहै। मिष्णिण्यतिमादः मूर्गि শেষা প্রযোদশ ॥ তত্র প্রবৃদ্ধ-

বাতো মধ্যপিত্তো হীনকফঃ ১ गंधावाजः अवृक्षिणित्वा शैनक-ফঃ ২ হীনবাতঃ প্রবৃদ্ধপিত্তো মধ্যককঃ ও প্রবৃদ্ধবাতো হীন-পিত্তে৷ মধ্যকফঃ ৪ মধ্যবাতো হীনপিত্তঃ প্রবৃদ্ধকফঃ ৫ হীন-বাতো মধ্যপিত্তঃ প্রবৃদ্ধকফশ্চে-তি ষট্ ৬। তেষা॰ নামানি ক্রমা-**मार् । विकातकः काञ्चकाती** কম্পনো ব**জ্ঞ স**ণ্ড্রকঃ। শীয়ুকা-রী তথা ভল্লঃ সপ্তনঃ ,কূটপাক-লঃ৷৷ সম্মোহকঃ পাকলশ্চ যাম্যঃ ক্ৰকচ ইত্যপি। তদ্বৎ কৰ্ম টকঃ প্রোক্ত স্ততো বৈদারিকাভিধঃ १। তন্ত্রান্তরে বিস্ফারক ইত্যত্র বি-ষ্দুরক ইতি পাঠঃ। বব্দস্থানে বিভু রিতি পাঠঃ। স্বত্রাপি বিদ্ধ ইত্যপি পাঠঃ। ভল্লু রিত্যত্র ফল্প রিতি পাঠঃ। যামা ইতাত্র সণ-গ্ৰাম ইতি পাঠঃ। কৰ্ক্ টক ইত্যত্ৰ কর্ক্বোটক ইভি পাঠঃ॥ 🟶॥ ভত্র বাতোল্বণস্য লক্ষণ মাছ্৷ স্বাসঃ কাদো ভুমো মূচ্ছা প্রকাপো মোহ বেপণুঃ। পার্শ্বস্য বেদনা জৃম্ভা ক্ষাযত্ব॰ মুখস্য চ ।। বা-তোল্বণদ্য লিঙ্গানি সন্নিপাত্স্য লক্ষ্যেৎ। এষ বিষ্ফারকো নামা

मिष्रीणः मूनाक्रमः ॥ ३॥ ।।। वर्थ शिर्द्धाद्यनमा वक्न भार । অতীসারো ভূমো মূর্জা মুখপাক স্তুথৈব চ। গাত্রে চ বিন্দবো রক্তা দাহোভীব প্রজাষতে।। পিত্তো-অ্ণস্য লিঙ্গানি সমিপাতস্য ল-ক্ষযেৎ। ভিষগ্ডিঃ সন্নিপাতো ২ব মাশুকারী প্রকীর্ত্তিভঃ ॥ २ ॥ 🐠 वाथ करका बनमा सक्त मार । জডতা গদাদাবাণী ব্লাত্রো নিজা ভবত্যপি। প্রস্তব্যে নযনে চৈব मूथ माधुर्या (भव छ॥ कटकाखन-স্য লিঙ্গানি সন্নিপাতস্য **লক্ষ**যেৎ । মুনিভিঃ সন্মিপাড়ে। ২ম মুক্তঃ কম্পন সংজ্ঞকঃ ৷৷ ৩ ৷৷ 🟶 ৷৷ অথ বাত গিভোত্মণস্য লক্ষণ মাহ ৷ বান্ত পিত্তাধিকো ষস্য সন্নিপা-তঃ প্রজ্পাতি। তস্য স্বরো মদ স্তৃক্তা মুখশোষ প্রমীলকাঃ।। আগ্নানারুচি ভক্রাশ্চ কাস শ্বাস ভূম শ্ৰমাঃ। মুনিভি বক্ত নামায়ণ সন্মিপাত উদাহতঃ ॥ ৪॥ 🛊 ॥ অথ বাতলেখোল্বণ্স্য লক্ষণ মা-হ। বাতশ্লেমাখিকো যস্য সন্ধি-পাতঃ প্রঙ্গপাতি। তস্য শীতত্ব-রো মুর্চ্ছা ক্ষুত্রকা পার্শ্বনিগ্রহঃ।। শूल मिलामानमा हिका श्वाम-

শ্চ জাৰতে। অসাধ্যঃ সমিপা-তো ২ব॰ শীৰুকারীতি কথ্যতে।। ন হি জীবভাহোরাত্র মনেনা-विकेबिश्रहः। 🕻 । 🗰 । ज्यर्थ পিত্ত শ্লেখোল্বণস্য লক্ষণ মাছ ৷ পিত্ত লেখাধিকো যস্য সন্মিপা-তঃ প্রত্নপ্যতি। অন্তর্দ্ধাহো বহিঃ শীত তদ্য তৃকা প্রবন্ধতে ॥ जुमारक मिकन भार्श्व मूद्रः भीर्ष গলগ্ৰহাঃ। স্ঠীবতি শ্লেম পিত্তঞ্চ क्रक्षा कर्भ में मृयक ॥ विष्ख-দঃ শ্বাস হিক্কাশ্চ বৰ্দ্ধন্তে সপ্ৰ-गीलकाः। अविञ्जि ज्लूनागायः সন্মিপাত উদাহ্বতঃ ॥ ७॥ 🛊 ॥ অথ বাত পিত্ত শ্লেখোৰণস্য ল क्रन बाह्। मर्दरहारवाद्यरन यमा সন্মিপাতঃ প্রস্প্যতি। ত্রষাণা স্ব-পি দোষাণা ভদ্ম ৰূপাণি লক্ষ-रय ।। व्याधिरञ्जा माक्रन देन्हव বজু শস্ত্রাগ্নি সন্নিভঃ। কেবলো-চ্ছাস পরম স্তকাঙ্গ স্তকলোচনঃ ৷ ত্রিরাত্রোপরমে ভস্য জস্তো-র্হরতি জীবিতং। তদবস্থ ড॰ मृख्ने मृत्वा वता इत्र कनः ॥ ४-र्षिटा ताकरेंग न्यं न यदनायाः চরস্ভি যে। অম্বধা ক্রবতে কেচিৎ विकिना विकासकितः॥ शिला-

टेठ र्श्वहरू देन्हर उथारैना र्वख-क इंछ॰। क्वाप्तवार्कनाहीन॰ धर्षिण क्वारिनरिष्ठः ॥ नक्क শীড়া মপরে গরকর্মেন্ডি চাপরে । সন্নিপাত মিম॰ প্রাহ ভিষজঃ कृतेशाकनः ॥ १॥ ॥ ।। वर थः বৃদ্ধ মধ্যহীন বাতাদি জনিত স भिगाउ इतांगा लक्षानाह । প্ৰবৃদ্ধ মধ্যহীনৈস্ত বাত পিত ক হৈশ্চ যঃ। তেন রোগা ভঞ্জবো-का यथारमाय वलाव्यवाः ॥ वा লাপাৰাস সম্মোহ কম্প মৃচ্ছা-রভি ভূমাঃ। একপকাভিয়াভক মোহকো নামা সন্নিপাতঃ সুদা-ৰূণঃ। ব্যোগা স্বএবোক্তা উক্তা এব তে রোগাঃ ব্যখা বেপথু নি-खामान विकेषान्य। वाञ्जाः। দাহ ভূকোকতা স্বেদাদযঃ পিত্ত-काः। शोत्रवात्रियादका-मिका मुध्यात्मकामयः कक्काः। ভত্তাপি প্ৰলাপাদৰঃ পকাষাতা-🐨 वित्नवाह्यविष्ट ॥ 🛊 ॥ नन् वाजः अवृक्तः मन् बतः कतियाजि পিত্তৰ মধ্য সম মিতি বাবৎ তৎ क्ष॰ चत्र॰ क्रियाछि। वक चाइ **৷ বাত্তব স্তশ্মলা দোবা নাশ্যস্ত্য**-

नमा खन्। भनाः मूथाव विरक्ष-या बनारवाभन्नवाय एन ॥ उ চ্যতে। অৱ পিত্ত মধ্য মপি অ-প্ৰকৃত নেৰ ৰভো ২প্ৰকৃতযো वीं कायरना बरमक्या मधाः তেন বধ্য সধ্যঙ্গপিত মিতার্থঃ ।। का। नन् क्यः कीनः म कथः শ্বর করিব্যক্তি হীনশক্তিকদাৎ । উচাতে। দোষাঃ কীণা অপি वाशीन् अवस्थाव। यठ वाह। वाङ कंटबंब्रटारुखः यमवाक्षः বিস'জ্ঞতা। গিভক্ষেমা বহ্লি মৰা প্ৰভাক্ষয় ৷৷ শিখিলাঃ नक्षरमा यूक्ट्रा दोका मार्ट् ককক্ষ ইভি। ইত্যাশক। সিদ্ধা-ন্ত শ্চাপরত্রাপি। ৮। 🛊 ॥ মধ্য প্রবৃদ্ধ হীনৈস্ত বাত পিত্ত কফৈ-শ্চ ষঃ। তেন রোগা স্তএবোজা वर्षातम्बना अयाः ॥ त्यार् धः लाभ यूक्टीः मूर्ग र्यमाञ्जरः भि-রোগ্রহঃ। কাসঃ শ্বাসো ভূষ खिला मः ब्हानारमा हिम श्रहः ॥ ধেভ্যো রক্ত বিস্কৃতি তন্ত্রা मा । उनात्वा । उनार्शात्व वित्नवाः मूर् मृज् द्वांक् जिवा-নরা**ৎ।া ভিষয়িঃ সন্মি**গাভোষ• क्षिण्ड नाक्नाण्यिः। जा 🐠।

शैन अद्भुक्त गरेशास्त्र वाक शिख कटेक मह यः। एवन রোগ। ख-এবোক্তা वर्शामियका अवाः ॥ शनमः नम्दा हामा मुक्ट क्षी-হান্ত ফুপ্ফুসাঃ। পচ্যক্তে ২তার্থ मृक्षाधः शृष्य त्नानिक निर्गमः ॥ শীৰ্ণস্তশ্চ মৃত্যুক্ত তক্ৰাপ্যেত-দিশেষতঃ। ভিষপ্তিঃ সমিপাতে। ২য় বাম্যনামা প্রকীর্তিভঃ ॥ 30 II # II व्यथ क्षेत्र क्षतां व वश-পিত্ত হীনকফস্য সন্মিপাতস্য ল-कन गार। अवृक्ष मधा शैरिनञ्ज বাত পিত্ত ককৈশ্চ যঃ। তেন ह्यांगा खब्दांख्न यथात्नायत-ला अयाः ॥ अलाशायाम मः त्या-হ কম্প মুৰ্চ্ছ। রতি ভুমাঃ। ম-ন্যান্তন্তেন মৃত্যুশ্চ তত্রাপ্যেত-দিশেষতঃ ৷৷ উক্তঃ ক্রকচনামা ২য়ং সন্নিপাতো ভিষশ্বরৈঃ । ১১ । 🟶 । मशाशीन अवृदेश उपाछ পিত্ত ককৈশ্চ ষঃ। তেন য়োগা खरेथरवाका यथारमायवना अ ষাঃ।। অন্তর্জাহে। বিশেষো ২ত্র ন চ বক্তুণ স শক্যতে। রক্ত মা-नक्रक्तित्व नकार् मूथम् धनः ।। यद्भनाकिष्ठः क्षात्रा इत ষান প্রসিচ্যতে। ইষুণেবাহত॰

পাৰ্শ্বণ তুদ্যতে খন্যতে হৃদি ॥ প্ৰমীলক শ্বাস হিক্কা বৰ্দ্ধন্তে তু षिन° प्रिन°। जिल्ला पक्षा अत-न्माना गलः मृदेक त्रिवाव्छः॥ বিদর্গণ নাভিজানাতি কুজেচা-পি কপোতবং। অতীবল্লৈম্বণা পূৰ্ণঃ শুষ্কৰক্ষ্যেষ্ঠ তালুকঃ॥ তন্দ্ৰা নিজাতিযোগার্ত্তো হতবাণি হত-দ্যুতিং। ন চাতিলভতে গ্লানিং বিপরীতানি চেচ্ছতি॥ আযম্যতে চ ৰহুশো রক্ত॰ গ্রীবভি চাল্পশঃ। এষ কর্ম্ন টকো নামা সমিপাতঃ সু-लाइनः ॥ >२॥ क्षा शिन यथा श्र-কৃদ্ধৈস্ত বাত পিত্ত কফৈশ্চ যঃ। তেন রোগা স্তএবোক্তা যথাদো-यवना अयाः ॥ अञ्चर भूनर कृषी-তোদো মধ্যোদাহোরুজা ভূমঃ। ভূশ ক্লমঃ শিরো বব্দু মন্যা হৃদয वागुकः।। अभीनकः श्वाम शिक्का কাস জাড্য বিসংজ্ঞতাঃ। প্রথ-মোৎপন্ন মেতম্ভ সাধ্যন্তি কলা-চন ৷৷ এতস্মিন্ সন্নিবৃত্তে তু কর্ণ-মূলে স্দারুণা। পিডকা জাযতে क्रां अवा क्राक्ष्णं कीवि ॥ म বৈদারিক সংজ্ঞে। ২য়ণ সন্মিপাতঃ সুদারূণঃ। ত্রিরাত্তোপরমে ভস্য वार्थ को यशकन्नन ।। ३०॥ 🛊 ॥

অথ তন্ত্ৰাস্তৱে। বাতোত্বণাদীনা সন্মিপাতস্বরবিশেষাণাণ ত্রষোদ गाना॰ भीछात्रामीन ब्रायामग न्याख्यानि लक्ष्णाख्यानि छार् ৷ শীতাঙ্গ স্ত্রিমলোন্ডব স্বরগণে ভন্দ্রী প্রলাপী ততো রক্ত তাচ তত্ত্ৰ গণিতঃ সমুগ্ননেত্ৰ স্তথা ৷সাভিন্যাসক জিহ্বকশ্চ কথিতঃ প্রাক্সন্ধিগোথাস্তকো রুগ্দাইঃ मरहिखिविज्य देश की वर्ग कर्छ-এহো।। তন্দ্রী তন্দ্রিকঃ। প্রলাগী প্রদাপকঃ। রক্তন্তীব্যিতা রক্তন্তী-বী। সমুগনেত্রো ভুগনেত্রঃ। অ-ভিন্যাসকঃ অভিন্যাসঃ ৷ কর্ণ क्छे अरही कर्ग अहः कर्ग कः। क-र्श्वाहः क्षेत्रसकः॥ सः॥ व्यथ তেষাণ প্রত্যেকণ লক্ষণানি। হিম শিশির শরীরঃ সন্মিপাতজ্বরী যঃ শ্বসন কসন হিক্কা মোহ কম্প धनारैनः । ক্লম বহুকফভান্ত-র্দাছ বম্যঙ্গপীডা স্বরবিক্কতিভি-রার্ভঃ শীতগাত্র: म উক্তঃ॥ ১॥ তন্ত্ৰাতীৰ তত ভূষাতিসরণ শ্বা-সোধিকং কাসরুক্ সম্ভপ্তাতি তনু গলৈ শ্বযথুনা সাদ্ধঞ্চ কণ্ডুঃ क्यः। সুশ্যামা রসনা क्रमः व्यवगर्या श्रामाक मार् ख्या यख

ন্যাৎ স ছি ভক্তিকে৷ নিগদিভো मार्चित्यात्था चुत्रः ॥२॥ यज ष्ट्रत विधिन्दाग निठास्ताम काटल अनांश रहनाः महरमाथि-ভাত্য কম্প ব্যথা পতন দাহ विमण्डाकाः मूर बाह्य अनाभक ইতি প্ৰথিতঃ পৃথিব্যা ।। ৩।। निश्रीता ऋधितमा तक ममृग॰ क्रकः छत्नो मखनः त्नोहिकाः न-যনে ভূষা ৰুচি বনি শ্বানাতিসা-রভুষাঃ। আন্তানক বিদণ্ডভত। চ তপন হিক্কাঙ্গপীড। ভূশ রক্ত-ষ্ঠীবিনি সন্নিপাত জনিতে লিঙ্গণ স্বরে জাযতে।। ৪।। ভূশ নযন রক্ততা খসন কাস তন্ত্রা ভূমাঃ अना भग प्रमुख विवश्नि त्या-श खथा। ज्यान निथिन माय-জে ভবতি বত্র লিঙ্গণ স্বরে পুরা-তন চিকিৎসকৈঃ স ইহ ভুগনে-ত্রো মতঃ।। ৫।। দোষা স্তীত্রতরা ভবন্তি বুলিনঃ সর্বেপি ষত্র জুরে মোহোজীব বিচেইতা বিকলতা শ্বালো ভূশ মুক্তা। দাহ শ্চি-क्षन बाननक प्रश्ता गटका वलमा ব্দমঃ সোভিন্যাস ইতি প্রকী-র্ত্তিত ইহ প্রাজ্তৈ ভিষ্ণিঃ পুরা ॥ ७॥ बिमायकनिए च्रांत

ভবতি যত্ৰ জিহ্বা ভূশ বৃতা ক ঠিনকণ্টকৈ স্থাদনু স্কৃতা স্ঢতা । শ্রুতিক্ষতি বলক্তী শ্বসন কাস সম্ভপ্তয়ং পুরাতন ভিষ্ণারা স্ত भिर् जिस्कः हक्ट्ड ॥१॥ वा-থাতিশ্যিতা ভৰেচ্ছৰপু সংৰুতা সন্ধিষু প্ৰভূত কফতা মুখে বিগ-তনিজভা কাসকক্। সমস্ত মিভি কীৰ্ত্তিত ভবতি লম্ব ষত্ৰ স্বরে विद्यायक्रिक्ट वृदेशः म हि नि शबादक मिक्तिगः ॥ ৮॥ यश्विन् नक्ष (मन्त्रि मकरेन र्कारेय রুদীতে স্বরে ২জসুণু মূদ্ধবিধূন-नः मकमनः महाश्रेशीषाधिका। হিকা শ্বাস সদাহ মোহসহিতা দেহেভিসম্ভপ্ততা বৈকল্যঞ্চ বৃথা-বচাণস মুনিজিঃ সঙ্গীৰ্ত্তিতঃ সো खकः ॥ २॥ मारहा १ शिरका छ বতি যত্ৰ ভূষা চ তীবা শ্বাস প্ৰ লাপ বিরুচি ভূম মোহ গীডাঃ। यना। रन्वाथन कर्शका अमा-শ্চ ৰুগদাহদণজ্ঞ উদিত স্ত্রিভবো ৰুরো ২ৰণ।। ১০।। গাষ্তি নৃত্য-তি হসতি প্রলপতি বিক্বত নিরী-करा भूरक्र। मार वाथा जया র্জো দোষত্রয চিত্তবিভূমো স্বর-वान् ॥ ५५ ॥ निः त्नव त्नाव ज-

निष्ठ खत्रत्भरक्या मार कर्न-मूल विषय श्वर्थ राश ह। कर्छ-গ্ৰহো বৃধিরতা শ্বসন প্রলাপ প্র-বেদ মোহ দহনানি চ কৰ্ণকা-था ॥ ३२ ॥ कर्छः भृक भ्राव-क़क्रवनिश्वामः धनारमा २क्र-চি দাঁহো দেহ ৰুজা ভৃষাপি চ **र**न्खसः निर्तार्षि स्था। या-হো বেপথুনা সহেতি সকল लिकः जिरमायद्यदत एक मा<u>र</u> স হি কণ্ঠঙ্গক্ত উদিতঃ প্রাক্তৈ न्हिकि भावूरेशः ॥ ३० ॥ 🛊 ॥ সন্ধিগ স্তেষু সাধাঃ স্যাত্তন্ত্রিক শ্চিত্তবিভূমঃ। কর্ণকো জিহ্বকঃ কণ্ঠসক্তঃ পঞ্চাপি কন্টকাঃ॥ রু- त्राहः खु जिक्टक म भाषा एक प् ভাষিতঃ। রক্তষ্ঠাবী ভুগ্ননেত্রঃ শীতগাত্রঃ প্রলাপকঃ ৷৷ অভি-ন্যাসো ২ স্তক শৈচতে ষডসাধ্যাঃ প্ৰকীৰ্ত্তিতাঃ। 🛊। অথ তন্ত্ৰান্ত-রে। বাতোত্ত্বণাদীনা সন্ধিপা-তত্ত্বরবিশেষাণা ত্রষোদশানাণ अञ्जीभाकामीनि ब्रायामम नामा-खतानि नक्षनाखतानि চार । अ-ম্ভীপাকঃ প্রোণুনাবঃ প্রলাপী श्डमार्श मखनार्छ। २ उकन्त । এनीमार काथ शांत्रिजम रखा

ভেদা এতে সন্নিপাতস্বর্ন্য ॥ অজ্বোষ ভূতহাসৌ ষম্বাপী-**७ क म** नामः। म लागी ह वि শেষা স্তব্যৈবোক্তা স্ত্রযোদশ চ া 🛊 🏿 অথৈষা • লক্ষণানি ৷ যো-गाविवत अत्रष्ट्रागामिकनीलः लाश्छ॰ मार्छ। विनूर्यन् यस-ক মভিতঃ সম্ভীপাকেন পীডিতণ विमा । উৎক্ষিপা यः समझ॰ ক্ষিপত্যধন্তান্ধিতান্ত মুচ্চুসিতি। ত প্রোণু নাবজুষ্ট বিচিত্র কর্ষণ विकानीयाए॥ (अन जुमात्रभी-**डा करण्या नवथू वंगी बाथा कर्छ** । গাত্ৰঞ্চ গুৰ্বতীদ প্ৰলাপিজুফ-मा कायरा वित्रः॥ वास्रकारः লৈত্য বহিশ্চ ষস্যা বিশেষতঃ শ্বাসঃ। অঙ্গমিৰ দগ্ধকন্প সোম্ভ-দ্দাহাৰ্দিতঃ কথিতঃ।। নক্ত॰ দিবা ন নিজা মুপৈতি গৃহ্লাতি মৃ্ঢধী-ৰ্মভসঃ। উত্থাম দণ্ডপাতে ভূমা-তুরঃ সর্বতো ভূমতি।। নভদো গৃহ্লাতি আকাশাৎ কিঞ্চিদ্গ্রহী-**छु॰ क**रती প্রসার্যতি ইত্যর্থঃ ॥ সংপূর্ব্যতে, শরীরণ গ্রন্থিভি রভিত স্তথোদর মরুত। স্বাসাত্রস্য শতত বিচেতনস্যান্তকার্ত্তস্য ৷৷ পরিধাবতীৰ গাত্তে রুক্পাত্তে

ভুজগ পত্র হরিণগণঃ। বেশথু यञः मनाष्ट्रमानी नाष्ट्रवतार्वमा ।। রুক্পাত্তে পীডাভাজনে । গাত্রস্য বিশেষণ মে তৎ ৷৷ যস্যা-তিপীত মঙ্গ নয়নে সুতরা মলং **ততো श्राधिकः।** माह्याजिमी-ততা বহি রস্য স হারিদ্রকে। ছগলক শরীরগন্ধঃ टिख्य ११। कक्षक्रजावाभिक्षक भगत्रकुः । অজ্যোষ সন্নিপাতাদাতানাকঃ भूगान् खर्जा ॥ मकामीनिधिश-क्छ्ि न जािषयगन् समीत्यय-আমঃ। হ্নতি প্রলপতি পরুষণ সজ্জেযো ভূতহাসার্তঃ ॥ যেন মুহু দ্ব রবেগাদ্বন্তেণেবাবপীডা-তে গাত্রণ। রক্তণ পীতঞ্চ বমেৎ ষন্ত্রাপীডঃ স বিজ্ঞেয়ঃ।। অতি সরতি বমতি কৃজতি গাত্রাণ্যভি-ত শ্চিরণ নরঃ কিপতি। সন্যাস সন্নিপাতে প্রলপতি ভুগাফিম-গুলো ভবতি।। মেচকবপু রতি-মেচকলোচনৰ্গলো ২বলো ম-লোৎসৰ্গাৎ। সংশোষিণি সিত-পিডকা মণ্ডলযুক্তো ত্বরে ভব-छि।। नातायन এव ভিষপ্তেयজ **प्याटियु जाङ्गरीनीतः। रेनक्रज**ा হেতু রেকো নিতা মৃত্যুঞ্বো

(श्रायः ॥ का वा वा श्रामाश्रामा वा भान ভৰ্রস্য লক্ষণ মাহ্। সন্ধিপাত-ब्रवगार् कर्नमृत्व मुमांकनः। শোথঃ সংজাযতে তেন কশ্চি-क्ति अयूहाटा ।। जूमाइनः यात-কত্বাৎ ষত স্তেন শোথেন কশ্চি দেব প্রমূচ্যতে। কোপি জীবিত॰ ত্যজতি ইত্যৰ্থঃ ৷৷ সন্নিপাতত্ব-রান্ কফানসাধ্যানপরে জঞ্চা **(मार्य विवर्ध नरके श्रा) मर्ब** जम्मूर्वसक्तः ॥ जिल्लाक्ता श्नाधः **क्छनाश खट्टानाथ।**। **(मार्य शिख करक । विवरक** व्यशत्कः। সর্বসম্পূর্ণলক্ষণঃ সর্বাণি मार भौजामीनि मार्भानि अन्। নানি প্রৌঢানীতি যাবৎ লক্ষণা-নি ষস্য সঃ। ততো ছুন্যথা দোষে পকে অমৌ দীপ্তে স্বলকণকঃ ক্ষসাধ্য ইত্যৰ্থঃ ॥ 🐠 ॥ অথ সামান্যসন্মিশাতত্ত্বস্যু চিকিৎ-সা। সন্নিপাতাৰ্ণৰে মন্ন যো ২ভাদ্ধরতি মানবং। ক ত্তেন ন হ্ৰতো ধৰ্মঃ কাঞ্চ পূজা ন সো-হতি॥ মৃত্যুনা সহ যোজবা স-মিপাত চিকিৎসভা। ষশ্চ ভত্ত ভবেজ্জেতা স জেতামবসন্থলে ।। क्षियनिश्रह (यवाको अर्घा-

बार्धो बिर्णायक । नितरङ শ্লেমণ হস্য শ্রোতঃস্দাটি-তেৰু চ।। লাখব॰ জাৰতে সদ্য স্থা চৈবোপশামাতি। 🛊। ভে-ডোপ্যাহ। সন্নিপাতন্বরে পূর্ব॰ ব্দাদাম কফাপছ। পশ্চাৎ भ्यानि मन्कीत नगरम् शिव-याक्रजाविकि॥ ।। नन् जन्नाज-রে প্রথমণ পিত্তস্য প্রতিক্রিয়া थ्योका। यथा। नगरम् शिव्ह स्यवादमी चदत्रयू मयवायियू। पू-র্মিবারতর॰ তদ্ধি ত্বরার্ত্তেযু বিশে-ষতঃ।। ইতি। অন্যত্রাপি। সম্-ৰাষে ত্ৰিদোষাণা পূৰ্ব পিত্ত মু-পাচরেৎ। স্বরে চৈবাতিসারে চ সৰ্বত্ৰান্যত্ৰ মাৰুত মিতি ৷৷ তথা-ন্যত্র প্রথম বাযোঃ প্রতিক্রিষা প্রোক্তা। যথা। বাতস্যানুজ্যেৎ পিক্ত পিত্তস্যানুজ্যেৎ কফণ ইতি ৷৷ 🟶 ৷৷ তত্ৰ ব্যবস্থা মাহ ভ-জ্রান্তরে। স্থরে ত্রিদোষজে সামে শমষেৎ প্রথম কক। জীর্যাত্যা-মে জ্বেৎ পিত্ত নিরামে দ্বনিল জবেৎ।। ইতি। প্রথম মিতি স্থান ত্ৰষেপি সম্বধ্যতে। অন্যে দ্বিভি नयानश्रु ।। ज्यानाः वा क्रयः भूबं ७ यः माष्ववववदा देखि।

छया है। जन्मर्रा सा नेत्रीयान् माामूनकमाः म देव छदव । तन ৰদোৰা বিয়োগেন সন্নিপাতে ভ-देशव ह देखि॥ जन्जर्भ देशक्षव मण्मर्रा भद्रीयान् वनवसुद्रः ॥ তা-শা-শ- যত্ত্ৰ ছোবাণা- বিবে-कु रेनव मङ्गवार। क्रिया गा-ৰাবনী তত্ত্ব বিদধীত চিকিৎসকঃ ॥ लब्बनः वानुकारंचरमा नगाः निष्ठीवन छथा। व्यवत्न इश्वन-दिश्व थाक् थ्रावाकाः जिलाय-**ए**क ॥ च्यूत देखि त्नियः ॥ 🛊 ॥ नन् कियायाञ्च श्रेगानाए किया बन्गाः श्राक्षाक्षर। शृर्वमाः শান্তবেগাৰা ন ক্ৰিৰা সৰবো श्रिष्ठः ॥ इति वहत्मम किया-मक्त्रमा निविक्षचां कथ वज नमा निष्ठीबनावत्मश्रभानि यू-भनविधीयटक रेजानकाश मार । ক্রিয়াভি স্থল্যবুপাভিঃ ক্রিয়া-সাৰ্দ্ধ্য মিষ্যতে। ভিন্নৰূপতবৈ-তাল্ত নহি সৰ্বন্তি দূষণ ।। 🛎 ।। তত্ত্ৰ লঙ্ঘনস্যাবধি মাহ। ত্ৰিরাত্ত॰ পঞ্রাত্রণ বা দশরাত্র মথা পিবা ৷ লব্দন সন্ধিপাতের সর্য্যাদারো-স্যা দর্শনাৎ।। লব্দনে তিরাতা-দি বিকল উত্থৰ বা হাদ্যপেক্ষয়।

দোষাণা শীষু মধ্য মন্দশজ্ঞিক-শ্বাৎ ব্যাধি স্বভাবাচ্চ। আরো-ना मर्मनाथ देखि वावमरतागछ। मर्गन॰ माखावना लज्यन॰ ज-ৰ্যাৎ। এতেন ত্ৰিয়াত্ৰাদ্যৰখে র-নিষতত্ত সূচিত ৷ অভএব সূঞ্জ-छः आइ। मश्राम भिवरम आरथ मनत्व बामरनि वा। भून र्यात-ভরো ভূদা প্রশদ্প যান্তি হন্তি বা ।। বোরতর ইভি বোরঃ স্বভা-বাদেৰ তথা হোরতরো ভূম্বেতি ।। 🐠।। ছনন প্রশায়নবোঃ কারণ मार। निख क्यामिन वृक्षा मन-मियम पामभाइ मश्राहा । रेखि विमुक्तांथ वा बिलायका थाजू मन्याकार ॥ जिल्लावरका ब्रत ইতি শেষঃ॥ ধাতু মলপাকাৎ ধাতৃপাকাজি মলপাকাদিমুঞ্চ-ভীতাৰ্থঃ। ধাতুমলগাকে প্ৰাক্ত-नकरैर्भवरङ्गः। তত্র यদि জीবन मश्रक्षक कन्मां छि छना यमानाः কো খনাথা ধাতুপাকঃ৷ স চ রসাদি শুক্রান্ত ধাতুনা॰ পাকো বোদ্ধব্যঃ ৷৷ ৩ ৷৷ তত্ত্ৰ ধাতুপাকস্য लक्ष्वे याइ। निजानात्मा समि স্তম্ভো বিফজ্যে গৌরবারুচী । অরতি বলহানিশ্চ ধাতুনা পা-

कनकन ।। विकेश छेन्द्रमा । গৌরব গাত্রাণা ।। অন্যচ্চ। স-वाधायात्वा समि नाजिएम्टम गा-ত্ৰেষু বা পাকরুজাৰুতেষু। পীডা ৰুৱাৰ্ত্তোঙ্গুলিভিশ্চ গচ্ছেৎ স ধাতুপাকী কৰিতো ভিষগ্ডি: ।। व्यभन्नकः। मार् कर्षु स्ता १४-खाद भी जाटा बाथवा बिन । था-ভোঃ পাক বিজানীয়াদন্যথা তু यलमा ह ॥ 🛊 ॥ यलभौकलक् यार। लाम श्रहां देवहराः ल-यूजा चत्र (महत्याः । है किया। क देवम्लाः भनानाः शाकलकः। ।। দোৰ প্রকৃতি বৈক্বত্য॰ দোষ। ৰাতাদৰ স্তেষা প্ৰকৃতি ৰ্বেপথু माइ लोबनामि क्वन छमा देव-ক্বজ্য॰ বৈপরীত্যা । বৈমল্য॰ ম-লরাহিত্য । মলানা দোষণা ।। व्यनाकः। नयकी क्रियं शक्कमा পটুতা ৰহেশ্চ যত্ৰ ক্ৰমাৎ তৃষ্ণা-দি প্রশমো স্বরস্য মৃদুতা ত॰ দো-ষপাক বদেৎ ।। হান্নাভ্যো রতি-বেদনাতিসরণ তীব্রো স্বর স্তৃ-শ্বদ শ্বাসাধিক্য মরোচকো রভি রিতি স্যাদ্ধাভু পাকারুতিঃ।।।।। व्यायमार्थिदकान मश्चयमित्रमा-जावधार्<mark>जिक्टम भव्न</mark>माविष मार ।

श्रीज्ञ नखरी विश्वना चार-वयाकाननी छथा। 'अवा खि-माय वर्गामा मानाव ह वराव ह ॥ नवत्याकालनी ज्ञानमनिवनः সংবিহাৰ বোদ্ধব্যা ভেনাগৰন **पिरम नीका प्रभमी बापणी** ह অত্র রাত্তি রিত্যধ্যাহ্রিষতে।। স-विशाज्यती भूवं नयाग् नव्यन माठदार। मृजः मीजः निरमकः সমবে ভেষজ ভজেৎ ৷৷ সন্ধিপা-তেন ভৃষ্যস্ত॰ পাৰ্শ্বরুক্ ভাঁলু শো-বিত ৷ যঃ পাষ্বেৰ্জ্জ শীত সমৃত্যু র্মরবিগ্রহঃ॥ শীত অক-থিত। শৃত তুশীত বিহিত মেৰ इंडि लब्दन ।। 🗰 ।। वार्थ वालुका-বেদঃ৷ বাত স্লেম ক্তে বেদাৎ কারবেজক নির্মিতাৎ ৷ সিক্ষঃ रिका निविद्या २ व विना दक्वन ৰাভজান্।। খৰ্পরভৃষ্ট পটাছিভ কাঞ্জিকসণসিক্ত বালুকবেদঃ। শমৰতি বাত ককামৰ মস্তকশৃ-नात्रजनानीन्।। त्नाजना मा-र्खवः कृषा नीषा भावक यागवः। হত্বা বাত কফ স্তন্ত্ত স্বেদো স্বর-মপোহতি।। ইতি বালুকাম্বেদঃ ॥ ।। व्यथ नगाः। टेमञ्जवः त्य-তমব্লিচ সর্যপাঃ জন্ঠ মেব চ ৷

বস্তুমূত্রেণ সংশিষ্ট নস্য তন্ত্রা-নিবারণা৷ শ্বেভমরিচ শিগুরী कः। रेमञ्जवािननगः॥ मधुक সারসিদ্ধুত্থ বচোষণ কণাঃ সমাঃ । अञ्च शिकुं खिना नमा नमा । मः खा था वश्करा-तामिनगः ॥ याजूनुकार्म्क्तत्रभः काकः जिलदगात्रिङः। जनाषा সিদ্ধ ৰিছিত নস্য তীক্ষ প্ৰ-र्याक्र्रिं ।। एवन প্रভिদ্যতে ষ্কেয়। প্রভিন্নশ্চ প্রসিব্যতে । শিরো হৃদয কণ্ঠাস্য পার্শ্বরু-ক্চোপশান্যতি।। মোহান্যেন मूक्षः वाथियजुः यामृभः भकः। কল্পতরু নামধেয়ো রসো ন তা-দৃক্ পর॰ কিঞ্চিৎ ॥ ইতি নস্য॰ ।। 🗰 ।। जथ निष्ठीवन । जिस्रा তালু গল ক্লোম মরুৎ পিত্তেন চোচ্ছিতঃ। তদা স চার্যেচ্ছো-ষ॰ জিহ্বাষাঃ খরতা॰ তথা ।। স্ফুটনঞ্চ তদা জিহ্বা॰ লেপযে-শ্বাধু পিষ্টবা। ডাক্ষবা সাজ্যপা-তেন জিহ্বা স্যাৎ সরসা মৃদুः॥ चार्षकमा ,त्रांशिङ रेमक्षर कर्के कवर । चाक शका दिस्ना-त्या निष्ठीतिक भूनः भूनः॥ ७-নাস্য হৃদ্ধ ক্লোম মন্যা পাৰ্শ্ব শি-

द्या गना**९।** नीत्नाभगक्र्याट क्षिया लाघव॰ हामा कायर ॥ পর্বভেদো ছরে৷ মূর্চ্ছা নিজা श्वान गमाययाः। यूशक्ति भोद्र-বং জাড্য মুৎক্লেশ স্চোপশাম্য-তি ৷৷ সক্লৎ দি স্ত্ৰি শচতুঃ সৰ্ব্যা-कृष्णे काव वनावनः। এতদ্ধि পরম প্রাহ ভেষজ সমিগাতি-ना ।। इंडि क्वनश्रहः ॥ 🛊 ॥ व्यथावरलहः। कर्कलः शोक्रतः भृत्री खाय॰ यामन्ह काরवी। अ-क्र कृषीक्र ७ रे ठे छ ९ मधुना मह ल-श्रवेष ॥ अवावत्विश्कि। श्रिष्ठ मा-নিপাত সুদার লং। হিকা খাস্ব-क कामक कर्राताशक नामरम् ।। এতদেশাজ্য॰ কফোডেকে চূর্ণ-মাডকজৈ রলৈ:। ভন্তান্তরে চ উक्ত[।] अकोङ मधुना निशाना-र्जक्मा द्राप्तन वा। मंद्राहर मा-क्र- इन्याख्यां काम ममन्त्रिः॥ ইতি। সর্বেষু সন্নিপাতেষু ন কৌ-দ্র মৰচারযেৎ। শীতোপচারি ক্ষোদ্র স্যাচ্ছীতক্ষাত্র বিরুদ্ধাতে ।। অষমভিপ্রায়ঃ। সন্নিপাভত্ত্ব-রেষু ক্লেমনিগ্রহার্থণ সর্বদা স্থে-দে। হিত উক্তঃ। অত্ৰাগিসম্ব-क्षाटमहरमााकन निर्हरमय ॥

উক্তেন মধুনা বিরোধঃ। উক্তঞ সূঞ্রতেন। উক্তৈ বিরুষ্তে मूरिक क्रकक उत्तिरिख वथा विवः ইতি।। শীতোপচারিকৌড নি-তি। শীতেনোপচারো ২স্যান্তী-তি শীভোগচারি। শীভশাত্র স দিপাতে বিৰুদ্ধাতে। অষ মক त्न इः **थार्यर्गाक्** क्रबुक्रतागरः রত্বাৎ সাধ মুপযুজ্যতে। যত-উক্ত॰ চরকে। উদ্ধৃজনুগদমী या मा मात्र स्वत्वहिका। व्यद्धा-রোগহরী যা সা ভোজনাৎ প্রা-ক্ প্রযুজ্যতে।। পৌষ্কর পুষ্কর-मृन॰ जननाटक अर्थ॰ (नय॰। भृत्री कर्क हेम् की। त्याव चिकी निध-ली बित्रानि। वाटमा वरामः। কেচিদ্যাস স্থানে ধ্বানী প্রক্রি-शिष्ठ । कात्रवी मगदेतना इंडि लाटक। अखाक्रावटनहिका॥॥॥ সিন্ন মামলক পিফুা জাক্ষ্যা স হ মেলযে । বিশ্বভেজ সংস্কুত মধুনা সহ লেহযে ।। তেনাশু শাম্যতি শ্বাসঃ কাসে৷ মূ ছারুচি স্তথা। ইত্যবলেহঃ।। 🟶।। অথা-ঞ্জন । শিরীষবীজ গোমূত্র রুক। মরিচ সৈন্ধবৈঃ। অঞ্জন স্যাৎ

প্রবোধাষ সরসোন সিলা বটেঃ ।। नित्रीयवीकामाञ्चन ।। • ॥ অযোরজঃ শ্বেতলোধ্ মঞ্জন ম-রিচ॰ তথা। গোপিত্তেন সমাযুক্ত॰ তক্রানাশন মৃত্য ।৷ গোপিত্ত গোরোচন। লৌ इচূর্ণাদ্যঞ্জন।। 🟶 🏿 অঞ্জন• সম্যগারক• মধু সিন্ধু **मित्नाबदेवः। अत्याह्याहि छ**-বতি ভাষিত ভিষজা বরৈঃ।। **শিলা মনঃশিলা। উষণ মরিচ** । ইত্যঞ্জন॰॥ৠ। অথ ক্বাথঃ। সূত विषक्ष मतिष्ठः जूषकः नवमापतः। চূৰ্ণিত স্বরদৈ শ্বর্দাণ ধৃর্ত্তপজ্র র-সোনযোঃ।। সন্মিপাতক্তে যো-ह्र मूर्कि नित्म्य श्रामाश्रि । ख-স্থিব্যথাস্বনেনৈব লেপ॰ স্বর্যাৎ পদোপরি।। পদ পীছ ইতি লো-কে।। বিল্ব শ্যোনাক গস্তারী পা-টলা গণিকারিকাঃ। পাচন বাত कक इन भक्षमृत मिष महर ॥ भानगर्भी भृष्किंगर्भी तृश्वी कर्छ-কারিকা। গোক্ষুরো বাত পিত্তমণ কনীষঃ পঞ্চমূলকং ৷৷ উভয় দশ-মূল তৎ পিপ্ললী চূর্ণসংযুত। স-নিপাতম্বরু হন্তি হৃৎ কণ্ঠ গ্রহ-নাশন· II তন্ত্ৰা বাত ক্লাভৰ শ্বাস পার্শ্বার্ত্তি কাসনুৎ। মহাস্তি

यानि वृलानि कार्रुगर्जानि यानि চ ৷৷ তেষাৰ বন্ধল আছে ভূম মৃ-লানি ক্লৎনশঃ। অত্ৰ বিহ্বাদীনাণ পঞ্চানা মূলস্য বন্ধল প্রাছ। मन्यू लक्षाथः ॥ 🛊 ॥ मन्यू नी क ষামস্ত স পৌষ্কর কণান্বিতঃ। স ন্ধিপাত স্থারে দেয়ঃ শ্বাস কাস স यविष्ठ ॥ चामभाककाथः ॥ 🕸 ॥ চিরজ্বরে বাত ককোল্বণে বা ত্রি-দোষজে বা দশমূলমিশ্রঃ। কিরা-ততিক্তাদিগণঃ প্রযোজ্যঃ শুদ্ধ্য-র্থিনে বা ত্রিবৃতা বিমিশ্রঃ।। কি-রাততিক্তাদি র্যথা। কিরাততি-ক্তকো মুস্ত ওড়ুচী বিশ্বভেষজ ি কিরাতাদিগণো ছেষ চাতুর্ভ-ভ্ৰক মিত্যপি॥ চতুৰ্দ্দশাঙ্গকাথঃ ।।।।। দশমূলी गणि गृष्टी পৌষর॰ मपूरालञ्। जागी महेकवीकक शटोनः कं पूरवाहिनी ॥ जर्का-দশাঙ্গ ইত্যেষ সন্নিপাতজ্বাপ-रः। काम समार भाषार्वि याम श्कि। वभीश्रः ॥ अकोषभावः काथः ॥ 🟶 ॥ जृनिष्ठ माक्र मण-मृल मरहोयशाक जिल्कु स्वीक ध-নিকেভ কণা কষাযঃ। তন্ত্ৰা প্ৰ-লাপ কসনারুচি দাহ মোহ শ্বাস ত্রিদোষ জনিতত্ত্বরনাশনঃ স্যাৎ

॥ विजीत्याकामभाजकाथः॥ এज-देमाव ७० উटका वन्नदंगदनन १ অক্টাদশাক মিত্যেষ মৃত্যুকল্প जुत जत्य । हे जि ॥ 🕬 । जय সন্ধিপাতস্বরে রসাঃ। বিষণ ত্রিক-টুক গন্ধ টকণ মৃতশুল্ক । ध्युतमा চ वीजानि श्क्रिल॰ न-বৰ স্ত।। এতানি সমভাগানি मिटेनक विक्रवाजटेवः। **गर्फारय-**চ্চণকারা কর্তব্যা বটিকাথ সা।। ভক্ষণীয়া তুপাতব্যো রবি-मृन क्यायकः। मृजमः जीवनी-নাল্লা সলিপাতজ্বান্তক্ত ।। মৃত-मङ्गीवनीविष्का ॥ 🟶 ॥ मिन পাতৰরে রসপ্রদীপে। শুদ্ধসূত সম॰ গন্ধ॰ সূতা॰শ॰ মৃততামুক॰। ত্রিভি স্কল্যৈ গরাণকীরে শ্রন্দবে-**माज्य श्रदा। गर्मरंगमिनरमक-**स निर्श्व निगुक्फिट्दः। विधाय গোল ত॰ গোল মন্ধুয়াগত॰ পচে ।। ত্রিষামান্বালুকাযদ্র **७७: थाल विह्नं (यथ। जरुमा**॰-শং বিষণ তত্ৰ ক্ষিপেত্তেনাপি ম-হেষ জ্বেয়ো গুঞ্জাদ্বোন্মিতঃ। शक्ष्रकानक्यायम ज्ञानीमृत्कान বা সহ।। রসেনানেন ভ্রেন

সন্মিপাতৰুরো মহান্। সংক্ষয়ণ বজতি ক্ষিপ্ৰণ কৰ্ত্তব্যো নাত্ৰ সণ-भयः ॥ जित्नरकात्रमः ॥ अ। म-ন্নিপাভৰুরে রসপ্রদীপে। ভন্ম ষোডশনিক্ষ স্যাদারগ্যোপল স-ম্ভবং। মরিচং নিক্ষমাত্রক বিষং निष्कः विवृर्वस्य ॥ तस्य छान्य-শ্বরো নামা সমিপাতজুরান্তরুৎ ৷ একগুঞ্জামিতো ভক্ষ্য আর্ত্রক-मा जत्व। इ। जिल्लाम्बद्धा द्रमः ॥ 🛊 ॥ সনিপাতজ্বরে রসেন্দ্রচি-স্তামবৌ। দ্বো কষো সূতকাদ্গ্রা-ছৌ গন্ধকাদ্দৌ তথৈৰ চ। ষত্নত खु खर यमां किन इन्मन मीत-टेमः ॥ कक्षमा बर्धिका क्षा निः ক্ষিপেৎ কাচভাজনে। কবৈ মমৃত তত্র কিপ্তা বক্তু নিরোধ-य्य ।। जिनकाषाः भद्धी ভार्गी বালুকাভিশ্চ পূর্যেৎ। সার্দ্ধণ যাবদহোরাত্র• ভাবত্তত্র পচে-**जमः ॥ मीन्याद्या १ नटमा दम्यः** मानगीज जम्कत्र । जानार्क মমৃত তত্ত্ৰ কিপেত্তাবত্তথোষণ ।। ভক্ষিতো রক্তিকামাত্রো রস স্তু গ্রিন্সমারকঃ। সন্মিপাতত্ত্বর হ-ন্যাদাত মন্দাগিতা মপি ৷৷ শূলা मः वहनी खना कम भाषुगमः

তथा। शाम कामानिकान् मदीन शनात्म विनागरम् ॥ अभि-সমারো রসঃ॥ 🛊 ॥ সন্মিপাতস্থ-ब्रापियु तरमञ्जिष्ठिष्ठाभरगो। गरम-শ छेक यतिष्ठ विषः धर्कृतदेक र्छ-दैवः। मिन मःयर्मिङ एकः शकः বক্ত্রোরসো ভবেৎ।। আর্ডকস্য দ্রবেণৈষ দাতব্যা রক্তিকা মিতঃ া সন্মিপাতজ্বর হোর নাশবেলা-ज म॰ मरः।। ঈगः পারদः। ऐकः **टेक्क व**ः। शक्क वर्टक्ति त्रमः॥ 🕸 ॥ সন্নিপাতত্ত্বরে রসেন্দ্রচিন্তামণৌ । অথ শীতস্বরে রসাঃ। সূতক গন্ধকঞ্চৈৰ হরিতালণ মনঃশিলাণ ৷ একনিক দিনিকঞ্চ চতুনিকি তথৈব চয়া পঞ্চনিষ্করসৈঃ কার-বেল্যাঃ কন্ধ॰ প্রকল্পযেৎ। তা-মুপত্রাণি ত্ল্যানি তেন কক্ষেন ल्लिश्य ।। मताव मः भू ए ।। ক্লখা তেষা মুপর্যাপি। দদ্যাত্তা॰ পিষ্টিকাণ পশ্চাৎ পুটপাকেন शाहरम् ॥ ७७: म॰ हुर्नस्यस्तर त्रमः क्षीरजन जिक्काः। यदेवक মাত্রধা হস্তি ঘোরণ শীতজুরণ ঞ্র-বং ৷৷ পারা টক্ষঃ ১ গন্ধক টক্ষঃ ২ হরিতাল টক্ষঃ ৪ মনঃশিলা টক্ষঃ ৫ তামুপত্র টক্ষঃ ১২। শীতস্বরারি-

त्रम्ः ॥ ● ॥ त्रमञ्जीत्था भारतः शक्षकः जूषाः नत्रमधः विषः मनः। বিষাদক্ত গুণ বোজ্য পরিচণ বিশ্বভেষজা। অশ্বনদ্ধা তু বি क्या कामभर्म किष्नकः। हज् नीक द्रोम द्रिष्ठकृर्वः यरञ्जन यर्कः रहि ॥ जूनमाञ्च परेनः मार्कः ভক্ষিতো ব্লক্তিকামিতঃ। হস্তি শীতত্বর ঘোর নামায় শীত **क्नि**न्ती ॥ भीजिक्नित्रीत्रमः ॥ 🛊 ॥ ব্রসপ্রদীপে। তালক সুক্তিকা-চূর্ণ তুল্য তত্তোভযোপরি। नवगाः गथः जूषः मा व मर्करव कनाकाष्ट्रदेश छल् मः एक मूभदेन वं देना गंकभूटि भटि । भीजः जकृर्वरयमकः खङ्गामाबः শিতাযুত ।। প্রভাতে ভক্ষযেত্তে-ন ষাতি শীতত্ত্বক্ষষ । বাস্তি র্ভবতি কস্যাপি কস্যাপি ন ভব-ত্যপি॥ শীতভঞ্জী॥ 🛊॥ রস ক পারদ তুখ তালক গন্ধ ট-কণ। সর্ব মেতৎ সমণ চূর্ণ কা-त्रदिष्ठीत्रदेश फिनः॥ यर्फद्यदेखन एक्ना तर्रकामि नमना ज्। जा युमा ভाজनमा। वित्भावका-**मूर्तामिङः।। ७९१८७ बानूका** यद्य यवा याव "क्रू वेश्वि हि ।

শীতল তদ্ধি গৃহীবাভামুপাৰো-मता खिषक्।। भी छ ज्ञी बरमा या-यगादा गदिह मःयूष्टः। जिन् छः পर्वशरखन नागरमियमञ् त्रान्।। भौठजङ्गीतमः ॥ 🕸 ॥ শীতজুরাদি বিষমজ্বরেষু রসেন্ড-চিস্তামণৌ। তালকো দরদোক্তৃত পারদো গন্ধকঃ শিলা। ক্রমান্ডা-गार्क तक्षि कात्रद्वाम् मर्फि-ত ।। অনেনাস্য প্রমাণেন তামু-পাত্রী প্রলেপযে । অধামুখী দ্ঢে ভাঙে তানিরুধ্যাথ পুরষেৎ ।। চুल्याः बाल्क्या यमु मधिः श्र-बालरबष्ठः। भीठः मः हूर्गा या-**रवामा नागवज्ञीमत्न श्रिकः॥ छ**-ক্ষিতো মরিটেং সার্জণ সমস্তান্ विषमखद्रान्। भीठ माशामिकान् इंखि পथा॰ भारतामिन॰ भयः ॥ শীতভঞ্জীরসং ॥ 🐞 ॥ রসরত্বপ্র-मीरम। त्रमः शक्षः विवर्धः व मयः खक्षक देवन । यर्नरबर थ्रायरश कृ याव ९ कब्बन मिछ ।। नत्र-लमा मूर्थ किथा मृता मः दिखे-रममृष्ठ-। ऋश्गरम् मृत्रारम् भारक चारधा र क्व लवनः नारमः ॥ मूर्य ভাও সংনিরুধ্য চতুর্যাম দৃঢা-विना। याक्षीड ममूक्ठा क्ष

बत्वम् कळ्नीः॥ ख्रक्षाबयथः यार्वन नमाकर्यावि स्थाजरम् । বামভাগে শ্বর হস্তি তৎক্ষণাৎ को जूक॰ मह्य।। स्माजरमानिन ণে ভাগে আরোগ্যে নিশ্চিত ভ বেৎ। ইত্যৰ্জনারীনাটেশ্বরো त्रमः ॥ 🖷 ॥ भौज्यत्रामि विषय-ब्दत्रम् त्रमत्रञ्जञ्जनीरमः। कर्कनः ত্ৰিফলা দাৰু চন্দন সপৰ্যক। কটুকা পদ্মকোশীর বিপচেৎ कर्यक॰ जला।। जिलाय मार ভৃষ্ণাদ্ব॰ পান মাত্রেষপুজিত। । দীর্ঘকাল স্বরার্ত্তানা ষেতৎ माामगृट्याभा ॥ कर्षः कर्षः লাদ্যশীরাস্তানা সমুদিতানা জলে প্রস্থমিতে বিপচেৎ অর্দ্ধ-**(गर**ा कर्कनामिशानः ज्या-या॰ मार्ट् ह।। मिल्रभार् जू मा-हार्खं॰ यः मिरकष्ठी जवातिना । আভুরঃ স কথ জীবেদ্ভিষয়া স ৰুখ ভবে ।। এষ সন্মিপাতিনো षाट्य भौजाबूटमक निरस्था क्र-গ্ৰাহাদন্যত্ৰ তত্ৰ বাপ্যাদ্যবগা-र्निमाक्षिव ॥ ॥ व्यथा याह। पूःर्राणं (गाक्त कुषा निक गांशत गर्भरयः। मायनासि वनाभार्थः जिलामज्जतिल ভिय-

क्।। मूल्लार्गा वतामः। आहाद्व মুচিত মলা। লাজশকুন্ সমন্ধী-या ९ रेमञ्चरवन ममन्त्रिजान्। एक চেজ্জীর্যাস্ত্যবিমেন স্বরী জীবেত্ত-मा अव ।। इंडि क् हि ।। तुन्क-পিত্তে হিতত্বেন তৃফা দাহ স্বরেষু চা লাজানা শক্তবং শীতা ন চ তে ২ত্র হিতা মতাঃ।। পাচনো দীপনঃ সোক্ষো লাজমণ্ডো যতঃ স্মৃতঃ। দশমূলাদি সংসিদ্ধঃ সন্মি-পাতন্বরে হিতঃ।। সন্মিপাতন্বরী ষস্তু কম্পতে প্রলপত্যাপ। কিঞ্চি-দেব ন জানাতি চিকিৎসা তস্য কথ্যতে।। অভ্যঞ্জষেৎ পুরাণেন সর্গ্রিয়া পূর্ব মেব তং। বলা রামা গুড়ুচ্যাদ্যৈ ক্সৈলৈশ্চ পরিষেচ-যেও।। বৰ্ত্তকো বৰ্ত্তকা লাবো বা-র্ত্তাক স্তিত্তিরিঃ শশঃ। স্পলিঙ্গশ্চ রসেনৈষাণ তপ্ষেত ষ্থানল।। বর্ত্তকঃ বটের ইতি লোকে। বর্ত্ত-কা বটঈ ইতি লোকে। বার্ত্তাকে। বাতচটক ইতি নির্ঘণ্টঃ। বগেরা ইতি লোকে। স্বলিস্থো গরগরে-ষা ইতি লোকে।। সন্নিপাতে কু-ধার্ত্তণ যো ভোজ্বেৎ পিশিতৌ-দন । স কথ ভিষগাখ্যান্ত লভতে মনুজাধমঃ।। 🟶 ।। অথ বাতোৰ্ণ

সমিপাত খরস্য চিকিৎসা৷ শক্ मृनी क्यायब मना९ वाट्याख्दा बदा। ভ्राकः वा नूरशकः वा मृख्या (माय वनावनः ॥ शक्यम्नी মহতী প্রথম প্রাপ্তাষা স্ত্যাগে ৰচনাভাবাৎ ॥ 🛊 ॥ অথ পি-ভোল্বণ সমিপাতল্বরস্য চিকিৎ-সা। পৰ্ষকাণি ত্ৰিফলা দেবদাৰু **ठ क** ऐ्यन्त । ठन्मन श्रम्भक टेठव তথা কটুকরোছিণী।। পৃত্নিপণী শৃত॰ দ্বেভি রুষিত৽ শীতল৽ জল৽ ৷ পিত্তোক্তরে নৃণা মেতৎ সন্ধি-পাতে চিকিৎসিত ৷৷ পৰ্যকাদি ক্বাথঃ ৷৷**ঞ্চ**৷৷ কিরাততিক্তকণ মুস্তণ গুডুচী বিশ্বভেষজণ। পাঠোদীচ্যণ ম্ণালঞ্চ শৃত পিক্তাধিকে পি-বেৎ ৷৷ কিরাতাদি সপ্তক ৷৷ 🟶 ৷৷ অথ কফোল্বণসন্মিপাতজ্বরস্য চি-কিৎসা। বৃহত্যৌ পৌন্ধরণ ভা-शी गंगी मृत्री मुद्राला । वर-मकमा जू वीकानि भटि। त॰ करूं-রোহিণী।। वृष्टलामि र्गनः শস্তঃ সন্নিপাতে কফোত্তরে। স্বাসা-দিষু চ সৰ্বেষু হিতঃ সোপজবেষ-**शि।। वृङ्**छाां मिकां थः ।। 🟶 ।। जाव বাত পিত্তোল্বণ সন্মিপাভত্বরস্য চিকিৎসা। বাত পিত্তহর বৃষ্য

क्वीयः शक्त्र्वकः। उद्देशार्थाः মধুনা হস্তি বাত পিত্তোক্তর স্বরণ ॥ मेर्भक्षम्म ।। को। जथ वा-ভলেয়ে। অণসমিপাত স্বরচিকিৎ-সা। কিরাততিক্তক মুক্ত গুড়-চী বিশ্বভেষজ । চাতুর্ভদ্রক মি-ত্যান্থ ৰ্বাভলেমোল্বণে জ্বে ৷৷ চাতুর্ভদ্রককাথঃ।। 🟶।। অথ পি-ত্তলেয়োত্বণসন্মিপাতত্ত্বরচিকিৎ-मा। भर्भ हैः क हेकल॰ अर्थ मू-শীরণ চন্দনণ জলং। নাগরণ মৃ-স্তক শৃঙ্গী পিপ্পল্যেষা শৃত হিত ।। তৃকা দাহাগ্নিমান্দোযু পিত্ত শ্লেষোহ্মাহ্মণে স্বরে। টাদিকাথঃ।। 🟶 ।। অথ বাতপিত্ত শ্লেখোত্বণদন্ধিপাত স্বরচিকিৎ-সা।। নাগর ধান্যক ভাগী প-ष्मकः त्रक्कठन्मनः। भटिनाः भिठ्-यर्फम्म जिक्ना यथुक् वना ॥ শর্করা কটুকা মুস্তা গজাহ্বা ব্যাধিঘাতকঃ। কিরাভতি ক্ত ম-মৃতা দশমূলী নিদিগ্ধিকা।। যো-গরাজো নিহস্ত্যেষ সন্নিপাত-ত্রিকোল্বণ । সন্মিপাত সমুখানণ মৃত্যু মপ্যাগত জবেৎ ৷৷ গজা-হ্বা গজপিপ্পলী। ব্যাধিঘাতকঃ আর্থধঃ। নিদিঞ্চিকা দৈগুণ্যা-

र्फ गृथक् गठिला। तागवाक कार्यः ॥ 🐞 ॥ ज्यथं श्रीवृक्तं सथा হীন বাভাদি জনিভ সন্নিপাত-স্বরাণাণ বন্ধাণ তত্ত্বেণ চিকিৎসা याह । श्रवृक्षः कर्यदयत्कायः की १॰ मधर्कारय फियक्। চिकिञ्-**मियः विश्वालका मियत्या बृक्क**-शैनरयाः॥ व्यमग्रयर्थः। श्रवृ क्षः त्मायः कर्यरयस छस्रेक्नगु হেতুভি রৌষধান্ন বিহারেঃ রুশী-ক্তা সমী স্ব্যাৎ। ক্ষীণ দোষ সম্বৰ্জযেৎ। তদ্ব দ্বি হেতুভি রৌব ধান্ন বিহারে ব্দ্ধযিত্বা সমীদ্র্য্যা-দিত্যর্থঃ।। প্রবৃদ্ধে সমিতে দো-**स्व मधामः अय (यव हि। नाश्वि॰** ষাতি সমণ নীতে খনুবন্ধ্যে ংনু-बन्नवद्या व्यमायमर्थः। वर्षाम् बायू तन्त्रकाः (भवाः । अधान মিতি যাবৎ। পিত্ত শ্লেমাণাবনু-वस्को वारमा ब्रन्हितो भद्रमि शिख यन्वन्नाः करकान्वन्नः। वनरञ्ज ককোনুবন্ধ্যো বাত গিত্তে অ-न्वरक्षो তত यथान्वरक्षा अभय॰ नीटि श्नूतकः अयद्यत भासिः ষাতি। তথা প্রবৃদ্ধে দোবে শমি-তে হ্ৰাস্যিত্বা স্থীক্লতে মধ্যমো प्लारका हि निक्कटकन अवस्मव

শান্তি• ৰাতি প্ৰক্লতো ভবতীত্য: र्थः ॥ ॥ जय नीजात्रामीनाः সন্নিপাতস্বরাবাণ ত্রষোদশানাণ বিশিষ্টা চিকিৎসা। তত্ত্ব শীতা-স্বস্য চিকিৎসা মাহ। ভাস্বয়ূল। জীরক ব্যোষ ভাগী ব্যাদ্রী শুঠী পুষর গোজলেন। সিদ্ধ সদ্যঃ শীভগাত্রাতিমোহ শ্বাস সেখো-**ডেক কাসামিহম্ভি।। ভাষমূল**ণ অর্কগূল।। কর্ক্বোটিকা কন্দর্জঃ अनथ क्रका वठा कर्षकन क्रकः জীরে:। কিরাততিক্তানল কটু-लातू পथ्यां छ क्रवर्छन यव मेख ।। कदर्कािका कन्मत्रकः थथमामू नतुष्टः। तुम विष मतिष्ठ मर्ह्ण-প্ৰিযফল ভস্মৈক ভূ চতুৰ্বসূভিঃ । ভাগৈ স্মিত মুদ্দুনন মিদ মমি-**ज्यम देग**जार्त्र ॥ 🛊 ॥ वर তন্ত্রিকসা চিৎসা। ক্লামৃতা নাগর পৌষ্করাণি শৃতানি পী-তানি শিবাযুতানি। শুগী কণা-গস্তিরসোষণানি নস্যেন ভক্রা-विक्राराख्यानि ॥ यत्रिष्ठ कष्ठ পঞ্পচা বটা রুক্ ক্মিহর নাগর শर्दती गराकः। ছगनरुकन कः ক্ষিতা নিতাস্ত নসি নিহিতা ননু-তন্দ্ৰিক জ্বন্তি।। কচঃ বালকঃ।

পঞ্পচা দারুহরিতা। রুক্ সন্ত । ক্লমিহরো বিডঙ্গঃ। শর্বরী হরিতা। । शवाकी इखवाइनी। निम नामि-काषाः॥ जुत्रक नाना नवत्वाछ-মেন্দুঃ মনঃশিলা মাগধিকা মধূনি । निर्याष्ट्रिजानाकिनि निन्छिज জাক্তজা সনিজা বিনিবারয खि॥ नवर्गाख्यः टेमक्षवः। देन्तुः कर्भृतः। निजा अठिनिजा।। #।। अथ अना भक्ता हिकि थंग। म-তগর বরতিকো রেবতাস্ভোদ তি-ক্তা নলদ তুরগগন্ধা ভারতী হা-त्रशृताः। यलग्रक नग्यनी गधः भूणी मूलकाः अललन मणहन्। পানতো নাতিদুরাৎ ৷৷ বরতি-ক্তো ২ত্ত পৰ্ণটো নতু মহানিম্ব खखाखतान्दताथा । ननमः ना-মজ্জক । তদলাভাদুশীর প্রায় । ভারতী বান্ধী। বরম্ভ ইতি लारक। शत्रृता जाका॥ मा-खुदेन तक्षदेन में देगा खीटेक खि-মিত সেবনৈঃ। সৰ্বতো বিহ্নত চিত্ত মস্য প্রকৃতি মানষেৎ ilan অথ রক্তষ্ঠীবিন শ্চিকিৎসা। রৌ-हिस भन्न स्वामक वामा अर्भ है शक्षणण कर्षेका जिः । सर्वत्रया সম মেষ কৰাষঃ ক্ষতজ্ঞীবিন উদিত উপাयः॥ तौरियः गृग-ऋज्वितियाः। द्वारिक रेडि লোকে। গন্ধলতা প্রিবস্থ ।। পমক চন্দন পৰ্ণ ট মুস্তা জাভি বরারুণ চন্দনবারি। ক্লীতক নি-ষ্বুত পরিগঙ্ক বারি ভবেদিছ শোণিতহারি॥ ক্লীতক বর্ফী-मधूकः। इंश् त्रक्किशीविनि॥ यथूक মধুক পৰাষক পাথ শ্চন্দন পদাব माक সনাখঃ। श्रीभर्गीकल मीक ক্ষায়ঃ সশিত ইছ স্যাদসু জ্যা-য়। পল্লৰ পত্ৰক । পাথঃ বালঃ । मनायः मध्यानः। बीमर्गे गः खाती ॥ 🟶 ॥ व्यथ जूत्रानवमा চিকিৎসা। তুরঙ্গদ্ধা লবণোগ্র-গন্ধা মধুক সারোষণ মাগধীভিঃ। वसाबू खुंशी नम्नाविठां हि समा॰ ত্বসমুগ্নদৃশ করোতি ॥ 🟶 ॥ অথাভিন্যাসদ্য চিকিত্সা। শৃ-দী ভাৰ্গ্যভযাজাজী কণা ভূনিম भर्भ दिः। स्मित्रमाङ्ग वठा अर्थ यान कर्कन नागदेवः॥ यूख धाना-ক তিক্তেশ্ৰেষৰ পাঠ। হরেণুভিঃ। रुखि निधनानामार्ग निधनीमृन বিশালারখধারিষ্ট हिवदिकः ॥ भंगि वाञ्चिकिकाक्टेनः । त्रक्नी माबी यवानी वय मण्यूटेणः

॥ नगार्टन दिश्खाः कार्था रिकृ र्धकं द्रमाविष्टः। अखिनग्राम पदाः वात रेडि इसाम उरमन्दा। প্রমোহণ কর্ণশূলক সন্ধিপাতা প্ৰযোদশ। হিকা॰ খাসক কাসক তथा गर्बान्भे जवान्।। भूकाानि-काथः॥ ।। व्यथं जिञ्चकमा हि-किৎमा। कित्राजिङ्गामनक्र कनिक्ष कर्फृत क्रका कर्रेटनम्-कः। अञ्चष्रः मः भग्रदयप्रमञ्जा **मावा** खटा मानत्रि वंशाकि ॥ आञ्रलहरू अक्त्रकत्रहा ३७ लात्कः क्लिङ्गः क्लिङ्गे हिंछ लारक। अञ्चलवः वीकभूत्रोनितः मः। किताजामिकवनः॥ 🐠 ॥ मा-न्द्रभगे यानुद्रम्लायस यशुक्ष्ण। শশুকপুশী সহিতা সেব্যা বাচাণ विश्वकरम्। भागृतभनी बाकी। यान्त्रमृन विस्मून । आयर अ-छै। मब्कश्रुकी मध्यश्रुकी। मा-न्त्रभनामि त्रवान है।। कृषा নাগর পুরুরামৃত্ততা ত্রান্ধী বচা সূত্ৰতা ভাগী বাসক্ষা সভোষ मूत्रमाकारणी ज्रापिकक्षक । वि শা বৰ্ম বিভাবরীযুগ বরা বৎসা-मनी वांत्रिम वांखी निष भटिं।न পুষ্মর জটা রুগদারুভি বাঁ রুতঃ ৷৷

পুষর পুষরমূল। তথা চামর সিশ্ছঃ। মূলে পুষর কাখীর পদ্ম পত্রাণি পৌষরে। সুত্রতা গন্ধপ-नामी काभीदा अभिका। मूत्रमा जूननी। विश्वापि र्यागास्त्रः। বর্ম পর্গ টঃ। বিভাবরীযুগণ হরি-**जा माक्र**श्तिजा ह । दता विकला । वरमामनी ७ पृती। वाा यी कन्छे-कातिका। ऋक् अर्थः ॥ श्रा व्यथं म-স্ধিগদ্য চিকিৎসা। শটী সুরতর-ত্তমাঃ স্থবিরদারু রামাঃ সমাঃ স নাগর সুধান্বিতাঃ পিব শতাব-রীস'যুতাঃ। মৃদুজ্বলন পাচিতাঃ সহ পুরেণ সন্ধিগ্রহ ব্যথাপহত্যে वृथा मिमित्रतमवन या क्रथाः ॥ উত্তমা ত্রিফলা। স্থবিরদারু বি-ধারা ইতি লোকে। সুধাগুড়্চী। পুরো গুগ্গুলুঃ ৷৷ বচা কবচ কচ্ছ্রা मरु ताम् वा जन्ता म्तास्य घन নাগরাতরুণদারু রামা পুরাঃ । বৃষা তরুণ ভীরুভিঃ সহ ভবস্তি সন্ধিগ্ৰহ ব্যথোরুজডিম ক্লম ভূমণ পক্ষবাত ক্রহং ৷৷ কবচঃ পর্য টকঃ । কচ্ছরা যবাসঃ। ভঙ্গুরা অতি-বিষা। সুরাহ্ব দেবদারু। অতরু-नमाक वृक्षमाक । शूद्रा अशुन्ः । বষা বহদ্দন্তী এরগুবৎ পত্রবিটপা

তদলাভে দন্তী চ গ্রাহা সমান গুণদ্বাৎ। তরুণ এরওঃ। ভীরুঃ শ-তাব্রী।। সুরদার শটী সুধালতা সুবহা শুঠিযুতা শৃতা জলে। স-পুরাঃ শমষন্তি সেবিতাঃ সতত সন্ধিগত সদাগতি।। সুবহারাস্না ॥ मुटेखत्र थानमा वान माक् क्रि-মা রাম্বা ভীরু কর্চ্চুর তিক্তা। বা-मा विश्वा शक्ष्मृली यूगाछा इना-त्रानारस मित्रवहार्जीः॥ थाव-দা হরীতকী। বাণঃ নীলপুশসহ-চরঃ। তিক্তা কটুকা।। 🛊 ॥ অথা-স্তকে বিধিঃ। ইহাপহাষ ব্ৰত মুক্ত-वाति खताति शृयामि गमाशश्रीत । স্বরচ্ছিদ জীবিতদঞ্চ নিত্য य-ত্যুঞ্জষণ চেতসি চিন্তবস্ব॥ ইছ **अ**ख्टक। बुङ मञ्चनामि निष-ম॰ ।। কপূর প্রকরাবদাতবপুষ॰ সদ্যোগ মুডাজুষ শশ্বদ্ভক্ত জ-तिष् ভाবुकज्रुष ভालक्त्रकः-क्षूरे। जल्लूनी मृष्ठ अस मस्वक-র° শুভাক্ষমালাধর পিঙ্গোত্তু-क क्रोकनाथ क्रितः हसार्क মৌলিণ স্তুহি।। ভিষ্ঠি ব্লিভি নি-ণীত সমিপাতে হস্তকাভিধে । ভেষজ জাহ্লবীনীর বৈদ্যো গোবিশ এব हि।। 😻।। অথ क्र-

भारमा हिकिৎम। उभीत हन्त नामीठा जाकामनक नर्ध देहेः १ गृष्ठः भीष्ठः जनः मनामारुवृष স্বশান্তবে।। বডঙ্গগান ।। 🛊 🛚 ।। ৰশিতো নিশি পৰ্যাবিতঃ প্ৰা-তৰ্থান্যাকত খুলকাৰ:। পীতঃ শমবতাচিরাদন্তর্দাহণ ত্বরণ গৈ-ख॰ ॥ शानाक्र ज्लाः क्षिज ধান্যকানি। ধান্যাককাথঃ।।।।।। পথ্যা॰ তৈল মৃত কৌডৈ ৰ্লিহন্ দাহম্বরাপহা। কাসাসৃক্ পিত্ত वीमर्भ श्वामान् रुखि वभी भि ॥ তৈল মৃত কোঁজৈ রিভ্যত্র ন সম্-চ্চষঃ স্নেছেন কেবলেন মধুনাপি निकाद। श्रशावत्नकः ॥ 🛊 ॥ প্রশমষতি দাহ মচিরাৎ দধিযুক্ कर्क्ष्मभन्नदेव त्रंभः। त्वरभा हि-মকর মলষজ নিম্বদলৈ স্তক্র পি-रिके दी।। श्यिकद्रः कर्णू द्रः। তথा চ ঘনসার শচন্দ্রসভ্ত ইত্যমরঃ ॥ উত্তান সুপ্তদা গভীর ভাষু কা--मामि পাত्रে निहिट्छ ह नाट्ने। गीठाबुधाता वरला পতछी निर-স্তি দাহ ছব্লিভ ত্বরক।। শীতা-স্তুসা তু শতশশ্চ বিলোডিতেন গব্যেন চন্দনযুতেন যুতেন । मार्च्यी ज्ञान्यावाद्या वा-

नाशात्री किथा विरम्थ मनिन (कार्ड मनबकालाः।। काश्चिकाः र्जगटिनाव ७०न॰ नाहनागन॰। অথ গোতক সংস্থিম শীতলীক্ত वानमा ॥ ॥ व्यवनमाह । मा-श्वमिष्ठ काम नित्रम ज्वः यात्रिष्ठः। नर्कत्रा मधूजःबुक्तः शा-यरयहां कंछर्भनः ॥ नाक्छर्भनः লাজশকুভি ৰূপতর্পণ।৷ বাপাঃ ক্মলহাসিন্যো জলজন্ত্ৰগৃহাঃ खाः। नार्या कन्मनिकारका। দাহ দৈন্য হর। মতাঃ।। মুক্তাবলী **চ**न्मन भी छला ना॰ मूर्ग स्वर्भाष्ट्र ভূষিতানা । নিত্রদিনীনা সুপ-(याधवावा यानिक्रनानााच इब खि मार्•॥ श्रद्धां म• ठामा विख्या-ষ তাঃ জ্রীরপনবেৎ পুনঃ। হি-তঞ্চ ভোজ্যেদন্ত বেনাপ্নোতি সুখ মছৎ।। প্রহ্লাদক কামক্তত र्यः।। 🛊।। जय हिख्जुममा हि-किष्मा। करनायरनाजा नवरना-ত্যানি করঞ্বীক্ত কণ্দা মলা-नि। পথाक जिकार्थक हिन् ७-গী যুতানি বস্তামুবিদিশ্রিতানি ॥ शिकु। श्रुवीय॰ नवतन विद्यवा প্রচেতনেতি প্রথিতাম্বিতার্থা। চিত্তভুমাপস্মৃতি ভূতদোষ শি-

রোকি রোগ ভূম নাশহেত্য ।। वलाषू ज्ञागमूब ।। न एका करक রো রস্তো গুড বিশ্বা কণান্বিত ! নিহিত নসি নুন স্যাৎ চিন্ত-ভূম বিনাশন ৷৷ সম্ভোক্তবভরো-**त्रसः ज**भिष्ठवृक्षस्क्रतमः ॥ মুরা মূদ্ধজ মেযাহ্বা মধূক মল-रमाखदेवः। यक्रज्क यथृणिदेशः পুর পাণিজ পাণ্শুভিঃ॥ লোহ नामक्दिरनाजि धृ १ मिछजु माभइः। अश्रावश्रः श्रीपः সৌভাগ্যকর উত্তমঃ।। মুরা এ-कानी। मूर्काका वाला। मक्छ-कः **(**मवनाकः । भूतः शक्षानुः । পাণিজঃ নখঃ। পা•শুঃ পর্প ট-कः। लार् अधकः। लामकः-ক উশীরবৎ পীতচ্ছবি তৃণবি-শেষ:। তদলাভে উশীর[•] আ**হ্**• ।। मृक्षीकामत्रमाद्र मथ्मामकना মুস্তামলক্যো ২মৃতা পথ্যা রেব-ত রামসেনক রজো রাজীকলৈঃ সংযুতাঃ। হন্য শ্চিত্তরুজোথ मर्फ् तमला खाका भरताली भरः পথ্যা পৰ্ণ ট রাজবৃক্ষ কটুকা শব্ क भूभाः मृष्ठाः ॥ मृष्कीका जाका । मध्नानकना कर्का। जादा-वङः जात्रधः। तामरमनकः किः

ब्राडिकिकः। ब्रह्मः नर्ग किः। क्राकीचनाः शक्तानाः। अथरमात्राः खत मोरा नर्भुतनना मध्कपनी । जा ह बार्था बाकी मिश्रिश लगा-প্ৰশ্ন। তথাপাত্ৰ ব্ৰান্ধী গ্ৰাহা। ষত উক্ত॰ গুণগ্ৰহে। ব্ৰাক্ষী মতি-थाना त्यवा। बत्रव्यी त्रमायनी ि ा बाकी वब्रखी देखि लाकि । পষঃ বালক । রাজবৃক্ষ আরথধঃ । मब्कभूनी मद्यभूनी ॥ 🛊 ॥ व्यथं कर्नकमा हिकि भा।। अतन পঃ সমস্ত নষ্ত্যক্স মেকঃ সমুদ্রি-ক্ত শোপক রক্তাবসেকঃ। বিপ-ৰুঞ্ শন্ত্ৰক্ৰিষা পূযজিৎসা ত্ৰণন্থণ গভঞ্চ ক্ৰত তচ্চিকিৎসা।। অয-মর্থঃ। অল্প ত॰ কর্ণক॰ একঃ প্র-লেপঃ অস্ত নাশ নষতি। তচ্চি-किৎमा जनिकिৎमा।। निमा विभानायय यानियक जाबीनुजी মৃল্কতঃ প্রলেপঃ। প্রভাকর দ্দীরযুত প্রভাবাদ্যন্তঃ সমন্তো २ शाथ कर्वकन्नः ॥ जलयः क हेक-मः ७० का द्वी ह भगाः भदेकः। मृत्थादेक व्लिभनः काद्याः कर्वम्-ल बूक्क्किश टेगब्रिक किंगी चकी कर्कलाः नवरेतः भरेकः। উद्देशः काक्षिकं मः भिरिकेः अर्थाः

नाः कर्वमृत्रम् ॥ निशु व्राक्तिक (बाः निष्णे। कर्पमून शतनं शतनं दिवं । क्नेम्माज्य लिए एक ला-পেন শামাতি । অশিশিরজ-लभतिम्बिक मुनिक क्या कीत निष्कुष पश्चिष् । नमाविधि मि विष्ठः नम् कर्वक्रक् नामक्रला-দিতা।। ভাগী জবা পৌষর ক केकात्री कर्जुबिटकाका घन जख-नीजिः। क्लीत्रम्की करूका त-गांजिः इन्छः क्यायः किल कर्न-কন্নঃ।। ভাগী বভনেটী ইতি লোকে৷ তদলাভে কণ্টকারীমৃ-व शाइं। ज्या शियात देंछि लात्क। लोकतः शूकत्रमूनः। উগ্ৰাবচা। সপ্তলী প্ৰডুচী। সলী-त्रभूत्री कर्ड हे न्दी। तेत्रा तात्रा ॥ मनमूल यथमानकला ठभला बिकना मरहोयि कित्राचयुज् । মরিচ পরিক্ষথিত মাশু বলাদপ-रिंख कर्नक क्रकः नकना ॥ ठ-शना शिक्षनी । 🐠 । जथ कर्छ-সজাগা চিকিৎসা। ফলত্রিক ত্রা-या भूखकंषि कनित्र मि॰श्नन শৰ্বনীভিঃ। কাথঃ ক্ৰন্তঃ ক্ৰন্ততি কওপজান কভীরবঃ পঞ্চর মাশু ষ্বৰ্ ।।, সি হাননো বাসকঃ।

শৰ্বরী হরিজা।। কিরাত কটুকা कना घटें करू करू का ती नहीं क निक किनिगां अपा करूँ क करें-कलारखाधदेवः। विषायनक शू-कतानल ललीवन्त्री वृदेश र्थाः হৌষধসথৈ রষ জবতি কণ্ঠ-इस गनः॥ नि कर्फ् तः। कनि ক্রঃ বিজীতকঃ। কিলিমণ দে-वनाकः। कर्षेकः यतिष्ठः। विया অতিবিষা। পুৰুর পুৰুরমূল। व्यः वामकः। वृषानिष्ठिः कि॰-विनिदेखेः यटशेषधन्यः यटशे-ষধস্য স্থিজিঃ। তেন এতৈঃ সহিতেন মহৌষধেন ইত্যর্থঃ ॥ ।। অংশান্ত্বণ বাতাদি প্রবৃ-দ্ধ মধ্য ক্ষীণ বাতাদি হেতুকা-না॰ সম্ভীপাকাদিসমিপাতত্ত্ব-রাণা॰ ত্রষোদশানা॰ চিকিৎ-माजिशीयल्छ। मा ह जूनारहजू-काना॰ विकृतकामीनां बटमा-मणानामिव विशालवा। সন্মিপাতস্বরাধিকারঃ। ভাবপ্রকাশঃ ॥ সন্ধিপাতনুৎ পু॰ নেপালনিয়ঃ। रेि तां कि निर्विकेः ॥

मित्रकः वि मगाक्वक्षनयुकः।

সং নি পূৰ্ব বন্ধ ধাতোঃ কৰ্মণি

ক্ত প্রতাবেন নিষ্ণান্धः॥ निवस्तन की नगार्थिनिकिंछ-वक्षनः॥ मगाग्विवक्षनः। ज॰ নি পূৰ্বক বন্ধধাতো রনট্ প্রভ্য-ষেন নিম্পন্ন ।। সন্ধিভঃ ত্রি সদৃশঃ। ইতি জটা-श्रवः ॥ मित्रिकः जि उनिविकः। यथा। (शायः मना मित्र्यक्षणमधाय-ভী নারাযণঃ সরসিজাসনসন্ধি-विकः। (क्यूत्रवान् कनक्ष्रधः लवान् कित्रीषे शती श्तिश्यव-**भू धृ जमधा**ठकः ॥ ইত্যानिত्य-श्रमयः ॥ निकिष्टः। ইতিকেচিৎ॥ मिष्विः खी मगा ध्निवर्छन । স• নি পূৰ্ৰ বৃতধাতোঃ ক্তি প্ৰ-ত্যবেন নিষ্পন্ন। ।। সন্ধিবেশঃ পু॰ পত্তনাদিষুদিগা-मिगतिष्टिष्ठअप्राप्तभः ॥ भृवीनि-गामाविष्ट्रमगृरः। ইতি,कनित्रः ॥ भूतारम बेरिबिरतगंजृभिः । इेंडि साम्यापयः। তৎপर्यायः । নিকর্ষণ ২। ইত্যমরভরতৌ।। किशः। नगतामिविधः दैयत वि-হারচারুভূমিষু। তত্র ঘষ নি-गिष्ठि॰ मिष्टित्या निकर्षन ॥ ইতি শব্দরত্বাবলী।।

मिहिंछ॰ कि निकंछे॰। सथा।॥

बक्तश्रुवारमः रहेगामि क्रकः
भरक ज्ञुल्यो मिहिंछ। जत्द
। साद॰ भूग ममारामा॰ मिनानि मण्णक ह।। ইতি প্রাধশ্চিভতত্ত্ব॰।।

महाखः वि मगाएनामीहरूः।

महिन्द्रा वि मगाएनामीहरूः।

महिन्द्रा वि स्था। योगमहोख
कर्मानः क्वानमः क्विसमः नवः।

चाचावछः न कर्मानि निवश्चि

धनक्षव॥ देवि ভगवक्री वायाः

8 व्यक्षायः॥

नम्रामः भू॰ क्रिगा॰मी। ইতি

मक्रिका ॥ काम्यक्यंना॰

नगमः। यथा। काम्याना॰ कर्यना॰ नगम॰ मम्याम॰ क्रिया

विमृः। সর্বক্यक्लज्यानः প্রাছ্

ख्यानः विष्ठक्याः॥ ইতি প্রीভগবদ্দীতাযা॰ ১৮ অধ্যামः॥

অপি চ। সম্যাদঃ কর্মনা॰ ন্যা
मः ক্রানা নক্তেঃ সহ। স্পলাস্পলাভ্যান্ত প্রহাণ॰ ন্যাদ
উচ্যতে॥ ইতি মাৎস্যে ১২০

অধ্যামঃ १। ।। চতুর্থাপ্রমঃ। তদাপ্রমধ্যা যথা। সর্বদঙ্গপরিভ্যানো ব্রদ্ধর্য্যসমন্বিভঃ। জিভেপ্রিষ্ত্ব মাবাদে নৈক্সিন্

বসতি শ্চিরণ।। অনারত তথা-शांत्र जिका वित्थ श्रानिलए । আত্মজান বিবেকণ্ট তথা হা-बावत्वारमः।। ठजूर्थ ठाखरम ধৰো হস্মাভিত্তে প্ৰকীৰ্ত্তিতঃ।। रें विवास ३८ व्यक्तावः ॥ 🗱॥ **छमाञ्चयकानामि प्रथा।** अव॰ व-না প্ৰৰে বিশ্বা ভৃতীয় ভাগ মাযু-বঃ। চতুৰ্ম ৰাৰুষো ভাগ॰ সন্ম্যা-(मन बर्ष्ट क्यार्गा व्याना-ত্মনি সংখ্যাপ্য দিজঃ প্রব্রজিতো ভবেৎ। যোগাজ্যাসরতঃ শাস্তো उन्नविमापितायणः।। यमा यनि সম্পন্ন বৈত্যত সৰ্বস্তুষ। তদ। সন্ম্যাস মিচ্ছেত্রু পতিতঃ স্যাদ্বি-পর্যায়ে ৷৷ প্রাক্তাপত্যামিরুপ্যে-कि गातायी गथ वा पूनः। माखः প্ৰক্ষাখোসৌ ব্ৰহ্মাঞ্ৰম মুগা-শ্রমেৎ ॥ ইতি কৌর্মে উপরি **जारम २१ व्यक्तीयः ॥ 🖝 ॥** करली ক্ষজ্রিষ-বৈশ্যবোঃ সন্ম্যাস নিষে-(श वर्था। जन्मरमर॰ गवानस॰ मन्त्रामः भनदेशकृकः। दमवदत्र मुखादगिष्ठि॰ करनो शक्ष विवर्क (य९।। ইতি कलो मम्रामिन-रवश्यक कि खार दिवा विश्वक । ইতি মলমাসতত্ত্ব।। সন্ন্যাস প্র-

छिरवधक करनो कल विरमा र्ज-ति । इंडि मनमामञ्जू अंडि-জ্ঞাযাণ প্রীরঘুনন্দনভটাচার্য্যঃ ॥ 🛊 ॥ टेठ्यमाटन नम्यानकत्व-श्रमान स्था। देव्ह निर्वाद-সবং স্ব্যাৎ নৃত্য গীত মহোৎ-সবৈ:। স্বাধাৎ ত্রিসন্ধ্যা রাত্রো **চ रुविया। भी जिल्लियः ॥ भि** বস্বৰপতা শাতি শিবপ্ৰীতি-क्दः शदः। कालियामिषु या মর্ভ্যো দেহ সংপীড্য ভক্তিতঃ ৷৷ অশ্বমেধফল তদ্য জাষতে চ পদে পদে সর্বকর্মপরিত্যা-भी मिरवादमवभद्रायनः ॥ ज रेक ब्लागतन नर्गाजाको न् **छा अ**ञ्हरे**लः।** नानाविदेश र्याः श्वादेषा म् देखा क विविदेश त्रिशा नानारवन्धरेत मृटिजाः প্রীষত্তে শঙ্করপ্রভুঃ। কি মলভ্যুণ ভগবতি প্রসমে নীললোহিতে য় তক্ষাৎ সৰ্বপ্ৰৰত্নেন তোৰণী-ষো মহেশ্বরঃ। শশ্ববাদ্যাণ শশ্ব-তোষণ বৰ্জ্জবৈৎ শিবসন্নিধী।। গ্রামাদ্বহি রিমণ শক্তো রুৎসবণ কারযেমুদা। উপোষ্য হন্বা সং- ॥ ক্রাস্ত্যাণ বত মেতৎ সমাপয়েৎ ৷৷ ইতি বৃহদ্ধশ্বপুরাণে উত্তরখ-

(७ > जशायः॥

महागरी पु॰ महागमा अविभि-कः। ठजूर्वाञ्यमी। जद्मर्यगयः । পারাশরী ২ মক্ষরী ৩ পরি-বাট্ ৪ কৰ্মন্দী ৫ শ্ৰমণঃ ৬ ভি-कुः १। ইতি জটাধরঃ।। তস্য लक्षनानि यथा। मर्बः गृशानिकः ত্যক্ত্য মুগুতমুখে গৈরিক-কৌপীনাচ্ছাদন দণ্ড কম্প্ত-লুঞ্চ বিভূৎ ভিকাবৃত্তি নিৰ্জ্জনে তীৰ্থে বা স্থনা কেবল মীশ্বর 1-রাধন করোতি ষঃ স সম্যাসী । म ज् ठजूर्बियः। ऋगैठदः ऽ বহুদকঃ ২ হ॰সঃ ৩ পরমহ॰সঃ ৪ । তेमा धर्माः यथा। मनत्म वा कारम वा लारकु वा काश्वत তথা। সমবুদ্ধি র্যস্য শশ্বৎ স স-मानीि कीर्खिजः॥ मखः क-মণ্ডলু• রক্তবস্ত্রমাত্রঞ্চ ধারষেৎ৷ নিত্য প্রবাসী নৈকত্র স সন্মা-সীতি কীর্ত্তিতঃ॥ শুদ্ধাচারদ্বি-জানক ভুঙ্কে লোভাদিবজ্জিতঃ । কিন্তু কিঞ্চিম যাচেত স সন্যা-मीछि कीर्खिङः। न वाशाती নাশ্ৰমী চ সৰ্বকৰ্মবিবজ্জিতঃ। शारमनातायन नम्ब म मन्ना-

बषाठात्री मञ्जाषालाण विक्रिंजः। সর্ব বন্ধময় পশ্যেৎস সম্যাসী-তি কীৰ্ত্তিতঃ।। সৰ্বত্ৰ সমবুদ্ধি শ্চ হিণ্সা মাষা বিবজ্জিতঃ । ক্রোধা-হকার রহিতঃ স সন্ন্যাসীতি কী-র্ত্তিতঃ।। অষাচিতোপস্থিতঞ্চ মি-ফীমিষ্টঞ্ ভুক্তবান্। ন যাচেত ভক্ষণাৰ্থী স সম্যাসীতি কীৰ্ত্তিতঃ ৷৷ ন চ পশ্যেৎ মুখ জ্বীণা ন তি-ষ্ঠেত্তৎসমীপতঃ। দারবী মপি বোষাঞ্চ ন স্প্রশেদ্যঃ সু ভিক্তৃকঃ ।। অষ সন্যাসিনা ধর্ম ইত্যাহ कमरमाख्यः। ইতি बन्नदिवदर्ख-প্রকৃতিখণ্ডে ৩৩ অধ্যায়ঃ ।। 🟶 🛚 ।। ष्मि ह । मर्बन्यारमा हरतो जुल थर्माः महाामिनाः क्रवः। द्रोक्किके-বাসা দণ্ডী চ বিভর্ত্তি মৃৎকম-खन् ।। मर्बे मममभी ह न्यद्र-बातायण गमा। करताछि छु-**মণ** নিত্য গেহে গেহে ন তিষ্ঠ-তি।। বিদ্যা মন্ত্রঞ্চ কল্মৈচিৎ ন **ममा** ह देनवङ । करब्राङि ना-শ্রমণ ভিক্ষু করোতি নান্যবাস-ना ।। करत्राि नानामक नि-र्ष्यारः मनविकिं छः। न नामू जू दे देवाक जी मूर्य न हि श-শাতি॥ ন বাঞ্ছিত ভক্ষাবস্তু যা-

চতে গৃহিণ বভী। ইতি সন্মা। मिना॰ धर्म गिछा। इ कमला खरः ।। ইতি बद्धारेवर्र्ड श्रीक्षक्षन्न-थट ७० विशायः ॥ 🛊 ॥ वनाक । তপদা কৰিতে। ২তার্থ যস্ত ধ্যানপরো ভবেৎ। সন্ম্যাসীহ্ স বিজ্ঞেয়ে। বানপ্রস্থাপ্রমে স্থিতঃ।। যোগাভ্যাসরতো নিত্য মারুরুকু क्किंटलियः। क्वानाय वर्त्वटल ভিক্ষু: প্রোচ্যতে পার্মেষ্টিক: ॥ যস্তাত্মরতি রেব স্যামিত্যতৃপ্তো মহামূনিঃ। সমাক্চ দমসম্পন্ধঃ স যোগী ভিক্ষু রুচ্যতে ।। ভৈক্ষ্য॰ শ্রুতঞ্চ মৌনিত্বণ তপো খ্যানণ বি-শেষতঃ। সমাক্চ জ্ঞান বৈরা-গ্য॰ ধর্মো ২য॰ ভিক্ষুকে মতঃ।। জ্ঞানসন্ম্যাসিনঃ কেচিৎ বেদস-मागिता १ शदा। कर्यममानि-নঃ কেচিৎ ত্রিবিখঃ পারমেষ্ঠিকঃ ॥ रबागी ह बिविरदा एकरवा ভৌতিকো মোক এব চ। তৃতী-ষো ২স্ত্যাশ্রমী প্রোক্তো ষোগ-মূর্ত্তি সমাশ্রিতঃ॥ প্রথমা ভাবনা পূৰ্বে মোকে দ্বকরভাবনা। তৃ-তীৰে চান্তিমা প্ৰোক্তা ভাবনা পারমেশ্বরী।। যতীনা যতচি-ত্তানা॰ ন্যাসিনা মূর্দ্ধুরেতসা॰।

আনন্দ বন্ধ তৎ স্থান বন্ধার। बर्द्ध खूनिः ॥ स्वाभिना मम्छ॰ कानः (बामाबाः भन्न सकतः। আনন্দ দৈশর ৰন্মান্মকো না-ৰ ৰ্ত্ততে নরঃ।। ইতি গাৰুডে ৪৯ ज्यायः ॥ ।। जभत्रः। छान-मन्त्रामिनः क्लिट्डिम्मनागित्ना २ शद्धाः कर्षामधानिक खुटना जिविधाः भतिकीर्डिजाः॥ सः म-र्वमङ्गिक्षिरका निषमु काशि नि র্ভবং। প্রোচাতে জ্ঞানসন্মাসী স্বাদ্মন্যেৰ ব্যৰন্থিতঃ।। বেদ মে-ৰাভ্যদেমিভ্য নিরাশী নিশারি-এহঃ ৷ প্রোচ্যতে বেদসন্যাসী मूम्कृ विकिट्छिक्ति वः।। व ख्री-नाष्ट्रमाथ रूषा जनार्भनगत्त्रों वि-कः। एकवः मः कर्यमग्रामी मः श्यख्डभद्रायनः॥ जयाना यनि চৈতেয়া জানী স্বভ্যধিকো মতঃ ৷ ন তস্য বিদ্যুত্ত কর্মান লিছ ৷-मा विनिम्छिः॥ निर्मामा निर्छ ষঃ শাক্তো নিৰ্দশঃ পৰ্ণভোজনঃ । कीर्गटकोशीनवागाः मानद्या वा शानल्भवः॥ जनात्री मि ভাহারো আমালাল সমাহরে । অধ্যাত্মরতি রাসীত নিরপেকো निताभियः॥ जाजादेनद महादयन

यर्गार्थः विष्ठत्त्रिष्ट् । यर्गार्थं भि-ত্যত্র সুখার্থ মিভি চ পাঠঃ। না-ভিনন্দেত মরণ নাভিনন্দেত জী-বিত । । কাল মেব প্রতীক্ষেত निरम्भ ভৃতকো यथा। नारधा-তব্য ন বক্তব্য ন শ্রোতব্য ক্ माठन।। এব॰ জ्डानशदता रवाशी ব্ৰহ্মভূযাৰ ক্লতে। একবাসোথ वा विदान् कोशीनाच्छामत्नाथ वा।। मुखः मिथी वाथ ভবেৎ ত্রিদণ্ডী নিম্পরিগ্রহঃ। কাষা-ষ্বাসাঃ সভত ধ্যান্যোগপরা-यनः ॥ वागाः व्कम्ल वा कामः प्रवानस्थित वा। नमः म-ত্রৌ তথা মিত্রে তথা মানাপমা-नरमाः ॥ टेज्रिकन वर्ज्यमिठाः रेनकान्नामी ভবেৎ क्वि। यस्र (भारह्म हाना मारिकामानी छ-বেদ্যদি ৷৷ ন তদ্য নিষ্কৃতিঃ কা-চিদ্ধর্মশান্ত্রেষু কথ্যতে। রাগ ष्वय विमुकाञ्च ममलाकु। भा-काक्षनः॥ श्रानिहि॰मानिवृद्धन्त योगी मा। भर्वनिष्णृशः। मृकि-পত॰ ন্যাসেৎ পাদ॰ বস্ত্রপত॰ জ-में शिरवर ॥ मंडाशू जा॰ वेरमहा-नी॰ मनःशृं अमाहत्त्र । देनक-व निरमित्मत्म वर्षात्जा १ नाव

ভিক্ষুকঃ ৷৷ স্নান শৌচরতো নি-ভ্যুণ কমঙলুকরঃ শুচিঃ। ব্রহ্ম-ষজ্ঞরতোঁ নিত্যু বন্বাসরতো ভবেৎ ৷৷ মোকশাস্ত্রেষু নিরতো वक्षमृती फिएलसियः। मसार-ক্ষার নিশ্মকো নিন্দা পৈশুন্যব-জ্জিতঃ।। আত্মক্তান গুণোপে-তো যতি শ্মোক মবাপুষাৎ। #! অভ্যসেৎ সতত বেদ প্রণবা-খ্যুণ সনাভনণ ৷৷ স্নাদ্বাচন্য বিধা-त्नन शिंठ र्प्मवालया नियू। य-জ্ঞোপবীতী শাস্তাত্মা সশপাণিঃ সমাহিতঃ৷৷ ধৌতকাষায়বসনো ভস্মচ্ছনতনূরুহঃ। অধিযজ্ঞ বন্ধ জপেদাधिদৈবিক সেব চ ॥ ञ्या-খ্যাত্মিকঞ্চ সতত বেদাস্তাভিম-७ ३ ४९। भू त्वयू वाथ निवमन् ব্ৰন্সচারী যতি শ্বুনিঃ॥ বেদমেব।-ভ্যেসেমিত্য স্বাভিপর্মাণ গতি ৷ অহি 'সা সত্য মস্তেষ বন্ধচৰ্য্য ু ভপঃপরে ।৷ ক্ষমা দয়া চ সস্তো-ষো ব্ৰতান্যস্য বিশেষতঃ। বেদা-ख डाननिर्छ। वा शक्ष खान् म मारिजः॥ अर्यामस्तरः नाषा ভৈক্ষান্ধেনৈব তেন হি। হোম-মন্ত্ৰান জপেমিত্য কালে কালে मयाहिष्डा। साधाय ठास्र अ

ৰ্যাৎ সাবিত্ৰী সন্ধ্যযো জ্ৰুপেৎ । शारीं मञ्ज पत्र त्मकार अ পর্যেশ্বরণ।। একাল বর্জ্জবৈদ্যি-ত্যে কাম জোধ পরিগ্রহ। এ কবাসা দ্বিবাসা বা শিখী যজ্ঞো-পবীতবান্।। কমগুলুকরো বি-দাণস্ত্ৰদন্তী যাতি তৎপদণ। ইতি কৌর্ম্মে উপরিভাগে ২৭ অধ্যায়ঃ ।। 🟶 ।। ব্যাস উবাচ। এতত্ত্বাশ্রম-নিষ্ঠানা ষভীনা নিয়তাত্মনা ৷ ভৈক্ষেণ বৰ্ত্তন প্ৰোক্ত ফল মূ-লৈ রথাপি বা।। এককাল চ-রেক্তৈক্ষণ ন প্রসজ্যেত বিস্তরে। ভৈক্ষে প্ৰসক্তে। হি যতি ৰ্ৰিষবে-রপি সজ্জতি।। সপ্তাগার চরে रिक्षक मलाएक एव भूनक्टरत्र । প্রকাল্য পাত্রে ভূঞ্জীযাদক্তিঃ প্র-कानराख् ७९॥ अथ वानामूगा-দাষ পাত্ৰ ভঞ্জীত নিতাশঃ। ভূক্তা চ সন্ত্যজেৎ পাত্ৰ- যাত্ৰা-याज यत्नानुभेः ॥ विशृत्य मन यूयल वाकारत जुक्कवकारन । বৃত্তে শরাবসংগাতে ভিক্ষাণ নি-**छा॰ विक क्तर्त्वः ।। भारति** इ-মাত্রণ তিষ্ঠেত কালণ ভিক্ষু রধো-মুখঃ। ভিক্কেত্যুক্তা সক্কর্ফী ম-श्रीयाषाञ्चा श्राप्ताः ॥ श्राप्ता

भानि भारको ह मनौहवा वथाविधि । আদিতো দশ্যিদ্বান্ধ ভুঞ্জীত প্রাজ্যুথো ২ছরঃ।। হছা প্রাণাহ-তীঃ পঞ্চ আসানকৌ সমাহিতঃ । जाहमा (एवं बन्धांवं शायीं छ भत्रत्यश्वतः ॥ व्यक्तावुः माक्रभाः **बक्ष मृग्रय॰ देवनव॰ छथा।** ठञ्जाति ষতিপাত্রাণি মনু রাহ প্রজাপ-তিঃ ৷৷ প্রদোষে পররাত্তে চ মধ্য-রাত্রে ভথৈব চ। সন্ধ্যাস্বত্নি বি-শেষেণ চিন্তযেমিত্য মীশ্বর ।। ক্সত্বা হৃৎপদ্মনিলযে বিশ্বাখ্য বি-শ্বসম্ভবণ আত্মান সৰ্বভূতানা পর্ত্বাত্তমসঃ স্থিত ৷৷ সর্বস্যা-ধার মব্যক্ত মানস্দ জ্যোতি র ব্যয়ণ। প্রধানপুরুষাতীত মাকা-শ দহন পর ।৷ তদন্তঃ সর্ভা-वाना मोबाबः उन्नक्शिनः। शा-ষেদনাদি মদৈত মানন্দাদিগুণা-লম্ব ৷৷ মহান্ত পরম বন্ধা পুরুষ সত্য মব্যষ্। সিতেভরারুণাকা-র॰ মহেশ॰ বিশ্বৰাপিণ।। ওঙ্কা-রান্তে ২থ বাস্থান সংস্থাপ্য পর-মাত্মনি। আকাশে দেব মীশান ধ্যাষীতাকাশ মব্যষ ।। কারণ সৰ্বভূতানা মানক্ষৈকসমাঞ্ৰয় । পুরাণ পুরুষ শস্তু ধ্যাষশ্বচ্যেত

বন্ধনাৎ।। যদা গুহাযাণ প্রক্রভৌ জগৎ সম্মোহনালযে। विठिखा পরমণ ব্যোম সর্বভূতৈককারণ।।। জীবনং সৰ্বভূতানাং যত্ৰ লোকঃ প্রলীয়তে। আনন্দ ব্রহ্মণঃ সূদ্ধ य १ भग छि यू यू कदः॥ जन्म ८४४ নিহিত বন্ধ কেবল জানলক্ষ-ণ । অনন্ত সত্য মীশান বিচি-স্ত্যাসীত সংযতঃ।। গুহাদ্গুহ-তমণ জ্ঞানণ যতীনা মেতদীরিতণ । যো ২নুতিপ্তেত সতত সোশু-তে যোগনীশ্বরণ।। তস্মাৎ ধ্যান-রতো নিত্য মাত্মবিদ্যাপরাষণঃ ৷ জ্ঞান॰ সমভ্যসেদ্ধান্ধ্যাণ মুচ্যে-ত ভববন্ধনাৎ।। যদা পৃথক্ত্ব মাত্মান॰ সৰ্ক্সাদেব কেবল॰ । আনন্দ মক্ষর জ্ঞান ধ্যাযীত চ পুনঃ পরে ।। ষম্মান্তবন্তি ভূতানি ষদাত্বা নেহ জাষতে। সতন্মা-দীশ্বরো দেবঃ পরস্তাদেবা হধিতি-ষ্ঠতি।। যদন্তরে তদাগন শাশ্ব-ত শিব মব্যষ । ষমাহ তত্প-রো ষম্ভ স দেবঃ স্যান্মহেশ্বরঃ।। ব্রতানি যানি ভিক্ষুণা তথৈবো-প্রতানি চ। একৈকাভিক্রমে তেষাণ প্ৰায়শ্চিত্তণ বিধীয়তে।। উপেত্য চ ব্ৰিষণ কামাৎ প্ৰাষ্

শ্চিত্ত সমাহিতঃ। প্রাণাযামস-মাযুক্তণ স্বর্যাৎ সান্তপন শুটিঃ ॥ ७७ म्हरत्र नियमान् इष्यान् সংৰত্যানসঃ। পুন রাজ্ঞম নাগ-তা চরেন্ডিকুরভব্রিতঃ।। ন নর্ম-बुक बन्द रिनडीं विशेषि । उपाणि न ह कर्डवाः क्षानदश द्य मिक्रभः ॥ अक्त्राद्धां भवाग-**क्ट शानाबाबनंदन् उपा। उ**द्धा-मृष्ठ॰ श्रक्षवा॰ यकिन। वर्षानः कार्या । खिरा मना छः। खिरा म-ভाषिकः कन्চिৎ नाखाश्या हेि স্মৃতিঃ।। হি॰সা চৈষা পরা তৃষ্ণা या गांबाखानना निका। यदम्छ-मुविन नाम थाना एउ जू वहि-শ্চরাং ॥ স ভস্য হরতে প্রাণান্ रया यमा इत्रट थनः। धनः क्रवा न मुकीका जिनवृत्छ। जञजूञः ॥ जृत्या निर्दिष माश्रव करत्रक।-ख्यायन बंज । विधिना भाख-দৃষ্টেন সম্বৎসর মিতি শ্রুতি: ॥ खूरवा निर्दिष माश्रम कटत्रिक् রভক্তিতঃ। অকন্মাদপি হিংসান্ত यि जिन्दुः मभावत्त्र ।। ज्या ক্লুতিক্ত্ৰ চাজাৰণ মথা-शिवा। ऋत्मिनिखयतने बना।

ज्ञिय॰ मृक्षे। विकि यीनि ॥ टिन ধার্ষিত্ব্যা বৈ প্রণাষামাল্ক ষো-ডশ। দিবা ৰপ্নে ত্রিরাত্রণ স্যাৎ व्यागायायलङ छथा।। अकारम मधूमा रम ह मवं आदक उदेश्व ह । अग्रकार्य क्रिक थाजा-भेडाः विश्वेषयेशी काम निक्रेग ग्रहक मिन्निक न्यालक चर्मामहर भी नगरी चना शा-नवट्ठा छट्दर से व्यक्त गद्रभः क्यांचिः अखिश्रांचन सक्तन । रका २ छत्राचा भन्न जन्म म बिटख-स्या मटर्यंतः ॥ अव (मटवा मरा-(क्वः क्विकः भन्नद्रभग्नः। **मिवाक्य बरेबङ छमामिछा। छ**त्र **गतः ॥ वद्या अशोषट** एवः স্বধায়ি জ্ঞানস জ্ঞিতে। আত্ম-ৰোগাৰুৰে তত্ত্বে মহাদেব স্ততঃ मृजः ॥ नीना । देवन महादाना-ব্যতিরিক্ত প্রপশ্যতি। ত মে-বাত্মান মধ্যেতি যং স বাতি পর॰ भम• ॥ मनाटेख द्व स्रमात्रान॰ বিভিন্ন পরমেশ্বরাৎ। ন তে পশাস্তি ত দেব বৃথা তেষা পরিশ্রমঃ।। এক মেব পর॰ তান্ধ विद्धार ७ व भवागः। म दावञ्च म्हार्टनर्दा टैनछिबङ्घाय वशर्छ।।

তম্মাদ্যত্ত্বেন নিযতং যতিঃ সংয-তমানদঃ। জ্ঞানযোগরতঃ শা **ट्या महादमक्रमद्वायगः।। अस्** वः কিথিতো বিপ্রা মতীনা মাঞ্জমঃ खडः। शिकायरह्न अजुना मू-नीनाः शुर्व मीजिकः॥ न शूख निश सामित्वा स्वामित्र अन्-जान वार्षा थाक. विवक्षा अप निव ॥ देखि वृद्धि निसमान। (मङ्गुङ: विशान: १) শুগতিপরিভাবে মন্তবেদেকহে-णुः। न ज्विज्ञित्त द्वा मुख्दा वा दिनामः श्रामित्रक्षमनता स्व নিত্য মেৰাচরন্তি।। ইতি কৌর্মে উপরিভাগে ষতিধর্মো নাম ২৮ व्यथायः ॥ 🐠 ॥ यूत्रस्वरम् नन्।-मिना॰ नामानि जेशाश्यक यथा । जात्नी दानाञ्चानार्यम बना। षिछीयाहार्द्या विकृ:। कृछीया-ठाट्या क्रकः। ठजूर्थानाट्या ब-निर्वः । शक्याहार्याः मक्तिः । यश्रीकार्याः भद्रागदः। मश्रमाका-र्वा। वानः। अस्मानकः खः कः। नवमाहाद्या शोखः। मण-याठाटका शाविषः। अकाषणः गक्ता हार्याः। नजामूभमत्था षाठार्याजयः बना विक् कृष्णुः।

ত্রেতাযুগে আচার্য্যত্রয় বশিষ্ঠ শক্তি পরাশরাঃ। দ্বাপরে আচা-र्याष्य वााम छाको। कनियुरम অচাৰ্য্যত্ৰৰ গৌড গোবিন্দ শ-করাচার্যাঃ। শকরাচার্যাস্য চ-ছারঃ শিব্যাঃ স্বৰূপাচার্যাঃ গলা-্চার্যঃ ত্রেটকাচার্যঃ পৃথীবরা-कार्य हेडि॥ ।। अथ ज्ञानामानि । बनगानादामा नियाः जीपः चा-্ৰাৰশ্চ। পদ্মাচাৰ্যাস্য শিষ্যত্ত্ব॰ बनः अक्रगण्डा खाउँकाठार्या-স্য শিষ্যত্ত্ৰষণ গিরি পর্বত সাগরা ইতি। পৃথীধরাচার্যাস্য শিষ্যত্র-ৰ-। সরস্বতী ভারতী পুরী চেতি ৷ ইতি **শ্রীশঙ্ক**রাচার্য্যবিরচিত সপ্তমসূত্রণ। 🟶।। অপিচ। তী-ৰ্ণাশ্ৰম ৰনারণ্য গিরি পর্বত সা-গরাঃ। নরস্বতী ভারতী চ পুরী-তি দশ কীৰ্ত্তিতাঃ ৷৷ তেষাণ লক্ষ-ণানি যথা। ত্রিবেণী সঙ্গমে তীর্থে ভত্তমস্যাদি লক্ষণে। স্নাৰাত্তত্ত্বা-র্থভাবেন তীর্থনামা স উচ্যতে ॥ ১॥ আশ্রমগ্রহণে প্রৌচ আ-শাপাশবিবর্জিতঃ ৷ বাভাষাত विनिम्क अञ्मा अयमकन ॥ २॥ मूद्राया निर्याद्व त्मरण वटन-ৰাসণ করোতি যঃ। আশাগাশ

বিনিশুক্তো বননামা স উচাতে ॥ ৩॥ অরণ্যে সংস্থিতো নিভ্য শানন্দনন্দনে বনে। ত্যক্ত্ব। সর্ব-भिष्ठ विश्व भागमनक्षण किला। ৪য় বাসো গিরিবরে নিত্যু গী-তাভ্যাসে হি তৎপরঃ। গম্ভীরা চলবৃদ্ধিশ্চ গিরিনামাস উচাতে য় ৫।। বসেৎ পর্বতমূলেষু প্রে-ঢো যো ধ্যান ধারণাৎ। সারাৎ সার বিজানাতি পর্বতঃ পরিকী-র্ত্তিতঃ ॥ ৬॥ বদেৎ সাগর গম্ভী-রো বনরত্ন পরিগ্রহঃ। মর্য্যাদা-শ্চ ন নজ্বেত সামরঃ পরিকীর্ত্তি-ভঃ॥१॥ স্বরজ্ঞানবশো নিত্য यत्रवामी क्वीयतः। मःमात्रमागः রে সারাভিজ্ঞো যোহি সরস্বতী ॥ ৮॥ विमाजादान मन्भृनः म-ৰ্বভার•পরিভ্যক্তেৎ। দুঃখভার• ন জানাতি ভারতী পরিকীর্ত্তি-তঃ ॥ ৯॥ জ্ঞানতত্ত্বেন সংপূর্ণঃ भूर्वञ्चलाम ख्रिञ्ः। लाम उन्न-রতো নিত্য• পুরীনাষা স উচ্য-ए ॥ ५ ॥ हे व्हक्त्विति-कत्य विमान्नशास्त्रभावश्र्वः ॥ 🛊 ॥ <u> वीमनानिय उवाह।</u> অবধ্তা-শ্রেনো দেবি কলো সন্মাস উচ্য-তে। विधिना स्थन कर्छवा छ ८-

मर्बः भृग् माम्भुष्ठः ॥ बन्नाकारम সমুৎপক্ষে বিরতে স্বর্গকর্মাণি । व्यथा श्रविमानि भूनः সন্মাসা-ध्येय माठदत्र ॥ विश्व वृहकी পিতরৌ শিশু ভার্য্যাণ পতিত্র-তা । তাজু সমর্থান্ বস্তু শচ প্রবজন্মারকী ভবেৎ।। সম্পাদ্য গৃহকর্মাণি পরিতোষ্যাগমানপি । निर्मात्या निलयाकात्म्ङ्भिका-মো বিজিতেন্দ্রিयः।। আহ্য স্ব-জনান্ বন্ধুন্ আমৃত্বান্ প্রতিবা-সিনঃ। প্রীজ্ঞানুমতি মন্বিচ্ছেলা হাজ্জিগমিবু র্মরঃ।। তেষা মনুজ্ঞা মাদাৰ প্ৰশ্ব শর্মেবতা । গ্রামণ अनिकेशिक्क नित्रत्भरका गृश-मियार ॥ जुक्तः मन्जात्रगाटेन र्यः পরমান শবৃ हिछः। अलावशृष्ठः जनकः गना मः <u>आर्थरविषकः</u> ॥ गृश्राज्य भन्न खन्नन् गरेमछि গত বৰঃ। প্রসাদ সরু যে নাথ সন্মাৰগ্ৰহণ প্ৰতি।। নিবৃত্তগৃ-স্কর্মাণ বিচার্য্য বিধিবদ্গুরু: । শাস্ত বিবেকিন বীক্ষ্য দ্বিতীযা-শ্ৰম ৰাদিলৈও।। ততঃ শিষ্যঃ ক্ল-ভন্নাৰে। ৰভান্মা বিহিতাহ্লিকঃ। श्रान्तव विमुक्तार्थः प्रवर्धीः नि र्फर्य शिष्न्।। मिवा बना ह

विक्ष क कजन सगरेवः मह। **अययः जनकामा कावामा ५**-वर्षर खथा।। अब रा शिखतः शृ-জ্যা বক্ষ্যামি শৃণু তানপি। পিতা পিতামহদৈচৰ প্ৰপিতামহ এব চ ।। याजा পिতायशै प्रवि ভरिथव প্রপিতানহী। মাতামহাদযো ২-প্যেবং মাতামস্থাদযো ২পি চ ৷৷ প্রাচ্যা মৃষীন্ যজেদেবান্ দক্ষি-ণস্যা॰ পিতৃন্ যজেৎ। মাতা-মহান্ প্রতীচ্যান্ত পূজ্বেদ্যাস-कर्षावि॥ शृक्षीमि क्रमरा मन्।-मामनाना॰ इव॰ इव॰ । Cमरा-षीन् क्रमण खबानाइ भूजाः न गारुत्व ॥ मन्क्राविधिवरखङाः शिखान प्रमाप श्यक् श्यक्। **शिख्यमानविदिना म्या शिख्॰** যথাক্রমণ।। ক্রতাঞ্চলিপুটো ভূষা প্রার্থবেৎ পিভূদেবতাঃ। তৃপ্যশ্ব॰ পিতরো দেবা দেবর্বি মাতৃকাগ-नाः॥ अनाजीजभारम वृष यन्नी-जक्रकाहिता । जान्ग गर्थि षा जू अनग ह भूनःभूनः। अन-ब यविनिर्मुक गान्न आकः अकः ब्रायर ॥ शिका कार्देश्य गर्द्याः তৎপিতা প্রপিতামহঃ। আত্ম-न्याञ्चार्थनार्थाय त्रव्यामाञ्चकियाः

मूरीः॥ উত্তরাভিমুখো ভূদা পূ-ৰ্ববৎ কল্পিতাসনে। আবাছাত্ম-পিতृन् प्तिव प्रष्णां शिखः मयः फिरन्।। প্রাগগ্রান্ দক্ষিণাগ্রা॰ फ পশ্চিমাগ্রান্যথাক্রমাৎ। পি-खार्थ माखदब्रफर्जानूमगवान् श्व-कर्मान ।। मगाना आक्रकमानि श्वक्रमर्भि ठवर्जन। यूयुक् निठख-শুদ্ধার্থ মিমণ মন্ত্রণ শতণ জপেৎ ॥ হ্ৰী॰ ত্ৰাম্বক॰ যজামহে সুগন্ধি॰ পুষ্টিবৰ্দ্ধন । উৰ্বাৰুক মিববন্ধনা-मृत्छा। मू कीय मा मृठा९ ॥ উপा-मनानुमादत्र विमाग्यः भूर्व-ক। সংস্থাপ্য কলসং তত্র গুরুঃ পূজা॰ সমারভেৎ।। ততন্ত পরম-बन शाचा भाखववर्षना । विधा-ষ পূজাণ বন্ধজো বন্ধস্থাপন মা-চন্দেৎ।। প্রাপ্তক্ত সংস্কৃতে বঙ্কৌ সকলোক্তাহতি গুৰুঃ। দত্বা শি-ষ্য সমাষ্য সাকল্য ছাব্যেজু छ ।। जातो वाशिष्ठि र्षा वानरहामः अकब्राय । वारना श्लानः नयान एकामान वादनो চ বাষবং ৷৷ তত্ৰ হৌম ততঃ স্প-यां त्मिश्र मधाष्यमुक्तरमः। भृथिवी म निन॰ बङ्कि वीयू द्राकाण स्वव **চ ।। श**टक्का तमक्क क्लाक क्लाक

न्याक्षां क्षांक्षां । क्षा गांनि भाषान्ह गार्गाट्ये डक. भव- 11 त्यांब- चक् नचन • जिला माथ वृक्षीसियानि है। स्य शमारे छ छ का प्रकारिक शम क्रक-्रत्रथ ॥ ड्री॰ त्माणि वरू विव्रका विभाषा ज्यामः विठ हेडामि । চতুৰি শতি তত্ত্বামি কৰ্ম্মাণি বৈদি-कानि ह।। र्षायो निष्ट्रिक हन र मृठबिक खरबङ्गः। विजावा ্মৃতবৎকাৰ রহিত সর্বকর্মণা।। শ্বরন্ তৎ পরম বজ্জ বজ্জসূত্রণ ममुद्धादार। थे॰ क्वी॰ इ॰ इंडि मखन ক্ষমাদুত্তাৰ্য্য তত্ত্ববিৎ।৷ ৰজ্ঞসূত্ৰণ করে ধৃদ্বা পঠিদ্বা ব্যাহ্নতিত্রয় । বহ্নিজাষা সমুচ্চাৰ্য্য যৃতাক্ত ম-नल किर्पर।। श्टेष्ट्र मूगवीज्ञः कामवीक अमूक द्रन्। ছिन्ना भि-খাণ করে রুদ্ধা ঘৃতমধ্যে নিযোজ-रिष्।। बन्नभूखि निर्थ दः हि रानी ৰূপা সনাতনী। দীষতে পাবকে श्रानः शष्ट्र प्रिव नत्या १ स ए ।। কাৰ মাধা কৃচ্চমন্ত বহিজাৰা मुमीत्ररवर्। निथा माञ्जिला नि-**छ**द्रा (नवा रनवर्षि खथा।। नर्बा-ণাশ্ৰমকৰ্মাণি নিবসন্তি শিখো-পরি। ততঃ সম্ভর্গ্য তাঃ সর্বা দে-

· ट्या मू कि निमान् कर के पर निमा थर-म् एक ।। एक क्याना छ निसः क्कक्टनं बरलियः। छक्त्रियः राधाख रंगः त्रा'र रं विভावन ॥ मिर्श्वरमा निवस्कादः चलातन সুখ চর। ততো ঘটঞ বছিঞ বিসৃজ্য ব্ৰশ্বতত্ত্ববিৎ ৷৷ আত্মস্ব ৰূপ• ত• মন্ধা প্ৰণয়েছিরসা গু-রু। মম দ্বভা প্রে। মছ ত্তা मक् नत्या सम्भा खरमय चनश् भिव विश्ववार्य भरमा २ ख ए । বন্ধন্ত্রাপাসকানা তত্ত্তানা জিতান্থানা । ধিৰমজেণ শিখাচ্ছে-माथ महाग्रियाङ्गः ज्यवः। ब-मकान विश्वपानाः किः यरेखः आप भूकरेनः॥ विक्राहात्रभ-রাণান্ত প্রত্যকাৰো ন বিদ্যতে। ততো निर्मणुक्तां १ रजो निका-यः विद्रमानमः ॥ मिर्मातमा विश्-त्र्ध निकः সাকাৰুক্ষমযো ভূবি । मृत्का विधि नित्वधाका। नि-(र्याग (क्य जाज्ञविष्। সूथ मुःथ-

नदम सहग्रहा SEL BURNIS मृद्ध बारके स्मानिन्द्राः म मानमा अधिक मासका निवरण-क्या निवाज्ञकार के स्माटकाकः गानीमाना नम आर्थिए त्र ७३॥ तिशकावर्गकी मीटका निः-मक्टकाःमिङ्गान्ध्यः एलाकः स्वयः विमुक्तः माम्बद्धोः निर्व मरमा ভবেছ্।। শীত বাতাতপসহঃ मदमा यानाभयानद्याः । স্ম: গুভাগতে ভুটো: ৰদৃচ্চালাভ-बक्षना ॥ निदेख ७८ गा निर्विक ह्या निर्कां छः महास्माक्षी। यथाम-ভা মুপাঞ্জিতা মৃষা বিশ্বং প্রতি-श्रेष्टिश जाकाञ्चित दशः (मट्र) कानत्वर मूची ज्दरह। देखि-शार्थाव अर्बेडि व॰ व॰ कर्म श्थक् शृथक्।। आश्वा त्राकी विनिर्विः थ्या **कारेप्य पान**काग् क्रव । शांजुञ्जि । ডন ব্রিষা। ব্রেভব্তাাগ মসু-याक भन्नामी भद्रिवक्टरं ए। मे-र्वे नमपृष्धिः माण् कीटके देवदव ख्या नरत्।। **गर्बः उत्किछि जा**नी-যাত্ পরিত্রাট্ সর্বকর্মসু। বিপ্রা-ন খপচান বা ক্যাত্ত্সাত স

राग्डना तन सम्बद्धा ठाव वंशीवानविठात्रवर्। व्या-चानाजांशयदेनः मना छब्विहा-ब्रोभिशा अवशृष्ठा नत्यञ्कानः বেছাচারপরাবণঃ। সন্ন্যাসিনা॰ मृष्ठ॰ काव॰ मास्ट्यन कमाठनः॥ मःभूका भन्नभूमारेका विश्वत-बान्नू रक्करवज्। जञ्जाखरबाना ষর্ত্ত্যানা সদা কামাভিলাবিশা য় প্ৰভাৰাজ্জাষতে দেবি প্ৰবৃ-ত্তিঃ কর্মসংঙ্গলে। অত্রাপি তে मान्त्रका शानाकी क्रममाध्त ৷৷ শ্ৰেষ তদেব জানন্ত তত্ত্বৈৰ मृतिक्वाः। खण्डः कर्यविधाः নানি প্রোক্তানি চিত্তভদ্বযে ॥ নাম ৰূপে বছবিধণ ভদর্থণ কল্পি-ক্ত মধা। ব্ৰহ্মজ্ঞান বিনাদেবি कर्षामः नामनः विना॥ अर्वन् कः শ্লশত॰ কৰ্ম্ম ন ভবেমুক্তিভাজ² नः। जनावशृष्ठ खबुरका जीव-মুক্তো নম্নাক্তিঃ।। সাকামারা[,] रगः यद्या गृहत्र छः अनुकारमञ्। ষতে ধৰ্শনমাত্ৰেণ বিমুক্তঃ সৰ্ব-गालकाल्॥ ठीर्थ बठं छरगा मान मर्बयख्यका नाउँ । देखावधु-**डाखगः। ই**डि गहानिदांग्डाख व्यक्टियानामः ॥

সপত্রকৃতঃ পু॰ কতমৃগাদিঃ।।
অত্যন্তপীড়িতে ত্রি। ইতি কেচিৎ ॥
সপত্রাক্রবণ কী অত্যন্তপীড়ের

সপত্রাকরণ ক্লী অত্যস্তপীডন• । ইতি হলামুধঃ।।

সপশ্ৰাক্তঃ পু• ক্তম্গাদিঃ॥ অত্যন্তপীডিতে ত্ৰি॥ ইতি কে চিৎ॥

সপদ্রাকৃতিঃ স্ত্রী অত্যন্তপীডন । তৎপর্য্যায়ঃ। নিম্পদ্রাকৃতিঃ ২ । ইতি হে মচন্দ্রঃ।।

मिन्न पूर् मिन्। हेलामतः॥
मिन्नातिः पूर् वर्गिति स्वा। वर्षा।
स्वा हिल्ला हिल्ला । वर्षा।
स्व सिक्षः मिन्नाति ब्रह्मस्र्विः
मिन्ना हिल्ला ।।
सिन्ना सिन्ना सिन्ना ।।
सिन्ना मिन्ना । किन्ना सिन्ना मूर्का नामि त्रवर्गा।

সগত্নী ন্ত্ৰী সমানগতিকা। স্তীন ইতি ভাষা। যথা। দেহি ত্ৰাভাবে সগত্নীপুদ্ৰঃ। তস্য পুদ্ৰত্ব স্মরণাৎ। যথা মনুঃ। সর্বাসা মেকগত্নীনা মেকা চেৎ পুদ্ৰিণী ভবেৎ। সর্বা স্তা স্তেন পুদ্ৰেণ প্রাহ পুদ্রবতী র্মনুঃ।। একপত্নীনা মিতি একঃ পভি র্যা

সা বিভি। অত্র সপত্নীপুল্রস্য পুল্বদানিদেশাৎ তৎসংগণি জীবা সণিওন নৈথিলৈ রু-জু-। ভরা পুলেবেব তু কর্তব্য সপিতীকরব জিবাং। পুরুষস্য পুন জুনো ভ্রাতৃপুল্রাদ্বো ২পি বে।। ইতি লবুহারীতবচনে এব-কারেণাতিদিক পুল্রনিবেধাৎ । ইতি শুদ্ধিতব্ব ।।

সপদি ব্য ক্রত । তৎক্ষণঃ। ইত্যমরঃ।

সপর্যা দ্রী পূজা। ইত্যমরঃ।।
সপাদঃ ত্রি পাদেন সহবর্তমানঃ
। স তু চরণযুক্ত শতবর্থভাগসহিতশচ। যথা। সপাদপলমানেন বেলা তুটাতি নিশ্চিত ।
ইতি সংক্ষতামুক্তাবলী।।

সপাদপীঠি তি পাদপীঠযুক্তসিংহাসমাদি। বখা। আদিক্ষদাদীগুরুশামুকর 'সিংহাসন'
ভষ্য সপাদপীঠি সম্ভপ্তচামীকর বন্ধ বজু বিভাগবিন্যস্তমহার্মন্ত ।। ইতিভটো ও সর্গঃ।।
সপিশু পু সপ্তপ্রাম্তর্গতজ্ঞাতিঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। সনাভিঃ
২। ইতামরঃ।। স চ অশৌচ
বিবাহ দাযভেদাৎ ত্রিবিধঃ।

ভত্রাশৌচসপিঞ্চস্য বাক্ষণ বথা । সপ্তপুরুবান্তর্গতকে সভি গো-ত্ৰৈকো সভি ৰাতৃৰ ভোক্**ৰা**-ন্যতর সৰস্বেন পিপ্তলেশান্য **७तवद्य । महक्नानाइ ७**ई मानित्यान मानिखाः। जन्छ। নাণ পিত্ৰবধি ত্ৰিপুৰুষ সাপিখ্যণ ।। বিবাহসপিঞ্জান্ত। পিতৃ পিতৃ वसुराक्ता मञ्जयभूक्तावधयः । याजायह याज्यस्र रशक्या शक्य-**পুরুষার্থবশ্চ। যথা। পঞ্চমা**ৎ সপ্তমাদৃদ্ধি মাতৃতঃ পিতৃতঃ ক্র-মাৎ। স্থিত্তা নিবর্ত্তে সর্ব वर्णवयः विधिः ।। हेळ्याहरूख शृष्ठ नात्रमब्हनः॥ मायमिर्णः স্ত । ত্রিপুরুকাবধষঃ। তে চ পিতৃ পিতাৰহ প্ৰপিতাৰ্হাঃ তেষাণ পুত্ৰ পৌত্ৰ প্ৰপৌত্ৰ দৌহিতাঃ। মাতামহ প্রমাতামহ বৃদ্ধপ্রমা-তামহাঃ। তৎ পুত্ৰ পৌত্ৰ প্ৰপৌ-वाक। ইভিদাৰভাগ: ॥ 🕻 ॥ অথ সপিঞ্চাদি বিচারঃ। মৎস্য-পুরাণ। বেপভাজ শতুর্থাদ্যাঃ পিত্রাদ্যাঃ পিশুভাগিনঃ। পিশু-দঃ সপ্তম স্তেৰা সাপিণ্ডা সা-প্তপৌরুষ ।। নম্বেৰ ভারাদি-ভিঃ সহ পিও তলেপভোক্তৃত্বা-

সম্ভবাৎ কৰু সপিণ্ডম্ব মিতি চে-দুচাতে। তেষা মণি পিওলেগ-যোঃ সম্বন্ধে। হস্তি। তথা চ বৌধাৰনঃ। প্ৰপিতামহঃ পিতা-মহঃ পিতা স্বয় সোদৰ্য্যভাত-तः। गवनायाः भूजः भीजः श्र-পৌল্রো বা এতানবিভক্তদাযা-দান্ সপিগুানাচক্ষতে বিভক্ত দাযাদান্ সঙ্গ্ৰানাচক্ষতে সং-अञ्चरक्रम् छलामी श्रर्था छरछि ইতি। অস্যার্থঃ। পিত্রাদি পিণ্ড-ত্ৰযেষু সপিওনেন ভোক্তৃত্বাৎ। পুলাদিভি ব্রিভি স্তৎপিওদা-ना । यक्ठ की वन् यमा शिखना-তা স মৃতঃ সন্ সপিওনেন তৎ-পিণ্ডভোক্তা এবং সতি মধ্যস্থিতঃ পুৰুষঃ পূৰ্বেষাণ জীবন্ পিগুদাতা মৃতঃ সন্ তৎপিওভোক্তা ২পরে-ষা জীবতা পিশুসম্পুদানভূত আসীৎ মৃতৈশ্চ তৈঃ সহ দৌছি-बामितमयभिष्ठत्वाका। व्या ষেষা মৰু পিগুদাতা যে চাস্য পিওভোক্তার স্তে ২বিভক্তণ পি-গুৰূপণ দাৰণ অশ্বন্তীতি অবি-**ज्ञानामाः मिथा है** छि। है-দক্ষ সুপি ওত্ত সঙ্গল্যভুক্ষ দাখ-जर्गार्थः। ज्ञानामार्थं नि

ওলেগাভুকা বিশি।' লেশভাজ *** जिल्ला है जिल्ला है जिल्ला है** পিনঃ। ইতি প্রাপ্তক্ত মৎসাপু-ব্রাণাৎ বক্ষ্যমাণ কৃষ্যপুরাণ শ-श्रामिश्व वहनाम्ह। निर्ध क्था পরস্পার ভোক্তৃত্ব তথা লেপে ভুল্য ন্যাষাৎ। হারলভাষা कृ-শ্বপুরাণ । সপিওতা তু পুরুষে সপ্তমে বিনিবর্ত্ততে। সমানো-দকভাবস্তু জন্ম নামো রবেদনে ।। भिना भिनामश्रदेश्व न्हर्य न्हर्य প্রিপিতামহঃ। লেপভাজ শ্চভু-র্থাদ্যাঃ সাপিণ্ড্য সাপ্তপৌরুষ ।। লেপভামিভা কুর্দ্ধৃ॰ যাবজ্জন্ম नादमा द्रावनन रावनमूकना-ম্লো ২ম্মাৎ পূৰ্বপুরুষাদয় জা-ভঃ ইতি ৰিশেষঃ অষ মন্মৎ-ন্দলে জাভ ইতি সামান্যতো বা স্মৰ্যাতে তাৰৎ সমানোদকত্ব মিতি হারলতা।। অত্র পরবচ-त्नदेनव गाणिक्षात्रिको भूर्ववह-ন পূৰাৰ্জ জীবৎপিতৃকত্বাদিন। অধিকপুৰুষেষু পিওলেপসম্বন্ধে -পি সপিওডানিবৃত্তিজ্ঞাপনাষ। गर्बटलगीवाहाटवानि छथा। वथा আত্মবিৰেকেপি পাৰ্ৰণ আত্মান-ম্বরণ নিত্যঞান্ধে বিকন্ন উক্তঃ।

मार्क्ट वर्ग माना विकालियाः निज्नाव स्वतिनिक्षि नेखनाः। मिश्रिका विदेश हिना (निय॰ शु-क्वमाहदार ।। पाव भूकाकार পিতৃণা প্রার্থী স পিতৃণা নিতাত্র পুনঃ পিতৃণা অহন সমকাদীনা यक्षा भगा जा मूं जा नार्थ निज कलाखत मुक्ता इतिनर्माणी चन्गार्थ भूनईकन मिछि लिधि-छ । अथ यः थम् निखान् मटेवत মৃতঃ পরতশ্চাপ্রাপ্তপিতৃভাবঃ স কথ সপিঙঃ একপিওদাতৃত্ব ভোক্ষলকণ সৰদ্ধাভাবাদিতি **८६९ उरम्याभाउरयं जियः** যোগ্যভাপ্ৰবোজৰক সামান্য-শাস্ত্ৰ বিষয়ৰ । তেতাত অত্যতি-বৃদ্ধপ্রপিতামহাবধিকাধন্তনারাণ ষগ্না পুশা প্রভ্যেকাপেক্ষরা স-खाना , त्यक्रशाळां मां चाविध भ-রতনামাণ সপ্তামাঞ্চ সাগিও্যণ পিও লেপৰো দাতৃত্ব ভোক্তৃত্ব সমন্ধাদিতি। খ্রীণার ভত্ সাপি-খ্যেন সাপিথা। প্রস্তানা ভত্ সাপিণ্ডা মিতি ৰচনাৎ। নম্বেবং কন্যাৰাঃ কথ- সপিওতেতি চেৎ ত্তৈ পুৰুষণ সশিশ্যণা মথা৷ সশিশুতা ত

क्यानि अवश्वास्त्र विकास अव रमाना खानाः ब्रिट्सा है। हना ९ । (देवे जामश्रम् र क्ल-श्रीवासक स्थित्यः निवर्दरण रेषि श्राहिकः। स्कबर क नागः दशिष्ट्रहरूका छ९म-ন্ততিভিদ্য সহ সাগিওটভাকাৎ कना मद्देश करमद्भार (ख्याः म्रिन-थात्मोरः नासि विक जनात्नाम-ক নিমিত্ত মেবাশৌচ মিভি। এব॰ তেय। स्थि जना स्रक्षिणः कना।-ना मिछि गुल्लानि महायट्। शाशाशाशा वजु क्षश्वानः। वाधानाः वशा होताः मानियाः माश्रदशोककः। श्रहानाः जर् मानिषाः आह प्रतः निजामहः ॥ रेषि द्वानदश्वः छितादर शिक्शक्तिबुबः । <u>ब्र</u>था तिक्शु-तावः। मक्षमीः शिवृशकाक मा-ज्भकाष्ट्र शक्षी। फेबर्ड वि-ष्ट्रा जार्याः नहारम्न विश्वना न्-न।। मुख्यीः नक्ष्यीः हिष् हेलि त्नरः। ज्ञुनाशिश्राक्रिया সাপ্তপৌৰুৰ মিতানুৱকাতে। তে ন ভত্সমান সাপিখ্য নিতার্থঃ । मध्य निसिट्टो। मिर्शिका कु

, गर्बचार रगावकः साख्यस्थाकती। Machinakian cupatche. ज्ञान्त्रः॥ देशालकः त्याहेन्द्रा তেন बाजायस्त्रत्वः क्लाहि॰ बढ़े शूक्वशवाङ शिक्षमबरक्षशि ন সপিওতা। তান্সপ্তপুরুষা-न् या ममखा एका दिन शिक्षा दिक मन्शक्छोिङ छमान्गः। अरङन সপিওতা একশরীরাব্যবাদ্ববেন ভবতি। তথা হি। পিজুঃ শরীরা-ৰষৰাশ্বযেন পিত্ৰাসহ এবং পিতা মহাদিভি রপি পিতৃদারেণ তচ্ছ-बीबादयवात्रयाः । এवः याजृताः ब्रोबानयवात्रयम याजामिछि व-পি। এব॰ পত্যা সহ পত্না এক-শরীরারম্ভকত্যা সাগিখ্যণা তথা ह गर्डांशनियमि। এडव याहे-কোষিক শরীর ত্রীণি পিতৃতঃ ত্রীণি মাতৃতঃ অস্থি সামু মজ্জানঃ পিতৃতঃ স্বস্থা স রুধিরাণি মাতৃত-শ্চেতি। তত্ত্ব তত্ত্বাব্যবাস্থয প্রতি-शामना । निर्दाशा शिक्षायर व সাপিতে ভাতৃ পিতৃবাদি সা-পিণ্ডা॰ ন স্বাৎ। অতিপ্রসম্বস্ত मश्चानाञ्चरचन अर्यारमाभावि-ना निवननीयः। यदमातः माठा-यहामीना यशि सद्धान मिश्राह्म

नगरालीक आर्थाण कारन छ वि वाषावराना वत्रत बिबाब गामरनी एक रेजामि विटमनवहनं न गांद । रख जू वित्मयवहमः बाल्डि छब मनाह মিতি মিতাকরা রস্নাকরাদি বত ৰণান্ত ৷৷ লেপভাক ইত্যাদি बाहिनित्क रार्थ जानित्यां बक्न-बीवायग्वाच्यक्तभ चकरभाव व-विकार्थानवकानार । निर्वाना পিওসৰদ্ধেন ভাতাদীনা সা-পিশ্যস্য মৎসাপুরাণ বৌধাষৰা-जाः भूदं गुक्कषाय। कामरधन হারলতা কল্পতরু পারিজাতকা-রাদিভি স্তবৈধ ব্যাখ্যাতদাক।। রেতঃ শোণিত পরিশামৰাপদাদ-পতাশরীরসা ভবতু বা তথা। প-ত্যা বহু পত্না একশরীরারম্ভক-তাৰাঃ প্ৰভাকবাধিতত্বাৎ কথ-সাপিখ্যা প্ৰৰাভাৰহাদীৰা বি-শেষবচনাভাবাৎ সপিওছেন দ্-শাহাদ্যশৌচ প্ৰসন্থাৎ নাতান-हामी गाणिखाना लाकविक्क স্বাচ্চ। ভবতু বা তথা শরীরবারা जानिखाः छथानि वस्तार वर्षा সপ্তান্তৰ্গতন্ত্ৰণ কৰা গোৱতঃ गाश्राणी क्यों विकाश शासा-

কা নিপ প্রাপ্তক বচনাৎ। কন্যা-বা ব্রিপৌরুব নাগিতা উচাবাণ্চ তত্ কাশিত্যের সাগিতা নিভি কৈ তথেত্যতেপি ব্যবস্থাবাণ ন কতি রিভি। অতথ্যব সুমন্তবচনা ভিত্তি বন্ধ নমপুরুবপর্যান্ত ম-শৌচণ তথ সন্তবস্ক্রবাভান্তরা-ভির্মান্ত

দ্বণাৰা ৰেকপিত অধাৰা নাদশ-মাৎ ধৰ্মবিচ্ছিত্তি ভৰতি আসপ্ত-মাৎ ঋক্থবিচ্ছিত্তি ভ্ৰতি আতৃ-তীৰাৎ ৰধাবিচ্ছিত্তি ভ্ৰতি অ-बाथा शिथारनी ह किया मारे एक मा-ত্ বৰহতুলো ভবতীতি। অস্যা-ৰ্থঃ একা সৰানা পিও স্বধা যেষা তে তথা। মথা একোন্দিউস্য পি-তে তু অনুশব্দো ন ৰুজ্যতে ইত্য-बाम्भरकनान्भक्ष्यका मर्छ। লক্যতে অনুবৃক্ত ৰম্ভত বে চাত্ৰ ষা মনু খাণ্চ ৰ মনু ভব্মৈ ভে স্বধা ইভিভণা পিও স্বধানকেন-পিওসন্থান্ধি ক্লাশন্তমূক্ত মন্ত্ৰক-त्रवक तिस्वान विकितः। छथा চ উৰ্জে বহন্তী রমৃত মৃত প্ৰঃ াধান্ত ভৰ্গ-ৰত ৰে পিতৃন্ ইতানেন পিণান্

मिद्द भिजाकः। एउ म वक्षिल

त्रधानाः निमादनामुकाना विकार्थः । अञ्चर मन्। क्यातारकारका নাৰ তিরাজাৎ ওদ্ধি বিবাতে ৷ विक्शूबायः। बाक्शक्या शिट्खन সম্বা ৰে জলেন বা। মাতৃপক্ষ্য गारावरशक्ता लिएकन नवकाः সপিশ্বাং ক্ৰেন সম্বদ্ধাঃ স্বানো मका देखि आस्तित्वत्किंग वा। খ্যাত । অসম্বন্ধা ভবেন্ধা তু পি-(खटेनदराष्ट्रकन वा है छि विवाद ह ২পুকে। অত্ত পুত্ৰিকাষাঃ পাৰ্বণে शिष्टामकदवाः महस्राप कनाः মাত্ৰেপি তৰেলগ্যভাষাঃ সন্থাৎ কন্যাপিওে দক্ষৰক্ষোচ্যতে। এ তদনুসারাদ্বপি তন্যাঃ সপিওতা বোদ্ধব্যা তল্মাদেকপিও সধানা মিত্যনেন সমানোদকভাবঃ সমা-था। व जूमनमभूक्षभर्भाशः शिबाहि कीवनाहिना शिश्व नव-দ্বেশি সাগিত্য বিহিত প্রাপ্ত-জযুক্তেঃ প্ৰৰেষ্ঠান্য তদনুপৰুক্ত-ছেন বৈষৰ্গ্যাপত্তেঃ। অপুত্ৰ ধ-নাধিকারত্ত সমিহিততরাভাবে म सम्पूक्षभाषा । वृष्टिशक् मा यदशामनकिन आकाधिकातः পুৰুষত্তমগৰ্যান্ত মিতি ৷ ব্যৱ স্থা শব্দো মন্ত্রগরঃ পিতৃভক্ষারোগি

। जभा क अनिकृत्का अनिकः यश देव शिष्ट्रशा नम निष्ठि। स्नाम श्रूक्षानख्यः ज्ञादनामकरष् न बिद्राब किंद शक्तिगानि। छ-পাহি। উদক্তিৰা ৰধিক্ততা পা-রক্ষরঃ। দর্বে জ্ঞাতবো ভাববন্তি া আসপ্তমান্দশমানা সমান প্রাম ৰাসেৰ যাবৎ সমন্ধ মনৃত্যৱেষ্ ৰা ইতি। ভাবৰম্ভি নিশাদৰম্ভি। অত্ত যাবৎসম্বন্ধ মনুস্মরেষুরেক-স্বলজাতা বয় মিতি স্মরণ ভবতী-ত্যনেনৈৰ সৰ্বেষা মুদকদানে প্ৰা-প্তে ৰদাসগুৰাদ্দশৰাবেত্যুক্ত• ७९ मनिकर्य जात्रज्यानात्मी ह ভেদে প্ৰাদককৰ্ম সমানাৰ্থ মিভি । অশৌচ ভেদস্ত সপ্তমপুরুষণ-ৰ্যান্ত সপিওত্বাদ্দশাহঃ। ভত্তদ্চ मनयभूक्रवभर्षाखः बाहः। তथा ह विकृ वृङ्ग्णाणी। मिमाट्स म-পিঙাৰ শুদ্ধান্তি মৃতসূতকে। ত্রি-রাত্রেণ সঙ্গল্যান্ত সাদ্বা শুকান্তি গোত্তজাঃ।। ভত শ্চত্ৰশপুদ্ৰ পৰ্যান্ত॰ পক্ষিণী। তত্তক জন্ম-नाम मृष्ठि भर्यासः विकारः । তথা চ মিতাক্ষরা বিবাদচিত্তাম-(गा र्म्यान्। मिलका जू भू-ऋरव मश्रदम विनिवर्र्छछ। ममा-

त्नामक **वार्ष निव**र्द्ध का कर् नार्ध अभवागमृत्वतात्कृष्ट-शद्र त्यांव मुठाएक। चढ्र ज्ञाना-त्नापकत्व विकित्व। भूबेक त्या-ভষঃ পশ্চিণী মসন্দিশ্নে ইতি। প রত্ত হারীতঃ ে শতামহে তিরা-ত্ত্ৰ- স্যাদেকাহ স্থ্ৰসপিওকে ইতি । অত্রৈব গোত্রজানা মহঃ স্মৃত মিতি জাবালবচন। ততঃ পর॰ সৰ্বথা সমানোদকতা নিবৃত্তেঃ || স্নান মাত্র মিতি। স্নাত্বা শুদ্ধা-স্তি গোত্ৰজা ইতি বৃহস্পত্যুক্ত-षामिछि। ইতি श्विकाञ्च ॥ मिश्रीकर्तन की भूनेमश्यमत ক্ৰিষমাণপাৰ্ধণৈকোদিকেভি-কৰ্ত্তব্যতাকশ্ৰাদ্ধ। যত্ৰ প্ৰেত পিণ্ডস্য পিতৃপিণ্ডেন সহ মিঞ্জী-क्रत्रनः। यथा। जिश्लीक्रत्रनः প্রোক্তণ পূর্বে সংবৎসরে পুনঃ া স্ব্যাচ্ছারি পাত্রাণি প্রেতা-পিতৃপাত্তেষু পাত্ত মানেচবেত্ত-छः। (र जगाना हेि बाजा। शिक्षान्तरभाव त्यव हि ॥ मिश्री-कत्रवाषः (परभूवं विशेष-ए। निष्नातार्यमाख भूभक् शिषक निर्मित्यद् ॥ (व ज्ञानि

ভীক্তাঃ প্রেছা মু তেষা সাহ भूशक जिल्ला। सक वर्गाद भू-बर शिक शिक्स त्याति काय-एक II, **देशि सुर्वाश्वद्ध**न जेगिति-काटन ३२ लब्दामाः श का वाना-ছ। তভা কৰং মত্ত্ৰে পূৰ্বে সণি-े चैकाक खरहा। जिल्हाका-नामृष्- (अष्ठ: नार्वनस्थाः ॥ वृक्ति भूदर्वम् द्वागाम्ह गृहक्न्ह ভবেত্ততঃ। সুপিথীকুরুণ জ্ঞান্ধণ (मर्ग्यूर्व : निरंगाक्र एष् । शिजू-নেবাশবেক্তক্র পৃথক্ প্রেভ॰ বি-निर्मित्न ॥ अद्भाषक जिटेन-ৰ্কু সৰ্যাৎ পাত্ৰচতুষ্টৰ। অ-ষ্যাৰ্থ পিতৃপাত্তেৰু প্ৰেতপাত্ৰণ **প্রসেচবেৎ**া। जुन् नकना ह-जूतः शिखान् शिख्ञान स्ना। य ममना देखि बाखा मानाब विक ष्कितिशा। ह्यूर्थमा भूमः कार्याः न क्लाहि॰ बंद्धा खंदव । छङः পিতৃত্ব ৰাপন্নং স চতুৰ্থ স্তদা পু-मान्॥ अधियाखासि मधाब था-ধোতামূত মুত্তমং। দপিভীকর-शाम्भ करेन द्यान मीवरा ॥ इकि बहुना ४५ व्यक्तायः ॥ ॥॥ অপর্ক। অথ স্পিতীকরণ । व्य शाखिलः। পূर्व मञ्ज्यदा

र्याचे कन्नजा यात्राम् त्वारक भ **७** त्रभाश है जि। अरबरेनव शि ভো ব্যাখ্যাত ইতি। পূর্বে সম্বৎ मत्त देखि मुश्राक्षः। छम्भाक्षी नवत्या याजना जयक्तज्ञात्छ वि-সৰ্জ্জন॰ নবৰ্মাস্য মিত্যেকে । ইতি গৈঠীনসি বচনাৎ। তদশ ক্তৌ ৰপ্তো মাসঃ। তত্ৰাপ্যশক্তৌ ত্রিপকঃ। তত্রাপ্যশক্তো অশো-চাপগ্ৰে প্ৰথম মাসদ্য ছাদশভি र्फिटेन बीपन्यामिकानि आका नि निर्वर्ण जटकार्रणाइः मणिकी कत्रकालः। भूजमा बामभारह। नजू जरवामगार अव यानिकार्थ वर बामनाइ आक क्या बरना-मत्म शक्कि का ७६ व्यागियस्य क्कां हि नुषाना वामत्न रहीं छि

विक् वहनाए। वानिकार्थविनिङ गामिकार्था मामि यानि कियमा-न बाक्यरगङ्ग (अञागामः नामि जम्यूकः बामभाइकिरमान-वास विज्ञर्थः।।।। यद एकामः শ্ৰাসাভ্যন্তবে ংধিমাসপাত স্তক্ত खरनामणम् मिरनम् खरनामणमा-সিকানি রুত্বা চতুর্দ্দশে হব্লি সং পিওনং কার্য্য মিতি। সম্বৎসরা-ভ্যস্তরে যদ্যধিমাসো ভবতি তদা मामिकार्थः मिनटमकः वर्ष्ट्रास्य । इंजि विकृवाका। भूषमा व-र्याफ्निमिट्न बु ब्रायाफ्नियानिका-मृक्**रे** शतिक बनानगाया 🔍 अवस्थ প্রাদ্ধবৃদ্ধিমাত্রণ ন দিনবৃদ্ধি রি-তি মিশ্ৰোক্ত হেষণ। ভদ্ধৃত বিষ্ণু-मृत्व पिनत्मकः वृक्तरयपिष्ठि अः ভেঃ। ঞাদ্ধাধিক্য মাহ সত্যব্ৰতঃ । मद्य मद्रमा बर्धा जू यनि मानि-धियामकः। छल बैरयामरम औ-कः कार्याञ्जनधिकः जरवः ॥ 🟶 ॥ তত্রাপ্যশক্তে প্রথমমাসল্যৈকা-হ এব ৰাদশৰাসিকসঁহিত সপি-জীকরণকালঃ। মুখাণ আদ্ধি মা-मि सामि जगर्गाछार्जु প্রতি । बामनाटरन वा नर्गाटमकाटर

चामनाथ वा।। देखि मत्रीविक-नार। जगर्गात्ली जनत्की सञ् श्वामद्वरः। जबकरत्र रहेगांनिक **मिटन शक्ष्मगामिकः क्रमा अन्य** ষাগাসিক ক্লবা ষষ্ঠমাসিক কা-र्याः छमाम्। एकर्वनाशिक्। न जू **७९**शृर्वः सान्नामिकः बुष्क्रमाः পত্তে ৰ্ব চ পঞ্ৰমাসিক ৰপি পূৰ্ব-দিনে মৃততিথ্যভাবাৎ এব মেব বাচস্পতিমিশ্রঃ।।।।। অপকর্ষ নি-মিত্ত মাহ ব্যাযুঃ। আনস্ত্যাৎ ক व्यथनां नार्भातायुषः क्यार । অञ्चित्जन्त गतीतमा बालगारः প্রশাসতে ৷৷ এতচ্চ দ্বাদশাহ-भाष[•] भावारभोठा छ ज्**ठी**यमिन-মাত্রপর মিভি প্রাচীনবৈথিলাঃ অজহৎসার্থলকণনা স্বজাত্যু-ক্তাশোচান্ততৃতীযদিনমাত্ত্রোপ-লক্ষক বিতি আদ্বপ্রদীপ আ-किष्ठावनी। जमृत वनागुकः। कामगार्य का अधार है जिम রীচিবচন দাদশাহশ্রাদ্ধ ক্রদা बरवानत्म शङ्क वा त्रवाश देखि বিক্ৰচনাভ্যা নেকবাক্যত্যা দা-দশাহ ইত্যস্য দাদশদিন শর-चार । अन्यस्माना मिछि अन्यस-র্ম্মাজ্যোতি রাগমাদিদিক্ষানম্ভর-

ভাবিনাশ পরচক্রভযোৎপন্ন ম্লে-क्लानगममानि निमित्वं द्र-त्नीहानगरम बालनामिनानि त्या-ष्णभाकाभक्षकां इं कि मृ-न्त्राणाशायगाशामार। म-তি সামান্যত এব একাহ বিধা-নাচ্চ। অতএর একাহাপেক্ষযা প্রাশস্ত্যাভিধান মপি সক্ষত্তে অতএব প্রথম মাসস্য একাহ এব দ্বাদশনাসিক সহিত সপিণ্ডীকর-नकानः रेंडि आक्षितितकः। ज-ত্র যানি একাছকর্ত্তব্যত্যা দা-দশ্যাদিক আন্ধানাুক্তানি তানি मृटजनानि चामामानिकनिन्धर কাৰ্য্যাৰি৷ ৰ স্থাদ্যমাসিক ক্ষত্ৰা তৎপর্মিনে একাদশমাসিকা-নীতি জ্ঞেষণ। এবঞ্চ তেবা মপক-ৰ্ষে তথ্য ভদন্তকাল কৰ্ত্তব্যত্যা ষাণ্যাসিকত্বয সপিতীকরণাপ-কৰ্মঃ সিদ্ধাতীতি সৃধীভি ভাবাণ 11 11 यम है दी कृष्ति द्विष्ठि वृष्ति-त्रामामामाम भू भवनामि। आ-পদ্যেত আসন্না ভবতি ভদ্দিনে সপিঙীকরণ। তথাছি। প্রাগাব-र्खनामङ्गः कालः विमार। ইতি গোভিলসূত্তে। পু সবনাদিৰপ

বৃদ্ধে বামৰবাভ্যস্তরে বিধানাৎ मिश्वीक्ष्रवना हान्यबाद्ध विशा नाखरमाः कामरमा ज्ञाभाव नृक्षि शूर्विपति व्यनकर्यः ॥ ॥। वन् म পিণ্ডীকরণস্যাপরাম্ভিক্তে কিং প্রমাণ মিতি চেৎ অপরাক্তে তু रेशक्क विजाद मर्बर हमा। किक यमाशाम खकः श्वा देशके मिख म-मा हङ् । अभी अन्तर मानाना-**ख**्रां १ व विशेष ।। इंडि ছ्ट्यागशिति के वहत्व स्था वर् ना गन्ताशाख्युमहक देनकान् রোধাৎ গৈই চরুঃ। বিরুদ্ধর্থ मयवादय ज्यमः मा म मर्थाकः षः। ইতি জৈনিনিসূতা । एष मवाणि वरुपावणाक भाईगान् द्रावादमदकाष्मिकेकानवाध देखि । এবঞ্চ সম্বৎসর মধিক্রভ্য। স পিণ্ডীকরণ তন্মিন্ কালে রাজে ख ७९ मृगू। अरकाष्मिक विशादन न कार्याः जनित्र शार्थित।। इंडि विक्शूतानीय व्यक्तां कियो। रम তদিভিকর্ত্তব্যতাপর নতু তৎ-কাল্পর । তথা চ পরিশিষ্টপ্র-কাশগৃত ৷ আত্মঘৰ মুপক্ৰম্য স্বীত সহপিওতা । তযোঃ পা-बंगवर शृबं मिटका क्रिके गर्भाशद्वः

॥ रेखि॥ ॥ अदक श्वकिड्स नि-থিত্যামম্ভকোপাখ্যানবৎ বৃদ্ধি নিশ্চিতা ফ্রতণ সপিভীকরণণ ত मानी विषय वृक्षा छ। दिश्व क्यात्र खकावा खतः भूर्व मध्यतः ৰা প্ৰাপ্য পিতৃত্বপ্ৰাপক ইভি ন मिथिया खद्भ । खद्भ भः कर्छा-স্মীতি নিশ্চিত্য দাতা বিপ্ৰান্ধি-**মন্ত্রবেৎ ৷ ইতিবন্ধিশ্চিত্যেতি** उৎक्रिकारिक मञ्जाबरनाथन-ভবিষ্যমিনিজ্ঞস্য কর্ম্মণঃ প্রত্যহার্থাৎ। এবঞ্ বৃদ্ধিপ্রা-कः बनर्थः क्रुडः छ कर्म ति বিশাত্তদিনে ন ক্রিয়তে তদা দিনাস্তরে ভৎকর্মাণ ক্রিয়মাণে তদৰত্বাৎ পুনৰ্দ্বিশ্ৰান্ধ কৰ্ত্ত-वा भव। श्रानगाकिया यव সাঙ্গ তৎ ক্রিষতে পুনঃ। ভদঙ্গ-मााकियायात्र नावृश्चिनं ह छ९ ক্রিযা।। ইভি ছন্দোগরিশিষ্টেন ্রিসাঙ্গকরণাভিধানাৎ।।ঞ্চা। হেমা-ডিধৃত । পূর্ণে সম্বৎসরে প্রাদ্ধ ষোডশ পরিকীর্ত্তিত। তেনৈ-ব চ সপিগুত্ব তেনৈবান্দিক মি-ব্যতে।। অত পূর্ণসম্বৎসর ক্রিয-यान याकाम्बर्धाञ्य निर्वारः । তথাপত্নফাসপিওনাদপ্যভ্ৰ নি-

मिश्री

वीहात श्र्मिष्य महत्र जा विकास खत्र कार्याः। ध्रदक्ष मक्ष्मित्र आ एक क्रांक्शित्वरः।।।।। उनक्शी कार्षि हेडि कर्यार्थ मुक्क कृष्ट

भावाभि। पत वीभि तिषुषा (यः ক প্রেতসোতি পাঠক্রম দর্শনাৎ गर्बे इत्यागानाः यजूर्दिनिनाकः গৃহানুরোধাৎ সপিভীকরণে প্রে-তকৰ্মকরণ পিতৃকৰ্মপূৰ্বক।। जरवाः भार्वणव< भूवं त्यरकाणि-क मथाभन । ইতি পূৰ্বলিখিত वहत्न भाषक्य पर्भनार। (प्रव-ক্লত্য পিতৃক্তাযো শ্বধ্যে প্রেতক্ত ভ্যেন ব্যবধানস্যাষ্ক্সাচ্চ। এ-তেন অথ সপিত্তীকরণ সম্বৎসর स्कि॰ भिश्व मुष्मिणा महदमद्वारस চদাৰ্যুদকপাত্ৰাণি প্ৰযুনক্তি ত-ৱৈকণ প্রেতস্য ত্রীণি ইতরেভাঃ। रेजायनायन मर्गनाथ मर्बना-থিনা॰ সপিণ্ডীকরণে প্রেতাদিত্ব देयथित्वाकः नित्रसः। अठदः চনস্য ভচ্ছাধিষাত্রপরত্বাৎ কিন্তুৰ্যাদানমাত্তে পাঠক্ৰমাচ্ছা-मक्रममा वजवबाद वक्षभूतात्व <u>ध्यार्गमानानस्तरः ७०: शि-</u> তামহাদিত্যঃ ইতি শাক্তমন্যা-वाधायाधाणाद्वयू गन्न भूणानान्॥

7al 1.599 519710 THAT BURGETING । त्याक्तवा श्रीकरीः त्य ज-गामा है। अवस् व्याविधाना হত্তে ভূ চতুর্ভাগু কলে কিপেৎ ।। ७७: शिखात्रश्रीतिका खन्नदिक क शृथक् शृथक्। त ममाना रेलि बाजा। ठळाला मनशर्य ५ ॥ चर्षाः त्वरेनव विधिना त्थिक-পাৰাক পূৰ্বৰৰা তেজা কাৰ্যাণ निर्दिषात शन्हाक सन् माहरम् া এক প্রেড়গারু বাবেন অন-ন্তরণ দক্ষিণেন গৃহীত্বা ইতি সম্ব-क्षः। रा भगना देखि मक्षमा পঠন্ প্ৰেতপাত্ৰস্থ-উৎস্ফজল जगद्वशाबद्यन हर्ज्या विजना ভাগনেক প্ৰেত বাদাণহন্তে দি-(१९ महार। उरम्बेजन नि थरवा विভारिंग महाना क्रवनक वाक गार भाषाचनः। निक्रगा ठलूदः शिखान् शिखाः अविनाम **छः । (व ममामा रेकि बा**छा। मामाब विভক्ष्ट विधा ॥ এव এব বিধিঃ পূৰ্ব মৰ্ব্যপাত্ৰচতুষ্টবে

मिनि

I BE WARE SECTO FINI-मरावित्यद्वानं विकान्देखनी वि-या रेकि बदेव स्थानात निका गराकृ श्रमका क्रिका वर्गा कृ ग्रमा त्य नताना है कि काजा महाजा नवाः मुस्मानेक कक्कनः ध्यक-भाजरजन एडरेनन विधिना क्ष-ভোকেন পূৰ্বৰ চভুভাগৰণ-প্রেতগাতাৎ সমর্পবেৎ। তেভাঃ পিভাৰহাদিভা স্ত্ৰিভা স্বন্ধিভিত পুষ্ণ ভিলোদকৰণ মৰ্ব্যা নিবে-मा उत्राचनश्रास शक्तिमा भ न्हामाहत्यमिन्द्रयः। तन्त्र तथान बाक्तगर्द छिवनुका मखदेगावा-र्याजनमा अमर्गिकनमा जाग-वयः विजयसामुग्ध्रम् विश्वाकाला ৰু শিত্ৰীকৰ্তন মিভি প্ৰতীৰতে। षण्डा महिराव (अलिखना मिञ्जीकात है कि आक्रितिदकः॥ াা ৰ ক্চ নচাত্ৰ দেব ভোজৰেৎ थारगव देवदब वर्षा यज्ञामाक मया असमादेगाः भाज मक्रिया रुष्टाः भावत् नेमा ६ रेजायनायनवस्त भिन्नभावा रेमव॰ स निखरमणि कन्नएक वाशानुद्वारधन देवशिलाकः न्द्रगाथिना खशान्त्रनः। एव गुक्रः

। जावनावद्यस्य काश्रानुसरद्याः क्या बस्ठामा त्यव छवा बुक षा । न नायग रकुर्दिमित्नाः। उत्याः भग्नार्थान् नवत्मराज्याः । अब नाम राजूर्विषितनाः खा-कृत्व ममन्दर मञ्जननाज-देवव मञ्जान्नयः शिकृषविकाषातृ-বস্তুতন্ত্ত পৌরাণিকদ্বাৎ দেবতাভ্য ইত্যস্য পাঠবৎ সাধা-রণস্থতিকার শাতাতপোক্তদ্বাক্ত বিভাগেপি মন্ত্ৰাশ্বৰো মুক্তঃ। অ-তঞৰ বৈশিলৈ রপি তথা লিখিত विछि॥ 🕬। এवक भाईत्व श्रा-গুঁকুবচনেন শেষদ্ৰব্যেণ পিঞ্ দানবিধানাৎ ভদ্মিকতাবপি স্ পিজীকরণে তমিষমাৎ বদাপি শেষাভাবে পিণ্ডনিবৃত্তি রাষাতি তথাপি। বথোক্তবন্তুসংপ্রাপ্তো আছে তদনুকারি ষহ। ব্যানা নিব গোধুমা ত্ৰীহীণা মিব শাল-यः॥ इिं इत्मागनित्रिनिकेवह-নাৎ মুখ্যাভাবে প্রতিনিধিঃ শা-ज्ञार्ष रें ि नगराक यशामा जाद ख्डामिथाङ्गवर खन्गाख्रतनानि পিওদানণ শেষজব্যনিষমস্ত তৎ-मद्धत खरा। छत्रगाशाय। छ-नाया जनवाजात्व कर्मात्वक्षमुः

সাাৎ। সহলিওক্রিয়াযা ইতিম-নুক্তেঃ প্রেতিপিন্তস্য পিতৃপিন্তে न मह मिन्नीकर्त्न योजि गणि গ্রীকরণসমাখ্যাসিদ্ধ্যর্থ সূতরাণ ভত্ত তথাচরণ । প্রতিপত্তিন-গকৰ্মান এব প্ৰতিপাদ্যাভাবে ভিমবৃত্তিঃ। পশুষাগে লোহিত॰ নিরসাতি সক্ষমিরসাতি ইত্যাদা-বুক্তা। অতএব যজ্ঞবান্ত ৰূপ প্ৰ-তিপত্তিযাগেপি ষজ্ঞো যত্ত্ৰ বস-তি ইতি ৰজ্ঞবাস্ত সমাখ্যানুরো-ধেনাস্ত্রশবিনাশেপি সশা-ন্তরপ্রতিনিধি ভঁউনারায়ণৈ র্গো-ভিলভাষ্যে উক্তঃ। প্রাক্ श्वि-ষিক্লত আবাপঃ ইতি গোভিল সূত্রস্য ব্যাখ্যানেপি আ উপাতে ইত্যাবাপঃ প্রধানহোমঃ স তু স্বি-किक्वरकामा थाक् न भनाषि-ভার্থঃ। এবঞ্চ মুখ্যহোমে স্বক্ততে विष ठक़ निक्छ। पृरक्ता वा अविष्ठ **उमानाः** भाष्ठाः गूरशः कृत्छ कि मान पूरी मााजा॰ छमारकारेनव বিক্টিরজোন ইতি শরলা। এতে-ন শেবনাশে পিণ্ডনিবৃত্তি রিতি বাচস্পতিমিশ্রোক্ত হেষ ।। •।। এতেন পিও ইতি।এতেনাৰ্যাদান विधारनन। शिष्ठः शिष्ठि अवश्र

कारता गामा। छ। छथ। ह उक नुवार । अप एडरेनर विधिनी महिन्दा र रहस्य में। निकृतिया ज निश्व महाविका ज भूवर ।। वर्ग निकार निक्रमस् गन्छा ६ প্ৰেভাষ পাৰ্যভা ভৱ পিত ত্রিবা ক্রমা আনুপ্রাণ চ সম্ভত ॥ নিদ্ধান্তিৰ পিডেৰু এব স॰-সজ্জনে বিধিঃ। পিতৃভ্যঃ পিতৃ পিতামহাদিতাঃ পিডান দলা প-শ্চাৎ প্ৰেতাৰ পাৰ্তঃ পূৰ্দেশে शिष्ण मगामिछार्थः। ७ थ्या य मखिण्डा वानुश्रा शिठा-गरामिकरमना मण्यक त्म (अठ-शिखमिखरन । जिस्सिन्द्रानः । गत्त्रामक जिंदन यंखन अर्गाष পাত্ৰচতুষ্টৰ া অৰ্যাৰ্থ পিতৃ-পাত্তেষু প্রেতপাত্ত প্রাসেচষেৎ ॥ যে সমানা ইতি बाङ्या মেত-জ্জেৰ গণিওন ৷ নিভোন जूना॰ (नव॰ मास्मिक्निके॰ ত্ৰিবা অপি।। নিভোনাবশ্যকে-न छठक भावना दल भावरनन ध-কোমিকা খে একোমিকেন শে-र जनजाक जुना। अरकामिक विकि अर्कामिके चम्बाह-ষাৎ শণিতীকরণকেত্যভবপরণ

। जरु शास्त्रीकता करकारि-के जिमा जिला देखियां करण वहरेतकतान्यकार्। एवन था-(कर् गर्या अस्काक्षय जियाः कर्वराः न पाकुमानिक्यापानि । अब जा कर्जन करणा देखि কর্তরি বন্ধীতি কভূপনিধনঃ। वृश्विकाषामि जीना जानन नर्भनाम रक्षाक्षित्रमः ॥ ।। পিতরি পূর্ব মৃতে তবর্বাভান্তরে পিতাৰহে প্ৰাপিতাৰহে চ মৃতে मथा कर्तराः छथा । इत्माय-পরিশিষ্টে কাত্যায়নঃ। পিতুঃ স্পিওতা কৰা স্ব্যাৰাসানু-यात्रिकः। अमन्द्रुं न मन्द्रा-ৰ্য্যে পূৰে পৌত্ৰ প্ৰপৌত্তকৈঃ॥ পিছর তক্ত সংস্কৃষ্যাদিতি কা-जायता रखनीर। गाणिकं यणि ভৰেন ভৰ-পাগৰুতাপি বা ॥ পিতামহেন পিতর ন ক্র্যামিতি निकासः। शिकुः मशिक्षकाः सन्। থেতীছুভুষা রপি পিছামহ প্র পিতামহযোগ সভোঃ প্রতিমাসবি-হিত গাৰণ সিতৃ বৃদ্ধপ্ৰসিতাৰ-হাতিবৃদ্ধপ্রসিভামহানা কর্ত্রাণ न ত তर्याः जिल्लीकर्नाहशका कार्या ॥ ।। नन् मिश्वतनामः

কুভাভান পিতাৰহ প্ৰপিতাৰহা ভ্যা॰ সহ পিতৃঃ কথ॰ সণিও नाषान कात्र उत्पादनर्थ छ । निश्चीकत्रव बशकर्यवीयः शिक् রেষ বা সপিওন মৃৎকর্ষণীয় মি-ত্যত আহ অসংস্কৃতাবিতি। উৎ-क्यां भक्त्यों न कार्याविछातन ৰচনেনোক্ত। কথ মস ক্তৃতেন সহ সংস্কার ইত্যত্ত আহ পাপিন্ঠ মপীতি। গাপিষ্ঠ মক্কতসপিতী-করণ শুদ্ধেন ক্রতসপিঞ্জীকরণে-ন পিতাৰহেন পাপক্তা বা অ-ক্তুসপিণ্ডীকরণেনাপি শুদা স্ব-र्याानिकि भाजनिक्यः। अरका বচনবলাদদোষঃ ইতি তাৎ পৰ্য্য । অত্ত তু প্রেতীভূত পিতামহেন পিজঃ मिश्वरने भिजामहरेमा-কোদিন্ট মেব। অসপিণ্ডীক্তত॰ প্রেত মেকোদিকেন তর্পষেৎ-इंडि शाश्चकावानवहना । धव यनाखाणि वाधाः। वृक्थः পিতামহস্য প্রেতম্বে তেন সহ न कार्या निष्ठि छाष् शर्याः ॥ 🛊 ॥ चब माञ् मिष्टंन यखतार्वा-শ্বপ্রবোঃ পিজে ছলৈ রাচ্ছা-क्यो। **उथा 5 गार्गाः । ग**िंदन-द्वित कर्डवाः मिश्वीक्रमः जि-

বাঃ। সা গভা হি মৃতৈকৰা কৰে। बेख्यवन् शिवृत् ॥ चल्डमाञ् एक जन्माक्तिश्वकामनिकाः। भूरेक पर्छन मा कार्या बाक् बड़ा-स्वार्थिकः ॥ अखदगढीकार्थ অন্তর্মনিতি বিশ্ব্যতাবেন শুং खु विकि रकार्यः। शतकम-(गा-ভিল প্রান্ধসূত্রভাষাক্রভাগি লি-শিত। অতএব প্রব্রজিতে গতি-ভে বা পিভব্লি মৃতে ন পিভামহা-দিভি শ্বাতৃঃ সপিতীকরণ কিন্ত শিতামহাদিভিরেব। স্বেন ভর্ত্তা नटेरवामााः मणिखीकत्रनः जिवाः ৷ একদ্ব॰ সা পতা ৰস্মাচ্চর মন্ত্রা-**হতি এতেঃ।। তিমন্ সতি সূতাঃ** ৰৰ্গঃ পিতামছা সহৈব তু। ইত্য-ब छित्रन् नहीछि आकानई छर् क्रमान्न-। चन्नव जगार्दक्र তু জীবজ্ঞাণ তগ্যাঃ শশ্ৰেতি মি-महबः। ३७ नब्राद्वीरजन भाक জীবনে তস্যাঃ শশুভূতি ৰ ভূ क्लादार्शिक किम्भूकिः ॥ 📲 এবং পিতাৰহাদিতি স্বাভ্যু সুগি-जीकबदव २ भि नामरगत देव छोळ षा बन् बाल्य व बन् ब्लेब ट वश रेषि बद्धा न माठाः गर्वाताः ৰবিরোধা^ৰ। বিভাগ সামুদ্

বিকে ৰাজ্পকে জীৱভানিভি ৰ্ম-शास्त्रः विश्विकः समूद्रम् हातं शा विछि। राष्ट्रवास्त्राकृतिहरू इत्यागानाः प्राकृति कानाची-विकारको अक्ष वार्गाप-नि-वृंभीत्ववृ (शंक्रमावः अरमहत्र । त्य समाना देखि पाछा । त्यक न्वियणहरूके ।। व्यक्त निविधी-कत्र (स्टबाबिके जिया अलि। रेि राज्यत्हाम गार्दिन्दरानि-ক বিহুতীক্ত পুসলিকনাতি-দেশাৎ ভারত্তীভূতন্তীসগিও-মেপি বে সমানা ইতি নজৰ্ম-স্য পাৰ্বশৈক্ষ বে চাৰ ছা নিতি मवग्र क निवार्थानमस्त्रक्राश প্রকৃত্যপদা স্ববেতাপদাৎপাঠঃ । छक्क बाकावशामा बटनाद॰ वाक वर्गाकक्रमः । श्राता-द्य प्रवासाय ट्रायशा सवर-ब्रिकेश विद्यालये सम्बद्धानाः मवरकर विकृति है । क्षा जिक्क अनुकार निकास है-जारि बोहरू सार्थ स्वतं कर-ना विकि साम्बन्धाः मार्गात्वमः भुहाक । अभागाय जिला मर्गाः क्याकृती अस्त्रकता खक्षकाद्य ह नुसक्ति कात्रात् श्रमपुष्य ॥

खीना गरभाव व्यटेनच्हामरकामि-के मुमाराजा। मुजारिन क्थाना-व॰ नुनाः वद्गिरहामिकः।। जिन त्या श्वः जनवर्त्शाण जनविशे-**छ। दिछि आक्रिक्टिक्ट**। अव-ৰোঢাৰাঃ পুত্ৰ পৌত্ৰ প্ৰপৌত্ৰা-जार अविशानाया स्था नयः ৷ পিজুঃ পুত্ৰেণ কৰিকা পিওলা-নোদককিবা। তদভাবে তুপদ্ধী गाजिएकाद्य मददापत्रहा। खीना ৰিভি তু সম্পুদানগর। খ্রীকর্তৃ-कत्रमा भूवी के अरवाक बाद। अव रमवामकक मिछार्यः। देखि आ क्विद्वकः॥ ज्ञानिक रेग्रामा नवर्ताण जनविनीजानवन्ताः थाना जीना नविविद्यान **७**६ गम्भूमान कथा कथावगवाः छ। न जू जीनन्त्रानक्षाता। ক্ষতরো ত খ্রীণা মণ্যের মিভি बाष्ट्रभन महत्सन शिक्या बाहिना नुक्रवाना त्यकामभागामिकाकः णम्राम्न मदस्यतिक खीना त्र ७९ कर्डना मिछि। अञ्चासात जीमणुमानक आद्य मुख्दा क वाः गाठाः। राज्यस्यानान गमज्ञक स्मारकाष्ट्रिके गणिकी করণপোক্তা এতৎ সপিধীকরণ

म्बिक जिया वरीजानम जिया जिन छटेनरवाकना माजूः স্পিত্তীকরণ শিতাম্কা সংহা-षिछ । क्रथारकति व क्रबन क् बिकाया न ति मूलः॥ इंडिइ ट्यागगित्रिमिटकेनाणि वृद्धाटक-देनवक्रमा इंडारनन मन्नापिक-नर्दः मिकिके वावशासानि छ-থেতি। অমন্ত্ৰক স্ত্ৰীকতৃ ক মন্ত্ৰ-পাঠরহিত । অমন্তা হি ত্রিবোম-তাঃ। ইতি বৌধাষনেন সামান্য-তো হভিধানাৎ। ন তু বাৰ্ कर्क मञ्जभाग्रेत्रहिख्या ख्या ह बद्रास्भूद्रावः। जयः त्यवः विधिः প্রোক্তঃ শূদ্রাণাণ মন্ত্রবজ্ঞিতঃ 🛭 অমন্ত্রসা তু শুদ্রসা বিপ্রেন মন্ত্রে-পগৃহতে।। অতানন্তস্তে বি-भिवनमा यावमगत्रवामञ्जाबंदबन পরিভাষাৰপদ্মার প্রেভশার माजविवयः। न वा मृजक्जृंक व्यास्माळविषरः। किस जीकः र्क्षाक मणामा विषयः। वाः क बात्क। खीं कि कावत्रवर्रिक आक विद्यान्गामना । बहाव-बिश्गिवं विश्वाकविवक्किं।। विधान्गामनाथ विधानार्यनाथ । मखनगाबनुकः। विद्वागाकविव-

ক্ৰিত নিচাৰৰপত্তীকৰ্ কথাৰ भक्ता शिवकृत सारक्रमा प्रकाः शाकाषिकात्रमसंबर्धना छथ। इ इटन्हानभदिभिक्के । भाव-क काञ्चनाक्याः वदः भट्टार वा शदहं था भन्नी दक सबदर्गाछा-ষাঃ। কোঠা পদ্বীতি বচনাৎ। देखाश मार् यब्ः। यह नान्छ अ-ব্লাইশ্চৰ বিন্দেরন্ যোষিতো মি-काः। जाताः वर्गकत्वरेशव टेका-क्री शृक्ष ह दिश्र ह।। क्रा। व्यव-ब्राभाशायम् छ । यमक् उथकी **छानाः शिषा न आज्ञ माहद्वर**ा ষদি মেহেন স্বীত সপিণ্ডীকরণ বিনা॥ অসম্ভূত প্ৰমীতানা অ न्थतीकम्कानाः। नव्हादीकः। পুরেণের তু কর্ত্তরণ সমিখীকর **१** खिराः। भूक्षमा भूव जुटना ज्ञान्त्राम्दरा २ शि द्या। जामि-শৰপ্ৰাহ্যনাই সূত্ৰ। ভূতি। বা ভূতৃপূত্ৰো বা সপিখঃ শিষ্য এব वा। मह शिक्षकियाः क्या अर्था। मञ्बद्धाः ॥ ज्ञाना राहेन वानवार खावरनकरा अभार (पन श्रृकंकिनाविशाः क्रोस्किः खानाः नम्बतः। चल्पन मनि **थटवटेनव फुछ् छ० भूकटवा ब्रविः**

कातिराको भूगश्रमानान वा-शाना डवालपार्थ ।। 🐠 ॥ यहा अतो धार्काज्य व क्रिक्य न य-**जारका के कि मुलला कि लिथिक** रम्बन विमेटने निस्तो वना वार जमीचित ज्या नामि देवत वाचा देशक वावर भूटनी न करमद्भा है हि एकी भूदान-বচনেৰ চ প্ৰেতীভূতৰাতা পি-ভূকনা শিক্ত প্ৰেতীভূত ৰাতা-পিৰ্বনা নকাৰ্যান্য প্ৰেডীভূত-মাতা শিভ্ৰাৰঃ অনুটাৰাঃ ক-नासन देवनिकक्ष कर् व क-र्मा वर्तका छदनतीराजाय व-पर वी वृक्ति बाल्टकार रेखादनन পূर्विष्टिम मिखन क्षेत्रा शिखा-बिः शत्रविद्व प्राण्डामयः ना गकतः गातिक क्यां । छेतावास भ-**छि त्रत्म एक जीगा। इं**डि বচনো ডৈকশদেম পভা রেব ম-राक्तवादिवामार उरदश्चन नात्क क्रमाः क्षानिश्कातः। धरम निवृ महता मेरा छन्न-बाक्टक खंदना संतरन छेए।वा न र्गानविकाता अवाजुम्म मः शिचनदर्ग ब्रानडकार्यावः कृ। अ-छात्राची न (चक्क्क्क्क् मिन।

वनाया मिल्नाहिकाहिकाहिका १ त्राः गर**क सञ्जूष्मगरिका**तिस्था ज्ञाकः मिलमासिकाताशास्त्रः। यथा। नामिक् । ज् शिक्न आदिका कर्या देवलिक मानदास्त्र । हेकि ना ভাতপবচ়নে প্রিচ্ছার্ক বৃদ্ধি आकान छत्र त्वर भूरखन विवाहः ক্রিয়তে। লু পুরেশ প্রাক্তান্তর कियरण।। क्रा अब श्रूक्यमा श्रूम खुत्ना रेषातनः श्वरः निरा। ন্তুস্য সপিওৰে সামালতো ২বি-কারপ্রতিপ্রাদ্ধাৎ-ৰাজ্যুদ্ধৎ বি-वाणि भूक्यमा जिल्ला शहीय-छ। महशिश्वकियाः क्षत्रा वर्गाः দভাদৰ ভতঃ ইছি ছু সগিতী कत्रनाथ शृद्ध मञ्जूनमाञ्चावार्थः न ष्रज्ञामयमञ् अवः मिलीकत्रनार्थ मिछि।।।। पृक्षाः वामिश्यमनाः मानि वश्वत्माख्यानासि। धकः देगाव जू माजवा मश्चावक्षण त्वा-বিতঃ ৷৷ ইতিছ্লোগণরি শিকীয় मिश्वीक्त्रान्ड्रकुत्रकृत्रभक्षां स्वि धायकः छिन्द्रियाश्रद्धां खांचादि शू-क्रयमा (वाशः। हेर्ट्यानि श्रःकाः क्षिकविशादनदेनुत् नानिः शाकाः नि थकामिक्याकानि काटनाः व माख्वा॰ माख्यामि रेडार्थः ।

ব্যুত্রাঘাণ্ডেভি চকারো হনুক্ত ममूकाषकः गणित्रश्लिषा रेखि সমৃতিমোভি। অপুত্রাবা মৃতা-राष्ट्र मिंड स्थार मिंखिं। ইভিপৈন্তীনসিবচলৈকবাক্যশাৎ । অত্র ছন্দোগপরিশিষ্টে অপু-खायाः "शकतम् आक्रिवानार সপিজীকরণ তাসাণ পুত্রাজাবে न विषारछ। ইতি মার্কভেষপুরা-ণাচ্চ বালকপুত্ৰসত্ত্বে সপিণ্ডীক-त्र• चानानानि कर्खवा निष्ठि श्र-তীয়তে। এবং পতিঃ সর্যাদিত্য-ত্ৰাপি শতিসম্বনাত্ৰণ বিবন্ধিত।। তেন উঢ়বা দুহিত্ৰ। সপিশুন কা-र्याः॥ ।। ञ्व। नर्वामा (बक्न-ত্মীনা নেকা চেৎ পুল্রিণী ভবেৎ । সৰ্বা স্তা ত্তেন পুত্ৰেণ প্ৰাছ পু-खरणी र्यमुः॥ १७ मन् यहतन সপত্নীপুদ্রন্য পুদ্রত্বাতিদেশাৎ ভৎসত্ত্বেপি স্ত্রীণাণ সপিশুনণ মৈ-খিলৈ কক্তণ। তম। প্রাপ্তক ল-যুহারীতবচনে পুত্রেণৈবেত্যেব-কারেণাভিদিক পুত্রনিবেগাৎ অতএব তদুত্তরার্কে ভ্রাতৃপুশ্রো-शानानः मनक्टा बनाया ज् ভূপুদ্ৰসঙ্ঘে। ৰদ্যেকজাঁতা বহুবো ভাতরশ্চ সহোদরাঃ। একস্যা-

পি সুতে জাতে সর্বে তে পুত্রিশে मछाः ॥ देखि वृहम्भिष्ठिकद्वन পুলছাভিদেশাৎ ভ্ৰাভৃপুক্ৰস্য পি-**ज्याका विकादा आरश्च जाज्-**भूत्वाभाषामः राषः मार। भू द्यश्राज्यम्भकन्य छ । मार्च भू-ত্রান্তরাকরণ পুরামনরকরাণক ।।।।। লমুহারীতঃ। সপিতীকরণা-ন্তানি কানি আদানি বোডশ। পৃথঙ্কৈৰ সূতাঃ সর্য়ঃ পৃথক্ত-ৰা অপি ৰচিৎ।। প্ৰেত সংস্কার কৰ্মাণি বানি প্ৰান্ধানি বোডশ । वथाकागड कार्यानि नानाथा মুচাতে ততঃ।। পৃথ দুবা। অপি বিভক্ষনা অণি পৃথক্ন সর্যুঃ সুতরা নপৃথগ্ধনাঃ পৃথক্ ন স্বাঃ किंदुभ्षक् अर्थुः। व्यक् विरम-ষষতি মরীচিঃ। মৃতে পিভরি পু-ख्य किया कार्या विशान छः। ৰছবঃ স্যু ৰ্বদা পুজাঃ পিতৃ রেকত্ত बामिनः ॥ मर्दबाड मछ क्रडा ब्लारकेटेनव जू यद क्रजः। जरबाः **१ চাविভক্তেন मर्दि दिव रूछ**॰ ভবেৎ।। পুত্ৰেণেত্যবিশে বাৎ স र्विया निवकात्त्र आरक्ष ब्लाके गा সাকাৎ কর্তব্যতা বাহ বহব ইতি । জ্যেষ্ঠেনাপি সর্বেষাণ ভ্রাতৃণাণ

ভবতু ইতি मक खान इस्रोतिककत्रन क्या-ग'रज्ञरन ए कुछ' कम्म गर्दे दाव कुछ त्मर खदर् । छनानी जरा। সংসেবে চ জনাৎ জবাণ প্রাপ্ত-বা ৰিভি ক্লয়। কৰ্তব্যং। ৰদি তেন তম পরিশুধাতে তদা স খণী ভ-ৰভি প্ৰভাৰাৰী চ ভবভি। ন তু তেন আছান্তর কর্ত্তবা নিতি आकि बिरवरकाकः नूकः। भूष६-देनव मूजाः अर्या विज्ञातन शृथक् क्रबन्मा भर्याम खर्षना निषका द्वार । वक्षाकान मिकि जारगी हा छि-তীবদিন হাদশবাসমূততিথি এ-কাহন্যনৰগ্ৰাস্তিত্ব সৰৎস্ত্ৰে-বু। নচ বিধানসামর্থাদেব তত্তৎ कानशास्त्र तनर्पक निम निष्ठि वाठाः। ভতৎकानानाः बामणा-शामात्राक्ता धारानात्वाधनार्थ-बार ॥।।। अब । जानसार अ-नश्कां नाः भूभादेकवान्तः कवा । अक्टिक नदीवना बामना हः क्षनगढि॥ हैि वाषु वहताक প্রশাস্ত ইত্যনেন জ্লাচার ক্যোভিঃশাক্তাদিক্ষাত্রাটিভিম-वन बार्छ्। भवना नि स्वाहत्मभाषि-गमनानुजाद्राद्य मिश्रीकद्रशा-

भक्रवं बातनाराटनका आध क न्यवसामानि दिनिसायमिति अहरा अवश्वा क्याना मि-जारम रे**मर स**ंगृहिः क्रेम्स्माज रेशादनपाव गावकत्रभाषितृ-सार्थ अस्तागकरूपी न समादना-क रेखानुडामार्यानकर्यः कार्या ইতি তাৎপৰ্য্যাণ অভএব লঘু शत्रीरङ्गा उदेश्य कात्रा वद-कर्भ वश्त्रज्ञार खब्यामृत्व रेवा-নেন কাম্যক্রাপকর্যনিমিক্তা-नाखीजुंखना विन कारनाकतृ-किनिम्छनागकरः क्ष छम। रेके नुर्डामि कामा वध्नताना ন্তরেশি কর্তক মিত। আনবি-(यदमारगांबना बमानि गांबिन-नृवादमा गनि जिल्द्यनदेगांबानक-র্বঃ প্রান্তক্ত ভবাপি সপিতীকর ণাপকৰে তৎপূৰ্ক ব্ৰাক্ৰানা वनि उपाणिकपञ्चनावाननकर्वः া সণিতীকরণাতা তু কেবা প্রে-**उक्तिन वृदेश । देखि ना**ठाखन-বচনে প্ৰেভক্তিৰাৰাঃ গণিতীক-त्रगाङ्ग कालिक ।। भव বৃদ্ধিনিষ্টি বিনা সশিওনাগক-বেঁ ক্তে পূৰ্ণসম্পন্নকাল-প্ৰা-शा (अভदनदीमाद मार विसूध-

त्वां खतः। इतक जिलि विदालं मतः जवकाताय भतः। त्यिक-त्वरः भिति जिल्लामा त्याः श्रम्भारेखा। वृश्चिति जिल्लामानि विक्रमानि क्यां श्रम्भारेखा। व्यक्षाना निर्मित्व विक्रमानि विक्

স্পীতকঃ পূ॰ রাজকোষাভকী। ইতি রাজনির্যনিঃ।।

সদীতিঃ ন্ত্রী আনীবজনসহ-মিলিতৈককালপামণ। তথপ-ব্যায়ঃ। তুলাপানণ ২। ইত্যমরঃ যা সহদীতিঃ ৩। ইতি শব্দ-রত্নাবলীয়া

দশীতিকা স্ত্রী হস্তিবোষা। ইতি রাজনির্বন্টঃ।।

ৰপ্ত ত্ৰি সন্থাৰিশেবঃ। সাত ইতি ভাষা। বহুবচনাভোষ । ভ্ৰাচকানি কথা। পাতাল ১ क्राक श्रमिक श्रीमक कर् क्राकाक अव्यक्त विका क्रिका अवंक प्रश्न क्रिक् विकालका ॥ मश्रम क्राक्ति क्रिका श्रम । मश्रम श्राक्ति क्रिका श्रम । मश्रम श्राक्ति क्रिका श्रिका श्रम श्राक्ति क्रामिक । त्यस्यम क्रिक्ति मामिक तिमा क्रिका । क्रिका श्रिक्त मामिक तिमा क्रिका । क्रिका क्रिक्त मामिक स्वाक्ति क्रिका । क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका स्वाक्ति क्रिका । क्रिका । क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका स्वाक्ति । क्रिका माद्राक्ति क्रिका स्वाक्ति । क्रिका माद्राक्ति क्रिका । क्रिका । क्रिका माद्राक्त क्रिका व्यक्ति क्रिका माद्राक्ति क्रिका । क्रिका माद्राक्ति क्रिका व्यक्ति क्रिका माद्राक्ति क्रिका व्यक्ति क्रिका क्रिका माद्राक्ति क्रिका व्यक्ति क्रिका क्रिका

দপ্ত: ত্রি সপ্তম:। যথা। সপ্তা-ফান্ডাবহি: শুকৈ রুডুপতাবে-কাদশ দ্বি ত্রিগে। ইতি জ্যো-ভিত্তব্ব:।।

मश्चकः बि मश्चामाः भूत्रवः ।
स्था। यार्टिक मश्चकः य्यमः
जूल यूग्र रूपो जथा। मिः इ
स्टि मना वर्ष्णो मृजिः ज्वाववीक्तिः ॥ देजि क्याि ज्वाि श्वः॥
मश्चमः भाविभिकः। यथा। सकः
जाम् महिजा व वकाम् भाशि
द्वर व मिनी विदी व विद्वर्या

वक्षिक महाक्षेत्र सक्षेत्र हिल मृक्षकार स्थापन ॥ महाक्षेत्र विकास है अर महक्ष वार्त्य क्षेत्र सह

সপ্তকী জী কাৰী ইভ্যমর:॥
সপ্তগোদাবর জী সপ্তাৰা গোদাবরীণা সৰাহার:। ইভি মুগ্ধবোধব্যাকরণ ॥

मश्राह्म पुर वृक्षवित्मयः। ছा
छिन् इति छाया। छৎ भर्यायः।

श्राह्मपुष्णः १ यूद्यभनः ७ मनि
छाः ४ वृष्यक त वरूपनः ७

गानानिभवकः १ यहगमः ৮

गिमिनवः मा जामा खनाः।

छिन्द्रशास्त्रपुर। बित्मायप्रपुर।

गिमिनवः। क्रममानिष्णः। इति

वाक्रविक्षाः। ज्यार मश्रपनं
भरक छक्ष्राः।

मश्रीक्सः श्रुष् क्याः। देशि विकाश्रामशः॥ छमा मश्रीक्साना नामानि तथा। कानी कतानी व गरमाक्ष्मा व नूरनाहिल।
टेट्टर मृत्युक्षां। छेखा अमीश्रा
ं हमी वेरवारमः मरेश्रन कीनाः
क्षिणाण किसाः॥ विकामर्वस्थ ज् छेशा अमीश्रासाः श्रारन

क्लिमिनी विश्वस्थास्यान्त्रानिना-भवनः। रेडामहिना नातगूनाती ।। वर्षनिटासका मान्यापुः व्राविक्या। दिवना । क्षत्रका २ ब्रका ७ इस्में ८ मूळका ८ वहन-গা ৬ অভিনক্তা ৭ এতাঃ সাত্তি-त्का बानकर्षाव। कागाकर्षाव जू। शबदाशा ३ मूबर्बा २ छछ-লোহিতা ও লোহিতা ৪ খেতা ८ श्मिनी ७ कत्रानिका १ पठा त्राजगाः। ज्ञत्रवर्षान छू। वि-यमूर्जिः ३ ज्युनिनिनी २ शृत्-বৰ্থা ৩ ৰনোজকা ৪ লোহিতা ৫ করাৰ ৬ কালী ৭ এতা खानमाः ॥ । । । । । वजाना मिन প্তাভূদেবতা ৰখা। অৰত্য পি-তৃগন্ধৰ ৰক্ষ নাম পিশাচকাঃ । त्राक्ताः मश्रिक्साना मीविठा वर्ग मिडियटको कथा। अर्थनिय-गर्विशाः । हित्रशास्त्रशासा मृलभारन मिनि विका देवम् वा-वर्ग कनका थाला । विभि नमा अका ॥ जक्रशाविज्ञानकाणा রকা কিবামিক বিতা। প্রকা नीवाड्मकाना देनस छा। पि-मि मक्ता। मूक्ता शब्दा-

গাভাৰতকা কৰা কৰিব অভিনতকা কৰা ভাগা কৰিব দিনি সাহিতা ৷৷ বহৰণা কৰ খ্যাতা দক্ষিণোতন্তকা হৈছি ভন্তসারঃ ৷৷ ইভি ভন্তসারঃ ৷৷ সপ্তকালঃ পুং অগ্নিঃ। ইভি হেম-চন্দ্রঃ ৷৷

সপ্ততন্তঃ পু॰ যজাঃ। ইত্যমরঃ।।
সপ্ততিঃ স্ত্রী সম্ব্যাবিশেষঃ।
সত্তোর ইতি ভাষা। যথা। নবতি র্বোজনানাঞ্চ সহস্যাণাঞ্চ
সপ্ততিঃ। যাবদবটিক মাত্রেণ তাবচ্চলতি ভাক্ষরঃ।। ইত্যাদিত্যক্দেষণ।।

শপ্ততিত্যঃ ত্রি সপ্তাতেঃ পুরণঃ
। সপ্ততি শব্দাৎ পুরণার্থে ময়ট্
প্রত্যয় নিম্পানঃ। ইতি ব্যাকরণ
সপ্তাদশ ত্রি সঞ্চাব্রিশেষঃ। সতেরো ইতি ভাষা।। তৎ সম্বাবিশিষ্টঃ। যথা। এয় বৈ সপ্তাদশ প্রক্রাপতি ইক্তে বজ্ঞে অদ্বায়তঃ। ইতি মলমাসভব্বং।।
বছৰচনাস্তো হবং।।

সপ্তদশং তি সপ্তদশানা পূরণঃ
। বথা। ততঃ সপ্তদশে জাতঃ
সভাৰত্যা প্রাশরাহ। চত্তে
বেদতরোঃ শাখা দৃত্যু পুশ্সা

CONTROL STEED CONTROL

अवकार कामिक के मक्त्रीविक श्रुर कामिक केंद्रि क्रिकाक्टलमः ॥

সপ্তদীপণতি: পু॰ সপ্তদীপানামধিপতি: । বধা । ন মুলামানা
দেশ্যাত: নভার্যা ঋদ্দিসংমুক্ত: ।
সপ্তদীপপতি জাতঃ সূর্য্যাযুক্তসমপ্রক্ত: ।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বধৃত মৎসাপ্রাণণ ।।

मश्चीं ना जी भृषिती। वशा।
यदमाः वार्यपुरमामन्मगुव।
ख जश्मभाः। देव तिवः भृषिती
महा मश्चीं भा मश्चमा। त्य तिवः भृषिती
महा मश्चीं भा मश्चमा। त्य निर्दाणका। देवि वार्कर खम्भू तावः।। रख्ना वाः नामापिती भगस्य करेवाः।।
मश्चमा वा मश्चमात्रः। वशा।
मश्चमा वा मश्चमात्रः। वशा।
मश्चमात्राम् रभारत्य मश्चमात्रः।।
प्राणीं मृद्यापिकवः।।
प्राणीं विभागिकवः।।

मश्चर्याञ्चरः पृ॰ महीद्रष्टमश्चमः थाः कथाण्यः। छत्ताथा। द्रमाम् याः म स्टामा श्रेष्ट स्वक्षानः स्वक्रमः-क्षाः। सदीद्रदेश स्वक्षाक् विष्णवाः मश्चराज्यः॥ देशि

नामिका । जन्मकः मन्दर काशिका का अध्याधिक।। रक्त दिखामबादा वृत्ति जा-बिख मानकाः।। इंडिकारीनि भगन कि नो जिल्हिं जारम है। সপ্তনাজীৱাৰ তথা কৰ্তবাঃ প-মগান্তুভিঃ মা ভারা চতুক বেংধ-म नाडिकिका दीकारछ। छा-गा॰ नाबानारः बट्टा उथा टेठव कलानि है। क्रिक्ति है । विना-बा ह ३७ देखाया ३१ जर्जनी २ छथा। उक्कामा अस्तिमाछी गाक्ष्यनाजां ज्या महा।। त्रा-हिनी 8 बाडी अद दबार्श ३৮ १ वि ३ विकीश माधिका महा। चारिष्ठाञ्चलया नाष्ट्री बाबूना-**डी डर्बन्डा। स्मोमान्ट** हिंखा ३८ छवा भूगः ३० लोककंशः २१ व्याकः। वृत्तीनामात्रका नाडी करनाथा ठ नचडा ॥ ब्रोज व्यय ४००मा ग्रामा-**। ४० अञ्चलका २०। ५**-जूरी कीवमा नाजी जोगानाजी

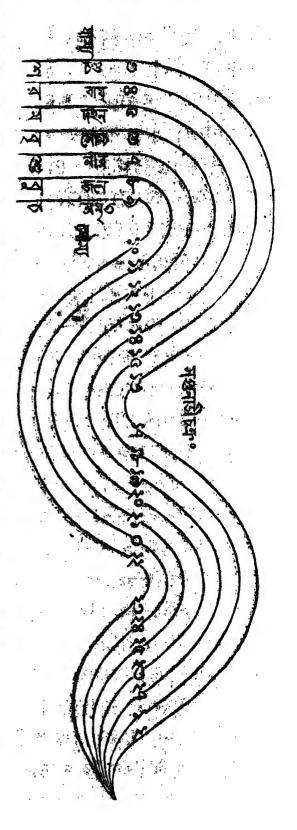
4594

थकीर्विका। नुमद्भु १ खत्रक हुन्। ३२ खन्नावार्षे ३३ छात्रकाः। পূৰ্বভাতা চ ২৫ খকাখা গৰুমী नीवनाषिका।। भूराकि ४ कञ्च-নী পৰা ১১ অভিজ্ঞিত পততা-त्रकाः २४। यद्यी नां जी कि विदेखिया ब्धाया जनगाँ किंगा। जातान-र्कः २ गका ४० विकृ २२ र्थमिष्ठां छ॰ ২৩ তথৈৰ চা অমৃতাখ্যা হি সা চান্দ্ৰী সপ্তমী চন্দ্ৰ নাডিকা।। ম-ধানাডীহিতা সৌম্যা ৰুড়ী ত-मााञ পृष्ठेखः। मोमा गीमागछ॰ জ্ঞেষণ নাডিকানাণ ত্রিকণ ত্রিকণ ।। ক্রা বাম্যগতা জ্বেবা সৌম্যা मियामिनि विका। यशनाजी ह মধ্যস্থা গ্ৰহ্ৰপ ফলপ্ৰদাং ৷৷ এক-नाजीगंजा चाानाः थहाः कृताः শুভা বদি। ততো নাডীফল বা-চ্য শুভ বা ৰদি বাশুভ গা প্ৰ-হাঃ স্ব্যু শ্বহাবাত গতা শ্চণ্ডা-খ্য নাডিকা॰। ৰাষুমাডীগতা বা-যু॰ দহনা শ্চাভিদাহকাঃ।। সৌ-गानाजीगठा यथा नीत्र हा त्यर-বাহকাঃ। জলাবাং বৃক্তিদ শচন্দ্ৰ-শ্চন্দ্রনাডীগভা স্তথা ৷৷ একোপি তৎ ফল দত্তে স্বনাডী সংস্থিতো এহং। ভূসুতঃ সর্বনাডীযু দত্তে |

नाजीनक कर्ना । तीव्रिक्टिक कू निर्णाल्य द्वी जन्म गर्छ बर्दी। माजीटवंश नमाटबाटमा केनंदवा-ग॰ वषामारु ।। यक नाजीविक শ্চক্র স্তত্ত স্মৃঃ খেচরা ষদি । ক্রাঃ সৌম্যা বিমিশ্রাশ্চ তদ্দি-न वृष्टि इन्छमा।। এक सक्तमा-रियारमा जायरा यिन रथहरेतः । তৎকালে চ মহাবৃষ্টি খাবদ-म्या भारक मानी।। (कवटेनः (मी-टेगाः भारेभ दी अरेश् विस्का.यना भगी। **छमा** जू जूक्छ शानीय मू-किन्क ভবেদ্ধुवः॥ यमा धहमा ना जीव भट्टमा खन्वरहन ह। **पृरकी यूकः करता**जारसा यर्षि ক্ষীণো ন জাযতে ৷৷ স্ত্রিষৌ সিতা-সিতৌ চৈব সৌরি সৌম্যো ন भू भरको। भूक्र**याः भूक्र**रेय बीयूः क्वीरवो जू वृशकाकरनों।। खी भू-क्रव नमारवारग वृक्तिस श्रवना **ज्रत्था** शीतृषमाषीग का<u>त</u> ম্বত্র খেটাঃ শুভাগুডাঃ ॥ **क्ट**जुः शक भानीय मिनारनाक ত্রিসপ্তক । এব জ্লাখ্য माजी-স্থেচন্দ্রমিশ্র গ্রহান্বিতে। দিনা-क्षं मिरमः भक्षमिनानि कायण **जन**। नीत्रनाजीश्वरक हत्स

ৰপ্তদা ভক্তজন্মগ বৰা १

छवरिक भूर्ववस्थितहा ॥ साम-पिनाईक बीनि पिनानि जान-**७ जनः। अम्लामि बिमाणी**वृ यक्रि जुाः नर्बर्थात्राः ॥ छत वृष्टिः ক্ৰমাজ্জেৰা খৃত্যৰ্ক বস বাস-ब्रान्। स्वीयानाष्ठीशठाः मर्द् वृष्टिमा एक मिनजय ।। (भवा ना-णा॰ महाताक मूकेवृक्किश्रम। **अ**-शा निक्रना क्नमा नाणी ज-বেদেবাপো শুভাধিকঃ।। ক্রুরাধি-क ग्यादवारग जनमा काणि नि-व्ह्रनाः। वामानाणीगनाः कृता जनाव्छिथन्तकाः। एउन्द्रन জলাশহা শ্চাতিৰ্ফিঃ শুক্তা গ্ৰ-शः। একৰাজীনমামুক্তে চল্ল-या धर्मनीमूटको।। विष ठळ छटन-की ब छन। वाजियशी यशी। तूथ खट्को यरिक्क छक्रना ह नम-बिङो।। চछर्रवार्थ छम। कारन कायर वृद्धि ऋत्या। कनरया-থগতে স্যাতা স্কা চন্দ্ৰ সিভৌ व्यरहो।। क्रू ब्रम्टकी चूटकी वानि छना ब्या श्वव्यक्तिः। छन्या-ন্তগতে ৰাৰ্গে বক্ৰযুক্তে চ সং-करमे।। जन नाष्ट्रीभाषा एउ जू मर्ष्सिथाना अशः। देवि व রোদধে সপ্তনাডীচক্রণ।।



সপ্তনাৰা স্ত্ৰী আহিত্যভকা। ইতি রাজনির্বন্টঃ।।

मश्रेणवाः प्रः ब्राइन्वः। इंडि त्राक्रनिर्यकः॥

मखनमी जी मुखानाः नमानाः नगहातः। है जिल्लाक्त्रभः ॥ विवाहाक्रमखगढीशनमः स्था। ততো জাৰাতা প্ৰাপ্তনীচী গ দ্বা বধু সপ্ততি শ্ৰম্ভি: সপ্তমণ্ড-निकाम्, मश्चभद्यानि नरवर। वः शृष्ठ प्रकिश्भाषः नीषा भण्ठा-षामशामः वखनिकाः नरवर জाबाजा ह वधु जाया । वात्य-न शारान मिक्न भाग माका-यदि । मश्रामाः महावा गृहाः मयः गांबात्रवाः। প্রক্রাপতি स-বি ৱেকণাদিরাভূছনে বিষ্ণু-एक्विं शामाकायत विनित्या-गः। अम् এक मिर्म विकृ छ। नरजू। त्व छेट्ड विक् जु। नरजू। बीनि ब्लाय विक् सा न रजू। ह्यादि यादमा खवार বিষ্ণু স্থানবভূ। পদগওভ্যো विकृ खु। नवजू। वजु।बटन्ना-याय विक् जुनवजू। बश्च न-প্তভ্যো হোত্ৰাভ্যো বিশ্ব স্থা ন্যতু ৷৷ ততঃ স্প্রমণ পদণ

गणां वश शि ब्रामारख । श्रकाशि अ वि व्यामकी श कि क् न्यः कना स्वर्ण शामाका मथा-नखत माणामत्न विनित्या गः । मथा मथा मि क् मथा रख गः त्वश मथा रख मा याचा मथा-रख मारवार्षाः । इणि मथा भी-गमनः । इणि क्वरमव छ ।। मथा । खाका माजिम थक् ब मु-मिलामुः मथा के ते । नाक पूर्ण मभाकाः मथा भी बूमासकः ॥ हणि भका स्थिन बूमासकः ॥ हणि भका स्थिन बूमासकः ॥

मश्चर्नः प्र वृक्वित्नवः। हाहिन देहि छाषा। छৎ भर्गावः ।
विभानष्य २ भात्रही ७ विषयछ्राः ॥ देछायतः ॥ भात्रहः ६
तिभानष्य २ भात्रही ७ विषयछ्राः ॥ देछायतः ॥ भात्रहः ६
तिभानष्य ३ मानगितः १ भित्राकृषा ৮ গ্রহনাশः ৯ भृष्णिर्भः
১० गृहाभी ১১ গ্রহনাশনः ১২ ।
देहि भव्यत्रप्तावनी ॥ छ९ मश्भाः ১७ भक्तिभगः ১৪ मृश्नकः
১৫ । देहि कृष्ठीधतः ॥ वृह् ६ ष्क्
১७ । देहि कृष्ठीधतः ॥ वृह ६ ष्क्
১७ । देहि जृष्ठभाना ॥ जमा
छनाः । मश्नभर्तां जन क्षिय
वाछ वर्षाम् कृष्ठिष्ट । हीभनः
भाम छन्नप्तः विरक्षाक छन्तः

শৃতঃ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। षना । मश्रक्रमभत्म प्रकेराः॥ मध्यभी जी नकानूनजा। इंडि ब्रह्मगाना ब्राजनिर्घकी ॥ मश्रमाचान की मश्रमःश्रका-(शाजूवनः। यथा। ज्यानिकातः শিতো দেবে৷ কুত্ৰৰূপী জনা-र्फनः। निःम्छा अथमः यातः পাতালতল মন্ততঃ।। সপ্তপা-তাল সংস্থাংস্ত নাগ গন্ধৰ রাক্ষ-मान्। (मवान्यी क्ट मायाः क्ट জ্যান বরশূলধৃক্।। ইতি কা-লিকাপুরাণে ২৪ অধ্যাষঃ।। ত-ন্নামানি যথা। অতল বিতল-देश्य निजनक गजिखम् । य-হাখ্য পুতলঞ্চাগ্র্য পাতাল সপ্তমণ বিদুঃ।। ইতি ভরতঃ।। मश्रमुखमृः खी मश्रमुख्यमृषा। তৎপর্ব্যায়ঃ। সুতবন্ধরা ২। ইভি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ সপ্তভদ্রঃ পু॰ শিরীষবৃক্ষঃ। ইতি गक्ठिका ॥ मश्रमः बि मश्रानाः भूत्रनः। माजूँ रे रेजानि जावा। यथा। লেপভাজ শত্র্পদ্যাঃ পিত্রা-माः शिक्षजाभिनः। शिक्षमः

সপ্তম স্তেষা সাগিত্য সাপ্ত-

लोक्स ॥ इति शक्तिकवं ।१ मश्रमी जी विशिविद्यापः । हन्त-ৰা সপ্তৰকলা ক্ৰিয়া। ভত্ৰ শু-ব্লপকে অমৃতপূর্ত্যবচ্ছিমর্সপ্ত-यकवा किया। इसश्रक जू অমৃত্যু সান্ত্রসপ্তমকলাক্রি-বেতিৰিশেনঃ॥ পঞ্জিকাষা ত-ना सका एकशरक १ व कशरक २२ ॥ 🛊 ॥ । छत्व क्वांच्यनः। কন্যাপ্ৰজ্বে বৈদ্বিজ্বলেভদিণ-হো বিশালনেত্রঃ প্রথিতপ্রভা-बः। एक विकार्का दिनित्क। य-হাত্মা স্যাৎ সপ্তমীকঃ পিতৃ-বিত্তহতা ৷৷ ইতি কোষ্ঠীপ্ৰ-मीनः ॥ **।। जश** मश्रमी। मा চ ষষ্ঠীৰুতা আছা ৰুমাৎ। গৈ-ठीनिन वहनाक । यथा। शक्यो मखनी टेंठव मनभी ठ बटवामनी । প্রতিপন্নবমী চৈব কর্ত্তব্যা সাণ-मूथी ७िथिः॥ मांभूथा मूकः कारक। मा॰मूथा॰ नाम माया-इराभिनी मुगादक रामा। जल-এব পর্বাহনে ত্রিসম্কাকালাবা।-शिट्य वहीयूक्तमक्षमा। यूशवाम गार् खिरियाभूतानः। यष्ठीमदय-ত। कर्डवा। मञ्जूषी नाखेबी यूठा । शब्दनाशामनात्यर् यक्षा मार

क्रटभाषन ॥ यथा উत्পाबदन छथा क्षां छदा। छथा। बन्ना वना मश्रमी ह कर्डवा। मर्दमा छिपिः। ষষ্ঠী চ সপ্তমী ৰত্ৰ তত্ৰ সমিহিতো হরিঃ।। ইতি কশপুরাণাৎ। তথা । श्क्रभक्तमा मखनमाः मुर्वादा यह। अद्यश्च अक्षमी विक्रमा ना-य एक पर्छ॰ यहाकल॰। ভবিষ্যে । भागिष्युनशक्ता अर्यापनः मून क्छ । भूषा व हक्क पंचा म अगाक वित्मबंधः ॥ याव छ छ-**थुन। खन्मिटेबटवटमा भित्रमः था**बा । তাবদ্ধসহসাণি সূর্যলোকে य शैयरा शाभवाकना वा ত্রি॰শৎপলিক॰ প্রস্থ মুক্ত॰ স্বৰ-मथर्वना। क्लािंटिय। भना लोकिटेक बाटिनः मास्त्रेति वि মাৰক। ভোলৰব্ৰিত্ৰ জেৰ জ্যোতিৰ্জ্ঞঃ স্মৃতি সন্মত ।। তেন চভুরত্তিকাধিক মাষপঞ্কাধিক ৰডধিক শততোলকৰিতাঃ প্ৰস্থ-ত थुनाः। **इंडि। এবলৈ उत्**ग्रनादि-कर्याः क्लाङाङ्ख्याः (बाधाः। এবং দেবতান্তরেপি তত্তলোক यहिछत्र करनम कन्नविषु युक्छ । অতএব শিবেপ্যেব বক্ষাভে।।।।।। वज्ञाहभूजात्व। अथाभन्नः महाज्ञा-

জ বত মারোগ্যস্পজ্ঞিত। কথ-বামি পরু পুণ্যু সর্বপাপ প্রণা-श्वमा मगूरभाविजः। भूकरम-স্তাক্ষর দেব বিফ্রুপ সনাভন া আদিতা ভাক্ষর রবে ভানো সূর্য্য দিবাকর। প্রভাকরেতি স भूष्का। एतवः मर्सिश्वरता त्रविः ॥ यक्वारिककङ्ग्वाह्दः मञ्ज्यााः म-मूरभाषिकः। अखेबगरिक्षव जुक्षी-ত এষ এব বিধিঃ স্মৃতঃ।। অনেন ब भन्न भूर्न विधिन। यार्करव-**जिवि-। जिमारितागा- धन- धाना** মিহ জন্মনি জাষতে ॥ পরত্র **চ** শুভ॰ স্থান॰ যদাত্বা ন নিবৰ্ত্তে। সপ্তমাণ সমুপোষিত ইতি আ-मिकर्मानि कः। **जिन मक्षमा**न मग्रावस गात्रक्वानिजार्थः। ज-তশ্চ প্রাতঃ সপ্তম্যা মেবোপ-वाममक्दाः। त्रविष्ठ विकृबण-ত্তবা পূজাকালে ধ্যেষঃ। অভি-লাপে তু ভত্তিথাবিত্যুক্ত্বা আর-ভোতি ঐছিকারোগ্য ধন ধান্য পারলোকিক শুভস্থান লাভকা-यः मस्थमतः स्विमाद्राभावछ মিতি বিশেষঃ। ততঃ প্রভৃতি স-श्वमा मूनवामः नर्ना व्यानिका

अक्टब इत्य अदिमा मूर्वा मिनाक्रेन्। প্রভাকর নম স্বভা-অন্মার্ট্রোগা-बिटमाठव ।। रेजि मद्यन भूजरवर १ व्यव विशामिन् छड ६ कर्यं विशा-ৰাৎ বন্তীসন্তেভ্যস্য ন বিবৰঃ। কালিকাপুরাণে ভক্ত প্রতিসূর্ব্য-ৰাক্য । অদৃষ্ঠা মা ৰ ভূঞীত বি-शृावः देनव पर्मरवः । छथा । व मेकी धृष्ठिनिश्वाला॰ नतीत्त्र न जू शात्ररा अर्का श्रवियो।। অধ বিধানসপ্তমী। ক্লতাচিন্ত্যা-बर्गा । अर्काञ एकि भागमः সুমরিচ তোষ ফলফাশ্রত মূ-नः नक मूर्णायनक विधिवद क्र টেম্বকভক্ত নরঃ। কীর বাসু শন দৃতাশন মিতি প্রোক্তান্য-मृनि कमार। कृषा घामभमर्थः मी पिनकुङः প্রাপ্নোতাভীউ ক-मः॥ चब চार्काथामीछत्राज्ञ ননিবৃত্তি রবসীবতে। তপস্তাৎ t ख्या ह मस्त्राभूतान । **७८**भा ভিঃ প্রাণ্যতে ২ভীক নাসা शः हि छणताजः। मूर्जगदः वृथा **ला**टका बरुएं गिंछ गांवटन ।। ভণসঃ ক্লেশ স্বভাবদ্বং ভৱৈবো कः। छत्व श्विष्णा गूनि न ক্ষৰ তাবক বপুঃ। সোচু (क्रम

चेंडारमा जनगर देनीयामन्दिन ॥ राक बूक बंचा। कर्कणवासूत्र-मख भड़रीक गृरीठकः। कनि-লাবিড্ৰবনাত্ৰ নমুল নরিচ ज्ला ।। कमनीकनवराड कना-माल मनकक । जिलेबुन रेवमा-ब शक्षिणि करेने ॥ जका মিতৌদন 'বক্ত' ওক্তে পিবসন তথা। একউউ শব্রাভ প্রমাণ ভোজদ মত ।। আৰুপ্ৰসূতি মা-ত্ৰত্ত কপিলাদুখাভাকণ ি সাত্ৰা मन्त्रका बार्डिक आंधारणा वायू-मानदर्शा वृष्ठ वर्षे त्रीत्मादन बारामकः नर्गात्रद्रेशे 'जाकवान् ভৌজবেন্ডজ্ঞা গুড় কীর নিরা-बिटियः ॥ विश्वीय मिन्ना एमवा वि-खनगान्यम्बन्दः विकेगाः शा-जन वर्गार केंद्रेस इहिटें वर्ग है।। मूका माब छिलानि नि वृं हे देकत वि-वस्कृत्यर। अक्रिके छका मुक यक् उद्यान्नात्रकः भिक्षा ७० हु-छमा याचामिनामदिरनेव विश्वि-कर्याचन विमारित्राज्यकर्खवाष मार राणिक निम नुवान । शावदक তুৰতে দিলাৎ সম্পূৰ্ণিগু দ্ববিদা-সকে । পূৰ্বমানেন ত' তাজু কা-र्याः वामनगानिकः॥ शूर्वगादनन यनित्र्वः स्वान्यसम्बद्धाः छ व नवानः। सामन्त्रानिकः सामन गारमस्य कार्यस्य सन्तराम हेवाः

वः रद्धारपरीः अभवताः।.. (नाम्पायनः कार्याः निष्ठारः छग वान् लितः॥ देकिः विस्वदश्या व **চ**नः। **ज्यामिक्तियानिक गा**न गावक ईता मानाजा मि उठक ई-वाजाशवः। केलाशनः शिवशे। এব সারস্থোগি নিবিদ্ধ:। গাগ্যঃ । जनः गढि शक्ते शक्त वात्म वृत्क बित्रमुद्धाः छेगावन यूनाः तकः वकानक्ष देनन कान्नरस्थ।। উপাৰ্নঃ প্রজিষ্ঠান উপারন্ত মা-त्रवः। वहम्य कामा शक्षमा वन-র তত্ত্বারা নিধিকৰনে গৌরবাৎ ।।।।। जिल्हा । जाटम मानि नि **তে গলে সঞ্জন।** निवस्यन या। नाषा निवः क्रिथरिका मधरत ह गरां विकशा शृद्धरक छन। छन। मुन्तानः देसक विद्यादक । इयः प्र क्रीवरदक्त आहः।। ।।। ज-वित्वा। तृबाधस्थक्ता। हि एका गारमा मक्षेत्री। व्यक्तरभावर वि नायाः जमाः ज्ञानः यहाकनः।। याद्य गामि मिटल शब्द मञ्जूषी

क्लिडिडिडा प्रमाद नानारी मानाजा बाबू द्रारतामा जन्मक्शा वक्रवावयरवनाकः अज्ञा मात्र-मा मश्रमी। शक्राकाः वित नाजा-ত সূৰ্যাগ্ৰহশতৈঃ সম। ॥ কোটি-ভাষ্করা কোটি দপ্তমীতুল্যা। সূ-য্যগ্ৰহণফল সানজ সমিহিতে বুদ্ধি রম্ভরকেতি ন্যাবাৎ। তেন ৰহণত সূৰ্য্যগ্ৰহণকালীন গঙ্গা-ন্ধানজন্যকলসমফলপ্রাপ্তিঃ ক-म बत (छारः। ञत रहम् मृ-ৰ্যাগ্ৰহাণাণ প্ৰত্যেকাধিকরণতা मःमदर्गनाम्यार कानानाः न्ना-नाना॰ जएकनाना मिन दहमें তত্বণ লভ্যতে অতো নাপ্ৰসিদ্ধিঃ । পূर्वमक्षमाः প्रवाभवत्वा र्या-क्रांगिषकारम मेख्यी छा भूर्व-मित्न ७६ कारण भाने। ठठरम्। ঘটিকা প্রাত ররুণোদ্য উচাতে। यञीना॰ नानकात्ना १४॰ गना-ম্ভঃ সদৃশঃ স্মৃতঃ।। ত্রিবামাণ রজ-नी॰ थाह खाकालाख ठज्रेय॰। नाजीना छमूट्ड मरका मिरमामा ন্তস-জ্ঞিতে।। ইভি কালমাধ্বী-वशृष्ठ उत्तर्दनकीयम शृबंगा छ० काममा भूनिजियमञ्जलितकर्छ-वा क्यांबर्यन देखत्मा राज्या-

) ,

बरबनाजिशनार्। जळाद गरक ৭ তৎকাল মারভ্যাত্মিকরতা ম-ब्रिह्छ। अबाक्ररवानयकारन म् হূর্ত্তান্যন ভিথিলাভ এব স্থানঃ। ব্ৰভোপৰাস স্থানাদে ৰচিকৈকা यमा अवर । जेमस्य मा जिथि र्जाका आकामावस्मामिनी ॥ ইতি বিফুধর্মোত্তরাৎ। অত্ত য िका बृहुर्छ॰ आक्रार्यागा काला-মুরোধাৎ ইতি বক্ষাতে। এক বৈবৰ্ত্তবচনে ষটিকা দঙৰূপা প-त्रकटन माजीना मामाखठजूकेव ৰিত্যেকৰাক্যত্বাৎ ॥ 🛊 ॥ বে তু সুর্ব্যোদষাৎ প্রাগণি প্রাতঃস্নান বিধানাৎ তব্ৰৈব মাঘসপ্ৰম্যাখ্য धनकनविधि नीघवानिज्या ख-ক্তিন্ত্য । প্রকরণান্যত্বে প্রবো-क्रनानाष्ट्रः देखि देक्षिनिमृद्धव ध्वकद्ववरप्रदम छनविधात्रिरकः । অতএৰ ক্ষতক রত্নাকরখোঃ। य रेट्हिषिभूलान् जागान् ठळ मुर्या अरहानमान्। आजःनामी ভবেৰিতা: हो बाट्यो माय का-ন্ত্ৰনো ম ইভি বিক্সুস্থতৌ নিত্য-সান প্রকরণাৎ প্রকরণান্তরায়া-নাৎ প্রকরণান্তরাধিকরণন্যা-ষেন কাম্যন্ধানাম্ভর মিদ মিত্যু-

कः नजू अन्यन विधिः। किन्न কাম্যক্রশ প্রসঙ্গমিতাসিদ্ধি-রিভিন সাম মান্সাস নিমিত্তক মামসপ্তমীনিমিতক কাম্যনান-त्याः धार्वासामार त्विपिति करवन आविक्रिक्त महमन्थे।-न । श्रमानमाजिना यव मान তৎ ক্রিষতে পুনা েব্রদ্বস্যাক্রি-वाशास नावृद्धि कं ठ ७९ किया।। रेणि राजावनकना । बनान याष्ट्रंब कु नाष्ट्रवा न वश्नि-শি। ন ৰাসোভিঃ সহাজসুণ नाविद्धारिक क्ष्मानुरस्था हेलि यन् वहदनदेनकमा अनुवान निरय-शाका । अर्थितकारुवर ज्ञान या-क्रिक्क भूमः भूमः । देखि मन्तर नाक। बरुक्त नामीवृश अव-त्रग्रान्य थयानामा मिन कागा-नाः তত्তलम स्वा विश्वानाः তত্ত্বেপৈৰ সিদ্ধি বিজি শ্ৰোদ্ধচিত্তা-ৰশি:। বিশ্বাস বিকুপ্ৰীতিক ম-(वाः गृजद्वाः महत्त्वन्धानः। ७१ ভারতমাৎ ক্লভারত্যাঃ ইতি नगरक कन वाबा छबु रेक् শীর ওড়াদি নাধুর্ব্যভেদবলির্দে-कू मनका । भका खदाणि कनारक ब्रती आहु अनगरन। कना-

গতে পঞ্চমে জু বিশেষেণৈৰ কা-न्नरवरः॥ देखि रहमाणिष्ठानिका পুরাবোক্তবর্ণ। ঐতবর্তম প্রাসর্জণ कार्डिक मेगमाना क विवयः। (म-न कोनाक्षर हेनेब बेरा गाउँ म त्ना खनाः। नृक्षणमानि मानमा गनाजिनसर्छकं ॥ रेखि उप-भूतारमाञ्चनकः। शिन्दंब्दम टबः कवाणि बाबां बाबना विवृविकि-वरम शारक नक्डी वी विशानकः । इंडि उनाभूतांगानियहमार छी-র্থতেনে তন্ত্র প্রান্তবোলনা রসম্ভবা-का चंडधन भनावाकावनी आ-कि डांग्टमार्गः वर्षे अवंदिगं का-হ্নান লোডীক্তেপি নায়সপ্ত नी जाबाक्यनांश्रेष्ठभगकरम् प्र नखरेशन द्यां अध्याना हेत्रन छ प्रयु कः। जार्गिक्रस्कानदेगाव विशि छबार। जमाना छद्यार्कनकान-নাক্ষা জালব্যাগতে রিভাক্ত ॥ ।। बाल्नाटन महिलाही बार हर ण्य**क्षणं ।** भारतिका । भारतिका गवानि ग**वार्य**नवानि ए नित्रनि निशामा सम्बद्धाना हो । जाना मना गराम् जनम् । जन्म । जन्म । जन्म । जन्म क्क भाकब्रोक्ड **मख्यी**।। हेजून कार्या जागामिकित्नवः । त्त्राकः

ছিক্ত। ভিথিত্বভাগা পৌৰ্থাস্য-स मानाककषात्राकतीजिनक क क्त्राकात्रक हाल्यमानीविधिन-র'। ভিথিকভ্যে চ ক্লফাদিণ এতে ख्क्रामि (यव ह। विवाहात्मे ह लोबापि यात्र क्रुडा विभिक्त **लिए।। ইতি उन्नश्रामए। यस**् ন্তরাদিম্বেন তথা যুক্তদ্বাক। কর্ণা मरनाभूतात्। यन्त्राध्यक्षत्रादनो जू द्वर मानू पिंवांकताः । मानमा-ममा मध्या । उत्रा मा तथम-श्वमीरा अकृत्वभवरवनामाः छः স্যাণ স্থানণ মহাফল 1 অতএব नातिन रह तथा। था। वा विज्यक्र । यथा। यहानक्स्याः बालन्याः छ-त्रगा मिंग देव हि। ख्याक बजुः তীযাষা শিষ্যানাধ্যাপষেৰুধঃ ৷ माक्सारम जू मख्याः तथा। या। वाजः वर्क्कत्वरः। वामभगः भक त्नाथानबाबना। **अंत्रगाः** नव ধজপাত ভরণ্যা। ইতি কল্পভক্লঃ শে অত্র মহানবম্যাদি সাহচর্য্যান **দ্যৌণচান্তত্ব' প্রতীয়তো অতএব** ठलुर्फन मक्खब्रामिशनम कानि न त्राणात्मधः। कथा खरिया वाद-महरवाः। अश्वक् शक्तभवमी वा-ननी कार्डिकी छ्या। ज्ञीश

टेठवबानगा-क्यो जायननगा ठ श का सुनारामाना वर्गा । जीव-देना बात है । का बाद है गानि क्लाकी छवा बार्गा गर्जने।। छा-बनगाकेंबी कुका उपनिष्ठि शृश्या। कार्डिकी कान्नुसी होंबी देकाही शक्तमी जिला। वयखता-দৰ ভেতা দত্তসাক্ষ্যকারিকাঃ ৷ অত্যাদাৰ াস্যাফীৰীব্যভিন্নিক্তাঃ खकाः। भूनः भून ख्यागतामा দানাৎ উপক্রবোপসংহারবেশঃ श्रक्षक कीर्त्वनाका । अब कामर्थ-ৰৌ ভূভীয়া চৈব মাহস্যেতি। ক-মতরৌ ভু ভৃতীবা চৈত্ররাসসো-ভি বিখিল। অত্ত পাঠবৈধে औ প্ৰিরত্বমালাযাণ। অশ্বস্থাজি শু-क्रनवनी बामगुरक्ट नरशे जृजी-ৰা চেতি পাঠাকৈত্ৰতৃতীৰৈৰ আ-श। औरखारभाक। मानम्ख ম্যা শ্চান্তৰ সৌরা**গ্য**ে ২পিন वर्कलटेकः नदारेत मृवाक्य क क्लारेनः। अकीकविषिमा कार्याः मका।नामिकाञ्चेत्व।। वात्य २व काजुद्ध बर्राभ छत्तरेष नाममञ् মী:৷ সা**ন্ধী**তি চ'ৰৎ**াপ্ৰাক্ত** তৎ शारगवृद्धिल्लामा । प्रकाम

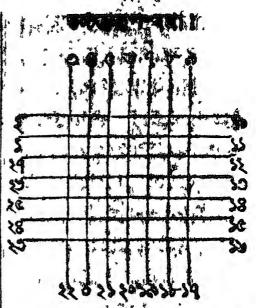
खात्ना वृक्ति निर्देषस्य । छात्र-भावाकाकार्यम भूगाः प्रभावन न्क म विकित्तक रूतानीत्वव १ पारिजानिका पर प्रापित त्नरम कर्मन विक्रिक गरेतः १ देवर वागाव महिलाक कारावा-निम्पीएठ। धर्मका उननी সর্বভূতানা **সন্ত্রীক্রন্ত**িক। मध्याकोडिक कि नगं एउ त विगल्डण।। जनावमञ्जूष । जल-नशिवर बीड मन्द्रनावधवीनन । मछया हि नव खडा भरम श्वजाय त्वरंग ते व्यक्ति प्रयः १ रेकि विवासिक्य । स्था गरा गी-वछवित्नवा त्रयाः। विकाशाः।। जगवन् जननगात्रनावदग्राजातः कातकः। किल्बुङ भेनातक व-र्शारहारहार मुख्यक हो विकासान्-वाहा दर्गा अवर्था अवर्था विभाग कन्। भारती । विकास महानी। **उदद क्लाग**े मान्यानिती ।।। गर्कत्राजलमा मुना ज्या करत-मखरी । बनाबक्की क्रां जरेमर अक्निश्वमित गरीः गर्न-क्याः ब्लाकाः भरत्यम् छ-छार विकाद माना विकासि वदी-विविया। (कार्कोक्यकी मानूका । तक्ष्मूक्षकः मान्या कु एतर्नश्च-

या गामिछाना क्रिक्ट कर्दि । गा जू क्यातिकी जान निक्रा जू निगम्बद्धाः स्वातः कान देक्षिक्षक है स्थान है। PARTITION OF MAILENCE राषः वर्षेत्रोशका ग्रान् ग्डिटामा स्थापिक दिन्य । यथा । अर राज क्रमा अहै से स्मोना वृद्धि प्रशासकारः। अस्तानपर जगायील व्यवस्थानाः मराध-का। अक्रमाई मूडाना गरन MIND BUT AGAIN W ग्र्डा के मुख्ये हैं करता न ज्विता रेकि बाह्यर गुर्दा १ जिना-नायांककार दिल्ली हैं है है है है है मश्रास्त्र के जिल्ला कर र् नवान साम। अकात संगामन न प्यक्रिक कार्क महिल्ला नकार स्त्रोक शास्त्र महत्व तको अनुवास्त्र न्यानि छ । ভাগুনসমু নিষ্টাল্পগুরক अनगरहार हो नाम्बन ॥ नश्रदेश । श्राम्बिका अन्तर्भाव-प्रवाहो (क्षण्डम् स्थाप्ति स्था) महीकि असविन्य समित्राक्ष नुसदार के नुसरा द कर्या क

: श्**नसर्वित्रस्यः कथा**क्ष्मात्रं गः र्वकाणका । उस मश्रदेशः मश्रि विनिष्डाः अजाग्जा ॥ जडी-हि इतिः 'शूनरः भूनखाः कष्ट विन्द्राः। विनिष्ठे महाजाग "অঙ্গলে যানসাঃ সূতাঃ।। সপ্ত-:বাৰণ ইভোতে উচান্তে বৰ্ষ-বাদিভিঃ। সভুতি রন স্থা চ ক্ষমা প্ৰীতিশ্চ সন্ধতিঃ ৷৷ অৰুদ্ধ-তি স্তথা লক্ষ্যা তৎপক্ষ্যো লো-ক্মাছরঃ। এভাসা ভগসা देठञ्जार्यारञ खुवनजरः ॥ म-স্ব্যাত্তৰ মুপাসীনা গাৰভীজপ-**७९** भद्राः। जित्रम् लात्क वम-ন্ত্যেতে ব্ৰাহ্মণা ব্ৰহ্মবাদিনঃ 11 रेलिशारम वर्गश्रु ३३ जवागवः সপ্তলা ত্রী নবৰালিকা। ইজ্ঞা-भन्नः।। हर्वक्यांश अक्षांश औ-हेना। हेि त्यिनी।।

ব্যক্ত নেত্র ক্রমণ্ড ক্রমণ্ড কর্মণ । ব্যক্ত প্রতিষ্ঠা কর্মণ ক্রমণ্ড ক্রমণ্ড ক্রমণ্ড কর্মণ । ব্যক্ত কর্মণ ক্রমণ ক্রমণ ক্রমণ ক্রমণ ক্রমণ ক্রমণ কর্মণ ক্রমণ কর্মণ ক

१ ज्वादम् इद्विकासादम् स्मान चनीडि क्रस्याः। चर्यम्याः इ-ক্লিত্ৰ তু পঞ্চাকৈক সূস-খ্য ৰাঞ্চ .बह्बा रशाया न्हजूरमश्चः हजूदर्व म भरतमकाः। जरशाख्यक्रित्रव्य তু ষট্ বডগ্লি স্নোকভাক্।। জগ্নী লোমাধ্যাৰবতী গীতা সপ্তশতী স্থা। ইতি নাগোজীভটঃ॥ मक्षणनाकः पूर विवारमा खला **एक मिनका नार्थ- किया गृक्ष म** श्वद्वशाविणिके ठळावित्नवः। य-था। इंखिकामि ठजूःमश्रद्भशः तात्नो भतिञ्चन्। अर्ट्यान्ति द्मियाटका त्वयः मश्रमनाकजः॥ मश्र मश्र विनिधि अत्त्रिका खिर्वा गूर्कु यथ क्रविकामिक । লেখবেদভিজিতা সমন্বিত হৈ-করেখগ খগেন বিধ্যতে॥ বৈশ্য-मा ठजूरर्भ २ राम खंदनारमी मि-প্তিকা চতুকে চ। অভিজিৎ জ-**ट्य थ**ठदब विदक्षका द्याश्निवि-का॥ निश्चिक क्षः। यमाः म-শী সপ্তশলাকভিদঃ পাগে রপা-देश दश्चा विवादश द्रक्श चटक-देनव कुद्धानमाना श्रमानकृतिः अमन क्षराजि॥ १७ मध्य नाकरवमः। देखि ब्लाखिखा।।



मश्चिता की नामकी। देखि ताकनिर्देखाः।

मखाखाः १ गुर्वाः। इंडि द्रम

Far: II

गश्चमागतः १ वहाहासितः भवाठः
। वशा। वश्वा देवातः। अवाठः
गश्यकाविकानातं स्नूडमः
। मश्चमाविकानातं स्नूडमः
। मश्चमाविकानातं स्नूडमः
विनानतः॥ भूगःविन स्वामानाः
वा द्या वावनहाहतः। ' छूनाः
भूकवर व्यापः क्वाद्यनादाः
इनः त्रः॥ व्यविक्या मञ्जातं
छ्वभाकाविकः। काद्यसः
मश्चमश्चा क्याद्याः
।। श्राह्मसम्भवा नि ख्यादिकाः
वानिवा भूनः। अवाधः मश्चभः
वानिवा भूनः। अवाधः मश्चभः
वानिवा भूनः। अवाधः मश्चभः
वानिवा भूनः। अवाधः मश्चभः

मकाशानि ह म्बानि क्रेकािक न जिलाशिता व्यथम शृत स्थ क्रक नर्दान विहक्षाः॥

য় প্ৰসাত্তৰৎ সর্পিষা পুনঃ। চতুর্পন্ত গুডে देनव मुझा शक्य (यव हु।। यर्छ॰ गर्कत्रया जब ९ मश्रमः जीर्थवा-तिगा। सांशरयद्यवनस्य उसानः কাঞ্চনণ শুভাগা কেশৰ কীর-गर्धा जु च्ञार्धा गरहबात । **छ। कतः 'श्रुष्ठमर्था जू मधिमरथा** সুরাধিশ ।। শর্করীয়া নাসেৎ नंत्री॰ जनमस्या जु भार्वजी॰। मर्दियू मर्दब्रज्ञानि शानानि ह সমস্ততঃ।। जुनानुक्षरं ८ । মক্রাপি পরিকর্মেব । ততো বাৰুণ হোমান্তে স্বাপিতো বেদ-शूकरेवः ॥ **बिः अमिक्निनं** मावृछा यञ्जानियान् जीव्रदयः। नत्या वः সৰ্ৰসিন্ধূনা আধারেভ্যঃ সনা-छनाः॥ जजुनाः थानामजाम त्रमूर्प्यत्वा नरमा नमः। की-রোদকাজ্য দিধি याथव लाव-ণেক্সারামৃতেন জুবনত্রয় मः थान्। जानसम्बद्धि वमु छि শ্চ ষতো ভবন্ত স্তশাম্মমাপ্য-यविशाल मनं विषय ।। यत्रार

সমস্ভ ভূবনেষু ভবস্ত এব তী-র্থামরাসুর সুবন্দ্যমণিপ্রতান । পাপক্ষাদ্ধর বিলোপন ভূরণা-ৰ লোকস্য বিভূতি তদন্ত ম্মা-शि नचीः।। ইতি ननाछि त-সাম্বর সংযুতান্ শুচি রবিশ্বয-वानिश् मागनान्। जमल काश्-न नवत्रव्रययानामा शक मूरेशिक হরে রমরাবৃতঃ।। সকলপাপবি-যাত বিরাজিত পিতৃ পিতামহ शू<u>खः</u> क्लब्कः। নরকলোক সমান্তল মপ্যল বাটিভি নেতু মসৌশিবমন্দিরণা ইতি মৎস্য-भूतात यशामानान् कीर्खतः म-खनागत्रथाकानित्का नाम २७% व्यक्तांबः ॥

সপ্তসৃং স্ত্রী সপ্তপুত্রপ্রসূতা। তৎ পর্য্যায়ঃ। স্তবক্ষরা ২ । ইতি শব্দরত্বাবলী।।

সপ্তাণ্গুপুসৰঃ পুণ শনিগ্ৰহঃ। ইতি জুটাধরঃ॥

সপ্তার্কিঃ পু॰ অগিঃ। চিত্রকবৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ॥ শনিগ্রহঃ।
ইতি হেমচন্দ্রঃ। কুরচক্ষি ত্রি
। ইতি মেদিনী।। সপ্তানা মর্কিষাণ নামানি সপ্তজিহ্বশব্দে
তক্তব্যানি।।

मश्राभः भू मृशः॥ वर्षकः रेडामतः॥

সপ্তাশবাহনং পৃং সুর্ব্যঃ। বথা।
লোকসাকী ত্রিলোকেশং কর্ত্তা
হর্তা ভমিসুহা। তপন স্তাপন
লৈক শুচিং সপ্তাশবাহনং ॥
ইতি শাষপুরাণে সুর্ব্যস্তোত্রং ॥
সকরং পৃং অশ্বঃ। ইত্যমরং ॥
সকরং পৃং মৎস্যবিশেবং। পুঁটা
ইতি ভাষা। শ্বানা ক্চুরতি
পার্শ্বেন গচ্ছতীতি শক্ষী মণী
আদিং নদাদিখাদীপ্। শোণি
শক্ষী শ্ব্যা শক্ট শিলা শ্বন
শতপদ্য ইত্যমর্কীকাবাং ভা
শক্ষণতা ইত্যমর্কীকাবাং ভা
শক্ষণতা ইত্যমর্কীকাবাং ভা

সকরী ত্রী বৎস্যবিশেবঃ। পুটী ইতি ভাষা। ইতি ভরতঃ।। তথ গর্ব্যাবঃ। শকরী ১ প্রোষ্ঠী ২। ইত্যবরঃ।। শকরঃ ও শেতকো-লঃ৪। ইতি ত্রিকাওশেবঃ।।

कनंति भिके भवाषः। अत्योषः २। ইতি

नवनः जि देननायुकः॥ नात-र्यातान्। यथा। नवत्न ह गृहर- शार्थ जिन्मातः श्री कर्णः विज्ञा-दश वदन ज्या नामः वर्षः विज्ञा-द्यश्वादन ॥ देखि शक्ष्यद्वा ॥ मवनिः भूः विकानः। देखि द्यम-हत्यः॥ मवाधः ति श्री जानुष्कः। निदय-वृद्धः। वाष्ट्या वाद्यन ह मह

বর্ত্তনালে হাইতি বহুত্রীহিস-মাসনিশারঃ ।। শবদারী পু-

ব্রভাসের। ইভাসরঃ।। একসা-क् अद्भा जिक्दन दिलाम अर्था বেদাৰাৰমাৰ অভ অভি ত্ৰহ্মচ-वीषाः बाहत्रिह (व ८७ १८न)।-मा॰ गडकाति छाउउ। छ-शाहार जनारायनाय- वजन-পি এক। পৰাৰ এক চরগুতি वरामिशामि क्यां कि किनश-विद्यापिना नगानेगा गलाद নতক্চারিক্টা একত্রকারতাচা-ता रेख्य अक्षानु मर्ग उमा-মেতৃ ৰত সাচর**ভী**তি তুমর্থে চত্ৰ্যা ৰিগৃহঙীতি পরে। স-वनगरी जिमक्रमिया हे छ राजनकि विवासमानिकः। देखि **3398** 11

मञ्जूका जी विमानानगिका।

তৎপর্যাদঃ । প্রতিবন্ধী ২ । ইত্যমরঃ মা দধ্রা ৩ সরাধা ৪। ইতি জটাধরঃ ।

সভা জী সহভাতি অৱ। মজ লিস ইতি পার্মীকভাষা। প-ঞাবিত ইতি দিন্দীভাষা। নিটি॰ रेडि देवद्वकी छाया। भर्यायः। सुरुक्ता २ शतिबद् ७ গোষ্ঠী ৪ সমিতিঃ ৫ সংস্থ ৬ बाइमी,१ बाइम् ४ महः २ नगाजः ३०१- हेकाब्रतः १। गर्वर **321 देखि कार्क्रिकड़**ा। **यसक**शांति यथा। अनु । पश्चिन्-स्मरम नि-चीमिक निका द्वारिक अवः। त्राखः थाविहरूका निवान् वाषान ভা· সভা: বিশুদুম • II-বিশ্বৎ-সংহত্যৰূপি সূতাপৰ্যমৰ পরিব क्य मारमध्या देव विलगा देर-जूक उर्की मिक्रका क्ष्मां हुनः । जम नगाअभिना मुद्देनविषर-गामनारहाशा देवतिमा वि-रवनगाइतः। देवकुकः महत्र्किः वावरात्री। अक्षानानिः रः। সভা সদসি সক্ষে হা স্বৰ তা দীন্তিঃ প্ৰকালে ক্ৰাম বিভি यावरा छवा गर् नाकाक नक ম্পর্যা বা বর্ত্তে ইতি সভা शक्षा काणावनः। इक कील वर्षा वृत्व विख्व कि त्रविष्ठिणः । विविधः मार्थः किलिटेशः कल-वृत्व त्रविष्ठिणः।। मह देखि ला-सः। देखि वावद्।त्रख्यः॥ ॥।। मामाक्षिकः॥ वृष्णः॥ भृरः। देखि द्याप्त्यः॥ ॥। मणायाः अका-किभमनित्यस्था यथा। देनक कत्यः मणाः विश्वः ममवायक वर्क्कत्यः॥ देखि कोर्ल्य जेश-त्रिखारंग ४६ ज्यशासः॥

সভাজ ত্ক সেবনে। প্রীতৌ । দর্শনে। ইতিকবিকরজ্ঞান । অসমভাজৎ। ইকি নুর্গা-দাসঃ।

मणाकन की गमनागमनापि ममदय मूलपाटप द्राणिकनाद्रा-गाञ्चम्य वागणापिनानटकाष्ट्रणा-प्रमा छ्रुष्णाकः। जानकनः २ जाञ्चक्रनः ७। रेणम्बः॥ प्रेमि मन्द्रि मणाक्रेक्ट स्मर् न श्रीक्र पर्मात श्राक्ष्ण जाः एम जमहे। नक्षणः मृक्ष्ण काणमूर्व जाणिकनामादिणि मृ-जूषिः। गमनाम्बाध्यस्यः। जा-शिका भमनानुकाध्यस्यः। जा- সভাস

গতস্য বা স্বাগতারোগ্যাদিপু-চ্ছা আনন্দন মিতি রমানাধঃ। ইভি ভরতঃ।। म्बार्गाठः भू॰ ममाकाधिभििः॥ मृष्ण्यायी। देखि किटि ॥ সভাসৎ) পু॰ সভাষা•সীদত্তি উ সভাসদ্ পিবিশতি যঃ। তৎপর্যা-ৰ:। সভান্তার: ২ সভ্যঃ ৩ সামাজিক: ৪। ইত্যমর:।। প-विषष्टाः ७ भर्षष्टाः ७ भाविष-ছঃ ৭ পার্ষদঃ ৮ পরিসভাঃ ৯। हेि नक्त्रप्रावनी।। जनक्रना-**षि वथा। काल्यावनः। मट्डा**-নাবশ্যবক্তব্য॰ ধর্মার্থসহিত• विष्टः। भृत्वाणि यमि त्या द्राष्ट्रा मााजू मञा खनान्यः॥ मङाः मंजायाः माधुः। उषाविधाना इ ষাজ্ঞবন্ধ্যঃ। শ্রেভাধ্যমন সম্প নাঃ স্লীনাঃ সভ্যবাদিনঃ। রা-জা সভাসদঃ কাৰ্যাঃ শত্ৰৌ মিত্তে চ যে সমাঃ।। শ্রুতাধ্যয়ন मन्भवाः धर्मभाञ्जलाः। जनी-नाः भन्द्रामित्मायभूना गाणा পিতৃব শ পরম্পরাকাঃ। এবস্তু-তাঃ সভাসদঃ সভাষা ষথা সী-দন্তি তথা দান মান সৎকারে ব্লাজ্ঞা কর্ত্তব্যাঃ। ইতি ব্যবহার-

उत् ।।।। जनाक। गमः गद्धो চ मित्व চ धर्मामाञ्जविमात्रमः । विश्रम्भः अंगीनम धर्माधिक-त्रत्व ७८४९ ॥ कार्या खबा-বিধা স্তত্ৰ বিজমুখ্যাঃ সভাসদঃ । इंडि यथ्नाभूतर्ग ३४२ ज-शायः ॥ वृहण्णिक मश्च गञ्च ভ্ৰেষা বা সভাসদো ভবন্তীত্যা-र। लाक (बम्ब्ह धर्मक्राः मश्र পৰ তৰোপি ৰা । ৰত্ৰোপবিষ্টা বিপ্ৰাঃ স্যুঃ সা ৰক্তসদৃশী সভা ॥ किन। अथाजिवाकः नामा-তাঃ সত্রাহ্বণ পুরোহিতঃ। স-সভ্যঃ প্রেক্ষকো রাজা স্বর্গে ভিষ্ঠতি ধর্মাতঃ।। ছত্র ভামাণা অনিৰুকাং সভাসদন্ত নিযুক্তা ইতি ভেদ: া তত্ত্ব নিযুক্তানা वथावविकार्थकथरनि यति ता-कानाथा कर्त्वाि छमारमे नि-वात्रगीरवा श्नावा (मावः। উ-क्ष काष्ट्रावरनना जनारय-নাপি ত॰ ষাস্ত॰ ষে ংনুষান্তি স-ভাসদঃ ৷ * ভেপি ভদ্তাগিন স্ত-न्यारजाश्मीयः म रेंछ न्भः ॥ ইভি মিতাকরা ৷৷ সভান্তারঃ পু॰ সভাসদ্। ইত্য-यद्रः ॥

मिकः पुर मृष्टकात्रकः। देशा-। সভাদাত नमाखिरदबनारि সভিকঃ বিকার সংশ্রতি কিকঃ। সভাদৃতি সভাগৃহ বিভি ক্রডঃ । पृष्ठः कार्याठे पृष्ठकातकः वन डा॰ वार्ष का। देखि छत छः।। छद्यवानः। मुद्रामन् निर्वाह मुख्यातक नावकाः। সভিকঃ প্রতিক্ত শেন্ত। ইতি क्रियम्भः ॥ १५ । गडीकः पूर्वाक्षात्रका है छि नक्त्रश्रावनीयाः সভোচিতঃ শুশ প্ৰতিভঃ। ইতি

धनक्षयः॥ मडाटकारगा कि ॥ गडार मूरा नायू ।। मडागरा ইতাৰরঃ । ইতি জটাধরণা गजाः वि थजारिकः। रेडि क्रिक्द्रभा ज्ञानक्त्री है।।

नम् वा नमार्थः।। श्रहकार्यः।। मक्दरा (माजनः। ইতি भय-त्रज्ञावली ॥ अबुक्तका देखि ट्यक्याः **क्टू**र्याणकर्गः । रेणि वाकतना अनार्यक्रम वाः मः नत्य खरोवाः ॥ अवसः वि भगनक्री। मः भूर्वक मनः वि मर्ना। ममानः। रेजाः

मत्रा गान्। इंडि मिनी ॥ मदः ॥ एक महिकाक केलि काटल मगः भू बालिविट महाना मन-क्वावित्नवः। एक ज् त्रानवः वृष क्क है कना वृन्हिक वकत्र भी-नाः। यथा। कृत्ता १४ मिगाः শুৰুৰো হলনা চ ওজো হৰ যুগ্মণ विषया गयना। ठक्क चित्र छा-चाक नामदश्या दमसामदसा सभी क्रमनः अपिकाः॥ इति क्या-णिखबु ॥ ।। यानमा अकात-বিশেষ। সভুষদা গীত বাদ্য-ৰো স্তালঃ গায়কদ্য হস্ত পাদা-नि **চালনক** একদা সমভাবেন পততি তদা ভবতি। ইতি স্ कीण्याञ्च ॥ 🛊 ॥ तर्गम्यान-ৰনাৰ্থ- অকোপরিদত্ত ঋজুরে-काविटनवः। कथा। छाङ्गङ्गा षियबाध क्षा बिखनरबम्म न गरम छक्छ छाञ्जा लक्किछि॰ कामाविक्यालक विभिन्न गा-स्वरा हेजामिनीनावजी।। नमकना जी विवादगानमूका। रेिंछ धनक्षमः।। ममृनक्रमाती ह मगरकानः भूः मर्गः। ইভिजि-का उद्देशका

व्यन्त्रभारणाः कथान्यस्य नि-

भाषः। देखिनुषात्वाकराकित्रन्था गरगञ्जकः भू कृति मधुभा स्था। বৃক্ধূপে ভক্করো গিরি: লাং সমগদ্ধকঃ।ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা।। সৰগদ্ধিক ক্লী উপীরণ। ইতিরা-. कमिर्वन्तः ॥ ज्वागन्नम् कि সৰ্থাঃ জি সকল । পূৰ্ণ। ইত্য-. बद्धः ॥ नमना जी मिक्का। देकामद्रः॥ नब्हानूनछ। ।। यत्राह्काछ। । ইতি রত্নশালা ॥ বালা। ইতি ब्राक्निर्यकः ॥

नगिष्ड॰ की अकिवयकान्डः-कत्रनवृष्टिः। यथा। यत्ना वृष्टिः শ্চ চিত্তক তে হ্নীশাঃ শ্রী-রিণা । একচিত্ত বৰঃ কুড়া क्कारमम भृष्टनाहरम।। अविह-ख॰ প্রপদান্তে ন তে লিম্পন্তি बानवाः। गर्बज्जानिजक्षः भारतक करेथन ह।। मन हि-ख॰ बिंब दिन छन। छना न ह किना। देखि वाद्रार्थ । इस्कर्म-बाह्यशायर्गन नाबाधायः॥ नमक की दम्भा है कि त्रिक्रिमी।। मयकः पु॰ भसमयूरः। रेडा-यतः ॥ वृष्मग्रहिः। ইতি मक् ब्रावनी ॥

- जयमृ माजा जी कीर्डिः। रेटामतः॥ ममाखा नमका। नमाना रेखि ह

। ইতি ভরতঃ ॥

সমজ্য। ব্রী সভা। ইত্যমরঃ॥ कीर्डिः। देखि छड़ीकायाः ताय-युक्रिः ॥

गमक्षमः क्री छितिषः। देखासदः॥ ति मबीं ही नः। इंडि बिकार्यस्यः। ज्ञासः। हे-ভাজবগালঃ ॥

সমষ্ঠঃ পু॰ গঞ্জীরঃ। ইতি শব্দ-त्रशावनी राशावनी ह।।

সমতা ত্রী সমত্বা সমস্য ভাবঃ रेठार्थ मन्यार ठ अठारयन विश्रवा ॥

ममिलिक जी। मगागिषक । नगाक्थकारत्रगांचित्रिकः देवि তৎপুরুষ সমাস নিপার।।।

मग्बर की मग्डाम रदी की नागत् थङ। रेडि ब्राक्टनिर्वन्हेः ममम्भी वि नर्बज्वा जुना-मर्भनभीनः। यथा। विमा विन-र गण्णात जामात्। गवि रस्तिन । अनि टैंहर अभारक ह शिख-जाः नवस्थियः ॥ देखि शिक्रा-वक्तीका ॥

मसमृष्टिः जी मर्वजजूनामर्भनः।

সমস্তঃ পু• সীমা। সমাক্ষকা-রেণ অভঃ ইতি তৎপুক্রম সমা-সনিশামঃ।।

मगडल वा ठल्किंग किता खाः। তৎপর্যায়:। পরিতঃ ২ মর্বজঃ ৩ বিশ্বক্ ৪। ইজানর:॥ সম-ভাৎ ৫। ইতি শব্দরক্রাবলী।। সমন্তব্যা ক্রী সুহীক্কঃ। ইজা-নরঃ ॥

সমন্তভ্যঃ পুং বৃদ্ধঃ। ইতামরঃ।। সমন্তভুক্ পুং অগ্নিঃ। ইতি বিকাওশেষঃ।

गगडार वा समस्यः। देखि भयत्रश्रादगी।

गमनाः भू भिका है छ क्टि । ११ क्टांब वृक्त महार

সমন্বিতঃ ত্রি সংক্ষা মধা। বিস্পত্ত বজ্ঞত পাস্ত স্পত্তীক রপদ তথা। কলমর সমাস্ত त्रम जान मनविष्यः ॥ देखि छि-थाणिचवुः ॥

নমপদ ক্লী বৰিনা পাদমো-স্তুল্যৰপত্যা ধারণ । ইত্যানর-মিকাৰা ভরতঃ ।।

मनभनः भू॰ त्रिविक्वितित्नियः। वथा। वाविश्भात्मो कृषि द्या-भग कताणाः भीष्ठत्यश् खत्नो। यत्थवः जाष्ठत्यत्वानिः कृषः मनभगः पृष्ठः।। ইতি त्रिविद्यक्षः त्री प्रतमीभिका ह।।

जनशाम की विद्याः भागत्याः खनाकशब्दा वात्रवः। देखि रहत्रहसः॥

गमिक गामि देशक खरिक । वर्षे भामि देशक खरिक क्षिण ज्या खरिक क्षिण ज्या करिया ज्या करिया ज्या करिया निर्वेगान्या ज्या करिया वर्षे कर्षे विकि ज्या वर्षे कर्षे विकि ज्या वर्षे क्षिण वर्षे वर्षे वर्षे क्षिण वर्षे वर्ये वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्ये वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे व

কর্মন নিভিত্তেদারক সুকাজাব ইত্যনুখারপদস্য কটপদনত্ব ন-প্রিতাদৃশাত্ববোধে আকাজা এ ইতি আকাজ্কাগ্রন্থে নপুরা-নাথঃ ৷৷

সমভিব্যাশতঃ পু॰ সংহাক্ষরিতঃ
া সহিতঃ। ষথা। নিমিত্তানা॰
উৎপত্তিবিধি সমভিব্যাশত নিষতানা॰। ইতি তিখ্যাদিভত্ত্ব॰।।
সমভিহারঃ পু॰ পৌনঃপুন্য॰।।
ভূপার্থঃ। ইতি মেদিনী।।

ममजूमिः श्वी ममानकानः। ७९-भर्यापः। जाङिः २। ইতি জ-টাধরः॥

गयम् वा गरिछ । यथा। गर्कस्य गाक गळ गय गर। रेछा यदः गय प् कालः ॥ मण्यः ॥ जाहादः ॥ जिकास्तः ॥ मिर्या रेछा यदः ॥ कियाकादः ॥ मिर्या रेछ (यिनिशे ॥ मण्य ॥ मिय-यः ॥ ज्यमदः । रेछ (रूप हस्तः ॥ १। काल श्रम मा यथा। भ-द्रस्त्रीय ज्याह । द्राक्त स्मास्ति है गयद म् मार्म पूर्वक । का-लाख एक जार्म मुगा काल उप गद्राक्यः ॥ काल नि स्ः मृ- भागिक मुगानिक जिल्ह त्वर है। क्लिक काषु भद्रा रेखि गर्छ-क्ष रित्र एथा। यहिया यकि का करिक ग्राज्ञ छक स्ट्यां बगः। কিৰ্বন ভৌতি রাজেন্ত্রণ কা-ल ताजा ह किनत ॥ हेला न मनवः कारम कारम ब्रांखा म-রিবাতি। ভিরোহিতা চ প্রকৃতিঃ कारन खेहकविधार ॥ महिरा-স্থি সুরাঃ সর্বে জিলোকস্থা শরা-চরা। সর্বে কালে লয় বান্তি 'कात्ना हि नूत्रि खिक्र वः ॥ कानग कानः खिरुकः मुख्रेः मुखा यरथ-क्षा। मन्दर्ध देव मन्दर्भ भाएः शां अदार भंद्रशा सहायुका ६ ভূলত্যঃ প্ৰুদ্ধাৎ সুস্বত্যঃ ক্লাঃ । भन्नांकः भन्नभः कालः कालम् कालएककः ॥ देखि जक्तरेवदर्ख शक्शिक्ष के खेशायः ॥ 🛊 ॥ **जिंग है। कामः क्टब्रांडि ज॰ मर्श॰** বন্ধা বনুভি সক। কালঃ ক রোভি বিচ্ছেদ বিরোধ প্রীতি-भिर हे भिक्नामा निक्य अकृत्व কালশ্য পরিশালকা কালঃ ক-ब्राह्मि मानम कानः न रहाउ अक खरा दलाक बद्धाः मृजूर्क बचा ह। गर्दः कर्याः

न्द्रार्थन कालजब करतानि ह।। সৰ্ব॰ কালহুত ভাত বিশ্বৰ ন वज वज। देखि वचरेकार्ख वी কুক্ত ৰুসাধ্যে ৯০ অখ্যানঃ।। •।। **थथ कानिम्थन** । थानसन मनदेमादभित्रभूर्वक्रमाह। मृग् कालगाउ॰ वर्ग मनीय छान-लाह्या । नजानाक निज्नाक म्तानाकाणि उत्तरः। नागानाः ताकमानीना उद्शादकाक भू ত্ৰক।। কথকামি নিগৃচাৰ্থণ সা-বধানং নিশাসকা সৰ্বস্থাচ্চ পরঃ कृतः नदीशादता यहान् विवाऐ॥ যস্য লোখসু বিশ্বানি চাসংখ্যানি চতানি চ। সর্বসাচ্চ পর সূত্র **श्रुवान् किलावन। काला**त्छा-ত্মক সৰ্স্যান্ছ পর্মীক্সিত। शत्रवः मिष्टान्याना बटबटका १ बू-তশ खथा।। পরমাণুঃ সাবিজ্ঞেষো नृगा देमकाञ्चरमा तथा। शत्रभागृष-যেনাপু জ্বসরেণু স্তু তে ত্রয় ।। ত্র-मत्त्रवृजिदकवाि जुि क्रका य ণীবিভিঃ। বেশ্ব জুটিশভেনৈৰ ত্ৰি-(वर्धन नव ख्या।। जिन्दिन नि त्ययक जिनित्यत्यक ह कन्डा का-ष्ठी शक्षकरगटेनर लघुक्त मनकार्छ-या।। लघू भक्ष मृत्य मृख ख थ्या-

नः किनावया बालनाक गटनाचा **ह ह्यू कि क्र क्र क्र है त**े ।। वर्ग ना-ৰৈঃ ক্ৰছিত্ৰ বাবৎ প্ৰকৃত্বল-भूषः। **प्रथाति ह मू**र्जः विकिन-ভাষাকা তিখিঃ।। ভদকভাগঃ প্রহরঃ প্রমাণক নিরূপণ ৷ চত্ত্-र्जिः थरदेत ताबि मञ्जूर्जि र्मिम **भव** है। जिथिशक्षत्र महैने श-क्यानः अकैर्जिजः। शक्षरयन **गांगः माष्ट्र एक क्रका**जिरधन हा। अञ् श्रामद्यरिनव ७९ वर्षे स्टिन ब वर्मतः। वम् औष वर्षान्छ শরদ্ধেমন্ত শীতকা।। বর্ষাঃ পঞ্চ विशा एक याः का नविन्छि निकालिः **जाः। मस्यमतः अवस्मतः ३**-नाव धन द्वा जन्त धन द्वा বৎসরো ২ম মিতি কাল বিদো विमूर। ज्या विषठ्क मारमण **ज्ञाम मृन्** हा क्षता का। देन मार्था देकार्थ जागाणः आवत्ना जाज এব চ। আশ্বিনঃ কার্ত্তিকো মার্গঃ পৌষো মাঘস্ত কাল্পনঃ।। চৈত্ৰস্ত চরমো জ্ঞেযো বর্ষশেষো নিৰূপি-**७:। वम्र टेम्हल देवेगार्थी मा-**त्मी यूत्थान कीर्जिङ्गा टेकार्श-बाउ ष्टरयरेनन जीया अतिकीर्छ-তঃ। বর্ষা প্রাবণ ভাজেণ চাম্বিনে

गमप

कार्डिक भन्नथ्।। बार्ट्स स्मित्व **ह द्वजः निनित्रा गाव का**न्न त्न। जनस्क जावत्न त्व देठदेवी-खदत्र मिक्न गाया माया नियहेक নিষত উত্তরাষণ মীন্সিকা প্রার্থ-वामि गामबहेक मिक्नवाबम स्व ठ॥ वाषानायाज्यशंख निनवृ कि॰ क्रांत्रन देव। नकः वृक्षः धार-শাক্ত পৌষ পৰ্যাস্ত মেৰ চ।। 😻।। প্রতিপদঃ পূর্ণিমাস্তঃ শুক্লঃপক্ষ প্রকীর্ত্তিতঃ। পূর্ণিমাষার প্রতি-পদঃ অমাবাস্যান্ত এব চ ৷৷ ক্লক্ষ-शक्ख विख्वस्या दिनविक्ति भिक পিতঃ। দ্বিতীয়া চ তৃতীয়া চ চতু: র্থী পঞ্চনী তথা।। ষষ্ঠীচ সপ্তমী চৈব ছফনী নবনী তথা। দশম্যে कामनी ठानि बामनी ठ जरमा-मगी।। ठजूर्मगी अबू याविक्रनश शननः सृष्ठः। 🐠। अधिनी छत्नी চাপি ক্বত্তিকা রোহিণী তথা।। মৃ-গশিরা স্তথার্ডা চ নক্ষত্তে ছে পু वर्षमुः। भूषारक्षया यदा टेठव भृषा চোত্তরকল্পনী।। হস্তা চিত্রা তথা স্বাতী বিশাখা চানুরাধিকা। জ্যে की मूक्ता उथा रख्डमा शृक्षाचारहा-. ত্তরা ভথা।। শ্রবণা প্যভিজিকৈব ধনিষ্ঠা চ প্ৰকীৰ্তিকা। ততঃ শত-

चिन एक्षा न्यक्षां क्षण उपा करवाजनक विरक्षत्वा हावजी व्या कृषा । अकारि-मूक वक्क कन्तव निरमास्य ॥ वर्गन ভাজি গাৰ্মণ চক্ৰভিষ্ঠতিনিতা भारा मस्ति भाषा कवा ত্রঞ্গ এতে এতি এতি । অভিজিচ্ছ-ধণাচ্ছাষা ভেনাকাবিশ্পতিঃ স্মৃ তা। একদান্ত মধৌ চক্রো রো-हिगा तायवा गैरा। एत्रत्य मिव-निশ॰ দৃষ্ঠু। खंदशा ह' हू रकाश मा। ছায়া॰ দন্ধা চ চক্ৰাষ যথে তা-তান্তিক ভিষা।। ততঃ শিতর মা নীয় সা প্রচক্রে বিভাগক। বভূব তেন ৰক্ষত্ৰ মন্তিজিয়ানক পুরা ।। एउट क्रेड. क्षेत्र में ब्राक्ट डर्मा अ চ পৰ্বভে। 'নক্ষত্ৰ' কথিত' বৎস তিখ্যাণ ভূমতি নিতাশঃ ॥ 😝 ॥ रिशाशक कर्तनरेक्टर बन्नरकुन नि-नामम। विकष्ठः श्रीष्टि तायुक्तान् সৌভাগ্যঃ শোভন স্তথা৷৷ অতি-গণ্ডঃ সুকর্মা। চ ধৃতিঃ শূল স্তবৈধ । गटला वृक्ति और टेन्टिन गाया-তো হৰ্ষণ ভাৰা॥ বজু "চাসৃগ্ব্য-তীপাতো বঁরীবান্ পরিষঃ শিবঃ । দিক্ষঃ সাধ্যঃ শুভঃ শুকো ত্রন্ধে-'खा देवकुछ खथा ।। **क** ।। कीर्खि-

एक द्यागान सुबन अन्छ। वि-छि। यवन्तः यानस्टक्तः (कोणव टेखिन जम्मा ग्राम बन्दि का नि विधिक गुक्ति खन्ना। हजू भाकाणि नागक किरम हेछि कीर्डन वाशा नजाना कालि गाटन-म शिक्साक विदातिनः। अज्ञ তেবা দিমকালি ক্লফে নক্ত প্ৰ-কীর্ভিত ।। বৎ সরেণ নরাণার সু त्रानाक निवासिकः। निम रख्याः मुख्दत्रन नक्क मिनायद्य ॥ व वखत्रव निवसनाः युशाना त्यकः नश्रिष्टः। यस्मा द्वात्रुः गतिमिछ॰ শক্তमार्षः अकीर्षिष्णः।। शक्षिरः শৎসহসুঞ্ তথা পঞ্চশত পর্ । তত্ত मूर्वमाङ नास्त्रि गक्त भा-**जानूजाद्रकः॥ कुणानाः वर्कि**मिश-कः नत्रावाक क्षकीर्षिकः। का লেনৈতেন শক্ৰষ্য গড়নঞ্চ ৰনো कारनम उक्तरना मिनः। এ: छटेनव ह छत्युक युक्क शाजू कियानिन ॥ अवरखवाः निगठनः वाकवाः छिक्तिरानिकाः। छब मूर्यागिछ नी-স্থিশক্ৰপাতানুসায়**তঃ** ৷৷ দিৰানি-শঞ্চ জানস্তি বনলোকনিবাসি नः। मखबरः सर् शहाः मक्शा-

टाउन प्रकार ।। वार विश्वासि-मिदेन बाजू गांत्रः अकीर्षिकः। ज्ञा बामगिक श्राटिम द्ववसमा শভাৰুষঃ।৷ বন্ধাণঃপতনেনৈৰ নি-त्यरः औरत त्रि । । श्राष्ट्रः भा-**जानुजादत्र । देवज्ञत्क्रेन मिवानिण** ॥ তত্ৰ সূৰ্য্যাতি মান্তি চৈব॰ গো-लाक्छः ग्रृछ । देवक्षेवामिनः मर्दि एक कान छार्श्निंग ।। ह-জ্ঞ স্যাপি গ্রহাণাঞ্চ গতি নাস্তীতি তত্ত্ৰ বৈ। চক্ৰ॰ নৈব ভূমভ্যেব क्रामीना निष्या श्टतः ॥ তেজসাদীপ্ত ক্ষসা পরমাজনঃ । নক্ত তেজো বিহীনঞ্ছরৌ চ মন্দির গতে।। এব কালগতি স্ত-ত্র বিফুলোকে ২ন্তি সম্ভত ৷ কা-লম্বৰপো ভগবান্ পরমান্থা নি-ताक्रिकिः ॥ ॥ हस्य मूर्या गणि नी-স্তি পাতালেষ্চ সপ্তসূ। তত্ত্ব-সিনশ্চ জানন্তি শক্ষেতেন দিবা-निष्ण ॥ मित्न ह मुर्कि नागानाः মণি স্ব'লতি নিত্যশঃ। সন্ধ্যাযাণ দীপ্তমগশ্চ রাত্রিশ্চ তমসাবৃতা।। কাল তামী প্রমাণেন জানস্তি ত মিৰাসিনঃ। যথা ভূবি তথা তত্ত পরিমাণ প্রকীর্ত্তিত ৷৷ 🐠 ৷৷ ফুতত ত্রেতা দাপরক কলি শ্চেডি চতু-

र्शः। विदेश वीवननारदेनु वंश्नः ॥ देत्र महानि मिष्यकः॥ अटकी मुक्राः নাপাধিক সহসাণা চত্কৰ:। बिरेवा बेरेवं: क्रूच्यूगः कानविकि निक्षिष्ड ।। अके वि न महम् वाशाधिकः शतियानकः। नकानाः क मक्षमम न्यान भन्निकीर्छिछ। ৷৷ অধিক ষট্শতান্যের সহসূ৷-णाः जयः छथा। मिटेवा वं देवे **क** ত্ৰেতেতি ৰৎস কালবিদো বিদুঃ । यक्षविक महमुानि लटक बीमन-ভিঃ সহ। নৃণা॰ বর্ষৈশ্চ ত্রেভেভি কালবিদ্ধিঃপ্রকীর্ত্তিতঃ॥ চতুষ্টব॰ শতানাঞ্চাপ্যধিক দ্বিসহসূক। वर्ष मिवा षाणत्रक कालरेखः नः तिकीर्खिङ ॥ **ठ**जूः यस्टिमङ्गु। वि नटक द्रकें जि दत्र ह। न्था॰ बरेर्च ৰাপরক্ষ কালজ্ঞেঃ পরিকীর্ত্তিত ।। अधिक बिगठ देश्व मिवा वर्ष-সহসূক। এবং মিতং কলিযুগণ वष्म आरेकः अकीर्विजः॥ बा ত্রি॰শক সহস্ঞ চতুর্লক্ষণ নৃষা-**१कः। वर्षक्षि** किलायूगः हकात्र कानदकाविषः॥ नदकि जि ठवा-রি শক্তিঃ সহ বি শৎসহসূকৈঃ। न्यान बर्रेशः कालरेखः बाकः त्यव চতুৰ্গণ।। ইতি তে কথিত বৎস

राज्यन्या विद्वारः। स्थापक ब्बाह्मास- राष्ट्र वद म रहाइः भूकः ॥ रेकि उपरेपवर्ष क्रीहरूका ५८७ तार्थाक्यमध्यास कानाव-ब्यन ३५ वशावः ।। जनि ह। मार्क एक छेवा हा निरमद्या নাম কালাকো নেত্ৰোকোৰ বিল-किछः। दे असीममंजिः काश्री কাণ্ঠানা জিলাভা কলা।। কলা-ভি ভাৰতীভিত্ত কণাশ্যঃ পরি-কীৰ্ত্তিতঃ কৰে ছাদশভিঃ প্ৰো-ক্তো মৃহূৰ্ত ভৈন্ত জিল্লতা ৷৷ মা-न्याः मानदशक्राखः शक एउ न-'गशक ह। शकाखाः बान्द्रा या-मः शिज्बा छम्इबिन ॥ यादेन वीमगां बर्सा स्वाना जमहर्नि শ । ক্লকপকঃ গিতৃণান্ত কর্মার্থ **मिवरमा यज्ञा। बद्धार्थः छक्नशकः** स बन्नी शतिकीर्छिण। (मरा-নান্ত দিন প্ৰোক্ত বগাসা উত্ত-त्रा**रण ॥ त्रा**बिः स्थाय (प्रवाना॰ वशामा मकिनावनः। वाखाः वाः ভা। बात्राভा। वर्कां जा वृठ्ः স্তঃ।। ঋতুভি শ্চাবন প্রোক্ত बिভि ख्यान्य यठः। अण्डि ৰ্ৎসরঃ কড্ভি স্তাণ্শ্চ শৃণু পৃথক্ श्थक् ॥ 🐠 ॥ टेन्जामि यूगटेलः

खबाः। समस्य देन्द्रव स्थापि जीत्या देनाकः इति स्था ॥ थाव् है नरका नक्ताने कू नवर मापित कार्षिको। महः ती खो **ह**ं स्वरूक्तः मिमिट्सः वाक काञ्चरनीया चिक्रिक कठवः थ्या-काः बळाटले बिहिजाः भृथक्। न्गा॰ गातमम मन्छिः वर्षेकः मः গুভি-কতরৈঃ।। সাজীবিংশতি-मार्टेन सानः इंडव्यमा ह। मः ন্ধ্যা চতুঃশভাদীৰ বৰ্ষাণা যন্তরা-লতঃ ৷৷ সন্ধাণ্য ভাৰতা প্ৰোক্ত ন্তদন্তৰ্গত ইন্সিতঃ। ত্ৰেতা দাদ-मिं र्न कि की नूरिय वंदमरेक र् त्र ।। सक्ष्यका मर्देम्भ म স্ক্রা চাস্যাৎ শতভাৰণা শতভাৰ সন্ধ্যা॰শ স্তদন্তঃ শব্ধিকীর্ভিতঃ।। ठिज्ञविक महत्राणि नकाश्रदकी श्रमान्डः। छत्वस्त्रमः कानद्रा-থাত তেবু সন্ধ্যা শতৰ ৰং ।। শতৰ-বৰ সন্ধ্যাংশ বন্ধবৰ্গত ইয়তে ৷ দাত্রিশবু সহস্থাণি চত্রকাণি देव करनः। मृह्यम्येत जस्मानः সন্ধাক প্রোচ্যতে শত।। ৰং-ষরাণা মেকশত সন্ধ্যাণশত ত-मखदा। अदः कुछक व्यक्ता ह वा-

मःखा देखः वष्टि विद्याः । भद्रक छवा कनिः।। मान्द्रवा ध চমারিশভা লকৈ নান চভুর্গ ভবেৎ।। সহসৈ রপি বিশ্বতা। স स्ता मस्तान्धमन्युङ्ग देवदः वि-न द मद्रव मामूर्यन मन्नाद्यक । अद कम गिवा जू मान्सीरेय **क्टबूर्गः। टेमरः सामगमार्जः** वष्मद्रानाः अकीर्जिङः॥ रेमरेन बामभगारदेमु बंध्यदेत देविक॰ ब्रा॰। ভৰদত पूर्वा॰ नृगा॰ সন্ধা সন্ধ্যাংশসংযুত্।। দেবানাম্ভ রু-**७**॰ खिं बागतामिका क्षा। न क्गवावकाद्या शिख न ह भर्मानि ভিন্নতা।। কিন্তু চাতুর্ধুগণ নারণ **ভবেদ্দেক যুগ॰ সদা। देम देव-दाव ह** मक्षका। कृरेग-र्माक्ष्यतः ভবেৎ।। रिमरव यूभमहरमु (इ उन्नवः मा-षर्षि भ । ठलुर्कू ग महरमु (ष न्ना॰ कामिवरम भनवः म् भाक्षमा । **ध्यः** बाक्षानः मात्नन मिंबरेमस ত্ৰিভিঃ শটেঙা ।। সমষ্টিভি ৰ্বৎ-मदः जाम्बारका वर्दा नृगाः वथा । बार्टकाः भक्षणा वर्देश भन्ना-र्कः भतिकीर्ভिङः।। जनीश्रत्रमा দিবসণ তাবজী ব্লাতি ব্লিয়তে ৷

भटकन उत्तरणा वर्दिः कानः नहा ९ बिगदार्ककः। गदार्किविज्य २-তীতে ব্ৰহ্মণঃ প্ৰলয়ো ভবেৎ ৷৷ প্রলীনে ত্রন্ধণি পরে জগতাণ প্রাক্তো লখঃ। সমস্তজগদা-ধার মব্যয় যৎ পরাৎপর ॥ তস্য অন্ধৰদ্বপদ্য দিবারাত্রী ত দ্ভবেশ। তৎপর নাম তদ্য भन्नार्क बिधीवर**ा। इंडि** की कानिकाभुतार्व २८ व्यथायः ॥ ॥ কিঞ্চ। অকি পশ্ব পরিজে-ধো নিমেষঃ পরিকীর্ত্তিতঃ। ছৌ नियारो जुि बाग ए जुि जू क्वतः ग्रुष्ठः ॥ विव्वतः क्व हेजूा-ক্তঃ কাঠা প্রোক্তা দশকণাঃ। দশকাষ্ঠাঃ কিলানাম তৎসংখ্যা मांक यांष्ठिका ॥ यष्टित्क एव बृहुर्वः माछि जि॰मजा मिया-निশ॰। চতুর্বি॰শভিবেলাভি র-**र्**हात्राज् क्षठकरा ।। मृत्राकं-यापि विख्खरमा मुर्शिमां कवः সদা। পশ্চিমাদর্দ্ধরাত্রাদি হো-রাণা বিদ্যতে ক্রমঃ ৷৷ ইতি ব-**ङ्गिश्रह्मादं**व भगट जनमाभाभा यः ।। 🟶 ।। अभन्न नृति रंभूतात्व २ अधारि कोर्स्य ७ जशास्य **छ खरुंबा**ा।

সমযকারঃ পু॰ সক্তেঃ। যথা। প্রজ্ঞান্তিঃ পরিভাষা শৈলী সক্তে সমযকারান্চ। ইতি ব্রিকাওশেষঃ।

मनमा वर्ग निकितः॥ मधः॥ जा-मामा भरागिः। निकिया २ हिक-क ०। इंडामद्रः॥ मनमा निक-एते मर्था पर्या त निक्यां छिरक। हिक्कार्था विनार्थ त। हेडि क्रांता। हिक्कां मामीर्था। हेडामद्रमामा॥ कामविद्धार्थनः १ हेडि मक्यद्रशायनी॥

मगतः भू की यूकः। ইত্যबतः॥
मगतः भू कि वृक्षितिस्थः।
छम् नक्षि यथा। यक्ष्याप्य
दा सिष्टि भम्प्यः।
छत्नी वृष्यं तत्मर कामी वक्षः
मगतकः प्र्यः॥ ইতি तতिमक्षती॥

সমকণাঃ ত্রি সমস্য সাথো ভূতি পূর্বো গ্রাদিঃ ।। সমশকাৎ কণ্যপ্রভাষেত্র নিজামঃ ।। সমর্থঃ ত্রি শক্তিষ্ঠঃ ।। সম্বর্গার্থঃ ।। হিতঃ । ইত্যমরঃ ।। সমর্থতা স্ত্রী সামর্থ্যণ । শক্তিঃ । সমর্থতা স্ত্রী সামর্থ্যণ । শক্তিঃ । সমর্থতা স্ত্রী সামর্থ্যণ । শক্তিঃ । তাবেদ নিজামা ।। गमर्थन की हैए मूहिल मिए मन् हिल मिलि निष्ठवः। जद्भवान वः। मध्यभातना २। हेलामतः॥ ममर्थना ७। हेलि मेस्प्रकावनी ॥ मामर्थाक ॥

সমর্থনা ক্রী অশক্যে হয়কসারঃ
। বথা। সিন্ধু অপি শোষবাণি।
ইতি মুন্ধাবোধব্যাকরণ । সমথনং। ইতি শব্দর্ত্রাবলী।।
সমর্দ্ধকঃ ত্রি বরদং। ইইফলদাত্দেবতাদিঃ। ইত্যমরঃ।।
সমর্পণ ক্রী সম্যক্পকারেশার্পণ
। সোপোন ইতি ভাষা। সংপূর্ব
স্যা ঋ থাতো ক্রেণ ক্রতে পনি
ক্রতে হনট্ প্রভাষ নিম্পন্ধ।
যথা। প্রাণাবার্মণ ভতঃ ক্রত্যা
প্রজাপেৎ সাধকাত্রাণীঃ। দেব্যা হস্তে জপকল সমর্পণ মথাচরেৎ।। ইতি ভোডলভত্তে ৩
পটলঃ।।

मधरामः श्रृ मगीणः॥ गर्या।

मामहित्व वि । देवि स्विमनी ॥

मगनः की विक्षे। देवि भव्य देवी।

विमा आवित्व वि । देवि

करित्रः ॥

সমবতারঃ .পু॰ তীর্থ॰। সম্ অব পূর্বক ভূ বাজো র্যঞ্জ প্রভাষেন নিশালং॥ সমবত্তী বৃ• বসং। ইত্যমরং॥ তুলাবর্ত্তনশীলে জি॥

मयविकातः भू नार्टकर्छमः १ वर्षा । मामार्टकः श्रकत्वनः छनः श्रहमनः छिमः । वार्याभः मय-वाकारता विधारकहाम्भा देखि ॥ जिल्लास्थकाताः मू र्छावाः वर्षे मः कृञानिकाः । देखि रहम-ठस्यः ॥

गमनायः श्रुः गमूरः। ইত্যमतः
।। मसम्वित्ययः। यथा। यही
शीनाः क्शानात्मे जत्यम् छ।

कर्माताः। তেमु काल्कः गम्भः

गनवायः श्रकीर्विजः॥ ইতি
ভাষাপরিচ্ছেদः॥ অবৰবাবय
विता र्छ। छनिताः किया कि
यावला क्षि वास्का निज्ञ जवावित्यस्याक यः मम्भः म गमवायः। ইতি সিদ্ধান্তমুক্তাवनी।।

সমবেতঃ ত্রি মিলিতঃ। যথা।
ধর্মকেত্রে সরুকেত্রে সমবেতা
যুষ্ৎসবঃ। মানুকাঃ পাওবা
শৈচব কিমন্ত্র্রত সঞ্জয়। ইতি
ইতি ভগলগীতায়া ১ অধ্যাষঃ
।। সমবাষ্সমুদ্ধেন বৃত্তিঃ। যথা।

যৎ সমবেত কাৰ্য্য ভৰতি জ্ঞে-যন্ত সমবাধিজনক তথা, ইতি ভাষাপ্তিভেদঃ।

সমশুবানঃ ত্রি সমাক্প্রকারেণ ব্যাপ্তিবিশিক্টঃ। সংপূর্বক অ-শ ধাতোঃ শানচ্ প্রত্যবেন নিশারং।।

মুখনিং খ্রী সুমন্তঃ। মিলিভঃ।

যথা। সুমন্তি রীশঃ সর্বেষাং খাখ্যু তাদাখ্যবেদনাৎ। ভদভাকাত্তদন্যে তু জ্ঞাষত্তে ক্যম্ভিদভক্তমা।। ইতি পঞ্চদশী।।

সমষ্ঠিলঃ পু॰ ক্পবিশেষঃ।
কোকুলা ইতি হিন্দীভাষা।
ভৎপর্যায়ঃ। ভণ্ডীরঃ ২ নদ্যামুঃ ৩ আমুগদ্ধকঃ ৪ কোকাগ্রঃ
৫ কণ্টকিকলঃ ৬ উপদ॰শঃ ৭।
অস্য গুলাঃ। কটুদ্ধ। উষ্ণদ্ধ।
কচ্চাদ্ধ। মুখবিশোধনদ্ধ। কফ
বাত প্রশমনদ্ধ। দাহকারিদ্ধ।
দীপনদ্ধ। ইতি রাজনির্দ্ধনীঃ।
সমষ্টিলা স্ত্রী গণ্ডীরঃ। ইত্যমরঃ
।। দ্বে স্লা ইতি খাতে শমঠ
ইতিখ্যাভো অনুপদেশকেশাকেইতি কেচিৎ। গুণিষা ইতি
খ্যাতে শাকে ইতি সর্বানন্দঃ।
গণ্ডীনি গ্রন্থিকানি অস্থানি

केत्रविक शखीतः वर्। शख॰ ताः शविद्यवि केत्रविक शखीतः भूतः शविद्यविक विकास्तः नगाविद्य गांकि समितिका कः नमीवािक वािक समितिका कः नमीवािक वािक समितिका को समितिका। वथाः समितिका की समितिका। वथाः समितिका के समितिक समितिका। वथाः समितिका। केलि सम्बद्धानिका। समितिका। केलि सम्बद्धानिका। समितिका। केलि सम्बद्धानिका। समितिका। केलि सम्बद्धानिका। समितिका। केलि सम्बद्धानिका।

गमन्थिः जी कबाखः। महा-थलकः। देखि द्यह्यः॥ जू-नम्भवनकः॥

मम्खः जि मन्पूर्णः। छৎ भर्गावः । मन्दर मर्कः १० विश्वः ६ खरणः सः ६ इरुषः ६ निश्चिः १ खर् श्विः ४ निश्चायः २ मम्बः २० मक्वः २० पूर्वः ३२ ख्वः २० खन्नकः २०। देखामद्रश्वावनी ॥ खन्नकः ३६ खन्नद्रश्वावनी ॥

সমস্থ তি সমানঃ। সমভাবেন স্থিতঃ। সমশ্যক পূৰ্বক স্থাধা-ভো ড প্ৰত্যবেন নিশামঃ।। সমস্থা ক্ৰী মকা কমুনৰো শ্বধ্য-দেশঃ। তৎপৰ্য্যামঃ। অস্তৰ্বেদিঃ

21 BOCENERS II जनगा जी एका कुना शादमदेन-কেন ৰাজ্যা বিভি ৰা পুরণ। यथा। मृत्रदर्शः कि छवाकाानि ठिजकानन नागदितः। ऋत ना-वावन दिन दिन विकासा वावरना र्डः॥ रेडानि क्रांकाली शा-तम भूतनवरभनाव मिट्छाटक । रेजि बाक्ष्यिः॥ ७९ भर्यायः । नमानाबा २। रेजायतः॥ न-यमार्था ७ नवासार्था है। इंडि ভরতঃ ৷৷ সৰস্যতে সংকিপ্যতে रनवा नवना। अज़ुरेटक्ल नी ব্ৰজ বজেত্যাদিনা ক্যপ্ ভিমা-जिथावना स्नाकाल उनीय-ছেন প্রত্যক্তিজ্ঞাবমানান্দ ভা-গানা বহুতেন পর্যুতেন বা जागाइत्तन नवनन मन्यप्रेन गनदग्डिनावनी ॥

সমস্যাৰ্থা জী সমস্যাহ ইত্য-মরটাকাৰা জনতঃ ৷৷

नम् जी यनः। इंडिनक-त्रज्ञावनी।।

गमकः जि जिल्लाः गमीनः प्रश्न भूवं जिल्लाकार ज अकारस्य निष्णतः। देखि मूक्तरावद्या-कत्रनः॥ गमा औ वंदमद्वाः। ই ज्ञानद्वः।।

गमि विकासि जावान गमा

गम केम विकासि जावान गमा

गम केम विकासि जावान गमा

जान्। गमा निज्ञवहरणना छाः

जिसा मिजि वामना स्यः। गमाः

गमाः विज्ञासि हेल्जिक दिल्लि म्याद्व हेलि सामी। ज्ञान्व मिलि

गमा हेलि वहरण्यान स्विधः। गद्या हेलि वहरण्यान स्विधः।

गमा हेलि वहरण्यान स्विधः।

। हेलि उद्योकासाः ज्ञाङः॥

সমাণশহারী ত্রি সমভাগার্হঃ। বথা। সমাণশহারিণী মাতা পু-ল্রাণাণ স্যাৎ মৃতে পতৌ। ইতি দাবভন্ত্বণ।।

ममा॰ निकः जि ममजागाईः ।

यथा । यमि कर्यापः ममाना॰
मान् भद्भाः कार्याः ममा॰ नि
काः । न मजः जीवनः यामा॰

मजि वर्षः अकीर्जिङः ॥ इकि

मायण्यः ॥

সমাণশী ত্রি তুল্যভাগবিশিষ্টঃ।
সমানভাগী। যথা। জ্যেষ্ঠ বা শ্রেষ্ঠভাগেন সর্বে বা স্যুঃ সমাণ শিনঃ। ইতি দায়তত্ত্বণ।।

সমাণ্দমীনা স্ত্রী প্রতিবর্ষপ্রসূত-পবী। ইত্যমরঃ ॥ সমাক্ষী শুণ অভিদুরগামিগন্ধঃ । তৎপর্যাক্ষা নির্হালী ২।। ইত্যানরঃ।। তৃফাজনকগন্ধবু-ক্তে ভক্ষাদিদ্রব্যে দ্বয় মেতদি-তি লাঞ্চঃ।। তত্র ত্রি।।

সমাখ্যা স্ত্রী কীর্ভিঃ। ইন্তি শক্ষ রত্নাবলী। সংজ্ঞা। যথা। স পিঞ্জীকরণ সমাখ্যাসিদ্ধ্যর্থণ সু তরাণ তত্র তথাচরথণ। ইতি তিখ্যাদিতবং ॥

मनागठः जि मनागननिनि रुः। आगमनाध्ययः। यथा। देक र्मया मह स्मान्नता मन्तिन्न मन् मारम। सारमानानात्वरक रुः च এতে रज मनागजाः॥ रुठि छगवनगीजायाः ५ जायायः मनागिनः जी मनागननः। मन् जाष् পृर्व गन शालाः कि श्र छाष भिना॥।

সুনাগমঃ পু॰ সমাগাগমন ।। স
স্থাপ্তিঃ। যথা। মৎ সাপুরালা।
রতিশক্তিঃ ব্রিয়ঃ কান্তা ভো
জ্যাণ ভোজনশক্তিতা। দান
শক্তিঃ সবিভবা কপ মারোগ্য সম্পদঃ ।। আদ্বস্থা মিদণ প্রোক্তণ ফলণ ব্রহ্মসমাগমঃ।
ইতি আদ্বতন্ত্রণ।।
সমাঘাতঃ পু৽ যদ্ধণ। ইত্যমরঃ

সনাজ। ক্রী সনজাণ ইতাসর-দীকাবা ভরতঃ।

সমাদান কী সমীচীনগ্ৰহণ।
সম্যুগ্ৰহণণ নোগভাত্তিক।
বৌদ্ধান্য নিত্যকর্ম। ইভি
মেদিনী

সমাধাঃ পূণ নিম্পন্তিঃ। বিরোধভঙ্গনং। ইতি লোকপ্রনিদ্ধং।।
সমাধানং। সং আত্ পূর্ব ধা
ধাতো বিচ্প্রত্যবেন নিশ্লিঃ।।
সমাধানং ক্লী প্রস্কৃতি বনং হিরীকরণং। চিত্তকাগ্রং। তৎপর্য্যায়ঃ। অবধানং ই-প্রতি হেনচক্রঃ। পূর্বপক্ষস্যোতির । ইতি
লোকপ্রসিদ্ধং।।

पु॰ यूक्क । इंडायद्रः । मयाधिः पु॰ मयर्थन ।। नीवाकः

।। निषमध्य रेजाबहा ॥ असर्यनः जगद्या जवानमायः मूर्विमा ्यप्रेनकः बाधः नीबादका बठमा-छादः । हैकि काकी। शानामिष् म्हाना वर्षा विकास स्थाना । - इंद्धि मूज्विः। निक्रमा चनी-'का तर १' अवक मया थयर । 'मया-शीवत्य शिवन् मतन। करेन রিভি কিং। ইভি ভরতঃ যা খ্যা-नः । काराधनियकः । इंडि (यक्निशे १४-व्हेटिक वनिद्राधनः । रेकि भक्तत्रक्षावणी । अवाः খি জন্মন ৰখা নিতা তক वृश्चिष्कुः मञ्ज गामन मदरः। তুরীয় অক্সঃ এক অহ সন্মি পর় পদ । অহ জবেদাতাব হা-নং সন্নাধি নিজি মীৰতে। ইতি गाकुरूपाकका अवस्थानः ॥ 🖷 ॥ অপি-ছা শ্লামশ্ব্যান পৰ্ব্যন্ত गटना जन्निक्षरमाः नदः। जूटक ভূপাপ্তা পুৰুষ সমাধিঃ সো रिक्योवरकस रशय स्वत हि সৰ্বত্ৰ খ্যাভা ভৱাৰতা গভঃ। প-भाकि देखब्रहिक नवादिः ता रिचिषीय**ए ॥ रेडि बाइ**स्फ २८० ज्यायः॥ ।। जनाक। তদ্যৈৰ কলনাহীন স্বৰপঞ্ছ-

१° हिं य १ वनमा शाननिं भा-দ্য সমাধিঃ সো হভিধীয়তে।। इंडि विकृ भूतार्ग ७ चःरम १ व्यशासः ॥ 😻 ॥ व्यश्वतः । 🖣 म॰ গুণসমাহার মনাত্মত্বেন পশ্য-তঃ। অন্তঃশীতলতা বস্য স্থা-ধি রিতি কথ্যতে ॥ ইতি ষোগ-ৰাশিষ্ঠে উপসমপ্ৰকরণ ॥ नगांविष्टः वि नगांवियुक्तः। श्था। মনঃ সংক্ররহিত মিচ্ছিয়ার্থান-िख्यन्। यमा बन्निनि मंनीन नगाधिकः न कीर्खिजः॥ भाषा পরমাত্মান মাত্মস্থ বস্য যোগি-मः। यनख्रह्मय**ा॰ या** छि मयाधि-স্থ: স কীর্ত্তিতঃ ।। ইতি গারুডে· গীতাসারে ২৪• অধ্যাকঃ।। मयान वि मद्रा मया वका इंडि भिषिनी।। मगानः भू॰ भत्रीत्रश्र्वायुवित्भवः । সতু নাভিসংস্থিতঃ। ইত্যশর-**अत्राक्षो।। वर्गटानः। इकि दर**-यहनः ॥ म जू अक्षात्नाकार्याः वर्वः। यथा। मात्राट्युकेशनवः । इंडि बुक्षदवाधवाकत्वन ॥ मयानकाणीनः बि जूनाकारला ५-পত्তिकः। यथा। भाषु मूक्या-নাসু আগতঃ দুধাস্বাগত ই

(लाइनकानीन गमनामृक्क्रकः किमान्। अव॰ सावियम्काकी-ভ দোহন সমানকালীনাভীত-গমনানুকুলক্কতিমানিতি ৰোধঃ । इंडि मात्रमञ्जूती ।।

मगात्नाषकः भूः अत्काषकः । म ज् छाजिवित्मयः। फर्भात म-मानः এक मूलक मना। यथा। জারো নকঃ সগোত্রস্ত বজন জ্ঞাতি বান্ধবাঃ। সঙ্গল্য বন্ধু मायम य नयात्वामका जाना ॥ रेडि किंगिधतः॥ म जू ठजूर्मम-পুৰুষপৰ্যান্তঃ। জন্মনাৰশ্বৃতি-পৰ্যান্ত শ্চ। তত্ৰ আদালৈয়ক।-वनपूक्तावि ठर्जुर्ननपूक्रवश-र्याखनारमोठ॰ शक्तिनी विठीय-दिमाकारः। यथा। छेनककिया মৰ্থিকতা পারস্কর:। সর্বে জ্ঞাত-' या 'ভाववस्ति। चामश्वनाष्म-बाबी नगान्धायवात्नन वाव मस्य मन्यदाय् द। रेडि ভार-यि निमानयस्ति। व्यव सावद সমন্ধ খানুন্মরেষু রেক্সলজাতা-বৰ ৰিভি-শ্বরণ ভবতীভানে-तिन मर्भिया मूलक्लात्न धार्ल

क्षित्र । क्षामस्यानम् । क्षामस्यानम् वर्षकान । वर्ष जात्रव्यनमात्रोज्यकान्। क्षेत्रकर्पनक्षत्राम् निक्ति। सारमे ह ভেদন্ত সপ্তরস্ক্রকর্মান্ত সলি-थवाकगारम एकक सनवगुरू-वनवा अल्डारः। छंत्रा हः विक् वृहालानी ।-जनारक्तः मनिकाञ्च ভবাভিন্ত দূতকে ঃ বিহাতেণ गमनां वार्च स्थापि माव-জাঃ,া ভজনাতুর্মশপুরুষপর্যান্ত॰ পৰিনী তত্ত কৰ্মায়-সৃতিগ-ৰ্য্যন্ত নেকাহণা কথাত বিভাক-ब्रा विदापि छात्रतका वृ श्वानः। সপিওতা তু পুরুষে সপ্তমে বি-निवर्त्तरक । नगरनामक्छावञ्च मिवर्खकारकूर्कभार ॥ जगना-मच्या द्वारक छन्। भन्न स्माव म्-**छाट्छ । ज्याः नमारवाक्क्ट** वि-বিৰে পূৰ্বত ধ্যোতক প্ৰকিশী নস-निर्ध। नत्रब हातीखान माणाय-**ए जित्राजः गारमकार्जुगणि**७-কে ইভিনাং অত্তৈক গোৱজানা वहः गृष्ठ विकिञ्जानावरहनः । ভতঃ পর পর্বা সকলে। দকতা লৈন্তেঃ **ৰান নাত**ীৰ্ণতি সাহা ত্থাত্তি গোত্ৰজা ইতি বৃচস্ণত্যু ভৰাদিতি। ইতি শুদ্ধিত হ্ৰণ।।

स्वादनापर्याः त्र् स्वर्गावदः । रेडायदः ॥

नमाणः श्रृं प्रकारकारः रेडि मूक्षरवाश्वताकत्रकः॥

সমাপকঃ জি সমাপনকর্তী।
সমাপকতি বং সম্পূর্ক আপথাতো র্থক প্রত্যকেন নিম্পন্নঃ ।
যথা। আখ্যাতা ভিবাদৰ ভেযাঞ্চ প্রধানত্বং ৰাক্যসমাপকত্বাৎ। ইতি দুর্গাদাসঃ ।

जमाश्रमः की श्रीतिष्क्षः॥ जन्माश्रिः॥ वसः। देखि स्मिनीः॥ जमाश्रामः। देखि विश्वः॥ वाकः। देखिः श्रीकृषिः॥

ভূজা বজতি। ইতি ব্যাকরণ-টীকা।।

नमाणिङ जि क्रजमाणन ।
यथा। जात्रक मनमाना धाक्
य कर्या न नमाणिङ । जागटङ
यनमाराभि छ । नमाणा न न न भवः ॥ देखि यनमानङ व ।।

ममाश्वः जि ममाश्रमश्वः। ममाश्विविश्विः। यथा। ममाश्वः
यक्ति कानीयात्रदेयलक्ताथाद्धछ॰। यल स्वत्रमाथाञ्च॰ छङ ध्व ममाश्वदेय। ইতি তিখাक्रिड्य॰॥

मनाश्वानः प्र शिवः। देखि मन्दिश्वमाद्भागिष्टृद्धिः॥ मनाश्विः खी जनमानः॥ मन-र्चनः। देखि दिष्टिः॥ भिन्न-श्वाश्वः। देखि मक्त्रद्भावनी॥ मनाश्वाशं खी मनमा। देखि म-नामार्था मक्तिकाषाः जन्नणः॥ मनाश्वः जि मनागनीयः। मना-शिववाः। जमा श्रमानः मनाशि-जन्मक जक्ववाः॥

স্থাৰ্তঃ ত্ৰি সম্যক্প্ৰকাৱেণ আৰ্তঃ। ব্ৰথা। জয় ছং কালি সৰ্বেশে সৰ্বভূত স্থাৰ্তে। রক্ষ মাং নিজভূতেভ্যো ৰলিং ভূক্ষ নমো হস্ত তে।। ইতি দুর্গার্ক।-প্রযোগতন্ত্ব ।।

नवारवागः भ् नरवागः॥ न-नवायः॥ श्रावाजनः। रेडि विमिनी॥

সমালয়ী পু॰ ভূতৃণ । ইতি রাজ-নির্ঘণীঃ ।।

नमालकः पृ॰ जकुमानिविटलपमः । ইতামরः॥

শমালন্তন ক্লী সন্মাদিবিলেপান তৎপর্যায়ঃ ৷ বিচ্ছিত্তিঃ
২ ক্ষায়ঃ ৩ ৷ ইতি ত্রিকাপুশেবঃ ৷৷ সমালন্তঃ ৪ বিলেপন ৫ ৷৷
ইত্যময়ঃ ৷৷ সমাঙ্নারণ ৷৷ সমাকম্পর্শন ৷ যথা ৷ অত উর্দ্ধু
মসমালন্তন মাদশরাত্রাদিতি
গোভিলস্ত্রণ ৷৷

সমালী জ্রী সমুমাকর:। ইভি ত্রিকাওশেষ:।।

সমাবর্ত্তন ক্লী বেদাখ্যবনান-ন্তরং গার্হসাধিকারপ্রযোজকং কর্মা যথা। অথ সমাবর্ত্তনং। জ্যোভিষে। ভৌম ভানুজ্যো বারে নক্তে চ ব্রভোদিতে। ভারাচন্ত্র বিশুদ্ধী চ সমাবর্ত্তন মিষ্যভো। গোভিলঃ। অথাপ্ল-বনং। অথ ব্রভানস্তর মাপ্লবনং बान वर्गामिलिएनवः। উत्त-त्रञः भूत्रखामाठाकाकाकामा भ-রিব্রত ভবতি। আচার্য্য গৃহা-मूखतमा। भूबमा। वा नानार्थ माग्छ जान वर्गाए। जात आगत्वक् मर्डिक् উनगाठाया উপবিশতি ভত্তাবৃত্তে উদক উ-महाराः जाक् बन्नार्गुपगद्यम् मर्खिष्। थाक् बाग्य उनि শতীভাষ্ট । नदि विशे विर्का-ভাভি রন্তি গদ্ধবতীভিঃ শীতো-काञि ताहारका। कञ्चिरक्ष् । मत्वी यश्यकः। जीहराः भाषात्या मूला (गाश्याः मर्यना खिलाः। चवा ८ को यथाः मञ्ज विश्रामा म-মি ধারিভাঃ।। ইতি ছলোগপ-রিশিকৌকা স্তাভিঃ সহ বা আ-গো বিকাভা বিপক্কা উদ্দীয়তা खाः गत्ने यवि विकाला छान् र्गमरणीजि कलनानि गन्नाप्तरा-যুক্তাভিঃ শীতোকাভিঃ শীতো-দক্ষিশ্রিভাত্তি রিভি ভটভাষ্য ।। স্বৰ মিব তু সন্ত্ৰবৰ্ণো ভবতি। हैव नक विरार्थ। यस त्यव वक्राती जाजान गिर्विदश्य । আচার্য্যকর্তৃ কাভিষেকস্ত পরম-তো যতো মন্ত্ৰৰণা ভৰস্তি। মন্ত্ৰ-

वर्ता अधिरम् मञ्जानकः छन्द्र তেনাহ মা মভিষিশামি ইতি তেন বা বভিষিক্তি নিতি চ। **छिबि गार्। (त २ ज्यु छ**त्र श्रयः প্রবিষ্টা ইত্যপা বঞ্জলি মবসিঞ্চ-তি। বে ২পুন্তরগ্নৰ ইতি মন্ত্রে-न कामा बना बन्नहाती অবসিঞ্চি। ক ভূমৌ সভঃ অব-সিঞ্জি ৰচৰাং ৷ তথাগ্ৰহাভি· হিতান্ সূজামীতি যদপা মিতি মন্ত্ৰস্যাভিহিভান্ সূজামি ইভি मञ्जलिक बनाक गर्ना बादायस्य था-প্তাৰা ভূমৌ ভাজতি। ৰদগা ষোর যদপা কুর বদপা মশাস্ত মিতি চ। অপা মঞ্চলি মবসিঞ্চ তীতি বর্ত্ততে চকারাৎ। ষো রো-চন স্ত বিহ গৃহামীত্যাত্মান মতি বিঞ্চি। প্রক্লভানা মপা মঞ্জ লি-ना रवा द्वाहन रेडि मद्वल उका চারী আত্মান মভিবিশ্ভি। ওম্ ষশসে তেজসে ইতি চ। আত্মা-ন মভিবিঞ্জীতি বৰ্ত্ততে। বেন স্ত্ৰিয় ৰহণুত ৰিভি চ। আত্মান মভিবিঞ্তীতি বৰ্ততে। ভূকী॰ চতুর্থণ। আত্মান মভিষিক্তীতি বর্ততে। অভিষেকঃ শির্দি ক-র্ত্তব্যঃ শিব্ধঃ প্রধান বঙ্গানা মিডি

वहनार। উপোचारातिका मूभ-তিষ্ঠেত উদান্ ভ্ৰান্ত ভৃষ্টিভি রি-ভোতৎ প্ৰভৃতি মন্ত্ৰেণ। আচাৰ্ব্য সমীপাদুখাৰ উদ্যদিত্যেতৎ প্ৰ-ভূতি মন্ত্ৰেণ ষা হিণ্সী রিভ্যম্ভ ম-ম্ৰেণাদিভা **মুপতিঠেত উপাশ্ব**ন্ত্ৰে-প চেত্যাত্মনেপদ । মেখলা মৰ-মুঞ্চতে উদুত্তমণ বৰুণ বিভি। অ-বমুঞ্তে অধস্তাদবভারষতি অ-वनत्का व्यक्षानत्वं। बाक्यनान् ভোজৰিদ্বা স্বয়ণ ভূক্ত্বা কেশ শ্বা-শ্রু রোম নথানি বাপষতীতি শি-খावकः। बान्नगान् ভाक्षिश স্বয়ণ ভুজু। নাপিতেন মুখ্বীত। অত্ত শিখাবজ্জ মিতি বচনাৎ প্ৰাক্ সশিখ বপন মিতি দৰ্শযতি । উक्तकः। मिन्धः वन्ननः कार्या যাসানাৎ বন্ধচারিণা ইতি। শ্বাদ্বা অলম্ভ্যাহতে বাসসী প-রিধাষ সূজ মাবন্নীত শ্রীরসি মধি त्रयत्वि । अनक्छा कथनामि-নাত্মান বোজবিদ্বা আহতে। ঈষদ্ধৌভ॰ নবং শুভূ॰ সদশ॰ ষন্ম वातिकः। बार्कः जिल्लानीयाध সৰ্বকৰ্মসুপাবনা।। ইতি ৰশিষ্ঠো-क बक्टन। देवर मृचन। नशादिन ७ न गतिशानामि क्छ । मुक

এথিত পূলা

त्या नवड॰ या विज्ञानानदरो। व्याक्त्रीत्वछान्वर्खछ। छेेेेेे । ছৌ চৰ্মপাৰুকে ৰোগাম্বাৎপাৰ ষোঃ। গন্ধৰোসীতি মজেণ বৈণ-व मध गृहाि । देववव व मध ভব পদ্ধৰোসীতি মন্ত্ৰেণ। আচা র্যাণ সপরিষৎক নভ্যেন্ড্যাচার্ব্য शतियम योक्टा वक यिव ठक्-বঃ প্রিষো বো ভূষাস মিতি। স পরিষৎক শিষ্যাদি সভাসহিত অভ্যেত্যাভিষুখ্যেন গদ্ধা আচা র্য্যণ পরিষদক্ষেকতে বৃক্ষ মিভি माखन। উপোপবিশা मूथान् थाः गान् मः भूगन् अक्षां भिशाना नः क्लीि উপाচार्या मयील यूथा। न् थागान् मूथ अजनान् वावृन् সংস্থান স্বাতকঃ। ওঠাপিধান মিভি মন্ত্ৰ জপেৎ। অত্তৈন মা-हार्या। १ इत्य । अजावमदन এন স্নাতক বিবাহোক বরা-र्रग विधिनार्कत्य । छन्म 🖘 গদ্ধপুশাভ্যা । গোৰুক্ত রথ मुशक्तमा शकती कृतत वाक्ता-ভিদ্বেৎ। বনস্পতি বিতৃদোহি-जूरा रेजि। शक्ती हरक। कृत-

ा॰। बोक्**त्र॰ इ**प-রেখেতার্থঃ। বনস্পতীতি মন্ত্রে-गाञ्ज्रिक न्या बाजा তে ক্ৰত্ কেমানীত্যাতিপ্ৰতি। রথ মারুক আহাতে জবতু জে-দ্বানীতি ৰনস্থতে ইত্যাদি ম-ন্ত্ৰসা চতুৰ্পানে নাভিষ্ঠতি। 'উ-পৰিশন্তি প্ৰাথা উ क्षांचिक मान्छा। छेनवाछि । তেন রখেন আমূখো বা প্রবাষ প্ৰকৰেণগন্ধা উপৰাতি আচাৰ্য্য সমীপ মাগছতি উপৰাতাৰাৰ্য ষিতি কোহনীৰাঃ। উপৰাতা-बाहार्या मबीन बागलायार्याः मिर विकि कारनीया जाठाया আহঃ। রুণাভাবেপি মন্ত্রপাঠা-ठातः। ठक्रकत्रः। उथ्नामावव-যাতাদিবৎ। অসা কর্মাণঃ সমা-বর্ত্তন সংজ্ঞাপি। শুরুণানুষতঃ नाका नमावटकी क्याविधि। छे-बट्ट बिट्डा डाबा॰ नवर्गा॰ नक्नाषिठाः॥ देखि बन्द्कः॥ ম্পক্তি শৌনককারিকাষা। স্ব-बैंडि चय स्टिक्ड नवावर्डन সংজ্ঞক । ইতি সংকারতব্ব ॥ नमाबायः पू॰ नमृहः। ईछा-সর্টীকাৰা ভরতঃ ॥

नगावृत्तः भूः तिनाधायननिवृत्तः

। उद्भवायः । जन्मान्यः २।

रेजानका । नान्द्रकाश्वान-खत प भिनानी गृहर । जन रेणि गारकाव आखानूनिकः সমাৰ্ভ উচাতে। সমাৰ্ভতে वधारनाविष्डुट हेि नगाए-পূর্বাৎ কৃতেঃ কর্ত্তরি ক্তে সমা-বৃত্তঃ। ইতি ভরতঃ।। অতঃপর॰ मभावृत्तः वर्गाकातशित्रश्रः। ইতি উদাহতত্ত্বশাঞ্চা তস্য স बारमोटा मू असे यथा। जरमो-চাধিকারে জাশগুরঃ। জন্তা-বিনাক পরিবাপন নিতি। অনু-ভাবিনা বানৌচ নন্ভবতা नमावृज्ञानाः नदीत्नीतः मूखनः । यद शून ब्रान्डवः। न मना-वृक्षा बरणबू बनाज वीशातानि-छाटक। वीहाबाध मर्न भीन-यामाक यागेविटनयामगाळ म गावृछा गृहका न बत्भकुः। इः তোকেবা॰ মত। তৎ কামাণ রণ। ইভি ওল্লিভব্বণ।। ममाव्खकः भू ममाव्खः। हेलि गमत्र प्रारमी। मभारतणः श्रु धक्व महादश नः। यथा। अर्थनाश्नवः रलवः

मनिकामन्वश्रीकं माध्यकः । जन्म नर्थमाधनः विनयमिके माधन-कः। निवासना स्त्रके विमाधन-भः। देखि जिन्दा मिल्ट देवन-रिश्माविष्ठा द्वाः।

निकाशः वि नश्विष्ठः॥ अविष्ठः॥ नगात्वम्थाशः॥ नगात्वमम्यादिष्ठ अञ्चात्वन निकाशः॥

সমাঞ্জ পু সমাগাঞ্জঃ। স মাগাধারঃ। সহাযঃ। সমাঙ্ পূর্বক গ্রিখাজো রল্ প্রত্যবেন নিশারঃ।

সমাশ্রিতঃ ত্রি সমাক্প্রকারে-পাশ্রিতঃ। বখা। রবেঃ কবেঃ কি॰ সমরস্য সারঃ ক্লবে ভ্রতঃ কি॰ কিমুদন্তি ভূসাঃ। সদা ভ-ব কাপ্যভয়ক কেবা॰ ভাগীর-বীতীরসমাশ্রিতানাণ। ইত্যন্ত-লাপিকা।

मयामः पूर मरक्रमः॥ मयर्गनः हिंछ स्वावृद्धः॥ अक्रमणः॥ हेछि स्वावृद्धः॥ मयम्बर्धाः हेछि स्ववृद्धः॥ मयम्बर्धाः रवाः गमानाचा अक्रमीकद्वनः मयामः। हेछि मर्म्बर्धमादकाः कद्वनः॥ म व बङ्दिशः॥ बन्दः >

वरुद्धीरिः ३ कर्मशातवः ७ ७९-शूक्रका । इ. इ. इ. इ. इ. इ. इ. इ. रख्याः नक्षः वथा। जिन्नादेनाः कार्थ चानि मंथा वानीना ह इ य य ग वाः। ইতি मुक्कदवाध-ব্যাকরণ ।। শ্ব ৷৷ অগি চ ৷ নারাণ मगारमा मुकार्य खर दा लागा। विज्ञानाः। इजिरेवमाकत्रभाः॥ তস্য সামান্যলক্ষণ ষ্থা। অ ভিধানাশ্রিভ লোগাভাববদন্য মধ্যবর্ত্তি বিভক্তিশূন্যনামসমু দাযত্র সমাসত্ব । তত্র কর্মধারষ দিগু তৎপুরুষ বহুবীছি দৃশাব্য-ৰীভাবাঃ বট্সমাসা ভবস্তি গ ভত্ত কর্মধার্যত্ব সমাসনিবত-'লকণাশুন্যাস'জ্ঞাইস'খ্যাবাচ-কণুৰ্বপদকাম্যমধ্যবৰ্ত্তিবিভক্তি-न्वा ज्वाधिकत्रभगमम्बावदः । क्या नीलाध्यन निजाितः ॥ ७ छ विश्वष्यः। नमानाशीन-জন্দশাপুনাসধাপদবর্ত্তিবিভক্তি-শুদ্ধান জাহস খাবাচকপূৰ্প-मक खूजाराधिकतन नामममूमाबद াস চ ভৰিতাৰ্থে বিষধীভূতে ত-ক্ষিতাৰে ইভিবেষে উত্তরপদে বা লনাহারে বাভিখেবে ভবতি। উ-ন্তরগদ পারিভাবিক বৎপদ

मिछि नगाना स्विति विश्वदर्गनः **७८ भाग । एक ह भक्ष्मादवा य-**नानीत्छाबानवड अत्वादगा न जु नक्गवानि वर्गामि हेछि। उद्य-ভার্থে বিষৰীভূতে কৰা পঞ্চগর্গ-ৰূপ্যঃ গৰুৱাৰণ্যঃ গাৰুনাপিতিঃ देवना कि किंग्रामि। छिक्कि छाटर्थ হভিৰেষে ৰখা পৰ্কগালঃ ওদ-सः। ममानंत्रा मन्कृत्वा २ थेः म॰-স্কারে প্রবোজ্যতাসরম্বেন পঞ্ क्लानमगत्वा ब्राथ्निखिदेविह-ত্ত্যাৎ তথা চ পঞ্চলাল প্রবো-का मन्कात्रध्यकाजिम अननः। ভদ্ধিতাৰ্থস্য শ্ৰাদেনাভিধানাৎ ন ভিজিতপ্রত্যধাঃ। সমাহারে শ ৰিপাত্ৰ ত্ৰিভূবন চতুৰ্গ নি-**जानसः। उउत्रंगतम् यथा। शकः** गवरनः रेखाकिः ॥ २॥ ७९%-क्रयप्रशा निमानाधीन नाक्रिक-বিশেষণপদক মধাবর্তি বিভক্তি-भूना नामम्बूषाचंत्रः। वथा। द्वा-जभूकवः। क्किंखिनः। भूक-**क्वाडमः। इंड्यानि॥०॥ नमा-**সপ্রযুক্তলকণানিষভোত্তরপদক-नगामक वहवीहिक। नगामा-ধীনলাক্ষণিকবিশেষ্যবাচৰপদক

यश्यक्षितिखक्षिण्नामायग्रामा-वष वा। मयश्चिमांक्षिक्षवा। (गास्त्रगमकष् मं स्ट्डीर्ष्यः। वर्खीरिक विविधः। जनामाधि क्रत्रभा बाधिक्रत्रभक्ता चथा। हि क्षः। शृहशानाक देणका। जा-कारवानद्वा वृक्तः। रेजानि ॥॥॥ স্বৰ্টকীভূতপ্ৰত্যেকপদাৰ্থা বিতা-র্থকসোত্তরবিভক্তিকবধ্যবর্ত্তিবি-**ॐ क्नानावनग्नावषः बन्द्रवः** । यथा। श्व थिन त शका मार्शक्ति । ইভি। দ্বিৰে। दणुः। ইতরেতর त्यार्गः मगर्गत्र । यदा मगर् त्रमानकार्थः अधानः छटा छटत তরবোগঃ দ্বিচন বহুচনে ২পি তত্ৰৈৰ। বৰা। দেবদন্ত বজ্ঞদত্তৌ व थव थिनत भना माः। इति। यता সংহতিপ্ৰাধান্য তত্ত্ব সৰাহর স্ত-देवक्यान नपुः मक्तिक्छ। छ । यथा। बाग्रूमम रखायः। दे जानि॥ १॥ नगनश्यक्क वकः ॥ **गाण्ना। वश्यश्यमक मधावर्खि**वि छक्रिण्ना ७६ श्रुक्वानाना**यग**र् मायषः व्यवायीजादषः। यथा। উপঙ্গন্ত অষ্ট নিশ্বকিক অ ধিন্তি ইত্যাদি॥ ৩॥ ইতি সমা-जवानः॥ ।। अनुका विशि

(कर् नवानः नक्षिति। राष्ट्रिन-मा महाबाकामा खु। मि निका-र्थरक । वाष्मार्थमा शीरहजुः म नगाम छात्रथकः।। यामृण गर्।-चार्काखद्रः च जनानिः वार्थमा बाम्भार्थाविष्ट्रं विवयञानानि বোৰে হেতু স্তাদৃশ জন্বাক্য ভ-थाविशार्थ ननानः। विভक्ष । न চাय॰ यज्विधः कर्म्मधात्रवाणि **श्राह्मणः। बरम्हाशशमनः** एका-ना रखनारमो मखश बजः॥ भृई वशास्त्र न्दानाभक्षाशानारुः পুনঃ। প্রাচ্যৈঃ পঞ্চবিশ্বঃ প্রোক্তঃ नियाना वा जहामिजिः॥ (जन् कर्मभात्रयः लक्ष्यितः। क्रिकः यद्यामयूग त्यकार्य श्नार्थत्वा-थकः। जानात्श्रान छ्रादिन्य म-मानः कर्मधात्रयः। क्रिकि यहा-यवच॰ তথো রেকস্য নাট্মা ২থে ধর্মিণি ভাদাজ্যোনাপরনায়ো হর্থ দ্যাম্ববোধণ প্রতি সমর্থণ তা-मृग्ननायषयः कर्णधात्रयः। यथा मीलार्भना।।। विशः नः - करि । जःशाभकर्षः नाम छ-मनकार्थियाथकः। अरङ्गितेव ষৎস্বার্থে স দিশু দ্রিবিষো মতঃ॥ সংখ্যাবচ্ছিলশক্ত ষৎপলোত্তর-

ত্ববিশিক্ট বন্ধান স্বাৰ্থমৰ্থিক তা-माटबान छम्लक्गार्यकाव्यस्ता-ধ প্রতি সমর্থ তলানোতরভা-भन्न जनारेग्व जननकाशीकि बंगार्थ विश्व ऋगारा । তत 'ठ-क्विणार्थिक नक्षेति। जिक् তাৰ্থাবিতবাৰ্থ ন্তজিভাৰ্ণবিশু ৰ্মতঃ। তদ্ধিতাৰ্থে লাকণিক স্বা-স্ত্যানাম স্বসর্বগঃ ৷৷ বো দিভঃ লোত্তর ভদ্ধিতার্থান্বিত স্বার্থকঃ। উত্তরপদদ্ভিশু লক্ষয়তি। স্বাস্ত-নিবিক শকাভ্যাণ শকান্তর সমা-সগঃ। যো ছিগুঃ শান্ধিকৈ রুক্তঃ म উত্তরপদিছিঙা। বোদিঙা ৰঘটক নামভ্যা॰ সহ সাকাজ্জ नायाखदान नयानमाखर्गठः न উত্তরপদদ্ভিঃ। यथा পঞ্চাব-**शनः।। সমাহারদ্বিগু লক্ষ**ভি ৷ স্বার্থান্বিত সমাহার লক্কঃ স্বাস্থ্য শব্দকঃ ৷ উক্তাভ্যা মিতরঃ कि॰ वा नमाशतिष्ध विश्वः ॥ বোপভাপ্যার্থস্য সমাহারলক-का यमीयाखानकः म विश्वः म-माश्राह्यकः। यथा शक्षभूली-**छामि॥२॥ ७९ भूक्व वक्**वि । वनीरबम भूतर्थन युज यरवाध-নক্ষঃ৷ যঃ সমাস স্তস্য তত্ত্ৰ স

कर गूजन देशारक।। मामर्थ गरकन ज्बर्धन विनिक्ता वन्धनातिः वतार अंकि यह नवानः चन-नद्वागाः म जर्मर्यमा उम्दर्भ छेर-**পুরুব**া ন ভুর্মানোভর বনাম ষদর্থগত সুবর্ণাবচ্ছিম্স্য যৎ বা-र्थमा (बायक जिल्ला ज्यारेमव छमर्थरवा छ० नुक्रवः। भूवकारवा २क्षिश्वीणामाववगरश्वः। वि-ভজতে। দ্বিতীয়াদি সুবর্থস্য ভে-मारमय ह वर्षियः। कियात्रयी विजीवाटन दर्शः आद्याल द्यां जि-তঃ ৷৷ ৩ ৷৷ অব্যধীভাব• লক্ষ্যতি । উত্তরার্থান্বিত বার্থাব্যবপূর্বস্ত **रवा जतक । जमानः त्ना श्वायी**-**छावः जी पू॰ विक विवर्जिङः ॥** ষঃ সমাসঃ স্বোত্তরপদোপস্থাপ্যে न यम्दर्भनाषिठमा यमर्थमा वाध-কাব্যষপূৰ্বভাগৰং স ভৰিশিকীস্য जमर्थमा (वाध्यन जवाबीजावः। বথা নিৰ্মক্ষিক উপজ্ঞ বিভ্যাদি । ज्यादम्भः विना अस्यान यष्ठी न (वाशिका। बादर्श यहर्थमा यहा माबाबीजाव रेवारा। वामारम-मः विना क्षत्रमानं वृष्ठी वाटर्थ यू সমাসার্থস্যাম্ববে। খ॰ প্রত্যসমর্থ। मध्य वादाषीजादः व्यवसारेनव

वश्री कार्र्श नमाना खबार्यना व-यदायदन रमयर्ग न जू मूखा-नि । । बहुडीहिः नक्षि । वर्बीहः सगर्जार्थ महित्रम বোধকঃ ৷ নিৰ্মেখা লক্ষণৰা স্বাণ-मुख्याशक मुक्तान्।। वा॰मना নিক্তলক্ষণয়া জ্ঞাপকেন শব্দে-न वरिष्ठः वश्रद्धमा वाष्ट्रभार्थमा সম্বন্ধিত্ব প্রকারেণাম্বরবোধ প্র-তি সমর্থঃ সমাসঃ স্বগর্ভ তাদু-गार्थमञ्जलिदग्धत्म वस्बीहिः। অলোক প্রথমান্ত সৎ সুৰস্তৈ রিতরেঃ সহ। যদা ভেদ সুবস্তেন माकाञ्यः नाम विश्रदः॥ जमा वहबीद बं छेक स्मकः नाम अध-মান্ত সৎ সূবত্তৈ রিতরনামভিঃ সহ ভেদার্থক সুবস্ত বচ্চদেন माकाष्क विश्रहः कथारा व-হুবীহিং বিভক্তে। তদতদ্ভণ-मिख्छात्ने (बी (खरमे) छमामि-यः। विश्रह्मा विष्णुत्या य ख-षित्गराक ताथक्ष ॥ छा वि-গ্ৰহ বাক্যস্য বিশেষ্য বিশ্বা প্ৰ-जारगा सा १४ छिष्टिनगर वाधकृष वह्नजीहि खत्वा ब्रामि-মঃ তদ গুণসন্ধিক্তানঃ৷ তস্য স্থা-র্থগুণীভূত্রন্য সম্যাগ্রিশেষ্যবি-

श्या विकान स्त्रिविक बूग्ध-गता वार्षायमः मः जावाय ७-ভিম শ্চাতদ্ত্রণসম্বিজ্ঞান শ্চরম रें छार्था मन ने नार्छ ॥ आहा न তেন তদ্গুণসম্বিজ্ঞান বহুত্রীহি यनाथा निर्देखि। वः वार्थ वर्षे-कार्थमा क्वार्थाविषित वाधरत । অনুকলো বহুবীহিঃ স তয়ে। রখ वानियः ॥ (या वह्बीहिः सार्थ-माम्बिनि वार्थशहेकमालार्थ-माश्वरवाधदन मनर्थः म ज्रह्मा उद्ध्वाञ्च अवत्या तानिमः। ल-चकर्न मानय शत्र्जीव भना है-ত্যাদি॥ পুন বিভক্তে। স্বাস্ত र्निविके षिखामि नामि विश्व-राष भूनः। वरुजीहि बरुविरधा দ্বিপদ ত্রিপপদাদিকঃ।। দি ত্রি চতুরাদিভি রেব স্বঘটক নামভি ৰ্বিগ্ৰহৰশাৎ দ্বিগদ ত্ৰিগদ চত্-नामित्का वरुजीरि (बीधाः ॥ e। इन्द्रः लक्ष्यि । यन्त्रमर्थक बनायवृह्हा यात्रव अकात्रदक । বোধে সমর্থঃ স बन्तुः সমাস खावनर्थकः॥ सन्यम्दर्भागकान-कमा क्रिक यामृभ नायरकायमा निक्ष खपर्थथकात्रकाष्यरवाध॰ প্রতি তত্ত্বেন সমর্থ স্তাদৃশ না-

यनिवर् এव ভাবদর্থকো बन्युम-সাসঃ॥ ৰন্দু বিভক্তে। ছৌ ভেদাবস্য শান্ত্রোক্তৌ স্বাহা-রেভরেভরে। একান্য বচনাকা-ক্ষা হানোপাদানতশ্চ তৌ ॥ खमा बन्दुमा को ख्लामो **मग**ी-হার ইতরেতরশ্চ শান্ত্রসিজৌ। ভবৈক্বচনান্য সুবাকাজ্কাবি-शैनः नमाश्रद्धः। তথাবিধ मू--वाकाष्क रण्डला वर्षा। পাণিপাদ হস্তাশ্ব ধবখদিরৌ 1 रेजामि॥ ७॥ উপপদসমাস मक्यि । यमुख्तराम॰ नामान् खत्र यमत्वाधकः। धाजूकष्क मू পপদ সমাসং স তদন্তকঃ ৷৷ ধা-তুরুদ্ভ্যাণ নিম্পন্নণ যস্যোত্তরপ-षः गकान्खतः म राष्ट्रगार्थमा বোধণ প্রত্যসমর্থণ তাদৃশার্থে তাদৃশার্থকাস্ত্যপদকঃ সমাসঃ উপপদ সংজ্ঞকঃ। সম্ভকারঃ ক্ষীরপাষীত্যাদি॥ বিভক্ততে। কারকৈকোপপদকঃ ষড্বিধো-ষ মিতি ভূমঃ! কর্মকর্ত্তাদ্যুপ-**शन एक वर्ष वर्ष अपने ॥ १॥** ইতি শব্দশক্তিপ্রকাশিক। ॥ मगामकः वि मः बुक्तः। यथा। ত্রিপঞ্চারে পীঠে শব শিব হুদি

(प्यव्यवना॰ यहाकाटनटनाटेक र्मननत्रमणाबना नित्रजा। मया-সক্তো নক্ত॰ স্বৰ মপি রতানন্দ-নিরতো জনো যো ধ্যাবেত্তাম-वि क्निनि म माष्ट्र प्यत्रहतः ॥ ইতি কপু রাখ্যভোত্ত।। नबामक्षन की नबामकः। त्न-लनः। मरवागः। मया प्र्वक मन्जशाला बनहे अछारमन निष्णष्य ।१ সমাসন তি নিকটা সমাঙ্ পূৰ্ব সদ্ধাতোঃ ক্তপ্ৰত্যবেন निष्णम् ॥ मयामदान् पू॰ जूबवृकः। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা ॥ बि॥ সমাসাদিতঃ ত্রি আহতঃ।। প্রা-खः। नगाउन्द काउनमधा-ভোঃ ক্তপ্রত্যবেন নিষ্ণন্ধঃ।। সৰাসাদ্য তি প্ৰাপ্য । ইত্য-बद्रः॥ श्रन्याद्रम्नारकः थी-श्वान खत्रताथक किया।। সৰাসাৰ্থা জ্ৰী সমস্যা। স্নোক-मा शारमरेनरकन दाखाः विचि ৰা পুরণ । ইত্যমরভরতে। ॥ नयार्व की नयार्वा नया-ए शृबंक शब्ध शास्त्रा तनहे थ-

ত্যবেন নিশার ।।

मनाश्रतः भुः बन्क्यः। हेळा-बतः॥ बहूनाः जिन्नानाः वाकः वााभादत्र वृक्ता वा अक्ष्यूनी बिज्वनवद्भागीकद्रणः। देखि खत्रकः ॥ **म॰ एक श**ः। स्था । मृ-মাসস্ত সনাহারঃ সংকেপঃ সং-এহোপি ह। ইভি হেষচন্দ্ৰ:।। नगरात्रवन्त्र नगरात्रविश्व न यामत्या विवद्रगः नयामगत्य দ্রকব্য-॥

नगाहिकः वि नगाविकः॥ छेक मिकाखः॥ जाहिकः॥ निर्वि-বাদীকুতঃ।। প্রতিজ্ঞাতঃ। ইভি (यिनिनी।। निन्मनः। ইতি शत-नी।। च्हा भू॰। रें हि नस्तुन्ना-वनी ॥

मगाश्रु वि मगुक्थकादान আহরণীক্ষতঃ। সংগ্রহীতঃ। একত্ৰীকৃতঃ। সংক্ষেপেৰ প্ৰতি-পাদিতঃ। সমাঙ্পূৰ্বক ক্ষাতেঃ ক্ত প্রত্যবেন নিপানঃ ।।

সমাহতঃ ব্রী সংগ্রহঃ। ইত্য-মরঃ।। এককভূ কাণা ৰনেক কতৃ কাণা বা একাডিপ্রাযাণা বাক্যানাণ সমাহরণণ সমান্তিঃ

পদ্যতে অন্যা সমান্তিঃ। সং-পূৰাৎ আওপূৰাৎ কঞ হরবে ইতাসাৎ কিঃ। ইভি ভরতঃ॥ मगस्यः पू॰ हाउ॰॥ बास्रानः। रेषि गयत्रप्रावनी।। भश्रभकि-मृाछ ।। जनतः। देखि यमिनी ।। ।। छमा निविक्षव वशा । मृाङ ममास्त्र देश्व ब्राङ्ग রাফুানিবারষেৎ। রাজ্যান্তক-त्रगात्रको ह्यो स्मास्यो शृथि-বীক্ষিতা ৷৷ প্রকাশ মেভৎ **७कर्याः यरम्यत्न ममास्रत्यो ।** ভষো ৰ্নিত্যণ প্ৰতীঘাতে নৃপতি र्यष्रवान् ভবে ।। । । । । । ৰ্বৎক্ৰিষতে তল্পোকে দ্যুত মুচ্য-তে। প্রাণিভিঃ ক্রিয়তে যস্তু স विटब्बरः नमाश्वयः॥ मृाकः न-यास्य देशव यः वर्गा ९ का त्र देशक ৰা। তান্ সৰান্ যাতষেজাজা **णृजा॰क विजलिकिनः ॥ ই**ভি बानरव २ जशायः॥

गमासा जी गाजिसावृकः। इंडि नक्डिका॥ नगथा ह॥ সমিক ক্লী শেলং ৷ বডদা ইতি ভाষা। ইতি শব্দরত্বাবলী।। निष् जी युक्त । हेलायतः ॥ । ममाहिष्ट मारकर्म थि । मिष् द्वी विमिक्षीनमार्थवृष-

कार्वादिः। छ० भवायः। देवा नः २ जरः ७ हेशः ६ जरः ६। रेणस्त्रः॥ त्रमित्रनः ७। ७०-चिम् नृत्च किनिछः। ইভি म व्यवचारा ॥ ।। रशमीयम-विज्ञकन वर्गान्तातन। आदम-শনাত্রাঃ সশিখাঃ সবস্কাল্চ প-नामिनीश मिथः कन्नरम् था-कः मर्वकर्षम् मर्वमा॥ ।। न-**क्वाड्यः कथा।** इत्काशभिति-निके । नाजुकामधिका नगना मिष कृत्वा कि हि । न नि-र्युक्क को टेठन न मकी है। न शा-টিভা।। প্রাদেশালাধিকা নোনা न ज्था मग्राष्ट्रिमाथिका। न म পত্ৰা ন নিৰ্বীৰ্য্যা হোমেষু চ বি-জানতা।। ইতি সংকারতত্ত্বং ।। তস্য নিষ্ক্রলকণ ষথা । विनीर्ग विषमा हुना वकाः স্থূলা বিধাকতাঃ। ক্রমিদকীশ্চ **मीर्घाक मिरिश देनद कान्न**रहर ध ।। खब लात्वा यथा। वि नीर्गामुक्तर अर्गावितना भूख-नानिनी। रुवा नागवर् भन्नी॰ बका बन्दिसामिनी॥ क्रिनिक्का त्त्रागकत्री विष्यकत्नी विशा পশুন্ বারষতে দীর্ঘা সুলা চার্ম-

विनाणिनी ॥ इंकि छन्नः ॥ अशे मव अहानाः मिन्न खूंगाचादमा १ वर्षः भनी मूर्वाः मिन्न खूंगाचादमा १ वर्षः मिन्न अहाः प्राकृति अहाः मिन्न अहाः हिल जाता। इकि इन्ह स्वाः ॥ जाता स्वाः वर्षाः हिल अहाः प्राकृति स्वाः प्राकृति स्वाः प्राकृति स्वाः प्राकृति स्वाः स्वः स्वाः स्वः स्वः स्वः

সমিতিঃ জ্রী সভা।। বৃদ্ধং ।। সঙ্গং ইত্যমর মেদিনীকরে।। সাম্যং ইতি হেমচন্দ্রং।।

সমিথঃ পু॰ অগ্নিঃ। ইত্যুণাদি-কোষঃ।। যুদ্ধা ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুদ্যা মুণাদিকৃত্তিঃ।। আহ-তিঃ। ইতি সাকিপ্তসারোণাদি-কৃত্তিঃ।।

সমিদ্ ব্রী সমিথ। ইত্যমর: ।। সমিধঃ পুণ অকি:। ইতি ত্রিকাও-

निकानः की निष् । हेलि भ-सद्भावनी ॥ निषदः भू- वायूः। हेलि (हमहत्यः मनीकर कि व्यक्ता विकास ।।
मनीकर कि अने कि । स्वानेक्रिका कि अने कि । स्वानेक्रिका कि अने कि स्वाक्त कि स्वा ।।
मनीकर स्व मनकर । विकास ।।
सनीकर स्व मनकर । विकास ।।
सनीकर स्व मनकर । विकास ।।
सनीकर स्व मनकर । विकास ।।

স্থীচকঃ পু- ক্রেপুন্দ হৈছি: কেচিছান

गमीकी जी कृति। रेजुनापि-कारभा समया। रेकि जिला-अरम्बः॥

সমীচীন কী ব্যাপা তেওঁ পর্যানি । সভা ২ সমাক্ ৩ শতঃ ৪ তথা ৫ ব্যাতথ ৬ মথাবিত ৭ সক্ত ত ৮। ইতি হেমচন্ত্রঃ । তম্বতি বি ॥

मगीमः पू॰ लाधुमहूर्न्। इंडि

मनीनः जि नश्नित्रम्यत्ती । मना मनाथ नीत झडारमन निमानः मनीनका, जी श्रिक्संश्मृण रमेश केलिस्कृत्वकाना मनीशः जि निकारः। वेद्यम्द्रः॥ मनीशः। जिल्लामा ्रमोत्रणाः। नामम्बर्धः नीस्राधः । ज्ञान्यम् निस्तारः।

मनीतः प्रमान वासूर हे जनसः ॥ मनीतृकः। शिव ब्राव्ह किक्निः॥ मनीत्रवः प्रभावासूर॥ मनत्रकः। देखास्तरः॥ शिवकः। देखिः विक् प्रमानः॥ शिककः। देखिः विक्

मनीकः क्षी भाषामाजः । केष्ठि विकाशत्मकः। मन्नाक्शकाद्मन मनीकः। श्रीकाः। मः भूवं मेक साठा तन्ते श्रीकाः। मः भूवं मेक साठा तन्ते श्रीकाः स्वाकः। मुक्तिः। सनीकाः जी जवः॥ नृक्तिः। सनीकाः निकासनीः।

সমূপঃ ত্রি বাগ্মী। কাবদুকঃ । ইতি হেনটন্তঃ ।।:

ব্ৰুচিতঃ ত্ৰি লালাগুচিতঃ। উপবুজঃ। যথা। কলান তৈ কিয়া
কলনৈ বয় দুকৈ ক্ৰডিইবোন
বাকা নানীলো। হলি নানি নাতে
বৈতি পর্মণ। তথাপি ক্তুত্তি
ক্ৰামতি কালাক অসিতে জ্ কেতৰ ক্ৰুৱাংনাক অসিতে জ্ বং সমৃচিতঃ।। ইভিতলসার্থ্ত
শ্যামত ক্ৰিবা मन्त्रकः मु ज्यारात्रः विज-बतः॥ यथा। क्राटनी बट्यार्वर् बाक्षणवारात्रः जन्त्रक्षः । विजि ज्यानकात्रात्रनी ॥

সমুক্তেন পুশ বিনাশঃ। নশ্বিবাশঃ। নশ্বিনাশঃ।
বেন নিশানঃ।।

भगूक्तः 'गृ॰ विद्यावः॥ 'छैर-' तनवः। हेलि मिलिनीः॥

ৰানুক্ষাৰঃ পূ সমৃক্ষঃ। সমূৎ-পূৰ্ব জিথাতো ৰ্মঞ প্ৰতাবেন নিশাগঃ ।

পাৰ্কিতঃ ত্ৰি উচ্চঃ। সাৰুৎ: পূৰ্ব শ্ৰিগছজঃ ক্ৰেন্ডাট্ৰন 'নিপজঃ।

मम्ब्रिकः जि काकः। रेका-महा।

मम्दक्षमः भू किर्वनममः। मः भूषभूवं किम्बारका तिव् द्याकाः स्वय मिणावः।।

मन्यकायः प् मन्त्रपकी। विकि नकान्नप्रकारकी ॥ उत्कार

मन्दः कि जन्दः १। मन्दिनः १ मन्दः मृतं भारतः ५ अन् एतम निभवतः ॥

नम्यानः की मन्त्रकानाः।।या-

वीमा मिर्नक। देखि दानिया ११ किंद्रगनक में में में किंद्रमित्र कें जियान १ किंद्रमित्र कें बेथा। देखक म्यूजिन केंग्रामित्र के क वित्र केंग्रामित्र केंग्रामित्र कें कर्त्रण माखना भूमः ११ देखि किंद्रगानिक्य ।।

সমূখিত: পূ
ত সমাপ্রতিত । বিধা

শৈল্পিত প্রতি প্রতিবাদ্যালন

শূলাপ প্রকাশ ভাগনান তেওঁ ।
ইতি তিথ্যাদিত প্রেশিকোপানশূলামশ্রণ।

भगूर भन्नः 'ति जम् कुष्टा वंथा। পুউক্তা हथा विमा भेत्र स्त्रा-कि धर्मण कार्यकरिन मधूर श-त्र म ना विमा स स्त्रानः ॥ है कि हानका था

সন্ৎপিঞ্চ ত্রি অত্যন্তব্যাসকঃ । বৈধা । উথিপিঞ্চল সন্ৎপিঞ্চ পিঞ্চলা ভূলিমাঞ্চলে । ইতি ক্ষেট্ডেঃ গ্র

मञ्द्रिकः पूर् ख्रिन्याक्नाटेन्नाः ेहेछायतः ॥

मन्देन्कः जि निर्माण्ड किला हिल एकारक उद्युक्तकार्थ मर्गनाद्याः निर्माणकार्याम् कार्याद्याः स्थापकार्याः

रभगर ग मम्बद्धः वि : डेब्टना क्यारम क्रम्हणकाति। हेकामबन्धाः चमूक्ष्यः जिल्लाम् अप्रशास्त्रा नामतीय नियुद्धारम्म जबिर , खुनाक स्वाच्या निवेशक स्वाच भगानाः नग्ज्ञावतीन्दा ॥ केषि विवीवाकाकाः ॥ जाबृह्मपः जी जामः। सवा। जान-र्थाः। अने क्याद्यः मगूरदा विखः সমূৰ ততো বিজ্ঞাতি নহজ ভূতীয়ভবনে ৰোগ্য দক্ষিত্ত दक्षा इक्प्रामित्वाक्रिके।। नशासीकाशासर्गकक्ष्माकी । मा जू जबान कवा विश्वकाको इन লক্ষত্ৰৰ পা। তেৎপৰ্য্যাৰঃ ৷ সা-मुनारिक रा नश्री किनकर्क কর্ম হতো শশ্ন সামাত্রিক। द्वा ७ थ ७० । त्र त्र व व व व व . जिन्न अक कासकिण[•] ा। विष्ठा अविवासित विज ভূতাৰ্থ সংগ্ৰহণ ইছি জ্যোতি

नवृत्तकः श्रूषः । वेशास्त्रः । वेशास्त्रः । वेशास्त्रः । वेशास्त्रः । वेशास्त्रः । विश्वासः । विश्वसः । विश्वसः

नम्गानकः प्ः जनसास्कातः। रेडिबिक्पस्यम् ॥

বৰ্ষাচার। পু: আপনঃ। ইভি ত্রিকাওশেবঃ।

बन्तायः प्राप्त नम्हः । व्यक्तिमा । वेकानयः ॥ वृक्त्यायिकाः । वेकानयः ॥ वम्ब्यः ॥ वेकि व्यक्तिमा

नमूनिकः कि नमान्धाकारतम् क-थिकः। मःभूवं वनवारकाः स्व अकारमच निष्मवः॥ केवनः का-श्वः॥ नमूब्वः। मण्म्बं केव-भूवं देनवारकाः स्व अकारवन विष्मप्रः॥

সন্তা: পু সন্ট্র:। ইতি

টেনচন্দ্র: গ্ সন্ট্র:। ইতা

সন্দাক: পু সন্ট্র:। ইতা

সর্দাক্তীতি হনজনালন।

দেরিতি ডে সন্লা: ততঃ আ

দেরিতা ভবতি সন্দ্রিকঃ স্ট

শি রেমে ইল্ডালাথক ততঃ

সাবিলেন্ড্রা

सन्तामः गुर **उर्क्शकः**। উৎ-शिक्षः। जानार उर्श्वनामश् गणा है जिल्ला कर्म के जान कर कि जान कि

मम्बद्धः की विश्वाकः । उक्षयः ।

देशानवः ।। वाञ्वार्थ उम्मीनार्थः

क्षित्रवः कृषात्म क्ष्मान्ग्र खाननः

वृक्षान्ग्र मृत्र विष्ठ विश्वानः

क्षित्रवः मन् क्षित्रवः उत्कानः

क्षित्रवः मन् क्षित्रवः वर्षानान्।

कृतकाक्षित्वाम् निष्ठ क्ष्मानाः

कृतकाक्षित्वाम् निष्ठ क्ष्मानः

कृष्णप्रभ मूत्रवः । हे कि क्षमः ।

के कि क्ष्माः ।

नम्ब्रुटः वि नम् वर्षेशः ॥ अन् त्रीकः । इणि सिन्नी ॥ नमाक् त्राकारतः उक्छः । उकाशिकः । अयो । अद्योगम् मा नहत्राहतः भ्राक्तिश्रास्त्र । ग्राप्तिः विभ्रम् र्जिता। नम्ब्रुटा दनः नन्नाहकः निमान्त्र । इक्किक्ष्यं र्जानाम् अः नीमञ्जारके नाश्चराणाः।

गर्याः १ जनमप्रसामा इस ध्वाकाहिक्का । महत्वासम्बद वागः । सर्वेशनेतिः विश्वति विकार कारणा साथ महामाहि ्वां आवृक्षा र एकेन के जिल्ला ना-की शिक्ष स्मूज्य स्माप्त में देखि न **मान्यामा रे**ठक नम्राचन म मभूषाई छि न्यू छ। इंछि नायू-नुताक। युजा मर्गाषा छवा मह वर्वत्छ है जि वा नमूबः। नगा-ভদাতো রো হরি রত ইভি। মৃ-দ বাভিদ্ৰাতীতি তে। মুজাৰি तक्षामीनि टेडः नर वर्डट रेडि ब।। इंडि जन्जः॥ उदर्शनायः া অবিঃ ২ অকুপারঃ ৩ পারা-বারঃ ৪ শরিৎপতিঃ ৫ উদয়ান্ - ७ डिमिक्षः १ निक्रः ৮ नत्रेत्रान् , २ माभन्न ३० व्यर्गनः ३३ नज्जा-कद्रः ३२ क्वनिधिः ३० बापः-া-পতিঃ ১৪ অপাপডিঃ ১৫ ৷ ইত্য-मद्राधिकाक्यः ५७ मिनिकासः ा १९ छदीयः ४५ बीश वान् १२ ज-लिखः २० मस्तिः २० १६मोनी-थानितः २३ वक्द्रानसः २७। ইন্ডিজটাবরঃ॥ সরিতাম্পতিঃ र १३ अने विस्टर नी विनिधि २७ नीत्रशिः २१ अष्रशिः २४ शाद्याः

गपूर्व

निधिः २० चार्याधिः ७० चान-मान्मिण्डि ७३ नेमीने ७२ हेन् জনকঃ ৩৩ ভিনিকোবঃ ৩৪ বা-রাণনিধিঃ ৩৫ বারিনিধিঃ ৩৬ বাৰ্দ্ধিঃ ৩৭ বান্নিধিঃ ৩৮ ভোষ-নিধিঃ ৩৯ কীলালধিঃ ৪৯ ধর-**बीशृद्धः ८३ क्वेद्रांबिः ८२ धर्त**वि-क्षतः ६७ वाकः ६६ क्रज्ञाः ६८ পেরু: ৪৬ মিডকে: ৪৭ বাহিনী-পতি ৪৮ गंकी धदाः ४२ माद्रमः ६० তিনিঃ ৫১ প্রাণভাষান্ ৫২ উ-ৰ্মিমালী ৫৩ মহাশৰঃ ৫৪ অস্তো-निधिः ६६ वट्डाधिः ६७ जित्रसः ६१ कृलक्यः ६४ छात्रियः ६२ । रेि भक्तब्रावली।। वातितानिः ७० टेमनिमिवितः ७५ भन्नाञ्चरः ৬২ তরন্তঃ ৬৩ মহীপ্রাচীর ৬৪ । इंडि क्विका अटमार्यः। भट्यारिः ৬৫ সরিমাপঃ ৬৬ অক্টোরাশিঃ ৬৭ ধুনীনাথঃ ৬৮ নিত্যঃ ৬৯ কিন্ধিঃ ৭০ অপা॰নাথঃ ৭১। অস্য জলগুণাঃ। বিসুত্ব । লবণ রক্তা-ययथानद्वः । देखदाः । देवदर्गः **(मायक्रमकष्)। विट्यामानार्शा**र्ख পিত্তকারকত্বশ। ইতি রাজনি-र्यन्तः॥ अभि छ। नागुज गूमकः ক্ষার সর্বদোষপ্রকোপণ। ইতি

त्राज्यक्षणः। मूजायुर्क वि ॥।।। न ह नमूटजा बन्दर्श त्यष्ट्रांकालः । बथा। इपि कात्मां अत्वाः त्का-(क्षा लाख काश्रतकक्षा था-माषाक् मिन्नता त्यपुाद निर्श-তিঃ পাযো রযাশ্রয়ঃ।। ইভি শ্রী-ভাগবতে ৩ ক্ষন্ধে ১২ অধ্যাষ্ট ।। कन्नरভদে श्रीकृरकोत्ररमन वित्र-জাগৰ্বজাতঃ। যথা। গ্ৰীক্ষো বিরজাণ দৃষ্টা সরিজপাণ প্রিয়াণ সতী । উচ্চে রুরোদ বিরজাতী-दत नीत्रयत्नाहदत्र।। জलामूत्र्याय চাগচ্ছ বিধাষ তনু নৃতন । আ-জগাম হরে রগ্রণ সাক্ষাদ্রাধেব मुन्पत्री॥ जाक नागवडी॰ मृक्षी। প্রেয়োতেকা॰ জগৎপতিঃ। চ-কারালিকন তুর্ণ চুচুম্ব চ মুছ-म् इः ॥ नानाथकातम् नातः वि-পরীতাদিক প্রভুঃ। রহসি প্রেয-সী॰ প্রাপ্য চকার চ পুনঃ পুনঃ॥ বিরজা সা রজোযুক্তা ধৃদ্বা বীর্য্য मरमायकः। मरमा वज्य उदैवय ধন্যা গর্ভবতী সতী।। তত্তো তত্ত্র সুখাদীনা দার্জণ পুলৈশ্চ সপ্ত-जिः। একদা हतिना मार्कः वृन्ना-त्रा मूनिर्कत्न।। विकश्त भूनः माधी मृत्रातामक्यानमा। क

তিমিন্নস্তরে তত্র মাতুঃ ক্রোড॰ জগান হ।। কনিষ্ঠপুত্ৰ স্তস্যাশ্চ ভ্ৰাতৃভিঃ পীডিতো ভিষা। ভীত• স্বতন্য দৃষ্ট্বা ভত্যাজ তা কুপা-নিধিঃ ৷৷ ক্রোডে চকার বাল সা क्ररका ताथागृहः यरगे। अरवा-धा वालः मा माधी न ममर्गास्ति-कে প্রিয়ণ।। বিললাপ ভূশণ তত্র শৃঙ্গারাতৃপ্তমানসা। শশাপ স্ব-সূত্ত কোপাৎ লবণোদো ভবি-ষ্যতি।। কদাপি তে জল কেন न था निया खि जी विनः। भगान সৰান্বালা শ্চ ষান্ত মৃতা মহী-তन ।। शक्र्यक मही गृण जम् षी १ गत्ना इतः। विशि तेर्नक व युगाक अविषा छि शृथक् शृथक्।। बीर्ल बीर्ल खिनि हुए। निर्देश ज्बिनः ज्ञाः। चीनशां विने ভিশ্চ সহ ক্রীডর নির্ত্তনে॥ ক-निक्षा याज्यां भागक नद्रात्मा वजूब र। कनिन्नेः कथवामान गा-ভূশাপক বালকান্। আজগ্মু मू : विठाः मर्स माज्यानक बा-नकाश खन्दा विवतन गर्द थ-क भू र्वत्रीष्टमः ॥ क्षेत्रमा माजू म्हत्रन छक्ति नेनुष्यकन्नद्राः। সপ্তৰীপে সমুজাশ্চ সপ্ত তম্বু বি-

ভাগশঃ।। কনিষ্ঠাভূদ্ধপর্য্যন্ত॰ ॰ यूटन । लवटनकृ मूता मिर्म पिष पूथा जलार्गाः॥ के उराक कवि श्या । नजार्थक ভবিষাতি। ব্যাপ্তাঃ সমুদ্রাঃ স্ देखन मखबीमा॰ नमस्ता॰॥ है जि जन्मदिवदर्ख क्षीक्रकक्रम्थ-ওে ও অধ্যাৰঃ।। ঞ ।। তস্য হাস বৃদ্ধিকারণ যথা। অপাণ চৈব সমুদ্রেকাৎ সমুদ্র ইতি সংক্রিতঃ । उपराजीत्मी भूर्व जू मगुफः शृंगार्छ मना।। श्रकीयमार्व व-एल कीयर७ श्खिमराजन देव । वाभूग्रागाटना स्मित ताबादेनवा-खिन्यारा । **७८७। देव** कीय-सानमा बाषात्म इना क्वः। जिमाराज्य तिनस्मामा छ्या-चोटना रथा चरना। असे देख नगूटजानि वर्षट्ड पन्दिनागरम। चन्।मामणिवका जा वर्षणा-त्या द्वां हे । **अपना स**म्हर्य-शित्माः गक्ताः अन्तान्ताः। कः व। वृश्विक उनत्यः नाम वृश्वि करवो ववा ॥ बदनाखन्नानि शका-ए तक्लाना भडानि ह। जनाः-वृक्तिः करवा मृक्तः अगुजागाञ्च श-बेम् ॥ रेडि नाबरमा ५० व्यक्षायः

॥ অন্যৎ বিষ্পুরাণে ২ অংশে 8 व्यक्षारय जक्रवाः ॥ कः॥ मः मृट्य वर्गनीयानि यथा। व्यक्ती ৰীপাজি রজ্বোর্মি পোত যাদো कनक्षवाः। विकृष्यनागम् भन खाम्कि दोबानभूतव ॥ देख कविकन्नग्रायाः ३ खवरक ७ ष्म्रम् ॥ 🗰 ॥ कत्नी विकानाः ममूखयाजामि निरस्दश यथा । वृश्याद्रनीयः। সমুजयाजा वी কার কনওলু বিধারণ । দিজানা यमवर्गाम् कन्यामृशयय खथा ॥ দেবরেণ সুতোৎপত্তি মধূপকে शास्त्रा देशः। याः माननः তথा लाटक दानअशासन खया।। म छात्रा देखन कनामः श्रनमानः नरमा है। सामनामा अक्रहर्गा नगरमाध्यमध्ये।। नराथका म अवस्य देशरमध्ये कर्ता-स्थ.। रेगान अर्थान् कतिस्था वर्ष्णा-नाक मिलिल ॥ देखि छेबाइ-ख्युः।। इता वचनः वशा রুভন্থানবিভাগ। ত্তে এবং কণ্য-शनमाधा वनकः भवनः वरा षम्ठार्थः शहरानिधिः॥ मका-मारन २ र्गस्य दमा रखि तनाथादत्रा क्रणाविम् । शिक्सारवानि व-

निछि भो द्ववाद भाषुनन्पनाः॥ তে সুনিৰিন্নননঃ পরিষ্ণানমুধ-थियः। जामन् मूर्लोक्र्र्य न-**एक देनदिना छित्र जी यजा ।। बि-**लाका विद्यमविधि[®] **७**एमचद्रा দুর স্তবীর্যো ২বিতথাভিসন্ধিঃ। ক্ৰ**ৰা বপুঃ কাচ্ছপ ম**ক্তুত ম-হৎ প্রবিশ্য ভোষ গিরি মুজ্জ-হার।। ত নুখিত বীকা জলা-চল পুনঃ সমুদ্যতা নিশ্মথিতুং সুরাসুরাঃ। मधाর পৃষ্ঠেন স ল-ক্ষােজনপ্রস্তারিণা দীপইবাপ-द्वा बङ्गन्॥ मृताम्द्वरेख र् জবীৰ্য্য বেপিত পরিভূমন্ত গি-ति यह शृष्ठेणः। विज्ञुलकावर्खन भाषिकक्र्रा त्रात्व २ क्रक्ष्यूवन मक्षरमकः।। निर्वायामानामूमध्य उछिक सहावन हाताहता-स्र मधाः। मञ्जादनीयाम्बर-রাহি কছপাৎ তিনি বিগঞাই क्षित्रिकाञ्चा ।। क्रमुश्रादगः मिनि मिन्। शर्यारवा विनर्भमू थन-র্পদস্ক নপ্রতি। ভীতাঃ প্রজা मू ज्य द्वा राश्वा व्यवस्थाः भवन महानिया। छ्वीका वा-সুৰু ভাসাং ত্ৰুগৰা ভ্ৰগীডি-छः। गर्वत्वगूक्तत्व देव बार्

मठी॰ थिया॰ ॥ व्यद्भा वर्छ छ-वादनाष्ट्र अकाना भेगा देवन गः। भीदाष्यपदनास्वाभ का-गर्गामृत्रिष्।। भागाः और भविष्यमा वित्य गडन रि (म) अन्तिम् हि खाज त्रापी सकीम भित्रभागन । आदेवन्ह आवि-नः भाषि गाथवः क्ष्णक्रुदेवः । वक्देवदत्रम् जृत्जम् त्माहित्जमा-श्रमायका ॥ भू॰मः क्रभवर्रा छ-দ্ৰে সৰ্বাত্মা প্ৰীষতে হরি:। প্ৰী-তে হরৌ ভগবতি প্রীবেহণ সচ-রাচর:।। তমাদিদ গর ভুঞ্ প্রজানা স্বস্তি রস্ত মে। এব মা-ৰন্ত্ৰ্য ভগবান্ ভবানী বিশ্বভাব-নঃ।। তদ্বিষ জগ্ধু মারেভে প্র-ভাবজ্ঞামনোদত। ততঃ করত-**बीक्र्**डा वाशि श्वाश्वः विषः ।। অভক্ষমহাদেবः क्रथमा ভূ-ভভাবনঃ। তদ্যাপি দশ্যামাস चवीर्याः जलकन्ययः ॥ यक्रकात গলে नौलं उक्तकात विভূষণ । পীতে গরে বৃষাকেণ প্রীতা স্তে ২মর দানকাং ৷৷ মমস্ভরসা সিশ্বু হবিদ্ধানী ততো ২ভবৎ। **छ। मग्निट्शाबी मृयदम। जगृर बं**-क्रवामिनः॥ यख्या प्रविधानगा

भिशास इक्टिन नुशा ७७ उटेका खवा नाम सूर्या २ जूकखणा भवा। अनेमान्नाः न्वाभाक देव क्या है। इंड बेब्र-सङ्ग्राह देखिलको हिनिग्छः ।। मटेड कर्डाक टबराटक रहम श्विवत्या वहीं । भेजारनाहर खुरकी निगगका जन्य उरु ।। অভূমু প্রভৃতবো ংকৌ চ করিণ্য জুভবন্গ। কৌস্কভাধা সভুদ্র-जु॰ भन्नताश्र॰ यट्डाम्ट्यः।। তन्त्र-न् गर्गो न्यूहाक्टल व्यका श्राह-রণে হরিঃ। ততো ২ ভবৎ পারি-জাতঃ সুরলোকবিভূষণ ।। পূর্য-ত্যৰ্থিনো ষোষ্ট্ৰণঃ শশ্বজুবি ষথা ভবান্। ভতশ্চাপ্সরসো জাতা निक्क्केष्टः সুবাসসः॥ রমণ্যः স গিণাণ বস্তু গতি লীলাবলোকনৈঃ । ভতশ্চাবিরভূৎ সাক্ষাৎ শ্রীরমা **७गवर्**भता ॥ त्रक्षयञ्जी मिनः कान्त्रा विषाद मोषायनी यथा। তদ্যাণ চক্ৰুঃ স্পৃহাণ দৰ্বে সসুরা-मूत यानवाः ॥ कत्भीनार्या व-रया वर्ग महिमाक्तिश्वरहज्यः। ज-স্যাঃ শ্রেষ ব্রিজগতো জনকো জনন্যা বক্ষোনিবাস মকরোৎ পরমণ বিভূতে:। 🕮: স্বাঃ প্রজাঃ

मक्करणन निजीकरणन बा हिटेंड-श्यञ जाविशामिकिकामान् ॥ वाषामी बाह्यी जन्म कर-MEALD OF PERMENANTE IN उन स्ता प्राथिति के भि प्रार्था-मदन मंद्रमाना सामाद्रभा अम् जानिकिन कर्डिकाराक्षेत्र मु क्या प्रवासिक ।। जीके शीवत O मिश्वः समूजीत्वा र ऋत्यम्यः। नायम अस्तः मुबी महाज्यन-चृवितः॥ गीजवाता महश्वकः मू गृष्णे अभिन्न अगद। जिस्त अभि छ क्नि। उन्नार निः र्तिकनः ॥ वम्ठापूर्वकान विज्ञानश्क्रि-**७३। म देव जगक्छः मानग**िक्रका র শা শাসম্ভবঃ ৷৷ মন্তব্রি ব্লিভি थाठ बाष्ट्रवंतम्गीकानाक् । ত্যালোক্যাসুরাঃ সূর্বে কলসং ठाम्**डाङ्ड** ।। निभक्तः गर्वतस् नि कलमः छत्रमा इतन्। नीयमा-(न १ मूरित खिनान् कलरम सम्छ **जिल्ला विमन्नवानमा** (प्रता হরি॰ শর্প সাম্মুর। এত সিম্মন্ত ति विक्**ः मर्दाभा**षविमीश्वतः ॥ स्यायिकान यमित्रिनाः मधात्र श-রমাজুত। ততো গৃহীদামৃত-ভাজন হরি ৰভাব ঈষৎিম-

मन्त

তশোভষা গিরা। বদাজালেকঃ क ह नाथगान्या हुछ। यस हमा निष्टक नुवा विशाः।। कार्यक् शुनक् गढी ऋष्यमाः समर-्य छि। । जार मागर के विवास त्वम् त्वम् ह शहिब् ।। त्नाकान् गृहीज्कनत्ना तक्षमभूभनक्रदेतः । प्रकान भावना मान जता म-ত্যুহরা॰ সুধা॰॥ দেবলিছ প্র-णिक्षः वर्जान् देर्परमःमणि। প্ৰবিষ্টঃ সোম মপিৰচন্দ্ৰাৰ্কা-ज्याच मृहिणः।। हत्कन कृत्रशाः রেণ জহার পিবতঃ শিরঃ। হরি छमा करका अपूर्वा धावित्वा १९७९।। भित्र खुमत्रका नीज मद्या वार् गठीकुणवा वस भः ৰণি চন্দ্ৰাকাৰভিধাবতি বৈর্ধীঃ म शीख्यारय २ मृत्क स्मरेत र्ज গৰান লোকভাৰদঃ। গশাত। শসুরেক্রাণাণ বৰাগণ জগৃত্ত হ-রিঃ।। ইতিশ্রীভাগবতে ৮ ক্ষন্ধে १। छ। २ व्यवायाः॥ भाटम-উত্তরখণ্ডে ৬৯ অব্যাযেপ্যেবং। मभू जिक्कः श्रु॰ मभू जर्कनः। इं ि ত্ৰিকাওশেৰঃ গ

ममूजकांका जी नहीं। ইতি इ-नामूधः॥ शृका। ইতি রাজ- निर्चिकेः ॥

मयुख्या खी नित्ती देखि द्या-ठिला । माकोश्मयूख्यामिनी-बत्ती । यथा। परावयः ध्यान्। वि गर्दा मरका प्रक्रयनाम् छान् भारत न प्रदेखि स्वक्रिया सम् ख्याना विकिथानिक प्रमास म मूख्यामिन खि ।।

मबुखगृङ क्री जनस्यगृङ् । देखि । बिकाश्वरणयः ॥

ममूज्रू क्र शृः खेमखामूनिः। ₹छ विकाखरमधः।।

ममूजनिका छी सनी। ₹िक ट्याह्याः॥

ममूजनवनील की व्यवज् ॥ ह्याः । ইতি মেদিনী॥

म्यू प्रकार की श्रिक्ति । अवध-वित्यका। यथा। मयू प्रयास क्ष-श्यर श्रम्धाद कल यू माहरत्र । मयू प्रका मिछा। मि नाम वाहार जिवधरेतः॥ कल मयू प्रमा कर्ष्ट् स्काति वाछाशहर जूछ निरताध-काति। जिल्लाम मानानल लास-हाति ककामम जुल्लि विद्याध-कान्ति॥ इंडि त्रांक्ष निर्माट प्रयार मयू प्रकार भूर स्मामशार प्रयार

। তৎপर्यायः। एकः २ जिन ৰুষাঃ ৩ অৰ্ণয়জমলঃ ৪। ইতি सप्रमाना । हिंची तः ए। हेंचा-वरा निम्बिक्तः ७ जनहानः ान रक्षक इस एक विकास-T-4311 4 3.44 5.44. जिल्लिक उपनित्न १२ चूटक मेरिका मानारिका के 18 नावूक्त ३६१ चेत्रा थनाः। नि-' निर्वा । चिन् विके दिने दिने दिन क्ष केश मयाकृष्टि कंग्टेब्राशना-निषक । देखि द्राक्तिक्कैः ॥ विका अंगू अर्किन के क्रिशा लिथनः भीकेमण में। कंदारिया क्षि शिक्का कर्नकर् केश शहा-ষুঃ। ইভি ভাবপ্রকাশঃ।। नम्जरम्बा जी भृषिती। देखि ত্তিকাপ্তলেयः।।

সমুজৰাত্ৰা দ্ৰী সমুজগমন।
বৰ্ষা সমুজ্ৰখাত্ৰা স্থাকার কমওলুবিধারণ। ইত্যুদ্ধাহতত্ত্ব। ।
সমুজ্ৰমান দ্ৰী পোতৃ। যাহাজ
ইতি ভাষা। বৰ্ষা পুন স্তত্ত্বব
গমনে ব্ৰিশ্ভাবে মতি গ্ৰা।
সমুজ্ৰমানে বুল্লানি মহামৌল্যানি সাধুভিঃ। রত্ত্বপারীক্টকঃ
সার্দ্ধ মান্যিক্যে বহুনি চা এবং

নিশ্চিত্য মনসা মহাসার্থ পুরঃ-मतः ॥ मनुष्याधिक लीटिकः माविषः गृह्यः निर्शिष्ठः । बैक्राशः क्यो। अटक्स तर स्वाट्या "बरोड्स्ब्स्स्रिक्स्याद्वाप्रीकृति · WOR STANDARD IN MANY विकार ।। हेक्सिडाइएक व्यक्त - बंश्रामान्यम् । निर्मा ममूखवारी कि ममूखगाभीक मथा । मबूबनाविकि नार्षः मन्दि-मः मृह्यानिर्वातः । देखि सङ्गर-अ. **श्रीवाच्या**क्षण के १५ १६ १६ १६

त्रमूजहरूको जी भृषी। देवि दला युष्ट ॥

गर्यान्य का की निष्यानिकार नवनः। कत्रकहनका रेडि छारा । उदम्याबः। मान्यकः २ माः মুক্ত ৩ শিৰী ৪ ৰশির ও সারো-क अकीय १ वर्गाकिक ४ । जमा खनाः। नव्यः। समायः । পनिजामु भिरत मध्य । विमाहि-ष्राः क्रक्तां बन्न । मीननष्रः। क्रिकाविष्काः इति तास्रामर्थ की ।। जानि हम जायूक पर्व नवन बकीव विनात ह छ। নামুক্ত ৰহুর পাকে সভিক্ত मश्रा श्रम् ॥ नाक्यक नीमन

ভেদি অকার মবিদাহি চা স্লে-মূল বাতনুষ্ঠিক নৰক নাতি-नीवन ॥ देखि जान्धकानः ॥ गम् अविद्धः भू अविष्यानमः। े हे कि र ना मुख्य में कि कि को कि गगुजविकयः। भूर मृश्वाद्यानिका। रेक्टिस्कार्याः॥ विकास मग्रमुख्य। की गया। रहिता-कनिर्वकैः॥ । नम्जा खी नहीं। नभी। इंडि व्राक्षनिर्चन्छः ॥ नम्बाउ की जारीकन । शिष्ट नमहिल्ला। अमूक्तीत्रका। সমুজান্তা ন্ত্ৰী দুরালভা ইভ্য-मतः॥ कार्णामी॥ भ्वा। इंडि विनिगा बरामः। देखि ब्राज-

मबुक

निर्घकिशा मम्खादता छी मृथिवी। रेडि किकाखरमधः ॥

ममुखादः प् नहीतः॥ स्मर् तकः॥ विविधितम् भागः। इवि ्रविभिनी।। . .

नग्जियः । जि नम्जनवसी । नभू त्रमुजीशः प्रमकातिष् नीष श्रष्टा-बाजाः निन्दिने ॥

ममुख्य की जासीजावः। ७६-भर्वग्रवः। एवयः २ (सम्बर्धः ।

ইত্যমর:।।

ममूब॰ वि कार्ज-। देखावाः॥ ममूबदः वि ममूबदः॥ खुद्धाः परः। देखिशतिः॥

ममूत्रिः जी উচ্ছातः। উৎসেধः। ইতি জটাপরः।।

ममूबकः वि शिक्त्यनाः।। शिक्ति। इकामदः।। अकुः। इकि स्म काक्यः।। ममूख्यः। देकि स्म विनी।। खेक्वकः। देकि द्या क्यः।।

শরুপজোষ ব্য আনশঃ। ইত্য শরুদীকাবা রামাশ্রমঃ।। তাল ব্যশকারাদি চ।।

দমুপেষিবান্ ত্রি গমনকর্তা। গমনবিশিষ্টঃ। সমুপপূর্ব ই ধা তোঃ কুসু প্রভ্যবেন নিশাস্কঃ।।

সম্মানৎ ত্রি সমাগুলাসমুক্ত। সমুৎপূর্ব লসধাতোঃ শভ্পত্য বেন নিশাম।।

म्बूबिषन् वि शामामिना जूमि-धननकर्छ। यथा। जूनात मः बाठ लिकाः कृतारेशः ममूबिध-न् मर्शक्तः कम्यान्। मृकेः कथक्षिमायरेष विविदेश त्राप्ताप्त जिल्ह्थमि कृष्णमान्।। ইकि समा-त्रम्बद्ध > मर्भः।। मम्हः जि शृक्षिकः। जूनः॥ म-हिलाकाणः॥ जनुशश्रुणः। इिल हिल स्त्रिशः॥ विवाहिणः । इेणि स्त्रिशः॥ त्याविकः । हेणि जहिश्याः॥ यूर्णसम्बिक्षणः मन्दाः शुः म्मारक्षाः। हेणि हिम-हिलाः॥

সমূकः पु॰ वृगवित्नवः। ইত্য-মदः॥

সমূল তি মূলেনসহর রমান ।
মূলসহিত । যথা। অধর্মে থৈধতে রাজ স্ততো ভদ্রাণি পশ্যতি
। ভতঃ সপত্মান জমতি সমূল দ্ব
বিনশ্যতি।। ইতি মহাভারতে
শান্তিপর্বণি রাজধর্মে যুধিন্তির প্রতি ভীক্ষাক্য ।।

मम्हः भू॰ जातकः। छ० भर्यायः। निवहः २ वृद्धः ० मत्माङः
व विमद्धः ৫ व्रजः ७ ट्यामः १
७वः ৮ निकदः २ व्राजः ३०
वादः ३३ मण्याङः ३२ मण्यः ३०
मम्मायः ३८ मम्मयः ३৫ ममवायः ३७ ह्यः ४१ गणः ३৮ म॰
इणिः ३२ वृषः २० निकद्यः २३
कम्मयः २६। ইख्यादः।। भूगः
२७ मम्माः २८ ज्ञानः २० ज्ञाः २৮

গটনা ২৯ কাপ ৩০ নপ্তনা ৩১ চকা ৩২। ইতি ক্লটোপরঃ ।। বিভালতে উৎকারঃ ৩৪ স ক্লবং প্রভালকী তেওকারঃ ৩৭ সংবঃ ৬৮ প্রচম্য ৩৯ জাত-৪০। ইতি শব্দস্থান্ত্রী।।

त्रमृहनी जी नवाकनी। इंडि (हम्हन्धः ॥:

সমূকः पू॰ स्काधिः। ভৎপর্বা-सः। পরিচাষ্যঃ ২ উপচাষ্যঃ ৩. । ইত্যমরঃ॥ সম্যগৃহকোগোঞ্জি ॥ নির্বিসর্গন্ডেদান ভর্বার্থঃ। ব্যা। প্রাশুদ্দ প্রবনং দেশং সমংবা পরিসমূহ। ইতি গোল্ডিলস্তাং।।

ममृक्षः क्रि ममृक्षिम्कः। ७९शर्यायः। अधिकक्षिः २। इकामद्रः॥ अधिमन्थितिभानी ७।
देखि भक्तद्रशावनी ॥

সমৃদ্ধিঃ প্রী সমাধৃদ্ধিঃ। অভি শ্বসম্পত্তিং। তৎস্থ্যায়া । এধা ২। ইত্যমরঃ।। বিহা ও। ইতি জটাধরঃ।।

সমেতঃ ত্রি সমাক্থাপ্তঃ সংযুক্তঃ যথা। নালসমেক ক্লুত
সক্তে বাক্ষতে মৃদু বেণুং। বছ
মনুতে তনুতে তনুসকত পবন

हिन्छ मिन रह्ना १। इंडि. अ-जगरमकः ।।

नद्मिकः कि मसाधर्किकः। नाम পূर्व এ१ शास्त्राः क क्षेत्रारमन निष्णकः॥

मत्मानकः की मथिलाक्षां बूमिशः व्यक्तकमयूक्तवानः। देखि दर-यहकः॥ छदभगीवः। छम-यिद २। देखामदः॥

সম্পঃ পু॰ পতনং। ইতি ভূরি। প্রবোগঃ।।

मन्भिक्तः श्री विख्यविष्कर्यः ।'
जर्भवीषः । श्रीः २ वश्रीः ७:
मन्भाम् ३। ইত্যयतः ॥ श्रीकः ६
। ইতি জটাধরः ॥ ভূতিঃ ৬ ।!
ইতি মেদিনী ॥

मन्पर्दे जी मन्पछिः। ইতাৰরः ॥ গুণোৎকর্ষः॥ হারভেদः। ইতি মেদিনী॥

नन्गम॰ क्री नमः भम्यूगः। इंडि भज्ञाना ॥

সম্পদ্মঃ পু॰ রাজা। সংগূর্ব-পদধাতো কৌণাদিক বরচ্ প্র-ভাষেন নিম্পন্তঃ। ইভি সিদ্ধান্ত-কৌমুদী ॥

मन्त्रकः जि माधिकः॥ मन्त्रिकः युक्तः। ইতি মেদিনী॥ मन्भवावः प् जान्य ॥ वृत्तः॥ উত্তরকানঃ। ইতানরঃ॥ सन्भवतः ती वृत्तः। ইতানর-উন্নানা তরতঃ॥ सन्भवाविकः ती वृत्तः। ইতা-মর্টীকাৰা সামী॥

क्रिकंट पूर (मनकः ॥ द्विटः। इणि (मिनी ॥ जर्मिशः) वशा जन्मकं प्रमुख्य विद्या क्रम्यम् स्त्रवित्र स्त्रा जन्मकं विनिद्य-खानाः न (अण् निद्य मृज्कः ॥ इणि श्रिक्यः॥

मणकी बि मणकिविष्यः। म-मणकिषमाणिन् श्रेष्ठारमन् मि णवः॥

সম্পর্কীয়ঃ ত্রি সম্পর্কগুরুঃ। স-মন্ধীয়ঃ। সম্পর্কশব্দাৎণীয় প্র-ভাষেন নিপানঃ ম

সশা জী বিদ্যুৎ। ৰথা বাবাদ্ধা তমনো বিসারি বিরহবালাতিবৃক্টেঃ শ্বরাবিষ্ঠা ভূতগণাৎ পথোতিবিষমান্ত্রটাববৃং রহপণাৎ। পদাদেন মদেন পদিলতনুং সম্পাতি সশোততঃ সম্মাতান্ত্রদা স্থা
বিজাহী বাদী ভূজাবাতক ।
ইত্যুক্টা ।

जन्माकः श्रृं आत्रपत्कः। हेछारद्वः। ग्रेशक्षाक्ष्णः।
जन्माकः वि छक्षकः। वृद्धः।
हेछियतिमे। अवः॥ जन्महेर हेडियतिमः॥
जन्माहः श्रृं हक्षः। हेडि भक्षमाना ॥

সম্পাতঃ পু॰ পতন । ইতি ভূরি-প্রবোগঃ।। পশ্লিশা গতিরিশে-বং। ইতি জটাবরং।।

সম্পাতিঃ পুং গরুতপুত্রঃ। স চ জটাবুবো ভাতা। বথা। স-শাতি নাম নামা জু চিরজীবী বিহসমঃ। ভাতা জটাবুবঃ শ্রীমান্ বিখ্যাত্বলপৌক্রবঃ।। ইতি ক্লামাননে কিছিল্যাকাণ্ডে ৫৬ সর্গঃ প্

সম্পাতিকঃ পু॰ গরুতজ্যে পুত্রঃ। ইতি শব্দালা ধা

निर्णाषकः श्रृ॰ निर्णाषकः। न-रणवर्ष्ण । जःगृर्व शवशास्त्रः र्शक अग्रह्म निर्णवः॥

সম্পাদন ক্লী বিশাদন। লং-পূৰ্ব জ্ঞান্তপদৰতে ব্ৰন্ট প্ৰত্য-যেৰ বিশাদ। ১

সন্পাদিতঃ ত্রি নিশাদিতঃ। সং-পূর্ব ক্রান্তপদধাতোঃ ক্ত প্রত্য- त्रव निशास्त्रध

मण्गीजनः ही महाक्क्षकादाः राधनः। नश्चिक्षण्याः व नहेक्षण्यस्य सिम्बाः ॥

লশ্নী জিং ন্ত্ৰী সমাক্ষান । সং পূৰ্ব পাথাজোগনিক প্ৰভাষেত্ৰ নিশ্বমা ॥

मन्पूरिः शुः सम्बन्धः है काक्यः ॥ श्रीतः हिन्दि हिन्दः ॥ अक काढीरमा कमधायको । यथा । मकामः मन्पूरि । कश्मा निका चः यन्पूरे । विना । हे कि। क्य-चा माक्का कृषा माक्का कात-नारमः माक्का मुक्तिः वातः नारमः माक्का माक्का कातः नारमः माक्का माक्का कातः । काक्या मान्या मार्था कर्णान-का काल्या माम्या कर्णान-

मण्डिकः श्रृः आधातिविष्यः। माश्रुषा के कि बाग्यः। के कि छ-त्रुष्ठः।। छ० शर्वग्रायः। मम्माकः २। के अमत्रक्षाः मम्माः ७ म-ण्डिः ३। के कि स्वत्रक्षः ।। मण्डिः कि सम्बन्धः शत्रिशृर्वः॥ नावाः वधाः श्रीत्वक्षिक वट्ट व्यव स्वाश्टर्भ परः विद्व । टट्य व्यक्त् सःश्रभः पर्था-नामाळनार्मन॥ रेडि विद्या-विद्याः ॥

विल्निः प् ताममकाणिवित्नवः च कृ मश्चवत निश्चिण ताम ता-भिनाः। यथा। 'केळवः मक्छिः श्वाकः यद्राः वक्षित्व वाकवः । मन्पूर्वा मश्चिः श्वाका ताम-काणि जिथा यणा। देखि मनी-चत्रज्ञाकतः।। चिन् । मन्पूर्व-चत्रज्ञाकतः।। चिन् । मन्पूर्व-चत्रज्ञाकतः।। चिन् । मन्पूर्व-चत्रज्ञाकतः।। चिन् । मन्पूर्व-चत्रज्ञाकाः मश्चिः चदेत्र वैवा।। नार्वे वमश्चाकतः। देखि मनीक-कार्याकतः।।

यण्या जी अकामनीवित्नसः।

ना जू गृवीकृत्वाप्तरगानिनी म
ठी पछिमखाश्चिका। यथा। जा
मित्जामस्त्रनसः आजूर्डव
याविका। स्रिकामनी हि यःगृवी

विकासगा गतिकीर्विकाश है कि

विधामिक्यः॥

সম্পূতক , বি বিশ্বিতঃ। তথা পর্যামঃ। করমঃ ২ করমঃ ৩ মিঞাঃ ৪ খচিতঃ ৫। ইতি হেক চক্রঃ। मन्तु वा अभिन्तामा ७६ नवामः। अठरि २ रेमानी ७ अधूना ६ मा अछ । इछा-नवः॥

সম্পূতিঃ পুণ অতীতক্ষীকার্থ-ডেদঃ। ইতি হেসচন্দ্রঃ।। সম্পূতিগক্তিঃ ত্রী উত্তর্গদেশকঃ। কৰা। মিথ্যা সম্প্রতিগতিশ্চ প্রভাবন্ধকান তথা। প্রাঙ্ক্যা-বা ক্ষোভ্রাঃ প্রোক্তা শহবারঃ

শান্তবেদিভিঃ ।। শ্রুণাভিদোগণ প্রতাপী যদি তং প্রতিপদ্যতে। সা তু সংপ্রতিপত্তিঃ স্যাচ্ছাত্ত্ব-বিদ্ধি রুদাস্বতা।। অভিযুক্ত্য-

७ चिर्विरशामः । अधिभागार्छ चित्रशिक्षः । छः माधार्थः । देखि वावदात्रख्यः ॥

সম্পূতিরোধক ক্লী প্রতিবন্ধক। । সংপ্রতি পূর্ব ক্লথধাতোঁ র্ক প্রত্যবেদ নিম্পন্ন।।

সন্তাতিঃ জ্রী সম্ক্থাতিঃ।।
ব্যক্তানং। সংপ্রতি পূর্ব ইন
থাতোঃ ক্তি প্রত্যেন নিশামা।।
সন্তাতা কি সংগ্রানকর্তা।
ব্যা। জ্বাবা মুদকং কার্যাং
ক্রিমু পিণ্ডঃ প্রবর্তা। চতুর্থঃ
সংপ্রদাতৈয়াং প্রবর্তা। নোপ

शमारक।। देखि शक्किल्ड का-काकिक्किं।।

मन्त्राम की गगक्शकात्त्रन मान ।। विक्रायका अर्थ का-व्रक्तिरम्बः। मह नियमामृबं े ब्लाएवर्ग क्रिंट छार हा ह নায স্থি শপ্ৰাধীকাপ্ৰতিঞ अञ्जन्भ वार्यानाः विषयः। छत हरूबी विक्किः गार । गुर्ग मधानानंत्र शक्रके मान বো লভতে সং। তথা চোক্ত॰ । मः अमानः छत्तव मा। भूजा-न् अहका या था। जीवबादमन न॰-ৰোগাৎ সামিদ লভতে বদি।। ইতি মুদ্ধবোধব্যাকরণটীকাষাণ मूर्गामानः॥ अभि छ। गणानि-जित्न शायर्थ ठलूर्या। विश्रहरू-या। यः वार्या ताधनीय छ० मः अनान वीत्रिकः ॥ गन्तानि-जित्त वकाकुभञ्चामा वामृभार्थ विश्रह हर्ज्या वः बार्या वा-ধবিতু শকাতে স তদ্ধাতৃপস্থা-প্য তাদৃশ ক্রিষায়াণ সংপ্রদান-ছ মুচ্যতে। ত্ৰাহ্মণাৰ দান ধ-नमा रेजाती प्रमात्नः यद्यक-नक खारिया २४% छिनिविस्के ह यद्य बाक्नारमः अिंत्यागिषः

নিৰূপিতত্ব বা চতুৰ্গা বোধাতে इंडि उरम्ब छव मध्यमान्द ব্ৰাহ্মণাৰি প্ৰতিযোগিক বছন-वृक्तियक ज्ञान राश हैट्डा-व॰ তत প্রতাৰাৎ शावर्शकावत्क-দকীভূত ৰত্বাধা কলৰত্বা ধ मारम मानकर्याषाः। नटिवः পশুকামন্যা ৰাগকক্লদশাযাণ চৈত্ৰঃ স্বান্ধনে পশু দদাতীত্য-পি প্ৰযোগাপতিঃ ভাদৃশ্যাগস্য টেত্ৰীৰ বৎ পশুনিষ্ঠ স্বত্ত্ব ভজ্জনক ত্যাগন্ধাদিতি বাচ্য यष्ध भाजनक किया भर्या वमन मा **जागदेमाकरम्य यष्धःरम्**शि विजीयामार्थमा। बर्यन शक्तन-क्यारग शल्बिका वृद्धश्ममा জনকৰ বিৱহাদেভৰাক্যস্যাপ্ৰ-यानबाद। आयाव गठ हेडाएको विश्रहरूठूकी। बाद्यर्थ (बाधा म-পি কৰ্মত্ব॰ ন গত্যাদিভিমে। বৃ-काय मिठक रेखारती शखानि-जित्म हजूर्या। ताधनीत्वाणि मः ষৰ্জবিত্ মিত্যাদি তুৰণো ম বি-গ্ৰহম্মতি ন তব্ৰ প্ৰসমঃ। সং-প্রদানশব্দস্ত স্বাশ্রস্থগাচরত্যা-गजनायद्या প্রতিৰোগিনোৰ **শক্ত ইতি স্বত্নপ্রতি**যোগিত্ব স্-

थनाम मिनामित्ना म थार्वागः । न ह लोगगा अवस्कृत्व अवा-शाबादः। मश्च विखाशमा धर्माम मारवा लाजः करवा जवः १ थ-বোগঃ কর্মবোগণ্ড সংপ্রতিগ্রহ वि है। रेजामि स्वामिकिटेन खमा वदर्ज्याथिषिभाषनाषि-ভি বাচাং। ত্ৰাকণাৰ ভ্যক্তাৰাং गिव भी तिय बाजनगा न जू यरमञ्जाषि मार्बजनीनश्रजीत्छ রেব তত্র প্রমাণদ্বাৎ প্রদান স্বা-মাকারণ মিভি বচনাচ্চ অভএর বিদেশক পাত্র মুদ্দিশ্য ভ্যক্ত-ধনে স্বীকার মন্তরেণৈর পাত্রস্য মরণহলে পিতৃদাযদ্বেন ভদ্ধন পুত্রাদিভি বিভজ্য গৃহতে অন্য-থা তৈ রিব উদাসীনৈ রশি তদ্ধ-नमात्रवा ऋगारम त्रिरवां भाषात्व यटथर्केनिरवारग ह প্রত্যবায়ে। न मा। नायवः मानामित वयमि-क्ष पंखरस्वन योकादा बार्ध रेषि टिन्न निका ठाके थन कन विजामि सृर्खः প্রতিগৃহীত प्रवा-मानमा कनविर्मय श्री दिज् **एक्न जाम्मकनगम्भ**खार्थ स्वर প্রতিগ্রহস্যোগ্রাগাৎ বাজনা-शानन अठिश्रदेश दिक्ता वन-

मर्करमिनामियना वार्ड मृजा ह প্রতিগ্রহস্যাপি বর্তহ कृषः (वाषनाकः। वष्णमक्याः भावदेगावाळ्नभाषां षाः । मा-সাৰ ভক্তা দদাভি ভূতকাৰ বে छन प्रपाछीजापादिश वष्डम-क्छान अछिनामयन् ममाछि मू था এर भूगाजनकड न जाम्म मान मटेनश्वार। येख् कीकात क्रनामा बद्दमा कनक खारिंग मान भनमा भाज बूमिमा धन-জ্যাগন্ত ৰ দান কিন্তুৎ সৰ্গৰাত্ৰণ প্রতিগ্রহজনাসত্ব প্রতি হেতু ভূত বৈধত্যাগগৈয়ৰ তথাদ্বাৎ উপেক। जू सप्रश्नमां बजनक স্ত্যাগো ন ভু তত্ত্ৰ স্বত্বজনকস্যা-ন্তৰ্ভাব ইতি বৈধিলৈ ৰুক্ত তন যুক্ত লাষবেন সম্বন্ধনক জ্যা-গলৈয়ৰ দদাভাৰ্থত্বাৎ। ভিলান-শৈ প্রতিষ্কৃতি তুরগ মন্মেবি-कीनीत्व रेकात्ने जनास्त्रव क्षशृर्वकः मान व्यव अछिमानः। मूना अहमपूर्वक जान त्मव वि क्ष देखि एकानि नूथा त्रव म॰ अमानवः हजूरी। वांशास्त्र। जि लाफिक्क न बुनाः नम भूताभारम दिव गाट्य छथाद्यानतनार।

वान्कार्यः नखरमाय ह बीकातः প্রতিত্তই ইতি পরেন প্রতিদন্তস্য বিক্রীত্যা বা তিল তুরগাঁদেঃ बीकारता न लाचावरः। देवजार त्राहर सामक रेखां हर्णा বাছৰাহিত নাবেৰত থাতুনা চ ভদ্যৰপ্ৰকাৰ্টকৈটিগৰাপ্যতে ভিডা তু প্রকাশত ইত্যাদাবিব विश्ववंशक्तक कर्ज्क छथा ह देन-ত্রনিষ্ঠাৰাঃ ভক্কপ্পর্কারকৈছা-या विषयणीयाम् (बामकः हेणा-कातक छव बोधः। छत्रद्य गा॰ शात्रक रेजाल भुजा गृशाविष्-তিঃ দিতীয়য়। তদৰিত কর্ত্ব চতুর্থ্যা চ ভাষবিষ্টগৃহায়িত স ৰন্ধিৰ নুপৰাপ্ততে তেন গোক-ভূকাষা ওৰুসমন্ধিগৃহাবন্থিতে वनुक्नवामावयान् हेळाकात्रक ন্তক ৰোগ । পাতৃত্বনিচা ব্যা-गात्रवाषमामिछि कालांगाः । गानिनी बाह्य बाह्य क्रखबर्टन है छि मुजान्मादंत्र रेडेबार ने न श-त्रवट्ट रेडामिनिव खत्रद गा॰ भावबर्क ईकामाविश सन्गर्न॰ बातनः मखबर ठजूर्वार्थः छथा ह ওরদত্তা গা খণ্ডেন গৃহাতি ইত্যান্তার উত্ত বাক্যার্থঃ পশ্চাৎ

मण्याः

শোধ্যবেনাদীয়ত্য গৃহীতক জ-वा मृतिभिकालः। भूखान ताथावि **भूखारवक्छ हेछारमे रेप्स्मिक ११९ शास्त्रः छिमितिस्के क** देमदव मृत्र्यमा मश्चमा एवं खिन भूजः मा दिवर निवाशयिक हैराजावः छत বোধঃ । শুরুবে সা প্রতিশূৰো कि आभृत्वाकि देकारिने त्वरंघ-নাভ্যুপগমঃ শ্ৰেভে রর্থ স্তত্ত रभा विभियारकन उत्सकत्मरण ठ मात्व **'श्वरता क्रकिना एवना चय** ख न श्वरक्षणाक मानकर्यायन गा-মভাূপগচ্ছতীভোব- ভত্ত ৰোধঃ। रहात्व श्रिकृगाजीकातमे हर्या-न्कृतनाभाष्त्रमण् (थारमार न गृगात दर्श खरमकरमाण ह रह्म (राजारम द्रथमः एका रहा-ज्निक्रवीन्क्वराशाववाम् रे जाकाङ्क खब (बावः। देहवाय ज्ञाडीडारमें शावर्थ उरक्रें (बर खब विविधन कन गःश्र-দানক চতুৰ্গা ৰোগতে তেন टेठखिववदका धक्रिंदिववनान् हे-णाकात्रक खब (बाधः। शूट्य কোপো ন যুজাতে ইতাক ক্ল-खना काशनगरनावार्थ भूख है-তাস্যান্ববো ন তু ধান্বর্থে। পটাষ

ৰততে ইত্যাদাবণি ধাৰ্ধক্ততো: সুপা পটসা বিষষিত্ব ৰোধ্যতে छव উष्मिनाच त्यर हजूर्यार्थः कथ बनाथा भटिक्सा उन्निर्मानम-**माया॰ भोगय यङ्ख इङ्गानिकः** প্রযোগ ইত্যপি বদন্তি। মিত্রায ক্ৰন্থতি ইত্যত্ৰ দ্বিকাচরণ ডোহ স্তেন মিত্রস্য দ্বিফী মাচরভীভ্যর্থঃ । শিষ্যাষ স্বাতি ইত্যত্ত অনি-ষ্টান্পেক্ষণ ৰীষা তথা চ শিষ্যা-নিষ্ট নোপেক্ষত ইতার্থঃ। পু-শ্ৰাষাসূষ্তি ইত্যত্ৰাসৃষা গুণৰেষ ন্তেন পুত্ৰদ্য গুণ দ্বেফি ইত্যা-কারক স্কত্র বোধঃ। মিত্রণ ক্রঞ্ছতি শিষা নীৰ্যাতি পুত্ৰ মসুষতীতাপি প্ৰবোগাৎ ক্ৰহাদিকৰ্মণঃ সংপ্ৰ-मानच॰ देवक्किक मिल्नीयरल । कामभूदकमा खाशांत र्जशांति ৰাত্বাচাছে তৎকৰ্মণঃ সংপ্ৰদা-নম্ব দোহাদিমাক্রস্য তথাছে তু ৰূৰ্মত্ব মেৰেভি পুনঃ কৌৰারাঃ। লোপদর্গধোস্ত **কু**ধ ক্রছোঃ ক-র্মণঃ কর্মতৈব ন তু সংপ্রদানতা অতএব শিষাস্যাভিংক্রান্ধা নি-बना जिट्छा एक जारने क्रान्यार भ कर्यान यर्छाव अभान । ইতি শ-ৰশক্তিপ্ৰকাশিকা।।

मन्त्रामः भू धक्रभवन्यद्वामक मन्भरमभा । भिक्तमम्भा हार-'बीर्शनामना इंडि उत्रहः ॥ खर्गद्रायः। आज्ञायः २। इंछा-यंत्रशा । अक्रभत्रन्भवाभाजममूभ-क्रिकेवाकिनम्हः। स्था। म॰ अमायान्द्राद्यन श्रीबाभका-नूमाद्रछः। खेजागवछजावार्थः मीशिक्ष क्षेत्रनात्त्व ॥ १७ श्रीभव्यामी ॥ जिल्ला स्था । विश्वातायरण वका नातरमा वात्र अव ह। श्रीनमधः शत्रना **छा नृहद्भि मीधंव छथा।। अ**-ক্লোভো জ্বতীর্থশ্চ জ্ঞানসিমূ र्यश्निभिः। विमानिभिक्त द्वा-**ब्हिट्या अवश्यम्**नि ख्या ।। शूक्रवाख्या बक्राणा वान-**डीर्थ**मूनि खथा। श्रीमानचीन-**जिः धीमात्राश्टरख भूति खथा** ॥ मध्यमार विशेना (व नवा एड निक्ना गड़ीः। जड़ः कलो छ विगां कि क्षोतः मध्यमाविनः ॥ श्रीमाधि कृष मनका देवकंवाः ক্ষিতিপাৰনাঃ। ইতি ঐপদ্ম-পুরাণোক ।। ।। তন্তোক-देवकव मः अनावा वथा। अनिव छेवाह। देवशानः मानदबनादनी

बिद्रादातका छ्या। त्याप्रदन-ला मरहनाति छथा वृत्रावनी छ-त्वर्मा नाकतानः नकमः मार गर्छः द्वितीव्रदेशका ब्रामानकी रविगानी निवार्कक ब्टर्यति॥ তত্যে ভাগৰতো দেবি দশ ডে-माः अकीर्खिजाः। निशी यूजी-करी टेठन वि खि मधी खटन है।। **এकम्खी मरहणानि वीव्ररेगव ख**न থৈব চ। সপ্ত পাওপতাঃ প্রোক্তা দশধা বৈক্ষৰা মতাঃ ৷৷ এতেবাং বাসন দেবি শৃণু ষত্নেন শান্তবি। বেবেফি সর্বণ সংব্যাপা ব जि-केि न देवकवः॥ देवभागनामि मिकारेका ज्विकः जार्खरेवस्वः । श्रीवाधावज्ञ अति मृग्रदन्न गाउदि ॥ ৰৈক্ষৰাচারনিরতে বিকৃতদ্বৈকশারগঃ৷ অনন্যচেতাঃ শাস্তাদা বিকৃচিন্তাপরাষণঃ ॥ वीताशावलकी प्रवि लाक्तन मृन् थिरक। मानाज्यनमणाका नाना मूगिषिकृषिकः।। गवाः जनः প্ৰীণবিতা কেলিক্কৰৰপধৃক্। भन्नीत मर्थ- थाना- क जिल्लान-কারক II অন্তঃশক্তিপরো দে-विवेषि देवकवन्तर्क्। गन्नर्वा-ठात्रनिद्रट्ठा गठाद्वकेनछ्रथात्रः

॥ मध्यमार्या स्नाम्स्नमः जर्व-निविक्रता जूदि। क्लाक्नाधाः प्यतिमि मृन् यद्यान माध्यकः ॥ বিগতাশঃ প্রমন্ত্রা বিজ্ভক্তি-भन्नावनः ॥ काविनीमक्र हनत्या वनकी जाबिदना मध्यः त्री भक्षः ज्विज्ञानः जीशादेनकनद्रावनः ॥ विक्नाक्नाञ्च द्वाः श्रीतिका वृन्मावनी भिरव । शाक्षतात्वा म-**ट्रिमानि छटेषव बीव्रदेवस्थव्** ॥ পূৰ্ব মেৰ মহেশানি কীৰ্ত্তিভঃ পর-মেশরি। রা শক্তি রিভি বিখ্যাতা य गिरः পরिकीर्ভिङः॥ छनाननी শান্তচিত্তী প্রসঙ্গান্থা বিচারগৃক্ । गर्बक ममक्रमक द्वामानकी थ-कीर्खिङः॥ इविद्यानः बरहमानि यथावष्वधात्रव। भाग मञ्जूना-শক্তো বিকৃতকো জিতেন্দ্রি रः ॥ यभाषि नियदेश ब्र्डा ज्ङाठातः পরাষণঃ। কোপযোগ কলা আ-शै পরকার্যাপরাষণঃ।। ছবিষ্যা-भी मरम्भानि मिनजिक यन्। धृक्। निवाद्धीशः मः श्रामातः मृश् यद्भन जान्थानः।। निजार्कनकः মাসক্তঃ বতুরেকপরাষণঃ। বা-হপুজাদিনিরতো নান্যভক্তঃ প্র-मब्रीः॥ आर्यामकाष्ट्रिः वकः

मार्डिक्टबनी मियार्ट्या क्रमान् हितः ॥ ज्या कागवकः क्रिक् बाट्ड मृश्रमाः क्षकः। विक्कृक्टेक् कित्रपूर्णा विक्रिकामा क्षमम-बीः॥ मार्जिगवीम्रिट्डा क्रिक् कानग्रामत्र कर्णतः। आर्था-भक्तामिट्डा क्रिक् विचा स्वर्ण-विभव्याम् रेणव्यामा क्रमान् मार्थि प्रस्तानभन्नाम् । क्रिक् मार्थि प्रस्तानभन्नाम् । क्रिक् मार्थि प्रस्तानभन्नाम् । क्रिक् मार्थि प्रस्तानभन्नाम् । क्रिक् मार्थकः भिर्य ॥ हेकि मिक्किमम् मार्थकः । स्वर्षि भिर्माः॥

সম্প্রধারণা স্ত্রী উচিতানুচিত-নিশ্চমঃ। তৎপর্য্যাযঃ। সম্ব র্থনং২। ইত্যমরঃ॥

সম্পূণদ ক্লী ভূমণ । পর্যাটন । । ইতি কেচিৎ।।

मम्पुरवागः भू निध्वनः। त्रङः
॥ अश्विजिः। मद्यकः॥ कार्यानः।
वनीकत्रगानिकर्या। देखि सिनिनीकत स्यहस्यो॥ अर्थिष्ट वि
। देखाक्रयः॥

मण्याणी प्रकारकिः॥ काष्ट्रा मधायाककः। देखि (यमिनी ॥

মন্প্রারণ ক্লী ব্যাকরণন্য সং-

ख्यावित्नका क्या। रेथ्वर न-अमात्रभाः येव शत्व अपूर्काः ৰালে ব ইক্স সংপ্ৰসাৱণসং-कानाथ। देखि निकासको-ं सूबी।। সম্পূহারঃ পু॰ বুল্ক॰। ইভাঁমরঃ য় গমম॰। ইভি মেদিনী ॥ क्तन । इंडि धत्नी ॥ मन्त्राश्वः जि वगक्थकादत्र श्रीश्रः। क्षा। कम्पूत्राकः। न शास्त्र यकतामित्वा शूर्वा भूगाथाल मना। कर्खरा नि-यगः कन्छिषु छवाणी नदत्राखरें नः ा। ইতি তিখ্যाদিতবৃ• 11 कम्याशिः सी मगर्थान्यः। यथा। जाजातभनम॰প্রাপ্তৌ পারবৈদ্য সত্রচিন্ডবেৎ। ইতি সং-किश्वमात्रवाकद्रभ ॥ गटेन्स्वः पूर् निर्यागः। विविः। • ইভি হেমচক্রঃ ।। সক্ষালঃ পু॰ মেবঃ। ইভি হেম-537: 11

সম্মঃ ত্রি বিকসিতঃ। প্রফ্লঃ।

नइ नर्गता है छि कबिकन्न प्रभः

।। मञ्जामिः । अश्रेतनंदमस्या-

शबः। मश्छि। निमद्दिर्वि।

रेखामतः भ

े हेि मूर्गामार्गः ॥ नवं क नवस्त्रों देखि कविकेश-क्रमें। क्षेत्रवर्गत्नतांशवः। ক সমবতি ধর্ন লোকঃ সংব্যা-তীভাৰা। ভালবাদি রব মিভি बाजूअमीनाः वृद्धनामि तिछा-त्भाटक। इंडि मूर्गामामः॥ नवः क्री जन। देखि क्रीवारतः॥ वात्रवकर्यन । रेजि महाक्रक भेकामन्त्रार ॥ मधर् या विक्रमामिछात्राकासः। সংশূৰ্ক ব্যথাতোঃ কিণ্ প্ৰত্য-বেন বকারলোপে ভুকাগনেন - নিশারণ। কিন্ত অনুরকোযে व्यवायवर्गं मदम्भरको २ खि ।। ত্ৰি সমন্ধ্ৰযুক্তঃ। যথা স্ময়ঃ। माजृ পিতৃ সয়का আ मखनामिताः कन्गा छवछि ৷ ইজুৰাহতত্ত্ব ৷৷ ৰম্পনবিশিষ্টঃ া সংপূৰ্ব বন্ধবাতোঃ ক্ত প্ৰত্য-ষেন নিষ্পারঃ ।। महस्रः भू॰ नम्सिः॥ न्यायः। रे छा क्रवं। मण्मर्गः। यथा। अक-नार्थ जनत्रमार्ध मन्मर्गः मः नर्ग बर्गानमां जानले न ह थ-खिँद योगान् द्यागाधात्राद्य वि-

वं विवयिखावाणिः। ইতি প্রথ-

मवार शंकिवामीयगामाध्यी ॥ म न्गर्कः। म 5 जिविषः। विषाकः ३ (बानिकः २ श्रीडिकः ७ । छिवतन स्था। जन्दका त्यम् तियाः पः सर्वकाणित् सर्वतः । ত वा वरीमि (बरमाक वक्ना কৰিক পুরা।। পিতা তাতস্ত জনকে। जनगण्डी वर्त्तर । व्यथ बाक है कननी गर्डशाना। প্রসূরিভি।। পিতামহঃ পিতৃ পিতা ভৎপিতা প্রপিতামহ:। অত উৰ্দ্ৰ জ্ঞাত্যক সমোত্ৰাঃ পরিকীর্ভিতাঃ ৷ মাতামহঃ পিতা মাজুঃ শ্রীমাভামহ এব চ। মাতা-মহ্মা জনক স্তৎপিতা বৃদ্ধপূৰ্ব कः।। शिष्ठामही शिजू माजा उर-श्रकः धिर्मिणामशी। याजामशी মাতৃমাতা মাতৃত্ব্যা চ প্ৰিত।।। প্রমাতারহীতি বিখ্যাতা প্রমাতা-गरकाविनी । वृक्षअगाणागरी क्छिया छरशिकुः कामिनी छथा।। পিত্ভাতা পিত্ৰাঃ স্যামাত্ ভা তা তু ৰাত্ৰঃ। পিতৃঃ ৰসা পিতৃ जिनी गोष्ट्र जिनी ह बामूजी।। সূন্দ তন्दः পুত्या गाताम का-शक्षभा। ध्राजाक् वीवान टेन्ट-ब भू भि जत्मा ह बर्ड ए ॥ जना

या पूरिण कमा कनी जिभितकी-ৰ্বিতাঃ। পুত্ৰগন্ধী বধু র্বেবা জা-ৰাভা দুহিতুঃ পতিঃ ৷৷ পতিঃ প্ৰিফ শ্চ ভৰ্তা চ সামী কান্তে চবৰ্ততে। পত্নীভাতা শালকণ্চ পত্নীভগি-नी ह भागिका॥ रमवद्रः वामि-নো ভ্ৰাতা ননন্দা স্বামিনঃ স্বসা। শ্বভরঃ স্বানিন স্তাতঃ শ্বশ্রন্দ স্বা-মিনঃ প্ৰসূঃ।। ভাৰ্ব্যা জাৰা প্ৰি-বা কান্তা ত্রী চ পত্নাঞ্চ বর্ততে। পদ্দীমাতা তথা শ্বশ্ৰ স্তৎপিতা শভातः गुज्ः॥ नगर्डः नामता ভূাতা সগর্ৱা ভগিনী স্মৃতা। ভ গিনীপুত্রে৷ ভাগিনেধে৷ ভু:তৃ-পুত্রণ ভ্রাতৃজঃ।। শ্যালস্ত ভগি-নীকান্তে। ভগিনীপতি ব্লেব চ। শ্যালীগতিস্ত ভূাতা চ শ্বন্তরৈ-কন্বহেত্না।। শ্বশুরম্ভ পিতা **एक्टरिया अन्यामाजुः मृत्या यूत्म** । অমদাতা ভষত্রাতা পত্নীতাত স্ত-থৈৰ চা। বিদ্যাদাতা জন্মদাতা পক্ষৈতে পিতরো নৃগা । অন্নদা-

নী।। মাতা চ অৎসপদ্ধী চ কন্যা পুত্ৰপ্ৰিষা তথা। মাতৃ শ্মা-ভাপিতৃ শ্মাতা শ্বন্ধঃ পিক্ৰোঃ স্থ-সা সুথা।। পিতৃব্যানী মাতৃলানী

गानतम् राष्ट्रकेन द्वितास्थान भूत्व । बार्गाम् वस्मार्गाम् श कर नुसारा कि देव मुन्ताः क्रा बाबान कीर्बिजाः। बना। गुल क लोहिब, स्थ्यामाक वा-श्ववाः ॥ जागित्वयम्जामान्ड পুৰুষা ৰাশ্ধৰাঃ স্থভাঃ। ভূাত্ পুতान পুতाना खि भून स्वीष्ट वः শৃতাঃ।। শুরুপুত্র ভ্রণা ভ্রাতা (भावाः भत्रमवाक्षवः। श्रक्रकना চ ভগিনী পোষ্যা ৰাতৃসমা মুনে ॥ পুরুষা চ শুরু ভ্রাতা পোষাঃ मूजिश्ववाद्ववः। भूखमा यथतः। जाुजा वसू देववाहिकः सृष्ठः ॥ কন্যাৰাশ্চ শ্বশুরে ভৎসন্বন্ধঃ পরিকীর্ত্তিতঃ। শুরুশ্চ কন্যকা-यान्त श्रुक्या वास्तवाः चुठाः ॥ পুরুষা বান্ধবাঃ স্থৃতা ইত্যত্র ভ্রা-তা সুনিধবান্ধৰ ইত্যপি কচিৎ পাঠঃ।। শুৰু: শ্বশুরুভ্রাভূণা- শু-क्रजूनाम्ह भूजिलः। वसूना यन সাৰ্দ্ধ ভন্মিত্ৰণ পরিকীর্ত্তিভ ॥ निवा मूर्थान (कार मूर्थान) तिश्र कठाद्रछ। वाष्ट्रत्वा मूः थरमा रेषवा श्रमक्ती मुच्छापः ॥ म-ৰদ্ধ জ্ৰিবিধঃ পু•সা• বিশ্ৰেক্স জ गडीडल। विमात्का वानिक

न्यत् दीविष्णं विनेषिका ॥ वी एक असम न नका गुणकाः। विक्रमाना विदेखारी। माण्युवारी म मान्यकः।। निवास्त्रीका विविशिषा निष्युक्त्राक्त्रात्वा म्नाम् हरूपं नीम गर्द निशाह कम-লোন্তব: ॥ জার শ্চোপপতি রন্ধ দু কা সংভোগকর্তরি। উপপদ্ন্যাণ नवनी ह ध्यमनी हिखरातिनी ॥ बारिज्नाम्ह बात्रम्ह नश्की श्-हिशीनया। नयस्त्री म्लाख्या ह मर्राष्ट्रण विगर्शिष्टः ॥ व्यदिषि-কে। নিন্দিতন্ত বিশ্বামিত্তেণ নি-ৰিতঃ। দুন্তাজান্ত মহন্তিত দে-मराज्या ह मक्रात्रथा व्यक्तीर्छ-জনকঃ পুংসাং যোষিতাক বিশে-বতঃ। তেজীবসাং ন দোষাৰ বি-मान्।रमा बूटम बूटम ॥ देखि बक-বৈৰৰ্ডে অন্বৰ্ধণে সম্মুক্তাভিনি-र्वता नाम ३० जन्मवः ॥ ॥॥ क्षभूद्रात्। अक्लामकानाः वद পে সূত্ৰ চৈতলেব হি। পকিণী र्वानिमक्त वाक्तरत्रं करेथव ह ॥ त्वामिनवद्या माञ्चनीय छा-शित्मदव्यू।। ज्ञिष्ठ। ज्ञाचित् त्ना विकान् निर्मा यश्चि। नगाः-लोहः नवस्त्र जू बिद्राबः। देखि

लावयः॥ । । भक्तांकान्त्रः। दः गर्यकः। अवाद्योः जगे रक्ताः वाद्यो वर्षाः। निकार्यः निकायः वाद्यो वर्षाः। निकार्यः निकायः वर्षाः । स्थावा क्ष्यक्ष्यः । क्षार्षः। क्ष्यं रक्षयः गयदः गक्ष्याकनः॥ गक्षयः गक्षयः गक्ष्याकनः॥ गक्षयः गक्षिः। व्यक्ष्यकनः। गक्ष्यक्षयः । व्यक्ष्यकनः। गक्ष्यक्षयः। व्यक्ष्यकनः। व्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यः।

मधका कि मका। हिणा है जान

সমনী ত্রি সমন্ত্রি নিউঃ। তৎপর্যায়ঃ। জনবান্হ সংযুক্ ৩।
ইজি ত্রিকাওশেষঃ।

महतः क्री, मन्यमः। ইতি जिकाश्रामकः। दोष्ठ अवित्यः
। ইতি মেদিনী।। জनं । ইত্যमतः।। সৃষ্ঠি সমর । সম্ব সর্পবে পূর্বেণ জন্ন: সমর দন্ত্যাদি।
শম্মতাবিত্যাদারে তালব্যাদি চ। ক্রীবন্ধ সমর নীর বৌদ্ধবভবিশেষধােঃ। বিশেষে পুদি দৈতালা মৎসাসা হরিণসা
চ।। ইতি দন্তাাদো রক্তমঃ। শম্বরো হরিণে দৈতো মৎসা চ সলিলে শ্যুতঃ। ইতি তালবাাদা-

विकार विकि जनका। महाद्वा महिला विकार । विकि एक महाद्वा महिला विद्यान । इतिन विद्या । प्रकारित्यका । इतिन विद्या । स्थारित्यका । देश (स्थिती । मज् कार्यास्म् । देश (स्थारका ।

সম্বরণ ক্লী আবরণ । সংপূর্ব বৃ থাতো রনট্ প্রত্যমেন নিপান। ।। ইন্দ্রিমস মন । ইতি সম্বরা-রিশকটিকামাণ ভরতঃ ।।

मदाबिः श्रु कायलवः। रेखाः
मदः॥ मदतमा देनजावित्मममा
जिद्याः। क्रीवस मद्यतः नीत दोक्रिड्डिविश्वाः। वित्मदिश्यः
क्रिड्डिविश्वाः। वित्मदिश्यः
क्रिड्डिविश्वाः। वित्मदिश्यः
क्रिड्डिविश्वाः। वित्मदिश्यः
प्रभावः ज्ञादि रुन्। रेखियः
मण्डिकः महिङ्क्ष्रक्रमाति तिष्ठि वा।
जिक्रुकः महिङ्क्ष्रक्रमाति तिष्ठि वा।
जिक्रुकः महिङ्क्ष्रक्रमाति तिष्ठि वा।
अभ्यादिकः श्रूमविनाः
अभ्यादिकः श्रूमविनाः
अभ्यादिकः श्रूमविनाः
अभ्यादिकः । ज्ञानिकः।
रेडि ज्रदः।।

সমরী দ্রী শভাবরী। ইভি শব্দ-চন্দ্রিকা॥ মুম্বিকপর্ণী। ইভ্য- मतः॥ हेम्मूतकानी हेलि था। छान सा॰ थूमकडी हेलि था। छाना निष्ठि कि हि॰ । मः कना। १० ब्राणि भवती शूर्वतमन् केश छानवाभामिः मछानामिरम्हिल सानी। हेलि छत्रछः॥

मध्म की जन। देखि भवाजी वनी॥

ষয়লঃ পু•ক্লী পাথেয়•। ভাল-ব্যাদি দ্স্যাদিশ্চ । ইত্যমর-ভ্রতৌ গ্র

সয়াক্তণ ত্রি বারস্বয়ক্টক্ষেত্রণ।
ইত্যমরং।। তালব্যশাদি চ।।
সয়াধঃ পুণ সক্টো। ভপণ। ইতি
মেদিনী।। ভষণ।। নরকবর্ম।
ইতিশব্দরত্বাবলী।।

সমাধন ক্লী সদনস্য ছারু ।।
শ্লাগ্র• ॥ ছারপালঃ । 'ইতি
মেদিনী ॥

সৰুদ্ধঃ পু॰ বুদ্ধাবভারঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। সমাগবোধা-প্রবে ত্রি।।

त्रवृष्टिः खी मरवाधनः। यथा। नार्थ मब्बू कार्थ थी। देखि मुक्तराधनाकत्रनः॥

मरबाधः पू॰ रवाधनःश रक्षाः। इिं र्यापनी ॥ नाणः। इकाः क्षभोतः ॥

मत्यावनः की जनाजवागिकमा कार्याखदा नित्याजनार्थनाछिः म्थाविशानः। वशा द्व वित्या। देखि वाक्रिनः। द्व वृक्त द्व लट्ठ द्व क्व देखामावट्डिं व् ज्ञातः। देखि मूर्गामानः॥ ज्ञातः। देखि मूर्गामानः॥ ज्ञातः। देखि मूर्गामानः॥ देखि द्यहसः॥ मयुक्तः ७। देखि द्यहसः॥ मयुक्तः ७।

महनी खी करेंगे। हैं छ महंशी दि भद्रभूक्र देश मह भवना वी॰ रशांक्ष बड़ां। करेंगे हैं छि था। छावाः। करेंगे छि हिन छि खी भूक्ष देश छा करेंगे ने नमा पिः १ में कला। बला कला निक्श पानिः १ में कला। बला किन भरा भड़िनी छान गांपिश पिश भड़िनी छान गांपिश पिश पिश भड़िनी छान गांपिश पिश कार्य कला म-खनी प्रस्तापि विछात्। है छि खन छा।

मखरः भू॰ (रुक्ः ।। উৎপতিः ।। रमनकः ।। आर्थममा आधाता-निवित्रक्षः । देनि सिमिनी ।। नक्ष्यः ।। अभाषः । देनाक्षयः ।। বর্ত্তমানকদীয়ার্হক্ষেণঃ। ইতি হেমচন্দ্রং ।। मखवाः श्रु॰ किश्यः। हेि भन्न हिस्स्का ॥ मख्यमीरय कि॥ मखादः श्रु॰ मख्छिः॥ ममृदः। हेि स्मिनी॥ मर्वश्र्वद्वः। हेि विकाशस्म्बः॥

मजावनः क्री जनकार्यविष्यः।
स्था। मजावनः यमीनः मानिजृद्दानामा निक्रत्य। यनि त्यत्या जतवक्का कथिजाः मूर् र्थः
था उत्र ॥ देकि हक्कालाकः ॥
मजावनः क्रियाम् रवागाजाशः
त नायः । देकि मृष्यत्याथवा।
कर्रवनः॥

महावना श्री उरके दिका विक मण्यदः। मण्यंकार ज्व श्रीक विद्या विद्यालार की विश्व ही छामि मृद्या गान श्रद्य निम्न सा। स्था। अवः का छाः एम छेर के छात्र भारता स्वि (श्रापः। हे छि मण्या विष्याः। हे छि (श्रापः। हे छि मण्या विश्व के स्थान मिनि की विश्व भागा धरी।। धूममर्भना ने खनः ने द्यापि वान हा तस्त महान की का सावा मिछि सम्माद्य महान की की का सावा मिछि सम्माद्य महान की की का सावा मिछि सम्माद्य स्वा विकास स्व ना स्व व ना मकः श्रमा श्राप्य स्व व ना मकः श्रमा श्रमा श्रमा श्रमा श्रमा है। সভাবনা ইতি বদন্তি। তথ্যতম্ভ ন চতুইৰ বৈতিহাৰ্থাপতিসন্তবাভাব প্ৰমাণাৎ ইতি সৃত্ত্বেথোপন্যস্য শব্দ ঐতিহানৰ্বান্তরভাবাদনুমানে হথাপতিসম্ভবাভাবানা মনপান্তর্ম্ভাবাচ্চাপ্রতিষেধ ইতি সৃত্ত্বেণ ভগবদকপাদপাদৈ নিরাক্তেণ। নিশিচত্যেতি উৎকটকোটিক সভাবনোপলক্ষণ মিতি তিথ্যাদিতত্ত্বে সার্ভভটাচার্য্য লিখনর
সম্ভাবনা শব্দস্য সংশ্যনাত্র পরত্থা সঙ্গমনীষণ। ইতি নানাপ্রত্থা সঙ্গমনীষণ। ইতি নানা-

मडाविजः बि मडावनाविभिकः।
नडवनरमानाः ॥ वहमजः। प्रथा
। व्यक्ते विं हानि ज्ञानि कथरिवाडि एवं रवामाः। मडाविङमान्। में विं स्रांतामिकितिहारक
॥ देवि ज्ञावमानिकमा वहमजमा
। देवि ज्ञावमानिकमा वहमजमा
। देवि ज्ञावमान् विश्वस्वामी ॥
मञ्जावनः क्री कथनः। व्यानामनः। यथा। क्रत्ज मञ्जावनारमव व्यक्तामाः स्मान्य करना न्याः
। वं । पर्व व्यक्तामाः करना न्याः
। वं । वर्ष भागाय करना न्याः
। वर्ष भागायः
। वर्ष भाग

সভানা জী সভাবণা সংগ্ৰক ভাষণতো ভিনাদিখাও উত্ত, ভাস্প্ৰত্যৰ নিশামা।। সভিন্ন তি সমাক্ভেদবিশিকঃ। কথা। সভিন্ন কাংসাবদেবাৰো নিব্ৰেতি বন্ধনাদৰং। কাস ইত্যু-চাতে লোকে ভালবাভো ন কীৰ্ত্তিঃ।। ইতি প্ৰাচীনকা বিকা।।

সজুং পু॰ সম্ভবতি ষঃ। সংপূর্ব ভূথাতো ডু প্রত্যবেন নিশায়ঃ া ইতি মুগ্ধবোধবদকরণ ।।

मजुर्ठः बि উৎপनः। यथा।
देखाङ् कथिङ जून मजुङ।
मानवा भूता। प्रिवी प्रवस्तीः
द्रौंखा जगळ्यहिरेडिविनी ॥
देखि प्रवीमाहाज्याः॥

সম্ভূতবিজ্ঞকঃ পূণ্ শ্রুতকেবলি সংজ্ঞকবৌদ্ধবিশেষঃ। ইতি হে-মচন্দ্রঃ।।

সভাব নিজা কর্মকরণ। ততু বিবাদপদ্বিশেষঃ। বথা। সভ্ বসমুখান নাম বিবাদপদ্ মি-দানী মভিদধাতি। সমবাবেন বৃণুক্তা লাভার্থ কর্ম কর্বভাণ। লাভালাভৌ ব্যাদ্ব্য ব্যা ग विका कुछ्छे॥ मर्द वर विक कर्य मिलिकाः कर्या है एका वर्गा मन्थितिशिक्षः मेयनारः त्वन (र विक् मी मर्डक क्षेत्र्यका ना-ভলিকবো ভূষা প্ৰাতিষিক কৰ্ম পৰ্বতে ভেষা- পাভালাভাবুগচ-यां भारती वशास्त्र (यन याव-स्तरः भगाजर्गाकार्यः इतः छतः नुगाद्वशाद्मादशा वद्या। अशा-নগুণভাবপৰ্যালোচনযাস্য ভা-शब्य यदेगादका जाभ ইত্যেব॰ बा-भवा निवना नगरबय यथा न**ः**श्च-তিপত্তো তথা ৰেদিভবোঁ। কিঞ প্রতিৰিক মনাদিন্ট প্রমাদাৎ य क नानिज्ना म जनमाहिश्ववाक রকিতাদশমাণ্শভাক্।। তেবাং मजूब क्षात्रका भरवा भवा भिन মিশ' ন ব্যবহর্তব্য নিতি প্রতি-বিশ্ব নাচরতা বলাশিত স্ননাদি-के मनन्द्रां क्या क्यार्यन कथा প্ৰদাদাৎ প্ৰজ্ঞাহীনত্বা বা বেন यज्ञाणिकः मं छ्रमणः विविद्धा क्त्रार ।- कः भून खिवा मरशा চৌর রাজাদি জনিতাৎ বাস-নাৎপণ্য পালম্বতি স তন্মাদ্রকি-ভাৰ পৰ্যাৎ দৰ্শন মণ্শণ লভতে ৷ অৰ্থ প্ৰকেপণান্তি-শ ভাগ শুৰু

न्रा श्दब्धाः कानिकः ताज ৰোশ্বাঞ্চ বিক্ৰীক রাক্যাদিতৎ ॥ इंड वर्ष्टः भगरमायगुना ह-তার্য জন্য প্রকেপণাৎ রাজনি-ब्रागिक्टिं ब्रामि व्यापि व ভিতৰ ৰূপে শুকাৰ গৃহীৰাং। पर भून वीतिक मताज न वि-ক্লেৰ মিতি রাজা প্রতিবিদ্ধ। যক্ত রাজবোগ্য নাণিক্যাদ্যপ্র-তিৰিক্স মপি তদ্ৰাৰ্ডে অনিবেদ্য লাভলোভেন বিক্রীতক্ষেত্রাজ गामियुवामाननित्रत्भकः ७६म-र्व॰ भगा॰ द्वाकाभरददमिछार्थः। विशासम् भन्नीयानः एकदाना-में भागा सुकेखन नक नवाक्कब्बिक्सी। वः भून र्विक् एकवक्तार्थः श्रेतीमानः নিহুতে শুক্তঞ্বৰ্গনাৰাপদ রতি ৰ্শ্চাস্যোদ মস্য বেভােব॰ বিবাদা-পদীভূত প্ৰাণ ক্ৰীণা তি বিক্ৰীণীতে বা তে সৰ্বে পণ্যা-केशक मधनीयाः। जिन ह ভরিকঃ স্লজ শুস্ত গৃহ্লন্ দা-शाः भवान् मम्। बाष्मग्थाि छ-विगाना विज्ञानिमञ्जल ॥ **एक हि विविधः म्ल**कः कन-क्षा एव इनक गर्थाक्षाना-

বিশ্শ ভাগা শুক্ত নৃপো হক্ষে मिञ्चित कलका मानत शिक হিত া পণ যামণ্ডরে দাপা পু-ৰুষো হৰিপণত্তৰো পাল গভল্চ বোৰিক পাদাৰ্ক বিক্তকঃ পুমা-न्।। जाअगृनीनि वानानि जार्गः দাপ্যানি সারতঃ। রিক্তভাতানি यथ किषियः भूमाः मकाणतिक्ताः ।। ইতি। শুক্তবেপ্যষ মপরে। বিশেবঃা ন ভিন্নকার্যাপণ মস্তিঃ **७इ॰** न नित्रवृत्वो न नित्नो न **मृत्छ।** न'रेङकामस्त न श्ठाव-শেষে ন শ্রোত্রিষে প্রবজিতেন यखा। इछ। छीर्यास्य श्रान मिं जिल्ला नावानि खळ्ना **उद्धि**श्रिक्छ खित्रकः म यहा छ-লোভব শুদ্ধ গৃহাতি তদা দ-मभगान् मखनीयः। तिरमा तिचा প্রতিবেশ ইতি স্ববেশাভিনুখণ স্ববেশাপার্মস্থ চোচ্যতে তত্ত खराः श्राजित्नगाः। बाक्रगाक ভে প্রাভিবেশ্যাশ্চ ত্রাক্ষণপ্রাভি-বেশ্যা স্তেষা প্ৰত বৃত্ত সম্পদ্ম। ना॰ आकाषियू विভःद मछानिय-ম্বৰে এতদেব দশপণাত্মক দখন **रिक्र का का । का किया क**र्मे के अपन ৰণিত্ৰিক্প প্ৰত্যাহ ৷ দেশান্ত:

রগতে প্রেতে ত্রব্যংকাকাক কার-बाः। काज्या ना र्दबर् छमा-भाषा देख विना नृभः।। यहा यकु बकादिना॰ मरधा यः किन्द्रिकाना-স্তুরণ গতো মৃত স্থান তদীৰ মণ্শণ नावानः भूलामगळवर्गः वाक-वाः बाज्यकीयाः बाज्जामाः জ্ঞাভয়ে ২পত্যবৰ্গব্যভিন্নিকাঃ সপিশ্বা আগতাঃ সমূষব্যব-- হারিখো যে দেশান্তরাদাগতা त्ख वा गृङ्गीयू देख विना मायांमा-ভাবে রাজা গৃহীয়াৎ ৷ বা শব্দে-न ह मारामीना॰ देवक्षिक विश्-কার দশ্যতি। পৌর্বাপর্য্য নি-यगञ्ज পत्नी मूश्वित रेगामि अ তিপাদিত এবাত্রাপি বিজ্ঞেষঃ। শিষ্য সত্ৰন্ধচারি ত্রান্ধণ নিবেখো ৰণিক্ প্ৰাপ্তিশ্চ ৰচনপ্ৰৰোজন ৷ বৰিজা যপি মধ্যে ষঃ পিওদা-नर्वनानानि मयर्थः म गृङ्गीवार । नामर्थाविरनरय भूनः मर्द वि कः मः मृखित्ना विख्का गृङ्गीरु . (खरा यं वादव क्षावर्षः नायानाः গমন প্ৰকীক্যানাগতেৰু সম মে व ब्राका गृङ्गीगा छिनन नाइ-प्तन न्थाके मूकः। **अक्ना** हिर नार पत्रन राशातामा जराधू-

बार। जाना वा श्राण नावा-· (म नक (नहर अर्व धव एक II क-मजाद ज् खरा छ का बादका-শ্বৎসন্থাৎ। অবামিক মদা-ষাদ দশ্বর্ষহিত ভতঃ।। রাজা 'छमाषानाथ कर्यााथ अव शर्मा न शैवला देखा किशा जिन য়া তাজেৰু নিৰ্লাভ মশকো श्तान कांत्रस्थ। किरहा। वश्व-কঃ ত নিৰ্লাভ নিৰ্গতলাভ লাভ ৰাচ্ছিদা ভাজেশৃঃ বহিদ্ধু-र्बाः। बन्छ मञ्च्यकाद्विनाः यत्या **जां अजातकशामिक कर्जू** यमप्रदेश श्मावत्यान वर कर्य ভাওভারবাহন তদাবব্যব প-त्रीक्नामिक कात्रवर । रेडि মিতাকরা য়

সম্ভূতঃ ত্রি সমাক্পুক্টঃ ।। সমাগ্ ভূতঃ । সমাক্প্রকারেণ ধৃতঃ । সংপূর্ব ভূধাতোঃ ক্ত প্রভাবেন নিশামঃ ।।

गङ्जिः जी मयक्रमायनः॥ म-यक्ष्यनः॥ मयाग्याद्रनः । मःभृषं खृशास्त्राः कि প্রত্যবেন निम्मा॥

मरञ्जमः भूः मिस्नू नरमाः मनमः । ইতামরः॥ फ्लूहेनः॥ यमनः . । रेकि खिनिनी स

मत्काशः भू॰ क्लाशः॥, मूज्रकः॥
क्लिमामनः। इकि समिनी॥
इर्यः। इकि मन्द्रजावनी॥
त्किनाश्रदः। इकि नन्द्रजावनी॥
त्किनाश्रदः। इकि निर्माश्रदः
॥ मृनाद्रक्तिः। इकि क्लिश्रदः
लगरः॥ कम्म नेकिन निरम्ददरक
विनामित्नी। यद्यान्द्रकादत्याः
२ ना॰ मत्काशः मनुमान्नकः॥
इकि माहिलामर्गदेव ७ श्रदिः
क्लिशः॥

সম্ভোগী পু॰ কেলিনাগরঃ। ইভি ভূরিপ্রবোগঃ।। সম্ভোগবিশি-কে জি ॥

मधुमः पू॰ खरामिकनिञ्दता।
७९ भर्यायः। मस्य १ ३ । ইত্যमद्रः॥ जार्याः ७। ইতি छतिका।। প্রবেশः ४ द्यता ६ द्यतिः ७
। ইতি বাচম্পতিः ।। ভय॰ ॥
जामद्रः। ইতি মেদিনী।। महाख्राः। मृत्यः। ইত্যজ্বপাদः॥
मद्याकः ख्री काँखनावः॥ जन्ख्राः। ইত্যজ্বপাদः॥
कानः। ইত্যজ্বপাদः॥
नद्याः। ইত্যজ্বপাদः॥
नद्याः। ইত্যজ্বপাদः॥
नद्याः। ইত্যজ্বপাদः॥
नद्याः। ইত্যজ্বপাদः॥
नद्याः। ইত্যজ্বপাদः॥
नद्याः। ইত্যজ্ব

সম্বৰ্দঃ পু॰ বুদ্ধ । ইতি কেচিৎ।।
সমাত্রঃ পু॰ সতীতনমঃ। ভৎপর্ব্যায়ঃ। ভদ্তমাত্রঃ ২। ইতি
হেমচক্রঃ।।

मन्त्रामः भू यथमावित्मवः। मथा
। वस्कृष्ण मोजवि नीय यहिष
प्रस्कृष्ण प्राज्ञित नीय यहिष
प्रस्कृष्ण प्राप्ति वानामा का का स-वान। ज्ञ गांखक्कित यथमाः
मन्त्रामा नामा श्रुवक्शिकां जि-थमात्मा नीमाधिशिक प्रामीशः।
हेि विकृश्वात्म ८ व्याप्ता थ व्याप्ता मामाक्श्रकात्म म-ख्रा । मगक्श्रकात्म म-ख्रा । मशक्श्रकात्म म-ख्रा । मशक्श्रकात्म म-ख्रा । मशक्श्रकात्म म-

শন্মানঃ পু॰ স্মাদরঃ। ষ্থা।
জন্মর্কযুক্তা যদি জন্মমাসে যস্য
ক্রবং জন্মভিথি ভবেক্ষ। ভবক্তি তদ্বৎসর মেব বাবলৈকজ্য
সন্মান সুখানি ভস্য ।। ইভি
ভিথ্যাদিভক্তং ।।

मन्यानिकः वि मयामृकः। त्रीत्रविकः। षथा। ष्यदेना द्रिणि সूदेत र्प्तवी कृषदेव त्रायूदेव खथा। म-न्यानिका नमास्मादेकः मार्केश-म॰ यूक्यूंकः॥ देकि स्मवीया-हाक्याः॥

সন্মার্ক্তকঃ পু॰ সন্মার্কনী। ইতি

म्बद्रावणी। मग्रध्याक्रिन कर्डविखि।। मञ्जाक्रिन की मण्णाधन। वथा। मञ्जाक्रिन मञ्जाक्रिः मञ्जाधन न वित्यावता। देखि द्रञ्जभागा।। मञ्जाक्रिनी जी भूगाणियार्कनमा-वती। क्यांखा देखि याँ।। देखि क खागा। छ्रभर्यायः। त्याय-नी २। देखायदः॥ छ्रमी ७ मयूर्नी ६। देखि मजद्रजावनी वर्षदी ६ वर्षनी ७। देखि एसक्रक्षः॥

সন্মিতঃ ত্রি সমানপরিমাণমস্য । সদৃশঃ। ইতিজ্ঞ টাধরঃ।। সন্মিশ্রঃ ত্রি সংবুক্তঃ। মিশ্রিতঃ । যথা। সন্মিশ্রা ষা চতুর্দ্দশ্যা অমাবাস্যা ভবেৎ ক্লচিৎ। খ-র্বিতাণ তাণ বিদৃং কেচিদুপেধ মিতি চাপরে।। ইতি তিথ্যাদি-ভব্বং।।

ममूथः वि অভিমুখ:। সুমুখ
ইভিভাষা। তৎপর্যায:। ভগ্নপৃষ্ঠ:২। ইভি ত্রিকাপ্তশেষ:।।
সন্মুখী গ্রু দর্পণ। ইভি কেচিৎ।।
সন্মুখীন: ত্রি অভিমুখণ। ইভি
হেমচন্ত্র:।।

मण्डः वि मयाक्रवार्युकः ।

नृकः। यथा। भान्रा क्रमीखट्ड निःमाद्र मात्रमार्गनः। यः

करताणि म मण्डण क्रमत्वृतः

मण्डलः प्र ज्नानिः। हेडि

रम्प्रकः प्र ज्नानिः। हेडि

रम्प्रकः भी मर्वर्णायाशिः।

जर्भगायः। অভिद्याशिः।

हेण्यतः॥ উচ্ছायः॥ साहः।

हेण्यतः॥ উচ্ছायः॥ साहः।

हेण्यतः॥

मम्ब्र्ह्टनाड्यः भू॰ वश्मापिः। इंडि द्यारुखः॥

मश्रुकेः वि जः त्याधिकः। ইত্য-यदः॥ एव यक्षिकाष्य्रभनयत्वन त्याधिक व्यक्षनात्मी । ইতি ভद्रकः॥

मत्यानः भू श्रीिलः। हर्तः। देखिभक्तप्रावनी॥

मगरू वा ममूनयः। ইতি কে-हि॰।।

मनाक् जि मठावहन्। व्यर्थनमहमनक् मन्द्रका है। है।
नज्ञ विद्रा मिनी। व्यथमक्वानिः। वया। मग्रक् मःमाः
वनः कर्यकर्त्वा मिकादिना।

निकारम्य नहा शार्थ कामाः का-माहित्वन ह ॥ नम्मक् क्षत्रमः क्षाहिता । देखि क्षांचित्वः क्षाहिता । देखि क्षांचित्वः

मगाएँ पू॰ (वस ब्राक्ट मृद्य स- इके॰ ।। (वा स्थल म्हिका । इक्लिय ।। व्यास्त माखिका । इक्लिय ।। व्याक्ट माखिका । इक्लिय ।। वाक्ट विमारका वाक्ट । (वा स्थल महिका माक्ट व्याप्त केंद्र । ति व्याप्त केंद्र । व्याप्त केंद्र । ति विष्ट म्हिका केंद्र । व्याप्त केंद्र । किंद्र माक्ट व्याप्त केंद्र । केंद्र माक्ट व्याप्त केंद्र माक्ट व्याप्त केंद्र । केंद्र माक्ट व्याप्त केंद्र माक्ट व्याप्त केंद्र माक्ट व्याप्त केंद्र । केंद्र माक्ट व्याप्त केंद्र माक्ट व्याप्त केंद्र माक्ट व्याप्त केंद्र । केंद्र माक्ट व्याप्त केंद्र माकट व्याप्त कें

यः म जन्ना हे हजूति किमाना कृत्य में जेशनः माणि । वश्व किन्द गिन्निमाश्रीया कृत्यः गजीमाञ्चना भाखि माणि । देन शन्ना हे माल्य माज्य काळ के किश् मना हे मारक्षम हेजाब न-माज्यक्रमानान्यानः । देवि कत्रका ।

সবোনিঃ পু॰ ইক্সং। ইভি কেচিৎ।। বোন্যাগ্রহ কর্তনানে স
নালেংপজিস্থানকে চ তি।।
সর॰ ক্রী সরোধরঃ। ইভি শব্দ

त्रप्रावनी ॥ कन-१ इंडि क्री-

मतः पृ वश्याः छथ्मशासः।

मत्र के वश्याः व्यान् व्यान् व्यान् ।

कि विक्रिक्ती।। वावः।। नववः
। हेडि ह्मक्रकः।। निर्वाद पृः

त्री। हेडि छत्रडिक्मिलिशाः।।

मतः जि मात्रकः। उपकः।

क्था। निर्वानी मध्या वृशा क
कृता की मत्री मद्रा वृशा क
वश्या। भिश्रेनी मद्रा वृशा क-

मद्रः क्री मद्रावदः। ইত্যमद्रः। '
जमा विषद्रभ- जजान भवाक्त
' मक्त्या जंकेवाः।। जमा कलखगाः। माद्रमः लघू ज्याप्रः वः
लाः वाष्ट्र क्यायवः। ইতি द्राजवल्यः।। मीद्रः। वथा। मद्रा।
मीद्र जजान ह। ইতি क्रजः।
ইত্যমর্কীকাৰা ভর্তঃ।।

मद्रःकाकः श्र्॰ इ॰मः। ইতি भक्त-, तत्रावनी ॥

मद्रःकाकी जी रंभी। रेजि-भन-त्रज्ञावनी॥

नत्रकः क्री भद्रावतः। देखि भक्त-त्रजावनी ॥ स्थाकामः । देखि निकास्टकोयूमगयूगामिवृद्धिः॥ मत्रकः भू क्री भीधूगांका भी धूगानः॥ देक्नीधा व्यक्ति। अगगिकः। देखि क्रिमी। वर बागितियमनः। देखामतिका-था खत्रकः ॥

সরকঃ ত্রি শতিশীলাঃ। ইভি শ-করতাবলী । সরবা দ্রী মধুমকিকা। ইভ্য-

मत्रया जी मधूमण्डिका।' ইण्डा-भक्तः॥

गत्रकः भू॰ ठल्लारः॥ शकी। इकि मःकिश्रमारत्राधानिवृक्ति॥ गत्रकः क्री नवनीकः। रहरकः वीनः। इकि हात्रावनी ॥

সর্জাঃ ত্রী ঋতুমতী ন্ত্রী। তৎ-পর্ব্যায়ঃ। মলিষ্ঠা ২। ইতি ত্রি-কাপ্তশেষঃ।

महोटः प्र क्रकनामः। गित्रगिष्ठे देखि कांकनाम देखि ह खावा। देखाकनाम देखि ह खावा। देखानद्रः॥ छ० शक्र क्रिया। यथा। ब्रह्माः क्षेत्री। स्था। ब्रह्माः क्षेत्री। महोत्रा क्षित्राहरू। प्रविद्या देखुकर्मनः। नामिका-वाकः भोगकाः वर्ष्ट्य निकामः खाजनः॥ कर्ष्ट्र देख्य क्षित्राः।

, ংরাপ্তি জু জমোর্বিভবো ভবেৎ

अवमनारका बाहेमूर्टन कंत्ररमा ई-नवृक्षका ।। उनम्राज ह तो छ।-याण शामि त्मीशाचिवक्में। शृद्ध मिछा॰ महीनाजः शार्श्वरता रेक्-मर्भन ॥ किवटम बळनाट्डा करक मृज्यनगामकः। 'करका-চার্থকবো নিতা ওলে রোগ खर खरवर ॥ **छ**र्दा क वाङ्गा-वाश्चि जीन्ज्य १र्थन करः। वाव प्रविभटवाः शारमा छ्रमनः नियक जर्दे ॥ वद्याः श्रेती-र्ष टेव्वं भज्य ब्रह्में है। ব্যজাসাচ্চ কলং চৈব ভছদেবং अज्ञायत्व ।। चन्नाः अत्राहनः রাত্রে সরটিগা প্রশাতর । নি-খনাৰ্থাৰ ভৰভি কাৰি পীড়া বি-**পर्यारको।। भञ्जाबखद्भः टे**ठवो-द्वार्ग कि कायर । भन्दन ফল সুখরুষ্ট রোছণে ২নাৎ ক न ज्व ॥ चादाइनकार्क वर्क् व्यक्षावरकु ह शाबन । **ज्दिनिकेकनः छमा ७९**कनः कार्यक अवः॥ न्यृक्तेमस्बन् यः महाः मरहन कन माबिरमं । भक्तवाधाननक वर्गामकीव-त्वाक्न ॥ वज्ञीका भूवर्ग ब्रक्कवार्त्वन विकास । भूकारम

शबाद्धारिकः सम्दर्भ ग्र्वज क्षि । अक्शवाः शक्षक्ष शका-गृक म्यावः । ल्क्न्क क्या-वकः निःकिगावाद्यक्तः।। भूजदनमाम्बशुभारेमा स्नाक-भागा ख्या क्यार । वृज्ञा रवन बद्धाव मनिष्डिः श्रीलटेद्रः श्रदेजः ॥ श्रिटेन वंगक्ति ে হোম ৰচ্চোত্তরসহসূক। गृहरमाधिक।। मृज्यक्षक्यञ्जञाः ष्ठव्याः। इति विमारुबः। ইভিজ্যোভিস্তৰ্ণ ন अत्र पूर वायुः।। (भवः। हेळ्डा-**शामिरकावः ॥ नधुमिकका । ই**छि निकाखरको मूमग्रम्था निवृखिः ॥ क्रकनामः। इंडाबद्रनिका ॥ गत्रिः भू॰ चायूः॥ त्यसः। रेजुा-वामिटकायः ॥ मत्रपूर भू क्रकलामः। हेजुानानि कि अधिक मत्रव॰ क्री त्लाइयन । ইভি इय-**ठिख**ेशा श्रमनक ॥ जर्मा जी अगार्गी। गक्रजा-**मालि रे**ष्ठि जाया । रेडायदः ॥ ত্রিবৃতা। তেউডীইভিভাক। रें ि नक्यामा॥ भयत्रक्रंत्रि बि ॥

जी महिता गराः। रेडि मत्रवी प्रविषित्री ।। अमात्रवी । ह-ত্যমন্ত্ৰীটাকাৰাণ জনতঃ ৷৷ मत्रकः भू॰ वृद्धः॥ महिष्टा। जुवन-टिंगः। देखि सिमिनी।। कार्युकः ॥ भकी। रेडि भक्तव्वावनी ॥ সরণাণ बि गया। গন্তবাণ। সং রণ শব্দাৎ ক্যে প্রত্যযেন নি-क्रीधि ।। मत्र्राः पुः (यसः॥ वायुः॥ कनः । ইভি শব্দরত্নাবলী।। বসস্তঃ।। विशिः। रेजुानामित्कायः॥ সরৎ পু॰ সূত্রণ। ইভি শব্দ-यांना ॥ मद्रिक्षः पृ जी द्रिक्षः। हेि क्विं ॥ সরন্বান্ পু॰ গৌতমমুনিঃ। পো-जगम्निभूखः। देखि भूतानः॥ **जानवाभाषिक** ॥ সরপত্রিকা স্ত্রী পদ্মপত্রণ ইতি मत्रमा जी त्राक्तभीरखनः। माह ॥ अस्त्री॥ प्रवन श्रुनी। ইভি मिलनीं। क्यांश-পদ্মীৰিশেষঃ। ভদপত্যানি ভূম-तानवः। यथा। लालान्न मह-

কোর'ন্চ চৈত্যাপতা॰ ভবৈপৰ চ।

অপত্যা সরমাধান্য গ্রেটর ভ্রাদসং । ইতি বহিশুরালে কাল্যুগীয়ব-শনামাধ্যাক্ষ । সমস্থ পু॰ বাসুং। ইতি বিকাপ্ত-শেষং।।

मन्बूरं। जी नमीविरणकः। रेजू-मह्रबृध्रीनामित्कावः। जमा जन खनाः। जत्रम् जिनाः चान् वन भूकि शक्तिकः। ই**छि द्रा**कः निर्दक्तः॥ जमा उৎপত्ति र्यथा । अब विवास विधिव क्रीवर्ष মানদাচলে। অৰুদ্ধতী ৰশিষ্ঠ-स्र (याम याभ त्या महा। ठव ষৎ পতিত ভোষ মানসাচল কন্দরে। ভরোষ সপ্তধা ভূছা यानमाहल कमद्रां ।। (इया-ट्यः कन्मद्र माटनी मत्रमाभ श् . बक् भृथक्। बखावः जन्रञः भर्यााक्ष ना वज्य नविद्यो ॥ তে बाजू श्रवत् मीता नही भू-गुठमा खुड़ा। इंडिकानिका भूत्रात्व २७ जाशायः ॥

সরলः पृ॰ तृक्वित्यकः। छ॰शर्वाकः। शीछकः २ शृष्टिकार्छ।
छ। ইতাকরঃ।। श्यतृक्वकः छ।
देखि नक्त्रक्वावनी।। शीछलाकः
८ ज्याकः ६ वटनाकः छ। देखि

, तप्रमाना ॥ भीष्ठः ने विकास क সংজ্ঞা ৮ সিক্ষা ২ দারিচগতকঃ ॐ नीवन्मः १३ मूर्जाञ्जाकः ३२। जामाः खनाः। कर्षेकः। তিক্তৰণ উক্তৰণা কৰা বাত पश्रामान त्नामा प्रमृति दन मानिष्। कार्व अकिमाञ्च । रेि ब्राक्षनिर्यक्ते।। जनाक। मत्रनः गीछतृकः मार छवा ज्राजिमाक्रकः। ज्रात्मा यश्क न्तिकः करूभाकत्रत्मा नघुः॥ विश्वाकः कर्व क्षांकि त्राग व्रक्ता हवः चृष्ठः। क्कानिव « विम वृक कामनाकि खंगाशह ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ বুদ্ধ। अ-शिः। ইতি बद्रशी ॥

मद्रमः बि উमादः॥ श्रवकः। इंडि मिनी॥

मत्रमाजवः श्रूष्ट मत्रमावृक्तत्रमः ।

होत्रणीन देखि खावा । छ०
गर्याच्या भाषमः २ श्रीवामः ७

वृक्षूणः ४ श्रीट्वच्यः ६ । देखा
मतः ॥ देखानाई ७ श्रीलिकः १।

देख क्रिंग्वतः ॥ श्रीट्वणः ४

कामः ३ वर्याच्यं ३० व्हास्त्रः ३०

क्रियास्त्रः ३२ कीत्रास्त्रयः ३७

क्रियास्त्रः ३२ कीत्रास्त्रयः ३७

क्रियास्त्रः ३२ कीत्रास्त्रयः ३७

३७। **३७ भन बङ्गावली । जा**ना खवाः शिर्वकंगरमः सकेवाः॥ मद्रन। जी बिश्रो । रेकामद्रश्ः।। नमीरजनः। देकि जुनिश्वरमागः॥ मद्रमाणः भू खेदब्रेः। हेि बाक्निर्वकिश। मत्रवाः की नकाः। देखायतः विका॥ जानसभाविक ॥ मत्रम॰ क्री मद्भावतः। रेजि भक्र-ब्रक्नावनी।। त्रमयूट्क जि। यथा। কবিতা কোমলবনিতা আ্বাতা ज्यनारिका। वनानानीवमाना मा मत्रमा बिन्नमा खदव ।। ३-ज्रास्टिः ॥ मत्रमृष्णुङ की बिक्कृर्कः। ভেকাঁটাসিজ্ ইতি ভাষা। যথা । ত্রিকন্টঃ পল্রগুপ্তশ্চ প্রেবণঃ সরসম্পুত । ইতি শব্দ চন্দ্রিকা॥ সরসা স্ত্রী শেডতিবৃতা। ইত্য-यत्रिकाराः त्रायमूक्षकः ॥ সরসিজ ক্লী পদ্ম। ইতি রাজ-निर्वक्रिः॥ महामी औ मद्रावदः। इंडा-बद्धः ॥ मत्रमोकः श्रु मात्रमशक्यो। ইতি मक्त्रज्ञावनी॥ मत्रमीऋर॰ क्वी भर्जं । रेछायदः ॥,

गत्रवरी खी बाबीस जीत्रक्षा। भा अमी । नमी ए नमी एक महा। य-नूशद्वी। देखियमिनी॥ ज्ञा-**जिम्न है। बामी। देखि दाय**-निर्वन्द्रः ॥ मायवा । इष्टि न-क्ठिका॥ वृत्तमिकिवित्नवः। हेि विकाखरंभवः॥ पूर्गा। यथा । बहाः बद्रवनीमद्मार्भाशाः সপ্ত কীর্ত্তিতাঃ। অতিপ্রাপণ দানে বা তেন দৈবী সরস্বতী।। हेि (देती पूत्रात 80 व्यक्षायः।। बादभावणा। जर्भायाः। बाकी ২ ভারতী ৩ ভাষা ৪ গীঃ ৫ বাক্ ७ वानी १। ইতাयतः॥ हेता ৮ मात्रमा २ शित्र। ३० शिता रमवी ১১ गीर्प्सवी २२ व्यक्ती २० वा-চা ১৪ বচসামীশা ১৫ বালেবী ১৬ বৰ্ণমাতৃকা ১৭। ইতি শব্দ-ब्रञ्जावनी ॥ (गीः १४ औः १२। ইতি জটাধরঃ।। বাক্যেশ্বরী ২০ षखामद्यायती २३ माय॰म-भागामवजा २२। ইछि कविकन्न-नका ॥ 🖝॥ छम्म छे९नका-मि यथा। स्रोठि क्रवाह्य व्यावि-इंज्व करेनाका धर्मामा वामना-ৰ্শতঃ। বুক্তি মূ বিষতী সাক্ষাৎ षिठीया क्यनानया।। आविई-

ভূব তৎপশ্চামুখতঃ পরসাম नहा अका रहती एकवर्ग बीना-পুন্তকগারিণী ৷৷ কোটিপুর্ণেস্ त्सारामा नदश्य**कत्या**हरा ALERS INSTRUCTION AND ACCOUNT वृतिष्ठा । त्रीत्रका सुरुवासाता नुस्ति कृति। (वर्षा क निया भाजामाः विष्याः स्वत्वी • नदा ॥ बागाधिश्रेष्ट्रावी ना क-वीना निकासका। एकमञ् यक्षण ह भाखक्शा महत्रकी।। (गाविन पूत्रकः श्वि कर्गो अ-थमणः मूचा जनाम खन की जि-क वीवशा मा ननई हा। क्रजानि रानि कर्यानि करने करन बरग यूर्ण। छानि मर्वानि इतिना जू-कीर ऋश्होक्षितः॥ अत्रवजुरे वाह। ब्रामबंखन बंधाकः ब्राटमा-লাস সমৃৎসূক। রত্নসি-হাসন-इक রত্নভূষণভূষিত ।। রাসে-শ্বর রাসকর বর রাসেশ্বরীশ্ব-त्र । त्रामाधिक जिल्लावक वरक दा-मवित्नामिन ।। द्वामामामभद्भि-**धाउ॰ द्राटम द्रा**जविश्रादिश । রাসোৎসকানা গোপীনা কা **उ॰ नाउ॰ यनाहत्र ॥ ध॰या ७॰** विश्वजुन अश्यक्ता मधी।

উৰাস সা ককামা চু রত্নসিশ্ছা-সৰে বৰে।। ইতি বাণীক্ত ছে।-A CALLAN स्या तम्यान्त्री वात्रानका ह गाविडी पूर्ण क्यी नद्वपठी ॥ थानाविश्वी शंतिकी क्रकण ११-ब्रमाबानः। शामानिक शिक्षमा ना बाबा नित्रकीर्खिना। जैसर्या-विशेष्ट्राची गर्वमन्त्रकातिनी। পরমানশ্রকা চ ना कवीः भ-বিকীৰ্ত্তিতা ম বিদ্যাধিষ্ঠাত্ৰী যা (प्रवी शक्तंप्रममा पूर्वा । (वप-শাস্ত্ৰ ৰোগৰাভা সা সাবিত্ৰী প্ৰ-कीर्डिका॥ वृक्ताविश्वादी का (मवी नर्गिक वक्षिगी। नर्बछाना-षिका नदी मा मूर्गा पूर्वमाणिनी ॥ वागाविकां वी वा त्वरी भाज-खानथान गमा। इकक्टशेखवा बाहमाह (पर्वी मन्नुक्री॥ भ-क्शामि इर एनरी मृजशहा ब्रीयक्री। ७७: मृक्तिकत्वरेनव व-र्श कन्ना ह मा।। देखि बन देवदार्ख भरुगचरा ४० व्यक्तावः

॥ ।। जगाः नुकापि वैथा। न नातायन खेवा है। आत्नो नत्रवंडी शृका श्रीहरकम मिनिर्मिका। १९ ATTENDED TO THE - थिया । मानिक्शास्त्रोति । Got Lacillani glad काटमम बागूकी कांत्रकानिनी। क চ বিজ্ঞাৰ ভক্তাৰ-পৰ্বজ্ঞা সৰ্বমা-তর । তা বুবার হিত সত্য প तिनामम्यायक् ॥ श्रीक्रकछेवात । **ज्ञ मात्रायक गांधी बन-म- छ**॰ ठजुर्जु ज । युवान जुलात गर्न-ध्वयूक्क नदमम् ॥ कात्रकः কাৰিক্লীৰাক ভাষাক কামপুরকণ । काष्टिकचर्ण नावशानीनाना कृष्ठ मीचन ॥ काट्ड काडक या॰ क्षा विन दाजू विट रूकि। ঘৰ্জো বলৰভী বাখা ন তে ভত্ত-खिरा**छ।। त्या गणा । बनरा**न् বাণি ততো ২ন্য রকিতৃ করঃ। কথ পরান্ সাধ্যতি বদি স্বয वनीश्रद्धः ।। जर्दनः वर्दनाखाइ॰ রাধা॰ বাধিভূ মক্ষমঃ। ভেজসা यदम्या ना ह बरभव ह खरवन DII आनारिशंबी लबी मा आ-পাণ্ড্যাব্ৰুঞ্চ কঃ ক্ষমঃ। প্ৰাপ-তোপি প্ৰিষঃ মত্ত্ৰ কেষা ৰাস্তিচ

कण्डन ।। 👣 जटज शक्ट देवज्रके তব ভক্ত ভবিষাতি। পতিণ্ড বী-थतः क्षा मामच मृहितः मूथः॥ গোড বোহ কাৰ কোন বান रिशा विवर्किंगा। एकमा हर-मया जाची बटलव ह अटबन है।। তৰা দাৰ্জি তব প্ৰীত্যা শশ্ব কা-व अवागाछ। श्रीवर बबदा-खूना॰ कंत्रिवां जिल्ला बरवाः ॥ প্রতিবিশেষু তে পূজাণ মছতীণ তে সুদাৰিতাঃ। মাৰদ্য শুক্লপঞ্ম্যাণ विकारित ह जुन्दरी ।। यानवा यनद्या (प्रवाः यूनीक्यां क यूयुक्वः ৷ সম্ভণ্চ যোগিনঃ সিদ্ধা নাগ शक्षर्व ताक्षमाः ॥ यष्टत्रव किन् ষান্তি কৰে কৰে লযাবধি। ভ-कियुकान्छ मन्ना टेक्टवानकादानि ষোডশ। কাম্বশাখোক্ত বিধিনা খ্যানেৰ স্তবনেৰ চ।। জিভেন্তি-ষাঃ সাযতাশ্চ ঘটে চ পুত্তকেপি চ। ক্রন্থা সুবর্ণগুটিকা॰ গন্ধচন্দন **हर्किका ।। क्वह एक अशियान्डि** कर्छ वा मिक्टब जूटक्। शठिया-স্তি চ ৰিদ্বা সঃ পূজাকালে চ পূ-किछ ॥ रेज्राकृ। भृक्षशमान णा (मरी° गर्वशृक्षिकः । खर्श्कन ठक् वेंक विकृ मरह-

श्रेताः॥ अनल काशि श्रेकं कृ मौखाः ममकामयः। गर्व (मर्वा-क समरवा नृशाक मानवान्यः॥ ৰভূব পূজিতা নিত্যা সৰ্বলোকৈঃ সরস্বতী। নারদ উবাচ। পূজা-विधान खतन धान करा मी-ক্ষিত । পুজেপিযুক্ত নৈবেদ্য · भूजाक जनमाणिकः।। वन त्वन-বিদাণ শ্ৰেষ্ঠ শ্ৰোতৃ কৌতৃহল यय। वर्काल मान्युक मन्यद कि-मिषः अञ्चिमुम्बद्रः ॥ श्रीनादायव खेबाछ। मृश्नातमं वक्ताभि काश्व-শাখোক্ত পদ্ধতি ৷ জগন্মাতুঃ সরস্বত্যাঃ পূজাবিধি সমস্বিতা ।। बोबना खक्न शक्या विनादछ मिरनिन ह। भूर्दक्ति मः यमः कृषा ভত্তাহ্নি সংযতঃ শুচিঃ॥ স্নাত্বা নিভাক্ৰিৰাং ক্লবা ঘটং সংস্থাপ্য **ङ्किण्डः। मृश्र्का मिववर्षकः** दैनदिक्यामिछि दत्रव ह।। गरनम्ब मित्नमञ्च विद्भः विक्ः निवः नि बां । मण्युका मन्स्टा शही ততো হভীক প্ৰশৃজৰে ।। ধ্যা-त्नन वंकामार्यन धाषावाक् षटि तूकः। शाका भूनः साज-लाभहादत्व भूक्र रचनुकी भ् भू (जाशयुक्कः टेनटवलाः यल्यटबटल

নিৰপিত ৷ ৰক্যামি সাংগ্ৰত किक्टि वदावीकः वदाशकः ॥ न-क्नीड॰ विक् कीत्र॰ लाजक छिन-मिए पुरुष । हेकू मिक्तून एक वर्ग शक्क छ । सभू ॥ विद्युष्ट भ-क्या ज्यानामा भक्त । चित्रधन्नशमाना गृथ्क छन्न-यामकः॥ पृष्ठ देशक्षत्र मःकादेव र्विकामक वाक्षरेका वर रमाध्-ৰচুৰানা পিউক দৃত্য ক্ত পিউক বিভিক্স্যাপি প্রকর্তা-ফলদ্য চ। পরমান্ত্রফ সমৃত शिक्षांत्रक मूर्याणय ।। नातिरक-नः छानुनकः दक्तातः मृत हार्जकः । भवत्रज्ञाकन हाक किकन व-हत्व कना ।। कानरमद्रमास्वर श-क्षेत्र एक नूम क्ष । मूर्गित एक गूलाक मुलिब एक हलान ।। नवीनश्करज्ञक नथक जुलत् মুনো সালাক শুক্লপুলাণি শুক্ল-श्रातक कृष्य ।। यम् देक अर्छो খ্যান প্রসাশ্য প্রতিসুস্পর । ত-নিবোধ মহাভাগ ভবভঞ্চনকার-**৭॰ । সরস্বতী শুরুবর্ণা সম্মিতা** म्बत्बार्ताः। कार्षितस्य थान मुके भूके श्रीमुक्कविश्रशः॥ वहिः শুকাণ্ড্কাধানাণ সন্মিতাণ সুম-

वार्ताः। त्रव्रगादस्य निर्मान ৰরভূৰণ ভূষিতাং। সৃপ্রিভাণ म्त्रगरेश्रवंक विक् निवाहिष्टिः ॥ बल्म ज्ञा ह बना। छ। म्नीख यन् बासदेवर् अव शाषा ह यू-(मन गर्कः नवा बिठकेशः ॥ मनस्र क्वष्टः भृषा अभरमञ्जवस्यूर्व । स्वयाः स्वया मिक्टल्की ख्याः निका किंगा कूटन ॥ विमात्रदस ह वर्षाट्य मर्द्याः शक्त्रीक्रितः। मर्त्वाश्रयुक्ता मूलक देविका-कोक्त्र शत्।। (वदा (वदनाश-**जित्या को एक्स॰ न मूज अ**व छ। সর্ঘতী চতুর্যান্ডা বহিজাবান্ত ध्व हा। नची मासमिक देनहव मट्या ६व-क्वशालनभ भूका ना-वायन एकम वासीकाम समानि भिः।। अन्तर्भा का क्रमेजिस्त म् गारकेटक छात्रच। क्राप्तिः **ठ खळार भूक्टत मूर्वाभर्क**ण ॥ क्ट्यगर्वनि माद्रीटका क्टमे बाक् भाष्ट्रयः यूका । ज्ञादक क करको जुरकी जन्ना रमहिका अस्त। जा-खीकार क्रत्रश्काक मंदनो कीदता-मगित्रा विकाश्रामा गरमो प्यत्तो अयान्त्राय शीमत्छ ॥ ्रिनवः क्वानमूनत्य शाख्याय म-

'मि मूना। नृक्षण बाजवदन्त्र ज्या क्षाजावनाय ह।। त्यवः भा-भिनदम देवब खब्बाकाय थीयटक। ममो भाकरोषनाय मूख्य वनि-त्र अपि।। हजूर्वक्करशदेवव वद्यः मित्का जरवम् ना । यमि गा। সিৰ্মান্ত্ৰাপি বৃহস্পতিস্যো ভ विष्याका करा मृन् विष्यास वन क्ख॰ विधिनाः भूता । विश्वदश्रे छै॰ विश्वकवः ज्भदिशक्षयाम्याम्या। ज्-ও ৰুবাচ। বন্ধন্বন্ধবিদা প্রেপ্ত उन्नक्कानियात्रमः। गर्दछ गर्द-क्रमक मर्दिण मर्दगृष्टिष्ठ ॥ मत्र-बजाक कका जो विश्वक्रवः थरल। অ্যাত্যাম মন্ত্রাণাণ সমূহ সংস্ত পর ।। ব্রেন্টোটা मृन् दरम श्रवकगामि करा गर्ब-কামদ । জ্ঞান্তিসার জ্ঞান্তিসূথ প্ৰাক্তাক্তণ ক্ৰছিপুজিত।। উক্তণ ছব্যেন গোলোকে ৰহু বৃন্দাব-ध्न बद्भा ज्ञारमश्रद्धन विज्ञूना রাসেচ-রাসমওলে ৷৷ অতীবগো-शनीयक क्षावृक्तशतः वतः। **ण**-শ্ৰেছত মন্ত্ৰণ সমূহেণ্চ স-यक्षिण।। यक्षा शतमाबुकान् वृ क्रियां अरु वृहण्यकिः। ভগবান শুক্রং সর্বদৈত্যের পুজি-

कः॥ शहनाबाद्यादाको करी-ट्या शामिटका वृतिश गायप्टना यम् देग्डव मण्या नर्वभृक्षिकः ॥ क्नारमा रगाउनः कवः भागिनिः भाक्षीतमः। अव क्यात्र संस्था नकः कालावमः चवः॥ पृत्रा त्व-সবিভাগৰ পুরাণান্য খিলানি চ। চকার শীলানাত্ত্রণ ক্লফদৈপা-ষ্মঃ বৃষ্ ।। শাভাতপশ্চ সহ-র্ত্তো বশিষ্ঠক পরাশর:। যজ্বা भेजनाम् अक् बाक्कवका महकात সং॥ স্বাশ্সে। ভরষাজ শাস্তী-का त्म्यम ख्या। देक भीवद्या वाक्रतिक प्रकृषा वर्वशृक्षिष्ठः ॥ क्षक्रमामा विद्धाल भवि दाव अक्रांगिण्डिः। वशः इन्ने कृत्रि बिया बारमभनः श्रेष्ट्ः॥ नर्वछ-क्शितिकान ग्रेशियंगाधरमम् ह । कविछान् । नर्जान् विमिरनाशः थानीर्षिकः॥ बि ही नत्रवरेका बाहा नित्रा त्व भाजू मर्बन्ध । श्री बाइन्द्रकारेव बाहा जान (व नर्वत्राक्ष्यु ॥ अ नवस्रका चाट्न-তি লোক পাতৃ নিরস্তর: ৷ ও क्षे ही जाबरेंग बाहा ताब-कुषा मनाकडू। के ही बाबानि देना बाहा नामा त्य मर्व: जावजु

ादी विद्याधिकाञ्चारका बाहा कार्क मनावज् ॥ ७ वी ही ব্ৰাক্ষা বাহেতি দস্তগণক্তি সদ।-ৰত্। औ বিভোকাকরো বঞ্জো मन करे नवाबद्वा के ही औ नाकू त्व कीवा॰ कक्ष ता औं मसासक्। 🕫 वागिकिशज्दादेवा बाहा गर्ब॰ ममावकू॥ ७ गर्ब-क्षेक्षिति । काहा व्याचा ग ওঁ সৰ্বজ্ঞাবাসি-माक्क् । देना बाहाबिशिना बक्छ ॥ ७ थे हैं बैं की मतशरू वृश क्रमदेना चारा। गरूक मञ्जा-्का श्रम मिक्क मां मनावणु ।। के ही कि का करता गरता देनचं-छा । गर्रशायक् । भडें खें कवि-जिला अवागिदेन्य कारा वा॰ वा॰ करन रहणू।। नमविकारेय बाहा क बाबदबा नन नमानक्। भें शमा असाबाजिदेसा चारा ना म्छदर श्वकृष वे नर्ननाजनानित्य या-देश्लादना जनावज् । ७ ड्री म-र्श्विडादि बारा हार्षु गरा-बर् । भें ही शूखकरामिदेना ৰাহাৰো বা॰ সদাবতু। ওঁ এছ वीक्षत्रक्शादिक बाहा या॰ मईएछ। **২বজু।। ইভি তে ক্থিত বিপ্ৰ**

नर्ववरक्षीषविध्यनः। देवः विश्व क्य नाम क्वह उन्द्रिशिक ॥ পুরা ক্ষত ধর্মবক্তাৎ পর্বতে গ্র-क्रमामत्ना छव त्मश्चायाथाए॰ श्रवक्रवा॰ न क्याहि॰ ॥ श्रक्र र-जाकी विशिव**ः वञ्चानका**त हन्य-रेनः। अवया मखनम्जृत्यो कन्ठः शाबद्ध मूथीः॥ शक्षमक्करभ-दैनव निष्म इ कवछ छटवँ । समि স্যাৎ সিদ্ধকবচো বৃহস্পতিস্থো **७.तर ॥ महावाश्वी कवी ऋक** देवत्वाकाविक्वी छदवः। भक्ताः তি সৰ্ব জেতুক কৰ্চস্য প্ৰসাদ-**७: ।। हेमक काञ्चमादथाक " कव** চ কথিত মুনে। স্কোত্ত পূজা विधानक शानक क्लान छथा।। रेि उस्र देवर्र्ड श्रह्मिश्य म त्रश्ठीकवृष्ठ ।। ।। श्रीनादाव উবাচ। সাবেশবভাষাঃ স্তব্ন॰ कारछा॰ नर्वकादनः। नरामृनि ৰ্যাক্তৰভো। বেন ভূষাৰ তা॰ शू-ता।। श्रक्रमाभाक म मूनि 🖚 वि.मा बजूब र। जमा जगाव म्यार्खा तिक्शनक भूगाक ॥ न आन छनमा मूर्वाः लागार्क म्कित्गाहदत्र । जुकीव भूषाः (भारकन करवान ह महत्र हः ॥

ग्री क गाठवामान त्वम त्वमान नी भन्नः। छेनाठ सहि नारलवी॰ ভক্তা চ স্ভিহেভবে॥ ত নিজু-का दीननात्था श्राहकान ह-কার সঃ। বুনিঃ সাদা চ ভুকাব **७किन्याश्चरक्रतः॥ माछत्रहा** উয়াচ। কুপা॰ করু জগমাত শ্বা-বেব হততৈজ্ঞা । শুরুশাপাৎ नकेन्यृष्टिः विन्याशीनशः मृत्यिष्टः ।। ब्हान पहि न्यू जि पहि वि-म्रा॰ विम्राबिदेनवर्डन श्रीविश्वंः কবিতা॰ দেহি শক্তি॰ শিখাপ্র-বোধিকাণ।। এছকভূ ছ শক্তিঞ সৎশিষ্য পুপ্রতিষ্ঠিত। প্রতিভা সৎসভাষাক বিচারক্ষতা শু-छा ।। नृशुः नर्वः देनदरमावाद मृत्री खूठ॰ भूनः भूनः। अशाक्तः ভন্মনি চ করোভি দেবতা পুনঃ।। ত্ৰন্ধ বৰণা পরমা জ্যোতীৰণা मनाखनी। मर्विषणाधित्वरी मा **कटेका वाटेगा नटमा नवः।। इसा** विना क्रगर नर्वः भभक्तीवमृछः भद्र । कामाबिएन वी वा छटेना अब्रब्देका स्त्या नयः ॥ वया विन। क्रगर गर्व मृक मृष्डदर-मना। वागविशेष्ट्रियो के छटेमा निष्ण नत्या नयः ॥ श्विष्ठक्व

बरमन् बम्बारखां निर्मा। वर्गावित्वरी का जरेका ठाक्क ब्रोटिय नत्या नकः॥ विमर्ग विक माजान् ৰদ্ধিষ্ঠান মেব চ। তদ্ধিষ্ঠাতৃদে-्वी वा छटेमा वाहेश नत्या नयः॥ वस्। विभाव मःशावाम् मःशाः कर्तुः न नकाटा। काममःशा श क्रिशा का कटेमा क्रिटेश नत्या नयः ।। व्याक्षा अक्षा या एकी वा भारिक्षे पृत्तवण । जुम निकासन क्या या ज्हेमा ब्हिट्रा न्या नवः ম স্থৃতিশক্তি জ্ঞানশক্তি বুদ্ধি-শক্তি স্বৰূপিণী। প্ৰতিভা কৰনা-. मिक्कि यी ठ छटेमा नत्या नयः ॥ সন্ৎস্মারো ত্রনাণ জ্ঞান প-প্ৰচ্ছ ষত্ৰ বৈ। কভূব জডবৎ সো-नि निकाल कर्ज यक्त या। छन्। জগাম ভগৰানাত্মা শ্ৰীকৃষ্ণ ঈশ্ব-ন্ধঃ। উবাচ সতত ত্তৌহি বাণী মিছি প্ৰজাপতে।। স চ তৃষ্টাৰ चा॰ बक्का ठाळवा भवनाचनः। চকার ছৎপ্রসাদেন তদা সিদ্ধা-स बूखवः॥ यताभावसः भश्रह ক্সান সেক বসুশ্বরা। বভূব মৃকः बर माणि मिका छ॰ कर्व वक्षाः ॥ छना चा॰ म ह जुकीव मे बन्डः কশাপাভ্রম। তত শ্চকার সিদ্ধা-

ख्रानिर्वातः जुवज्ञक्यनः ॥ वाजः পুরাণসূত্রক পপ্রচ্ছ বাদ্মিক यमा। योनीज्ञा म मचात्र पा ध्यव जनमाविकाः।। छन्। हकात निकालः चयद्वन मूनी यतः। जः প্রাণ নির্মাল জ্ঞান ভূমান্বধণস नीभक्।। भूतानमूकः अन्ता म न्यामः कृषक त्वा खुदः। द्याः मि-त्मः व ह मद्यों ह अखनर्यक शुक्रत्व भ जन्म चल्छा वद्ग आशा न कवी-**ट्या** वज्र ₹। ज्या दमविजा-भक्ष भूतावक हकात मः ॥ ए**ना** মহেন্দ্ৰঃ পঞ্জক তত্ত্বজ্ঞান পিৰা-निवः। कनः दा त्वतं मः विद्या खरेंच कान मर्ग विज् ॥ शथ-क् नंजनाज्ञक यटहळ्क वृहण्या-कि। कियाः वर्षमञ्जूक म चाः मत्यो ह शुक्रद्र ॥ छमा प्रखा बद्धः थाना मिवाः वर्षमश्युकः।

भवाः। अशानिकाक त निया देव विशेष मूनी श्रदेवः। एक घाः भवितः किछा अवर्खस्य जूदवशः विशेष प्रभानिकः। देवस्काति म् नीक्ष प्रभानिकः। देवस्कातिकः जूदेवकानि बक्ष विश्व निवानिकः ॥ अधिकृषः महम्नामाः नक्षवकुः क्लूब्धा या (बार्ष्) कियर त्छिवि वा स्वकाटमान मानकः॥ ইড়াকু বাজবদান ভকিনহা-श्वक्तातः। धानमात्र निजाशास्त्र। क्रानि ह मूल्यूक्रभा छमा दक्रा-ভিঃৰৰণা সা ভেনাস্তাপুৰা-ह छ । मूनरीता छत्रज्ञाङ्ग देवमध्य क्यामस्। बाखवदा কুত বাণীক্তোৱে বং সংযতঃ প छर। ज्यवीत्सा वरावाची वृ न्भिजित्वा अत्वर्धा बहावृर्धन्त मृत्यंवा वर्ष (जकः वना क्रांति । म शिक्क विश्वादी मूक्बिक **अतिकृतः।। १७ जन्दिक्छ अः** ক্ততিখণ্ডে সময়তাপাখানি ৪ জা शायः।। का जिल्हा नवक्नेत थनीत्मा नक्षेत्राः मृज्यक्षी भूना ब्भाव वातिष्ठिः। बनावाः तः विश्नीकः भूजस्यतः विरश्चरः ।। बाद्य माजि जिट्छ अहन अस्मी ना खिनः थिना। क्ताः भूनाइ धः कर् कार्याः जात्रच एका ९ वरः ॥ সারস্বত ,ইজুপাদানাৎ শ্রিষঃ সরস্বত্যাঃ। ভথা চ ব্যাতিঃ। नची मत्रचंडी दी जिंदर्ग मण्य-ৰিভূতি শোভাস্। উপকরণ কে **अब्र**हेना विशामू हे नी तिकि अपि-

ला ११ जना जाक गाँ गर्गी-**दिशादी नानार्थ अस्मानि ध**-निकार्यद्यम वावनात्रमः विभन्नी-ভার্থপ্রাহক বাক্রদেবসংখ ভু जधिनिकार्थएवं हे राविद्वरि नर्वमा नानार्थाना वावशात्रस क्षित्र कान्यामाविधि। छक्रवन्तर-লমিনো ৰিভূতী ভভূকাভিঃ স্ব-চভরনমিভাদী সমিসমা সিভা-खा निक्कतकभटनामाहन्यनी भूखक**ीः नकत विख्वनित्**का পাতৃ বান্দেবতা নঃ। नातःमाकःशारम्याः भामामिः जिः পृक्षिषा जजकादेना नहमा निछा नदयरेण नत्या नयः । खिन विना उत्तान विना शान **डा अर ह दाहा।। इंडि उक्**रू-त्रानीत्वन जिः भृकत्वद। यदमा-मृत्का वसूकीयश त्यावश मत्य-रेडा न मानरवदा महत्रकी॰ म॰-भूकत। कथा म (मर्ता जगवान् ज-ন্ধা লোকপিতামহঃ। ত্বা॰ পরি छाजा मिल्रिकंस्था ७ व दत्रथमा ।। राष्ट्राः नाजानि गर्दानि नृजा शीजामिकशः यद। नः विशेनः प या (पवि उथा या गत्र गिक्षाः ॥ नची त्र्यश थड़ा शुक्ति लोडी

ভূচিঃ প্ৰভা ৰূজি৷ এতাভিংগাহি তন্তি রক্তাতি শা পরস্থতি।। क्ष वर्गार्त्रागीतः आर्यस् भ रेकि विशा मिकवुना कर्म वर्थ লরস্বভীনপ্রাদি। অজিবর্ত্তনস্থ ·क्रदका म वाशामिनि छक्त । अन्न-बका मनाटनीयः याटेनन्ययः कन-श्रमशा यखायवा। वम वम वा-শাদিনি: বছিনমভেভি দশাব্দরঃ न छथा मिरस्क। जूरानश्री मः भूटि।व• वहामात्रचळकाः ॥**॥**॥ व्यमा रक्षा (वादनल्यू) तमनार्ग कर्निक बठा॰ बटेन्युः क्यूत्रक्टक-শরু পত্রান্তর্গত পঞ্চর্গ ব শলা वर्गानिवर्भ क्रमार । जानाम्बा सू लाख लाकतिमुका क्लोबीभू-রেগাৰ্ড বন্ত্রণ করিত বত্র পূজৰ-र्जू ठा॰ वर्गाश्चिका॰ स्ववर्णे॰ ॥ গৌভদীদে। কৰিকাৰা প্ৰেড किन विश्वना विनित्य एकः। ভঙঃ বোডশ কে শরেষু বিলি-শ্বেৎ বোডশ স্বরান্।। তথাই मनामत्था ह वर्गाकैकः चथाविधिन কাদি ৰাজাঃ গঞ্গঞ্বগাঃ স্যু र्माज्दकामिकाः ॥ वामि वासाः नाहि राजा न क नीटन अविना-শেং। চত্রসু চতুর্বার দিকু

ये के विविक् ह ।। का। जाना शृक्ताव्यवानः। व्याजः इन्छापि शिक्रमानासः कर्म विश्वाय दिन्न-दिन् वर्षा ह शिक्रमानी नीटन्द । वर्षा । उ रमहारेच ननः । उ व्यक्तार्थ नमः। अ व्यक्तार्थ ननः । अ विकारिक समः। अ विदेश ननः। अ हर्ष्णानमञ्जा

नगर। ७ ब्रेका नगरन ७ कि दमायदेशी सनः । बद्धा छन्भित ख नवाननाय नवः। अन्यानि नरबात्स्वन भूकरक्र । उपा ह मात्रमाछिनद्व । আধারশক্তি बात्रका भीठेनकां वर्कत्व । त्यश अला अला दिना। मी शृष्टि जुिं बूक्या विकासती ह म-त्नाका **जातीका** मन नक्यः। वर्षास्त्रनामनः मला९ मृर्खिः मृत्वम कंबरिया। । । एक क्ष बामि नामः। छन्तवान नित्रिम क कन सवत्य नवः। नावाभूति-**ज्यन्तर ७ वृह्ण्याज्य श**यरव न-बः। यूर्थ वितारे क्लारम नयः। शिव वाशी चटेवा (पवजाटेय नमः ।। 🐠।। अखं बंखनगंगः। भित्रित्र व मनः। खन्ता र्मं नमः व न मः। ठक्टम र्म नमः वा

सबक्ष नामिक्टवा वी॰ नमः पि॰ नमः। वषरमः निः नमः। शिटक याः नमः। ७८क् राः नमः। ততো ৰাত্কাৰাঃ করাসন্যাদে क्रेंबा शास्त्रका छ्या ह निवद्य १ निवेश ध्वरण मृष्नामा वनमानु खरक कियान्। नामा वर्गान् यक-जानि माज्याकानि कबरवर शा 🐠 ॥ ७८७। व्यानः। छक्रव न-কল মিশ্বে বিভূতী শুভূকান্তিঃ সচভরনমিতাসী সন্মিস্মা বি-ভাজে ৷ নিজকরক্ষতাদ্যকে-थनी भूखक्षीः मक्न विख्वनि देका शाकु वादभावका नः॥ अवः थात्रा मानदेनर नःश्वा नाधका-भन क्वार । ७७३ भीठे श्वा ক্ৰা কেশৱেৰু মধ্যে দিকু চ বে-यानि भीठमब्द्धः नाश्चा भूम-र्याकाराह्नामि शक्रभूमाञ्चल-দান পর্যান্তঃ কর্মাবিধার আবরণ পূজা॰ সধ্যাৎ। অগ্নিকোণে অ॰ कः थः शः वः छः छा। स्मार्वाय नयः १ जव॰ देन संद्रुष्ट है॰ है॰ है॰ के॰ बे॰ कः ने निव्रत्म साह। वायुका-বে উ ট ঠ ড ড চ ব জ লিখালে वर्षे। अभारत वः छः शः मः शः न के क्विताय ह । यरशा ७ भ

ক ব জ ম ও নেত্ৰভাষ বৌ-वहे। विक् अ व द त ल व व भ व न र व क क वार करवा भेश-**ज्याः बद्धाः कहे। इदः शरब**र् 'शृंबा पियू ७ वाभारिय समः। ७ मजादिव नयः। ७ विमनादेव नयः । ७ जानारेय नमः। ७ वृदेशा समः। ७ त्रमृटिका समः। ७ ८४-सारेय नमः। ७ शकारेय नमः। मनाट्यम्। बाक्यामा माठद्रः श्काः थनवानि नत्यास्कितः । क्बिह विखामीन् वक्षामी कर् करबर। ততো भूगामि विमर्क ना उ॰ कर्मा ममाभरष्य।।।।। जामा পুরশ্চরণ দশলক্ষপঃ। তথা চ া দশলক জপোনাম্র দশা লা জ্-ছ্ৰাতভঃ। পুঞ্জীকৈঃ প্ৰোভ্য-কৈ ভিলৈ স্তিমধুরান্বিভ রিভি H 🛊 🛮 यञ्जाखन्नः 🖛 समस्रदेखः छ-গৰতি বদশব্দযুগ ভতঃ। বালে-ৰি বক্সিৰাৰান্ত বাগুৱাদ্য সৰু-क्रद्भर ॥ अना शृकाश्यरगंभः। थाङः हजापि शीवनात्राञ्चः कर्य विश्वावः किमारत्रम् भरमा ह भूरवी-क तथापि भीठमकीः भीठम-न्क नारमर। उठः भूर्वाक अ-याणिनामः रूपा क्राजनगटनी

अवार । जमका । के वामुक्त णा नवश सम् खर्जनीच्या वा-रा। जभविक मधामाना वस्ते। वह का बनाविकाजा है। वा-क्षिति कनिष्ठां आ' दोग है। वाहा कब्रवन गृष्ठाच्याः करे। अवः सः भराषिक्। ७था ह निवद्धा मध्याः न्छ छिः भरेमः नर्गा का छिक् জ্ঞ- ব্যন্ত ক্ৰ- II কাৰ্য কৰে। ক্যান- I ভুভু। বছ বিলেগ ৰাল্যবস্না भीवा अपर बाक्ना गाया व चश्यनः नुवाणकनतः विषाम रखामूदेकः। विद्धानाः कमनामः नाः कष्ठनजाः वादशस्त्रजाः निमः তা বন্দে ৰাখিত্ৰবপ্ৰদা ত্ৰিনৰ-नाः लोजागा गन्भरकतीः॥ **७**२॰ शाषा यानदेनः नःश्रृका नशकाननः कर्गाद। छठः शृ-र्वाक बरम् भूकरम् । कि बुम-बद्य विटणवः। जना भूद्रण्डाव बकेनकमा। ज्या हा स्विकाः भी क्रान्यक वन्यक मनगरीः । मन्त्रान्तः कृत्राम्टकः व्टिन श्राकाशिक्षेटेका। खाद्या सामा शरता विन्ध निक खातः मत्रवधी । (अरका नःमाङस्का मङ स्था-क धनामानवः॥ ।। जनाः

भूकाअस्योगः। आकार्यकानि न्दिक नीर्यक्षर विनाम न् दंग्ड गगाविकातः वर्गाः। करका बस्ता का । खं सरवा द व-ताकु। ही नामा कराया। के सक्त ही नम नक्करनाः। खे नमः यः नमः कर्वाः। क नमः क नत्या नामिक्ट्याः हेकाः नत्याः बृत्य। नः नत्वा नित्तः। यः नत्वा धरका खरु कहाननारमे। के बाब्धालाः समः। थे वक्ती-च्याः वाहा हेणाहि। अव शहरा-क्षियू। एशा ह निवदक्ष। मजदर्गान् नारमञ्जी वाद्धरनाक्यमा। रेखादि ॥ ।। छटा थानः । नानीः भूभीनावदताक्नम्पीः ৰপুর স্পাপ্তভা চন্দ্রাদানিত मखेकाः निक्कदितः मःविज्जी मामताक। दीना मक्कन मुगाछा क्णम विकास जून छनी। विदेश ক্লাভক্তৰ বিভূমিভতনু হংসাধি-बहां उटका अवः शाका यान-देनः नःभूका मध ज्ञाभनः अधार । खुडा नी अशुकाः विधाय विभाग दिव् बद्धां ह शृंदि छ शीर्व निर्व निर्व भीक्रेमम्भ गटक्र । ७एः भून काषा जावाहनामि शक्रुणा-

श्रुणि जान भर्गाखः क्या नमाना व्याववर्ग्काः त्रशादि । स्वा मक्तिर ७ ज कृषादेव नाब्र देवा नमः। वादमः। उ शाक्रकादेव वाज्ञिता नमः। ७७: ८क्थरत्रम् अग्निटकाटन औ॰ समयात्र समः। নৈশ্ব তে ঐ শিবসে সাহা। বা-यता थे॰ निषादेव ववष्। जेनात्न के कवकाष है। यदश के त्नक बाय दोवह। किकः थैः अञ्चाव ফট। ততঃ পূৰাদিপত্তেৰু ওঁ প্ৰ व्हाटेय नयः এবং स्थ्याटेय व्यन्टेखा मदेका मृदेका वाशीयदेवा बदेका यदेखा। ७७: भवारवायु वानाा-मा। शृक्रत्र । छना ह मिरदक्षा प्रया प्रक्रिंग्डः भूजा मञ्जूष वाज्ञवी चला। श्राह्म बाज्रवी পূজ্যা বাষতঃ সৰ্বদা ওভা গ रेकु। পূर्वपमनानि अळामाः शृक्तस् भूनः। अका स्मरा শ্ৰুতি: শক্তি: শৃতি ৰাগীশ্বরী মতিঃ ৷ স্বস্তি স্কোভা সমাধ্যাতা वाकामा खम्नखद्रः। ७वरि दि-सामीन् वकामी क गुक्र वर्षे ততো ধপাদি বিসৰ্জনান্ত কৰ্ম नवां शरब । जाना श्रुवन्हत्रन कामनाकक्रभः। उथा ह। क्र-

পেৎ স্বাদ্ধলকাণি তৎসহসূ मिणाबुरेकः। नागष्टम्भकपूरेमा-ৰী জহবাৎ সাধকোত্তৰঃ।। 🖝।। मजाखन भावनायाः। वाक्रण-তে १ मृत्छ ज़्यः ध्रुव ध्रु ब्रिछि की-र्खरबंद। वांगारका यन् ताथा-তো রুদ্রসংখ্যাক্ষরো ২পরঃ ৷চ खमा भूकां मिक भू ईवद । करा-क्नामस थे॰ अक्षांजा॰ नमः । বাচম্পতে তৰ্জনীজা॰ স্বাহা। चम्रा यथायाखाः वयत्। श्रुव ष्यनामिकाजाः है। क्षुः कनि-श्रीज्याः करे। जवः समयामियू । ख्या চ निवक्ता अर्यामकानि विधिवंद वाशादेमाः भक्षाज्यः भ-देशका थानका जानीना कगटन করৈ র্জপবটী পদ্মদ্বয় পুস্তক विज्ञाना जरूरनम् वक्तमूकि। मू-**ब्हिन् इन्यथे**जा। जालाबीनिः তলোচনা স্বচভরাক্রাস্তা ভব-म्ज्वत्य ज्यादागिधित्यका मृनि-गरेन द्वारमबामानानिमः ॥ এवः भाषा गूर्ववर भूजामिकः वर्गार । जना भूतम्हत्व (यकाम्मनक-क्याः। उपा छ। क्रजनकः ज-পেৰান্ত্ৰ দশাংশং জহ্যাদ্ঘৃতৈঃ ॥ 🛊 ॥ मञ्जाखद्रः भात्रमायाः ॥

ভোষস্থ শৰন বিকোঃ সকেবল **ठ**जून् भः। अशीरनम् गृत्ा विद्र रिन्पूरणाष्यान् ज्यः। जेकामि ত্রীণি বীজানি সন্ডিঃ সারস্বতা র্থিনা ।। তোষ বকার: বিকোঃ भाषन याकातः क्विटलम् व्यकात्र **'রিছিভেন ককারেণ সহিজ্ঞ ভেন** বাগিতি সিদ্ধ বাগ্ধব বিত্যৰ্থ: । কেচিত্ত্ লকিতলকণাভযাদের বদন্তি আকারযুক্তো বকার: কে মস্তকে বলতে কেবলো খনুস্বারঃ ভদ্যুক্তেন ককারেণ সহ বর্ততে তেন का মিতি। তল। নিৰ্চল ক্ষণাযাঃ শক্তিতুলাম্বাৎ। বাক্ বাগ্ডৰ মিতি পৰ্য্যাৰঃ। বস্তুতস্তু थै॰ रू॰ रवा॰। चामभवत्र मृष्क्छा विन्नूनांम विভृविङ । विन्नूनाम नगां मुक्त विश्वीकः नम्कात्त्र ।। यक्षेत्रतमबायुक्तः विछीयः वी-क मुक्दत्र । हस्तिक ममुक्छा वक्रन रवाजरवङ्गा वरवाम-**শব**রাৰত বিশুনাদবিভূবিত । इंडि विश्वमात्रवहनाद वास्त्रव-ৰীজ মেৰা ভাগা পূজাদিক भूर्ववर । कन्नाजनगामेख विक्रिक खिछि बें रिक विरश्यः। छथा ह निरस्ता जनानि कन्नरश्त्रजी

विकटक कां जि म क्टेंजः। शा-मडा मूकारावावमाठाः नित्रिम निनिक्तामङ्गा वार्णिः देव वीर्णाणाः वर्गाकवानाः विवयकः লস পুস্তককোছহন্তী ৷ আগী-ना जूक बदकाकर अत विल्म्म शामिना महीता नाम बीहफ कि রাষ ত্রিভূবন নমিতাণ পুঙরীকে नियक्षां ।। এवः शाषां भूर्ववः भू-कांतिक क्षेत्रां । जना भूतक-রণ ত্রিলকজপঃ। তথা চ। ত্রি-লক প্রজশেষত্র জুইয়াতদশা **শতঃ।** शायरेम त्राका मन्मिरेकः मन्कृत्व रवावाहत्न।। । जय পারিজাতসরস্বতীবজাঃ। মন্ত্র-দেশপ্ৰকাশিকাৰা। । व চ প্ৰণব राज्यभा मन्त्र्विष्ठ हकात मकात् ঔকান্ধ বিন্দুৰ্ভঃ সরস্বতী ডেন্ডা মতিক। অসাপুজা। প্রাতঃক্ত্যা-कि शीठवन्न । विनामा अयापि-नाम क्या । भित्रमि कश्चर त्व नयः। बृद्ध जृक्षू शृक्षरम नयः । হাদি শারিজাতসরস্বতা দেব-তাবৈ নমঃ। ভভো মাতৃকোক कताकनगारनी कर्याए। मुर्कि का यथा निक कर्न नामाभूटेंबर জিহ্না বিশ্ব পাবুৰু একাদশাকর

नामः। ততে। द्वाः व्यक्षेषाः नम देणामिना कदाक्रनातमे क् वंग्राः। व्यनाद मर्वः नृवंदः । क् क्लिग्रार्किमः दिणावाद्यः मन्त्रदः अमाना देण्यका वाद्यवः वीक मा-नित्थः। जाद्यं शत्रका स्मृति मः

क्रु यद्वविद्या नत्रवरेण क् पट्डाय॰ ऋजार्टना बन् त्रीतिङः । थानमाद्य। जामा छ थान म ক্তিৰধাস স্বাধাক ভূবো ভবতি চ नत्रवर्गी (अञ्चा । नगर् । मन् त्रव মীশ সংখ্য বৰ্ণঃ সংগ্ৰোক্তে। ভজ-यानः भातिकारः।। मकिना यूर्छि শ্ববিঃ প্রোক্তো গাঘত্রীক্তৃপ স্থান্তি-ত। পারিজাতে বরী বাণী দেবতা পরিকীর্তিতা ৷৷ তৃতীয়ক দিতীয ক্ষবীজ শক্তী চ ভারকণা, কীল ক পরমেশানি সহাসারস্বতপ্রদ ॥ यज्मी चयत्रम जिल्ला बोटलना ना-नि विनारमधा ७८७। शानः। হংসাৰতা হর হলিও হারেশু জ ন্দাবদাভা ৰাণী সন্দল্মিতভরমুখী योनिवदम्भूद्रमा। विमा वी वाग्जनस्रोकनुका नीसंस्डा खञ्चाखङ्। खरम्बिम्ब्था स्टर **जात्रजी मार्थ।। जमा भृजामिक**॰ **जूर्विटिककामनाकतीवर । जून**

শ্যরণত্ত ভাদশালকজপঃ ৷ সিত-शरेषां नीगहन्गरेक वी जुरुशाय ৰাদশসহস্ মিভি। ইভি তন্ত্ৰ-मातः॥ ।। ।। ।। निर्वित्मयमा भर्यायः । क्षकममूख्या २ ब्राक्-প্রদাত বন্ধসূতা ৪ ভারতী ৫ বেদাগ্রণীঃ ৬ পয়েফিজাভা ৭ याबीफ विभावा > अधिवा > 1 छळ्न छगाः। यापूषः। शृ<u>खकः।</u> সর্বরুজাপহত্ব। রুচ্যত্ব। দীপন-ष् । भथाषः। समहकाश्विकत्रषः। वयूषकः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।।।। म। जू मिनल्डिम मखनामी यथ।। পুৰুৱে পিতামহযজ্ঞে আছ্তা সু-প্রভা ১ বৈনিষারণ্যে সত্রধাজি-তি খবিতি রাহ্তা কাঞ্নাকী १ गयरमर्ग भयताक्रयरख्य था-

বিশালা ৩ উত্তরকোশলাষাণ উদ্দালকমুনিষজ্ঞে সমাছুতা মনোরমা ৪ ঋষভনীপে
লক্ষলেত্ত্বে লক্ষরাজ্ঞ্যজ্ঞে সমাছুতা ওষবতী ৫ গলানারে দক্ষপ্রজাগভিবজ্ঞে সমান্তা সুরেণুঃ
৯ হিমালমগর্জে জন্মল পা তত্ত্ব
সপ্তসরন্ধতাঃ সমাগভাঃ। অতএব তৎ তীর্থণ সপ্তসারন্ধত নামা

খাতে। ইতি মহাভারতে শব্য-भई॥।।। जमा छेदभि उंक পত্নীত্ব্য কারণক বথা। নারাবণ উবাচ। সরস্বতী সা বৈশ্বতে স্বৰণ नात्रायुगाखिटक । शक्रामाटनन क्लया क्लहान्तात्रक मित्र ॥ পুণাদা পুণাজননী পুণাভীর্থ স্ব-किशी। भूगविक निरंपका ह व्हिजिः भूगावजाः मूटन ॥ जभः ষিনা তপোৰপা তপদ্যাকরৰ-পিণী। ক্লভপাপেশ্ব দাহাৰ স্বল-पशियक्रिणी॥ खाटन मद्रवृती তোবে मध रेव स्थानरेव जुवि। তেষা হিভিশ্চ বৈঙ্গতে সুচিরণ হরিসংসদি॥ ভারতে রুতপাপী চ त्रात्रा ज्वावनीनया। सूहारंज সৰ্বপাপেভ্যো বিক্লুলোকে বদে-চির ।। চাতুর্মান্যা পৌর্বা-मा। अकवायाः मिनकत्य। वा-**जीभार**क ह अश्रव श्नामिन् भू-श्रावितमि ह ॥ जान्यस्य दः ন্নাভি হেলবা একবাপি বা। সা-बणाः नजरण म्मः देवनर्थं न इ-त्र त्रिं।। मत्रवर्की मन् एक माम (गक्क द्या बहार । बहार्का क वीखक न जरकाज नन्नवः।। নিত্য সরস্বতীতোষে বং স্নাতি. म् अदबबतः। न गर्रवानः इक्र পুন রেব স মানর:।। ইত্যেব ক-থিত কিঞ্চিৎ ভারতী গুণকীর্ত্তন ा जूथकः शूनामः जातः किः जूरः थांकृ विक्ति॥ •ा। नात्र**प** छै-वाह। कथः मत्रश्राही (मवी भना-শাংপন ভারতে ৷ কল্বা কল্ছে-देनव वजूव भूगामा महिए॥ ना-त्रावन खेवाछ। भृभू नात्रम वक्गामि কথা মেতা॰ পুদ্বাত্তনী॰। বস্যাঃ ख्रनगार्खन नर्ननार्नः थम्हा-তে।। লমী সরবঁতী গদা ভিস্নো ভার্ব্যা হরে রপি। প্রেয়া সমা स्था सिकेसि नस्य रहिनिया ॥ ठकात देनकना शका विद्या र्षू थिनदीकाः। मिक्का ह मका-मा ह जकहीक पूनः भूनः ॥ विज् कराम काकु नित्रीका ह क्रभ॰ मूहा। क्रभ॰ ठकात ए नकी दूर्नव मद्रक्षिश वाश्या-ৰাস তা পদ্ম সন্বপা চ সন্মি-छ।। ज्याशक्रिकी हु मा बानी न ह भारत बज्दन्त । ज्याह शका **पर्वातः तकामा तक्ता**ामा । কম্পিতা কোপবেগেন শশ্বৎ **अ**क्षुविष्ठाधवा।। मतक्षुवाहः। সৰ্বত্ৰ সমতাবৃদ্ধিঃ সম্ভৰ্তুঃ কা-

मिनी शिक्ष । विशिष्ठ में विशेष्ट में विभव्नी विश्व । विश्व हो। व्यक्ति में विभव्नी विश्व । विश्व विश्व । विश्व विश्व । विश्व विश्व विश्व विश्व । विश्व विश्

जा॰ (कालक पूर्ण । यनका म मयोदगाँग श्रीक्षणांम विशः म जा॰ ॥ गट्य नाम्माविश्वाण्ट्य वी निर्जय॰ क्रमा। वाणिविश्वाण्ट्य वी मा वाका॰ श्रीक्षणपुष्ण मा। ट्रि निर् लंडक ट्रिम्मादम यामिगर्य॰ क द्रापि कि॰ । अधिक॰ यामिट्रमा जागा॰ विद्धालिक मिक्सि ॥ मामपूर्ण कित्रगामि छ्यामा इति-मिस्सी। कि॰ कित्रगाणि एक का स्था मदेसव का ख्याला छ। हैट्या व मुक्ना गन्नामाः दिन्न॰ श्रीक्रीक्र् म्माछा। वात्रगामाम छा॰ श्रमा

मधारमण विका नकी।। ननान বাণী ভা॰ সন্মা॰ মহন্বলয়ভী সভী । वृक्षका मतिकाभा ভविद्यानि न में भगः॥ अर्जीवज्ञाक्षणी मृ-ক্টাকোপপ্রস্কৃরিতাধরা। উবাচ गना ७। ॰ दमरी ॰ नम्राक्ष त्रक्रती -हेना॥ गटकाराहा च मूच् मूख म-হোগ্রাঞ্চ পদ্মে কিংমে করিবাতি विश्वास्य वागिष्ठिं। वी प्रवीयः कनर्थिया॥ ইত্যেব मुद्धा मा मिवी बारेगा भागा ममार्विछि। সরিৎস্বৰূপা ভবতু সা ষা ছাঞ্চ শশাপ হ ৷৷ অধোনত্যি সা প্রধা-जू मिंख बरें बन भामिनः। करनी ভেৰাক পাগ ছ লভিষ্যসি ন मः भा है छातः वहनः व्या তা শশাস সরস্বতী। ৰাস্যসি মহী পাপিপাপ লভি-ষ্যসি ৷৷ এতশ্মিষম্ভরে তত্ত্র ভগ-বানাজগাম হ। চতু জু ক ক্তু ভিশ্চ পাৰ্ম দৈশ্চ চতুৰ্ জৈ: ॥ मन्यजी॰ करत वृषा वामयामाम वक्नि। (वाधवायाम नर्बछः म-र्बळान- भूताजन-॥ श्रीनाताष् উৰাচ। লব্দি দ্ব কলবা গচ্ছ ধৰ্ম-४क गृह • **७८७। ज**रवानिगखना रवादनी छना कना। अविदानि ।।

उदेवव देनवदमादवन वृक्ष्यकः म जियावि। सव भनाग्रहेनाव भ अहु क्रमा कामिनी।। जुड़ा शन्हा-क्र बश्यकी छविद्यामि व मन्बरः। देवलाक्ष्मावनी नाम्ना जूनमीजि চ ভারতে।। কলবা চ সরিদ্ভূদা শীয়ু গচ্ছ বরাননে। ভারতে ভারতীশাপাৎ নামা পদাবতী खन्।। शक्त वात्रामि नन्धां वन-শেন বিশ্বপাবনী। ভারত ভা ক্লভীশাপাৎ পাগদাহায পাণি-না।। ভগীরথদা তপদা তেন नीका मृष्कतार। नामा जाभी-व्यी भृषा ভবিষ্যमि बहीखला।। নদ শ্সা সমুজ্যা জায়া ভব ম बाख्या। यद कनाः भना छटेमार नाख्यां मृत्यश्रि ॥ ॥ ग শাশাগে ন কল্যা ভারত গচ্ছ ভারতি। কলহ্স্য কল ভুঙ্ক সপত্নীভ্যা॰ সহাচ্যুতে॥ স্বৰঞ্চ जिक्रमनन जिक्का कामिनी छव । াঙ্গাৰ মাতু শিবস্থান নত্ত পদ্মৈব তিইছু।। শাস্তা চ ক্রোধরহিতা মন্তক্তা সন্ত্ৰাপিণী। মহাসাধী बहाजागा ब्राचीना वर्षातावी ॥ यमः म कल्या गर्वा धर्मिश्रेष्ण भ-ক্তিৰতাঃ৷ শাস্তৰপাংসশীলাশ্চ

श्री वित्यं वृ स्वाविष्यः ॥ कित्रा ভাষ্যা ব্রিশালাশ্চ ত্রেষা ভূত্যা-क वास्तवाः। अव व विषिक्ताः क न स्ट्रिक सहन्यानाः।। शक् গঙ্গে শিৱস্থানং বন্ধস্থানং সর-चरी। चन छित्रेष्ट् समादर म्-नीनो कमनान्य ॥ हेजुङ्ग জগড়া নাথে বিব্ররাশ্চ নারদ ा अञ्चित्र क्रम्बर् (प्रवाः भगावि-ল্য পরস্পার ।। তাশ্চ সর্বাঃ স यात्नाम जल्मतानूः सनीयतः। কম্পিতাঃ সাঞ্চনেত্রাশ্চ শোকে-न ह छद्यन है।। यत्रकुम्बाहा विकादः एक ए या माथ मुखाया क्रवादमाध्यक्ष मध्यामिया शति-ভাক্তা কৰে। জীবন্তি কা ব্ৰিয়: ।। (मञ्जागः कतियानि तारगन ভারতে প্রবণ। অত্যচ্ছিতে। নি-পতন প্রাপ্ত বহুতি নিশ্চিত।।। গকোবাচ। অহ॰কেনাপরাধেন प्रा छाडा कार भटा (पर्-छा। व कित्रका मि निर्देश वारा वध অভ ৷ শিৰ্মোষা কামিনী ভ্যাগ করোভিয়ে। জনো ভবে। স বাতি नत्रकः कबः किः एछ गर्वश्वत्रगा बा॥ यहानकी क्रवाह। नाथ नवः বৰণ জু কোপ: কথ ষহে। তব।

প্রসাদ সরু ভার্যে ৰে সদীপাস্য ক্ষা বরণ। ভারতণ ভারতীশা-পাৎ বাস্যামি কলবা বিভো । ক-ভিকাৰ স্থিতি স্তত্ৰ কদা এক্যা-মি তে পদ ।। দাসান্তি পাপিনঃ পাপ ৰহু জানাৰগাহনাৰ 1 কেন তেন বিযুক্তাছ ৰাগ্যিষ্যা-बि ष्र शर ।। क्लबा छूलमीक्शा ধর্মধজসূতা ৰতী। ভূদা কদ। কভিষানি ছৎপাদাৰুজ মচ্যুত।। বৃক্ষৰপা ভবিষ্যামি স্বৰ্ধিপ্তাভূ-त्नवणा या मूक्तिशानि कना छ-যে ত্রহি রূপানিবে।। গঙ্গা সরস্ব-তী শাপাৎ যদি যাস্যতি ভারত । সা কেন মুক্তা পাগাচ্চ কদ। षा॰ वा निख्याचि॥ गत्रानारभन সা বাণী যদি **ধা**ন্যতি ভারত 1 কদা শাপাদিনিমুচ্য লভিষ্যতি शहः छद्।। छाः वानीः उक्षमक्रमः शकाः वा निवयन्त्रिकः वाञ्चः व দিনি হে নাপছৎ কয়স্ব চ তেক **इशा हेज्युक्त करना का उभाम** धृषा ननाम ह। यदकटेन (वंकिन॰ क्षा करतान ह नूनः भूनः ॥ छ-বাচ পদ্মনাভ স্তা॰ পদ্ধাণ কৰা স্ব वकति। अयकामा अमनारमा ভক্তানুগ্রহকাতরং ৷৷ জীনারাষণ

षवाका माहतिकामि উবাচ। **অবাক্যক সুরেশরি। শনতা: চ** कतियामि मृन् छ ९ कम स्वत ह য় ভারতী যাতু কলমা সন্ধিদ্ধ-गा ह बांत्रला अका मा उक्त-मनन चय॰ जिक्केजू बह्ग्ट्ह ।। जगीद्रायन नीका मा गना चा-সাভিভারত। পূত কর্তৃ জি-जूरनः चरा जिन्ने मन्गृत्र ॥ **ভ**देवव हम्मयोतनम्ह योगि॰ প্রাক্সাতি দুর্ল ত॰ ৷ ততঃ স্বভা-বতঃ পৃতাপ্যতিপৃতা ভবিষাতি ।। कला॰ मा॰ टमन प॰ शक् छा-तुष्ठ क्रमत्त ज्व। भद्यावष्ठी म तिकाना जूनमा वृक्कानिनी ॥ कलाः शक्षमहरम् ह गर्छ बर्ख চ মোকণ। যুমাক সরিভারেক व बम्गृङ्क्षागिषयाछि॥ हेछि बक्तरेवर्र्ड अञ्चिष्ट ए ज-शायः॥

সরস্বান্ পু॰ সমুদ্রঃ। ইতামরঃ।। নদঃ।। রসিকে ত্রি। ইতি মে-দিনী।।

সরা দ্রী নির্বরঃ। ইভি ভরত-বিবাগকোবঃ॥ প্রসারিণী। ইভি রাজনির্বন্টঃ॥ সরাবঃ পুং শরাবঃ। ইভিভরত- विकारिकां यह ।।

मितः भूण्यी निर्मातः। हेक्क्सिन हस्यक्षा

मद्रिका श्री हिन्भती। ইভি শক-চল্লিका॥ भयनकर्ती ह ॥

मित्र की नहीं। इंडामतः॥
मृत्वः हेडि मक्माना॥ दूर्गा।
वंशाः किना काद्मश्वभाषाय मत्रशाक मित्रश्वाः। मक्माकाममाकाना लाटक किने विडाबार्डा। हेडि क्रिनीभूतार्थ ३६
क्रिशांवः॥

সরিৎপতিঃ পু॰ সমুত্রঃ। ইত্য-মরঃ।

मित्रिषान् श्रूप मन्याः। हेकि कि ।

সরিৎসূতঃ পু• ভীন্মঃ। গঙ্গা-পুত্রদ্বাৎ॥

সরিতা নাধঃ পু॰ সমুদ্রঃ। অস্য প্রমাণ সরিতা বরাশক্ষেত্রফব্য॰ 'সরিতাম্পতিঃ পু॰ সমুদ্রঃ। ইতি

नक्रव्रवादनी ।।

সরিতাষরা ত্রী গলা। स्था। দং দেব সরিতা নাথ স্থ দেবি সরিতাম্বর। উভবোঃ সক্ষে সাদ্বা মুঞ্চামি দুরিতানি বৈ।। ইতি প্রাবশিক্ষতত্ত্বে গলাসাগ- ANTHONY W

अविषद्भाः औं भका १ देखि हमः ' क्रमः ॥:

महिमापर पुर महिप्ता है हि ताक निर्वाचीर अरा

निव्या नूः गमननाः वाष्ट्रः । हेळूः भारित्वात्रकाः

সরিল° ক্লী :সজিল°। ইভামর-টীকাৰাঃ ভরতঃ গ

সরিষপঃ পু• সর্বপঃ। ইতি ত্রি-কাওদেবঃ।

সরী খ্রী. নির্মারঃ। ইতি ভরত-দ্বিকাকোষঃ।

मतीमृशः शूः मर्शः। ইতামরः॥ मकः शूः क्षकः। सक्षमृक्षिः। ইত্য-मत्रनिकामात्रमृषत्ती ॥

সরুঃ ত্রি সূক্ষা । ইতি ভূরিপ্র-বোগঃ ॥

नक्षाः वि नक्षाः। नयानक्षाः । देखि कोषद्रेशः

সৰপতা ত্ৰী সৰস্পত্ন তুল্য-তা। সন্ধণশন্ধাহ ও প্ৰত্যবে-নাধা নিম্পন্ধা।

সরোজ কী পদা। ইতি হেন চক্রঃ। সরোবরজাতে তি ।। সরোজদা ক্রী পদা। ইতি হেন-চক্রঃ।। महाकिमी जी कमनाकृतः।। मर्गः भू यस्तः।। निर्धाकः॥

शक्षः। ইতি मिनिर्मा। शक्षमः। निर्माः॥ कथायः॥ मृद्धिः।

गृरः। ইতি রক্ষালা।।

शहराकी भू कका। ইতিশক । ইতি কেদিনী।। कैन्विः।

रक्षावनी जिकाश्रम्भवो।।

शहराकी ।। किर्मान । विश्व क्षान्याः।

शहराकी ।। किर्मान ।। किर्मान ।

शहराकी ।। किर्मान ।। किर्मान

সরোধঃ ত্রি ক্রছঃ। রোধেনসহ বর্তমানঃ। ইতি ক্রীছি সমা-স নিক্ষারঃ।

मदताक हैं की अध्या देखि दिया। हसार ।।

मताकर्॰ कीः शब्दः। ইভিনত্ত याना ॥

महत्राकृश्यम् - भूः जन्मा हे छि ट्याह्यक्षः।।

মরোবরঃ পু॰ জলাশববিশেষঃ।
তৎপর্যায়ঃ। পদ্মাকরঃ ২ কা
সারঃ ৩ তড়াগঃ ৪ তড়াকঃ ৫
তটাকঃ ৬ সরল সরকী ৮
সরঃ ১ সরু ১ সরক ১১। ইতি
শব্দর্মাবলী ।। তল্পণানি পু
ছরিণীশব্দে অকবা ।। তস্য জ্
লগুণাঃ সরুংশব্দে অকবা ।।।
সর্কং পু৽ বাষুং।। মনঃ।। প্রজা
পতিঃ। ইতি সংক্ষিপ্রসারোণা।
দিবৃত্তিঃ।।

निक्रयः॥ अथायः॥ मुखिः। हेकामतः ॥ त्याहः ॥ छेदनाहः । इंडि दामिनी।। अनुबक्तिः। केलि रक्षा 🐠। नर्भविवत्र-ণ ৰথা। অব্যাক্ত গুৰু ক্লাভাৎ यइंड जिक्छ। ६३म्। जूक मृ-क्षियाकानाः मखदः मर्ग छे চাতে।। ইতি শ্রীভাগবত।। ন-वशामर्गा यथा। मर्गा नदिध स्राः आङ्गा देवहरुसः । कान- जबा खेल तमा बिनि धः প্রতিদংক্রমঃ॥ আদ্যন্ত মহতঃ मर्टिश खगदेवरमा माम्यसः। वि-कीय खुरूरमा यब सबा खान किर्यानयः॥ ज्ञनर्ग ख्ञीयस ज्यारका जवा मक्तिमान्। हजूर्थ **अख्यियः मर्शा यस खान-कि**-यात्राकः ।। देवकान्निदका स्मर्वः मर्गः शक्षामा समाय बन्दा वर्ष-स्कृष्टिकः मदर्शा रसुदृष्टिक्रकः প্রভোঃ।। বড়িনে প্রাক্তরঃ স भी देवलानिशिय गृशा बदला-**जारका जगर**ा नीत्नकः र-विरम्भाः॥ मश्चरमा मृश्वामर्गञ्ज बर्ज्वश खबूबाक वह। वन्ना ज्यायि नडा प्रस्थाता बीक

(या ज्याः ।। उर्त्याज्य खनः-वारा जिल्लामा वित्निविषः १ ভিন্নতা মন্টমং সর্গঃ সোকাবি-निविद्या यठः॥ अविद्या जुति-ज्यामा शुनका सम्राद्यमिनः । গৌ রজে মছিবঃ ক্লকঃ শুকরো गवटका क्रकः॥ विनकार नगव (म्हरम जित इन्हें महम । খরো ২শ্বো খশ্বতরো গৌরঃ শরত শ্বরী তথা।। এতে চৈ-क्षकाः कतः चृत् शक्रमथान् या नृगाता वृत्का न्मजून्। -वाार्या याजातः भन नहरको।। সিন্থ: কপি গজ: কূৰ্মো গোধা क मकत्रामयः। कक गृश् वक শোন ভাগ ভলক বহিণঃ।। হণ্স সান্নস চক্ৰাহ্ম কাকোলু-कामनः चगाः। खर्बाक्रम्। छ नवयः कख द्रकवित्या स्वा॰ ॥ त्रकाधिकाः कर्मेणता मृः एथ ह नुषगानिनः। दिक्छ। खर এ रैंबट्ड स्मवनर्गक मलगा। देव-কারিকস্ত বং প্রোক্তঃ কৌমার खुखबाचाकः। तिवमर्ग कार्यः चित्वा विवृवाः भिछत्ता स्नूताः श मन्नबान्मद्रमः मिका वक द्र কা সি চারণাঃ। ভূত প্রেভ পি-

भागिक विषानाः किष्रवाषयः
।। पटेनट विष्यानाः किष्रवाषयः
।। पटेनट विष्यानाः किष्रवाषाः भर्गा
त्व विष्याक क्रवाः। ज्ञाकः भर्गः
अवकाषि वश्नः मञ्जाकि ।।
विश्व क्रवाः । मृञ्जाकाः ।
वाष्यक् इतिः । मृञ्जाकाः ।।
विश्व ज्ञाकिकाः ज्ञानमञ्जाः ।।
देखि विज्ञानवर्द्य क्रवः ১०
ज्ञानः ।।

मगवन्नः पुः यहांकावाः। हेछि कृति अर्या गः। छल्लकन वया। সর্গবন্ধো মহাকাব্য মুচ্যতে ত-ना लकन । जानी नगस्तिया बञ्जिमिटमा वाशि छत्रायः ॥ ইতিহাস কথোদ্ভূত মিতরম্বা जनाथायः। हजूर्वभै यनायतः • क्टूटब्रामाख नायक ।। नगता-र्भव रिणवार्कु हट्यारकी मय वर्ग-देनः। जेनगन मनिनकी जा भ-ब्गाम त्राचित्र ।। विश्वन रेखः र्किवारेश्य क्यारतालय व-र्भ देनः। यत मृख ध्वांशांकि ना-बकाजूमिटेश तेलि।। जनक्छ ममः विश्वः त्रमञाय मित्रखतः। नरेंग ब्रनिकिशीरेनः व्यवात् देखः मूर्गाक्षाजिः॥ गर्वत जिम-বৃত্তাত্তৈ ৰূপেত লোকরঞ্জন।

কাব্য° কৰাভৱৰাৰি জামতে जनगढ़ि॥ रेखि मधी॥ गर्क अर्फाल। देखि कविकश-क्रमः। मिनक विविधः। नकः ि धन ब्लाकः । देखि मूर्गा-मामः गा मर्कः भू भागवृत्तः। रेष्टात्रः भा मर्कतमः। देखि खतकः॥ शीवनामः। देखि नयतप्रायनी ৰক্তকঃ পু॰ নীতশালঃ। ইত্য वबः ॥ भानः । देखि क्रि ध्यः ॥ সজ্জান্ধা স্ত্রী রাশা। ইতি রব্ধ মালা া जक्तन की रेननाननानाकाः। रेि नक्षेत्रावनी ॥ विश्वकर्मन ॥ ज्ञिः। इकि बृजवाष्ट्रवंतर्भ नार्षाः गब्दिनियामकः भू जावः। ইতি ब्राक्रनिष्केशः॥ ज्ञानिः भू क्वकः। रेखि कि का अटन्यः ॥ ज्ञातिक श्रु भावान्कि निर्वाणः। भू ना देखि छाता। छरल्यामः।

अबस्थः २ अहानः १० अर्दन्तः

% वहनेलाः ६१ देशम्बरः ॥ नालः

.

त्रक्रमः॥ भावकः ৮ भानमिर्वाः मः व मक्दाः ३० धुनकः ३३ मा-ननातः ३२ । देखि तप्रमाना ॥ বিৰূপঃ ১৩। ইতি শব্দরত্বাবলী ा। भागत्वकः ३८ अधिवन्नकः ३६ मब्द्रियिः ३७। ইতি द्यारखः ।। वाक्रिमर्राक भर्गाव ७-रणो बानगटक जरूरवारे ॥ শক্তিঃ ত্রী শক্তিকাকারঃ। ইতি ब्रञ्जयां ।। मिक्किंका जी मिक्किकाकातः। रेखि किंगियतः ॥ সজ্জিকাকারঃ পু• मक्किकाया नमाः कांद्रः। ইতি তরতः।। ুসাচিকার ইতি সাজিনাটি ইতি চ ভাষা। তৎপৰ্যায়ঃ। কাপো-ভঃ ২ সুখবৰ্চকঃ ৩ সৌৰৰ্চক ৪ রুচক ৫। ইন্ড্যমন্নঃ।। काकातः ७ मिक्का १ कातः ৮। ইতি उनिकाश सकता २ बर्किका २०१ देखि गंभवना-वनी ॥ भूतवर्क्षकः ३३ । ३७ किंगिषतः॥ मिकि कातः ३६ न-क्रिक: ३७ मक्टी ४८ मूर्था-किंकः ३६ म्वर्किकः ३३ म्-बर्की अने मूचवर्काः अर । व्यन्ते स्ताः। अपूरः। स्ट्रेरः। के

कका कर वाट्यानबार्डिमा निषका देखि ब्राक्निविक्तः॥ जिल है। शोकाकाद्वी स्वका রো যাবশুকো ববাগ্রজঃ। স জিকোপি শৃতঃ কারঃ কা **ला**णः जूथवर्फकः ॥ कथिणः माजिक कार्र जाता वित्नवरेखाः मू विकिका। यवकारता लब्दः त्रिकाः मूमृरका रक्किमीलनः।। निर्शि শূল বাতান শ্লেম শ্বাস গলা-बसाम्। शाखुटर्ना वहनी धन्ता-नार धीर क्लाययान्।। তস্মান্বিশেষাদ্গুল্ম **李阿德**阿 णुलक्ष। यूवर्किका मिक्क^र काराबाक्या खगरण करेनः।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। ক্রিকার: পু॰ সজ্জি কাকার:। ইভি রাজনির্কটঃ।। मकी जी मक्कि काकाबः। ইভি क्राक्मिर्घकिः॥ मर्कः पू॰ विवक्। ইভি मि ञ्जाभाषिटकाटयो ॥ नकृ वी विमूर। रेखि मिनी ॥ जिनातः॥ शतः। देवि नमक्रमावनी ।। मकाः 'शू' बर्कतमः। ইতি त्रत्रामा॥ चर्जनीत्र जि॥

मर्गाः भू भागत्कमतः। हि त्रव्याना ॥ अधनः । देखिन्तृश-कावन कर्मनाथ ॥ आध्यकात्री क्षक्षावितिरगवः। भूताव्यवः क्षिक्षामीश्रा नगद्वारजन ञगा दान गागामी व्यवस्का-রিছণকুত্বা কেশালাত্বণ ধর্মনাশ-क हकाद्र । वथाः । मशबः खाः প্ৰতিজ্ঞান্ত খন্তে। ৰাক্য নিশ্যা **छ। बर्माः ज्याम हरुयाः दे**व द्व-भानाक प्रकात है।। अर्कः म-कानाः भित्रत्मा मूखियदा वाम-क्षं १ । वतनानाः भितः गर्वः ৰুবোজানা তথৈৰ চ।। গা-तलान् मुख्यकणाः स शहरान् न्त्र अन्यातिकः। निश्वाशास्य वस-ভিকারাঃ করা তেন,মহাত্মনা।। भका बरन कारबाद्धाः शाद्रपाः शह्रवा खक्षा क्वालिनम् या-हिबका बार्बा (अञ्चाकाः मटकत-লাঃ।। সর্বে তে কজিবা স্তাত ধর্ম ক্তেযাণ নিরাক্তভঃ। বশিষ্ঠ-बहनाखाळ्क् नगद्व । बहाज्ञना ॥ देखि । बहाकाबटक इतिकटन ३ छन्यायः ॥ ।। हि मुज्जवि-**(भत्रः। जान हे** छि छाता। ७९-**श्यावः। भृतात्रः** २ जूक्यः ०

जुजनः ८ चहिः स जूजनमः ७ व्यागीविवा १ विवंशवा के ठळी २ व्यानः ४० महीमृगह ४४ मधनी ३२ गुष्तभाद ५० हक्क खेबाई ४८ को (कामन्त्र ५० मनी ५५ मनी कतः ३१ मिर्वशृष्टेः ५६ मन्मम्कः ५५ वि-(तानवः २० खेत्रगः २४ नवणः २२ ভোগী ২৩ জিহাগঃ ২৪ পরনা-ननः २७। हेछा बतः ॥ विनान सः २७ ब्रजीनगः २१ वित्रजनः २४ ভেকভুক্ ২৯ শসনোৎসুকঃ ৩০ कनावज्ञः ७३ कनस्तः ७२ कनावा-न् ७७ कनदान् ७८ कनीकदाः ७६ कनकतः ७७ जनरकानः ७१ वा-णः ७৮ मन्स्री ७३ विवासाः 8-(गाकर्नः ४) खेन्न्यः ४२ गुरुशा-मः ४७ विनवानी ४८ मर्विज्य ४६ इतिः १७। देखि ननतन्नावनी ॥ थानावी ४१ दिक्कि १४ जन क्रखः ४२ क्यूकी 🕶 हिमन्नः ७३ जुकः ६२। देखि क्लारतः।। ज-त्गारगिक बारगढी वया। ज প্রিবেণাস্য ভান্ দৃষ্ট্াকেশাঃ শী-र्या उत्थमन। हीनाः चिनद्रमा **ज्यः मगतारम् ७**७ः निकः ॥ नर्भेशास्त्र श्ख्यम् नर्भ। श्रीमदान-हराः म्यूठाः। हेि विद्विभूतात्व

मार्क्षन नामाशावः ।। म-र्गाना मूर् नविषि वेथा। जुमें क्रवाह। भक्षेत्री प्रविद्याः द्राज्ञन् मागाना निवर्षिनी। शक्यान কিল নাগানা ভৰতীত্যুৎসবো महान्।। वामूकि उक्क टैक्टव कानीरका मनिङ्यकः। अत्राद-তো ধৃতরাকুঃ কর্কেটিক ধনঞ্চ-ৰৌ।। এতে প্ৰশ্নছন্তাভৰ প্ৰা-बिनाः शाबजीविनाः । भवनाः भागवडीर नागान् कीरतन रव मद्राहै।। एकाः करन अवक्षि षड्यः आनम्बिनः। नश्चा ना-ना धना बाजा पर्याना नियानिः न ।। निर्वात्रयिक नगरेन र्यवाः কীরেণ নিশ্রিতৈঃ। যে স্নাগৰ্ভি देव नागान् छन्। धका मनकि তাঃ।। 🛊 ।। শতানীক উৰাচ । মাত্রা শস্তাঃ কথে নাগাঃ কারণ मन्त्रपञ्च देव । कथं वानम्बद्धन कमा ता मध्यमानक ॥ मूबंड রুবাচ। উচ্চৈঃশ্রবা আখরত্ন খেতে। জাতো ংনৃতোভবः। ত

हाउँ विष्य कर्ण कीशाना के ननी क्या। अवतंत्र विष्य (प्रक्र मन्यरणा १ कृष्ठ महत्य । क्रिका क भगरण वालाम् म देव रिपेट

मूछ। इतिका विनर्छावीछ। नर्ब-त्यात्वात्व्यवर्षां नामा सत्यात्व लाहिन्द्र। कथ के भगारम सक বিনভোৱাচ ভা॰ স্বস্থ।। क्वार । भरणाङ दाकनम्बर्धिकक-वानगमञ्ज्ञ । वित्मवा क्ष हैंब-बट्ड न भगामि थन जक्र ॥ विन-তোবাচ। অহু দাসী ভবিত্ৰী তে क्रटक क्टम अमिर्छ। न तम-ৰ্শনতো কদ্ৰু ৰ্ম দাসী ভবিৰাসি मा अव छ श्विनम कृषा गएड ক্রোধসমন্বিভে। বিনতাক্ষা চ नवत्न कट्ड ब्रिंडा यहिखनः ॥ षार्य श्वान (थादाह बाना खूषा र्गाञ्चल । जिन्नेश विभाव **रक्र**का विन्छा क्रयम् क्रिमी ॥ গ্ৰোচু স্তাণ জিয়াবু দিন্তে নাগা माकाः विशृष्ट जू। यथर्ष (मक्रमाः তো হতো ন করিষ্যাম তে বৃচঃ থা তান্ শশাপ রুষা কক্রঃ পাব-द्रका रः क्षरकाछि। गाउ वर्ष्ट्राज-(ध क्रांटन भाष्ट्रता क्रनत्मक्रयः ।। मर्भमळ म कर्छा देव खूवि ख-देसाः जूमूकदः। जित्रान् जटक ज किया छ भारका वः अभकात्रि ।। এবং শঞ্জা ক্লবাৰ্ডেঃ প্রোক্ত बादेवव किक्ना। মাত্ৰা শপ্তা

ख्या नागाः कर्वगः नामगणा ॥ बाजूकि॰ मूर्श्विड॰ खाषा खेका ध्यावाह माखुमम्। मा खटा वा-मुद्रक ब्लार्थ भृत् मब्द्रमः शतः ॥ পারাশ্রস্থে জাতো জরৎকারু ब्रिजि विकः। अविवाजि यहारक े का जिन्का कारन जरनामिधिः॥ ভারিক্টাক জরৎকার-তস্য ব-প্র: किताना किता किति किता का शृत्वा श्रिक हे कि विक्षकः ।। स्रा का कि किता का श्रिक के कि का श्रीका म कर मकः क्षेत्र के किता का श्रीका म खरम॰ महरा ্ৰান্তেৰাগতি ৷৷ मूनि बाणि त्रशानि १ थ्यम् छमा प्॰ छित्रा॰ छित्री॰ ताक स्थाना॰ ज-अविमानाकि। क्रांत्रक्ष्म पाध्ययम् ॥ वश्कारबाः आम्मोतम्बिहाः प्रा बनाटनो धार्पाटक श्रद्धना , शार्कता किकिविविव्यक्ति। ७९ कं नुत्री श्र-बनद्भन क्लीटक्श त्अप वा गरका मः ॥ निडाबश्बहः क्षाचा वाः स किः शिवुगका ह। उथाकद्राल्याम्। থা চোক্ত ৰত্নক পরমান্থিতঃ শ্রে छक्षा भन्नधाः मर्द अश्रवीव्येक्ट क्लरवाहनाः। भूनकां विवाहनी স্থান মেনিরে ভুজগোন্তনাঃ।। ত ভক্ত মন্ত্ৰণ মহাবাহো তব পিত্ৰা_{লয়ঃ} প্ৰবৃত্তিত ৷ ঋষিগ্রিঃ সহিত্তে-

(नर् नर्दानीत्कर् मूक्क्रा । था-**७० दिक्**ना शृक् क्षंत्र्खना शी-মতঃ ৷ অবশ্য তল্য ভবিতা মা-भागाः जयकात्रकः।। छजार का-লান্তরাজাজন্ সাঞে বর্ষশতে গতে। তৎ সক্ত ভবিতা যোগ नार्गानाः क्यकात्रकः॥ यात्राखाः शर्म महिला मन्मभूका विरंवास-नाः। काष्टिनःचा महाब्राक नि-পতিৰান্তাহৰিশে ।। আপ্লবে তু নিৰ্যমানা ছোৱে রৌজামিসাগ-রে। আস্থাক স্তত্র ভবিতা ভে-नाः स्नो वैद्धिनागद्ता। स्वान-ठावि बाजान वृषिक खननखतः । निवर्षिशां जिल्लां ना ना ना ना॰ (याक्न॰ भद्रः।। शक्ष्याः कक ভবিতা বন্ধা প্রোরাচ লোহি-जान्।। जन्मामिक बहाकाट्श श-क्यी निक्क नवा।। नागाना वा-नव्यक्ती क्ला देव बचना भूता। ক্রমা তু ভোজন পূর্বণ বাদ্যপা-नाम कामछः।।ःविमुकाःनागाः প্ৰীষম্ভা বে কেচিৎ পৃথিবীতলে ৷ বে চ হেলি মরীচিকা কে হস্তরী-क्ल जिति जिला। (व मणीवू व-रानागा (च नव्यक्तिगानियः । ৰে চ ৰাপী ভডাগেৰু ভেষু সৰ্বেষু

বৈ নমঃ। নাগান বিপ্রাণক সংশ্রুজা বিস্জাত মথার্থতঃ। ততঃ

 নহভত্তা র্মন
রাধিপঃ। প্রব্যান মধুর মন্ত্রীয়াৎ
দিতীয়া ভূজা কামতঃ। এবং নি-

।। यूटा नागभूतः याणि भृष्काया-त्ना रक्तद्रागटेनः। विमानवत्र মাৰতো রমতে কালমীপিত ম ইহ চাগত্য রাজাদৌ অবুতানা সর্বস্থাসমূহঃ बरता ভবে । गा वार्नाण का वार्ज। भ क्षज्यनारमे बाजा बागत बा-भरत जरवर। जावि वाधि कि निर्मुकः गन्नी भूख महास्वान्॥ তস্মাৎ পূজাত্রমাণাঞ্চ ঘৃত পা-रम श्रभुतिः। 🛊। भठानीक উ-বাচ। দশস্তি ষ নর বিপ্র নাগাঃ ক্রোধসমন্বিতাঃ। ভবেৎ কি ত-मा पर्यमा विख्वार श्रवीहि व ॥ मुमन क्वाह। मन्छ्री छन्ना ह ক্লকাচ রক্তা শীতাচ দক্ষিণা। नमारमन जू वक्जामि क्या देव वर्गकः मृहार ।। अङ्गा कृ वाक्षी रखरा तका जू कविया गृहा। देवना। जू भीजिका दक्का हका नृजा जूक्शारा ।। पान्यः नदः

ध्यवन्त्रामि बन्ध्रीयाः विवनक्यनः। ক্ৰুণাৰ বিৰুনাতি দিতা নেব कूलकरन ।। इकिन ति नामा-मा विक मर्गमा विकेषि। मर्कू **क्टि**माव गर्नमा विष•ाक्छि य-खद्याः मस्कानमनी गाछि कटल माडीबू ठिश्रेडि। माडी-জো গচ্ছতে দংকু বিৰণ তত্ৰ প্ৰ-वर्क्टा ७९ नई कथियामि वसारमञ्जूर्वभाः। अकेलिः कात्र-देशः मर्ट्शा प्रभटक बाख मन्यकः ॥ ।। वाकार्या मगर्छ भूर्व॰ विजीवः পূৰ্ববৈদ্নি। তৃতীयः হশতে ভীত শতুর্ণ মদদর্গিতঃ ।। शक्षवत्र कृवाविकः वर्ष्ठदक्र वि-बाबनः। मस्यमः भूखक्रकार्थः बकेव कानकामिण्या यस म র্পো দশিদ্বা ভু উদর পরিবর্ত্ত-(वर। वनभूमाञ्चि मंग्री। भा-काल ज विनिर्मातम् ॥ समा नदर्गन मखेमा शसीव मृगार जाना देवत्रमके विकानीकाष क्लाना वका वर्षा।। अकन-की शरह बना जवाक न ह क् निक्ना कीरमके विकाशीका बर्धावोठ अञ्चानिका। वना न र्भा करेगा दाचा करुगा कान- (७। यमक्ये-विकामीवाद क्या-भना वटा क्या ॥ त्य हे मन्छ्री अर के क्या कर्जाटक है यह कि छ । क्यारिक विजानीयार स्था-बाठ अजानिकः ॥ त्व मःस्तु বস্যাদ্দেশ্যতে কচিজেধির সংস্-रम । विस्थायन विकामीयामण-স্ত নাত্রসংশবঃ। অপতারকণা-थीय जानीयामाल नः नवः। यजु কাকশদাকার জিভিন্নতৈ বিছি-ডিত।। 'यहानाभाई कि প্রোক্তঃ कालपर्छ विनिर्मिष्या का खिविष मधेकारण गर्मे । माशका म्यामका कृ गीउक मरका कुछ चटेशन है। वह गर्गा দশিব। তু পিৰতে তু বিচক্ষণঃ। मक्ष् भीक विरक्षके कनाशमा बटा क्या। विक्रजात्मी जू मर्गमा विजाग एव म करमः। जेनद्र मन्द्रमा उप्रकृष्ट छ विभिन्न-ण्याः इक्तिछः विषयातान नि विनाः गर्मा छटवया जनाश-কাগি বিজেৰ কৰুৰ ব্ৰাভি গী-ভিতহা ব্রীকাডকো ভবেৎ কি-किर जानस्का विषयागठः। जा-র্জানেখা করা ভরণী হুতিকাসু कित्ममण्डः।।"दिगांभी जियु गृसीमू

মূলা হাতি শতাদ্মকে। সর্গদন্তা न जीविष विवाशीलक देव ख्या ॥ भूगाभादा जमात्म छ ७६-वृत्क छटेषक हरा न कीविक्त नजा-क्का नक्त किविजाबूटा। इ-্তে দেশ স্ততঃ ওদ্বান্তরঃ প-রিকীর্তিভঃ । ইতি ভবিষ্যপুরাণে শভসাহসাজ সৰ্থভাষা পঞ্-मीकरत्रा। ।। कनाम छेवाह। षाउः शब्द श्रावकानि कानमरी-मा लक्ष्य । मृन् भोजय उरस्त বাদৃশো ভবতে নরঃ।। জিহা-ख्दा कमिन्त कक्डांक न श-माजि। इन्नक प्रश्नम्बान- शक-क्षमृक्टलाभनः ॥ दिवतः देवत म-खाना॰ भगारमा खबिछ वर्गछः। गर्दवरम्यू देनथिका भूतीवना ह एकन ॥ जिम्हा कृषि और कि शृष्कि द्रश्याम् यह । नक्ट दर् भटक टेक्ट चभटक हे मूरु ध्रूकः ॥ नरजन हिमामानमा क्रियन म श्र-বৰ্ত্তত। দঙ্গেন তাজমানস্য দ-ওরাজী ন জাৰতোম দংশে কাক-शर्म मूनील यमक्का ब्याजि ঘন॰ উচ্ছন ক্ৰিরাঙ্গ সেক ব रुनः कृष्णेनित्राक्षा छत्यः। हिका याम गलशहक मुमहान्

या पृष्ट्वा मृनाटक मन्यानन्धात-मिं भाजनिश्ना स्थ कानम्स् विषुः। पण्टम बनाष त्नाषः थ-रिमिछ दिनिक मधनान्या नूमी-न अरवाम भावत्यमः नुवि ह क्रिक मान्नामक कर्मरा प्र-ভোষাভ্যা-বিৰোগো ভুমতি চ शक्य गनित्राथण जीखा क्यिं।-ना यय मन्नवन विश्वनमत्या विकि ७ कानमर्थे।। मटेख र्फ-স্তান্ স্পৃশতি বহুশো দৃষ্টি রাবা-मिश्रा क्रा म कुः मुव्छ क्रि-রু কেকর চকুরেক। প্রত্যাদি-টঃ শ্বনিতি সভত সান্নাস্থ ভাবেৎ यम्बुट्ड সকল गरिङ-कानम्के छ मारुः॥ दिशर् द-দনা তীবা রক্তনেত্রক কাবতে। वीवाजनक नानाजिः कामप्र-के विनिर्कित्यः॥ वर्गत्व मनि লে ৰাপি আত্মন্তাষা ন পশ্যতি ৷ মন্দরন্দি তথা দীপ তেজো-

क्रिवाक्तः॥ त्रश्राद्धः वन्ति। ह्रिवाक्ति व्यक्ति क्रिक्ति क्रिक्ति क्रिक्ति। क्रिक्ति। क्रिक्ति। न्रिवाक्ति। न्रिवाक्ति। न्रिवाक्ति। न्रिवाक्ति। न्रिक्ति। न्रिवाकिक्ति। न्रिक्ति। न्रि भवः॥ कार्कारक्षवा मद्या छत्रनी इक्तिम् विस्थवं । विभाषा किष् भूबाम् मृता पाठि भणावा किष् ॥ नर्भवं । विश्वविक्षित्रः भीत्रभ देव स्था । भूगाभादत भागात्म इ स्ववृत्य स्टेश्व ह ॥

শ্বিশণ্বতে। অফৌন্তর মর্মণত প্রাথিনা সমুদাহত ॥ তেখা बदश कू बर्आविमन एव हानि की ৰ্ভিতে। শধ্যে ৰেত্ৰে ব্ৰুবো শ্বধ্যে बिख्डा॰ वृष्णास्त्र ॥ कत्क क **एक क**षि यथा छालूक ठिवूक भटन । अमुकानम नटक्रम् नरहः न-🚛 বা হতঃ।। ন জীবস্তি নরা लात्क कालमचे विनिर्मित्न कित आक इंडिक न वन मान्यः - দক্তি প্রোক্তান কীবন্তি হতসা शक्ता अवार यनि अविकि विदा ভদ্য সংগ্ৰাপ্তকাৰাঃ ৷৷ ভৰতি চ यमिक्छ উত্তমস্যাধনো বা यमि ভবতি চ দৃত উত্তমে। বাধমস্য। श्वादमी मर्फेना नाय यनि वम्नि क हिक्कि छमा। पण्डाद वर्गा छ॰ वर्गकामा अनि जवकि मनः था-श्वकानमा मुख्या। मृट्या या मथः इत्सा खर्डि ह स्भवः भागस्य ভণা বা বক্ত॰ বন্ত্ৰণ ক্ৰমণ অথ শিরবিগত একবন্ত্রশ্চ দৃতঃ 1 তৈলাভ্যক্তশ্চ ভৰ্ত যদি ছব্নি-তগতি মুক্তকেশশ্চ বাতি যঃ স্ব-र्याष्ट्र (बाह्यनक कड़ ठत्र वर्षेशः थारकावना मूळः॥ ।। नारगा-দৰ প্ৰবন্ধানি দিশানেন তু ভা-ৰিত। বৰ্ষণা তু পুৱা সৃষ্টা গ্ৰ-रा नाशा खुटनकमः ॥ जनसः ভাৰূর নিদ্যাৎ লোক বিদ্যাত্ বাসুকি। তকক ভূমিপুত্ত कटक छिक वृष विष् ॥ थवा वृश्-স্পৃতি বিদ্যামহাগম্ম ভাগবং । जनिकः मध्यभाजक दार्टि जू नरिमक्ताः ॥ भूक्यामः नध-शास्त्रा विशेषः अनिरकामा ह। मबजारम बरबो मिरकी मिनता-बी चरेन्द्र हो। अध्यक मार्चि ह नशास्त्र डेनरव क् क्यान्छ । প্রাণ প্রাগন্ধমে ভালে দিবাস-बाविरहान्छ॥ अहान्त जुक्षर রাজন্ পশি মৃত্যু ওজতাধঃ। व्यवागचा छत्व नर्मा निर्वित्या নাত্ৰ সংশবং ।। 🍅 ।। শভানীক উ-বাচ ৷ নাগদৰ্ভঃ পিতা বস্য ভ্ৰাতা বা দুহিতাগি বা। মাতা পুলো ২খ বা ভার্য্যা কি॰ কর্ত্তব্য॰ বদস্ব-

देव।। বোকাষ তথ্য বিপ্লেজ দা-मः ब्रष्ट बूर्शाचिकः। ब्राह् स्य वि जनार्ज्य दवन छटेष करतायारः॥ मुगब क्रवाह। छेरशाका शक्ती त्राक्न् नागानाः श्रुक्तिविमी । ভাততক মেক রাজেন্দ্র বিধান मृन् ভाরত।। यानि ভাজপদে या তু শুক্লপকে মহীপতে। সাতৃ পু-ণা মহাপ্রোক্তা গ্রাহাপি চ ম शैপতে।। क्विया बामन मदर्क পঞ্ম্যা ভরতর্ম চতুর্ব্যা মে কভক্তৰ তদ্যাণ নক্তণ প্ৰকীৰ্ত্তি-छ ।। ভূরি हेन्द्रकर नाग वथ वा क्लंदि। छक्। हुना माझमन मानि व्यथं वा मृश्वयः नृष ॥ शक्षमाः मक्टरम्डला मागः शक्कनः नृ-भ। कत्रवीदे**तः मञ्**भटेख क्रींचि-भूरेभाग्त मुंबर ॥ छशा गन्न था ध्रिन- भूका॰ भन्नग मूखय॰। वाक्य रकाक्टबर भकार वृज পাৰস মোদুকৈং ৷৷ অৰম্ভ বা-সুকি॰ শঞ্ব॰ পদ্ম কৰল মেব চ.। छ्या करकारिक बाग बाग वा-শতর নৃপা। শৃতরাজু শশ্বা-नः कालियः उक्कः उथा। भित्र-লক্ষ্ তথা নাগ্ৰ শাসি শাসি চ কীৰ্ত্তিত ।। সংবৰ্তাত্তে পায়ণ

স্যাৰহাত্ৰাদ্ধ ভোজন । ইতি-হাসবিদে নাগ গৈরিকেণ ক্লভ न्म ॥ जमाञ्जूनी अनाज्या वाहकमा महीभरा अव शाहन-क् बानि विशिः श्री एका बृदिश न् १।। তব भिजा कुछ टेक्टव भिज् যোকাৰ ভাৱত। শুভান্মিকেৰ॰ देवशी ह शक्यी खन्न छर्च छ ।। मूवर्ग ভারনিম্পন্ন নাগা দলা তথা চ भाः। वाशिया स्क्रमार्क्त निज्-ब्रान्ग याध्रवार ॥ তব পিত্রা ক্লন্ত স্ত্ৰেব॰ পঞ্জ্যোপাসন॰ নৃপ। উৎসৃজ্য নাগভা॰ বীর ভব পূর্ব-পিতানহঃ।। পুষ্পেতর সদো গদা छथा भूष्णमतमा नृष। मूनामीत-मत्मा गद्या ज्या जन मत्मा गरुः॥ ভূপনদ স্ততো গদ্ধা কঞ্চজন্য:স-দে। গভঃ। অন্যেপি যে করিষ্যস্তি इन वड मन्डम ॥ नकेका বোক্তে তেষা শুভ ন্থান ৰবা-ন্সাতি। ৰ শ্চেদ শৃণ্যানিতা। নরঃ শ্রদ্ধাসমন্বিতঃ ৷৷ স্বলে তস্য ন নাগেভ্যো ভব॰ ভবভি পত্ৰ-চিৎ। ইতি ভবিষাপুরাণে পঞ-गीकरमा।।। गणनीक उवाह । नर्गानाः किन्नभानि क वर्गाः কিঞ্চ লক্ষণ। কা জাভিছ জবে-

(छरो' त्मू त्मानिः प्रताम् मा ॥ । ज् व्यवनानि अनुवर्ताः ।। वाष-সুমৰ क्रवाछ। 'अब ए विद्या'न बापि कनाभना बर्गायनः। वशा-मीत्लाा ज्यात्म मृत् भूवं हिमा हता। रहाबिरहां वात्रीन° কশাপন্ত হিমাচলে। প্রণম্য শি-রুষা ভক্তা গৌতখো বাক্য মত্র ৰী ।। সৰ্পাণা কতি কপাৰি কি-क्ट्रिं॰ किश्न लक्ष्म । क्ल छथा वर्गान् जहिं गर्व थ জাপতে।। কথ-বা জাষতে সৰ্গঃ कथः मूरकिषः श्राटा। विषरव গাঃ কতি প্রোক্তাঃ কত্যেব বিষ नाष्ठिकाः ॥ म॰कुं १ः क्छि विशाः প্রোক্তাঃ কি॰ প্রমাণ বিষাগমে। कना जू गृङ्गीत्छ गर्ड- कथ- तर अनुबर्छ।। कीमृभी ची भूगाः टैन्टव कीषृत्रक नशुः जकः। किः नाम मणन॰ टेंচर এতৎ कथर जू-বত।। তস্য তত্ত্বন শ্ৰেছা কশ্য-পঃ প্রত্যভাষত। শৃণু গৌতম ত-**ख्विम नर्शाना मिह लक्कन ।। का**। यो-मार्वाट छथा देकार अभागां छ ज्जनमाः। ততো नार्गा नार्गि नी ह रेमधून मध्यभाख। हजू রো ৰার্ষিকান্ মাসান নাগী গর্ত্ত यशात्रक्र । ७७: कार्खिकभारम

-केमिक विदेखन दिन्द दिन বি-শতী । ভা মেৰ ভক্ষেৎ সাভু जाटेगक कृति। जाटकथा। मूव-र्शक वर्वनिखाद भूषान् मन्डाय-**७ २७कार। छाटनव था**न्छ मभी बदरात्राजानि विन्मिष्ठि।।

ব সন্ধিভাৎ। তত্মাদৃৎপাদ্যতে जी देव व्यक्षाक्रमण्य ॥ नि-त्रीयभूष्मवर्गाजामधकाद मान পু॰দক॰। ততো ভিমত্তি চাণ্ডানি ষণ্যাদেন ভূ গৌতম।। ভত স্তে প্রীতি সংবন্ধাৎ নেহং বয়ন্তি বা-লকাঃ। ততো ংসৌ সপ্তরাত্তেণ ক্লকো ভৰতি বন্ধতঃ।। 🛊 ।। আয়ুঃ প্ৰমাণ সৰ্পাণা শত বিংশোত-র॰ শ্বৃত । মৃত্যু শ্চাকবিধো জে-यः भृनुषाज स्थाक्यभा समूत्रा । मान्यांगाणि हत्कातात्कााथूता-ख्याः विजानान्त्रनाटेकव व-- तारावृण्डिकाख्या ॥ এতেवाः यमि बृट्ठाण जीत्विष्टभाखतः **मछः। मखारह जू छछः भू**र्व मः-कुंगिश्व विद्राष्ट्य ॥ विषम्गाग-मनः ভत्त विरक्षभक्त भूनः भूनः । এব জামা তু তত্ত্বেন বিষকৰ্ম

ममाद्राज्य ॥ अकविःमजिबाद्रावः विक क्ष्युंग् कावटक। नाबी भार्यम्यावर्शी दानमर्गं का **७॥ ११ विश्वविद्यादन् महा**र शान्यता खरन्य वन्त्रामान्याः তমাত্ৰস্ত কৰুক বৈ প্ৰমুক্তি।। भागानाकाभि विटब्ह्या एक मटल ৰে চ বিশ্বতী। মোলোম সদৃশাঃ शामाः .**अविभश्चि क्**यश्चि ह ॥ मधीना॰ जामा विरक्षय॰ एव मरछ বি॰শভী তথা। পা॰সূল্য শচাপি विरक्षमा (व् भटल विश्मिल उभा ॥ जकानजाना एक मर्गा निर्दिश ত্তে প্রকীর্ত্তিতাঃ। পঞ্চসপ্ততি वर्गानि वाम् एक्याः अकीर्षिष्ठः ॥ রক্ত পীত শুক্ল মন্তা আনীলা वन्तरविवा । अरङ जाबाबूरका एक्सा **अबाहाद्वान** खीतवः ॥ এককাস্য ভবেৰজু- ৰে জিৰে চ একীৰ্ভিতে। প্ৰথম বন্ধ দৈৰজা षिठीया दिक्टेमवडा ॥ ज्ञीया क्रजटेनवजा ठकुशी वनदेनवजी। शैना अमानकः मा.जू नामरनकः ন্যাঞ্জিতা।। নাস্যা॰ মন্ত্ৰাঃ প্ৰ যোক্তব্যা নৌষধ নৈব ক্তেৰজ । देवनाः भद्राः मूर्या याछि मृजूा उमा विलिथना ।। চिकिৎमा

न तूरेश काद्या छम्छ छमा जी विछ्। यकब्री यामिकी विद्यार्थ क्वानीक विमानिकी कानद्रा-बी जंदब बीनि हजूदा यममृ-यकत्रीभञ्जकः विमार क्त्रानी काकशामिका। एकात्रा-क्रिः कानतावी गागा कृनाक्र-िः भृषा। यकती वाजूना छः-वा कतानी रेशिवकी मृखा। क-কাত্মিকা কালরাত্রী ষমদূতী সা মিশাতিকী।। শুক্লা ভূ সকরী জেবা করালী রক্তসন্নিভা। কা-नक्षाबी ভरवर भीषा क्रका ह वः ममृष्ठिका।। देखि खिवगुपूतारन-गक्त्रीकरत्र। <a>॥ क्लान खेवा- **छ। जिंदेवा म॰ कुँ देवा प्यर्था वयमृ**-**छै। जू रहर्डात १। न हिकि** ९ मा बूदेशः कार्या। ७॰ गणायुः विनिर्णिः **८** ।। अर्त्रार्कः मिरात्रात्वी একৈক॰ ভূঞ্জতে অহিঃ। এক-স্য চ স্থান**ক দিতীয়** বোডশু ख्या ॥ नात्भानत्व समुक्तत्का र्छा विस्ता विनातिजः। कान-पर्छ विजानीबाद क्यानमा व-**हा क्या ।। क्या**ट्व भन्ट विन्तृ र्वामाधननित्नाक्छ । ज्याब मुवा म खु। विष मर्गमा माकः

बा। बोनामरा जू मन्भूर्व प्रः **८र् मः क्रमुट्ड** विवः। बावर मः ক্ৰামবেৰাহণ সঞ্চিত বা প্ৰসা-त्रत्य ।। ज्ञासन क्षमाद्व । विकः গচ্ছতি মন্তকে। রেধতে বিশ্ব-द्यगञ्च भाष्ट्रभा २थ जङ्गभः ॥ বৰ্দ্ধতে ব্লক্ত মাসাদ্য ততে৷ বাতে **णिथी तथा। टेडन**विन्यू किन প্ৰাপ্য ৰখা ৰেগেন ৰদ্ধতে ম শিখণ্ডী আশ্রয়ণ প্রাপ্য মারুতেন ন্মীরিতঃ। তত স্তালাশত প্রা-शा बठावानः विटिष्ठिकः ॥ बठा-यू विश्वनः विमात्कानित्वम् ठज्-র্ছণ । পিত্তে তু ত্রিগুণ বাতি শ্বেষে ৰৈ ৰোডশ ভবেৎ.৷৷ ৰা-रयो जि॰ नम् ७ वटक ब मरक विक গুণ তথা। প্ৰাণে চৈকাৰ্বী ভূতে नर्वत्नाञाषिद्धांश्टबद् ॥ তেন ক্ষাক্লানেন যাতি সাধ্য স नाधाला । ততा १ स्मी मियर कड निशामाक्। बनकिंगः ॥ নিস্থান্তে ভূ ততো চাৰ ব ভূতে 🤻 ক্ষু মাগতে। তানি তানি গছ-ভি ষস্য বৃদ্য বথালয় ।। পৃথি-ব্যাপ তথা তেজো বাষু রাকাশ মের চ। ইত্যেষা মেব নংঘাতঃ नदीत यंखिरीयरछ॥ शृथिरी शृ

থিবীণ ৰাতি আগ স্তোবেষু জীয-তে। তেজো গছতি চাদিতা॰ ৰাক্তো ৰাক্ত ব্ৰন্ধেৎ ।। জা-कामदेश्व जाकारण मह खिरमव গছতি। ৰস্থান তে প্ৰপদাতে পরম্পর বিষোজিতাঃ। ন জী-বেদাগতঃ কশ্চিদিহ জন্মনি সূত্র-छ। तिवार्भः न छेट्शटक्क इतिङ **ए** চिकिৎमत्त्र ।। ।। ।। ।। ।। ।। ।। ।। विषः क्षाटक विशेषटकाशशमा-एक। यथा ठवा विषदेशव स्वावत छ **छटेश**व है।। अश्रम विवरतर्ग जु त्त्रामर्थः श्रकायत्त्र । विजीत्य বিষবেশে তু স্বেদো গাতে যু জা-बट्डा। कृतीस विचटवर्रंग जू कत्ना गाद्धक् कायर । ठजूर्थ बिमदरश कू ट्याबा छत्र निर्ताध-क्र । त्राम्य विवय्वरण छू शिका-शास्त्रम् क्रायरक। यस्त्रे जू विषरव-इक्शबंदिशा अ-

श्रुटम नियदारम जू आत्मारजा वि-श्रम्हारक। मक्षमाजूनका स्थरक देवनरज्यम जाविकाः॥ ॥ प हंसारम निरम आरश्च जमा नगावि रव मृत्। समामि जिमनामरख मजरख ह मूर्ज्यः॥ এजानि यमा हिन्नानि जमा प्रहम्बः विस्। जन

দ্যাগদ প্রবক্ষ্যামি ষেন সম্প-माट**ः मूपः।। अर्कबृतः म**नामार्भ शिषक् छगद्व छथा। अछमारमा-ডা দাভবা॰ ভঙঃ সম্পদাতে দু-খ ।। তত স্তব্দিন্ ক্ৰতে বিপ্ৰা न निवर्द्धक एक दियः। विक्रानः ভতো ভিত্বা রক্তস্থান প্রধাবভি ॥ ॥। विस्व ह त्रक न थाए जगा बनावि त्य मृन्। मञ्च ब्रूथ्ट देव भीडन वह बनाट ।। এতানি যদ্য ৰূপাৰি তদ্য রক্ত বিষ প্রতং। ভত্তাগদ প্রবক্ষ্যা-मि रवन मन्भागाट मूथ । ड भीतः हम्मनः अर्छ मूर्यमः छः গর॰ তথা । यहाकानमा गृलानि निक्तात ज्ञाना ह।। विक्थ य-तिहर्देश्य शूर्वत्वदश क् माश्रास्थ । বৃহতী বৃশ্চিকালী চ ইন্দ্ৰবাৰুণি मृलकः॥ मर्भणका वृद्धः टेघव वि ভীষে পরিকীর্তিত। সিন্দুবারণ छथा हिन् ज्छीर कांत्ररक्षः भ नगाः भानक अर्बोण अक्षनः लिशन ७था। अरङ्गेनद्वाशहा-রেণ ভতঃ সম্পদ্যতে সুর্থং।। 🐞।। রক্তস্থান ততো গদ। পিত্তস্থান প্রধাবতি। পিত্তস্থানগতে বিপ্র वित्व क्रानित्र मृन्। উ छि छै-

তে নিগততে দহতে মুহতে তথা । गांबजः भीजना मारिव मिनः পশ্যতি পীতিকাং ৷৷ ধবলাশ্চ ভবেশৃक्शं न हाश्रान विकान-(छ । . विविक्विवा॰ उमा क्रिया॰ यथा जन्मानारक जूबः ॥ भिन्नानः मधूकः टेठत मधूराख घृठः छथा १ মধুসার মলাবৃঞ্জাতি শর্কর वान्का ।। इस्वाक्रिक्षक ग-বা॰ মূত্রেণ পেষধেৎ। নস্যাণ ত-স্য প্রযুঞ্জীত পান মালেপ মা-**छठः मण्णात्र मूर्यः। शिख्या**-न मिक्सा स्नाप्तानक गक्छि ॥ 🛊॥ স্বেশহানে ততঃ প্রাপ্তে जमा क्लानि स मृन्। भावानि তস্য রুদ্ধান্তে নিশ্বাসশ্চ ন জা-ষতে।। লালা চ সুবতে তদ্য ক-ঠে ঘুরঘুরাযতে। এতানি ষস্য ৰূপাণি তদ্য শ্লেমগত বিষ ।। তস্যাগদ প্রবন্ধ্যামি যেন স-भ्णामार् मूथ । जिक पूर्वक रका-भाजकी लाधु यथुगात्रकः॥ व-ভেষা লপ্তভাগানি গ্ৰাণ মূত্ৰেণ भ्यात्य । नमाः भानक कर्बी ত অঞ্চন লেপন তথা ৷৷ এতে-दैनदर्गभगदिन ७७: मण्यमस्य

मूथं । **(अधहान ब**िक्स वां ब् স্থানক গছেতি।।।।। তক্তৰপাৰি बकामि वायुक्तमगटक बिटव । আশ্বাৰতে চ জঠর বন্ধবাণ্ড ন भणां ।। जेमृभः जक्रा वार्यः मृक्डिजाक जायरं । . এতানি बमा बनानि छमा बाबूगछ विव॰ ॥ छमाभिष श्रवकावि यन म-ন্দাতে সুখ**া** শোণমূল পি-यानक द्रका र गक्रिश्रनी ॥ ভাগী বচা পিপ্ললি দেবদারু মধূ-कनातः नइ मिन्नूबातः। हिन्नूक পিন্ধৃ৷ গুডিকাঞ্চ কর্যাদ্দদ্যাচ্চ তमाञ्चन जिथनामीन्।। এरका ९ शहः अर्विवाणि इन्छ। चय-**जुवा (मववद्राग मृकेः)। अक्षन**-देक्य नमाक किथा नगां दिया-ষিতে। বাষুস্থান ততো মুক্ত্বা मञ्ज्ञकान• श्रधावि ।। 🛊 ।। विरम ৰজ্জগতে বিপ্ৰ তস্য ৰূপাণি মে भृगू। मृखिन्छ शैयल छमा ज्न মঙ্গানি মুঞ্চি॥ এতানি यস্য ৰপাণি তদ্য মজ্জগত বিষা। छमागन श्वकानि सम मृन्यं-नाटक मूथ ।। घृ छ वधू मक द्राक डेमीतः हम्मनः ख्या। **ब**ङ्माः লোভ্য দাতব্য পান তদ্য চ সু

.बरु ॥ करः अनमरक मृः भ करा जम्महारक मूथ । 'जंध विद्यान् ক্লভে ৰোগে বিশ্বত্তম্য নিকৰ্ত্ততে ।। अ।। मञ्जूषान ७८७। गद्या नर्ज-शानः क्षरावि । . वित्य जू मर्भ मः शास्त्र मृत् कमः यथा जत्र া নিশ্চেষ্টঃ পততে ভূমৌ কর্ণা-ভ্যা॰ বধিরো ভবেৎ। করিণা **সিচ্যমানস্য ব্লোমহর্ষো ন জাষ-**তে ৷৷ দভেন হন্যমানস্য দওরা-জী ন জায়তে। শক্ত্ৰেণ ছিদ্যনা-নস্য রুধির ন প্রবর্ততে । কে-भियू नूर्रामात्मयू रेनव क्रिम अ-ध्वमत्म। यत्रा करणे ह शास्त्री, **ह इन् शामि ह मन्नयः ॥ निथि-**লানি ভৰন্তীহ স গতাসু রিতি শ্ৰুতিঃ। এতানি ষদ্য ৰূপাণি বিশরীভানি গোতৰ ৷৷ মৃতস্ত ত विकामीयाद क्यांभमा वटा य-था। देवला खना न नमाखि य পশাস্তি ন্দশিক্ষতাঃ ৷৷ বিচক্ষ-बाख भनाखि मस्बोयिध नयवि-তাঃ। তদ্যাগদ প্রবক্ষ্যামি স্বয ৰুদ্ৰেণ ভাষিত ।। মযুরপিত্ত गार्कात्रशिख॰ नम्बाशिखक॰ । यৎमा माहिष भिखक धानानी मूल य्यत हा। अक्रूम जार्गत

वर्षण कार्यती 5 पठ॰ छवा । উৎপল্সা ৮ কিঞ্জক পদ্মসাজ यूषमा है।। अञ्चासि नंस्छागानि গোদ্ৰেণ তু পোৰবেৎ। এবো **१ भारत। यमा शास्त्र मास्य मास्य** न देव। कामाहिमानि परकोनि ক্ষিপ্ৰণ ভবতি নিৰ্বিষঃ।। কিপ্ৰ মে क अमालवाः मृजमञ्जीवत्मीयशः। जञ्जनदेश्वत नमाश किथा नमार विरुक्तनः । इंकि ভविषाभूदारन ত্ৰন্ধগৰ্মৰ পঞ্চমী ধাজুগভ বিষ-किया ॥ #॥ भी जन डेवाह । কীদৃশ এতদাখাহি সৰ্ব দেউস্য লকণ । কুশাপ উবাচ। অভঃ-পর প্রবক্যামি নাগানা ৰূপ मर्गमकेमा ह ख्या बाक्कन । मयामाफिक्षभूकत।। जशमार्गन षर्चेमा चेंक्। पृक्तिः श्रकारतः । मर्गा मरुमा ह ज्या ज्यामृकिः প্রজাষতে॥ নপু-সকেন দক্ষস্য वक्रमर्भः अकाष्ट्र । ऋषा मर्थ-गा वा गामा। पृष्ठि विक्रवरद्वाख-म।। अभारत्रवानि प्रकेमा प्रक्रिना **এव जायरछ। ७.ईगा वाथ ए**-ঊন্য তথা স্বেদশ্চ জাষতে॥ ব্লো-ৰাঞ্চঃ সৃতিকাষাল্চ ৰেপথু শ্চাপি कारा १ भवती अन्दरजात्वो

मिना मर्गा विवाधिकः ॥ नम्मकन्छ मन्नावाः कमारमन छू छाविछः। अन्नकादम जू मकाना मूमरक गर्दम बदन ॥ मूखमा देव द्यामर्कमाणाजानन देव कथः देवमा
किशः भन्नगान्छ मराजा। मर्वीकनाः भिन्निकाः स्वृजाः। स्मानाः
विकाः। तकः भन्नोकरमनानः
मर्भागान्छ भृथक् भृथक्। क्रकः मनगानान्छ भृथक् भृथक्। क्रकः म-

गात्रमञ्जान जान्दर्भः जना ए सूर्य ।। त्याच्याचा मना वर्गात नवायुक्त भाव वनाक वाम्रह्म श अध्यक्तिरामहाद्वर मुक्ति छ विक्र मानवा । अधिका क्र केंगा करणा गांदबर् जावरछ॥ बृष्टी तार उथा गारि मळान ৰভিজাৰতে। জাৰতে বেদনা তস্য উৰ্জুকৈক নিৱীক্ষত ৷৷ তস্য স্বর্গাৎ প্রতীকার বেন সম্পদ্য-তে সুখ । অক্ষৃত্য মপামার্গ প্রি यम् मध वाक्रिने।। এउৎमर्भिः म ৰাযুক্ত পান ত্যা প্ৰদাপবেৎ। এতে নৈবোগচাৱেণ সুখী ভবভি मानवः।।।।। देवटमानानि हि पर्छ मा भृग् बनानि वानि ज्। स्वयः कारणा नाना ह नरवाष्ट्रि रव मना।। मूक् ह अवना बमा वा ত্মান॰ নাভিনন্দতি। তস্য জ-ৰ্য্যাৎ প্ৰতীকাৰ বেন সম্পদ্যতে मूथः॥ अन्यम्भाः मरगामृताः गृह ध्य मध्युल्। नितीयार्क भनाम ঞ্চ শ্বেতা চ গিরিকর্ণিকা ।। গো মূত্ৰেণ সমাযুক্তণ পাৰণ নস্যঞ্চ षाभटर्यः। अय देवत्यान प्रकान।

मामन्त्रविक्रिक्तिः ।।०॥ पृत्य सर्गार बाजीकाम अवस्थाना । बाक्ष विश्ववता स्रूप अपना तो का रे क्रिकिट हमगट देवर बड़े: निन्तार न्त्रामन । अवय मनिः । बीक्य कार्यका। अवानि हुन्-हुनाम्रक नुसारकेगा गर्ना १ । अवस्थित धनकारि एक मण्या मार्ड मून ।। समक स्माध्क देशव क्लोजन्समाना क्लात्र। य मू यश्-কসারক শেতা চ পিরিকর্ণিকা।। এতারি বম্বভাগানি পেষ্যেৎ শী-তবারিণা। পান বেপাঞ্জন নসা मुधी खबिक मानवः॥ अ॥ शूर्वा-द्ध हत्र विद्धा वशाद्भ कविष म्हरत्र । ज्यनदारङ्ग हरत्रदेवनाः **मृकः मक्ताहरता ७८१९।। जा-**হার শচাত্র পূশাণি ত্রাহ্মণানাণ विमू ब्वाः। मृषिकाः क्वियानाक व्याहादवा विक्रमख्य ॥ देवभा यकुक खक्ताक मूखाः नर्वाभिन ম্বৰা।। অপ্ৰভো দশতে বিপ্ৰঃ हिंदिया मिक्टिशन जू। वायशादर्थ मना देवनाः भन्नादेव मृख जा-परम् ।। भवकारम जू मधारश থীত্যমানা মহাবিষাঃ। অবেলা-ৰাণ দশস্তে বৈ বৈথুনাৰ্ত্তা ভুজ-ক্ষাঃ।।।।। পুস্পগদ্ধাঃ স্মৃতা বি-थाः कवित्रा कम्पनावशः। देव-

मान्त वृद्धाका देव भूकाः नृष्या गिक्षकः ॥ १॥ वाजः दक्षाः श्रेकः काषि वश्यक्षत्र्व्याः ॥ व्यक्तिः

व्यातात्मम् शरित्वम् एकिसम्ब त्मम् ह। वमस्य वाक्षभाः मर्गा का यबादत ठळूम्भट्य ॥ कविद्या स्य-তে নিজ্যণ ভোরণেষ্-পুরেষ্ চা र्गाणानाययगानाम् भनारमम् छटियू ह।। (भार्ष्टेस् अथि वृरक्ष्यु विश्व देवगा वमिष्ठ है। व्यविविद्धः क् कारनकू निर्याद्रक् वरनकू ह।। भूगागादा भागात ह भूजा विश्व বসম্ভি চ। শেতাশ্চ কপিলা লৈচ-व रव नर्गा खुननथा ।। मान्ति का वनिष्यां विश्व बाक्षशा एड व्देशः खृञाः। ब्रक्कवर्ग मृन्वर्गाञ थवान यविमिष्णाः॥ मृद्याथ छ। खथा विश्र कविवा (ख जूकक्याः । नाना विष्ठिव ब्राक्षीं विक्री ৰৰ্ণ সমিভাঃ।। বাণপুষ্প সূৰ্বগৃত্তা বৈশ্যা স্তে চ ভুজন্ম নাঃ। কাকো-দরনিভাঃ কেটিৎ ষে চ অঞ্জন मिलाः॥ काकवर्गा धृमुवर्गा एक শুদ্রাঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ 🖦 যস্য স र्भिन मरहेना मः भ मनून मखद्र ।। बानके विकानीमाद क्याशत्रा

ना रहत वर्षा मुक्ता जनावन देशा ए शृद्ध वावशास्त्र क् वान्किश **छक्का प्रकित्य भारम** करबाहिः পृष्ठे ख्या ॥ इतनम खुनक भ-त्या गरागत्या निमक्कि। वि-মজ্জ ভিষ্ঠতে চৈব শখুণালো ৰুহুৰ্মুহঃ।। সৰ্বেষা সক্তে ৰূপ क्षिकः भन्न(भोखयः। अनस्मा দিশা পূৰা বাসুকেন্ত ছতাশনঃ ॥ मिना जनकरमाका कर्का-हेमा जू देन शंजी। भिक्तना भन्न-नाजमा गराभयमा वागुका ॥ উত্তরা শখপালস্য বৈশানী কে-রলস্য তু। অনন্তস্য ভবেৎ পদ্ম वानू (कः माजि (थार शन ।। व-ন্তিক ভক্কস্যোক্ত কৰোট্য্য ত্রিরেথক। পল্পস্য ভূ ভবেৎ শ-ছা॰ শূল মশ্বরসা তু॥ শ্র্মজাতে र्खरक्ख जनकार्यक्रिक कर। ष्मबः भनिका विथः कविको শথ বাস্কী।। মহাপদ্ম ভক্তক-क रेवरमा विश्व श्रकीर्खिकः।

भद्य करकां हेरको मृत्यो नमा एक यो मनीविजिः॥ जनस न्ननिदको ख्दको वर्गछा उत्तम इदवे। वामू কিঃ শথপালক রক্তৌ ক্ষিসমূ-करने ॥ **उक्**कन्त्र मरामब रे वार किये क्ष्यून्या । अब क ट्डिकिको विक्रमत्यो हरको प्रकृ बकुशा ना एक राम वृक् क्टा ताजान मय नावकना बतनी मूर-भाषा शृहात्नकान् मिषिकतान् বিদুঃ। পূর্ণসক্তঃ পভাকা চ কা-कन मन्य ख्या। नत्रामा यानि-কা কৰু জীবঞ্চীবেতি সুত্ৰত।। এ-ভেষা দৰ্শন ভেষ্ঠ কন্যা চপ্ৰা-তিসূতিকা। চতুঃৰক্টিঃ সনাখ্যাতা ভোগিনো মন্তপদ্শা। অদৃশ্যা স্তেমু ষড্বিংশা অকত্তিংশা মহী-ধরাঃ। বি শাস্ত স্বলিতাঃ প্রো-ক্তাঃ সপ্তমঙলিন তথা।। রাজী-বাস্ত দশ প্রোক্তা দকাঃ যোডশ नक है। इन्तृरका मून्यूकि देन्हर टिष्डः ध्यर्थवार्नः॥ नागश्र-न्न जूननाथा। निर्दिश (य চ नर्म गाः । এব কেবন্ত সর্পাণাণ শত দিন-বতি স্ত ।। বরাহকর্ণ গজপি-अंगिक गान्नादिका निधन (नव-দারু: মধুকসার সহ সিমুবার

হিঙ্গুঞ্চ পিফুা গুডিকা চ কার্যা ॥ 🛊 ॥ সুমञ्ज क्रवां । १ शुक्रवान পুরা বীর গৌতমদ্য প্রজাপতিঃ। मक्न गर्मागानाः क्ष वर्व वि देश क्या । क्या व मन्यूक्तका गान् मेंगा कलगा मबिकः। वि-त्मिर्के**क निक्**या निवन भारतन न है। बारन बानि गक्या। छ क्रणांक नेदायिन। बोद्राटमाज्य-**छा लि**था। शायदंगन विद्याब-भाः॥ शृक्रदंबिधिवधीतं स्थि मृ-बाकटेंछः बटेनः। गन्न भूटलान-रादेशक बाक्षणनाक छर्ग देनः ॥ रि प्रमा। भूकरडीह नाग्धन् छ ক্তিপুর:সরা:। ন তেষা সর্প-তো বীর ভষ ভবতি কর্ছিচিৎ।। रें छि छिबिरमा 'भक्ष्मीकरम् ॥ #॥ সুমন্ত রুবাচ। তথা ভাত্রপদে মা-দি পঞ্ম্যা শ্ৰদ্ধযান্বিভঃ। তথা-निथा नरता नागान् क्रकवर्गानि वर्व देकः ॥ शृक्रत्यकाम शूरेकाक मर्भिः भावम अश्वरेलः। छमा जू-ক্তি সমাযান্তি পদ্নগা ক্তক্ষকাদ্যঃ া৷ আসপ্তমাৎ সলাভস্য ন ভবং मांशरका ভरवंद । कन्याद मर्ब-श्रवाक्षित नागान् देव शृक्षदबद्धः ।। ইতি ভবিষ্যে পঞ্মীকলে।।।।।।

,সুমন্ত রুবাচ। তথা চাশ্বযুজে याति शंक्याः अक्नम्न। क्र्या जनभगना गान् हेलागा मह भू-करवर ॥ वृत्वानकाञाः भवमा নাপৰিয়া বিশাস্পতে ৷ গোৰু-टेनः भवता बिदेव इंटिकाक वि विटेश खेशा ॥ अखुमा। विशिवणा-गान् एकि जंका नमविष्ः। श्-करबर अक्रमार्कृत छमा स्मिना-मर्या मृगा। नागाः श्रीण खब-छीर मास्त्रि मात्यां वि मानवः। **मु**भाखि ब्लाक सामामा साम्र । শাশ্বতীঃ সমাঃ।। ইত্যেতৎ ক-থিত বিপ্র পঞ্মীকর মুত্তম। পন্নগামুচ্যতে মন্ত্ৰ সৰ্ব সৰ্প নি-रिष्यकः॥ अय् अक्र अटल नः कि স্বাহা। ইভি ভবিষ্যপুরাণে শত· সাহস্যা সংহিতাষা পঞ্মীকল্পে ।।।।।। অন্যক্ষ। সূত উবাচ। প্রাণেশ্বর• গারুডঞ্চ শিবোক্ত• थवनागारः। श्रानानगाति थव-ক্যামি নদ্যা॰ দক্টো ন জীবভি।। िंछ। वन्त्रीक देननामी कृत्न ह विवदत्र ভद्राः। म॰८म द्रिशाज्यः यमा आक्ष्म म न जीविधा यर्छा। क्ष कर्करि यारव मृलारभवा मधा-मियू। कका त्यानि गत्न मस्बी

मध कर्त्नामतामिष्। मखी मख-थरता जिक् नंशािनः कानम् छकः। बर्ख्य बार्श ह जीवाया॰ शृर्छ ह नहि कीर्राष्ठ ॥ शुक् मिनश्राष्ठ ज्ये इक्नाम उखागदा (न-नाः अराः अविक्रिनः निर्मात गतिवर्ड देन्शाः नागरकाम करमा **ब्ब्बट्स** द्रारको वान विवर्खटेनः। ल्यार्कः क्रिश क्षेत्र सक्रम **छोम ने**त्रिण्ः ॥ करकारिंग छ्ला खुकः भरमा यहाभस्य जार्गदः । अधः भटेन कटता त्राष्टः क्रिन-क न्हार्या अराः।। तात्वी मिया সুরগুরো র্ভোগে স্যাদমরান্তকঃ া পঙ্গোঃ কালো দিবা রাহুঃ স্থলি-क्ति मह इडिशा यामार्क मिन म•सः म (बना॰ कानवजीक्षरत्र । बान वि यछ् वि वािक यूग कृ द्रिक ভাগতः॥ मिवा यछ् दिनं নেত্রাদ্রি পঞ্চ ত্রি বসু স্বা॰শকৈঃ! भामाञ्चल भामभ्रं छतः जा-नूनि नित्रक ॥ नाजि त्रि छ-न ७ ८ करले नामा भूटिकरण । কর্ণযোশ্চ জ্রুবোঃ শুদ্ধে মস্তব্দে প্রতিপৎ ক্রমাৎ ৷৷ তিপ্তেক্ত স্থান্ত कीरवन पू॰रमा मिक्कवजागरक । কাষদ্য বামভাগে তু স্ত্রিয়া বা

प्रशेष करोष्या अभवत स्रोठा मार्ट्स निवर्टिंड ह मर्चनार । जाश्रमः नवन रीजः र नायः न्कारिकाननः।। जाएका कि ণাপদ বীজ তদা চত্ৰিব । विन् शक्यत्रक्छ नामा मूख्य वि-**डीवकः ॥ वर्षाबएः ड्डीवः मा**र नविगर्गः ठेजूर्विथः। श्वेम अक जटन স্বাহা।। বিদ্যা ত্রৈলোক্য রক্ষার্থ॰ গৰুডেন ধৃতা পুরা। বধেন্সুনা চ नागानाः बूट्य १थ श्रान्यः बा . সেৎ ৷৷ গলে করু ন্যাসেৎ পশ্চাৎ क्षि टेठव विद्रमध्यः। ज्ञास्य या श्वश्रद्याः भाषग्रुरभ ह। नाम नित्र ছঃ। গৃহেপি লিখিতা ষত্ৰ তন্না-গাঃ সংগ্রজন্তি চ। সহসুমন্ত্র क्खा मृजः कर्न ४० छथा।। यः न्गृटर गर्कता जला किला नागा স্তাজন্তি চ। সপ্তলক্ষ্যা জ্পা-देव निक्तिः थाश्वा नूतान्देतः ॥ अय् मूवर्गदारथ अकुष विश्व क পিণি স্বাহা। এব ঞাফীদলে পদ্মে ष्ट्रल वर्षपुत्रः निर्भः।। नारे यखः ৰাবিধারাভিঃ স্নাতো দক্টো বিষ ভাজে । ওন্পকি স্বাহা। অ-দুঠাদি কৰিষ্ঠান্ত করে নাস্যা-ब (महरका। रक बरकु रूप मि-

'रम छ नामरना भंतरण' दिआ। মাজাৰতি চ' তহাৰা ৰগৈণি विकामभाद्र ॥ वक्क निक निकान मार्थः म मृष्ट्री मानस्विद्यर।" ७ द्रौ द्रौ ही जिल्लादेव नयः॥ कर्ल कथा विष॰ विषा पर्छकमा বিষণ হরেছ। অ আ ন্যাসেত্রু পা-माला है में श्रान १थ कार्बाम ॥ छे छ व थे किंग्डिटि ७ मार्डी विनारमः मुधीः। कामि छ वकु **(मर्ग र जर्ज जः इ॰म म॰**यू खाः ॥ इ॰रमा विशामि उ रदार জ্ঞো ধ্যাতো ২থ পূজিতঃ। গ-क्ररण १२ मिठि धाषा वर्गावि कर्ता किया ॥ इ मख भाव विनास्ट॰ विवामिहत्र मीतिङ॰। नामा इ॰म॰ वायकत्त्र नामा गुध निरत्राधक्र ॥ मखा श्रत् म-केंकना प्रज्ञां नामिभड॰ विषः । न वायूना नमाक्रया मखाना॰ गत-न श्दाः॥ छत्नो नारमक्रिक वा नीलक श्रीम मः न्यादार ॥ ।।। नी छ॰ প্রতাদিরামূল॰ তঙুলান্তি विवागङ्॥ भूनवंबा कनिनीना॰ मृतः छळ ज बीषृषः। मृतः छक् बृश्लाख करका है। देशितक विक ।। অন্তি মৃ ফি ঘৃতোপেত লেপো

१ व विवस्त्रातः । विक मृक्तिः न ব্ৰক্লেড উক্ল পিৰজিৰো মৃত ।। नकाबब तिबीयमा नूनः मृक्त-क्रम् । . गर्वान्द्रमञ् काशि भानाका विवस्द्धत्वय ।। शुँ भा-मनापि विषक्ष । क्लमा विम-र्गान्ड भान बनामि क्रन्टवर ।। नास्त्र (यात्नी वर्णं रुनाः क्र शात्रम कनाविनाः। जथु। म প্ত। ফ সাহসু॰ গরুত্মানিব সর্বগঃ॥ কবিঃ স্যাৎ শ্রুতিধারী সাংৰশ্য-खी म्हायू द्वाश्चय । विषहर मा। कथा उष्ण्नि र्या मन्नःजा अवन् ॥ देखि भाक्रत्छ श्राटनश्रदः शांक्ष नवार्षः ३२ वशायः ।। ।। ।। जगद्रका जिल्ल बाठ। नागामत्या २थ जातामि हमञ्चानानि वर्ष ह। সূত্रक ए-केटारकेंछि मश्रमक्ष मूंगारक ॥ শেষ বাসুক্তি ভক্ষাখ্যাঃ কর্ক্কোটো হজো बहायुकः। শথপালদ্চ ञ्चलिक देडारकी नागवर्गकाः ॥ मनाक नक बिश्वन भञ्जूका वि-णाः क्यार। वित्यो नृत्भो वि लो मूटजो को को नार्गम् की-र्खिको।। छात्रयाः शंकमङ एक ভ্যো জাতা ছসখ্যকাঃ। কণি

মণ্ডলি বাজীল ৰাভ পিত্ত ক কামকাঃ।। ব্যন্তরা দোষ বিপ্রা एक नर्गा सर्वीकताः **मृ**काः। क्र भाज नाजन छैल विकिन्द्रनश-बिनः॥ रगानमा यसका मीर्या य-श्वरेन बिविदेश श्विजाः। त्राकीना শ্চিত্রিতাঃ শ্লিখা স্তির্ব্যগুর্দ্ধক রা-জিভিঃ।। ব্যস্তরা নিশ্র টিক্লাশ্চ ভূ বর্ষ।গ্রেষ বাষবঃ। চতুর্বিধা ত্তে ষড্বি॰শভেদাঃ ষোডশ গো-ব্যস্তরা একবি শতিঃ। বে १ নুক্ত-काटन काषरख मर्भा रख वाखताः শৃতাঃ ॥ আবাঢাদি ত্রিমাসেঃ मााकार्र्डा गाम ठजूकरम। अक কানা শতে দে চ চদারি শৎ প্র-সৃষতে। সর্পা এসন্তি সূতো তান্ विना औ पूर नर्नु मकान्॥ छ-শ্বীলতেকি সপ্তাহাৎ হুষ্টো মা-मास्टरवर्षः। बामगाश्य य-वाधः माक्तकाः मृः मृश्म र् नाए।। दाखि॰मिन वि॰मणा শ্চভসু ত্তেষু দ ড্রিকাঃ। করালী मकती कालताजी ह सममृष्ठिकाः ॥ এठा छाः मितवा मः खूँ। वाम ছ কিণপাৰ্শ্বগাঃ। ষ্মাসামুক্তে क्विं कीत्व रिष्ठे ममा दव ॥

नागाः স্থ্যाहि वाद्मणाः मश्च छे काहिवा निणि। एवाः वह श्र-

अलिकः नर्वमित्र ॥ শশ্মেন-বা মহাজেন সহ তদ্যো-परमा २थ वा। **बरमा दी ना**फि का यख यखद्र॰ कलिटकानयः ॥ जू-किः मकालः मर्बे मर्बिष्टिण वि-निर्फिटम् । इन्डिका छत्रनी या-**ी यूल॰ পূৰ্বাভ্ৰমাশ্বিনী।। বিশা**-খার্জা মঘালেষা চিত্রা প্রবণ রো-হিণী। হস্তা মন্দ সজৌ বারৌ প-🕶 মী চাফমী তিথিঃ।। ষষ্ঠী রিক্তা मिवा निन्मा शक्ष्मी ह हजूर्क्षमी। সন্ধ্যা চতুক্ত্য দুক্ত দগ্ধ যোগা-क ताक्यः।। এक वि वहरवा पर-ना मरो विकक्ष थिछ । ज्रम न মবগুপ্ত স্যাদ্দ শ্বেব চতুৰিধ য় ত্ৰেষা ছেক ক্ষতা দংশা বেদনা क्रिया नृगाः। नकः देवकाञ्चि কৃশাভা দ শাশ্চ যম চোদিতাঃ ।। माही शिशीलकाम्भागी कर्छः শোষ ৰুজান্বিতঃ। সতোদো গ্ৰ-हिला म॰भः मविषा नाख निर्विः यः।। प्रकानस्य मृनागृरङ् वन्त्री-कामान कार्रेदा। तथा म-क्या भागात ह भागात निक्-मक्ता। दील हजूनाय मोर्स

পৃত্হ ২জে পৰ্বতাগ্ৰতঃ। বিল-षादत जीर्गकृत्य जीर्गदवश्रान ज-ডাকে।। শিগ্ৰ শ্লেষাতকাকেষু জমৃত্যরণের চ। বটে চ জীণ-প্রাকারে খাস্য হৃৎ কৃষ্ণ জতুণি ।। ভালে। শথে अला मृक्ति विवृदक नाञिभाषट्याः। ष॰रभा १ खजः শুভো ভূতঃ পুশাহস্তঃ সুবাক্ मूथीः। नित्रवर्ग मयानक खङ्ग-বস্ত্রো ইমলঃ শুচিঃ। অপদারা-গতঃ শস্ত্ৰী প্ৰমাদী ভূগতেক্ষণঃ ।। विवर्गवामाः भागामिहत्सा भ-দাদবৰ্ভাক্। শুষকাষ্ঠাপ্ৰিতঃ থিম স্তিলাক্তককরা শুকঃ ৷৷ আ-র্দ্রবাসাঃ রুষ্ণ রক্ত পুষ্পো হেম-**गिरताक्र** । कठमकी नथरहिनी श्वमण्यृक् शावतम्बकः ॥ (कम नुषी ज्नाक्षी मुका मृजा खरेबः कलः। इषानगवाश्यरकृथा यनि দূতস্য চাত্মনঃ।। আভ্যা॰ ছা-**जा॰ शृक्षेयानाान् विमा९** खी भू नभू प्रकान्। मृठः न्ण्यां यकााजः जित्रम् मः मूमाश्दत्र া দূত...্ কীবগার্শে শুভো मृत्ञा मृत्का श्नाब मयागणः ॥ জীবো গতাগতে দুষ্টঃ শুভো

मृष्ठ निरवण्टन। मृष्ठमा वीक् थ मुकी मा भूकी मकी कि निक्रिका । विভटक खना वाकारिस विंग नि र्विष कालजा। जारेमाः बरेद्रकः कारेमा कर वर्रेग किंब मिशि विंशा ॥ अ तर्जा वम्यान् वर्गी हैछि ক্ষেপ্যশ্চ মাতৃকাঃ। বাভাগীন্দ্ৰ जनाचाटना वेटर्गबू ह हजूकेय॰।। निश्रकाः शक्याः माः खताः मः का यूर्यानसः। मूरकी मृखना वाक् शार्को वाखाशी यश्ररमा इतिः ॥ প্রশস্তা বারুণা বর্ণা অতিদুষ্টা ন-পু॰সকাঃ। প্রস্থানে মঙ্গল বাক্য॰ গৰ্জিত শৈষ হস্তিনোঃ।। প্ৰদ-ক্ষিণ কলে বৃক্ষে চাসস্য চ ৰুত্ किछ । खजा भी छा निभकाः मूर तीषृणः माप्तिकत्य।। अनर्थ भी-তাথাক্রন্দো দক্ষিণে বিরুত ক্ষুত । (बना वित्था नृगःकना। शो र्मे अपूत्रक थएको ॥ कीताका म-ধিশৠাৰুচ্জ্ৰণ ভেরী ফলণ সুরাঃ । তথুলা হেম রূপ্যঞ্ সিদ্ধার্যভি मूथा अभी।। मकार्धः मानलः का-क्र श्रीलनाषत्र जातज् । श्रमञ् हेट्डा शामाय गृर्शान्क कश-र्षिकाः॥ टेडलः केशाल केशिंगा नित्यद्य। जन्म नकरम। विषदिशा-

শ্চ সপ্তস্য ধাতোদাৰ্ভরাপ্তি-**डः॥ वियम**'रना ननांहे॰ योडा-ভো নেত্ৰ॰ তভো মুখণা আস্যা-कत्रननाजीएको शाकृन् आंदशाजि हिक्रमाथ।। हेजादारम नक्ना-नि।। का। अधि क्रवाछ। बद्धशा-तोषदेश मंखे **हिकि** श्रा॰ श्रवणा-•िष ७३ वर्गा ७१वर७ नीन-क्श्रीरशिक ॥ **ज**পनाषियशनिः म्यादमोयधः कीवत्रकःगः। माकाः শক্লজদ॰ পেয় ছিবিখ বিষ মুচ্য-७ ॥ জक्रम॰ मर्थ म्यानि खकानि স্থাবরণ বিষণ। শাস্ত স্বরান্বিতো ব্রহ্মা লোহিত তারকঃ শিবঃ।। বিষতে নাম মন্ত্রোয়ণ তাক্ষঃ শব্দ नरः गृञः। ज्ञल मश्नार् श्राप्ता-ষ। গৰুড বিলাস শিরসে। গৰুড শিখাবৈ। গৰুড বিষভঞ্জন ৩ প্র-ভেদন ৩ বিত্ৰাস্য ৩ বিমৰ্জ্য ৩ কবচাষ। অপ্রতিহত শাসন• ব॰ द्भँ क है व्यञ्जाय। উগ্ৰূপধাৰক সৰ্বভয়ন্বর ভীষয় ৩ সর্বণ দছ ৩ ভস্মী সরু সরু স্বাহা নেত্রাষ। मश्चवर्शाञ्च यूग्राके मिलन यत কেশরাৎ। বর্ণ রত্ন ৰহিশ্চাভূৎ কৰ্ণিক মাতৃকাযুক্ত। ক্লন্থা श-**षिष्टः जन्मबी बागहरू जतन च**-

ति ।। जन्ने । नार्टमबंगीन् विषरज्जामिजाः कनाः। शाबः বজু চতুকোণ পার্থিব শক্ত দৈ-वछ ॥ वृद्धार्क माभा भवाक শুক্লণ বৰুণ দৈবত। ত্ৰাসুণ স্বস্থি-क मुक्कक टेखनकः नङ्गिटेमनकः॥ वृद्धविष्मृवृष्ठ॰ वायू देमवष्ठ॰ क्रक यानिनः। अनुश्रीमान्ती मर्या পর্যান্তেষু স্ববেশ্বসূ ॥ সবর্ণনা গ-वाहनदिखिए मुनारम् क्रमार । বিষতে চতুরো বর্ণান্ স্ব মঙল সমন্বিষঃ। অৰূপে বর্তমাত্রে व्याकात्म भिददेनवरछ॥ कनि-श्रीयश्र भदीटल नाटमलमामा य-कात्रः। नागाना गानिवर्गाण्या च-মণ্ডল গতায়্য:সং!৷ ভূতাদি ব र्गान् विनामा अङ्गुर्शामाञ्च भर्वम् । ख्यावामि खगमार्गानम्नीयू ना मिबुधः॥ न्यर्भनात्मव जादकान इटल इना वियव रा मलना नियू ভান্ বর্ণান্ বিষতে করখো জি-छान्।। (अर्थामाङ्ग्लिखि पर्म् नां ि शातियू भईम् । मुका মতঃ সর্বণাভ মানাভে স্তহিনপ্র ভেণা সন্ধুনারুণ নাক্ঠাদাকেশা-স্তাৎ সিতেভর । ব্রহ্মাণ্ডব্যাপি-ন॰ তাৰ্মণ চক্ৰাখাণ নাগভূষণ ।।

नीलाओं नाम माश्वानः। यहाँ मकः श्वाद्यव्यः। अवः जार्काश्वादमा वा-काश्वादः माश्वाद्यशा विदयाः श्व-खि जार्काकत माखः श्विज्ञपूर्व वियागशा। जार्काश्वः ममूलामा ज्ञ नक्षाश्वादानायः।। अर्या-

৷ আকাশাদেশ ভূবীজঃ পঞ্জা-ধিপতি শ্বনুঃ ৷৷ সংস্কম্ভবেতি বী-ষাতো ভাষ্যা স্তম্ভবেদ্বিব । ব্য-তাস্ত ভূষণা বীব্দো মন্ত্রো হ'য় माधुमाविजः॥ मःक्षवः क्षाव य भागः भका म्यः मः इत्त्रियः। मर्छ মুখাপযেছৈষ স্বজপ্তান্তো ভিষে কতঃ।। স্বজপ্ত শন্ধ ভের্ব্যাদি নি-স্থৰ অবণেন ৰা। সংদদাত্যেব সংযুক্তো ভূতেজো ব্যত্যযাৎ স্থি-ভঃ।। ভূ বাযু ব্যত্যযাম্বস্তো বিষণ मःकामराजामा। अखरं । नि कः तथार्थ। वीकाशीन् कनाभू-ভি:।। এতৎ কর্ম নধেমন্ত্রী গরু-ডাফ়তি বিগ্ৰহঃ। তাৰ্ক্য বারণগে-रङ् उर्जनाज्ञागटरिष्ठियः॥ जानू पक्षेन्यू मूं मिठ॰ यथा श्रीवीक ना-ষ্টিত। স্নান পানাৎ সর্ববিষ জরা রোগাপমৃত্যুদ্ধি ।। পক্ষি পক্ষি মহাপক্ষি মহাপক্ষি বিবি

স্বাহা। পক্ষি পক্ষি নহাপক্ষি ম राशिक कीकी वारा।। बादन তৌ পক্ষিরাড্ যন্ত্রৌ বিষয়াবভি-মন্ত্রণাৎ। পক্ষিরাজাষ বিশ্বহে পক্ষি দেবাষ ধীমহি তল্পো গৰু-**एः** श्रदामगा ।। वहित्ये भार्ष ७९ शृद्धी मञ्जीत्को **म**ञ्जि तो। मकला नामनी एउ नी-नक्शीन भीतिजः॥ वक्तः कर्र শিখা শ্বেত ন্যমেৎ স্তঃম্ভ সুস্ণ-क्षृः छो। इत इत सायाय नमः क्निर्मित ह नित्रम नीव क्रेश्य देविनिथाः ।। कालकृष्ठेविष छक পাৰ স্বাহাথৰ বৰ্ষ চ। কঞ্চিনে ब क्रिवान त्रिवः প্रভाক শব্ৰিভিঃ পূৰ্বাদ্যৈ রাননৈ যুক্ত শ্বেত পীতারুণাসিতৈঃ।। অভ य॰ वत्रम काश॰ वामुकिक मध-म्जूरेकः। यख्डागवीज भार्यञ्च গৌরী রুদ্রে। ২সা দেবতা ॥ পাদ জানু গুৰা নাভি লৎ ক-क्षेत्र मूक्ष्म्। यञ्जानीबामा क-तर्या त्रक्षामाक्नीष् छ ॥ छ-व्ह्निगामि जम्डाम् मर्वमङ्केरमा न्। कादेवन मः इदत्र कि थ॰ वक्षया गृज मूजरा॥ कनि-की ब्लार्क्ष विका विद्यानाः थ-

मृष्टि र्क्षवः। विषनात्मा वागश्ख यनाचिन् मिक्न क्रतः॥ नत्या जगवरा नीलक्शेषिः। ज्य-লকণ্ঠচিঃ সৰ্বজ্ঞ কণ্ঠচিঃ কিপ ७म् वाशा। नत्या नीलक्छाय देनक गर्ववियाशहाय। नम एख क्रजमनाव देखि मुगार्क्कना विष॰ विनगाि ॥ नमा्णशः कर्वजाः প্যা উপনেত্রা বিধানতঃ। যজে फ्र जिवादनन नीन और भटर श्र-तः। विषवाधि विनानः गाए ক্ষা ৰুজ বিধানতঃ।। ইত্যাগ্ৰে-ত্রাকালে ত্যা শুভাশুভস্চক-ष यथा। भानाम महीकत्र ता-জিলাদ্যা জাতৈয়ব সৰ্বে ভষদা जुजनाः। विलाका नर्भः यनि নিৰ্বিকল্পা নিবৃত্ত বিপ্ৰস্য শুভ বিচিন্ত্য ।। পাষাণ সণ্স্তন্তিত কণ্টকেষু দন্বা পদ বাস্তি বিন-ঊবিসাঃ। সর্পেচ্ছ্যা পঞ্চন খা-ভিধেষঃ প্রযাণকালে সভু বাম-ভাগে॥ मृकः चटें मिकिङ्ग-मूमठाठा खिरहे । भरशास्त्र यमि ब्रोकानाजः। ইতি मर्थः। ইতি বসন্তরাজশাঙ্গনে ১৫ বর্গঃ।। मर्भक्कालिका खी वृंकवित्नवः

। जदभवायः। जीका २ विष দ স্ট্রা ৩ বিষাপহা ৪। ইতি রত্ন-याना।। महा ६ मर्शकहानी ७ वियनाणिनी १। इंडि भय-ठिखका॥ मर्गक्काली ची मर्गक्कालिका। इंडि नक्ति हिन्दि वा ।। मर्गगन्ना जी वृक्ववित्मयः। यथा । ছত্রাকী সর্পগন্ধা চ রসনা চ পলक्षा। ইতি জটাধরঃ॥ সর্গঘাতিনী স্ত্রী সর্পকন্ধালীভে **एः। यथा। मर्लमङा मर्लनामा** नर्शाभी नर्शिविनी। त्रव्यामा ॥ मर्भाजृनः भू नम्रकः। इंछि रहम-**हिन्द**ः ॥ मर्भमर्ग्हः । भू॰ मञ्जीवृक्तः। इंडि नक्ठिका ॥ मर्गम खें। जी वृन्धिकानी। इंडि त्रव्याना ।! नर्गम सिंका जी जर्म नी। देखि রাজনির্ঘণ্টঃ ।। मर्भम्खा खी रेमःश्ली। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ।৷ मर्गमधी जी भारकी। इंडि व्राक्रनिर्घन्छैः॥

मर्गम् औ जी नागम् छी। इंडि

वाक्तिर्दन्हेः॥ मुर्गवननी औ वन्नाक्तकारकी . रेजि बाक्वनिर्यन्धेः ॥ मर्गनामाञ्जी मर्गककानीरजनः। रेखि बच्चमाना ॥ मर्भभूनी खी नागम् छी। देखि রাজনির্বণ্টঃ ৷৷ সর্গকণজঃ পু॰ সর্পকণজাতমণিঃ । इंडि मब्द्रवादनी ॥ সর্গভুক্ পু॰ মধূরঃ। ইতি ছেম-চন্দ্ৰঃ।। সপভশকে ত্ৰি।। नर्शमाना जी नर्शक नीएकः। रेि काहि र द्रवनाना।। नर्श-नामा इंडि मार्थार्थः॥ সর্পরাজঃ প্রু বাসুকিঃ। ইত্য-- यदाः ॥ मर्गना औ नागवन्नी। देवि त्राक्रनिर्घकः॥ সর্গসত্রণ ক্লী সর্পনাশকষজ্ঞ-वित्नवः। यथा। जनत्मज्यः স্বপিতর শ্রেছা তক্ষক ভক্ষিত। यथा जूराव मः कुषः मर्गान्मत्व नर विदेकः ॥ नर्गमत्व मनि-कार्यो महमानान् बरहादगान । मृत्केख । ध्व मः विश्व खक्क वः **শরণ মধৌ।। অপশ্য॰ उक्त**क॰ তত্র স্নাজা পারীক্ষিতো দিজান

। উবাচ ভক্ষকঃ কল্মান্দহেছ-তোরগাধমঃ ৷৷ ভ গোপাষতি রাজেন্দ্র শক্তঃ শরণ নাগত।। তেন সংস্তম্ভিতঃ সর্প স্তম্মানা-গৌ পতত্যগৈ।। পারীকিত ইতি শ্ৰুষা প্ৰাহ ৰ্দ্বিজ উদারধীঃ । मर्ब्स सक्ति विथा साम्रो কি মিতি পাত্যতে ৷৷ তচ্ছুত্বা জু ह्यू विथाः मरहसं ठकके यर्थ । তক্ষকাশু পত্ৰেছ সহেন্দ্ৰে। মরুত্বতা।। ইতি ব্রন্ধোদিতাকে-रेनः ज्ञानानित्यः श्रामानाः । বভূব সংভ্ৰান্তমতিঃ সৰিমানঃ সভক্ষকঃ ৷৷ ত পতন্ত কিমা-त्नन **मर् ७कक यम्रतायः।** वि লোক্যাঙ্গিরদঃ প্রান্থ রাজানং ७ वृङ्ग्लि ।। देनम प्रमा मन् स्याख्य वश मर्शि नर्गतार्। ज् নেন পীত মমৃত মথ বা অজরা-यतः ॥ জीविङ यत्र कट्डा র্গতিঃ স্বেনৈব কর্ম্মণা। রাজ॰ স্ততোন্যো নাস্তাস্য প্রদাতা সু-थ मूः थरयाः ।। मर्भ को त्राति वे इाष् कृतृष्ठाशामि कि नृ न। পঞ্জ মিচ্ছতে জন্ত ভূ জ আর-ৰা কৰ্মা তৎ।। তত্মাৎ সত্ৰ মিদ॰ রাজন্ সংস্থীবেতাভিচারিক ।

मर्भा अनागरमा मक्षा करन पृ-ষ্ট হি ভুজাতে॥ ইত্যুক্তঃ স তথেত্যार यहर्ष यानयन् वहः । मर्भ मजामू भत्र । भूक्यामाम ৰাক্পতি॰।। ইতি শ্ৰীভাগৰতে ३२ करम ७ जशायः॥ সর্পদত্তী^ন পুণ জনমেজযরীজঃ। रेि भक्तत्रवावनी ॥ मर्गमश खी मर्गकहाली (छनः। ইতি রত্নমালা ৷৷ मर्गहाँ पु॰ नज्ञवः। ইতি ছেম-BEM: 11 मर्लाथाः पुः यश्यिकन्मराज्यः। ইতিরাজনির্ঘণ্টং ৷৷ নাগকেশরঃ । इं ि त्रवभावा।। मर्गनामरकि मर्गामी जी मर्गकहानीरजमः। रें ति त्रज्ञमाना ॥ रिम॰ रनी । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ मर्भावनी खी नामनी। रेडि রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ সর্পারাতিঃ পু॰ গরুডঃ। ইতি ट्याञ्चः ॥ मर्शातिः पू॰ नक्रवः। ইতি द्वाक-निर्घकः॥ शक्रफण ॥ मर्गावामः क्री हन्मनः। इंडि त्राक्रनिर्घण्डः ॥ मर्शकानकः ॥ ः मर्गाणनः भू ममूतः।

হলাযুধঃ।। গরুডশ্চ ।। সর্পাক্ষণ ক্লী রুদ্রাক্ষণ। ইতি রা-জনির্বণ্টঃ।।

मर्गाकी जी गन्ननामनी। देखि वाजनिर्वकः॥ तृक्वित्यसः। मत्रही देखि गिखिनी देखि ह हिकीखाया। जर्भगायः। ग-खानी २ नाजीकनाभकः ७। खानी २ नाजीकनाभकः । खानी २ नाजीकनाभकः । खानी २ नाजीकनाभकः । खानाम्बानिष्यः। विकामिष्यः। विवादाभवष्यः। देखि छान-श्रकाभः॥

मर्लिः क्री ष्ठः। ইত্যমतः।।
मर्लिनी खी मर्ल्डार्या। माणिनी ইভি ভাষা। यथा। खानी
तानी मर्लिंग्ड्रा छ खी मक्षी
ह मर्लिनी।। ইভি नक्तत्रप्तावनी।। क्रूफक्रून्र्राड्याः। छ एनर्यायः। जूजगी २ द्यागी ७
क्रुखनी ४ न्यागी ६ कनी ७।
छमा छ लो। विषय १। क्रह्यक्रिन्यकः। ইভি ताज निर्यन्तः।।
मर्ली खी मर्लिनी। ইভি नक्तत्र ज्ञावनी।।
मर्ली खी गमनक्र छ।। मृन्धार्टा

মিণ্ প্রত্যবেন নিষ্পন্নঃ।।

मर्भीखे॰ की औथकमन॰। ইভি त्रष्ट्रमाना॥

मर्लिकः क्री श्रीथलहम्मनः। ইতি क्रिविदः॥

मर्ब मर्गर्ग। इंडिकिविक्सफ्रमः ११ म्ह्यापिः। अर्थवर्गरम्परमाश-थः। मर्बेडि मिमर्बियेडि। ইडि पूर्गापामः॥

সর্বঃ পৃ• শিবঃ। ইত্যমরঃ॥ বিকুঃ
। যথা। অসত শ্চ সতলৈচব সর্বস্য প্রভবাব্যযাঃ। সর্বদ্য সর্বদ।
ভানাৎ সর্ব মেত• প্রচক্ষতে।।
ইতি বিকুপুরাণ•।। বিকুসহসুনামস্ভোত্রক।।

मर्बः जि मण्णृनः। इंडामतः॥

जमा भर्षाायाः मकलगत्म ज
केताः॥ श्राताता यथा। मर्व
त्रञ्गत्या त्मकः मर्वाम्हर्यामयः

नजः। मर्वजीर्थ मयी गमा मर्व
त्मत्रम्या हितः॥ ইতি বহি
भूतात्म त्मतायतीय मःनात्म २

जमायः॥

সর্বংসহা স্ত্রী পৃথিবী। ইত্যমরং॥
সর্বকঃ ত্রি সকলঃ। সর্বশব্দস্যটেঃ পূর্ব মকি তন্মাৎ স্বার্থে কে
চ নিষ্পন্ধঃ। ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণং ৷৷

সৰ্বতি

नर्वकर्ता पुः बन्ना। रेजि भक त्रज्ञावनी ॥ সর্বক্ষীণঃ তি সকলকশ্বকর্তা यथा। मः आत्म मर्कमीति वा ছূ যদ্যৌপজানুকৌ। ইতি ভটৌ ৫ अर्भः ॥ मर्वत्क वा मर्वज। मर्वभकाष অকচ্ প্রত্যাধেন নিষ্পন্নঃ। ইতি निकाञ्च को यूनी ॥ मर्बरकणी पू॰ निहा देखि भक-त्रवावनी।। नर्बग॰ क्री जनः। देखियिनिगै।। गर्बगः पू॰ मिवः॥ बक्षा। ইভি स्मिनी॥ आद्या। इंडि गक মালা।। সর্বত্রগামিনি তি ॥ गर्बगन्न॰ क्री ठञ्जाङकानि। यशा । চতুৰ্জাতক কৰোল লবসাগু-क मिक्क क॰। সर्बगक्ष मिन॰ ठा अ॰ মুনিভিঃ পরিকীর্ত্তিত ।। ইতি गयहिन्या। जनाक। हाज्-জাতক কপুর ককো লাগুরু স্-क्रूमः। लवकमहिष्टर्क्य मर्वग-क्ष विनिर्मित्य ।। इंछ छाव প্রকাশঃ ॥ गर्वेगा जी थियकूर्कः। देखि नक्रिका ॥ मर्बाद्यः भू॰ शिश्रनीमृतः। देखि

त्राक्रनिर्मकः॥ गर्वशिष्ठ॰ क्री शिक्षणीयृणः। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। गर्बम्यौनः वि मक्लम्यनिर्म्यिजः । इंडि मिक्का खरकी यूमी ॥ मर्बजनीनः बि मर्बजनमस्ती। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী ॥ गर्विष् भू॰ कानठकमा अक-वि॰ गवर्षः। इंडि क्टि॰।। म-कनज्यकर्खिति बि॥ সৰ্বজ্ঞঃ পু॰ শিবঃ।। বুদ্ধঃ। ইত্য-মর:।। সকলজ্ঞাতরি ত্রি ॥ मर्बद्धा जी पूर्गा। यथा। उद-পত্তি স্থিতি নাশেষু রজাদি ত্রি-গুণা মতা। সৰ্বজ্ঞা সৰ্ববেতৃত্বা-চ্ছান্তিৰাচ্ছান্তি ৰুচ্যতে॥ ইতি त्नवीश्रुतात्न ८६ व्यथायः ॥ সৰ্ৰতঃ ব্য চতুৰ্দ্দিগভিব্যাপ্তিঃ। তৎপর্যায়ঃ। সমস্ততঃ ২ পরি-তঃ ৩ বিশ্বক্ ৪। ইত্যদরঃ ॥ नर्व ठः छ । जी श्रिकृ वृकः। इंडि भक्त हिन्दिका ॥ मर्ब**ठ**खः भू॰ मकनञ्जारशञा। ইতি কেচিৎ।। সকলশাস্ত্ৰঞ্চ।। সৰ্বতাপনঃ পু॰ কামদেবঃ। ইতি কেচিৎ।। সৰ্বতাপকে ত্রি।। সৰ্বতিক্ৰা স্ত্ৰী কাকমাচী। ইতি

সৰ্বতো

রাজনির্ঘন্টঃ ৷৷ সৰ্ভোভজঃ পু ক্লী ঈশ্বগৃহ वित्नवः। हेजायतः॥ बातानि स्मानिट्छम् छिमा छा गृह । छना লক্ষণ ৰূপনাস্ত সাঞ্জেন ৰথা सिखक था शूथ ये गामिन গতৌ চান্যৌ তৎপর্যান্ত গতো २१द्रः॥ अनिविकानिकास्य ৰ্বতোভজ চতুরালিন্দ শোভি-ত।। প্রাক্ পশ্চিমানুগতৌ চ **भिरातृ** विख् छो। येखानिः ন্দৌরুচক্যতো নচেৎস্যাদুত্তরা-मूथः।। क्रांसामाना विकास वागिमध्यः शृद्र। उद्यक्षमान विजाह नं ति गान्खतावृथ ।। मिक्कणानूगडानिक वयः यद পশ্চিমা মুখ । পূজনীযোত্তরো-क्यायः नन्गावर्छः वमस्रि छदः॥ উপর্যাপরি যদোহণ তদিচ্ছন্দক मः छक विकि वहरन्यू चिकाः দীনাণ ক্লীবন্ধ দর্শনাৎ স্বস্তিকা-मीना॰ भू॰ नभू॰ मकदः मखवा॰ I এব गामिश्रात्थी कृतक वर्षमा-तो **भू भिकार**ि समूक । श्रि কঃ সৰ্বতোভাজে রুচকো বর্দ্ধ-

गानकः। नन्त्रावर्खात्रव न्हांनि षात्रानिषापि एउपकाः ॥ देवि **जित्र है। कि कि व्यक्त** गर्था ভবিষ্যোতরে। यেষাদি চন্দ্রে জাতস্য নৃপতেঃ স্যু রনুক্রমাৎ। ষাদলৈব গৃহান্ বক্ষো ভেষা॰ লক্ষণ মগ্ৰতঃ ৷৷ সুনন্দঃ সৰ্বতো-**ज्रा ज्रा नामीवृथ उथा !** वित्नामक विनामक बिक्रशा वियम खथा।। त्रकः किन कें-যো বীরো দাদশৈতে প্রকীর্ত্তি-णाः। जलकनः यथा। **ए**ने ताक হস্তা বাষামে পরিণাহে তথৈব চ। ইত্যৰ সৰ্বতোভদ্ৰঃ শুক্ৰ म्हामगिथिएकवन्।। मानवा त-ককা শৈচৰ পূজ্যা স্তে চাত্ৰ য-ত্বতঃ। চতুর্দশাস্য দারাণি রুষ্ণ চিত্রাবৃতানি চ।। পীঠপটাবৃ-তো ছেষঃ সর্বানিষ্টবিনাশনঃ॥ चब दिशा महीशालः मर्वान् শवृन् निक्छि । मीर्व २३ अङ् ২॰ ইতি সৰ্বতোভদ্রঃ। ইতি बुक्किकंबरकः ॥

সর্বভোভত্ত ক্লী ব্যোৎসর্গ বত-প্রতিষ্ঠাদৌ পূজাধার মঙলবি-শেবঃ। বথা শারদাযাণ। চ-তুরস্তে চতুংকোণ্ডে কর্ণসূত্র সম-

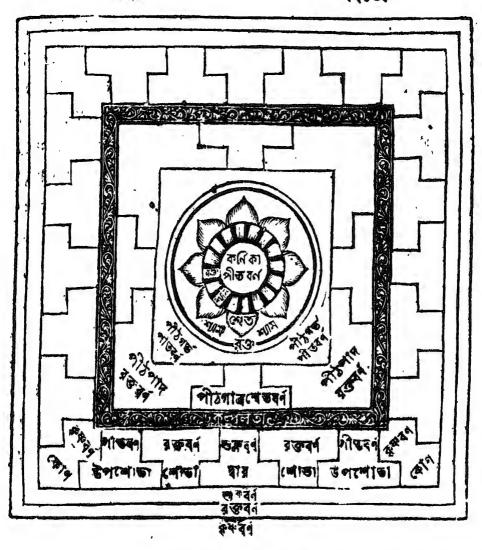
মিতে। চত্ৰপি চ কোণ্ঠেষু কো-**बम्बहजू खेय॰ ।। यदश** यदश यथा स्था ज्या ज्या भाज्यक था। প्रवाभन्नायल एव एव मञ्जी ৰাম্যোত্তরাষতে।। পাত্তবেতেষু मः निष्यं नमः मृत्र हजू स्वरः । পূৰ্বৰ কোণ কোন্তেষু কৰ্ণসূ-ত্রাণি পাতষেৎ।। তদ্বৎ ভূতেষু बद्भायू ममाद मृज्य हजू खेव । ততঃ কোন্তেষু মৎস্যাঃ স্যু স্তেষু সূত্রাণি পাত্যেও।। ষাব্ৎ শত-ष्यः यञ्जी यहेशकामस्यानामा । তাবত্তেনৈব বিধিনা তত্ত্ব সূ-वानि भाजस्य ॥ यहेकि भज **शरिष र्यार**धा निरथे अग्र मूनक- विश्वास्त्र अप्ता अत्वर भीठे॰ পঙ্কিযুগ্মেন বীথিকা।। দার-শোভোপশোভাস্থান্ শিক্ষাভ্যাণ পরিকল্পষেৎ। শাস্ত্রোক্তবিধি-ना मञ्जी ७७: পদা मगानिए। ৷৷ পদ্মক্ষেত্ৰস্য সংত্যজ্য স্বাদ-শাংশং বহিঃ সুধীঃ। তশ্বধ্যং বি-ভজেৎ বৃত্তৈ স্ত্ৰিভিঃ সমবিভাগ-ण्डः ॥ जामा गा कर्निकाशः ন॰ কেশরাণা॰ দ্বিতীয়ক । তৃ-তীয় পদ্মপত্রাণা মুক্তাণশেন দলাগ্রকণ। বাহ্ববৃত্তান্তরালস্য

गात्नम विधिमा मुधीः। निशाव কেশরাগ্রেষু পরিতো ২র্জনিশা-क्द्रान्।। निषिषा मिक्किमण्यानि তত্ৰ সূক্ৰাণি পতিষেৎ। দলাগ্ৰা-ণাঞ্চ যন্মান তন্মানাৰূত নালি-(४९॥ जनस्रतान जमधा मृब-माज्यकः मूरीः। वानित्येषा-श रुखन मनाशानिः ममख्यः ॥ দলমূলেষু যুগশঃ কেশরাণি প্র-কল্পথেও। এতৎ সাধারণ প্রো-ক্ত॰ পঙ্কজ॰ তন্ত্ৰবেদিভিঃ।। প मानि बीनि शामार्थः शीठितना-**१** भार्कस्य । अविनिरेकेः भ-टेम र्बिषान् शीर्रगाजानि कात्र-श्वरा। शकानि वीथि मण्डानि मार्क्करम् १५ अङ्गार्क्कप्रकः। निक् बाक्नानि तहरम ६ वि हजूः कार्छ-रेक खथा ॥ भरेम खि**छि त्ररेष-**কেন শোভাঃ স্যু দ্বারপার্শবোঞ । উপশোজাঃ স্যু বেকেন ত্রিভিঃ कारें ब्रन्डब्र ॥ व्यवनिरेखेः পদ্ধৈঃ ষড্ভিঃ কোণানা স্যা-कठ्यस्। तक्षरयर भक्षाज ई-র্ণৈ শ্বন্তলং তশ্বনোহরণ।। পীতং र्तिफार्न् गा९ निज ज्थून मः खरः। अमुखरूर्ग मक्रमः क्रमः **षश्चित्रकः ॥ विद्यामिशक्कः**

শ্যাম ইত্যুক্ত বর্ণপঞ্ক । অ-ब्रुला॰रमध विखाताः मीमारत-খাঃ দ্বিতাঃ শুভাঃ।। কৰিকা॰ नीजवर्णन दक्नेद्रागुक्ररणन है। শুক্লবৰ্ণানি পক্তাণি তৎসন্ধীন শ্যাৰলেন চথা ব্ৰজ্পা বঞ্চৰ-শ্বদ্ৰী বৰা পীতৈব কৰিবা। কে-শরাঃ পীতরক্তাঃ স্যু ররুণানি मलानात्रिश मन्नयः क्रकवर्गाः সুয়ঃ সিতেনাপ্যসিতেন বা। র-क्षरंबर नीर्रभर्जीन नामाः मु ররুণপ্রভাঃ।। গাত্রাণি তস্য শু-ক্লানি বীথীৰু চতসৃষ্পি। আলি-(थे कब्रमिकिश मन भूका क माविजाः ॥ बरेर्ग नानाविदेश नि रेकः नर्बमृष्टिगत्नाष्ट्रताः। রাণি শেতবর্ণানি শোভা রক্তাঃ সমীরিতাঃ।। উপশোভাঃ পীত-বৰ্ণাঃ কোণান্যসিতভানি চ। তি-স্থো রেখা বহিঃ কার্যাঃ সিত র-ক্তাসিতাঃ ক্রমাৎ।। মণ্ডল॰ সর্ব-তোভদ্র মেতৎ সাধারণ স্মৃত ।। ।। প্রকারান্তর যথা। চতু-त्रमा॰ ज्वे॰ ভिषा मिरका मान-नश मूरीः। পাত্रেख्व मृता-ৰি কোষ্ঠানা॰ দৃশ্যতে শত॰।। **ठळू क पाति भागाण भग्ना यह**े

खि॰ भणाषुष्ठ । कार्रिः श्रक्त स्वर भीठ भड़ा देनवाज वी भिका ॥ बातर भार् यथा भूई मृग्राणा न मृग्राण । जविम रेके भर्मा कर्मार यज्ञिः का गानि जन्नि ॥ विम्नार भूई वर भार खार वा मञ्जा । विम्नार भूई वर भार खार वा मञ्जा । विम्नार भूक । वर्ष भारत भारत भारत भारत । का स्वर्ण स्वर्ण स्वर्य स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण

সৰ্বতোভজনওলস্য ৰূপণ ৰথা ৷



 किन क्यां क्छिया (क्यां किः भाख विभावतिः ॥ क्रिकि विभिन्नि धि-क्यांनि পृवां भाषि निर्धे खुळः । मक्ष मक्ष क्रां मेर्व खुळाविः भिक्ठ मन्ध्रया॥ खुव कुर छाः পृव्याः। य हे भव छ। इतिकि क्षिनमाः। य खुळ थ। वाक्रगाः भूः॥ जय खु-वा (क्यां क्यां कुर्वां क्रिक्टां

ब्देशः। त्राम्टमा काम्म क्रामा মেষান্তা দক্ষমার্গতঃ ।। শেষেষু **क्षिटक्रवर नमा** निर्विथिशकः ক । বারাণা সপ্তক লেখা ভৌ-मामा • তত্তিথিক্রমাৎ।। ইত্যে **ষঃ সৰ্বতোভত্তপ্ৰ**কারঃ কথিতো মধা। ৰশ্মিদ্ধক স্থিতঃ খেট ন্ততো বেধত্রষণ ভবেৎ ।। গ্রহ-मृष्टितरमनाल वाम मिक्न मः मृ-খে। ভুক্ত ভোগ্য তথাক্রান্ত বিদ্ধা ক্রুরগ্রহেণ ভণা৷ শুভা-च्छट कृ कार्यायू वर्द्धनीयः श्रय-ष्ट्रठः। विकरण मिक्नेश मृष्टि वीमा षृष्टिक मीतुरग।। मन्यूथी यश-চারে চ জ্ঞেষা ভৌমাদি পঞ্চকে । সৃर्गमूकाः धहाः नीषु। स्था **চার্কে দ্বিতীয়গে।। সমা স্তৃতী**-बर्ग एक मना जाती हजू-र्था । बकाः मुाः शक्ष्यत्वेदकं ष्ठिवका नगाकरग ॥ नवस्य **जन्म जात्ने जायल मह्जा** गििः। बामरेनकामरन मूर्या मछरङ भौघुछा॰ भूनः ॥ त्रवि-श्रिकाः नकिष्णावासः नःशाख कबारा । न जू तागा खतम्भागा ९ षिठीयामिनिकाशनः ॥ ब्राह्टककृ সদা বকো শীয়ুগৌ চম্ৰভাক্ত-

রৌ। গতে রেকমভাবদানেযাণ मृष्टि वकः मना।। क्रूता वका मः शक्ताः मोगा वका महास जाः । স্যুঃ সহজন্বভাবস্থাঃ मिया कृतान्त नीषु गाः॥ व ७ हाः य गठा टेन्टव ध क छ। व्ह स ঞা স্তথা। এত দ্রিক তিক ত विकः विदेकः क প ভ देनः क्रमा ९ ॥ घ ७ इ। त्रोज्राम त्वरथ य । ठी অন্তগে এহে। ধক ঢাঃ পূৰ্বাষা-ঢাযা॰ থ ঝ ঞা ভাত্র উত্তরে ॥ व्रत्वो भरमो थरको टेठव ज्रदयो ণনৌ পরস্পর । একেন হি দ্বয়ণ জ্বেষণ শুভাশুভ গ্ৰহ্বাধে ৷৷ অ-वर्गामि अत्रवत्मु एषकत्वधाय छ-रश बाधः। यूव्यवर्गाष्ट्रातक त्वत्य व्यनुवात विमर्गरवाः ॥ व्यकातानि यूत्र्यवर्गाञ्चकं व्यथवमन् सात्र विम-र्भट्या द्रिकत्वधामू छयत्वध ईछा-र्थः ॥ (कानस्थाकरमा स्वरिम अ-ন্ত্যাদি পাদগে এহে। অকারা-मि **ठ**जूटकम् त्वधः পূर्वितयो ज्या ॥ এकामि कृत्रदर्धन कल पूर-সা॰ প্ৰজাষতে। উদ্বেগশ্চ ভষণ হানি ব্যাধি মৃত্যুঃ ক্রমেণ চ।। ঋক্ষে ভূমো ২ক্ষরে হানিঃ স্বরে वाक्षि र्जय किरयो। तारमो विस्क

यहाविष्ठः शक्षविष्का न कीविं १। একবেধে ভষ॰ यूट्य यूग्रदत:४ ধনক্ষয়ঃ। ত্রিবেধে তু ভবেন্তকো मृज्रु (वंशवज्येदा। मृखिवास উদাহরণ মাহ। ভরণ্যকার বৃষ-**७॰ नन्मा॰ जजा॰ जूनाक छ॰।** विणाथा॰ इति छ॰ विरशाम् अह व्यादाय मण्डिङः॥ উनार्त्रण-ন্তর মাহ। বং যুগ্ম মৌশ্বরং ক-ন্যা॰ রেফ॰ স্বাতী মুকারক। অ শ্বিনী রোহিণীয়ে ২ভিজিন্ত भ्वतः भद्रिष्ठभि ॥ स्था मृक्षेकः লাঃ ব্লুরা তথা সৌম্যাঃ শুভ-श्रामाः। कृतयुक्तः भूनः भारमा। एक्यः कृतकलक्षमः ।। **अर्क**रवरम মনস্তাপো জব্যহানিশ্চ ভূসুতে । রোপপীডাকরঃ मৌরী রাছ क्छू ह विद्यामी ॥ हत्स्य मिखा-কল॰ পু•সা• রতিলাভশ্চ ভার্গ-वः **मर्वश्र**ं अपन्य ।। यद्या বল পূর্ণ পাদোন মিত্রভে গ্র-হে। অৰ্দ্ধণ সমগৃহে প্ৰোক্তণ পাদ শত্গৃহে স্থিতে ৷৷ ইদঞ্ সৌম্যক্রাণা বল স্থানবশাৎ मयः। এতদেব ফল विक्ति मो देगाः कृदेत विश्वायाय ॥ श्रा-

नत्वधमयात्याभाद यदमःथाः জাষতে বলং। তৎসংখ্যং বেধ্য-বস্ত্না॰ ফল॰ জ্ঞেষণ শুভাশুভ॰ ॥ मृक्तिंशीत भूनर्तिष न मा। কিঞ্চিৎ শুভাশুভ । গ্রহাঃ সৌ-या उथा कृता रकाः भीखाक नीहगाः॥ ज्ञानकः तथा मिळा-व॰ वल॰ छाषा कल॰ वरमः। व-ক্রগ্রহে ফল দ্বিদ্ব ত্রিগুণ স্বো-চ্চস•িহতে।। স্বভাবজ ফল• भौरयु नीहरङ्ग १ क्षकरना अ इः ৮ তিথিরাশ্যংশনক্ষত্রণ বিদ্ধা জূ-त्रश्रदश यथ ॥ नर्दियू ७७का-र्यायु वर्ष्करयख थ श्रवज्ञ । न नक्छि विवादश् व बाखाबा॰ न নিবর্ত্ততে ৷৷ রোগান্ন মুচ্যতে রো-গী বেধবেলাক্তোদ্যমঃ। রো-গকালে ভবেদ্বেধঃ ক্রুরখেচর সম্ভব:।। বক্রগত্যা ভবেমৃত্যু: শীঘুে জাপ্যরুজান্বিতঃ। বেধ-ञ्चारन तरन जरका मूर्ग थिंडः প্রজাষতে ৷৷ কবিপ্রবেশন ভত্ত যোগাঘাতশ্চ তত্র বৈ। কবি (क्टोबरवाका। युवं शूर्वामिका: श्रीषाः वृषदानगामित्रा द्रविः ॥ সা দিগস্তমিতা জ্ঞেষা শেষা खिनुः मानिषाः। जेगानकाः

ৰৱাঃ প্ৰাচ্যা জেৰা বাৰ্যা ৰখা-विशाः ॥ दैनसंख्याण वाक्रगाः বাষব্যা॰ সৌম্যগা মতাঃ। নক-वािं खद्रा वर्ग द्रान्य खिथत्या मिनः ॥ **७ म**र्व २ জ্ঞেষা ষত্ৰ ভানু দ্ৰিৰাসিকঃ। নক্ষত্তে হস্তে কজা বৰ্ণে হানিঃ **ट्यांकः ऋ**द्र २ खर्ग ॥ त्रांट्यो বিদ্ব স্তিথৌ ভীতিঃ পঞ্চাস্তে ম-त्रन छत्द । याजा यूक विवा-मन्त कातः आनामश्कारयाः !। न कर्त्तवाः खंखः চান্যদন্তাশা-जिम्र्थः नदेतः। जाखामायाः हि-ত॰ যস্য নায়ঃ প্রথম মক্ষর॰ ।। স আৰ্ত্তঃ সৰ্বকাৰ্য্যেষু জেবো रिमवहरका नतः। करतो कार्छ তথা ছন্দ্ে চাতুরক্ষমহাবলে।। বৰ্জ্যা শ্চাস্ত গতা ষোধা যদীচ্ছে-দ্বিজয়ণ রণে। নক্ষত্রে ২ভ্যুদিতে शुष्कि वर्ष्य लाजः खत्त मूथः ॥ রাশৌ জয স্তিথৌ তেজঃ পদা-श्विः शक्षरकामरम । श्रम्भकारन **ज्रतिषकः य**ल्यः कृत्रः यह ॥ जन्म छ ॰ ॰ ल्या छन ॰ स्मोरेमा स्म লৈ শ্মিশ্ৰফল ভবেৎ। গ্ৰহা-বিদ্বাস্ত্র যলগ্রণ ফলং লগ্ন স্বভা-বতঃ।। জ্ঞাতব্য भীক্ষিতে কেন্দ্রে

क्षिक क्षत्रामिक। नीर्ता-मरब जोबाबिनभवतर्ग नत्थिन-वा मोगावूट ७७ गा९ १ অতো ২ন্যথাত্বে তু তদন্যথাত্ব बिख॰ विविदेख द्रधिक॰ वलाटेछाः কেন্দ্রোপগা নব্যপঞ্
রগাল সৌন্যাঃ কেন্দ্রাফবর্জ মশু-ভা জ্ঞাষ ষষ্ঠ সংস্থাঃ ৷ সর্বার্থ সাধনকরাঃ পরিপৃচ্ছতা স্যু রেভি বিশর্যাষগতৈস্ত বিপর্যা-यः मार ॥ वधाधिनात्था यनि কেন্দ্রগঃ স্যাৎ তন্মিত্র মেতস্য চ কেন্দ্রগন্ধা। ব্যমাফ কেন্দ্রান-পহায পাপা অন্যত্র যাতা যদি তছ্ভ স্যাৎ।। আদ্যো লগ্না-ধিপীঃ কার্য্যে লগ্নে কার্য্যাধিপো यि । विकीरमा नगरमा नरभ कार्या कार्यगिधित्भा यमि ॥ ल-গ্লপঃ কার্য্যপ শ্চাপি লগ্নে ষদি ভৃতীষকঃ। চতুর্থঃ কার্য্যপৌ मााजा॰ यमि नश्म कार्यार्भी ॥ कार्यामिकि उमा एउवा विवास-मिथक॰ मछ॰। এব॰ मृस्टिवना-জ্জেय॰ कनः তष्ठछजुरुयः ॥ পূৰ্ণনাডীন্থিতো দূতো ষৎপৃচ্ছ-তি শুভাশুভণ। তৎ সর্বণ সিদ্ধি মাপোতি শুন্যে শুন্য সমীরৰে

॥ जात्मी भूनागणः भृतकृषः भः कार भूनी विद्यामानि। छमा म-बार्थनिकिः माष् वात्म वामः न-म॰ भवः ॥ श्रामश्रादनकात्न (ह-দ্ভো জন্নতি বাঞ্ছিত। তস্যা-र्थः त्रिक्ति यादशाकि निर्गत्य ना-স্তি সুন্দর ।। উদ্ব্রামাগ্রতো **पृत्वा उड्डा** वाम १४ विष्ठः । शृत्वे मत्क छ्याध्यामकवादशे গতো মতঃ।। যাত্রা দান বিবা-হেষু বস্ত্রালকার ভ্ষণে। শুভে कर्षाण मस्त्रो ह श्रीतरण वामगः শুভঃ॥ কলহ দূত যুদ্ধেষু স্নান ভোজন মৈথুনে। ব্যবহারে ভ যে ভঙ্গে দক্ষনাডী প্রশস্তে ॥ कृदेत इन्डग्टा विका यमाकत তিথিস্বরাঃ। রাশি র্ষিট্যঞ্চ প-ক্ষাপি তস্য মৃত্যু ন সংশযঃ ।। मखन॰ नगतः जात्मा मूर्गः तन वालय॰ भूतः। कृ देत क्र खराजा বেধে বিনশ্যন্তি ন সংশযঃ ॥ ক্লভিকাষা ভথা পুষ্যে রেবত্যা-খ্ণ পুনৰ্বসৌ। বিন্ধে সভি ক্ৰমা-ष्टरभा वर्षयू बाक्षगामियू॥ छो-ল্যু ভাণ্ড রুমো ধান্য গজা-श्वामि ठजुलामाः। नर्बः यहार्घः তা॰ ষাতি যাবৎ ক্রুরব্যধে স্থিত:

গ কুরবেধসমাথোগে ৰস্যোক্তি পগ্রহসম্বং। তল্য মৃত্যু ন স-প্রেহা রোগান্ধাথ রণাদিনি ।। সূর্যাভাৎ পঞ্চমং ধিষ্টাং জ্বেষণ বিদ্যুনুখাভিধং। শূলকাষ্টমকং প্রোক্তং সমিপাতং চতুর্দ্দশং ।। কেতু রফাদশং প্রোক্ত মৃদ্ধা স্যাদেকবিংশতিং। ন্বাবিংশতি-তমং কম্পং ত্রযোবিংশক্ষ বজ্ব-কং।৷ নির্বাতক্ষ চতুর্বিংশ মুক্তা অফাবৃপগ্রহাং। প্রস্থানে বিম-দাং প্রোক্তাং সর্বকার্যেষু সর্বদা ।। ইতি সর্বতোভ্রচক্রং। ইতি জ্যোতিষত্ত্বং।। গ্রা।

সৰ্বতোভজচক্ৰস্য ৰূপণ যথা।

					1					
	4	. W	8	3		•	* •	. 9	W]	
	۹"	8	' '4	4	*	Ę	*	* 3	70	
	>	म	. , 3,	ब्य:	विश्वः	कर्कके	29	ą	55	मिक्रिश
	₹ 9	v	८ ब व	9	बक्	8	ৰি° হ ঃ	ð	25	
हिन्दु	२७	ग	भीव	রিক্তা	મૃર્લ	छ षु1	不可	প	30	
	२०	4	क्ष:	च:	बग्	· ख •	ভুলা	' ব্ৰ	23	
	₹8	গ	à	यक्बः	४ न्:	বৃশিকঃ	Ф	8	>6	
	२७	, 34	থ	*	•	য	a	4	29	
	ঈ	२२	0	43	२०	29	>>-	28	Ę	
1					les no especial				-]

मर्वा छा अर्थः निष्ठ क्षः। इछा - बली।। व॰ मः। इछि मक्ष छा - विश्व विष्य विश्व विश्व

म	*1	* ***	्षा	ना	7	का	न
41	\$	না	ष	¥	সা	4	71
7	मी	₹	का	बा	7	ৰা	. 4
वा	ų	41	ष्ट	ų	ৰা	W.	ল্

ইতি সর্বতোভদ্রচিত্রকাব্য । ইতি মাঘে ১৯ সর্গঃ।। অস্যার্থঃ।

मकाद्वि । भूनः की मृगी का-রো বংধ নিশ্চবে চ বলে যত্ত্বে রতাবপীতি বিশ্বঃ। সকারাঃ স ষত্নাঃ সোৎসাহাঃ নানা নানা-विधारक एक जाताः जतीनाः मः মূহাঃ ভিকাদিভ্যো ২ণ্। তেবা॰ কাসা গভিভেদাঃ কাষা বিগ্ৰ-श्राम्ह (यशाः) मामः ममञ्जीि সাদদাঃ নাশকারক সাযকা ষস্যা॰ সা তথোক্তা। রসেন রা-श्वां राज्या राज्या राज्या राज्या রণরাগিণীভার্থঃ। বাহসারাণাণ बार् अंशां (य नामा (दुवा रघाष। एखया॰ वाम॰ कलइ॰ म-**मा**ञीं विक्तानि । देवः मह कलश्यमानानि वामनानि वा-मांनि यमा ना वाहमात नाम वानन वानना। जूर्याना द्या-

ষেতার্থঃ। অভএব তেষাণ জুলাতোক্তে রতিশ্যোক্তিঃ। সর্বতো ভূমণাৎ সর্বতোভ্রাথা
শিচত্রবন্ধঃ। অভএব দণ্ডী। তদিদণ সর্বতোভর্রণ ভূমণণ যদি
সর্বত ইতি। উদ্ধারস্তা। চতুঃকোঠে চতুরন্ধবন্ধে পণক্তিচতুউযে পাদ চতুন্ধণ বিলিখানস্তান্ধণ পাদচতুন্ধীয় লেখনে প্রথন
মাস্ চতস্যু প্রথমপাদঃ সর্বতো বাচ্যতো এবং দিতীয়াদিয়ু
দিতীয় ইত্যাদি। ইতি তট্তীকাযাণ মল্লিনাথঃ।।

সৰ্বতোভদ্ৰা স্ত্ৰী গন্তারী।। নট-ষোষিৎ। ইতি মেদিনী।। সৰ্বতোমুখ ক্লী জলণ। ইতামরঃ । আকাশণ। ইতি মেদিনী।

वाषा। ইতি মেদিনী।। वाकः नः। इकि नकत्रप्रावनी।। वर्गः । देखि भक्तमाना ॥ खत्रिः। यथा । সর্বতঃ পাণি পাদাভঃ সর্বতো शकि भित्रा मूथः। विश्वताना মহানিমিঃ প্ৰণীতঃ দৰ্বকৰ্মসু।। ইভি ভিপ্যাদিতত্ত্বগৃতামিপ্রণৰ-नवसः॥

मर्वत रा मर्विष्णानकारन। रेडि **अक्रत्रज्ञावनी**॥

সৰ্বত্ৰপঃ পু॰ বাবুঃ॥ সৰ্বত্ৰগাৰি-नि बि। ইতি वक्तमान नक्तमर्भ-नार ॥

मर्बब्रगायी पू॰ वायूः । ইভি नकः **চ**क्तिका ॥ नर्बिष्टिश्वणकारम श्र-মনকর্ত্তরি ত্রি ॥

गर्वथा वा প্রতিজ্ঞা। जुन्।। **(रुजुः। ই**छि **भयत्र**ञ्जावमी ॥ मर्बञ्चकात्रः। ইতি व्याकत्रवः॥

শঙ্গভাপুত্রঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-(न्यः ॥

गर्बमर्गी भू वृक्षः। ইতি मसत्रा वनी॥ मकनमर्भनकर्खति जि॥ नर्बमा वा नर्बियन्कातन। ইত্য-बद्धः ॥

मर्बाष्ट्रासूथः भू भिवः॥ बचा॥ मर्बमूःथक्यः भू याकः। ইতি **ट्यह्यः॥ मक्ल**शीषानागण्ड नर्वत्ववृथः भू जित्रः। देखि किंगिवतः ॥

সৰ্ব্যাওঁ ত্রি সৰ্ব্যাপ্জকঃ। স-ৰানকতি ইতাৰ্থে দ্বিপ্প্ৰত্যবে-न निष्पन्नः। ইভিব্যাকরণ ॥ गर्वशारी जी कानहक्रमा बादि॰-भवर्यः। इंडि क्टिन्।।

সর্বধুরাবহঃ পু সকলভারবাহ-मर्बभन्नीवः र्कः। तथलाकलामी-नाः जांत्रवाहकभवानिः। ইज्रा-बदः ॥

সর্বন্দনঃ পু॰ ভরতরাজঃ। স তু अञ्चलाभूवः। इछि एक्सासः मर्देशा जी व निताकशङ्गी। दें छि কেচিৎ।৷ সৰ্বরক্ষণ পানকর্ত্তরি তি ॥

गर्बभूवं इ॰ की नड़ादः। देखि ত্তিকাণ্ডশেষः॥

त्र्र्दक्षिषः वि त्रक्षजनवल्लाः। সংৰ্ষাণ জনানাণ সৰ্বস্য শিবস্য চ প্রিষ ইতি ষঠীতৎপুরুষসমা-সেন নিষ্পন্ধঃ ৷৷

नर्वज्ञा जी हागी। देखि एंग-চন্দ্ৰঃ।। সৰ্বজ্ঞশণকৰ্ত্তরি তি ।। नर्वभवना जी मूर्गा। देजायतः॥ बागा तार शिख र्था। यहन মোক্ষবচন চা শব্দো দাতৃবাচ-कः। সৰ্বাম্বোকান্ বা দদাতি मा এव मर्बयक्ला ॥ इर्त्व मः न्मिषि कलग्रात् यत्रनः भित्रकी र्खिछ । তान्मनाछ ह वा स्मरी मा এব मर्बमक्ला।। ইতি बन्धः रेवद्वर्र्ड अङ्ग्रिक्ट एक स्थापन ।। ज्रिष्ठ। मर्बम्बलम्बन्ह मळ्न्ं कर्षाकारकः। আৰু! রো দাত্বচন স্তমাৎ সা সর্ব मक्ना॥ इंडि उन्नरेवदर्खं 🗐 ক্ৰফজন্মখণ্ডে সৰ্বমঙ্গলান্ডোত্ৰণ २१ अशायः।। अनाक। नर्वावि शपयश्नि मननानि छङ्गि ह । দদাভি চেন্সিভান্ লোকে ভে-न मा मर्बमकना। देखि प्रवी-भूतार्व ४६ जशायः ॥ কাৎ মষট্ প্রত্যধেন নিষ্ণান্ধঃ।।

নৰ্বনয় তি সৰ্বাত্মকঃ।। সৰ্বল-কাৎ নষ্ট্ প্ৰত্যাহ্যন নিষ্পালঃ।। নৰ্বমূল্য ক্লী কপৰ্দ্দকং। ইভি ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ।।

নৰ্বমূষকঃ পু॰ কালঃ। ইতি ছেম-চন্দ্ৰঃ।।

নৰ্বসঃ পু॰ ধুনকঃ। ইত্যমরঃ
। বাদ্যভাগু॰। তজু বীণাভে
দঃ। ইতি মেদিনী॥ সুরী। প

खिङः। देखि भक्षत्रज्ञावनी ॥

नवश्त्रमः। देखि द्यात्रक्षः॥

मर्वत्रमाख्यः भू॰ नवश्त्रमः।

देखि द्यात्रक्षः॥

मर्वत्राखः भू॰ मयस्त्रक्रनी। देखि
॥

সৰ্বরী জ্রী শর্বরী। রাজিঃ। ইছি
বক্ষামাণ শক্ষদর্শনাৎ ।।
সর্বরীকরঃ পু॰ চন্দ্রঃ। ইতি ধরশীতি কেচিৎ।।
সর্বর্তুপরিবর্ত্তঃ পু॰ বৎসরঃ। ইতি

कि हो बद्धाः ।।

गई क्ष्मण क्षी गकन क्ष्मण छ
कन । यथा। गई क्ष्मपूर्याकी
र्भ गई क्ष्मण माणिए । च्रिन
क्षायक माकी र्भ मखानक वना
वृष्ठ ॥ देखि ভ विद्या पूर्वा र भि
वृर्वा कि ब्रुक्था ॥

मर्वत्रक्षनकविष्णः क्री कविष्णियः
। यथा। भिट्णाः यखायनः छळ्
खूर्नः वाक्षानभूकवाः। इखः क्षा भिट्णा गीट्य भगाठे कविष्णः कः
कः॥ वक्षाभि छट्छ विटश्रस्त कः
विष्णः मर्वत्रक्षनः। यक्षस्तः मायवा भूवः वक्षदा नाजिभक्षद्धः॥ नि-फिट्छ क्रग्छाः नाद्य क्ष्यण छ क्रम्भावित । जीजाय क्रिकः

कर्त्व ह मधूरिक छे छरवा र्जवार ॥ रवागनिरक्षावाह। मृत्रीज्ञ अ द्भ ভষ॰ ভষ॰ কিন্তে মধি হিতে। শ্বিতাযাণ মধি চ ব্ৰহ্মন্ সুখী ভিষ্ঠ क्रगद्भराख।। भा भारतः भार्जु তে বক্তু॰ মস্তক॰ মধুসূদনঃ। শ্রীকৃষ্ণ শ্চকুষী পাতু নাসিকাণ রাধিকাপতিঃ।। কর্ণযুগ্মঞ্চ ক-ঠक কপাল পাতু মাধবঃ। ক-পোল পাতৃ গোবিন্দঃ কেশা **क्ट (कर्मवः अय॰॥** श्यीत्करमा मखन कि गमा প্রজঃ। রামেশ্বরশ্চ রসনা॰ ভা-লুক বামনো বিভুঃ ম ৰক্ষঃ পাতৃ यूक्रम एउ कर्रतः भाजू देवजाश। জনাৰ্দ্দনঃ পাতু নাভি॰ পাতু বিষ্ণু শ্চ তে হনু ।। নিতশ্বযুগা গুঞ্-ঞ পাতু তে পুরুষোত্তমঃ। জানু ৰুগাণ জানকীশঃ পাতু তে সৰ্ব-मा विजूः॥ इखयुवा नृति इन्ह পাতু সৰ্বত্ৰ শঙ্কটে। পাদযুগা বরাহশ্চ পাতু তে কনলোন্ডব।। উর্দ্ধে নারাষণঃ পার্তু অধস্তাৎ কমলাপতিঃ। পাতুপূৰ্বে চ গো-भानः भाजू रद्भी मभागाश ।। वनयाली भाषु सामा। देवक्र थेः भाजू देन चंटि । वाक्रदन वामूटमव-

क পাতু তে জলজাসন।। পাতু তে সম্ভত মজো বাষব্যাণ বিষ্টর-শ্ৰবাঃ। উত্তরে চ সদা পাতু সো **২নস্তো ২নস্তকঃ স্বয়•।। ঐশান্যা** মীশ্বরঃ পাত্ সর্বত্ত পাতু শত্র জিৎ । जल इल ठाउरीक निषा-याः भाजू याथवः॥ 📲॥ 🛚 ইত্যে-वः कथिछः बन्धन् कवष्ठः भन्नभाष्-जुज। इरकन क्रथम मज मु-**७८नव भूता यया ॥ ७८७न म**र् मः आत्म निर्माक स्वात्रनाकृत्। गगनिष्ट्रां यः मनाः প্राश्चि गा-ত্রেণ শক্তিতঃ।। কবচস্য প্রসা-**मिन धत्रगा॰ পতি**তো মৃতঃ। পূ-ৰ্বণ বৰ্ষগৰ্ভণ খে চ ৰুত্বা যুদ্ধণ ভ-यावर ।। मृत्छ छत्छ ह भावि-न्मः क्रभान् र्गगत्व विखः। भानाः क करा जिल्ला कि म क গাম হ।। কলান্তরস্য বৃত্তান্ত॰ ক্লপষা কৰিত মুনে। আভ্যাণ তব ভষ• নাস্তি কবচদ্য প্রভাব-एः॥ काष्टिनः काष्टिना नकी यशा मृखी क नई नः। अइक इति-शो मार्कि° करब करब ख़िता मना॥ हेर्जुका करा पदा मास्कान॰ চকার হ। নিঃশঙ্কে। নাভিকম-ल जरहो न कगता खुवः ॥ 🛊 ॥

সুবৰ্ণগুটিকাষাম্ভ ক্ৰছেদ কৰচ भर्तः। कर्छ वा मिक्ति वारही वद्रीयाथ यः मूथीः मना ॥ विवा-গ্নি জল শত্ৰুভ্যো ভষ ভদ্য ন বিদ্যতে। জলে হলে চাম্ভরী-কে নিডাফা॰ রক্ষতীশ্বরঃ।। স॰-গ্রামে বজুপাতে চ বিপত্তৌ थानमङ्ग्रे। कव् भारतादन्य मामा निः मह्याः बद्धः ॥ বন্ধেদ কবচ কঠে শব্দর স্ত্রি-পूतः भूता। ज्यान नीनाया-ত্রেণ দুরস্ত মসুরেশ্বর ।। বঙ্গে-प॰ करा कानी बक्कवीक b-थाम ना। महमुनीर्या धृष्यम॰ বিশ্ব॰ ধত্তে তিল॰ যথা।। আবা॰ मन व्यातन धर्मः माकी ह कर्माणा कवठमा अमारमन नर्बे कि किरिना विषेशा नामा न-मिलाः कर्छ क्रगाम क्रकः षिकः। আত্মনঃ কবচ॰ কঠে प्रधात ह इतिः अयः।। প্रভाবः ক্থিত সৰ্ব ক্বচ্চ্য হরে স্তথা । অনন্তস্যাচ্যতদ্যৈৰ প্ৰভাব यजून भूतन।। इकि वर्कितेवरर्ख শ্রীকৃষ্ণজন্মখণ্ডে ১২ অধ্যামঃ।। मर्बना खी তোমরः। इंडामदः॥ मर्बनिकी पू॰ পायखः। ইত্যমরः।

।। एव रवणविक्रकाठादत्रयु मर्बवर्ग विक्रशातिय तोक क्र नका नियु ৷ পাপ· সমন্তি দদতি পাযুঞাঃ यनीवानिषाद माश्यः मृर्क्तग्र य-(शा १४॰। मर्वियाः वर्गाव्यमाः ণা॰ কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ লিঙ্গ মস্ত্যো-ষা মিতি ইন্। ইতি ভরতঃ।। मकलिइशातिनि जि॥ সৰ্বলী স্ত্ৰী তোমরঃ। ইতি শব্দ-त्रष्ट्रावनी ॥ गर्दलाइः श्रु लोश्मयवानः । यथा। अक्ष्मिजनः मर्वतारश नात्राह अयग्यह मः। देखि एहम-ठखः॥ সকলश्यक्रा সৰ্ববৰ্ণকা ন্ত্ৰী গম্ভাৱীবৃক্ষঃ। ইতি জটাধরঃ ৷৷ সৰ্ববন্ধভা স্ত্ৰী অসতীনারী। ইতি धत्रगीि कि कि ।। जकनि अर्य जि॥ সর্ববিৎ পু॰ পরমেশ্বরঃ। যথা। यः गर्दछः गर्दिक यमा छान-ময় তপঃ। তস্মাদেত একানা-य क्षेत्र कायर कायर ।। देवि विकाधिकादत्र मिटत्रामिनः ॥ সৰ্ববেদঃ পু॰ সৰ্ববেদাধ্যেতাত্ৰা-শ্বণঃ। ইতি কেচিৎ।। সৰ্ৰজ্ঞে ত্ৰি मर्वदनाः पुः मर्वयनिक्वारा

नर्न क लंबनित नजनित पिएक देखि नर्दरकार विष गाँउ जग्डार वास्तिक अन । ইতি ভরতঃ।। नर्बद्यनी पू॰ नहेश हैि दिय-**ठ**खः॥ जकनद्वभभाति बि॥ म ज् ममखनाभूखः। ইতি मय-রত্নাবলী॥ সকলশমকারকে ত্রি সর্বদঙ্গতঃ পু॰ ষটিকাধান্য । रे वि भक्त जिल्ला।। जननजरू िय:क जि॥ नर्वन मर्गनवन की अस्त्रक । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। मर्वमन्नार्थकः भू **छ**ज्तन्रदेमः ন্যসন্ধাহঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। সর্বা-ভিসারঃ ২ সর্বে খিঃ ৩। ইত্য-यदः ॥ मर्बमहरून व्यर्षा १ छि-ধেষ মস্য। সর্বৈ রভিস্থিতে **২ভিমুখ গম্যতে হনেন সর্বা**-ভিদারঃ করণে যঞ্। সর্বেষাণ ওয়ে। বৃন্দ মত্র সরৌ যঃ। ইতি ভরতঃ য়

निवादा न्यादा विश्व है। व

সর্বসী পু॰ বর্ণশন্ধরবিশেয়ঃ। স তু গোপকন্যায়া॰ নাপিতাজ্জাতঃ । ইতি ব্রহ্মবৈর্ত্তে ব্রহ্মখণ্ডে ১০ অখ্যায়ঃ।।

সর্বহিত ক্রী মরিচ । ইতি রাজ নির্ঘণীঃ।। সকলহিতকারকে ত্রি সর্বকারঃ পুণ ক্ষারভেদঃ। সাবান্ ইতি ভাষা। ইতি কেচিৎ।। তৎপর্য্যায়ঃ। বছকারঃ ২ সমৃ্হকারকঃ ও স্তোমক্ষারঃ ৪ মহাকারঃ ৫ মলারিঃ ৬ ক্ষারমেলকঃ ৭ অস্য গুণাঃ। অতিক্ষারত্ব। চক্ষ্যাত্বণ। বস্তিশোধনত্ব। উদাবর্ত্ত ক্রমি নাশিত্বণ মল বস্তা বিশোধনত্বক। ইতি রাজনির্ঘণীঃ।।

ाबीन की मुक्काव्यवः। स्था।

নে বৰগ্ৰহাঃ। আপাদ মন্তক-रेक्व नर्विष्ठ विमाणकाः॥ हेन्डि खेबीलाल्ड नवश्कवहः ॥ त्रवाकम्भव्रव्यः भूः अवश्वित्मः ৰঃ। যথা। রস গন্ধক তুল্যা॰-ला को खारगी हें जनमें है। মৌক্তিক বিক্রমণ শখ্ মবনীয সনাম্পতঃ।। ছেনভন্মার্দ্ধ ভাগ-ঞ্চ সর্বণ খলে নিধাপযে । নিযু-দ্রবদ্য যোগেন পিষ্টিকা কার-ষেভিষক্।। পশ্চাৎ গজপুট॰ ममार भौठतक मगूक्तद्र । হৈযভন্মসম তীক্ষা তীক্ষা-ৰ্দ্ধো দরদো মতঃ।। একীক্ষত্য সমস্তানি সৃষ্মচূর্ণানি কার্যেৎ । ७७: भूका अन्नरीं जन रवर निवरम छाउ।। मर्वाक्रम् ন্দরো ছেষ রোগরাজ নিরুন্ত-নঃ। বাত পিত্ত ৰুৱে যোৱে निम्नाटा जूमाकृत्व।। जर्मन्जू वार्गीदारम त्यर श्रुट्य छग-करत। निरुष्ठि वाज्जात्नागान् ষ্কৈত্মিকা॰শ্চ বিশেষতঃ।। পিঞ্ল नी मधूमःयुक्तः युव्यकु मथाः शिव।। जक्षराष्ट्र, भर्गश्रहन

निज्या हार्कटक्य वा ।। अपूर् हिम्बमहिष्ठः श्रद्धार्ट् ह विट्य-विद्याः विद्यास्त्र विद्याः नि-क्रियाः विद्यास्त्र विद्यास्त्य विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र वित्य विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त विद्यास्त्र विद्यास्त विद्यास्त विद्यास्त विद्यास्त वित्य विद्यास्त विद्य

সৰ্বান্ধীণঃ ত্তি সৰ্বাব্যবসমন্ত্ৰ কুঃ। সৰ্বাব্যবসাপ্তঃ। মথা।
বদান স্তম্ভকনিভে সৰ্বান্ধীণে
তন্ত্ৰটো। কাণ্ডীরঃ খান্দিকঃ
শান্ধী রক্ষন্ বিপ্রাণ্ডনুত্রবান্
।। ইভি ভটো। ৪ সর্গঃ।।

সর্বাণী স্ত্রী দুর্গা। ইত্যমর: ।।

অস্যা ব্যুৎপত্তি র্যথা। সর্বাধ্যোক্ষণ প্রাপষতি জন্ম মৃত্যু জরাদিকণ। চরাচরাণশ্চ বিশ্বস্থান্
সর্বাণী তেন কীর্ত্তিতা।। ইতি
বন্ধবৈবর্তে প্রকৃতিখণ্ডে ৫৪ অধ্যায়: ।।

সৰ্বানুকারিণী স্ত্রী শালপর্ণী। ইতিরাজনির্ঘন্তঃ।।

সৰ্বানুভূতিঃ স্ত্রী শ্বেভত্তিবৃতা।
ইত্যমরঃ।। চতুর্বিংশতি ভূতার্হদস্তর্গতার্হন্তেদঃ।। চতুর্বিংশতি
ভাব্যর্হদন্তর্গতার্হন্তেদশ্চ।ইতি
হেমচন্ত্রঃ।।

সৰ্বান্নভক্ষকঃ ত্রি সকলামভোজী । ७९ भर्गायः। छे प्रतिभागः २ गर्बाष्ट्रीनः ७। देखि द्विराखः॥ সৰ্বাদ্যভোজী ত্ৰি সৰ্বেয়া মন্নভ ক্ষকঃ। ইত্যমরঃ॥ সর্বপ্রকারা-मजकाः। देखि किहिया म ৰ্বেষাণ চতুৰ্ণাণ বৰ্ণানা মেবান্নণ ভুঙ্ সৰ্বান্ধভোজী। ইতি ভ বুতঃ ৷৷ সৰ্বাদ্মীনঃ ত্ৰি সৰ্বান্মভোজী ৷ ইত্যমরঃ ॥ **সৰ্বাভিসন্ধী^ন পু• বৈ**ডালব্ৰতিকঃ৷ ছদ্মতাপসঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।। সকলাভিসন্ধানবিশিষ্টে ত্রি।। স্ৰাভিসারঃ পু চতুরঙ্গ সৈন্যস-মাহঃ। ইত্যমরঃ॥ অস্য পর্যা-ষঃ সৰ্বদন্ধহনশব্দে জফব্যঃ॥ मबार्थमाधिका जी मूर्गा। यथा। गर्वमञ्जल मञ्जला मित्व गर्वार्थः माधितक। नत्रावा बायतक रशी-রি নারাযণি নমোস্ত তে।। ইতি मार्क एक दिन मारा भाग ।। म-কলপ্রষোজনসাধকে ত্রি।। नबार्थानुमाधिनी खी जूर्गा। यथा । धैर्मामीन् চिञ्जिजान् यत्राष সৰ্বলোকেষু যচ্ছতি। ভতে। प्ति ने ने ने ने निर्माणी ने निर्माणी ने

माधिनी।। ইতি দেবীপুরাবে৪৫ अशायः ॥ मर्वार्थिमकः भू वृकः। रेजः यदः ॥ मकनश्राक्षाक्रनमिक्नि युक्छ वि ॥ **म**र्बादमतः भू॰ व्यक्तत्राजः। ইতি ত্রিকাওশেষঃ 11 সৰ্বাস্ত্ৰা স্ত্ৰী, ষোডশবিদ্যাদেব্য-खर्ग उपनि वित्यक्षः। इंडि एक-**ठ**खः ॥ मकनाख्ययुका ह ॥ मर्वाङ्गः भू॰ मयल्डामनः। ইতি वाक्रवन ॥ जि नर्वनश्की। नर्व-শব্দাৎণীয় প্রত্যযেন নিষ্ণান্ধঃ। ইতি ব্যাকরণ ॥ मर्दिश्वतः शू॰ मिवः। ইতি কে-हिए॥ मार्ब्स्डोनम्ह॥ मदि येः पुः ठजूतकदेमनामन्नाहः । ইত্যমরং॥ श्वक्रदिगः। ইতি (यिनिनी।। ्यत्वी यिधः भू॰ अयिवर्गवित्ययः । यथा। कर्छ मा॰ मी रुद्रिजां छि र्वा देनटलय हन्मदेनः। यूता ह-न्मन कर्भू देत्रः मुखः मद्बी यिधिः স্মৃতঃ ।। অত্র দ্বিতীয় চন্দনপদ॰ রক্তচন্দনপর । ইতি রাজ-निर्घण्डः.॥

मत्बी विश्विगनः पू॰ यूर्तात्मागविशि ममृहः। यथा। मूत्रा मान्त्री वहा-श्रु दे भटन य॰ तक नी घय । भी **हम्भक गू खक्ष मटको सिंशनः ग्रा ७: ।। ই** । अक्टिका ।। अन्। का। इतिका ठन्मन माबी म्खक দেবতাডক। धनाक कीत्रक भिषी धार्जीकल मूचीत्रकः ॥ बि-मूगिक्तः मणी गक्तयाजी कर्णू त-क॰ वहा। नथी अक्रवक॰ अर्छ॰ म्पर्वमाङ विषक्षक ।। मत्रमः भ-ঘকাঠঞ্চ বালক ভদ্রমুস্তক। গ্রন্থিকঞ্চ জটামাণ্সী পলাশঃ देनलङ नयी।। अर्कटर्फागक्र-क पृर्व। यूता या भी ह अक्या। व्यथामार्था मधुत्रिका विकामा थिमितः भगा ॥ हाजुद्धां ठकम-षा २ (था १ के वर्त्भा व खड पूचतः । नारमश्रत्रक कखूती बिकना পদ্মকেশরণ।। কক্ষোল ধাতকী পুষ্ণ জিকটুরেণুক ষবঃ। তি-नाः अम्बूक नन्दर जार्शी त्रा রোচনা বকঃ॥ শুগী পুষ্পঞ্চ ন इनी बीकन वं भरनाहना। इ-ন্দীবর বহুসূতা বন্দল মালতী-मनः।। इसवीजः काकनमः ज-ষম্ভী গঙ্গণিপ্ললী। শ্বেতাপরা-

জিতাপুশা সৰে বিধিগণঃ স্মৃতঃ ॥ देखि भारमाख्यथर७ ३०१ च-ধ্যাবঃ।। অত্র কভিপযদ্রব্যাণি অশুদ্ধলিখিত দ্বান্ধ বোধগম্যানি नर्रभः भू॰ भन्यतित्मसः। महिया ইতি ভাষা। তৎপর্যায়:। ত-बुजः २ कत्रवकः ७। ইতামরः ।। সরিষপঃ ৪। ইতি ভরতঃ।। **ज्यकः ৫। ই**ভি त्रमानाशः ।: কটুন্সেহঃ ৩। ইতি জটাধরঃ।। मर्बभः १। इंडि मक्तत्रप्रावली।। রাজক্ষবকঃ ৮৷ ইতি রাজনি-র্য-টিঃ। অস্য গুণাঃ। কফ বা-**७ प्रवः। ठी क्रवः।** उक्रवः। त-ক্তপিত্তকারিত্ব। কটুত্ব। ক্রমি अर्छनानिष्यः। निकार्थं निर्णा তদ্গুণঃ। ইতি রাজবল্লভঃ। 🐠।। অপরঞ্। আসুরী রাজিকা রা-জী রক্তিকা রক্তসর্যপঃ। তীক্ষ-গন্ধা মধুরিকা ক্ষবকঃ ক্ষতকঃ ক্ষবঃ।। আসুরী কটু তিক্তোকা वाञ क्षीशार्खि मृलन् । माश পিত্তপ্রদা হস্তি কফ গুলা ক্লমি बगान्।। #।। সর্যপো রাজকব-কঃ হুকা তীক্ষকলা রাজিকা। वाखी मा क्रका मर्मभाशा वि-জ্ঞেয়া রাজসর্যপাখ্যা চ।। রা-

জসর্বপক স্তিক্তঃ কটুকো বাত मृतन् । शिल मार्थामा अना कखु अर्थ बगानहः ॥ काटम य সরিষপঃ ॥ 🐠 ॥ সর্বপস্তুনছো গৌরঃ দিক্কার্থো ভূতনাশনঃ,। কটুলেহো এহমশ্চ কণ্ডুমো রা-किकाकनः॥ जीक्ककन्तं पुता श्रवी त्राकाञ्चः अर्थनाणनः। मि-দ্ধপ্রযোজনঃ সিদ্ধঃ সাধনঃ সি-তসর্যপঃ।। সিদ্ধার্থঃ কটুকোঞ-শ্চ বাত রক্ত গ্রহাপছঃ। স্বরেদা-ষশমনো রুচ্যো বিষ ভূত ত্রণা-পरः ॥ ইভি সর্যপः ॥ 🛊 ॥ ভট্তে-ল গুণাঃ। সর্যপতৈল তিক্ত কটু-ক বাত কফ বিকারম। পিত্তাসু দোষদ॰ क्रीय अर्थम॰ **তিল**জবচ্চ-ক্ষ্য ।। 🐞।। তৎপত্রশাকগুণাঃ। সর্যপণ পদ্র মত্যুক্তণ রক্তপিত্ত প্র-काशनः। विमाहि कर्तूकः श्वामू শুক্রহাৎ রুচিদাষক ।। ইতি রা-किवर्गिः॥ ॥ अनाका । मर्गिः क तूक त्यन अञ्चलक कमन्नकः। गोत्रस् मर्यभः आदेखः निकार्थ ইতি কথ্যতে।। সর্মপস্ত রসে পাকে কটু শ্ল্যঃ সতিক্তকঃ। ভী-ক্লোক্ড: কক বাতম্বো রক্তপিত্তা-মিবর্দ্ধনঃ।। রক্ষোহরে। জয়েৎ

কণ্ডু সষ্ঠ কোঠ ক্ষি গ্ৰহান্। বথা রক্ত তথা গৌরঃ কিন্তু গৌরো बद्रा यणः॥ ॥ व्यथताहै। क्र-করাই। রাজী তুরাজিকা তীক্ষ-शक्षा क्ष्किनिका मूत्री। करः क्-ভাভিজনকঃ ক্ষিকঃ ক্ষণসৰ্যপঃ াা রাজিকা কফ পিত্রদী তীক্ষো-কা রক্তপিত্তরুৎ। কিঞ্চি জক্ষাগ্নি-मा कख् मन्ने कार्व क्रमीन् इरद्र ।। অভিতীক্ষা বিশেষেণ ভদ্বৎ ক্লফাপি রাজিকা। 🕸। তত্তৈল-खनाः। मीभनः मार्यभः टेडनः क दूर्शाक त्रमः लघू। (लथनः न्न-र्भवीर्याकः ठीकः शिखाम मृष-कः।। क्क व्यक्ता श्रीनार्द्धां मः नितः कर्गाययागरः। कखु कार्ठ क्रिवि विव क्षे मूकेववश्री १६ ॥ তত্বৎরাজিকযো স্তৈলং ৰিশেষা-भृवह रूहर। त्राष्ट्रिकरयाः इक-**बाहै। आंत्रक्रवाहै। ज्याः** ॥ 🛊 ॥ जक्कांकथनाः। कर्तृकः সার্যপ॰ শাক॰ বছমূত্র মল॰ গুরু । व्यञ्जभाकः विनाहि माानूकः क्क विद्यां यह थ। मकात व-ৰণ ভীক্ষণ স্বাদু শাকেষু নিন্দি-छ। छीक्कारकः मार्घभः नालः वाज्यां बना शर्।। क्षू क्रींन-

हतः प्रस्क अर्थयः अविकाद्यकः ।
देखि ভावश्यकाणः ॥ ॥ श्वावद्र
विवर्ण्यकाणि देखि द्यव्यक्षः ॥
वर्ष्णियाणि दियाणः । वर्षा ।
कालाखद्रशत्य जात्वी वर्षणाम्
मृणात्य द्रकः । देख मञ्जू जिं जिल्ले ।
विवार विवार विवार ।
वर्षा । देखि निकास्तिका ॥

সর্বগতৈলে ক্লী সর্বপজাতত্মেছঃ
। যথা। সর্বপতেলে তিক্ত কটু
কং বাত কফ বিকারমণ। পিতাসুদোষদ ক্রমি সন্তম তিলজবচ্চ ফুষাণ।। ইতি রাজনির্বন্টঃ।।
সর্বপী স্ত্রী খঞ্জনিকা। ইতি ত্রিকাপ্তশেষঃ।।

সল॰ ক্লী জল॰। ইত্যমরটীকা যা•ভরতঃ।।

मिनन की कन । इंडामदः॥

छा विश्वा जा गिनिष्य । यथा।

मन्। न मृज शिष मर्गे न न

छम्मिन गां जर्का। न कान

करके न करन न िजा न ह

श्रिका। न की गर्मिका। न मम्दूष्य

गर्छ्य न गक्त्या न मर्ष्य

गर्छ्य न गक्त्या न मर्ष्य

गर्छ्य न गक्त्या न मर्ष्य

म न मी जी त मामामा न ह श्र्यं ज्या स्था न वापुषि विश्वा न मिछा

मणः भभा छरेथ्व ह।। न कला চন अबीं विश्वा विश्व ইত্যাহ্লিকভন্ত।। অপিচ। মূত্ৰ क्षिय भूतीयानि देव इन्द्रम्कानि বারিণি। তে পাত্যন্তে চ বিণা-ख मूर्गस्य পृषभृतित्व।। इंछि वायनभूतात कर्षविभावका नाय ३२ ज्याशिकः॥ कथ मिलन-পরীক্ষা। পিতামহঃ। তোষস্যা-থ প্রবক্ষ্যামি বিধিণ ধর্ম্ম্যাণ সনা-তন। মণ্ডল পুষ্প ধূপাভ্যা কা-त्रयथ সृविष्ठकनः॥ भतान् मः পृक्रदराङ्का देवनदक धन् ख्या ৷৷ তত্ত্ৰ প্ৰথমতো বৰুণ পূজ্বেৎ । यथा नातमः। शक्त माटेलाः मू-त्रिं वर्ष कीत वृजानिजिः। वक्रवाय अन्वीं शृका माटने न-माहिनः॥ छटना धर्मावाहनानि সকলদেবতাপূজা হোম সমন্ত্ৰক প্রতিজ্ঞাপল্র শিরোনিবেশাস্ত কৰ্ম পৰ্য্যাৎ। কাত্যাঘনঃ। শ-রাণ স্থুনায়সাগ্রাণস্তু প্রঙ্গরীত বি-खक्रत्य। त्वन् कार्धभयाःदेन्हव क्था ह मूम्छ किरम ॥ भि-ভামহঃ। কেপ্তা চ ক্ষত্রিয়ঃ কা-ৰ্যাঃ তদ্তি ৰ্ৰান্ধণো ২থ বা । অকুরহদযঃ শান্তঃ সোপবাস

खथा छिटिः ॥ इयून अकिरभक्की-मान् माऋष्ठ वािं, वा ज्न॰ । বিষমে ভূঃ প্রদেশে চ বৃক্ষ স্থাণু मयाऋत्या। नात्रमः। कृतः धनुः मक्षमंज यशाय यहेमंज यजः। মন্দ পঞ্চশত প্রোক্ত মেষ জ্ঞে र्या धनूर्विधिः ॥ अञ्जूलीनाः म প্তাধিক শত বস্য ধনুষঃ পরি-মাণ তৎ সপ্তশত এব ষট্শতা দিক ।। পিতামহ:। মধ্যমেন তু চাপেন প্রক্রিপেত্র শরত্রয় । হ-স্তানাঞ্চ শতে সার্দ্ধে লক্ষ্য হয়। বিচক্ষণঃ ৷৷ তেষাঞ্চ প্রেষিতানাম্ভ শরাণা॰ শাস্ত্র দেশনাৎ। মধ্যম-ख भरता आकः भूक्रस्य वनीयमा ।। শরাণাণ পতন আছে সপণ **शतिवर्क्कत्यः। मर्शन् मर्शन् म** রো যাতি দূরাদূরতর যতঃ ৷৷ প-তন গ্রাহ্ম মিতি শরপতন স্থান পর্য্যন্ত॰ গচ্ছেদিত্যর্থঃ। তেন প্র-সরণ পক্ষেপি পতন স্থানক শর-গ্ৰহণ । ততশ্চ প্ৰথমতঃ পুৰুষা-ন্তবেণ তৎস্থানে শর আনেতব্যঃ ॥ नात्रमः। नमीयू नाजिरवंशा मू তডাগেষু সরস্সু চ। হুদেষু স্থিরতোষেষু স্বর্যাৎ পুংসাং নি মজ্জন । নাতিবেগাসু স্থিতি বি

রোধি বেগশুন্যাসু। विकुः। शक टेगवाल पृष्ठेशाह मध्मा करली-কাদি বৰ্জ্জিতে তদা নাভিমাত্ৰ জলে মগ্নস্যারাগ ছেষিণঃ পুরুষ-স্যান্যস্যোৰ গৃহীত্বা ২ভিমন্ত্ৰি-**তा**ग्रः श्रवित्यद। ७९ मयकान-क ना िक्तृत मृत्ना धनुषा श्रुक-(य) १ शतः भत्रत्याकः अर्यामि छि । তস্য শোধদ্যেতার্থঃ। অন্যথা তদ্যেতি ব্যর্থ স্যাৎ॥ 🛊॥ অন্য-পুরুষদ্য স্তম্ভধারণ মাহ স্মৃতিঃ। उनक প्राज्ञ खार्ड खर्छकर्माष्ट्रना॰ প্রগৃষ্ণ চ। প্রাড্বিবাক কর্তৃ ক कना जिमस् । या र शिका महः। তোষ ত্ব প্রাণিনা প্রাণঃ সৃষ্টে রাদ্যম্ভ নির্মিত । শুদেশ্চ কার-ণ প্রোক্তণ অব্যাণাণ দেহিনা স্ত-থা।। অত স্তু॰ দর্শবাত্মান॰ শু-ভাশুভ পরীক্ষণে। 🟶। শোধ্য-কর্তৃকাভিমন্ত্রণ মাহ যাজ্ঞবন্ধ্যঃ। সত্যেন মাভিরক্ষম্ব বরুণেত্যভি-শাপ্য কং। নাভিমাত্রোদকস্বস্য गृशिष्वांब कलः वित्नं ।। या या মভিশাপ্য শপথ কারষিদ্বা কং क्ल वित्न निमक्ति । তোর-१क नियक्तन मगील मत्य द्यान শোধ্যকর্ণ প্রমাণোচ্ছিত কার্য্য।

यथा नात्रमः। गन्ना जू ज्ङ्गनः ন তটে ভোরণ মৃচ্ছিত। স্ববীত কৰ্ণ মাজস্ত ভূমিভাগে সমে শুচৌ ॥ 🛊 ॥ नत्रात्क वित्नव मार्जू नातम वृह्ण्याजी। भन्न अरकंशव স্থানাদ্যুবা জবসমস্বিতঃ। গচ্ছেৎ পর্মধা শক্ত্যা ষত্রাসৌ মধ্যমঃ শतः॥ यथायः শत मानाय शूक-या १ ना खशाविभः। প্রত্যাগ-চ্ছেজু বেগেন বতঃ সংপুৰুষো গ তঃ।। আগতস্তু শরগ্রাহী ন প-भावि यमा जरम। ञञ्जर्कमगठ॰ मगाक् जना शिक्षः विनिर्मित्नः ॥ जनाया न विश्वकः माहिकां-क्रमाभि पर्यनाथ। ज्ञानाकानाव গমনान्ति ग्राम् शृई नित्न गरय ॥ 🛊 ॥ জिंदिनो बिटमयग्रि ना-রদঃ। পঞ্চাশতো ধাবকানা থৌ স্যাতা মধিকৌ জবে। তৌ চ তত্ত্র निर्याक्तरों नज्ञानयन कर्मान।। धकात्रमा मर्गनामिछि कर्गामा-**ज्ञिारयग।** निद्रामाज्य मृत्मा-छ न कर्लो नािंश नािंगरक ॥ .ष्यम् अत्यन्ति यमा खक्तः छय-शि निर्फित्न । इंडि नित्नवा-ভিধানাৎ। কাত্যাৰনঃ। নিশ-জ্যোৎপ্লবতে যস্ত দফলেৎ প্রা-

पिना नद्रश शून खब निमक्क ত দ॰শচিক্ল বিচারিতঃ।। জলা-ন্তৰ্গত ষৎস্য জলৌকাদিনা দফ্টঃ সমুৎপ্লবতে ষদি তদা দক্ষে দৃক্টে भून निमक्तनीय इंडार्थ ॥ **॥** ॥ পিতামহঃ। গন্ত শ্চাপি চ কর্তুশ্চ সমণ গমন মজ্জনণ। গচ্ছেত্তোরণঃ मृलाकु नतनानः जरी नतः ॥ ভিম্মিন্ গতে দিভীফোপি বেগা-मामाय नायक । शटक् खां त्र गयु-लम्ब रुडः न शूक्राया गडः॥ जा-গভস্ত শরগ্রাহী ন পশাতি যদা, कला অञ्चल्लं नगठः मगुक् छ-তঃ শুদ্ধিণ বিনিৰ্দ্দিশেশ্যা অত্ত ম-জ্ঞান সমকাল গমনাভিধানাৎ. শরমোক সমকাল গমন শূল-পাণ্যক্ত মযুক্ত । মজ্জন সম-काल किन्छ॰ यश्यय॰ भन्न याना-ষেত্যপর মুক্ত মপি প্রমাণশুন্য া ততশ্য ত্রিষু শরেষু মুক্তেষু একো বেগবান্ মধ্যম শরপতন স্থানং গদ্বা ত মাদায় ভত্তৈব তিণ্ঠতি অ-ন্যস্ত পুরুষো বেগবান শরমোক-স্থানে তোর্ণমূলে তিষ্ঠতি এব॰ স্থিতযো স্কৃতীযাষাণ করতালি-কাষা প্রাড্বিবাক দত্তাযা পো-ধ্যো নিমজ্জতি তৎসমকাল মেব

मिना

ভোরণমূলস্থিতোপি ক্রততর ম-খ্যম শরপতনস্থান গ্রন্থতি শর-গ্রাহী চ ভন্মিন্ প্রাপ্তে ক্রভতর তোরণমূল প্রাপ্যাম্ভর্কনগত यि न भेगां छिन। श्वरका छव-তীতি বৰ্ত্ত্বাৰ্থঃ।।।।।। তত্ত্ব প্ৰযো-গঃ। উক্ত লক্ষণ জলাশ্য নিকটে छथा তোরণ বিধাষ উক্তদেশে লক্ষ্য কৃত্বা তোরণ সমীপে সশরণ ধনুঃ সংপূজ্য জলাশ্যে বরুণ মা-বাছ পূজ্যিত্বা তত্তীৱে ধর্মাদীণ-**क्ट एक्वाब इवनाख भिक्दा प्रक्रि-**ণা॰ ক্লবা শোধাস্য শিরসি প্রতি-জ্ঞাপত্ৰ বদ্ধা প্ৰাড্বিবাকো জ্ব-ল মভিমন্ত্ৰষেৎ।ওঁ তোষ ত্ব॰ প্ৰা-নিনা॰ প্রাণঃ সৃষ্টে,রাদ্যন্ত নির্মি-ত । শুদ্ধেশ্চ কারণ প্রোক্ত জ ব্যাগা দেহিনা তথা ৷৷ অত স্তু দর্শবাত্মান শুভাশুভ পরীক্ষণে । ইতি মন্ত্রেণ। শোধাস্ত্র ওঁ সত্ত্যে-ন মাভিরক্ষস্ব বরুণেত্যনেন জল **য**ভিমন্ত্ৰ্য গৃহীতস্থূণম্য শোধ্য**না**-ভিনাত্তোদকাবস্থিতম্য ৰলীযসং প্রাত্মখন্য পুরুষন্য সমীপ জ-वामर्था शत्कृ । ७७: भरत्रु ত্রিষু মুক্তেষু মধ্যম শরপতনস্থা-ৰে মধ্যমশব্ৰ গৃহীত্বা জবি:ন্য-

কল্মিন্ পূরুষে হিন্তে আনাল্মিণশ্চ তোরণমূলে হিন্তে প্রাড্রিবাকেন ভালত্ত্বে দত্তে শোধ্যা গৃহীভদ্ব প্রাত্ত্ব পূরুষশ্যোৰ গৃহীদ্ধা নিমজ্জতি। তৎকনকাল মের ভোরণ মূলস্থোপি মধ্যম শরস্থানণ ক্রতং গচ্ছতি। ততঃ শরগ্রাহী চ তল্মিন্
প্রাপ্তে ক্রতং ভোরণমূলণ প্রাপ্য
কলান্তঃস্থা মিন পশ্যতি তদা
শুদ্ধঃ। কর্ণাদ্যক্রণ বিনা শিরোমাত্র দশ্নেপি শুদ্ধঃ। মজ্জন
স্থানাদ্যত্র গমনেপ্যশুদ্ধঃ। দক্রিণাদিকণ দদ্যাৎ। ইতি দিব্যতত্ত্বা।

নলিলন্থ জনঃ পুং শৈবালঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। সলিলজ ক্লী পদ্মণ। ইতি রাজ-

निर्श्निः॥ जनकार्छ ति ॥

मिन्निः॥ जनकार्छ ति ॥

मिन्निः १९ क्नाम्यः। छमा

देवहृष्ण प्रास्ता यथा। गर्भ
छेवाछ। नगताम्यमर्थाः मनीयम्यमाछि छ। नप्गा हुमाः
अम्वशः वित्रमाम्छ छवछि एकः
॥ विवर्श कन्य छक्षः एकनव
क्रिष्ठ मङ्ग्निः। क्नीतः एक्षरः मूताः

त्रक्षः वरुष्ठ छाङ्गलाम्काः ॥

ষণাসাভান্তরে তত্ত পরচক্র-**७४॰ ७८४९। जलाभरा नमस्ड** वा श्रेष्ण कि कथकन ॥ विम्क-क्षि छथा बन्धन बाना धूम तका॰ সি চ। অখাতে বা জলোৎগ खिः ममदा वा कनामकाः ॥ সংগীতশবা দৃশ্যন্তে জলে মার **७**य॰ बरम् । मिवा बरकां ७य॰ नर्णि मधुना वरमहन ।। जश्च वा। बाक्रना यद्या देखक ट्याटमा জলে ভবেৎ। মধাজ্য যুক্তণ রমাম মত্র দেষ ছিজানা ছি-क्टिकनार्थः। गावक प्रयाः সিতবস্ত্রযুক্তা স্তথোদসম্ভাঃ স-निनाघ गाटेखा।। ইতি মাৎ-(मा २०४ व्यथायः॥ লিলেশ্বনঃ পু॰ বাডবানলঃ। ইতি ত্রিকাপ্তশেষঃ।। नीनः बि नीनसामश्वर्ञभानः 1 यथा। मृत्रक्रम्यम्थर विकि ত্ররত্ননির্মিতে লসম্বিতান ভূষি তে দলীল বিভূমানসং। সূরা-ঙ্গণাভ বল্লবী কর প্রপঞ্চ চামর क्तूत्र मभीत बीकिंड मनाह्य-७ जजामि छ ।। इति इत्मा-यक्षती ॥ ज्ञकी खी खनामशाष्ट्रकः।

उৎপर्याषः। भक्कज्का २ मू বহা ৩ সুরভী ৪ রসা ৫ মহে-त्रगा ७ अन्त्रकी १ हामिनी ४। ইত্যমর:।। গজভক্ষা ৯ সুরজিঃ ३० मूत्रजीतमा ३३ यरहरूमा ३२ गलको ১৩ मिलको ३८ गिलको ३৫ शामिनी ३७। ইভি তটीका ।। শল্যতে শ্লাঘ্যতে গজৈঃ শল্প-की। यन कछ झाट्य ह्रापिः ঞে রভাবপকে নামীতি লকট্ । श्वाविषु एउटनी मलटका महा ত্রা স বিতর্কফো রিতি তালব্যা-দৌ রভসঃ। সলভি গচ্ছতি সল-গতৌ দস্ত্যাদিঃ ৭কঃ ভৌবাদিঃ निशानना द नमा विष्। मद-কুত্য লক্যতে স্বাদ্যতে গজৈ রিতি বা সল্লকী দস্তাদি রিভ্য-(ना। मिलको (ठाट्याका (म-भीशारवरः। महाकी मिहाकी ু হ্লদেতি রুজঃ ইতি স্বামী। ই-ত্যমরটীকাষাণ ভরতঃ ৷৷ नव॰ क्ली कलः। ইতি क्रोधदः॥ পুষ্পরসঃ। ইতি কেচিৎ।। मकः शृ॰ यखः। ইতাषतः॥ मञ्जानः। ইতি मिनिनी।। সূর্য্যঃ ।। हसः। इंडि क्हिर्॥ मदन॰ क्री यख्तवानः। ७९१५॥-

यः। त्रृंछा। २ अधिवदः ७।
इंछाबदः॥ मानमक्षानः ।
इंछि क्रिवदः॥ मानमक्षानः।
इंछि क्रिवदः॥ स्वदः॥ मान निर्मावनः। ইভি মেদিনী॥ প্র-সবং। ইভি কেচিৎ॥

नक्याः जी नक्वका। छर भर्तासः। जानिः २ वयना। ७ नथी ४ नक्ठती ६। देखि कठी-धतः॥

স্বৰ্ষঃ পু• ব্যস্যঃ। ইত্যমরঃ।। স্মানব্যক্ষে ত্রি।।

नवतः भू॰ मिननः।। भिवः। ইতি विकाखरभवः॥

मवर्गः जि मम्भः। ইতি ह्य-हस्यः॥ मयानवर्गः। जूनाक्य-जिः। वथा यनुः। পानिश्रहन-मग्कातः मवर्गामृशिषणाट्य । ज्ञावनीययः एक्कार्या विधि कृषा-इकर्षानि॥ हेजुाबाइज्ज्ञः॥ ॥॥ এक्ছारना ६ श्रव्यवर्गः। यथा । मवर्ग्यनाक्ष्रीर्यः। ইতি मः क्य-श्वमात्रवृग्वत्रनः॥

मवर्ग खीं সৃर्याभन्नी ছारा। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

সবহা স্ত্রী ত্রিবৃতা। ইত্যমর-টীকাষা ভরতঃ ।। मिकामः जि विकिणिङः। अस्तः
। विकारणन महर्वर्डमानः॥
मिक्णि प् मूर्याः॥ अर्कतृकः।
हेठामदः॥ जमा नृष्णि र्यथा
। शीणकवारमा उक्तःणः अरमान्
विकः मिका। मृक्येर्थः जगवान्
विकः मिका म ज् कीर्जिङः॥
मर्वरमाक अम्बनाद मिका म
जू कीर्जारङः। यज उर्द्मवन्।
प्रवी माविजीन्यमार नविन म।
हेठि विक्रिभ्तात्। भावजीकरम।
नामाधायः॥

সবিতৃদৈৰতঃ পু॰ হস্তনক্ষত্র॰। ইতি হেমচম্রঃ।।

সবিভূলঃ ত্রি সবিভূসম্বন্ধী। স-বিভূশব্দাৎ ল প্রত্যযেন নি-শক্ষঃ।।

সবিত্রণ ক্লী প্রসবকরণণ। সূবতে ২নেনেভি সূধাতোঃ করণে ইত্র প্রভাষ নিষ্পন্নণ। ইতি মুগ্ধন বোধব্যাকরণণ।।

সবিত্রিয়ঃ ত্রি সূর্য্যসম্বন্ধীয়ঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী।।

সবিত্রী আলা। ইতি হেন-চন্দ্রঃ।। গৌঃ। ইতি কেচিৎ।।

সবিধঃ ত্রি নিকট । ইত্যমরঃ।।
সমানপ্রকার চ।।

जिन्ययः जि विन्ययाणकः। छ०-পर्यायः। वीकाणकः ३। इंडि श्रातविनाः।

সবেশঃ ত্রি নিকট । ইত্যমরঃ।। বেশান্বিতঃ। ইতি ধরণী।।

সব্যঃ ত্রি বামঃ। ইত্যমরঃ॥
দক্ষিণঃ॥ প্রতিকূলঃ। ইতি
হেমচন্দ্রঃ॥

সব্যঃ পু॰ বিষ্ণুঃ। ইতি শব্দ-মাল। !!

गवामानी पु॰ जड्जू नः। ইতি ट्यह्यः॥

मृत्यार्थः भूः गात्रिः। ইতি हलाः युधः॥

সব্যেষ্ঠাঁ পু॰ সার্থিং। ইত্যমরং॥
সশস্যা স্ত্রী নাগদন্তী। ইতি রত্ন
মালা॥ শস্যযুক্তভূম্যাদৌ ত্রি॥
সশুকঃ পু॰ আন্তিকঃ। ইতি
কেচিৎ ॥

সশ্বশ্রু জ্রী শ্বশ্রুক্তন্ত্রী। তৎ পর্যায়ঃ। নরমালিনী ২। ইতি হেমচন্দ্রঃ।

সদত্বা জী গাৰ্ত্তিণী। ইতিশব্দরক্সাবলী। প্রাণিশুক্তে তি ।
যথা নন্ত। ন মূত্রণপথি স্বীত ন ভক্ষনি ন গোরজে। নসগরেলু গর্তেনু ন গক্ষোপি

সংস্থিতঃ ।। সমুদ্ধেষু প্রাণিমৎসু । ইত্যাক্লিকভন্ত।। সসন ক্লী সজার্থপঞ্ছনন । ইত্যমর্টীকা।। তুস্য ৰূপান্তর । শ্যন শ্সনঞ্ছ।

সন্মিতঃ ত্রি ঈষদ্ধাস্যযুক্তঃ! যথা

। সন্মিতানন সরোজ মঙ্গনে
রিঙ্গমাণ মতিলোলস্পুলং ।
রোচনোলসিতভাল মস্ত মে
কৈশবং মনসি শৈশবং বপুঃ।।
ইত্যনুমিতৌ জগদীশঃ।।

मगा॰ की वृक्षामीना॰ कन॰। यथा
। मु॰मन॰ मीमक॰ मगा॰ मुख॰
मान्ना ह माधम॰। ইত্যুম্মবিবেকাৎ। ইত্যুম্মবিবিকাষা॰ ভরতঃ
॥ शाना॰। यथा। धानाग्र मगा॰
मीठाक दीहि खग्रकतिक ठ९।
ইতি হেমচক্রঃ॥ শল্র॰॥ গুলঃ।
ইতি বিশ্বঃ॥ তদ্য প্রশণদা যথা।
জীর্ণ মন্ন প্রদশ্দীয়াৎ ভার্যাক্ষণ
গতযোবনা॰। রণাৎ প্রত্যাগত॰
শূর॰ সদ্যক্ষ গৃহমাগত॰॥ ইতি
চাণক্য॰॥
জন্যৎ শদ্যাশক্ষে
দ্রেইবা॰॥

সদ্যকঃ পু॰ মণিভেদগ। অসিঃ। ইতি মেদিনী।। সদ্যকো নালি-কেরান্তঃসদ্যাভমণি খদ্মযোঃ।

देखि (ह्याच्यः ॥ नमामाती^न पू॰ महामृषकः। ইতি রাজনির্ধন্টঃ।। সস্যনাশকে ত্রি ৰস্যসংবরঃ পু॰ সালবৃক্ষঃ। ইত্য-यदः ॥ ममामध्रतनः पू॰ खन्नकर्वकृषः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। मरत्रमा जी मृषिणकना। ইতি শব্দরত্বাবলী।। मर वा महिल**ा ७९** भर्या यह । সাক ২ সাদ্ধি ৩ সত্ৰ ৪ সম ৫। ইতামরः।। সজুः ৫। ইতি क्रिं। श्रद्धाः शाकनाः॥ विनाः यानः॥ मामृन्याः॥ त्योश्रयमाः ।। ममृक्षिः।। मश्काः। देखि या मिनी॥ मायर्गः। इति नक ब्रज्ञावनी ।। मर्॰ क्री भाष्मबन्दन । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। मरुः श्रु॰ खश्रदाष्ट्रभामः॥ करम ত্রি। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। महः पू॰ क्री वन । इंडि यिनिनी मर्इं क्ली ज्जािकिः॥ बलः। ইতি শব্দরত্বাবলী॥ সহকারঃ পু॰ অতিসৌরভামুঃ! ইত্যমরঃ ॥

महका ही र् श्रे श्रे श्रे

অথ হেতু ৰুপাদান প্ৰত্যযাঃ সহকারিণঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।। ন্যায়মতে তদ্ভিমত্বে সতি ভ-জ্জন্য জনকত্বণ সহকারিত্বণ ৷৷ महहदः पूर श्री शीविवकी ॥ नीनविकी। इंडि-तंत्रभाना॥ महत्रः श्रुः विकीश वरमाः॥ প্ৰতিবন্ধকঃ। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ।। चन्रद्र वि। इछि यिनिनी। সহচরী ন্ত্রী পীতঝিন্টী। ইত্য-यतः॥ भन्नी। देखि (द्यारखः॥ मथी। ইতি জটাধরঃ॥ महकः भू॰ महामतः। ইভামतः ।। নিসর্গঃ।। সহোখে ত্রি। ইতি স্থান । যথা। সুত মদন নবা-स्डा পूर्वमृक्तिः मूताति यूगल म-শমরাশো দৃষ্টিপাদত্তযাईः 1 সহজ রিপু চতুর্থেশ্বউমে চার্জ-मृष्टिः शिष्ठि जवन मूलाखाः देनव मृगा॰ हि द्वारहाः ॥ देखि जाः। তিস্তত্ত্ব ৷৷ সহজনিত্রং ক্লী স্বাভাবিকসুশ্রৎ । यथा। अति र्मिक मुनानीत्ना

ধনস্তর স্তৎপরঃ পরঃ। ক্রমশো

মঙল চিন্তা সামাদিভি রুপ-

क्टेमः॥ अब्रिः भकुः। मिखः

मूश्र । উভद विस्कृत উपानीतः। তে চ त्र श जितिशाः। महकाः कृतियाः आक्रवारम्हि ।
महकः भितः ভাগিনেষ পৈতৃयमीय याज्यमीयापिः। ইভি
गिठाकताया याह्यताशास्य >
व्याग्र ।।

সহজাতঃ ত্রি সহোদরঃ।। বম-জঃ। ইতি কেচিৎ।।

সহজারিঃ পু॰ স্বাভাবিকশত্রঃ।

যথা। সহজারিঃ সাপত্না পিভৃব্য তৎপুত্রাদিঃ। ইতি মিতাকরাষা মাচারাধ্যায়ঃ।।

নহজোদাসীনঃ পু॰ স্বাভাবিক-পরতরঃ। যথা। সহজ ক্রত্রিম মিত্র শত্রুলক্ষণরহিতো সহজক্ষ-ত্রিমোদাসীনৌ। ইন্তি মিতাক-রাযা মাচারাধ্যায়ঃ।।

বহণ্ডুক ক্লী মাণসব্যঞ্জনবিশেষঃ
1 যথা। ছাগাদে শ্মাণস মূর্দ্ধাদেঃ
জটিত খণ্ডিত পুনঃ। শুদ্ধান্য
মাণস বিবানেন পচেদেতৎ সহণ্ডুক।। সহণ্ডুক গুণগ্রন্থে শুক্রমাণসগুণ স্মৃত। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।

हिराहर পু॰ পাগুববিশেষঃ। ইতি মেদিনী॥ স চ পাগুরা- জন্য পঞ্চপুত্র: । মাজীগর্ত্তে অশ্বিনীসমারাভ্যাণ জাতঃ । জরাসন্ধুসূতঃ। স মুধিন্তির সম-কালীনো মগধেষু রাজাসীৎ। ইতি শ্রীভাগৰতণ।

महरमया खी वना ॥ मरखाष-भनः॥ भातिर्योषधिः। है छि स्मिनी॥ खर्रमाजा। हेछि स्मिन्सः॥

महामवी खी मर्भाकी। है जि

त्मिमी ॥ शीजम (खाद शमा ।
है जि त प्रमामा ॥ वनाश्चर छमः।
छ द शर्या । यहावमा २ एकाछे वना ७ करे खता ८ कमा करा
६ एक मित्र का ७ मृगाम मे । वर्षश्रूष्णा ४ एक मे वर्षिमी ० श्रूताप्रमा ४ शीज श्रूष्णी ४० एम वार्षा ४८
शक्ष वस्त्री ३६ मृगा ४७ मृगतमा ४१। खमा छ नाः। हा छा भ
वाजा मं: माक हा तिष्ठः। छ कवृक्षिका तिष्ठः। वस्तुष्ठः। विषयखत्र मा निष्ठः। महामा हिष्ठः। ।

সহদেবীগণঃ পু॰ প্রতিষ্ঠাযাণ দে-বন্ধানার্থমোষধিসমূহঃ। যথা। পঞ্গবৈয়ঃ স্নাপবেচ্চ সহদেব্যা- मिछि छङ। महरमवी वला देवव भडमूनी भड़ावती।। समादी व छपूरी व निःशी व्यासी खदेवब व । या अयशीकि मद्भाग सान दमा-यि मस्रदेलः॥ इंकि भाक्र ए ४४ स्थापः॥

ষহধর্মিণী স্ত্রী বেদবিধানেনোচ। । ইত্যমরঃ ।।

সহন ক্লী ক্ষান্তিঃ। তৎপর্যায়ঃ । তিতিকা ২ ক্ষমা ৩। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

সহনঃ ত্রি সহনশীলঃ। ইত্য মরঃ।। তৎপর্যাষঃ। সহিষ্ণুঃ ২ ক্ষমিতা ৩ ক্ষমী ৪ তিতিক্ষুঃ ৫ ক্ষম্ভা ৬। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। সহনর্ত্তন॰ ক্লী একত্রমগুলাকার

নৃত্যকরণ। ইতি কেচিৎ ।।

সহপান ক্লী একত্রমদ্যাদিভক্ষ
ণ। তৎপর্য্যাবং। সপীতিং ২।

ইতি হেমচম্রং।। তুল্যপান ৩।

ইত্যমরং।। সহপীতিং ৪। ইতি
শব্দরত্বাবলী।।

সহপাণশুকিলঃ পু॰ বযস্যঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

সহপূৰ্বাক্ত: ক্লী পূৰ্বাক্তসদৃশ । ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণে অব্য-যীভাবসমাসঃ ॥ সহভাবী ত্রি সহাবঃ। ইতি ত্রিকাওশেবঃ।।
সহভোজন কী একত্রভক্ষণ।
তৎপর্য্যাবঃ। সন্ধিঃ ২। ইত্যমরঃ।।

ক্লী মৃতস্থামিসহিত ख्विकि তারো इণপূর্বকমরণ । यथा। ज्या महानू गमनः। ज-পিরাঃ। মৃতে ভর্ত্তরি যা নারী সমারোহেজুতাশন । সারুদ্ধ-**डीनगाठात्रा वर्गटलाटक गरी-**যতে।। ভিসুঃ কোট্যোর্দ্ধকো-**है ह यानि त्लामानि मानद**व । ভাবস্তাব্দানি সা স্বর্গে ভর্তারণ बान्गक्छि॥ वाानवाशी यथा वाानः वनामूक्तत्र विना । তদন্তর্ত্তার মাদায তেনৈব সহ মোদতে॥ মাতৃক পৈতৃককৈব ষত্র কন্যা প্রদীয়তে। পুনাতি जिन्नन नाती छर्छात यान् गक्छः ভি।। তত্র সা ভতৃপিরমা পরা পর মলালসা। ক্রীডতে পতি-ना मार्कः याविष्या म्हजूर्भमा। ভর্তৃপরমা ভর্তা পরমো যদ্যাঃ সা তথা। পরা পর্যলালদে ত্যত্ত স্থ্যমানাপ্সরোগণৈ রিতি बारमने १ठिछ।। जन्मरमा वा

কুতমো বা মিত্র সা বাপি যো नदः। ७॰ देव भूनां ि मा नादी ইত্যান্দিরসভাষিত।। সাধীন। মেব নারীণা মগ্নি প্রপতনাদৃতে। नारना। धर्मा हि विख्छरमा मृत्छ ভর্তরি কর্হিচিৎ।। या नाরীভ্যু-পাদানাৎ সহ্মরণাভাৰপকো-পি সূচিতঃ। नारना। धर्म देखि जू সহমরণ স্তত্যর্থ । তথা চ বিষ্ণুঃ। মৃতে ভর্ত্তরি বন্ধচর্য্যণ তদস্বারো-इनः वा इंछि। बन्न हर्याः देमथून वर्ष्क्षन॰ जात्रनामि वर्ष्क्षनः । যথা প্রচেতাঃ। তাষুলাভ্যঞ্জন-ঞ্চৈব কা॰স্যপাত্তে চ ভোজন• । যতিশ্চ ভ্রশ্নচারী চ বিধবা চ বি-বৰ্জ্জবৈৎ।। অভ্যঞ্জন মাযুৰ্বে-দোক্ত পারিভাষিক। যথা। মূ-र्ष्त्रि मखः यमा रेखनः ভবেৎ সর্বা-ঙ্গ সঙ্গত । স্নোভোভি স্তর্পষে-षाष्ट्र जानाकः म जेनासनः ॥ তৈলমন্ধ ষদাঙ্গেষু ন চ স্যান্ধাহ তৰ্পণ। সা মার্ফিঃ পৃথগভ্যঙ্গো यखकारमे अकीर्खिङः॥ स्रृष्टिः। একাহারঃ সদা কার্য্যো ন দ্বিতী-यः कलाहन। शर्याक्रमासिनी ना-রী বিধব। পাত্তযেৎ পতি॰।। গ-ন্ধজব্যস্য সম্ভোগে বৈৰ কাৰ্য্য

ভষা পুনঃ। তর্পণ প্রতাহণ কা-র্য্যণ ভর্নু স্তিল সম্পোদকৈঃ।। তৎ পিতু স্তৎপিতু শ্চাপি নান গো-ত্রাদি পূর্বকং। এতত্ত্ তর্পনং পুত্র পৌত্রাদ্যভাববিষ্য নিতি মদন-পারিজাতঃ।। বৈশাথে কার্ত্তিকে মাষে বিশেষ নিষম ঞ্বেৎ। স্না-न मान छीर्थशाबा वित्का नीम প্ৰহ॰ মুহুঃ।। 🛊।। অত সাধীৰ মা-হ। আর্ত্তার্ত্তে মুদিতা হুফে প্রো-ষিতে মলিনা ক্লশা। মূতে মিুষে-ত যা পত্যো সাধী জেয়া পতি-ব্রতা।। ইতি ছন্দোগপরিশিষ্টীয মিতি কন্মতরুঃ। সাধীপ্রসাদেন লোকধারণ মপ্যাহ। মৎস্যপুরা-ণ । তন্মাৎ সাধ্যঃ স্ত্রিয়ঃ পূজ্যাঃ में छङ (ए व व ब्ह्ह निः । রাজ্ঞা প্রসাদেন ধার্য্যতে চ জগ-ত্রয় । মহাভারতে। অবমত্য চ ষাঃ পূৰ্ব॰ পতি॰ দুফেন চেতসা। বৰ্ত্তন্তে যাশ্চ সতত্ত ভৰ্তৃণাণ প্ৰ-তিকুলতঃ।। ভর্লনুমরণ কালে याः अर्वेष्ठि তथाविधाः। कामा ६ ক্ৰোধাৎ ভয়ামোহাৎ সৰ্বাঃ পূ-তা ভবন্তি তাঃ।। অত্র ঐহিক ব্ৰহ্মস্বপতে দাহনিষেধাৎ জন্মা-স্তরীয় তৎপাপবতএব সহমরণে-

नाकातः॥ बक्तभूतार्व। प्र-শান্তর মৃতে পত্যৌ সাধী তৎ-शानुकाम्वयः। निशारयात्रिन मः শুদ্ধা প্রবিশেক্জাতবেদসং !। ঋ-रधनवाना भाशी खी न ভবে-माञ्चयािंकी। बाशास्नीतः नि বৃত্তে তু আদ্ধ প্রাপ্নোতি শাস্ত্র-व ।। अध्यनवाना इया नाती त्रविथवा देजानि मञ्जाद । এवध অঙ্গিরো ত্রহ্মপুরাণ বচন পর্য্যা-লোচনষা বান্ধণ্যাদি সকল ভা-ৰ্য্যাণা॰ স্বগত ভৰ্ত্ত্গত ফলবিশে-ষার্থিনীনাণ গর্ত্তবতী বালাপত্যা-দি ব্যতিরিক্তানা সহমরণানুম-রণযো রধিকার ইভি। বিবাদ-কন্নতরু রত্নাকরো। তত্র বান্ধ ণ্যাদ্যনুমরণাধিকারো স্তদ্যা স্তন্ধিধাৎ। তথা চ মি-তাক্ষরায়া দেববোধক্ত যাজ্ঞ-বক্কা দীকাযাঞ্গোতনঃ। পৃথক্ চিতি॰ সমারুছ ন বিপ্রা গন্ত মর্ছ-তি। ইতরাসাম্ভ নারীণাণ স্ত্রীধ-র্মো ২য় পরঃ স্মৃতঃ।। তস্মাদ্রা-ন্ধণ্যাঃ সহ্মরণ মেব ইতরাসাম্ভ উভয মিতি। কল্পতরু রত্নাকর শুদ্ধি চিন্তামণিষু পাদুকাৰ্য মি-তি দর্শনাৎ পাদুকাদিক মিতাপ-

পাঠঃ কিন্তু পাদুকাদ্ব মিত্যুপ-লক্ষণণা উপনসা বিপ্রেভরাষাণ জব্যবিশেষ মনুপাদায পৃথক্ চি-ত্যারোহণ মাত্রোক্তে:। যথো-শনা। পৃথক্ চিতি॰ সমারুছ ন विथा भन्न गर्ना जनगमा त्यव নারীণা স্ত্রীধর্ম্মো ২য়ণ পরঃ স্মৃতঃ ।। মদনপারিজাতোপ্যেব । শি-ষ্টাচারোপি তথা। ক্লত্যতত্ত্বার্ণবে বৃহন্নারদীয় । বালাপত্যাশ্চ গ-ৰ্ত্তিণ্যো ছদৃষ্টঋতব স্তথা। রজস্ব-ল। রাজসুতে নারে। হন্তি চিতা॰ শুভে ॥ রাজসূতে ইতি দগর মাতৃঃ সমোধন । বৃহস্পতিঃ। बालमश्रक्तनः छाङ्ग वालाशठा। ন গচ্ছতি। রজস্বলা সৃতিকাচ त्रत्ककार्यक गर्जिनी।। जेव मना-ত শ্চেদ্বালস্য সম্বৰ্জন স্যাত্তদা তস্যা অপ্যধিকারঃ। ব্যাসঃ। **मिरेनकगगामिश्रा माश्री** एउ क्रजनिर्गा। न मरहर श्रामिन॰ **७गा यावदाशयन ७८व९।। ज-**বিষাপুরাবে। তৃতীযে হক্লি উদ-कााया मृष्ड ভर्खति देव विकाः । তम्यानु नज्ञनार्थाय ज्ञानट्यटन क्रा-ত্রকণ।। তস্য ভর্তুঃ। তথা। একাণ চিতা সনাসাদ্য ভর্তার যানু-

পচ্ছতি। ভদ্ভৰ্জু ৰ্যঃ ক্ৰিষাকৰ্ত্ত। স তস্যাশ্চ ক্রিযাঞ্চরেৎ।। পিওদান পর্যান্ত । ষশ্চাগ্রিদাত। প্রেত্স্য পিণ্ডান্ দদ্যাৎ সএব হি । ইতি বাযুপুরালৈকবাক্যত্বাৎ।। शा बक्रभूतात्व। आवरग्रुक्-জাযান্ত সভর্তৃত্বলপা মিনাণ। চি-তা মারোপযন্ প্রাক্তঃ প্রমৃতে ধর্ম মৃত্য ।। ইমাঃ পতিব্ৰতাঃ পুণ্যাঃ खिर्या या याः मूर्णाजनाः। मह ভর্তৃশরীরেণ সংবিশন্ত বিভাব मुं।। এবং শ্রুষা ততো নারী শ্ৰদ্ধা ভক্তি সমন্বিতা। পিতৃমে-**८धन य**८छन हेकु। वर्ग नवाश्च-ষাৎ।। প্রসূতে ভর্ত্তরীতিশেষঃ। পিতৃমেধেন যজেন চিতারোহণ ৰূপেণ। পাদুকাদ্ব গ্ৰহণ পূৰ্ব-কানুমরণেপি সহভ' ইত্যনূহঃ প্রযোজ্যঃ। দেশান্তর মৃতে পত্যাবিত্যাদিনা শরীরপ্র-তিনিধিত্বেন তদীযদ্ৰব্যবিধানাৎ । প্রতিনিধৌ চ যথাশ্রুত মন্ত্র পাঠ गाङ् कालाग्नः। শব্দে श्विश्र-তিপত্তিঃ ইত্যেতৎ বিবৃত মেকা-नगीठाख्या क्षा न ह व्यक्तिं जन প্রবিষ্টানাণ ভৃগু স্প্রাম দেশা-ন্তর মৃতানা গর্রাণা জাতদ-

ন্তানা॰ মরণে ত্রিরাত্তেণ শুদ্ধিঃ। ইতি কাশ্যপবচনাৎ সহমৃতায়া অপ্যাগ্ন প্রবেশেন ত্রিরাত্রাশোচণ তত্রৈব ভদ্যাঃ পিওদান মিতি বা-**छा॰। अधिक बन्नभूतात्व भृथक्** চিতি সমারোহণমাত্রে ত্রাহাশৌ-চ বিধানাৎ অন্যত্র ভর্তৃল্যা-শৌচ প্রতীতেঃ। সহমরণে কা-শ্যপোক্ত ত্রিরাত্রাশৌচাঙ্গীকারে ২পি ত্যাশৌচ্যা বৃদ্ধ্যা পত্য-শৌচকালাবধিস্থাযিত্ব। অন্তর্জ-শাহে স্যাতাঞ্ছে পুনর্মরণ জন্ম-नी। তাবৎ गाम छि विंत्था या-**व**ख्य मामिनिर्मण ।। इंडियन्-ক্তাশোচ সম্বরে পরাশোচস্য পু-ৰ্বাশৌ চ কালাবধি স্থাবিদ্ব প্ৰতী-তেঃ। ততশ্চ যথা অশৌচ কাল সকোচে তত্মধ্য এব সঙ্কলয্য পি-ওদান তথাশোচকাল বৃদ্ধাবিপ यावनत्नोठः यथाक्तमः ननिश्वा দেষা ইতি। অতএব জিকনীযা-স্ত্যেক্টিবিধ্যনুমরণবিবেক্ষোর্ব্যা-সঃ। সংস্থিত পতি মালিক্য প্র-वित्नाम्या इंडान्यनः। छमाः नि-ণ্ডাদিক দেয় ক্রমশঃ পতিপিণ্ড-व ।। विखुः। अन्ति । शिखनान-स्र यथा छर्जु फित्न फित्न । छमश्चा-

রোহিণী ৰস্মাত্তস্মাৎ সা নাত্মহা-जिनी।। अ<u>जानूः महार्थः। প</u>ि मानिक्राजातितकवाकाषाव । স্বাম্যশৌচাভ্যম্ভরে পৃথক্ চিতা মৃতাষা ব্রাহেণ পিওদান স্বাম্য-শৌচাপগমে তু আদ্ধে। অবি-তায়াঃ প্রদাতব্যা দশপিণ্ডা স্ত্র্য-হেণ ভূ। স্বাম্যশৌচ ব্যতীতে ভু ভদ্যাঃ শ্রাদ্ধণ বিধীয়তে ৷৷ ইতি किकनध्रु रेशकीनिम वहना । অমিপুরাণস্যেদ নিতি শূলপাণিঃ । अवानुः भन्नामर्थः। अञीरञ जु जर्जाति शानुकाषय गुशा-माय बनमिश्रिथर्वरम् बाहारमोठ-वावच्या शिखनानः हजूर्यमितन শ্ৰাদ্ধ পূৰ্বোক্ত বন্ধপুরাণ বচ-নাৎ। যত্র তু ভর্তুঃ সংগ্রামহত দ্বাদিনা সদ্যঃশোচ তত্ৰ পৃথক্ চিতামৃতাশৌচস্য পূৰ্বোক্ত ব্ৰশ্ব-পুরাণবচনাৎ ত্রিরাত্রত্বেন বহু-কালব্যাপিত্বেনাঘবৃদ্ধিমত্ত্বাত্ত্ত-देनव পूर्वाटमी हमा वाश्रामा ९ তত্ত্রপি ত্রাহেণ পিওদান । ভত্রাপ্যেকচিভারোহণে ভত্র-শৌচব্যপগমাৎ শুদ্ধিঃ। সংস্থি-ত॰ পতি মালিঙ্গা ইতি অন্বিতা-পিওদান মিভি পূর্বোক্তবচনা-

ভ্যা॰ **অগ্নিপ্রবেশে** সুমৃন্ধনা স माः भौहिवशानाकः। यथा। जृ-থগ্নি জল সংগ্রাম দেশাস্তরস্থ সং-ন্যাস্যনশ্নাশ্নি মহাধ্নিকানা উদক্তিষা কার্য্যা সদাংশৌচ॰ ভৰতি ইতি। ভৃগু রুচ্চদেশঃ। यहाश्रिनिकः भूगार्थं हिमालया-ৰধিক মহাপথ গমনেন সম্পা-षिछ बद्रशः। बटेहरू महाःस्मी-চ নিত্যবেদাধ্যাপকৈ রগ্নিছো-তৃভিশ্চ একাহাশৌচিভিশ্চ ক-র্ত্তব্য মিভি হারলভাদত্ত বিষয়-ত্বেন নৈতদ্বিয়ফক নিতি বাচ্য । তন্মাত্র বিষয়কত্বে প্রনাণাভাবাৎ । সামানাম্থপ্রবৃত্তত্যা বচনান্ত-র সম্বাদিত্যা চৈত্দ্বিষ্যক মিতি । অন্যথা কাশ্যপোক্ত ত্রিরাত্রা-শৌচ মপি অগ্নি জল সংগ্ৰাম थविकोना॰ धमानाटनव म**त्र**न ইতি হারলতা দর্শনাৎ অনুমরণ বিষয়ক ন স্যাৎ তত্মাৎ কাশ্যপ বচন বন্ধপুরাণ সমানবিষ্যক মিতি। সুমন্তবচন সণ্গ্রাম হত-ভর্ত্ত্ সহগমন বিষয়কমপীতি ।। #।। এवश मयाधिन। ठाउक्तान-হস্য মুক্তস্য ধৃতরাফ্রস্য পর্ণো-**ढेका**भिना (महमाहकाटन ७९পত্ন্যা গান্ধার্য্যা অগ্নিপ্রবেশ দর্শ नामिमानी॰ कामामि म्छमा मृ क्रमाणि भेजा खरभेजाः मह মরণ সঙ্গছতে ৷ শ্রীভাগবতে ত मुक्त[े]। मश्यात्म श्री जि. प्लिट् গত্যুঃ পত্নী সহোটজে। বহিঃ স্থিতা পতিং সাধী ত মগ্লি মনুবে-ক্ষ্যতি ।। অনুবেক্ষ্য**তি অগ্নিপ্রবে**-শনণ করিষ্যতি ইতি যুধিষ্ঠিরাষ नात्रममा ভविषा कथनः॥ म-যিত॰ যান্যদেশস্থ মৃত শ্ৰেদ্বা পতিত্রতা। সমারোহতি শীঘাুুুুুো তস্যাঃ সিদ্ধি নিবোধত।। ইতি वराभवहनाषिना भश्यद्गशानुभद्गश যে। নিরবকাশ নৈমিত্তিক কাম্য-ত্বেন মলমাসাদাবপি কর্ত্তব্যতা। নৈমিত্তিকানি কাম্যানি নিপত-স্তি'যথা যথা। তথা তথৈব কা-ৰ্য্যাণিন কালস্ত বিধীষতে॥ ইতি मक्कवतनार ॥ क्षा जनश् श्राया-गः। পুতাদিনা স্বগৃছোক্ত বিধি-না অগ্নৌ দত্তে স্বলিতায়া ভর্তৃ চিতাযা সহগন্ত্ৰী সাধী স্নাতা প রিহিত ধৌত বাসোযুগা ঙ্গশহস্তা था शूथी উদগ্रুখी वा देनव छैर्थः নাচান্তা তিল জল স্পত্ৰৰ মাদা-য ওম্ তৎ সদিতি ব্ৰাহ্মণৈ ৰুক্যা-

রিতে নারাষণ সংস্তা নমো-২দ্যামুকে মাসি অমুকে পক্ষে অ-मूक्िरथी अमुक्रिगाना श्रीमञी व्ययुकीतनवी व्यक्तक्षठी ममाठात-ष পূৰ্ৰক স্বৰ্গলোক মহীষ্মানত্ব যানবাধিকরণক লোমসমসণ-খ্যাব্দাবচ্ছিন্ন স্বৰ্গবাস ভৰ্তৃসহি-ত মোদমানত্ব মাতৃ পিতৃ শ্বশুর সলত্রয় পূতত্ব চতুর্দ্দেশস্থাবচ্ছিন্ন कालाधिकतनकाष्ट्राज्ञात खुय-মানত্ব পতিসহিত ক্ৰীডমানত্ব ব-ক্ষন্ন ক্ৰম মিত্ৰন্ন পতিপূভত্বকামা ভর্ত্ত্বলচ্চিতারোহণ মহণ করি-(या है छि। अनुमत्रत्थ जू छर्जृब-লচ্চিতারোহণ মিত্যত্র স্থলচ্চিতা প্রবেশেন-ভর্ত্রন্মরণ মিতি সঙ্ক-ब्रा अरकी लाक्याना जामिछा চন্দ্রানিলাগ্যাকাশ ভূমি জল স্থ-দ্যাবস্থিতা স্তর্যামি পুরুষ যম দিন व्राजि मक्ता धर्य। यृयः माकिता ভবত স্বলচ্চিতারোহণেন ভর্তৃ-শরীরানুগমন মহ° করোমি ইতি । অনুরমণে তু ভর্তৃশ্রীরানুগ-মন মিতাত্র ভর্তনুমরণ মিত্যুচ্চা-ৰ্য্য জ্বলচ্চিতাগ্নিণ ত্ৰিঃ প্ৰদক্ষিণী-क्रुं अम् हेमा नाती त्रविधवाः म-পত্নী রঞ্জনেন সর্পিষা সংবিশস্ত্র।

श्रनद्यता अनयोता मूत्रद्वा आ-त्राह्य कनस्यानि यश्य है जिस (धरमाक बरस। ७म् इमाः गढ़ि-ব্ৰতাঃ পুণাঃ স্থিযো ষা ষাঃ সু-শোভনাঃ। সহভর্ত্ শরীরেণ সংবিশন্ত বিভাবসুং॥ ইতি পৌ-রাণিকে মন্ত্রে চ ব্রাহ্মণেন পঠিতে নমো নম ইত্যুচ্চাৰ্য্য স্বলচ্চিতা नियादार्थः। 🟶 ॥ जानस्यः। চিভিভুষ্টা তু **খা** নারী মোহা-ষিচলিতা ভবেৎ। প্রাজাপত্যে-ন শুদ্ধেতু তক্মদিন পাপকর্মণঃ ।। পাশ্চাত্য নিৰ্বামৃতে স্মৃতিঃ। একভিত্যা সমাৰটো দম্পতী নিধন গতে। পৃথক্ আদ্ধ ত (याः अर्याटमामनस शृथक शृथक য়। বিদ্যাকরধৃতা শৃতিং। একা-হেন সূতানাত্ত বহুকা নথ বা ছ-যোঃ। ভয়েণ শ্ৰপণ ক্লছা পৃথক **बाक्षः श्रवर्त्तरः ॥ यत् यमा** নারী বিশেদগ্রি স্বেচ্ছ্যা পতি-না সহ। অশৌচ মুদক তস্যাঃ সহভর্ত্তেভি নিশ্চিত ৷৷ তিথাস্ত-র মৃতাযান্ত পৃথক্ শ্রাদ্ধ ন বি-मार्छ। देखि ठज्जू क छणे। । ৰ্যাধৃত বন বচনান্তিম তিথি নৃতা-या जिन नजु मृ टिटियो आक

मिछि इतिमान छक् िश्वाः १ छन्न जना वहनमान् एक प्रमान निष्या निष्य

াণ ৫ অংশে ৩৮ অ-ধ্যাবে কন্ধিপুরাণে ৩৩ অধ্যা-যে চ দ্রস্টব্যং 11

সহযাষী ত্রি মিলিতগামী। যথা

ান নদীষু নদী জাষাৎ পর্বতেষু

চ পর্বতান্। আবাসে ভোজনে
বাপিন ত্যজেৎ সহযাবিন ।।
ইতি কৃর্মপুরাণে উপরিভাগে
১৫ অধ্যায়ঃ।।

সহরদা স্ত্রী মুদ্দাপর্ণী। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।

महित वा हितः ममृभः। है छि

युक्षद्वाथबाकितः।। मृद्या वृद्य

ह भूः। है छि दक्षि ।।

সহর্ষঃ পু॰ ম্পদ্ধন ।। হর্ষঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। হর্ষযুক্তে ত্রি।। সহসা ব্য হঠাৎ। তৎপর্য্যাষঃ। অতর্কিতঃ ২। ইত্যমরঃ।। অক-স্মাৎ ৩। ইতি শব্দরত্বাবলী।। जरमाकर्णकंत्रनित्ति । स्मा प्रिम् विम्यो क्या । जरमा विम्यो का किया प्रिम् विक्या प्रिम् विक्या प्रिम् विक्या प्रिम् विक्या अपा । विष्य प्रिम् विक्या का जी। यथा। विष्य का महमा भित्र का महमा भित्र का महमा भित्र का महमा का प्रिम् विक्या का प्रिम् विक्या का महमा का प्रिम् विक्या का प्रिम् विक्या का महमा का का प्रिम् विक्या का प्राम् विक्या का प्रिम् विक्या का प्राम विक्या का प्राम विक्या का प्राम विक्या का प्राम विक्य का प्राम व

সহসাদৃষ্টঃ ত্রি হঠাৎদৃষ্টঃ ॥ দ ভকপুল্রে পু॰। ইতি কেচিৎ ॥ সহসানুঃ পু॰ মযুরঃ ॥ যজ্ঞঃ ॥ ক্ষমাবুক্তেত্রি । ইত্যুণাদিকোষঃ সহস্যঃ পু॰ পৌষমাসঃ । ইত্য-মরঃ ॥

गर्मु की मगणजगःशा। ইতি

रেমচন্দ্রঃ। হাজার ইতি পার
ग্য ভাষা। তদাচকানি যথা।

জাহবীবক্তু > শেষণীর্ষ ২

পদ্মচ্চনঃ ৩ রবিকরঃ ৪ অর্জু নবাণঃ ৫ বেদশাখা ৬ ইন্দ্রদৃটিঃ

গ। ইতি কবিকল্পলতা।।

সহসূকাণ্ডা স্ত্ৰী শ্বেভদূৰা। ইভি রাজনির্ঘন্টঃ।।

नश्जुकित्रनः भू मृर्याः। ই

र्नावृक्षः ॥

गर्मुष्कुः भूः भाग्नित्रव्याः ।

रेठामतः ॥

गर्मुष्कुः भूः ताषान्त्रव्याः ।

रेठि म्कत्रवातनी ॥

गर्मुषाः भूः कार्त्वीर्याञ्क् नः
। ইতি क्रियतः ॥

गर्मुषातः भूः विक्ठकः। ইতি

क्रियाः ।

गर्मुषातः भ्रः विक्ठकः। ইতি

क्रियाः ।

गर्मुषाता जी प्रविज्ञानार्थ
गर्मुष्किप्रयुक्तभावभनिष्क्रन
वाता। वथा। मर्मुषात्रवा प्रवीः

সহসৃচ্ছিদ্রযুক্তপাত্রগলিভজন-ধারা। বথা। সহসুধারষা দেবী॰ স্নাপযামি সুরেশ্বরী॰। ইতি দুর্গোৎসবপদ্ধতিঃ।। সহসুন্যনঃ পু॰ ইন্ধঃ। ইতি

হলাযুধ: ।। সহস্নেত্র: পু॰ ইন্দ্র:। ইতি হেম-চন্দ্র: ।। বিফুঃ। ইতি শ্রীভাগ-

वजः ॥

महमूललः की लगः। ইত্যमतः॥

महमूलार्थ पूर विकः। यथा।

महमूलीर्थ प्रक्राः महमूकः महमूलारः ।

हमुलारः। ইতি পুরুষসূক্তः॥

महमूलारः प्रकर्भावश्यकः॥

महमूलारः प्रकर्भावश्यकः॥

मृश्या विक्ः। ইতি यिनिनी।। मश्मुजुकः पुर विक्ः। यथा।

পশাস্তাদোৰপ यमजुठकूया मः

र्সुপাদোর ভুজানমাদ্ভুত । मश्रुकृष धारणाणि नामिकः मर्मु योनायत मखलासम्।। ইতি শ্রীভাগবতে ১ ক্ষন্ধে ৩ অ-शायः॥ कार्खवीयां क्कू नम्ह ॥ मर्मुज्जा खी यशनकीः। माठ महिषामूत्रमर्किनी। यथा। त्य-তাননা নীলভুজা সুখেতস্তন-यखना। त्रक्रमधा त्रक्रामश নীলজভোরতালুকা।। চিত্রা-নুলেপনা কান্তা সৰ্বসৌভাগ্য मारिनी। असीमगञ्जा शृक्रा मा मर्मुज्जा तत्।। आयूधा-नाज तक्कि पिक्निनाधःकत्रकः মাৎ। অক্ষমালা চ মুষল বা-नामि अलिमः शमाः॥ ठळः बिम्ल॰ शत्रशु॰ मध्य घटके ठ পাশক। শক্তি দণ্ড চর্ম চাপ পানপাত্র॰ কমগুলু।। অলঙ্কৃত-ভুজা ত্বেভি রাষ্ট্রং পরমেশ্বরী । श्वर्वा खिठिकानामि गहि-यामूत्रयर्षिनी॥ **ই**ত্যেষা রাজ-मी मूर्जिः मईत्परमयी मणा। ষা ধ্যাত্বা মানবো নিত্য লভ-তে হিত মাত্মনঃ।। ইতি মার্ক-ভেষপুরাণীষ দেবীমাহাল্ক্য পা-ठेक् यः ॥

महम्मूर्कः पू॰ विकृः। जमा अ-মাণ সহসুভুজশব্দে জফীব্যং ॥ मरमुम्ली जी जवसी। देखि রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ मश्रु (योनिः भू॰ विकृः। जमा প্রমাণ সহসুভূজশব্দে জন্টব্য• সহস্রশাঃ পু॰ সূর্য্যঃ। সহস্-কিরণশব্দ দর্শনাৎ।। महमुदानः श्रु दिख्ः। हेि শব্দরত্নাবলী।। मर्मुवारः पु॰ वानताजः। यथा । বাণঃ পুত্রশত জ্যেষ্ঠো বলে-तामीमहाज्ञनः। महमुवाह र्वा-দ্যেন তাওবে তোষষমূত ।। ইতি শ্রীভাগবতে ১০ ক্ষন্ধে ৬২ व्यशासः॥ नश्जुवीर्या जी पूर्व। देश्यकः ।। মহাশতাবরী। ইতিরাজনি-र्घनिः ॥ मश्रुत्वश क्री চूक्रा काञ्जिक-विट्नियः। इंछि त्राक्रनिर्यन्छः॥ मश्मुति की शिक्षु। देखि स-मिनी त्राकनिर्घटकी॥ मश्रुत्वशी पू॰ षश्रुत्वछमः। ইতি यिनिनी। कञ्जूती। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ॥ সহসুবেধকর্ত্তরি ত্রি॥ সহসুশিখরঃ পু॰ বিদ্যাপর্বতঃ।

সহা

ইতি কেচিৎ ৷৷
সহসূত্রবাঃ পু॰ বিষ্ণুঃ অস্য
প্রমাণ সহসূত্রশব্দে জন্টব্য॰
সহসূত্রগাশ্বঃ পু॰ ইন্দ্রবাঃ। ইতি
কেচিৎ ৷৷

সহসূ। স্ত্রী অন্বৰ্গ। ইতি ভাব-প্রকাশঃ।।

সহসাত্তঃ পু সূর্যাঃ। ইত্য-মরঃ॥

সহস্থাণীকঃ পু॰ শতানীকরাজ-পুত্ৰঃ। যথা। শতানীকো ২ভ-বৎ পূৰ্ৰণ পুৱাকল্পে মহীপতিঃ । इन्हांय সুব हृन् य छहान् अका-পূতেন চেতস।।। যজ্ঞে যজ্ঞে সহস্যুণি গজাশ্ব রথ দন্তিনাং! বান্ধণেভ্যো খদদদাজন্শ্যামা-নাঞ্চ শত॰ শত॰।। দ্বিজ স্তুফৌ দদৌ পুক্র কৌষিকো ভূভূতে তথা। পত্ন্যা স্তদ্য দ জাতোপি कालां काल वावर्षां ।। (वम বেদাঙ্গ তত্ত্বজ্ঞো ধর্মা:জ্ঞা নি-यञ्जा कांखा ठन्यम ख-ল্যঃ প্রতাপাৎ সূর্য্যবৎ প্রভুঃ॥ मगरम धर्मा तारक व क्रममा পृथि-বীসমঃ৷ এতদ্গুণবতো জ্ঞাত্বা সূত রাজ্যে। বিজাতষঃ।। সহ-मुागीकनायान छळू खमा मू

হর্ষিতাঃ। ইতি বক্লিপুরাণে পাপনাশন বৃষদান। धायः ॥ गर्माननः पु॰ विकः। अमा श्र-মাণ সহসুভুজশব্দে দ্রম্ভব্য ।। সহসারঃ পু॰ ক্লী শিরোবস্থিতা-(शंतू अनश्नुमनक यन । यथा। সহসারে হিমনিভে সর্বর্ণ বি-ভূষিতে। অ ক থাদি ত্রিরেখাত্ম र न क वय जृषित्य।। जन्मस्य পরবিন্দুঞ্চ সৃষ্টি স্থিতি লমাত্ম-ক । এব সমাহিতমনা ধ্যাষে-ষ্যাদো ২য মান্তরঃ।। ইতি ত-স্ত্রসারোক্তান্তর্মাতৃকান্যাসঃ।। मरमाकः पू॰ रेखः। रेजानतः । विकुः। यथा। महमुनीर्या भूक्षकः महम्बाकः महम्**श**् । ইতি পুরুষসূক্তণ ৷৷

महसूरी पूर महस्मुन (या वली ।
 তৎপর্যায়ঃ। माहसुः २। ইত্য यतः॥ দ্বে হাজরা ইতি খ্যাতে।
 र्य महस्मुन महमुमः খ্যান গ জাদিনা বলিনঃ দৈন্যবস্তঃ তে
। সহসুং বলানি সম্ভ্যেষা মিতি
 অস্ত্যর্থে বিকারসংয়েত্যাদিনা
. ফে নৈকাজাদিতি ইনি চ ৰূপ দ্বং। ইতি ভরতঃ ॥

र. ह। जी घृष्ठकमात्री॥ मूकालनी

। रेजाबद्रः ॥ नथरजंकः ॥ मट्डार्थना।। भृषिती। इंडि (यिनि ॥ एक्क विकी ॥ अर्थ-कहाली। देखि गयहस्यका॥ त्रान्ता ॥ वर्षकीती ॥ शीछमः (७। ६ शना। देखि त्रञ्जभाना।। তরুণীপুষ্ণ । ইতি রাজনির্যন্টঃ महाः पू॰ व्यवश्यनमामः। हेळा-মরঃ॥ হেমস্তকালঃ। ইতি মে-षिनी ॥ সহাচরঃ পু॰ পীভঝিন্টী। ইতি नक्तत्रावची।। महत्रका।। मश्यः भू অনুকুলঃ। তৎ-পর্যায:। অনুপ্রবং ২ অনুচরঃ ৩ অভিদরঃ ৪। ইত্যমরঃ ।। রাজ্ঞা॰ সহাষা যথা। সদৃত্যাশ্চ তথা পুষ্টাঃ সতত প্রতিমানি-তাঃ। রাজ্ঞা সহাযাঃ কর্ত্তব্যাঃ পৃথিবী • জেডু মিচ্ছতা।। ইতি बार्मा ३५२ व्यायः ॥ সহাযতা স্ত্ৰী সহাযানা সমূহঃ! हेळामतः ॥ माहायाक ॥ महायच॰ क्ली महायछ।। भहाय-স্য ভাবঃ। সহায শব্দান্তাবে স্ব প্রত্যযেন নিষ্পন্ন ।। महातः पू॰ खागुर्कः। हेजूाना-मित्कायः ॥ यहाव्यमयः। ইতি

र्लायुधः ॥ महाद्रागाः जि नीक्रक्। ३७ **ट्याट्यः** ॥ महार्फः जि मध्यमः। स्त्रश्कः । शर्पान महर्वद्यानः ॥ **সহিতঃ ত্রি স**মভিব্যাহ্নতঃ। সং-যুক্তঃ। সহশব্দাৎ ইতচ্ প্রত্য-যেন সহ্ধাতোঃ ক্ত প্রত্যযেন চ নিষ্পন্নঃ। ইভি সিদ্ধান্তকৌ-मूनी ।। मःहिङः। ममाक्हिङः। ইতিমৃদ্ধবোধব্যাকরণ ৷৷ ছিতে-ন সহবর্ত্তমানশ্চ॥ সহিতা ত্রি সহনশীলঃ। সোঢা । সহ্ধাতো স্তৃচ্ প্রত্যেন নি-न्ना ३ छि निकां छ को गुनी ॥ नहितः क्री नश्नकत्रनः। मञ्हा অনেনেতি সহধাতো রিত্র প্র-ত্যবেন নিষ্পান্ন। ইতি ব্যাক-ৰূপ° 11 महिकुः वि महनमीलः। ७९-পर्यायः। महनः २ कछा ७ তিতিকু: ৪ ক্ষমিতা ৫ ক্ষমী ৬। ইত্যমরঃ ॥ महिक्का जी महित्का जीवः। छ ९ शर्यायः। छि छिका २ कमा ৩ ক্ষান্তিঃ ৩। ইতি জটাধরঃ ॥ नहिंदः पू॰ मूर्याः। ইजुनानि-

काराः ॥

गहातः जी भृथिती। इिंछ निकार्खकोभूमा भूगिमिनृक्तिः ॥

गहामशः कि श्रमस्त्रभगः। ईछाभन्नगिकाशाः छत्रछः ॥

गहामशः की निर्विक्षिनिजानः
। यथा। निर्विक्षमा छू हामस्य

प्रस्त सन्त्रिम् श्रकाश्वारः । महास्त्रभञ्ज निर्द्धिशः भूतीसञ्ज श्रछात्र ॥ देखि श्रीयन्द्विनि
तिकः ॥

সহোজিঃ স্ত্রী অলকারবিশেষঃ।
বথা। সহোজিঃ সহভাবশ্চেৎ
ভাসতে জনরঞ্জনঃ। দিগম্ভ মগমত্তস্য কীর্তিঃ প্রত্যথিভিঃ সহ।। ইতি চন্দ্রালোকঃ।।
সহোটজঃ পুণ মুনীনাণ পর্ণশালা

। यथा। यूनीनाक िठाक्रहेगा॰

পর্ণোটজ সহোটজৌ।

श्रवावनी ॥

সহোতঃ পু॰ দাদশবিধপুত্রান্ত-গ্রন্থান্ত্রবিশেষঃ। ইতি জটা-ধরঃ। যা গর্ত্তিনী সংস্ক্রিয়তে জ্ঞাতাজ্ঞাভাপি বা সতী। বো-তুঃ সগর্ত্তো ভবতি সহোত ইতি চোচ্যতে।। ইতি মানবে ৮ অ-ধ্যায়ঃ।। যা গর্ত্তবতী অজ্ঞাত- গর্ত্তা জ্ঞাতগর্ত্তা বা পরিণীবতে স গর্ত্ত স্থান্য জাতঃ পরিণেতুঃ পুল্রো ভবতি সহোট ইতি ব্যপ-দিশ্যতে। ইতি সল্লুকভটঃ ॥ সহোদরঃ পু॰ একমাতৃগর্ত্তজাত-ভূাতা। তৎপর্য্যাবঃ। সহজঃ ২ সোদরঃ ৩ ভূাতা ৪ সগর্ত্তঃ ৫ সমানোদর্য্যঃ ৫ সোদর্যঃ ৬। ইতি জটাধরঃ ॥

সহোরঃ ত্রি সাধুঃ। ইত্যুণাদি-কোষঃ।।

সহোবল॰ ক্লী দৌরাখ্যা°। ইভি কেচিৎ।।

ত্ত ম- সহুণ ক্লী আরোগ্যণ। সামাণ।

সহুং স- সুমধুরণ। ইতি শব্দরত্নাবলী ।।

সহুং পুণ পর্বতবিশেষণ। ইতি

গালা মেদিনী ।। স তু পুনাখ্যদেশস্য

উত্তরপশ্চিমদিশি বর্ত্ততে ।।

ইতি সেহুণ ত্রি সোচব্যাণ সহনীয়া

ইতি মেদিনী ।।

সক্ষমঃ ত্রি ক্ষমতাবিশিষ্টঃ।। ক্ষ-মাবিশিষ্টঃ। ক্ষমেণ ক্ষমষা বা সহ বর্ত্তমানঃ। ইতি বহুত্রীছি সমাস নিষ্পালঃ।।

সকারঃ ত্রি লবণযুক্তঃ। ক্ষারেণ-সহবর্ত্তমানঃ। ইতি বহুবীছি সমাস নিষ্পায়ঃ।। সা দ্রী গৌরী।। লক্ষীঃ। ইতি
শব্দরত্বাবলী ।। পূর্বোক্তপরামশ্বিষযীভূতা।। প্রসিদ্ধা।
ইতি দ্রীলিঙ্গ তদ্শব্দস্য প্রথদৈকবচন নিষ্পন্ন।। ইতি ব্যাকরণং।।

मां था॰ क्री यज्मनी अर्गजनर्भ-नभाजवित्भयः। ७९ भर्यायः। काशिन २। इंडि ट्या ह खाः॥ यथा। शक्ष्यः कलित्ना नाम मि-দ্ধেশঃ কালবিপ্পৃত । প্রোবাচা-সুরষে সাংখ্য তত্ত্বগ্রামবিনির্ণ-य।। ইতি শ্রীভাগবতে ১ ক্ষন্ধে ७ ख्रांशा खिन ह मा था॰ मः था। शक्षाक किनामि जि ৰুচ্যতে। ইতি মাৎস্যে ৩ অ-शायः॥ अमा ता ९ शक्ति र्यशा সমাক্ খ্যাষতে প্রকাশ্যতে ব-স্তুতত্ত্ব মনষেতি সংখ্যা সম্যক্-জ্ঞান ত্স্যা প্রকাশমান মা দ্বাতত্ত্বণ সাণখাণ। ইতি শ্রীভ-গৰদ্গীতা টীকাষা শ্ৰীধরস্বামী 11 # 11 व्यथ मा॰ देश ताथा गर्ड পরিণাম্বাদে পরিপস্থিনি জা-গৰকে কথ কার বিবর্ত্তব্যবাদ আদরণীযো ভবেদেষ হি তেষা बार्यायः। म॰ स्कर्णन हि मा॰था-

भारत हज्या विधाः मःभावारस । কশ্চিদ্বিকৃতি রেব কশ্চিদ্বিকৃ-ভিঃ প্রকৃতি । কন্চিদনুভব ইণ্ডি। তত্র কেবলা প্রকৃতিঃ 🐧 প্রধান পদেন বেদনীয়া মূল প্র ক্তিঃ। নাসাবন্যস্য কস্যচিহিঃ ক্বতিঃ। প্রকরোতীতি প্রকৃতি নি তি ব্যুৎপত্ত্যা সত্ত্ব রজ স্তমো ছ ণানা সাম্যাবস্থায়া অভিধানা । তদুক্ত। মূলপ্রকৃতি রবিকৃৎি রিতি। মূলঞ্গসৌ প্রকৃতিশ্চে মূলপ্রকৃতিঃ। মহদাদেঃ কা क्ला भगारमी मृतः नष्रमा श्रः नमा भृवाखित गर्छि जनवङ्गाः তা । न ठ वीका ह्रुतवन नवः দোষো ন ভবতি ইতি বাচ্যণ প্রমাণাভাবাদিতি ভাবঃ। প্রক্ **७४**क गर्मर्कात ज्याजाणि ! তদপুক্তে । মহদাদ্যাঃ প্রকৃতি বিক্ষতযঃ সপ্তেতি। অস্যার্থঃ ' প্রকৃত্যশ্চ তা বিকৃত্য শেচ প্রকৃতিবিক্রতযঃ সপ্ত মহদাদী **ज्यानि। ज्वास्टः**कत्रनामि भरह নেয় মহতত্ত্ব মহকার প্রকৃতিঃ মূলপ্রক্তেন্ত বিক্রতিঃ। এব মহ-কার তত্ত্ব° অভিমানাপরনামধে-य মহতো বিক্ষতিঃ। প্রকৃতিশ্চ

তদেবাইকার ভব্ত তামসং সৎ পঞ্চন্দ্রাত্রাণা সৃশ্বাভিধান। ত দেব সাত্বিক: সৎ প্রকৃতি রেকাদ-শেखियाना॰ वृक्षीखियाना॰ ठकः শ্রোত ঘাণ রসনা ছগাখ্যানাণ ৰুৰ্মেন্দ্ৰিষাণা ৰাক্ পাণি পাদ পাযুপস্থাখ্যানা মুভযাত্মকদ্য ম-নসশ্চ রজস স্থৃভযত্ত ক্রিয়োৎ: পাদন দারেণ কারণ মন্তীতি न देववर्थाः। छम्कः भौश्वत क्रः ক্ষেন। অভিমানে । ২হন্ধার স্তঃ স্মাৎ দিবিধঃ প্রবর্ত্ততে সর্গঃ। এ কাদশকশ্চ গণ স্তমাত্রা পঞ্চক देशव।। माषिक (मकाष्मकं थः বর্ত্তে বৈক্কতাদহন্ধারাৎ। ভূ-তাদে স্তথাত্রঃ সতামস স্তৈজসা-मू अर ।। वृक्षी खियानि हक्कः ८ था-ब घुान तमना ष्गाथानि। वाक् পাদ পাণি পাষুপস্থাখ্যানি কর্মে: ব্রিষাণ্যাহঃ ॥ উভযাত্মক মত্র यनः महत्र विकन्नाषाक मिस्पिय-याठाया वाठण्णाङिङः। कियत-ना विक्रवरञ्ज विरामामीन शक-ভূতানি। একাদশেব্রিয়াণি চ। তদুক্ত যোডশকস্ত বিকার ইতি খোডশ সংখ্যাবচ্ছিলো গণবো-

ज्यात्रा विकान अव न अक्रिंड ति छार्थः। यकाशि भृषिवा। करमा গো ষটাদীনা প্রকৃতি স্থথাপি ন তে পৃথিব্যাদিভা স্তত্ত্বাস্তর মি-তি ন প্রকৃতিঃ। তত্ত্বাস্তরোপা-मानवैः क्ष्य श्रक्षाचिष माजिम**डः।** গো ঘটাদীনা স্থলছেন্দ্রিষ্থা হুত্বয়েঃ সমানত্বেন তত্ত্বান্তরত্বা-ভাবঃ৷ ভত্ৰ শব্দ স্পৰ্শ ৰূপ রস গন্ধ তন্মাত্ৰেভ্যঃ পূৰ্ৰ পূৰ্ৰ সৃন্ধভূত সহিতেভাঃ পঞ্চ মহাভূতানি বি-यमामीनि क्टायटेनक वि वि ठणुः **१११७** शांति जायरसः। इसिय সৃষ্টিস্ত প্রাণেবোকা। উক্তঞ্চ! প্রকতে মহান্ততো ২হকার: ত-স্মাদাণশ্চ বোডশকঃ ভঙ্মাদপি ষোডশকাৎ পঞ্চত্যঃ পঞ্চতা-নীতি। অনুভবাত্মকঃ পুরুষঃ। তদুক্ত। ন প্রকৃতি ন বিক্লতিঃ পুরুষ ইতি। পুরুষস্ত কৃটস্থো নিত্যঃ পরিণামো ন কস্যচিৎ। প্রকৃতি নাপি বিকৃতিঃ কস্য-চিদিত্যর্থঃ। এতত্যঞ্চ বিংশতি-তত্ত্ব সাধকত্বেন প্রমাণ্ত্রয মক্তি यजः। जनभूाकः। मृखे यनुयान মাপ্তবচন সৰ্বপ্ৰমাণ সিদ্ধত্বাৎ ত্তিবিধণ প্রমাণ মিষ্টণ প্রমেষ সি-

किः अयागाकी छ। देश कार्याः কারণভাবে চতুর্দ্ধা বিপ্রতিপত্তিঃ প্রদর্গ্রি। অসতঃ সজ্জাবত ইতি দৌগতাঃ সঙ্গিরস্তে। নৈষাযিকা-দ্বঃ সভো ২সজ্জায়তে ইতি। বেদান্তিনঃ সভো বিবর্ত্তঃ কার্য্য-জাত ন বস্তু সদিতি। সাংখ্যাঃ পুনঃ সতঃ সজ্জায়ত ইতি। ত ত্রাসতঃ সজ্জাযত ইতি ন প্রা-মাণিকঃ গক্ষঃ। অসতো নিক পাখ্যস্য শশ বিষাণ্বৎ কারণ-দ্বানুপপত্তেঃ তুচ্ছ।তুচ্ছযো স্তা-দান্থাানুপপত্তে । নাপি সভো ২সজ্জাযতে কারক ব্যাপারাৎ প্রাগদতঃ শশ বিষাণ্বৎ সভা সমস্ক লক্ষণোৎপত্তেঃ। ন হি নী-वः निभुव ध्यमानि भीजः कर्जुः প খাতে। ননু সন্থা**নত্বে ষটস্য** धर्याति ७ (छछ का इत। ज्यनिष्ठ ধৰ্মাণ তদ্ধৰ্ম ইতি বাপদেশাৰ পণত্ত্যা ধর্মিবঃ সন্থাপত্তেঃ। ত স্মাৎ কারক ব্যাপারাৎ প্রাগপি কাৰ্য্য । সদেৰ সতশ্চাভিব্যক্তি क्रश्राहा वथा शिष्टान छि **ट्य**ष रेडलमा स्वाहत्वन स्नोतः ভেষীয় প্রসং। অসতঃ কারণে কিমুপি নিদর্শন দৃশ্যতে। কিঞ্

কার্যোণ কারণ সম্বন্ধ তজ্জনক व्यवस्त वा अथटम कार्यामा म-দ্বমাযাত সতো রেব সম্বন্ধ ইভি নিষমাৎ। চয়মে সর্ব কার্য্যজাত সর্বস্মাজ্জায়েত অসম্বন্ধবাবিশে-ষাৎ। তদাখ্যাষি সাংখ্যাচাটেয্যঃ । অসম্বাদ্ধান্তি সম্বন্ধঃ কারনৈঃ यत्र मिकि जिः। व्यवस्त्र गा हा थ-পত্তি মিচ্ছতো ন ব্যবস্থিতি রিতি । অरेथर मनूरकेशमयक मिन जरम-ব জনয়তি যত্ৰ যচ্চক্তণ শক্তিশ্চ কাৰ্য্য দশ্ৰেনাক্ষেয়েভি ভত্ৰ সংগ-চ্ছতে। তিলেষু তৈলজনন শক্তি রিতাত্ত তৈলস্যাসূত্রে সম্বদ্ধত্বা সম্বদ্ধত্ব বিকল্পেন তচ্ছজ্ঞি রিজি নিৰূপণাষোগাৎ কাৰ্য্য কারণ-ষোরভেদাক্ষ। কার্ব্যস্য সত্ত্ব কা-রণাৎ পৃথক্ ন ভবতি পট স্তম্ব-ভোগ ন ভিদাতে তদ্ধৰ্মন্ত্ৰান্নযদে-व॰ न তদেব॰ यथा भी तथः। ত-দ্ধর্মণ্ড পটঃ তত্মান্ধার্থান্তর তর্হি প্রত্যেক তএব প্রাবরণ কার্য্য প্র্যারিতি চেম। সংস্থা ভেদেনা-বিভূত পটভাবানা প্রাবরণার্থ क्रिगकात्रिरशाननरजः। यथाशि । कृषामाञ्जानि कृषामतीरत निवि-শ্মানানি ভিয়োভবন্তি নিংসর-

স্তি চাবির্ভবন্তি এবং কারণ তন্ত্বা-**प्तः** गो। परिषा विष्या निः गत्र ख বাবির্তবন্ত উৎপদ্যন্ত ইত্যুচ্য-ন্তে নিবিশমানা স্তিরোভবস্তো বিনশ্য স্তীত্যুচান্তে ম পুনরস্ভা মুৎপন্নঃ সতা॰ বা বিনাশঃ। य থোক্ত॰ ভগব দ্যীতাষা॰। নাস তো विमार्छ ভাবো नाভाবো বিদ্যতে সত ইতি। ভতশ্চ কা ষ্যানুমানাত্তৎ প্রধানসিদ্ধিঃ। **ज**न्कः। ज्यमस्कात्रभद्यानुभानाः ন॰ গ্ৰহণাৎ সৰ্বসম্ভবাৎ। শক্ত ষ্য শক্য করণাৎ কারণাভাবাচ্চ সৎকাৰ্য্য ৰিভি। নাপি সতো ব্ৰহ্মতত্ত্বস্য বিবৰ্ত্তঃ প্ৰপঞ্চঃ বা-धानुभवखार। व्यविष्ठानाद्वाभाः साः विकासरा कन शो द्री-সণভবাচ্চ। তত্মাৎ সুধ দুঃধ মো হাত্মকস্য তথাবিধ কারণ নব शात्रीय । छथा ह । अदयागः। বিমত ভাবজাত সুখ দুংখ মো হাত্মক কারক ভদম্বিভদ্বাৎ ষত্ যেনা দ্বীষতে তত্তৎ কারণকণ যথা ৰুচকাদিক সুবৰ্ণাম্বিত সু বর্ণকারণক তথা চেদ ভস্মতি-থেতি। তত্র জগৎ কারণে যেষ॰

স্থাত্মকতা তৎসত্। যা দৃঃধাত্ম-কতা তদ্ৰজঃ। যাচ মোহাত্মক-তা তত্ত্বন ইতি ত্রিগুণাত্মক কার-ণ সিদ্ধিঃ। যথা হি প্রত্যেক ভা-वाटेक छगावटका १नुकृषटका य-থা বৈত্রকারেষ্ সভ্যবতী বৈত্রস্য সৃথ মাবিরস্তি ত প্রতি সম্বপ্তণ প্রাদ্র্ভাবাত্তৎ সপত্নীনা দুঃখ তাঃ প্ৰতি রজোগুণ প্ৰাদুৰ্ভাৰ ং তা মলভ্যানস্য চৈত্ৰস্য যোহো ভবতি ত॰ প্রতি তমোগুণ-সন্তা-বাৎ। এব মন্যদিপি ঘটাদিক॰ লভাষান পৃথ করোতি পরে রপি ছি্যমাণ দুঃখাকরোভি উ-कामीनरमारशका विषयरद्दनान-তিষ্ঠতে উপেক্ষা বিষযত্বণ নামো-হঃ নুহ বৈচিত্তো ইত্যস্মাদ্ধাতো (गार्गक निष्णाखः উপেक्षनी-যেষু চিত্তবৃত্ত্যনুদযাক্তস্মাৎ সর্বণ ভাবজাত সুখ দুঃখ মোহাত্মক ত্রিগুণ প্রধান কারণক মবগম্য-তে। তথা চ শ্বেতরোপনিষদি জ্ঞা-যতে। অজা মেকা॰ লোহিত শুক্ল ক্লফাণ বছ্বীণ প্রজাণ জনযন্তীণ স-ক্ষপাণ। অজে। ছেকো জুষমাণো-নৃশেতে জহাত্যেনা॰ ভুক্তভো-গা মজোন্য ইতি। অত্ত লোহিত

শুক্ল ক্লফ শব্দা বুঞ্জবন্ধ প্ৰকাশ-কত্বাবরকত্ব সাধর্ম্ম্যাৎ রক্তঃ সন্থ তযোগ্ডণত্ব প্রতিপাদনপরাঃ নম্বচেতন প্রধান চেতনানধি-ष्ठिত यहमानि कार्या न गाञ्जि যত ত্তঃ কেনচিৎ চেতনাধি-ষ্ঠাত্ৰা ভবিতব্য । তথা চ সৰ্বাৰ্থ **पर्ट्या भव्रत्यश्वतः श्वीकर्खवाः मा** দিতি চেৎ। তদসঙ্গতী অচেতন-স্য। ষধা বৎস বিবৃদ্ধার্থ মচেতন॰ कीद्रः अवर्ख्छ। यथा ह कन महत् তন লোকোপকারায প্রবর্ত্ত । তথা চ প্রকৃতি রচেতনাপি পু ऋष विस्थाकाष श्रवर्गाछ। छ-मुकः। वर्म विवृक्षार्थः कीत्रमा यथा প্রবৃত্তি রেতস্যাঃ পুরুষ বি-মোক্ষ নিষিত্তণ তথা প্রবৃত্তিঃ প্র-ধানস্যেতি। যস্তু পরমেশ্বরঃ করু-ণষা প্রবর্ত্তক ইতি পরমেশ্বরাস্তি-ख्वानिना॰ ডिखिमः म প্রাযেণ গতঃ বিকল্পানুপপত্তে:। স কি॰ সৃষ্টেঃ প্রাক্ প্রবর্ত্তে সৃষ্ট্যত্তর काल वा। जात्मा महीतामा छा-বেন দুঃখানুপপত্তৌ জীবানাণ मूःथ अश्रांतकानू भगितः। कि তীষে পরস্পরাশ্রষ প্রদঙ্গঃ। ক-क्रगश সृष्टिः मृष्टा। काक्रगा निकि

ভশ্মাদচেতনস্যাপি চেতনান-ধিষ্ঠিতস্য প্রধানস্য মহদাদি बाराय भित्रवायः भूक्षार्थ अ-যুক্ত প্রধান পূরুষ সংযোগনি মিত্তঃ। যথা। নিৰ্ব্যাপারস্যা-প্যাযক্ষ সন্নিধানেন লোহিভস্য बााभातः। ७था निर्द्याभातमा भू-ৰুষ্ণ্য সন্ধিধানেন প্ৰধান ব্যা-পারো যুজ্যতে। প্রকৃতি পুরুষ मश्कान भ॰शक्तव भन्नम्भनारभ-কা নিবন্ধনঃ। প্রকৃতি হি ভো-গ্যত্ত্বা ভোক্তার পুরুষ মপেক্ষ তে ৷ পুরুষোপি ভেদাগ্রহাদুদ্দি চ্ছায়া পত্ন্যা তদগত দুঃখত্ৰয় যা-র্ষমাণঃ কৈবল্য মপেক্ষতে। তৎ প্রকৃতি পুরুষ বিবেক নিবন্ধনঃ। ন চ ভদন্তরেণ যুক্ত মিতি কৈব-न्यार्थ॰ भूक्रयः श्रधान मल्यक्र । यथा थलू कोहि अभ्यक्ती अ-थि সার্থেন গচ্চস্তৌ দেবক্কতাদু-পপ্পবাৎ পরিত্যক্তসাথৌ মন্দম-ন্দ মিতস্ততঃ পরিভূমস্তৌ ভ্যা-जटनो टेपवनगार मन्दरांग मूल-গচ্ছেতা । তত্র চান্ধেন পঙ্গুঃ স্ক-শ্ব মারোপিতঃ পঙ্গুদর্শিতেন মা-র্পেণান্ধঃ সমীহিত স্থান প্রা-প্লোভি পঙ্গু রপি ক্ষন্ধাধিকতঃ তথা

পরস্পারাপেক প্রধান পুরুষ নি ॥ वन्ननः मञ्रः भूक्षमा पर्मनार्थ दैक्वनार्थ्डवा अध्यक्तमा शक् ञ्चव উভযো রপি সম্বন্ধ স্তৎ-ক্তঃ সর্গঃ ইতি। নন্ পুরুষার্থ নিবন্ধনা ভবতু প্রক্ততেঃ প্রবৃত্তিঃ নিবৃত্তিস্ত কথমুপপদ্যত ইতি চেদুচ্যতে যথা ভৰ্ত্ত। দৃষ্টদোষা স্বৈরিণী পুন ভর্ত্তার নাগৈতি যথা ব। ক্তপ্ৰযোজনা নৰ্ত্তকী নর্ত্তনে তথা প্রক্লতি রপি যথো-ক্তণ রঙ্গদ্য দর্শবিদ্বা নিবর্ত্ততে ভথানন্দ প্রকাশ্য নিবর্ত্ততে প্রকৃতি রিভি। তদর্থণ নিরীশ্বর সাংখ্য শাস্ত্র প্রবর্ত্তক কপিলানু-मातिना॰ यठ यूपनाखः। ইভি মাধবার্যাক্ত সর্বদর্শনসংগ্রহে मां थान नं न ।। ।। जमा ह-ত্বারো অধ্যাযাঃ। তত্র প্রকৃতি পুরুষযো রুভযোঃ সৃষ্টিকর্ত্তৃত্ব । অন্ধ পঙ্গুন্যাষেন স্থাপিত । ভত্তানা সংখ্যানঞ্চ ক্বত। ইতি **८किट ।।** तिकास करें

্যা॰ঘাতিকঃ ত্রি সম্যক্প্রকারেণ হননকারকঃ। মারাত্মকঃ। সং-ঘাতশব্দাৎ ফিক প্রত্যযেন নি-

পানঃ ৷৷ জলনকতাবধিক যো-ডশনক্ত্র । যথা। জনাদ। কৰ্ম্ম ততো পি দশমণ মা বাতিকণ (राष्ट्रणाज्या जिल्ला (प्रह **জবিণ বন্ধূনা** হানিঃ সাংঘাতি-কে তথা। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ।। मा पृष्टिक की महाःकल । है-**छामदः ॥ मृस्टि**পরিকল্পনান্যায়ঃ । यथा। कोहिजां उपखाना-ভাবে পিতু রধিকারবৎ দৌহি-ত্রাস্ত পিতৃসন্তানাভাবে পিতা-यश्रिकातमा मा॰मृष्टिकनााय সিদ্ধত্বাচ্চ। যথা পিত্ৰভাবে মা-তা তথা পিতাহাভাবে পিতা-मशैकि मां मृष्टिकनगरयन शि-**ामश**्थिकातमा मिक्काफ । रें बिक्षिक कर्ना नहां त क्रब क-মসংগ্ৰহঃ।।

সাংযাত্রিকঃ পুণ পোতবণিক্।
ইত্যমরঃ।। দে বহিত্রগামিনি
বণিগজনে। সংপূর্বো যাতি দ্বীপাস্তরগমনবৃত্তি স্তত স্ত্রাসুসিতি
ত্রঃ স্ত্রিযা মাপ্ সংযাত্রা দ্বীপাস্তর গমনং ভদস্য প্রযোজন মিতি
বিকার সংযেতি ফিকঃ। সম্যক্
যাত্রা সংযাত্রা ত্যা ব্যবহরতীতি চযেকাদিতি ফিকো বা 1

ইতি ভরতঃ ॥ मा॰यूगीनः बि यूक्तम्भलः। तर्भ সাধুং। ইত্যমরঃ।। मा'तारिष' की र्डेना नवाक् नदः। इंछि मूक्षरवाधवा। क्रवनं ।। সংপূর্ব রুল ধনে। ভাবে শিনি ণিদ্বাদ্দ্দৌ সংরাবিণ ইভি স্থিতে **छछः स्वार्थ (स्व निर्छ जित्रामा**ह ইতি বৃদ্ধৌ ষধো ৰ্ম্পোপ ইত্য-কার লোপে সাংরাবিণ হউস্য সমাক্ শব্দো ব্যাপ্ত ইত্যৰ্থঃ। ইতি ভট্টীকাষা দুর্গাদাসঃ।। मा॰वरमद्रः पू॰ गनकः। ইত্য-মরঃ।। সংবত্সরসম্বন্ধিনি ত্রি।। সা'বৎসরিকঃ ত্রি স'বৎসরে-खवः ॥ **म**॰व**९मतः व्याभा**ज्रुः ॥ প্রতিবর্ষকর্ত্তব্যপ্রাদ্ধণ। यथा । जथ मा॰वৎमत्रिकञास्तर । তত্ৰ গোভিলঃ। অত উৰ্দ্ধুণ সং-বৎসরে সংবৎসরে প্রেতাযামণ দদ্যাৎ যশ্মিমহনি প্রেতঃ স্যাৎ ইতি। অত উর্জ্বণ সপিজীকর शास्त्र आकृतिभिक्तामामा मःवद-সরাদূর্দ্ধ সংবৎসরে সংবৎসরে প্রভিবর্ষ থিক্সিল্লহনি মৃত স্তব্দি-बहिन यृजाय ममार । वाष्ट्रः। প্রতিসংবৎসরক্ষৈব মেকোঞ্চি

ষ্ট মৃতাহনি। এতেন সপিত্তী-कत्रगाभकर्य जालामः वस्मद्धः পি মৃতাহে আদ্ধান্তর কর্তব্য मिछि देगिश्रिवाकि (हरा वाक बाह रहमाफि धृष्ट रहनः। পूर्व সংবৎসরে শ্রান্ধা বোডশ পরি-কীৰ্ত্তিত। তেনৈব চ সপিওত্বণ ভেনৈৰান্দিক মিষ্যতে ॥ পূর্ণদংবৎসর ক্রিয়মাণ শ্রাদ্ধা-म्बर्शां जर निर्दाह खरां शक् है ग পিণ্ডীকরণ আদ্ধাদপ্যভয়নির্বা-हां न भूर्नमन्दरमद्र आक्तिका-खतः। এवः शक्षमण वास्तिशाः स्त्रमः। मर्माभूतानः। छङः अ ভৃতি সংক্রান্তাবুপরাগাদি পর্বসু । ত্রিপিশু মাচরেৎ আদ্ধ মেকো-क्षिके मृंबाइनि ॥ ७वः প্রেতত্ব পরীহারাৎ ত্রিপিঞ্ড ত্রৈপুরুষ । নিরুপপদ মৃতাহশকঃ মৃতসম্ব ন্ধি মাস পক্ষ তিথিবিশেষ পরঃ। উপপদাত্ क्रिडिशिविटमय मा-ত্রপরঃ। যথা মৃতাহে প্রতিমাস क्र्यामिजाएने। नश्चः। मिश-জীকরণাদৃদ্ধৃ যত্র যত্র প্রদীষতে। তত্ত্ব তত্ত্বৰ পৰ্য্যাৎ বৰ্জবিদ্বা মৃতাহনি।। অমাবাস্যা॰ ক্ষো ষদ্য প্ৰেভপক্ষে ২থ বা পুনঃ ৷

সপিত্তীকরণাদুর্দ্ব্ তস্যোক্তঃ পা-र्वा विधिः॥ वयः मन्त्रुमानानाः वय वर्गा बिट्या प्रमाथ है-छार्थः। मृ**ठा** शर्याम् ख बिटेमव-তত্বদ্য প্রতিপ্রদব মাহ। অমাবা-স্যা মিতি ৷ প্রেতপক্ষো ২ত্র পিতৃ-পক্ষঃ অশ্বযুক্ ক্লম্পক ইতি যা-বৎ। ন তু ক্ষপক্ষাত্র ক্ষপক मायानारभद्रदञ्च अयावामाराभन्देव-ষর্থ্যাপত্তেঃ। 🗱।। পিতৃপক্ষ বিশে ষ্যতি হেমাজি মাধ্বাচার্য্যধৃত নাগরখণ্ডা নভো বা १थ নভ **रमा। व। यनयारम। यम। छटव९।** मक्षमः পिভृशकः मापनादैवर তু পঞ্চমঃ।। অত্র শ্রোবণ ভাত্র-যো রন্যতরস্য মলমাসত্ত্বে আ-ষাঢ্যপেক্ষয়া সপ্তম পক্ষস্য পিজৃ-পক্ষৰা । অত্ৰ মৃতদ্যৈব প্ৰেত-পক্ষ মৃতত্ত্ব নতু মলমাস ভাজ-ক্লফপক্ষমৃতস্য। তত্ত ভত্ত মৃ-তদ্য বর্ষান্তরে অশ্বযুক্রফপকে ২পি ভজ্ঞাদ্ধকরণে ন পার্বণ। কিন্তেকৌদিষ্ট মিতি। অত পা-ৰ্বণো বিধিঃ পাৰ্বণেতিকৰ্ত্তব্যতা-टेकटकाष्ट्रिके विधि त्रिञ्जि नवावर्कः মানপ্ৰভূতষঃ। তন্ন পূৰ্ব বচনো-ক্ত ত্রৈপুরুষিকস্য মৃতাহে পর্য্য-

मखमा भार्बर्या विधि त्रिडारनन প্রতিপ্রস্বাৎ। তন্মাদত্র সদৈব-তৈকোদ্দিষ্ট ন যুক্ত কিন্তু ত্ৰৈ-**পু**क्षिक॰ न जू वार्ष्युक्षिक॰ । কৰু সমন্বিত মুক্ত্বা তথাদ্য প্ৰা-करवाजमः। প্रजाकिकश्र त्मः ষেষু পিঞাঃ স্যুঃ ষডিভি স্থিভিঃ ॥ ইতি ছন্দোগপরিশিষ্ট বচনে-न প্রত্যান্দিক ব্যভিরেকেণ ষট্-मः थानिसमार ॥ # ॥ এत समा-বাস্যাদি মরণ নিমিত্তেন মাতৃ র-পি প্ৰত্যান্দিক পাৰ্ৰণ বিধিনৈ-ৰ। অপুত্ৰ। যে মৃতাঃ কেচিৎ স্ত্ৰিৰো বা পুৰুষাশ্চ ৰে। তেষা यि ह (पर् मार्टिक्शिक्टि न পাৰ্ৰণ ॥ ইত্যাপস্তম্বৰ চনে অ-পুদ্রা ইতি বিশেষণোপাদানাৎ সপুত্ৰাণা পাৰ্ৰণাভ্যনুজ্ঞানাৎ। এতচ্চ নাত্রাদি ত্রিত্য দৈবত কার্য্যণ। মাত্রে পিতামছৈ প্রপি-তামছৈ চ পূৰ্বৰ বান্নান্ ভো-জবিদ্বা ইতান্নফকাবাণ তথা দ-ৰ্শনাৎ। অবসান দিন নিমিত্তেন भाईन विधिन। इत्मार्टेश त्रि या-वामि विकाशः वाक्षः कर्ववाः। न रशिष्ठाः शृथक्तमान्वमानिन नाषृत्छ। ইতি ছ्ट्लाग्श्रिनिक

.বচনে বিশেষতঃ প্ৰতিপ্ৰদৰাৎ ৷ এব॰ সপিণ্ডীকরণে হপি। এভচ্চ মৃতাহ পাৰ্বনং মাতা পিত্ৰো রেব ৷ তথা চ হেমাডিধৃত কাত্যায়ন বচন । সপি খীকরণাদৃদ্ধ পিত্রো রেব হি পার্বণ। পিতৃব্য ভ্রাতৃ-माजूना त्मरकाष्मिके मरेनव जू। মাতৃপদ সপত্নীমাতৃপর । স-পত্নী মাত্রিভাত্র মাতৃপদস্য রাজ-দস্তাদিত্বাৎ পরনিপাতঃ। ততশ্চ বাক্যে মাতৃ সপত্নীতি ন প্রযো-জ্যা কিন্তু সপত্নীমাত রিত্যাদি-কং।।।। এবং সাগ্রিকৌরস ক্ষেত্র-জাভ্যা॰ মৃতাহে পাৰ্ণণ কর্ত্ব্যণ। ঔরস ক্ষেত্রজৌ পুত্রৌ বিধিন। পাৰ্ৰণেন তু। প্ৰত্যব্দ মিতরে স্ব-ৰ্যু রেকোদ্দিষ্ট সুতা দশ।। ইতি क्रावान वहनमा। यब यब अमा-তব্য সপিতীকরণাৎপর । পার্ব-ণেন বিধানেন দেষ মগ্নিমতা স-मा।। ইতি মৎ माপুরাণ বচন স্য চৈক্ৰাক্যত্বাৎ। উশনা চ। প্ৰত্য-कः मर्भवक्षाकः माधिः मंदीं उदे षिकः। अर्देकामिके मना अर्या-बित्रिशः खाक्तमः मुखः॥ প্ৰাণ্ডকৰুক্তা প্ৰতশাদ্দশ্য এ काष्मिकेषाज्यानाय माययम

রিকশান্ধে যদেকোন্দিট পদ-মুক্ত তৎ প্রেতশ্রাদ্ধ ধর্মগ্রাছি-षार्थः। उजन्त सागाषात्मका-र्माानिवाजः। न जू रथा প্রেড-শ্রান্ধে পিতৃশব্দ স্থানে প্রেতপ-দোহঃ তথাত্রাপীতিবাচ্যণ সাম্বৎ-সরিকে প্রেভন্নভাবাত্তথাবিধা-নানুপপত্তে:। এবং পুতিসায়ৎ-সরিকশ্রাদ্ধে সম্বন্ধার্থকপদ আ-শীঃ পার্থন শেষভোজনঞ্চ কর্ত্ত-वा॰ ॥ #॥ व्रक्तंत्रनाया॰ वित्नवय-তি গোতমঃ। অপুত্রা তুষদা ভা-র্যা সম্পাপ্তে ভর্তু রান্দিকে। র-জস্বলা ভবেৎ সা তু স্বৰ্য্যাৎ তৎ-পঞ্চমে দিনে।। স্বর্যাক্সান্ধ মিতি यजु आफि छि। मत्नी १ একाष्मिक देववर्गिकन मिका-ष्त्रन कर्खवाः। একোদ্দিউ ह क-र्खवाः शास्त्रदेनव मना श्वयः। ख-ভাবে পাকপাত্রাণাণ তদহঃ সমু-পোষণ ৷৷ ইতি লঘুহারীত বচ-নাৎ। পাকপাত্রাভাবঃ পাকসা-মগ্রাভাবোপলক্ষকঃ। তদাপি নামপ্রাদ্ধ কিন্তুগোষণ মেব প্রা-क्षकानीय मिछार्थः। यस मिछा-ভিধানাৎ অপাটবাদিনাপি না-ন্যদ্বারা কার্যিতব্য । অতএব

উপবাদেনৈক आक्रमानीदमन তদকরণ প্রাযশ্চিত্তেন বা ক্লভ-क्रुडाड्याः आक्षिवित्र हेडाानिव-চনामि देनकामभा मनुश्रानः মিতি তন্ন। পিতৃত্প্তে রজাতত্বে-टेनकामभाग जमनुष्ठानमा युक्क দ্বাৎ। অন্যথা ষোডশ শ্রাদ্ধা-**धिकादिशः क्लाहिखशाद्य।** यः দৈয়তানি ন দীয়ন্তে প্রেতশ্রা-দ্ধানি যোডশ। পিশাচত্ব প্রবেণ তস্য দক্তৈঃ আদ্বশতৈ রপি ॥ ইতি যমবচনেন যোডশ শাদ্ধা-ভাবে প্রেতম্ব পরীহারো ন স্যাৎ৷ ज्यामू भवादमा न आकार्यः किञ्च তদানীস্তনাকরণ প্রাযশ্চিতার্থঃ । যথা স্বকালাক্কত সংক্ষারে প্রা-যশ্চিত্ত॰ রূত্বা কালান্তরে তৎক-রণ তথাত্রাপি তদ্দিনে উপবা-স॰ কৃষা একাদশ্যা॰ আদ্ধি ক-र्खवा भिछि। একোদ্দিষ্ট नाना দারা কার্য্য মিত্যত্রাপি গোত্র-জেতরত্বেন বিশেষণীয়ান ক-माहि मरगाबाय आदः कार्या মগোত্রকৈ:। ইতি প্রেতশাদ্ধে অন্ধপুরাণাৎ। অত হি নাগো-ত্ৰজন্য সাক্ষাৎ কর্তৃত্ব নিবিধ্য-তে সগোত্রাষেত্যসম্বন্ধাপত্তে:।

তস্মাদগোত্ৰজৈ ধারভূতৈঃ স গোত্রায শ্রাদ্ধণ ন কার্য্য মিত্যর্থঃ । তথা চ পর্যাদাসপক্ষে গোত্রজ-দারা কার্যিতব্য মিতি সুব্যক্ত মেব। প্রসজ্যপক্ষে তু অগো-ত্রজ বিশেষণ স্বরসাৎ গোত্রজ লাভঃ। প্ৰেভ্ঞান্ধ ধৰ্ম আছি-ত্বাৎ সায়ৎসরিক মপি তথেতিঃ **बाक्षितिदवकः। कन्नठऋ द्रञ्जाकत-**যোস্ত স্বগোত্রাযেতি পঠিত স্থ-মা শ্বীষ গোত্ত যদ্য দ স্বগোত্তঃ विमामानरभाव इंडार्थः। यटेगाः শ্রাদ্ধ কর্ত্তব্য তস্য স্বগোত্তকে বিদ্যমানে ২ন্যগোত্তজেন সং-ঘাতাস্তর্গতেন রাজ্ঞা আদ্ধণ ন কার্ষিতব্য মিতি ব্যাখ্যাতঞ্ ৷ এতন্মতে ২পূচত দুছিত্রাদীনা মস-গোত্রত্বেপি न निरंत्रधः। बञ्चल-স্তু তৎপাঠেপি কর্মধারষাপেক্ষ-ষা বহুত্ৰীহে জ্ঘন্যত্বাৎ স্ব মাত্মী-যঞ্চ তৎ গোত্রঞ্জেতি তক্ষৈ অন্য গোত্ৰজদারা আদ্ধ ন কাৰ্য্য মিত্যর্থঃ। অতো লঘ্হারীতবচ-त्न अष• अष• अरगाज्यतः। **अ**-ন্যথা বন্ধপুরাণোক্তাগোত্রজ্পদ বৈষৰ্ধ্যাপতেঃ।। 🛊 ।। এবঞ্চ ভবি-ষ্যপুরাণ প্রভাদখণ্ডবোঃ। মৃতা-

হনি পিতু যন্ত ন স্ব্যাৎ শ্ৰান্ধ यामता । याजू टेन्हव वतादताटश वरमद्रास्य मृणाइनि ॥ नाइख-স্য মহাদেবি পূজাণ গৃহ্লামি নো ছরিঃ। ম্রীচিঃ। পণ্ডিতা জ্ঞানি-ता मूर्था खित्या १थ बन्नातिनः । মৃতাহ॰ সমতিক্রমা চাঞ্চালে-শ্বভিজাষতে।। ইত্যাভ্যাণ কাল-মাধবীযধৃতাভ্যা• বচনাভ্যা• माष्ट्रभित्रक आक्षमा मृणार क-ৰ্ত্তব্যম্বেনাৰশ্যকত্বাৎ ভবিষামৃ-ভাহে স্বয়ণ কর্ত্তব্যন্ত সম্ভাবনা ব্ৰহিতেন মৃতাহাৎ পূৰ্বকালে ২পি প্রতিনিধীয়তে। প্রক্ষিপ্যাগ্নি॰ স্ব-সারেষু পরিকন্নার্ত্তিজ তথা। প্র-वरमर कार्यावान् वित्था वृरेषव न চির॰ ক্বচিৎ। ইতি ছম্পোগ-পরিশিক্টোক্ত সাষ্ণ প্রান্ত হোম প্রতিনিধিবৎ। এবং সতি প্রতি-নিধ্যকরণ এব একাদশ্যাণ ক্রিষ-তো৷ ৰু ৷৷ ন চ পাক্সাঙ্গৰেন প্রধানতিথিকর্ত্তব্যতানিষম ইতি বাচ্য ৷ ব্ৰভোপবাস নিযমে খ-টিকৈকা যদা ভবেৎ। সা তিথিঃ সকলা জেষা পিত্রর্থে চাপরাত্রি-की।। इंडि वहरनन मूर्डमाव লাভেপি কর্তব্যতোপদেশাৎ ত-

দানী পাকে তদসম্ভবাৎ। এব মুদীচ্যাঙ্গণেষভোজনে ২পিন তন্নিযমঃ। ইতি প্রাদ্ধিতত্ত্ব ।। সাংবাদিকঃ পুং নৈযাযিকঃ। ইতি জটাধরঃ।। সংবাদদাত্রি ত্রি।।

गा॰गविकः जि म॰गयपुकः। ७६পর্যায়ঃ। म॰गयं। পর্যায়ঃ। দেশ্য বিদ্যান দাং ২
। ইতামরঃ।। দিশ্য নাল তথা
ইতি জটাধরঃ।। দে স॰শয নাল রঃ
মা॰শবিকঃ ফিকঃ স॰শয নাল রঃ
মাণশবিকঃ ফিকঃ স॰শয নাল রুণ
মানস॰ যত্র স্থাপুনি দি তথা।
স॰শয নাল রুণ
ঘতরি পুরুষাদাবল্যেতৎ শব্দঘতরি পুরুষাদাবল্যেতৎ শব্দঘতরি পুরুষাদাবল্যেতৎ শব্দঘতরি পুরুষাদাবল্যেতৎ শব্দঘতরি পুরুষাদাবল্যেতৎ শব্দঘতরি পুরুষাদাবল্যেতৎ শব্দঘতরি স্কাজকৌমুদী।। স৽স্থানযুক্তশ্চ।।

नाः नुषिनः क्री वृक्षना वृक्षः वानि श्रा नगाक् नुषिः। ইতি नःकि-श्राद्यां शामिवृजिः ॥ नाकः वा नहार्थः। ইতামরः॥

সাকল্য॰ ক্লী সমুদায়ঃ। সকল-স্যভাবঃ। সকলশ্বনাৎ ফ্য প্র-ত্যযেন নিষ্পন্ন• ॥

শাগরো

সাকারঃ ত্তি আকারবিশিষ্টঃ।

যথা। সাকারক নিরাকারণ স
গুণ নির্ত্তণ প্রভূণ সর্বাধারক
সর্বক ক্ষেচ্ছাৰূপণ নমাম্যহণ।।
ইতি ভ্রন্ধবৈবর্ত্তে গণপতিখণ্ডে
৩২ অধ্যায়ঃ।।

मान्रक्षः भू वृक्षिति । म न्रक्षः इणि खर्क्कं तिप्ति । म ভाষা। তৎপর্য্যায়ঃ। অস্থিকলঃ ২ বিকটঃ ৩ বস্ত্রভূষণঃ ৪ সরুজঃ ৫ কর্ব্রকলঃ ৬ সঙ্গরুজঃ १। অস্যজ্ঞণাঃ। ক্ষায়ত্বং। রুচি-কারিত্বং। দীপনত্বং। সারক্ত্বং । শ্রেম বাতনাশিত্বং। বস্তর্জ্ঞা-নক্তবং। লযুত্বক। ইতি রাজ-নির্যুক্তঃ।

বাকেত॰ ক্লী অযোধ্যানগর•। ইতি শব্দরত্নাবলী॥

माञ्करः श्रू॰ यदः। ইতি निका-खरकोगूनी॥ मञ्जूनगृरह क्री॥ मञ्जूनमिक्किनि बि॥ मारथयः बि मिथममिकी। ইতি

माधाः क्री मथाः। ইতিধনঞ্জয-কোষः॥

সাগরঃ পু• সমুদ্রঃ। ইত্যমরঃ॥ সগরেশাবভারিভন্নাৎ তদ্যান मिछि तक मागद्रा मखाणिः १
कीद्रामाणिवभूगभया मागद्र वाश्रामाणिवभूगभया मागद्र वाश्रामाणेव हेडि छुछै। १ हेडि छुतुङ्गा म जू मश्रुविधः १ यथा १ लवनः कीद्रमः छुट्याप्ताम् भिगः छुद्याः मृद्राप्तक्षृत्रद्याप्ति । ह वामृषः मश्रुद्या छुद्य ।। ह-षातः मागद्राः था। छुद्याप्ता वाङ्गभूताप्त भन्दछम्नायाधासः वाङ्गभूताप्त भन्दछम्नायाधासः १। १ मृगविष्मसः । हेडि भक्त-हिस्स्का ।। म्मश्रुष्ममःथा। यथा १ विष्मः थर्दा निथ्वक मञ्ज भ-

চ সাগরঃ। ইতি ত্রন্ধাণ্ড-পুরাণ ॥ সাগরগামিনী জ্রী নদী। ইতি

।। গরণাবনা তা নধা। হাত ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। সূক্ষেলা। ইতি রাজনির্ঘন্তঃ ।।

সাগরনেমিঃ স্ত্রী পৃথিবী। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

मागत्रत्यथना जी मृथिती। ইতি ट्याटकः॥

সাগরাম্বরা স্ত্রী পৃথিবী। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

मागदालयः पुः वक्रवः। ইতি भक्षमाला॥

त्राक्रिविचिक्टः ॥ সাৰল ত্রি সৰলেন নিবৃতি। महलनाष्क्रां छ। ইতি निकास (कं. यूनी।। माकृष्टिः भू॰ मूनिवित्मयः। म जू देवगाषु भारगाजमा अवतः । यथा। देवराघुनमादनाखार मा-कृতিপ্রবরায চ। অপুত্রায দ-দাম্যেতৎ সলিল ভীষ্মবৰ্শ্মণে।। ইভি ভিখ্যাদিভত্ত্ব ॥ সাখ্যঃ পু॰ কপিলমুনিক্ত দর্শন-भाखिवित्भयः। ७९ भर्यायः। কাপিলঃ ২। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ তথা চ। সাখ্যা किनियू निना প্রোক্তণ সংসারবিমুক্তিকারণ হি। ষত্রৈতাঃ সপ্ততি রার্য্যা ভা-ষ্য চাত্ৰ গৌডপাদক্বত ৷৷ এতৎ পবিত্র মগ্র্য মুনি রাসুরষে ২নু-कम्लाबा श्रामता वामूति त्रि পঞ্চশিখায় তেন চ বহুধা ক্লতণ তন্ত্রণ। শিষ্য পরম্পর্যাগত মী-श्रुत्र क्रटकन टेंग्डमार्यगाजिः । भ किश्व याद्यायिका भगाधि জাৰ সিদান্ত ।। সপ্তত্যা কি न रव २थी रख २थीः क्रब्निमा ষফ্টিভন্তস্য। আখ্যাষিকা বির-হিতাঃ পরবাদ বিব্রজিতা শ্চাপি

॥ रेडि मा॰शायवहमं जारा॰॥ माजभः भू॰ मजभः। ইভামর-টীকাষাণ ভরতঃ।। সাঙ্গুমিকঃ পু॰ সংগ্রামাষ প্র ভবতি। সেনাগতিঃ।। সঙ্গ্রাম क्रमाल जि। ইভি সিদ্ধান্ত-क्रियुमी।। সাজ্জেপিকঃ ত্রি সংক্ষিপ্তঃ। ইতি मिका खरको गृती।। म॰ रक्ष भका-রকঃ। সংক্ষেপশবদাৎ ফিক প্র-ত্যয় নিষ্পন্নঃ॥ সাচি ব্য তির্যাগর্মঃ। তৎপর্যা-**यः। তিরঃ ২। ইত্যমরঃ।।** সাচিব্য॰ ক্লী সচিবস্যভাবঃ। স-চিব শব্দাৎভাবে ক্ষ্য প্রত্যবেন নিষ্পায় ।। माहिवाहिका खी स्थलभूनर्नता। इंভि রত্নমালা।। সাচীক্বত ত্রি বক্রীক্বত। ইতি त्रिकाखटको यूषी ॥ সাঞ্জনঃ পু॰ ক্রকলাসঃ। ইতি भक्तिका ॥ गाउँ ९ क श्रकामत्न। रेंछि क-বিকল্পক্রমঃ।। দ্বিতীয়স্বরযুক্ত-मकात्रामि त्रष्। अमनाहे । इंडि मुर्शामामः ॥ সাৎ ক্লী এক। ইতি কেচিৎ।।

সাম্বত

সাত ক সুখে। ইতিকবিকল্পক্রম ॥ मञ्जािकः। माठयः। मोजः धाञ् त्रयः। देखि मूर्गामामः॥ সাত ক্লী সুখ। ইত্যমরটীকাঘাণ ভরতঃ॥ দত্ত॰॥ নফ্ত•। ধন-ধাতোঃ যোধাতোশ্চ ক্ত প্রত্য-যেন নিষ্পন্ন॰।। সাত্যঃ ত্রি সুখজনকঃ। সাত্ত সুখে ইত্যস্মাৎ ঞৌ শ প্রত্য-যেন নিষ্পান্নঃ। ইতি মুগ্ধবোধ-**जिकाया॰ जुर्जाजामः ॥** সাতলা স্ত্রী চর্ম্মকষা। ইত্যমরঃ॥ ক্ষুপবিশেষঃ। স তু সেহগুভেদঃ

। তৃৎপর্যাयः। मश्रना २ माরी ৩ বিন্দুলা ৪ বিমলা ৫ অমলা ৬ ৰহুফেন। ৭ চৰ্ম্মকষা ৮ ফেনা ৯ मीखा ३० विषानिका ३३ **अर्न**भू-श्री ३२ शत्वयना ४७। जमा গুণাঃ। কফ পিত্তমন্ত্ৰণ। লঘুত্ৰণ। তিক্তত্বণ। ক্যাযত্বণ। বিদর্প বিষ বিস্ফোট ত্রণ শোফনাশি-ত্বক। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

সাতবাহনঃ পু॰ শালিবাহনরাজঃ । ইতি হেৰচন্দ্ৰঃ॥ সাতিঃ স্ত্রী অবসান গা দান গা

তীব্রেন্ন।। **ইত্যমরভরতী ॥** মাতিদারঃ ত্রি **অতিসাররোগ**-

যুক্তঃ। তৎপর্যায়ঃ। অতিসার-की २। ইত্যমরঃ॥ সাতীলকঃ পু॰ সভীলকঃ। ইত্য-यत्रीकाषा॰ ताषमूक हैः॥ সাত্যকিঃ পু্ বৃক্তিব শীষসত্য-কপুত্রঃ। সতু এক্রিফস্য সার-थिः। তৎপर्यायः। देशत्मरायः २ শিনেনপ্তা ७ युयूधानः ८। ইতি बिका खर्मियः॥ (याधः ६। ইতি জটাধরঃ ৷৷ সাত্যবতঃ পু• বেদব্যাসঃ ৷ ইক্তি:

ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ সাত্যবতেষঃ পু॰ সত্যবতীসুতঃ। বেদব্যাসঃ। ইতি হলাযুধঃ।। माष्व अं भू वलात्वः। देखि रह-মচন্দ্রঃ।। বিষ্ণুঃ। ইতি ত্রিকাঞ্জ শেষঃ।। বিক্ষৃভক্তবিশেষঃ। যথা । সত্ত্ব সত্বাশ্রহণ সত্ত্বগুণ সেবে-ত কেশব॰। ধো খনন্যত্ত্বেন ম-নসা সাত্বতঃ সমুদাহ্বতঃ।। বি-হাষ কাম্যকর্মাদীন্ ভজেদে-কাকিন॰ হরিণ। সত্য॰ সত্বগুণো-পেতো ভক্ত্যা ত॰ সাত্বত॰ বিদুঃ ।। यूजन्मशामदमवायां जन्माय-

শ্রবণেপি চ। কীর্ত্তনে চ রতে।

ভক্তো নাম্নঃ স্যাৎ স্মরণে হরেঃ

।। বন্দনার্চ্চনধো ভক্তি রনিশ॰

माना नथारयाः। ति त्राज्ञार्थ-ণে যস্য দূচনেস্তস্য সাত্ৰতঃ ।। ইতি পাদ্মোত্তরখণ্ডে ১১ অ-शायः ॥ 🟶 ॥ यमूवः भीयाः छ-त्राजभूखः। यथा। जत्मास भू-রুঙ্গৎসো ২ভূদ•শু স্তুস্য ভূ রি-ক্থভাক্। অথাণশোঃ সাম্বতো নাম বিষ্ণুভক্তঃ প্রতাপবান্।। মহাত্মা দাননিরতো ধনুর্বেদ विमा॰ वतः। म नात्रममा वहना-দাসুদেবার্চ্চনাম্বিতঃ ।। শাস্ত্র॰ व्यवर्त्वगाम ऋख गानामि-ভিঃ শ্রুত। তস্য নায়া তুবি-খ্যাত সাম্বত নাম শোভন ।। প্রবর্ত্তে মহাশাস্ত্রণ স্ঞাদীনাণ হিতাবহণ। সাত্বত স্তম্য পুলো ভূ॰ **मर्वमाञ्जितिमात्रमः।। भू**गा-স্লোকো মহারাজ স্তেন চৈতৎ প্রকীর্ত্তিত । সাম্বতঃ সম্বসম্প য়ঃ কৌশল্যান্ সূযুবে সূভান্।। অন্ধক॰ বৈমহণ ভোজণ বিষ্ণুণ দেবাবৃধ নৃপ। ইভি কৌর্মে যদ্ব শানুকীর্ত্তনে ২২ অধ্যায়ঃ সাম্বতাঃ প্র্ভুমি দেশভেদঃ। यथा। यमवर्खे मभार्शः मुाः मा-দ্বতাঃ সঙ্গরাশ্চ তে। ইতি ত্রি-কাওনোধঃ !!

সান্বতী স্ত্রী নাটকবৃত্তিবিশেষ:। যথা। অভিনেষ প্রকারাঃ স্যু ভাষাঃ ষট্ সংকৃতাদিকাঃ। তা-রতী সাম্বতী কৈশিক্যারভট্টো চ वृद्धसः॥ इंडि द्यहसः॥ শিশুপালমাতা। ইতি কেচিৎ।। সান্বিকঃ পু॰ ত্রন্ধা। ত্রিবিধভা-বান্তৰ্গতভাববিশেষঃ। ইতি (इबह्यः॥ छम्। लक्षनः यथा। मर्पाष्करिं मनि स अ अ व ন্তি ভাবা স্তে সাদ্বিকা ইতি विष् र्यानिश्वता एउ॥ ইতি म-बानमः॥ एक यथा। स्यम স্তভো ২থ রোমাঞ্চ স্বরভঙ্গো ২থ বেপথুঃ। বৈবর্ণ্য মঞ্চ প্র-লয ইত্যকৌ সাদ্বিকা মতাঃ।। প্রলযো মূর্চ্ছা। ইতি ভরতঃ ॥ সান্বিকঃ ত্রি সন্বগুণনিস্পাদিতঃ। ইত্যমরঃ।। সত্ত্বং মনো গুণ আ-শ্যো বা তেন নিস্পাদিতঃ সা-षिकः स्वामिः। मञ्चनका ए छ ঘেকাদিতি ফিকঃ। ইতি ভরতঃ ॥ 🗱 ॥ माषिक भूतानानि वर्गा। देवखव॰ नात्रमीयक ख्या जाग-বত শুভা গারুডঞ্চ তথা পাদ্ম বারাহণ শুভদর্শনে ॥ माधिकानि भूतागानि विद्छ्या-

नि श्रञ्जानि देव ।। # ।। সাधिकग्रृञ्दा यथा । वानिष्ठेदेश्व हात्रीङ व्यामः भातान्त्रः छथा ।
छात्रषाक्षः कामाभ्यः माधिकाः
मूख्तिमाः श्रञ्जाः ।। ইতি भाषाखत्रथर्थः ४० अधायः ।। माधिकथियाहाता यथा । आयुः मध् वनाद्राभा मूथ श्रीति विवर्क्तनाः
। तमाः सिकाः दिता हामा आहाताः माधिकश्रियाः ।। ইতি
श्रीज्ञावक्तीणायाः ५१ अधायः
।। माधिककर्ल्यकः कर्ल्यस्म
फर्कवाः ।।

माषिकी खी मूर्गा। ই छ भकत्रज्ञावनी ॥ भृजावित्मयः। यथा
। भातमी हिल्काशृजा जिविधा
शित्रगीयत्व। माषिकी ताजमी
देहव जाममी दहिं छ भृगु॥
माषिकी जश यखादेमा देनंदवदेमाण्ड नितामिदेयः। माहाज्ञाः
जगवजाण्ड शृतानामियू कीर्छिछ ।। शार्व समा जशा दिशा छ।
भार्वतिमना स्था । ই छि
मूर्गा भ्रवा व्यवः॥

সাদঃ পু॰ বিষাদঃ। শরণ ।। গতিঃ। যদধাতো র্যঞ্প্রত্যবে-ন নিষ্পান্ধঃ।। मानन की मनन। ইত্যমর
हैकाश छत्र छ।।

माननी खी कहेकी। ইতি রাজ
নির্ঘণ্টঃ।।

मानिः পু॰ সার্যা ইতি হেন
हस्यः।। যোদ্ধা। ইত্যুণাদিকো
यः।। অবসমঃ।। বাষুঃ। ইতি

সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ।।

সাদিতঃ ত্রি বিষাদিতঃ।। শর্মপ্রাণিতঃ।। গমিতঃ। ইতি

ক্যেপ্তমাতোঃ ক্রপ্রত্যাবন

নিষ্পায়ঃ।।

সাদী পুণ অশ্বাক্টঃ। ইত্যমরঃ
। গজারোহঃ।। রথারোহঃ।
ইতি মেদিনী।।

मामृभाः क्वी ममृभवः। छिछतः
एव मिछ छमाछ छृ याध में यदः।

यथा हस्य जित्र प्रिक्त कि हस्य गणः
व्या हस्य जित्र प्रिक्त छ मुक्त कि ने काणः
वाम के वाम मिन्न प्रिक्त छ मुक्त विनी

।। कि ।। अथ मामृगानि। विनाः

मर्गः) जुम ति श्वानः । कि मान्न मान्न हो महः । यक्त मानः

भाग हो महः । ममृत्र प्रकः ।।

थिमान हो निद्या । विनाः । यहः ।

थिमान हो निद्या । विनाः ।

थिमान हो निद्या । विनाः ।

थिन हो । विना हिमा ।

रेक्त कः ।। विना हिमा ।

रेक्त कः ।।

मूत्रवह्न २। ब्हर्ताः थे मः ३ ध নুর্যক্তিঃ ২ রেখা ৩ পল্লবঃ ৪ বল্লিঃ ৫। पृरभाः हरकातहकः ३ इतिनह-ক্ষুঃ ২ মদিরা ৩ খঞ্জনঃ ৪ অঞ্জন॰ ८ त्रमूषः ७ नीनशघः १ (थाष्ठीः बद्गाः ৮। कर्ना (माना) পानः ২। নাসাযাঃ ব॰শঃ ১ কেতকী-পুষ্পকণ্টকঃ ২ অধোমুখতূণীরঃ ৩ চঞ্চঃ ৪ তিলপুল্প ৫ দেওঃ ৬। অধরস্য নবপল্লব ১ বিম্বফল ২ প্রবালঃ ৩। দস্তানা মুক্তাশ্রে-निः ১ अन्मश्रूष्ण २ माডिमवी **ज**॰ ৩ হীরক ৪। স্মিতস্য জ্যোৎস্না ১ পুষ্প ২ পীযূষ ৩। শ্বাসস্য পদ্মগন্ধঃ ১ মুক্তাশীতলং ২ ৷ জিহ্বাযাঃ জবাপুষ্প ১ চঞ্চলবস্ত ২। বাণ্যাঃ কোকিলশব্দঃ ১ ভু-মরগুঞ্জন ২ সুধা ৩ মধু ৪ বীণা-वामा १८। मूथमा हक्कः ३ शबा २ प्रश्न ७। क्लेमा मधः ३। हि-वूकमा मर्भगवृष्ठ > । जामा अखः । वाट्याः वलती । मृगा-ল°২ তরঙ্গং ৩ শাখা ৪ পাশঃ ৫ । इस्रमः मृनानामयः । व्यक्नाः পল্লব॰ ১ পদ্মদল॰ ২ চম্পকপু-भा ७ नव्हल । हि भा १ । नथा-না॰ রত্ন॰ ১ তারাঃ ২ পুষ্প৽ ৩

ठखः ८। खनरगः পषामूकन ३ ষটঃ ২ ছন্তিসম্ভঃ ৩ গিরিঃ ৫ চ-ক্রবাকঃ ৫ বিল্বযুগ্ম ও। মধ্যস্য ৰরটকমধ্য > সি হমধ্য > বজু-मधाः ७ कीनजवाः ८। लाम-শ্রেণ্যাঃ রেখা ১ নীলকাস্তমণি-শিখা ২ শৈবাললতা ৩ ধূমলতা ৪ হস্তিশুঙঃ ৫। নাভেঃ আবর্ত্তঃ ১ পদ্ম ২ হুদঃ ৩ বিবর ৪ কুপঃ ৫ ৷ ত্রিবল্যাঃ তরঙ্গঃ ১ সোপান॰ ২ নিশ্রেণী ৩। জঘনস্য পুলিন॰ ३ शीर्वः २ कनक ७। निड्यमा স্থল ১ পৰ্বতঃ ২ পৃথিবী ৩ স্থ-लाभन ८ यह ५ छ । छ . इं कमनीका ७३ ३ कतिक तः २। জ-ख्याः खखः ३। शाम्मा श**ञ**े ३ নবপল্লব॰ ২। গতেঃ হ॰সগনন॰ ১ ছস্তিগমন ২ খঞ্জনগমন ৩।। পুরুষ স্ত্রিযো রৌচিত্যেন সাদৃশ্য° বৰ্ণনীয়ণ পুৰুষৰূপে কোপি জ্ঞ-চিদ্বিশেষো লিখ্যতে। ক্ষন্ধস্য বৃ-ষক্ষরঃ ১ বজু । অশ্বক্ষরঃ ৩। बास्ताः वृहदमर्गः ১ हिन्छि 💖 ২ खुडः ७ वर्गनम्खः। वक्तमः **गिना ३ करा**ष्टि २। गरङः ध्रम खानुषुकाि । सन्मः हत्य य-न पृथिकाथ जृति शक्त वर्ग नार्थाः

১। প্রতাপদ্য অগ্নিঃ ১ বাডবাগ্নিঃ ২ রবিঃ ৩ রবিকিরণাদিঃ ৪ জবা পন্ন প্রভৃতি রক্তবর্ণপদার্থাঃ ে। পুণাস্য সংস্কারঃ ১ গৌঃ ২ বৃক্ষ বীজ ৩ অঙ্কুরঃ ৪ শুক্লবর্ণপদা-ৰ্থাঃ৫। সামৰ্থাস্য মহদ্বস্তু ১ সি॰ছ-বিক্রমাদিঃ ২। নীতেঃ সাধীস্ত্রী ১ প্রদীপদ্বালা ২ লতাদিঃ ৩ ৷ আ-क्रांचाः (वनवाकाः ३ श्वन्यानः २ উৎকটেচ্ছাদিঃ ৩। শাসনস্য প্রারন্ধকর্ম ১ স্থিরবস্তুনি ২। পা-भगा कर्षभः ३ कलकः २ खकी-র্ত্তিঃ ৩ ক্লফবর্ণকেশ মসীপ্রভৃতি-বস্তুনি ৪ অন্ধকারঃ ৫। অকীর্ত্তেঃ यानिना > इक्वर्ग वर्खुनि २ अ श्वकातः ७। कञ्जूतिकायाः त्ययः ১ ভূমরঃ ২ নীলকান্তমণিঃ ৩ ক-জ্জুল ৪ সুগন্ধি দ্রব্যদাহজন্যধূমঃ ৫ কৃষ্ণবর্ণপুষ্পপ্রভৃতিঃ ৬ স্থলবি-লেষে কলপাষশঃ ৭ কামুকাষশঃ ৮ कामिनायमम्ह २। कब्बुलमा (म्यामीत्माङानि २। कर्ण्तमा **हिन्द्यः ३ हिन्द्य** कित्रवः २ जन्म यृथिः কাদিপুষ্ণ ৩ হিণ্ডীরপিঞ্চ ৪ বি-রহিগগুপ্রভৃতিঃ ৫। মনোরথস্য कल भूष्णा नियुक्क वृक्षः ३ कविवृक्षि-রচনা ২। আনন্দস্য সুধাসমুজঃ

১ ব্ৰহ্মসাক্ষাৎকারাদিঃ ২। কামি-ন্যবলোকনদ্য নিত্যসুখদাক্ষাৎ-কারঃ ১ অমৃতরসঃ ২ পূর্ণচন্দ্রাদি-সাক্ষাৎকারঃ ৩ অতিপ্রিয়ত্তমর-স্তপ্রাপ্তিঃ ৪ বন্দাশকাৎকারঃ ৫। অমৃত্স্য কামিন্যধরাদিঃ ১ সৎ-কাব্য॰ ২ ব্রহ্মসাক্ষাৎকারঃ ৩। বিষদ্য সাধীস্ত্রীবিরহঃ ১ পাপণ २ मनिनवञ्ज ७ मुःथमवञ्ज ८ ञी-ত্মাগ্নিঃ ৫ শীতকালীন শীতোদ-ক॰ ৬ ব্যভিচারিণীভার্য্যা १। বি-রহস্য অগ্নিঃ ১ আধিঃ ২ ষাতনা ৩ সমুদ্রঃ ৪ তপ্তবস্ত ৫ দুঃখদ-वर्ञुनि ७। भूम्भागा हसामिः ३ কামিনী ২ কপূরণত যশঃ ৫। চন্দ্রস্য প্রমদামুখ > অতিশুভু-वञ्च ७ यनः भूगानिः ७। সूर्यामाः শিবনেত্রাগ্লিঃ ১ জবাপুষ্প ২ ক-সম্ভকালীনপলাশবৃক্ষঃ ৩ কাঞ্চ-নবৃক্ষঃ ৪ বাডবাগিঃ ৫। পদ্মন্য পাটলপুষ্প ১ কামিনীমুখাদিঃ ২ त्रक्कवर्ণ**जवा॰ ७। इन्मीव**त्रमा नी-লকান্তমণিঃ ১ কন্তুরী২ কামি-नीरनव॰ ७। रेकत्रवर्गः हस्तः ३ जन्मामिश्कक्रवर्वस्य २। त्राखः हेन्द्रः ३ व्यद्रदश्यः २ हन्द्रः ७ मृर्याः ৪ মান্ধাতৃ ভগীরপপ্রভৃতি প্রদি-

क्षात्रक्रवर्खिनः ६। (यथमा क्रकः ३ काली २ नीलপদ্মসমূহः ७ ভ্রমর-শ্রেণিঃ ৪ ইন্দীবরবন ৫ দাতৃব্য-ক্তিঃ ৬ ক্লফবর্ণবস্তু १। শরমেঘ-স্য চন্দ্রপ্রভৃতিশুক্লবর্ণপদার্থাঃ ১। ৰুন্দৰ্পদ্য চন্দ্ৰঃ ১ পুৰারবাঃ ২ অ-श्विनीअयादः ७ नणः ८। अमील-স্য চম্পকপুষ্প ১ প্রতাগঃ ২ শা-ন্ত্ৰ॰ ৩ ঋষিঃ ৪। বাবোঃ শীৰুগপ-मार्थः ३। अश्वना वायुः ३ इतिनः ২ মনঃ ৩। হস্তিনঃ পর্বতঃ ১ মে-ষঃ ২ তমালবৃক্ষঃ ৩ অন্ধকারঃ ৪ ৷ সৌধস্য কৈলাসঃ ১ ঐরাবতঃ ২ উচ্চৈঃশ্রবাঃ ৩ চন্দ্রঃ ৪। শিবস্য পূৰ্বোক্তানি ৪। শ্ৰীক্ষণস্য সজল-जनमः > जमानवृकः २ नीनम-ণিঃ ৩ ভুমরশ্রেণিঃ ৪ ইন্দ্রীবর• ৫ ৰীলপদ্মণ ৬ আকাশঃ १। শ্রীরা-यमा পূৰ্বকথিতাঃ १ দূৰ্বাদল ৮৮ वृक्षशहाद॰ २। लक्षाः शार्वेडी ১ চন্দ্রকান্ডিঃ ২ রতিঃ ৩ সীতা ৪ জৌপদী ৫ পদ্মকান্ডিঃ ৬। সর-खनाः हल्यकता ३ देवलामका-खिः २ र्छक्नवर्नभनार्थः **७। वि**श्र-ণেঃ সমুদ্রঃ ১ পণ্ডিতমনঃ ২ না-রায়ণোদর ৩ বন্ধান্ত ৪। সমূ जमा (मशापिक्ष कर्न वर्ख ३ विष्

রভূমিঃ ২ মহাভারত ৩ অপশা-त्री है। পুরস্য স্বর্গঃ ১ কৈলাসঃ ২ यत्नात्रयवृश्वस्त ७। तथमा भूष्म-কণ্ঠ বৈষ্ঠাং ২ পুরী ৩ পোতঃ ৪ भृथी (। कामिनीम्थना हसः) পদ্ম ২ দর্পণঃ ৩। কামিন্যাঃ ত-ডিৎ ১ তারা ২ স্বর্ণলতা ৩ স্বর্ণব-ৰ্ণাকেতকী ৪। নাযকস্য চন্দ্ৰঃ ১ কন্দর্গঃ ২ ঐলঃ৩ অশ্বিনীন্সমারঃ ৪। সভাষাঃ সূর্য্যমণ্ডল ১ সুধর্মা ২ গগুকীপৰ্বতঃ ৩ সুমেরঃ ৪ গঙ্গা ৫। গণ্ডিত্স্য বৃহস্প্তিঃ ১ শুক্রঃ ২ ঋষিঃ ৩ সরস্বতী ৪। বিরহিণঃ শ্রীরামঃ ১ শ্রীশিবঃ ২ অজঃ ৩ দুংখিব্যক্তিঃ ৪ উন্মত্ত-ব্যক্তিঃ ৫ চন্দনভরুঃ ৬ শিব-শিরশ্ভশ্রঃ ৭ বাডবাগিযুক্তসমু-**जः ৮ वन्मीकः २ हव्यर**गथत्र १ई-তঃ ১০। দাতুঃ কর্ণঃ ১ উষীনরঃ ২ কল্পবৃক্ষঃ ৩ কামধেনুঃ ৪ রোহণঃ ৫ ममूजः ७ रायः १ दिनः ৮ জৈমিনিঃ ৯ যুধিষ্ঠিরঃ ১০। বস্তু-ঋতোঃ মলযবাযুঃ ১ মদ্য ২ উ-ন্মাদরোগঃ ৩। বিরহিণ প্রতি যমঃ ১ অগ্নিঃ ২ বিষণ ৩ সর্পাঃ ৪। গ্রীয়াখতোঃ অগ্নিঃ ১ বিরহঃ ২ বিরহিণীনিশ্বাসঃ ও সপনিশ্বাসঃ

৪1'বর্ষাঋতোঃ রাত্রিঃ ১ সমুদ্রঃ
২ গগনণ ৩ নারাষণঃ ৪। শর
দ্তোঃ কাশপুল্পাদিরূপচামরৈ
রাবতগজাঃ ১ চক্রঃ ৩। শীত
ঋতোঃ অপশ্যারিব্যক্তিঃ ১ রা
জাশুনারাজা ২। শিশিরঋতোঃ
রাজাগমনকালঃ ১। গুণিনঃ স
মুদ্রঃ ১ পর্বতঃ ২ পৃথিবী ৩ ম
দনঃ ৪ অশ্বিনৌ ৫। সচিবদ্য
বৃহস্পতিঃ ১। বাক্যদ্য কোকিলশকঃ ১ ভূমরগুঞ্জনণ ২ বীণাবাদ্যণ ৩। ইতি কবিকল্পলতাযাণ ৪ স্তবকে ৪ সমুমণ।।

माध यन छ मिरको। ইতি কবিकल्लफ्रभः।। य माधाठि। न मा(श्राठि। छ मियाৎमठि। मिकि
निम्मिल्डिः। माधाठि यही। निम्मासः मानिठार्थः। मिकि निम्मास्तिर्कि (गाविन्स्डिः। माश्राठि माधाठि यहे॰ म्नानः निन्मान्यठीठार्थः। ইতি मूर्गासामः॥

সাধকঃ পু॰ সাধনকর্ত্তা। নিস্পাদকঃ। তদ্য লক্ষণ যথা। অতঃ পর॰ প্রবক্ষ্যামি সাধকানাম্ব
লক্ষণং। ধর্মানীলা স্তপোযুক্তাঃ
সত্যবাদি জিতেন্দ্রিষাঃ। মাৎ-

সর্যোণ পরিত্যক্তাঃ সর্বসন্থহিতে রতাঃ।। কর্মশীলা স্তথোৎসাহা মর্ত্তালোকে ২জুগুপ্সকাঃ। পর-ম্পার সুসম্ভকীনুকূলাঃ সাধকস্য जू।। जेमृटेमः माधनः अर्यााः मू-महारेयः मरेहर जू। इंडि प्रती-পুরাণে নন্দামাহাত্ম্য সামাপ্তা-भागः ॥ 🛊॥ जिन । ठजूर्भा माधरका एकटरा मृमू र्यधाधिमा-ত্রকঃ। অধিমাত্রতমঃ শ্রেষ্ঠো ভ-वारको लब्बनकमः॥ मरमा ९-मारी मूम॰मृट्या वाधित्या ध्वरू-দূষকঃ। লোভী পাপমতি শৈচব ৰহ্বাশী বনিভাশ্ৰয়ঃ।। চপলঃ কাভরো রোগী পরাধীনো ২ তি-निष्ठूतः। यन्ना हादता यन्नवीदर्या। জ্ঞাতব্যো মৃদুনা নরঃ।। দাদ-শাব্দে ভবেৎ সিদ্ধি রেতস্য যত্ন-তঃ পরে । মন্ত্র যোগাধিকারী স জ্ঞাতব্যো গুরুণা ফ্রবং ॥ ১॥ স-মবুদ্ধিঃ ক্ষমাযুক্তঃ পুণ্যকাজ্ফী श्चिययनः। यथायः मर्वकार्यायु সামান্যঃ স্যান্ধ সংশ্यः ॥ এত-জ্জ্ঞান্বৈব গুকুভি দীৰতে যুক্তি-তো नयः। २। श्वितवृक्षि नंदयः युक्तः साधीता वीर्यावानि ॥ गशानाया प्रायुक्तः कनावान्

बीर्यावानिश मृद्रा लय्म अ-कावान् धक्रभामांक भूककः ॥ ষোগাভ্যাসরত শৈচৰ জ্ঞাতব্য-न्हाधियाजकः। এতস্য मिकिः य प्वरिषं र्जातम् जामार्या गठः ॥ **এত देश मीय एक शीरेत र्राटिया** भमा माथकः। ७। यशवीर्या-ষিতোৎসাহী মনোজ্ঞঃ শৌর্য্য-বানপি।। শাস্ত্রজ্ঞো ২ভ্যাস भीलक निर्मायक निरायनः। ন্বযৌবনসম্পন্নো মিতাহারী জিতে শ্রিষঃ।। নির্ভষশ্চ শুচি र्मत्का माठा मईक्नाव्ययः । व्यिकाती व्हित्ता शीमान् यत्थ-क्शविष्ठः कभी।। সুশীলো ध र्याठाती ठ छछटठकः श्रिययमः । শাস্ত্রবিশ্বাসসম্পন্নো দেবতা গুরুপূজকঃ। জনসঙ্গবিরক্তশ্চ यशवगिधिविविक्किं छः। अनिमा ত্ৰত্যোগ্যশ্চ সৰ্বযোগস্য সাধ-কঃ।। ব্রিভিঃ সম্বৎসরেঃ সিদ্ধি রেত্স্য স্যান্ন সংশযং। সর্বযো-গাধিকারী চ নাত্রকার্য্যা বিচা-त्रवा ॥ ४ । दे वि निवन श्रिका ॥ माधका जी जूर्गा। यथा। माध-ना९ निष्कि तिज्ञुका नाधका वाथ अश्वती। स्वामिश्वामानिन

দ্ধিষাৎ সিদ্ধীশ্বর্যা প্রকীর্ত্তিত। ।। ইতি দেবীপুরাণে ৪৫ দেবী-নিরুক্তাধ্যায়ঃ ।।

माधनः क्री कद्रगकातकवित्मयः। তত্ৰ তৃতীয়া স্যাৎ। ইতি ব্যাক-রণা। সাধাতে কর্মানিস্পাদ্য-তে খনেনেতি সাধনণ৷ ইতি पूर्भामामः॥ यात्रवः॥ य्**छम**ःका-রঃ। অগ্নিদান॰।। গতিঃ। গমন॰ ॥ जवाः। धनः॥ व्यर्थमाननः। অর্থস্য ধন ভূম্যাদে দাপন ॥ निर्वर्खनः। निष्णापनः॥ छेन-क्त्रनः। माम्जी। यथा युट्यानः क्रवण श्खाशाणिः॥ अन्वजा । অনুগমন । ইত্যমরভরতী।। देनना ।। निष्कीयिक्षः।। छेला-ৰঃ।। মেটুঃ। ইতি মেদিনী।। रेगवः।। উधः।। मिक्षिः। ইতি ধরণিং॥ কারকং॥ প্রমাণ । ইতি হেমচন্দ্রঃ।। ব্যাপ্য । যথা। অনুমা স্বনুমান স্যাৎ ব্যাপ্য॰ লিঙ্গঞ্চ সাধন॰। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। মোহন॰ী। জবঃ। ইত্যজয়ঃ।। সাধনা। সাধা ইতি ভাষা। যথা। ব্ৰশ্নো-বাচ। শশাপ পাৰ্বতী ৰুফী স্ত্ৰী यञां वाक ठानला । मर्दियाः

नाधरनरेनव कर यर्डि नाधवः ।। ইতি बन्नदिवदर्ख गटनमथ्र ३२ ज्यायः ॥ ७१ः। यथा। তপোভিঃ প্রাপ্যতে ২ভীষ্টণ नामाधाः हि जभमाजः। मृर्जग-ত্ব॰ বৃথা লোকো বহুতে সতি সা-धटन ॥ ইতি তিখ্যাদিত खुध्छ यৎ मा भूतां व वहनः ॥ यञ्जनि দ্ধিকরণ । যথা। মৎস্য মাণ-मक महाक मूजा देमथून त्मर ह । किरानादेश्व बीजानाः माध-ন ভবসাধন ।৷ ইতি মুখ্ৰমা-লাতন্ত্র ।। নিত্যানিতাবস্তবি-বেকেহামূত্রকলভোগবিরাগশ-यमयामिमम्भागूयूक्षु १ देखि বেদান্তসারঃ ॥

সাধনা স্ত্রী সিদ্ধিঃ। নিষ্পাদনা। ইতি সাধধাত্বৰ্থদর্শনাৎ। আ-রাধনা। ঞান্তসাধধাতোরন-প্রত্যেষ নিষ্পন্না।।

সাধন্তঃ ত্রি ভিক্ষুকঃ। ইত্যুণাদি- । কোষঃ।।

সাধ্যন্তী ত্রী উপাসনাকত্রী।
যথা। সখি মৎপ্রাণনাথন্ত সাধযন্তী নিরন্তরণ। অতিশ্রান্তাসি সন্তাব মেহযো রিষ মৌচিতী ।। ইতি কাব্যচন্ত্রিকা ।।

माधात्रभः कि ममानः। ममृभः। ইত্যমরঃ।। সামান্য । অনেক-मयद्याकबञ्ज। ইতি চামরঃ। যথা। সাধারণ নমাশ্রিত্য যৎ-किक्षिषाइनायूषः। त्नीयानि-নাপ্নোতিধন ভাতর স্তত্ত ভা-গিনঃ।। ইতি দাযভাগঃ।। ন্যা-যমতে হেত্বাভাসবিশেষঃ। যথা । অনৈকান্তো বিরুদ্ধশ্চাপ্যসি-দ্ধঃ প্রতিপক্ষিতঃ। কালাত্যযা-পদিফশ্চ হেম্বাভাসস্ত পঞ্চধা ৷৷ আদ্যঃ সাধারণস্ত স্যাৎ স্যা-क्माधात्रा १ शतः। ७ देशवा-নুপসংহারী ত্রিধানৈকান্তিকো ভবেৎ॥ यः সপক্ষে বিপক্ষে চ স তু সাধারণো মতঃ। য স্তৃভ-যম্মাদ্যাবৃত্তঃ সম্পাধারণো ম-তঃ॥ তথৈবানুপসংহারী কে-বলাশ্বযি পক্ষকঃ। ইতি ভাষা-পরিচ্ছেদঃ 11

माधातगरमभः भू॰ काञ्चलान्थलक्षणमभ्भव्यानः। उदातिशः
भाः। वृषाद्यः। मीथनद्यः। मधुतद्यः। लघ्दसः। ইতি त्राकवल्लञः॥

माधातनधर्माः श्रु ठजूर्वनकर्छरा-कर्मा यथा। প্रक्रनार्थः ख्रियः

সাধু

मृकीः मखानार्थक मानवाः ।
छन्मा माधात्र ना धर्माः क्रम्प्रेको
भक्षा महामिनः ॥ इनि मानदि २ अधायः ॥ अभि । अहि मा मना मत्युषः भोष मिस्मियमः यमः । ममः क्रमार्क्जवः
मानः मर्द्याः धर्ममाधनः ॥
इनि भाक्रष्ठ २७ अधायः ॥
इनि भाक्रष्ठ २७ अधायः ॥
साधात्र श्री श्री दिना। इनि
हमस्याः ॥
साधात्र श्री स्थिका। इनि

হেমচন্দ্রঃ।।
সাধারণ্য ক্লী সঞ্চিকা। ইতি
হেমচন্দ্রঃ॥ সাধারণস্যভাবশ্চ
সাধিকা জ্রী সুসৃপ্তিঃ। ইতি
হেমচন্দ্রঃ॥ সাধনকর্ত্রী॥ অধিকেন সহ বর্ত্তমানা চ ॥

गिरिङ जि मिलिङ। ইতামরः

। एवं धनामिक मिलिङ पूर्णी

हेिछ थाङ घट्या में छ छ जि वि

त्रमानाथः। मिलिङ हेिछ वि

माविदनामः। मिलिङ हेि वि

माविदनामः। मिलिङ जिंदा

हेि नयनानमः। ममाङ आं

छा॰ छः ही ती तीिछ भन्

रेम भाषि हेिछ भाठ हेिछ कि कि

गुक्रदगाल्यो। छ जि मगं ७

গ্রহণে গভৌ বধে দানে ইত্যত্থাৎ ক্রেডাং ক্রঃ। সাধে র্ফ্রাস্তাৎ ক্রে সাধিতঃ। ইতি ভরতঃ। দাবিতো দাপিতোপি স্যাৎ
সাধিতঃ শোধিতোপি চ। ইতি
শব্দরত্বাবলী।।

সাধিষ্ঠঃ ত্রি অভিশ্যবাচঃ। দৃঢ়-ভষঃ। ইত্যমরঃ॥ ন্যাযাঃ। ইতি ছেমচক্রঃ॥ অত্যার্যাঃ। ইতি মেদিনী॥

সাধীযান্ ত্রি অভিশ্যবাচঃ ॥ অভিশ্যসাধুঃ। ইত্যমরঃ ॥

माधः पृ॰ উত্তমসলোদ্ভবः। তৎপর্যাখা। মহাসলং ২ সলীনঃ
৩ আর্যাঃ ৪ সভাঃ ৫ সজ্জনঃ ৬।
ইতামরং ॥ সলজং ৭ সাধুজঃ ৮
সলকঃ ৯ সলিকঃ ১০। ইতি শকরত্বাবলী॥ সলাঃ ১১ কৌলেঘকঃ ১২। ইতি ভরতঃ ॥ জিনঃ
॥ মুনিঃ। ইতি হেমচন্দ্রং ॥ য়॥
সাধুলকণ যথা। যথালকোপি
সম্বন্ধঃ সমচিত্রো জিতেন্দ্রিশুঃ
হরিপাদাশ্রেমো লোকে বিপ্রঃ
সাধু রনিন্দকঃ ॥ ১॥ নির্বৈরঃ
সাধু রনিন্দকঃ ॥ ১॥ নির্বরঃ
সাধু রনিন্দকঃ ॥ ১॥ নির্বরঃ
সাধু রনিন্দকঃ মুনি ব্রতিরাগঃ
সাধু রিহোচ্যতে ॥ ২॥ লোভ

মোহ মদ কোখ কামাদি রহিতঃ म्थी। क्रकाञ्चिमत्रवः माधुः म शिकुः नमनर्भनः ॥ ७॥ नम्हि-ত্তো মুনিঃ পূতো গোবিন্দচরণা-व्ययः। সर्वज्जनमः काटका विदव-की माधू ऋखयः ॥ ।। क्रकार्शिङ প্রাণ শরীর বৃদ্ধিং শান্তেন্দ্রিষ স্ত্রী मूज मम्भामाभिः। यामकिरिकः শ্রবণাদি ভক্তি র্যােহ সাধুঃ স **७७° ह**रत्न र्यः ॥ ७ ॥ क्रकाञ्चरः क्रककथान्त्रकः क्राक्षरेनय गृ তি পূজনীযঃ। ক্লফানিশ ধ্যা-नमनाञ्चनत्ना त्यादेव म माध-र्भू निवर्ग कार्यः ॥ ७॥ इंडि পান্মোত্তরখণ্ডে ৯৯ অধ্যাষঃ ॥ 🟶 ॥ अनाकः। न अहराि मया त्न नावभात्नन ऋ भाछि। न क् कः शक्रयः ज्ञारार्तं ७९ मार्ट्सा ख नकन ।। देखि शाक्र ५५० व्यथायः ॥ 😻 ॥ छमा ऋङादवा সর্বসত্ব সুবৈথবিণঃ। ভবস্তি পর-দুংখেন সাধবো নিত্য দুঃখিতাঃ ।। পরদুঃখাত্র। নিত্য॰ স্বসুখানি মহান্তাপি। নাপেক্ষন্তে মহাত্মা-নঃ সর্বভূতহিতে রতাঃ।। পরার্থ মুদ্যতাঃ সন্তঃ সন্তঃ কিং কিং ন

व्यव्या । जामृगभाष्ट्र वाति क-লদৈ স্তৎ প্রগীয়তে।। এক এব সতা॰ মার্গো ষদঙ্গীরুত পালন॰। দহস্ত মকরোৎ ক্রোডে পাবকং যদপা•পতিং৷৷ আত্মান• পীড-यिषाणि जाधुः मूथबंटा भद्रः । ङ्गानयबाधिकान् वृत्का मूः थक म-হতে স্বয় ।। ইতি বক্লিপুরাণে लानावका निर्वयनायाधायः ॥का। তদ্য প্রশংসা যথা। যৎপূজা-या॰ ভবেৎ পুজো। দৃষ্ট্য। ने यम দর্শন । পাপস । যঃ স্পর্শনাক্ত কি यटश माध्मक्रयः ॥ माध्नाः क्र-मय॰ धर्म्या वाटना त्वा नः ननाज-নাঃ৷ কৰ্মক্ষাণি কৰ্মাণি ষতঃ সাধু হরিঃ স্বৰণ।। ইতি কল্কিপুরা-(१ ७० व्यशायः॥ 🗱।। किन मुफ স্ত্রীণাণ সাধুত্বণ তৎকারণঞ্চ যথা । কলিঃ সাধিতি যৎপ্রোক্ত॰ শূ-जः माक्षिण याषिणः। जन्नार ভগবান্ সাধু ধন্যা শেচতি পুনঃ পুনঃ ৷৷ তৎ সর্ব শ্রোতু মিচ্ছা-মোন চেৎ গুছে यহামুনে। ই-जुाका म्निजि वंगमः शहरमाम ৰথাব্ৰবী ।। শ্ৰায়তা ভা মুনি-গণা यमुक्तः সাধুসাধিতি। यद-ক্লতে দশভি ৰবৈ ক্ৰেতায়া হায-

নেন তৎ ৷৷ দ্বাপরে তচ্চ মাসেন অহোরাত্রেণ তৎকলৌ। তপ-সো বন্ধচর্যাস্য জপাদেশ্চ ফল॰ षिषाः।। প্রাপ্নোতি পুরুষ স্তেন किनः माधि जिथि । शायन् ক্ৰতে যজন্ যজৈ স্ত্ৰেতাযাণ দা-भदा श्रक्रियन्।। यमाद्यां कि कना-প্লোভি কলৌ সংকীর্ত্ত্য কেশবং। ধর্মোৎকর্ষ মতীবাত্ত প্রাপ্নোতি शूक्र करली ॥ खन्ना यारमन धर्म-জ্ঞা স্তেন তুষ্টোম্মাহণ কলেঃ।। ॥ उठ्योशित अथि। द्वाः পূর্ব॰ দিজাতিভিঃ। ততন্ত ধর্মা मः श्रादेख र्यकेवाः विधिवक्रदेनः ॥ বৃথাকথা বৃথাভোজ্য বৃথেজ্যা চ দ্বিজমনা । পতনায তথা ভাব্যু তৈন্তু সংযমিভিঃ সদা ৷৷ অসম্ক করণে দোষা স্তেষা সর্বেষু বস্তুষু। ভক্ষ্য পেষাদিক টেষা· নেচ্ছাপ্রাপ্তিকর· দিজাঃ গা পারতন্ত্রণ সমস্তেষু তেষাণ কা-র্য্যেষু বৈ ষতঃ। জযন্তি তে নি-জান্লোকান্ক্লেশেন মহতা षिकाः॥ षिक्रश्वन्यदेयदेवम भा-ক্ষজ্ঞাধিকারবান্। নিজ° জ-যতি বৈ লোক শৃদ্রো ধন্যতরঃ স্ততঃ।। ভক্ষ্যাভকেষু নাস্যান্তি

'(भरात्भार्यम् वा यङः। नियत्या मूनिमापू ना खिनारमी माधिकी-तिङ ।। 🛊 ।। यथर्यमगाविद्याद्यन नदेत लंकि धन मना। প্রতিপা-**माक्ष भारत्वम् यखे**वाक्ष यथाविधि ।। তস্যার্জনে মহান্ ক্লেশঃ পা-লনে চ ৰিজোত্তমাঃ। তথা স-দ্বিনিযোগায় বিজ্ঞেয়ণ গছনণ নৃ-ণা ।। এভি রন্যৈ স্তথা ক্লেশেঃ পুরুষা দ্বিজসত্যাঃ। নিজান্ জযন্তি বৈ লোকান্ প্রাজাপ-छामिकान् क्रमार ॥ यासिर শুশ্রমণ ভর্ত্তঃ কর্মণা মনদা গিরা। সর্বতী সমবাপ্নোতি তৎসালোক্য ততে। দ্বিজাঃ ।। নাতি ক্লেশেন মহতা তানেব পুরুষো যথা। ভৃতীয় ব্যাহ্নত তেন মধা সাধিতি যোষিতা ।। ইতি বিফুপুরাণে ৬ অংশে ২ व्यशायः ॥

সাধুঃ ত্রি বার্দ্ধ্বিকঃ। চারুঃ।।
সজ্জনঃ। ইতি মেদিনী।।
সাধুজঃ ত্রি উত্তমঙ্গলোস্ত্রকঃ।
ইতি শব্দরত্বাবলী।।
সাধুধী স্ত্রী শ্বশ্রুঃ। ইতি হারাবলী।। সুন্দরবুদ্ধিঃ।। তদ্ধুক্তে

बि॥

माध्रभूका॰ की इसमान। ইতি

मक्याना। উত্তমসমুমক।।

माध्रादः পু॰ विनीजाकः। ইতি

द्याद्यः।। मूक्तवाइनक।।

माध्रादी পু॰ শোভনবহনশীল
रোটকঃ। मूक्तिजाकः। তৎ
পর্যাকঃ। বিনীতঃ ২। ইত্য
মরং।। সূষ্ঠ্বাহনশীলকঃ ৩।

ইতি শক্রত্বাবলী।। সুক্রঘোটকবিশিষ্টে তি।।

সাধুকৃতিঃ ন্ত্ৰী উত্তমজীবিকা।।
সদ্বিরণণা সুন্দরবর্ত্তনণা সাদ্বী চাসো কৃত্তি শ্চেতি কর্মধারষসমাসনিম্পন্না।। সাধোকৃতি
রিতি ষষ্ঠীতৎপুরুষসমাস নিম্পন্না বা।।

সাধুবৃক্ষः পू॰ कपष्टकः। ইতি
শব্দ চন্দ্রিকা।। বরুণবৃক্ষঃ। ইতি
রাজনির্ঘন্টঃ।। শোভনতরুশ্চ।।
সাধৃত॰ ক্লী মধুরসমূহঃ।। পণ্যবীথী।। আতপত্র॰। ইত্যজ্জযুপালঃ।।

সাধ্যঃ পু॰ গণদেবতাবিশেষঃ।
ইত্যমরঃ। সতু দাদশসংখ্যকঃ। যথা। সাধ্যা দাদশ বিখ্যতা রুজা শৈচকাদশ স্মৃতাঃ।
ইতি ভরতঃ।। তেষা নামানি

পর॰ ক্লভার্থঃ সূতরা॰ বিনীতঃ।। ইতি কোষ্ঠীপ্রদীপঃ।।

 পা॰ তদিশিকধন্মী পক ইতি ভেদঃ তথাপাত্ৰ বাক্প্ৰত্যাব্য-नीपि धर्मविटमय विभिक्तेमा भ-ক্ষতবা ধর্মিণো ২ধমর্ণপদৈ রেব সাধ্যত্বাৎ সাধ্য পক্ষবো রভে-माजियानः। ইতি वावशायञ्च १। 🛊 ।। व्य नू विश्विविदश्व । स्था। সাধ্যভাবচ্ছেদক বিভি অনুমি-তিবিধেষতাবচ্ছেদক মিতার্থঃ। इंडि निकाखनकन कागमीनी-गिका श क्या मञ्जवित्मयः। वर्षा । নামাদ্যকর মারভ্য যাবমন্ত্রা-দিমাক্ষরণ। চতুর্ভিঃ কোঠে রে কৈক মিভি কোষ্ঠ চতুষ্টম॰।। পুনঃ কোষ্ঠগকোষ্ঠেষু সব্যতো नाम् जामिकः। निकः नाशः সুসিদ্ধো খরিঃ ক্রমাজভ্রেষা ম-নীষিভিঃ।। সিদ্ধঃ সিধ্যতি কা-লেন সাধ্যস্ত জপহোষতঃ। সুসিদ্ধো গ্রহণমাত্রেণ অরি মূ-ল নিক্সভিত।। ইতি তন্ত্ৰ-मातः ॥

সাধ্যতাবচ্ছদক ক্লী অনুমিতি-বিধেষা শৈভাসমান ধর্মণ যথা সাধ্যতাবচ্ছেদক মিতি অনুমি-তিবিধেযতাবচ্ছেদক মিত্যর্থঃ। তথা চোক্তব্যাপ্তিজ্ঞানাদপ্তাণ- ल प्रख्यकातिका प्रख्यवद्याः निष्ण्यान्यिन न जू प्रख्यान् हेन्याकाता प्रख्यकातिकाणि ज्ञा ना वार्यक्नावत्क्रपक्रवाधः हार कात्रव वार्यन ज्यमखनाः प्रिण्जि जादः। हेन्छि निकाखनकः प्राणीणिका ॥

माधामिकिशामः भू वावशातमा ठजूर्यभाषः। म छ निर्वयभाषः। ষধা। প্রত্যর্থিনো ২ এতো লে-খ্যমিতি ভাষাপাদঃ প্রথমঃ। শ্রু-তার্থস্যোত্তর লেখ্য মিত্যুত্তর-शामा विजीवः। ততো श्यी ल्यस्य नमा देखि कियानाम স্তৃতীয়ঃ। তৎসিদ্ধৌ সিদ্ধি মা-প্নোতি ইতি সাধ্যসিদ্ধিপাদ শ্চতুর্থঃ। যথা। ভাষোত্তর ক্রি-ষা সাধ্যসিদ্ধিভিঃ ক্রমবৃত্তিভিঃ । আকিপ্ত চত্র•শস্ত চতুস্পাদ-ভিধীযতে।। ইতি মিতাকরা।। माधमः क्री खरः। ইত্যমরः॥ সাধী স্ত্রী মেদা। ইতিরাক্র নির্ঘণ্টঃ॥ পতিব্রতা। ইত্যমরঃ ॥ उल्लक्ष्य यार रात्रीजः। जा-র্ত্তার্ত্তে মুদিতা হুষ্টে প্রোবিতে মলিনা ক্লা। মৃতে মিুখেত যা পত্যো সাধী জেয়া প্ৰিত্ৰতা

।। ।। उक्तमा वया। अनिताः। माधीना त्वत् नात्रीण यशिश्रन जनामृत्छ। नात्ना। श्रत्या हि विख्खारवा मृत्छ छर्छित्र कर्शिष्टि ॥ ইভি শুদ্ধিতত্ত্ব ॥ তৎপ্রশংসা ৰথা। সাধীন্ত্ৰী মাতৃত্ল্যা চ সৰ্ব-था हिछकातिनी। जनाभी देवत-তুল্যা চ শশ্বৎ সম্ভাপদাধিকা ।। ইতি বৃদ্ধবৈবর্ত্তে গণপতিখণ্ডে २ व्यथायः ॥ 🛊 ॥ माश्रीखीणः পতিঃ প্রেন্না শতপুক্রাধিকঃ ৷ ষথা। শতপুত্রাধিকঃ প্রেম্না স-তীনাঞ্পতি নৃপ। নিৰূপিতো **छ**गवछ। दिल्म इतिना स्वयः ॥ ইতি তত্ত্বৈব ৩৪ অধ্যাষঃ ॥ 🕸॥ কামিনী সলজাতাঞ্চ রহস্যে কামিনী সভী। ন পৃচ্ছতি ছ-লে জাত এব মেব শ্রুতৌ শ্রুত ।। শ্রুতে পুরাণে যাসাঞ্চ চরিত্র মনিৰপিত । তাসুকো বিশ্ব-সেৎ প্রাজ্ঞো অপ্রজ্ঞাঞ্চ দুরাশ-ষাু॰॥ ভাসা॰ কো বা রিপু শ্মিত্র॰ व्यार्थश्रेष नवः नवः॥ मृख्ने मृ विण भूक्य विष्ठ्ञि श्रमत्य मन । বাচ্ছে স্বাত্মসতীত্বঞ্চ প্রাপয-खी अराष्ट्रवः॥ मद्य अरानः स-দ্রপণ তৎ শুদ্ধক্ষ বভাবতঃ ৷

তদুত্তনক বিশ্বেষু সাধীৰূপণ প্ৰ-भ॰मिত ।। स्नाजाबाद क्ना-ভাবাৎ মধ্যবৃত্তে রভাবতঃ। দে-হক্লেশেন রোগেণ সৎসংগণ मुन्नि ॥ वहरगानीवृट्डिनव ति-পুরাজ ভবেন চ। রজোকাপস্য সাধীৰ মেতেনৈব প্ৰজাৰতে ॥ ইতি ত্রন্ধবৈবর্ত্তে প্রকৃতিখণ্ডে ১৪ विधायः॥ #॥ वनाक। मृत्व खनात्म यः त्यत्य याकाञ्चातमः তিকোভিতে। পতিল্লেহ্স্য সা-**श्रीना॰ कना॰ नार्श्य खाउँगी॰** ॥ खनात्म खनमानाखः मिकीत्म **ভোজনাবধি। काट्ड চিত্ত॰ म**-তীনাঞ্চ ক্ষপ্তে জ্ঞানে চ সম্ভত ।। নামে ভৃফা জলে ভৃষ্ণা সাধীনা श्वामिना विना। यथा जात्त शू॰-क्टनीना॰ माधीनां उथा क्षिरं ।। लाकः नियग्न यत्नासाः काटन-ন পান ভোজনাৎ। বিপরীত কান্তশোকো বৰ্দ্ধতে ভক্ষণাদ-रहा।। ইতি बद्धारेववर्ण्ड श्रीकृषः-क्रम्थर७ ३१ जशायः ।! 🛊 ॥ किश्व। आकारमा श्रंमी मिनाः गर्ब। यमि नगास्त्रि वायवः। छथा-পি সাধীশাপস্ত ন নশ্যতি কদা-চন।। ইতি ভৱৈব ৪২ জ্খ্যায়ঃ।।

সাননঃ পূ যোডশঞ্বকান্তর্গ-**उक्क्क्टिनः। यथा। अक्नेन** - भाकरेत्र र्व्एका यरमा हर्वथासा ঞ্জবঃ। কহন্ধ সংজ্ঞকে তালে मानत्मा वीव्रत्क व्रत्म ॥ इंछि मनीजनारमानतः ॥ ७७ क्वत्रक्षः । इंजि त्राक्रनिर्वकः॥ आङ्गान-ষুক্তে ত্রি। যথা। রামণনমতি সানন্ধ ধর্মানভিনিবিশ্য সন্। वेि मुक्तदवाधवाकित्रनः ॥ जानमृतः भू॰ छीर्थविटमयः। यथा । ধরণাবাচ। বারকাতঃ পর॰ শ্রেষ্ঠ অন্তি গুহু পর কচিৎ। ভতো মহীবচঃ শ্ৰেদ্বা বিষ্ণু: কম नलाहनः॥ वाताह्रक्शी छगः বান্প্রত্যুবাচ বসুদ্ধরা । বারা হ উবাচ। সানস্বেতি বিখ্যা-छ॰ जृदम श्वरू॰ शत्र॰ यम ॥ छ ত্তরে তু সমুজস্য মলষ্স্য চ দ কিংগ। তত্ত্ব ভিষ্ঠামি বসুধে উ দীচীদিশ মাশ্রিতঃ।। প্রতিমা देव मनीवास्त्रि नाजूका नानि-नीहका। आश्रमी छा वनस्या क् वाता जामुमरी॰ जथा। का॰माी॰ तीि विभवी मत्ना (क-চিৎ সীসক নির্মিতা । শিলা মধী মিভাপরে মহদাশ্চর্যাক্সপি

भीगा ज्वज्ञानामित्र जुल्हंक थायान यथा नृशा मन्जा वज म्हारख गणाः मःमात्रमागतः ॥ ख्वाक्तर्वा[®] श्रवस्थामि नानमृद्र चनविनि। मोवर्नः मृनाटा भन्नः यथारङ्ग जू पिवाक्दत्र ॥ यत ताय-গৃহ॰ নাম মন গুছ॰ ষশস্বিন। ত-ত্রাপি শৃণু চাশ্চর্যাণ যচ্চাপি পরি-বৰ্ত্ততে।। এব॰ তত্ত লভা বৃক্ষ মুচ্চ चृत यहा उत्परः। नंयू खबरशा छिन्ने-ন্ত পোপি তত্ত্ব ন পশ্যতি॥ 🛊॥ जनाक एक श्रवकाामि महाक-ৰ্যা॰ শৃণুষ্ব মে। মম ভক্তাপি প-भाष्ठि छिन्नेमानाः अदर्भागा। वह-यथमामश्रमानि काटिंग श्र्वम त्यव ह। किश्वः शिखक उत्रास्य ষেন কেন বিকর্মিণা।। এক স্তত্ত স্থূলনৎস্যো ভূমিচক্রেণ চাকি-তঃ। তাবৎ কশ্চিম গৃহাতি ধা-বত্তেন ন ভক্ষিতঃ।। তত্ত্র রামস-র॰ নাম তত্মিন্ ক্লেত্রে পর॰ মম। অগাধ ঞাপ্যপারঞ্চ রক্তপদ্ম বি-ভূষিত।। তত্ৰ সামন্ত দৰীত এ-করাত্তোষিতো নরঃ। বুধস্য ভব-ন॰ গত্বা মোদতে নাত্র সংশ্বঃ।। অথ প্রাণান্ প্রসুচ্যেত রম্যে রা-মঙ্গরে তথা। বুধস্য ভবন তাজ্ব

সান্তপ

সম লোকক গছাতি॥ তাৰ রাম-मदन खुटम महाण्डवीः भृगृत्र त्य। মনুজা ভার পশান্তি নম কর্মণ-রাষণাঃ ৷৷ সৎসরঃ ক্রোশ বিস্তা-तः यह **धना** निष्ठाञ्चलः। यहनाज्ञः व्रमनीयक जमटेक कालि न वृठ ৷৷ তত্ত্ৰ মূঢালিপদ্মানি দ্যোত্যন্তি मित्ना मन। এकस मृनाटा श्वर মেক ক্রম্ম তথা ।৷ ভত্ত ব্ৰহ্মসর নাম শুৰু ক্ষেত্ৰে পর यम। উত্তরেণ তু পার্শ্বেন यम-क्तिमा मुम्बि॥ ठळ इन्छ म হাভাগে পৰ্বতে চ সমাঞ্ৰিত ৷ ধারা ৰক্ত পতেকৈব স্থূলা মুবল-সন্মিতা।। তত্ৰ সানম স্বীত ব-र्श्वकारणां विद्या निष्या । वन्नरणां-ক সমাসাদ্য মোদতে নাত্ৰ স ভত্র বন্ধসরে মম। বন্ধণা সমনু-জ্ঞাতো মম লোকক গচ্ছতি।। <u> ज्वाम्हर्याः महाज्ञारम द्रास्य ब</u> क्तादत मृवा बद्धका बानि भणा-স্তি ঘোরণ সংসারমোক্ষণণ।। চত্-र्बि॰ শতিদাদশ্যা॰ সা ধারা পৃথু-लिकर्। यशाद्ध भेजरा जृत्य याव मृर्याः म छिष्ठे छ ॥ भद्रा-বৃত্তে তু মধ্যাক্লে সা ধারা ন প-

তেম্ভুৰি। এব তন্ত্ৰ বহা কৰা । भूरण जनमात यम।। ইত্যानि । ইতি বারাহে সানন্দুরমাহাত্মা-नाबाधायः॥ मानिकः भूः मूवर्वः। इक्रानामि-(क विश्वा मानिका जी वंभी। ইতি नक-तञ्जाबनी।। সানুঃ পু ক্লী পর্বতসমভূভাগঃ । তৎপর্যাবঃ। সুঃ২ প্রস্থঃ ৩। रेजायदः ॥ वनः ॥ वाजा॥: यार्गः॥ अवाः॥ काविषः। केंछि (यमिनी।। जर्कः।। शहावः । रें ि कि विश्वतः ॥ সানুজ ক্লী প্রগৌজরীক। ইতি त्राक्रिनिर्शकः॥ সানুজঃ পু॰ তুযুক্রবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। অনুজেন সহ-বৰ্ত্তমানে সানুজাতে চ'ত্তি।। मानुगान् पू॰ श्रद्धाः। देखि द्य-**टिखः** ॥ সানেষিকা স্ত্রী বংশী। ইতি मात्नशी खी वंभी। देखि भक्-त्रञ्जावनी ॥ **माञ्जभन** क्री बर्जित्ममः। यथा । शायूज॰ शायव॰ कीत्र॰ निध

नर्शिः म्रामकः। धक्त्रांत्वाः পৰাসশ্চ কুচ্ছু সান্তপন স্তৃত ॥ इंडि मानत्व ३३ व्यवाबः ॥ গোমুত্র মিতি গোমুত্রাদি একী-ক্লত্য একিশামহান ভক্ষেৎ नानार किक्षिममार जनत्रिम-নে চোপবাসঃ। ইত্যেতৎ সা-ন্তপন ক্লছ্ স্মৃত। यहा जू গোমূত্রাদি ষট্ প্রত্যেক বড্-দিনানাপভুজাত সপ্তমে দি নে চোপরাসঃ তদা মহাসান্ত পন ভরতি। তথা চ যাজ্ঞব काः। अत्नामकक लाकीतः मिथि मृत्र महाम्यु छ । जिस्रा भ-রে ২হ্নাপবসেৎ কুক্ত্ সান্তপন श्वत्।। পৃথক্ সাজ্পন জব্যৈঃ ষডহঃ সোপবাসিকঃ। সপ্তা হেন তু ক্লছো ২ম মহাসান্ত-পন শৃতি ।। ইতি সন্ধৃকভটঃ ৷৷ नाकट्ड ३०६ व्यथादयरभावः ॥ সাম্ভরণ ত্রি বিরলণ। ইতি জটা ধরঃ।। অন্তরেণসহবর্তমানক।। সাস্তৃ ৎ ক সাস্তৃনে। ইতি কবি-कब्रक्रमः ॥ मस्यामि स मधाः বকারোপধঃ। সাস্তৃন প্রিয-করণ । সাজুষতি সাজ্বাপয়তি 1 इंकि पूर्गामानः 11

जांडु क जागरवारम। इंडि करि-कब्रक्यः ॥ क ज र्खः नवानुः। इछि नूगामानः ॥ সাভু ক্লী অভার্থমধুরণ। ততু কৰ্ণ মনঃ প্ৰীতি জনক বাক্য ा। मान। छक्त श्रिषवानार्थश्र-দান সম্বাদিভিঃ ক্রোধোপশ্-্মন । ইতামরভরতৌ ।। দাকি-नाः। ইতি यिषिमी ॥ माखुन॰ क्वी मारमाभायः। इंडि ह्मह्याः ॥ श्रिकत्रणः। देखि भाखु धाळ् मैकायाः मूर्गामामः॥ नाष्ट्रना जी क्री माखुन ।। धन-यः। यथा। প্রণयः সাজুনা ন না । ইভি জটাধরঃ॥ **गाञ्ज्वामः बि गाञ्ज्व**नावाकाः । ইভি কেচিৎ 11 जान्नीशनिः शुः यूर्निवित्नवः १ ষধা। বিশ্বামিত্র: সতানস্কো :काकनि रिङ्गिलि उपा। मा-ন্দীপনিশ্চ ব্ৰহ্মাণশো বোগিনাণ खानिना॰ श्वद्भः॥ इंछि बन्नुदि-বর্ত্তে শ্রীক্রকজন্মশতে ৯৯ অ-भागः॥ 🛊 ॥ जनि ह। विषिठा-थिन बिद्धात्मे एखुङ्गान्यश-श्रानगरको सम्बद्धी ॥ छङ

नामीशनि॰ कामा सर्वाज्ञश्री वानिनः। जङ्गार्थः जग्रजू हीं-द्री वलामव जनामंद्री॥ का-नाः कानाः काङः॥ छमा मि ব্যন্থ ৰভ্যেতা গুৰুবৃত্তিপরে হি छो। पर्नशक्कवृ बीद्रावाठात्र विश्व करन।। मत्रक्रा अम्-ৰ্বেদ॰ সসংগ্ৰহ মধীষতা । অ-·হোরাত্রৈ শচতু:য**ক্ট্যা তদ**ভূত अजृष्मुक ॥ जान्तीशनि द्रज्ञः का छत्याः कर्माछिमान्यः। वि-চিন্তা তৌ তদা বেনে প্রাণ্ডৌ **एस मिवाक्द्रो।। अञ्जबाय य-**শেষক্ষ প্রোক্তমাত্র মবাপ্য তৌ । উচতু বিষতা বা তে দাতব্যা গুরুদক্ষিণা।। সোপ্যতীন্ত্রিয নালোক্য ভষোঃ কর্ম নহাম-তিঃ। অবাচত মৃত পুত্ৰ প্ৰভা-· एक नवनार्गरव ॥ विकास व ন্যত্ৰাদৃষ্ঠপূৰ্ব । শৃহীতান্ত্ৰো তত खो जू मार्चभाद्या बदशमिश्रः। উবাচ ন ষয়া পুৰো হতঃ সা-न्मीशत्म द्रिष्ठि॥ देमछाः शकः জনো নাম শহৰপঃ স বালক । জগ্राह मा श्रेष्ठ मनितन भ-रेगवातिनिमृतन ॥ इक्राटक्ख-ৰ্জ্জল গত্ব। হত্বা পঞ্জন চ ত ।

करका कथार जगाविश्वकर मध मूखमः॥ जः भाककना मा-भूगा भवा वमभूतीः रुदिः। वम-एवक वनवान किवा दैवववरुः यमः॥ जः वामः वाजनामःवः यथाभूवंभन्नीतिनः। भिर्द्ध श्र-स्ववान् क्रका वनक वनिनाः वदः॥ रुठि विक्शूताल ६ खः-८ण २५ खशायः॥

मान् किंक की महाःस्वाः। इंडामद्रः ॥ षृष्ठे भद्रिक स्नान्। यः ॥
स्था। भिछामर क्षिरिका जात्य
क्षिणियर क्षिरिका महिका जात्य
क्षिर्वा स्वाद्य क्षिर्वा महिका जात्य
स्वादिका द्वः क्षिर्वा महिका प्रकारिक ना स्वादिक ना स्वादिक मान् किंक मान् किंक ना स्वादिक मान् किंक मान किंक मान् किंक मान किंक मान् किंक मान किंक मान् किंक मा

नाखः की वनः। ইতি मिनी।।
नाखः जि चनः। ইতামরः॥
मृद्रः। ইতি मिनी।। त्रिकः॥
नताखः। ইতি শক্ষরত্বাবলী।।
माख्रःभूनः भूः विजीতকবৃকः।
ইতি শক্ষচজ্রিক।।।

माळिषिकः वि निविष्यिकः। তৎপर्वतायः। स्मृतः २। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

माश्विकः भू त्योखिकः। देखि

गांकना

भवागा।। मिक्कि है। माश्वित्वन कि मिश्वत्वायाः **७वः। मिह्नादना मद्या। १७**, मिका खरको नूमी।। नामाः बि नमाानवसीयः। नमा। শব্দাৎ क্য প্রত্যবেন নিশন্তঃ।। সান্ধ্যক্ষসুমা স্ত্রী ত্রিসন্ধিপুষ্প-বৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ধন্টঃ।। मान्नकः बि मनाक्विभिकः। সন্নাহ শব্দাৎ ঠক্ প্ৰত্যবেন নি-न्नमः। ইভি निकाख्यको मुनी।। मामायाः क्री हिंदः। रेठायतः॥ সামিখ্য ক্লী নিকটণ। ৰথা। वर्ककमा उत्भारबागा । वर्क-নস্যাতিশাষনাৎ। আভিক-शाक विश्वानाः एवः नामिश मृष्ट्ि।। ३७ विथापिछव्।। সামিপাতিকঃ ত্রি সমিপাতজরো-शः। ইভি ब्राक्षनिर्यन्तः॥ छिष-বরণ সন্ধিপাতশব্দে জরুব্য ।। সান্যাসিকঃ পু॰ সন্মাসী। তৎ-পর্ব্যায়ঃ। ভিক্ষু: ২ ষতিঃ ৩ কর্মন্দী ৪ রক্তবসনঃ ৫ পরি-বাজকঃ ৬ তাপসঃ ৭ পারাশ-রী ৮ পারিকাজ্দী ৯ মকরী ১০ পারিরক্ষকঃ ১১। ইভি ছেমচন্দ্রঃ সাগদ্ধাঃ পু॰ শত্রুঃ ইত্যমর-

बैकाका व्यामाधः॥ मन्त्री পুত্রঃ। বথা বৃহস্পতিঃ। পিত্রা-সহ বিভক্তা কে সাগন্ত্যা বা স-ह्मान्त्राः। जयनाकान्ह त्य छ-ষাণ পিভূভাগহরা স্ত্র তে।। ইতি দাযতজ্বা। সপত্নীভাবে ক্লী।। সাপিত্তা ক্লী সপিততা। সাতু भू मा॰ मश्चमभूक्षभर्याञ्ड॰ ज न्एकनगानाः बिश्रक्रशर्यास्थ স্থাষিনী। ষথা। লেপভাজ শ্চ-ভূর্থাদ্যাঃ পিত্রাদ্যাঃ পিণ্ডভা-গিনঃ। পিওদঃ সপ্তম স্তেষাণ সাশিশু সাপ্তপৌরুষ ।। ইতি ষৎসাপুরাণ।। অপ্রস্তানা তি-পৌৰুষ । ইতি বশিষ্ঠঃ।। অপি চ। পিত্রাদি বড্জিঃ সাপিণ্ড্য॰ তত্তৎ সন্ততি সপ্তকৈঃ। গোত্রৈ-ক্যে সতি তত্ত্বস্যাৎ ষড্ভিঃ পু-व्यामिकि स्था।। ष्रश्रकानास कन्गानाः विजिः शिवामिजिः मृष्ण। हेषि कात्रिका॥ जनाद সপিওশব্দে ডক্টব্য ।। সাপ্তপদীন ক্লী স্থা। ইত্য-यतः॥ मञ्जूभनमञ्जूषिनि वि ॥ माक्ना॰ क्री मक्ना। मक्न-माजाव हेजार्थ का প্रजारवन निष्णम् ॥

गाकी जी जाकावित्मकः। इंडि क्टिनाः

সাম ৎ ক সাস্তুনে। ইতি কবি-কল্পফ্রমঃ।। সাস্ত্রনং প্রিয়করণং । অসসামৎ দীনং দানেন দাতা ইতি দুর্গাদাসঃ।।

मान के मार्खु। ইতি कविकत्त-एक्यः ॥ मख्यानि विंठीययती माखुः श्रियकत्तनः। क मानवि मीनः नाटनन नाठा। ইতি नूर्गा-मानः॥

माम^न क्ली त्वमितित्ममः। ইত্য-মরঃ।। স্যতি পাপ সাম ষোষ নাশে ভাসুসিতি মন্। ভরতঃ ৷৷ তল্লক্ষণ মাহ জৈমিনিঃ । গীতেষু সামাখ্যা ইভি। গীय गात्नम् मत्त्वम् माम म॰ छ्डा र्थः। ইতি তিথ্যाদিতত্ত্ব ॥ তন্ত্ৰ চতুৰ্বেদান্তৰ্গততৃতীযবেদঃ । তদ্য সহসুশাখা তদ্যোপনি-य ছाटमागामिः। विवत्रवस्र त्वन्यक जरुवा॰ ॥ ॥ माय-ধনি শ্রবণানন্তর বেদপাঠ নি-रिष अनिधिशेक्रान्यका कथनक यथा। मामधनावृश्चकृषी नाषी-যীত কদাচন। বেদগাধীতা বাপান্ত মারণাক মধীতা চ॥ भाष्यामा प्रव रेमवरका। सङ्खिन-ख यान्यः। नागतमः न्यृठः **शि**बा खन्माखना। ७ हि स्निः ॥ इंडि मानत्व ८ व्यक्षायः ॥ 🛊॥ শত্রবশীকরণোপাষবিশেষঃ। ই-**छामदः ॥ श्रिषवामार्थश्रमानम** ষদ্ধাদিভিঃ ক্রোধোপশ্মন সাম । সাতি বিরোধ মিতি যো ২স্ত-কৰ্মণীত্যস্মাৎ ত্ৰাসুসিতি মন্। সাস্তু সাম এক সাস্তুনে ইত্য-न्यार नामीि जन्ता माम प-ন্ত্যাদি। শমষতি বিরোধ মিতি শাম নান্ত তালব্যাদি ইতি কে-চিৎ। ইতি ভরতঃ।।।। অপি চ । यन् ऋवाछ। छेशाया॰ खु॰ मया-চক্ষ সাম পূৰ্বামহাদ্যুতে। লক্ষণ-ঞ্চ তথা তেষা প্রযোগঞ্চ সুরো-ত্তম।। মৎস্য উবাচ। সাম ভেদ ত্তথা দান॰ দণ্ড চ মনুজোত্তম। উপেক্ষা চ তথা মাষা ইন্দ্রজাল শ্চ পার্থিব।। প্রযোগাঃ কথিতাঃ সপ্ত তম্মে নিগদতঃ শৃণ্। দিবিধ॰ ক্থিত সাম তথ্য ঞ্চাত্থ্য মেব চ ৷ ত্রাপ্তথা সাধূনা আ-ক্রোশাধৈব জাষতে। তথ্য সাধু-প্রিষক্তৈর সামসাধ্যা নরা মতাঃ ।। यहात्रनीना श्रज्ञता धर्मानिष्ठा

क्लिक्याः। नामनाशा नता ন্তথ্য- তেৰু সাম প্ৰযোজ্যেৎ ম ख्थाक नाम कर्खवा अन मीना-मि वर्खिना। छथा ममुनहाताना॰ क्रजानाकान्यर्वन ॥ अनदेशव তথা যুক্ত্যা ক্ৰভজ্ঞাখ্যাপন স্ব-কং। এবং শাড়েন কর্ত্তব্যা বশ-গা ধর্মতৎপরাঃ।। সামা বদ্যপি ব্লকাণসি গৃহস্তীতি পরা শুতিঃ ৷ তথাপ্যেতদসাধূনা প্রযুক্ত নোপকারক ৷৷ অতিশাস্তিক মিতোব॰ পুরুষণ সামবাদিন॰। অসাধবো ২বজানস্তি তন্মাৎ ट्यू विवर्द्धाराथा। य शक्ववःभा ঋজরঃ প্রতীতা ধর্মে স্থিতাঃ স-ত্যপরা বিঝীতাঃ। তে সামসা-शाः भूक्षाः थिनिकाः माताः ন্তাবে সততক রাজন্।। ইতি মাৎস্যে রাজধর্মে সামবিধিঃ ১৯**७ जशायः ॥**

সামক ক্লী মূলঋণ । ইতি বি-তাক্ষরা।।

সামকঃ পু॰ তকুশাণঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

সামগঃ পু॰ সামবেদীবান্ধণঃ। ইতিজ্ঞাধরঃ॥

সামগর্ত্তঃ পু॰ বিফুঃ। ইতি শব্দ- |

রত্নাবলী।। দামগী ন্ত্রী সামগরাব্দণগত্নী

সামগী স্ত্ৰী সামগৰাদ্দণগত্নী । ইতি কেচিৎ ।।

সামগ্রী স্ত্রী কারণসমূহ: । যথা।
সামগ্রী চেন্ন কলবিরহো বাাপ্তি
রেবেতি তত্ত্বং । ইতি পদাক্ষণুতঃ
বা জব্যং । যথা। একোদিন্তর
কর্ত্তব্যং পাকেনৈব সদা স্বযং।
অভাবে পাকপাত্রাণাং তদহঃ
সমূপোষণং ।। ইতি লঘুহারীত
বচনাৎ পাকপাত্রাভাবঃ পাকসার্যভাবোপল কণং । ইতি
শ্রাদ্ধতত্ত্বং ।।

সামগ্রা॰ ক্লী সমুদাযত্ব॰। সম-গ্রস্যভাব ইত্যথে ক্ষ্য প্রত্যথেন নিশাম॰।

मामकः भू॰ इस्ती।। সামোপে बि। ইভি মেদিনী।।

সামঞ্জস্য কী উচিত্য । সমঞ্জস শব্দাৎ ক্ষ্য প্রত্যায়েন নিস্পারণ।। সামনী স্ত্রী পশুবন্ধনরজ্জঃ। ইতি দারশক্ষটীকাষা সার্বুনু-শরী।।

সামস্তঃ পু॰ স্ববিষধানস্তররাজ।

1 সম্ সংলগ্নো ২স্ত একদেশো

যস্যাঃ সা সমস্তা স্ববিষধানস্তরা ভূমিঃ তদ্যা ঈশ্বরা ইতি কে

সামস্তাঃ। ইতামরটীকাষাণ ভ-রতঃ।।

সামন্ঃ পু॰ সামবেদজ্ঞ বান্ধণঃ। সামন্ শব্দাৎ ক্য প্রত্যবেন নিম্পন্ধঃ।।

সাম্যিকঃ ত্রি সম্যোচিতঃ। স-ম্যশক্ষাৎ ক্ষিক প্রত্যবেন নি-পারঃ।।

সামবোনিঃ পু॰ বন্ধা। হন্তী।। সামোখবন্তনি ত্রি। ইতি মে দিনী।।

সামর্থ্য ক্লী যোগ্যভা। শক্তিঃ
। ইতি মেদিনী।।

সামবাধিকঃ পু॰ মন্ত্রী। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ সমবাবসম্বন্ধিনি ত্রি সামাজিকঃ পু॰ সভ্যঃ। ইত্য-মরঃ॥ সভাসম্বন্ধিনি ত্রি॥ সামান্য॰ ক্লী জাভিঃ। যথা।

জাতি জাতক সামান্য ব্যক্তি
ন্ত পৃথগাত্মিকা। ইতি কল্চিদমর: ।। তদ্দ্বিধ যথা। সা
মান্য ছিবিধ প্রোক্ত পরকা
পরমেব চ। অব্যাদি ত্রিকবৃত্তি
ন্ত সভা পরতবোচ্যতে ।। পরতিলা চ বা জাতিঃ বৈবাপরত
বোচ্যতে। ব্যাপকত্বাৎ পরাপি
স্যাৎ ব্যাপাত্মাদপরাপি চা। জ্র-

ব্যমাদিক জাভিত্ত পরাপরতবো-**চাতে। ইতি ভাষাপরিচ্ছেদঃ।**ঃ ভলক্ষণ ৰথা ৷ নিতাদ্বে সভানে-क मगदवज्ञः। ज्ञातक मगदवज् দ্ব॰ সংযোগাদীনা মপ্যন্তি অভঃ সত্যন্ত নিতাত্ত্বে সতি সমবেতত্ত্ব গগন পরিমাণাদীনা মপ্যস্তি অ-ত উক্ত॰ অনেকেভি নিত্যদ্বে সতি অনেকবৃত্তিত্ব মত্যম্ভাভাবস্যা-প্যস্তি অতো বৃত্তি সামান্য মুপে-ক্ষ্য সমবেতত্ব মুক্ত । একব্যক্তি-বৃত্তিস্ত ন জাতিঃ। তথাচোক্ত । ব্যক্তে রভেদ স্থল্যত্ব সঙ্করোথা-নবস্থিভিঃ। ৰূপহানি রুসম্বন্ধা জাতি বাধক সংগ্রহঃ।। একব্য-ক্তিকদ্বাৎ আকাশদ্ব ন জাতিঃ । তুলাবৃত্তিকত্বাৎ ঘটত্ব॰ কলস-षः न काण्यियः। मःकीर्वषाद ভূতত্ব মূর্ত্তত্ব ন জাতিঃ। অন-বস্থা ভষাৎ সামানাত্ব ন জাতিঃ । বিশেষস্য ব্যাবৃত্ত স্বভাবস্য ৰ-পহানিঃ मा। मर्छ। विरमयष् न জাতিঃ। সমবায সম্বন্ধাভাবাৎ नयवारया न जािंडः। जवाित ত্রিকবৃত্তি রিতি পরত্বণ অধিক-**मिन्**किषः जनत्र यज्ञमिन्-ত্তিত্ব। সকলজাত্যগেক্ষয় অ- धिकरमण्यृत्तिषा नि मत्तावाः भ त्रषः। এত बाधनाय जनामीः जि। जमरणक्या जानामाः जाः जीनाः जभत्रषः। भत्रज्ञिता मः जाज्ञित्ता। त्राभकषा भत्राभि माष्ट्रवाणाषामभताभि छ। भृ थिवीषामारणक्या वाभकषा व्यवस्य जिषकरमण्यृत्तिषा जवादमा भव्रषः। मत्तारणक्या जन्नदमः भव्रष्ट्रवा जिष्ठा जभत्रषः भ। जथा ह धर्माष्य मनारवः भाष जेज्य निक्रकः। मिक्रास्त्रमूक्तावनी।।

নামান্য ত্রি অনেকসম্বন্ধ্যেক-বস্তু। সাধারণ । যথা দেবলঃ । সামান্য পুত্র কন্যানা মৃতা-যা স্ত্রীধন বিদুঃ। অপ্রজামা হরেন্তর্ত্তা মাতা ভ্রাতা পিতাপি বা ।। ইতি দাষতত্ত্ব ।।

সামান্যলক্ষণা স্ত্রী অলৌকিকসমিকর্ষবিশেষঃ। স তু আগ্রায়জ্ঞাপক সামান্যজ্ঞানং। যথা।
একঘটদর্শনে সকলঘটজ্ঞানং
ভবতি ঈদৃশ ঘটদ্বাদিজ্ঞানং।
তৎপ্রমাণ যথা। অলৌকিকঃ
সমিকর্ষ স্ত্রিবিধঃ পরিকীর্ভিতঃ।
সামান্যলক্ষণা জ্ঞানলক্ষণা যো

शक ख्या। जामित ता ख्याना-ग्र मामाना खान विशास । छिन-खियक छक्षां ताथ मामशारम-कर्टा। इणि छाषा माना गिन-मामाना मामन की मामाना वि-कातः। यथा। मरक्ष्य कार्या मामाना मामन धर्मकी नकः। मामाना मामन भ्याति भूक्षिः मूजना मन।। इणि भूतवर्सि

সামান্যা স্ত্রী সাধারণীনায়িকা।

া অস্যা লক্ষণ । ধনমাত্রলাভার্ন র্থণ সকলপুরুষাভিলাসা। সাত্রিধা। অন্যসম্ভোগদুঃখিতা।
বক্রোক্তিগর্বিতা। মানবতী।
বক্রোক্তিগর্বিতাপি দ্বিবিধা।
প্রেমগর্বিতা সৌন্দর্য্যার্বিতা চ
। এতা নাযিকা অবস্থাভেদেন
প্রত্যেকণ অফপ্রকারা ভবস্তি।
যথা।প্রোধিতভত্ কা১ খণ্ডিতা
২ কলহাস্তরিতা ও বিপ্রলক্ষা ও
উৎক্তিতা ৫ বাসকসজ্জা ও
স্বাধীনপতিকা ৭ অভিসারিকী
৮। ইতি রসমঞ্জরী।।
সামি ব্য অর্কণা। নিন্দা। ইত্যা-

সামিক্তঃ ত্রি অদ্বীক্তঃ৷ সামি

यद्रः ॥

শৰাৎ ক্তথাতোঃ ক্ত প্ৰভাষেন নিশানঃ।।

সামিধেনী স্ত্রী অগ্নিসমিদ্ধনঋ-ক্। অগ্নের্জালনে ষা ঋক্ পঠ্য-তে। তৎপর্যায়ঃ। ধাষ্যা ২। ইত্যমরঃ। সমিৎ। ইভি মে-দিনী।।

সামিপীতঃ ত্রি অর্দ্ধপানরতঃ। সামিশবাৎ পাধাতোঃ ক্ত এঃ ত্যাধেন নিম্পন্নঃ।।

সামিভুক্তঃ ত্রি অর্দ্ধভূক্তঃ । সামি শব্দাৎ ভুজধাতোঃ ক্ত প্রভ্যন যেন নিম্পন্নঃ ।।

मामीही खी बन्मना। ইভি हाराः वनी॥

मामीला॰ की ममीलप्रः। टेनक-हा॰। यथा। वः क मामीला मा-मृणा माकला। नृज्यक्षिक्। के-जिम्पाः वाधवाकित्रः। अधि-कत्रवित्ययः। आधात्रत्जनः। यथा। मामीलात्व्यविष्टेयः वीश्वाधात्र महजूर्विधः। केनि कात्रत्क मूक्षत्वाधवाकित्रः।।

সামুদ্রণ ক্লী সমুদ্রলবণ । ইন্তি হেমচন্দ্রং।। করকচ্ ইন্তি ভাষা । তৎপর্য্যায়ঃ। সামুদ্রণ যতু লবণ ত্রিস্টণ কডকঞ্চ তৎ। है जि त्रष्ट्रभागा । ज्या खगारा गामूज नवनः गाक नाज्य मित्रण है । ट्लमन भ्यूत जिक्षः मृजम नाजिभिड्ला।। हे जि ताक्ष्यक्षणः।। ज्याप मम् जिक्षा । हे जि ताक्ष्मिकः।। जिक्षा । हे जि ताक्ष्मिकः।। एम्हे जिल्ला। मम्जकारण जि ।। हे जिल्ला।

मामूजक की ममूजनवन इंडिः व्राक्रनिर्षकः॥ नगूरजाकञ्जी-পু॰লক্ষণগ্রন্থঃ। তদ্বিবরণ যথা। **बीक्रक উवाह। कीमृनः পু**रूरका बरम्मा श्वरम्मा वा कीमृरमा छ-त्र । कना वा की मृभी भ ना গर्हिका वाशि कीमृगी।। मरहण छेवाह। भृग् क्रक श्रवकामिः मगुखरहन यथा। नक्षा । मन्यानाः अटेक्टकन वनागारः ॥ बावजारम जू नादीनाः मकि-११ भूक्षमा ह। निर्फिक्षे॰ नक-<u> ৰং তেষা সমুদ্ৰেণ ষথোদিত </u> ॥ भूबं याषुः भतीत्कल भन्छा-लक्ष (भव छ। चायूशीन नता-बारकर नकरनः कि॰ अरगाजन॰ ।। ।। व्यथ भूक्षवनकनः। शकः দীর্ঘণ চতুর্বিণ পঞ্চসূত্রণ ষড়ম-

ত। সপ্তরক্ত ত্রিগম্ভীর ত্রিবি-শাল প্রশাসতে।। বাহু নেত্ৰ-षय अकी रही जू नामा जरेंचर **छ। छनरमा त्रखंत्रदेश्य शक्ती**-ৰ্ষ• প্ৰশস্যতে॥ গ্ৰীৰাথ কণৌ পৃষ্ঠঞ্ছুম্মে জজ্মে সুপূজিতে ৷ চদারি যসা হুস্বানি পূজাণ প্রা-প্লোভি নিত্যশং।। সৃস্থাণ্যঙ্গুলি পৰ্বাণি দম্ভ কেশ নখ ছচঃ। পঞ্ সূত্রাণি ফেবা ছি তে নরা দীর্ঘ-कीविनः॥ नामा निवक म्खा-क ननारिक भित्र खर्था। ऋपय-रिक्षव विष्क्षव मूज्ञक वर्षे आन-मारा ॥ भागि भागवरनी तस्की নেত্রান্তর নথানি চ। তালুকো ২ধর জিহ্বা চ সপ্তরক্ত প্রশ भारत। यदता वृक्षिक माजिक ত্রিগম্ভীর মুদাহ্বত । উরঃ শিরো ननारेक जिविसीर्न अनगाल।। কটি বিশালা বহুপুত্রভাগী বি-**मान**श्रस्था नत्रभूक्वः मा। छे-রো বিশাল ধন ধান্যভাগী শি-রো বিশাল নরপূজিতঃ স্যাৎ।। ন শ্রী স্তাজতি রক্তাঙ্গণ নার্থঃ ক নকপিঙ্গল । দীর্ঘবাহু ন চৈশ্ব-ষ্যা॰ ন মা॰সোপচিতা॰সক॰।। ক-मािि फखरता मूर्थः कमािि बा-

यगः जूषी। कमाहिए जूनित्वी-मूःथी कमाहिश हक्ष्मा मञीता নেত্রক্ষেহেন সৌভাগ্যণ দম্ভন্নে-হেন ভোজন । হস্তলেহেন **अश्वर्याः** भाषत्त्रदश्न वाहनः ॥ **चक्यंकिं**दिनी श्रु भागावश्व-नि कामलो। यमा পानिजलो त्रक्ली जमा त्राजाः विनिर्फित्मः ॥ मीर्यनिष्टम मातिष्ठाः श्वनि-क्रिन निर्धनः। क्रमलिक्षन मो-ভাগ্য • হুস্বলিঙ্গেন ভূপতিঃ ৷৷ রে-থাভি ৰহুভি দুঃখ স্বন্ধাভি ধন-হীনতা। রক্তাভিঃ শ্রিষ মাপ্পো-তি কুঞ্চাভিঃ প্রেদ্যতা বজেৎ ।। অঙ্গুটোদরমধ্যে তু ষবে। यगा বিরাজিতঃ। উন্নত ভোজন ত্যা শত জীব্তি মানবং ৷৷ অ-কুশ স্বলিশ ছত্ৰ যস্য পাণি-**তলে ভবেৎ। ভ**দৈসাশ্বর্য্য বিনি-क्षिके अभीजायू र्ज्यकुव ॥ थन् र्यमा ভবেৎ পাণी शक्रक॰ বাথ তোরণ ৷ তদ্যৈশ্বর্যাঞ্জা काक जनीजाय र्जरवक्रुव ।। क-নিষ্ঠা ভৰ্জনী যাবদ্ৰেখা ভবতি বি॰শতাব্দাধিকশত॰ চাক্ষতা ! নরো জীবত্যনামযঃ।। কনিঠা মধ্যমা• যাবজেখা ভবতি চা-

কতা। শতাক বাধ বাশীভি नदता জीदवन म॰ **गयः ॥** कनि-ষ্ঠানামিকাষাঞ্চেৎ রেখা ভবতি চাক্ষতা। ষষ্টি॰ পঞ্চাশদক বা नता की रखामः भवः ॥ दत्रथया ভিদ্যতে রেখা স্বল্পাযুশ্চ ভবেন রঃ। কনিষ্ঠাধঃ স্থিতা রেখাঃ স॰-খ্যা যাবতিকাঃ স্মৃতাঃ ।। তাবজী পুরুষাণাম্ব নারী ভবতি নিশ্চি ত ৷ করমধ্যগতারেখাঞ্জবা উ र्कु उदार्वाक ।। नृरमा वा नृमजू-लाग वा हित्र॰ थाएका र्थवान् ভবে । म भा भूष्ठ अकी र्वन বিদ্যা বিত্ত সমন্বিতঃ ৷৷ পিতা ম-হস্য বা কিঞ্চিন্ধনঞ্চ লভতে দ্রুবণ । यथायायाः यति यदा नृगारख ২ত্যস্ত শোভনাঃ।। তদান্যস-ঞ্চিত বিত্ত প্রাপ্নোতাঙ্গুঠকে यत्। यगाथ ठक मञ्जूष्ठे यदः পূৰ্ণ দৃশ্যতে।। তদা পিতাম-श्नीना मर्डिंड धन माश्रुया । তৰ্জন্যা মথ চক্ৰঞ্চ মিত্ৰদারা ধ-নম্ভবেৎ ৷৷ তেনৈব বিপরীতম্ব ব্যয়ে ভবতি নিশ্চিত ৷ মধ্য-মাষা হিতে চক্তে দেবদারা ধন লভেৎ।। তেনৈব বিপরীতম্ব ব্য-ষো ভবতি নিশ্চিত ৷ অনামি

কাৰাণ ভবেচক্ৰণ সৰ্বৰায়া ভ বেদ্ধন ৷৷ ভেনৈব বিপরীতম্ব ব্যযো ভবঙি নিশ্চিত । কনি-ষ্ঠাৰাণ ভবেচ্চক্ৰণ বাণিজ্যেন ধনণ ভবেৎ।। তেনৈৰ বিপরীত্ত-ন্ত ব্যযো ভবভি নিশ্চিত। म-नाटि मृगाट यमा ठक्दत्रथा छ-তুঊষ ।। অশীত্যাষুঃ সমাপ্নোতি পঞ্জেখাঃ শত সমাঃ। যস্যো-মত ললাটঞ্ তামুবর্ঞ দৃশ্যতে ॥ द्रिथाशैन क ककक म का ग्राखा नशै जुरम । यग कि व्या ভবেদीर्घा नामाश्र लिहि সৰ্বদা।। যোগী ভবতি নিৰ্বাণঃ পृথी ভূমতি সর্বদা। দ্স্তাশ্চ বিরলা যস্য গণ্ডে কুপোপি জা-যভে।। পরস্ত্রীরমণো নিত্য প-রবিতেন বিত্রান্। কর্পেঃ किटेन निर्देश अभागित्रर्ग रेजः मना ।। तगटक ह मना मानी॰ निर्धता खविष्ठ क्षवः। क्रमनि ঙ্গেন সূত্মেণ মুক্তবর্ণেন ভূপতিঃ ।। वरुखीत्रमत्ना निष्ठाः नात्रीनाः বলভো ভবেৎ। ষস্য পাদতলে পদ্মণ চক্রণ বাপ্যথ তোরণ ৷৷ অঙ্গুণ সলিশ বাপি স রাজা ভবতি জবে: কুশাতিলোমশা

त्व मुरः त्ककत्राक्षाः अटिनकाः ॥
काजताः वामिक्साम्म त्ज मविज्ञा न मन्भवः । किमना मिननामाम्म वृवादेम्मव वृव्यक्षाः ॥
समाजिमीयां मन्द्रम त्ज मित्रजा
न मन्भवः । चितृत्क भामामृना
त्य निर्द्यां सम्याम्म त्य ॥ त्ज

। देनव जल्लकः जमूजवहन॰ वशा। मृतीम्था खन्नशृक्षाः क्रकः ष्र अटिनकाः ॥ वक्तनामा ৰজুনাসা ত্তে নরা দুষ্টমানসাঃ। **एयानवञ्च जांडा**द्वा **क**ंपवत्छा জিতেব্রিষাঃ।। পরোপকারিণ ৈচৰ তে ২পূৰা মানবাঃ স্মৃতাঃ। ইতি পুরুষলকণ ৷৷ 🐠 ৷৷ অথ স্ত্রী-मक्न । बम्राः भाष्ठत्व त्रथा সাভবেৎ কিতিপাসনা। ভবে-দশওভোগা চ বা মধ্যাঙ্গুলিসঙ্গ-**छा॥ উन्न**छा याः मत्ना २ न्युष्ठा বর্ত্তুলো ২তুলভোগদঃ। বক্রো হুষশ্চ চিবিটঃ সুথ সৌভাগ্যভ अकः ॥ मीर्चात्रुनीजिः अन्ति। ক্লশাভি রতিনির্ধনা। হুস্বাভিঃ স্যাক্ত ছুস্বাষুঃ ভগাভি ভূগবর্তি-नी।। চিবিটাভি ভবেদাসী বি-त्रलाভि पंत्रिफिनी। পরস্পর স भाका यमान्द्रला। ७वश्वि हि ॥

र्षा वर्निंग भठीन भन्नत्था তদা ভবেৎ। নিশ্বা সমূলতা স্তামুণ বৃদ্ধাঃ পাদনখাঃ শুভাঃ॥ রাজ্ঞীয় সূচক স্ত্রীণা পাদ পৃষ্ঠ ममूबङ। ममभाकी एका नाती भृथुभाकी मृष्डंगा ॥ जनहो मञ्जाकी माद मीर्घणाकी ह দুঃখভাক্। রোমহীনে সমে ন্নি-क्ष कर्ष्य ह क्य वर्क् ला। मा द्रा-জপত্নী ভবতি বিশিরে সুমনো-ছরে। বৃত্ত॰ পিশিত সংলগ্নি॰ জা-নুষুগা প্রশাতে।। নিশ্বা সং देखतातिका मित्रजायाक विक्ष-थ॰। विभिदेतः कत्रजाकादेत क-क्रिक मंत्रिक धरनः॥ त्रृतृरेखः রোমরহিতৈ ভবেষু ভূপবল্লভাঃ । চতুর্ভি রঙ্গুলেঃ শস্তা কটি বি॰-শতি সংযুতৈঃ।। সমুন্নত নিত-স্বাঢ্যা চতুরস্থা মৃগীদৃশাণ। নিতম বিষো নারীণাণ উষ্ণতো মাণসলঃ পৃথুঃ।। মহাভোগাষ সংপ্রোক্তঃ छम्ता श्रमर्भागाय ह। शसीङ्गः দক্ষিণাবর্ত্তা নাভিঃ স্যাৎ সুখদ-म्भारम ॥ वामावर्छ। ममूछाना ব্যক্তগ্রন্থী ন শোভনা। উদরেণা-ভিতুচ্ছেন বিশিরেণ মৃদৃত্বচা।। ষোষিৎ ভবতি ভোগাঢ্যা নিহ্য

विकामतगि। अञ्चाकातः मः तिखाया कठेत्रक मृमक्रवर ॥ कः মাজাভ ষবাভঞ্চ দুষ্পুর জাষ-তে खियाः। निर्त्वाभक्तं य-माः ममः निम्न विक्रं छ।। अस् ৰ্যাণ চাপাৰৈ ধবাণ প্ৰিযপ্ৰেমা চ मा ज्दर । घटनी वृद्छी मृट्छी भीत्मो मत्यो मत्छो भत्याधत्त्रो ॥ शृनात्थी विव्रत्नी मृत्यो वारमा-बागाः न नर्यामो। प्रकित्वाञ्चल-व-ক্ষোজা পুত্ৰিণীয়গ্ৰণী ৰ্মভা ।। বা-মোমতঙ্গচা সূতে কন্যাণ সৌভা-शामुमती । मृत्व कृत्वो जनकः भावटक जीटको भरगभरतो।। मूथ-**(म) वानाकात्न जू शन्हाम्**जाञ्च मृःथरमे । অভোজমুঙ্গলাকার यक्षे । इस्व ममू थः ॥ इस्वयः মৃগাক্ষীণাণ বহুভোগায জাযতে। মৃদু মধ্যোদ্ধত রক্তণ তল পাণ্যো-ররন্ধুক° ।। প্রশস্ত॰ শস্তরেখাঢ্য बन्नद्रवं मूज्यमः। विश्वा वरु ুরেখেণ বিরেখেণ দরিদ্রিণী।। ভি क्क्री मृश्विताराजन नाती कत्र নেন বৈ। মৎস্যেন সূভগা নারী স্বস্তি:কন চ সুপ্রজা।। পদ্মেন ভূপতেঃ পত্নী জনষেৎ ভূপতি मुछ । চক্রবর্ত্তি স্ত্রিয়াঃ পাণে ন

न्गावर्ख अवक्तिनः॥ नशाजनक क्यो ब्राष्ट्रयाञ्चमूहकाः। क्रमी-वनगु भन्नी गाष्ट्रकरहेन यूर्श-न वा ॥ हामताकुण कामटेखः রাজপত্নী ভবেদ্ধুবং। অঙ্গুষ্ঠমূ-লামিগত্য রেখা ষাতি কনিষ্ঠি-का॰।। यमि म्यादश्विश्वी मा मृ-রত স্তা• ত্যজেৎ সুধীঃ৷ ত্রিশূলা-मि गमा শক्তि मून्यूङ्याक्विटत्रथः ষা।। নিতম্বিনী কীর্ত্তিমতী করেণ পृथिवी उटन । भा हेटना वर्जुनः মিন্ধো রেখাভূষিত মধ্যভূ:।। সীমস্তিনীনা মধরো রাজ্ঞাণ চৈব **थि**रया जरवरा भागनः युरना २४-রোষ্ঠঃ স্যাৎ বৈধব্য কলছপ্রদঃ॥ মসূণো মক্তকাশিন্যা শ্চোত্তরো-क्रीः मूरजागमः। शीलाः नामानः मनाः यृना मीर्या विशक्ष्यः॥ छ· क्याकात्रों क वित्रवा मूश्थ मिर्छा-गाकात्रगः। व्यवज्ञानिधिक में देख ৰ্মাতর ভক্ষবেৎ স্ফুট ।। পতি-शैना ह विकटिः अन्हा विद्रतन र्ज्दर। ममवृखभू हो नामा नघू-চ্ছিদ্রা শুভাবহা।। স্থূলাগ্রা মধ্য-ন্মা চ ন প্রশস্তা সমুন্নতা ৷ ननना लोहरन भएख त्रकार्ख क्षकात्रक ॥ रशाकीत्रवर्गविण्टा

সুমিশ্বে ক্লফপন্ধিনী। উন্নতানী ক্লিন দীর্ঘাষ্ট্রং বৃত্তাক্ষী সলটা ভবেৎ।। মেষাক্ষী মাহ্যাক্ষী চ কেকরাক্ষীন শোভনা। কামগৃহীলা নিতরাণ গোপিঙ্গাক্ষী সুদুর্মাদা।। পারাবতাক্ষী দুংশীলা রক্তাক্ষী ভতৃ ঘাতিনী। কোটারান্যনা দুক্ষা গজনেক্সা ন শোভনা।। পুংশ্চলী বাসকাণাক্ষী বাস্বা

त्रमनी धन धाना ममृक्षिजाक्।। প্রলয় মলিক বস্যা দেবর হন্তি मा अवर। त्रायरगन नितारनन **था॰ छना রোগিণী মতা।। ऋ**न-बृक्षा ह विथवा नीर्यनीर्या ह वेश्व-की। विभारलबाशि भित्रमा छ বেদ্দৌর্ভাগ্যভাজন ।। কেন্দ্ৰা অলিসলজ্যযাঃ সিঞ্চাঃ সৃন্ধাঃ সু কোমলাঃ। কিঞ্চিদাঙ্গঞ্জিতাগ্রা-শ্চ স্টিলা শ্চাতিশোভনাঃ॥ জ্র-বো রস্তে ললাটে ৰা মশকো রা-জाসূচकः। वात्य कत्भात्न य-শकः (भारता निकोन्नमः खङः ॥ তিলক লাঞ্ছন বাপি ছদি সৌ-ভাগ্যকারণণ যস্যা দক্ষিণ ব-ক্ষোজে ভবেৎ তিলকলাঞ্ছন।।। কন্যাচতুষ্ট্ৰণ সূতে সূতে সা চ

সুতদ্ব। তিলক লাঞ্ছন শো-ণ ষদ্যা বামঙ্গচে ভবেৎ ॥ এক॰ পুত্ৰ- প্ৰসূষাদৌ অন্তে চ বিধবা ভবেৎ। গুছ্স্য দক্ষিণে ভাগে তিলক যদি যোষিতঃ।। তদা কি-তিপতেঃ পত্নী সূতে চ ক্ষিতিপণ সুত । নাসাত্রে মশকঃ শোণো মহিষ্যা এব জাযতে॥ রুক্ষঃ সএব ভত্ দ্ল্যাঃ পুংশ্চল্যা বা প্রকীর্ত্তি-তঃ। নাভে রধস্তাৎ তিলক ম-শকো লাঞ্চনং শুভং ৷৷ নশফ खिनक॰ विङ्गः खन्नः नति-फक्र । मूलकशि मूं भीना अ-नकनिरद्रायनिः॥ जनकनानि या गाधी गर्वनक्षणज् स गा। क्रका কপিলকেশী চ মিলিতজ্ঞপটি স্ত-থা।। গমন সম্বরক্ষৈব ত্যক্তব্যা मा प्राप्त मना वृदेधः। यमा गमन মাত্রেণ ভূমৌ কম্পঃ প্রজাযতে ॥ বহ্বাশিনী প্রলোভাঞ্চ তা না-ती॰ পরিবর্জযে । বিরলা দ-শনা यमाः क्राकाष्ठी क्रक्जि: ব্দিকা॥ ভর্তার প্রথম হস্তি দিতীয়ঞৈব বিন্দতি। অঙ্গুলী বিরলা যস্যাঃ সলোমা গাত্রক-কশা।। ভেকা ভেকস্তনী কৃদ্রা দুরতঃ পরিবর্জযেৎ। ত্রীণি যস্যাঃ

थलशानि ननारे छनतः खगः 11 (मवत्रः शिष्टः। मनारि अध्यतः रनग कंठरत (क्वतः ७ थ। ।। छगक हना। छर्जा तः महारमाया क्षयः स्र्वाः। यमा अब्रादक्रे॰ नार्यम वक्षण विख्व ७ ७ ८४९ য় উত্তরোষ্ঠে চ লোমানি শী**যু**ণ সা ভক্ষযেৎ পতি । চরণানা-যিকা যস্যাঃ ক্ষিতি ৰ স্পৃশতে यि ।। विञीया वा ज्ञीया वा সা কন্যা সুখবৰ্জ্জিতা। নানা-গ্ৰে দৃশ্যতে ষস্যাঃ তিলক স শকোপি ह।। क्ष्मस्य क्रयः-জিহ্বা দশাহেন পতি॰ হরেৎ। সৃন্ধকেশা তু যা কন্যা গৌর বৰ্ণাচ ষা ভবেৎ।। অক্টো জন-যতে পুত্রান্ প্রাপ্নোভি বিপুল সুখ । ইতি সামুজকে স্ত্রীল-कनः मयाञ्चः ॥

সামুজিকঃ ত্রি স্ত্রীপু•সচিত্রবে-ত্তা। ইতি হারাবলীয়া সমুজ-সমনী চায়

সান্নী স্ত্ৰী বৈদিকছন্দোৰিশেষঃ
। ইতি কেচিৎ।।

সাম্পরাযিক॰ ক্লী যুদ্ধ•। ইত্য-মরঃ।। পারলৌকিকে ত্রি। যথা । প্রভৃং প্রথমকল্পস্য হো ২নুক। লেন বর্ত্ততে। ন সাম্পরাধিক। তস্য দুর্মতে বিদ্যতে কল। ॥ ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব।। সাম্পুত। ব্য যুক্ত।। ইদানী।। ইত্যমর:।।

माय क मयत्त्व। ইতি কবিকন্ধ। क्रमः ॥ अर्थवर्गत्मत्वाभदः ॥ विजीयस्त्री। क माययिव धनः त्वाकः मःवद्गाि ইত্যर्थः। ই. छ पूर्गामामः॥

मायतः की गडनवनः। यथा।
गडामिनवनः छङ् शृथीकः गः
डिम्मकः। गडायकः महात्रसः
मायतः मयद्राह्यः। ইতি
ताक्रिनिर्वन्धः॥

मायती जी गाया। यथा। मायती नायती गाया गायाक छिक्रक नटि। इंडि म्यन त्रावनी ॥
मायामिकः प्रः टेन याचिकः ।
यथा। टेन याचिकः नाक्यामः
मायामिक व्याहिङः। इंडि
किंदाः।

সাম্বী স্ত্রী রক্তলোধুঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

সাম্য ক্লী সমতা। তুল্যম্ব । ম্থা। চাণালান্তান্ত্ৰিমাে প্ৰ ভূকা চ প্রতিগৃহ চ। পততা-জ্ঞানতো বিপ্রো জ্ঞানাৎ সা-মান্ত গচ্ছতি।। ইতি প্রারশ্চি-ভূতত্ত্বং।। সাম্যভ্যেকস্থানত্বং।। ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণং।।

সামাজ্য ক্লী সমস্তরাজ্য । স-মাজো ভাব ইত্যর্থে ফ্য প্রত্য-যেন নিষ্পারণ । দশলকাধিপ-তাণ যথা। লকাধিপত্য রা-জ্য স্যাৎ সামাজ্য দশলক-কে। শতলক্ষে মহেশানি মহা-সামাজ্য মুচাতে ।। ইতি বরদা-ভজ্ঞে ২ পটলঃ ।।

সামাণিকর্দম॰ ক্লী জবাদিনা-মকগন্ধত্তব্য । ইভি রাজনি-র্যকঃ॥

সামাণিজ ক্লী মহাপারেবত । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

नाय॰ वा नायाद्भः। ইতামরঃ॥
नक्षा। ইতি রাজনির্ঘন্তঃ॥
দিনাস্তে পু॰দি সাযঃ স্যাৎ সাयाद्भ সায মরায॰। ইতি শকার্বঃ॥

সাধঃ পুণ দিনান্তঃ। ইত্যমরঃ।। বাণঃ। ইতি মেদিনী।। সাবোৎ-সবৌ বিকালকে। ইতি ত্রিকা-গুশেষঃ।। সাবকঃ পু॰ বাবং । ধ্যাং। ইত্য-মরঃ ।। সাবকপুথা স্ত্রী শরপুথা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।।

সামংকালঃ পুণ সামাত্রঃ। সামণসন্ধ্যাসমযঃ। মথা। স্মৃতিসাগরধৃতমৎস্যসূক্তণ। জ্যেপ্তা
বাপ্যথ বা ষ্ঠী সামংকালে ন
চেন্ডবেৎ। সাম মেব তথাপি
স্যাদিস্থাশাখাভিমন্ত্রণণ। ইতি
তিথ্যাদিতত্ত্বণ।

माय॰मञ्जा खी माय॰कारनाभा-मारावण।। मायःकानकर्जः **त्याभामना ॥ माय॰मट्याभा-**मनाकानका। ७९ अमीन म-श्वामत्क प्रकेवाः॥ शम्हिमानः স্বা। তসা উৎপত্তি র্যথা। মার্কণ্ডেষ উবাচ। নারাষণঃ স্ব-य म्मा १ भन्म नाथा अभाविना । ততঃ পুরোডাশময়ণ তচ্ছরীর यजृ कना ।। यहा यूटन र्याहा-যজ্ঞে তিমান্ বিশ্বোপকারিণি। নাগিঃ ক্রব্যাদতা যাতীত্যেত-पर्थं **७**था क्रुन्।। এवः क्रुषा জगनाथ खटेववाखत्रशीय । সন্ধ্যাপ্যগচ্ছৰত্তেজে ভত্ত মে-ধাতিথি শ্বুনিঃ।। অথ বিকোঃ

প্রদাদেন কেনাপান্পলক্ষিতা॥ । প্রবিবেশ তদা ৰজ্ঞ সন্ধ্যা त्यथा जित्थ मू तनः ॥ विभक्तिन পুরা ষা তু বণী ভূতা তু সা সূতা । উপদিষ্টা ভপ नेहर्जू बहनाद পরমেষ্টিনঃ।। ত মেৰ ক্রত্বা মন-मि जनकर्याभएमनकः। शः ভিত্বেন তদা সন্ধ্যা বান্ধণ ব-काठातिन ।। निम्ह रक्षी म-হাষজ্ঞে মুনিভি নোপলকিতা। **छमा विरक्षाः श्रमारम् न मा** वि-বেশ বিধেঃ সূতা।। তস্যাঃ পু-রোডাশনয় শরীর তৎক্ষণা-ততঃ। দগ্ধ পুরোডাশগন্ধ। वाखात्रयमनिक्ठः ॥ वङ्कि छ-नाः भद्रीतः छक्तका मृर्यामा মণ্ডলে। শুদ্ধণ প্রবেশবামাস वित्रका द्ववाख्वमा शूनः॥ भू-ৰ্য্যো ছিধা বিভজ্যাথ তৎ শ-त्रीत छन। तर्थ। चरक मःचा-পষামাস প্রীত্তে পিতৃদেব-. स्याः ॥ यमृक्चांभः उमाञ्ज শরীরস্য দিজোত্তমাঃ। প্রাতঃ-সন্ধ্যাভ্যৎ সা তু অহোরাত্রা-मि, मधागा ।। यटक्ष्य जाग छ-স্যা স্ত অহোরাত্রান্ত মধ্যগা। সা সায় মত্তবৎ সন্ধ্যা পিতৃপ্রী-

िथना मना ॥ मृत्रानियाक व्यथमः यहा मामक्रामसः । প্রাতঃস্ক্র্যা তদোদেতি দেবা-नाः श्रीजिकातिनी।। असः गः তে ভতঃ সূর্য্যে শোণপদ্মনিভা मना। छेत्रिक माय मन्ना मा পিতৃণা भाषकाति ।। ইতি শ্রীকালিকাপুরাণে অরুশ্বতীজ-मक्थान २२ ज्यामिः॥ माय मन्त्रातिका जी मत्रकी। ইতি কবিকরলতা।। मायखनः बि माय-कालमयसी। यथा। नक्षां नायखनी नर्या ६ कामगामिश्वि थिए। अनर्ब-মির্য° যাতি যতো নিত্যাগম-किया।। देखि वृश्बील उट्ड अ-थ्यभिवन ॥

मादवा मिनाञ्चः नावादङ्गा वि-कालः गाव त्वव ह। देखि भक्त त्रक्षावनी ॥

সাধিক। ত্রী ক্রমন্থিতিঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

সাধী পু॰ অশারোহঃ। ইতি কেচিৎ।।

नायुका॰ की महरमागः। এक মণ। তকুপঞ্ধা মুক্তান্তগতম্-क्रिवित्मयः। यथा। जात्नाका मार्थि मात्रीण मान्द्रेणकष् म्पाउ। मीयमान न गृङ्कास्त्र विना बद्दारावन जनाः॥ देखि শ্রীভাগবছে ৩ স্কন্ধে ২৯ অধ্যা-यः।। ভক্তানা । নিষ্ঠামতা । কৈ-यूष्टिकनगारयनार्। मारलाका॰ ময়া সহ একস্মিন লোকে বাসং ा मार्किं ममाटेनश्रवाः। माभी-প্যা॰ নিকটবর্ত্তিত্ব•। সাৰূপ্য• সনানৰপতা । একত্ব সাযুজ্য । উত অপি দীয়মান মপি ন গৃহস্তি সত স্তৎ কামনা ইত্য-र्थः। ইতি श्रीभत्रश्वाभी ॥ এক-ত্ব॰ ভগবৎসাযুজ্য॰ ব্ৰহ্মসাযু-वनरमा उल्लीकाञ्चक काक। ভৎদেবনাৰ্থত্বাভাবাৎ গ্ৰহণাৰশ্যকত্ব ষেবেতি ভাবঃ।

ইতি ক্রমসন্দর্ভঃ ৷৷ मार्य वा मिनारख। मायकारम। ইভি কেচিৎ।। विकन्न क्रमः॥ द्वरका भिष्रः। च-मनात्र । ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ मातः क्ली कलः॥ धनः॥ नागाः । इंडि स्विती।। नवंनी ७ । ইঙি রাজনির্ঘন্টঃ।। লোহে । ইতিভাবপ্রকাশঃ।। বিপিন । ইতি শব্দরত্নাবলী।। 🟶 ॥ সার-বস্তৃনি যথা। সার রসানাম্ভ ঘৃ-ত ঘৃতসার হতক বে। হতস্য সার স্বর্গঞ্ স্বর্গাৎ সারম্ভ যো-ষিতঃ।। অতো রাজন্ প্রদেষাঃ স্যুঃ স্থিষঃ স্বৰ্গ মভীপাতঃ। ভবৈবেহ সুখ তাজিঃ সহ রা-জ্যে নৃপোত্তম।। ইতি বহ্লি-পুরাণে দাসীদানাধ্যাষঃ॥ অ-. शि ह। जारात थन् मःभारत সার মেতজতুউয় । কাশ্যা বাসঃ সভা॰ সঙ্গে গঙ্গান্তঃ শ অুসেবন ।। ইতি কবিভারত্না-করধৃতপুরাণবচন ।।

সারঃ পু॰ বলঃ।। দ্বিরাণ্শঃ।। মজ্জা। ইত্যমরঃ।। বজুকারণ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। বাযুঃ। , ইতি জটাধরঃ।। রোগঃ। ইতি ধরণী।। পাশকঃ।। অতিদৃঢ়ঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।। দধ্যত্তরং। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

সারং ত্রি বরং। শ্রেষ্ঠং। ইত্য-यत त्यिनिकेदत्री। यथा। नर्ब-সারো যথা ক্লে বতানা পু-गाकः ख्या। देवि बक्तरेवदर्ख গণপতিখণ্ডে ৩ অধ্যাষঃ ॥ 🐗 ॥ जिशि है। श्रीमार्क्ट ७ उना है। জগৎ সর্বয় নিঃসার মনিত্যুণ দুঃখভাজন । উৎপদ্যতে ক-ণাদেতৎ ক্ষণাদেতৎ বিপদ্যতে ॥ यरेषद्वाष्ट्रभग्रत्छ मात्राभिः-मात्र जगमञ्जमा। भून खिमा बिनीयरख महाश्रनय मन्द्रम् ॥ উৎপত্তি প্ৰলযাভ্যাম্ব জগমিঃ-সারতা॰ হরিঃ। শস্তরে দর্শবা-মাদ ভাবেন জগতা॰ পতিঃ।। এক শিব শাস্ত মনস্ত মচ্যত পরাৎপর জ্ঞানময় বিশেষ। ় অন্তৈত মব্যগ্ৰ মচিস্ত্যৰূপণ সা-রস্তেক নান্তি সার স্থদন্য ।। यन्यात्मछङ्कायरछ विश्व मधाः যশ্মাল্পীন স্যাৎ তৎ পদ্চাৎ স্থিতঞ্চ। আকাশবম্মেঘজালস্য ধৃত্যা ৰদ্বিশ্ব বৈ ধ্ৰিষতে তক্ত

मात्रा व्यक्तीन स्वादेश र्यम्बा-প্ৰু মিচ্ছন্ ৰোগী বুনক্তাত্মৰ-भः मरेमव । निवर्षेट्ड क्षाभा यस्त्र लात्क छरेब मात्र मात्रः यनाम ठाखि॥ नादा वि-তীয়ে ধর্মস্ত যো নিত্যপ্রাপ্ত-रि जटवः। रि देव निवर्त्वरका নাৰ তত্ৰাসারঃ প্রবর্ত্তকঃ।। সর্ব॰ क्तर्राठ लाकित्रान् शर्मा देनव চ্যুতো ভবেৎ। স্বধর্মাদেবা ন চলতি স এবাক্ষর উচ্যতে॥ এ-তদ্বঃ কথিত সার নিঃসারঞ্ यथा जगद। यथा यस जनना-শু শন্তু জ্ঞানেন স্বে ংস্তরে ।। এতবৈ দর্শযামাস স বিষ্ জ-গতা॰ পতিঃ। স্বয়ণ জগ্ৰাহ্ य-नमा शारननाश्चिन नहाः ॥ সার তত্ত্ব পর্ম নিছল যয়-र्जा हीन पृर्खियान् धर्म अवः । সারো হন্যো হসে সারহীন छमना ९ छा दि विश्व गाछि नि-छाः यश्यीः ॥ देखि **बीकानि**-काभूतात्व २१ अधाराः ॥

मात्रकः पु॰ जयभावः। ইতি दाजनिर्घन्छः॥ विद्युष्ठक्कि । ইতি বৈদ্যক॰॥

मात्रथितः श्रू मूःथितः। देखि

त्राक्रिनिर्शकः ॥ मात्रगन्नः भू इलम् ३ हेि नक्तिका ॥ मात्रधारी वि नात्रधर्गकर्छ। वथा। नानूषि किल नम्हे मात्रक हैव मात्रजूक्। अभवा-ন্যাশু সিধান্তি নেতরাণি রুতা-' নি ষৎ।। ইতি শ্ৰীভাগৰতে ১ करक ३४ व्यशायः॥ नन् व्यश्य হেতু কলি সৰ্বথা কি ন হতবা-ন্ তত্তাহ নানুষেঠীতি সারকে। खुयत हैव नात्रशाही। नात्रगाह य रिश्वन् अभवानि भूगानि আশু সংকল্পমাত্রেণ ফলস্তি ই-তরাণি পাশানি আশুন সিধ্য-, ব্রি ষত স্তানি ক্লতান্যেব সিধ্য-ি স্তি ন তু সংকলিত মাত্রাণীতি। रेि औरत्रवाभी ॥ मात्रयः क्री यथु। देखि क्रिवेशः॥

मात्रषः क्री यथा देखिकि विश्वतः॥
मात्रमः पू॰ ठाळकभक्ती। देखा
यतः॥ द्रिनः॥ यळक्कः।
देखि सिनी॥ ज्रमः॥ भकिएजाः। देखि विश्वः॥ इकः॥
ताक्रदःमः॥ ठिळ्युगः॥ वामाएजाः॥ व्यःश्वरः। देखि भूकः
त्रञ्ञावली॥ नानावर्गः॥ ययुतः
॥ कामस्वदः॥ धनुः॥ दक्याः॥

यर्गः ।। ज्याख्यं ।। भूषाः ।।
भूषाः ।। जन्मनः ।। कभू तः ।।
भूषाः ।। काकिनः ।। कभू तः ।।
भृषाः ।। काकिनः ।। किश्वः ।।
निः नः ।। केशाः काकिनः ।।
नात्रमः जामनः विताकिनिर्मः ।।
भात्रमः जि भवनः । केशाः भवनः ।
कात्रमः । ज्याः । केशिः जानवाः ।।
वक्षः । ज्याः । केशिः जानवाः ।
कार्यः । ज्याः वि जानवाः । केशिः ।
कार्यः । ज्याः । केशिः जानवाः ।
कार्यः । ज्याः । किश्वः । केशिः ।
कार्यः । कार्यः । किश्वः । केशिः ।
कार्यः । कार्यः । किश्वः ।
कार्यः । कार्यः । किश्वः ।

সারঙ্গিকঃ পু॰ ব্যাধঃ। সারঙ্গ হস্তীত্যর্থে সারঙ্গশকাৎ ঠক্ প্রত্যধেন নিষ্পন্ধঃ। ইতি সি-দ্বাস্তকৌমুদী॥

সারঙ্গী ত্রী বাদ্যবিশেষঃ। ইতি কেচিৎ।।

সারজ॰ ক্লী নৰনীত•। ইভি শ-ব্দচম্রিকা।।

मात्रन॰ क्री भक्षत्छमः। ইতি ধরণী।।

সারণঃ পু॰ অতীসাররোগঃ।। রাবণমন্ত্রী। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। ভদ্রবলা। ইতি ধরণী।। আগু।-

<u> সারমি</u>

তকং। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।
সারণিং স্ত্রী ক্ষুদ্রনদী।। প্রসারণী
। ইত্যুণাদিকোষং।।
সারণিকঃ ত্রি পথিকং। সরণিশব্দাৎফিকপ্রত্যকেন নিম্পন্নং।।
সারণিক সং পুণ দস্যুং। ইতি
কেচিৎ।।
সারণী স্ত্রী প্রসারণী।। স্বন্ধনদী
। ইতি মেদিনী।।
সারগুঃ পুণ সর্পাণ্ডঃ। ইতি জন্টাধরং।।
সারতরুঃ পুণ কদলীকৃক্ষঃ। ইতি
ধনঞ্জয়ং।।

সারথিঃ পু॰ রখাদিঘোটকনিষোগকর্তা। তৎপর্য্যায়ঃ। নিষম্ভা
২ প্রাজিতা ৩ যন্তা ৪ সূতঃ ৫
কত্তা ৬ সব্যেষ্ঠা ৭ দক্ষিণয়ঃ ৮
রথকটুষী ৯। ইত্যমরঃ॥ সাদী
১০ সব্যেষ্ঠঃ ১১ নিষামকঃ ১২
চাতুরিকঃ ১৩। ইতি জটাধরঃ
॥ প্রবেতা ১৪ রথনাগরঃ ১৫।
ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ সর্থস্যাপত্যুণ সার্থিঃ বাহ্বাদ্যত ইতি
ফিঃ। সহর্থেন বর্ত্তে যো
২সৌ সর্থা হম্মঃ ত॰ প্রেরযতি ঢ ঘেকাদিতি ফির্রা। সারয়তি অশ্বান ইতি এ্যস্তাৎ

সৃগতাবিত্যন্থাৎ নায়ীতি অপ্রত্যকো বা। ইত্যমরটীকাষাণ
ভরতঃ ।। তল্লকণ ষঞ্চা। নিমিত্ত শঙ্গমজ্ঞানো হম্ব শিক্ষাবিশারদঃ। হ্যামুর্বেদতম্বজ্ঞো
ভূরিভাগ বিশেষবিৎ ।। স্বামিভক্তো মহোৎসাহঃ সর্বেষাঞ্চ
প্রিষয়দঃ। শূরশ্চ ক্রতবিদ্যশ্চ
সারথিঃ পরিকীর্ত্তিঃ।। ইতি
মাৎস্যে ১৮৯ অধ্যায়ঃ ।। সমুদ্রঃ। ইতি সংক্ষিপ্রসারোণাদিবৃত্তিঃ ।।

मात्रमा खी मत्रची। इंडि मकत्रज्ञावनी।। मूर्गा। यथा। मत्रकानत्वाधनीय द्वन मात्रमानमवृष्ट्रनेट खट्टनम् ठांनगामि
मात्रः ममाठीडि वृष्ट्रनेडि ख
कान्निकी। इंडि डिक्शामिड्यः
।। मात्रमाठिति खि।।
मात्रक्रमः प्रं थिनतः। इंडि
ताक्रनिर्वेडः।।
मात्रनामनः प्रं थिनतः। इंडि
ताक्रनिर्वेडः।।
मात्रनामनः प्रं थिनतः।
इंडि तज्ञमाना।।
मात्रज्ञाखः की खक्रिक्मिनादः।
इंडि तज्ञमाना।।
मात्रज्ञाखः की खक्रिक्मिनादः।
इंडि तज्ञमाना।।
मात्रज्ञाखः प्रं त्वमः। इंडि द्यहक्षः।। मात्रः यथार्थः भीष्ट

क्कांचरक जरनन मात्रविकिः। मारताश्रमा याद्यारकाः नी-শ্বীতি তিঃ।। मात्रम्थिका जी प्रतमानी। ইতি त्राकनिर्घण्डः।। সারমেযঃ भू॰ असूद्रः। देखाः यदः भ मात्रविश खी कक्रुती। इंडि न्यकत्र ज्ञाननी ॥ मात्रलाङ् क्वी लोशमातः। हे-স্পাত ইতি ভাষা। ইতি ভূরি-श्राभाशः ॥ সারবঃ ত্রি সরযুনদীভবকস্ত । ইত্যমরঃ ৸

নিশ্বয়ঃ ।।

সারসং ক্লী পদা। ইত্যমরঃ ।।
স্ত্রীকট্যাভরণ । ইতি কেচিৎ ॥
সারসঃ পুণ চন্দ্রঃ। ইতি মেদিনী
সারসঃ পুণস্ত্রী স্বনামখ্যাতপক্ষী
। তৎপর্যায়ঃ । পুদ্ধরাহ্মঃ ২ ।
ইত্যমরঃ ৷৷ গোনর্দ্দঃ ৩ নাক্বরঃ
৪ লক্ষণঃ ৫ লক্ষণঃ ৬ সরস
৭ সরোৎসবঃ ৮ । ইতি
রত্বাবলী ৷৷ রসিকঃ ৯ কামী ১০

সারবজ্জিতঃ ত্রি স্থিরাণশরহিতঃ

। অসারবস্তা সারেণ বজ্জিত

ইতি তৃতীয়া তৎপুরুষ সমাস-

। जगारम खनाः। मध्तपा अ-अदः। क्यायदः। यहाजिनात পिত গ্রহিণ্যশো নাশিষ্ক । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। 🗱।। তস্য भन्नन· यथा। इस्मेर्थिनिक्तिः न-कलामू मिक् मां मात्रम हन्पु-বিলোকনেন। শ্রুত্বাস্য পৃষ্ঠে निममः न भएक्य मिष्ठाजी-र्छे॰ गृष्ट् এव यन्त्राष्ट्र ॥ वाटमन रंगाविৎ जनना छका दी भक् छ-शार्व नृপতा २र्थ नरेका । ষঃ সারসাভ্যা॰ যুগপদ্বিরাবঃ ক্তো ২চিরেণ ক্রমতোপি বামঃ ॥ স বেদিতব্যঃ কথিতীর্থকারী क्लिक्षवगाणाय त्यव वर्गः। ইভি বদন্তরাজশাসনে সার্য-বৰ্গঃ গ

नात्रमः जि मदावदताख्वजनात्रमः जि मदावदताख्वजनामिः। जञ्जनखनाः। नम्गः
रेणनवताकार्या यज मः मुजजिन्ने जि। ज्य मदाज्ञज्ञनः इत्रः
जन्यः मात्रमः ग्र्जः।। मात्रमः ।
मनिनः वनाः ज्यात्रः सङ्गः वस्रः। द्वाहनः ज्वतः सङ्गः वस्रः।
मृज यनः मिठः।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥

मात्रमन की काशी। खीकछा।

ভরণ । অস্যপর্যাবাঃ কাঞ্চী- ॥
শব্দে এইবাাঃ।। কঞ্চদার্ত্যার্থণ মধ্যকায় নিবন্ধ পটিকাদি।
তৎপর্যাবঃ। অধিকাঙ্গণ ২ ।
ইত্যমরঃ।। দে কঞ্চদার্ত্যার্থণ
মধ্যকায়ে নিবন্ধে পটিকাদে।।
সকঞ্কাঃ সমন্ধাহাঃ মধ্যে দার্ট্যার্থণ যন্ধপ্তি তৎসারসমণ অধিকাঙ্গঞ্চোতে। ইতিভরতঃ।।
সারসী স্ত্রী সারসপত্নী। ইতি
হেমচক্রঃ ।।

সারস্বতঃ পুণ বিল্বদণ্ডঃ ৷৷ দেশ বিশেষঃ। স তু হস্তিনাপুরদ্য উত্তরপশ্চিমভাগে প্রসিদ্ধঃ इंडि द्यहक्तः॥ यथा। कृर्याः अञ्दलभानार । यदश मात्रव তা মৎস্যাঃ শুরুসেনাঃ সমাপু রাঃ। পাঞ্চাল শাল মাওব্য সরুক্ষেত্র গজাহ্বযাঃ।। ইভি জ্যোতিস্তত্ত্ব ৷৷ সরস্বতীনদী পুত্রসুনিবিশেষঃ।। সারস্বতদে-॥ लाख्यबाद्यशः। यथा। मा-রম্বতাঃ কান্যস্কা গৌড মৈ थिलका ८क लाः। १४४ (गोषा ইতি খ্যাতা বিন্ধস্যোত্তরবাসি नः।। ইতি পুরাণ^{।।} কল্পবিশে ষঃ। যথা। সার্যত্স্য কল্পস্য মধ্যে যে সূয় র্মরামরাঃ। তদুভাভোড্রণ লোকে ভভাগরভ
মূচ্যতে।। ইতি নাৎস্যে ৫০
অধ্যায়ঃ।। ব্যাকরণবিশেষঃ।।
সরস্বতীসম্বন্ধিনি সারস্বভদেশসম্বন্ধিনি চ ত্রি।।

সারস্বতকরঃ পু॰ সরস্বত্যুপাস-नाथकत्र १ । यथा। बत्कावाह। শৃণু বন্ধন পর গুছ কল সা-রস্বত মন। বস্য বিজ্ঞানমাত্ত্বে-ণ জাড্যাপহরণ ভবেৎ ৷৷ সর্ব-শাস্ত্ৰ প্ৰকাশন্ত সৰ্বজ্ঞো জাষ-তে ংচিরাৎ। অভ্যাসাচ্চ ভবে-দ্মস্য বাচশ্চিত্রা ভবস্তি হি ॥ **जवा** श्री जिल्ला वा खि॰ वा शील-ত্ব॰ বৃহস্পতিঃ। দ্বৈপায়নোপি-ষাণ জ্ঞাত্বা বেদব্যাসো ২ ভবমু-निः॥ बस्धाकातः श्रवकावि मान्नावत्रग शृक्षतेनः। ज्यनस्र॰ বিন্দুনা বুক্তণ বামগণ্ডান্ত ভূষি-७ ।। জপে बामन लक्ष मु-কোপি বাক্পতি ভবেৎ। না-**ভৌ শুভারবিন্দ॰ ধ্যাযেদ্দশদ**-লং সুধীঃ ৷৷ তন্মধ্যে ভাবষেম্ব-জী মণ্ডলানা ত্রয চিরণ। রত্ন-শিণ্ছাসন ভত্ত বৰ্ণ জ্যোৎস্না-यर भूगः। তम्याशित भूगर्भाः

বাগীশ্বরী ততঃ৷ মু ক্তাকাম্ভিনিভাণ দেবীণ জ্যোৎ-वाजान विकामिनी ।। मूका হারষুতা শুভা শশিখণ্ড বিম প্রিতা। বিভূতী দক্ষহস্তাভাা वााशा॰ वर्नमा मानिका॰।। जमृ তেন তথা পূর্ণ ঘট দিবাঞ্চ পু-দধতী॰ বামহস্তাভ্যা• खकः। পীনস্তনভরান্বিতা ।। মধ্যে কী-**णः ७४। अफ्राः नानातन्न**विजृ বিতা । আত্মাভেদেন ধ্যাত্ত্ব- व॰ छङः म॰शृक्तरब क्रमार ॥ शालान मीर्ययुक्तन मर्यामम। नि इस्टराः। इनगामि ज्था अर्याषीष्मनात्रकिया भूनः ॥ জ্ববো ৰ্মধ্যে তথা নাভৌ গুহে চ **प्रिनिक छथा।** नारमहीक भू-ন বস্তো ব্যাপক বিন্যদেত্তঃ।। भीठनामः छत्ने क्यां एत्र ভাভাবশুদ্ধবে। মাতৃকাযান্ত ষৎ প্রোক্ত পীঠ মভার্চ্চা ষত্নতঃ ।। वर्गात्कनामनः ममा मूर्जिः মুলেন কর্মেৎ! আবাহ্য পূজ-ষেক্তস্যাণ দেবীণ বাগীশ্বরীণ ততঃ ॥ व्यक्तः अथगावृद्धिः मा। ६ वि-ভীষা শক্তিভি স্ততঃ। দলাগ্রে-**यू मम**ञाकी बन्नागामा यथावि

ষি।। লোকপালা বহিঃ পূজ্যা ন্তেষা মন্ত্ৰাণি ভদ্বহিঃ। সম্ভূজবেমন্ত্রী জপ ছোমরত স্তু-मा ।। कविषः वाज्यक बाग्री न-रैक बामगाञ् अव १। आज्जेश्वा गरुमु उ शिरवृष्त्री॰ वठाविञा॰ ।। ন বিশারতি মেধাবী শ্রুতান্ दिकाशमानि । क्छेमार्खाम-কে श्रिषा धारियार्जि धम धला ॥ জ্যোতিঃপুঞ্জনিভাণ দেবীণ প-রিবারসমন্বিতা । বরাভযযুতা হত্তে মুজা পুস্তকধারিণী গ জ পন্ সহসুমাণেন ষণাাস বিজি-তেব্ৰিষঃ। ভীমা সম্পাপ্য বাক্ मिक्षि॰ करीना मधनी डंदर । ॥ অথ যোগ॰ প্রবক্ষ্যামি জা॰ ডানাশকর পর । রাত্রিশেষে ममूर्थाय छि छ जा ममाहिकः।। শুদ্ধভাবেন চান্থান গুরুঞ্চ প-রিকন্মষেৎ। তৎপ্রভাপটলব্যা-श्व॰ জগৎসর্ব॰ বিচিন্তবেৎ॥ यू-नाधारत श्रिका॰ प्राची॰ अखनी॰ পরদেবতা । সূপ্তা প্রোখাপ্য-তা॰ শক্তা ক্রমাচ্চক্রাণি ভেদ-ষেৎ।। ততঃ পরশিবে নীত্ব। সৌ-ধীক্ষ প্রাপষেত্ততঃ। উদ্ধৃত্রন্থি• বিনিভিদ্য জিহ্বাণ দীপস্বৰূপিণীণ

। ৰীজৰপ স্বশক্তা। তু প্ৰোল্লস-ন্তী পরাত্মিকা ।। শব্দত্রশ্বর शाक निक्तनाः ठिख्रस्य भूनः। তৎ প্রভাগটলব্যাপ্ত শরীর চি-खरबङ्धा निजाः महमुयात्नन জপেৎ সংবৎসর যদি। ততঃ সংজাৰতে মন্ত্ৰী বাচম্পতি রিবা-পরঃ ৷৷ ছন্দো খলস্কার ভর্কাদি नानाखार्थविद्धत्यः। कविष् জ্ঞানশক্ত্যা তু পাণ্ডিত্য মধিকণ ভবেৎ।। 🟶।। অথাপর প্রব-कगामि यागः जूवि मूमूर्झं छ। নাভিচক্রস্থিতা সৌম্যাণ রক্তা-काता विविख्य द्या क्षिमावष নিতয়াঞ্চ রক্তাভরণভূষিতাণ পা-শাঙ্কুশধরাণ দিব্যাণ বরাভষযুতাণ भूनः॥ मृष्णा ठाम्छवर्षिना भू-त्रवञ्ची॰ मत्नात्रवान्। এव॰ धात्रा জপেলক মনুজো বিহিত ততঃ ॥ रहाय॰ अर्यगाथ बियक्षक॰ त्र-क्लां ९ भन यूरेज विकः। जजः সম্ভৰ্গবেদ্দেবীণ দুগ্ধযুক্তেন সৰ্পি-या।। भाषत्मन विनः नम्या मि शिके मधुक्ष्रे उठः। **এব॰ क्र**ञा वि-धानस माकारिष अवत्वा जत्व ॥ मिकार्टर्थ खिमश्रुद्रारमिट र्इश क शबन ॰ नरष्य। शब्रामारनन

मङ्खीः श्वाध्यार खिय मृक्किंछाः।। मिनीसमयिमाया नाः
छि किकिर मृम्क्किः। स्तरछारतन मर्ल्याकः न म्यः यः
मा कमाहिर।। এতত্তে कथिङः
मिराः विरमार्थ भर्तिः। विरक्षना मछ मन्यञाः मया जुः
छाः हिरकालमः। मिक्कमञ्जी यः
मा मञ्जी वालिसमाणि मृक्कि।।
इञ्जः मद्या कर्षर माणि मोः
थीः वाह मनर्गलाः।। ইতি सायखूरमाज्कालस्य मात्रस्यः भर्तेः
लः। ইতি তম্বमातः।।

সারস্বতন্ততঃ পুণ সরস্বতা ব্রভবিশেষঃ। যথা। মনু রুবাচ।
মধুরা ভারতী কেন ব্রভন মধুসুদন। তথৈব জনসৌভাগ্য
মতি বিদ্যা সুকৌশলং। অভেদ শ্চাপি দস্পত্যো স্তথা বন্ধু
ধনেন চ। আষুশ্চ বিপুলং পুণসাং তন্মে কথম মাধব।। মৎস্য
উবাচ। সম্যক্ পৃষ্ঠং দ্বমা রাজন্ শৃণু সারস্বতং ব্রতং। যস্য
সক্তিনাদেব তুষ্যতীহ সরস্বতী।। যো যন্তক্তঃ পুমান্ স্ব্যাদেতভুত মনুজ্মং। তন্ধাসরাদেতভুত মনুজ্মং। তন্ধাসরাদেতভুত মনুজ্মং। তন্ধাসরাদেতভুত মনুজ্মং। তন্ধাসরাদেতভুত মনুজ্য বিপ্রানেতৎ স্মা-

द्राख्य ।। ज्यय वानिजाबीद्राव গ্রহ ভারাবলেন বা। পাষদ•-ভোজ্যে दिशान् कृषा बाजन বাচন'।। শুক্লবন্ত্ৰাণি দম্বা চ শ হিরণানি শক্তিতঃ। গাষত্রীণ शृक्रविख्का। श्वक्रवानान्त-भरेनः॥ यथा न म्हारा जगवान् ব্ৰহ্মা লোকপিতামহঃ। ত্বা॰ প-রিত্যজা সন্তিষ্ঠেত্তথা ভব বর: श्रमा। तमाः भाजानि मर्बानि নৃত্য মীতাদিক# ४९। ন বিহী-न प्रा मिर्व उथा त्य मञ्ज नि क्षयः॥ नत्री त्र्यश धता भृति গৌরী ভুক্টিঃ প্রভা মভিঃ। এ তাভিঃ পাহি তনুভি রফাভি র্মাণ সরস্বতি।। এবং সম্পূজ্য গা-यखी॰ वीनाकमानाधातिनी॰। ख-ক্লপুশাক্ষতৈ ভক্ত্যা সকৰওলু পুষ্পক।। মৌনব্রতেন ভুঞ্জীত जाय॰ প্রাতশ্চ ধর্মবিৎ। পঞ্-ম্যাণ প্রতিপক্ষঞ্চ পদ্ধবৈৎ শব্দ-वामिनी ।। তरिश्वे उषुनश्रः ष्डशाह्यन म॰यूङ । कीतः म-দ্যান্ধিরণ্যঞ্চ গাষল্রী প্রীষতা মিতি॥ সন্ধ্যাধাঞ্চ তথা মৌন মেতৎ স্বন্সমাচরেৎ। না-ন্তরা ভোজন স্ব্যাৎ যাবন্মা

मा उत्योगभा। मगोरक्ष ज्वर দদ্যাৎ ভোজন শুক্লতখুলৈঃ ৷ मूर्वन रख्यम् आक गाक विशाव **(मा**जना॰ ॥ (मवा) विजान॰ ঘণ্টাঞ্চ দিত নেত্ৰ পটাবৃতা 1 **इन्हन॰ दञ्जयूश्रक् प्रशास्त्र निश्र**-तः भूनः ॥ **७**८था भटनको त मि ভক্তা। সম্পূজ্যেদ্গুরু। বিত্ত-শাঠ্যেন রহিতো বস্ত্রমাল্যান্-**ट्लि १८ नः ॥** ज्यानम विधिन। शस्तु ষ্কর্য্যাৎ সারস্বত ব্রত । বিদ্যা-বানর্থযুক্তশ্চ ব্যক্তকঠশ্চ জাষ-তে।। সরস্বত্যাঃ প্রসাদেন ত্রন্ধ-त्लात्क मशैषट्य। नाती वा স্ত্ৰুতে ষা জু সাপি তৎফলভা-गिनी॥ बन्नातारक रामजाज-ন্ যাবৎ কল্পাযুতত্ত্ব । সার-স্বত বত যস্ত শৃণুযাদথ বা প-ঠেए।। विमाधतभूत्र मा १ि বসেদকাযুতত্রয় । ইতি মৎস্য-পুরাণে ৩২ অধ্যাষः ॥

সারস্বতাঃ পুণভূমি সারস্বতদে শজাতমনুষ্যঃ। যথা। কাশ্মীরাস্ত মাধুমতাঃ সারস্বতাস্ত বিকর্ণিকাঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।
সারস্বতোৎসবঃ পুণ সরস্বত্যাউৎসবঃ। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বং।।

অস্য প্রমাণাদিক সরস্বতীশ-ব্দে ডাইবা ।।

मात्रा जी क्रकविवृष्टा। ইভি শব্দরত্বাবলী॥ দূর্বা। ইভি শ-ব্দচন্দ্রিকা॥

সারালঃ পু॰ তিলঃ। ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা॥

সারিঃ পু স্ত্রী পাশকঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

मातिका खी शक्षिविरमधः। मा
लिक देखि जाया। देखामदः।।

ख्रिश्यायः। शीखशाना २ शा
दापि ७ शाक्तितािका ८। देखि

स्याद्यः।। भातिका ८ माती ७

भाती १ विद्याद्याद्या ४। देखि

भक्ति द्वाविनी ।। स्यूतालाशा २

मृखी ४- स्थाविनी ४४ शादा
लिका ४२ शाक्तिताि ४७ शा
दिका ४८ कलद्थिया ४८। देखि

ताक्रिनर्षन्धः।।

সারিণী ন্ত্রী সহদেবী।। কার্পা-স্বী।। দুরালভা।। কপিলসিণ-সপা!! প্রসারিণী।। রক্তপুন-র্ণবা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শ্বা হৈ প্রাঞ্জানবকঃ।
সারিবা স্ত্রী লভাবিশেষঃ। অনস্তমূল ইভিখ্যাভা। গোরিষাসাউ ইভি হিন্দীভাষা। সা ভু

जब्दर्भवा मूक्षगर्श उटि र्ङ-वि । जदशक्रायः। भावना २ গোপীত গোপকন্যা ৪ গোপ-বল্লী ৫ প্রতানিকা ৬ লভা ৭ আম্ফোতা ৮ কাষ্ঠশারিকা ৯ ৷ ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। গোপা ১০ উৎপলসারিবা ১১ অনস্তা ১২ শারিবা ১৩ শ্যামা ১৪। ইভি मक्तकारनी ॥ व्यमा खनाः । यधूत्रवः। त्रिक्षवः। तृषावः। পিত্তপ্রণাশিষ্ক। ইতি রাজ-निर्घनिः॥ #॥ क्रकनातिवा । म। जू हेन्द्र क्ष यु व ९ भवा मृगन्ता कनवल्डें अधिका। कतिया-माछे ইতি हिन्मी अधा । মালতা ইতি বঙ্গভাষা। পर्यग्रसः। क्रकमृजी २ क्रका ७ চন্দনসারিবাও ভদ্রা৫ চন্দন-গোপা ৬ চন্দনা ৭ ক্লফবলী ৮ 1 অস্যা গুণাঃ। ত্রিদোষশমনত্ব•। তিক্তত্বণ। কটুরসত্বঞ্চ। ইতিরা-क्रनिर्यकैः॥ जिलि ह। नादिया षो ज् मध्द्रो शिट्यो ज्ञिनिकः खत्नी। जर्भ क्षु बत्रहत्त्री एन-श्मृर्गिक्षिनागटनी।। इंछि রাজ-निर्यक्ता किया गातिवा यूग-न यामू निषा अकरेत अक ।

অগিমান্দ্যাক্ষচি শ্বাস কাসাৰ বিষনাশন । দোৰত্তবাশ্ৰ প্ৰ-দর দ্বরাতিসার নাশন । ইতি ভাবপ্রকাশঃ ।।

সারী স্ত্রী সারিকাপক্ষিণী।। পাশকঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী ।।
সপ্তলা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।।

সারোক্ট্রিকঃ পু॰ বিষভেদঃ ।
সারোক্ট্রো দেশভেদ স্তত্র ভবঃ
সারোক্ট্রিকঃ চঘেকাদিতি ফিকঃ
দস্ত্যাদিঃ। সুরাক্ট্রশব্দাৎ সৌরাক্ট্রিকঃ ইতি স্বামী। ইত্যমরভরতৌ।।

সার্থঃ পু॰ জন্তসংখঃ। ইত্যমরঃ । বণিক্সমূহঃ।। সমূহমাত্র॰। ইতি মেদিনী।।

সার্থঃ ত্রি অর্থেন সহ বর্ত্তমানঃ।
অর্থযুক্তঃ। ইতি হেমচক্রঃ।।
বর্থা। বনপর্বনি। সার্থঃ প্রবসতো মিত্রণ ভার্যা। মিত্রণ গৃহে
সতঃ। আতুরস্য ভিষঙ্মিত্রণ
দামণ মিত্রণ মরিষ্যভঃ।। ইতি
শুক্ষিতত্ত্বণ।।

সার্থকঃ ত্রি অর্থেন সহ বর্ত্তমানঃ যথা। শকান্তর মপেক্যেব সার্থকঃ সার্থবোধরুৎ। প্রক্র-তিঃ প্রত্যধ শৈচব নিপাত শেচতি স ত্রিধা।। ইতি শব্দশক্তিপ্র-কাশিকা।। সার্থবাহঃ পু॰ বণিক্। ইত্য-মরঃ।।

সার্জণ ত্রি আর্জণ। ইত্যমরং।।
ভার্জবুক্ত ত্রি। বধা। অঙ্গুপ্তমাত্রং স্থোলোন বাহুমাত্রঃ প্রমাগতঃ। সার্জন্ত সপলাশন্চ দণ্ড
ইত্যভিধীয়তে।। ইতি প্রাধশিচত্ততত্ত্বধৃতাঙ্গিরোবচনণ।।

সার্দ্ধণ ব্য সহিত । ইত্যমর:।।
সার্দ্ধণ ত্রি অর্দ্ধেন সহবর্ত্তমান ।
অর্দ্ধযুক্ত । যথা। মুনিভি র্দ্ধির শনণ প্রোক্ত বিপ্রাণাণ মর্ত্যবাদিনাণ নিত্য । অহনি চ তথা তমস্বিন্যাণ সার্দ্ধপ্রহর যামান্তঃ।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব ।। অপি চ । গতেকে বিত্তমে সার্দ্ধে পঞ্চপক্ষি দিনম্বয়ে। দিবসন্যান্তমে ভাগে পতত্যেকা হধিমানকঃ।। ইতি মলমানতত্ত্ব ।।

সার্পিষঃ ত্রি সর্পিঃসম্বন্ধী। সর্পিঃ-সংক্ষৃতবস্তু। সর্পিঃ শব্দাৎ বঃ প্রত্যবেন নিষ্পন্ধঃ !!

সার্গিক্কণ ত্রি সর্গিষা সংস্কৃতণ। ষথা। সার্গিক্ষণ দাধিকণ সর্গি দ্ধিভ্যাণ সংস্কৃতণ ক্রমাৎ। ইতি ट्यह्यह्यः ॥

সার্প্যঃ পু॰ অন্নেষানকত্ত্ত । ইতি হেমচন্দ্রঃ।। সর্পসয়্বন্ধিনি ত্ত্রি।। সার্বঃ পু॰ বুদ্ধঃ। জিনঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। সর্বসয়্বন্ধিনি ত্ত্রি।। সার্বজনিকঃ ত্রি সকলজনসম্বন্ধী । সর্বজনশব্দাৎ ক্ষিকপ্রত্যাযেন নিম্পান্ধঃ।।

সাৰ্বজনীনঃ ত্ৰি সাৰ্বজনিকঃ। সৰ্বজনশ্বদাৎ ণীনপ্ৰভ্যবেন নিশালঃ॥

সার্বভৌমঃ পু॰ উত্তরদিগ্গজঃ।
ইত্যমরঃ। সর্বভূমীশ্বরঃ। তৎপর্যাষঃ। চক্রবর্তী ২ একজন্মা
ত নৃপাগ্রনীঃ ৪। ইতি শব্দরত্বাবলী।। বিদূরথপুক্রঃ। যথা। পরীক্ষি রনপত্যো ২ভুৎ সূরথো
নাম জাত্রবঃ। ততো বিদূরথ
স্তশ্মাৎ সার্বভৌম স্ততো ২ভবৎ।। ইতি শ্রীভাগবতে ২ স্কম্মে
২২ অধ্যাযঃ।। সকলভূমিসম্বস্থিনি ত্রি।।

সার্যপঃ ত্রি সর্যপ্রস্থন্ধীয়শাক-তৈলাদিঃ। যথা। যৃতঞ্চ সার্য-প• তৈলে যত্তৈলে পুষ্পবাসি-তে। অদুষ্ট• পক্ষতৈলক্ষ স্থানা-ভাঙ্গেষ নিত্যশঃ॥ ইতি তিথা- দিতৰ ।।

गार्बलोकिकः जि गर्बकनिविष्ठः
। यथा। जवस्र कार्डवीर्द्या सा
हीनमिक्त महीकद्गर । किगाय
ठमा हस्राद म द्रायः मार्बलीकिकः॥ हेजि जिक्तिका ६ वर्गः
॥ मार्बलोकिकः मर्बलाकिकपिठः। हेजि जिन्ना।

সাৰ্ববেদাঃ পু॰ সকলবেদজ্ঞত্তা-শ্বনঃ। সৰ্ববেদ শব্দাৎ ফ্য প্ৰ-ত্যযেন নিষ্পাশঃ।

मानः भू॰ मानम्भाः। इंडामत्रिकाषा॰ छत्रछः॥ वृक्षमाण्य॰
॥ श्राकातः। इंडि मिनी॥
तानः। इंडि तार्जनर्यकः॥
स्नामधाण्यकः। मथ्या इंडि
हिन्मी छाया। छ्रथ्यश्रायः। मफ्रिंश्च मर्झ्यतमः ७ कनः ४ कननम्भाः १ तानकार्याः ৮ भूखकास्रात्त तानः कर्याएक्डि मञ्जूषः
। অक्रकर्वः २ वस्रकर्वः ३० क-

১১ ললনঃ ১২ গন্ধবৃক্ষকঃ
১৩ বংশঃ ১৪ রালনির্যাসঃ ১৫
দিব্যসারঃ ১৬ সুরেন্টকঃ ১৭ শুরঃ
১৮ অগ্নিবল্লভঃ ১৯ বক্ষধূপঃ ২০
সিদ্ধিকঃ ২১। অস্য গুণাঃ । ক-

षूष्। তিজ**ष्। उक्षप्। हिम** ছ। ক্লিক্সন্থ। অভিসার পিতা-जुरमाय अर्थ कर्थ वित्कार वाज नाणिष्क। इंछि ताकनिर्वन्छैः॥ অপি চ। শালস্ত সৰ্জ্জ কাৰ্য্যাশ্ব कर्नकाः भमामस्तः। अश्वकर्नः क्षायः माष्ट्र त्या क्र क् मीन्।। जन्न विकिध वाधिक्वा रा नि कर्नगमान् इद्रिष्।। 🟶 ।। ज्य मानश्राजनाः। मर्काका १ ন্যো ২জকর্ণঃ স্যাচ্ছালো মরি চপত্ৰকঃ॥ অজকৰ্ণঃ কটু স্থিক্তঃ क्वादबादका वादभाव्छ। कक शाख् किनिमान् त्यर शर्व वि यवनाब्।। इंडि छातथकामः।। সালসঃ পুশুরাগস্যপ্রকারবিশে यः। दा द्वारमा द्वामाखदामि-শ্ৰিতঃ সৰ্ ৱাগান্তরাভাসযুক্তঃ । ইতি সঙ্গীতশাস্ত্রণ।। मालनः भुः मर्कत्रमः। ब्रुबाना ॥ गानिर्यामः शुः मञ्जूतमः। ইতি बुब्बामा ॥ मानगर्भी जी भानगर्भ। भान পানি ইতিভাষা। বথা। শাল ननी मानगर्नी विद्रा हा खन्छी क्षवा । देखि मसत्रवादनी ।।

<u> শলাভু</u> অভাবে পৃশ্বিপর্ব্যাশ্চ শালপ-नैं भिरमाज्यस्। ইिं रेवला-आञ्च ॥ मानभूष्मः क्री इनभग्नः। ইতি मक्तत्रप्तावनी।। সালভঞ্জিকা স্ত্রী পুত্রলিকা ৷ ৰথা। পাঞ্চালিকা তুপাঞ্চালী পুত্রিকা শালভঞ্জিকা। ইতি। रिना। यथा। रिना ज् गनि ক। কুদ্রা বারত্রী শালভঞ্জিকা। ইতিচ জটাধরঃ ॥ সালর সঃ পু॰ রালঃ। ইতি রাজ-निर्चन्छेः ॥ मालवाइनः शुः भालिवाइन-রাজঃ। ইতিকেচিৎ।। मालातकः भू धूनकः। ইভি ভূরিপ্র:বাগঃ॥ मानमृत्र क्वी आहीतां छ। देख কে. চৎ 11 मान। खी गृरु । ইতামরটীকা-ষা॰ ভরঙঃ ॥ मानाकती खी यूक्तभन्नाषिड--मात्री। इंछि क्हिं ॥ मानाज्दीयः पु॰ भागिनिम्निः। ইভি হেষচন্দ্রঃ॥ তালবা শকা-व्राप्तिः माध्यार्थः। यथा। न्या-वाज्तीय गानकि माकिश्वा-

क शाबितो। इंडि असब्बा-वनी ॥

ষালারণ ক্লী দ্রবারক্ষণার্থভিত্তি-স্থকীলকঃ। ডাঙা ইতি ভাষা। ইতি কেচিৎ ॥

বালাবৃকঃ পু॰ সন্ধুরঃ।। শৃগালঃ
।। তরকুঃ। ইভি কেচিৎ।। তালবাশকারাদিশ্যামণ।।

मानुदः पू॰ मधुकः। ইতিশক
तत्रावनी।। তাनकानकातानिक
मालमः पू॰ मधुतिका। ইত্যमतिका।। তাनवानकातानिक
मान्यः पू॰ विक्वाताकविद्यमः।
ইতি হেমচন্দ্রঃ।। স তু সৌভদেশাধিপতিং। ইতি মহাভরতেকর্ণপর্ব।। দেশবিদেশং॥ ত দেশতে পু৽ভূমি।। তদেশসম্ব দ্বিনি ত্রি।।

माखरा पुः विकृश देखि द्य-ठखः॥

माबिकः पूर् शकिति ग्वाः। मा जिक् हे छि छात्रा। स्था। भव-यत्रः क प्रजृष्ड। गृथन क क मा-बिकः। हे छि भक्त छिका।।

नावकः जि निखः। ইভি कि-हि<।। ভালবাশকারাদিः नाधु-পঠিঃ।। সাবধানঃ ত্রি সচেতনঃ। সতর্কঃ
। ধথা। আগচ্ছত্ত মহাভাগা
বিশ্বেদেবা বরপ্রকাঃ। যে চাত্র
বিহিতাঃ প্রাক্ষে সাবধানা ভবত্ত তো। ইতি প্রাক্ষতত্ত্বং।।
সাবনং ক্লী সবনসম্বন্ধিদিনং।

াবিন॰ ক্লী স্বনসম্বাদ্ধনিণ।
বথা। সোম্বাগে স্বনত্ত্বস্যাহোরাত্ত্রসাধ্যম্বাৎ তৎসম্বন্ধি
দিন• সাবন•। ইতি মাধবাচাব্যাং।। অপি চ। ব্রহ্মসিদ্ধান্তে।
সাবন• দণ্ডাঃ ক্ষটি রহঃ স্বলগ্ন
গগুণা•শাচ্যা স্তদৈন• ভবেৎ।
ইতি মলমাস্তন্ত্ব•।।

मावनः पुर यख्डकर्षाखः॥ यकयानः॥ वक्रनः। देखि स्मिनी
॥ मिवमिविष्णयः। यथा। छिथिदेनद्वम मिवम म्हास्त्रमादन क्षकीर्खिकः। जाद्गाताद्वन देहदकन मावदमा मिवमः स्मृकः॥ देखि
यनमामख्यः॥ मामद्वमः। मह खिल्मद्दाताखाद्यकः। यथा। खिल्मद्दाताखाद्यकः। यथा। खिल्महाताखाद्यकः। यथा। खिल्महाताखाद्यकः। यथा। खिल्महाताखाद्यकः। यथा। खिल्महा स्मृतिवदेमः मावनः भतिकीर्खिकः। देखिल्मत्रद्वाव-की।। व्यभि ह। दक्षमिकाद्य। हास्त्रः स्क्रामि मर्मास्त्रः मावनः खिल्महा मिदेनः। क्षत्रादनो द्विष्णवा मिदेनः। क्षत्रादनो

সাবৰ

कद्रः॥ नईकंगद्रिवटेर्डंक ना क्व रेंछि हाहारा विक्थ শ্মোত্তরে চ। সন্নিকর্বাদপারভা मिक्कं यथानतः। हक्कार्करमा ৰু ধৈ শ্বাস শ্চান্ত ইতাভিধী-ষতে। সাবনে চ তথা মাসি बि॰मे नृर्याामयाः सृष्टाः ॥ আদিত্য রাশিভোগেন সোরো यात्रः श्रकीर्खिजः। त्रईकं श-রিবর্ত্তেশ্চ নাক্ষত্র ইতি চোচ্য-তে॥ ।। সাবনমাসকর্ত্তব্যক-र्षामि यथा। সৃতকাদি পরি-एक्ला निन मामांक्ला ख्या। মধ্যমগ্রহভূক্তিশ্চ সাবনে ন প্র कीर्खिङः॥ शिठायरः। आकि-কে পিতৃক্তোচ মাস শচান্ত্ৰ-यमः चुछः। विवाशासी चुछः मोद्रा रखामि मार्या यङः ॥ অত্র আদিপদেন সত্র ভৃতি वृक्षि वायन्छि बायू मायात्मी ह গৰ্ত্তাধান পু•সবন সীমস্তোন্ধ-यन नायकत्रगाम्यागन निक् मन् ह्णामि अइन । उथा ह वि कृथार्याखन्। अक्षायनक अङ् **हातकर्य (मीट्यन याद्यम महा**-श्रावरमार। मजानाभामानाथ मावत्नन (नीकाक वर माधा-

সাবরঃ পু॰ লোধুঃ। ইত্যমর-টীকা শব্দরত্বাবলী চা। পাপ॰।। অপরাধঃ। ইতি বিশ্বঃ।। তাল-ব্যশকারাদি রপ্যয়ণ।।

मावर्गः पृश् खर्रिममन् । सथा ।

हासा मण्डामू (छ। त्या श्रमो हिन्

होसः कथि (छ। मन् । शृर्व क्रमा

मवर्गा श्रम मावर्ग (छन कथान् । हिन क्या भावर्ग श्रम खर्माम मतहार
मावर्गम श्रम कमाभ मतहार
मह को मिका भानव खथा ।।

नहानमः कमाभ मह दोमम सन
मह स्वाम वृद्धि (द्वव ह।। हित्रकृ दी । खिका ममावर्ग मन् वी
र्या मूस्र हिन विद्या मममावर्ग मन् ।

वारमा श्रम श्रम श्रम हिन हिन ।। हित्रकृ दी । खिका मममावर्ग मन् ।

स्वाम श्रम श्रम हिन ।। हिन् ।।

स्वाम श्रम हिन ।।

स्वाम स्वाम हिन ।।

स्वाम स्वाम स्वाम हिन ।।

स्वाम स

त्रावर्गका॰ की हर्य। हेकि भक् ब्रज्ञावनी ॥ मार्वार्वः श्रुः चक्रेयसमूर। मह म्याभूखः। वथा। विवयजन्त ৰে জাবে বিশ্বকৰ্মসূতে উত্তে। मण्डा इति ह बार्क्ट द প্রাগভিহ্তে তব ॥ ভৃতীবা বডরা মেকে তাসাণ সংজ্ঞাসূতা ख्यः। बत्या वनी आकरमन শ্চাৰাষাণ্ড সূতান্ শৃণু॥ সাৰ-र्नि खभड़ी कन्त्रा ভार्या महत्रन স্য যা। শবৈশ্চর স্তৃতীযোৎ স্ मिश्ति वजवायाकी॥ अके মে ২ন্তর আয়াতে সাবর্ণি ত বিত। যনুঃ। নিৰ্মোক বিরজ-कालाः मार्वर्षिञ्चमा नृश ॥ তত্ত্ৰ দেবাঃ সূতপসো বিরজা অমৃতপ্রভাঃ। তেষা বিরোচ-নস্তো বলি রিজ্রো ভবিষ্যভি ॥ प्रदियाः साह्यानाय विकाद यः भवज्यः। व्राक्त दिख्रभद्रः হিত্বা ততঃ সিদ্ধি নবাপ্সাতি।। र्या श्रमी जगवन वकः थी-ভেন সূতলে পুনঃ। নিবেশি তো श्वित्क वर्गामधुनात्स वः व्राजिव ।। शानरवा मीखियाना-

নো ডোণপুদ্রঃ ক্লগ তথা। ৠ-

वामृतः शिष्ठाचाकः छगवान् वामदावशः। देरमः मध्यवं छख छविवाछि वरवागणः।। देमा-की यामरण द्राकन् त्व त्व चा-ध्यम यश्रमः। रामवः श्रद्धाः मद्र-वणाः मार्वरज्ञाः कि श्रेष्ठः।। चानः भूत्रमद्राष्ट्रचा वणस्य मा-मणीयदः। देशि श्रीष्ठागवरण् ए करम् १० व्यशायः॥ रगाव-विरम्यः। यथा। वाष्ट्रमा माविन् रमाक्रवा द्रोवं हावन छार्गवः जायमश्राश्चित्र श्रद्धाः। हेणु-वार्छञ्जः॥

माविबः क्री यद्धांगवीजः। ইতি अक्तप्रावनी।।

माविकः पु॰ बाक्षकः। ইতি हमः हक्कः॥ भक्रतः॥ वम्रः। ইতি विमिनी॥ मूर्याः॥ गर्डः। ইতি

সাবিত্রী স্ত্রী শাল্বদেশীযসভাষণ ভাজপত্নী। সা ভূ মত্রদেশীয অশ্বপতিরাজকন্যা।। ত্রহ্মপ-স্থ্রী। সা ভূ সবিভূঃ পৃশ্ব্যাণ প-স্থ্যাণ জাতা।। উমা। ইতি মে-দিনী।। তন্নামকারণ যথা। ত্রিদলৈ রচ্চিতা দেবী বেদ যা-গেরু পূজিতা। ভাবশুদ্ধ স্থকা-

भाषू गाविबों कन मा पृष्ठी।। रेडि क्वीभूबार्व १३ व्यक्तांचर ॥ जिनि ह । नर्रताक्थनतमार সবিভা স তু কীৰ্ব্যন্তে। বত স্ত-দেবতা দেবী সাৰিত্ৰীতাচাতে ভতঃ।। বেদ প্রস্বনাক্তাপি সা-বিত্রী প্রোচ্যতে বুবৈঃ॥ ইভি ব-द्विश्वात्व बाक्तव्यमःनानाना-খ্যাষঃ।। গাৰতী। ইতি ত্ৰিকাণ্ড-শেষঃ॥ 🗱॥ বন্ধপত্ন্যা উৎপত্তি-নামান্তরাণি ষ্থা। ততঃ সংজ পত শুদা ভিত্বা দেহ মকল্মৰণ 1 जीवण गर्क गकरतामर्क भूक्य-ৰূপবং ।। শভৰূপা চ সা খ্যাতা সাবিত্রী চ নিগদাতে। সরস্বত্য-थ गायकी बकानी ह भद्रख्य ॥ ইতি মাৎস্যে ৩ অধ্যায়ঃ।। 🛊 🛭 । তস্যা শতনামানি যথা। বিক্-क्रवाह। माविजी भूक्रत्त्र नाम छी-র্খানা॰ প্রবরে শুভে। বারাণ-मा। विभावाकी देनियद विक-शांत्रिगै।। श्रयारा मान्या (एवी कायूका शक्षयाम् त्व। यानतम् अ-मूला नाम विश्वकाया छ्थायदत्र ॥ भागत्त्र भागती नाम मन्नादत कामहार्तिशे। मरमादकी देवत-अरथ क्षकी रखिना भूद्र ।। का-

मामस्य एका लोही हाया हत-वगर्ता । अकामुद्रक की खिंकी विचा विटचचदत्र छ्वा ॥ वताररेगरन जू कमना कमनान-(व। ऋजदकाष्ट्रांश ऋजानी कानी कालक्षद्र शिद्धी।। यहालिक जु किंगिना करकारि मूत्ररियती॥ मान्यारम महारमवी मिवनित्र क्रनिथा।। नीता ९ भना मा-ষাপুৰ্য্যা॰ সন্দন্তী ললিতে তথা। उर्भनाकी महमुात्क हित्रगा-की बट्शं ९ भटना। भक्रायाः य-क्ला नाम विमला शूक्र वाखिता। विनामाया मत्यायाकी शाखना भाष्युगर्वा**छ।। नातावनी मू**णार्त्य ज् जिन्र दे कजन्मती। विभूत विश्वा नाम कन्यां नी भन्या हटन া কোটরী কোটরীতীর্থে সগন্ধা গন্ধমাদনে। স্ব্রামুকে ত্রিসন্ধ্যা তু গঙ্গাদ্বারে হরিপ্রিষা।। শিব-চণ্ডে শুভাচণ্ডা নন্দিনী দেবিকা-ভটে। রুক্মিণী দারবত্যান্ত রাধা_ वृन्नावत्न बदन ॥ दमवकी मथुत्रा-ষান্ত পাতালে পরমেশ্বরী। সী-ভা বিস্কো ভথা রৌজী কালিন্দ্যাণ विकावामिनी ॥ সহাজাবেক-বীরা তু হরিশ্চন্দ্রে তু চন্দ্রিকা।

बस्ता इंतिजील पू रश्नाताः र्-गावंछी ॥ कत्रतीरत बर्गांगची क्रमादनवी वीनाबदक। चादनादग **जू त्राभर्खी यहाकात्व यह यद्री** য় অভবেত্যকতীর্থে তু অসূতা বিদ্ধাকন্দরে। মাওব্যে মাজবীদে-वी यहारगोत्री यरहश्रती ॥ गत्न-শে চ প্রচণ্ডা তু চণ্ডিকামরকণ্ট-कि। मात्मभन्नी वन्नादः जु क्ष ভাবে পুৰুৱাবতী ৷ দেবী মাতা সরস্বত্যা॰ পারাবারতটে স্থিতা। महानत्व यहाशया शत्याखााः **शिक्र त्वश्वी।।** मिंश्का क्र करमी রে চ কার্তিকেষে ভূ শান্ধরী। উৎপলাবর্তকে কালা সূভদ্রা সিশ্বসঙ্গমে।। স্বাতা সিশ্ববনে লন্ধী স্তরকা ভরতাশ্রমে। জাল-স্করে বিশ্বমুখী ভারকা বিস্কাপর্ব-काश्वीत्रमञ्जल । जीमादनवी हि-মাজৌ তু সেতু ৰ্বক্রেশ্বরে তথা ।। क्लानयाहरन श्रक्ता माला काषावदताष्ट्रवा भट्याकादत श्र নি ৰ্মাম খৃতিঃ পিণ্ডারকে বনে।। काली जू हत्त्रज्ञागाया मस्कारम मिकिलायिनी। नतनात्रायरण ल-वी वनका मूर्वनी छथा।। असी-

लिखिइएटन क्नबीटन क्रमान-का। मचापा एशक्रि जू प्रमूल मछावाषिनी।। जन्यस्वक्रनीका ज् विबिक्त अभगनत्व। गावबी विमाणायाः नाविकी वक्तनमि-(वो ।। **जूर्यावित्य श्रजा नाम माज्** णा देवकवी य**ा। अक्रक्ष**णी में-তীনাম্ব রামাসু চ তিলোক্তমা ॥ ত্ৰজে বন্ধকলা নাম শক্তিঃ সৰ্ধশ-রীরিণাণ। এতদুদ্দেশতঃ প্রোক্তণ नामारुं भेष मूखमः॥ चारके खित-ষ্ণ তীর্থানা॰ শত মেতদুদাহত । रवा करण मृन्याद्याणि मर्वणा-रेभः अमूहारा ॥ अमू छीर्थम् वर क्रवा यावा भागावता हि ষঃ। সর্বপাপ বিনিশ্মক্তঃ কর॰ वक्षभूत्र वरमः ॥ नामाकेन-**छक॰ यञ्च खावरयबुक्तमनिरधो**। পৌৰ্নাদ্যা ৰমাবাদ্যা বহুপুলো **खित्रवारा श्रीमादन आक्रमा-**ति ह अह्नाइनि वा भूनः। पि-वार्कन विरधी विद्यान् शतः बद्धा-**धिगक्**छि॥ देखि भद्मभूतात्व मृ-किथट७ ১१ जशायः।। । जिन চ। नातम उवाह। जूनम्। भा-খ্যান বিদ॰ শ্ৰুত মীশ সু'ধ।প-मः। छखु मौरिज्यभाषानः एषा

बाबा क्या का कि जिल्ली में प्रकृति है। तमें वा शृंखिं कि तमें कि विकास कि वा ना वा वा कि वा कि

সাবিত্রীব্রত। ক্লী জৈঠককচতুদশ্যাণ স্ত্রীকর্ত্বর নিষমবিশেবঃ
। তদ্বিরণ ষধা। পরাশরঃ।
মেষে বা বৃষতে বাপি সাবিত্রীণ
তাণ বিনির্দ্দিশেৎ। তাণ চতুর্দ্দশীণা জ্যৈষ্ঠ ক্লফচতুর্দ্দশ্যাণ সাসাবিত্রী মর্চ্চমন্তি ষাং। বটমুলো
সোপবাসা ন তা বৈধব্য মাপ্প্
মুং।। রাজমার্তও ক্লত্যচিন্তামব্যোং। জ্যৈকেমাসি চতুর্দ্দশ্যাণ
সাবিত্রীব্রত মুক্তমণ। অবৈধব্যায সর্বন্তি জ্রিষঃ প্রদ্ধা সমন্বিতাঃ
।। ব্রতমাত্রে তু অনন্তচতুর্দ্দশীব্রত্যক্ত মাচরন্তি। দৃষ্টপরিকদ্বনা ন্যাযাৎ। তদুক্তণ মৎস্যা-

P. SPENDING DE SPICAL PLANE BACE गरा। उनहारान्यको नङ खाक्ननः अ**र्गा**ष्ट्रः। डेशवास्त्रनः मकाना मकः जिल्हा भिया-ए । केल इक्वराजनाजनार । वालका छ । शृकाः कात्रायः। কাষিক কোপবাসাদিক সদা एकरा जाएकरा 5 त्रयः जिय-ভে। এব স্মৃতি পরিভাষাষা वर्षमादनाशाशाशाः। नात्रमः। **मिवाजाटम बंदगम्मा** यमा ह-ज्जनी जत्र । उद भूजा म-रागाधी (परी मछावछ। मर ॥ भिवाजारग मध्यसमाज मरब्भि ব্দত্রত প্রদোবে ব্রত মাচরন্তি। পূৰ্বাহে ভিছিধছেপি পরাহে ত্রি-সন্ধাব্যাপিছে পরাহ এব ত্রিস-श्वावगानिनीिख वहनाव। यमा जू भूबाभवत्या न ज्याविधा। जना-পি পরাহ এব। যথা। জ্যোতি-(व। हजूर्मना। यमावाना। समा ভৰতি নারদ। উপোষা পূজনী-या मा ठल्फिनााः विधानलः ॥ मा माविद्यो। छङ्कामावामा-साः गाविद्धीद्वक विधानः निवा

বোরা তথা প্রেতেতি বচনকৈ।
তৎপরণ। পরাশরং। সাবিত্রী
নচ্চবিদ্বা তৃ ফলাহারা পরেহনি
। তত শ্চাবিধবা নারী বিত্তভোগান লভেত সা।। ইতি তিথা।
দিতব্বং।। অন্যথ বনপর্বীয় সাবিত্রীব্রতকথায়াও দ্রষ্টব্যং।।

माविबीमृब॰ क्ली विष्ठाभवीछ॰। देखिमकत्रप्रावनी॥

সাশ্যন্দকঃ পু• জোষ্ঠা। ইভি কেচিৎ।।

मामृकः भू॰ कष्रवः। इं हिल्हाता-वनी ॥

শাঞ্জী: স্থা ইভি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ।।

সাহিতামার্দ্ধণ ক্লী কাণস্যণ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।!

সাক্ষা দ্রী গোগলকম্বনঃ। ইভ্য-মরঃ।।

সাহচর্যাও ক্রী সহচরসাভাবং।
সহগমনণ। সহচরশব্দাৎ ক্ষ্য
প্রভাবেন নিম্পান্ধণ। সহচারঃ।
সামানাধিকরণ্যং। একাধিকরণবৃত্তিত্বং। কথা। প্রাকশো
কাপভেদেন সাহচর্যাচ্চ ক্রন
চিৎ। ইত্যমরঃ।।

मार्यः जि महनकात्रिया। ইতি

बाक्बन ॥

माहमः क्री मखः। हेलामतः॥ म'ह बिविषः। यथा वाख्यकाः। मानीिष्णन मार्त्या मण छेखः মলাহসংগ তদকি মধ্যমং প্রো-क खपक यथमः चुनः॥ ইতি প্রাৰশ্চিত্ততত্ত্বণ। বলাৎকার-क्रुडकार्याः। ই छि स्मिनी। **मृक्ष** छकर्या। जित्रम्याङ्गिष्टः ॥ ष्ट्रियः। इंकि ट्याहन्तः॥ श्रम्हाः **प्लाय** मनात्नाहा क्रमः। छ्लू कोर्या **अतुमात्रगमनामि । इ**डि मुक्तत्वाथ जिकाया॰ मूर्गामामः ॥ ॥ माङ्म बाङ् नात्रमः। यनुः कामात्रनः एखयः भत्रनाता जिमर्यः १९। পারুষ্য:মন্তকৈব সাহস भक्षां ग्रुखना खब महाधातां-खत्रमाथनः। यथा। मोहमः खिर পারুষ্য গো ২ভিশাপাত্যয়ে खियाः विवानत्यः मना धव कारना श्नारकक्षा सृठः ॥ विवामत्त्रः ममाध्यवाखदः मा-भरम् । इंडि मूलभानिः। छव षामाषरयाणि माकिःगा **ভ**विश्व । यथा छनना। नाटमा श्ट्या विध्वः ऋषीं जी बाल ऋविवाल-यः। এতে श्लानिक्षित्रकाः मा-

हरम माकित्वा बडाह है है जि वाबहात छवः ।। माहमः भू व्यवित्यका व्या । श्रीविक्ति विष्टेष्ट्र भाकत-एक जू माहमः । नक्टहाद ह विद्रः मा । दिन जिथा पिछवः ।। माहमाकः भू विक्रमा पिछाता जः । है जि क्रों थतः ।।

माहिनकः ज्ञि मन्यामात्रकः ॥

को तेरः ॥ भारतादिकः ॥ भक्रयवानी ॥ अन्ववानी । ইভি माहममकार्थनर्भनार ॥ এতে জमाक्षिनः। यथा नार्रमः। एउनाः माहिनका धूर्वाः किञ्चा
राधकाम् रच । अमाक्षिनञ्ज

সাহসু ক্রী সহসুসমূহ:। সহ
সুগণা সমূহ ইত্যর্থে ক প্রত্যকে
ন নিষ্পারণ। সহসুমাত্রণ। যথা
। হরি স্তে সাহসু কমল বলি
মাধায় পদষো র্যদেকোনে ত্রস্মিন্নিজ সুদহরমেত্রকমলণ। গাতো ভজ্যুদ্রেকঃ পরিণতি মসৌ
চক্রবপুষা ত্র যাণা রক্ষাবৈ ত্রি
পুরহর জাগত্তি জগতাণ। ইতি

ৰহিষ্ট্ৰক । "সৰ্বেৰ্ণ জীতে সহস্সমন্ধিনি চ ত্ৰি ।। সাহসুঃ পু॰ সহস্সমাকগজা-দিনাবলী। ইত্যমন্ত্ৰ: ।। সাহাৰক॰ ক্লী সাহায্য । সহা-ষস্য ভাৰ ইত্যৰ্থে কণ্ প্ৰত্যবে-ন ৰিম্পান্ত ।।

मारावा॰ क्वी महायका। महाव-শকাৎ ক্যপ্রভাষেন নিশান্ন।।। সাহিত্য॰ ক্লীন্ত্ৰী মেলনং। সহি-তস্য ভাবঃ। ইত্যর্থে ক্য প্রত্য-ষেন নিষ্পন্ন।। পরস্পরসাপে-ক্ষাণা ভুল্যৰূপাণা যুগপদেক-ক্রিযান্ববিত্ব সাহিত্য । ইতি শ্রাদ্ধবিবেকঃ।। তুল্যবদেকক্রি-यात्रिय**ः।** वृक्षिवित्यवित्य-ষাত্ব বা। ইতি শব্দশক্তিপ্ৰকা-শিকা।। সাহিত্য একক্রিয়াম্ব-यिष् । जन्यथा। धव थमित्र भ-লাশাণচ্দ্ধি ইত্যত্র ধব খদির পলাশ প্রতিযোগিক ষৎ সা-হিত্যা তলিকাগিত যদন্বয়ব-বিভাগৰাপকল তজ্জনিকা যা ছिपि क्रिया छएन्कृत क्रिया॰ खुः। ইভি मात्रमञ्जती।। यन् ষ্যক্তভোগকমযগ্রন্থবিশেষঃ। স ভূ ভটি রঘু সমারসম্ভব মাষ जाइति विष्कृत विषक्ष मुभवकत भाषिभाजक श्रज्ञाः॥

नामः क्षीः (नज्ञबः। সहिछत्। देखिः धन्नभिनाः

সাছরৎ পৃ• সমন্তিব্যাহারী। সাহশব্দাৎ রুধাতোঃ ক্বিপ্ প্র ত্যবেন নিম্পন্নঃ।

সাহ্বরঃ পু॰ মেষাদিপ্রাণিদ্যুত। পশুষুদ্ধণ। বধা। মেষাদি প্রাণিদ্যুতে স্যাৎ সাহ্বরশচ সমা-হ্বরঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

সাক্ষরণ ত্রি অক্ষরযুক্তণ। অক রেণ সহ বর্ত্তমানণ। ইতি বহু-ত্রীহিসমাস নিষ্পন্নণ ।।

সাকাৎ ব্য প্রত্যক ।। তুলা । ইত্যমরঃ।।

माकी वि वृख्खः। ইতি হেমচক্রঃ। তৎপর্যায়ঃ। প্রত্যক্ষদর্শনঃ ২। ইতি শব্দমালা।।
তদ্য মিথাকথনে অকথনে চ
দোষো যথা। পৃষ্টো হি দাকী
য়ঃ দাক্ষ্য-জানমপ্যন্যথা বদেৎ
। স পূর্বানাত্মনঃ সপ্ত জলে হন্যাত্তথা পরান্।। যশ্চ কার্য্যার্থ
তত্ত্বজ্ঞো জানমপি ন ভাষতে।
দোপি তেনৈব পাপেন লিপ্যতে
নাত্র সংশ্রহঃ।। ইতি মহাভার-

ए जाविशर्व।। **जा**विहा বন্দৰ স্থাপাহারী চ নিখ্যাসান্য-थमाथकः। मिल्लाही कुछत्रक व्यवाहक मृशक्त ॥ । अत्न महा-পাতকিন জিষু লোকেষু নিন্দি-তাঃ। কালসূত্রে চ নরকে পভস্তি वक्षनः भछ।। इछि बक्षदिवदर्ख গণপতিখণ্ডে ৪৪ অধ্যাষঃ ।৷ 🛊 🛚 🕻 অপরঞ্চ মিথ্যাসাক্ষ্য ধোদদা-তি কামাৎ ক্রোধাত্তথা ভয়াৎ। সভাষা• পাক্ষিক• বক্তি স ক্রতম ইতি স্মৃতঃ॥ মিথ্যাসাক্ষ্য॰ পাক্ষি-ক॰ বা ভারতে বক্তি যো নৃপ। যা-বদিন্দ্ৰসহসুঞ্চ সৰ্পন্ত ও বসেন্ধুবং ॥ সম্ভত বেষ্টিতৈঃ সপৈ ভীত শ্চ ভক্ষিত স্তথা। ভুঙ্কে চ সর্গবিগ্ন-ত্ৰ' ষমদূতেন তাডিতঃ।। ক্লকলী-সো ভবেত্তত্ত ভারতে সপ্তজন্মসূ ৷ সপ্তজন্মসু মণ্ড্কঃ পিভৃত্তিঃ স श्रि । । ততে। ভবেচ্চ वृक्ष-শ্চ মহারণ্যে চ শাল্মলিঃ। ততো ভবেষরো মৃক স্ততঃ শুদ্র স্ততঃ श्वितः॥ इंडि बन्नदेवर्र्छ श्रह-**जिथए७ ८२ जधायः ॥ 🐠॥ मर्ब-**শরীরেষু শ্রীকৃষ্ণস্য সাক্ষিরূপত্ব॰ বথা। মূলাৎস্থ লতর[,] প্রাপ্ত মতি-मृत्र महर्भनः। शिकः मर्बणतीरत्रष्

जाक्किन मन्ग्रकः ॥ मन्नोत्रवः खः मञ्जन मनन्नोतः खरगादकदः ॥ ইতি बक्कदेवदर्खः ब्रीकृष्ण्यमः थरख १ व्यक्षावः ॥

সাক্ষ্য ক্রী সাক্ষিকর্ম। বথা।
মনুং। সমক্ষ দর্শনাৎ সাক্ষ্যণ
শ্রবণাটেচর সিধাতি। এতৎ
প্রমাণমাক্রোপলক্ষণং। অনুভাবী চ ষং কন্চিৎ স্বর্ধ্যাৎ সাক্যাণ বিবাদিনাং। ইতি তঘচনান্তরাৎ। অতএঘারত মপি
সাক্ষিণ মাহ। মনুং। মত্রানিক্রন্ধো বীক্ষ্যেত শৃণুযাদ্বাপি
কিঞ্চন। পৃষ্ট স্তত্রাপি তদ্বা-

নিরুক্ধ স্তত্ত সাক্ষিত্বনানিবৃক্তঃ
। পরম্পরবাপি শ্রবণ মাহ বিবৃহঃ। উদ্দিক্ত সাক্ষিণি মৃতে
দেশাস্তর গতে হপি বা। তদভিহিত শ্রোতারঃ প্রমাণ নাত্র
সংশবঃ ।। অস্যোত্তরসংজ্ঞা
মাহ নারদঃ। সাক্ষিণা মপি বৎ
সাক্ষ্যং স্বপক্ষং পরিভাবতাং।
শ্রবণাৎ শ্রাবণাদ্বাপি স সাক্ষ্যুত্তরসংজ্ঞকঃ।। স্বপক্ষ সম্বন্ধিসাক্ষ্যং পরিভাবতাং সাক্ষিণাং
মঃ স্বয়ং শৃণোতি অর্থিনা শ্রাব্য-

ए वा म अवनाष आवनामूब-त्रमाक्नीखार्थः। अव त्वा रिवना গুঢ়ত্যা প্ৰভাৰ্থিৰচন প্ৰাৰিভঃ স গৃঢ়সাকীতাাহ সধব। অ-र्षिना वार्ष मिकार्थ প্রভার্থিক চন ক্টে। বং প্রাব্যতে তদা গৃতে। গৃতসাকী न উচাতে ॥ ভেনান্যভরবাদ্যভিহিতার্থবিষষ্-ক দৃষ্টকারণজ বিজ্ঞাপন সা-ষ্য মিতি স্থিত°। তত্ত্র নারদঃ। ভেষা मिंग न वालः मादिव्यका न खी न पृष्कृष्ट। न वाक्तरवा ন চারাতি জঁবু ত্তে কার্য্য মন্যথা ॥ कार्याः ममिन व्यन्मथा छिन्न-कटक्न। এवक यनि शत्रमधार्त्य-ৰুত্বেন বান্ধবাদীনা মপি সত্যবা-দিম্ব নিশ্চীয়তে তদা তে ২পি সাক্ষিণো ভবিতু মর্স্তীতি। তে-वा॰ माक्य विशायक॰ वक्यामान य-নুবচন মপি এতাদৃ খিষ্য ।। 🛊 ।। याख्वकाः। वावताः माकिरभा জেষাঃ শ্রেতিস্মার্ত ক্রিযারতাঃ । यथाकां छि यथावर्न गर्ब ग-র্বেষ্ বা স্মৃতাঃ।। ত্রেষা খবরা নিক্লফা বেষা তে ত্যবরাঃ ত্রি-ভ্যো অন্যুনা ভবস্তীত্যর্থঃ। य-থেতি যো ৰজ্জাতীৰ স্তদ্য ত-

জ্ঞাতীয়: সাকী। স্ত্রীণাণ ক্রিযো **२ खा**कांना यखाकाः। यथावर्नः खानागाना॰ बानागाः कवियानी-ना॰ कवियानयः। অভাবে जू ত্যৰৱা ইভাসাপবাদ মাহ সএব । উভযানুমতঃ সাক্ষী ভবেদেকে। শি ধর্মবি<। উভষানুমতত্ব॰ ধ-</p> र्श्वविञ्चक नियंज एखः। जनाश বিষ্ণুঃ। অভিমত গুণদম্পন্ন স্তৃত ষানুমত স্তেকো ২পি ইতি। জ-তএব শ্রোত্রিয় মপ্যেক নিষেধ-यि वृङ्ग्लि । नव मश्र शक वा मा भाषात अव वा । डे ভৌতু শ্ৰোত্তিকৌ গ্ৰাফৌ নৈক পৃচ্ছেৎ কদাচন।। একো মিলিত গুণসম্পন্নঃ প্রধানকল্পঃ। তদ-ভাবে উভধানুমতমাত্রো ২পি वाश खनार नातनः। উভयान्-यटा यः माम्नुत्या विवनमाने ষোঃ। ভবত্যেকো ২পি সাক্ষিত্বে প্রস্টব্যঃ স্যাৎ স সংসদি॥ উভ-यानुगठ একো श्लूकशामिना म ৰ্বজন প্ৰসিদ্ধ শ্চেত্তদ। সাক্ষিত্বে সংসদি বহুজন সন্ধিধৌ প্রফীব্যঃ। তথাত্বে স্নেষ্ বৈরাদিসত্ত্বে ২প্য-কীৰ্ত্তি ভয়াৎ সত্যাভিধান সম্ভ

বাদিত্যাশযঃ। বিচারস্য ভন্ত্রনি-र्गार्थकार । जनाइ मनुः। काना श्नुकः माकी मार् वसाः রস্থিরত্বাত্তু দোবৈ শ্চান্যে ২পি ষে বৃতাঃ॥ একো হলুৰম্ভ সা-की माा मिछि ब्रह्म कछ पे श्वनार्वः। धारका नुक खुमाकी माानिष्ठ জীমৃতবাহন ধৃত পাঠস্ত ন যুক্তঃ ल्काटम्ब र्वाभागाकिता ভবিতু मर्रछीि । একপদमा ব্যৰ্থভাপত্তেঃ। ভবজু বা তৎ পাঠঃ তথাপ্যেক ইত্যনুরোধাৎ **जिन्नरिष्य मृर्थना न्स्रिमाक मान्-**মতিসত্ত্ব ধর্মবিত্ত্ব মন্তরেণ সা-কিত্ব বোধ্য । ইত্যৰ্থতো ন বি-রোধঃ। অতএব বিশ্ববাপ প্রভূ-তীনাণ উভয়ানুমত এক এব সা-ক্ষীতি ব্যাখ্যানে ধর্মবিদিতিনো-कः। मारेष एउपानि जिः। তथा চ নারদঃ। স্তেনাঃ সাহসিক। ধূর্ত্তাঃ কিতবা যোধকাশ্চ যে। অসাক্ষিণস্ত তে দুষ্টা স্তেমু স-खा॰ न विमारक ।। किठवा मृाख-कताः॥ 🛊॥ अभवान मार छे भ-না। দাসো ২স্ধো বধিরঃ স্বষ্ঠী স্ত্রী वानः ख्वितानयः। এতে १भा-

निजनकाः माहरम मार्किला মতাঃ।। স্বিরো গ্লানেজিৰপ্রাসঃ । जानि नकार किल्वानवः। डे-ভবানুমতাভাবে শুচিক্রিবদাদি গুণৰুক্ত শৈচকো আছঃ। তথা চ वाामः। श्विठिकियम श्रमाद्या বো ধন্যত্তাপানভূতবাক্। প্রমাণ মেকো ২পি ভবেৎ সাহসেষু বি-শেষতঃ।। অনুভূতবাক্ স্থানাস্ত-রে সভ্যত্বেনেতি। ভবদেবভটো ২প্যেব । কাত্যায়নঃ। অভ্য-ম্ভরম্ভ নিঃক্ষেপে সাক্ষ্য মেকো ংগি দাপযে । অর্থিনা প্রহিতঃ সাক্ষী ভবেদেকে৷ ২পি যাচিতে ।। সংস্কৃত যেন যৎ পৰ্ণ তত্তে-নৈব বিভাবষেৎ। এক এব প্র মাণ স বিবাদে পরিকীর্ত্তিতঃ।। সংস্কৃত গঠিত। পণ্য সণ্ডলাদি। বিষ্ণুঃ৷ স্তেয সাহস বানদণ্ড পা-রুষ্য সংগ্রহণেষু সাক্ষিণো ন প রীকা ইতি। স্তেষ পরদারগমনা षि कार्यामा॰ निङ्गदिनय कियः মাণদ্বাৎ দৈবাদেব পর সাক্ষিণো ভবন্তীতি ন পরীক। ইত্যুক্ত । তেষা॰ বাক্যন্ত মিত্রারি ভাবাদি নিৰূপণেনৈবোপপত্ত্যনুপপত্তি-ভ্যা মালোচনীয় ন তু বাক্যমা-

बाँपिछि वावशात्रमाञ्का। । धव कालावनः। श्रगिष्यू भन्नी-ক্ষেত সাক্ষিণঃ হিরকর্মসূ। সাহ-সাত্যবিকে নৈব পরীক্ষা স্বত্রচিৎ স্তা। ইভি।। 🛊।। শ্রোত্রিষা-मीना यमाका गाइ नातलः । শ্ৰোত্তিষা স্তাপসা বৃদ্ধা ষে চ প্ৰ-ব্রজিতা নরাঃ। বচনাতেরসাকি-ত্ব॰ নাত্ৰ হেতু ৰুদাস্তঃ।। বচনা-দিতি শ্রোত্রিযন্তাদি কপাভিধা-নাৎ ন চ ভত্রান্যো হেতুরিত্যর্থঃ । তথা চ चीयरेविं किक कर्म्म कत्र न ব্যগ্রত্যা পরকীয়কার্য্যে বিস্ম-রণ সম্ভবাৎ সাক্ষিত্বকাপ লঘুকা-ৰ্য্যনিষোগে তচ্ছাপভষেন ব্যব-হার ডান্টারো ২পি তান্ন পৃচ্ছ-ম্ভীতি তৎসাক্ষ্যকরণানর্থক্যাচ্চ ন তে সাকিণঃ কর্ত্তব্যাঃ। কিন্তু-क्रुंगः अयः भाकित्। ख्रुरखार। উভৌ তু শ্রোত্রিযৌ স্যাতা নিডি স্মৃতেঃ। বৃদ্ধস্যাসাক্ষিত্ব॰ বৃদ্ধত্ব। **मिव श्वारनिक्यशामिकार्थः । कि ।।** यनुः। खीनाः नाकाः खियः नर्गु ৰিজানা সদৃশা বিজাঃ। শূডা-**শ্চ সন্তঃ শূ**জাণা মন্ত্যানা মন্ত্য-र्यानयः॥ जन्जर्वभागत्रात्रा वा শরীরস্যাত্যযে ২পি চ। স্ত্রিষাপ্য-

मद्भव कार्याः बात्मन व्विद्वश वा।। भिरवान वसूना वाशि मारमः न ভৃতকেন বা। 🖝। দেব बाञ्चन সামিধ্যে সাক্ষ্য প্ৰেচ্চ্ দৃত দিজা-न्।। উদ্ভূখান্ প্রাজুখান্ বা পূ-बादक देव शिंहः श्रुहीन्।। जाशील ব্ৰাহ্মণ পৃচ্ছেৎ সত্য ব্ৰহীতি भार्थिवः। भा वीक काक्टिन देव भाः भृषः मर्दिञ्ज भाठरेकः ॥ গো বীজ কাঞ্চনাগহারে ষৎপা-প॰ ভত্তবানৃতাভিধানে স্যাদিতি देवमा । এতৎ সাক্ষ্যান্তাভি-ধানে ভবান্ সৰৈঃ পাতকৈ স-यथारा इवाद्या मृत्यक श्राष्ट्र । बन्ना य ग्रुंग लात्क (य ह खी वानगाजिनः। भिवक्रमः क्र-ভন্নাশ্চ তেতে সূয় ৰ্বদতো মৃষা ॥ ইতি মন্ক্রণ দূষণণ। সৎফলক। অশ্বনেধ সহসূঞ্চ সত্যঞ্চ তুল্যা-খৃত । অশ্বমেধ সহস্যাদি সত্য-মেবাভিরিচ্যতে॥ ইতি মনু নার-(मर्कुः व्यावरय ।। सः।। याखः-बकाः। न ममाछि हि यः माकाः জানমপি নরাধমঃ। স কুটসা-किना॰ भारेभ खुला। मटखन टेइव হি।। কাত্যায়নঃ। অবীচি নরকে। वर्षः वरमयूः कृष्टेमाकिनः। या-

জবদ্যাঃ। সভ্যাণ প্ৰতিজ্ঞাণ ব-স্যোচুঃ সা**ক্ষিণঃ স জ**ৰী ভবেৎ ৷ ज्यनाथा वामित्ना यमा अव उमा পরাজষঃ।। বর্ণানা॰ হি বধো ষত্র তত্র সাক্ষ্যনৃত বদেশ। তৎপা-বনাষ নিৰ্বাপ্য শ্চৰুঃ সারস্বতো विकि:॥ #॥ भाष्ठभः। नान्छ-वहरन कारवा जीवनरक्छमधी-नः। न जू भाशीयरमा जीवनः। ইতি। দৈধে বছুনা বচন সমেষু छंनिना॰ छथा। छनि दिर्द छू वह-ন প্রাহ্ণ যে গুণবন্তরাঃ।৷ তেষা নিতি শেষঃ।। 🏶।। যত্ত্ব। সাক্ষিণা॰ লিখিতানাঞ্চ নির্দিষ্টানাঞ্চ বা-দিনাণ তেষা নেকো খন্যথাবা-দী ভেদাৎ দৰ্ষে ২প্যসাক্ষিণঃ।। ইতি কাত্যায়ন বচন তল্ৰয়াণা তুল্যৰপাণা সাক্ষিণা মধ্যে এ-কস্যাপ্যন্যথা বাদে অপর্স্য ত-জুলাসা সৎপ্রতিপক্ষত্যা তৃতী-यमा किक्षिषानिष्य তत ভেদাৎ শরস্পর বিরুদ্ধার্থাভিধানে ভে**-**माथ माक्किला न तिर्गरः देखि शत•।।**क्षा वृङ्**ञ्ला**िः। मा**क्किटेष्वटथ কৰ্মনিষ্ঠানা গ্ৰহণ মাহ। গুণিছৈ-ধে ক্রিষাবভা মিত্যনেন। তথা। माकिता १थिममुक्तियान् मदम् लात्वव् लावत्व । जन्ये मृ-ययन् वानी छৎ मयः मख गर्छ ।। ইতি। তৎসম বিবাদ সম। मভामनानि विनिष्ठ माकिनृयन মেব গ্রাহণ ন তু ত্র্যবরাদি সাকি-ভিঃ প্রতিপাদ্য । অনবস্থা পা-তাৎ। ইত্যাহ নারদঃ। সভাসদা• প্রসিদ্ধ যল্লোকসিদ্ধ মথাপি বা ৷ সাকিণা দূষণ আছ মসাধ্য माय वर्द्धनार्।। जटनाम् मा-कि जिः नारश मृष्य शृर्वमाकि ণা । অনবস্থা ভবেদোষ স্তেষা মপ্যন্যসম্ভবাৎ ।। অসাধ্য সাধ-नानरं। निषाषाटकाय वर्ळना । অনবস্থা বিরহাৎ। তম্মাৎপ্রাসিদ্ধ **मृयंग (येय शांक्रः ।। क्रा मृयंग या**ङ् काणायनः। ताला २ छ्वानामन-ত্যাৎ স্ত্ৰী পাপাভ্যাসাচ্চ কৃটক্লৎ । বিক্রমাৎ বান্ধবঃ স্লেহাৎ বৈর নির্যাতনাদরিঃ।। যঃ সাক্ষী নৈব নিৰ্দ্দিকৌ নাভূতো নৈব দৰ্শিতঃ । ব্রেযান্মিথ্যেতি তথ্য॰ বা দণ্ড্যঃ সোহপি নরাধমঃ ৷৷ কাত্যাযনঃ । किया न रेमिरिकी প্রাক্তা বি-मामारनम् माकिष्। त्वार्था ह म-ि वादम्यू न मिवाः न ह माकिनः য়া সমত্ব পাক্ষিণা থত্র দিবৈয় স্তত্র

वित्नांश्रक्षः। এত मन्नवाम् চ্ছেদে বোধাণ। ৰাজ্যবন্ধাং। নি-इ.एव निश्विजात्मक त्मकरमर्थ বিভাবিতঃ। দাপ্যঃ সর্বান্ন্পেণ-থান আছ স্থুনিবেদিতঃ।। বো লিখিতানেক সুবর্ণাদিক অপ-লপতি স একডব্যে সাক্ষ্যাদিভি ৰিভাবিতঃ সন্ সৰান্দদ্যাৎ। কাত্যাখনঃ। যদ্যেকদেশ প্রাপ্তা-পি ক্রিয়া বিদ্যেত মানুষী। সা গ্রাহ্মান তু পূর্ণাপি দৈবিকী বদ-তা॰ নৃণা•।। বদতা॰ বিবদতা মি-ত্যবিশেষেণ দর্শষতি। পূর্ণাপি देमिविकी ममज विषयिक। श्री ন গ্রাহ্ণ। তেনৈকদেশ প্রতিপা-**मिक्या यानुया। क्रियमा ममल्डमा-**ধ্য সিদ্ধি রিতি। সাধ্যার্থাণশে নি-গদিতে সাক্ষিভিঃ সফলণ ভবেৎ৷ ন্ত্ৰীসঙ্গে সাহসে চৌর্য্যে ষৎসা-ধ্য॰ পরিকল্পিত•।। ইতি কাত্যায-नवहन छ ९ विषय अमर्भक । %-ণনিক্ষেপাদ্যপত্নবৈ ২পি ছোজ্য मिछि॥ 🛊 ॥ यकु व्यत्नकार्थाछि-यारम जू यावर मः नाशरमञ् भी। माक्कि छ। यदमयारमी ल छ-তে সাধিত ধন।। তদৃণাদ্যনভি-छ शूलामि विषषकः। তথारि ।

নানাবিধ পিত্রণাদ্যভিষুক্তেনা জানতা নাহ' জানামীতি উত্তর वाषिना माक्गाषि व्यवस्तर প্রতিপাদষ্তি তাবদেব পুত্রেণ দাভবাণ। এব মেব বিশ্বৰূপ জী মূতবাহন প্রভূত্যঃ।।।। কাত্যা यनः। अनुभानाषदः माकी मा ক্ষিভ্যো লিখিত গুরু। অনিরুদ্ধা ত্রিপুরুষী ভূক্তি স্তেভ্যো গরীষ मी।। जन्मानः अञ्जानकतिछः। **छमार मनूः। वाटेश विजावरयिन** ছৈ ভাৰ মন্তৰ্গত নৃণা। স্বর ব র্ণেঙ্গিতাকারে শক্ষুষা চেষ্টিতেন **छ।। यद्या भकामामिः। वद्या २** স্বাভাবিকঃ। ইঙ্গিত স্বেদ বেপুথু রোমাঞ্চাদি। আকারো বিক্তভঃ । চক্ষুষা কাতরেণ। চেক্টিভেন श्वानजाभाषिना। अयाकानाथा-निष्क पूर्निक्राज्ञाम् छाः नाकी বলবান্ ইত্যৰ্থঃ। সুখ নিৰূপ্যত্বে ज्याळवकाः। प्रभारकभाखतः ষাতি সৃক্ষণী পরিলেটি চ। ললা ট श्विमाटक ठामा गूथ देववर्ग মেতি চা৷ পরিশুষাৎ স্থালদা क्गा विक्रकः वह ভाষতে। वाक् চক্ষু: পূজযতি নো তথেতি নি ভূজতাপি। স্বভাবাদিকতি গ

ष्ट्यता वाकाय कर्याजिः ॥ अ-ভিষোগে চ সাক্ষ্যে চ স দুষ্টঃ প-त्रिकीर्खिङः। न भरत्राख्नाः वाहः প্রতিবচনেন পূজষতি। তথেপ্রি **ठक्कुण्छ** भवकीये वीकरणन निर्जू-জতি স্টিলী করোতি যদা মনো ৰাক্কাষ কৰ্মজিঃ স্বভাবাৎ পূ-**र्वाका॰ यथारयागा। विक्रिडि॰** गत्क्छान। म मूखे हेळार्थः। अड-এব শ্রীরামাষণে। আকার শ্ছা-**ष्ट्रायाता** नि महिला श्रमी नि-गृहिजू । ननािक विवृत्नात्ज्ञत ভাব मञ्जर्छ न्ना ।। जाकाद्रा **(मह्धर्यः** गूथाञ्चनाम देववर्ग ब-शः। नातमः। मूमीर्घगाणि का-लन लिथिङ मिकि माध्रमाद । সংজানমাত্মনো লেখ্য মজানং-ख्लु त्नथरयः ॥ मूमीर्घर्गिष्ठ म काद्रा दि । ध्व विश्व न मञ्जा प्रश् চিরেণাপি সাক্ষ্য দাজু শক্নো-তি ইত্যর্থঃ॥ 🛊 ॥ निপিজ্ঞ॰ স্ব-হস্তেন লেখ্যেৎ তদক্ত পর-হস্তেনেত্যাহ ব্যাসঃ। অলিপি-एका **सनी यः** ज्ञाब त्नथरमब স্বমতন্ত্র সঃ। সাক্ষী বা সাক্ষিণা-तान गर्नगाकि गरी**शशशा वृ**ष्ट्-স্পতিঃ। মূষিত ঘাতিত বঙ্গ

শীনাধাশ্য সমস্ততঃ৷ অক্তেভিপি ভবেৎ সাক্ষী গ্ৰাম স্তত্ত্ব ন সংশ যঃ ৷৷ ঞা অক্তা অপি সাকিবো ভবন্তীত্যাহতু শ্মনু কাত্যাযনৌ। ष्यता भून त्रनिर्फिकाः माक्निनः সমুদাহতাঃ। গ্রামশ্চ প্রাডিবা-কশ্চ রাজা চ ব্যবহারিণা ।। কা-র্ব্যেম্বভান্তরো ষঃ স্যাদর্থিনা প্র-श्विक यः। अनाः अनिवर्गाम्य ভবেষু স্তে ২পি সাকিণঃ।। স্মৃতিঃ । দত্তাদত্তে ২থ ভূত্যানা॰ স্বামি ना॰ निर्गत्य मिछ। विकीशामान সম্বন্ধে ক্রীয়া ধন মনিচ্ছতি।। मृाटक ममास्रत्य देवव रिवाटम म মুপস্তিত। সাক্ষিণঃ সাধন প্রো-क न निवा न ह त्वथाक ॥ প্রক্রান্তে সাহসে বাপি পারুষ্যে मख्वाहित्क। वत्नाख्रत्यम् का-र्सियु माकित्वा निवा त्यव ह ।। বৃহস্পতিঃ। লেখ্য বা সাক্ষিণো वाणि विवादम यमा मृविजाः । ত্যা কাৰ্য্যণ ন সিধ্যেত বাবতন্ত্ৰ বিশোপবৈৎ ৷৷ তল্লেখ্য সাক্ষি क्रिथानं।। क्षा त्वरारमाध-न गृह। काजायनः। अहस्य লেখা সন্দেহে জীবতো বা মৃত-मा ह। ७९ यर्छक्टें इटेनाः

भटें उद्मर्था निर्वशः ॥ ज्या । म-बरदरेखक बम् छे॰ दक्कवा॰ छत्त-থৈব চ। বিভিন্নেনৈব কাৰ্য্যে ভূ **७६करा॰ পृথक् পृ**थक् ।। ना-পৃষ্টে রনিষ্ট্রে র্বা সমণ সত্যণ প্রমন্ত্রতঃ বক্তর্য সান্দিভিঃ সা ष्मुः विवासकान गागरेकः ॥ ज-न्बित्यन ठिट्छन मृखे॰ সমाधिमा তু ষৎ। প্রত্যক্ষণ তৎ স্মৃতণ কার্য্যণ माकाः माकी जु उद्दाप ।। #।। नात्रमः। यः शतार्थं २ शस्त्रिक श्वाः वाहः भूक्षाधमः। जाजात्र्य कि॰ न अधार म भागी नतक निर्जयः॥ जर्था देव वाहि निष-তা বার্গুলা বাগিনিঃসূতা। যস্তু-তা ভেন্যেছাচ স সৰ্বস্তেষ-क्षत्रः॥ वीधायनः। शक शन्य-ংন্তে হস্তি দশ হস্তি গবান্তে। শত মশ্বানৃতে হস্তি সহসু॰ পুরু-যান্তে॥ হস্তি জাতানজাতা॰-क हित्रगार्थ १ नृष्ठ वहन्। मई॰ **ज्यान्त्र रिष्ठ नात्का नाकी** ग्-यावनन् ॥ । वृङ्ग्शिष्ठिः। यगा-শেষণ প্রতিজ্ঞাতণ সাক্ষিভিঃ প্র-**তि**शानि**७** । म ज्यी मानिनाथा जू माधार्थं न मगान्या था। या-জ্ঞবৃদ্ধ্যঃ। উক্তে ২পি সাক্ষিভিঃ

मिक्या यमात्मा खनवल्याः ।
विश्वना वानाया जावः कृताः मृःः
भूवंमाक्तिनः ॥ जनाया भृवंतिभूतीलार्थ अकार्त्रना कृता जनाएम्य वहनाः । छथा । यः माक्ताः
खावित्छा श्रत्मात्छा निङ्गुत्छ
छममा वृद्धः । म मार्त्या श्रेष्ठनः
मञ्जः वाक्तवः विवामय्यः ॥
ष मरनाजाः माक्याः खाविदः
वामिना अयुर्का यः खाविदः
वामिना अयुरका यः खाविदः
वानिना अयुरका यः खाविदः
विवासिना अयुरका यः खाविदः
विवासिना अवुरका यः विवासिनः । विवासिना अवुरका यः विवासिना । वि

সি॰হঃ পু॰ স্বনামখ্যাতপশুঃ।
তৎপর্যায়ঃ। মৃগেক্সঃ২ পঞ্চাস্য়ঃ ৩ হ্র্যক্ষঃ ৪ কেশরী ৫
হ্রিঃ ৬। ইত্যমরঃ॥ পারীক্রঃ
৭ শ্বেতপিঙ্গলঃ ৮ কণ্ঠীরবঃ ৯
পঞ্চশিখঃ ১০ শৈলাটঃ ১১ ভীমবিক্রমঃ ১২ সটাঙ্কঃ ১৩ মৃগরাট্
১৪ মৃগরাজঃ ১৫ মরুৎপ্রবঃ ১৬
কেশী ১৭ লগ্নোকাঃ ১৮ করিদারকঃ ১৯। ইতি শব্দরত্বাবলী
।। মহাবীরঃ ২০ শ্বেতপিঙ্কঃ ২১
গজমোচনঃ ২২ মৃগারিঃ ২৩।

ইতি জটাধরঃ॥ ইভারিঃ ২৪ নথরাযুধঃ ২৫ মহানাদঃ ২৬ म्गপिषः २१। देखि (इयहन्यः॥ পक्षमूथः २৮ नशी २२ मानी ७० क्रवानिः ७३ मृगाधिशः ७२ मृतः ৩৩ বিক্রান্তঃ ৩৪ দ্বিরদান্তকঃ ०१ वहवनः ७७ मीखः ७१ वनी ৩৮ বিক্ৰমী ৩৯ দীপ্তপিঙ্গলঃ ৪০ । তন্মা॰সগুণাঃ। অর্শঃ প্রমেহ জঠরামষ জাডানাশিত্ব। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ অপিচ। সিণ্ছ वााचु वृका शक छतक दिशिन खथा। वक्क जबूक गार्जाता है-**जामां इ धरान्याः।** धरान्या বাতহরা গুৰুক্ত মধুরাশ্চ তে ! নিশ্বা বল্যা হিতা নিত্যু নেত্র গুছ বিকারিণা ।। ইতি ভাব-প্রকাশঃ।। क्षा। পদাস্তে শ্রেষ্ঠা-र्थवाहकः। इंडि यमिनी ॥ वार्ठा थकः। देवि द्या छः।। রক্তশিশুঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ মেষাদি দাদশরাশান্তর্গত পঞ্চ-মরাশিঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। লেয়ঃ ২ । ইতি সৎক্তামূক্তাবলী।। ত-माथिश्राजीत्मवना मि॰इः। म ह यह। পূर्वक हुनी সমুদায উতর- ष्वित्राणिः। शीख्यनः। ककः।

এব ধুনুবৰ্ঃ। পিতপ্ৰকৃতিঃ। शृर्दि मिक्यामी। शर्वछ हाती। कः बियवर्गः। ब्लूतः। यश्यकः। **जन्न जन्म । जन्म जी मन**े । তত জাতফল। क्लाशी। भी-যুগতিঃ। হাস্যবাণিঃ। অতি-वका। हक्षाः। भीठनः। मद-স্যপ্রিষশ্চ। ইতি বৃহজ্জাতকা-षयः ॥ का य्यानिया नणनशा-ন্তর্গতপঞ্মলয় । তত্র জাত সিংহলগ্নে সমুভূতো क्ल॰। ভোগী শতু বিমর্দনঃ। ऋष्ट्रीफ-রো ংলপুত্রক সোৎসাহী গজ-বিক্রমঃ।। ইতি কোষ্ঠীপ্রদীপঃ।। **नि॰ हरकिनः भू॰ यञ्जू**रघाषः । জিনবিশেষঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-(नियः॥ नि॰ हरक भद्रः भू॰ तन्ननः। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ সি॰হস্যজটা চ मि·श्**छलः भू• क्र**डाञ्जलिः। क-রদ্বযোজন । ইত্যমরটীকা-या॰ तायाख्या ॥ সিংহতুত্তঃ পুং সেহুওবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। मि श्वात की अत्यभवात । ७९-

পर्यायः। थदानन २। ইতি

(रुमहन्तः ॥

मिन्द्धनिः पू॰ मि॰ रूनकः॥ मि॰

हनाममम्भानकः। यथा। जूयात म॰ याजिननाः कृतादेशः

ममूल्लिशन मर्भकनाः कञ्चान् ॥

मृष्ठेः कथिककारदेय विविदेश त
रमाण मि॰ रुधनि कृषनाम्॥ ইতি

क्यातमञ्जदः॥

मि॰ इनामः पु॰ याधाना॰ त्राध-সাহজরবঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। ক্ষে-ডা ২। ইতামরঃ।। গজযুথ দ-र्मना९ उद्धनाय यथा मि रुग्रा-নাদ স্তথা পরবল ভঙ্গায স্বোৎ-সাহ বিবৃদ্ধযে চ যো রাবঃ স। मि॰ इरमाव नामः मि॰ इनामः । ইতি ভরতঃ।। সি॰হশব্দ ।। সি॰হ্নাদকঃ পু॰ বৃক্কারঃ। সি॰ঙ্গা रेि जाया। रेि श्रातावनी।। मि॰इनामिका खी मूद्रामञा। ইতি শक्रा अका ।। मि॰ इनि द्यी वामकः। ইতি জটাধরঃ 11 সি হপুচ্ছিকা স্ত্রী চিত্রপর্ণিকা। কুদ্ৰচাঙ্গলিয়া ইতি ভাষা। ইতি त्रव्यामा ॥ मि इपूष्टी खी हिव्यर्गिका ॥ शृश्विभनी। इंडामद्रः॥ मायभनी

সি॰ছা

। ইতি রত্নমালা।। मि॰इयूकी खी भृतिभनी। इंडि ब्राक्रनिर्घकः ॥ मिक्सूथी जी वामकः। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ मि॰ इशाना जी मूर्गा। देखि दिय-ठखाः ॥ मि॰ इत्रथा खी मूर्गा। ইতি नक-त्रञ्जावनी ॥ मि॰श्ल॰ क्री तक्र॰। ইভি ছেম-हक्कः॥ द्रीिज्ञः॥ **इ**ह०। देखि

রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ मि॰ इनः पू॰ खी प्रभवित्नयः। मिलान हेि शाउः। यथा। मिक्ति १विष्ठ भारहत्व भनगा ঋষামূককাঃ। চিত্রকূট মহারণ্য काक्षी मि॰श्न काइनाः। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ॥

नि॰श्लका जी रेम॰श्नी। देखि वाकनिर्वकैः॥ मि॰इनरमन्ता-मिनी ह।।

নি•হলা্ছানঃ পু_° তালবৃক্ষদদৃশ-वृक्ववित्नयः। यथा। প্রোৎফলः मि॰ हमाञ्चान कुषी भिक्षा हरे।-शि छ। ইতি শব্দমালা।। मि॰ श्ली**लः भू॰ ति वस्नि विटम**यः ति क्ञि नाती ज्यो नवा नवः षयः। समय मखर्खा ह मि॰इः नीनः थकीर्खिञः॥ नित्राभ-রি স্থিতা নারী কান্ডোরুম্বপদ-वया। क्रमरम मखरखा ह मि॰इ-नीत्ना श्रामाविता। ই**छि त**ः তিমঞ্চরী ৷৷

नि॰श्वाहिनी खीं मूर्ग। यथा। সি°হ মারুছ কল্পান্ডে নিহতো यहिरवा यथा। यहिरवी ठरठा प्तवी कना। देव मि॰श्वाहिनी II ইতি দেবীপুরাণে ৪৫ অধ্যাষঃ।। দি হবিক্রান্তঃ পু॰ অশ্বঃ। ইতি श्वावनी अक्यान ह।। मिर्इ जुनाविक्रश्विभिरके कि।। मि॰श्विमा खी यायलगी। देखि রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

সি॰হস॰হননঃ ত্রি বরাঙ্গৰাপো-পেতঃ। ইত্যমরঃ।। প্রত্যেক ম-वयवश्वका। जूलदः। जिःश्मः-इननः म मालिया हि मई। अम्-ন্দরঃ। ইতি কোষান্তরণ।। সি॰-হস্যেব সংহননং দেছে। ২স্য সি॰হস॰হননঃ। ৰুটিশকো ২য॰ यथाकथिकष्मश्रमः। ইতি ভরতঃ ॥ त्रिश्वाणत्म क्री॥ । তमा लक्षन थया। लिट्यां मिन्हा दी नाषी। हेलि ताज-

निर्विकैः ।। जि॰हाव॰ क्वी लोहमनः। हेन्छा-मत्रुष्ठिका ।।

সিংহান ক্লী লোহমল। ইত্যমরঃ। তস্য ৰূপান্তরাণি যথা।
শিংঘাণ ২ সিংহাণ ৩ সিংঘাণ ৪। ইতি তট্টীকা।। নাসিকামলং। সিকনী ইতি ভাষা। তৎ
পর্যাষঃ। সিংহাণক ২ সিংঘাণ ৩ সিংঘণ ৪। ইতি শব্দরত্নাবলী।। ককঃ ৫ শ্লেঘা ৬ খেটঃ
৭। ইতি জটাধরঃ।।

সিংহাসন ক্লী স্থল্মব্যাজাসন । ইত্যমরঃ ॥ অথ সিংহাসন ব্যক্তিং। রাজ্ঞো বরাসন নাম প্রিসিংহাসন মুচ্যতে । শুভে মুহূর্ত্তে শুভমাস বর্ষে সুবার বেলা তিথি চক্র যোগে। কালে নিরুৎপাত নিরীতিভাবে সিংহাসনাবস্থবিধি বদস্তি ॥ স্থির রাশি স্থিতে ভানৌ চক্রে চ স্থির ভোদিতে। আসনারম্ভ নিচ্ছন্তি গৃহার্ম্ভোপি ষেষু চ ॥ এতেন গৃহারম্ভ সিংহাসনযো রারম্ভং। তত্ত্র ক্রমং। বাণবেদাগ্নি পক্ষাণি সোপানানি মুগৈং ক্রমাৎ ॥ চম্বারিংশত্তথাত্রিংশৎ বিংশতিঃ

বোডশৈৰ চঁ ৷ ' শিশ্বাধিতানি एखगानि চরণাनि यूरेगः क्यां ॥ शबाः भरका शरका इ॰मः मि॰-হো ভূকো মূগো হযः। অকৌ দিংহাসনানীতি নীতিশান্তবিদো विषुः॥ जानिज्ञानि ननाजाना॰ ভূপতীনা যথাক্রম ৷ স্বহন্তে রফাভি রাযাম পরিণাহ-যোঃ।। রাজপাত্র মিদ নাম সো-পান পুরুষোশ্বত। তদদ্ধিমান তন্মধ্যে রাজাসন মুদাহৃত ।। অর্দ্ধোন্নত মিদ রম্য প্রোক্ত कनिमशैजुकाः। मिशकेकािक কোनः माष्ट्रकामीनाः स्थारथः ।। अ। व्याक्षानाः नक्षानि। গম্ভারীকাণ্ঠঘটিতঃ পদামালো-পচিত্রিতঃ। পদারাগ বিচিত্রাঙ্গঃ শুদ্ধঃ কাঞ্চন সমৃতঃ।। চরণাগ্রে পদ্মকোষাৎ পদ্মরাগ বিচিত্রিতাঃ **मिक्स्फी शू** जिंका ताजवान শাঙ্গলি সন্মিতাঃ।। রাজাসন চতসুশ্চ এবং দাদশ পুত্রিকাঃ। রবৈত্বশ্চ নবভিঃ কার্য্যণ নির্ম্মাণ ণ চান্তরান্তরা।। রক্তবস্তাবৃত ছেত্ৎ পদ্মসি-ছাসন মত ৷ অত্যোষিত্বা নরপতিঃ প্রতাপ ম-তিবিশতি॥ ১॥ ভডেন্দ্রকাপ্ত

ষ্টিতঃ শধ্মালোপশোভিতঃ। শুদ্ধকটিকচিত্ৰাঙ্গঃ শুদ্ধৰপ্যো-**পশ্মেভিতঃ** ॥ চরণাতো শ-ম্বাভিঃ পুত্রিকাঃ সপ্তবিংশ-তিঃ। স্থানে স্থানে বিধাতব্যাঃ শুদ্ধাফটিক সংস্কৃতাঃ।। শুক্ল-পটাবৃত ছেতৎ শম্বসিংহাসন ষত ।। ২।। পনসেনোপষ্টিতো গব্দমালোপশোভিতঃ। देय त्रि देव पूर्विः काश्वरननाति শোভিতঃ।। চরণাগ্রে গজশিরঃ পুচ্ছাদেকৈক পুত্রিকা। মাণিক্য রচিতা রক্তবস্তাদিক বিভূষণ ॥ গজসিংহাসনং নাম সামুাজ্য-क्लमायक ।। ।। भानकारश्चेन ষ্টিতো হ॰সমালোপশোভিতঃ। পুষ্পরাগৈঃ কাঞ্চনেন সরুবি-टेम्म कि कि कि है। इस नाट के इस न ৰূপণ পুত্ৰিক। স্তেকবিণশভিঃ। গোমেদকোপঘটিতাপীতবস্ত্রবি-ভূষণ ৷৷ হ সি সি হাসন নাম मर्बानिक विनामन ॥ ॥ हम-নেমোপষ্টিতঃ সিংহ্মালোপভূ-ষিতঃ। শুদ্ধহীরক চিত্রাঙ্গঃ শুদ্ধ-কাঞ্চন নির্ম্মিতঃ ৷৷ চরণানাং সিং-হলেখঃ পুত্রিকা শৈচকবি॰শতিঃ। মুক্তা শুক্তিভি রবৈয়শ্চ নির্ম্মলৈ-

রেব ভূষণ ।। শুদ্ধশু গ্রাবৃত ছে-তৎ সি হসি হাসন । মত । অ-ত্রোবিদ্বা নরপতিঃ ক্লৎস্নাণ সা-ধ্যতি ক্ষিতি ৷৷৫৷৷ ভূক্সালোপ-সহিত শুদ্ধচম্পক কল্পিত। শু-रिक्ष **श्वंत्रकरे**छ श्रृंकि॰ शामार्थ्य श-ঘকোষিকাঃ।। দাবি॰শতিঃ পু-ত্রিকাস্ত নীলবস্তাদি ভূষণ। ভূ-জসি·হাসন· নাম শতুক্ষ জষ-প্রদ॰ ॥ ७॥ निष्ठकार्छन घটना মৃগমালোপশোভিত। ইন্দ্রনী-टेल श्रंशनीटेनः काश्रःतनाति চিত্রিত ৷৷ চরণাত্রে মৃগশির *****ठ शांति शक्त शू बिकाः । नील-বস্ত্রাদিযুক্তন্ত মৃগসিংহাসনং মত• ।। লক্ষী বিজয় সম্পত্তি নৈ রুজ্য পদ মুক্তম॰ ॥ १॥ কেশরেণোপ-ঘটিত॰ হ্যমালোপশোভিত॰ । সমস্তবক্ত্রৈ ভূবাশ্চ পুত্রিকাঃ প-শ্চিত্রবস্ত্রাদিভূষণ । হ্যসি হা-मनः नाम लच्ची विकय वर्क्सनः ॥ ৮ ৷৷ ইত্যে তৎ কথিত সার মহাসিংহাসনাফকে। 'যথা ভো-रजन निथिड॰ यथा ठाटेना कि श-প্তিতৈঃ।। এতস্যাতিক্রমণ দস্তা-म्यः अर्यापः शृथिवीशिटः। अ-

हिन्नोत्मव अक्रल्ड छमा मृख्य त তিক্রম॰॥ পরাসনক্ষে যোরা-জা যো রাজা চ নিরাসনঃ। স भटेत र्रनाटा मि॰टर तिव मख-গজাধিপঃ।। স্বলগ্ন মিত্রাসন মধ্য সংস্থিতি ন দুষ্যতীতি প্ৰব-দস্তি তজ্জাঃ। ইতি বিশেষা-मताएकभः। ইতি युक्तिकन्न-ভরু:।। 🛊 ।। চত্রাজীকীডা-याः जयविष्यदः। यथा। जना-जाक्र भाषा या या या विकास व ধিষ্ঠির। তদা দি হাসন তস্য ভণ্যতে নৃপসত্তম।। রাজা চ नृगिि॰ इषा क्रवाां मि॰शाम-नः यमा। विश्वनः वाह्दम् शना यनारेथक छन ७ ७ दव ॥ यिज-সিংহাসন পার্থ যদা রোহতি ভূপতিঃ। তদা সিংহাসনং নাম সৰ্ব নযতি তদ্বল।। যদা সি॰-হাসন কর্ত্তুণ রাজা ষষ্ঠপদা-শ্রিতঃ। তদা ঘাতেন হস্তব্যো बलनाशि मूत्रकिंछः॥ इछि छि-थापिछद्धः ॥ 🗱 ॥ त्यागामन-वित्नवः। यथा। खन्रको ह वृष-नगाधः भीवनाः नार्यसाः कि-मकित्। नवा छल्कञ्च **मक** छन्क स नवादक ॥ श्रञ्जी ह

জাবোঃ সংস্থাপ্য স্বাঙ্গুলীঃ সং-প্রসার্য্য চ। ব্যাত্তবজ্ঞো নিরী। ক্ষেত নাসাগ্রণ সুসমাহিতঃ ।। সিংহাসনং ভবেদেতৎ পুজিতণ যোগিভিঃ সদা। বন্ধত্রয়স্য স-ন্ধানং ক্ষকতে চাসনোত্তমং ।। ইতি হঠপ্রদীপঃ ।।

সিংহাসনঃ পু॰ ষোডশবন্ধান্ত-গতচভূদিশবন্ধঃ। তস্য লক্ষণ ৰথা। স্ব জজ্বাদ্বয বাহূ চ ক্ৰত্বা ষোষা পদদ্বয়ণ। স্তনো ধৃত্বা র-মেৎ কামী বন্ধঃ সিংহাসনো ৰতঃ॥ ইতি রতিমঞ্জরী॥

সিংহাসনচক্রং ক্লী সপ্তবিংশতিনক্ষত্রান্ধিতনরাকারচক্রত্রয়ং ।
যথা। অথাতঃ সংপ্রবক্ষ্যানি
চক্রং সিংহাসনত্রয়ং । সপ্তবিংশতিনক্ষত্রে রেকৈকঞ্চ নবাত্মকং ॥ অশ্বিনী মঘ মূলাদ্যং পঞ্চনাডী বিভেদতঃ । অশ্বিন্যাদ্যুত্তরে ভাগে মঘাদ্যং পূর্বতঃ স্থিতঃ
।। মূলাদ্যং দক্ষিণে ভাগে জ্ঞাতব্যং নৃপতিত্রয়ং । ইতরেষুঁ চ
রাজ্যেয়ু নৃপনামর্ক্ষতো বদেৎ॥
শুভাশুভ মিদং সর্বং যত্র যস্য
শনিঃ স্থিতঃ । নাডিকা পঞ্চবেধেন একৈকস্যাসনং ভবেৎ ॥

আধার মাসন পটি সিংহ সিং शामनः छथा। अटेश् (वंधवणा-क्छव॰ भोरेमाः कृरेद्रः ७-ভাশুভণা ঋক আধারণে রা-का अभिरक्ता व आगत्न। পরাধীনগত রাজ্যু সরুতে नाज मण्णयः।। जामनटस्न ॥-ক্ষেণ নীতিষুক্তো ভবেষ্পঃ। अशानभूकरवा (मदः अङ्गाणा-खिकरता ভবেৎ।। পটशास्कः यना दाजा उशिवित्को नृशा-পূৰ্বরাজন্মিতে স্থলা শ্চির॰ পালয়তে মহী।। সি॰হ-क्री ভবেজাজা मि॰ इक्लंगम-त्न व्हिडः। मधायमा अस्या निका मनात्था मिस्रमख्देनः ॥ সিংহাসনগতে ধিক্যো তেজস্বী ভীষণাক্ষতিঃ। চলচ্চিত্তো ম হাক্রোধী প্রজাপী ডাকরো নৃপঃ ।। ७९कालम् गट्ड सक्क कृत निर्दिध नाष्ट्रिक। खडावद्या **७८७ वर्ध्य मः श्रामा नृभ जा-**जत्न।। केमृत्न ह मनात्वारण छ-পৰিষ্টো য जामन। উচ্ছাদ্য শত্রুদ ঘাত মেকচ্ছত্রণ করোতি সং ৷৷ ক্রগ্রহণতা নাডী মুপ-विरक्षा य जामत्न। वस्तन जु

মিনাশশ্চ তথা মৃত্যুঃ প্ৰজাষ-তে।। वाधात शक्नाः मोति त्र-नावृष्ठि॰ करब्रांछि छ। मूर्जिक॰ রৌরব তত্ত্ব প্রজাগীড়া চ জা-या वागतन ह यहा मिति र्युक्त छ म्था । ज्या । ज्या बा वाधिशीषाः हः मरनामुः थः প্রকাষতে ৷৷ পটককে যদা সৌরিঃ পউরাজ্ঞী বিনশাতি ৷ প্রিবো বা**ণ** সমারো বা মন্তি: वश्रुक्रसा श्री वा।। जिंग्टर जिंग-श्मात-वाणि यहा जिश्रे कि मूर्या-**बः। छमा यूज्य न**िमत्सरिश यिन भव्कृतरमा नृभः ॥ भिन्ना-व्हर्क यादिया यहा हत्यन मन्यू-ভাঃ৷ যদ্যাসনগতা এতে ভদ্য तारका **७** यकताः ॥ कृतयूरकाः **২থ বক্রস্ত ক্রনাডীগতো ২পি** वा। जानदनः हक्षदगरगन का-मबाभी गरिनम्हदः॥ এवः रहे छ-क्ल॰ ब्रमाट्लवयद्यी न म॰ नयः। করোতি বিপুল রাজ্য যদ্যা-সনগতো গুৰু:।। ইভিজ্যোতি-खबुः॥

সিংহাসাঃ পু॰ বাসকঃ। ইত্য-মরঃ॥ সিংহতুলামুখে জি॥ সিংহিকা জী কশাপপদ্পী। রাহ-

ৰাভা। যথা। কশাপস্য গৃহিণী তু দি ছিকা রাছ বাস্ত তনষাব-१९। शृर्वत्का इति কন্ধরো দৈবতৈ রবরজো নিপা তিভঃ।। ইতি বাস্ত্রযাগভন্ত।। मि॰हिकामृन्ः पू॰ द्राष्टः। ইতি भक्तव्रावनी ॥ वाख्युक्यः। ইভি বাস্তবাগতত্ত্ব ॥ मिश्री खी वार्ताकी। इंछायदः ॥ क्केंकाती॥ वामकः। इंडि त्यिनि ॥ वृष्ठी ॥ त्राष्ट्रमाठा । इंडि विश्वः॥ त्रूकाशनी। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ॥ সি॰হপত্নী চ॥ निःशैनण खी वृङ्गी। रेणि ভাবপ্রকাশঃ 11 সিক্ সেচনে। ইতি কবিকর ক্রমঃ॥ দম্ভ্যাদিঃ সিকতা। ইতি **मूर्गामामः ॥ मोळधाजूतमः ॥** সিকতা স্ত্রী সিকতিলঃ। বালু कायू छ ज्ञिः। इं ि विमिनी।। वानुका। इंडि द्राक्षनिर्यकः॥ সিকতাঃ পু ভুম্নি বালুকা। ইতি विषिनी। দিকতানয় ক্লী বালুকান্যতটি । छৎ भर्यायः। टेमकछ २। ইত্যমরঃ 11 त्रिक्छायान जि वाल्काक्लाम

भः। ७६ गर्नाषः। मिक्छ। २ সিকভিলঃ ৩ সৈকভঃ ৪। ইত্য-मञ्जूखा ॥ निक्छिनः वि निक्छावान्। है-ত্যমরটীকাষা ভরভঃ।। मिकं जी बजा। देखि द्यारखः॥ দিক্তঃ ত্রি দেকাশ্রয়। কুতদে-हनः। यथा। आयुग्क मिळाः পিতরশ্চ ভৃপ্তা একা ক্রিয়া দ্বা-র্থকরী প্রাসদ্ধা। ইভি বাষু-পুরাণে গযাপদ্ধভিঃ।। সিক্থ॰ क्री মধৃচ্ছিষ্ট॰। মোন इंडि ভाষा। इंडि मिन्नी। नीनी। इंडि (इयहन्यः॥ সিক্থঃ পু॰ ভক্তপুলাকঃ। গ্রাসঃ । इंडि बिमिनी।। मिक्थक॰ क्री सशृष्ट्छि॰। ইত্য-बद्धः ॥ क्री नानिकायन । সিত্ত্ৰণ সিজ্যাণ সিক্নী ইভি ভাষা। **निञ्चानकः है छि नक्**त्रञ्जावनी ॥ मि जियमी जी नामिका १ देखि र्लायुक्षः ॥ সিচষঃ পু॰ বক্তা। ইভি ছেম-চন্দ্রং।। জীর্ণবস্ত্রং। ইতি ত্রিকা-প্রশেষঃ।। সিঞ্ন তি সেচনকর্তা। সিচ

সিউদী

ষাভো: শতৃপ্রতাবেন দিশুর: ॥ সিঞ্চিতা ন্ত্রী পিপ্ললী। ইভি শব্দ চন্দ্রিকা॥

নিঞ্জা জ্ঞী অলকারধনিঃ। ইভি কেচিৎ।। ভালব্যশকারাদিঃ সাধুপাঠঃ।।

সিত॰ ক্লী রৌপ্যে । মূলক । ইতি রাজনির্ঘন্তঃ। চন্দন । ইতি রত্তমালা।।

সিতঃ পু॰ শুক্লবর্ণঃ। ইত্যমরঃ॥ শুক্রাচার্য্যঃ। ইতি শব্দরত্না-বলী॥ শরঃ। ইতি নানার্থধ-নিমঞ্জরী॥

দিতঃ ত্রি শুক্লবর্ণযুক্তঃ। ইত্য-মরঃ।। সমাপ্তঃ।। নিব**দ্ধঃ**।। জ্ঞাতঃ। ইতি বিশ্বঃ।।

সিতৃকন্টা > স্ত্রী শ্বেতকন্টকা-সিতকন্টারিকা > রী। ইতি রাজ নির্বন্টঃ ।।

निठककेः पू॰ माजुरशकी। ইভি শব্দরত্বাবলী॥ শ্বেতকঠ যুক্তে ত্রি॥

সিতকরঃ পু॰ কপুরঃ। ইভি রাজনির্ঘন্টঃ।। চন্দ্রক্ষা

সিতকর্ণী স্ত্রী বাসকঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

निवन्धाः भूः हेखः॥ हेखः

হন্তী। ইতিকেচিৎ।। খ্রী খেতগুলা।

রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷

সিতি চিক্লঃ স্ত্রী বালুকাগড়ঃ। বেলিধানৎস্য ইতি ভাষা । ইতি হারাবলী॥ সিতাকঃ সা-ধুপাঠঃ॥

নিতচ্ছল ক্লী রাজচ্ছল। ইভি ভূরিপ্রযোগঃ॥

সিতচ্চলা স্ত্রী শতপুষ্পা। ইত্য-মরঃ।।

मिछक्तिछः भू॰ स्थिक्त्ययुक्तः।
स्था। निभीष समा किछि तकि॰
नः कथा॰ छथाजिषस्य न त्राः
मूथा प्रित। नजः मिछक्तिछ
कीर्तियक्षनः म त्राण तामीयाहमा॰ मह्यक्तिनः॥ हेछि नियसीष প্রথমক্ষোকः॥

मिडळ्मः पू॰ इ॰मः। ইভি হেম-চন্দ্ৰঃ।।

मिछ्क्षा खी स्थ्रमूर्वा। ইতি द्राक्षनिर्वन्धः॥

निजमर्जः पूर्व (भ्रष्ठकृषः। ইতি রাজনির্ঘন্তঃ।।

সিতদীধিতিঃ পু॰ চক্রঃ। সিতা শুক্লা দীধিতিঃ কিরণো যস্য ইতি বছত্রীহিসমাস নিম্পন্নঃ। निवरीना द्रा (नवस्त्रान्तः । व्यक्त सम्बद्धान्तः ॥ रेडि ब्रांकनिर्वकेश मिक्तूबा जी त्यकत्वा। रेडि ब्रुवाना ॥ गिष्ठकः भू त्वात्रहेतित्वतः। **दे**षि त्रव्यामा ॥ अन्तर्गतृकण्ठ ॥ निख्याजुः श्रु किंगी। देखि बाकिनिर्वन्छेः ॥ एक्ववर्ग्धाकृ यांवशा मिछनभी जी जर्मभूणिकावृकः। ইভি রত্নমালা।। निजगकः भू॰ इ॰मः। ইতি শব-त्रज्ञावनी॥ श्रुक्रभकः। वथा। মাবে মাসি সিতে পকে সপ্তমী কোটিভাকরা। ইতি ভিথ্যাদি-ভৰ• ।। निष्णाहेनिका जी श्रुक्तभाहेना-বৃক্ষঃ। শ্বেতপাডরি ইতি হিন্দী ভाষा। **তৎপ**र्यावः। मिठ-পত্তী ২ কলেক্ত্ৰা ৩ পিতামো-যা ৪ সবেরাকী ৫ শ্বেতাহনা ৬

वाकनिर्घणः॥

निचन्त्रा जी देववर्षिम् छकः। रेजिको। भन्नः॥ जानवा नका-तामि ब्रिन भारेश र निष्णुभाः भू॰ छगत्रबृकः। ইष्ठि **अस्त्रज्ञावनी।। (अछद्राह्छिः** ॥कामः। ইতি त्राक्रनिर्यकः॥ সিতপুশা ত্রী মলিকা। ইতি শব্দরত্বাবলী।। নিতপুশী ত্রী থেতাপরাজিতা । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। সিতমরিচ ফ্লী শ্বেতমরিচ। তৎ পর্য্যায়ঃ। সিতাখ্য ২ সিতব-· ৩ বালুক· ৪ বহুল · ৫ ধ-বল ৬ চক্রক গ। অস্য গুণাঃ । কটুদ। উকদ। বিব ভূত मृक्टिरतांग नानिष्। अवृत्राष्। ৰুক্ত্যা রসাধনত্বশ। ইতি রাজ-निर्घकः॥ দিত্যাবঃ পু॰ রাজ্যাবঃ। ইতি श्रवावनी।। कार्रेगारेना १ थ्वनगारेनी ४। निजदक्षनः पू॰ भीजवर्गः। देखि वाना। धनाः। विकवः। धन्नपः (र्यठखः॥ । উक्ष वर्। वाल्यान विभ रिका সিতরখিঃ পু॰ চক্রঃ। সিতঃ শু-ক্লো রশ্মিঃ কিরণো যস্য সং।। ৰক শ্ৰম শোক নাশিত্বক। ইতি मिछवर्षाणुः पुः भूनवंवा। देखि দিতপুথা ত্রী খেতশরপুথা। ताकिनिर्वकः ॥

সিডাৰ'

नेञ्चावका औ द्वाराष्ट्रभाग्रभा। इंडि ब्राज्यनिर्फेर । जिल्लिकः पुः शाब्यः। ইতি ट्याञ्यः॥ निश्निविद्यानि भार्वः ॥ जेलिय की देनस्ववनवण । তস্যাৰপান্তরাণি। শিতশিবং। मिछिनियः। भौजिनियः। भौज সিব । ইত্যমরটীকা।। সতশিংশপা স্ত্রী শ্বেতশিংশপা বৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। মতশুকঃ পু॰ যবঃ। ইতামর টীকাষাণ ভরতঃ।। সিতশূরণঃ পু॰ বনশূরণঃ। ইতি बार्জनिर्घकः॥ দিতসপ্তিঃ পু॰ অজ্জুনঃ। ইতি কেচিৎ॥ শ্বেভাশ্বন্দ ॥ সতসর্যপঃ পু॰ গৌরসর্যপঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ সতসারঃ ১পু॰ শালিঞ্চশাকঃ। দতসারকঃ) ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ নতসিংহী স্ত্রী শ্বেতকণ্টকারী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ নতসিরুঃ স্ত্রী গঙ্গা। ইতিশব্দ-त्रवावनी ॥ সতা স্ত্রী শর্করা। ইত্যমরঃ॥ অস্যাগুণাঃ ৷ খণ্ডম্ব দিকতা

बन जूरचंड भक्ता निष्ठा। किं^त তা সুমধুরা রুচ্যা বাত পিত্তাসূ मार्श्यो मृष्ट्। इकि बतान् হন্তি সুশীতা শুক্রকারিণী।। रेि त्राक्रनिर्मिन्छः।। महिका। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শ্বেতকণ্ট-कात्री॥ वाञ्रही॥ विनात्री॥ नी।। यमाः।। शिका।। वाय-माना। তেজনী। ইভি রাজ-নিৰ্ঘন্টঃ॥ পৰ্ৰতজাতাপরাজি-তা। ইতি রত্নমালা।। मिछा छः पु ठसः॥ कर्ण् तः। ইতি শুভাৃ শুশকদৰ্শনাৎ।। मिठा श्वरेजन की कपू तरेजन। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। সিতাখঙঃ পু॰ মধুজাতশর্করা। **७९** शर्यायः। थलकः २ मिछ-का ७ मर्कत्रका ८ याथवी ७ यन धुमर्कता ७ याक्षीक मर्कता १। অস্য গুণাং! অতিমধুরত্বং! **ठक्ष्रादः। इक्षि अ**श्चे बन करू शाम हिका शिखामुद्रणाय ना-শিত্বক। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। সিতাগ্রঃ পু॰ কন্টক॰। ইতি হা-द्रावनी ॥ সিতাকঃ পুং বালুকাগডমৎস্যঃ

গিতাজ

। ইভি হারানলী ॥ গিতালঃ পুং' খেউরোক্তঃ। ইভি রাজনির্বন্টঃ।।

নিতাজাজী স্ত্রী খেডজীরক:। ইতি রাজনির্যন্ট:।। নিতাদিঃ পু॰ খড়ঃ। ইতি রাজ-নির্যন্ট:।।

সিতাননঃ পু॰ গরুডঃ। ইতি কেচিৎ।। শুক্লমুখযুক্তে ত্রি।। সিতাপালঃ পু॰ মযুরঃ। ইতি ত্রিকাগুশেষঃ।।

সিতাজ কী শ্বেতকমল । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।।

সিতাভঃ পু॰ কপূরঃ। ইতামর-টীকাষা রাষমুসটঃ।।

সিতাভা স্ত্রী তক্রাহ্বা। ইতি রাজনির্যন্টঃ ॥

সিতাভূঃ পু॰ কপূরঃ। ইতামরঃ॥ সিতাভূক॰ ক্লী কপূরি॰। ইতি রন্ধমালা॥

সিতাম্বরঃ পু॰ শ্বেতবন্ত্রপরিহিত বতী। ইতি হলাযুধঃ।। শুক্ল-বন্ত্রপরিধাধিনি ত্রি।।

সিতান্ডোজ ক্লী শ্বেতপদ্ম । ইত্যমরঃ ॥

সিতাৰ্জ্জকঃ পু॰ শ্বেততুলসী। শ্বেতাজবলা ইতি হিন্দীভাষা। निर्णव

গত্ৰঃ ৩ কুত্ৰেক্য ৪

कः ।। जनाखनाः। कर्षे। উক্তত্ব॰। কৰু বাত নেত্ৰামৰ না-**শिष् । क्रहाष । সুখপ্রসবকা**-त्रकष्य । इंडि ताकनिर्वनिः॥ नि**जानकः भू॰ (श्वज्यमा**त्रकः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ সিতালতা স্ত্রী শ্বেতদূর্বা। ইতি রত্বমালা।। সিতালিকটভী স্ত্ৰী শ্বেভকিণিংী-वृक्तः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। সিতাবরঃ পু•্ শাকবিশেষঃ । मुम्नी हेि जाता। जद्भर्यागः ৷ সূচ্যাহ্বঃ ২ সূচীপল্রকঃ ৩ শ্রী-বারকঃ ৪ শিখীঃ ৫ বক্রঃ ৬ স্ব-স্তিকঃ ৭ সুনিষগ্লকঃ ৮ ঙ্গরুটঃ ১ ঙ্গন্ধটঃ ১০ সূচীদলঃ ১১ থেতা-বরঃ ১২ মেধাক্লৎ ১৩ গ্রাহকঃ ১৪। অস্য গুণাঃ। সংগ্রাহিত্বণ। कवायषः। छेकषः। ब्लिटमाव-नानिष्। त्यशं कृति अन्षः। मार **जुत शांतिषः। त्र**मायन ष्रशः। ইভি রাজনির্ঘন্টঃ। নিজাকা-রিত্বণ। ইতি লোকপ্রসিদ্ধণ।। खमा नकन यथा। **ठाटक** ती म-

দৃশঃ পৰে শচতুৰ্বন ইভীৱিতঃ। শাকোজনাবিতে মেলে চতুপা-শ্ৰীতি চোচাতে ॥ ইতি ভাবপ্ৰ-কাশঃ।

নিতাৰৱী ত্ৰী বাসচী 1 ইভি রাজনির্ঘন্টঃ ॥

দিতাসিতঃ পু॰ বলদেবঃ। ইতি
হেনচন্দ্রঃ। শুক্রসহিতশনিঃ।
যথা। সিতাসিতৌ চন্দ্রমসোন
কশ্চিৎ বুগঃ শশী সৌম্যাসিতৌরবীন্দু। রবীন্দু ভৌমা রবিত স্থু
নিত্রা মিত্রারি শেষশ্চ সমঃ প্রদিফঃ।। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব॰।।
শুক্রসহিতক্রকণ্ট।।

নিতাহ্বমঃ পু॰ শ্বেভশিগুঃ।। শ্বেতরোহিতঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।
নিতিঃ ত্রি শুক্লঃ।। ক্রফঃ। ইত্যমরটীকাষা রমানাথঃ।।

निष्ठिककेः श्रू॰ मिष्ठिककेः। मिदः । ইত্যমরটীকাষা॰ নিতিশক্ষ্য দন্ত্যাদিশ্বদর্শনাৎ।।

সিভিমা পু• শুক্লতা।। ক্রফতা। ইতি সিভিশকাদিমন্ প্রত্য-বেন নিষ্পন্ন: ।।

সিতিবারঃ পু॰ সুনিষণ্গকঃ। ইভি ভাবপ্রকাশঃ।।

मिलियामाः पु॰ यमाप्तयः। ইलि

नीमाद्यनेष्णमर्थनाव ॥ विट्डिंग प्रमाणनावित्र है बनपा देखि बाजनिर्दक्तः॥ स्टब्स्टबर्द्यन्ति॥

সিতেভরগতিঃ পু• অগ্নিঃ। ইতি হলামুখঃ।।

সিতেক্ষু পু॰ শ্বেভেক্ষু। ইভি রাজনির্বন্টঃ ।।

निट्डानदः श्र्॰ इत्वदः। ইडि र्घित्रकः॥ श्रुक्तकिष्ट् वि॥ श्रुक्तको क्री॥

দিতোদ্ভব॰ ক্লী শ্বেতচন্দন•। ইভি কেচিৎ।। শর্করাজাতে ত্রি।। দিতোপল• ক্লী কঠিনী। ইভি

ত্রিকাণ্ডশেষः ॥

বিতোপলঃ পু॰ ক্ষটিকঃ। ইভি রাজনির্ঘন্টঃ।।

সিতোপলা স্ত্রী শর্করা। ইতি হেমচস্ত্রঃ॥

मिक्क॰ क्री रेमक्षवनवनः। ইতি ब्राजनिर्वन्धः॥

मिकः पू॰ मित्रपानिविर्णयः।
इंडामदः॥ म जू व्यनिमापिश्वत्वार्णराज्ञा विश्वारम् श्रेज्ञानिः॥ विइंडि जद्रजः॥ द्यामापिः॥ विऋञ्जापिमश्ववि॰म्डिर्याणाञ्जर्गरेंडकवि॰म्रपागः। ইভিমেদিনী

॥ তত্ৰ জাতকল । জিতেজিयः गर्बकलानिशादना शिरता २कि শুরো মধুরো বিনীতঃ। সভ্যো-পপন্ন: ক্লুতভূরিভোগো ষদ্য প্র-मूछो किन मिक्स दिशाशः॥ इंडि काष्ठीश्रमीभः॥ वावहातः। रेि मसद्वावनी।। क्रक्ष्युख्दः ॥ खडः। इंडि त्राक्रनिर्यकः॥ निकः, जि श्रीनिकः॥ निजाः॥ निष्णबः। ইতি শব্দরত্বাবলী।। मुकः। देखि (इमहस्रः ॥ शकः। यथा मूबद्धः। পर्यामिठः भूनः সিদ্ধ মভোজ্য মন্যত্ত হিরণ্যো-मक म्मां । देशि वाक्षाव्यः ॥ बञ्जनिकिविभिक्तः।. यथा। অথ মন্ত্রসিদ্ধে রুপাষাঃ। গৌ-তমীষে। সমাগনুষ্ঠিতো মন্ত্রো यिन मिक्ति न জाया १ भून **ख्युं**नव कर्खवा॰ छङः मिस्का ভবেদ্ধুবে।। পুন রনুষ্ঠিতে। ম-खा यिन जिल्लि न जायरछ। পুন স্তেনৈৰ কৰ্ত্তৰ্যণ ততঃ দি-জোন সংশ্यः ॥ পুনঃ সো श्नृष्ठिए वा या या विकास জাযতে। উপায়া স্তত্ৰ কৰ্ত্ত-ব্যাঃ সপ্ত শঙ্কর ভাষিতাঃ ৷৷ ভ্ৰামণ রোধন বশ্যু পীডন

পোষ শোষণা 'দ্ৰান্ত' ক্ৰ-बार अव्यार उठः शिका उत-মনুঃ।। ভাূমণ বাষ্বীজেন ধ-থানুক্রমযোগভঃ। ভন্মন্ত্র ষন্ত্র जानिश निङ्क कर्श्त कक्ट्रेयः॥ উশীর চন্দনাভ্যান্ত মন্ত্রণ সংগ্র-थिड॰ निरथ९। की द्राका मधु তোষানা মধ্যে তল্লিখিত ভ (वर्।। शृकनाष्क्रशनास्क्रामार जुानिकः निकित्ना जरवर। जु-মিতো যদি ন সিদ্ধঃ স্যাজে।ধ-ন· ভদ্য কার্যে**ৎ।।** সারস্বতেন বীজেন সংপৃতীক্তা সংজপেৎ। এবং রুদ্ধে ভবেৎ সিদ্ধো ন চে **(मञ्चनीमृद्धा)** जनक ठन्पन॰ अर्थे श्रिषा भाषन गिना। **এ**-তৈস্ত মন্ত্ৰ মালিখ্য ভূৰ্জ্জপত্ৰে সু-**माजित ।।** शार्या कर्छ जरव मिकः शीष्ठनः वामा कान्नरयः । অধরোক্তর যোগেন পদানি প-রিজপ্য বৈ॥ খ্যাযেচ্চ দেবতা॰ তদ্বৎ অধরোত্তর ৰূপিণী । বি-मा गामिञामूरक्षन निथिषाक्रमा চাঙ্ঘ্ণি।। তথাভূতেন মস্ত্রেণ रहामः कार्या मिटन मिटन। शी-**जिट्छा लब्ज्याविकः निष्कः म्या**-দথ পোষ্যে ।। বালাষা স্ত্রিত্য

বীক্ত আদ্যন্তে তদ্য বোজবেৎ ा लाकीत यथूनानिया विमान भारनो विভावस्यथा। भाषिहजा १४॰ खरवर मिस्का न छ ९- अवी ভ লোৰণং। ছাজ্যান্ত কাৰুবী-काना मञ्च वर्गाविषर्श्विन ॥ वन विका शदन धार्या निश्वा বরভন্মনা। শোবিতোপি ন সি-👣: माष प्रशीरमा १भिकीकुछः ॥ चारश्रदबनज् वीरकन महरेमा-देकक सकत्। जामाञ्च सम् छेक्-क रमाजरमा एक प्रिशा उक्कर् क्रमा देखला यस यानिया था-त्रस्थ । कर्श्वरम् ज्ला मनः **নিক্ষঃ স্যাচ্ছকরোদিত** ।। ইত্যে-छ । कथिछ । नगक् (कवन । छव ভক্তিতঃ। একেনৈৰ ক্লুতাৰ্থঃ স্যা-बर्जिः कियु मृद्यत् ॥ ই ि ठ छ मातः॥ ।। मिक्किविनिकः। म ह চতুক্তি শবিধঃ। বথা। চতুক্তি॰ निष्: निष: नर्कर्याशकात्र ৰঃ। ভ মুগৈতি স্বয়ণ সিদ্ধা ভক্ত স্ত নৈৰ বাঞ্জি।। দাত্ৰি শদ্ধি সিক্ষ সৰ্বসাধনকারণ । মশুখাৎ धायछा॰ नन्म निष्मयञ्च॰ गृहान ह।। অনিমা লঘিমা প্রাপ্তিঃ প্রাকা-या यहिया छवा। ञ्रेनिचक विन

वक्ष छथा कायावनाविछा।। मृत-खन (यदि कात्रकायाः श्रद्ध-भनः। यदनावाविष (यदि म-वेख्य प्रक्षी शिष्ठः।। विद्व खनः कनस्यः कित्रकी विष्य (यद या।। वाष्ट्र खन्यः मृत्यानामा निर्धा-वाष्ट्र खन्यः शिशामा निर्धा-क्तिकिः भृषानयन मीश्रिष्ठः। मृत्योनाः कात्रगटेक्य शालाक्य-व (यद ह।। शालानाक्ष श्रामाकः। कालां स्वानाक स्व स्व स्व स्व ।। देखि-वाणां स्व स्व स्व देवदर्ख श्रिक्यः-क्राव्य १५ स्व शायः।।।

जिसकः पुर निक्र्वातः॥ भ.नः । देखित्राक्रनिर्वकः॥

मिक्कारमध्री जी कामाधायाः
निक्कारमध्री जी कामाधायाः
निक्कारख्या क्रिक्श क्रिका क्रिका क्रिका मिक्का क्रिका क्रिका

का निर्देशियमवेजा निर्माण ह्मचती या ॥ विभूमविख्यमा-.बी त्यत्रवङ्गा मूक्नी मनिष क्त्रकंपंछ। गामि ज्यावन्या । वनिज्ञ पृनिष्श त्वानिमूजा-लमखी भवनहलनमञ्जा मृश्य-তহানভাগা॥ ইতি কালিকা-श्रुद्वांदन ७३ जशायः ॥ निष्णाका जी मनाकिमी। देखि किंगियद्वः ॥ मिद्धजन की काश्चिक। देखि श्रात्रावणी ॥ शक्कात्रि ह ।! मिकारमवः पूर् निवः। देखि नक्रव्यावनी।। সিদ্ধাতৃঃ পু॰ পারদঃ। ইভি ত্রিকাপ্তশেষঃ ৷৷ जिक्क शोठः शू॰ जिक्क शानः। यथा। জাভো লক্ষবলি ৰ্যত্ত হোষো বা काष्ट्रिमः श्राकः। महाविष्गाकः • পঃ কোটিঃ সিদ্ধপীঠঃ প্ৰকীৰ্ত্তি-जः ॥ देखि **खब** ॥ मिकभूतः क्री ভृগোলস্যাধো-रम्भवित्मयः। यथा। लका अभ-ধ্যে ষমকোটি রস্যাঃ প্রাক্ প-न्हित्य द्वायकशखनकः। अध-স্তুতঃ সিদ্ধপুর সুমেরঃ সৌম্যে २व वाट्या वजवाननक ॥ अवुः

ভণাদাভিত্রিভানি ভানি স্থানা-मि वज्रमानविद्या वनिक्।॥ रेि निकास्निद्धायिकः ॥ मिक्र भून्यः भू॰ कत्रवीतवृकः। ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ।। निकथरगाजनः पुः शोत्रमर्यभः । ইভি ব্লাজনির্ঘণ্টঃ।। निक्षमञ्जः पुः निक्षिश्राश्चमञ्जः। ৰথা। ভাত্তি-শবিধ সিদ্ধ সৰ্ব-जाधनकात्रनः। वेग्रुथां क्षार-তা॰ নন্দ সিদ্ধনন্ত্ৰ গৃহাৰ চ ॥ ७म् मर्दिश्वताच मर्वविष्वविमा-नित्म मर्मुम्मनाय चाट्राङाउ॰ मखण्ड गर्दियाः कल्लगानगः। मायदरम ह कथिकः मिकानाः नर्बनिक्षितः॥ जल्म सार्गनः मिका यूनीखाक मुद्रा खथा। **শ**তलक्षरगरेनव मसिनिक्कि र्छ-रवर महा।। देखि बक्रदेवदर्ख बोक्क कन्न थर ७ १४ व्यथा यः ॥ নিজমোদকঃ পু॰ তবরাজোন্ড-वथखः। ইতি রাজনির্ঘণ্টः॥ निक्रवागिनी जी वागिनीवि-শেষঃ। ইত্যপরাজিতাস্তোত্ত।। সিল্লরসঃ भू॰ পারদঃ॥ রসসি-कः। ইত্যজ্यभागः॥ সিদ্ধরসঃ ত্রি খাতুপ্রভৃতিঃ। ইতি

रमिनी श निकविका। जी महाविकाबिद्रनवः । वथा। कानी जाता वर्गिका। रबाष्ट्रभी जूबत्नश्री। देखेवी क्षिमखा ह विमा। मुमावकी कथा ॥ बगनामूथी मिक्बिगा माछ-की कमलाश्चिका। अठा क्ल म श्विमाः मिम्नविमाः श्रकी র্ত্তিতাং ৷৷ ইভি তন্ত্রসারং ৷৷

रिमक्तर्गालल की काञ्चिक । ইতি ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ॥

निक्रनाधन की निक्रमा रहनः माधनः। माधाबद्धानिन्छसम-ছেপ্যনুষান । যথা। অতএব ন यक्यानिकिः निक्रमाधन वा। ইতি সিদ্ধান্তলকণেজগদীশঃ!৷ निक्रमाधनः श्रु भीत्रमर्गः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

निक्रमाधाः । भू यञ्जवित्मयः। यथा जिक्निकः । जिक्निटका यएथा-ক্তেন বিগুণাৎ সিদ্ধসাধ্যকঃ। সিদ্ধসুসিদ্ধো হৰ্মজগাৎ সি-काति रंखि वास्तवान्।। रेखि ভন্তসারঃ ৷৷

সিন্ধসিদ্ধঃ স্ত্রী গদা। ইভি ত্রি-কাওশেষঃ ৷৷

विक्रमूत्रिकः भूः यस्रवित्नयः।

সম্বাত্ত

यगा क्षेत्रावः जिल्लगांशान्त्व अक्बा॰॥ निक्रानः शुः कार्डिक्यः। देखि मक्त्रश्रावनी ॥

সিদ্ধবেরবিতঃ পু॰ বটুকভৈরমঃ। ইতি তদাকৌত্তরশতনামন্তো-ত্র॰।। সিদ্ধ জনোপাসিতে ত্রি।। मिका जी शकिः। ইভিরাজ-निर्घकः॥ (बानिनीविटम्यः। यथा। यक्ना भिक्ता धना। ভাৰরী ভদ্রিকা তথা। निका नकि। ह स्थानित्नारकी প্ৰকীৰ্ত্তিভাঃ॥ ইতি জাতকদী-পিকা ॥

मिकां छः पुर পूर्वभकः नित्रगा-সিদ্ধপকস্থাপন । ইভি ভরতঃ ॥ जर्भवावः। ब्राकासः २ १ रेठामतः॥ नवविधरक्याछिर्ध-शाः। यथा। जनगिनासः अ সূৰ্য্যসিদ্ধান্তঃ ২ সোমসিদ্ধান্তঃ ৩ বৃহস্পতিসিদ্ধান্তঃ ৪ গর্গনি-काखः द नात्रमनिकाखः ७ भ-রাশরসিদ্ধান্তঃ ৭ পুলস্তাসিদ্ধা-ন্তঃ ৮ বশিষ্ঠসিদ্ধান্তশ্চ ১॥ ত-জ্ঞাধিকরণাজ্যুপগমস্ স্থিতিঃ সি-काखः। म ह हजूर्विवः। मर्वज-ম্ব প্রতিতম্ভাধিকরণা ভাগগমস•-

হিত্যপান্তরভাবাৎ। সৰ্বভন্তা-বিরুদ্ধ স্তন্তে ২ধিরতো ২৭ঃ স ৰ্ভন্তবিদ্বান্তঃ॥ গা সমানভন্ত-সিদ্ধঃ পরতন্ত্রাসিদ্ধঃ প্রতিতন্ত্র निकाखः॥ २॥ वष्निकादनाः প্রকরণসিদ্ধিং সোধিকরণ সি-দ্বান্তঃ॥৩॥ অপরীক্ষিতাভ্যু-পগমাত্তবিশেষপরীক্ষণ মত্যু-পগমসিদ্ধান্তঃ 11811 ইতি গোত্ৰসত্ৰ ।৷ সিদ্ধান্তাচার: শু ভান্তিকাচার-वित्नवः। वथा। जाजानः प्र-वछा॰ यदा बद्धरमवीक मान-रेनः। नता खबः नता भाखः সিদ্ধান্তাচার উচ্চতে।। ইত্যা-চারভেদতন্ত্র ॥ সিকান্তী^ন পু॰ মীমাণসকঃ। ইভি ভূরিপ্রবেগগঃ ৷৷ निकाभगा जी भना। देखि (दम-हिला है। সিদ্ধাধিকা স্ত্ৰী চতুৰি শতিবৃদ্ধ भामनदमवं अर्ज्जा कर्म वी विद्रभ-यः। ইতি হেমচন্দ্রः॥ সিদ্ধারিঃ পু॰ মন্ত্রবিশেষঃ। এতৎ श्रमानः निष्ननाश्रमत्य प्रकेवाः मिकार्थः भ् वृत्वार्थभिषा। रेि एकासः॥ माकामि॰ इः।

रेडि विनिनी।। (यंडमर्क्यः। रेजायद्वः॥ जामा भर्गावखनाः । भौत्रनर्वभाष्य फर्केबाः ॥ विविकः। देखि ब्राक्जिमिकः॥ धिनिकार्थः। यथा। निकार्थः সিদ্ধসম্বন্ধ শ্ৰোভূ শ্ৰোভা थवर्डए । अशामि एवन व-ক্তব্যঃ সম্বন্ধঃ সপ্রধোজনঃ ৷৷ ইতি ব্যাকরণটীকা।। দিকাৰ্থা ত্ৰী চতুৰ্থজিনমাতা। रेखि (रूमहस्यः ॥ मिकिः खी मूर्गा। यथा। माथना সিদ্ধি রিভ্যুক্তা সাধকা বাথ ঈ अती। देखि प्रवीभूतारम १६ ' शावः॥ अकिनात्योगशः। हेजा-मद्रः ॥ सागवित्यकः॥ निष्णः **खिः॥ भा**ष्का॥ चर्छाकः॥ वृक्तिः। ইতি यिनिनी।। योकः । देखि (इमहन्तः॥ मन्मिखः। रेि धत्रनी ॥ वृष्टिः। रेि भय-त्रज्ञावनी॥ ।। अरुनिक्निनाः यनक्षानि वथा। अनिया यहि-मा टेठव निष्मा श्रीशि दाव ह। প্ৰাকাম্যক তথেশিদ্ব বশিদ্বক তথাপর ।। যত্ত কামাবসাষি-ত্ব গুণানেতানধৈশ্বরান্। প্রা-গ্নোভাষ্টো নরব্যায় পরনির্বাণ-

সূচকান্।। সূকাৎ সূক্ষতরো श्नीयान् नीयुषाझयिमा खनः। মহিমাশেষ পূজাদ্বাৎ প্রাপ্তি र्नाक्षाणा यमा य९॥ व्याकामा মস্য ব্যাপিত্বাৎ ঈশিত্ব চেশ্ব-রো যতঃ। বশিদ্বাৎ বশিতা নাম ষোগিনঃ সপ্তমো গুণঃ।। ষত্ৰেচ্ছাস্থান মপু্যক্তণ ষত্ৰ কা-यावनायिजा। अश्रयाः कात्र-লৈ রেভি র্যোগিনঃ প্রোক্ত ম-किथा।। ইতি মার্কণ্ডেষে দত্তা-**क्यानर्कम**्वारम स्थागदञ्च-नामाधायः ॥ 🕸 ॥ जातनामिः क्षि यंथा। छीटर्थ काटल श्लीके-**(मर्ट्स धर्दा) मरख ज्राविष्ट । बाइ। চ रा**मृगी रामा॰ मिक्कि खामाक जामृगी॥ हेि वंदा-বৈবর্ত্তে শ্রীক্লফজন্মগণ্ডে ৩৯ व्यथायः॥ ॥ ज्ञाना निक ৰ্যথা ৷ তম্মাৎ স্বমপি ভূপাল **(मिर्ट् ना) या क्किंड अन्। मा** নাৎ জ্ঞান ততঃ প্রাপ্য জ্ঞা-विक्रभूतात नित्व क्रभाशान-नायाधायः॥

সিদ্ধিদঃ পু॰ বটুকভৈরবং। ইতি ত্যা স্তোত্রণা সিদ্ধিদাতরি ত্রি

। यथा। नधूमारम जू मः श्रास्थ শুরুপকে চতুর্দশী প্রোক্তা ম-দনভঞ্জীতি সিদ্ধিদা তু মহোৎ-मद्र ॥ देखि छिथा। पिछञ्ज ॥ শুভবোগবিশেষঃ। যথা। শুক্রে नना वृद्ध , ज्जा गत्नी तिका म्द्र क्या। खुद्री भूगी हमः-যুক্তা সিদ্ধিযোগঃ প্রকীর্ত্তিতঃ ।। ইতি জ্যোতিঃসাগরঃ।। निकिरगागिनी खी रगागिनी-**७**नः। यथा। श्रेनवानग्रन्छ या-विमाः मृजात्मी न मगीतिजाः १ ष्मगार्क्षेव वित्नत्या यथ त्याचि-किए ममुलामरयए॥ जाकिनी সা ভবত্যেব ডাকিনীভিঃ প্র-'জাযতে। পতিহীনা পুত্রহীনা যথা স্যাৎ সিদ্ধিযোগিনী॥ ইতি **তञ्जनांतः ॥ %॥ मक्त्रा शक्ः**। শৎকন্যাঃ। যথা। সতী জ্যো-তিঃ স্মৃতিঃ স্বাহা হ্যনসূষা স্বধা তথা। প্রীতিঃ ক্ষমা চ সংভূতিঃ সন্নতিশ্চ অরুম্বতীশা কীর্ত্তি र्लची ४ वि (मंशा भूषिः अक्षा क्रिया मिडिश विश्व लेक्का वश्रुः শান্তি স্তব্দিঃ সিদ্ধি স্তথা রক্তিঃ

॥ অরুন্ধতী বদুর্যামী লয়। ভানু

र्यक्रवि । जनमा ह मृद्धा ह जाशा विश्वा ह नामछः ॥ जनि-जिक्त मिलिटेक्ट मन् कानाम-नाम्या। जिक्ता ज्वा क्रक विनला ज्वालः भना॥ द्याका देनला ज्वालः भना॥ द्याका देनला ज्वालः भना॥ द्याका देवा ह त्यावा ह मक्कनाः श्व-कीर्खिलाः । अकाम्य निक्वि-वाणिनाः नर्वत्नाकमा मालवः ॥ देलि वङ्गिन्वात्व भन्दलम-नामाशायः ॥

সিদ্ধিলী ন্ত্ৰী ক্ষুদ্ৰপিপীলিক। । ইভি কেচিৎ ।।

क्रिंग विभूतास्कः। अर्केट-कः हरकाष्ट्रामः क्रमानाक्ष्यः नामकः। अस्तिकः श्रद्धास्त्री-शः स्नातात्म्यानि वर्स्वर्यः।। हेि मिनीभूतार्यः स्थानिन-नामाग्रायः॥

मिट्युवी जी प्रवीवित्यवः। यथा। त्रिका॰ निटक्षयंत्री॰ निः कविन्ताधतगरेन यूं छा । यस नि किथमा॰ रयानिमिक्तमा॰ नित्र-শোভিতা ।। ইতি মুখমালাত-**ख ३३ भेटल महाविमाट्यांब॰** । অপিচ। ক্লফেন বলভডে। গোপৈঃ ক সজিষা সুভিঃ। স-ক্ষেত্ৰকণ ক্ষত্ৰণ তত্ৰ মন্ত্ৰনিশ্চযকা-त्रकः ॥ जना मत्कल्टेकः मा ह निका দেবী প্রতিষ্ঠিতা। দিক্ষি-প্রদা ভোগদা চ তেন সিদ্ধেশ্ব-রী শৃতা।। সঙ্কেতকেশ্বরীঞৈব मृकृ । निक्ति यवाश्रया । ইতি বারাহে মথুরাপরিক্রমপ্রাদুর্ভা-व नागाशासः॥

निक्तियः भू॰ श्वक्रक्रमितिस्यः। यथा ज्ञा श्रव जाता श्वक् निक्षा मृक्षीमृक्ष कन्यमान्। कर्कुरकरमा रामास्करमा नीन-कर्ला नृषश्वकः॥ मिरगोषाः

बज्जुडः। विशिष्ठः कूर्यनाथक मीननारका मरम्बतः ॥ इति नात्था गानत्वेषान् मृशू वक्गा-मि छम् ध्वम्। छात्रावछी छान् यठी क्याविमा यटहामती।। সুখানশঃ পরানশঃ পারিজাতঃ जल्यतः। विक्राशः स्कत्वी চ কথিত তারিধীঙ্গল ।। ত্থা-नमनाथ भकान्ता छत्रवः नर्बः সিদ্ধিদাঃ। স্ত্রিযোপি গুরুৰপা-শ্চ অয়ান্তাঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ।। ইতি তন্ত্ৰসারঃ।। অন্যচ্চ। ত্র-कानमः शूर्वत्व कनित क-লাচলঃ। সমারঃ ক্রোখন শৈচব ভথা ह अब्रहीशनः॥ यासा या-वावनी टेंडव मानदोषान् भृन्-প্ৰিষে। বশিষ্ঠঃ কূৰ্ম্মনাথশ্চ মী-ननारका मटक्षतः ॥ क्रिनारका यानद्योगानश वक्यांनि मन्थ-बन्। देखि मक्जित्रज्ञाकत्रब्यः॥ তথা। নারদঃ কাশ্যপঃ শস্তু र्जार्गदः जनको निकः। এতে ·পঞ্চ बङ्गादम्य मिटकोषाः পরি-कीर्खिजाः॥ देखि छञ्जः॥ শিশ্ব ক্লী কিলাসরোগঃ। ইত্য-गद्भः ॥

निकिया विश्व निक्षीयान मृग् निवा की किलामद्वाकाः। देखि ट्याट्सः ॥ দিয়লঃ ত্রি কিলাসী। ইত্য-भद्रः ॥ বিশ্বলা স্ত্রী মৎস্যবিস্কৃতিঃ। ইতি व्यक्तिनी ॥ निश्ववान् बि किनामद्रागविभि-कः। ইতি निश्चानकामसार्थ বভূপ্রত্যবেন নিশারঃ।। 'সিগ্না জ্রী কিলাসরোগঃ। ইভি হেমচন্ত্ৰঃ 11 সিধাঃ পু॰ পুষানকত্ত। ইতা-बद्धः ॥ मिधुः पु॰ माधुः॥ वृष्णः। हेजू-नामिटकोषः ॥ সিধুক। ন্ত্ৰী বৃক্ষবিশেষঃ। সেধৃতি রোগহন্ত মতি সিধুকা। সীধ ইতি খ্যাতো বৃক্ষঃ। বিধু গত্যা॰ নাম্লীতি রক্ ততঃ স্বার্থে কঃ मङ्गाविद्य द्विनिज्ञां । न है । ইত্যমরভরতো ॥ निधुकावन की जिद्यामान। ইতি ত্রিকাপ্তশেষঃ॥ • जिन की भन्नीतः। ইতি मः कि श्व गाद्रागामिवृक्तिः ॥ সিনঃ 🥞 আসং। ইতি মুগ্ধবো-थ्वाक्रियः। देखि

किट्या अङ्ग अविनिष्के विश जिनी वि अङ्ग अविनिष्के। यथा १ स्वा जिला जिनी स्मानी । देलि व्याफिः। देलि जिनी वानी भक्ष किवाया अद्युष्ट ।। जिनीवानी खी मृस्के मुक्नाया-वाम्या। देलायद्या । मा क्लु-कंभीयुकायावाम्या। जिनी स्थ ला वाना क्ष्यक्र नाम्या । जिनी स्थ ला वाना क्ष्यक्र नाम्या । जिनी स्थ ला वाना क्ष्यक्र नाम्या । जिनी स्थ खीकाया अद्युष्ट । देलि क् सिम्पर्के स्थ जिल्ला विश्व । देलि स्थिति ।।

সিন্দুকঃ পু॰ সিন্দুবারবৃক্ষঃ। ইত্য-

मिन्त्वातः प्र वृक्षविध्यश्व नि मिन्त्वा देखि छाषा। देन छूत देखि ह कहिए। छए पर्यापः। मिन्द्र कः २ देख्य मृतिमः ७ निर्छ्खी ८ देखानिका ६। देखानी ५ मृतः ७ मिन्द्र्वातकः १ देखानी ५ प्रोत्नाची २ म्यानी २० का-मनामिनी २२। देखि तञ्जरकाषः १। स्थळ प्रमाः २२ मिन्द्र्वातकः २७ दित्रमाधनकः २८ खनसुः २६ मिन्द्रकः २७ खर्यमिन्द्रकः २१। खमा खनाः। कर्ष्ट्रकः १ कृष्टि मृत

जिक्य

नागिष्। कार्यमिषिनष्क। इंडि ब्राक्रनिर्वन्छैः॥ अशि ह। निन् कः पृष्ठिम खिङाः कषायः कर्हे-কো লয়ুঃ ৷ কেশ্যো নেত্ৰছিতো হস্তি শূল শোথাম মারুতান্।। क्रिय क्षेत्रकि क्षिय वनामी-लाशि छिष्या। निस्त्वात्रमलः **ত** जु वाष्ट्रसम्मरतः नयू ॥ देखि ভাবপ্রকাশঃ॥ 🛊॥ স্যন্দ বা-রয়তি সিন্দুবারঃ ষণ্ নিপাত-নাজ্জিঃ অত উচ্চ। সিন্দুক সি-न्पूरादो पछामामी তर्गक्ठी-ষবস্তাবিভি বহবঃ। কেচিত্রু সি-ন্ধু সমুদ্র মপি বার্যতি শোষ-ষতি তীক্ষরসত্বেন কফম্বত্বাৎ निक्र्वातः निक्र्क निक्र्वादतो তবৰ্গ চতুৰ্থবস্তাবিত্যাহঃ। ইতি ভরতঃ ৷৷

मिण्रः की तक्तवर्गपूर्वित्मशः।

मिण्र इि जाशा ज्यभगायः

1 नागमज्यः २। इज्यतः॥

नागत्तवः ० तकः ८ मीमज्रकः

६ नागकः ७ नागगर्जः १ त्मानः

४ वीत्रतकः २ गत्नमञ्चनः ३२

मन्नातागः ३२ म्यातकः ३२

रमोजागः ३० ज्यकः १८८ मन्न

नाः ३६। ज्या छनाः। कर्ष्यः।

. শিশ্ব

পণত্ব। সন্থাসু ভূম কণ্ঠতি বি-नर्भ भगनष्यः। ইতি রাজনি-र्षण्डेशका जिन्द्र রক্তরেণুঞ্চ নাগগর্ৱঞ্চ সীসজ্। मीरमार्गेभाजूः मिन्मृतः श्वरेन ख मीमवद्यालः ॥ मःरमागक्रथलाः বেন তস্যাপ্যন্যে গুণাঃ স্মৃতাঃ ৷ मिन्मृत मूख॰ वीमर्भ कर्छ कर्ष्ट्र বিষাপহ্ ৷৷ ভগ্নসন্ধানজনন खन लाधन दाइन ॥ 🛊 ॥ मि-न्द्रमा भाष्य याहा पुकाञ्च-যোগত শুদ্য ৰিশুদ্ধি গদিতা वृदेशः। इंडि ভাবপ্রকাশः॥॥॥ मिन्तृत्रमान्यस्या वथा। मिन्तृत्रक বর রম্য ভালে শোভা বিবর্দ্ধ-न•। भृत्रन• ভূষণানাঞ **मिन्मृ**त• প্রতিগৃহতা ।। ইতি বন্ধবৈ वर्खि श्रेक्षिथिए २३ व्यथप्रायः ।। 🛊।। তস্য ধারণাৎপত্যু রাযু-र्विक येथा। इतिजा॰ अक्रूमरेकव সিন্দুর কজল তথা। কার্পা-সকঞ্ তাষূল মাঙ্গল্যাভরণ শুভ ৷৷ কেশস কার কবরী কর কর্ণবিভূষণ । ভর্তু রাযুষ্য মিচ্ছন্তী দূরবেদ্ধ পতিব্রভা।। ইতি কাশীখণ্ডে ৪ অধ্যাষ্ঃ।।

निमृतः पुर वृक्कवित्मवः। इंडि व्यक्तिनी ॥ मिष्मृत्रकात्रवः क्री मीमकः। ইভি ट्याञ्चः ॥ मिन्दृतिककः भूः इस्ती। हेकि विनिनी ॥ निम्नृतिज्वका खी मधवानाती। रें छि त्यिषिनी ॥ मिन्दृत्रभूणी जी भूणवृक्तविरण-यः। তৎপर्यायः। मिस्तूती २ बीत्रभूकी ७ ज्नभूकी ६ कतः চ্ছদা ৫ শোণপুশী ৬। অস্যা-खनाः। क दूषः। छिक्छषः। क-ষাযত্ব। শ্লেম বাত শিরোর্ভি र्जूछनानिषः। ठखीश्रियष्कः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

तिस्तृती जी त्राह्मी।। त्रक्टहिन्
लिका।। शांक्की। देखि यिपिमी
मिक्कः भू॰ मगुजः। देखामदः।।
वस्र्यः।। प्रभवित्मयः॥ नपवित्मयः। देखम् देखिशांकः।
देखि यिपिमी॥ गजमाः। देखि
सम्बद्धाः। मिक्नुवाद्यक्षः। देखि
मक्ष्विका।। त्युक्षेष्ठः। देखि
वाक्षिकिः।। त्रागवित्मयः।
मह भानत्कोमदागभुजः। यथा
। माध्यः त्यांकनः निक्नु स्वाक्र

সিশ্ববা

(भवाज् अखनाः। कनिनः সোম में मुकः कि निकमा मू-তा रेत्य ॥ रेिंछ मन्नी जिमक्षुः ॥ ननीवित्ययः। खब्जनश्रमः। শততো বিঁপাশাযুক্তঃ সিন্ধুন-म्याः मूनीज॰ लघू याम् **म**र्वात्र-यम्। जनः निर्मानः पीलनः পাচনঞ্চ প্রদত্তে বলং বৃদ্ধি মে-धायूयकः ॥ इंडि त्रांकिनर्घकः॥ भिक्रुः खी निर्मा देखि (मिनी।। निस्तूकः पू॰ गिस्तूनात्रवृकः। ইতি मका किया। निम्नू हकः श्रु॰ मनूष्रका इंडि শক্ষরত্বাবলী ॥ সিদ্ধকর ফ্রী খেতটকণ । ইতি রাজনিম্ণীঃ গা দিন্ধুখেলঃ পু॰ সিদ্ধুদেশঃ। ইতি यकत्रपावनी ॥ भिक्षूषः क्री देमस्तवनवणः। ইত্য-মরঃ।। সমুজজাতে ত্রি॥ मिन्नूजमां की देमसदनदन । इंडि त्र वाला ॥ সিমুজমা পু চন্দ্র:। ইতি জটা-वतः ॥ সিমুজা স্ত্রী লন্ধীঃ। ইভিজ্টা-ध्यः ॥ সিন্ধভা জ্রী ৰালবরাগভার্যা 1

यथा। शानुशी यालनी तायकि রী চ সিশ্বুডা তথা। অশ্ববারী टेज्द्रवी ह गानवमा थिया देगाः ।। ইতি সঙ্গীতদামোদরঃ।। गिक्नुनकनः पुः हसः। ইভি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। मिसूनाथः भू ममूसः। ইडि কেচিৎ গা मिमू भूखः भू॰ वर्क हिन्तुः। देखि मक्टिक्का।। ठखका।। সিন্ধুপুষ্ণঃ পু॰ শঘঃ। ইতি শব্দ-हत्यका। मिक्रुमञ्जः क्री रेमक्रवनवनः। रेंछि त्रज्ञमाना ॥ मिक्तूदः भू॰ रखी। ইতি হেম-ठखः ॥ मिन्नूत्रष्वरी भू॰ मि॰इः। मिन्नूत्र॰ **श्खिन॰ (षिके हेजार्थ निन् ध-**ত্যবেন নিষ্পন্নঃ।। मिक्क्**लवण क्री टेमक्ववः।** ইভি त्रभाना ॥ निकृवातः पुः रुपालमः है हि बिकाखरमयः॥ भि ्वाववृद्धः। यथा। विमूक्षकः मि द्र'तः भि-দ্ধুক সুরসোগি চ। তথেন্দ্র तम खिक्समूरिमः मिस्वारिङः ॥ नि अंधीखानित्वकानी मूत्रमा ॥ व्यमा खनाः। मिस्नुवादता विव स्मिया जन अर्थ क्यां गरः। देखि রাজবল্লভঃ ॥

मिस्र्वातकः श्र मिस्र्वातवृकः। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

সিদ্ধুবারিতঃ পু সিদ্ধুবারবৃক্ষঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

मिम्नू दियगः भू॰ गञ्जाती वृकः १ ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

मिक्रू भगनः श्रु विक्ः। की द्राप-भाषिषा ।।

मिक्रुगन्नमः पू॰ नमीनमममूफा-नाः भव्यभव्यवस्य । र्यायः। मत्यमः २। ইত্যমतः ।। मित्क्वा र्नटमाः मक्रत्या व्य-नकः मराजनः। माजमाज मि-লন্তি অস্মিমিতি সন্তেদঃ যঞ । निक्रू भरकन नहीं नहः म्यू फ শ্চোচ্যতে তেন নদ্যো নদযো र्ने मि ममु प्राया कि त्या कर मारा मः। ইতি বৈস্ঠাদ্যः। ইতি ভরতঃ ৷৷

गिक्कृ**खव॰ क्री टेम**श्चवनवगः। ইতি त्रज्ञगाना ॥

मिकृशन की रमन्नदनदन । देखि श्वावनी॥

मिक्र्वातकः। देखि गस्त्रप्नावनी मिथा क्री मद्रावत्रवित्मयः। यथा । এতশ্মিমন্তরে শস্তু: সিপ্রণ ত্য-জুা তদা সরঃ। গঙ্গাবতার মগ-य १ हिमव ८ थ इ मू खम ।। इंडि कानिकाभूतात्व ८३ ज्यासः ॥ সিপ্রঃ পু॰ চন্দ্রঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-(गरः॥ निषाचननिनः। वर्षः। रेडि मिनिगी।।

मिश्रा जी नमीर जनः। देखि त्य-मिनी।। मा जू छेड्डियनीटमम-সমীপে বৰ্ততে। তস্যা উৎপ-खि र्यथा। **এব॰ বিবাছ वि**धिव**९** मोवर्ष यानमाहला। अङ्क তী বশিষ্ঠস্ত মোদ মাপ ত্যা স‡।। তত্ত্ৰ যৎপতিত তোষ यानमाठलकम्पद्ध । विवाहाव-ভূতাৰ্ধায় শাস্তার্থ• চ পুরাক্তত• ।। বন্ধ বিফু মহাদেব পাণিভিঃ সমুদীরিত। তত্তোয়ণ সপ্তধা ভূষা পতিত মানসাচলাৎ ৷৷ হেমাজেঃ কন্দরে সানৌ সর-স্যাঞ্চ পৃথক্ পৃথক্। তত্তোষ॰ পতিত সিপ্রে দেবভোগ্যে স্ব-রোবরে॥ তেন সিপ্রা নদী জাতা বিফুনা প্রেরিতা ক্ষিতি । ইতি कानिकाभूतात २७ ष्यशायः ॥

नियः भू नमूलायः। यथा। व्यवि সিবি সিশুবিভ্যঃ কিৎ। সিবঃ नर्वः। देखि निकाखरकोयूनी।। निश जी भनी। यथा। ननी-শিশ্বি শিশ্বে সিম্বা সিম্বি রপীয্য-তে। ইতি दिकाशरकायः॥ (द ছিমিডা ইতি খ্যাতে শুঁটী ইতি খ্যাতে। শাম্যতি বৃদ্ধি রন্ধা শনী শনুভিৰ্য শনে নান্নীতি ইঃ পাচ্ছোণাদীতি ঈপি শমী তাল-ব্যাদিঃ শ্মেঃ পূৰ্বেণ বে নিপাত नामकात्रमा देख भिश्वाभि छा-লব্যাদিঃ। সিমা দন্ত্যাদি রিতি भूक्रदाख्यामयः मि পাত্র শিষি রপি 🐍 স্ত্যাদিশ্চ। ইতি ভরতী 🐗 🛴 निषिः खी निषा। ই हि विकेश-कायः॥ नथनामगन्नखवाः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥ সিম্বিজা স্ত্রী শমীধান্য । ইতি ভাবপ্রকাশঃ ॥ ভালব্যশকা-ब्राप्ति त्रि ॥ সিষী ন্ত্ৰী নিষ্পাবী। ইতিরাজ-निर्वकैः ॥ जिल ह। जिन्ना শিষীপুন্তশিষিত্তথা পুন্তক সি शिका। শिश्विषयक मधूत्र त्राम शांक श्वि॰ शक्ता वना॰ मार-

কর॰ প্রোক্তণ রেম্বলং বাছপি-ত্তজিৎ।। ইতি ভাবপ্রকাশং।। সিরঃ পুং পিপ্পলীমূলং। ইতি হেমচন্দ্রং।। সিরা জী নাডী।। অমুবাহিনী। ইতি হেমচন্দ্রং।।

মরটীকাষাণ ভরতঃ।। সিবরঃ পু॰ হন্তী। ইভিজটা-ध्वः ॥ नियाधिया जी जाधतका। यथा । সিষাধ্যিষ্যা শূন্যা সিদ্ধি বঁত্র ন তিষ্ঠতি। স পক্ষ স্তত্ত বৃত্তিত্ব-ब्हानामन् मिछि र्छादशा देखि ভাষাপরিচ্ছেদঃ।। मिह्दः भू सूरीवृकः। इंडि नकत्रवावनी।। मिङ्कः भू॰ गन्नजवावित्नयः। मि-इ। इंडि थाां ७ । ७ ९ भगां यः । তুরুদ্ধঃ ২ পিণ্ডকঃ ৩ যাবনঃ ৪। ইত্যমরঃ॥ সিহ্লকঃ ৫ পিণ্যা-কঃ ৬ কপিচঞ্চলঃ ৭ তৈলাখাঃ ৮ यादः २ यादनः ১०। ইতি **শব্দরত্বাবলী।। সল্লকী**ডবং ১১ পিষ্টকঃ ১২ তৈলপণী ১৩ বৃক-ধূপ: ১৪ ক্রুপ্তধূপ: ১৫। ইতি क है। ध्रतः ॥

मिक्ककः भू॰ मिक्कः। ইতি भक्त त्रञ्जावनी ॥ निह्नकी जी महाकी। ইতি भक-त्रज्ञावनी ।। সিহ্নভূমিকা ত্রী সলকী। ইতি गकते ज्ञावनी ॥ সিক্ষ্যঃ পু॰ স্ফটিকঃ। ইতি কে-हिए॥ সীক ঋ ও সেকে। ইতি কবি-कब्रफ्रमः॥ ॥ অमिमीकः। ७ **म्बन्ध** इंडि मूर्गामामः ॥ भीक कि जामृत्नि। देखि कवि-कब्रक्रमः॥ कि नीकवि नी-কতি। আমৃশি স্পর্শে। প্রমা-• जानवाातो मृगाः। इंडि **बूर्गामामः** ॥ সীকরঃ পু॰ শীকরঃ। ইত্যমর∙ টীকাষাণ ভব্নতঃ ॥ সীতা স্ত্রী লাঙ্গলপদ্ধতিঃ। ইত্য **(६ नाञ्चन द्रिथाया॰** यतः ॥ সিনোতি খনতি ভূমি সীতা ষিন্গঞ বন্ধে নামীতি তঃ निर्णाठनाष्मीर्यः। भीठा षर्छाः সাদিঃ। শেতে ভূবি ইতি শীতা তালব্যশাদিশ্চ। ইতি ভরতঃ ॥ 🛊 ॥ জनकत्राजनिषनी। मा कु बीतागणत्री। उद्भर्गायः।

বৈদেহী ২ নৈথিলী ৩ জানকী ৪ ধরণীসুতা ৫। ইতি হেমচক্রঃ ॥ ভূমিদন্তবা ৬। ইতি জটু।ধর: ॥ তস্যা উৎপত্তি র্যথা। অথ মে ক্ষৰতঃ ক্ষেত্ৰণ লাকলাদুখিতা ভতঃ। কেত্ৰ° শোধৰতা লকা নাম্না সীতেতি বিশ্রুতা।। লাদুখিতা সা তু ব্যবৰ্দ্ধত মমা-মুজা। বীৰ্য্য শুক্ষেতি মে কন্যা ञ्राभिতिष मर्यानिका ॥ इंडि वान्त्रीकीटम जामायटन ७७ मर्गः ॥ व्यशि ह। व्यथ लारक श्रेती नश्री র্জনকস্য পুরে স্বতঃ। শুভক্ষেত্রে হলোৎখাতে তারে চোতরকল্প-শুরুষানিজা পদ্মকরা বা-ক্রিটসন্ধিভা। সীতামুখে স-মুহিপন্ন। বালভাবেন সুন্দরী।। সীতামুখোন্ডবাৎ সীতা ইভাবৈয় নাম চাকরোৎ। ততো হভূদৌ-রদী তদ্য উর্মিলা নাম কন্যক। ।। ইতি ভটীকাধৃতপদ্মপুরাণ ॥ 🗱 ॥ अर्गभन । 🗦 ि यिनिनी । मा ज् जजाश्वर्यभन्। यथा। দীতা তু বন্ধদদনাৎ কেশবাচ-नामि गितिनिथरतरङ्गा श्रमा २४ः अमुवछी गन्नमापन मृक्षमू পতিবান্তরেণ ভদাশ্বণ বর্ষণ প্রা-

नीव्

চ্যা দিশি কারসমূত্র বভিঞ্ বিশতি। ইতি শ্রীভাগবতে ৫ क्याः॥ व्यभितः। यार्कत्यव छै-বাচ। বত্ত দেবসভা জুতা সামৌ ভদ্য মহাগিরে:। তত্র জাভা -(मयनमी जीकाशा वहनाबित्यः ৷ স্নাপৰিদ্বা ৰথা চন্দ্ৰণ সীতা-তোবৈ মনোহরৈঃ। চন্দ্রণ পপু र्वभवाकगा नर्द ए जिमित्री কসঃ।। তদা সীতাজল চন্দ্ৰশ নবোগাজ সামৃত । ভূছা নিপ-তিত ভিমান্ বৃহল্লোহিত সংজ্ঞ-কে ৷৷ তদিবৃদ্ধণ তদা ভোষণ ত-न्मिन् मद्रिम निर्माल । श्वर बका विवृक्ष गांकी ॥ তদ্দৰ্শনাজ্জলাত স্মাদ্ পকোত্তমা। চন্দ্রভাগে 🛎 বিধি শুক্তে স্বৰণ ততঃ ৷৷ ভাৰ্যা-র্থে সাগর স্তান্ত জ্ঞাহ বন্ধস-স্মতে। ইতি কালিকাপুরাণে ২২ व्यक्षांकः॥ विषीः॥ क्रेमा भ শস্যাধিদেবভা। ইতি নানার্থশ্ব-निमक्षत्री॥ मित्रा। ইতি রাজ-নিৰ্যন্টঃ। গঙ্গাসোভঃ। ধথা । গৰাষাম্ভ ভদ্ৰমোমা মহাভদ্ৰাপ পাটলা। তস্যাঃ স্রোতসি সীভা চ বঙ্গু ভঁজা চ কীৰ্ত্তিতা।' ভড়ে

म श्वकनकाणि गातिनी वन-बैनेब्रगा। ३७ मस्याना ॥ সীভাগতিঃ পু শ্রীরামচন্ত্রঃ 1 इंভि नक्तत्रज्ञावनी ॥ নীভাযাঃপতিঃ পু• জীরাষচক্রঃ मीछीनकः भू॰ मछीनकः। रेछा-भत्रतिकाषाः त्राषमुक्रिः॥ मी कातभू की मन्याना खनान् मी ८ क्रक १ द्रांशक नकः। यथा। भटका खनान्त्रारगायः अनामः मी १ हर न्या । दें वि दिय-क्रिक्षः ॥ সীত্য স্পী খান্য । ইতি হেম-PER: 11 সীতাণ ত্রি রুক্টকেত্রাদি। ইত্য-यतः भा मिता की जानगा। देखि जूति-প্রযোগঃ ॥ मीधः पू यमा । इति मक्त क्रा-न्वनी॥ यमारजमः। यथा। हे-**काः भटेक तटेमः** मिकः मीधः शक्ततमक मः। आदेय देख दाव सः मीत्रः म ह भीखत्रमः स्रृटः॥

দীযুঃ পরুরদঃ শ্রেষ্ঠঃ স্বরামি-

वन वर्गक्र । वाष्ट्रिकरता

क्रमाः स्वर्वा द्वावत्वा स्दर्

॥ विवसारका त्यांकार्यः त्याः

काषत्र ककामयान्। जनामन-खनः भौजद्रमः मन्त्वस्यः भृजः ॥ ইতি রাজনির্বন্টঃ।। मीशगन्नः भू तत्रवः। देखि नकः त्रज्ञावनी ॥ मीयू भूष्भः भू॰ कमश्रः॥ वज्रवश ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ मीधू पूष्णी जी धालकी। देखि त्राकिवर्षकः॥ मीधूत्रमः श्रु चागुत्कः। ইতি .वाक्रियंग्डः ॥ जीवूम छः भू वत्रवव्यः। ইতি व्राक्षियर्कः॥ সীধু की অপান। ইভিকে हिद ॥ जीशः पुः छर्गनामार्थकनगावः। কোষা ইতি ভাষা। यथा। বস্তু-ভন্ত অত্তানুজ্তস্য কেপাসম্ভ-वा अक्षृष्ठ शन इस्रामत्नान भीभाषिताक्ष्वभद्रः। সীপাদি যুক্ত করতর্পণে তত্ত্রৈব कती जिलान् मि अस्य । इंजि গোপালন্যাষপঞ্চাননক্তবিচা-त्रनिर्वशः ॥ সীমন্তঃ পু॰ কেশেষুবর্ম। সিঁতি रें ि जाया। रें ि द्याउसः॥

गर्डाधान मृत्को पूरमः मतन न्धनाथ भूता। यत्वे श्केरम বা দীমন্তঃ প্রদবে জাতকর্ম চঃ ইতি বাজবদ্ধাঃ ॥ नीयस्कः की विकृतः। ইতি व्राक्तिर्वकः ॥ मीयखकः भू॰ नद्रकावामः। यथा । লক্ষপঞ্চৈব নরকাবাসাঃ সীৰ-खकानयः। ইতি द्याट्यः ॥ भीयस्मि खी नात्री। रेका-यतः ॥ मीयरखाद्ययन की मन्द्रादिन ्रकृषे १७ कि विश्वतः॥ ७ वि-THA. ৰ্শনি পুংসবনং ন ক্লভং তদা ভাষাৰেৰ দিনে প্ৰায়শ্চিতাত্মক

ক্রিপ্রেব দিনে প্রাথশ্চিত্তাল্পক্ষর দিনে প্রাথশ্চিত্তাল্পক্ষর দিনে প্রাথশ্চিত্তাল্পক্ষর দিনে প্রাথশ্চিত্তাল্পক্ষর দিনে প্রাথশিচ্চাল্ল্যক্ষর কর্মান ক্রিয়া ভ্রাতৃত্তি স্তেন্যাল কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান কর্মান ক্রিয়া ভ্রাতৃত্তি স্তেন্যাল কর্মান পিত্রপ্রেমানে পিত্রপ্রেমানে পিত্রপ্রেমানে পিত্রপ্রেমান ক্রিয়া ভ্রাতৃতিঃ পূর্ব সংস্কৃতিঃ মাক্রমান ভ্রাতৃতিঃ পূর্ব সংস্কৃতিঃ মাক্রমান ভ্রাতৃতিঃ পূর্ব সংস্কৃতিঃ মাক্রমান ভ্রাতৃতিঃ পূর্ব সংস্কৃতিঃ মাক্রমান ভ্রাতৃত্যাণ সংস্কারাণাক্ষ

পৌৰাপৰ্য্য ক্ৰমাৎ ভ্ৰাতৃক্ৰমস্ত मामन विषय এव। विवाद छथा ष्ट्रणनाथ। ছ्लागश्रतिभिक्षे । দেবতানা বিপর্যাদে জুছো-তিষু কথ ভবেৎ। সর্ব প্রায শ্চিত্তণ ব্ৰন্থা ক্ৰমেণ জুহুষাৎ পুনঃ ৷৷ সংস্কারা অতিপত্যেরন্ षकालारक्रथ कथकन। हरेष्ठ **(एव अर्बील (य जूशनयना एधः 11** এতদিত্যনেন সর্বং প্রাবশ্চিত্ত ম-नूक्रके॰ छक्र প্রাণেব বিবৃত॰ । উভয়করণে তন্ত্রেণৈব মাতৃকাপূ-कामि। गनमः कियमारन जूमाज् ভ্যঃ পূজন সক্ত। সক্তদেৰ ভ বেৎ প্রান্ধ মাদৌ ন পৃথ ইতি ছন্দোগপরিশিষ্ট্র । গোভিলঃ। অথ সীমার্ক্তি व्यथरम गर्ड ठजूर्थ मात्रि मरश्रे २केटम वा। ज्यथं भू॰ भवनान खतः । भीमखः क्लात्रहनावित्नयः। वा শকৈক্যান চতুর্থাদিমাসানা তু-नाविषकनः। किञ्च शृर्व शृर्वकः-नः अभेखः। मगर्थमा (क्रभार्या-গां रें डि नागां । उड़क नव-ययागामि थायन्छि क्टेंब्र क-ৰ্তব্য । প্ৰথমগৰ্ত্ত ইত্যুপাদানাৎ । यनि कथिक्षितकुठ এठित्रान् ज्ञ-

कारत गर्जनात्म भूनर्गर्जाथ-পড़ी खरु कालनियरमा न কিন্তু গৰ্ভস্পন্দনে সীমন্তোদ্বৰনং यावम वालक्षमवः। ইতি मध्य-লিখিতোক্ত কালো গ্রাহ্ণঃ বৃহ-দ্রাজমার্ততে। যা নার্য্যক্রতসীম-ন্তা প্ৰসূতে চ কথঞ্চন। অঙ্কে নি-शाय ७ वाल भूनः मःकात यर्-**जि।।#।। रा**र्छ गारम श्केरमङ्गीका ञ्जिमिनक्रुण नन्म ভদ্রে ভিথी চ মৈত্রে মূলে মৃগাঙ্কে কর পিতৃ পবনে পৌষ বিষণু ত্রিযুগ্ম। शु-য্যাশাদিত্য রৌজে যুবতি হরি यरम वृश्वितक वाशि नर्श हत्ख তারানুকূলে শুভ মপি নিষত॰ माफ मीय खकर्य।। मृगा कत हि-তে लक्ष नवां एम भू श्रह्मा ह। কেচিছদন্তি সীমন্ত তথা রিক্তে-তরে তিথো ।। গোভিলঃ। প্রাতঃ সশিরক্ষাপ্লুভোদগগ্রেষু দর্ত্তেষু প-শ্চাদগ্নেঃ প্রাচ্যুপবিশতি। উক্তা-র্থ মেত্র। পশ্চাৎ পতি রবস্থায যুগমন্ত মৌজুম্বর শলাটুপ্রথ মা-বগ্নাতি অযমূৰ্জ্জাবতো বৃক্ষ ইতি। অগ্নেঃ পশ্চাৎ পতিঃ স্থিয়। যুগা-नि क़लानि यिचान् मला हूँ श्रःश नील खररक म बूगमान् छ॰ मञ्-

वस्रा दशा ह छिनातावनश्र ছत्लागगिति गरे। नहा पूर्वीव মিত্যুক্ত अथ स्वतंक উচাতে। কপুঞ্চিকাভিতঃ কেশা মুদ্দি প-শ্চাৎ কপুচ্ছল ইতি॥ এতদ্বন্দ नातायरगायायायन युज्। जे-ডুম্বর ভব মৌড্মরণ। অম মূর্জ্জা-ৰতো বৃক্ষ ইতি মন্ত্ৰেণ ভাৰ্য্যাষাঃ कर्छ दङ्गाजि॥ 🟶॥ व्यथ मीमञ्ज মুর্দ্ধুণ নযতি ভূরিতি দর্ত্ত পিঞ্জ-नीजि রেব প্রথম ভুব ইতি हि তীয় স্ব রিতি তৃতীয়। অথান-ন্তর॰ যত্র সিন্দুর॰ স্ত্রী দদাভি ত॰ मीमख॰ ननारि। क्षृं नयि जू রিতি মন্ত্রেণ দর্ত্তপিঞ্জলীভি স্তি-সৃতিঃ। একবার করণাদ্মাবস্ত্যু-ম্যনানি তাবতীভি রেব তিস্ভি প্রথমাদিপদানি তু রিভার্থঃ। ব্যাহ্নতীনাণ পিঞ্জলীনাঞ্চ পৃথঙ্-निरमागार्थ। निक्षनी गविज्। তথা চ ছন্দোগপরিশিউ। অ-नस्किं विषय मार्थः को मः विषय त्यव ह। श्राटानमाव विख्ड-ষ• পবিত্র• যত্র সত্রচিৎ।। এত-দেব हि शिक्षना। नकन ममून-शर्छः। গোভিলঃ। অথ বীরত-রেণ যেনাদিতে রিত্যেত্বর্চা ৷

বীরা স্তরস্তানেন যুদ্ধ নিতি বীর তরঃ শরঃ। তথা চ ছন্দোগপরি-निष्ठे। शाविष्ट्रनाका गननी छ-থা বীরভরঃ শরঃ। তিল তণ্ডুল সম্পাকঃ ক্লষরঃ সো হভিধীষতে ।। ততশ্চ শরেণ যেনাদিতে রিতি মন্ত্রেণ সীমস্ত মূর্দ্ধু নয়তি ইতি পূৰ্সূত্রাদনুবর্ত্তে।। 🕸।। অধ পূ-র্পেন সূত্র চাত্রেণ বাকামহ মিত্যে তবচ্চা। চাত্র তকুঃ। তেন সূত্র-পূর্ণেন বাকামহ মিতি মন্ত্রেণ সী-मञ्ज मूर्ज्वः नयजीजित्मयः। जिः শেত্যা শলল্যা যান্তে বাকে সু-মৃত্য ইতি স্থান ত্রিত্যে শুক্লেন শেদ্ধাৰ্জন্ত কণ্টকেন যান্তে ইতি মন্ত্রেণ সীমস্ত মূর্দ্ধৃণ নয়তীতিশে-ষঃ। রুষরঃ স্থালীপাক উত্তরঘৃত छ गरवकरषः। क्षत्र डेकः। ञ्चानीभाकम्ध्रकः म উপরি দত্ত ষ্ত ন্ত বধাঃ প্রদর্শবেৎ। স্থা-লীপাকপদ চরুস্থাল্যা ক্ষরস্য व्यंत्रनार्थः। मन्यगर्यज्ञाः विःश्र-কালন । তত क यः ক कि स्रार्। नम खगिषद्या ज्ञानस्य । कि-ম্পশ্যদীত্যুক্ত্বা প্রজা মিতি বাচ-ষেৎ। কি॰ পশাসীতি পতি রু-জু৷ প্রজা নিত্যাদি মন্ত্রণ গরিণীণ

नीयारि

वॉटरबर। ७॰ मा वर॰ जूकीछ। छ त्यदिक्छि॰ क्रमत्रः। वीत्रमृ ৰ্জীবসূ জ্জীবপত্মীভি ব্ৰাদ্ধণ্যো यक्षणोमि जिर्वाशि क्रगामी द्रम्। বীরান্ বিক্রাস্তান্ পুত্রান্ সূত ইতি বীরসৃস্ত্রণ ভবেতি বাক্য শেষः প্রতিপদ স্যাৎ। জীব-তো দীৰ্ঘাযুদঃ পুত্ৰান্ সূত ইভি कीवमृः জीवछः भन्नी जीवभ-ত্নী অবিধবেতার্থঃ। এবং প্র-কারাভি ৰাগ্ডি রনুনবেষুঃ। ক্র-নশ্চ নহাব্যাহাতিভি হন্ত্ৰা ঔডু ষর ফলস্তবক কঠে বদ্ধা প্রজা নিতি বাচষেদিত্য কৰিব ব্যাহাতিভি হোঁৰাটি মাপষেৎ ততো বাৰ मीतन्। ইতি সংক্ষার ভব। मीगों पू॰ १ वागामीना मवधात्रिः সীমা স্ত্রী \তান্তভাগঃ। সীমানা ইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। ম र्यामा २ व्यविशः ७ व्याचारिः ६ । ইতি क्रिंगितः॥ शिकिः॥ ক্ষেত্ৰ° । অপুকোষঃ। ইতি यिमिनी।। বেলা। ইভি বিশ্বः॥ नीयाविवानः भू ध्यामीना भी माविषयककलाइः। यथा। अ-धूना भीषाविवान निर्वय উচ্চ

नीया विवास स्वामा ৰামস্তাঃ স্থবিরাদ্যঃ। গোপাঃ मीयाक्रयाण त्व महर्व ह গোচরাঃ।৷ নষেষু রেতে সীমা-नः ख्लाकात जूष करियः। मजु বল্মীক নিম্নান্থি চৈত্যালৈয় ৰূপ-লক্ষিতা ।। প্রামন্বয় সম্বন্ধিনঃ ক্ষেত্রস্য সীয়ো বিবাদে তথৈক-গ্ৰামান্তৰ্ধতি ক্ষেত্ৰ মৰ্য্যাদা বি-वाटन চ मामञ्जानमः ख्लाकाता-**मि**ज्ञिः পূर्वकृष्टिः शीमानकृरेन রুপলক্ষিতা চিহ্নিতা সীমাণ नरम्यः निन्धिनियः। त्रीया त्कः वानियर्गाना मा ठजूर्विधा कनलम्त्रीया ३ वायतीया २ ক্ষেত্ৰদীমা ও গৃহদীমা ৪ চেতি । সাচ ষথা সম্ভব পঞ্চলক্ষণা। **७** मुक्क॰ नात्रापन। श्रक्तिनी ग९-मिनी टेठव टेनशानी ভयविर्क-তা। রাজশানন নীতা চ সীমা-**१११ विश मृट्डि ॥ अजिनी वृ**-कामि विकिछ। वृक्षामीना अ-কাশকত্বেন ধজতুল্যস্বাৎ। মৎ-मिनी मिलवरणी मरमाभक्तमा याधात्र कल लक्ष्म १ । रेनधाः নী নিখাত তুষাঙ্গারাদিমতী। তেষাণ নিখাতত্বেন নিধান তুল্য-

नीमावि

बार्। जगरकिंग। वर्षि क्षणार्थ গরস্পর সম্পুতিপত্তি নির্শ্বিতা। রাজশাসননীতা। জ্ঞাত্চিত্না-ভাবে রাজেচ্ছ্যা নির্দ্মিতা। এব-ম্ভূতাষা বোঢা বিবাদঃ সংভবতি । यथार काजायनः। आधिका॰ ন্যুনতা চাংশে অন্তি নান্তিম্ব মে-ৰ চ। অভোগভুক্তিঃ সীমা চ यष् ज्वाममा (२७वः॥ ইछि। তথাহি। মনাত্র পঞ্চনিবর্তনাধা ভূমে রধিকা ভূ রস্তীতি কেনচি-मूटक शक्तिवर्खरेनव नावित्क-छ्याधित्का विवामः। शक्षनिवर्ख-ना मनीया जू तिजारकन छटा-ন্যুনৈবেতি ন্যুনতাবা । পঞ্চনি-वर्जना मनांभ हेक्रास्क्रभ वर নান্তীতান্তি নান্তিম্ব,বিবাদঃ স-खर्वि। यमीया जुः श्रागनिमाः মানভোগৈব ভুজাত ইত্যুক্তেন সম্ভতা চিরম্ভন্যের মে ভুক্তি রি-ভ্যভোগভুক্তৌ বিবাদঃ। ইব॰ মৰ্য্যাদ্ৰেষঞ্চেভি সীমাবিবাদ ইভি ষট্প্রকার এব বিবাদঃ সম্ভবতি। ষট্প্রকারেপি ভূবিবাদে শ্রুত্য-ৰ্থাভ্যা॰ সীনাষা অপি নিৰ্ণীষ-মানত্বাৎ সীমানির্ণয প্রকরণে তস্যান্তর্ভাবঃ। সৃষ্তান্তবাঃ সা

मेंखाः। ठलमृत् पिक्नस्त्रता था-. मामय एउ ह श्रविमीय॰ वाविद् তাঃ। আমো আমেষু সামন্তঃ क्किं क्विमा की खिंछ। भृर गृष्मा निर्मिष्ठे॰ ममखाय পরির **जा हि॥ है** जिंका जायन वहना ९ । आ गामि भरकन ७९ हाः भू-ৰুষা লক্ষ্যন্তে। প্ৰায়ঃ পলায়ত ইতি যথা। সামস্ত গ্ৰহণঞ্চ তৎ मःमङ्गापाराक्षार्थः। কাত্যাযনে। সংসক্তকান্ত সা-মন্তা তুৎসংসক্তা তুপোত্তরাঃ। মংসক্ত শৃক্ত সংসকাঃ পদ্মাকা-ু । । ইভি। হবি-विकास जानिश्रहतन मी-क्षा अर्था अर्गः। वृकामि नः वन्ति रहिर्देशक्। निणाषा-मान देव पृ कि जरकार्या जम्-धनाविदेखः। वृक्षा वा यमि वा-বৃদ্ধা স্তেচ বৃদ্ধাঃ প্ৰকীৰ্ত্তিভাঃ।। ষে তত্ৰ পূৰ্ব॰ সামস্তাঃ পশ্চান্দে-শান্তর গতাঃ। তমূলদ্বাত্ত্ তে মৌলা ঋষিভিঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ ॥ উপশ্ৰবৰ সম্ভোগ কাৰ্য্যাখ্যা-নোপচিহ্নিতাঃ। উদ্ধরম্ভি পুন ৰ্যমাদুদ্ধতা স্তে ততঃ স্মৃতাঃ ৷৷ ইভি। গোপা গোচারকাঃ 1

সামার্ক্ষাণাঃ সীমাস নিহিত কে-बकर्यकाः। সর্বে চ বনগোচরা वनठातिर्गा वार्यामय एउ ह यन् त्नाकाः। वाधान् भाक्रनिकान् গোপান্ কৈবৰ্তান্ মূল্খাতকা-न्। वाालशाहानू छ्वृजीनना। •-**»** वनरगां ह्यानि छि॥ ख्ल यू-মতো ভূপ্রদেশ:। অঙ্গারো श्टाक्रिकिं। जूरा शानाष्ठः। ক্রমা ন্যগ্রোধাদযঃ। সেতু র্জল-প্রবাহবদ্ধঃ। চৈত্য পাষাণাদি-वक्षः। जामा भरकत रवन् वान्-कामीना॰ গ্রহণ। এতানি চ প্র-কাশাপ্রকাশভেদেন রাণি। তথা চ মনু वृका छ अबीं नार्वा । कि अकान्। गामानी ् **ভाला॰** कीतिनटेम्हेन शामशान् ॥ श्रमान् त्ववृ भठ विविधान् भभी वल्ली खनानि ह। भन्नान् अ-জ্ঞক গুল্মাণ্ড্য তথা সীমান ন-শাতি॥ তডাগানুদপানানি বা-প্যঃ প্রসূবণানি চ। সীমা সন্ধিষ্ কাৰ্য্যাণি দেবভাষতনানি চেভি প্ৰকাশৰপাণি৷ উপচ্ছন্নানি চা-नानि नीयानिकानि कात्ररयः। मीयाखारन नृगा॰ वीका निजा॰

लात्क विशर्यायः॥ जान्यात्मा १-স্থীনি গোৰালা স্তুষান্ ভঙ্ম ক-शानिकाः। कत्रीय मिखेकानात्र শৰ্করা বালুকা স্তথা।। যানি চৈ-व॰ अकातानि कानाम् जूमि नं छ-करय । তানি সন্ধিষু সীমাযা नि देश ने देश भी भा॰ ताजा विव-प्रमानत्या दि**छि। श्र**ष्ट्रम निजा-নি এতৈঃ প্ৰকাশাপ্ৰকাশৰূপৈ र्वि देशः मागरापि अपर्णि देनः नीया॰ প্রতি বিবদমানযোঃ সী-यानिर्गय वर्गाफाका ॥ ॥ यमा পুনশ্চিক্লানি ন সম্ভি বিদ্যমানা-নি বা লিঙ্গালিঙ্গত্যা সন্দিগ্ধানি তদা নিৰ্ণযোপায মাহ। সামন্তা বা সমগ্রামা শ্চন্থারোফৌ দশা-**शि व। व्रक्तमुधमनाः मीयाः न**-ষেষুঃ ক্ষিতিধারিণঃ।। সামস্তাঃ পূৰ্বোক্ত লকণাঃ। সমগ্ৰামা শ্চ-षांतारकी ममानि वा ইত্যেব॰ সমসংখ্যাঃ প্রত্যাসমগ্রামীনাঃ । রক্তসুথিণো রক্তাম্বরধরাঃ মূদ্ধা-রোপিত ক্ষিতিখণ্ডাঃ সীমান ন-(ययूः अनर्भरयकः। मामखारवि বিকল্পাভিধান• স্থৃত্যত্তরোক্ত माका जिथाय । यथा र मनुः ।

সাক্তি প্ৰত্যৰ এব স্যাৎ সীমা-वाम विनिर्वय देखि। তत ह मा-किना॰ निर्निज्य॰ मूथा॰ जनजा-বে সামস্তানা । তদুক্ত। সাক্য-ভাবে তু চত্বারো প্রামাঃ সীমা-खवात्रिनः। त्रीयाविनिर्वयः त्र-ৰ্যুঃ প্ৰয়তা রাজসন্ধিধাবিভি ॥ তদভাবে তৎসংসক্তাদীনাং নি-**८० जुष । यथार काजायनः ।** यार्थ निष्की श्रमूरछेषू मागर छ-वर्थात्रवाद। जदमःमटेकञ्च कर्डवा উদ্বারো নাত্রসংশযঃ।। সংসক্ত সক্তদোষে তু তৎসংস-काः थकीर्विजाः। कर्ववा न প্রদুষ্টাস্ত রাজ্ঞা ধর্মণ বিজানতে-छि॥ मामञ्जामाञाद सोनाम-যো গ্রাহাঃ। তেষা মভাবে সা-यखा योन वृष्काक्छामयः। इ वत्त बह्थकात्त्रि कार्या नाव বিচারণেতি কাত্যাযনেন ক্রম বিধানা । এতে চ সামস্তাদ यः সংখ্যা গুণাতিরেকেণ সংভবস্তি। माक्खाः माथनः शृर्वः निर्णायाः স্যু র্গুণাম্বিতাঃ। দ্বিঞ্চণা স্কৃত্তরা জ্ঞেষা স্ততো ২ন্যে ত্রিগুণা মতাঃ ।। ইতি স্মরণাৎ।। 🟶 🛭 তেচ সা-किनः मामञ्जानयक देयः देयः म-

-পথেঃ শাপিতাঃ সম্ভঃ সীমাণ ন-বেষুঃ। শিরোভি ত্তে গৃহীছোৰী॰ সৃशिरण तकवाममः। भागिणाः देयः देव नंत्रम् एख ममक्षम मिछि चात्रवाष्। नरसम् রিতি বহুবচন দ্বযো নিরাসার্থণ देन्कमा। अकरण्ड मूब्रदय भीमा॰ स्मानवामः मनुष्ठाययः। तक्या-न्गात्रत्रधदता ज्यि यानाय मूर्कनिः ।। ইতি नातरमटेनकमा। जन्छ।-नाए। यञ्छ। टेनकः मगूमरयक সীমা॰ নরঃ প্রত্যযবানপি। গুরু-षाममा कार्यामा क्रिरेया वश्यू ख्रिटा कमा निरुषः। म छे-ভূষানুমত ধর্মবিদ্যাতিরিক্তবিষষ विदेशियः॥ ॥ खनामि हि-হ্লাজেবেপি সাকি সামস্তাদীনা मीमाख्वान डेপाय वित्मत्या ना-রদেনোক্তঃ। নিম্নগাপহৃতোৎ-সৃষ্ট নফ চিহ্লাসু ভূমিষু। তৎ-প্রদেশানুমানাচ্চ প্রমাণান্ডোগ मर्गनामिछि॥ निम्नगाया नम्मा অপশ্বতেনাপহরণেনোৎসৃষ্টানি স্বস্থানাৎ প্রচ্যুতানি•নফানি রা निकानि यामू यशामाज्यियू তত্র তৎপ্রদেশানুনানাদুৎসৃষ্ট नके विज्ञानाः आवीन अरमभाः

নুমানাৎ আমাদারভ্য সহসুদ্র পরিমিত ক্বেত্র মন্য প্রামন্য প-শ্চিমে ভাগ ইত্যেবধিধানাৎ প্র-মাণাদ্বা প্রত্যর্থি সমক মবিপ্রতি-পন্নাষাঃ স্মার্তকালোপলক্ষিতৈ ভু জৈ ৰ। নিশ্চিনুষুঃ। বৃহস্পতি-ना ठाळ विरमसा मर्गिङः। आ-গমঞ্চ প্রমাণ্ঞ ভোগ কালঞ্চ না-म ह। ज्ञांश नकनदेश्व त्य विष् ন্তেত্ৰ দাকিণ ইতি।। এতে চ সা-ক্ষি সামস্তাদ্যঃ শপথেঃ শাশি-তাঃ সন্তঃ কলাদি সমক রাজ্ঞা अकेगाः। यथार मनूः। वात्य-यक जलानां जनक॰ जीवि ना-किनः। श्रकेताः नीम्बिक्यनि जरमा टेन्डिन विवासिटन सिंहि ।। তে পৃষ্টাঃ সাক্ষ্যাদয়ঃ সমস্তা ঐ-कगलान नीमि निर्गर कर्षाः। তৈ নিণীতা॰ সীমাণতৎপ্রদর্শিত সকল লিক্ষ্কুকা সাক্ষ্যাদি ৰা-मामिजाकावित्रात्रगार्थः भरत म-यादताभटर । উक्तक यनूना । তে পৃষ্টাম্ভ ধথা ত্রামূঃ সামস্ভাঃ नीमि निर्वरः। निरमीयाख्या नी-মা॰ সৰ্বাণ্ডাণ্টেশ্চৰ নামত ইতি ॥ ৠ। এতেষা সাকি সামস্ত প্রভৃতীনা সীযাচ ক্রমণ্দিনা

मात्रजा चारलिशक त्राक्टेंगवि-ক ব্যসৰ চেমোপপদ্যতে ভদা डंब्डामर्भनाद नीमानिर्वशः व्यवक बाजरेमविक वामनाविधः কাত্যাখনোক্তঃ সীমাচ ক্রম-त्न कार्य भाषण्यत्नं उरेषव ह १ ত্রিপক্ষ পক্ষ মপ্তাহণ দৈবরাজিক नियाक देखि॥ यमा वयीया॰ छ-ক্তসাক্ষ্যবচসাণ ত্রিপক্ষাভ্যস্তরে द्यागामि मृभाटा। अथ वा श्र-जिवामि निर्मिको जाधिक मण्या শুণ সাক্যন্তর বিরুদ্ধবচনতা তদা তে মৃযাভাষিত্যা দশুনীযাঃ ! ভদাহ। অন্তে তুপ্থন্দগ্রারা-জ্ঞা মধ্যমসাহসং। অনৃতে মি-খ্যাবদনে নিমিত্তভূতে সতি সর্বে সামস্তাঃ প্রত্যেক মধ্যমসাহসে-ন চত্ত্বারি শদধিকেন পণপঞ্চশ-ভেন দণ্ডনীযাঃ। সামস্ত বিষয়-তা চাস্য সাক্ষ্য মোলাদীনা স্ফূ-তান্তরে দণ্ডান্তর বিধানাদবগ-মাতে। তথা চ মনু:। যথোক্তেন নযন্ত ন্তে পূষন্তে সত্যসাঞ্চিণঃ। বিপরীত নযন্ত স্ত দাপ্যাঃ স্যু र्षिणुक क्य मिछि।। नातरकाणि। অথ চেদন্ত জাযুঃ সামস্তাঃ সী-मि निर्वा मर्द भृथक् भृथक्

দণ্ডা। ক্লাজ্ঞা মধ্যমসাহস মিতি।। সামস্তানা মধ্যমসাহস দও-অভিধাৰ। শেষা শেচদন্ত জাযু নিযুক্তা ভূমিকর্মণি। প্রত্যেকম্ব क्षवना एक वित्नकाः शृर्वमाहम मिछि॥ छৎमण्मकानिषु अथमण मार्म मूक्तान्। सोमानीना मः शि छत्यव प्रथ याइ। योग वृक्षा-क्षरखुरना मखगठा। श्थक् शृथक्। विदन्याः श्रथरमदेवव मार्टमना-নৃতে স্থিতা ইতি।। আদিগ্রহণেন গোপ শান্ধনিক ব্যাধ বনগোচ রাণা গ্রহণ ।।।।। यদি শাস্মি-कामीना॰ পাগরতত্ত্বালিক প্রদর্শ-নএবোপযোগো ন সাক্ষাৎ সী-মানিৰ্ণযে তথাপি লিঙ্গদৰ্শন এব মৃষাভাষিত্ব সম্ভবাৎ দণ্ডবিধান মুপপদাত এব। অনৃতে তু পৃথ-গাঙা ইত্যেতদণ্ডবিধান মজ্ঞা- ন বিষয়ণ। বহুনাম্ভ গ্রহীত্বাণ ন जदर्व निर्वय योग । अर्यू र्छया-দা লোভাদা দণ্ড্যা স্তৃত্বসদাহসং ॥ इंडि उड़ानवियरय माक्गामीना॰ কাত্যায়নেন দণ্ডান্তর বিধানাৎ ।।।।। তথা সাক্ষি বচনভেদেপ্যয ষেব দণ্ড স্তেনৈবোক্তঃ। কীর্ত্তি**তে** যদ ভেদঃ সাদিখ্যা ভূত্ৰমশা-

हम विि । अव बद्धानामिनान्-छवम्दन माक्गामीन् नः मीगाविष्ठातः श्वर्वविष्ठवाः ।

नाः विठात्रयिनिष्युक्ताः छाक्ता मूकी ख नाय डाननान् वीना मिजिः मह। मः विश्वः कात्रत्यः नीया त्यवः धर्मावित्मा विष्टुः 11 ইতি নির্ণষ প্রকার স্তেনৈবোক্তঃ ।। ।। यमा भूनः मायख श्रव्छ-খো জ্ঞাতার শিচহ্লানি চ ন সস্তি তদা কথ নিৰ্ণ ইত্যত আহ। অভাবে জ্ঞাভূচিক্লানা রাজা সীয়ঃ প্রবর্ত্তিতা। জ্ঞাতৃণা সাম-खामीना॰ निकामीनाक। वृकामी-ना मुजारबं तारेकव नीमः अवर्खि-তা প্রবর্ত্তবিতা। অন্তর্ভাবিতো श्व नार्थः। वायष्य यथावर्षिनीः বিবাদাম্পদীভূতা ভূব সম প্র-বিভজ্যাস্যেষ্ণ ভূ রস্যেষ মিত্যু-**उत्थाः मगर्गा जग्नाक्षा मीगा**नि-कानि कर्या १ यहा छमा। ज्या-বন্যতব্নস্যোপকারাভিশযো দৃ-শ্যতে ভদা ভগৈয়ৰ আত্মস্য সক-मा जृः ममर्शनीया। स्थाह मनुः া সীমাষা মবিষ্থাষা স্বৰণ রাণ टेक्द धर्मादिष। अमिरमञ्जूषि स्व-

কেবা ৰূপকারাদিভি স্থিতি রিতি ৷৷৷৷ অসত্যা মপ্যতন্ত্ৰাবাশকাষা ষস্যাঃ স্মৃতে ন্যাষমূলতা দ্যো-ভবিতু মতিদেশ মাহ। আরা· মাষ্ত্ৰন আম নিপানোদ্যান বে-শ্বসূ। এষ এব বিধি জ্রেইয়া বর্ষা-मु अवशामिषु॥ जात्रामः भूना ফলোপচষ হেতু ভূ ভাগঃ। আ-ষতন॰ নিবেশন॰ পলাল কূটাল্য-র্থ॰ বিভক্তো ভূপ্রদেশঃ। আমঃ প্রসিদ্ধঃ ৷ প্রামগ্রহণক নগরা-मुग्रामकन्। निर्णानः गानीय-স্থান কুপবাপী প্রভৃতিক। উ দ্যান ক্রীডার্থা ভূমিঃ। বেশ্ব-গৃহ । এতে স্বারামাদি স্বযমেব সা-মস্ত সাক্যাদি লক্ষণোঁ ৰিছি ৰ্ক্সা-**७वाः। ७था अवर्यामा** ज्रा क्लथवादश्रू जनया भृश्या ৰ্মধ্যে ন জলৌঘঃ প্ৰবহত্যনযো র্বেভ্যেব প্রাকারে বিবাদে আদি গ্রহণাৎ প্রাসাদাদিশ্বপি প্রাচীন এব বিধি জ্ঞেষঃ বেদিতব্যঃ। তথা চকাত্যাধনঃ। কেত্ৰ কুপ তডা-शानाः क्लांतातायसा त्रि । পৃহ প্রাসাদাবসথ নৃপ দেবগৃছে-यू (ठि ।। 🛊 ।। भीयानिर्गय युकु তৎপ্রসঙ্গেন মর্য্যাদাপ্রভেদনা- 📗

लो मखनार। नद्यानानाः अख-দে जू नीयाजिक्यत्व छथा। त्क-ত্রস্য হরণে দণ্ডা অধ্যোত্তম ম-ধ্যমাঃ ৷৷ অনেক ক্ষেত্ৰ ব্যবচ্ছে-দিকা সাধারণী ভূ মর্য্যাদা তস্যাঃ প্রকর্ষেণ ভেদনে সীমাতিক্রমণে সীমা মতিলঙ্ঘা কৰ্ষণে ক্ষেত্ৰস্য চ ভराषि अमर्गतन इत्रत्व यथा-ক্রমেণাধমোত্তম মধ্যম দণ্ডা ৰে-দিতব্যাঃ। ক্ষেত্রগুহণঞ্ গৃহারা-यामूर भवक्षार्थ। यमा भूनः श्रीय ভ্রাস্ত্যা ক্ষেত্রাদিক মপহরতি ড-দা দ্বিশতো দমো বেদিতব্যঃ। ষ্থাহ মনুঃ। গৃহ তডাগ মারা-ম॰ ক্ষেত্ৰণ বা ভীষ্যা হরন্। শ-তানি পঞ্চ দণ্ড্যঃ স্যাদক্তানান্দ্রি-শতো দম ইতি।। অপাছ্যমাণ ক্ষেত্রাদি ভূষস্তৃপর্য্যালোচন্যা कनाि पूछरयोशि न ७३ थर याक-ব্যঃ। অতএবাহ। বধঃ সর্বস্ব হ-त्रवः भूतामिर्वामनाक्रत्न। जनक-চ্ছেদ ইত্যুক্তো দণ্ড উত্তমসাহ-म रें ि॥ 🗱।। यः भूनः भन्न एक एक সেতু কৃপাদিক প্রার্থনমা অর্থ-मात्मन वा नकानू एका निर्माञ् মিচ্ছত্তি ত॰ নিষেধতঃ ক্ষেত্রস্বা-মিন এব দণ্ড ইত্যুত আহ। ন

निरम्पान रमनायस रमण्ड क পরভূষি॰ হরন্ म्यानकांत्रकः। कूभः सम्भाकत्वा वर्षकः॥ भ-ब्रकीयाः ज्ञि मशहत्रमान्यमि সেতু জলপ্রবাহবন্ধঃ ক্ষেত্রস্বামি ना न প্রতিষেধ্যः म চেদীৰৎপী-ডাকরো হছুপকাব্লকশ্চ ভবন্তি। কূপশ্চাৰক্তেত্ৰব্যাপিছেনাম্বা-ধো ৰহুদকত্বেন বহুপকারকো देनव निवातनीयः। कृপগ্रहनक वाशी भूकतिगामगुशनकनार्थः। ষদ। পুন রসে। সর্বন্দেত্রবর্ত্তিত্যা वहवादश नमामि मगीभटकवर-ৰ্ত্তিত্যা ৰা অল্পোপকারক স্তদা-সে) নিষেধ্য ইত্যর্থাদুক্ত ভবতি ॥॥। সেতোশ্চ দৈবিধ্য মুক্তণ না-त्राप्तन। रमजू मह विविद्या उद्धरः থেষো বন্ধা স্তথৈব চ। তোষপ্র-বর্ত্তনাৎ থেষো বন্ধ্যঃ স্যাত্তমিব-र्खनामिछि॥ यमा प्रनानिर्मिछ॰ সেতৃ ভেদনাদিন। নষ্ট স্বয় সং-ষ্ণরোতি তদা পূর্বস্থামিন তদ্ব-भान्भः वा म्भ्रिकृव मः ऋ्या। যথাহ নারদঃ। পূর্বপ্রবৃত্ত মৃৎ मन मश्कृ। यामिन है यः। त्में जु॰ প্রবর্ত্তরেৎ কশ্চিৎ ন স তৎ ফল ভাক ভবেৎ ৷৷ মুতে তু স্বামিনি

পून उप॰ एमा वाभि बानरवा बां-जान मामखा छछः क्यां १ (मणू-थ्यवर्खन मिकि॥ 🛊॥ विन॰ প্ৰতি উপদিক্ট विদানী॰ সেতোঃ প্রবর্ত্তযিতারু প্রতি জ্বা-হ। স্বামিনে যো খনিবেল্যেব ক্ষেত্ৰে সেতু॰ প্ৰবৰ্ত্তবেৎ। উৎ-পন্নে স্বামিনো ভোগ স্তদভাবে মহীপতেঃ।। ক্ষেত্ৰস্বামিন ফন-ভূগগম্য তদভাবে রাজানম্বা বঃ পরক্ষেত্রে সেতৃ প্রবর্ত্তযভ্যসৌ ন ফলভাগ্ভবত্যপি তু তদুৎপ-মে ফলে ক্ষেত্রস্বামিনো ভোগ স্তদভাবে রাজঃ। তক্ষাৎ প্রার্থ-নষ্মাদানৈন বা ক্ষেত্ৰস্বামিন॰ তদভাবে রাজান স্বাগ্যনুজ্ঞা-প্যৈব পরক্ষেত্রে সেতুঃ প্রবর্ত্ত-नीय देखि তाৎপर्यगर्थः ॥ 🗱 ॥ ক্ষেত্রস্বামিনা সেতু র্ন প্রতিষে-প্রসক্তানুপ্রসক্ত্যা কচিদিধান্তর মাহ। ফালাহত মপি ক্ষেত্ৰণ ন अर्थाम् या न कात्र त्य थ । अ थ -माश्राः क्रकेकनः क्ष्या गतान कांत्रस्थ।। यः शूनः क्काञ्चामिः নঃ পাৰ্শ্বে ২ছ মিদ ক্ষেত্ৰণ ক্লষা-मि रेक भीक्षका शकामू भ कि

ন চান্যেন কর্ষ্যতি ভচ্চ ক্ষেত্রণ यमाणि कालाइङ भीयक्रालन वि-कार्तिङ न ममाधीकवाभार् छ-থাপি ভস্যাক্লফীস্য ফলং যাবত্ত-ত্রোৎপত্যর্হণ সামস্তাদিকল্পিতণ छारमा कर्यका मार्गनीयः । **७फ क्यः शृ**र्वकर्यकामुक्किमा।-त्मान काब्रस्थः। देखि भीवादि-বাদপ্রকরণ । ইতি মিতাকরা ।।।।। जिल ह। जीयाः श्रिकम्य-शत्म विवादम आयत्या र्घत्वाः । रेकार्षभामि नरम् भौभाः मू अ-কাশেষু সেতৃষু।। সীমাবৃক্ষা॰শ্চ श्रदीं नार्खाशाश्य कि श्रकान्। भाषानीन् भाग जानां किनिति-न टेन्टर शामशान्॥ खंगान् दर-**नृ** अह विविधान् भनी वल्ली ख्लानि চ। শরান্ সজক গুল্মাণ্শ্চ তথা সীৰান নশ্যতি।। তডাগান্যুদ-পাৰানি ৰাপ্যঃ প্ৰসুৰণানি চ। मीमामिक्षम् कार्यानि प्तवजाय-ভনানি চা৷ উপজ্মানি চান্যা-नि भीयानिकानि कात्रस्थ। भी-মাজ্ঞানে নূণা বীক্ষ্য নিত্য লো-क विशर्यायः॥ जन्मता श्लीन গোবালান্ তুৰান্ ভস্ম কপালি-काः। कतीय शिक्षकात्रात्र म

ৰ্করা বালুকা স্তথা।। যানি চৈব॰ প্রকারাণি কালাদ্ভূমি র্ব ভক্ষ-ষেৎ। তানি সন্ধিষু সীমাষা य-প্রকাশানি কার্যেৎ।। এতৈ র্লি-टेक नरपं जीया त्राका विवत-মানয়েঃ। পূৰ্বভুক্তা চ সতত मूलकमाशारमन है।। यहि मः नव धर मार विकास विभिन्धित । সাক্ষি প্রতাষ এব স্থাৎ সীমাৰা-म विनिर्गशः।। आगीषक मला-नाक मनक भीति माकिनः। अ-केवाः भीयनिकानि ভर्या देकत विवामिताः॥ ए शृको स वथा क्षमृः ममस्राः मीन्नि निक्षः। নিবন্নীযাত্তথা সীমাণ সৰ্বাণ স্তাণ टेन्চर नाम्छः।। नित्रां एख गृशिषाबीः मुथिता ब्रक्कवाममः । সুরুতৈঃ শাপিতাঃ **বৈঃ বৈ**ঃ র্ रायू उंड ममक्षमः॥ राथात्क्रन নযন্ত স্থে পৃষ্ঠে সত্যসাকিণঃ। विপরীত नरेख स मागाः म्रा ৰ্ষিণত দম।। সাক্ষ্যভীবে ভূ চত্বারো গ্রামাঃ সামস্তবাসিনঃ। मीमा विनिर्वयः अर्युः श्रयका ता-জদন্নিধী৷৷ সামস্তানা মভাবে जू योनानाः नीमि नाकिनाः। ইয়ানপানুষ্ঞীত পুরুষান বন-

व्यक्तिन्।। वाश्वान् भाक्रनि-কান্ গোপান্ কৈবৰ্তান্ মূল-খানকান্। ব্যালগ্ৰাহানুঞ্বৃত্তী-নন্যাণ্শ্চ বনচারিশঃ।। তে পৃ की ख यथा अयुः नीमानिक्षयू লক্ষণ। তত্ত্বা স্থাসমজাজা थर्षा शायरया बरवाः ॥ रक्त कृष छष्णांना यात्रावमा गृह-স্য চ। সামস্ত প্রত্যধো জেবः नीमात्मञू विनिर्वयः ॥ नामखा শ্চেমৃষা ত্ৰায়ঃ সেতৌ বিবদতাণ नृगा । मर्द भृथक् भृथक् मछा। রাজ্ঞা মধ্যমসাহসং॥ গৃহংত ডাগ মারাম ক্ষেত্রণ বা ভীষষা হরন্। শতানি পঞ্দভ্যঃ স্যা-দজ্ঞানাদ্দ্বিশতোদ্দমঃ। সীমা-ষা মবিষ্থাযাণ স্বয়ণ রাজৈব ধ-শ্ববিৎ। প্রদিশেৎ ভূমি মেতে ষা মুপকারাদিতি স্থিতিঃ ৷৷ ইভি মানবে ৮ অখ্যায়ঃ ॥ नीमिकः पू॰ वृक्तरखनः॥ राजी কঃ ৷৷ সৃত্তক্ষিজাতিঃ৷ ইতি म॰किश्वमाद्रागामिवृखिः॥ नीमीकः भू॰ वृक्वित्ममः। या-द्वीगामिक कीकन् &

मोतः श्रू॰ मृर्याः। इणि क्यांन्सी।
इनः॥ अर्कवृकः। इलान्सः॥
मौतकः श्रू॰ मिश्वभातः। इणि
मक्याना॥ मौतमकार्वाः
१शाज॥

मीतश्रकः भू॰ ठट्यवः भीयताकः वित्मवः। म जू दुत्रतायताकः भूटाः। यमा भूटार्थः यक्तनज्वः क्वां मीता महिजा म- मूर्था जान्यान्। इं जि विकृभूतात् । व ज्ञां कः ।।

मीतभानिः भू॰ वन्नात् वः। इं जाः मतः ।।

शृं वलापवः। ইভি इलापूर- कृतिপ্রযোগক।।

मीलमः शृं सदमाजा । मिलिका ইভি ভাষা। তদ্য গুণাः।

मीलमः क्षिणा । उपा दिशाः।

मीलमः क्षिणा । युषा दिशाः।

दक मधुता शुकः। वाष्ठ शिखइता कामा आमवाजकतकमः॥ ইकि जावश्यकामः॥

मीवनः श्रमखानः। मृ-

্ৰমানী ইতি দেলায়ী

চ ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ।

সেবন ২ স্যুতিঃ ৩। ইত্যমরঃ

। উতিঃ ৪ ব্যুতিঃ ৫। ইতি

भक्तप्रावनी ॥
नीवनी जी निक्रमग्राधःमृतः ।
निक्रावा९ छई भर्वा छनीवनः ।
हे छि इस्टिक्षः ॥

সীস॰ ক্লী সীসকণ। ইতি হেম-চন্দ্ৰঃ।।

সীসক ক্লী ধাত্ৰিশেষঃ। সীসা ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যাযঃ। না-প• ২ ষোগেষ্ট• ৩ বপ্র• ৪। ইত্যমর:॥ সীস ৫ সীসপত্রক ৬ গণ্ডুপদভব ৭ সিন্দুরকারণ ৮ वर्षः २ वर्गाति ३० वंतरनर्छे॰ 33 जूवर्नक 321 देखि द्या-ठखः॥ वधु ५० शिक्छ छ ५३ मूवर्गाति ३६। जभू ३५ जभः ३१ । ইতি শব্দরত্বাবলী।। বধুক॰ ३৮ यहार्वन ३२ यवटनखेक २०। ই छि क हो धतः॥ वस्यनः २) हीन २२ शिके २०। इंडि त्रव्याना।। जिष्ठ २८ जुजन यः ২৫ উরগণ ২৬ জরজণ ২৭ পরি-शिकेक २৮ मृ**मूक्क वायम** २२ পদ্ম ৩০ তারশুদ্ধিকর ৩১ শি वावृद्धः ७२ वरशावनः ७७ ही-নগিষ্ট ৩৪। অসা গুণাঃ। সী मञ्ज वनमागाः माजिम वीर्यावि পাকতঃ। উকঞ্চ কফ বাতম ম-

र्णात्र 'अक लिथन'।। वर्ण नील॰ यृष् निश्वः निर्माणक मूरगीतवः । রৌপ্য সংশোধনে ক্ষিপ্রণ সীসক-ঞ্ তদুত্তম ।। ইতি রাজনির্বকঃ ॥ 🛊॥ जथ मीमरमा। १ भित नाम গুণাঃ। দৃষ্ট্বা ভোগিসূতা॰ রম্যা॰ बीमूकिञ्ज मूरमाह यथ। वीर्या॰ জাত স্ততো নাগঃ সৰ্বরোগাপ-হো নৃণা॰।। সীস॰ বধুঞ্চ ৰপ্ৰঞ্চ **साराके नामनामक । नामः** जुकक रेजानि। भीमः वक्षनः एक वर विदेश वार्या का ना-গস্তু নাগশতত্ল্যবল দদাতি ব্যাধি বিনাশ্যতি জীবন মাত-নোতি। বক্লি প্রদীপষ্তি ক।ম-ৰল॰ করোজি মৃত্যুঞ্চ নাশ্যতি সম্ভত সেবিতঃ সং।। পাকেন शैतो किन तक नार्गा क्षेप्रानि গুল্মাণ্শ্চ তথা নিক্ষীন্। পাণ্ডু প্রমেহানিল সাদ শোথ ভগন্দ-तामीन् करूजः श्रयुरको । 🚜.॥ অথ সীসকস্য শোধনং ৷ · ভস্য माङ्क्षिका দোষা বঙ্গদ্যেব নি-দর্শিতাঃ। শোধনঞাপি ভগৈয়ব ভিষগ্ডি গদিত পুরা।। 🛊 ।। অথ **जीनकना बाद्यव**िधिः। त्रममं शिक्षे शिलाद्याशाब भूनः

मी अक प्रमः। हाणि॰भिष्टिः श्रेटे मी । जिः श्रा॰ श्रविना॰ मैंम (भा विस्त्यः नम्भ जाराजा। नः। यथ मीमकम्भ मार निला प्रनः। भला। प्रचण यक्ता १६४० विक है ए १६४० ब्मन निक्तित्मर। घर माले न यामे याम वामावि विकला नाला नारेमसी । अथा। प्रेम् हिम्सी ह वितिरः। गोष्ठित जदम्यः । अण्डा वाप्रेल जिद् नर्गा भागनः भिना का - । १द॰ मध्रिट मिना । द्विका प्रां निका भ्राप्त 正成化之区 1 别胜别之。旅门 医羽城村女人。在五。三 विद्री। विनय काञ्चिक्वर श्रवः भारत भद्रावाजा भवः श्राक भूर ए मृति शहि जार मीम भगक । की भीमद প्रामः। मारिन्याम्, ४ भाः। इति र्मिष्ट्यः। श्वहर्त । अभिष्ठ जिल्ला भीरूवः। श्रु अर् क्ति भवाः भूष नाभाक्षा - व्कः। मूरी रंग कून थाक । भिशा शिशा दिस

मीर्ध क्टर॰ शामभ्यानां हुन भार भनाभकः। उपनीः नभी नविन निक्षित नग् श्री (भरान् चिन्। ब्रिट्नि रिम प्राप्तः। 301